जय नानेश
जय महावीर
जय रामेश
राम चमकते भानु समाना

श्रमणोपासक

आचार्य श्री नानेश स्मृति विशेषांक

(10 व 25 अक्टूबर 2000)

संयुक्तांक

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, रामपुरिया मार्ग, बीकानेर 334005

❑ श्रमणोपासक
आचार्य श्री नानेश स्मृति विशेषांक

❑ लोकार्पण :
आसोज शुक्ला द्वितीया
संवत् 2057, शुक्रवार, 29 सितम्बर सन् 2000 ई.

❑ प्रतियां : 8200

❑ मूल्य : एक सौ रुपये

❑ प्रकाशक : श्री अ.भा साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, रामपुरिया मार्ग,
बीकानेर 334005
फोन : 544867/203150, फैक्स : 0151-203150

❑ मुद्रक :
अमित कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिन्टर्स
बीकानेर फोन 547073

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या संघ की सहमति हो।

समर्पण

समता साधक, समीक्षण ध्यान-योगी
धर्मपाल प्रतिबोधक, चारित्र चूड़ामणि
स्व. आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म.सा.
की
चिर स्मृति में प्रकाशित
यह अशेष प्रणति

परम श्रद्धेय
व्यसन मुक्ति के प्रेरक
प्रशान्तमना, शास्त्रज्ञ
तरुण-तपस्वी
जप-तप और नियम पालन
के पावन त्रिवेणी संगम
स्व-पर कल्याण
हेतु संकल्पित
नानेश शासन के पट्टधर अभिनव भगीरथ
आचार्य-प्रवर श्री रामलालजी म.सा. को
सादर, सवन्दन

प्रकाशकीय

कार्तिक कृष्णा ३ संवत् २०५६ को समता विभूति, आचार्य श्री नानेश ने इस नश्वर संसार से महाप्रयाण किया, किन्तु उनका अशेष यश समाज, राष्ट्र तथा विश्व को उनके त्याग तथा तप-पूर्ण पावन सन्देशों की धरोहर रूप धरती तल पर जन-जन के मन में गुण-पूजा के पावन भावों के रूप में आज भी विद्यमान है।

जिन शासन प्रद्योतक आचार्य-प्रवर श्री नानेश ने लक्ष-लक्ष मानवों के हृदय में समता का भाव जगाया और प्राणिमात्र को संस्कारित करने में अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया।

अतः उनके महाप्रयाण पर श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ ने उनकी इस पावन धरोहर के प्रति जनमानस में उमड़ रहे श्रद्धा के स्वरों को श्रमणोपासक के आचार्य श्री नानेश स्मृति विशेषांक के रूप में नियोजित और आकार प्रदान करने का निश्चय किया।

इस निश्चय की क्रियान्विति हेतु श्री संघ की कार्य समिति और मंत्री परिषद् व सम्पादक ने देश भर के प्रमुख विद्वानों और संघ निष्ठजनों तथा स्व. आचार्य श्री नानेश के पावन व्यक्तित्व से प्रभावित समाज और राष्ट्र के प्रमुखों से अपने आलेख, संस्मरण और सन्देश प्रेषित करने हेतु आह्वान किया। हमें हर्ष है कि सुधीजनों ने प्रभूत मात्रा में सामग्री भेजकर संघ के आह्वान को सार्थक किया। हम समस्त आलेख प्रदाताओं के प्रति हृदय से आभारी हैं।

संघ ने इस महनीय कार्य सम्पादन हेतु श्रमणोपासक सम्पादक श्री चम्पालालजी डागा और सहयोगियों का एक सम्पादक मंडल गठित किया। हमें हर्ष है कि सम्पादक मंडल ने अपनी प्रतिभा, परिश्रम और कर्मठ समर्पणा से इस विशेषांक को वर्तमान स्वरूप में प्रस्तुत किया है। हम सम्पादक मंडल के प्रति आत्मिक आभार प्रकट करते हैं।

इस विशाल विशेषांक के प्रकाशन हेतु संघ ने विज्ञापनों के संकलन का निश्चय किया। देशभर के श्री संघों और संघ प्रमुखों ने उदात्त भाव से विज्ञापन के माध्यम से अर्थ सहयोग

प्रदान किया। संघनिष्ठ महानुभावों की एक पूरी ऐसी श्रेणी इस अभियान में उभरकर आई, जिसने अर्थ संकलन के क्षेत्र में सचमुच अपूर्व भूमिका निभाई। (इन प्रमुखों की सूची इसी अंक में अन्यत्र सादर प्रकाशित है) हम ऐसे सभी अर्थ सहयोगी, संघ प्रमुखों, श्री संघों और विज्ञापनदाताओं के प्रति हृदय से आभारी हैं।

स्व. आचार्य श्री नानेश स्मृति विशेषांक में स्तरीय और सामयिक प्रकाशन कर स्वयं संघ के प्रमोद भाव को भी हम अनुभव करते हैं तथा उन सभी सहयोगियों के प्रति पुनः हार्दिक आभार प्रकट करते हैं।

सादर

शांतिलाल सांड
अध्यक्ष

सागरमल चपलोत
महामंत्री

जयचन्दलाल सुखानी
कोषाध्यक्ष

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, बीकानेर

सम्पादकीय

मानवता के भाल तिलक

समुन्नत ललाट, प्रलम्ब बाहु, प्रशस्त वक्ष, सुलोचन, तपःतेज मंडित मुखमंडल, धौत धवल खद्दर से आवेष्टित श्यामल सुकोमल, सुपुष्ट देह यष्टि आदि शारीरिक श्री से समृद्ध परम् श्रद्धेय आचार्य श्री नानालालजी म.सा. का समग्र जीवन समत्व साधना, समीक्षण ध्यान एवं कथनी-करनी की एक्यता की ऐसी उदग्र ज्योतित मशाल है जिसकी अन्य कोई मिसाल दृष्टिगत नहीं होती।

जैनागमों में आचार्य के लक्षणों एवं गुणों का वर्णन करते हुए कहा गया है-

स समय पर समय बिउ गंभीरो दित्तियं सिवो सोमो,

गुणसय कलि ओ जुत्तो पवयण सारं परिकहेऊं।

अर्थात् आचार्य स्व पर सिद्धान्त का ज्ञाता, शत-सहस्त्र गुणों से युक्त, तीर्थंकर द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों पर आचरण कर प्रचार-प्रसार करने वाला गंभीर आभायुक्त, सौम्य एवं कल्याणकारी व्यक्ति होता है।

शास्त्रकार कहते हैं कि आचार्य उस दीपक के समान होता है, जो दीपक की तरह स्वय प्रकाशमान रहकर दूसरों को आलोकित करता है।

जह दीवा दीव सयं पइप्पए सोय दिप्पए दीवो।

दीव समा आयरिया दिप्पति परं च दीवेंति॥

एक दीप स्वयं जलकर असंख्य दीपकों को जलाता है। वह स्वयं प्रकाशित होता है एवं अनेक भविक जीवों को अज्ञानांधकार से निकालकर अपने ज्ञानालोक से देदीप्यमान बनाता है।

श्रद्धेय आचार्य-प्रवर का सम्पूर्ण जीवन इस कसौटी पर नितान्त खरा उतरा है, यह सर्वथा निर्विवाद एवं निसंदिग्ध है। जैसे सोना तेजाब के योग से आग में तपकर विशुद्ध स्वर्ण हो जाता है वैसे ही हमारे परमाराध्य का जीवन भी तपाराधना एवं संयम-साधना की अग्नि में

वन्दना के स्वर :

चतुर्थ खण्ड वन्दना के स्वर हैं । इसमें श्रद्धेय आचार्य प्रवर के गुणानुवाद करते हुए श्रद्धांजलियों का प्रकाशन किया है, उसके चार उपखंड है । प्रथम उपखंड में राजनेताओं के सन्देश हैं । द्वितीय उपखंड में पूज्य मुनिराजों एवं महासतीवर्याओं की श्रद्धांजलियां संकलित हैं । प्राप्त श्रावक-श्राविकाओं के वन्दना के स्वरों का नियोजन तृतीय उपखंड में एवं चतुर्थ उपखंड में विभिन्न संघों द्वारा अर्जित श्रद्धांजलियां संकलित हैं । पद्यमय श्रद्धांजलियां भी यथास्थान नियोजित की गई है । अन्तिम खंड विज्ञापन का है । अर्थ सहयोग के बिना इस विशालकाय विशेषांक का प्रकाशन कठिन हो जाता । कहा जाता है, 'उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्' । यही दृष्टि इसमें महत्त्वपूर्ण है एवं यह खंड इसी उक्ति को सार्थक करता है ।

इस विशेषांक के प्रायमिक नियोजन में श्री संदीप जैन 'मित्र' दुर्ग की भूमिका को नगण्य नहीं किया जा सकता । उनका श्रम निश्चित ही रेखांकित करने योग्य है ।

विशेषांक की विशद् सामग्री के संपादन में पर्याप्त सावधानी एवं सजगता के बाद भी त्रुटियां असंभाव्य नहीं हैं । यथासाध्य सम्पूर्ण सामग्री को सम्मिलित किया है फिर भी कोई सामग्री छूट गई हो तो परिशिष्टांक में सम्मिलित की जा सकेगी ।

किसी भी वृहद् एवं महत्त्वपूर्ण कार्य की सफलता अनेक के सहयोग मार्गदर्शन एवं प्रेरणा पर निर्भर करती है । इसके प्रकाशन में प्रारम्भ से ही संघ प्राण श्री सरदारमलजी कांकरिया की विशेष रुचि रही है । किसी भी रचनात्मक एवं सेवाकार्य में उनका सहयोग सदैव असंदिग्ध रहा है । संघ अध्यक्ष श्री शांतिलालजी सांड की अव्याहत प्रेरणा, उत्साह और उमंग ने इस रूप में इसका प्रकाशन संभव किया है । उनके प्रति कृतज्ञता छोटे मुंह बड़ी बात भले ही हो पर अनिवार्य तो है ही ।

इसी तरह श्री केशरीचंद जी गोलछा की प्रेरणा, उत्साह एवं श्रद्धा इस विशेषांक के प्रकाशन में महत्त्वपूर्ण रही है । अस्वस्थ होते हुए भी कभी फोन एवं कभी नोखा से स्वयं आकर इसका निरन्तर लेखा-जोखा लेते रहे । इनकी पुष्कल प्रेरणा हेतु अनेकशः आभार । श्री जयचंदलाल जी सुखानी द्वारा समय-समय पर इसकी प्रगति का मूल्यांकन हमारा मार्गदर्शन एवं प्रेरणा स्रोत रहा है । हम भूयसी आभारी हैं उनके ।

विशेषांक के स्वरूप निर्धारण में सुप्रसिद्ध साहित्य सेवी डा. आदर्श सक्सेना की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण रही है । उनका मार्गदर्शन हमारा पाथेय बना एतदर्थ हार्दिक आभार ।

श्री कन्हैयालाल जी भूरा ने भी इसके प्रकाशन में पर्याप्त रुचि ली एवं शीघ्र प्रकाशन हेतु प्रेरित किया एतदर्थ साधुवाद ।

पूज्य संत मुनिराजों एवं महासतियों के प्रति आभार हमारा सहज स्वाभाविक कर्त्तव्य है । विद्वान लेखकों एवं रचनाकारों के हम अत्यन्त आभारी हैं जिनकी रचनाओं ने इसे समृद्ध किया है ।

नाति दीर्घ समय में इसका प्रकाशन कदापि संभव नहीं होता यदि अमित कम्प्यूटर्स के श्री अमिताभ एवं श्री प्रमोद नागोरी इसके लिए आगे आकर उत्तरदायित्व ग्रहण नहीं करते। उनका अथक परिश्रम निश्चित ही अभिनन्दनीय है। उनका सुनहरा भविष्य असंदिग्ध है।

कार्यालय के सहयोगियों के श्रम की अनदेखी कृतघ्नता ही होगी अतः उनके प्रति सहज आदराभिव्यक्ति आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है। ज्ञात-अज्ञात प्रेरक सहयोगी बन्धुओं के प्रति आभार प्रकट करना हम अपना सहज कर्त्तव्य मानते हैं।

बात समाप्त करने से पूर्व यह कहना आवश्यक है कि श्रद्धेय आचार्य प्रवर भीतर बाहर एवं बाहर भीतर से एक थे। स्फटिक की तरह निर्मल एवं पारदर्शी। कुछ भी गुह्य नहीं। न दुराव न छिपाव।

'जहा अन्तो तहा बाहि जहा बाहि तहा अन्तो'

वह समत्व साधक आजीवन समता समाज की रचना में लीन रहा यदि हम उनके अनुयायी उस समता समाज की रचना में आगे बढ सकें तो हमारी यह श्रद्धांजलि प्रणम्य होगी। कई बार दीपक तले अंधेरा रह जाता है। हम इस उक्ति को झुठलायेंगे एवं सर्वत्र प्रकाश फैलायेंगे, ऐसी हमारी कामना है।

प्रयत्न एवं परिश्रम की बड़ी महिमा है। प्रार्थना भी महत्त्वपूर्ण है। हमारा प्रयत्न, परिश्रम एवं प्रार्थना कितनी सार्थक है, यह तो सुधी पाठकों पर निर्भर है। जो अच्छा है, वह आपका है, त्रुटियों के लिए हम उत्तरदायी हैं। किमधिकम्।

इस विशेषांक के सम्पादन क्रम में देशभर से प्राप्त श्रद्धा के स्वरों में सर्वत्र यह प्रतिध्वनित हुआ है कि स्वर्गीय आचार्य श्री नानेश ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में वर्तमान शासन नायक आचार्य श्री रामलालजी म.सा. के रूप में चतुर्विध संघ को एक अनमोल भेंट दी है। इस उदात्त भावपूर्ण स्वर में अपना स्वर मिलाते हुए हमें यह लिखते हुए गौरवमय हर्ष की अनुभूति हो रही है कि प्रशान्तमना, शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, परम् श्रद्धेय आचार्य प्रवर श्री रामलालजी म.सा. की नेश्राय में यह संघ और शासन नई ऊंचाइयाँ प्राप्त करेगा।

पूज्य पाद आचार्य अमितगति का यह श्लोक जिसे आचार्य भगवन् कई बार सुनाते थे, उसी से हम अपनी बात को विराम दे रहे हैं :

सत्वेषु मैत्री गुणीषु प्रमोदं,
क्लिष्टेषु जीवेषु कृपा परत्वं।
माध्यस्थ भावं विपरीत वृत्तौ,
सदा ममात्मा विदधातु देव।

स्व. आचार्य प्रवर को हमारी अशेष प्रणति एवं भूयसी श्रद्धांजलि।

चम्पालाल डागा — भूपराज जैन
जानकीनारायण श्रीमाली — उदय नागोरी

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ

पदाधिकारीगण

विश्वस्त मंडल

श्री गुमानमल चोरड़िया,	जयपुर
श्री सरदारमल कांकरिया,	कलकत्ता
श्री मदनराज मूथा,	चैन्नई

अध्यक्ष	महामंत्री	कोषाध्यक्ष
शांतिलाल सांड, बैंगलोर	सागरमल चपलोत, निम्बाहेड़ा	जयचन्दलाल सुखानी, बीकानेर

उपाध्यक्ष

श्री केशरीचंद गोलछा	नोखा
श्री पंकज बोहरा	पीपलियाकलां
श्री माणकचन्द नाहर	उदयपुर
श्री दौलतसिंह रांका	भीलवाड़ा
श्री मदनलाल कटारिया	रतलाम
श्री सौभाग्यमल कोटड़िया	मुंगेली
श्री सम्पतलाल सिपानी	सिलचर
श्री कमलचन्द सिपानी	बैंगलोर
श्री नेमीचन्द तातेड़	दिल्ली
श्री प्यारेलाल भंडारी	अलीबाग

मंत्री

श्री सुरेन्द्र सेठिया	बीकानेर
श्री भंवरलाल ओस्तवाल	ब्यावर
श्री सुन्दरलाल मुरडिया	कानोड़
श्री बसंतीलाल चंडालिया	चित्तौड़गढ
श्री जम्बूकुमार आंचलिया	इन्दौर
श्री गौतमचन्द बोथरा	दुर्ग
श्री सुरेन्द्र बांठिया	कलकत्ता
श्री उगमराज लोढा	मद्रास
श्री ज्ञानचन्द हीरावत	दिल्ली
श्री मदनलाल बोथरा	सूरत

श्री सु.सां. शिक्षा सोसायटी

श्री सोहनलाल सिपानी-अध्यक्ष	बैंगलोर
श्री धनराज बेताला-मंत्री	नोखा/जयपुर

श्री अ.भा. सा. जैन महिला समिति

श्रीमती कान्ता बोरा-अध्यक्ष	इन्दौर
श्रीमती प्रेमलता सिरोदिया-मंत्री	रतलाम

समता युवा संघ

श्री गौतम पारख-अध्यक्ष	राजनांदगांव
श्री सुभाष कोटडिया-मंत्री	शहादा

समता बालक-बालिका मंडली

सुश्री मनीषा लोढा-अध्यक्ष	रतलाम
श्री नवीन कोठारी-मंत्री	बीकानेर

कौन कहां क्या

जीवन ज्योति

संकलित	1	आचार्य श्री नानेश : एक विहंगम दृष्टि
कंवरलाल गुलगुलिया	2	हे नानेश
संदीप जैन 'मित्र'	3	साधुमार्ग के ज्योतिर्मय नक्षत्र
विमल पितलिया	16	विश्वशांति की जान थे नानेश
पं. ज्ञानदत्त पांडेय	17	नानेश स्तवनम्
कु. रुचि मोदी	22	सबके हृदय सम्राट
डा. नेमीचन्द जैन	23	आचार्य श्री के साथ चौबीस घंटे
विनोद जैन	29	साक्षात्कार
डा. शोभनाथ पाठक	32	शताब्दी के शिखर सन्त
मनोहरलाल चंडालिया	33	नानेश नगर : एक दृष्टि
मनीषा पारख	34	सब तेरे गुण गाते
संकलित	35	साहित्य
संकलित	36	एकादश श्रावक दायित्व प्रतिबोध
संकलित	37	उन्नीस प्रतिज्ञाएं
संकलित	38	चिन्तन मणियां
प्रतिभा डागा	39	तुम बिन जीवन शून्य
संकलित	40	चातुर्मास
सकलित	42	चातुर्मासिक उपलब्धियां
सम्पतलाल सुराना	46	भाव भरी श्रद्धांजलि स्वीकारें
सकलित	47	संपर्क/माध्यम
लालचंद सुराना	48	कौन हो कैसा
संकलित	49	संत सतियांजी की सूची
जानकीनारायण श्रीमाली	60	समता तीर्थ दाता
जानकीनारायण श्रीमाली	63	मेवाड़ के कण-कण में सुवास
वै. बिट्टु जैन	65	दिव्य नन्दन वन थे
रतनलाल जैन	66	वे अन्तिम क्षण
स्नेहलता पारख	68	शत शत वंदन आज हमारा

व्यक्तित्व वन्दन

श्रमण संघीय आचार्य श्री शिवमुनि	1	समता योग के प्रेरक
गोंडल गच्छ शिरोमणि श्री जयंतमुनि	2	अनुपमेय तत्त्वदर्शी
राष्ट्र संत कमल मुनि कमलेश	3	जिनशासन के उज्ज्वल नक्षत्र
बुद्धिप्रकाश जैन	4	गुरु बिन घोर अंधेरा
मुनि नेमीचन्द्र	5	एक अनूठे व्यक्तित्व के धनी
गुमानमल चोरड़िया	8	अपने युग के सर्वोपरि आचार्य
सरदारमल कांकरिया	14	यशस्वी, कालजयी जीवन-यात्रा
किरण/सीमा पितलिया	15	गजानन्द के ख्वाब थे
शान्तिलाल सांड	16	बलिहारी गुरुदेव की
मंजू भंडारी	17	हृदयेश मेरे नानेश
सागरमल चपलोत	18	जन-जन की श्रद्धा के केन्द्र
केशरीचन्द गोलछा	20	कालजयी आचार्य
सोहनदान चारण	21	तव कीरत अमर हमेश
सम्पतलाल सिपानी	22	महाज्योति के दर्शन
मनोहरलाल मेहता	23	प्रेमगंगा बहायी थी
दौलत रांका	24	धर्म एवं आध्यात्मिकता के एनसाईक्लोपीडिया
नेमचंद सुराना	25	पहुंचाये मुक्ति ठेठ जो
जयचंदलाल सुखानी	26	एक सूत्र जो जीवन पाथेय बना
आरती सेठिया	28	दीप से दीप जलाओ
प्यारेलाल भंडारी	29	चमत्कारी महापुरुष
चम्पालाल डागा	30	मेरे अटूट श्रद्धा केन्द्र
सोहनलाल सिपानी	32	मधुर स्मृति
भारती नलवाया	33	वो लाल
धनराज बेताला	34	अविस्मरणीय आचार्य
सुभाष कोटड़िया	35	क्यों तुम हमको छोड़ गये
रिधकरण सिपानी	36	दृष्टा, अन्तर दृष्टा, दूर दृष्टा
सुमेरचंद जैन	36	समता की खान
सुन्दरलाल दूगड़	37	महामहनीय अडिग आस्था केन्द्र
भंवरलाल कोठारी	38	अप्रमत्त निर्ग्रन्थ समत्व योगी
पीरदान पारख	41	हुकुम शासन के ज्योति पुंज
राजमल चोरड़िया	42	विरल आचार्य
सोहनलाल खींचा	43	वन्दन बारम्बार
शान्ता देवी मेहता	44	श्रद्धा सुमन की दो पखुड़ियां
कु. मनीषा मोनी	45	गुरु बिन जीवन सूना

कांता बोहरा	46	महायशस्वी समता विभूति का अनूठा कार्य
छन्दराज पारदर्शी	48	उदयपुर में गूंजी जय जयकार है
गौतम पारख	49	संस्मरण एव सुखद अनुभूति
भैरूलाल जैन	51	ओ जिनशासन के दिव्य सितारे
कालूराम नाहर	52	समता की प्रतिमूर्ति
कमलचंद लूनिया	53	दृष्टि सिद्धान्त रूप थी दिव्य
डा. सागरमल जैन	54	समता दर्शन प्रवक्ता
दिनेश ललवानी	55	नामाक्षरी काव्य
केशरीचंद सेठिया	56	अछूतों के मसीहा
भूपराज जैन	59	साकार दिव्य गौरव विराट
जानकीनारायण श्रीमाली	62	धर्मपाल प्रतिबोधक
बनिता/विकल जैन	64	नानेश गुणाष्टक
उदय नागोरी	65	अनन्य आतमसाधना के साकार स्वरूप
इन्द्रा गुलगुलिया	67	तेरे पदरज की सेव
इन्दरचन्द बैद	68	चारित्र चूड़ामणि
भगवन्तराव गाजरे	69	महाप्रयाण
जसराज चौपड़ा	70	आचार्यों की शृंखला की एक कड़ी
डा. महेन्द्र भानावत	71	ना ना करते रहे
मदनलाल जैन	72	निस्पृही आराध्य देव
मुरारीलाल तिवारी	74	शताब्दी की महान् विभूति
मोतीलाल गौड़	76	समीक्षण ध्यान
प्रो. सतीश मेहता	77	बीसवीं शताब्दी के महान् आचार्य
सुमित्रा मेहता	79	प्रज्ञा पुरुष को प्रणाम
डा. कविता मेहता	80	समता, संयम, समीक्षण साधना के कल्पवृक्ष
वै. श्रद्धा बैद	81	मानव कल्याण कर गए
प्रो. एच.एस. बर्डिया	82	युगदृष्टा योगी
डा. सुरेन्द्रसिंह पोखरना	84	वैज्ञानिक युग के एक बड़े वैज्ञानिक
शैलेष गुणधर	86	नानेश ने उपदेश दिया
डा. धर्मचन्द जैन	87	समता दर्शन के नायक
वीरेन्द्रसिंह लोढा	89	जीवन जैसा मैंने देखा
डा. मधु एस. जैन	91	उनके आदर्श आज भी जिंदा हैं
किरण पितलिया	92	मिल जाएं नानेश गुरू
डा. अनिलकुमार जैन	93	एक बहुआयामी क्रान्तिकारी
रतनलाल व्यास	94	कुण्डलियां
सज्जनसिंह मेहता	95	नाना गुणों के पुंज
सौभाग्यमल कोटड़िया	97	समता का सूरज अस्त हो गया

नवरतन जैन 98 उत्कृष्ट धर्म साधक
राजकुमार जैन 99 समता का पाठ पढाते हैं
रतनलाल जैन 100 चुम्बकीय आकर्षण
शिवकुमार सोनी 101 संयम साधना का नजराना
पं. श्यामाचरण त्रिपाठी 103 नित्य लीलालीन
पं. ज्ञानदत्त पाण्डेय 104 समता सूरज
डा. संजीवकुमार प्रचंडिया 'सोमेन्द्र' 105 अष्टम पट्टधर को समर्पित है
विनोद जैन 106 शताब्दी के महापुरुष
मेघराज सुखलेचा 107 आत्मिक गुण मंजूषा
पद्म जैन 108 अस्त हुआ महासूर्य
मिट्ठालाल मुरड़िया 109 वे अब नहीं रहे
मोहनलाल पारख 109 मानो सूख गया प्राण
सुमतिकुमार जैन 110 आलोकमान भास्कर
गोपीलाल गोखरू 111 फरजन्द जाया तुमसा
महेश नाहटा 112 समता योगी
इन्द्रमल बाबेल 113 महानता के प्रतीक
पारसमल श्रीश्रीमाल 115 गुरु को जब जाना तब पाया
मोती विमल 116 समता मंत्र
चंचलकुमार बोथरा 117 विचक्षण प्रतिभा के धनी
भागचंद सोनी 118 जन-जन के सिरताज
अमृतलाल पगारिया 119 ऐसे थे मेरे गुरु
मिट्ठुलाल नागोरी 120 तुम अखिलेश निरंजन
शान्तिचन्द्र मेहता 121 समता व्यवहार के आग्रही
कन्हैयालाल बोरदिया 122 त्याग का मकरंद बहानेवाले
शकेन्द्र छाजेड़ 123 धार्मिक गगन के दिव्य नक्षत्र
पवनकुमार कातेला 124 सम्यक् बोध सुधाकर
चांदमल बाबेल 125 दृढ़ संकल्प के धनी
लालचंद नाहटा-'तरुण' 128 संघ गौरव बढ़ेगा
अजीत जैन 128 ऊर्जा के जीवन्त प्रतिमान
गौतम जैन 129 प्राणिमात्र के लिए महत्त्वपूर्ण
डा. शान्ता जैन 129 विशिष्ट जैनाचार्य
इन्दरचन्द जैन 130 महातेजस्वी आचार्य प्रवर
अमृतलाल मेहता 131 मर्म स्पर्शी देशना
मोहनलाल श्रीश्रीमाल 132 देह निधि नाना
मोतीलाल मालू 133 असीम कृपालु
जसकरण डागा 134 दहेज प्रथा उन्मूलन के समर्थक
डा. निर्मल जैन 135 डा. जैन तो अपने घर के हैं

न्तन मनन

डा. छगनलाल शास्त्री 1 जैनागम : स्वरूप, विकास एवं वैशिष्ट्य
डा. मुकुलराज मेहता 7 जैन दर्शन में मोक्ष तत्त्व
आचार्य कनकनंदी जी 14 ज्ञान-विज्ञान का आविष्कर्ता
राष्ट्र संत गणेश मुनि शास्त्री 18 धर्म और विज्ञान
पं. बसन्तीलाल लसोड़ 20 शुद्ध साध्वाचार
प्रो. चांदमल कर्णावट 25 धर्म साधना : लोक-परलोक
जमनाप्रसाद कसार 28 समता दर्शन : एक मूल्यांकन
डा. आदर्श सक्सेना 37 आचार्य नानेश की साहित्य साधना
डा. किरण नाहटा 46 जीवन संदेश के संवाहक : तीन आख्यान
मगनलाल मेहता 51 समीक्षण ध्यान की प्रासंगिकता
रिंकु ललवाणी 55 समता दर्शन : एक दृष्टि
भंवरलाल कोठारी 58 समता दर्शन : एक अनुशीलन
प्रो. कल्याणमल लोढा 69 साहुं साहुं त्ति आलवे
कन्हैयालाल भूरा 73 वीर संघ : एक अभिनव योजना
डा. शोभनाथ पाठक 78 सामाजिक संवार में चतुर्विध संघ की महत्ता

न्दना के स्वर

संदेश

अणगार

आचार्य श्री रामलालजी म.सा. 1 स्फटिक मणि के समान पारदर्शी
श्री ज्ञानमुनिजी म.सा. 3 तीन शरीर एक प्राण
श्री रणजीत मुनिजी म.सा. 4 विनय की प्रतिमूर्ति
श्री बलभद्र मुनिजी म.सा. 4 दिखावे एवं आडंबर से दूर
श्री सम्पतमुनिजी म.सा. 5 विश्व शान्ति के मसीहा
महासती श्री केशर कंवरजी म.सा. 6 व्यक्तित्व विराट सुहाना था
मुनि धर्मेश 7 अध्यात्म जगत के कोहिनूर
मुनि विनय 10 आत्म-साधना के महान साधक
साध्वी नमन श्री जी 12 चिन्मय, तुमको भाव प्रणाम
महाश्रमणी रत्ना श्री पेपकंवरजी म.सा. 13 हुक्म संघ की दैदीप्यमान मणि
महासती श्री सरदारकंवरजी म.सा. 15 जिनशासन की दैदीप्यमान मणि
शर्मिला जैन 15 श्रद्धा सुमन चढ़ायें
महाश्रमणी रत्ना श्री पानकंवरजी म.सा. 16 महाव्यक्तित्व के धनी
महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. 17 संत परम्परा पर गर्व है

मुनि धर्मेश	18	म्हांने क्यूं छिटकाया जी
महासती श्री ज्ञानकंवरजी म.सा.	19	बाप से बेटे सवाया
महासती श्री कल्पमणिजी म.सा.	20	कहां ढूंढू अनमोल रत्न को
साध्वी श्री कुसुमलताजी म.सा.	21	सद्गुणों की सौरभ
साध्वी श्री सोमप्रभाजी म.सा.	22	आस्था के अमृत सिंधु
महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा.	23	महान् अमर साधक
मंजु नाहर	24	दीपक से दीपक जलता है
महासती श्री शकुन्तला श्रीजी म.सा.	25	आस्था के अमर दीप
मु. सुमिता ममता बोथरा	26	घट घट में बसा है तू
महासती श्री लक्ष्यप्रभा जी म.सा.	27	प्रबल पराक्रमी एवं पुरुषार्थी
कविरत्न श्री वीरेन्द्र मुनि जी म.	29	समता शिवघन विधायी
साध्वी प्रमोद श्री जी म.	30	बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी
साध्वी ललिता श्री जी म.	34	अपरिमित गुणों के स्वामी
महासती श्री विद्यावतीजी म.सा.	36	विश्व वंद्य श्रद्धेय गुरुदेव
साध्वी सुनिता जी म.सा.	40	परम कृपा-सागर
साध्वी श्री मंजुला श्री जी म.सा.	41	बेजोड़ व्यक्तित्व
कुमारी दीक्षा	41	लोकोत्तर सूर्य अस्त हुआ
साध्वी श्री चितरंजना श्री जी	42	अलौकिक गुरु नाम
अनिता नागोरी	42	नाना महापुण्यशाली गुरु
महासती श्री प्रभावना श्री जी	43	गुरुदेव का प्रथम दर्शन, संयमी जीवन का सर्जन
साध्वी श्री किरणप्रभा जी म.सा.	44	विराट व्यक्तित्व के धनी
महासती श्री अंजलि श्री जी म.सा.	45	गुण रत्नाकर
साध्वी श्री वैभव प्रभा जी	46	प्राण हमारा, त्राण हमारा
साध्वी श्री विभा श्रीजी म.	47	हुक्म शासन सरोवर के राजहंस
कु. पायल कोकरिया	48	मेरे गुरुवर नाना
साध्वी कविता श्री जी म.	49	जैन जगत के जाज्वल्यमान नक्षत्र
साध्वी सुभद्रा जी म.	50	रोगी के लिए उपचार
साध्वी पूर्णिमा श्री जी	51	परम उपकारी गुरुदेव
आशीष ललवानी	51	नाना पार लगाते हैं
साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा.	52	ज्योति पुरुष
महासती श्री नेहा श्री जी म.सा.	53	जन-जन के वन्दनीय
साध्वी श्री प्रीति सुधा श्री जी	54	चिन्तन का चिन्तामणि
साध्वी अनुपम श्री जी	55	गुरुदेव समयज्ञ थे
वै. जय श्री	56	नाना तू कहां खो गया
साध्वी समीक्षणा श्री जी म.	57	देवों के अर्चनीय
मुनि रमेश	58	नाणेस पंचयपुई

साध्वी अर्पणा श्रीजी म.सा. 59 सच्चे पूज्यपाद के अधिकारी
राष्ट्रसंत गणेश मुनि शास्त्री 60 संयम का ताज दिया था
साध्वी चन्दना श्रीजी म. 61 अंतर्प्रज्ञ
साध्वी श्री विरक्ता श्रीजी 62 विराट व्यक्तित्व के धनी
महासती श्री सुवर्णा जी म.सा. 63 संसार महज सपनों की माया
ललिता चोरड़िया 63 विकल मन खोज रहा है
साध्वी पुष्पलता जी म.सा. 64 मुक्तिपथ के संबल
साध्वी अंजना श्री जी म. 65 कृपा निधान
कन्हैयालाल चौरड़िया 66 हर पल आज पुकारूं
साध्वी अंजना श्री जी म. 67 गुरु एक, सुरक्षा कवच
साध्वी सुमति श्री जी म. 68 क्षमा सिंधु
साध्वी दर्शना श्री जी म. 69 हे संघ नायक, कहाँ चले तुम
साध्वी प्रेमलता श्रीजी म. 70 समो निन्दा पसंसासु
साध्वी सुयश प्रज्ञा श्री जी 71 हम अनार्य ही रह जाते
विशाल लोढा 71 तरसे नयन
साध्वी कनक प्रभा श्री जी 72 प्रबल समता विश्वासी
साध्वी सिद्ध प्रभा श्रीजी म. 73 तेजस्वी व्यक्तित्व
श्याम वया 73 गुरु महाउपकारी
साध्वी वन्दना श्री जी म. 74 जीवन संस्कारकर्त्ता-गुरु
रानी सुराणा 74 ओ सुधर्मा के पट्टधर
महासती श्री चमेली जी म.सा. 75 अमर व्यक्तित्व
साध्वी श्री ज्योति प्रभा जी 76 मां की ममता से भी बढकर वात्सल्य
साध्वी श्री चन्द्रप्रभा श्री जी 77 व्यष्टि ज्योति समष्टि में लीन
साध्वी इन्द्र श्रीजी म. 78 विलक्षण नेतृत्व सम्पन्न
पं. श्री उदयमुनिजी म.सा. 79 जीवन सफल किया
महासती श्री सुशीलाजी म.सा. 80 सत्य, समता व सहिष्णुता की त्रिवेणी
महासती श्री कल्याणकंवर जी म.सा. 81 हृदय रूपी कैमरे में सुरक्षित
महासती श्री मंगला श्री जी म.सा. 82 मैत्री के संदेशवाहक
महासती श्री हेमप्रभा जी म.सा. 82 कण-कण करता क्रन्दन
महासती श्री चंदनबालाजी म.सा. 83 मृत्यु से अमरत्व की ओर
महासती श्री कांता श्री जी म.सा. 84 अज्ञान-तम के नाशक
महासती श्री मधुबाला जी म.सा. 85 मानवता का मसीहा
महासती श्री सरदारकंवरजी म.सा. 85 पावन शरणा दे दो
महासती श्री प्रांजल श्री जी म.सा. 86 वह नयन निधि अब कहाँ ?
साध्वी सुप्रज्ञा जी म. 86 अश्रुधार बरसे
महासती श्री भावनाजी म.सा. 87 एक महकता फूल गुलाब का

महासती समता श्री जी म.सा. 88 अमरता के संदेशवाहक
महासती श्री सुप्रज्ञा जी म.सा. 89 आराध्य के चरणों में
साध्वी चन्दना जी म. 89 पतवार बिन नौका हमारी
महासती श्री हेमप्रभा जी म.सा. 90 माली के बिना चमन का पत्ता-पत्ता उदास
साध्वी सुनीता श्री जी 90 हुए हम निराधार
महासती श्री सुरक्षा जी म.सा. 91 एक अधूरा स्वप्न
साध्वी सुमेधा श्री जी 91 आत्म गुणों की शीतल छांव
महासती श्री चंचल जी म.सा. 92 प्रभुता के चरणों में लघुता की पांखुरी
साध्वी प्रेमलताजी म. 92 दे दो कृपालु हमें दर्शन
महासती श्री तरुलता जी म.सा. 93 आस्था के अमर देवता
महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. 94 कल्पतरु चिन्तामणि मम
महासती श्री भावना श्री जी 95 गुलाब की तरह महका जीवन
महासती शर्मिला श्री जी म.सा. 96 प्राण ऊर्जा के सम्प्रेषक
महासती श्री प्रियलक्षणा जी म.सा. 97 अणु-अणु से मधु वर्षा
महासती श्री सुप्रतिभा श्री जी म.सा. 98 गुरु कृपा बिन जीवन सूना
महासती श्री प्रांजल श्री जी 99 अवर्णनीय जीवन
महासती श्री गुणरंजना जी म.सा. 100 भव्यों के कर्णधार कहां विलीन हुए ?
महासती श्री वैभव श्री जी म.सा. 101 अनुपम संयम साधक थे
साध्वी हर्षिला जी म. 101 करती रहेगी हमारा पथ रोशन
महासती श्री मनोरमा श्री जी म.सा. 102 गुरु बिना कौन बतावे बाट
महासती श्री जय श्री जी म.सा. 103 युग युगान्त तक जिंदाबाद
साध्वी प्रभावना श्री जी म. 103 कैसे भूलें नाम तुम्हारा
महासती श्री प्रमिला जी 'पुण्य रेखा' 104 स्नेह-मूर्ति को श्रद्धा सुमन
महासती श्री स्थितप्रज्ञा जी म.सा. 105 जिनका जीवन बोलता था
महासती श्री सौम्यशीला जी म.सा. 106 तुम एक, अनेक की जान थे
महासती श्री निधान श्री जी 107 यह दिल की आवाज है
महासती श्री प्रेमलता जी म.सा. 108 स्नेह का सागर
महासती श्री कमल श्री जी म.सा. 109 सम्पूर्ण जिंदगी को जागकर जिया
महासती श्री संयम प्रभा जी म.सा. 110 अविरल यादें
महासती नमन श्री जी 111 महकती खुशबू
महासती श्री वनिता श्री जी म.सा. 112 कुशल बागवां
साध्वी चंचल श्री जी 113 आंखें भर आई
साध्वी श्री इंदुबाला जी म.सा. 113 ओ पावन पूज्यवर
महासती श्री निरूपमा श्री जी म.सा. 114 महानतम् आचार्य श्री नानेश
श्री उन्नति श्री जी म.सा. 114 तुम्हें हम बुलाएं
महासती श्री निरंजना श्री जी म. 115 दार्शनिक, धर्मप्रवण और वैज्ञानिक

महासती प्रतिभा श्री जी म.सा. 117 मेरे आराध्य मेरे श्रद्धा लोक में
महासती श्री कुसुमलता जी म.सा 118 डूबतों का एक सहारा कहूँ
महासती सुमंगला श्रीजी 118 हरियाली कौन लाये
महासती श्री सन्मतिशीलाजी म.सा 119 जीवन के स्मृति-कोष में तुम जिन्दा हो
साध्वी अक्षयप्रभाजी म.सा 120 युगों-युगों तक तेरी याद रहेगी
महासती श्री सूर्यमणिजी म.सा 121 एक घर का चिराग बना लाखों घर का प्रकाशक
साध्वी सुजाता जी 122 गुरुवर मेरे नाना गुणों का खजाना
महासती श्री विवेकशीलाजी म. 123 तुम अब भी जिन्दा हो
महासती श्री पूज्यप्रभाजी म.सा. 124 मेरे संयमी आवास
महासती श्री जयप्रज्ञाजी म.सा. 125 हुक्म क्षितिज के सूर्य
साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म.सा. 125 अंतर मनवा रोये
महासती श्री ललितप्रभाजी म.सा. 126 मेरे अनन्य उपास्य देव
महासती श्री जिनप्रभाजी म.सा. 127 संयमी जीवन के प्राण
महासती श्री मननप्रज्ञाजी म.सा. 127 कहता है ये दिल मेरा
महासती श्री विशालप्रभाजी म.सा. 128 समता सागर के राजहंस
साध्वी प्रमिला पुण्य रेखा 128 कहां चले हो तुम निर्मोही
महासती श्री श्रुतशीलाजी म.सा. 129 संयम पथ के महापथिक
सरला अशोक 129 वंदन बारंबार
महासती श्री सुलोचना श्रीजी म.सा. 130 समता सरोवर के राजहस
महासती श्री सुशीलाकंवरजी म. 131 जग को निहाल किया
महासती श्री अर्पणा श्रीजी म. 132 प्राणों को गति देने वाले पूज्य गुरुदेव
महासती श्री चरित्रप्रभाजी म.सा. 133 हाय मौत ! गजब कर डाला
महासती समीक्षा श्रीजी म.सा. 134 कहां ढूंढे हम आचार्य भगवन् को
महासती मंजुबालाजी म.सा. 135 हुक्म संघ के मान
महासती श्री कमलप्रभाजी म.सा. 136 मानवता के शृंगार
महासती श्री स्वर्ण रेखाजी म.सा. 138 नींव के पत्थर
महासती श्री रश्मि श्री जी 139 मेरी नयन-निधि
महासती श्री लब्धि श्री जी म.सा. 140 बगिया के माली कहा गये ?
महासती अर्पिता श्री जी म.सा. 141 बहुआयामी व्यक्तित्व
महासती सुप्रतिभा श्री जी म.सा. 142 जैन जगत् के भास्कर
साध्वी रिद्धि प्रभा जी म. 144 समर्पित है श्रद्धा के फूल
महासती तेजप्रभा जी म.सा. 145 छाप अमिट रहेगी
महासती श्री सुबोधप्रभा जी 145 गुणों के सागर
महासती श्री वसुमति जी म.सा. 146 एकोऽहं बहुस्याम
साध्वी श्री लब्धि श्री जी म.सा. 147 भव-भव में कभी न भुला पाऊं
महासती श्री श्रद्धा श्री जी म.सा. 148 संत जीवन का भूषण

महासती श्री सुमनप्रभा जी म.सा. 149 कलियुग के कल्पवृक्ष
महासती श्री प्रवीणा श्री जी म.सा. 150 तीर्थंकर सूर्य-चंद्र की तरह-आचार्य दीपक की तरह
महासती जय श्री जी म. 151 छोड़ चले क्यों गुरुवर नाना
महासती आराधना श्री जी म.सा. 152 गुरुदेव की जादुई नजर
महासती महिमा श्री जी म.सा. 153 उत्कृष्ट संयमी साधक
महासती शुभा श्री जी म.सा. 154 आदर्श गुरु
महासती अस्मिता श्री जी म.सा. 155 समता मूर्ति गुरुदेव
महासती श्री सुमुक्ति श्री जी 155 बहे नयनन अश्रुधार
महासती आस्था श्री जी म.सा. 156 क्यों हुए हमसे विदा
महासती श्री शान्ता कंवर जी म. 157 क्षीर समुद्र-सा जीवन
महासती जागृति श्री जी म.सा. 158 ऐसे थे मेरे नाना गुरु
महासती श्री रौनक श्री जी म.सा. 159 अद्भुत एवं निराला व्यक्तित्व
साध्वी जय श्री जी 159 तुम्हीं हो मेरे गुरुवर नाना

आगार

विनोद कुमार नाहर 1 संयम के सजग प्रहरी
सुरेन्द्र कुमार दस्साणी 1 अनुपम वात्सल्य
भंवरलाल अब्माणी 1 कृतार्थ
रतन सी. बाफना 2 जाज्वल्यमान दीप स्तंभ
डा. आलोक व्यास 2 पारस मय
रोशनलाल जैन 2 एक और स्तम्भ ढहा
निर्मल छल्लाणी 2 युग प्रभावक आचार्य
रिखबचंद बोथरा 2 वो दीप बुझ गया
राजेन्द्र कुमार जैन 3 पूर्ण समर्पण
रामचंद्र धर्मपाल 3 जीवन के उन्नायक
डा. नेमीचंद जैन 3 सादगी का निधन
जितेन्द्र वैद्य 4 महामनीषी की अनुपम देन
धरम धाड़ीवाल 4 ज्वलंत समस्याएं एवं समता सिद्धान्त
अनिल बरखेड़ावाला 4 तू ताज बना सिरताज बना
रामचंद्र जैन 5 उड़ीनावासी धन्य हुए
भोमराज गुलगुलिया 5 आत्मा नहीं मरती
झूमरमल पींचा 5 विराट व्यक्तित्व के धनी
जेठमल धाड़ेवा 6 अद्भुत योगी
प्रदीप कुमार जागेली 6 जैन जगत की शान
मीठालाल लोढ़ा 6 अनेक गुणों के धारी
कन्हैयालाल बोरदिया 8 अद्भुत योगीराज

कमलचन्द लूणिया	8	ज्योति पुंज युगाचार्य
शांतिलाल नलवाया	9	मेरे आराध्य देव
नवीन कुमार कोठारी	9	स्नावयिक तनाव के प्रभंजक
डा. आर. पी.अग्रवाल	10	गुण रत्नाकर
सुरेश पटवा	10	श्रमण संस्कृति के सजग प्रहरी
गुलाब चौपड़ा	11	शताब्दी के विशिष्ट आचार्य
जे. के. संघवी	11	श्रमणोपासक से नाना को जाना
गणेश बैरागी	11	वात्सल्य वारिधि
यशवन्त सरूपरिया	11	नाम छोटे गुण बड़े
नेमनाथ जैन	12	ज्ञान, दर्शन, चारित्र की प्रतिमूर्ति
मनोहरलाल चंडालिया	12	छल कपट से दूर थे
मदन चंडालिया	13	सेवा, सारल्य व सहजता की त्रिवेणी
सुभाष सेठिया	13	मेरे श्रद्धा दीप
सुन्दरलाल सिंघवी	14	तुमको माना था अपना खुदा
सोहनलाल लूणिया	14	आस्था के अमर देवता
धूड़चन्द बुच्चा	15	भारत की महान् विभूति
शान्तिलाल नलवाया	15	युग पुरुष आचार्य
इन्दरचन्द .....मेठिया	16	जैन इतिहास की धरोहर
मदनलाल बोथरा	16	युवाओं के लिए समता सूरज
उदयचन्द, अशोक कुमार डागा	16	उच्चतम साधना के प्रतीक
महेन्द्र मिन्नी	16	जिन नहीं पर जिन सरीखे
नवरतनमल बोथरा	17	गुरु हृदय में स्थान पाया
मुकेश कुमार श्रीश्रीमाल	18	अद्भुत-व्यक्तित्व
कमलकिशोर बोथरा	18	इस शताब्दी के युग-पुरुष
राजेन्द्र बराला	18	अमृतमयी गंगा सी पावनता रत्नाकर सम गांभीर्य
नयमल तातेड़	19	अप्रमत्त महासाधक
कंवरीलाल कोठारी	19	ऐसे थे हमारे आचार्य
विजयसिंह लोढा 'विजय'	19	कालजयी व्यक्तित्व के धनी
डा. सुनील बोथरा	20	रिक्तता की अनुभूति
सुन्दरलाल नाहर	21	आत्मबल व सेवा के आदर्श
धीरजलाल मूणत	21	संपूर्ण भूमि के वजन से वजनी था वह दिन
सुरेन्द्र कुमार धारीवाल	22	महामानव का महाप्रयाण
V. Guddu Dhariwal	22	The Great Saint Acharya Nanesh
गणपत बुरड़	23	इस शताब्दी के महानायक
गौतमचंद श्रीश्रीमाल	23	युग पुरुष
घेवरचंद तातेड़	23	समता के सागर-वाणी के जादूगर

आनंदमल सांड, मनोहरी देवी सांड 24 लब्धि पुरुष : अमर संत
पी. शांतिलाल खींवसरा 24 व्यसन मुक्त जीवन के उद्घोषक
मगनलाल मेहता 24 सूर्यास्त और चन्द्रोदय
श्रेणिक कुमार 24 नाना से नानेश की यात्रा
गणेशमल भंडारी 25 चन्द्रमा की शीतल छाया से संघ वंचित हो गया
चंद्रप्रकाश नागोरी 26 क्रांतिदृष्टा
श्रीपाल बोथरा 27 जैन जगत के दिव्य नक्षत्र
अगरचन्द राजमल चोरड़िया 27 वज्रपात
ओमप्रकाश बरलोटा 28 छात्र जीवन की वह स्मृति
H.S. Ranka 29 A Tribute to a great saint
सुभाषचन्द्र बरड़िया 29 स्वयं तिरे औरों को तिराये
अर्जीत कड़ावत 30 ऐ युग तू कैसे आभार व्यक्त करेगा ?
डा. जे.एम. जैन मरोटी 31 गुरु मुख से निकले वे शब्द
सज्जनमल, सुभाषचंद, ताराबाई, सुनिता मूणत 32 तांगे का चक्का निकल गया
अजय भावना 32 गुरु नानेश की चरण रज का चमत्कार
गौतम गुणवन्ती, विनोद, पिंकी 32 जय गुरु नाना मुख की वाणी
विजय चौरड़िया, रूपल चौरड़िया 32 सांस-सांस में रोम-रोम में बसे हैं
दीपक बाफना 33 गुरुदेव की महती कृपा
कमलचन्द लूणिया 33 क्या गुरुदेव पीछे खड़े हैं
माणकचन्द जैन 33 आचार्य नानेश के संस्मरण
तोलाराम मिन्नी 34 नाम-स्मरण-चमत्कार
पुखराज जैन 34 बैग मिला
विमल बोथरा 34 टोकरिया ऐसे कहलाया
मनोहरलाल मेहता 35 ऐसे थे मन-जीत आचार्य भगवन्
रखबचन्द नागोरी 36 नाना नाम का चमत्कार
रिषकरण बोथरा 36 गुरु भक्ति
राजकुमार मोदी 37 अनूठी स्मृति
मनोहरलाल मोदी 37 देव रूपी महापुरुष
पंकज, कमलेश पितलिया 37 क्षेत्र को नया जीवन दिया
महेश नाहटा 38 एक पत्र से चातुर्मास मिला
उत्तमचन्द सांखला 38 ऐसे बना तव भक्त मैं
प्रवीण चोरड़िया, सुषमा चोरड़िया 39 हमारा मुन्ना
चन्दनमल जैन 39 लब्धिधारी
निर्मलचन्द सांड 39 गुरु नाम स्मरण करने से संकट टला
खेमचन्द सुराणा 40 पूरे परिवार पर चमत्कार
मीनू गोरडू 40 नानेश सद्गुरु तं नमामि

किरण देशलहरा	41	दीप स्तम्भ
किरण देवी गुलगुलिया	41	मेरी आस्था के केन्द्र
कु. रचना बैद	41	एक दिव्य मशाल
मोना गुलगुलिया	41	सब कुछ दिया तुम्हीं ने
शारदा जैन	42	हे महामानव ! आप अमर है
मुमुक्षु निर्मला लोढा	42	साधक व इनके पट्टधर
मुमुक्षु ममता बोथरा	42	हुक्म संघीय गुलशन के अनमोल पुष्प
अनिता डूंगरवाल	43	समता की दिव्य ज्योति
पुष्पा तांतेड़	43	सहज और सरल महासाधक
अंजु सांड	44	अब कौन राह दिखाएगा ?
श्रद्धा पारख	44	सामाजिक क्रान्ति के सूत्रधार
ललिता धींग	45	दिव्य ज्योति
ममता नागोरी	45	समता के सागर
आशा सांड	46	सच्चा पाठ पढा गए मुझ बाला को
मंजू बाफना	46	गुरु नाना मुझे भा गए
श्रीमती कमलादेवी सांड	46	समता की महान विभूति
सीमा सघवी	47	बहुआयामी व्यक्तित्व
डा. श्रीमती प्रकाशलता कोठारी	47	सर्वतोमुखी व्यक्तित्व
श्रीमती भंवरीदेवी कोठारी	48	रोटी का अमली स्वाद
उपाध्यक्ष-महिला समिति	48	बाल सखा-आचार्य श्री नानेश
माया लूणावत	50	प्राण जाहि पर गुरु भक्ति न जाहि
शकुतला दुधोड़िया	50	उपहार की सार्थकता को समझें
सीमा हींगड़	51	मेरे सच्चे देव नानेश
प्रेम पिरोदिया	51	गुरुत्वाकर्षण
रत्ना ओस्तवाल	52	देदीप्यमान नक्षत्र
कुसुमलता बैद	52	जगत में अनूठे ही थे और रहेंगे
कविता जैन	52	नयन दर्श बिन अभागे रहे
वनिता, सुनीता, प्रियंका, हर्षिता श्रीश्रीमाल	53	समत्व भाव में रमण करने वाले
कुमारी पायल	53	गुरु का नाम चमत्कार भरा
श्रीमती भवरी देवी मुथा	53	चमत्कार
अर्चना कुलदीप बरड़िया	53	चमत्कार
कंवरबाई लूनिया	53	चमत्कार
कंचन बोर्दिया	54	गुरु ने दी दवा
भवरीदेवी मुथा	54	नैया पार लगाई
रन्जु धींग	54	ज्योतिर्मय व्यक्तित्व के धनी
राजेन्द्र जैन	55	अमृतवाणी

आचार्य श्री नानेश स्मृति विशेषांक हेतु विज्ञापन संग्रहण में विशेष योगदान देने वाले महानुभावों की सूची :

१.	श्री अनोपचंदजी सेठिया	कलकत्ता
२.	श्री प्रकाशचंदजी सुराणा	दिल्ली
३.	श्री कमलकिशोरजी बोथरा	दिल्ली
४.	श्री ज्ञानचंदजी हीरावत	दिल्ली
५.	श्री संपतलालजी सिपानी	सिलचर
६.	श्री सोहनलालजी सिपानी	बैंगलोर
७.	श्री केशरीचंदजी सेठिया	चैन्नई
८.	श्री तोलारामजी मिन्नी	चैन्नई
९.	श्री मदनलालजी बोथरा	सूरत
१०.	श्री प्यारेलालजी भंडारी	अलीबाग
११.	श्री सुभापजी कोटड़िया	शहादा
१२.	श्री गौतमजी पारख	राजनांदगांव
१३.	श्री अशोककुमारजी सुराणा	रायपुर
१४.	श्री गौतमचंदजी बोथरा	दुर्ग
१५.	श्री मदनलालजी कटारिया	रतलाम
१६.	श्री भोपालसिंहजी बाफना	उदयपुर
१७.	श्री संपतकुमारजी सांड	जयपुर
१८.	श्री मोहनलालजी पारख	नोखा
१९.	श्री धूड़मलजी डागा	गंगाशहर
२०.	श्री निर्मलकुमारजी सेठिया	हावड़ा
२१.	श्री सुरेन्द्रजी दसाणी	मुम्बई
२२.	श्री नथमलजी तातेड़	बीकानेर
२३.	श्री बसन्तीलालजी चंडालिया	चित्तौड़गढ
२४.	श्रीमती कान्ताजी बोरा	इन्दौर
२५.	श्री मोहनलालजी गोलछा	नागपुर
२६.	श्री कमलचन्दजी डागा	दिल्ली
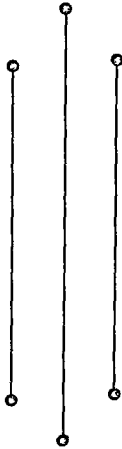
जीवन ज्योति

आचार्य श्री नानेश : एक विहंगम दृष्टि

जन्म एवं जन्म स्थान	: दांता, ज्येष्ठ शुक्ला २, वि.सं. १९७७
माता का नाम	: शृंगार बाई पोखरना
पिता का नाम	: मोड़ीलाल पोखरना
वैराग्यकाल	: लगभग तीन वर्ष
दीक्षा	: कपासन, पौष शुक्ला अष्टमी, वि.सं. १९९६
अध्ययन	: संस्कृत, प्राकृत, मागधी, अर्द्ध मागधी, पाली आदि भाषाओं का गहन अध्ययन एवं जैन आगमों के साथ वैदिक एवं बौद्ध दर्शन का अध्ययन
युवाचार्य पद	: उदयपुर, आश्विन शुक्ला द्वितीया, वि.सं. २०१९
आचार्य पद	: उदयपुर, माघ कृष्णा द्वितीया, वि.सं. २०१९
प्रथम दीक्षित संत	: शासन प्रभावक श्री सेवन्त मुनि, कार्तिक शुक्ला तृतीया, वि.सं. २०१९, उदयपुर
प्रथम दीक्षित महासती	: महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. प्रथम, माघ कृष्णा द्वादशी, वि.सं. २०१९
दीक्षा के बाद प्रथम चातुर्मास	: फलौदी (राज.) वि.सं. १९७७
आचार्य पद के बाद प्रथम चातुर्मास	: रतलाम (मध्यप्रदेश), वि.सं. २०२०
धर्मपाल प्रतिबोधन	: सन् १९६३ के रतलाम चातुर्मास के पश्चात् गुराड़िया गांव में बलाई जाति को प्रतिबोध। 'धर्मपाल' संज्ञा से अभिहित।
सामाजिक क्रान्ति	: बड़ीसादड़ी वर्षावास सन् १९७०, सामाजिक क्रान्ति की १९ प्रतिज्ञाओं पर सत्रह गांवों के प्रतिनिधियों को उद्‌बोधन ।
ध्वनि विस्तारक यंत्र	: ब्यावर वर्षावास १९७१ भौतिकी के प्रख्यात विद्वान डा. दौलतसिंह जी कोठारी द्वारा आचार्य श्री से भेंट एवं ध्वनि विस्तारक यंत्र के बारे में आचार्यश्री के चिंतन से पूर्ण सहमति ।
समता दर्शन शंखनाद	: जयपुर चातुर्मास, सन् १९७२
सांवत्सरिक एकता	: सांवत्सरिक एकता के लिए बिना किसी आग्रह के शिष्टमंडल को आश्वासन, सरदारशहर, वर्षावास सन् १९७४

ऐतिहासिक मिलन	: मोखामंडी वर्षावास, सन् १९७६ ई. के पश्चात् ... आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. से ऐतिहासिक मिलन ।
विद्वत् गोष्ठी को संबोधन	: अजमेर वर्षावास, सन् १९७९ ई. में अन्तर्राष्ट्रीय बाल वर्ष के उपलक्ष्य में बाल शिक्षा पर आयोजित विद्वत गोष्ठी को संबोधन
चिन्तन सूत्रों का प्रवर्तन	: सन् १९८० ई., राणावास वर्षावास। चिन्तन के नौ सूत्रों का प्रवर्तन
आगम अहिंसा समता एवं प्राकृत संस्थान की स्थापना की प्रेरणा	: सन् १९८१ के उदयपुर चातुर्मास की सफल परिणति रूप आगम अहिंसा, समता एवं प्राकृत शोध संस्थान की उदयपुर में स्थापना हेतु प्रेरणा
गुजराती साधु-संतों से मिलन	: अहमदाबाद वर्षावास, सन् १९८२ ई.
समीक्षण ध्यान पर प्रवचन	: अहमदाबाद वर्षावास, सन् १९८२ ई.
ध्वनिवर्द्धक यंत्र के उपयोग पर मौलिक विचार	: घाटकोपर (मुम्बई) वर्षावास, सन् १९८५ ई.
संस्कार क्रान्ति अभियान	: इन्दौर वर्षावास, सन् १९८७ ई.
पच्चीस दीक्षाओं का कीर्तिमान	: रतलाम वर्षावास, सन् १९८८ ई.
संस्कार क्रान्ति की प्रेरणा	: कानोड़ वर्षावास, सन् १९८९ ई., बुद्धिजीवियों को संस्कार क्रान्ति हेतु प्रेरणा, 'आगम-पुरुष' की परिकल्पना ।
'आगम पुरुष' (ले. डा. नेमीचंद)	: उदयरामसर वर्षावास, सन् १९९२ ई., 'आगम पुरुष' का ...
युवाचार्य घोषणा	: भूनागढ, बीकानेर ७ मार्च सन् १९९२ ई., मुनि प्रवर श्री ... म.सा. को युवाचार्य चादर प्रदान ।
कुल दीक्षित संत-सतियां	: संत उनसठ (५९), महासतियां तीन सौ दस (३१०)
संथारा प्रत्याख्यान	: कार्तिक कृष्णा तृतीया वि.सं. २०५६, प्रातःकाल ९.४५
स्वर्गारोहण	: कार्तिक कृष्णा तृतीया वि.सं. २०५६, रात्रि १०.४१

हे ! नानेश

कंवरलाल गुलगुलिया

तू था इन्सान पर दुनिया,
तुझे भगवान कहती थी ।
जगत को तारने को तू,
खिवैया बनके आया था ।
तेरे अरमां में सीने में,
तड़प थी बेजुबानों की ।

पतित पावन महायोगी,
महावत्सल कहती थी ।
तुझे निर्धन और निर्दोष,
कि दुनिया नाज करती थी ।
तेरे पलकों के नीचे पल,
दया की धार बहती थी ।

❑ संदीप जैन 'मित्र'

साधु मार्ग के ज्योतिर्मय नक्षत्र

महापुरुषों की आविर्भाव परंपरा में श्री आदिनाथ भगवान की परंपरा सर्वत्र अग्रणी रही है। ऐतिहासिक और धार्मिक दृष्टि से महाश्रमण भगवान श्री आदिनाथ जी की परंपरा अति प्राचीन है।

प्रवृत्ति के बंधन से मुक्तकर मानव को निवृत्ति मार्ग पर अग्रसर करने वाली यह परंपरा अक्षय है, अक्षुण्ण है। सतयुग, त्रेतायुग, और द्वापर युग में क्या.. कलियुग में भी इस परंपरा की अक्षरता और अक्षुण्णता बनी रही है और बनी रहेगी।

निवृत्ति व्यक्ति को कर्म बंध से मुक्त करने वाले मार्ग पर चलने हेतु प्रेरित करती है। निवृत्ति परंपरा (प्रकारान्तर से जैन परंपरा) व्यक्ति को सांसारिक एवं भौतिक सुख सुविधाओं को त्याग कर पंच महाव्रत धारी, त्यागी, श्रमण बनने हेतु प्रेरित करती है। इस प्रेरणा से व्यक्ति भौतिक सुविधाओं के प्रलोभनों से मुक्त होकर 'स्व' एवं 'पर' कल्याण की कामना से अपना जीवन जिन धर्म को समर्पित कर देता है। वह 'जैन एवं जैन श्रमण' बनता है। उसका जीवन त्यागमय तप-पूत दिनचर्या से पवित्र होता है।

इस त्रिस्तुतिक देवार्चित परंपरा में पंचम गणधर श्री सुधर्मा स्वामी के ७४वें पाट पर महान तपोनिधि क्रियोद्धारक, युग दृष्टा आचार्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. हुए हैं, जिन्होंने ऐसे समय में क्रांति का शंखनाद किया जब श्रमण धर्म की मर्यादाओं से विमुख होकर साधक बाह्य प्रवृत्तियों में लिप्त हो रहे थे। ऐसे तत्कालीन शिथिलाचार को दूर कर उन्होंने विशुद्ध शास्त्रीय आचार मर्यादाओं का दिग्दर्शन कराया। विषम समय में आचार्य देव ने कोटा की पावन भूमि पर क्रियोद्धार करके शुद्ध श्रमण धर्म का प्रतिपादन किया।

इसी समुज्ज्वल गौरवशाली साधुमार्गी परंपरा में अनेक विरल विभूतियां हुई है, जिन्होंने ज्ञान, दर्शन, चारित्र की विशुद्ध आराधना व तप.पूत साधना से भारतीय जनता को सम्यक् पथ का राही बनाया और जैन समाज के समक्ष वीतराग प्रभु का आदर्श प्रस्तुत कर विकसित किया। समय की गति के साथ ही इस यशस्वी पम्परा की शृंखला मे आचार्य श्री शिवलाल जी म.सा. हुए जिन्होने संघीय व्यवस्था को व्यवस्थित करने हेतु ७२ कलमों की समाचारी बनाई। आचार्य श्री उदयसागर जी म.सा. हुए जो तोरण पर अमंगल से मुख मोड़कर महामंगलमय साधना में रत हुए। आपके शासन में क्षमासागर जैसे क्षमाशील, कोदर जी जैसे विनयवान एवं पीरदान जी जैसे रसनेन्द्रिय विजेता श्रमण हुए जिन्हें स्वयं इतिहास सादर शीश झुकाता है।

चतुर्थ पाट संयम के सजग प्रहरी आचार्य श्री चौथमल जी म.सा. का रहा है, जिन्होंने इस समाज की नींव को मजबूत किया। अपने अंतेवासी शिष्यों, सहवर्ती संतों को विद्वान बनाकर इस परम्परा को जीवित रखा। आपकी संयम सजगता की सारे संघ में धाक थी। आपके शिष्यरत्न पंचम पट्टधर महान संयमाराधक, व्याख्यान वाचस्पति आचार्य श्री श्री लाल जी म.सा. ने इस श्रमण परम्परा एवं समाज के चतुर्दिक विकास में योगदान दिया। अपनी विलक्षण प्रतिभा से राजा, महाराजाओं को भी जैन धर्म में अनुरंजित किया। पूज्य आचार्य देव के महाप्रयाण के बाद श्रमण समाज विकट स्थिति में आ गया। संवत् १९७७ में आषाढ शुक्ला ३ को (आचार्य श्री श्री लाल जी म.सा. द्वारा घोषित युवाचार्य) मुनि श्री जवाहरलाल जी म.सा. आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए। जिन्होने अपनी विलक्षण प्रतिभा एवं यशस्वी

श्रमण जीवन से भगवान महावीर की श्रमण परंपरा को आगे बढ़ाया। जैन जगत के दिव्य नक्षत्र ज्योतिर्धर श्रीमद् जवाहराचार्य के प्रखर पाण्डित्य, सूक्ष्म प्रज्ञा, विलक्षण प्रतिभा, गंभीर विचारणा, अद्भुत अध्ययनशीलता, अपूर्व तर्कणा शक्ति एवं अगाध चारित्राराधना से जैन समाज ही नहीं अपितु बड़े-बड़े राष्ट्रनेता (जैसे गांधी, नेहरू, तिलक, आदि) भी प्रभावित थे। आपके व्याख्यान राष्ट्रीय चेतना व धर्म के ढोंग की निवृत्ति में सचोट थे, जो आज भी जवाहर किरणावली ५३ भागों के रूप में प्रस्तुत है। आपकी पाट परम्परा में शांतक्रांति के अग्रदूत युगदृष्टा आचार्य श्री गणेशीलाल जी म.सा. विराजे। जिन्होंने शिथिलाचार व अनुशासनहीनता देखकर संवत् २००९ के सादड़ी सम्मेलन में ११११ संत सती के नवनिर्मित "वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ" के उपाचार्य के पद का भी त्याग कर दिया। कालांतर में अनेक अनुनय विनंती, समाधान तथा एक समाचारी गठन के साथ उनके द्वारा सर्व सम्मति से भावी व्यवस्था हेतु मुनि श्री नानालाल जी म.सा. को युवाचार्य की चादर ओढ़ायी गई।

<u>नवयुग प्रवर्तक का जन्म :</u>

पृथ्वी की गहराई में छिपे हुए बीज को देखकर कोई कैसे कहे कि यह सुविशाल वटवृक्ष की प्रारंभिक अवस्था है परंतु वक्त बीतने के साथ उचित पोषण मिलने से वही बीज विशाल वटवृक्ष बन जाता है -

कई थके हारे राहगीरों का विश्राम स्थल,
कई पंखियों का आश्रय स्थल,
यह बीज बन गया अनेक का छांहदाता बरगद।

करीब ८० वर्ष पूर्व (ज्येष्ठ सुदी २ संवत १९७७) झीलों की नगरी उदयपुर के समीप प्राकृतिक सौंदर्य से ओतप्रोत दांता में श्रेष्ठीवर्य मोड़ीलाल जी पोखरना का आंगन जब नये शिशु की किलकारियों से गूंज उठा था, "किसे पता था कि ये किलकारियां ही आगे चलकर हजारों दिलों में वैराग्य एवं समता की सुर लहरियां ... गूंज उठेगी ? उस समय शायद किसी ने यह कल्पना भी नहीं की होगी कि माता शृंगारा की गोदी में हंसता, खेलता 'नाना' सा राजदुलारा ही जिन-शासन का एक महान सितारा बनेगा ? किसी ने सोचा भी नहीं होगा कि अपनी मीठी-मीठी बातों से सबका मन मोहने वाला नाना-सा बालक भविष्य में अनेक का तारक व उद्धारक बनेगा ? किसी को स्वप्न में भी यह ख्याल नहीं आया होगा कि संस्कारित पोखरना परिवार की यह ज्योति आने वाले कल में जबरदस्त क्रांति लाने वाले महान [illegible] बनेगा। दांता की पवित्र मिट्टी की यह कांति [illegible] शांत क्रांति को प्रकाशित करने वाला जगमगाते भानु के समान चमकेगा। जिन शासन का अनमोल कोहिनूर [illegible] बनेगा। किसे पता था कि महान संयमसाधक [illegible] आत्मदृष्टा आचार्य श्री श्रीलालजी म.सा. की भविष्यवाणी 'दांता को ही तीर्थस्थली और [illegible] तीर्थपति बनाने वाली है। पंचमाचार्य ने अपनी [illegible] से अष्टम पाट के लिए क्या इसी बालक को पसंद [illegible] लिया था ?

बंधनमुक्त आत्मा-जीव परिस्थितियों के फंदे में बंधकर अपनी इयत्ता (सीमा) खो बैठता है। [illegible] अपनापन, उसका स्वाभिमान, उसकी आत्मनिर्भरता सभी में निरंतर हानि होती है। बंधनों में जकड़ी [illegible] करुण स्वर में दया की पुकार करती है, उसकी पुकार [illegible] पवित्र आत्माओं का आविर्भाव होना प्रकृति का [illegible] नियम है। इसी नियमांतर्गत ही पोखरना कुल के [illegible] और शृंगारा की रत्नगर्भा ने धन्यता का [illegible] बालक का जन्म यों तो घटना मात्र है, साथ ही [illegible] सहज नियम का परिपालन भी है।

<u>होनहार बीरवान के, होते चिकने पात :</u>

दांता में जन्मे बालक गोवर्धन का नैसर्गिक [illegible] से कारुणिक हृदय किसी भी दुखित व्यक्ति को देखकर शीघ्र द्रवित हो उठता था। महापुरुष जन्म से ही संस्कार लेकर आते हैं। जो बाह्य शिक्षा से बहुत भिन्न और [illegible] आदर्शात्मक होते हैं। आठ वर्ष की बाल्यावस्था में पितृशोक के वज्रपात के बाद पारिवारिक कर्तव्य [illegible] करते हुए अपने चचेरे भाई के साथ व्यापारारंभ किया। व्यवसाय के दौरान शिक्षा में व्यवधान न पड़ [illegible]

ने भाई से एक प्रतिज्ञा करवा ली, जो आपकी
कालिक मेघा शक्ति और बुद्धिमता की परिचायक ही
ीं, श्रमण जीवन का प्राण भी है। अपने चचेरे भाई से
पने कहा- 'देखिये व्यवसाय के दौरान कई प्रसंग आते
जहाँ मतभेद के साथ मनोभेद भी खड़े हो जाते हैं।
ी स्थिति में व्यवसाय ही नहीं जीवन भी संघर्षमय बन
ता है। अतएव यदि किसी प्रकरण में मुझे क्रोध आ
ए तो आप मौन कर लेवें और आपको आ जाने पर
वैसा कर लूंगा। क्रोध शांत हो जाने पर संदर्भित विषय
विचार-विनिमय कर लेंगे ताकि हमारे व्यवसाय के
रण मित्रता एवं भातृत्व भावना में स्खलना न होने
ये।' कितनी सूझबूझ थी उस तेरह वर्षीय बालक
। उस समय से लेकर जीवन के अस्सी वर्ष की आयु
भी किसी ने कभी उन्हें क्रोध करते नहीं देखा है।
ावान् महावीर की अप्रमत्त साधना संदेश को जीवन का
ार्य बनाये रखने वाले आचार्य श्री नानेश ने इसके लिए
ाई बाहरी शिक्षा नहीं ग्रहण की। वरन् यह तो
ल्यावस्था से आपका स्वाभाविक गुण एवं दिनचर्या
ी है।

आमतौर पर शैशव काल आमोद-प्रमोद एवं
ाल सुलभ-क्रीड़ाओं के लिए होता है। शिशु विविध
कार के मनोरंजक साधनों - खेलों में अपने बचपन का
मय व्यतीत करता है। उस समय आज की तरह वीडियो
म, स्नूकर आदि तो थे नहीं। मनोरंजन के लिए जो
ाधन थे वे भी शारीरिक, मानसिक आरोग्यता प्रदान
रने वाले होते थे। मगर 'गोवर्धन' का स्वभाव नैसर्गिक
प से कुछ भिन्न था। वह प्रारंभ से ही बाल क्रीड़ाओं
सर्वथा दूर रहनें का प्रयास करता। बालक, जिसे
बोध कहा जाता है, अपने समवयस्क साथियों को
ाल-क्रीडा करते देख स्वाभाविक रूप से स्वयं को उनसे
र नहीं रख पाता। लेकिन 'गोवर्धन' के संदर्भ में ऐसा
हीं था। यदि कभी मनोरंजन का प्रसंग बन भी जाता तो
समें भी समय की सार्थकता को महत्त्व दिया। 'नाना'
अपने मनोरंजन के लिए जो साधन चयन किया, वह
ा कृषि। कितना महान् चिंतन! आज बच्चे तो बच्चे,
अंतिम समय की ओर बढ़ रहे बुजुर्गों को भी समय की
सार्थकता का चिंतन नहीं है। लेकिन आज के विकास की
दृष्टि से पिछड़ा माना जाने वाला वह कथित जमाना
आज की तुलना में काफी विकसित माना जा सकता है।
वह नाना-सा बालक भी इसी युग का ही तो था, मगर
महापुरुष जन्म से ही संस्कार लेकर आते हैं। जिसे विश्व
को नये चिंतन, नये आयाम देना है वह अपने समय को
व्यर्थ चिंतन में कैसे जाने दे सकता है? नाना ने अपने
मनोरंजन के लिए सदैव वही साधन चुना जिसमें समय
की सार्थकता, कार्य की निष्पत्ति एवं मन का रंजन तीनों
का संपुट हो। शेष समय प्राकृतिक गोद में बैठकर
नैतिकता, सामाजिक कर्त्तव्य एवं मानव जीवन की
सार्थकता व महत्ता विषयक विविध आयामों, गंभीर
चिंतन में व्यतीत करना गोवर्धन 'नाना' की दिनचर्या
थी। आचार्य श्री नानेश के अनुयायी उन्हें आज दांता के
दातार के संबोधन से संबोधित करते हैं, लेकिन वे तो
बचपन से ही इस नाम से प्रसिद्ध थे। अपनी जन्म स्थली
में बाल जीवन व्यतीत करते समय हर किसी को मदद
देना उनका नैसर्गिक गुण था। दांता के तेली परिवार की
वृद्ध मां आदि अनेक ऐसे शख्स हैं जो बालक गोवर्धन
की निष्काम सेवा से अभिभूत थे। उन सबके मुख से
फूटते दांता के घर-घर में उच्चरित होने वाला प्यार भरा
नाम 'नाना' आज विश्व के लिए चमत्कारी मंत्र बन गया
है। नाना की सहजता, सरलता, सादगी को द्विगुणीत
किया बाल्यावस्था की उनकी चिंतन शैली ने।

चिंतन करना नाना का नैसर्गिक गुण था लेकिन
इसे सही दिशा मिली भादसोड़ा में। शिक्षा का विकास
तत्कालीन परिस्थितियों के अनुसार अपर्याप्त था। बचपन
में जो शिक्षा एवं संस्कार होते हैं वही जीवन का पाथेय
बन जाते हैं। आज का विद्यार्थी पुस्तकों के आधार पर
ही केंद्रित हो गया है। किसी पाठशाला का संकुचित घेरा
महापुरुषों की विराट प्रतिभा को संकुचित करने वाला ही
होता है। आचार्य देव के स्थायी संस्कार जीवन की प्रथम
पाठशाला में ही बने है। शुद्ध धर्म-भक्ति के पारिवारिक
परिवेश में विकसित होता जीवन भला धर्म विमुख कैसे

हो सकता है। वैसे आचार्य देव स्वयं अपने श्रीमुख से फरमाते हैं कि 'बचपन में मैं धार्मिक क्रियाओं, सामायिक, त्याग, प्रत्याख्यान आदि को मैं एक तरह से ढोंग ही समझता था।' कारण भी स्पष्ट है कि वे सदा चिंतन के अभ्यस्त रहे हैं। जब तक उनका चिंतन किसी क्रिया की तात्विकता को नहीं जान लेता और जिज्ञासाओं का उचित समाधान नहीं हो जाता, वे उसके अंधानुकरण के पथिक नहीं बनना चाहते। इसी पेशोपेश में कभी माता शृंगारा की सामायिक आदि व्रत भी भंग करने की आशातना करने का प्रसंग बना। क्योंकि उस समय उनमें तद्विषयक ज्ञान का प्रायः अभाव ही था और उचित समाधानकर्ता भी नहीं था।

<u>जवाहराचार्य एवं मेवाड़ी मुनि का अनायास संयोग :</u>

इस तरह बालक गोवर्धन अपने चचेरे भाई के साथ कन्हैयालाल नानालाल नामक फर्म के माध्यम से कपड़े के व्यवसाय में संलग्न होकर पारिवारिक दायित्वों के निर्वहन में अपनी मेधावी प्रतिभा के साथ कार्य कर रहे थे। इसी व्यापार के चलते व्यावसायिक यात्रा प्रवास के दौरान संयोग से दांता से लगभग ६ मील दूर भोपालसागर जाना हुआ। प्रकृति को किस प्रगति का चरण इष्ट है और नियति मनुष्य को कहां ले जाकर खड़ी कर देती है, यह कहना मुश्किल है। इसी शहर में जैन ज्योतिर्धर श्रीमद् जवाहराचार्य म.सा. के महामंगलकारी दर्शन ने गोवर्धन के अंतर में सम्यक्त्व का बीजारोपण किया। यह एक अनजाना, अनियोजित सम्यक्त्व बीज था जो आज जैन संस्कृति में वटवृक्ष के रूप में सुशोभित है। इस प्रकार गोवर्धन का व्यावसायिक दौर "जहा लाहो तहा लोहो" की शास्त्रीय उक्ति के तहत विकासोन्मुख हो रहा था तथा अपनी पारिवारिक एवं सामाजिक समस्याओं के समुचित [illegible] में सफलता प्राप्त करता जा रहा था। किंतु [illegible] को कुछ और ही मंजूर था। जिस विराटता के [illegible] इस नाना का अवतरण हुआ उसे लघुतम घेरे में कैद रखना कुदरत की फितरत में नहीं था। आपके चिंतन को सही दिशा देने हेतु कुदरत ने सुखद प्रसंग वातावरण देकर मां शृंगारा की पुत्री श्रीमती मोतीबाई जी लोढ़ा को [illegible] आत्मबल प्रदान कर तपस्या में अग्रसर कराया। [illegible] कुदरत को एक कुदरत निर्माता की जरूरत थी [illegible] पंचमाचार्य श्री श्रीलालजी म.सा. ने जिसकी [illegible] भविष्य-वाणी की थी, उसकी आत्मजागृति के लिए व्यवस्था करना भी कुदरत का ही दायित्व था और [illegible] दायित्व के निर्वहन की शुरूआत हुई संवत् १९९१ [illegible]

मेवाड़ी मुनि श्री चौथमल जी म.सा. के [illegible] संयोग से पर्युषण पर्व की महामांगलिक वेला में [illegible] श्रीमती मोती बाई की पांच की तपस्या में [illegible] (धार्मिक अनुष्ठानों की क्रियाओं से अपरिचित) [illegible] वस्त्रादि लेकर भादसोड़ा जाना हुआ। वहां दो दिन [illegible] पर्वाधिराज के अंतिम दिवस का प्रसंग बनने वाला [illegible] बहनोई श्री सवाईलाल जी लोढ़ा की प्रेरणा से उन [illegible] आवागमन की क्रिया नहीं कर लोढ़ा जी के आग्रह [illegible] लोक लज्जा वश मेवाड़ी मुनि की प्रवचन सभा में [illegible] प्रसंगानुसार छठवें आरे के वर्णन को प्रस्तुत कर [illegible] मुनि जी निमित्त बनकर नाना के सोये हुए [illegible] जाग्रत एवं उसे पूर्णता प्रदान करने में सहयोगी बने। [illegible] छठे आरे के वर्णन ने तृणकाय घास में अग्नि की [illegible] सी चिनगारी का कार्य किया। वर्षा का पानी सभी [illegible] समान रूप से बरसता है और पात्र की पात्रता [illegible] संग्रहित एवं उपयोगी होता है। सांप के मुंह में [illegible] जहर बन जाता है, वृक्ष की जड़ों में जाए तो [illegible] के निर्माण में अपनी भूमिका निभाता है। औंधे [illegible] में जाए तो निरर्थक होकर बह जाता है और सीप में [illegible] जाए तो मोती का रूप ले लेता है। उस प्रवचन [illegible] भी औंधे पड़े बर्तन की तरह के एवं छिद्रयुक्त बर्तन [illegible] तरह के 'श्रोता' और सीप की तरह नाना जैसे '[illegible]' उपस्थित थे। व्याख्यान श्रवण करते समय तक [illegible] बाद तक भी नाना सोता ही बना रहा। लेकिन [illegible] की कल्पना की आहट ने जिस सोए गोवर्धन को [illegible] तो सहला ही दी थी, नींद से जागना तो बाकी ही [illegible] था। प्रवचन श्रवण के बाद संवत्सरी के ही दिन [illegible] अपने सजाकर बहन बहनोई की सेवा [illegible]

बावजूद अपनी धुन के पक्के होने का सबूत देते हुए चल पड़े दांता की ओर।

जंगल में मंगल :

अश्व तो अपनी गति से जा रहा था लेकिन अंदर का अश्व (मन) उससे भी तीव्रगति से युगनिर्माण की दिशा में दौड़ रहा था। चिंतन की प्रवृत्ति तो नाना में बचपन से ही थी। अपने अनुभव को व्यक्त करते हुए आचार्य श्री नानेश अपने प्रवचनों मे फरमाते हैं कि "मन का घोडा' जितना दौड़ रहा है उसे दौड़ने दो सिर्फ लगाम हाथ में लेकर उसकी गति सही दिशा की ओर मोड़ दो"। यह अनुभव आचार्य देव ने अपने मन रूपी घोडे को सही दिशा में दौड़ाने के वाद प्राप्त सुफल के आधार पर ही व्यक्त किया। अश्व की सवारी करते हुए इस अबोध की बोधता जागृत होने लगी। चिंतन बाहरी न होकर आंतरिक होने लगा। हृदय वीणा के एक-एक तार में, छठे आरे का मर्मस्पर्शी वर्णन वैराग्य लहरियां बनकर आत्मप्रदेश को गुंजित कर रही थीं। अंदर का सारा कलिमल पश्चाताप के आंसुओं के माध्यम से जार-जार बह रहा था। पश्चाताप् था माता की साधना में बाधा पहुंचाने का, व्यापारिक घरेलू कार्यों के निष्पादन निमित्त वनस्पति काय के जीवों की विराधना का, ज्ञान की अशातना का। अंतरात्मा से होने वाला परचाताप उस वियावान जंगल मे मंगल गीत स्वरूप तीव्र आक्रंदन में परिणित हो उठा। इस तरह बहन की तपस्या न केवल इस भाई के लिए वरन समूची मानव जाति के लिए मंगलकारी साबित हुई। स्वयं तथा लाखों लोगों को छठे आरे से बचाने एक नई चेतना को जन्म देने वाली यह यात्रा एक महायात्रा के रूप में इतिहास अंकित दस्तावेज है।

मन में वैराग्य की ज्योति जलाए, जीवन को सार्थक करने का भाव लिए गोवर्धन अब सत्य के द्वार तक पहुंच गया। 'ईश्वर का यदि कोई प्रकट अस्तित्व है तो वह सत्य ही है और उस सत्य से साक्षात्कार करने का एकमेव माध्यम अहिंसा है।' महात्मा गांधी के ये शब्द गोवर्धन के अंतर्हृदय में साक्षात रूप लेने लगे। ज्ञानगर्भित वैराग्य की मजबूती एवं स्थिरता से वे पारिवारिक मोह के संघर्ष का सामना करते हुए शनैः-शनैः अपनी त्यागवृत्ति में अभिवृद्धि करने लगे। बहुरंगी वस्त्र में यदि एकाध रंग और लग जाए तो विशेष बात नहीं होती। कोई नजदीक से भी उसे ठीक से देख नहीं पाता। लेकिन एकदम कोरे वस्त्र पर जरा-सा बिंदु भर रंग लग जाने से वह दूर से ही दीख जाता है। बचपन में धर्मक्रिया के विपरीत एवं उदासीन रहने वाले गोवर्धन का यह त्यागमय हावभाव परिजनों को मोहवश सहन नहीं हुआ। अनेक उपायों, साम-दाम-दंड सभी तरह की युक्तियों,जादू-टोना, यंत्र-मंत्र सभी तरह के अंधविश्वासी प्रक्रियाओं का सामना करते हुए "कार्यं वा साधेयं देहं वा पाते यम" के सिद्धांत पर अड़िग चाल से चलते रहे। अनेक तरह की विषम परिस्थितियों के बावजूद अंततः वे निकल पड़े एक सुयोग्य गुरु की खोज में। संत तो कई थे लेकिन गोवर्धन अपना जीवन किसी कुशल शिल्पी के हाथ सौंपना चाहते थे, क्योंकि उन्हें वास्तविक रूप में अपना जीवन सार्थक करने की ललक थी। जीवन में गुरु का अत्यधिक महत्व है। जिसके जीवन में गुरु नहीं उसका जीवन शुरु नहीं। मगर गुरु भी निर्लेपी और निर्लोभी ही होना चाहिए। यह चिंतन का विषय है कि जिस बालक ने कभी गुरु के विषय में जाना ही नहीं वह किस शक्ति से प्रेरित होकर गुरु की खोज में निकल पड़ा। दीक्षा लेनी ही होती तो कहीं भी ले लेता।

गुरु की खोज में चले गोवर्धन को मुनिश्री जवरीलाल जी म.सा., मेवाडी मुनिश्री चौथमल जी म.सा. (जिनके श्रीमुख से प्रस्फुटित वाणी ने ही गोवर्धन को वैराग्य रंजित किया), मेवाड़ी पूज्य श्री मोतीलाल जी म.सा. आदि संतों का समागम सुलभ हुआ। जिस प्रकार दुकानदार ग्राहकों को आकर्षित करने हेतु कई प्रलोभन देता है, उसी तरह दीक्षा की अभिलाषा लिए गोवर्धन को आकर्षित करने, अपनी शिष्य संख्या में वृद्धि करने हेतु अनेक प्रलोभन दिए गए। लेकिन अपनी विवेक दृष्टि एवं विचक्षण प्रज्ञा से गोवर्धन ने मन में निर्णय कर रखा था कि मुझे सुख-सुविधा, ऐशो-आराम के लिए संयम

स्वीकार नहीं करना है। ये प्रलोभन देने वाले सच्चे गुरु कभी नहीं हो सकते। हम कल्पना तो करें कैसी होगी उनकी बुद्धि, प्रतिभा ? क्या उस वक्त इस सम्मानजनक पद का मोह उन्हें लुभा नहीं पाया होगा ? एक साधु ने उन्हें फीचर नंबर देने की बात कही ताकि बंबई जाकर धन कमा सके। अपनी बुद्धि, प्रतिभा के बल पर पैसा तो क्या उच्च पद व प्रतिष्ठा भी वे हासिल कर सकते थे। क्या उनके दिल में यह महत्वकांक्षा नहीं जागी होगी ? आम इंसान की महत्वाकांक्षा होती है कि अच्छे पैसे कमाऊं, बंगले गाड़ी में ऐश करूं, सर्वत्र कीर्ति, यश पाऊं। वह वातावरण से प्रभावित होता रहता है। लेकिन महापुरुषों की महत्वकांक्षा तो कुछ और ही होती है। वे वातावरण को स्वयं बनाते हैं।

१६ साल की भरी युवावस्था। उच्च पद.. चारों ओर प्रतिष्ठा, लेकिन गोवर्धन को इससे भी ऊंचा व प्रतिष्ठित पद परमात्म-पद पाने की ललक जाग पड़ी थी। अंतर में वैराग्य का सागर हिलोरें लेने लगा..। उसने छोड़ दिया .. स्वजन परिवार का मोह.. प्रतिष्ठा का प्रेम.. पैसों का प्यार ...!!

उस वक्त आपके श्रवण पटल पर जैन दर्शन के उद्भट मनीषी आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. की संघीय व्यवस्था की जानकारी ने कुछ हद तक संतुष्टि दी। आपश्री को संघ नायक शांत क्रांतिद्रष्टा युवाचार्य श्री गणेशीलाल जी म.सा. के विषय में भी जानकारी मिली। इतने संतों के सानिध्य मगर योग्य संत नहीं मिल पाने की स्थिति से गुजर रहे गोवर्धन को मुनिश्री गणेश का संक्षिप्त परिचय तो प्रभावित नहीं कर पाया लेकिन खादी धारण आदि विशेषताओं ने जवाहराचार्य एवं गणेशाचार्य की छवि नाना हृदय में उच्च कोटि के श्रमण के रूप में स्थापित कर दी। सचमुच सच्चे महापुरुषों की वाणी नहीं [illegible]। जीवन बोलता है।

हृदय में उत्सुकता लिए पहुंच गए, सारे परीषहों [illegible] सहन करते हुए, कोटा शहर में; जहां स्निग्ध, शांत, मुखमंडल के स्वामी अलौकिक शांत क्रांति के अग्रदूत, निर्ग्रन्थ श्रमण संस्कृति के सजग प्रहरी युवाचार्य श्री गणेशीलाल जी म.सा. के प्रथम दि[illegible] [illegible] अद्वितीय प्रवचन शैली ने गोवर्धन के अन्तर [illegible] सर्वतोभावेन समर्पित कर दिया। प्रवचनोपरांत [illegible] युवाचार्य श्री के चरण-सरोजों में उपस्थित हो [illegible] समर्पणा एवं दीक्षा की भावना व्यक्त की। [illegible] गंभीर लेकिन सहज भाव में युवाचार्य श्री ने फरमा[illegible] "भाई.. साधु बनना कोई हंसी खेल नहीं है। साधु [illegible] से पूर्व साधुता को समझने का प्रयत्न करो, [illegible] करो, त्याग एवं वैराग्य की कसौटी में स्वयं [illegible] चित्त की चंचलता के साथ भावावेश में [illegible] पर चढ़ जाना श्रेयस्कर नहीं हो सकता। यदि [illegible] मार्ग का अनुसरण करना है तो गुरु का भी [illegible] लो। न अभी हमने तुम्हें ठीक से देखा है न तुमने [illegible] जाना है। आत्म-साधना के पथ पर वास्तविक [illegible] भावना से विभूषित तपःपूत ही चल सकता है।" [illegible] वगैरह। गणेश गुरु की इस निस्पृहता से [illegible] का चिंतनशील अंतर्मन शायद यही चिंतन करते [illegible] जिस गुरु की छवि कल्पना में बसी थी- [illegible] दर्शन कर नहीं पायी..

सुना था आपका नाम, कइयों की जुबान से,
बनी तस्वीर दिल में, कल्पना से अनुमान से।
कल्पना लगी बेजान, जब हकीकत में देखा,
सर ऊंचा हुआ तब, फक्र से, अभिमान से॥

अनेक जन्मों का, वर्षों का इंतजार [illegible] गया। अरे, ये ही तो वे गुरुदेव हैं, जिनकी [illegible] साधक संसार से पार उतारने वाले सद्गुरु के रूप [illegible] सकता है।

ये ही तो है रंगीन दुनिया में वैराग्य की [illegible] करके आत्म-दुनिया पर जादू करने वाले, संसार की [illegible] से बाहर निकालकर अनगार का शृंगार [illegible] महान जादूगर। ये ही तो हैं आचार-मुक्ताक [illegible] के आग्रही मुनिवृन्द संयम धारक गुरुदेव। ये [illegible] वैराग्य को मजबूत बनाने वाले जीवन-निर्माता।

सचमुच इतनी सारी विशेषताएं एक ही व्यक्ति में होना आश्चर्यकारी ही कहा जाएगा। शायद कुदरत ने चुन-चुनकर सारे के सारे गुण युवाचार्य श्री गणेश में ही भर दिये। ऐसे महान् व्यक्ति के साक्षात अस्तित्व का आज सामीप्य मिला, उन्हें सुनने का मौका मिला, क्या यह गौरव का विषय नहीं ?

द्वितीय जन्म :

गुरु की खोज पूर्ण करने के बाद आत्मखोज की तैयारी में लगे गोवर्धन ने सारे संघर्षो, परीषहों, पारिवारिक मोहादि का कठोर तपःसाधना, दृढ़ संकल्प के साथ समभाव से सामना कर कपासन शहर के एक सुरम्य सरोवर के किनारे आम्रवृक्षों के निकुंज के मध्यविशाल आम्रवृक्ष के नीचे युवाचार्य श्री गणेशीलाल जी म.सा. के श्रीमुख से साध्वाचार की तमाम इयत्ताओं, आचार संहिता आदि का सम्यक श्रवण कर विशाल संख्या में उपस्थित अनुमोदक जनमेदिनी की साक्षी में १९ वर्ष की अल्पावस्था में पौष सुदी अष्टमी संवत् १९९६ को बाल ब्रह्मचारी व्रत से सुशोभित होते हुए युग प्रवर्तक, आत्म-ज्ञाननिधि ज्योतिर्धर पूज्य श्रीमद् जवाहराचार्य जी म.सा. के शासन में अणगार धर्म, दीक्षा अंगीकार कर भगवान महावीर के पथ के पथिक बन गए। कपासन की धरती में, जिनशासन के आंगन में इस नवजात शिशु के जन्म की वधाइयां चहु ओर गूंज उठी। जन्मदाता ने इस नवोदित मुनि का परिचय मुनिश्री नानालाल जी म.सा. की संज्ञा से कराया।

सेवा एवं साधना :

'मुंड़-मुडांना बहुत सरल है, मन मुंडन आसान नहीं।''

जब तक मन से राग-द्वेष, भोगेच्छा रूपी केश का लोचन नहीं हो जाता, सिर का मुंडन निरर्थक है। मुनिश्री नानालाल जी तो वैराग्य से मुंडित मन के साथ साधना कर रहे थे। अब तो वे सारी आंतरिक कलुषता को समूल नष्ट कर के ज्ञान-दर्शन-चारित्र एवं तप की साधना, आराधना में तल्लीन हो गए। सभी प्रकार के आभ्यंतर तप, बाह्य तप की साधना उनके संयम जीवन की पर्याय बन गई। ज्ञान की अलौकिक महत्ता को केंद्र में रखते हुये ज्ञानाराधना, संयम साधना एवं सेवाभावना को जीवन का त्रिकोण बना लिया। आपका जीवन इसी त्रिकोण में परिभ्रमण करता रहा।

आजकल दीक्षा लेते ही परिचय की, संपर्क साधने की, यशोलिप्सा की भावना घर कर जाती है। और यह मानवमन की गहरी भूख भी है। लेकिन नाना मुनि ने तो मनजीत की श्रेणी में खुद को स्थापित कर रखा था। इनकी पहचान अल्पभाषी, विद्याभिलाषी, अध्ययन प्रेमी साधक के रूप में स्वयमेव निर्मित होती चली गई। 'मुणिणो सया जागरन्ति'- इस आगम वाक्य को आत्मसात् करते हुए मुनि नाना ने साधना की असिधारा पर ज्ञानाराधना पूर्वक पदन्यास किया। अपनी मर्मभेदक प्रज्ञा शक्ति के बल पर अप्रमत्त भाव से व्याकरण एवं साहित्य की जटिल पगडंडियों को पार करते हुए न्याय मुक्तावली, साख्य कौमुदी, वाह्य सूत्र, शांकर भाष्य, भामति आदि विविध दर्शनों के गूढ़ ग्रंथ, प्रमाण नय तत्त्वालोक, स्याद्वाद मंजरी, प्रमाण मीमांसा, षट्दर्शन समुच्चय सटीक आदि ग्रंथों प्राकृत, शौरसेनी, अर्द्धमागधी, आदि भाषाओं व्याकरण, साहित्य, कर्मग्रन्थ, तत्त्वार्थ सूत्र सटीक, दिगंबर न्याय ग्रंथ, विशेषावश्यक भाष्य, आचारांगादि आगम, गीता, रामायण, पुराण, उपनिषद आदि का पैनी दृष्टि एवं सूक्ष्म प्रज्ञा से अध्ययन, मनन एवं सिंहावलोकन कर, जैन न्याय एवं दर्शन के उच्च कोटि के विद्वान बन गए। पूरा जीवन ही आगम-सम्मत बन गया। आचार्य श्री नानेश की साधना को आगम का पर्याय कह दिया जाए तो लेशमात्र भी अतिशयोक्ति नहीं है।

अल्प समय में ही आप आध्यात्मिक, दार्शनिक एवं साहित्यिक विषयों के विशिष्ट ज्ञाता, अध्येता, एवं व्याख्याता हो गए। इंद्रिय संयम, भाषा समिति की बेजोड़ दक्षता के स्वामी जीवन भर भगवान महावीर की अप्रमत्त साधना के संदेश के अनुपालक रहे। अंतिम समय तक आप पुस्तक के कीड़े माने जाते रहे। जो भी ग्रंथ, पुस्तक सामने आयी अध्ययन शुरु। हिंदी, संस्कृत,

स्वीकार नहीं करना है। ये प्रलोभन देने वाले सच्चे गुरु कभी नहीं हो सकते। हम कल्पना तो करें कैसी होगी उनकी बुद्धि, प्रतिभा ? क्या उस वक्त इस सम्मानजनक पद का मोह उन्हें लुभा नहीं पाया होगा ? एक साधु ने उन्हें फीचर नंबर देने की बात कही ताकि बंबई जाकर धन कमा सके। अपनी बुद्धि, प्रतिभा के बल पर पैसा तो क्या उच्च पद व प्रतिष्ठा भी वे हासिल कर सकते थे। क्या उनके दिल में यह महत्त्वकांक्षा नहीं जागी होगी ? आम इंसान की महत्वाकांक्षा होती है कि अच्छे पैसे कमाऊं, बंगले गाड़ी में ऐश करूं, सर्वत्र कीर्ति, यश पाऊं। वह वातावरण से प्रभावित होता रहता है। लेकिन महापुरुषों की महत्वकांक्षा तो कुछ और ही होती है। वे वातावरण को स्वयं बनाते हैं।

१६ साल की भरी युवावस्था। उच्च पद.. चारों ओर प्रतिष्ठा, लेकिन गोवर्धन को इससे भी ऊंचा व प्रतिष्ठित पद परमात्म-पद पाने की ललक जाग पड़ी थी। अंतर में वैराग्य का सागर हिलोरें लेने लगा..। उसने छोड़ दिया .. स्वजन परिवार का मोह.. प्रतिष्ठा का प्रेम.. पैसों का प्यार ...!!

उस वक्त आपके श्रवण पटल पर जैन दर्शन के उद्भट्ट मनीषी आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. की संघीय व्यवस्था की जानकारी ने कुछ हद तक संतुष्टि दी। आपश्री को संघ नायक शांत क्रांतिदृष्टा युवाचार्य श्री गणेशीलाल जी म.सा. के विषय में भी जानकारी मिली। इतने संतों के सानिध्य मगर योग्य संत नहीं मिल पाने की स्थिति से गुजर रहे गोवर्धन को मुनिश्री गणेश का संक्षिप्त परिचय तो प्रभावित नहीं कर पाया लेकिन खादी धारण आदि विशेषताओं ने जवाहराचार्य एवं गणेशाचार्य की छवि नाना हृदय में उच्च कोटि के श्रमण के रूप में स्थापित कर दी। सचमुच सच्चे महापुरुषों की वाणी नहीं . । जीवन बोलता है।

हृदय में उत्सुकता लिए पहुंच गए, सारे परीषहों । सहन करते हुए, कोटा शहर में; जहां दिव्य, शांत, मुखमंडल के स्वामी अलौकिक शांत क्रांति के अग्रदूत, निर्ग्रन्थ श्रमण संस्कृति के सजग प्रहरी युवाचार्य श्री गणेशीलाल जी म.सा. के प्रथम दिव्य दर्शन अद्वितीय प्रवचन शैली ने गोवर्धन के अंतर्मन सर्वतोभावेन समर्पित कर दिया। प्रवचनोपरांत युवाचार्य श्री के चरण-सरोजों में उपस्थित हो समर्पणा एवं दीक्षा की भावना व्यक्त की। धीर-गंभीर लेकिन सहज भाव में युवाचार्य श्री ने फरमाया "भाई.. साधु बनना कोई हंसी खेल नहीं है। से पूर्व साधुता को समझने का प्रयत्न करो, करो, त्याग एवं वैराग्य की कसौटी में स्वयं को चित्त की चंचलता के साथ भावावेश में किसी पर बढ़ जाना श्रेयस्कर नहीं हो सकता। यदि मार्ग का अनुसरण करना है तो गुरु का भी परीक्षा लो। न अभी हमने तुम्हें ठीक से देखा है न तुमने हमें जाना है। आत्म-साधना के पथ पर वास्तविक वैराग्य भावना से विभूषित तपःपूत ही चल सकता है।" वगैरह वगैरह। गणेश गुरु की इस निस्पृहता से अवाक् गोवर्धन का चिंतनशील अंतर्मन शायद यही चिंतन करने लगा- जिस गुरु की छवि कल्पना में बसी थी- परंतु दर्शन कर नहीं पायी..

सुना था आपका नाम, कइयों की जुबान से,
बनी तस्वीर दिल में, कल्पना से अनुमान से।
कल्पना लगी बेजान, जब हकीकत में देखा,
सर ऊंचा हुआ तब, फक्र से, अभिमान से॥

अनेक जन्मों का, वर्षों का इंतजार सफल हो गया। अरे, ये ही तो वे गुरुदेव हैं, जिनकी कल्पना साधक संसार से पार उतारने वाले सद्गुरु के रूप में सकता है।

ये ही तो हैं रंगीन दुनिया में वैराग्य की सिंहगर्जना करके आत्म-दुनिया पर जादू करने वाले, संसार की दल से बाहर निकालकर अणगार का शृंगार सजाने वाले महान जादूगर। ये ही तो हैं आचार-चुस्तता व क्रियाशुद्धि के आग्रही सुविशुद्ध संयम धारक गुरुदेव। ये ही तो वैराग्य को मजबूत बनाने वाले जीवन-निर्माता।

सचमुच इतनी सारी विशेषताएं एक ही व्यक्ति में होना आश्चर्यकारी ही कहा जाएगा। शायद कुदरत ने चुन-चुनकर सारे के सारे गुण युवाचार्य श्री गणेश में ही भर दिये। ऐसे महान् व्यक्ति के साक्षात अस्तित्व का आज सामीप्य मिला, उन्हें सुनने का मौका मिला, क्या यह गौरव का विषय नहीं ?

द्वितीय जन्म :

गुरु की खोज पूर्ण करने के बाद आत्मखोज की तैयारी में लगे गोवर्धन ने सारे संघर्षों, परीषहों, पारिवारिक मोहादि का कठोर तपसाधना, दृढ़ संकल्प के साथ समभाव से सामना कर कपासन शहर के एक सुरम्य सरोवर के किनारे आम्रवृक्षों के निकुंज के मध्यविशाल आम्रवृक्ष के नीचे युवाचार्य श्री गणेशीलाल जी म.सा. के श्रीमुख से साध्वाचार की तमाम इयत्ताओं, आचार संहिता आदि का सम्यक श्रवण कर विशाल संख्या में उपस्थित अनुमोदक जनमेदिनी की साक्षी में १९ वर्ष की अल्पावस्था में पौष सुदी अष्टमी संवत् १९९६ को बाल ब्रह्मचारी व्रत से सुशोभित होते हुए युग प्रवर्तक, आत्म-ज्ञाननिधि ज्योतिर्धर पूज्य श्रीमद् जवाहराचार्य जी म.सा. के शासन में अणगार धर्म, दीक्षा अंगीकार कर भगवान महावीर के पथ के पथिक बन गए। कपासन की धरती में, जिनशासन के आगन में इस नवजात शिशु के जन्म की बधाइयां चहुं ओर गूंज उठी। जन्मदाता ने इस नवोदित मुनि का परिचय मुनिश्री नानालाल जी म.सा. की संज्ञा से कराया।

सेवा एवं साधना :

'मुंड़-मुडांना बहुत सरल है, मन मुंडन आसान नहीं।''

जब तक मन से राग-द्वेष, भोगेच्छा रूपी केश का लोचन नहीं हो जाता, सिर का मुंडन निरर्थक है। मुनिश्री नानालाल जी तो वैराग्य से मुंडित मन के साथ साधना कर रहे थे। अब तो वे सारी आंतरिक कलुषता को समूल नष्ट कर के ज्ञान-दर्शन-चारित्र एवं तप की साधना, आराधना में तल्लीन हो गए। सभी प्रकार के आभ्यंतर तप, बाह्य तप की साधना उनके संयम जीवन की पर्याय बन गई। ज्ञान की अलौकिक महत्ता को केंद्र में रखते हुये ज्ञानाराधना, संयम साधना एवं सेवाभावना को जीवन का त्रिकोण बना लिया। आपका जीवन इसी त्रिकोण में परिभ्रमण करता रहा।

आजकल दीक्षा लेते ही परिचय की, संपर्क साधने की, यशोलिप्सा की भावना घर कर जाती है। और यह मानवमन की गहरी भूख भी है। लेकिन नाना मुनि ने तो मनजीत की श्रेणी में खुद को स्थापित कर रखा था। इनकी पहचान अल्पभाषी, विद्याभिलाषी, अध्ययन प्रेमी साधक के रूप में स्वयमेव निर्मित होती चली गई। 'मुणिणो सया जागरन्ति'- इस आगम वाक्य "को आत्मसात् करते हुए मुनि नाना ने साधना की असिधारा पर ज्ञानाराधना पूर्वक पदन्यास किया। अपनी मर्मभेदक प्रज्ञा शक्ति के बल पर अप्रमत्त भाव से व्याकरण एवं साहित्य की जटिल पगडंडियों को पार करते हुए न्याय मुक्तावली, सांख्य कौमुदी, ब्राह्म सूत्र, शांकर भाष्य, भामति आदि विविध दर्शनों के गूढ़ ग्रंथ, प्रमाण नय तत्त्वालोक, स्याद्वाद मंजरी, प्रमाण मीमांसा, षट्दर्शन समुच्चय सटीक आदि ग्रंथों प्राकृत, शौरसेनी, अर्द्धमागधी, आदि भाषाओ व्याकरण, साहित्य, कर्मग्रन्थ, तत्त्वार्थ सूत्र सटीक, दिगंबर न्याय ग्रंथ, विशेषावश्यक भाष्य, आचारांगादि आगम, गीता, रामायण, पुराण, उपनिषद आदि का पैनी दृष्टि एवं सूक्ष्म प्रज्ञा से अध्ययन, मनन एवं सिंहावलोकन कर, जैन न्याय एवं दर्शन के उच्च कोटि के विद्वान बन गए। पूरा जीवन ही आगम-सम्मत बन गया। आचार्य श्री नानेश की साधना को आगम का पर्याय कह दिया जाए तो लेशमात्र भी अतिशयोक्ति नहीं है।

अल्प समय में ही आप आध्यात्मिक, दार्शनिक एवं साहित्यिक विषयों के विशिष्ट ज्ञाता, अध्येता, एवं व्याख्याता हो गए। इंद्रिय संयम, भाषा समिति की बेजोड़ दक्षता के स्वामी जीवन भर भगवान महावीर की अप्रमत्त साधना के संदेश के अनुपालक रहे। अंतिम समय तक आप पुस्तक के कीड़े माने जाते रहे। जो भी ग्रंथ, पुस्तक सामने आयी अध्ययन शुरु। हिंदी, संस्कृत,

प्राकृत, राजस्थानी, गुजराती आदि कई प्रांतीय भाषाओं के विद्वान नानेश ने सभी भाषाओं में उपलब्ध प्रायः हजारों ग्रंथों का मनन कर डाला और नित नया नवनीत विश्व को देते रहे । इनके मर्मस्पर्शी प्रवचन विश्व समस्याओं का सचोट समाधान करते सदैव प्रासंगिक रहेंगे । आचार्य श्री नानेश की सर्वक्षेत्रीय ज्ञान कुशलता ने उन्हें समस्त भारतीय दर्शनों के उच्चतम कोटि का अधिकृत तत्ववेत्ता बना दिया । खाने में कम वक्त बिगड़े और यह बचा हुआ समय ज्ञानार्जन में लगे, इस आशय से उत्कृष्ट भाव से आभ्यंतर एवं बाह्य तप की आराधना करते हुए यह साधना-पूत जीवन दिनोंदिन प्रगति पथ पर अग्रसर होता रहा । 'आणाए धम्मो' का पालन करते हुए जितना-जितना विकास करते गए उतने उतने सरल बनते गए । अहंकार, ईर्ष्या, क्रोध ये शब्द नाना मुनिजी के शब्द कोष में थे ही नहीं । जोरदार ज्ञान साधना, तीव्र वैराग्य, उत्कृष्ट त्याग और सबसे बढ़कर मंगलकारिणी गुरु निष्ठा फिर तो प्रगति में देर कैसी ?

कस्तूरी की सुगंध और सूर्य का तेज प्रगटे बिना कैसे रह सकता है ? मुनि नाना के गुणों की सुगंध... ज्ञान, दर्शन, चारित्र का तेज सर्व दिशाओं में प्रवाहित, प्रसारित हो गया । कुछ ही वर्षों में मुनि नानालालजी की बहुमुखी प्रतिभा की सुवास से दिशाएं महक उठीं । पूज्य श्री का जीवन स्वयं में एक सुनहरा इतिहास है ।

प्रतिसंलीनता तप आदि के साथ मुनि नाना ने अपना प्रथम चातुर्मास संवत् १९९७ में फलौदी में गुरु गणेश की ही सेवा में किया । प्रथम चातुर्मास में ही अपनी अपूर्व अद्भुत समत्व साधना, क्षमाशीलता की सौरभ जिन शासन एवं हुक्म संघ की वाटिका में फैलाकर अपने से ज्येष्ठतम संतों के हृदय में अपना स्थान जमा लिया । शारीरिक व्याधियों को दरकिनार करते हुए सेवाभाव से वृद्ध संतों की अनन्य एवं अनूठी से सेवा का आदर्श उपस्थित किया । पंचमाचार्य की वाणी सर्वत्र प्रशंसित होती हुई संवत २०१९ साकार रूप ले सकी । जिस अष्टम पट्ट की भविष्यवाणी श्री गुरु ने की थी उस पाट पर दांता का यह नाना आसीन हुआ । गुरु गणेश ने अपने संघ का उत्तराधिकार सौंपा उदयपुर का राजमहल जय गुरुनाना के जयघोष से गुंजित उठा । आश्विन शुक्ला द्वितीया संवत् २०१९ को वह शु दिवस संपूर्ण मानव सभ्यता पर, प्राणिमात्र पर उप करने वाला घोषित हुआ । निरभिमान स्वरूप में अपने गु प्रदत्त दायित्वों का निर्वहन करते हुए गुरु की वृद्धावस् में, उनकी संयमाराधना में, साता पहुंचाने की मनोज्ञ सेवा का आदर्श उपस्थित कर अंतिम समय तक गु सेवा में अप्रमत्त भाव से लगे रहे । कालवली के आगे नतमस्तक श्री संघ ने अपने आराध्य द्वारा घोषित युवाचार्य को उनके पाट पर आसीन कराया । श्री गुरु की वाणी को पल्लवित होने का अवसर आ गया ।

व्यक्ति एक, विशेषताएं अनेक :

आपश्री के आचार्यत्व काल में अनेक क्रांतिकारी एवं ऐतिहासिक घटना प्रसंग उपस्थित हुए हैं । गुरु कृपा के सहारे आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. ने आचार्य बनकर अनेक जीवों पर उपकारों की वृष्टि की और हजारों लाखों दिलों में बस गये । गुरु कृपा ऐसी फलीभूत हुई कि स्वयं करीब तीन सौ सुशिष्य-सुशिष्याओं के गुरुदेव बने ।

जल में कमलवत् निर्लिप्त जीवन :

जान बेले ने अपनी पुस्तक 'ए डायरी ऑफ प्रायवेट प्रेयर' में भगवान से प्रार्थना करते हुए कहा है-

O GOD ! LET ME USE

मैं इस दुनिया का उपयोग करूं, परंतु दुरुपयोग किए बिना, मैं दुनिया में रहूं, परंतु दुनिया का होकर नहीं । मैं सब कुछ होते हुए भी, अपने पास कुछ न हो ऐसा बनूं ।

महापुरुष दुनिया में रहते हैं, परंतु उन्हें इससे कुछ लेना देना नहीं । गुरुदेव के पावन चरित्र, गहन ज्ञान, परमात्म भक्ति, चिंतन, लेखन व प्रवचन से आकर्षित होकर विशाल भक्त वर्ग उनका दीवाना बना हुआ था । जल में कमल की तरह निर्लिप्त गुरुदेव सबके थे, परंतु किसी के होकर नहीं रहे । नाम, प्रसिद्धि की चाहना से कोसों दूर रहने वाले गुरुदेव को अपनी ज्ञान-साधना एवं

समता-साधना के अलावा किसी चीज में दिलचस्पी नहीं थी। कभी किसी ने आहार नहीं दिया, कभी स्थान नहीं मिला, प्रतिपक्ष ने अस्तित्व विलुप्त करने का निश्चय कर लिया था, लेकिन समता के झूले में झूले इस निराले संत ने जग में चाहे निंदा हो या स्तुति, समता यानी समभाव को ही तमाम विषमता के विष की अचूक औषधि बताया है। अपने अंतिम समय तक इन्होंने अपनी समता नहीं छोड़ी। बड़े से बड़ा आदमी आ जाये तो उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता था। उनका मंतव्य था कि गृहस्थों का अनावश्यक परिचय साधु-जीवन के दूध-पाक में जहर जैसा हैं।

हां, कोई योग्य आत्मा दिखाई दे तो उसे त्याग व वैराग्य के रंग से रंगने का भरसक प्रयत्न करते। शिल्पी के हाथ पत्थर आते ही वह यही सोचता है कि सुंदर नक्काशी करने के लिए इस पर हथौड़ी से कैसा प्रहार किया जाए ? तपः पूत जीवन की वैराग्य भरी वाणी हृदय-पत्थर पर सही चोट करती। पिंजरे में बंद पंछी को अपनी गुलामी खटकने लगती है तो आजाद होने के लिए वह जी जान से जुट जाता है। दयालु गुरुदेव पिंजरे में बंद पंछी की तड़पन भला कैसे देख पाते ? अनेक अनगढ़ पत्थरों को सुंदरतम कृति में परिणत किया जो आज भी विश्व में गुरुदेव की शिल्पकला को प्रसिद्ध कर रहे हैं। सबके लिए समता, वात्सल्य का अखूट भंडार खोल रखा था-

कोई तुम्हें माता कहे, क्योंकि तुम वात्सल्य की तस्वीर थे,
कोई तुम्हें पिता कहे, क्योंकि तुम कइयों की तकदीर थे।
न जाने लोग तुम्हें कितने नामों से पुकारते थे,
तुम तो कई हृदयों को बांधने वाली वैराग्य की जंजीर थे॥

<u>व्याख्यान में विविधता :</u>

आचार्य श्री नानेश के व्याख्यान में कौन सा विषय नहीं होता था ? यही एक सवाल है-

तत्त्वज्ञान रसिकों के लिए ऊंची कक्षा का तत्वज्ञान !
परमात्म भक्ति के दीवानों के लिए भक्ति रस की बातें !
वैराग्य-वासित आत्माओं के लिए वैराग्य रस का झरना !
बालकक्षा के जीवों के लिए सुंदर कथाओं का आकर्षण !

संसार की मोहवासित आत्माओं से एक वस्तु का भी त्याग करवाना कोई आसान काम नहीं हैं। परंतु गुरुदेव की वाणी की वेधकता श्रोता के दिल पर ऐसा असर करती है कि वह त्याग और वैराग्य के रंग में रंग जाता। आपकी ओजस्वी एवं मर्मस्पर्शी व्याख्यान शैली ने न केवल जैन समुदाय वरन जैनेतर वर्ग का भी जीवन परिवर्तन किया। प्रत्यक्ष उदाहरण हैं - **धर्मपाल बंधु।** अपने नवदीक्षित काल में चरितनायक आचार्य श्री गणेश की आज्ञा से करौली आदि क्षेत्रीय गांवों की स्पर्शना करते हुए आगे बढ़ रहे थे। एक छोटे से ग्राम में प्रवचन समाप्ति पर प्रवचन प्रभावित हरिजनों के मुखिया, जो वैद्यजी के नाम से प्रसिद्ध थे, ने चरितनायक के समीप आकर अपनी सामाजिक स्थिति से परिचित कराते हुए समाजोत्थान का निवेदन किया। स्व-पर उत्थान की प्राथमिक कक्षा में अध्ययनरत मुनिश्री ने तत्काल जल्दबाजी में तो कोई निर्णय नहीं लिया लेकिन उनकी विनती झोली में लेकर अपने गुरुदेव के समक्ष अर्ज करने की भावना व्यक्त कर आश्वस्त किया और जैन धर्म के प्रति जागृत हो चुके वैद्य जी को जवाहर किरणावली के अध्ययन की प्रेरणा दी। आचार्य श्री ने इस विषय पर मुनि नाना को समाज में भूमिका निर्माण करने का संकेत दिया जिसे चरितनायक ने शिरोधार्य तो कर लिया लेकिन सामाजिक उत्क्रांति का विचार बीज उनके दिलो-दिमाग में रोपित हो गया। जिसने उनके आचार्य काल में श्री वाणी के साथ वट वृक्ष का रूप धारण कर लिया। नागदा प्रवास पर प्रवचन सभा में जैन जैनेतर सभी उपस्थित थे। समवशरण-सी अद्‌भुत छटा, आचार्य देव के व्यक्तित्व एवं शांत बोधगम्य सरस-सरल प्रवचन सुधा ने वहां उपस्थित बलाई समाज के प्रमुख श्री सीताराम जी बलाई की अंतरचेतना को झकझोर कर रख दिया। उच्च पाट पर आसीन इस सर्वोच्च महामहिम में उन्हें अपने समाज के भविष्य निर्माता की तस्वीर दीखने लगी। बलाई समाज लक्षाधिक संख्या में इंदौर, उज्जैन, रतलाम, मंदसौर, मक्सी, नागदा आदि शहरों के आसपास मालव प्रांत के सैकड़ों छोटे-बड़े गांवों में फैला

हुआ था। जो मानव समाज के कथित श्रेष्ठ वर्ग द्वारा उपेक्षित एवं तिरस्कृत था। जिसके कारण हजारों व्यक्ति ईसाई एवं मुसलमान बनकर गोरक्षक से गो भक्षक बन गये। चरितनायक के श्रीमुख से जैन धर्म के उदार सिद्धांत का श्रवण कर प्रवोचनपरांत आचार्य श्री नानेश के समक्ष सीतारामजी ने अपने समाजोत्थान की विनती की। "जो स्वयं उठने और आगे बढ़ने को तत्पर हैं उनके लिए प्रकृति के हजारों अनुदान उपस्थित हैं। जैन धर्म के द्वार सबके लिए खुले हैं। श्रमण मर्यादा में रहते हुए जितना सहयोग दे सकते हैं, हम तत्पर हैं। एक साथ पूरे समाज को वदलना असंभव है। अत· पहले स्थानीय स्तर पर प्रयास किया जाए ... " आदि। आचार्य श्री के मर्मस्पर्शी शब्दों को सुनकर कथनीकार ने सर्वप्रथम साथियों सहित मद्य कुव्यसन आदि का त्याग कर सम्यक्त्व ग्रहण कर सामाजिक क्रांति का सूत्रपात किया।

कालांतर में श्री सीताराम जी की विनती अनुसार आचार्य देव नागदा से ६ मील दूर गुराड़िया पधारे। जहां आपने पंद्रहवें तीर्थकर श्री धर्मनाथ जी की प्रार्थना करते हुए अपनी ओजस्वी प्रवचन धारा जो सरल प्रांजल भाषा से युक्त थी के माध्यम से अर्जुनमाली आदि का दृष्टांत देकर ७० ग्रामवासियों के ५३३ परिवारों को प्रतिबोध दिया। इसके पश्चात् सीताराम जी आदि व्यक्तियों ने अर्ज किया - हमने दुर्व्यसनों का परित्याग किया किंतु हमारे नाम के आगे बलाई का जाति बोधक टीका लगा हुआ है जो एक हीनभावना का प्रतीक बन गया है। अतः कृपा कर हमारे जातिवाचक शब्द को भी परिवर्तित कर दें। १५वें तीर्थकर धर्मनाथ जी की प्रार्थना के माध्यम से धर्म की योग्यता इनके लिए तारक होती देख आचार्य देव ने प्रसंग की विवेचना कर इन गुण निष्पन्न लोगों को धर्मपाल जैन कहकर गुराड़िया ग्राम को एक तीर्थ भूमि का विरूद दे दिया। सारा वातावरण धर्मपाल जैन के उद्धारक आचार्य भगवान की जय से गुंजायमान हो उठा . निम्न श्रेणी के कहलाने वाले उन लोगों के हृदय ' देव एक अवतारी पुरुष के रूप में अधिष्ठित . अछूतोद्धार हेतु राजनैतिक , सामाजिक प्रयासों को पीछे छोंड़ते हुए इस अदभुत योगी ने १५ वर्ष की अवधि में लाखों दलितों-पतितों को मानवता की गरिमामय स्थिति में प्रतिष्ठित कर एक युगांतरकारी इतिहास की रचना की। यदि भावावेश में आकर मुनि नाना तुरंत बिना सोचे समझे वैद्य जी के प्रस्ताव को स्वीकार कर लेते तो इतनी क्रांति नहीं होती। आज के व्यक्ति को जरा सा प्रलोभन मिल जाये तो यशोलिप्सा की सिद्धि के लिए अपरिपक्वता की स्थिति में भी सामने आ जाते हैं। लेकिन उस समय मुनि नाना ने अपनी अपूर्व संयम-साधना के बलपर नैसर्गिक सहजता के साथ उस प्रस्ताव को ग्रहण कर गुरु गणेश के संकेतानुसार कार्य करते हुए भूमिका निर्माण की गतिविधियां संपादित कीं, जिसका सुफल है कि तत्समय रोपित क्रांति का वह बीज एक हरे-भरे वटवृक्ष के रूप में उपस्थित है। धर्मपालों के लिए अवतारी पुरुष श्री नानेश के महाप्रयाण पर विशेष वेदना से अभिभूत समाज ने अपनी अनेक संवेदनाभिव्यक्ति प्रेपित की।

श्री आचारांग सूत्र के द्वितीय अध्ययन पंचम उद्देशक सूत्र ८८ में कालज्ञ आदि शब्दों से भिक्षु को उपमित किया गया है। हालांकि यहां शुद्ध आहार की एषणा का विवेचन है लेकिन कालज्ञ आदि संबोधन आचार्य श्री नानेश के लिए अक्षरश. सत्य हैं। प्रत्येक आवश्यक कार्य का उपयुक्त समय जानकर समय पर अपना कर्त्तव्य करने वाला, अपने बल (शक्ति, सामर्थ्य) को पहचान कर उपयोग करने वाला, पर पीड़ा को समझने वाला, ज्ञान, दर्शन, चारित्र के सम्यक् स्वरूप को जानने वाला, प्रत्येक क्षण को पहचानने वाला, सिद्धान्तों का सम्यक् ज्ञान रखने वाला, आदि जिन वचनानुसार क्रमशः कालज्ञ, बलज्ञ कहलाता है और ये तमाम लक्षण आचार्य श्री नानेश के जीवन के पर्याय हैं।

जिज्ञासु के एक छोटे से प्रश्न "किं जीवनम ?" इस प्रश्न के समाधान में आचार्य श्री ने चौमासे भर हर प्रवचन में 'जीवन क्या है ' इसकी विशद व्याख्या की और समता-दर्शन का प्रतिपादन किया। यह सत्य आचार्य श्री की कथनी में ही नहीं करनी में भी उपस्थित

थी। प्रभावना एवं उत्थान के मार्ग पर किन-किन झंझावतों ने दर्शन नहीं दिये, लेकिन अद्भुत समता ने सबकी अक्षमता प्रकट कर दी। अपनी वैचारिक, दार्शनिक, आध्यात्मिक एवं अंतर्मुखी जीवन शैली से जगत को समता दर्शन और समीक्षण ध्यान की अनुपम भेंट देकर करुणासिंधु ने ऐसी ज्योति जलाई कि मानसिक रूप से अशक्य हो चुकी जनता शब्दातीत राहत पा सकती है। आचार्य श्री ने अपना अनुभव दिया है कि 'जब तक दर्शन प्रणाली को समता के धरातल पर युगांतरकारी रूप में प्रस्तुत नही किया जाएगा। तब तक दर्शन के प्रति विश्व-मानस आश्वस्त नहीं हो सकता।" आचार्य श्री द्वारा प्रस्तुत समता दर्शन का सिद्धांत जो जैन दर्शन को भाषा एवं शैली की दृष्टि से नूतन परिवेश में एवं वैचारिकता की एकांत परिधि से बाहर निकालकर विश्व शांति के अमोघ शस्त्र के रूप में प्रस्तुत करता है, वह वैचारिक, दार्शनिक एवं व्यावहारिक क्षेत्रों में समता का समुद्घोष कर अहिंसक उत्क्रांति का आधार है। यदि चिंतकों, दार्शनिको तथा समाज व राष्ट्र के कर्णधारों की चेष्टाएं इस दर्शन के अनुरूप हों तो मैं समझता हूं कि विश्व शांति का प्रयास एक आश्वस्त दिशा पा सकता है। इसके साथ ही दर्शन जगत अपने नव्य-भव्य रूप में पुन. स्थायी आलोक स्तंभ के रूप में प्रस्तुत हो सकता है। इसका सामान्य परिचय आचार्य देव के व्याख्यानों के अनुलेख 'समता दर्शन और व्यवहार' नाम ग्रंथ से प्राप्त किया जा सकता है।

जब सारी दुनिया मीठी नींद का आनंद ले रही हो, ऐसे समय में समीक्षण ध्यान की अप्रतिम साधना से अंतर रमण करते हुए नीद को चुनौती देने वाले महान विजेता थे- हमारे गुरु नाना। कब रात बीत जाती है, कब दिन निकल आता है, यह पता ही नहीं चलता।

सर्व प्राणियों की जब रात होती है तब साधक जागते हैं, वे जानते हैं- निगोद में बहुत सो चुके अब इस जागरण के जन्म में भी सोयेगें तो क्या पायेगें ? संयमी जीवन में प्रत्येक क्षण जागृत रहकर गुरुदेव ने जो पाया उसकी मिसाल लेकर हमें भी जागना है, ऐसा हम एहसास कर सकें, यही गुरु के प्रति सच्ची समर्पणा होगी। आचार्य श्री की रात चिंतन, मनन, ध्यान की रात एवं प्रभात को साधना-आराधना-उपासना का प्रभात कह दें, तो लेशमात्र भी अतिशयोक्ति नहीं होगी।

भक्ति नदिया बड़ी अनोखी, इसमें जो डूब जाता है।
तिर जाये वह भव सागर से, ना डूबे वो डूब जाता है॥

साधना का निचोड़ : श्री राम मुनि :

ऐसे युगपुरुष, समता विभूति, संयम सरोवर के राजहंस ने अपने ६० वर्षीय संयम साधना के अनुभव के आधार पर आत्मसाक्षी से हृदय कसौटी पर रगड़कर, परखकर एक कोहिनूर हीरा भी इस श्रमण परंपरा की सुरक्षा एवं प्रभावना के लिए दिया है। आचार्य देव ने जिन शासन में त्रिशतकाधिक सजीव संयमी मूर्तियां अपने हाथो से निर्मित की हैं। आचार्य देव की अनंत-अनंत उपकृति का ही परिणाम की उन्होंने पैरों तले ठोकरें खाते मिट्टी के ढेलों को, अनगढ़ पत्थरों को अपनी आध्यात्मिक कलात्मक दृष्टि से तराशकर सुंदर कृति निर्मित की है। उनमें से एक कृति, मूर्ति सबसे नयनाभिराम व शासन की शोभा में, प्रभावना में, अभिवृद्धि में सक्षम जानकर गुरुदेव ने श्री रामलालजी म०सा० को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। शासन पर पूरा अधिकार मिलने के बावजूद राम मुनिजी आचार्य श्री के निर्देशों को ही शिरसा वंद्य मानते हुए संयम-जीवन की सुंदरतम आराधना में मग्न रहे। यह तो आचार्य श्री नानेश के संस्कारों का ही प्रताप है। आचार्य श्री के रग-रग में पौरुष, साहस भरा हुआ है। कर्मोदय के प्रसंग से वृद्धावस्था में (सांसारिक शब्दों में कलेजे के टुकडे कहे जाने वाले बेटों) शिष्यों से चैलेंज मिला। जिस मूर्ति को आचार्य श्री ने अपने हाथों से रूप दिया तथा ऊँचे स्थान पर रखा था वह विपरीत हवा (कर्मों) के चलते सीधे मूर्तिकार के ऊपर गिर पड़ी। एक बारगी ऐसा आभास हुआ कि किसी चंडकौशिये ने पुनः महावीर को डस डाला। महावीर तो फिर दुग्ध (समता) धारा बहाते रहे लेकिन चंडकौशिक इस बार प्रतिबोधित नहीं हुआ।

आचार्य श्री नानेश तीर्थंकरों एवं पूर्वाचार्यों के अक्षुण्ण शासन की गरिमा में आंच पहुंचाने के कृत्यों- अनुशासनहीनता, शिथिलाचार, असत्य, के विरूद्ध जीवन भर निर्भीक योद्धा की तरह लोहा लेते रहे हैं और यह प्रस्तुति अस्सी वर्ष की आयु में भी अविचल अडिग थी। आचार्य श्री उन महापुरुषों उन युगपुरुषों में से हैं जो स्व-पर कल्याण के लिए धरती पर जन्म लेते हैं। जिनके जन्म पर स्वयं यह धरती गौरवान्वित महसूस करती है। अभी भी इस देश में लाखों साधु-महात्मा हैं, लेकिन सच्चे गुरु की कसौटी क्या है ? जिस तरह हर खान में हीरे जवाहरात नहीं होते, हर वन में चंदन के वृक्ष नहीं मिलते, हर सीप में मोती नहीं होता, उसी प्रकार हर देश में सच्चा साधु नहीं मिलता। सच्चा गुरु तो विरला ही होता है। संसार से मुंह मोड़कर साधना द्वारा स्व-आत्म कल्याण कर लेना अलग बात है लेकिन पाप और अज्ञान की दुनिया में भटकते हुए लोगों को अपने साथ लेकर मुक्ति की ओर उन्मुख होना कुछ और ही है।

स्वास्थ्य की अनुकूलता न होते हुए भी बीकानेर से ब्यावर आदि क्षेत्रों की स्पर्शना करते हुए उदयपुर पधारे। अपने उत्तराधिकारियों एवं सुशिष्यों की जिस सेवा सुश्रुषा की उन्हें आवश्यकता थी वह इन्हें सुलभ हुई। संवत् २०५६ का चातुर्मास भी स्वास्थ्य की दृष्टि से उदयपुर ही रहा। गुर्दे खराब हो चुके थे। दूर-दूर से पूज्यश्री की शाता पूछने नर-नारियों का तांता लग गया। पूज्य श्री की समाधि व मानसिक प्रसन्नता देखकर सब दंग रह जाते थे। कहने को तो स्मरण शक्ति ने भी जवाब दे दिया था लेकिन अंतर रमण का स्मरण, साधु-मर्यादा का स्मरण, संथारा ग्रहण करने का स्मरण जागृत था। बाह्य चक्षु भले क्षीण हो चुके हों लेकिन अंतर चक्षु प्रतिपल-प्रतिक्षण जागृत थे। चिकित्सकीय उपचार न लेना, सिटी स्केन की टेबल तक जाते ही शिष्यों को वापस लेकर चलने को कहना.. क्या काफी नहीं है अंतर शक्ति को पहचानने के लिए ? जीवन भर की समता-संयम साधना, ध्यान समीक्षण का निचोड़ अंतिम समय में साथ रहा। गुरुदेव अस्वस्थता में भी जागृत थे। अपना कार्य स्वयं करने में ही आनंद की अनुभूति करने वाले गुरुदेव कभी मांगलिक फरमाकर तो कभी व्याख्यान सभा में पधारकर [illegible] रोमांचित कर देते।

जैन शासन के एक महान आचार्य होने [illegible] बालकों के साथ पूज्य श्री स्वयं बालक बन जाते थे। दर्शनार्थी उपस्थित माता-पिता को सदैव शिक्षा देते, " छोटे बच्चों को डांटना मारना नहीं।" अपनी वाणी के आकर्षण में चारों दिशाओं को बांधने वाले गुरुदेव छोटे बच्चों के साथ भी सरलता से बातें करते। मां का वात्सल्य तो सिर्फ बालक के शारीरिक विकास तक ही सीमित रहता है परंतु ऐसे परमोपकारी गुरुदेव का वात्सल्य तो आध्यात्मिक विकास की ऊंचाइयों तक पहुंचाने के लिए अनहद को छूने लगता है। इस [illegible] काल में भी वह मिठास, वह अपनत्व (लेकिन [illegible] दूर) अखंड रहा। गुर्दे की खराबी के समाचार मिलते ही सबके हृदय चिंतामग्न हो गए थे। स्वास्थ्य लाभ की कामना में देश भर में हजारों तेले की आराधना हुई। सबके अन्तर में एक ही शुभेच्छा.. हमारे गुरुदेव शीघ्रातिशीघ्र अच्छे हों।

छा गया अंधकार :

कार्तिक बदी ३ संवत् २०५६ तदनुसार [illegible] अक्टूबर १९९९ बुधवार भरी सुबह में आकाश में [illegible] जगमगाते सूर्य को मानो चुनौती देते हुए पृथ्वी तल पर सर्वत्र अंधकार ने अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया। जगत में ज्ञान प्रकाश फैलाने वाला महातेजस्वी सूर्य [illegible] आज गगन के सूर्य के यौवन के समय ही (सुबह [illegible] बजे) अस्त होने की तैयारी (संथारा ग्रहण) कर ली और वे क्षण : चारों तरफ- गांव-गांव, नगर-नगर, डगर-डगर में गहरी स्तब्धता छा गई। पता नहीं कौन सा क्षण कब समाचार लेकर आये ? आचार्य श्री अपने अंतेवासी शिष्यों से कहते रहते, 'देखना मैं खाली हाथ न चला जाऊं।' अपने गिरते स्वास्थ्य के प्रति सचेत, सजग एवं [illegible] चिंतनशील रहते हुए आत्मबल सुदृढ़ बन रहा था। आंतरिक एवं बाह्य संघर्षों से सदैव गुजरता आचार्य [illegible] का जीवन श्रद्धानिष्ठों के लिए अमृत है। संयम मर्यादा [illegible]

हिमायती आचार्य श्री का जीवन समाज के लिए संजीवनी है तथा विश्व की भटकती जनता के लिए प्रकाश पुन्ज है। आत्म-तेज को प्रतिफल प्रवर्धित करते हुए सतत् जागरणा की स्थिति में जन-जन के प्राण आचार्य श्री नानेश ने अचानक एक फैसला सुना दिया। जिससे एक क्षण के लिए सैलाव थम गया। वक्त रुक गया। सेवाभावी सुशिष्यों ने २७ अक्टूबर को गुरुदेव से पृच्छा की भगवन, आपको दूध पीना है ? आचार्य श्री खामोश.. तदनन्तर पुनः प्रश्न भगवन.. संथारा करना है, प्रत्युत्तर में आंख व गर्दन से स्वीकृति दी। क्या हालत हुई होगी समीपस्थ चतुर्विध संघ की ? ९.३० बजे पुनः निवेदन किया गया भगवन.. पानी, दूध थोड़ा सा ले लें, पर भगवन ने कुछ भी संकेत नहीं दिया। तब फिर कहा गया- भगवन क्या संथारा पचक्खा दें ? तब उन्होंने श्री मुख से फरमाया पचक्खा दो। स्थिति स्पष्ट थी। समता साधक आत्म लोक में लोकोत्तर देहातीत साधना की गहराई में पहुंच चुके थे, जहां उन्हें भावी नजर आ रहा था तब तत्रस्थ उपस्थित चतुर्विध संघ की सहमति पर वज्रपात से भी भीषण प्रहार को सहते हुए मजबूत मन के साथ आचार्य श्री नानेश के उत्तराधिकारी श्री रामलालजी म.सा. के संकेतानुसार तीन शरीर एक प्राण, के सदस्य स्थविर प्रमुख श्री ज्ञानमुनि जी म.सा. ने दशवैकालिक सूत्र के चार अध्ययन श्रवण कराते हुए ९ बजकर ४५ मिनट पर तिविहार संथारे का प्रत्याख्यान करवा दिया। शास्त्रानुसार संथारे से पूर्व संलेखना होती है। अपच्छिम मारणंतिय संलेहणा भूसणा.. संथारा करने के पूर्व संलेखना करके शरीर को सुखाते हैं। यह क्रिया आचार्य प्रवर गत ६ माह से कर रहे थे। अल्प आहार के साथ वे संलेखना की ओर अग्रसर हो गए थे। किसी भी प्रकार की चिकित्सा सुविधा का उपयोग न कर अभौतिकी साधना में लग चुके थे।

साधारण व्यक्ति शरीर की जरा सी व्याधि में आत्म-तत्व विस्मृत कर देता है। लेकिन शरीर और आत्मा का भेद ज्ञान जिस महान् आत्मा के खून की एक-एक बूंद में परिणत हो गया, उनके मुख से शारीरिक अस्वस्थता के भाव कैसे झलक सकते थे। आत्म-साधना में लीन आचार्य देव के सौम्य शांत मुखमंडल पर एक अलौकिक प्रभा मंडल झलक रहा था। ऐसा लग ही नहीं रहा था कि उन्हें भयंकर वेदना हो रही है। अलौकिक ओज, तेज और समताभाव मुख मंडल पर विद्यमान था।

शाम चार बजे युवाचार्य श्री रामलाल जी म.सा. ने मंगलिक के दौरान उपस्थित जनों को तिविहार संथारे की स्थिति से अवगत कराया। भक्त हृदय की स्थिति भक्त ही जान सकता है उसे शब्दों में बांधना नामुमकिन है। इस समय सागर की गहराइयों को, आकाश की अनंतताओं को नापना, शब्दांकित करना संभव हो सकता है लेकिन दिलों में उमड़ते भावों को भांप पाना असंभव है। पौषधशाला नवकार मंत्र की धुन से गुंजित हो उठी।

आचार्य श्री के उत्कृष्ट भावानुसार सायंकाल युवाचार्य श्री ने उन्हें ५ बजकर ३५ मिनट पर चौविहार संथारे के प्रत्याख्यान करवा दिये। प्रतिक्रमण पश्चात् सभी सुशिष्य अपने गुरु को जिन स्तवन आदि श्रवण कराते रहे। रात्रि १०.३० बजे युवाचार्य श्री ने देखा कि नाडी ऊपर चली गई, नब्ज धीमी चल रही है ! न हिचकी, न डकार, न उल्टी, न दस्त ! १०.४१ बजे दाहिनी आंख की पलक गिरी और उठी ! नश्वर देह से आत्मा अलग हो गई ! अजर-अमर निराकार आत्मा ने नश्वर औदारिक शरीर का परित्याग कर दिया। जन-जन की भावनाएं आहत हुईं, असहाय वज्रपात ने चतुर्विध संघ को वियोग वेदना से अभिभूत कर दिया।

<u>आचार्य पदासीन</u> :

आचार्य प्रवर के नश्वर शरीर को छोड़ने के बाद पौषधशाला में उपस्थित शासन प्रभावक श्री संपत मुनिजी म.सा., आदर्श त्यागी श्री रणजीत मुनिजी म.सा., स्थविर प्रमुख श्री ज्ञानमुनि जी म.सा. आदि ने कर स्पर्श करते हुए युवाचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म.सा. को आचार्य की चादर ओढ़ा दी और इस तरह नवोदित आचार्य श्री रामलालजी म.सा.पर संघ का सारा उत्तरदायित्व आ गया। उन्होंने स्व. आचार्य देव के औदारिक शरीर को श्रावक समाज को वोसिरा दिया।

गंगा-यमुना बहाते नेत्र युगल अपने आचार्य देव के अंतिम दर्शन करने लगे। पौषधशाला के सभागार में विराजित यह काया अब भी वैसी ही लग रही थी, अब भी आभा मंडल पर वही तेज था, ओज था जैसा चैतन्य युक्त स्थिति में था। सारे देश में यह समाचार विद्युत गति से फैल गया, जिसे जो साधन मिला वह निकल पड़ा। सारा उदयपुर शहर जन-मग्न हो गया।

२८ अक्टूबर को दोपहर करीब १.३० बजे पौषधशाला से इस महानायक, युगपुरुष, महामनीषी महात्मा की अंतिम यात्रा आरंभ हुई। रजत विमान में श्वेत परिधान में ध्यान मुद्रा में अलौकिक तेज लिए विराजित यह पावन संयमित देह हजारों-हजार जनमेदिनी के कंधों पर सवार होकर श्री गणेश जैन छात्रावास प्रांगण पहुंची जो गुरु गणेशाचार्य की स्मृति स्थली के रूप में जानी जाती है। यात्रा मार्ग सिक्कों की बरसात, रंग गुलाल, केशर की महक से सरोबार था। इससे भी अधिक सुवासित वातावरण था आचार्य श्री नानेश के संयम साधना की महक से। अपार जनमेदिनी की साक्षी में जन-जन को मोहने वाली मूरत, कंचन काया आचार्य देव के संसारपक्षीय भतीजे श्री रतनलाल जी पोखरना, श्री रूपलाल जी पोखरना एवं श्री अशोक जी पोखरना द्वारा अग्नि को समर्पित कर दी गई। लक्षाधिक नेत्रों के आर्तध्यान की स्थिति का प्रसंग था। जिन नेत्रों से इस काया को अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय रूप में देखा जाता था आज उसी काया को राख बनते देख रहे थे।

देश-विदेश में स्व. गुरुदेव को श्रद्धांजलियां दी गई। सभी ने गद्य-पद्य के माध्यम से भावाभिव्यक्तियां दी, सभी ने गुरुदेव के बताए मार्ग पर चलने को सच्ची श्रद्धांजलि बताया। गुरुदेव का मार्ग समता का मार्ग है। उसका अनुसरण कर हम आचार्य प्रवर को कालजयी बना सकेंगे।

-दु॰

✪

विश्व शांति की जान थे नानेश

विमल पितलिया

कसाइयों से अपराधियों को जीवन देने वाले नानेश कितने महान् थे,
बलाई जाति का उद्धार करने वाले नानेश कितने प्राणवान थे।
नानेश कौन थे? यह जानने के लिए बाहर नहीं जरा भीतर उतरो,
लाखों को समता का सिद्धान्त देने वाले नानेश कितने ज्ञानवान थे॥

नानेश श्रमण संस्कृति की शान थे,
नानेश भारत भूमि की आन थे।
नानेश क्या-क्या थे, क्या कहूं,
नानेश विश्व शान्ति की जान थे॥

-गोरवन क्षेम

पं. ज्ञानदत्त पाण्डेय

नानेश स्तवनम्

प्रान्ते विशाल ललिते च धुरीण पूज्ये,
धीरैः गंभीर बल शालि जनपदे च ।
यस्मिन् सदा भुवन पाल विराजमानाः,
गर्जन्ति सिंहमिव साहसिकाः प्रवीणाः ॥१॥

अर्थ- जो प्रान्त विशाल,सुन्दर तथा अग्रणी और आदरणीय है, जहां पर धीर, गंभीर और बलशाली लोग उत्पन्न होते हैं तथा जहां राजा लोग साहसी, प्रवीण तथा सिंह के समान निर्भीक रहते हैं ।

राणा प्रतापमिव यत्र परंतपानां,
सत्साहसेन जनरक्षणं तत्पराणाम् ।
आजीवनं हि दधतां व्रतपालकानां,
नित्यं जयोऽस्तु करुणार्द्र सुचेतनानाम् ॥२॥

अर्थ- जहां पर राणा प्रताप जैसे, शत्रुओं को मार भगानेवाले तथा सच्चे साहस से जनता की रक्षा करनेवाले और आजीवन प्रजापालक के व्रत को धारण करनेवाले एवं करुणा से भरे हुए सुन्दर मन वाले (अन्तःकरण) जनों की निरन्तर जय-जयकार (विजय) होवे ।

रम्या सुरम्य नगरी मनुजाधिपस्य,
नाम्ना पुरेण सतु चोदय राजधानी ।
तत्राभवन्नरवरो हि, गुरुर्गणेशः,
आचार्य वर्य जनता सकलस्य मान्यः ॥३॥

अर्थ- सुन्दर, मनोहर, नगरी जो मेवाड़ नरेश की राजधानी है, जिसका नाम उदयपुर है वहां मनुष्या में श्रेष्ठ गुरु गणेश हुए, जो जैनाचार्य बनकर सम्पूर्ण जनता के परम आदरणीय हुए ।

तस्यां धराभुविनोरम ग्राम दांता,
आस्ते हि यत्र सुषमा प्रकृतेर्सुरम्या ।
शृंगार मातृ तनयो जनिरत्नतुल्यः,
नाना क्रिया हि बहुतस्य जनस्य नाम्नः ॥४॥

अर्थ- उसी (मेवाड़ की पवित्र) धरती पर अत्यंत ही मनोहर दांता नाम का ग्राम है जिसकी प्राकृतिक सुषमा विलक्षण है । वहां पर शृंगार नाम की एक माता ने रत्न के समान एक पुत्र को जन्म दिया, जिसका नाम भी नाना (लाल) था और वह सभी क्रियाओं में निपुण था ।

सौन्दर्य तेज वपुषाऽपि . गभीर धीरः,
आस्ते जितेन्द्रिय वपुः न विकारभाजः ।

अर्थ- न्याय, भाष्य तथा चूर्णिका, टीकाओं एवं जैनागम ग्रन्थों के गूढ तत्त्वों का सम्यक् रूप से अध्ययन किया। साथ ही व्याकरण शास्त्र को पढ़ा और अन्य भाषाओं का भी पर्याप्त ज्ञान अर्जित किया।

दृष्ट्वा हि शिष्य विनयं गुरवो हि तुष्टाः,
योग्यं विचारयति योग्यतमं हि प्राप्य ।
आराधने हि खलु रत्नमय त्रयस्य,
सम्यग्विहस्य स तु वै सहते च कष्टान् ॥२१॥

अर्थ- योग्य शिष्य को पा करके गुरुदेव संतुष्ट हो गये, क्योंकि योग्य को प्राप्त करके योग्य ही विचार किया जाता है। गुरु के निर्देश में 'नाना' हंसते- हंसते सभी कष्टों को सह करके रत्नत्रय की आराधना में लग गये।

भूत्वाकुलालमिव 'सर्जनमृतिकारव्यं,
निर्मापणे स खलु जीवन भव्यतायाः ।
सम्यक् सुशोभ ननु ज्ञान विचिन्तनेन,
बाधां विगोच्य स हि चात्मसुखं चकार ॥२२॥

अर्थ- जिस प्रकार कुलाल (कुम्हार) मिट्टी से जो चाहे आकार दे देता है उसी प्रकार नाना ने भी अपने जीवन को भव्य बनाने के लिए अपने को मिट्टी के समान (अकिंचन, मुलायम, अभिमान रहित) बना लिया तथा दिन-रात ज्ञान-चिन्तन से अपनी शोभा को बढ़ा लिया और सभी बाधाओं को दूर करके आत्मसुख प्राप्त किया।

कृत्या प्रशंसित गुरोः खलु वै सपर्यां,
तस्मिन्नुवास स हि चोदयनाम पुर्याम् ।
यत्रास्ति वै गुरु गणेश गुरुर्निवासः,
दर्शार्थिभिः सुललितं हि भुवः तदीयम् ॥२३॥

अर्थ- प्रशंसनीय गुरु की सेवा करके 'नाना' ने उदयपुर में निवास किया जहां गुरु गणेश ने स्थिरवास कर रखा था। वहां की धरती दर्शनार्थियों से अति सुन्दर लग रही थी।

भाव्यं भविष्यति हि किं खलु संघचिन्तां,
दृष्ट्वा गणेश गुरुवर्य तदीय शंकाम् ।
नानेश शिष्यसुधियं खलु संदिदेश,
संघस्य चोन्नतिरयं बहु संकरिष्यति ॥२४॥

अर्थ- भविष्य में क्या होगा इस तरह की [illegible] चिन्ता को देख करके, उनकी शंका को मिटाने के [illegible] गुरु गणेश ने योग्य शिष्य और विद्वान तथा बुद्धि[illegible] दयालु नाना के तरफ संकेत किया तथा कहा कि यह [illegible] की बहुत उन्नति करेगा।

एकोनविंशतिगते हि सहस्रनेत्रे,
मासे हि चाश्विन सिते द्वितये च तिथ्याम्।
गर्जन्ति मेघ निवहाः जगती सुरम्या,
नानेश वर्य गुरु प्राप्य चमत्कृताभूत् ॥२५॥

अर्थ- दो हजार उन्नीस सम्वत् में तथा [illegible] शुक्ल में द्वितीया तिथि को, मेघों से घिरे हुए [illegible] के कारण सुन्दर लगने वाली धरती दीक्षा सम्पन्न '[illegible]' को पाकर धन्य हो गई।

पश्चाद्यथा च जगती शुशुभे च पूना,
कृष्णे च माघतिथि युग्ममये सुपुण्ये ।
आचार्य वर्य पदवीं समवाप्या नाना,
स्वीय प्रभाभिरिव यस्तिमिरं जहार ॥२६॥

अर्थ- दीक्षा सम्पन्न 'नाना' को पाकर वह [illegible] बहुत ही सुशोभित हुई, यही 'नाना' आगे चलकर [illegible] मास के कृष्ण पक्ष की द्वितीया तिथि को आचार्य पद [illegible] प्राप्त करके अपने तेज से भगवान सूर्य के समान सं[illegible] पाप रूपी अंधकार नष्ट कर दिया।

विश्वस्य शांतकरणं हि कथं समत्वं,
वैषम्य दूर करणं च कथं भवेयुः ।
भावं हि तस्य मनसः खलु संतुतोद,
भाव्यं विना न समतां जगतः प्रतिष्ठा ॥२७॥

अर्थ- विश्व को शांति कैसे मिलेगी, तथा [illegible] में समता भाव कैसे आएगा तथा विषमता को दूर [illegible] किया जा सकेगा ? ये सब मन के भाव दुःखी करने [illegible], क्योंकि समता के बिना कभी भी इस जगत की [illegible] संभव नहीं होगी।

सिद्धांत एव समता खलु विश्व पुष्टै,
अन्तर्भवस्तु परमार्गविदां मनीषा ।

सिद्धांत दर्शनमिदं खलु जीवनाख्यं,
आत्माख्य दर्शन मिदं परमात्म साध्यम् ॥२८॥

अर्थ- समता का सिद्धांत ही विश्व का पोषण करेगा, अन्य विद्वानों का मत इसी में समाया हुआ है। सिद्धांत दर्शन और जीवन दर्शन ही जीवन के आधार हैं, तथा आत्म दर्शन और परमात्मा दर्शन ही मुक्ति (परमात्म-साधन) के आधार हैं।

शंका न वै किमपि तत्र दुरूहमार्गे,
दृष्टौ मनः वपुषि चैव समत्व बुद्धिः ।
संभावयन् सुरगवीं सफल श्रमेण,
संस्कार संस्करण संस्कृति मातनोति ॥२९॥

अर्थ- नाना को इस दुरूह मार्ग पर चलने में तनिक भी शंका नहीं हुई क्योंकि उनके मन, दृष्टि और शरीर में भी समता भाव भर गया था। इसलिए नाना देवभाषा और देव संस्कृति को अपने सफल परिश्रम से अपनाते हुए लोगों के भी संस्कार का संस्करण (मार्जन, संशोधन) करते हुए सत् संस्कृति का निरन्तर विस्तार करने लगे।

उद्धारयन् हि खलु भव्यजनानेनकान्,
दीक्षां दिदेश खलु सार्धशतत्रयं वै ।
आचार्य वर्ष पदवीं खलु त्रिशं षट्कं ,
शान्त्यै गृहस्थ जनमार्ग प्रदो बभूव ॥३०॥

अर्थ- अनेक भव्य जनों का उद्धार करते हुए साढे तीन सौ से भी अधिक जनों को शुभ भागवती दीक्षा प्रदान की तथा छत्तीस (३६) वर्ष तक आचार्य पद को सुशोभित किया और गृहस्थों को शांति का मार्ग दिखाया।

संस्कार कार्यकरणाय हि मालवानां,
गत्वाहि तत्र मुनि पुंगव तां जगाम ।
तत्र स्थितान्, हि पतितान् च समुद्धरिष्यन्,
तान धर्मपाले करणेन बभौ स्वयं सः ॥३१॥

अर्थ- मालवावासियों को सुसंस्कारित करने के लिए मुनिश्रेष्ठ आचार्य नाना वहां गये और वहां उन पतित जनों का उद्धार किया एवं उनको धर्मपाल बनाया और स्वयं भी धर्मपाल प्रतिबोधक बन गये।

किं जीवनं हि विषये परिपृच्छमाणे,
सम्यक् ददर्श समतां खलु मार्ग श्रेष्ठम् ।
'नाना' हि बोध वचनेन समानवापुः,
सन्दर्शयन् स अतुलां ननु चात्मभावम् ॥३२॥

अर्थ- जीवन क्या है ? यह प्रश्न पूछने पर इसके उत्तर में आचार्य नाना ने समता के श्रेष्ठ मार्ग को ही देखा। इस प्रकार नाना ज्ञान (बोध) मय वचनों से सबको प्राप्त कर लिए अर्थात् सबके प्रिय हो गये और नाना ने सबके सामने अपने अतुलनीय आत्मा के भाव को प्रस्तुत किया।

अन्तः प्रवेशसुखयन् स च योगिराजः,
नव्यान् रहस्यमय बोध सुखान् ददर्श ।
ध्यानस्य चापि स परां च विद्यां जगाय,
प्राप्नोति चात्मशमनं हि समीक्षणेन ॥३३॥

अर्थ- योगियों में श्रेष्ठ 'नाना' ने विलक्षण आत्म-सुख का अनुभव करते हुए नये-नये रहस्य मय बोध सुखों (आत्मा की अनुभूतियों) को देखा (अनुभव किया)। ध्यान की भी एक नयी विलक्षण विद्या का आविष्कार किया तथा उस विलक्षण 'समीक्षण ध्यान' से आत्मशांति को प्राप्त किया।

मेवाड़ मालव तथा खलु मारवाड़े,
सौराष्ट्र गुर्जर गते च कृत प्रचारे ।
विस्तारयन् हि गुरु गौरवतां दिगन्ते,
मोहस्य बंधनगतो न कदापि 'नाना' ॥३४॥

अर्थ- मेवाड, मालवा और मारवाड़, सौराष्ट्र तथा गुजरात में नाना ने गुरु के यश का प्रसार किया, वह यश दिशाओं के अन्त तक फैल गया, किन्तु इतना यश बढने पर भी नाना कभी भी मोह (सांसारिक) बंधन में नहीं पड़े।

संदीप्यमान जिन शासनखेचरेषु,
संदीप्यते हि सुषमा खलु चेतनानाम् ।
वाचं प्रमाणयति यः जिन पंचमस्य,
जैनाष्टमो बहु तनिष्यति साधुमार्गम् ॥३५॥

अर्थ- जिनशासन का प्रभाव आकाश में तथा पशु पक्षियों में भी हुआ, इससे जीवों की शोभा और भी अधिक होने लगी। वास्तव में नाना ने पांचवे आचार्य की यह भविष्यवाणी सफल बना दी कि आठवां आचार्य साधुमार्ग का बहुत विस्तार करेगा।

पाटे जिनेन्द्र पदवीगत चाष्ट मोऽयं,
सम्यक् विभावयति यो हयनिशं जिनेशम्।
शास्तापि शासिततनुश्च बवर्ध संघं,
ज्ञानेन सेवित गुरुर्हि दिवं जगाम ॥३१॥

अर्थ- जैनाचार्य के आठवें आचार्य पद (पट) में अलंकृत करते हुए नाना निरंतर प्रभु के ध्यान में लीन रहते थे। वे जिनशासक होते हुए भी स्वयं पर भी शासन करते थे। इस प्रकार आचार्य नाना गुरु ने साधुमार्गी जैन संघ का प्रभूत विस्तार किया। और अन्त में आत्म-ज्ञान (गुणि) के द्वारा सेवित होकर स्वर्ग लोक को प्रस्थान कर गये।

-[illegible]

सबके हृदय सम्राट थे

कु. रुचि गोदी

शासन के सिरताज थे तुम, प्राणों के आधार थे,
सबके हृदय सम्राट थे तुम, जन-जन के किरतार।
किया एक बार भी जिसने, श्रद्धा से तुम्हारा दर्शन।
मान लिया मन ही मन तुमको, अपना सर्वस्व ओ खेवनहार।
बचपन से ही उच्च चेष्टाएं, आपकी पहचान थी॥
जन-जिज्ञासा शांत करने की, शैली बड़ी बलवान थी।
तुम्हारी अद्‌भुत जीवन शैली का, क्या गुणगान करूं मैं,
दिवाकर को दीपक दीखने से पहले डरूं मैं।
प्रलय काल के छाए बादल, हुआ तव महाप्रयाण,
छीन ली जैसे प्रभु ने हमसे, वसुंधरा की शान।
चिर शांति मिले आत्मा को, पाए पद परमातम,
अविस्मरणीय होवे जैसे, सत्यम् शिवम् सुन्दरम्।
हर कदम पर पाऊं गुरुवर, बस तुम्हारा आशीर्वाद,
मेरी आस्था के केन्द्र गुरुदेव, सुन लो मेरा अंतर्नाद।

-राजनांदगांव

डा. नेमीचन्द जैन

आचार्य श्री के साथ २४ घंटे

मुखातिब हूं एक जैनाचार्य से जो एक ऊंचे पाट पर, जिस पर एक कुशन है,
अपना दायां चरण लटकाये अत्यन्त अप्रमत्त भाव से आसीन हैं
और मेरी प्रणति को धर्मलाभ-के-रूप में लौटा रहे हैं। चौड़ा ललाट,
सांवला रंग, समदर-से-गहरे नेत्र, ऐसे नेत्र जिनके भीतर नेत्र हैं और जिन्होंने
मोतियाबिंद के आघात सहे हैं- एक चश्मा मोटी फ्रेम का
नाकोनक्श आध्यात्मिक, धवल चादर,
मुखपत्ती में-से झांकता सस्मित/अथक चेहरा और मन में सीधे गहरे उतर जाने वाली वाणी।

एक-एक शब्द सोचा हुआ। विवेक और मुनित्व की तुला पर तुला हुआ।
कोई छुपाव नहीं है। सब कुछ खुला है/मन के तमाम रोशनदान
उन्मुक्त हैं- कोई आच्छादन नहीं है उन पर। साफ-सुथरा जीवन, साफ-
सुथरा मन, सब कुछ विवेक-के-रजोहरण से प्रमार्जित और सम्यक्त्व-की-पूंजणी
से निर्मल।

जो कहते हैं, उसे सौ टका जीते हैं, और जो किया हुआ है, मानिये, उसकी जड़ आचरण में पाताल तक। बातचीत में कोई झुंझलाहट या चंचलता नहीं है। कोई सवाल कीजिये, अक्षुब्ध उत्तर लीजिये। निराकुलता का क पूरा-का-पूरा दरिया लहरें ले रहा है। चारों ओर अखूट वत्सलता की कादम्बिनी (मेघघटा) घिरी है और मैं उसकी ीतल छांव में मन्त्रमुग्ध बैठा हूं।

तय है कि मुझे लगभग पन्द्रह दिनों तक उनसे जैन धर्म/दर्शन/समाज के विभिन्न पहलुओं पर एक बहुपर्ती ातचीत करनी है और अपने प्रिय पाठकों को उनके सडसठ साला जीवन का अनुभावामृत पान कराना है। साधुमार्ग शेषांक के सिलसिले में मैं उनके साथ किस्तों में चौबीस घंटे बिताने की चित्तवृत्ति में हूं।

१२ जुलाई/रविवार को पहली उपनिषद् (बैठक) हुई। मेरे लिए यह एक बेहद उपयोगी अध्यात्म-सत्र था, त्संग/समागम का एक अद्वितीय अवसर। मेरे मित्र गजेन्द्र सूर्या मेरे साथ हैं। उन्होंने मुझे नियमित लाने-ले-जाने ा जिम्मा लिया है। वे साधु की चादर की तरह निष्कलंक और निर्मल मन के शख्स हैं। इन उपनिषदों में वे सर्वत्र, तिपल/प्रतिपग मेरे साथ रहे हैं और उन्होंने देखा है कि मैने किस उत्कण्ठा से प्रश्न किये हैं और आचार्य श्री ने कस विभोरता से उनके उत्तर दिये हैं। यदि उन सारे चर्चा-क्षणों को लिखने बैठूं तो कम-से-कम एक दो-तीन सौ ृष्ठों की किताब तो बन ही जाएगी, किन्तु 'तीर्थंकर' एक विचार-मासिक है, जिसकी सीमाएं हैं, अतः मुझे यह सब :-१० पृष्ठों में ही समेटना पड रहा है। काम मुश्किल है, किन्तु करना तो है ही।

कई कठिनाइयां सामने हैं। टेप-रिकॉर्डर काम में नहीं ले सकता और कोई आशुलिपिक साथ में नहीं है। यद्यपि आचार्य श्री के बोलने में त्वरा नहीं है, वे रफ्त: रफ्त: बोलते हैं और मुझे मौका देते हैं कि मैं उन्हें नोंद लूं, किन्तु मेरी भी सीमाएं हैं अत: कड़ी बीच-बीच में टूट रही है-जुड़ रही है और मैं अपने काम में जुटा हुआ हूं। हाथ अविराम चल रहा है और आचार्यश्री अत्यन्त आश्वस्त स्वर में मुझे मेरी जिज्ञासाओं के समाधान दे रहे हैं।

कुल मिलाकर ये बैठकें मन: प्राण को ताजा किये हुए हैं और एक इस तरह की दीपमालिका मनोपटल पर संजोये हुए हैं कि कैसा भी अंधेरा आये मुझे निराश होने की जरूरत नहीं होगी। जैन धर्म/दर्शन के ऐसे कितने पक्ष हो सकते हैं, जिनकी तुलना हम आधुनिक विज्ञान के विविध इलाकों से कर सकते हैं-यह देखकर मैं हैरान हूं।

मैं उनसे मुखातिब हूं। लग रहा है मुझे कि यदि साधुमार्गी जैन संघ ने ऐसी कोई व्यवस्था नहीं की कि आचार्यश्री के भीतर खुले ज्ञान-निर्झर जन-जन तक पहुंचे तो यह एक ऐसी भूल होगी जिसे कभी नहीं सुधारा जा सकेगा, हम सब एक ऐसे अमृत-कुण्ड से वंचित रह जायेंगे जो आज के राह-भटके आदमी को सही दिशा दे सकता है-उसके तन-मन को ठण्डक पहुंचा सकता है।

जैनाचार्य नानालालजी आग्रही बिलकुल नहीं हैं। वे सहज हैं। उन्हें कदाच कभी ऐसा लगता है कि उनका पांव किसी भ्रम या त्रुटि पर है तो वे तुरन्त आत्मस्वीकृति या आत्मशोधन के लिए तैयार रहते हैं।

ऐसे कई मौके आये जब उन्होंने अपनी बात को बड़े आश्वस्त चित्त से रखा और दूसरों के विचारों को खूब धीरज से सुना। उनके सामने छोटा-बड़ा कुछ होता नहीं है।

घर का 'नाना' किसी की व्यर्थ की 'हांहां' में नहीं पड़ता जैसा कि आमतौर पर कुछ साधु सस्ती लोकप्रियता-के-लोभ में वैसा करते देखे जाते हैं। वे 'ना' कह सकते हैं एक बार, दो बार, किन्तु इसका मतलब यह नहीं है कि वे 'हां' कभी कहते ही नहीं। सम्यक्त्व और सत्य के लिए उनके मन में प्रतिक्षण 'हां' है और मिथ्यात्व के लिए प्रतिपल 'ना'। वे साहसी हैं, [illegible] निर्ग्रन्थ हैं।

उनकी गठरी में ग्रन्थ हैं, ग्रन्थियां नहीं हैं। [illegible] ग्रन्थियों से मुक्त करने के लिए उन्होंने '[illegible]' और 'समीक्षण-ध्यान' जैसी [illegible] आविष्कृत किया है। ये दोनों, भारतीय चिन्तन, [illegible] अध्यात्म को उनका बहुमूल्य योगदान हैं। वे [illegible] हैं और चाहे जो/चाहे जब उनके पास आये [illegible] खोज में प्रवृत्त करने में रुचि लेते हैं। चुनौतियों [illegible] में उन्हें आनन्द मिलता है।

सम्यक्त्व-के-लिए-पराक्रम और [illegible] लालजी की एक विशिष्टता है। शाम के पांच [illegible] पांच मिनिट हुए हैं। १२ जुलाई, रविवार का दि[illegible] इतवारिया धर्मशाला का आचार्यश्री का पड़ाव-[illegible] मैं उनके स्वास्थ्य के बारे में पूछताछ कर रहा हूं। [illegible] रहे हैं अत्यन्त स्निग्ध टोन में- 'डाक्टर साहब' ([illegible] वात्सल्यमयी टोन को शब्दांकित करना संभव न[illegible]

'मैंने आसन खींच लिया है और [illegible] नजदीक हो गया हूं। मन में नाना जिज्ञासाएं हैं। [illegible] साधु-संतों से मिला हूं, कई आचार्यों से भेंट हुई है, [illegible] यह अवधूत उन सब से भिन्न है-जुदा है। [illegible] पर अड़ा है (इन्हें जिद कहा जाए या शुद्धता, [illegible] नहीं कर पा रहा हूं), किन्तु जिस रेखा पर ये खड़े [illegible] सुचिन्तित है, जल्दबाजी में निर्णीत नहीं है। वे [illegible] विस्तारक या टेप-रिकॉर्डर का उपयोग नहीं करते, [illegible] नहीं करते ? इसके उनके अपने तर्क हैं। उनका [illegible] है कि इससे वायुकायिक जीवों की विराधना होती [illegible] जैनाचार से इनकी कोई संगति नहीं है।

दूसरी ओर उनकी यह दलील भी है कि [illegible] करने से अपरिग्रह का अंकुश लगातार बना रह[illegible] कीर्ति की मूर्च्छा कम होती है और श्रोता [illegible] मनोयोग से सुनता है। यन्त्रीकरण की जटिलताओं [illegible] बचा जा सकता है। यन्त्रों का कोई अन्त नहीं है। [illegible] एक को काम में लीजिये, कल दूसरा अनिवार्य हो [illegible] परसों तीसरा दरवाजा खटखटायेगा और [illegible]

भग्न, या भुग्न हो जाएगी। आप कुछ कर ही नहीं पायेंगे, इसलिए यदि परेशानियों को कम करना हो तो मशीनों-के-दैत्य से स्वयं को बचाना चाहिये। मुझे लगा कि खादी पहिनने के पीछे भी कदाचित् यही सिलसिला है- जवाहरलालजी के मन में भी यही रहा होगा। मैं पूछ रहा हूं कि आज से बावन साल पहले जब आपने दीक्षा ग्रहण की थी तब के और आज के श्रावक में क्या फर्क आ गया है ? बोले-बदलाव हुआ है। वात्सल्य घटा है। पहले गुप्तदान द्वारा बिना कोई अहसान जताये एक श्रावक दूसरे श्रावक की मदद करने में गौरव समझता था, अब वैसा नहीं है, किंचित् है, किन्तु वह बात/वह रंगत नहीं है। शिथिलताओं से तो हर जमाने में जूझना पडा है। संघर्ष आज भी जारी है-जारी रखना चाहिये इसे ताकि प्रमाद से बचा जा सके और धर्म की मौलिकताओं को बचाया जा सके। साधुओं और श्रावकों की भूमिकाएं वस्तुतः अलग-अलग नहीं हैं। दोनों पूरक हैं। स्वाध्याय, सेवा और शुद्धाचरण में हम अपने युग की अनेक समस्याओं का समाधान तलाश सकते हैं।

१३ जुलाई/सोमवार की उपनिषद् का तेवर/जायका बिल्कुल जुदा था। सिलसिला वही था। प्यास और तडफ की किस्म भी वही थी, किन्तु रचनात्मक जिज्ञासा जगानी चाहिये। लोग दुनियावी ज्ञान की ओर दौड रहे हैं, किन्तु इस भागमभाग में उनका सबमें बड़ा नुकसान हो रहा है सम्यक्त्व का मुट्ठी से खिसकना। बोले-

समता-दर्शन और समीक्षण-ध्यान दो ऐसे हथियार हैं, जिनसे हम आज के युग की विषमताओं के महाभारत को जीत सकते हैं। आचार्य जवाहरलालजी महाराज के कारण स्वाध्याय की वृत्ति लौटी है- पुनरुज्जीवित हुई है।

स्वाध्याय को हमें अपने जीवन का अभिन्न अंग फिर बनाना चाहिये और ऐसे प्रयत्न करने चाहिये कि सामाजिक रागद्वेष घटे और साधु तथा श्रावक एक-दूसरे के नजदीक आयें। वस्तुतः उन्हें एक-दूसरे की शोधक इकाइयों के रूप में विकसित होना चाहिये। समता-दर्शन (दे.पृ. १२५-१३३) के विविध सोपानों की चर्चा करते हुए उन्होंने उसके स्वरूप पर व्यापक प्रकाश डाला।

१४ जुलाई/मंगलवार को समता-दर्शन पर चर्चा हुई। बोले- हमें समता-दर्शन के इक्कीस सूत्रों का पालन करना चाहिये। मैंने अनुभव किया है कि सामान्य बातों में से ही विशिष्टता आविर्भूत होती है। इन सूत्रों में से गुजरते हुए हम एक तरह की सामायिक या समाधि में से गुजरते हैं। श्रावक को हक है कि वह किसी भी शिथिलता को चुनौती दे, किन्तु दे उसे दूर करने के लिए- किसी को नीचा दिखाने के लिए नहीं। चुनौती का स्वरूप रचनात्मक हो, उपगूहनात्मक हो, और सद्भावनापरक हो। श्रावक की हैसियत इतनी बड़ी है कि यदि वह आगमोक्त कसौटियों का जानकार है तो आचार्य तक को चुनौती दे सकता है। इन/ऐसी परम पावन चुनौतियों के कारण ही साधुमार्ग निष्कलंक बना हुआ है। हम एक-दूसरे को गलत नहीं समझते, बल्कि एक-दूसरे को परस्पर उपकारक इकाई मानते हैं। दृष्टि ऐसी ही होनी चाहिये- विकास करना चाहिये इस तरह के उदार और सहिष्णु व्यक्तित्व का।

जब प्रसंगवश प्राकृत भाषा और साहित्य की बात चली तो बोले- उनका भरपूर प्रचार होना चाहिये। प्राकृत सरल है। उसका व्याकरण और वाक्य-विन्यास सरल है। उसे कुछ ही दिनों में सीखा जा सकता है। संघ इनके लिए काम कर रहा है। वास्तव में जैनधर्म को यदि जानना है, उसकी तमाम गहराइयों में, तो प्राकृत सीखे बिना कोई रास्ता नहीं है।

जब साधुमार्ग के साधुओं और श्रावकों के परस्पर संबंधों की चर्चा चली तो बोले-साधुमार्ग बहुत पुराना है। जितना पुराना णमोकार महामंत्र है, उतना पुराना है साधुमार्ग। साधुमार्ग में गुण और कर्म को महत्त्व दिया गया है। उसमें गुण-पूजा है, व्यक्ति-पूजा नहीं है। इसी तरह श्रावक हो या साधु, कर्म से ही उसे जाना जा सकता है। भगवान् महावीर का यह कथन कि-

कर्म से ही कोई ब्राह्मण होता है और कर्म से ही शूद्र-जन्म से कोई कुछ नहीं होता। इसी तरह कर्म से ही

श्रमणोपासक की पहिचान बनती है, वह जिस वंश में जन्मता है उससे उसकी पहिचान नहीं बनती।

१५ जुलाई/बुधवार को धर्म और विज्ञान पर चर्चा हुई, बोले-

शास्त्र की दृष्टि में जो विज्ञानवान् है वह आत्मा है और जो आत्मा है वह विज्ञानवान् है। विज्ञान वस्तुतः आत्मा का मूल गुण है। कहीं कोई छलावा नहीं है, सब कुछ अनेकान्तात्मक है। हमारा लक्ष्य आत्मा का शुद्ध स्वरूप है तदनुसार ही हमारी संपूर्ण साधना है। हमें समझना चाहिये कि धर्म और विज्ञान परस्पर पूरक हैं, वे एक-दूसरे से संघर्परत नहीं हैं। असल में जब हम खोजना शुरू करेंगे, तभी कुछ पायेंगे। जैनधर्म विज्ञान का अखूट खजाना है। हम अभागे हैं कि हमसे बारबार इसकी कुंजी गुम जाती है। हमें इस खजाने का न सिर्फ खुद उपयोग करना चाहिये वरन् सारी दुनिया के लिए उसे खोल देना चाहिये।

१६ जुलाई/गुरुवार को तीर्थंकरों के अवदान पर विचार हुआ। मैंने कहा-तीर्थंकर अपने युग के सर्वश्रेष्ठ परमाणुविद् थे। उन्होंने इसे अपनी साधना में दिगम्बर देख लिया था। संवर-निर्जरा की प्रक्रियाएं बिना परमाणु-दर्शन के तीव्रतर नहीं हो सकती। बोले-तीर्थंकरों की यह विशेषता है कि जिन्होंने अपने पूर्व तीर्थंकरों को न कभी पढ़ा और न कभी सुना, बल्कि सृष्टि के निगूढ़ रहस्यों को तप:साधना से जाना तथा जानने के लिए स्वयं के जीवन को प्रयोगशाला का रूप दिया।

पदार्थ की जो परिभाषा आज विज्ञान दे रहा है, वह तीर्थंकर सदियों पहले दे चुके हैं। 'उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत्' और 'गुणपर्ययवद्द्रव्यं' के रहस्य को समझ लेने पर पदार्थ की गहराइयों में उतरने में कोई कठिनाई नहीं है। आज का वैज्ञानिक यन्त्रों और औजारों में उलझ गया है, आत्मतत्त्व उसकी मुट्ठी से खिसक गया है। हमारी पारिभाषिक शब्दावली का यदि एक अनासक्त और संतुलित विश्लेषण किया जाए तो हम पायेंगे कि धर्म आज भी विज्ञान से दो कदम आगे है। विज्ञान उन्हीं दार्शनिक तथ्यों की पुष्टि कर रहा है, जिन्हें आज से सदियों पहले धर्म ने स्थापित किया था। सापेक्षता शुद्ध ज्ञान की माता है। वे अल्बर्ट आइन्स्टाइन का नाम लेते हुए बोले- विज्ञान ने इसे विलम्ब से छोड़ा और अपनाया किन्तु जबसे भी उसने इसे अपनाया है उसकी जययात्रा अधिक सफल-सार्थक सिद्ध हुई है। पता नहीं अब क्यों हम इस स्वस्थ चिन्तन-पद्धति को विस्मृत करना चाहते हैं ? ध्यान रखिये, जैनाचार्यों ने भौतिकी, जैविकी, गणित जैसी जटिल/सूक्ष्म विधाओं पर भी काफी गहरा विमर्श किया है।

छह दिन के अन्तराल के बाद आज फिर गजेन्द्र सूर्या आचार्यश्री के पड़ाव पर ले गये हैं। २२ जुलाई बुधवार है। पुनर्जन्म के सिद्धान्त पर चर्चा कर रहा हूं। पुनर्जन्म एक जटिल समस्या है। कुछ पुनर्जन्म को मानते हैं, कुछ नहीं मानते, किन्तु जो आत्मा का अस्तित्व मानते हैं उन्हें तो पुनर्जन्म मानना ही होता है। मैंने पूछा कि इस संबंध में जैनधर्म की क्या धारणा है ? बोले- पुनर्जन्म का सीधा-सादा अर्थ है एक शरीर को छोड़ कर अगले शरीर में प्रवेश। जैनधर्म का 'उत्पादव्ययध्रौव्य' सिद्धान्त इससे जुड़ा हुआ है।

शरीर अनित्य है, आत्मा नित्य, पर्याय अनित्य है, द्रव्य नित्य है। संवेदना का विश्लेषण करने पर भी पुनर्जन्म को जाना जा सकता है। पूर्वस्मृति में भी इसकी पुष्टि होती है। शास्त्रों में जाति-स्मरण की अनेक घटनाओं का विवरण आया है, वर्तमान में भी इस तरह की सैंकड़ों घटनाएं देश-विदेश में हुई हैं/होती रही हैं। परामनोविज्ञान ने भी पुनर्जन्म के समर्थन में तथ्यों का आकलन किया है। असल में सफलता की असली कुंजी तत्त्वश्रद्धान है-

उसके मिलने पर पुनर्जन्म स्वत: सिद्ध दिखाई देता है। ध्यान की प्रक्रिया में से होकर भी पुनर्जन्म-की सत्यता सिद्ध होती है।

चूंकि सूरज डूबने को था अत: पटाक्षेप हुआ और चर्चा को दूसरे दिन के लिए रोक लिया गया।

२३ जुलाई/गुरुवार/शाम लगभग डेढ़ घंटे तक कर्मसिद्धान्त पर चर्चा हुई। चर्चा कुछ गहरी और

तकनीकी थी। आचार्य बोले- डॉक्टर साहब, संपूर्ण जैनदर्शन कार्य-कारण पर टिका हुआ है। यहां किसी तर्कहीन तथ्य को स्वीकार नहीं किया गया है। कर्मसिद्धान्त की आधार-भूमि कार्य-कारण-नियम (लॉ ऑफ कॉजेशन) है। इससे भी पुनर्जन्म का सिद्धान्त पुष्ट होता है। जैन कर्मसिद्धान्त जैसा बोना, वैसा काटना तक ही सीमित नहीं है-वह इससे बहुत आगे और गहरे गया है।

२४ जुलाई/शुक्रवार को 'साधु और साधुमार्ग' टॉपिक छिड़ गया। आचार्यश्री बोले-मैं 'साधु' शब्द को विशेषण-रूप में ही लेता हूं। साधु से साधुत्व बनता है। साधुत्व अच्छाइयों, सुकृतों और अदर्शों का महायोग है। वह श्रमणोपासक के लिए मानक है, आदर्श है।

मैं द्रव्यसाधुत्व के पक्ष में तो हूं, किन्तु उसे भावसाधुता का साधन-मात्र मानता हूं। द्रव्यसाधुत्व साध्य नहीं है, साधन है, साध्य भावसाधुत्व ही है। साधना में जब तक अविकलता नहीं बनती, कुछ घटित नहीं होता।

इसके लिए आलोचना, प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान जरूरी हैं। आलोचना वर्तमान का प्रमार्जन है, प्रतिक्रमण अतीत का धारावाहिक/सावधान अवलोकन, और प्रत्याख्यान अनागत में दृढतापूर्वक कदम उठाते जाने का त्याग-संकल्प है। बुनियादी लक्ष्य समत्व है। जब तक हम विषमताओं और ग्रन्थियों से मुक्त नहीं होते, सत्य के नजदीक नहीं पहुंच सकते। समत्व तक पहुंचने, या सम में उतरने का माध्यम है द्वन्द्वमुक्ति। जैसे-जैसे हम समत्व की गहराइयों में गोते लगाते हैं, वैसे-वैसे उत्तरोत्तर हमारी मूर्च्छा घटती जाती है। साधु वह है जो समता से साक्षात्कार करे। समत्व और सम्यक्त्व एक ही हैं। दोनों एक-दूसरे में गड्डमगड्ड हैं, एक को पाने में दूसरे की प्राप्ति निश्चित है।

शिथिलाचार और क्रियोद्धार का संक्षिप्त इतिहास बताते हुए उन्होंने कहा-साधुमार्ग ने शिथिलाचार का कड़ा मुकाबला किया है, यही कारण है कि वह आज भी अक्षुण्ण बना हुआ है और जैनधर्म की मौलिकताओं की अचूक रक्षा कर रहा है।

२५ जुलाई/शनिवार को साधुमार्ग की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा-मैं तो अपने साधु-साध्वियों को भाई-बहिन मानता हूं। मेरे यहां छोटे-बड़े का कोई भेद नहीं है। एक संस्मरण सुनाते हुए बोले- एक बार जब मैं सीढ़ियां चढ़ रहा था, एक साधु ने जो मुझे पहिचान नहीं पाया पूछा-'कौन है?' मैंने कहा-'नाना'। 'आचार्य' मैंने नहीं कहा, 'नाना' कहा। आचार्यत्व परिग्रह है। मैं इसे सहज लेता हूं, इसे अहंकार की तरह पर्त-दर-पर्त जमने नहीं देता। साधुमार्गी संघ में कोई छोटा-बड़ा नहीं है। सब समान हैं।

साधुमार्ग की विशेषताओं को संक्षेप में बताते हुए उन्होंने कहा- साधुमार्ग निष्कण्टक नहीं है, वह दीखता सरल है, है कठिन। मर्यादा-पालन, अनुशासन, आत्मानुसंधान, निःशंक/स्वतन्त्र चिन्तन, अनवरत स्वाध्याय, सत्य-की-खोज, शिथिलाचार का विरोध और उससे बचाव, सम्यक्त्व में निश्चलता, सादगी, सारल्य, निष्कपटता, प्रजातान्त्रिक जीवन-पद्धति, राष्ट्रीय दृष्टि, लोकहित-के-लिए कटिबद्धता, रचनात्मक परिवर्तन के लिए अनुकूलता, उदारता, विनय, तितिक्षा, संगठन, समन्वय, समत्व, विश्वमैत्री इत्यादि साधुमार्ग के मूल आधार हैं।

समतादर्शन उसकी खास बुनियाद है। व्यक्ति और समूह में युगयुगों से पड़ी ग्रन्थियों को खोलना इसकी आरम्भिक प्रक्रिया है। खोलना और गलाना, गलाना और निकाल फेंकना इस प्रक्रिया के प्रमुख चरण हैं।

२६ जुलाई/रविवार और २८ जुलाई/मंगलवार को अधिक चर्चाएं नहीं हुईं। किन्तु एक महत्त्वपूर्ण वाक्य आज/इस क्षण भी मन पर टिका हुआ है-विकास की ओर हमार ध्यान है। धर्म में वय की अपेक्षा गुण को अधिक महत्त्व दिया गया है।

फिर एक लम्बा कालान्तर (गैप) आ गया। विशेषांक की तैयारी चल रही थी। प्रेस को मैटर (मुद्रण-सामग्री) देना था, अतः मैंने पन्द्रह दिनों से कुछ अधिक की छुट्टी ले ली और फिर १९ अगस्त/बुधवार को उनसे मिला। इस बार कषाय पर चर्चा चली। समीक्षण-ध्यान

में इन पर जुदा-जुदा विचार होता है ताकि व्यक्ति के भीतर जो सघन ग्रन्थियां अवस्थित है, उन्हें खोला जा सके। बोले-

कषाय बन्धन में डालने वाली दुष्प्रवृत्तियां हैं। सरल शब्दों में, आत्मा के भीतरी कलुष परिणाम का नाम कषाय है। आत्मा के स्वरूप का घात करने के कारण कषाय सबमें कड़ी हिंसा है। मिथ्यात्व सबमें बड़ी कषाय है। आसक्ति की तीव्रताओं की दृष्टि से कषाय के चार भेद हैं- अनन्तानुबन्धी, अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान, संज्वलन। क्रोध, मान, माया, लोभ से गुणा करने पर भेद सोलह हो जाते हैं। जैसे ही चर्चा ने शास्त्रीय मोड़ लिया मैंने कहा-आप तो कषाय का अर्थ बताइये और बताइये कि यह अहितकर क्यों है ? बोले-क्रोध आदि कलुषताएं कषाय हैं। चूंकि ये आत्मा के स्वभाव को 'कष'-ती हैं अर्थात् उसकी हिंसा करती हैं इसलिए इन्हें कषाय कहते हैं। इसी संदर्भ में प्रदेश, प्रकृति, स्थिति और अनुभाग बंधों पर भी चर्चा हुई। बोले-सब कुछ वैज्ञानिक है। जैनदर्शन में एक भी शब्द फिजूल नहीं है। वहां सब कुछ सार्थक और प्रासंगिक है। निर्मल अन्तर्दृष्टि चाहिये, उसके बिना कुछ नहीं होगा। मेरे द्वारा पुन: प्रस्तुत 'समीक्षण-ध्यान' व्यक्ति और समाज दोनों के लिए उपयोगी है। जब क्रोध, मान, माया और लोभ का समीक्षण करते हैं, तब मन की ग्रन्थियां आपोआप खुलने लगती हैं। चित्त निर्ग्रन्थ होने लगता है। रागद्वेष गलने लगते हैं। राग-द्वेष इस तरह कुछ अनन्य हैं कि राग-में-द्वेष और द्वेष-में-राग गर्भित हुआ है। किसी एक को छोड़ने पर दूसरा अपने-आप विदा हो लेता है।

२० अगस्त/गुरुवार को आचार्यश्री ने समीक्षण ध्यान को ब्यौरेवार समझाया।

२१ अगस्त/शुक्रवार को तप पर चर्चा हुई। बोले- जैन तप भेद-विज्ञानमूलक है। यदि वहां यह दृष्टि नहीं है तो तप कितना ही क्यों न हो, व्यर्थ और निष्फल है। तप तप है, उसका विज्ञापन नहीं किया जाता। तप सम्यक्त्व के लिए की गयी उत्कट साधना का नाम है। [illegible] तप के प्रचार पर, उससे संबंधित जुलूसों और शोभायात्रा पर बराबर अंकुश रखता हूं। वह साधु [illegible] क्या, जो सत्य कहने में झिझक अनुभव करता हो। [illegible] श्रावक का भी उपकार मानता हूं। वे मुझे संयम [illegible] सावधान रखते हैं। जब कोई श्रावक मुझे मेरी त्रुटि बता[illegible] है, तब मैं उस त्रुटि की आलोचना करता हूं, उस पर [illegible] देता हूं और बताने वाले के प्रति कृतज्ञता अनुभव कर[illegible] हूं। दोष जानने चाहिये ताकि उन्हें यथासमय दूर कि[illegible] जा सके। बोले- दवाई तो हम लेते हैं, किन्तु [illegible] प्रायश्चित्त अवश्य करते हैं। साधुमार्गी संघ में सा[illegible] साध्वी में कोई भेदभाव नहीं है। संयम के [illegible] सब बराबर हैं। मैं उन्हें गुरु-चेले की नजर से कभी न[illegible] देखता, बल्कि भाई-बहिन मानता हूं। मैं अपने [illegible] लगा रहता हूं।

मुझे यदि कोई योग्य साधु मिल जाए तो मैं [illegible] तरह से आत्मोन्नयन में लग सकता हूं। आत्मशुद्धि [illegible] साधु का सर्वस्व है। यही उसका मूलधन है। [illegible] या नष्ट होता है तो फिर कुछ बच नहीं रहता।

वैसे ही, क्रोध पर अपने विचार प्रकट करते हु[illegible] वे बोले- क्रोध एक किस्म की विवेक-शून्यता है। [illegible] पिता में क्रोध अधिक था, मां में बहुत कम था। [illegible] का मूल कारण अज्ञान या गलतफहमी है। क्रोध [illegible] रोग है, इससे बचना चाहिए। मौन और क्षमा इसके [illegible] उपाय हैं।

ईश्वर के स्वरूप पर चर्चा चली तो बोले-[illegible] क्या है ? दुनिया के सारे प्रकाश यदि जोड़ लिये [illegible] जो जोड़ बनेगा उसका नाम ईश्वर है। ईश्वर प्रकाश-[illegible] कैवल्य है। ज्ञान और प्रकाश पर्याय हैं। दोनों दो [illegible] अस्तित्व नहीं है।

खादी की बात चली तो बोले- आचार्य [illegible] गणेशीलालजी महाराज खादी धारण करते थे। आचार्य [illegible] जवाहरलालजी महाराज ने उसे संघ के लिए [illegible] बताया। खादी की पृष्ठभूमि पर अहिंसा और [illegible] हैं, पावनता भी है। मैं/हमारे तमाम साधु-साध्वी [illegible] ही उपयोग करते हैं। यह त्याग का प्रतीक भी है।

-सम्पादक-तीर्थंकर, इन्दौर

साक्षात्कार

बीसवीं शताब्दी के महापुरुष, जैन धर्म के महासाधक, साधुमार्गी जैन संघ के यशस्वी अष्टम आचार्य श्री नानालालजी म.सा.- आज हमारे बीच मौजूद नहीं है, लेकिन उनके श्रद्धावान असंख्य अनुयायियों के पास जमा है, सुरक्षित है, संग्रहित है- उनके स्थिर अनुशासित, धवल आचरण की अनन्त स्मृतियां, उनके पावन सानिध्य की अनमोल घड़ियां। चिरकाल तक संजोये रखेंगे उनके एक निष्ठ श्रावक। महापुरुषों के साथ बिताए क्षण मूल्यवान स्मृतियां हैं, अनमोल धरोहर हैं, जो बार-बार उनके विराट यशस्वी व्यक्तित्व को मन-मस्तिष्क में प्रतिबिंबित करती हैं। आचार्य श्री नानेश के प्रति अटूट निष्ठाभाव रखने वाले के स्मृति कोष में जमा सुनहरे पल, यादें उनसे बिछुड़ने की घटना पर भ्रम का पर्दा डालती हैं कि सदी के महापुरुष आराध्य देव आचार्य देव श्री नानेश इस संसार में हमारे बीच मौजूद हैं।

लोक मंगल के लिए संपूर्ण जीवन समर्पित करने वाले आचार्य श्री नानेश से समाचार पत्रों के लिए चर्चा करने का जब भी अवसर मिला, सामयिक विषयबद्ध प्रश्नों के साथ पहुंच जाता था। मुझे कभी निराशा नहीं हुई, लक्ष्य में असफल नहीं हुआ। हर बार, हर अवसर पर एवं स्थान पर उनसे खुल कर बात होती थी, लंबी चर्चाएं होती थीं। हमेशा उनकी विचार शैली में उन्हीं के द्वारा सृजित समता दर्शन का झरना झरता था, तर्कों के समाधान में समता का पुट रहता था। प्रस्तुत है, आचार्य श्री नानेश से लिए गए साक्षात्कारों के प्रमुख अंश-

विनोद- वर्तमान युग में धर्म आपसी विवादों के कारण अभिशाप बनता जा रहा है। तार्किक युग में क्या धर्म को वरदान साबित किया जा सकता है?

आचार्य श्री- धर्म का वास्तविक रूप नहीं समझने के कारण धर्म विडंबना का विषय बना हुआ है। धर्म का सही स्वरूप समझने के साथ ईमानदारी पूर्वक प्राथमिकता से जीवन में स्थान दे दिया जावे तो जन कल्याण के लिए धर्म वरदान साबित हो सकता है।

विनोद- भगवान महावीर के अनुयायी जैन क्या सैद्धांतिक मतभेद भुलाकर एकमत नहीं हो सकते ?

आचार्य श्री- भगवान महावीर के सभी अनुयायी समता सिद्धांत के रंगमंच पर आरूढ़ हो जाएं तो जो मतभेद, मनोभेद चलता है, वह समाप्त हो सकता है, और इसी आधार पर व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व विषमता समाहित करने में सक्षम बन सकता है।

विनोद- पूर्व जन्म की घटनाओं के विषय में आपका मत क्या है ?

आचार्य श्री- वैज्ञानिकों द्वारा प्रस्तुत तर्क जब तक सामने नहीं आजाते, तब तक इस विषय में मंतव्य प्रकट नहीं किया जा सकता है। इतना अवश्य है कि पूर्व जन्म की मान्यता युक्ति, तर्क, अनुभूति के धरातल पर सही साबित होती है।

विनोद- क्या साधुओं को अपनी आत्मा को कष्ट देना जरूरी है ?

आचार्य श्री- आत्मा का कष्ट व्यक्ति की मान्यता पर निर्भर है। मजदूर दिनरात श्रम करने पर भी कष्टानुभूति नहीं करता, वह सिर्फ रोजी, रोटी का यत्न करता है। आत्मसाधक आत्मा की स्वच्छंता प्राप्त करने साधना

मार्ग पर अग्रसर होता है, उसमें उसको आनंदानुभूति होती है। साधना के महत्व को न जानने, समझने वाले साधारण प्राणी कष्टानुभूति करते हैं, ये उनके अज्ञभाव का परिणाम है।

विनोद- अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र के लिए भगवान महावीर की क्या देन है, स्पष्ट कीजिए ?

आचार्य श्री- सारी दुनिया के लिए भगवान महावीर के अहिंसा, सत्य और अपरिग्रह आदि तत्व अमूल्य देन हैं। समग्र मानव, परिवार, समाज, देश और दुनिया उन्हें अपनाये। अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में रहने वाले विभिन्न देशों के प्रतिनिधि इन तत्वों को हृदयंगम कर आत्मसात कर लेते हैं, तो प्रभु महावीर की महत्वपूर्ण अद्वितीय देन सिद्ध हो सकती है।

विनोद- स्थानकवासी परंपरा किस दिशा में जा रही है ?

आचार्य श्री- स्थानकवासी परम्परा का कुछ विश्लेषण करना होगा। उसमें कई घटक हैं। जिन घटकों की आगमानुलक्षी सही पद्धति है, तो वह परंपरा सही दिशा में जा रही है। जिन घटकों में तीर्थंकर देवों द्वारा निर्दिष्ट आत्म-शुद्धि के मूल महाव्रतों की सुरक्षा को गौण कर आधुनिक युग के अनुरूप मनकल्पित आचार संहिता को प्रश्रय दिया जा रहा हो, वैसे घटक आत्मशुद्धि के लक्ष्य के प्रतिकूल जा रहे हैं, ऐसा कहा जा सकता है।

विनोद- समता महावीर भवन के नामकरण को लेकर विवाद क्या है? उपयुक्त समाधान क्या है?

आचार्य श्री- महावीर शब्द व्यक्तिवाचक है, जबकि समता शब्द सर्वव्यापक है, क्योंकि समता जीवन का परम लक्ष्य है, और सभी तीर्थंकरों व अनन्त केवलियों ने [illegible] अपने जीवन में उपलब्ध किया [illegible] भविष्य में मुक्ति प्राप्त करने वाली [illegible] आत्मा इस समता को प्राप्त करेगी, [illegible] भी नाम व्यक्ति की पसंद है, वह [illegible] रख सकता है। उसमें जब भी [illegible] पैदा होता है, तो वह गलत [illegible] तथ्यातथ्य ज्ञान के, विवेक के अभाव [illegible] होता है। कभी-कभी [illegible] मनोवृत्ति भी नाम को विवाद का [illegible] बना लिया करती है।

विनोद- श्रमण संघ व साधुमार्गी संघ में [illegible] मतभेद क्या हैं, इन्हें दूर क्यों नहीं [illegible] जाता ?

आचार्य श्री- श्रमण संघ व साधुमार्गी संघ में [illegible] सिद्धांतों में कोई मतभेद नहीं है, [illegible] समाचारी के सम्यक् अनुपालन [illegible] तफावत है। श्रमण संघ के निर्माण [illegible] समय जो उद्देश्य व समाचारी सर्वसम्मति से निर्धारित हुई उस पर यदि [illegible] के सभी सदस्य कटिबद्ध हो [illegible] मतभेद की स्थिति नहीं रहेगी।

विनोद- परिवार नियोजन के बारे में आपके [illegible] विचार हैं ? जैन शास्त्र कहते हैं [illegible] असंख्य योनियों में जन्म लेने के बाद [illegible] मनुष्य जीवन मिलता है, फिर इसे [illegible] रोका जाए ?

आचार्य श्री- कृत्रिम साधनों से परिवार नियोजन [illegible] के साथ खिलवाड़ है, किंतु बच्चे पैदा [illegible] के उनकी सुव्यवस्था नहीं कर [illegible] योग्य नहीं है। अत. मानवता का [illegible] है कि वैसी स्थिति में व्यक्ति को [illegible] कंट्रोल रखना चाहिए।

विनोद- गर्भपात को सरकार कानून [illegible] है। क्या भ्रूण हत्या रुकनी नहीं [illegible]

सरकार अजन्मने वाले मुंह को जन्म लेने से क्यों रूकवाती है?

आचार्य श्री- भ्रूण हत्या महापाप है। शास्त्रीय दृष्टि से मानववध के तुल्य है भ्रूण हत्या। सरकार चाहे उसे कानूनन वैध मानती हो, किंतु नैतिकता की दृष्टि से वैध कैसे कहा जा सकता है । सृष्टि में प्रत्येक प्राणी को जिंदा रहने का हक है, उससे इस हक को छीनना नैतिक नहीं कहा जा सकता है।

विनोद- राम जन्मभूमि विवाद में सर्वमान्य हल आपके मत से क्या हो सकता है ?

आचार्य श्री- राजनीतिक परिस्थितियों के रंग से रहित तटस्थ भाव से सौजन्यता पूर्वक वार्तालाप करने से हल संभव है । इस विवाद में वस्तु सत्य को जानना पड़ेगा, देखना होगा, सत्य तथ्य को । सत्य स्वीकार करने में किसी को एतराज नहीं होना चाहिए। राजनीति के चक्कर में इस विवाद को अनावश्यक तूल दिया जा रहा है। भूमि विवाद आजादी के पहले का विवाद है । मानवरक्त बहाने की बात पर आचार्य श्री ने कहा कि मुझे तो क्या हर धर्म के संत को दु.ख होता है । व्यर्थ खून खराबे से, निर्दोष लोग बलि चढ़ाए जाने से इसे रोका जाना चाहिए।

विनोद- ईश्वरीय शक्ति या कोई आध्यात्मिक अनुभव जो आपने अपने जीवन में पाया हो ?

आचार्य श्री- ईश्वरीय शक्ति अनुभूति का विषय है, जैसे किसी ने असली घी खाया, यदि उससे उसका स्वाद पूछा जाये तो स्वाद जानते हुए भी शब्दों में नहीं बता पावेगा। अत: इस अनुभूति की व्याख्या नहीं की जा सकती ।

विनोद- कुछ संत राजनीति में या देश की समस्याओं के बारे में दखल देकर अपने विचारों को सार्वजनिक करने लगे हैं। आपकी विचारधारा क्या है?

आचार्य श्री- जो सत्य तथ्य है उसे जनसाधारण के सामने रखना संतों का कर्त्तव्य है। अब उस तथ्य की सत्यता में कौन लपेटे में आता है, ये तो सोचने वाले पर निर्भर है। उदाहरण के लिए मदिरा पान निषेध करवा दिया जावे तो यह कार्य जन हितार्थ, पर शराब के ठेकेदारों को यह अच्छा नहीं लगेगा, यह उनका स्वभाव है ।

भारतीय संत परम्परा के सच्चे प्रतिनिधि, आत्म साधक, आत्म धर्मी, अखंड बाल ब्रह्मचारी, आचार्य श्री नानेश से अंतिम साक्षात्कार अनौपचारिक हुआ। साधारण बातचीत में उनके आधी शताब्दी से अधिक समय बीते आध्यात्मिक जीवन के लंबे सफर के बारे में पूछने पर बताया कि उन्हें इस जीवन से पूर्ण संतोष है, आपने अपनी बात में आगे फरमाया, कि आत्म-कल्याण एवं लोक मंगल के लिए जो मार्ग हमने चुना है, उसमें हमें पूर्ण संतुष्टि है । इस मार्ग में कोई रुकावट और अपूर्णता नहीं है । हम निरंतर अपनी साधना में लगे हुए बढ़ रहे हैं वस्तुतः आध्यात्मिक जीवन में अपूर्णता का प्रश्न ही नहीं है । इस सफर में बहुत अच्छा अनुभव होता है, क्योंकि इसके बिना शांति मिल ही नहीं सकती है। अपनी दिनचर्या निर्धारित रहती है । इस जीवन में साधना के लिए पूरे दिन की क्रियाएं निर्धारित रहती हैं । उन्होंने बताया कि वे दिन में साधना करते हैं, चिंतन करते हैं, प्रवचन होते हैं । अध्ययन एवं अध्यापन करवाते हैं । जैनाचार्य श्री नानेश ने पाट परम्परा कायम रखते हुए विद्वान, अनुभवी, शांत, शास्त्रज्ञ अंतेवासी शिष्य संत श्री रामलाल जी म.सा. को युवाचार्य की पदवी से विभूषित किया था । इस घटनाक्रम का पूर्वाभास इतने बड़े संघ में किसी को नहीं था कि आचार्य श्री इतना बड़ा निर्णय

एकदम ले लेगी। अचानक निर्णय पर क्रिया, प्रतिक्रिया तत्काल होना स्वाभाविक थी। अब सब सामान्य और सर्वमान्य हो गया। क्योंकि निर्णय में दृढ़ता थी। उनकी इस घोषणा के विरोध के बारे में पूछने पर उन्होंने बताया कि युवाचार्य की घोषणा के बाद विरोध जैसी बात मेरे सामने नहीं आई है। कई हजार किलोमीटर की यात्रा कर आए साधु, साध्वियों ने मुझे रिपोर्ट दी है कि युवाचार्य श्रीराम म.सा. के प्रति सब जगह संतोष है। हर जगह उनके प्रति उत्साह का संचार हो रहा है। इस चयन को लेकर सबको आशा है कि श्रीराम वीरशासन एवं संघ को आनेवाले समय में यश गौरव दिलवाएंगे।

-राज मेहता

हास्पिटल रोड, नीमच (म.प्र.)

साक्षात्कार प्रसंग -

१. २५ दीक्षा के प्रसंग पर १५ मार्च १९८४
२. रतलाम चातुर्मास, १९८८
३. महावीर जयंती, नीमच, १९८९
४. बीकानेर, १९९५

✿

शताब्दी के शिखर सन्त

डा. शोभनाथ पाठक

गुरुवर का महाप्रयाण सभी के लिए है असहनीय।
दाता की अमर विभूति हो गई दुनिया में वंदनीय।
मोड़ी-शृंगार सपूत श्रेष्ठता का जो यश फैलाये हैं।
उन्नीस वर्ष की आयु में भागवती दीक्षा जब पाये हैं।
धरती है धन्य कपासन की जो तप विभूति से हर्षित है।
आचार्य प्रवर गुरु नाना को सादर श्रद्धांजलि अर्पित है।
जब उदयपुर में युवाचार्य पद से समलंकृत आप हुए।
आचार्य पद इसी भूमि पर अर्पित कर सब धन्य हुए।
हे बाल ब्रह्मचारी गुरुवर सादर प्रणाम स्वीकार करो।
समता दर्शन के प्रखर प्रणेता इस युग का उद्धार करो।
विद्या की विविध विधाओं में इतिहास आपका अंकित है।
आचार्य प्रवर गुरु नाना को सादर श्रद्धांजलि अर्पित है।
जिनशासन की प्रभावना का जो कीर्तिमान स्थापित है।
युग दृष्टा, आगम पुरुष आप द्वारा सब कुछ निर्मित हैं।
हे श्रमण संस्कृति उन्नायक स्वर्णिम इतिहास बनाये हैं।
जब धर्मपाल प्रतिबोधक हो जीवन की राह दिखाये हैं।
सारी स्मृतियां नेत्र पटल पर क्रमशः पुनः प्रवर्तित हैं।
आचार्य प्रवर गुरु नाना को सादर श्रद्धांजलि अर्पित है।
संथारा पूर्वक देवलोक की गमन तिथि सनातन है।
निन्यानवें का वर्ष, स्मृति स्वयं समेटे धन्य हुआ।
हे शिखर संत इस शताब्दी के महाप्रयाण असह्य हुआ।
युग को आलोकित करने जीवन ज्योति समर्पित है।
आचार्य प्रवर गुरु नाना को सादर श्रद्धांजलि अर्पित है।

-ग्रा. पो. कलवारी, जिला सोनपुर (उ.प्र.)

नानेश नगर : एक दृष्टि

भारत की रत्नगर्भा धरती ने समय-समय पर साधु सन्तों एवं शूरवीरों को जन्म दिया है, जिन्होने धर्म एवं धरती की रक्षा करने में खुद को खपा दिया। राजस्थान प्रान्त के मेवाड़ अंचल में धर्म एवं राष्ट्र प्रेमी लोगों ने जन्म लेकर लोकहित एवं राष्ट्रहित में सराहनीय कार्य कर इतिहास के पन्नों में अपना नाम अमर कर दिया। इसी परम्परा में स्वर्गीय गुरुदेव श्री नानेश ने राजस्थान प्रान्त के चित्तौड़गढ जिले की कपासन तहसील अर्न्तगत दाँता नामक छोटे से गांव में जन्म लिया। गुरुदेव की जन्म स्थली दाँता आज नानेश नगर के नाम से प्रसिद्ध होकर एक तीर्थ-स्थल बन गई।

श्री अ.भा.सा. जैन संघ के भामाशाहों ने समाज सेवी श्री हरिसिंहजी रांका मुम्बई के अनुरोध पर नानेशनगर, दाँता को समता विकास का मुख्य केन्द्र बनाने हेतु आचार्य श्री नानेश समता विकास ट्रस्ट की स्थापना सन् १९९२ में की। आचार्य श्री के आशीर्वाद से इस ट्रस्ट के अध्यक्ष पद पर श्री हरिसिंहजी रांका, उपाध्यक्ष पद पर श्री रिद्धकरणजी सिपानी एवं श्री उत्तमचन्दजी खिंवेसरा आसीन हुए।

आचार्य श्री नानेश की जन्म स्थली नानेश नगर - दाँता में समता विकास ट्रस्ट ने जैन धर्म एवं दर्शन के प्रति जागरूकता एवं लगाव उत्पन्न कर स्वर्गीय गुरुदेव श्री नानेश द्वारा प्रणीत समता दर्शन के प्रचार-प्रसार द्वारा नई पीढ़ी को सही दिशा प्रदान करने, युवा वर्ग को आत्म-निर्भरता की ओर अग्रसर करने एवं नानेश नगर दाँता के आसपास के ग्रामीण तथा जन समुदाय की चिकित्सा आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु मूलभूत निम्न लक्ष्य निर्धारित किए-

१. सामान्य एवं उच्च शिक्षा : आवासीय सुविधा सहित उच्च स्तरीय प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक एवं महाविद्यालय की स्थापना करना।

२. व्यावसायिक एवं रोजगार प्रशिक्षण : समाज के युवा वर्ग को कला, उद्योग तथा टेक्नीकल (कम्प्यूटर) शिक्षण के माध्यम से रोजगार प्रशिक्षण देकर आत्म-निर्भर बनाना।

३. सामान्य एवं चल चिकित्सा : जन सामान्य के लाभ हेतु सामान्य चिकित्सा, प्रसूति गृह, चल चिकित्सा इकाई, प्राकृतिक चिकित्सा, योगासन केन्द्र स्थापित करना।

४. सुसंस्कार एवं व्यसन मुक्ति शिक्षा : आचार्य भगवन श्री रामेश के उपदेशों के आधार पर व्यसन मुक्ति का ज्ञान प्रदान करने हेतु सुसंस्कार भवन तथा विश्राम गृह स्थापित करना।

५. समता-साधना एवं समीक्षण-ध्यान केन्द्र : स्वर्गीय आचार्य पूज्य नानेश द्वारा प्रणीत समता दर्शन के आधार पर उच्च साधना हेतु "समता साधना एवं समीक्षण ध्यान केन्द्र" स्थापित करना।

प्रात: स्मरणीय स्वर्गीय आचार्य श्री नानेश के अनन्य भक्त श्री एच. एस. रांका, श्री आर. के. सिपानी. श्री यु. सी. खिंवेसरा ने ५० लाख रुपयों का प्रारम्भिक आर्थिक सहयोग प्रदान कर गुरु भक्ति का परिचय दिया। उक्त तीनों समाज प्रेमी महानुभावों के प्रयास से अब तक ट्रस्ट को १२५ लाख रुपयों का सहयोग प्राप्त हुआ। जैन समाज के भामाशाह श्री उमरावसिंह जी ओस्तवाल, श्री घेवरचन्द केशरीचन्द गोलछा ट्रस्ट गुवाहाटी एवं सेठ शेरमल फतेचन्द डागा ट्रस्ट गंगाशहर आदि के आर्थिक सहयोग से निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति होने लगी है।

स्वर्गीय नानेश की जन्म स्थली नानेश नगर में उच्च माध्यमिक विद्यालय, छात्रावास, चिकित्सालय, समता साधना एवं समीक्षण ध्यान केन्द्र आदि संचालित हैं। इन सभी योजनाओं में अलग से स्थायी कोष की स्थापना की गयी है ताकि ब्याज की राशि से इनका संचालन हो सके। ट्रस्ट की समस्त योजनाओं को पूरी करने के लिए चार करोड़ रुपयों की आवश्यकता अभी भी है।

सुसंस्कार एवं व्यसन मुक्ति शिक्षा के [illegible] आचार्य श्री नानेश के स्वप्न को साकार करने हेतु [illegible] श्राविकाओं तथा आवासीय विद्यार्थियों के लिए [illegible] रूप से धर्म ज्ञान, धार्मिक संस्कार एवं सात्विक [illegible] उच्च-विचार पर आधारित शिक्षा प्रदान की जा रही है। भविष्य में व्यसन मुक्ति एवं निर्व्यसन जीवन शिक्षा [illegible] करने की व्यापक और विशेष योजना है।

–सचिव आचार्य श्री नानेश समता विकास [illegible]
नानेश नगर, दाँता पो. भबराना - ३१३[illegible]

✪

सब तेरे गुण गाते

मोनीषा पारख

हर डिगते प्राणी को, सहारा देने वाले,
डगमगाती जीवन नैया को किनारा देने वाले।
ज्ञान दिवाकर, गुण रत्नाकर, समता रस भण्डारी,
समीक्षण ध्यान के योगी तुम थे, ३६ गुण धारी।
सच्चा साया पाया था सबने, तव चरणों में आकर,
महापुण्यशाली बना था जग, तेरा सहारा पाकर।
कैसी विडम्बना आई गुरुवर, जो आश्रय तुम्हारा छूटा,
प्रसन्नता और ज्ञान का कोष, रब ने हमसे लूटा।
जन जन के नयन तरसते, तेरे दर्शन को गुरु नाना,
किस दिशा में ढूंढे तुमको, बता दो कोई ठिकाना।
धरती अम्बर पर्वत सागर, सब तेरे गुण गाते,
नवोदित आचार्य राम को, श्रद्धा से शीश झुकाते।
भावपूर्वक विनती करता, आज सारा जमाना,
आचार्य श्री राम हमारी, नैया पार लगाना।

–[illegible]

साहित्य

अ- स्वरचित आ- संबंधित

अ- स्वरचित

प्रवचन साहित्य

१. अमृत सरोवर
२. आध्यात्मिक आलोक
३. आध्यत्मिक वैभव
४. आध्यात्मिक ज्योति
५. जीवन और धर्म (हिन्दी एवं मराठी)
६. जलते जाएं जीवन दीप
७. ताप और तप
८. नव निधान
९. पावस प्रवचन भाग-१,२,३,४,५
१०. प्रवचन पीयूष
११. प्रेरणा की दिव्य रेखाएं
१२. मंगलवाणी
१३. संस्कार क्रान्ति
१४. शान्ति के सोपान
१५. अपने को समझें, भाग-१,२,३
१६. एकै साधे सब सधे
१७. जीवन और धर्म
१८. सर्व मंगल सर्वदा

कथा साहित्य

१. अखण्ड सौभाग्य
२. कुंकुम के पगलिए
३. ईर्ष्या की आग
४. लक्ष्यवेध
५. नल दमयन्ती

चिंतन साहित्य

१. गहरी पर्त के हस्ताक्षर (हिन्दी, गुजराती)
२. अन्तर के प्रतिबिम्ब
३. समता क्रान्ति का आह्वान (हिन्दी, मराठी)
४. समता दर्शन : एक दिग्दर्शन
५. समता दर्शन और व्यवहार (हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती)
६. समता निर्झर
७. समीक्षण धारा
८. समीक्षण ध्यान एक मनोविज्ञान
९. समीक्षण ध्यान प्रयोग विधि (हिन्दी, गुजराती)
१०. मुनि धर्म और ध्वनिवर्द्धक यंत्र
११. निर्ग्रन्थ परम्परा में चैतन्य आराधना
१२. कपाय समीक्षण
१३. क्रोध समीक्षण
१४. मान समीक्षण
१५. लोभ समीक्षण
१६. कर्म प्रकृति
१७. गुण स्थान : स्वरूप विश्लेपण
१८. जिण धम्मो
१९. उभरते प्रश्न : चिन्तन के आयाम

शास्त्र

१. अन्तकृतदशांग
२. वियाह पण्णति सूत्रं प्रथम भाग

काव्य

१. आदर्श भ्राता (खण्ड काव्य)

आ-आचार्य श्री से संबंधित साहित्य

१. अन्तर्पथ के यात्री : आचार्य श्री नानेश १९८२
२. अविस्मरणीय झलक आचार्य श्री नानेश का सौराष्ट्र प्रवास १९८४
३. अप्टमाचार्य : एक झलक,
४. अष्टाचार्य गौरव गंगा १९८६
५. आचार्य श्री नानेश-एक परिचय (हिन्दी, गुजराती)
६. आचार्य श्री नानेश : विचार-दर्शन
७. गुजरात-प्रवास-एक झलक
८. सफल सौराष्ट्र प्रवास (गुजराती, हिन्दी)
९. आगम पुरुष-१९९२

एकादश श्रावक दायित्व प्रतिबोध

समता विभूति आचार्य श्री नानेश द्वारा प्रतिबोधित श्रावक वर्ग का दायित्व बिन्दुवार प्रस्तुत है-

- साधु-साध्वियां की निर्ग्रन्थता बरकरार रहे, उसमें किसी तरह का दोष नहीं लगे। इसकी पूरी सावधानी रखी जाय।
- त्यागी आत्माओं के समक्ष व धार्मिक अनुष्ठानों के समय सांसारिक बातें न हों।
- किसी व्यक्ति विशेष के प्रसंग को लेकर अपनी आस्था को चलायमान नहीं होने देना क्योंकि कभी-कभी सुनी हुई या देखी हुई बात भी भ्रामक या गलत हो सकती है। यदि सच्ची प्रतीत भी हो तो ही चिन्तन करना चाहिए कि व्यक्ति गलत हो सकता है पर जिनेश्वर देवों का सिद्धान्त गलत नहीं हो सकता।
- संघ के किसी सदस्य की व्यवस्था विषयक कभी कोई अन्यथा बात देखने या सुनने को आवे तो उसे इधर-उधर चर्चा नहीं करते हुए शासन-सेवा की भावना से उस बात को संघनायक अनुशास्ता तक पहुंचा देनी चाहिए।
- संघ के किसी सदस्य के पास अलग-अलग क्षमताएं होती हैं कोई स्नातक-अधिस्नातक आदि शिक्षित, प्रबुद्ध व बुद्धिजीवी होते हैं। उनके पास बौद्धिक क्षमता होती है। किसी के पास समय होता है तो किसी के पास शारीरिक क्षमता। इसी तरह किसी में वाचिक आदि अन्य अनेक क्षमताएं होती हैं।
- उन्हें अपनी क्षमतानुसार अपनी शक्ति/शक्तियों का समविभागीकरण कर बच्चों, युवाओं और महिलाओं आदि के लिए धार्मिक शिक्षण व्यवस्था, स्वधर्मी वात्सल्यता, स्वाध्याय प्रवृत्ति, जरूरतमन्द स्वधर्मी की अपेक्षित सेवा, अहिंसा प्रसार, ज्ञान प्रसार, असहाय एवं पीड़ित मानवता की सेवा, स्वधर्मियों की उन्नति के उपाय आदि विभिन्न रचनात्मक क्षेत्रों में अपनी क्षमता का सदुपयोग कर धर्म की प्रभावना करना।
- प्रभु महावीर के शासन का अनूठा प्रताप है, जिससे अच्छे-अच्छे घर-घरानों की संतानें भौतिकता के इस युग में भी भौतिक सुख-सुविधाओं से मुख मोड़कर संयमी जीवन अंगीकार कर रही हैं। ऐसे संयम [illegible] के प्रति श्रावक-श्राविका वर्ग का जो दायित्व है, उसका निर्वहन करने के प्रति सजग रहना।
- वर्तमान में साध्वियों की सुरक्षा एक गंभीर विषय बना हुआ है। उनके परिजन संघ के विश्वास पर [illegible] प्रदान करते हैं। उनके विश्वास को अखंड रखने की दृष्टि से तथा शासन सेवा की भावना से प्रत्येक व्यक्ति को अपना दायित्व समझकर रक्षा, सुरक्षा के प्रति विशेष रूप से जागरूक रहना।
- धार्मिक क्षेत्रों में बढ़ रही फोटो आदि प्रवृत्तियों के विषय में समय-समय पर निषेध करता रहा हूं। [illegible] को ध्यान में रखते हुए बैनर आदि के द्वारा स्वागत करने की परम्परा बनती जा रही है। उस पर गंभीरता से चिंतन करना चाहिए। त्यागियों का स्वागत बैनर आदि से नहीं अपितु तप-त्याग से किया जाना चाहिए।
- धार्मिक अनुष्ठान, सामायिक, पौषध, संवर, व्याख्यान, प्रार्थना, प्रतिक्रमण, ज्ञानचर्चा आदि में तल्लीनता से भाग लेना। हास्य कवि सम्मेलन, लोकरंजन आदि आत्म-साधना के अनुकूल नहीं होने से ऐसे कार्यक्रमों

का वर्जन करना आदि। इस प्रकार से श्रावक-श्राविका वर्ग अपनी क्षमता व शक्ति अनुसार संघ की भव्य सेवा कर सकते हैं।

- आधुनिकता का तूफान जोर पर है। यह तूफान कभी-कभी साधु-साध्वियों को भी विचलित करने वाला बन सकता है। ऐसी स्थिति में श्रावक-श्राविकाओं का कर्तव्य है कि वे गंभीरता, सतर्कता एवं विवेक का परिचय दें, अर्थात् विचलित होने वालों को अत्यन्त विनम्र शब्दों में संघ हित से प्रेरित हो निवेदन करें।

✪

बड़ीसादड़ी वर्षावास १९७०/सामाजिक क्रान्ति के सूत्र रूप उन्नीस प्रतिज्ञाएं/ सत्रह गांवों के प्रतिनिधियों का अमल के लिये चयन

१. मौसर या स्वामी वात्सल्य आदि किसी भी नाम से किये जाने वाले मृत्यु-भोज में न जीमनें जायेंगे और न ऐसा मृत्यु-भोज करेंगे।
२. विवाह में तिलक या लेन-देन की सौदेबाजी नही करेंगे।
३. सगाई (सम्बन्ध) होने के बाद उसे कोई पक्ष नहीं छोड़ेगा।
४. मृत्यु के बाद एक मास से अधिक शोक नहीं रखेंगे।
५. धर्म स्थान पर सादी वेशभूषा में जायेंगे और प्रवचन में मौन रखेंगे।
६. स्वयं यथाशक्ति धार्मिक-शिक्षा लेंगे व बालक-बालिकाओं को दिलायेंगे।
७. धर्मस्थान पर अथवा सामूहिक स्थान पर प्रतिदिन सामूहिक प्रार्थना करेंगे।
८. विवाह आदि समारोहों पर गंदे गीत गाने पर रोक लगवायेंगे।
९. जाति व धार्मिक रीति-रिवाजों में व्यर्थ खर्च नहीं करेंगे।
१०. प्रातः उठते समय व सायं सोते समय ११ नवकार मंत्र का जाप करेंगे।
११. दीक्षार्थी भाई-बहिनों की दीक्षा-भावना में बाधक नहीं बनेंगे बल्कि सहयोग देंगे और सादगी से सम्पन्न करावेंगे।
१२. कोई भी भाई-बहिन त्यौहारों के दिनों में शोक वाले के यहां रोने व रुलाने के लिये नहीं जावेंगे।
१३. विवाह आदि अवसरों पर बैंड बाजों में अनावश्यक खर्च नहीं करेगे।
१४. प्रतिदिन एक या माह में ३० सामायिक पूरी करेंगे।
१५. जाति सम्बन्धी व व्यक्तिगत झगड़ों को धर्म में नहीं डालेंगे।
१६. अनमेल विवाह नहीं करेंगे।
१७. आध्यात्मिक आहार हेतु धार्मिक पुस्तकों का यथाशक्ति पठन-पाठन करेंगे।
१८. संत-सतियों के यहां जहां भी दर्शनार्थी जायेंगे वहां सादा भोजन करेंगे।
१९. नैतिक व चारित्रिक बल बढ़ाने तथा असहायों को सहायता करने हेतु यथाशक्ति उदारता करेंगे।

एकादश श्रावक दायित्व प्रतिबोध

समता विभूति आचार्य श्री नानेश द्वारा प्रतिबोधित श्रावक वर्ग का दायित्व बिन्दुवार प्रस्तुत है-

- साधु-साध्वियां की निर्ग्रन्थता बरकरार रहे, उसमें किसी तरह का दोष नहीं लगे। इसकी पूरी सजगता र जाय।
- त्यागी आत्माओं के समक्ष व धार्मिक अनुष्ठानों के समय सांसारिक बातें न हों।
- किसी व्यक्ति विशेष के प्रसंग को लेकर अपनी आस्था को चलायमान नहीं होने देना क्योंकि कभी-कभी सुनी हुई या देखी हुई बात भी भ्रामक या गलत हो सकती है। यदि सच्ची प्रतीत भी हो तो ही चिन्तन करना चाहिए कि व्यक्ति गलत हो सकता है पर जिनेश्वर देवों का सिद्धान्त गलत नहीं हो सकता।
- संघ के किसी सदस्य की व्यवस्था विषयक कभी कोई अन्यथा बात देखने या सुनने को आवे तो उसकी इधर-उधर चर्चा नहीं करते हुए शासन-सेवा की भावना से उस बात को संघनायक अनुशास्ता तक पहुंचा देनी चाहिए।
- संघ के किसी सदस्य के पास अलग-अलग क्षमताएं होती हैं कोई स्नातक-अधिस्नातक आदि शिक्षित, प्रबुद्ध व बुद्धिजीवी होते हैं। उनके पास बौद्धिक क्षमता होती है। किसी के पास समय होता है तो किसी के पास शारीरिक क्षमता। इसी तरह किसी में वाचिक आदि अन्य अनेक क्षमताएं होती हैं।
- उन्हें अपनी क्षमतानुसार अपनी शक्ति/शक्तियों का समविभागीकरण कर बच्चों, युवाओं और बहिनों आदि के लिए धार्मिक शिक्षण व्यवस्था, स्वधर्मी वात्सल्यता, स्वाध्याय प्रवृत्ति, जरूरतमन्द स्वधर्मियों की अपेक्षित सेवा, अहिंसा प्रसार, ज्ञान प्रसार, असहाय एवं पीड़ित मानवता की सेवा, स्वधर्मियों की उन्नति के उपाय आदि विभिन्न रचनात्मक क्षेत्रों में अपनी क्षमता का सदुपयोग कर धर्म की प्रभावना करना।
- प्रभु महावीर के शासन का अनूठा प्रताप है, जिससे अच्छे-अच्छे घर-घरानों की संतानें भौतिकता के इस युग में भी भौतिक सुख-सुविधाओं से मुख मोड़कर संयमी जीवन अंगीकार कर रही हैं। ऐसे संयम साधकों के प्रति श्रावक-श्राविका वर्ग का जो दायित्व है, उसका निर्वहन करने के प्रति सजग रहना।
- वर्तमान में साध्वियों की सुरक्षा एक गंभीर विषय बना हुआ है। उनके परिजन संघ के विश्वास पर आज्ञा प्रदान करते हैं। उनके विश्वास को अंखड रखने की दृष्टि से तथा शासन सेवा की भावना से प्रत्येक व्यक्ति को अपना दायित्व समझकर रक्षा, सुरक्षा के प्रति विशेष रूप से जागरूक रहना।
- धार्मिक क्षेत्रों में बढ़ रही फोटो आदि प्रवृत्तियों के विषय में समय-समय पर निषेध करता रहा हूं। उन भावों को ध्यान में रखते हुए जैन आदि के द्वारा स्वागत करने की परम्परा बनती जा रही है। उस पर गंभीरता से चिंतन करना चाहिए। त्यागियों का स्वागत बैनर आदि से नहीं अपितु तप-त्याग से किया जाना चाहिए।
- धार्मिक अनुष्ठान, सामायिक, पौषध, संवर, व्याख्यान, प्रार्थना, प्रतिक्रमण, ज्ञानचर्चा आदि में तत्परतापूर्वक भाग लेना। हास्य कवि सम्मेलन, लोकरंजन आदि आत्म-साधना के अनुकूल नहीं होने से ऐसे कार्यक्रमों

का वर्जन करना आदि। इस प्रकार से श्रावक-श्राविका वर्ग अपनी क्षमता व शक्ति अनुसार संघ की भव्य सेवा कर सकते हैं।

- आधुनिकता का तूफान जोर पर है। यह तूफान कभी-कभी साधु-साध्वियों को भी विचलित करने वाला बन सकता है। ऐसी स्थिति में श्रावक-श्राविकाओं का कर्त्तव्य है कि वे गंभीरता, सतर्कता एवं विवेक का परिचय दें, अर्थात् विचलित होने वालों को अत्यन्त विनम्र शब्दों में संघ हित से प्रेरित हो निवेदन करें।

❂

बड़ीसादड़ी वर्षावास १९७०/सामाजिक क्रान्ति के सूत्र रूप उन्नीस प्रतिज्ञाएं/ सत्रह गांवों के प्रतिनिधियों का अमल के लिये चयन

१. मौसर या स्वामी वात्सल्य आदि किसी भी नाम से किये जाने वाले मृत्यु-भोज में न जीमनें जायेंगे और न ऐसा मृत्यु-भोज करेंगे।
२. विवाह में तिलक या लेन-देन की सौदेबाजी नहीं करेंगे।
३. सगाई (सम्बन्ध) होने के बाद उसे कोई पक्ष नहीं छोड़ेगा।
४. मृत्यु के बाद एक मास से अधिक शोक नहीं रखेगे।
५. धर्म स्थान पर सादी वेशभूषा में जायेंगे और प्रवचन में मौन रखेंगे।
६. स्वयं यथाशक्ति धार्मिक-शिक्षा लेंगे व बालक-बालिकाओं को दिलायेगे।
७. धर्मस्थान पर अथवा सामूहिक स्थान पर प्रतिदिन सामूहिक प्रार्थना करेंगे।
८. विवाह आदि समारोहों पर गंदे गीत गाने पर रोक लगवायेंगे।
९. जाति व धार्मिक रीति-रिवाजों में व्यर्थ खर्च नहीं करेगे।
१०. प्रातः उठते समय व साय सोते समय ११ नवकार मंत्र का जाप करेगे।
११. दीक्षार्थी भाई-बहिनों की दीक्षा-भावना में बाधक नहीं बनेंगे बल्कि सहयोग देंगे और सादगी से सम्पन्न करावेंगे।
१२. कोई भी भाई-बहिन त्यौहारों के दिनों में शोक वाले के यहां रोने व रूलाने के लिये नहीं जावेगे।
१३. विवाह आदि अवसरों पर बैंड बाजों में अनावश्यक खर्च नहीं करेगे।
१४. प्रतिदिन एक या माह में ३० सामायिक पूरी करेगे।
१५. जाति सम्बन्धी व व्यक्तिगत झगड़ों को धर्म में नहीं डालेगे।
१६. अनमेल विवाह नहीं करेंगे।
१७. आध्यात्मिक आहार हेतु धार्मिक पुस्तकों का यथाशक्ति पठन-पाठन करेंगे।
१८. संत-सतियों के यहां जहां भी दर्शनार्थी जायेगे वहां सादा भोजन करेंगे।
१९. नैतिक व चारित्रिक बल बढाने तथा असहायों को सहायता करने हेतु यथाशक्ति उदारता करेंगे।

समता-विभूति आचार्य श्री नानेश की चिन्तन-मणियां

अक्षय तृतीया के पावन प्रसंग पर अक्षय सुख प्राप्ति हेतु प्रारंभिक साधना के

❂ नव-सूत्र ❂

१. हे चैतन्य देव ! तू सोच कि ❂ मैं कहां से आया हूं ❂ किसलिए आया हूं ❂ क्या कर रहा हूं ❂ और क्या करना चाहिए ?

२. हे चैतन्य पुरुष ! ❂ तू चारगति चौरासी लाख जीव योनि से ❂ भटकता हुआ आ रहा है ❂ एवं ❂ अमूल्य मनुष्य जन्म ❂ पाया है ❂ और तू आर्य कुल आदि ❂ उत्तम संयोग से ❂ मग्न है ❂ अतः सोच ❂ तुझे क्या करना है ?

३. हे ज्ञान पुंज ! ❂ मनुष्य जन्म की पर्याय में ❂ तेरा परम शान्ति ❂ बाधा रहित अक्षय सुख ❂ एवं ज्ञान दर्शन चरितादि ❂ आत्मिक गुणों की प्राप्ति के लिए ❂ आना हुआ है ।

४. हे ज्योतिर्मय आत्मन् ! ❂ तू मध्यस्थ भाव से ❂ चिन्तन कर कि ❂ मैं क्या सोच रहा हूं ❂ क्या बोल रहा हूं ❂ और क्या कर रहा हूं ? ❂

   मैं वर्तमान में ❂ सांसारिक भौतिक ❂ सुख सुविधाओं को ही ❂ सर्वोपरि मान रहा हूं ❂ इन्हीं के लिए ❂ झूठ प्रपंच आदि ❂ अनेक प्रवृत्तियों में ❂ उलझ रहा हूं। ❂ अनभिज्ञता पूर्वक ❂ अमानवीय भावों में ❂ बहता रहा हूं। ❂ कटु शब्दादि का ❂ प्रयोग कर ❂ दूसरों के ❂ दिलों के टुकड़े ❂ किये जाने की ❂ प्रवृत्ति भी यदा कदा ❂ करता रहता हूं। ❂ क्या यह मेरे ❂ शुभागमन के योग्य है ? ❂ उत्तर होगा ❂ कदापि नहीं ।

५. हे सुज्ञ चैतन्य ! तुझे तुच्छ भाव से न सोचना है ❂ न चिन्तन करना है ❂ न बोलना है ❂ और न व्यवहार ही करना है ❂ यही तेरे लिए शोभास्पद है ।❂

६. हे प्रबुद्ध चैतन्य ! ❂ तू सोच एवं समझ कि ❂ मिथ्या श्रद्धा मेरी नहीं है। ❂ मिथ्या ज्ञान मेरा नहीं है। ❂ असत्य मेरा नहीं है। ❂ पर पदार्थों पर ममत्व भाव मेरा नहीं है। ❂ कषाय मेरा स्वभाव नहीं है। ❂ दूसरों की निन्दा करना ❂ सुनना ❂ क्लेश करना ❂ एवं मिथ्या दर्शन शल्यादि ❂ मन में रखना ❂ तथा मोह संबंधी ❂ कार्य करना ❂ मेरी आत्मा एवं अन्य की आत्मा के लिए ❂ हितकर नहीं है।

७. हे विज्ञाता ! तू अविचल ❂ श्रद्धान कर कि ❂ सुदेव, ❂ सुगुरु, ❂ सुधर्म, अहिंसा, सत्य, ❂ अचौर्य, ब्रह्मचर्य, ❂ अपरिग्रह ❂ एवं स्याद्वादादि ❂ सिद्धान्तों पर ही ❂ मेरी दृढ श्रद्धा है।

८. हे सिद्ध बुद्ध निरंजन आत्मन् ! सिद्धावस्था की अपेक्षा से ❂ तू दीर्घ नहीं है। ❂ तथा लौकिक ❂ विशेषणों से युक्त नहीं है। ❂ तेरा कोई ❂ वर्ण गंध रस ❂ स्पर्शादि युक्त भी नहीं है। ❂ न तू स्त्री है, ❂ न पुरुष है ❂ न नपुंसक है ❂ तो फिर क्या है ?

अरूपी है ❁ शाश्वत है ❁ अशरीरी है ❁ अजर है ❁ अमर है ❁ अवेदी है ❁ अखेदी है ❁ अलेसी है ❁ अक्षय सुख रूप है ❁ एवं ज्ञाता व दृष्टा आदि ❁ सम्परिपूर्ण आत्मीय ❁ गुणों से सम्पन्न है। ❁ अत: अपने स्वरूप को समझ। ❁

९. हे सुज्ञान आत्मन् ! तू ध्यान धर कि ❁ समग्र बन्धनों से विनिर्मुक्त बनूं। ❁ आत्मिक स्वरूप के ❁ आदर्श को सामने रखूं। सदा सर्वदा सम्यक् विधि से ❁ जीवन को उन्नत बनाऊं। ❁ यह मेरी शुद्ध अन्तरात्मा की ❁ श्रद्धा प्ररूपणा है ❁ और आचरण की ❁ परिपूर्णता के लिए ❁ शुभ प्रयत्न है।

यह भावना सदैव बनी रहे - समत्व भज भूतेषु निर्ममत्व विचिन्तय।
अपाकृत्य मन: शल्यं भावशुद्धि समाश्रय॥

नोट : उपर्युक्त नव सूत्रों को प्रतिदिन प्रात: प्रार्थना के पश्चात् चिन्तन मनन पूर्वक पहले एक बोले फिर सभी संयुक्त रूप से तन्मयता पूर्वक बोलें। किन-किन शब्दों को कहां तक बोले इस सुविधा के लिए स्थान-स्थान पर ❁ चिन्ह लगाया गया है।

❁

तुम विन जीवन शून्य है

प्रतिमा डागा

नाना गुरुवर आराध्य मेरे, मेरे जीवन के आधार।
नमूं-नमूं नमती चलूं मैं, नमन है मेरा बारम्बार।

श्रद्धा, आस्था और भक्ति के, जले दिल मे दीप हजार।
गुरु भक्ति में तल्लीन सदा, सदा करूं गुरु का उच्चार।

ज्ञान-ध्यान, तप-संयम सिखाया, दिया प्रेम का उपहार।
दीप जलाया इस नन्हें दिल में, रोशन बना मेरा संसार।

ना भूल पायेंगे गुरुवर तुमको, मुझपे किये लाखों उपकार।
हे ! ईश मेरे, हे ! मेरे विधाता, तुम्हीं मेरे तारणहार।

हर श्वास पे गुरु नाम तुम्हारा, गुरुवर मेरे बड़े उदार।
मन मंदिर में तुम्हें बिठाया, चढ़ाऊं सदा श्रद्धा के हार।

मेरे ह्रदय के भावों को, ह्रदय से करो गुरुवर स्वीकार।
तुम बिन जीवन शून्य बना है, आओ गुरुवर मन के द्वार।

-बीकानेर

चातुर्मास

कुल- ६०, साधुकालीन-२३, आचार्य पदोपरान्त-३७, साधुकाल के चातुर्मास : राजस्थान-१९, दिल्ली-२ मध्यप्रदेश-२, प्रथम फलौदी (राजस्थान) तेईसवां-उदयपुर (राजस्थान)

१.	फलौदी (राज.)	१९४० ई./वि.सं. १९९७
२.	बीकानेर (राज.)	१९४१ ई./वि.सं. १९९८
३.	ब्यावर (राज.)	१९४२ ई./वि.सं. १९९९
४.	बीकानेर (राज.)	१९४३ ई./वि.सं. २०००
५.	सरदारशहर (राज.)	१९४४ ई./वि.सं. २००१
६.	बगड़ी (राज.)	१९४५ ई./वि.सं. २००२
७.	ब्यावर (राज.)	१९४६ ई./वि.सं. २००३
८.	बड़ीसादड़ी (राज.)	१९४७ ई./वि.सं. २००४
९.	रतलाम (मध्यप्रदेश)	१९४८ ई./वि.सं. २००५
१०.	जयपुर (राज.)	१९४९ ई./वि.सं. २००६
११.	दिल्ली	१९५० ई./वि.सं. २००७
१२.	दिल्ली	१९५१ ई./वि.सं. २००८
१३.	उदयपुर (राज.)	१९५२ ई./वि.सं. २००९
१४.	जोधपुर (राज.)	१९५३ ई./वि.सं. २०१०
१५.	कुचेरा (राज.)	१९५४ ई./वि.सं. २०११
१६.	बीकानेर (राज.)	१९५५ ई./वि.सं. २०१२
१७.	गोगोलाव (राज.)	१९५६ ई./वि.सं. २०१३
१८.	कानोड़ (राज.)	१९५७ ई./वि.सं. २०१४
१९.	जावरा (म.प्र.)	१९५८ ई./वि.सं. २०१५
२०.	उदयपुर (राज.)	१९५९ ई./वि.सं. २०१६
२१.	उदयपुर (राज.)	१९६० ई./वि.सं. २०१७
२२.	उदयपुर (राज.)	१९६१ ई./वि.सं. २०१८
२३.	उदयपुर (राज.)	१९६२ ई./वि.सं. २०१९

आचार्य पदोपरान्त चातुर्मास

कुल-३७, १९६३ ई.-१९९९ ई. (राज.)-२३, म.प्र. -८, महाराष्ट्र-४, गुजरात-२, प्रथम-रतलाम (म.प्र. सैंतीसवां-उदयपुर (राज.)

१.	रतलाम (म.प्र.)	१९६३ ई./वि.सं. २०२०
२.	इन्दौर (म.प्र.)	१

३.	रायपुर (म.प्र.)	१९६५ ई./वि.सं. २०२२
४.	राजनांदगांव (म.प्र.)	१९६६ ई./वि.सं. २०२३
५.	दुर्ग (म.प्र.)	१९६७ ई./वि.सं. २०२४
६.	अमरावती (महाराष्ट्र)	१९६८ ई./वि.सं. २०२५
७.	मन्दसौर (म.प्र.)	१९६९ ई./वि.सं. २०२६
८.	बड़ीसादड़ी (राज.)	१९७० ई./वि.सं. २०२७
९.	ब्यावर (राज.)	१९७१ ई./वि.सं. २०२८
१०.	जयपुर (राज.)	१९७२ ई./वि.सं. २०२९
११.	बीकानेर (राज.)	१९७३ ई./वि.सं. २०३०
१२.	सरदारशहर (राज.)	१९७४ ई./वि.सं. २०३१
१३.	देशनोक (राज.)	१९७५ ई./वि.सं. २०३२
१४.	नोखामंडी (राज.)	१९७६ ई./वि.सं. २०३३
१५.	गंगाशहर-भीनासर (राज.)	१९७७ ई./वि.सं. २०३४
१६.	जोधपुर (राज.)	१९७८ ई./वि.सं. २०३५
१७.	अजमेर (राज.)	१९७९ ई./वि.सं. २०३६
१८.	राणावास (राज.)	१९८० ई./वि.सं. २०३७
१९.	उदयपुर (राज.)	१९८१ ई./वि.सं. २०३८
२०.	अहमदाबाद (गुजरात)	१९८२ ई./वि.सं. २०३९
२१.	भावनगर (गुजरात)	१९८३ ई./वि.सं. २०४०
२२.	बोरीवली-मुम्बई (महाराष्ट्र)	१९८४ ई./वि.सं. २०४१
२३.	घाटकोपर-मुम्बई (महाराष्ट्र)	१९८५ ई./वि.सं. २०४२
२४.	जलगांव (महाराष्ट्र)	१९८६ ई./वि.सं. २०४३
२५.	इन्दौर (म.प्र.)	१९८७ ई./वि.सं. २०४४
२६.	रतलाम (म.प्र.)	१९८८ ई./वि.सं. २०४५
२७.	कानोड़ (राज.)	१९८९ ई./वि.सं. २०४६
२८.	चित्तौड़गढ़ (राज.)	१९९० ई./वि.सं. २०४७
२९.	पिपलियाकलां (राज.)	१९९१ ई./वि.सं. २०४८
३०.	उदयरामसर (राज.)	१९९२ ई./वि.सं. २०४९
३१.	देशनोक (राज.)	१९९३ ई./वि.सं. २०५०
३२.	नोखामंडी (राज.)	१९९४ ई./वि.सं. २०५१
३३.	बीकानेर (राज.)	१९९५ ई./वि.सं. २०५२
३४.	गंगाशहर-भीनासर (राज.)	१९९६ ई./वि.सं. २०५३
३५.	ब्यावर (राज.)	१९९७ ई./वि.सं. २०५४
३६.	उदयपुर (राज.)	१९९८ ई./वि.सं. २०५५
३७.	उदयपुर (राज.)	१९९९ ई./वि.सं. २०५६

चातुर्मासिक उपलब्धियां

१९४०-१९९९

एक- फलौदी-१९४०, साधु जीवन का प्रथम वर्षावास, तितिक्षा/क्षमाशीलता का सघन अभ्यास, संयम-साधना, अप्रमत्त स्वाध्याय, अ-क्रोध तप।

दो- बीकानेर-१९४१, आत्म-शोधन, सेवा, ज्ञान, स्वास्थ्य की साधना, वयोवृद्ध संतों की सेवा-परिचर्या, शरीर गौण, साधना मुख्य, धृति, विनयशीलता और सहिष्णुता की मौन उपासना।

तीन- ब्यावर-१९४२, अध्ययन के साथ प्रवचन, दृढता और अविचलता का विकास।

चार- बीकानेर-१९४३, सिद्धान्त कौमुदी का अध्ययन, प्रज्ञ/मनीषी संतों का सत्संग।

पांच- सरदारशहर-१९४४, सिद्धान्त और आचरण की दूरियां अनवरत कम।

छह- बगड़ी-१९४५, कथनी-करनी में एकरूपता का विलक्षण विकास।

सात- ब्यावर-१९४६, गुरु-सेवा, अध्ययन, साधना।

आठ- बड़ीसादडी-१९४७, गुरुसेवा, संयम, स्वाध्याय, संत-सत्संग।

नौ- रतलाम-१९४८, साधु-मर्यादा कसौटी पर, फंसी हुई भेड़ को सहारा, चातुर्मास-समाप्ति पर इन्दौर में सर्वोदयी संत विनोबा भावे से भेंट, विनोबाजी ने कहा- 'आप सोचते होंगे कि जैनियों की संख्या बहुत कम है, किन्तु मेरी धारणा के अनुसार जैन नाम धरने वालों की संख्या भले ही कम हो, लेकिन जैनधर्म के मौलिक सिद्धान्त दूध-मिश्री की तरह दुनिया की सभी विचार-धाराओं में घुलते जा रहे हैं'।

दस- जयपुर-१९४९, न्याय (तर्कशास्त्र का अध्ययन, सिद्धान्त और व्यवहार में दृढता, मूर्च्छा की उत्तरोत्तर अनुपस्थिति, जयपुर-हिण्डौन मार्ग पर करौली के आस-पास 'धर्मपाल-प्रवृत्ति' का बीजांकुरण)।

ग्यारह - दिल्ली-१९५०, गुरुदेव का सघन सान्निध्य, रुग्णता, जिह्वाविजय।

बारह- दिल्ली-१९५१, घाणेराव/सादडी में साधु-सम्मेलन का सूत्र-संचालन, सब्जीमंडी में वर्षावास, पूर्ण स्वास्थ्य लाभ।

तेरह- उदयपुर-१९५२, इन्जेक्शन लगाना सीखा ताकि संकटापन्न स्थिति में गुरुदेव की परिचर्या में कोई कमी न हो, गुरुदेव का अम्लान वैयावृत्य।

चौदह- जोधपुर-१९५३, गुरुसेवा, अग्लान सेवासुश्रूषा, अनन्य निष्ठा, अविचल आस्था, ज्ञान-ध्यान।

पन्द्रह- कुचेरा-१९५४, गुरुदेव को सहयोग।

सोलह- बीकानेर-१९५५, आचार्य श्री की सेवा-सुश्रूषा।

सत्रह- गोगोलाव-१९५६, गुरुदेव का सान्निध्य, उनकी सन्निष्ठ सेवा, स्वाध्याय।

अठारह- कानोड़-१९५७, गुरुदेव को सहयोग, सेवा-सुश्रूषा, साधना, अध्ययन।

उन्नीस- जावरा-१९५८, गुरुदेव का सानिन्ध्य, उनकी अनन्य सुश्रूषा, स्वाध्याय।

- उदयपुर-१९५९, निष्काम चित्त से गुरु का वैयावृत्यं, अहर्निश जागृत साधना ।

स- उदयपुर-१९६०, गुरु की सेवा-सुश्रूषा, संयम-साधना, स्वाध्याय, मनन-चिंतन ।

- उदयपुर-१९६१, गुरु द्वारा चतुर्विध संघ की सुव्यवस्था का उत्तरदायित्व प्रदान, १८ अप्रैल १९६१/ अक्षय तृतीया को सार्वजनिक घोषणा, निष्काम मनीषा और अविचल आस्था के धनी पर श्रमण-संस्कृति की रक्षा और उसके अभिभावन की गहन जिम्मेवारी, संयम-साधना के साथ सामाजिक का मौन उद्‌भव ।

- उदयपुर-१९६२, आचार्य श्री हुक्मीचंद जी की पाट-परम्परा का पुनरूज्जीवन, २२ सितम्बर १९६२ को 'युवाचार्य घोषित', ३० सितम्बर को युवाचार्य-पद की चादर से अलंकृत चादर-प्रदान-समारोह में पूज्या माता श्रीमती शृंगार बाई की रोमांचक उपस्थिति, उनका यह अजर-अमर वाक्य 'अन्नदाता ई घणां भोला टाबर है, यां पर अतरो बोझो मती नाको' (प्रभो, यह बहुत भोला-भाला लडका है, इस पर इतनी बड़ी जिम्मेवारी न डालिये) चादर की गौरव-गरिमा को स्पष्ट करते हुए युवाचार्य ने कहा-'यह चादर भी उज्ज्वल/खादी की हो कर सादी है'। सादगी स्वतन्त्रता की द्योतक है । पूज्य गुरुदेव फरमाया करते थे कि सादगी स्वतन्त्रता है और फैशन-फांसी, अतः भारत को इस सादगी की ओर विशिष्ट ध्यान देना चाहिए, विलक्षण, नाड़ी-ज्ञान, ९ जनवरी १९६३ को गुरुदेव की नाड़ी में आशंकित परिवर्तन, संथारा, पच्चखान का आयोजन, आचार्य श्री गणेशीलालजी का महाप्रयाण, 'आचार्य-पद' पर प्रतिष्ठित, प्रथम शिष्य सेवन्त मुनि जी म.सा., अन्धविश्वास की मिथ्या/अन्धी परम्पराओं का उन्मूलन ।

ीस : रतलाम-१९६३, जावद, जावरा और रतलाम संघों के बीच समरस संबंधों की स्थापना, स्वरूप-बोध के प्रति विशेष जागृति, ऐतिहासिक सामाजिक क्रांति का सूत्रपात, गुजराती बलाई समाज के मुखिया सीतारामजी बलाई से भेंट, 'धर्मपाल-प्रवृत्ति' का श्री गणेश, गुजराती बलाइयों के छोटे-छोटे गांवों में सघन विहार, लगभग १५०० बलाई-कुटुम्बों के लगभग १०,००० व्यक्तियों के जीवन में सामाजिक क्रांति की प्रखर किरण का प्रवेश, हृदय-परिवर्तन की जीवन्त मिसाल, आचार्यश्री ने कहा- "आप मांस, मदिरा, शिकार, वेश्यागमन, आत्महत्या आदि दुर्व्यसनों का प्राणपण से पूर्णरूपेण त्याग करें तो उन्नति हो सकती है । बलाई जैन बने और उन्होंने उनका उपदेश मान कर प्रगति की, आज उनकी संख्या लगभग एक लाख है, सब सुसमृद्ध और प्रसन्न हैं ।'

ीस : इन्दौर-१९६४, रचनात्मक/अहिंसक क्रान्ति के प्रवर्तक संत का अभिनव रूप, अविस्मरणीय वाक्य-मणि-"किसी भी बात को हमें मान-सम्मान का विषय नहीं बनाना चाहिए।"

ीस : रायपुर-१९६५, आध्यात्मिक उत्क्रान्ति और आत्म-शोधन का चातुर्मास ।

ईस : राजनांदगांव-१९६६, पांच मास का चातुर्मास, आत्म-शोधन, सामाजिक क्रान्ति का सातत्य, "तीर्थ" शब्द की तर्कसंगत व्याख्या, कहा - 'असली तीर्थ चार हैं - साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका ।

ाईस : दुर्ग १९६७, श्रावकीय जिज्ञासाओं के सटीक समाधान, आत्म-जागृति, सामाजिक क्रान्ति की निरन्तरता कायम ।

उन्तीस : अमरावती-१९६८, सम्यक्त्व-प्रतिपादन, 'उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य' विषय पर गूढ़ प्रवचन।

तीस : मन्दसौर-१९६९, सद्भावना का प्रसार, नये परिवेश का सृजन।

इकत्तीस : बड़ीसादड़ी-१९७०, दीक्षाएं, व्यसन-मुक्ति, सामाजिक क्रान्ति की उन्नीस प्रतिज्ञाओं के अमल के लिए सत्रह गांवों के प्रतिनिधियों का चयन, महत्वपूर्ण प्रतिज्ञाएं हैं क्र. २,३,४,४,५,१३ और १७ विवाह में कोई सौदेबाजी नहीं होगी, मृत्यु के बाद एक मास से अधिक शोक नहीं रखा जाएगा, धर्मस्थान में सादा वेशभूषा में जाएंगे - प्रवचन में मौन रखेंगे, विवाह आदि अवसरों हेतु धार्मिक पुस्तकों का यथाशक्ति पठन-पाठन करेंगे।

बत्तीस : ब्यावर-१९७१, विघटन समाप्त, एकता स्थापित "ध्वनि-विस्तारक यन्त्र" के बारे में विज्ञान-के-ठोस संदर्भों में जानकारी, भौतिकी के प्रख्यात विद्वान डॉ. दौलतसिंह कोठारी की सहमति, अपने निश्चय पर बरकरार।

तैंतीस : जयपुर-१९७२, समता-दर्शन का शंखनाद।

चौंतीस : बीकानेर-१९७३, क्रान्ति का पुनरीक्षण, आत्म-शोधन, मुमुक्षुओं को दिशादृष्टि।

पैंतीस : सरदारशहर-१९७४, एकता की ओर नया कदम, कहा-"अगर सम्वत्सरी मनाने के बारे में संपूर्ण जैन समाज' का एक मत बन सके तो बड़ी उपलब्धि हो सकेगी, सांवत्सरिक एकता की दृष्टि से अगर हमें अपनी परम्परा भी छोड़नी पड़े तो मैं किसी पूर्वाग्रह को आड़े नहीं आने दूंगा।"

छत्तीस : देशनोक-१९७५, बुद्धिजीवियों को प्रेरणा और दिशादर्शन, आचार-विचार में धर्ममय परिवर्तन की रचनात्मक पहल।

सैंतीस : नोखामंडी-१९७६, शारीरिक अस्वस्थता, प्राकृतिक उपचार, समतादर्शन की व्याख्या, भोपालगढ़ में आचार्य श्री हस्तीमलजी से ऐतिहासिक मिलन।

अड़तीस : गंगाशहर-भीनासर-१९७७, दीक्षाएं, धर्मोपकार के कार्य।

उन्चालीस : जोधपुर-१९७८, नगर-प्रवेश से पूर्व उपनगर सरदारपुरा में पंचसूत्री उपदेश, जन-जागृति और सामाजिक क्रान्ति के लिए रचनात्मक दृष्टिकोण की प्रस्तुति, पांच सूत्र- समानता में आस्था, गुण-कर्म-आधारित वर्गीकरण में भरोसा, व्यक्तिगत जीवन-शुद्धि का अभ्यास, गरीब-अमीर की विभाजक सामाजिक कुरीतियों का परित्याग, नियमित दिनचर्या-पूर्वक समता-भाव की साधना।

चालीस : अजमेर-१९७९, धार्मिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक उत्क्रांति की ठोस पहल, अन्तर्राष्ट्रीय बाल वर्ष के उपलक्ष्य में बाल-शिक्षा पर अखिल भारतीय संगोष्ठी, लेखक भी सम्मिलित।

इकतालीस : राणावास-१९८०, आध्यात्मिकता का नव प्रस्फुटन, चिन्तन के नौ सूत्रों का प्रवर्तन, सूत्र हैं-चैतन्य चिन्तन-यह कि 'कौन हूं, कहां से हूं, किसलिए हूं, क्या कर रहा हूं, मैं ज्ञाता-दृष्टा हूं, दुर्लभ मानव-देह का लक्ष्य क्या है, समभाव का चिन्तन, अमानवीय भाव और कटु वचनों का त्याग, विभाव-त्याग, स्वभाव-बोध, सुदेव, सुगुरु, सुधर्म, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य और स्याद्वाद आत्मोन्नति के मूल हैं, स्व-रूप की पहचान, सम्यक् विधि से जीवन की उन्नति।

बयालीस : उदयपुर-१९८१, जन्मभूमि दांता में आगमन, ज्ञान-साधना/तपाराधना, समीक्षण-ध्यान के प्रायोगिक पक्ष का विकास, त्रिमुखीन अभियान की प्रेरणा-१. ब्रह्मचर्यव्रत-अभियान, २. दहेज-उन्मूलन-

अभियान, ३. आदिवासी जागरण तथा दुर्व्यसन-मुक्ति-अभियान, आगम, अहिंसा, समता एवं प्राकृत संस्थान की स्थापना।

तैंतालीस : अहमदाबाद-१९८२, गुजराती सम्प्रदायों के आचार्य/संत-सती से मिलन, श्रावकों द्वारा छहसूत्री योजना की प्रस्तुति, समीक्षण ध्यान पर प्रवचन, लगभग ७ पुस्तकें गुजराती भाषा में प्रकाशित, ये हैं-समता दर्शन और व्यवहार, समीक्षण ध्यान और प्रयोग-विधि, साधना के सूत्र, आचार्य नानेश : एक परिचय, समता क्रान्ति, अनुभूति नो आलोक, आचार्य श्री नानेश : गुजरात-प्रवास एक झलक।

चवालीस : भावनगर-१९८३, अनुशासन की प्रेरणा, धर्मोत्साह, तपाराधना, कृष्णकुमार सोसायटी और मेहता शेरी के संघों के मनोमालिन्य की समाप्ति, त्याग-तपस्या में वृद्धि, आगमिक विषयों पर सारपूर्ण प्रवचन।

पैंतालीस : बोरीवली-मुम्बई-१९८४, उपनगरों में सतत प्रभावी विहार, विश्वशांति, धर्म का सही स्वरूप, श्रमण-संस्कृति की सुदृढ सुरक्षा आदि विषयों पर प्रवचन, रांणावास वर्षावास (१९८०) से पूर्व ब्रिठोड़ा ग्राम से प्रारम्भ 'जिणधम्मो' की सम्पूर्ति-इन्दौर से प्रकाशन, स्वाध्याय को शाबाशी।

छियालीस : घाटकोपर-मुम्बई-१९८५, सिद्धान्तनिष्ठ, मौलिक, यथार्थपरक आध्यात्मिक/धार्मिक विषयों की गूढ़ विवेचना, निर्ग्रन्थ श्रमण-संस्कृति को गहरी नींव देने का प्रयत्न, लाउडस्पीकर के विवादास्पद विषय पर मौलिक/युक्तियुक्त विचार।

सैंतालीस : जलगांव-१९८६, संस्कार-क्रान्ति अभियान की प्राथमिक तैयारी, स्वाध्याय, तपाराधना।

अड़तालीस : इन्दौर-१९८७, संस्कार-क्रान्ति अभियान का सफल सूत्रपात, चातुर्मास को सत्रह हफ्तों (जुलाई से नवम्बर) में बांटकर संस्कार-क्रान्ति के बहुविध पक्षों पर प्रवचन, अभियान के क्षेत्र-महामंत्र नवकार, भाषा-विवेक, कर्त्तव्य-पालन, स्वाध्याय, ब्रह्मचर्य, पर्यावरण-सुरक्षा, सुसंस्कार-धन, सौन्दर्य और सुरूपता, रक्त-रंजित सौन्दर्य प्रसाधन, गर्भपात-महापाप, कषाय-विसर्जन, प्रत्याख्यान, आत्मशुचिता, दान का व्यवसायीकरण, विषमता/कुरीतियां, सामायिक, आतिशबाजी, समता-समाज-रचना, 'तीर्थंकर' के साधुमार्ग विशेषांक का प्रकाशन।

उनपचास : रतलाम-१९८८, संस्कार-क्रान्ति अग्रसर, दीक्षाएं, तपाराधन, ज्ञान-ध्यान।

पचास : कानोड़-१९८९, बुद्धिजीवियों को संस्कार-क्रान्ति की प्रेरणा, 'आगम-पुरुष' की परिकल्पना, शाकाहार-अभियान, संस्कार-क्रान्ति पुरस्सर।

इक्यावन : चित्तौड़गढ-१९९०, जैन तत्त्व-ज्ञान स्नातक शिविर, समीक्षण ध्यान के प्रयोग, व्यसन-मुक्ति अभियान में तेजी, बहुविध धार्मिक/सामाजिक विषयों पर प्रवचन, स्मरणीय वाक्य-'क्षणभंगुर शरीर को गौण करें। शरीर पोशाक है, जिसके फटने पर या जीर्ण होने पर संताप कैसा ? पोशाक पर क्यों रोयें ? रूढ़ियों से हटें। आत्मोन्मुख बनें। परिवर्तन का स्वागत करें।'

तिरेपन : उदयरामसर-१९९२, 'आगम-पुरुष' का लोकार्पण वर्षावास जारी।

चौवन : देशनोक-१९९३, संस्कार क्रान्ति, समता समाज रचना, समता शिक्षा सेवा संस्थान की स्थापना।

पचपन : नोखामंडी-१९९४, धार्मिक, सामाजिक सेवा ज्ञान का उदय, नवनिर्माण।

छप्पन : बीकानेर-१९९५, समता से विघटन, सहनशक्ति व दूरदर्शी साहस परिचय देते हुए संघ को गतिमान रखा।

सत्तावन : गंगाशहर-१९९६, वीर संघ धर्मोपचार योजना, व्यसन मुक्ति वर्ष की घोषणा, लाखों व्यसन मुक्त हुए।

अठावन : ब्यावर-१९९७, समता से उपसर्ग सहन, सामायिक प्रतिक्रमण वर्ष घोषणा, ३००० के करीब प्रतिक्र

उनसठ : उदयपुर-१९९८, स्वास्थ्य में गिरावट, स्वाध्याय वर्ष की घोषणा, बहुजनों को स्वाध्याय सेवा दे ज्ञानार्जन ।

साठ : उदयपुर-१९९९, समता इंटरनेशनल की घोषणा, अमर साधना, महाप्रयाण ।

भाव भरी श्रद्धांजलि स्वीकारें

सम्पतलाल सुराना

'नाना' नाम, बहु मोटा काम, मेवाड़ की मणि ।
श्रमणोपासक समता संघ के कहाये धणी ॥
हजारों हजार को दी थी, धर्म की शिक्षा ।
तीन सौ से अधिक मुमुक्षों को दी दीक्षा ॥
अनगिनत को हिंसा मे हटा अहिंसा से जोड़ा ।
इकसठ वर्षीय दीक्षा पर्याय क्या यह है थोड़ा ॥
हरदम अतिशयधारी ज्योति को याद करता हूं ।
हर पल अपने पुण्य का घड़ा भरता हूं ॥
हरदम हृदय में होकर भी नहीं पास हमारे ।
भावभरी श्रद्धांजलि गणिवर अब स्वीकारें ॥

-इन्दौ

संपर्क/माध्यम

उपाध्याय, प्रकाश: रतलाम-१९८८
उपाध्याय, सिद्धनाथ, धार-१९६३
कान्तिऋषिजी, आचार्य, स्था., सम्प्र. गुज., खम्भात, कांदाबाड़ी, बम्बई-१९८५
कुरैशी, मुजीब, नागदा-१९८८
कोठारी, दौलतसिंह (डा.), ब्यावर-१९७१, राणावास-१९८०
कोठारी, सुभाष, रतलाम-१९८८
कोठारी, हिम्मतसिंह, रतलाम-१९८८
गंगवाल, मिश्रीलाल, इन्दौर-१९६४
चन्द्रा, के. (डा.) अहमदाबाद-१९८२
चम्पक मुनि, आचार्य, स्था. सम्प्र. गुज. बरवाला, अहमदाबाद-१९८२
चौपड़ा, जसराज, नाथद्वारा-१९९०
जैन, ए.के., मन्दसौर-१९८१
जैन, नेमीचन्द (डा.) अजमेर-१९७१
जैन, महावीरसरण (डा.) अजमेर-१९७१
जैन, प्रेमसुमन (डा.), अजमेर-१९७१
जैन, आर.सी. (डा.), उदयपुर-१९८१
जैन, ललित, इन्दौर-१९८७
जैन सागरमल (डा.), रतलाम-१९८८
जैन, सुरेश दादा, जलगांव-१९८६
जोशी, हरिदेव, नोखामंडी, १९७६
टांटिया, मन्नालाल (डा.), शाहदा (महाराष्ट्र)-१९८७
देसाई, हितेन्द्र, अहमदाबाद, १९८२
देशलहरा, मूलचन्द, रतलाम-१९८८
देवगोड़ा, पूर्व प्रधानमंत्री, चित्तौड़गढ, १९९८
नाहटा, नरेन्द्र, मन्दसौर-१९८९
निलंगेकर, शिवाजीराव पाटी, घाटकोपर, मुम्बई-१९८५
पटवा, सुन्दरलाल, पीपलिया कला-१९९१
पाटस्कर, इन्दौर-१९६४
पाटील, बसंत दादा, भिवंडी-१९८४
पारीक, रामलाल भाई, अहमदाबाद-१९८२
बुन्देला, मोहनसिंह, नागदा-१९८८
बैद, चन्दनमल, भीनासर-१९७२
बैरागी, बालकवि, मन्दसौर-१९६९
भायानी, सतीश, गोधरा-१९८४

महाराजा, करणीसिंह (सांसद) १९७७
मालवणिया, दलसुख भाई (पं.) अहमदाबाद-१९८२
व्यास, गिरिजा (डा.) उदयपुर, १९९९
विद्यानन्दजी, आचार्य, बोरीवली, मुम्बई-१९८४
वोरा, मोतीलाल, इन्दौर-१९८७
संचेती, कान्तिलाल हस्तीमल (डा.), पुणे-१९८६
सरूपरिया, हिम्मतसिंह (डा.), उदयपुर-१९८१
सिंघवी, आर.वी., अहमदाबाद-१९८२
सिंघवी, लक्ष्मीमल्ल (डा.), सांसद
सुखाड़िया, मोहनलाल (मुख्यमंत्री,राज.), मन्दसौर-१९६९
सुराना, आर.सी. (डा.), भावनगर-१९८३
सेठी, प्रकाशचन्द्र, इन्दौर-१९६४
सोनेजी, अहमदाबाद-१९८२
सोलंकी, शिवभानुसिंह, मनासा-१९८४
सौगाणी, कमलचन्द (डा.), उदयपुर-१९८१
शक्तावत, गुलाबसिंह, कानोड़-१९८९
शेखावत, भैरोसिंह (मुख्यमंत्री, राज.)-१९९४
शर्मा, गौतम, इन्दौर-१९६४
शर्मा, श्रीवल्लभ, इन्दौर-१९८७
शास्त्री, गजानन (डा.), धारा-१९६३
शास्त्री, विष्णुकुमार (वैद्य), बड़नगर-१९६३
शान्तिलालजी, आचार्य, स्था. सम्प्र. दरीयापुरी आठ कोठी, अहमदाबाद-१९८२
श्रीमाल, मोहनलाल, कानोड़-१९८२
श्रेणिकभाई कस्तूरभाई, अहमदाबाद-१९८२
हस्तीमलजी, आचार्य, स्थानकवासी सम्प्रदाय, भोपालगढ-१९७६

✣

कौन हो ....कैसा

लालचंद सुराना

भाई हो भरत जैसा,
माता हो मदालसा जैसी,
पिता हो हरिश्चन्द्र जैसा,
पुत्र हो श्रवण कुमार जैसा,
भक्त हो हनुमान जैसा,
प्रतिज्ञा हो भीष्म पितामह जैसी,
मित्रता हो कृष्ण सुदामा जैसी ।

दानवीर हो कर्ण जैसा,
त्याग हो पन्नाधाय जैसा,
बलिदान हो दधीचि जैसा,
आत्मबली हो तीर्थंकर जैसा,
ज्योतिर्धर हो आचार्य जवाहर जैसा,
समता हो गुरु नानेश जैसी,
गुरु हो हमारे रामेश जैसा,
शिष्य हो एकलव्य जैसा ।

आचार्य प्रवर श्री नानेश की नेश्राय में विचरण करने वाले एवं दीक्षित संत सतियांजी म.सा.

मुनिराज

क्रम	नाम	ग्राम	दीक्षा तिथि	दीक्षा स्थान
१.	श्री ईश्वरचन्दजी म.सा.	देशनोक	सं. १९९९ मिगसर कृष्णा ४	भीनासर
२.	श्री इन्द्रचन्दजी म.सा.	माडपुरा	सं. २००२ वैशाख शुक्ला ६	गोगोलाव
३.	श्री सेवन्तमुनिजी म.सा.	कन्नौज	सं. २०१९ कार्तिक शुक्ला ३	उदयपुर
४.	श्री अमरचन्दजी म.सा.	पीपलिया	सं. २०२० वैशाख शुक्ला ३	पीपलिया
५.	श्री शान्तिमुनिजी म.सा.	भदेसर	सं. २०१९ कार्तिक शुक्ला १	भदेसर
६.	श्री कंवरचन्दजी म.सा.	निकुम्भ	सं. २०१९ फाल्गुन शुक्ला ५	बड़ीसादड़ी
७.	श्री प्रेममुनिजी म.सा.	भोपाल	सं. २०२३ आश्विन शुक्ला ४	राजनांदगांव
८.	श्री पारसमुनिजी म.सा.	दलोदा	सं. २०२३ आश्विन शुक्ला ४	राजनांदगांव
९.	श्री सम्पतमुनिजी म.सा.	रायपुर	सं. २०२३ आश्विन शुक्ला ४	राजनांदगांव
१०.	श्री रतनमुनिजी म.सा.	भाड़ेगांव		सोनार
११.	श्री धर्मेशमुनिजी म.सा.	मद्रास	सं. २०२३ फाल्गुन कृष्णा ९	रायपुर
१२.	श्री रणजीतमुनिजी म.सा.	कंजार्डा	सं. २०२७ कार्तिक कृष्णा ८	बड़ीसादड़ी
१३.	श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.	गोगुन्दा	सं. २०२७ कार्तिक कृष्णा ८	बड़ीसादड़ी
१४.	श्री सौभागमलजी म.सा.	बडावदा	सं. २०२८ कार्तिक शुक्ला १३	ब्यावर
१५.	श्री रमेशमुनिजी म.सा.	उदयपुर	सं. २०२९ कार्तिक शुक्ला १३	ब्यावर
१६.	श्री वीरेन्द्रमुनिजी म.सा.	आष्टा	सं. २०२९ माघ शुक्ला २	देशनोक
१७.	श्री हुलासमलजी म.सा.	गंगाशहर	सं. २०२९ माघ शुक्ला १३	भीनासर
१८.	श्री विजयमुनिजी म.सा.	बीकानेर	सं. २०२९ माघ शुक्ला १३	भीनासर
१९.	श्री नरेन्द्रमुनिजी म.सा.	बम्बोरा	सं. २०३० माघ शुक्ला ५	सरदारशहर
२०.	श्री ज्ञानेन्द्रमुनिजी म.सा.	ब्यावर	सं. २०३१ जेठ शुक्ला ५	गोगोलाव
२१.	श्री बलभद्रमुनिजी म.सा.	पीपलिया	सं. २०३१ आश्विन शुक्ला ३	सरदारशहर
२२.	श्री पुष्पमुनिजी म.सा.	मंडी डबवाली	सं. २०३१ आश्विन शुक्ला ३	सरदारशहर
२३.	श्री रामलालजी म.सा.	देशनोक	सं. २०३१ माघ शुक्ला १२	देशनोक
२४.	श्री प्रकाशचन्दजी म.सा.	देशनोक	सं. २०३२ आश्विन शुक्ला ५	देशनोक
२५.	श्री गौतममुनिजी म.सा.	बीकानेर	सं. २०३२ मिगसर शुक्ला १३	बीकानेर
२६.	श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.	हांसी	सं. २०३३ माघ कृष्णा १	भीनासर
२७.	श्री प्रशममुनिजी म.सा.	गंगाशहर	सं. २०३४ वैशाख कृष्णा ७	भीनासर
२८.	श्री मूलचन्दजी म.सा.	नोखामंडी	सं. २०३४ मिगसर शुक्ला ५	नोखामंडी
२९.	श्री ऋषभमुनिजी म.सा.	बम्बोरा	सं. २०३४ माघ शुक्ला १०	जोधपुर

३०.	श्री अजितमुनिजी म.सा.	रतलाम	सं. २०३५ आश्विन शुक्ला २	जोधपुर
३१.	श्री जितेशमुनिजी म.सा.	पूना	सं. २०३६ चैत्र शुक्ला १५	ब्यावर
३२.	श्री पद्मकुमारजी म.सा.	नीमगांवखेड़ी	सं. २०३६ चैत्र शुक्ला १५	ब्यावर
३३.	श्री विनयमुनिजी म.सा.	ब्यावर	सं. २०३६ चैत्र शुक्ला १५	ब्यावर
३४.	श्री सुमतिमुनिजी म.सा.	नोखामंडी	सं. २०३७ पौष शुक्ला ३	भीम
३५.	श्री चन्द्रेशमुनिजी म.सा.	फलोदी	सं. २०३८ वैशाख शुक्ला ३	गंगापुर
३६.	श्री धर्मेन्द्रकुमारजी म.सा.	सांकरा	सं. २०३९ चैत्र शुक्ला ३	अहमदाबाद
३७.	श्री धीरजकुमारजी म.सा.	जावद	सं. २०४० फाल्गुन शुक्ला २	रतलाम
३८.	श्री कांतिकुमारजी म.सा.	नीमगांवखेड़ी	सं. २०४० फाल्गुन शुक्ला २	रतलाम
३९.	श्री विवेकमुनिजी म.सा.	उदयपुर मांडपुरा	सं. २०४५ माघ शुक्ला १०	मन्दसौर
४०.	श्री अशोकमुनिजी म.सा.	जावरा	सं. २०३४ आसोज सुदी २	गंगाशहर-भीनासर
४१.	श्री रत्नेशमुनिजी म.सा.	कानोड़	दिनांक ६.५.९०	कानोड़
४२.	श्री संभवमुनिजी म.सा.	बीकानेर	दिनांक २.१.९१	चित्तौड़गढ़
४३.	श्री इन्द्रेशमुनिजी म.सा.	चिकारड़ा	दिनांक १६.२.९२	बीकानेर
४४	श्री राजेशमुनिजी म.सा.	फाजिल्का	दिनांक १६.२.९२	बीकानेर
४५.	श्री अभिनन्दनमुनिजी म.सा.	नोखा	दिनांक ६.१२.९२	बीकानेर
४६.	श्री निश्चलमुनिजी म.सा.	सोमेसर	दिनांक २४.२.९४	देशनोक
४७.	श्री विनोदमुनिजी म.सा.	विल्लुपुरम्	दिनांक २४.२.९४	देशनोक
४८.	श्री अक्षयमुनिजी म.सा.	असावरा	दिनांक १३.५.९४	देशनोक
४९.	श्री पुष्यमित्रमुनिजी म.सा.	बम्बोरा	दिनांक ७.५.९५	बम्बोरा
५०.	श्री राजभद्रमुनिजी म.सा.	रठांजणा		प्रतापगढ़
५१.	श्री हेमगिरीजी म.सा.	देशनोक	दिनांक ३०.६.९५	देशनोक
५२.	श्री अनन्तमुनिजी म.सा.	सवाईमाधोपुर	दिनांक २०.२.९७	बीकानेर
५३.	श्री अचलमुनिजी म.सा.	रानीतराई (खींचन)	दिनांक २५.५.९७	नीमच

<u>महासतियांजी म.सा.</u>

क्र	नाम	ग्राम	दीक्षा तिथि	दीक्षा स्थान
.	श्री सिरेकवंरजी म.सा.	सोजत	सं. १९८४	सोजत
.	श्री वल्लभकंवरजी म.सा. (प्रथम)	जावरा	सं. १९८७ पौष शुक्ला २	निसलपुर
.	श्री पानकंवरजी म.सा. (प्रथम)	उदयपुर	सं. १९९१ चैत्र शुक्ला १३	भींडर
.	श्री सम्पतकंवरजी म.सा. (प्रथम)	रतलाम	सं. १९९२ चैत्र शुक्ला १	रतलाम
.	श्री गुलाबकंवरजी म.सा. (प्रथम)	खाचरौद	सं. १९९२	खाचरौद
.	श्री केसरकंवरजी म.सा.	बीकानेर	सं. १९९५ ज्येष्ठ शुक्ला ४	बीकानेर
.	श्री गुलाबकंवरजी म.सा. (द्वितीय)	जावरा	सं. १९९७	खाचरौद
.	श्री धापूकंवरजी म.सा. (प्रथम)	भीनासर	सं. १९९८ भादवा कृष्णा ११	भीनासर
.	श्री कंकूकंवरजी म.सा.	देवगढ	सं. १९९८ वैशाख शुक्ला ६	देवगढ
.	श्री पेपकंवरजी म.सा.	बीकानेर	सं. १९९९ ज्येष्ठ कृष्णा ७ .	बीकानेर
.	श्री नानूकंवरजी म.सा.	देशनोक	सं. १९९० आश्विन शुक्ला ३	देशनोक
२.	श्री धापूकंवरजी म.सा.	चिकारड़ा	सं. २००१ चैत्र शुक्ला १३	भीलवाड़ा
३.	श्री कंचनकंवरजी म.सा.	सवाईमाधोपुर	सं. २००१ वैशाख कृष्णा २	ब्यावर
४.	श्री सूरजकंवरजी म.सा.	बिरमावल	सं. २००२ माघ शुक्ला १३	रतलाम
५.	श्री फूलकंवरजी म.सा.	कुस्तला	सं. २००३ चैत्र शुक्ला ९	सवाईमाधोपुर
६.	श्री भंवरकंवरजी म.सा. (प्रथम)	बीकानेर	सं. २००३ वैपाख कृष्णा १०	बीकानेर
७.	श्री सम्पतकंवरजी म.सा.	जावरा	सं. २००३ आश्विन कृष्णा १०	ब्यावर पुरानी
८.	श्री सायरकंवरजी म.सा. (प्रथम)	केशरसिंहजी का गुड़ा	सं. २००४ चैत्र शुक्ला २	राणावास
९.	श्री गुलाबकंवरजी म.सा. (द्वितीय)	उदयपुर	सं. २००६ माघ शुक्ला १	उदयपुर
०.	श्री कस्तूरकंवरजी म.सा.(प्रथम)	नारायणगढ	सं. २००७ पौष शुक्ला ४	खाचरौद
१.	श्री सायरकंवरजी म.सा. (द्वितीय)	ब्यावर	सं. २००७ ज्येष्ठ शुक्ला ५	ब्यावर
२.	श्री चांदकंवरजी म.सा.	बीकानेर	सं. २००८ फाल्गुन कृष्णा ८	बीकानेर
३.	श्री पानकंवरजी म.सा. (द्वितीय)	बीकानेर	सं. २००९ ज्येष्ठ कृष्णा ६	बीकानेर
४.	श्री इन्द्रकंवरजी म.सा.	बीकानेर	सं. २००९ ज्येष्ठ कृष्णा ५	बीकानेर
५.	श्री वदामकंवरजी म.सा.	मेड़ता	सं. २०१० ज्येष्ठ कृष्णा ३	बीकानेर
६.	श्री सुमतिकंवरजी म.सा.	झज्जू	सं. २०११ वैशाख शुक्ला ५	भीनासर
७.	श्री इचरजकंवरजी म.सा.	बीकानेर	सं. २०१३ आश्विन शुक्ला १०	गोगोलाव
८.	श्री चन्द्राकंवरजी म.सा.	कुकड़ेश्वर	सं. २०१४ फाल्गुन शुक्ला ३	कुकड़ेश्वर
९.	श्री सरदारकंवरजी म.सा.	अजमेर	सं. २०१५ आश्विन शुक्ला १३	उदयपुर
०.	श्री शांताकंवरजी म.सा.(प्रथम)	उदयपुर	सं. २०१६ ज्येष्ठ शुक्ला ११	उदयपुर
१.	श्री रोशनकंवरजी म.सा.(प्रथम)	उदयपुर	सं. २०१६ आश्विन शुक्ला १५	बड़ीसादड़ी
२.	श्री अनोखाकंवरजी म.सा.	उदयपुर	सं. २०१६ कार्तिक कृष्णा ८	उदयपुर
३.	श्री कमलाकंवरजी म.सा. (प्रथम)	कानोड़	सं. २०१६ कार्तिक शुक्ला १३	प्रतापगढ
३४.	श्री झमकूकंवरजी म.सा.	भदेसर	सं. २०१७ मिगसर कृष्णा ५	उदयपुर

३५.	श्री नन्दकंवरजी म.सा.	बड़ीसादड़ी	सं. २०१७ फाल्गुन बदी १०.	छोटीसादड़ी
३६.	श्री रोशनकंवरजी म.सा. द्वि.	बड़ीसादड़ी	सं. २०१८ वैशाख शुक्ला ८	बड़ीसादड़ी
३७.	श्री शान्ताकंवरजी म.सा. द्वितीय	गंगाशहर	सं. २०१८ फाल्गुन कृष्णा १२	गंगाशहर
३८.	श्री सूर्यकान्ताजी म.सा.	उदयपुर	सं. २०१९ वैशाख शुक्ला ७	उदयपुर
३९.	श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. प्रथम	उदयपुर	सं. २०१९ वैशाख शुक्ला १२	उदयपुर
४०.	श्री लीलावतीजी म.सा.	निकुम्भ	सं. २०२० फाल्गुन शुक्ला २	निकुम्भ
४१.	श्री कस्तूरकंवरजी म.सा. द्वितीय	पीपल्यामंडी	सं. २०२० वैशाख शुक्ला ३	पीपल्यामंडी
४२.	श्री हुलासकंवरजी म.सा.	चिकारड़ा	सं. २०२१ वैशाख शुक्ला १०	चिकारड़ा
४३.	श्री ज्ञानकंवरजी म.सा.	मालदामाड़ी	सं. २०२१ आश्विन शुक्ला ८	[illegible]
४४.	श्री ज्ञानकंवरजी म.सा. द्वितीय	राणावास	सं. २०२३ आश्विन शुक्ला ४	राजनांदगांव
४५.	श्री प्रेमलताजी म.सा. प्रथम	सुरेन्द्रनगर	सं. २०२३ आश्विन शुक्ला ४	राजनांदगांव
४६.	श्री इन्दुबालाजी म.सा.	राजनांदगांव	सं. २०२३ आश्विन शुक्ला ४	राजनांदगांव
४७.	श्री गंगावतीजी म.सा.	डोंगरगांव	सं. २०२३ मिगसर शुक्ला १३	डोंगरगांव
४८.	श्री पारसकंवरजी म.सा.	कलंगपुर	सं. २०२३ मिगसर शुक्ला १३	डोंगरगांव
४९.	श्री चन्दनबालाजी म.सा.	पीपल्या	सं. २०२३ माघ शुक्ला १०	पीपल्यामंडी
५०.	श्री जयश्रीजी म.सा.	मद्रास	सं. २०२३ फाल्गुन कृष्णा ९	रायपुर
५१.	श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. द्वितीय	मालदामाड़ी	सं. २०२४ आश्विन शुक्ला २	जावरा
५२.	श्री मंगलाकवंरजी. म.सा.	बड़ावदा	सं. २०२४ आश्विन शुक्ला १	दुर्ग
५३.	श्री शकुन्तलाजी म.सा.	बीजा	सं. २०२४ मिगसर कृष्णा ६	दुर्ग
५४.	श्री चमेलीकंवरजी म.सा.	बीकानेर	सं. २०२५ फाल्गुन शुक्ला ५	बीकानेर
५५.	श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. तृतीय	बीकानेर	सं. २०२५ फाल्गुन शुक्ला ५	बीकानेर
५६.	श्री चन्द्राकंवरजी म.सा.	रतलाम	सं. २०२६ वैशाख शुक्ला ७	ब्यावर
५७.	श्री कुसुमलताजी म.सा.	मन्दसौर	सं. २०२६ आश्विन शुक्ला ४	मन्दसौर
५८.	श्री प्रेमलताजी म.सा.	मन्दसौर	सं. २०२६ आश्विन शुक्ला ४	मन्दसौर
५९.	श्री विमलाकंवरजी म.सा.	पीपल्या	सं. २०२७ कार्तिक कृष्णा ८	बड़ीसादड़ी
६०.	श्री कमलाकंवरजी म.सा.	जेठाणा	सं. २०२७ कार्तिक कृष्णा ८	बड़ीसादड़ी
६१.	श्री पुष्पलताजी म.सा.	बड़ीसादड़ी	सं. २०२७ कार्तिक कृष्णा ८	बड़ीसादड़ी
६२.	श्री सुमतिकंवरजी म.सा.	बड़ीसादड़ी	सं. २०२७ कार्तिक कृष्णा ८	बड़ीसादड़ी
६३.	श्री विमलाकंवरजी म.सा.	मोड़ी	सं. २०२७ फाल्गुन शुक्ला १२	जावद
६४.	श्री सूरजकंवरजी म.सा.	बड़ावदा	सं. २०२८ कार्तिक शुक्ला १२	ब्यावर
६५.	श्री ताराकंवरजी म.सा. प्रथम	रतलाम	सं. २०२८ कार्तिक शुक्ला १२	ब्यावर
६६.	श्री कल्याणकंवरजी म.सा.	बीकानेर	सं. २०२८ कार्तिक शुक्ला १२	ब्यावर
६७.	श्री कान्ताकंवरजी म.सा.	बड़ावदा	सं. २०२८ कार्तिक शुक्ला १२	ब्यावर
६८.	श्री कुसुमलताजी म.सा. द्वितीय	रावटी	सं. २०२८ कार्तिक शुक्ला १२	ब्यावर
६९.	श्री चन्दनाजी म.सा. द्वितीय	वड़ावदा	सं. २०२८ कार्तिक शुक्ला १२	ब्यावर

श्री ताराजी म.सा. द्वितीय	रतलाम	सं. २०२९ चैत्र शुक्ला २	जयपुर
श्री चेतनाश्रीजी म.सा.	कानोड़	सं. २०२९ चैत्र शुक्ला १३	टौंक
श्री तेजप्रभाजी म.सा.	अजमेर	सं. २०२९ माघ शुक्ला १३	भीनासर
श्री कुसुमकान्ताजी म.सा.	जावरा	सं. २०२९ माघ शुक्ला १३	भीनासर
श्री बसुमतीजी म.सा.	बीकानेर	सं. २०२९ माघ शुक्ला १३	भीनासर
श्री पुष्पाजी म.सा.	देशनोक	सं. २०२९ माघ शुक्ला १३	भीनासर
श्री राजमतीजी म.सा.	दलोदा	सं. २०२९ माघ शुक्ला १३	भीनासर
श्री मंजुबालाजी म.सा.	बीकानेर	सं. २०२९ माघ शुक्ला १३	भीनासर
श्री प्रभावतीजी म.सा.	बीकानेर	सं. २०२९ माघ शुक्ला १३	भीनासर
श्री ललिताजी म.सा. प्रथम	बीकानेर	सं. २०२९ फाल्गुन शुक्ला ११	बीकानेर
श्री सुशीलाजी म.सा. द्वितीय	मोडी	सं. २०३० वैशाख शुक्ला ९	नोखामंडी
श्री समताकंवरजी म.सा.	अजमेर	सं. २०३० वैशाख शुक्ला ९	नोखामंडी
श्री निरंजनाश्रीजी म.सा.	बड़ीसादड़ी	सं. २०३० कार्तिक शुक्ला १३	बीकानेर
श्री पारसकंवरजी म.सा.	वांगेड़ा	सं. २०३० मिगसर शुक्ला ९	भीनासर
श्री सुमनलताजी म.सा.	वांगेड़ा	सं. २०३० मिगसर शुक्ला ९	भीनासर
श्री विजयलक्ष्मीजी म.सा.	उदयपुर	सं. २०३० माघ शुक्ला ५	सरदारशहर
श्री स्नेहलताजी म.सा.	सरदारशहर	सं. २०३० माघ शुक्ला ५	सरदारशहर
श्री रंजनाश्रीजी म.सा.	उदयपुर	सं. २०३१ ज्येष्ठ शुक्ला ५	गोगोलाव
श्री अंजनाश्रीजी म.सा.	उदयपुर	सं. २०३१ ज्येष्ठ शुक्ला ५	गोगोलाव
श्री ललिताजी म.सा.	ब्यावर	सं. २०३१ ज्येष्ठ शुक्ला ५	गोगोलाव
श्री विचक्षणाजी म.सा.	पीपलिया	सं. २०३१ आश्विन शुक्ला ३	सरदारशहर
श्री सुलक्षणाजी म.सा.	पीपलिया	सं. २०३१ आश्विन शुक्ला ३	सरदारशहर
श्री प्रियलक्षणाजी म.सा.	पीपलिया	सं. २०३१ आश्विन शुक्ला ३	सरदारशहर
श्री प्रीतिसुधाजी म.सा.	निकुम्भ	सं. २०३१ माघ शुक्ला १२	देशनोक
श्री सुमनप्रभाजी म.सा.	देवगढ	सं. २०३१ माघ शुक्ला १२	देशनोक
श्री सोमलताजी म.सा.	रावटी	सं. २०३१ माघ शुक्ला १२	देशनोक
श्री किरणप्रभाजी म.सा.	बीकानेर	सं. २०३१ माघ शुक्ला १२	देशनोक
श्री मंजुलाश्रीजी म.सा.	देशनोक	सं. २०३२ वैशाख कृष्णा १३	भीनासर
श्री सुलोचनाजी म.सा.	कानोड़	सं. २०३२ वैशाख कृष्णा १३	भीनासर
श्री प्रतिभाजी म.सा.	बीकानेर	सं. २०३२ वैशाख कृष्णा १३	भीनासर
श्री वनिताश्रीजी म.सा.	बीकानेर	सं. २०३२ वैशाख कृष्णा १३	भीनासर
श्री सुप्रभाजी म.सा.	गोगोलाव	सं. २०३२ वैशाख कृष्णा १३	भीनासर
श्री जयन्तश्रीजी म.सा.	बीकानेर	सं. २०३२ आश्विन शुक्ला ५	देशनोक
श्री हर्षकंवरजी म.सा.	अमरावती	सं. २०३२ मिगसर शुक्ला ८	जावरा
श्री सुदर्शनाजी म.सा.	नोखामंडी	सं. २०३३ आश्विन शुक्ला ५	नोखामंडी

१०५.	श्री निरुपमाजी म.सा.	रायपुर	सं. २०३३ आश्विन शुक्ला १५	नोखामंडी
१०६.	श्री चन्द्रप्रभाजी म.सा.	मेड़ता	सं. २०३३ मिगसर शुक्ला १३	नोखामंडी
१०७.	श्री आदर्शप्रभाजी म.सा.	उदासर	सं. २०३४ वैशाख कृष्णा ७	भीनासर
१०८.	श्री कीर्तिश्रीजी म.सा.	भीनासर	सं. २०३४ वैशाख कृष्णा ७	भीनासर
१०९.	श्री हर्षिलाश्रीजी म.सा.	गंगाशहर	सं. २०३४ वैशाख कृष्णा ७	भीनासर
११०.	श्री साधनाश्रीजी म.सा.	गंगाशहर	सं. २०३४ वैशाख कृष्णा ७	भीनासर
१११.	श्री अर्चनाश्रीजी म.सा.	गंगाशहर	सं. २०३४ वैशाख शुक्ला १५	भीनासर
११२.	श्री सरोजकंवरजी म.सा.	धमतरी	सं. २०३४ भादवा कृष्णा ११	दुर्ग
११३.	श्री मनोरमाजी म.सा.	रतलाम	सं. २०३४ भादवा कृष्णा ११	दुर्ग
११४.	श्री चंचलकंवरजी म.सा.	कांकेर	सं. २०३४ भादवा कृष्णा ११	दुर्ग
११५.	श्री कुसुमकंवरजी म.सा.	निवारी	सं. २०३४ भादवा कृष्णा ११	दुर्ग
११६.	श्री सुप्रतिभाजी म.सा.	उदयपुर	सं. २०३४ आश्विन शुक्ला २	भीनासर
११७.	श्री शांताप्रभाजी म.सा.	बीकानेर	सं. २०३४ आश्विन शुक्ला २	भीनासर
११८.	श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा.	मोड़ी	सं. २०३४ मिगसर कृष्णा ५	बीकानेर
११९.	श्री गुणसुन्दरीजी म.सा.	उदासर	सं. २०३४ मिगसर कृष्णा ५	बीकानेर
१२०.	श्री मधुप्रभाजी म.सा.	छोटीसादड़ी	सं. २०३४ मिगसर कृष्णा ५	बीकानेर
१२१.	श्री राजश्रीजी म.सा.	उदयपुर	सं. २०३४ माघ शुक्ला १०	जोधपुर
१२२.	श्री शशिकांताजी म.सा.	उदयपुर	सं. २०३४ माघ शुक्ला १०	जोधपुर
१२३.	श्री कनकश्रीजी म.सा.	रतलाम	सं. २०३४ माघ शुक्ला १०	जोधपुर
१२४.	श्री सुलभाश्रीजी म.सा.	नोखामंडी	सं. २०३४ माघ शुक्ला १०	जोधपुर
१२५.	श्री निर्मलाश्रीजी म.सा.	देशनोक	सं. २०३५ आश्विन शुक्ला २	जोधपुर
१२६.	श्री चेलनाश्रीजी म.सा.	कानोड़	सं. २०३५ आश्विन शुक्ला २	जोधपुर
१२७.	श्री कुमुदश्रीजी म.सा.	गंगाशहर	सं. २०३५ आश्विन शुक्ला २	जोधपुर
१२८.	श्री कमलश्रीजी म.सा.	उदयपुर	सं. २०३६ चैत्र शुक्ला १५	ब्यावर
१२९.	श्री पदमश्रीजी म.सा.	महिन्द्रपुर	सं. २०३६ चैत्र शुक्ला १५	ब्यावर
१३०.	श्री अरुणाश्रीजी म.सा.	पीपल्या	सं. २०३६ चैत्र शुक्ला १५	ब्यावर
१३१.	श्री कल्पनाश्रीजी म.सा.	देशनोक	सं. २०३६ चैत्र शुक्ला १५	ब्यावर
१३२.	श्री ज्योत्स्नाश्रीजी म.सा.	गंगाशहर	सं. २०३६ चै. शु. १५	ब्यावर
१३३.	श्री पंकजश्रीजी म.सा.	बीकानेर	सं. २०३६ चै. शु. १५	ब्यावर
१३४.	श्री मधुश्रीजी म.सा.	इन्दौर	सं. २०३६ चै. शु. १५	ब्यावर
१३५.	श्री पूर्णिमाश्रीजी म.सा.	बड़ीसादड़ी	सं. २०३६ चै. शु. १५	ब्यावर
१३६.	श्री प्रवीणाश्रीजी म.सा.	मन्दसौर	सं. २०३६ चै. शु. १५	ब्यावर
१३७.	श्री दर्शनाश्रीजी म.सा.	देशनोक	सं. २०३६ चै. शु. १५	ब्यावर
१३८.	श्री वन्दनाश्रीजी म.सा.	गंगाशहर	सं. २०३६ चै. शु. १५	ब्यावर
१३९.	श्री प्रमोदश्रीजी म.सा.	ब्यावर	सं. २०३६ चै. शु. १५	ब्यावर

१४०.	श्री उर्मिलाश्रीजी म.सा.	रायपुर	सं. २०३७ ज्ये. शु. ३	बुसी
१४१.	श्री सुभद्राश्रीजी म.सा.	बीकानेर	सं. २०३७ श्रा. शु. ११	राणावास
१४२.	श्री हेमप्रभाजी म.सा.	केसींगा	सं. २०३७ आ. शु. ३	राणावास
१४३.	श्री ललितप्रभाजी म.सा.	विनोता	सं. २०३८ वै. शु. ३	गंगापुर
१४४.	श्री वसुमतीजी म.सा.	अलाय	सं. २०३८ आ. शु. ८	अलाय
१४५.	श्री इन्द्रप्रभाश्रीजी म.सा.	बीकानेर	सं. २०३८ का. शु. १२	उदयपुर
१४६.	श्री ज्योतिप्रभाश्रीजी म.सा.	गंगाशहर	सं. २०३८ का. शु. १२	उदयपुर
१४७.	श्री रचनाश्रीजी म.सा.	उदयपुर	सं. २०३८ का. शु. १२	उदयपुर
१४८.	श्री रेखाश्रीजी म.सा.	जोधपुर	सं. २०३८ का. शु. १२	उदयपुर
१४९.	श्री चित्राश्रीजी म.सा.	लोहावट	सं. २०३८ का. शु. १२	उदयपुर
१५०.	श्री ललिताश्रीजी म.सा.	गंगाशहर	सं. २०३८ का. शु. १२	उदयपुर
१५१.	श्री विद्यावतीजी म.सा.	सवाईमाधोपुर	सं. २०३८ मि. शु. ६	हिरणमगरी
१५२.	श्री विख्याताश्रीजी म.सा.	विनोता	सं. २०३८ मा. कृ. ३	बम्बोरा
१५३.	श्री जिनप्रभाश्रीजी म.सा.	राजनांदगांव	सं. २०३९ चै. कृ. ३	अहमदबाद
१५४.	श्री अमिताश्रीजी म.सा.	रतलाम	सं. २०३९ चै. कृष्णा ३	अहमदाबाद
१५५.	श्री विनयश्रीजी म.सा.	दुरखखान	सं. २०३९ चै. कृष्णा ३	अहमदाबाद
१५६.	श्री श्वेताश्रीजी म.सा.	केशकाल	सं. २०३९ चै. कृष्णा ३	अहमदाबाद
१५७.	श्री सुचिताश्रीजी म.सा.	रतलाम	सं. २०३९ चै. कृ. ३	अहमदाबाद
१५८.	श्री मणिप्रभाजी म.सा.	गंगाशहर	सं. २०३९ चै. कृ. ३	अहमदाबाद
१५९.	श्री सिद्धप्रभाजी म.सा.	नागौर	सं. २०३९ चै. कृ. ३	अहमदाबाद
१६०.	श्री नम्रताश्रीजी म.सा.	जगदलपुर	सं. २०३९ चै. कृ. ३	अहमदाबाद
१६१.	श्री सुप्रतिभाश्रीजी म.सा.	राजनांदगांव	सं. २०३९ चै. कृ. ३	अहमदाबाद
१६२.	श्री मुक्ताश्रीजी म.सा.	कपासन	सं. २०३९ चै. कृ. ३	अहमदाबाद
१६३.	श्री विशालप्रभाजी म.सा.	गंगाशहर	सं. २०३९ चै. कृ. ३	अहमदाबाद
१६४.	श्री कनकप्रभाजी म.सा.	बीकानेर	सं. २०३९ चै. कृ. ३	अहमदाबाद
१६५.	श्री सत्यप्रभाजी म.सा.	बीकानेर	सं. २०३९ चै. कृ. ३	अहमदाबाद
१६६.	श्री रक्षिताश्रीजी म.सा.	पाली	सं. २०४० आ. शु. २	भावनगर
१६७.	श्री महिमाश्रीजी म.सा.	अहमदाबाद	सं. २०४० आ. शु. २	भावनगर
१६८.	श्री मृदुलाश्रीजी म.सा.	वैशालीनगर	सं. २०४० आ. शु. २	भावनगर
१६९.	श्री वीणाश्रीजी म.सा.	वैशालीनगर	सं. २०४० आ. शु. २	भावनगर
१७०.	श्री प्रेरणाश्रीजी म.सा.	बीकानेर	सं. २०४० फा. शु. २	रतलाम
१७१.	श्री गुणंरजनाश्रीजी म.सा.	उदयपुर	सं. २०४० फा. शु. २	रतलाम
१७२.	श्री सूर्यमणिजी म.सा.	मन्दसौर	सं. २०४० फा. शु. २	रतलाम
१७३.	श्री सरिताश्रीजी म.सा.	बीकानेर	सं. २०४० फा. शु. २	रतलाम
१७४.	श्री सुवर्णाश्रीजी म.सा.	रतलाम	सं. २०४० फा. शु. २	रतलाम

१७५.	श्री निरूपणाश्रीजी म.सा.	उदयपुर	सं. २०४० फा. शु. २	रतलाम
१७६.	श्री शिरोमणिश्रीजी म.सा.	डोंडीलोहारा	सं. २०४० फा. शु. २	रतलाम
१७७.	श्री विकासप्रभाजी म.सा.	बीकानेर	सं. २०४० फा. शु. २	रतलाम
१७८.	श्री तरुलताजी म.सा.	चित्तौड़गढ	सं. २०४० फा. शु. २	रतलाम
१७९.	श्री करुणाश्रीजी म.सा.	मोड़ी	सं. २०४० फा. शु. २	रतलाम
१८०.	श्री प्रभावनाश्रीजी म.सा.	बड़ाखेड़ा	सं. २०४० फा. शु. २	रतलाम
१८१.	श्री सुयशमणिजी म.सा.	गंगाशहर	सं. २०४० फा. शु. २	रतलाम
१८२.	श्री चितरंजनाश्रीजी म.सा.	रतलाम	सं. २०४० फा. शु. २	रतलाम
१८३.	श्री मुक्ताश्रीजी म.सा.	बीकानेर	सं. २०४० फा. शु. २	रतलाम
१८४.	श्री सिद्धमणिजी म.सा.	बेंगू	सं. २०४० फा. शु. २	रतलाम
१८५.	श्री रजतमणिश्रीजी म.सा.	बंगमुण्डा	सं. २०४० फा. शु. २	रतलाम
१८६.	श्री अर्पणाश्रीजी म.सा.	कानोड़	सं. २०४० फा. शु. २	रतलाम
१८७.	श्री मंजुलाश्रीजी म.सा.	भीनासर	सं. २०४० फा. शु. २	रतलाम
१८८.	श्री गरिमाश्रीजी म.सा.	चौथ का बरवाड़ा	सं. २०४० फा. शु. २	रतलाम
१८९.	श्री हेमश्रीजी म.सा.	नोखामंडी	सं. २०४० फा. शु. २	रतलाम
१९०.	श्री कल्पमणिश्रीजी म.सा.	पीपल्या	सं. २०४० फा. शु. २	रतलाम
१९१.	श्री रविप्रभाजी म.सा.	जावरा	सं. २०४० फा. शु. २	रतलाम
१९२.	श्री मयंकमणिजी म.सा.	पीपलियामंडी	सं. २०४० फा. शु. २	रतलाम
१९३.	श्री चन्दनबालाश्रीजी म.सा.	बड़ीसादड़ी	सं. २०४१ मिगसर सुदी १३	बड़ीसादड़ी
१९४.	श्री मिता श्रीजी म.सा.	गंगाशहर	सं. २०४१ माघ सुदी १०	गंगाशहर-भीनासर
१९५.	श्री पीयूष प्रभाजी म.सा.	बीकानेर	सं. २०४२ कार्तिक सुदी ६	घाटकोपर
१९६.	श्री संयमप्रभाजी म.सा.	शाहदा	सं. २०४२ कार्तिक सुदी ६	घाटकोपर
१९७.	श्री रिद्धि प्रभाजी म.सा.	अकलकुवा	सं. २०४२ कार्तिक सुदी ६	घाटकोपर
१९८.	श्री वैभवप्रभाजी म.सा.	अकलकुवा	सं. २०४२ कार्तिक सुदी ६	घाटकोपर
१९९.	श्री पुण्यप्रभाजी म.सा.	शाहदा	सं. २०४२ कार्तिक सुदी ६	घाटकोपर
२००.	श्री लक्ष्यप्रभाजी म.सां.	जांगलु	सं. २०४२ कार्तिक सुदी ६	घाटकोपर
२०१.	श्री परागश्रीजी म.सा.	कपासन	सं. २०४३ चैत सुदी ४	इन्दौर
२०२.	श्री भावनाश्रीजी म.सा.	भीम	सं. २०४३ चैत सुदी ४	इन्दौर
२०३.	श्री सुमित्राश्रीजी म.सा.	बाड़मेर	सं. २०४४ वैशाख सुदी ६	बाड़मेर
२०४.	श्री लक्षिताश्रीजी म.सा.	बाड़मेर	सं. २०४४ वैशाख सुदी ६	बाड़मेर
२०५.	श्री इंगिताश्रीजी म.सा.	बाड़मेर	सं. २०४४ वैशाख सुदी ६	बाड़मेर
२०६.	श्री दिव्यप्रभाजी म.सा.	डोंडीलोहारा	सं. २०४४ वैशाख सुदी २	इन्दौर
२०७.	श्री कल्पनाश्रीजी म.सा.	रायपुर	सं. २०४४ वैशाख सुदी २	इन्दौर
२०८.	श्री उज्ज्वलप्रभाजी म.सा.	राजनांदगांव	सं. २०४४ वैशाख सुदी २	इन्दौर

१९.	श्री अक्षयप्रभाजी म.सा.	बड़ीसादड़ी	सं. २०४५ जेठ सुदी २	जावरा
१०.	श्री श्रद्धाश्रीजी म.सा.	उदयपुर	सं. २०४५ जेठ सुदी २	जावरा
११.	श्री अर्पिताश्रीजी म.सा.	बम्बोरा	सं. २०४५ जेठ सुदी २	जावरा
१२.	श्री समताश्रीजी म.सा.	खंडेला	सं. २०४५ जेठ सुदी २	जावरा
१३.	श्री किरणप्रभाजी म.सा.	नीमच	सं. २०४५ माघ सुदी १०	मन्दसौर
१४.	श्री पुनीताश्रीजी म.सा.	बाड़मेर	सं. २०४६ वैशाख सुदी ६	बालोतरा
१५.	श्री पूजिताश्रीजी म.सा.	वायतु	सं. २०४६ वैशाख सुदी ६	बालोतरा
१६.	श्री विवेकश्रीजी म.सा.	पाटोदी	सं. २०४६ वैशाख सुदी ६	बालोतरा
१७.	श्री चरित्रप्रभाजी म.सा.	विल्लुपूरम	सं. २०४६ वैशाख सुदी ६	विल्लुपूरम
१८.	श्री कल्पनाश्रीजी म.सा.	नयागांव	सं. २०४६ वैशाख सुदी ६	निम्बाहेड़ा
१९.	श्री रेखाश्रीजी म.सा.	नांदगांव	सं. २०४६ वैशाख सुदी ६	निम्बाहेड़ा
२२०.	श्री शोभाश्रीजी म.सा.	बोल्ठाणा	सं. २०४६ वैशाख सुदी ६	निम्बाहेड़ा
२२१.	श्री गरिमाश्रीजी म.सा.	नांदगांव	सं. २०४६ वैशाख सुदी ६	निम्बाहेड़ा
२२२.	श्री स्वर्णप्रभाजी म.सा.	उदयपुर	सं. २०४६ पौष सुदी ७	उदयपुर
२२३.	श्री स्वर्णरेखाश्रीजी म.सा.	ब्यावर	सं. २०४६ पौष सुदी ७	उदयपुर
२२४.	श्री स्वर्ण ज्योति जी म.सा.	कोटा	सं. २०४६ पौष सुदी ७	उदयपुर
२२५.	श्री स्वर्णलताजी म.सा.	गंगाशहर	सं. २०४६ पौष सुदी ७	उदयपुर
२२६.	श्री नंदिताश्रीजी म.सा.	येवला	दिनांक २७.२.९०	मद्रास
२२७.	श्री साधनाश्रीजी म.सा.	गंगाशहर	दिनांक २७.२.९०	मद्रास
२२८.	श्री प्रमिलाश्रीजी म.सा.	बीकानेर	दिनांक ६.५.९०	कानोड़
२२९.	श्री शर्मिलाश्रीजी म.सा.	बीकानेर	दिनांक ६.५.९०	कानोड़
२३०.	श्री सुमंगलाश्रीजी म.सा.	चपलाना	दिनांक ६.५.९०	कानोड़
२३१.	श्री पावनश्रीजी म.सा.	चिकारड़ा	दिनांक ३.६.९०	चिकारड़ा
२३२.	श्री प्रज्ञाश्रीजी म.सा.	चिकारड़ा	दिनांक ३.६.९०	चिकारड़ा
२३३.	श्री मृगावतीजी म.सा.	पीपाड़	दिनांक २०.१२.९०	रायपुर (म.प्र.)
२३४.	श्री श्रुतशीलाजी म.सा.	धमतरी	दिनांक २०.१२.९०	रायपुर (म.प्र.)
२३५.	श्री सौम्यशीलाजी म.सा.	मोझर	दिनांक २०.१२.९०	रायपुर (म.प्र.)
२३६.	श्री सन्मतिशीलाजी म.सा.	श्रीरामपुर	दिनांक २०.१२.९०	रायपुर (म.प्र.)
२३७.	श्री विवेकशीलाजी म.सा.	खापर	दिनांक २०.१२.९०	रायपुर (म.प्र.)
२३८.	श्री इच्छिताश्रीजी म.सा.	रायपुर	दिनांक २५.३.९१	बैंगलोर
२३९.	श्री सम्बोधिश्रीजी म.सा.	जम्मूकश्मीर	दिनांक १६.२.९२	बीकानेर
२४०.	श्री विपुलाश्रीजी म.सा.	बीकानेर	दिनांक १६.२.९२	बीकानेर
२४१.	श्री विजेताश्रीजी म.सा.	बीकानेर	दिनांक १६.२.९२	बीकानेर
२४२.	श्री स्थितप्रज्ञाश्रीजी म.सा.	देशनोक	दिनांक १६.२.९२	बीकानेर
२४३.	श्री मनीषा श्रीजी म.सा.	भदेसर	दिनांक १६.२.९२	बीकानेर

२४४.	श्री धैर्यप्रभा जी म.सा.	विशनिया	दिनांक १६.२.९२	बीकानेर
२४५.	श्री मणिश्रीजी म.सा.	बीकानेर	दिनांक १६.२.९२	बीकानेर
२४६.	श्री वैभवश्रीजी म.सा.	बीकानेर	दिनांक १६.२.९२	बीकानेर
२४७.	श्री शीलप्रभाजी म.सा.	जगपुरा	दिनांक १६.२.९२	बीकानेर
२४८.	श्री अभिलाषा श्रीजी म.सा.	देशनोक	दिनांक १६.२.९२	बीकानेर
२४९.	श्री नेहाश्रीजी म.सा.	खंडेला	दिनांक १६.२.९२	बीकानेर
२५०.	श्री कविताश्रीजी म.सा.	श्यामपुरा	दिनांक १६.२.९२	बीकानेर
२५१.	श्री अनुपमाश्रीजी म.सा.	देशनोक	दिनांक १६.२.९२	बीकानेर
२५२.	श्री नूतनश्रीजी म.सा.	देशनोक	दिनांक १६.२.९२	बीकानेर
२५३.	श्री अंकिताश्रीजी म.सा.	गंगाशहर	दिनांक १६.२.९२	बीकानेर
२५४.	श्री संगीताश्रीजी म.सा.	बालेसर	दिनांक १६.२.९२	बीकानेर
२५५.	श्री जागृतिश्रीजी म.सा.	देशनोक	दिनांक १६.२.९२	बीकानेर
२५६.	श्री विभाश्रीजी म.सा.	श्यामपुरा	दिनांक १६.२.९२	बीकानेर
२५७.	श्री मननप्रज्ञा श्रीजी म.सा.	भीनासर	दिनांक १६.२.९२	बीकानेर
२५८.	श्री चन्दनाश्रीजी म.सा.	इन्दौर	दिनांक ८.५.९२	देशनोक
२५९.	श्री सुनीताश्रीजी म.सा.	रतलाम	दिनांक २८.९.९२	उदयरामसर
२६०.	श्री प्रियदर्शनाश्रीजी म.सा.	उदयपुर	दिनांक २८.९.९२	उदयरामसर
२६१.	श्री चिन्तनप्रज्ञा जी म.सा.	राजाजी का करेड़ा	दिनांक ४.२.९३	बड़ीसादड़ी
२६२.	श्री अर्पणाश्रीजी म.सा.	बड़ीसादड़ी	दिनांक ४.२.९३	बड़ीसादड़ी
२६३.	श्री शुभाश्रीजी म.सा.	देशनोक	दिनांक १२.२.९३	देशनोक
२६४.	श्री नमनश्रीजी म.सा.	नोखा	दिनांक २५.४.९३	गंगाशहर-भी
२६५.	श्री समीक्षाश्रीजी म.सा.	नाई	दिनांक २५.४.९३	उदयपुर
२६६.	श्री रोशनश्रीजी म.सा.	उदयपुर	दिनांक २५.४.९३	उदयपुर
२६७.	श्री रश्मिश्रीजी म.सा.	कानोड़	दिनांक ३.१२.९३	कानोड़
२६८.	श्री सुयशप्रज्ञाजी म.सा.	राजनांदगांव	दिनांक ८.१२.९३	नागपुर
२६९.	श्री सुविजेताश्रीजी म.सा.	रायपुर	दिनांक २३.१२.९३	रायपुर
२७०.	श्री सुनेहाश्रीजी म.सा.	खैरागढ	दिनांक २३.१२.९३	रायपुर
२७१.	श्री सुपद्याजी म.सा.	सम्बलपुर	दिनांक २३.१२.९३	रायपुर
२७२.	श्री सुजाताश्रीजी म.सा.	नोखा	दिनांक २४.२.९४	देशनोक
२७३.	श्री सुयशाश्रीजी म.सा.	रायपुर	दिनांक २४.२.९४	देशनोक
२७४.	श्री सुमेधाश्रीजी म.सा.	नोखामंडी	दिनांक २४.२.९४	देशनोक
२७५.	श्री प्रशान्तश्रीजी म.सा.	वावरा		
२७६.	श्री अर्जिताश्रीजी म.सा.	मोड़ी	दिनांक १३.०५.९४	देशनोक
२७७.	श्री अर्चिताश्रीजी म.सा.	वायतु	दिनांक १३.०५.९४	देशनोक
२७८.	श्री नमिताश्रीजी म.सा.	बैंगलोर	दिनांक २४.११.९४	सूरत

२७९. श्री पुनीताश्रीजी म.सा. मद्रास दिनांक २४.११.९४ सूरत
२८०. श्री समीक्षणाश्रीजी म.सा. पथारकांदी दिनांक ९.२.९५ बीकानेर
२८१. श्री लक्ष्य ज्योतिजी म.सा. मद्रास दिनांक ९.२.९५ बीकानेर
२८२. श्री जयप्रज्ञाश्रीजी म.सा. रायपुर दिनांक २.५.९५ बीकानेर
२८३. श्री प्रतिभाश्रीजी म.सा. उदासर
२८४. श्री सुरभिश्रीजी म.सा. नगरी दिनांक ९.२.९७ दुर्ग
२८५. श्री सुरुचिश्रीजी म.सा. धमधा दिनांक ९.२.९७ दुर्ग
२८६. श्री सुप्रियाश्रीजी म.सा. नोखामंडी दिनांक ९.२.९७ दुर्ग
२८७. श्री सुरभिश्रीजी म.सा. जावद दिनांक १३.२.९७ जावद
२८८. श्री अस्मिताश्रीजी म.सा. देशनोक दिनांक २०.२.९७ बीकानेर
२८९. श्री अविचलश्रीजी म.सा. भदेसर दिनांक २०.२.९७ भदेसर
२९०. श्री मल्लिप्रज्ञाजी म.सा. बालोद दिनांक १५.३.९७ उदयपुर
२९१. श्री सुषमाश्रीजी म.सा. कानोड़ दिनांक ९.५.९७ चित्तौड़गढ
२९२. श्री प्रांजलश्रीजी म.सा. खाचरौद दिनांक ८.६.९७ नीमच
२९३. श्री उपासनाश्रीजी म.सा. रतलाम दिनांक ७.११.९७ रतलाम
२९४. श्री आराधनाश्रीजी म.सा. रतलाम दिनांक ७.११.९७ रतलाम
२९५. श्री ऋजुताश्रीजी म.सा. जदिया दिनांक ९.१२.९८ ब्यावर
२९६. श्री विरलश्रीजी म.सा. कलकत्ता दिनांक ९.५.९८ चित्तौड़गढ
२९७. श्री आस्थाश्रीजी म.सा. गंगाशहर दिनांक ९.५.९८ चित्तौड़गढ
२९८. श्री अंजलिश्रीजी म.सा. चित्तौड़गढ दिनांक ९.५.९८ चित्तौड़गढ
२९९. श्री सुरक्षाश्रीजी म.सा. दिनांक २९.११.९८ चित्तौड़गढ
३००. श्री मुदितप्रज्ञाश्रीजी म.सा. फलौदी दिनांक ३.१२.९८ मंगलवाड़
३०१. श्री उन्नतिश्रीजी म.सा. दिनांक ३.१२.९८ मंगलवाड़
३०२. श्री विशाखाश्रीजी म.सा. कानोड़ दिनांक ७.१२.९८ कानोड़
३०३. श्री सुशक्तिश्रीजी म.सा. अतरिया दिनांक २२.१.९९ राजनांदगांव
३०४. श्री सुमुक्तिश्रीजी म.सा. सम्बलपुर दिनांक २२.१.९९ राजनांदगांव
३०५. श्री सुभक्तिश्रीजी म.सा. सम्बलपुर दिनांक २२.१.९९ राजनांदगांव
३०६. श्री नीरजश्रीजी म.सा. बायुत (बाड़मेर) दिनांक २८.४.९९ उदयपुर
३०७. श्री विराटश्रीजी म.सा. गंगाशहर दिनांक २१.६.९९ उदयपुर

रिपोर्ट

समता तीर्थ-दांता

भारतीय संस्कृति की विशेषता है इसकी चिन्तन प्रणाली। चिन्तन प्रणाली के आधार पर भावधारा का निर्म होता है और भाव के आधार पर जीवन-दृष्टि की रचना होती है। सब कुछ बदल जाता है। आध्यात्मिकता और भौतिकता के बीच यही भावधारा सूक्ष्म विभाजक रेखा है। पर्यटन को यही भाव धारा जब तीर्थयात्रा के रूप में बदल देती है तो यात्री का सम्पूर्ण रूपान्तरण हो जाता है। तीर्थयात्री का आचार-विचार-व्यवहार, सब कुछ एक पवित्र से ओत-प्रोत और प्राणि-मैत्री से अनुप्राणित होता है।

कुछ इसी प्रकार की तीर्थयात्रा के भाव हृदय में हिलोरें ले रहे थे, जब हम लोग स्वर्गीय आचार्य श्री नानालालजी म. सा. की जन्मभूमि दांता-ग्राम की यात्रा के लिए तत्पर हुए। राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, शासननिष्ठ श्री जयचंदलालजी सुखाणी और श्रमणोपासक सम्पादक और संघ प्रमुख श्री चम्पालालजी डागा की पहल पर इस पवित्र यात्रा का अनुष्ठान हुआ। मैं बीकानेर से यात्रा के आधार स्थल चित्तौड़गढ पहुंचा और वहां श्रावकरत्न श्री भंवरलालजी अब्भाणी के निवास पर ठहरा। कलकत्ता से नीमच होते हुए साहित्य साधक, संघ हितैषी श्री भूपराजजी जैन सीधे निम्बाहेड़ा पहुंचे और वहां से संघ महामंत्री श्री सागरमलजी चपलोत अपनी कार में उन्हें साथ लेकर दिनांक २३ जून के सुप्रभात में अब्भाणी निवास पर आ पहुंचे। चित्तौड़गढ से सर्वश्री सागरमलजी चपलोत महामंत्री, भूपराजजी जैन, फोटो ग्राफर श्री शर्मा और मैं चारों लोग समता दर्शन प्रणेता आचार्य श्री नानेश की जन्म भूमि दांता और दीक्षा भूमि कपासन के पवित्र स्थानों के दर्शन और वहां के साक्षी जनों से संवाद हेतु रवाना हुए। संघ महामंत्री श्री चपलोत की आत्मीयता से हम पूरे समय प्रमुदित रहे।

दीक्षा भूमि : कपासन - महापुरुषों की, सत्पुरुषों की, संत-पुरुषों की कृपा से दुर्गम भी सुगम हो जाता है। इसकी प्रत्यक्ष अनुभूति हमने अपनी यात्रा में की। जून माह की भीषण तपती गर्मी के बीच हमने प्रस्थान किया किन्तु देखते-ही-देखते बादल छा गये और शीतल समीर श्रम का हरण करने लगी।

हम लोग शीघ्र ही कपासन पहुंचे। यही गुरुदेव की दीक्षा भूमि है। श्रमणोपासक सम्पादक श्री चम्पालालजी डागा ने अपने स्वभाव के अनुसार सर्वत्र सूचना भेज दी थी, तदनुसार कपासन के सुश्रावकगण हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। इस स्थिति से हमें हर्ष हुआ। श्री संघ अध्यक्ष श्री सोहनलालजी चंडालिया, युवा सर्वश्री मदनलालजी चंडालिया, अरुणजी बागमार और चांदमलजी बागमार आदि स्वतंत्र वाहनों पर हमारे साथ हो गए।

स्थानक- हमने सर्वप्रथम उस स्थानक की यात्रा की जहां गुरुदेव ने वैराग्य अवस्था में मुनि श्री इन्द्रमलजी म.सा. के पास रह कर साधना की थी। स्थानक भवन वही प्राचीन और गरिमामय। कपासन के संघ अध्यक्ष और संघनिष्ठ जनों ने स्थानक के चप्पे-चप्पे का हमें दर्शन कराया। यह स्थानक सकल स्थानकवासी समाज का संयुक्त स्थानक है, यह जानकर विशेष हर्ष हुआ।

दीक्षा स्थल - यहां से हम लोग आचार्य श्री नानेश की दीक्षा-स्थली की ओर बढे। कपासन कस्बे के छोर पर विशाल तालाब के दर्शन करके अपार हर्ष हुआ। मेवाड़ और मारवाड़ के इतिहास और ख्यात ग्रन्थों में इस तालाब

का अनेक बार वर्णन पढ़ा था.। आज इस तालाब के दर्शन से चमत्कृत हो उठे। विशाल-मीलों तक फैला जल ग्रहण क्षेत्र ही मानो सिमटते-सिमटते तालाब का रूप धारण करके धरती पर साकार उपस्थित हो गया। तालाब-वृक्षों की पंक्तियां मन को हरा-भरा कर रही थी। तालाब के किनारे बनी हुए पंथवारियां सम्पूर्ण समाजों की एकात्मकता और तालाब के विकास और सुरक्षा की चिन्ता और सजगता को उजागर कर रही थी।

श्री संघ कपासन की सजगता और समय-समय पर यहां विचरते संत रत्नों की अहिंसा के प्रति उत्कट समर्पणा के बल पर इस विशाल तालाब में मछलियों के शिकार पर प्रतिबंध लगा और जीवरक्षा का महान् कार्य संपादित हुआ। इस कार्य को स्थायित्व प्रदान करने के लिए जीवरक्षा समिति, कपासन अब भी समर्पित है।

इसी तालाब के सम्मुख आम और जामुन के पेड़ों की सघन छांव में वैरागी नानालाल-संत नानालालजी बने। उनका जीवन रूपान्तरित हुआ। आज भी यह स्थान हरा-भरा और सुरम्य वन-उद्यान सा प्रतीत होता है। आज से ६१ वर्ष पूर्व इस स्थल की प्राकृतिक सुषमा का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। उस इतिहास निर्माणकारी, युगान्तरकारी दीक्षा के साक्षी एक विशाल वट-वृक्ष के तले खडे होकर हमने उस सम्पूर्ण दृश्य को पुन: मन: चक्षुओं में साकार किया। सभी प्रमुदित हो उठे और घूम-घूम कर उस ऐतिहासिक दीक्षा स्थल के स्पर्श की पुलक को अनुभूति में संजोते रहे।

यहां से हम समीपस्थ गोशाला-आचार्य नानेश रूपरेखा गो सदन को देखने गए। इस गोसदन की स्थापना में संघनिष्ठ श्री मोतीलालजी सुन्दरलालजी दुगड़ का विशेष योगदान रहा है। श्रीसंघ की सेवा और श्री दुगड़ की सहयोग भावना से यह गोसदन एक उल्लेखनीय सेवा प्रकल्प के रूप में उभर रहा है। इसमें सहयोग की पहल श्री सुन्दरलालजी दुगड़ के स्वर्गीय पिताश्री मोतीलालजी दुगड़ ने अपनी पोतियों के नाम पर की थी। श्री रतनलालजी पोखरणा और श्री मीठूलालजी आदि इस गोसदन की सार-संभाल में आत्मभोग दे रहे हैं।

यहां से हमने श्री मनोहरलालजी पोखरणा के निवास पर जाकर उनकी वयोवृद्ध माताजी से भेंट की और उनके संस्मरण सुने।

कपासन यात्रा की एक और उल्लेखनीय घटना है-वयोवृद्ध श्री मांगीलालजी मास्टर साहब से भेंट। हमने कपासन में प्रवेश करते ही सर्वप्रथम उनसे भेंट की और उनकी प्रत्यक्ष अनुभूति युक्त संस्मरणों को सुना। उनसे भेंट कर हमें अपार हर्ष हुआ।

नानेशनगर-दांता-प्रवेश- कपासन से हम नानेशनगर (दांता) पहुंचे। मैं पहले भी दांता गया हुआ हूं। पहले और आज के दांता में एक विशेष अन्तर आया है और वह है-आचार्य श्री नानेश समता विकास ट्रस्ट के भव्य भवन और शिक्षा-चिकित्सा और बहु आयामी सेवा प्रकल्पों की संरचना और संचालन। इस ट्रस्ट के अधीन उक्त प्रकल्पों के लिये भवनों का निर्माण हो चुका है। उच्च माध्यमिक स्तर का आवासीय विद्यालय प्रगति पर है। चिकित्सा और लोक कल्याण के बहुविध कार्यों हेतु भवनों का निर्माण, चिकित्सा अधिकारियों की नियुक्ति आदि हो चुकी है। दांता और आस-पास के लोग लाभान्वित हो रहे हैं।

दांता में प्रवेश करते ही यह भव्य भवन प्रत्येक आगत का ध्यान आकर्षित करता है।

इस संस्थान की गतिविधियों और तेज रफ्तार प्रगति से इसके शीघ्र ही मेवाड़ का शीर्ष सेवा संस्थान बन जाने की आशा है। इस संस्थान की स्थापना में सर्वश्री हरिसिंहजी रांका मुम्बई, रिधकरणजी सिपानी बैंगलोर, उत्तमचन्दजी खिंवेसरा मुम्बई की योजकता और अर्थ नियोजन ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। संघ प्रमुख श्री केशरीचंदजी गोलछा और श्री चम्पालालजी डागा के परिवारों का अर्थ सहयोग भी विशेष उल्लेखनीय है।

यह संस्थान समता-विभूति आचार्य श्री नानेश की स्मृति में एक अनूठा और लोक कल्याणकारी प्रयास है। यह प्रयास प्रेरक और स्तुत्य है (संस्थान पर पृथक से आलेख इसी अंक में अन्यत्र प्रकाशित)। हमें संस्थान

का अवलोकर कर हर्ष हुआ। ग्राम के प्रवेश द्वार पर यह आचार्य श्री नानेश का दिव्य कीर्तिस्तंभ सा प्रतीत होता है।

हृदय स्थल : आगे बढ़कर हम दांता ग्राम के हृदयस्थल समता विभूति आचार्य श्री नानेश के जन्म और प्रारंभिक कर्म के साक्षी उनके निवास स्थान पर पहुंचे। श्री मोड़ीलालजी के पुत्र रूप में मां शृंगारा की कोख से जन्म लेकर जिस घर में शिशु गोवर्धन की किलकारियां गुंजित हुई थीं, जहां गोवर्धन प्यार से नाना और फिर संस्कार से मुनि श्री नानालाल बने, वह घर किसी तीर्थ से कम नहीं। साक्षात् तीर्थस्थल पर पहुंच कर हमारा प्रवासी दल अनिवर्चनीय आन्तरिक आनन्द से भर उठा। हमारे साथ समता विकास न्यास से तत्रस्थ श्री मनोहरलालजी पोखरणा और श्री शांतिलालजी जारोली सहित स्थानीय प्रमुख कार्यकर्ता भी नाना के निवास पर पहुंचे। दांता ग्राम में यह पोखरणा परिवारों का छोटा सा मोहल्ला है। इसी मोहल्ले के बीच एक सामान्य ग्रामीण घर ही नाना की कर्मस्थली था। आचार्य श्री नानेश के परिजनों ने यह घर स्मारक निर्माण हेतु भेंट कर दिया है और मंगलवाड़ के श्री उमरावसिंह ओस्तवाल हाल मुंबई इस घर के विकास हेतु संकल्पित हैं।

घर के उस छोटे से कक्ष में पहुंच कर जहां महापुरुष का आविर्भाव हुआ था, हम सभी प्रमुदित हुए। प्रवेश करते ही पार्श्व में शाल-प्रशाल तथा कुछ खुला भाग। बस यही है-नानेश के जन्म का साक्षी यह सामान्य घर।

इस मकान के सामने व्यवसायी श्री नानालालजी की दुकान भी स्थित है। जब उन्हें वैराग्य हो गया और उन्होंने व्यवसाय करना छोड़ दिया, तब परिजनों के कुछ करने के आग्रह पर इसी दुकान में उन्होंने कुछ समय शिक्षक की भूमिका निभाई और विद्यार्थियों के प्रिय गुरु बने तथा कालान्तर में तो वे गुरुओं के गुरु आचार्य श्री नानेश बन गए।

इस सीधे-सादे परिवेश में एक सहज आध्यात्मिक शांति की अनुभूति हो रही थी। आचार्य श्री नानेश के घर के ठीक पास में वैरागियों-वैरागी-संन्यासी का एक स्थान भी है, जहां सदैव धार्मिक वातावरण रहा करता था। संस्कारित पोखरणा परिवार और सन्तों सन्यासियों का सामीप्य एक पावन वातावरण बनाने में समर्थ रहा होगा।

यहां हमने पोखरणा परिवार के उन बुजुर्गों से बातचीत की जिन्होंने अपना बचपन 'नाना' के रूप में बिताया था। वे थे सर्वश्री भंवरलालजी पोखरणा, फूलचन्दजी पोखरणा और रूपलालजी पोखरणा। ये सभी नाना के बाल्यजीवन के संस्मरण सुनाते हुए भाव विह्वल हो उठे। (संस्मरण संलग्न)

भदेसर- आचार्य श्री नानेश का ननिहाल भदेसर था। उनके वैराग्य भाव जागरण में भदेसर का महत्वपूर्ण स्थान था। भदेसर पहुंच कर हमं श्री संघ अध्यक्ष श्री राजमलजी सरूपरिया से मिले तथा उनके साथ श्री पृथ्वीराज जी नाहर के घर पहुंचे जो कि गुरुदेव का संसारपक्षीय ननिहाल था। वहां हमारी वयोवृद्ध श्रीमती उगमबाई धर्मपत्नी श्री पृथ्वीराजजी से भेंट हुई। उन्होंने आचार्य श्री नानेश की समन्वय और आत्मीयता की वृत्ति पर अपनी भाव-भाषा में प्रकाश डाला।

एक पुण्य बोध के साथ प्रकृति की रिमझिम वर्षा और सौम्य सहकारी वातावरण में हम हमारी यात्रा पूर्ण कर अपने गन्तव्यों की ओर लौट चले। दांता और दांता का नाना अभी भी मन-मस्तिष्क में छाया हुआ था। सहज-सरल ग्राम्य जीवन और उसी ग्राम्य जीवन के उत्स हमारे आराध्य आचार्य श्री नानेश।

जानकीनारायण श्रीमाली

भेंट वार्ताएं

मेवाड़ के कण-कण में सुवास

(समता तीर्थ दांता के प्रवास में स्वर्गीय आचार्य श्री नानेश के प्रारंभिक जीवन के प्रत्यक्ष अवलोकनकर्ताओं ौर उनके सहपाठियों आदि से भेंट हुई, जिनके संक्षिप्त संस्मरण यहां प्रस्तुत किये जा रहे हैं। ये संस्मरण भेंट वार्ताओं ह सारांश रूप में हैं। ये भेंट वार्ताएं श्रमणोपासक के आचार्य श्री नानेश स्मृति विशेषांक हेतु विशेष रूप से संग्रहित ती गई।)

ी मांगीलालजी मास्टर साहब, आयु ९० वर्ष, निवासी कपासन :

आचार्य श्री नानेश अपनी वैराग्यवस्था में यहां-हमारी कपासन नगरी में रहे थे। मुझे वे दिन खूब अच्छी रह से याद हैं। वे उन दिनों पंडित महाराज मुनि श्री इन्द्रमलजी म.सा. के पास स्थानीय स्थानक में रहते थे। ह संवत् १९९५ की बात है। एक रात्रि को उन्होंने स्थानक में स्थित बबूल के वृक्ष के नीचे मात्र एक पछेवडी में ी पूरी रात निकाल दी। वे समय-समय पर ऐसी कठोर तपस्याएं अन्त: प्रेरणा से कर लिया करते थे।

चूंकि श्री नानालालजी को दीक्षा की प्रेरणा कपासन से मिली थी। अत: दीक्षा के लिये भी कपासन का चयन किया गया। इस दीक्षा के लिये चंडालिया कुल के सर्व श्री छगनलालजी, मीठूलालजी और उगमलालजी ने बहुत प्रयत्न किये। मैंने दीक्षा के समय उनके तेज को पहले पहल देखा। वे मानते थे कि शासन सख्त होगा, तभी चमकेगा।

इसका प्रसंग भी उपस्थित हुआ। तत्कालीन आचार्य श्री गणेशीलालजी म.सा. दीक्षा देने के लिये पधारे। जब उन्हें पता लगा कि दीक्षार्थी श्री नानालालजी की बन्दोली रात को निकलेगी तो उन्होंने कहा कि यदि ऐसा हुआ तो सुबह मैं यहां से विहार कर दूंगा। इस पर वैरागी श्री नानालालजी ने कहा कि मैं जाऊंगा तभी तो बन्दोली निकलेगी। संघ को सब बात का पता चला तो फिर बंदोली का कार्यक्रम बदला गया और दिन के समय बन्दोली निकाली गई। जहां उन्हें बान बिठाया गया था, वहां से स्थानक तक बन्दोली निकाली गई।

अन्य सम्प्रदायों में दीक्षा के समय कैसा माहोल था ? पूछने पर मास्टर सा. भाव विभोर हो उठे। वे बोले कि दीक्षा में पूरा समाज सम्मिलित हुआ। उस समय सब भली प्रकार मिल-जुलकर रहते थे। सम्प्रदाय का कुछ विशेष भेद नहीं था। ज्योर्तिधर श्री जवाहराचार्य जी ने सभी खेड़ों को एक किया था। श्री गणेशाचार्य जी उस समय सम्प्रदाय के युवाचार्य थे। इसलिये बहुत एकात्म भावों के साथ दीक्षा सम्पन्न हुई। कपासन के तालाब पर दीक्षा का भव्य दृश्य उपस्थित हुआ था।

अपनी स्मृति पर जोर देते हुए मास्टर सा. ने कहा कि आचार्य श्री गणेशीलालजी म.सा. का ऑपरेशन होने को था। उन्होंने कहा कि मैं संघ को एक योग्य उत्तराधिकारी सौंप कर जाऊँगा। उन्होंने अपने वचनों को सत्य किया और हमें श्री नानेशाचार्य जैसा उत्तराधिकारी सौंपा।

नानेश नगर दांता में आचार्य प्रवर के जन्म के मकान के समक्ष प्रवासी दल के पहुंचते ही आसपास के सभी श्रद्धानिष्ठ-जन एकत्र हो गये थे। इनमें सर्व श्री भंवरलाल जी पोखरना, मिठूलालजी पोखरणा, फूलचंदजी पोखरणा,

रूपलालजी पोखरणा व आचार्य श्रीजी के संसारपक्षीय भंतीजे श्री रतनलालजी पोखरणा आदि पोखरणा परिवार के सज्जनों का स्वर्गीय गुरुदेव से निकट साहचर्य रहा। संवाद के दौरान सर्व श्री फूलचन्दजी पोखरणा और भंवरलालजी पोखरणा ने जो कि आचार्य श्री नानेश के बालजीवन के साथी और सहपाठी थे, जिन्होंने दांता की माटी में नाना के साथ लोट-पोट होकर, उनके विशिष्ट गुणों को बीजरूप में देखा-परखा और अनुभव किया था, अतीत की गहराई में डूब कर अपने संस्मरण सुनाए।

श्री भंवरलालजी पोखरणा ने अपनी मातृभाषा में कहा कि- महाराज सा., म्हांका बा का बेटा हा सा, बड़ो पग हो, हालांकि उमर में एक जिसा हा, इण वास्ते म्हें बिंयानै काकासा कैंवता। गांव-खेत में रात-दिन हंडे (साथ-साथ) रैवता-खेलता-खावता। म्हांने हंडे ई मांडल का गुरांसा श्री जोरावरसिंहजी पाटी भणाई। पाछै चिकारड़ा का गुरांसा फूलचन्दजी कोठारी म्हांनै पढ़ाया।

महाराज सा. पढ़वा में हुशियार हा। वौ म्हां सगलां में आगेवाण रैवता।

बाद में बियांनै वैराग भाव आयो जदि दुकान-बोपार-धंधो छोड़ियो क्योंकि काम नी करे जदि घर केवड़ो ने आवे। कई दिन स्कूल चलाई। कोई एक महीना तक टाबर भणाया। पछी दीक्षा लई लीधी।

श्री फूलचंदजी पोखरणा कह्यो- वै तो महापुरुष हा। पण बालपणै में म्हें बिंयानै नीं ओलख्या। बियां जदि धंधो-पाणी सरू करियो तो घणो आछो करियो। श्री कन्हैयालालजी पोखरणा भोपालसागर सूं सगा भाई सिरसो प्रेम हो। गामड़ा म्हूं चीजां लाइनै फतेसागर ले जावणी। घणो ब्योपार रो ध्यान राखणो। खेती रो घणो ध्यान राखणो। थोड़ा में कवूं तो जिको काम करणो वींरो पूरो ध्यान राखणो बियांरो सुभाव हो।

बालपणै रे खेलां री बात पूछने पर वयोवृद्ध श्री फूलचंदजी कह्यो कै- कई नीं खेलता-घणा विशेष की विचार म्हें मगन रैवता। पण सेवा रो घणो शौक हो। बूढी लुगायां पानी लावती तो रास्ते में तुरंत तोक लेवता। भाभा (मां शृंगारा) घणा बीमार हुया तो तुरंत आय हाजर हुया। बियां रा बालपणै रा साथी हा [illegible] कुंभार, लिछमणजी अर शंकरलालजी पोखरणा।

वैराग आयो जदि कै दिया- म्हारे [illegible] करणो। सौगन है अर [illegible] अबै संसार सूं ई वीर व्है गिया। (श्री [illegible] हो उठे।)

यहीं श्री रतनलालजी पोखरणा ने [illegible] आचार्य श्री नानालालजी म.सा. का निज [illegible] स्मारक बनाने के लिए, पावन-धाम बनाने के लिए [illegible] किया है, जिससे दांता की इस दिव्य ज्योति से [illegible] और विश्व प्रेरणा लेते रहें।

भदेसर -भदेसर में आचार्य श्री नानेश [illegible] मामीजी वयोवृद्ध सुश्राविका श्री पृथ्वीराजजी [illegible] धर्मपत्नी श्रीमती उगमबाई ने पुराने दिनों को याद [illegible] हुए कहा कि वे अपने नाना श्री [illegible] बहुत आदर करते थे। अपने दोनों मामा श्री [illegible] और खुमाणजी से भी उनका बहुत स्नेह था। भदेसर [illegible] श्री भैंरूलालजी मोदी उनके हम उम्र थे। वे [illegible] कर आखी दुनिया में पूजीज जाणै रै पछै भी [illegible] नैं पिछाणता अर आगीवाण हो'र बतलावता। [illegible] विह्वल होते हुए श्रीमती उगमबाई बतायो कै- [illegible] बोपार कियो, कदी खोट नीं करी। बियां दिना [illegible] में डालडा मिलाणै रो घणो चलण हो, कदी [illegible] मिलायो। बोपार में शुद्धता राखी।

बियां दिनां गामडां में बीड़ी बोत चालती। [illegible] कदी नीं पी। सणी वेला छगन जी भुआसा (महासती [illegible] छगनकंवरजी म.सा.) पण पधारता था। घणो [illegible] होवतो।

आज सूं ३० बरस पैली री घटना है। आचार्य [illegible] भदेसर पधार्‌या हा। बियां रा दोनूं मामावां रे [illegible] अणबणं रैंवती। कई बरसां सूं बोल-चाल, खाण-पीण [illegible] हो। महाराज सा. पधारिया। भायां में मेल कराचो। [illegible] भरत मिलाप हुयो। भेला रोटया जीम्या। जमारो [illegible]

कपासन-में विद्वान श्राविका श्रीमती [illegible] धर्मपत्नी स्व. श्री फतहलालजी चंडालिया [illegible]

नानी ने अपने संस्मरण सुनाते हुए कहा कि-

म्हारी उमर नानालालजी री दीक्षा री टेम २२ बरस री ही पण म्हूं आज भी वो दृश्य जाणै परतख देख री हूं। बियानै दीक्षा री आज्ञा नीं मिली ही जिको बै म्हारै मकान में छिपी नै रैंवता। बियारै भोजन रो टिपन ज्यों जांवतो। पछै कपासन रा ई सुश्रावक श्री मोठालालजी अर म्हारा घर धणी (स्व. श्री फतहलालजी) बियांनै बारह रुपये छः आना देयनें कोटा भेज्या।

म्हूं कपासन में स्व. श्री जवाहराचार्य जी रो चौमासौ देख्यो अनै पछै नानालालजी री दीक्षा देखी। दीक्षा घणा ठाठ-बाठ सूं हुयी। आखोई गांव जनीं दाड़ै एक हो।

इस प्रकार भेंटवार्ताओं का क्रम चला। लगा कि कपासन-भदेसर-दांता के कण-कण में नाना का नाम रमा है। उनकी पावन स्मृति और सन्निधि से, सुवास से क्षेत्र महक रहा है।

इस महक से अन्तर को पवित्र कर हम लौट चले किन्तु स्मृति अमिट रूप से हृदय में अंकित हो गई।

-ब्रह्मपुरी चौक, बीकानेर

दिव्य नंदन वन थे

वै. बिंदु जैन

समतादर्शी आगम पुरुष,
संयम के शुभ स्पंदन थे।
खुद पीड़ा सहकर औरों का,
ताप मिटाने चन्दन थे।
संघर्षों की अग्नि में तप,
निखरे निर्मल कुन्दन थे।
स्नेहामृत आंखों से बरसे,
करुणाकर मृदु मनस्वी थे।
युगबोध के महास्रोत,
करुणाशील तथागत थे।
शोक मुक्त करने वाले,
दिव्य नन्दन वन थे।
मानवीय सद्गुण सुमनों से,
सुरभित सज्जित मधुवन थे,
मेरे जीवन के प्राण और,
अन्तर मन के धड़कन थे।

-बीकानेर

वे अन्तिम क्षण

दांता से भादसोड़ा, भादसोड़ा से दांता और दांता से कपासन की अणु-यात्रा। जो कपासन से [illegible] में तब्दील हुई। इस विराट-यात्रा को विराटता का स्वरूप प्रदान करने में सहायक दुर्लभ नर-तन, जो संयम [illegible] में आपाद कंठ सध चुका था, समता की सार्थकता को रोम-रोम से अपना व जी चुका था, अपने में [illegible] भास्कर सहित अस्ताचल की ओर शनैः -शनैः अग्रसर होता जा रहा था। मुखमंडल की आभा, सौम्यता [illegible] प्रवर्धित होती जा रही थी। रोग शत्रुओं ने इस वीर-योद्धा को परास्त करने की कड़ी घेरे बंदी कर ली थी, [illegible] आत्मबल व संयम के अनूठे एवं प्रभावी शस्त्र, जो ८० वर्ष से संग्रहीत कर रखे थे, इस समय वे [illegible] कारगर सिद्ध हो रहे थे।

अपनी आयुष्य पूर्णता का प्रतिपल चिंतन करते हुए अपने उत्तराधिकारी श्री रामलालजी म.सा. एवं '[illegible] एक प्राण' संस्था के तीसरे सदस्य स्थविर प्रमुख श्री ज्ञानमुनिजी म.सा. से अक्सर फरमाते रहे 'मैं खाली हाथ न [illegible] जाऊँ, ध्यान रखना।' ज्यों-ज्यों पौद्गलिक देह पिण्ड की अवस्था क्षीण होती गई त्यों-त्यों आत्मदीप्ति बढ़ती [illegible] लोकोत्तर साधनालीन आचार्य श्री नानेश की सुख-समाधि के लिये चारों तरफ जप-जप की ऐसी उल्लेखनीय [illegible] हुई कि यह नूतन वर्ष ही जप-तप नियम वर्ष घोषित कर दिया गया। अंतिम समय की वेला में जहां सुदूर [illegible] शासन प्रभावना कर रहे सुशिष्य सुशिष्यायें द्रव्य से तत्स्थान रहते हुए भाव से स्वयं को सेवा में उपस्थित रखे [illegible] भावनालीन थे, वहीं युवाचार्य प्रवर, स्थविर प्रमुख जी म.सा., शासन प्रभावक श्री संपतमुनिजी म.सा., [illegible] श्री चंद्रेशमुनिजी म.सा., तरुण तपस्वी श्री धर्मेन्द्र मुनिजी म.सा., सेवाभावी श्री प्रकाशमुनिजी आदि सभी [illegible] उपकृत सुशिष्यगण इस महावेला में स्वयं को स्थिर रखते हुए सेवा की उत्कृष्ट मिसाल का प्रस्तुतिकरण कर रहे [illegible] सेवाभावना एवं गुरु के प्रति उमड़ते भाव के चलते शासन प्रभावक श्री संपतमुनिजी म.सा. जो कि हृदय [illegible] अस्वस्थतावश पौषधशाला के नीचे कक्ष में विराज रहे थे, अपने आराध्य की स्वास्थ्य संबंधी समाचार मिलते [illegible] स्वयं को गौण कर शनैः शनैः तीसरी मंजिल पधारकर सेवारत हो गए। शास्त्रों में कथन है कि संथारे के पूर्व [illegible] भी होती है। इसी कथन को सभी ने समता विभूति, धर्मपाल प्रतिबोधक, त्रयशताधिक दीक्षा प्रदाता आचार्य [illegible] नानेश के जीवन में स्पष्ट रूप से देखा है। गत ६ माह से आचार्य देव संलेखना की स्थिति में थे। आहार-[illegible] शनैः शनैः कम करते हुए अंतिम समय से कुछ दिनों पूर्व बिल्कुल बंद कर दिया। कार्डियोग्राम कराने के लिए [illegible] मशीन को बैरंग भेजना पड़ा। चातुर्मास के पूर्व इस अप्रमत्त साधक को सुशिष्यवृन्द डोली में विराजित [illegible] कराने को बड़ी हास्पिटल ले गये। आधे घंटे तक सीटीस्केन मशीन पर बैठे रहे। पर एकदम मना कर दिया कि [illegible] नहीं कराना है तो बिना कराये ही पौषधशाला पधार गए। एक दिन डाक्टर बोलिया एक आवश्यक इंजेक्शन [illegible] आये तो आचार्य देव ने इशारे से कहा- यहां से हटें। मुझे इन्जेक्शन नहीं लगाना है। आचार्य देव लोकोत्तर [illegible] में लीन हो चुके थे। इतने वर्षों तक जिस देह के माध्यम से स्वयं को साधा, इसके पहले कि शरीर धोखा दे [illegible] स्वयं सचेत हो गए और देह की साधना से अलग होकर देहातीत साधना में लीन हो गए। दिनांक २६.१०.९९ रात्रि करीब २.३० बजे नवाचार्य प्रवर ने अष्टमाचार्य श्री से निवेदन किया कि 'तबीयत कैसी है ?' उस समय [illegible]

ने सभी संत-सतियां आदि से खमत-खामणा की बात ही।

२७.१०.९९ बुधवार को सबेरे ८ बजे से ९.३० के बीच श्री ज्ञानमुनिजी म.सा. ने विभिन्न रूपों में चार्य प्रवर से निवेदन किया। 'भगवन ! दूध पी लें, नी पी लें, पर उन्होंने हां नहीं भरी'। गत: २-३ दिन से -पानी नही ले रहे थे। आज भी सवेरे से कुछ नहीं या। तब उन्हें निवेदन किया-'भगवन्! क्या संथारा रना है,' तो गुरुदेव ने आंखों और चेहरे से स्वीकृति दे। फिर वापस उन्हें अन्य सन्तो एवं साध्वियों तथा स्थित श्रावकों के सामने आचार्य देव से फिर पूछा या तो उन्होंने संथारे के लिए स्पष्ट रूप से स्वीकृति दी। र भी स्थविर प्रमुख श्री ज्ञानमुनिजी म.सा. ने कहा -'भगवन ! यदि संथारा करना है तो फिर हाथ ोडिये, तो उन्होंने सबके सामने हाथ जोड़ लिये।' जिसे खकर सबको स्पष्ट लग गया कि आचार्य प्रवर पूरी ागरूकता के साथ संथारा करने के लिए तत्पर हैं। ाकिन फिर भी संथारा पच्चक्खाने का साहस नहीं हो हा था। तब स्थविर प्रमुख श्री ज्ञानमुनिजी म.सा. ने एक ार फिर निवेदन किया भगवन ! दूध पी लें, पानी ले लें। र आचार्य प्रवर ने कुछ जवाब नहीं दिया। तब उन्हें छा-'संथारा करा दूं।' तब आचार्य प्रवर ने मुख से ोलकर कहा कि-'पच्चक्खा दो'। इतना स्पष्ट संकेत आचार्य श्री का हो जाने पर युवाचार्य प्रवर श्री ने स्थविर मुख श्री ज्ञानमुनिजी म.सा. को संथारा पच्चक्खाने के लिए फरमाया और साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में सभी की सम्मति पूर्वक स्थविर प्रमुख श्री ज्ञानमुनिजी म.सा. ने ९.४५ बजे संथारा कर दिया। आचार्य प्रवर ने पूर्ण जागरूकता के साथ संथारा ग्रहण किया। उस समय साधु-साध्वियों के अतिरिक्त श्री गुमानमलजी चोरडिया, श्री राजमलजी चोरड़िया, श्री धनराजजी बेताला, श्री माणकजी नाहर, श्री संग्रामसिंहजी हिरण, श्री करणसिंहजी सिसोदिया, श्री जयचन्दलालजी सुखानी, श्री सुशीलजी वैद, श्री मदनलालजी मारू, श्री महेन्द्रजी कावड़िया, श्रीमती निर्मलाजी चोरड़िया, श्रीमती कमलाजी वैद और वीरेन्द्रसिंह जी लोढा आदि उपस्थित थे। शाम को ५.३५ बजे युवाचार्य श्री रामलालजी म.सा. (वर्तमान आचार्य) ने चौविहार संथारा करा दिया.। रात्रि १०.४१ बजे आचार्य प्रवर की आत्मा ने पूर्ण समाधि के साथ महाप्रयाण कर दिया। एक दिव्य प्रकाश हुआ और विलुप्त हो गया। यह आश्चर्यजनक था कि जबसे आचार्य प्रवर ने संथारा लिया तब से उसी रूप में अन्त तक पोढ़े रहे। उन्होंने न तो करवट बदली और न ही हाथ-पैर ही हिलाए। उनका समाधि के परम रूप में रमण रूप अलौकिक था।

आचार्य प्रवर के देवलोकगमन के तुरन्त बाद युवाचार्य श्री रामलालजी म.सा. को साधुमार्गी सम्प्रदाय का नवम् आचार्य घोषित कर दिया गया। उसी वक्त सुश्रावक श्री गुमानमलजी चोरड़िया ने संक्षिप्त वक्तव्य में सबके सामने कहा कि 'आचार्य श्री के निर्देशों के अनुसार हमें चलना है।' स्वर्गीय आचार्य प्रवर ने स्वयं को, युवाचार्य श्री एव श्री ज्ञानमुनिजी को तीन शरीर एवं एक प्राण कहा है अब वे दो शरीर एक प्राण रहे हैं। इन दोनों महापुरुषों को एकमेक होकर इस संघ को आगे बढाना है। इस सम्प्रदाय की श्रावक-श्राविकाओं की एक संस्था है, जिसका नाम 'श्री' अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ' है, जिसका मुख्य कार्यालय बीकानेर में स्थित होकर पंजीकृत है।'

आचार्य प्रवर के पार्थिव शरीर को दूसरे दिन २८ अक्टूबर को दोपहर १ बजे भडभूजा घाटी, स्थित पौषधशाला भवन से चांदी की डोल में विराजित कर अन्तिम यात्रा पंचायती नोहरे पहुंची। वहां से १.३० बजे हजारों लोगों की मौजूदगी में महाप्रयाण यात्रा शुरू हुई जो बड़ा बाजार, घंटाघर, मोती चौहट्टा, हाथीपोल, अश्विनी बाजार, शास्त्री सर्कल, अशोक नगर, आयड़ होते हुए शाम ४.१५ बजे श्री गणेश जैन छात्रावास पहुंची। जहां सायंकाल ४.४५ बजे आचार्य नानेश की पार्थिव देह को आचार्य देव के संसारपक्षीय भतीजे श्री रतनलालजी, श्री रूपलालजी, श्री अशोकजी पोखरना ने अग्नि को समर्पित

किया। इस अवसर पर श्री अ.भा.सा. जैन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शांतिलालजी सांड, महामंत्री श्री सागरमलजी चपलोत, पूर्व अध्यक्ष श्री गुमानमलजी चोरड़िया, श्री रिद्धकरणजी सिपाणी, उदयपुर संघ के अध्यक्ष श्री संग्रामसिंहजी हिरण, मंत्री श्री करणसिंहजी सिसोदिया, प्रचार-प्रसार संयोजक श्री वीरेन्द्रसिंहजी लोढा, शहर विधायक श्री त्रिलोकजी पूर्बिया, राजस्थान विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष श्री शान्तिलालजी चपलोत, बांसवाड़ा के पूर्व सांसद श्री प्रभुलालजी रावत, उदयपुर शहर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री शेषमलजी पगारिया सहित विभिन्न गणमान्य नागरिकों, विभिन्न [illegible] संस्थाओं के पदाधिकारियों सहित अपार [illegible] उपस्थित था। तब तक करीब एक लाख [illegible] श्रद्धालुओं का जमघट लग चुका था। यदि नहीं [illegible] घंटा पार्थिव शरीर रुक जाता तो १-२ लाख [illegible] बाहर से और भी आ जाते पर साधुमार्गी [illegible] बहुतों का आग्रह होते हुए भी पार्थिव शरीर नहीं [illegible] गया और इसे ६ किमी. की लम्बी यात्रा के [illegible] गणेश जैन छात्रावास के परिसर में तेजोमय [illegible] गया।

-[illegible]

शत-शत वंदन आज हमारा

स्नेहलता पारख

युगों-युगों तक गुंजेगा, जगती में जयनाद तुम्हारा,
तिण्णाणं तारणहारी को, शत-शत वंदन आज हमारा।
युगपुरुष युगदृष्टा नाना, नाना से नानेश बने,
समता दर्शन के प्रबल प्रणेता, ध्यान समीक्षण ध्यानेश बने,
दिव्य सितारे जैन जगत के, आभामय तुमसे आकाश सारा।

मुखमंडल दीप्तिमय तेरा, मस्तक पर चमके ब्रह्मकांति,
उग्रविहारी तप धारी, तपोतेजस्वी सहज शांति,
स्रोत स्नेह का बहे निरंतर, अनुपम अद्भुत व्यक्तित्व तुम्हारा,
जब-जब लेते हैं नाम तुम्हारा, लहरा उठता श्रद्धा का सागर,.
सूरत सम्मुख आ जाती भगवन्, गहरा उठता अश्कों का बादल।
आंखों में अश्रु लुप्त हुए, सह न सके हम विरह तुम्हारा।

गहन आत्मचिंतन कर नाना ने, शासन को गुरु राम दिया,
संघ बनेगा राम राज्य यह सुखद पैगाम दिया,
राम भक्त बनकर दिखलायें, ऐसा हो दृढ संकल्प हमारा॥

-बीकानेर

संथारा पचका
श्री नानेश को श्रद्धांजलि
आचार्य श्री नानेश

समता दर्शन प्रणेता, धर्मपाल प्रतिबोधक, समीक्षण ध्यान योगी
परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर श्री नानेश के महाप्रयाण
के पश्चात् पौषधशाला (उदयपुर) मे विराजित नश्वर देह

पचका
श्री नानेश को श्रद्धाजलि
श्री नानेश
देह पंचतत्व में विली
आचार्यश्री नानेश

समता दर्शन प्रणेता, धर्मपाल प्रतिबोधक, समीक्षण ध्यान योगी
परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर श्री नानेश के महाप्रयाण
के पश्चात् पौषधशाला (उदयपुर) में विराजित नश्वर देह

रजत विमान में विराजित पार्थिव देह की
अंतिम यात्रा का पौषधशाला से प्रारम्भ

अपने आराध्य की अंतिम यात्रा मे सम्मिलित अपार भक्त जन।

नाति दीर्घ समय में भारत भर से एकत्रित भक्त जन का सैलाब

अन्तिम दर्शन हेतु श्री गणेश जैन छात्रावास
उदयपुर में एकत्रित आबालवृद्ध

अन्तिम संस्कार की तैयारी
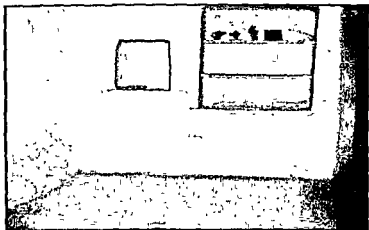
दांता ग्राम मे घर का वह भीतरी भाग,
जहा "गोवर्धन" ने जन्म लिया

जन्म स्थान का प्रवेश द्वार

परिवार का आवास–स्थल

कपासन का वह धर्मस्थानक जहां से
महाभिनिष्क्रमण यात्रा का प्रारम्भ हुआ

महाभिनिष्क्रमण–अणगार धर्म ग्रहण की साक्षी की सुरम्य स्थली

बचपन के साक्षी एवं परिजन

फूलचन्द पोखरणा

भवरलाल पोखरणा

रतनलाल पोखरणा

शकरलाल पोखरणा

मांगीलाल मास्टर सा

महाभिनिष्क्रमण का गवाह कपासन का मुख्य बाजार

नानेश गौशाला कपासन–प्रवेश द्वार

नानेश गौशाला का गोधन
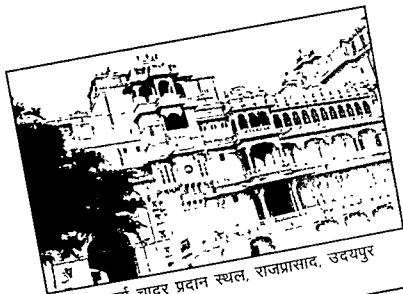
युवाचार्य चादर प्रदान स्थल, राजप्रासाद, उदयपुर
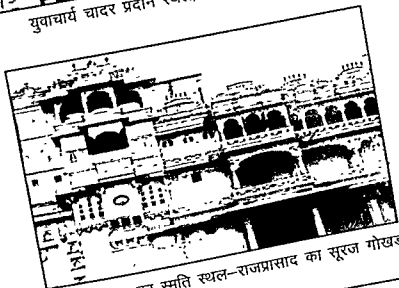
चादर महोत्सव का स्मृति स्थल–राजप्रासाद का सूरज गोखडा
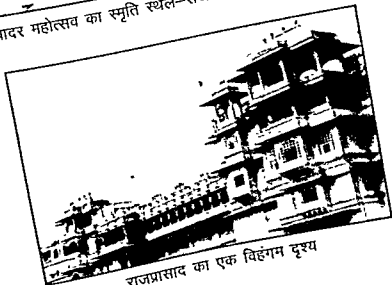
राजप्रासाद का एक विहंगम दृश्य
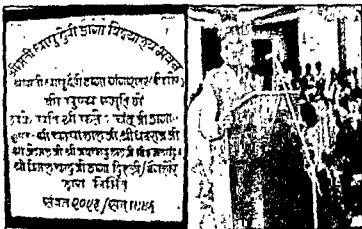
श्रीमती धापूदेवी डागा विद्यालय भवन के
समर्पण का दृश्य नानेश चिकित्सालय
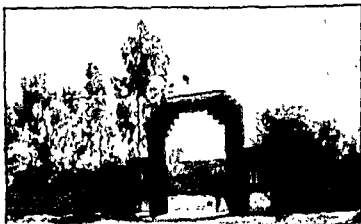
जन्म स्थल जो अब भक्तजन का
तीर्थ स्थल नानेश समता विद्यालय
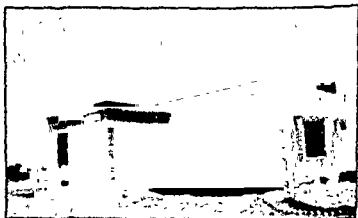
नानेश चिकित्सालय

नानेश नगर दांता—सामायिक भवन

गोलछा ट्रस्ट गुवाहाटी द्वारा निर्मित संकाय
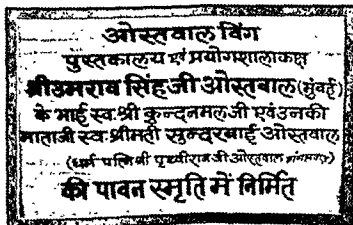
ओस्तवाल विंग प्रस्तर पट्ट
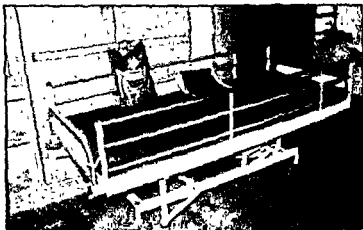
अस्वस्थता के समय प्रयुक्त पर्यंक
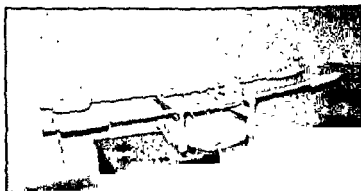
अस्वस्थता के कारण विहार के समय प्रयुक्त पालकी

महाप्रयाण के पश्चात् संघ को समर्पित पार्थिव देह

व्यक्तित्व वन्दन

समता योग के प्रेरक

अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के मूर्धन्य संत आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. एक समता योगी पुरुष थे। आपने अपने जीवन का लक्ष्य समता के माध्यम से जिन-शासन की प्रभावना का रखा था, समत्व के माध्यम से उन्होंने अपने जीवन के महत्त्वपूर्ण समय को श्रमणाचार में व्यतीत किया, अपने संयमी जीवन की ना में तल्लीन रहते हुए अपना पूर्ण जीवन जिन-शासन की प्रभावना में लगाया। जैसे एक पुष्प मिट जाने पर भी नी सुगंध को वायुमंडल में घोलकर अमिट बना रहता है। वैसे ही एक मुनि देह दृष्टि से अदृश्य हो जाने के बाद अपनी गुण गरिमाओं के रूप में सदैव जीवित रहता है। आचार्य श्री नानालाल जी म. भले ही देह दृष्टि से आज रे समक्ष नहीं है, परंतु गुणों की सुगंध रूप मे वे आज भी विद्यमान हैं। उनके सद्गुण, उनके विचार आज भी -मानस में जीवंत हैं।

मुझे अपने जीवनकाल में आचार्य श्री के दर्शन का सौभाग्य तो प्राप्त नहीं हुआ परंतु उनके जीवन के बारे में य-समय पर सुनता रहा हूं, उन्होंने अपने सम्प्रदाय के विस्तार में अपने जीवन का बहुमूल्य समय लगाया। अपने यम काल में लगभग ३५० दीक्षाएं प्रदान कर महान पुण्य का अर्जन किया एवं अनेक भव्य आत्माओं को जिन-सिन की सेवा में समर्पित कर शासन-सेवा का लाभ लिया। जीवन में कठिन से कठिन क्षणों में भी वे अपने सहज, मतारूप स्वभाव में स्थिर रहे। समाज को उन्होंने सम्यक्त्व दीक्षा के नाम पर कट्टरता से बांधा। आप अनुशासन य थे, अनुशासन के पालन के लिए वे अनेक बार कठोर से कठोर निर्णय भी लेते थे और उन्होंने अपने जीवनकाल ऐसे निर्णय लिए, यह उनकी दृढ़ता का ही प्रतीक है।

उन्होंने समीक्षण-ध्यान पद्धति का विकास किया और उसे अपने साधु संतों में प्रसारित कर ध्यान की ओर रणा करते रहे। वे एक कुशल प्रवचनकार थे। अक्सर वे अपने प्रवचनों में आगम और अध्यात्म के साथ-साथ यावहारिक जीवन का भी स्पर्श करते थे और उसे ही क्रियात्मक रूप देने के लिए उन्होंने दलितोद्धार का विशिष्ट कार्य किया। वर्ग भेद एवं जातिवाद के द्वारा होने वाली राष्ट्र की दुर्दशा एवं बढती हुई हिंसा पर रोक लगाने के लिए दलितोद्धार एवं अहिंसक उत्क्रांति का कार्य हाथ में लिया। दुर्व्यसनों में दलित माने जाने वाले व्यक्तियों के जीवन को परिवर्तित कर उन्हें एक अहिसक जीवन की नई दीक्षा प्रदान की, जिन्हें आज धर्मपाल की संज्ञा प्राप्त है।

अपना संपूर्ण जीवन संयम साधना एवं समता के साथ व्यतीत करते हुए आपश्री २७-१०-९९ को राजस्थान प्रांत के उदयपुर नगर में अपना औदारिक शरीर छोड़कर महाप्रयाण को प्राप्त हुए। उसके साथ आपने जिस संघ को अपना पूरा जीवन देकर पल्लवित पुष्पित किया आपके उत्तराधिकारी मैत्री और प्रेम के साथ समन्वय के क्षेत्र में आगे बढ़ें। यह समन्वय का युग है, हम आपसी मतभेदों से ऊपर उठकर रचनात्मक कार्यक्रमों के द्वारा जिन-शासन की सेवा करें और विश्व में जैन धर्म को एक अप्रतिम स्थान दिलवाने में अपने आपको समर्पित करें। श्रमण संघ सबके साथ मैत्री प्रेम और सौहार्द का वातावरण चाहता है। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि २१वीं सदी में हम सभी मिल जुलकर जैन दर्शन को विश्व के कोने-कोने में पहुंचाएंगे।

अनुपमेय ...

राजस्थान नभोमणि आचार्य प्रवर गुरुवर्य नानेश हमारे जीवन के प्रेरणा स्रोत थे। महान् [illegible] जवाहरलाल जी महाराज की सौराष्ट्र स्पर्शना के बाद गोण्डल गच्छ के साथ साधुमार्गी संघ का [illegible] हुआ था, जो उत्तरोत्तर वृद्धिंगत होता गया। आचार्य देव पूज्य गणेशीलाल जी महाराज ने [illegible] को सींचा और सौराष्ट्र के गोण्डल गच्छ के साधु साध्वी की उत्तम भक्ति आचार्यवर के प्रति बनी रही। [illegible] प्रवर श्री नानालाल जी महाराज गद्दीनशीन हुए तब उन्होंने भी इस संबंध को बरकरार रखते हुए [illegible] बहुत आदर भाव से देखा। उतना ही नहीं गोण्डलगच्छ का गौरव भी बढ़ाया और हम सब [illegible] बढ़ी, और वे भी हम पर कृपा-वृष्टि करते रहे।

जब जब हमें शास्त्रीय उलझन आती थी तब उनसे समाधान मांगते थे। वे सस्नेह अपनी ज्ञान [illegible] अमृत-सरिता में स्नान कराते हुए उत्तम समाधान देते थे। वे जितने त्याग मूर्ति थे उससे कहीं अधिक [illegible] सिर्फ ज्ञान ही नहीं वे तत्वदर्शी भी थे और कहीं अधिक वे समता के सागर थे। उनकी समन्वय शैली [illegible] थी। राजस्थान की उफान भरी आपसी विवादों की परंपरा को उपशांत करते हुए उन्होंने उत्तम [illegible] किया कि मानो क्लेश मिट करके गुणात्मक भाव हो गया और राजस्थान के प्रति आचार्यों का [illegible] वह मिट करके मानों शासन भक्ति सरिता बन कर बहने लगा। हम मानते हैं कि इसका सारा श्रेय [illegible] गुणसागर श्री नानालाल जी महाराज के चरणों को ही प्राप्त हो रहा है। आडम्बरों का सिलसिला [illegible] विलय करते हुए आपने निराडम्बर भावों की अभिव्यक्ति प्रस्तुत की। इतना ही नहीं स्वयं आडम्बर [illegible] मूर्ति बन गए और जब हम इन भावों का साक्षात्कार करते हैं तो उनके श्री चरणों में हम नतमस्तक हो [illegible] आचार्य श्री नानालाल जी महाराज की तरह साधु समाज के त्यागी नेतृत्व वाले पूज्यनीय महाराज [illegible] को अपना लें और उनकी सेवांकित पदावली पर चलने का प्रयास करें तो जैन शासन और उनकी [illegible] की तरह समग्र भारतवर्ष पर अमृत वर्षा कर सकेगी।

जिनशासन के उज्ज्वल नक्षत्र

जिन शासन की श्रमण परंपरा में समय-समय पर अनेक दिव्यात्माओं ने दीक्षित होकर जन-जन के बीच सम्यक् क्रांति का उद्घोष कर मानव समाज को नई दिशा प्रदान की, जिनका अनंत उपकार संपूर्ण सृष्टि पर है, उसी शृंखला में क्रियोद्धारक आचार्य प्रवर पू. श्री हुक्मीचंद जी म.सा. की उज्ज्वल परंपरा में समता विभूति, बाल ब्रह्मचारी, आचार्य प्रवर श्रद्धेय श्री नानालाल जी म.सा. का कार्यकाल इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित किया जाएगा।

आचार्य श्री नानेश जी. म.सा. ने संयम, सादगी और सदाचार रूपी त्रिवेणी का मार्ग अपनाकर एक अनुपम आदर्श प्रस्तुत किया है। इस महान विभूति ने विश्व विख्यात रणबांकुरों की मेवाड़ (राजस्थान) की पावन भूमि दांता (नानेश-नगर) ग्राम में माता श्रीमती सौभाग्यवती शृंगार बाई की कुक्षी से वि.सं. १९७७ ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया की शुभ पावन बेला में जन्म लेकर धर्मनिष्ठ, सुश्रावक श्री मोड़ीलाल जी के कुलदीपक बनकर पोखरना परिवार को गौरवान्वित किया ।

बचपन अभी पूरा खिल ही नहीं पाया था कि सिर्फ ८ वर्ष की अल्पायु में पितृ वियोग का वज्रपात बाल मानस पर हुआ और तभी संसार की असारता, क्षण भंगुरता के साथ-साथ आत्मा की अमरता का एहसास हुआ और वहीं से आत्मा में वैराग्य का अंकुर विकसित होने लगा ।

इधर रूढ़ियों, परंपरागत, क्रिया कलापों से ऊपर उठकर आचार्य प्रवर श्री जवाहरलाल जी म.सा., जिनका नाम भी राष्ट्र को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराने में क्रांतिकारी के रूप में श्रद्धा से याद किया जाता है, ने छुआ-छूत, नारी जागरण, राष्ट्र धर्म, स्वदेशी आंदोलन व खादी प्रचार को भी जीवन में आत्म-साधना के साथ-साथ महत्वपूर्ण समय दिया । उनके युवाचार्य प्रवर श्रद्धेय श्री गणेशीलाल जी म.सा.की अनासक्त जीवन तप-साधना से प्रभावित होकर आचार्य श्री नानेश ने शिष्यत्व स्वीकार ही नहीं किया बल्कि संपूर्ण रूप से समर्पित श्री चरणों में विनय, सरलता और विवेक की मिसाल बन गए । जो कि मानो जन्म के साथ ही जन्मों-जन्मों से आपको विरासत में मिली है। ज्ञानाभ्यास में अप्रमत्त भावों से निरंतर लीन हुए। जैनागमों के साथ साथ न्याय, दर्शन, तर्कशास्त्र व सभी दर्शनों का तल स्पर्शी अध्ययन ही नहीं बल्कि उन्हें आत्मसात भी किया। प्रवचन कला में निपुणता, ओजस्वी प्रखर वक्ता के रूप में आपकी चारों ओर ख्याति फैली। आपके निर्मल, सरल व गंभीरता के साथ-साथ दृढ़ता से, विचारों से प्रभावित होकर गणेशाचार्य ने चतुर्विध संघ के समक्ष उदयपुर में युवाचार्य पद २३ सितम्बर १९६२ (संवत् २०१९) में प्रदान किया ।

आचार्य श्री ने पिछड़े वर्ग की बलाई जाति में व्यसन मुक्त क्रांति का सूत्रपात किया और सुसंस्कारों से ओत-प्रोत कर उनकी धर्मपाल के रूप में नई पहचान बनाकर मानव समाज में समानता का आदर प्रदान करवाया। हजारों परिवारों ने नए जीवन की शुरूआत कर अपने आपको सौभाग्यशाली माना। दहेज, घूंघट प्रथा और अंधविश्वास जैसी अनगिनत रूढ़ियों के खिलाफ जबरदस्त अभियान प्रारंभ किया। मृत्युभोज, बाल-विवाह पर हृदय परिवर्तन के द्वारा नियंत्रण स्थापित किया ।

सामाजिक, धार्मिक, राष्ट्रीय और आर्थिक विषमताओं की बेड़ियों से मुक्त करने के लिए समता का संदेश देकर मार्ग प्रशस्त किया। स्थानकवासी परंपरा में एक साथ पच्चीस दीक्षा रतलाम में प्रदान कर नया इतिहास बनाया। समीक्षण ध्यान योगी ने वैज्ञानिक ढंग से आध्यात्मिक ध्यान की पद्धति को विकसित कर विश्व-शांति का मार्ग प्रशस्त किया।

देश के कोने-कोने में हजारों मील की पद-यात्रा कर गरीब-अमीर, ऊंच-नीच की दिवारों से ऊपर उठकर संपूर्ण मानव-समाज को ज्ञानामृत का रसपान कराया। निश्च्छल व्यक्तित्व और निर्मल वचन सिद्धि के वे धनी थे। मुझे भी दर्शन का सौभाग्य मिला। जब मैं वैराग्यवस्था में था तब आप ही ने संसारी माता श्रीमती मनोहर बाई नागोरी से कहा था कि यह भविष्य में होनहार और महान् बनेगा। आपने जिन शासन की महती प्रभावना की। हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, गुजराती अनेक भाषा के ज्ञाता, गीता, बाइबिल, कुरान [illegible] ग्रंथों के मर्मज्ञ, ऋजुता के धनी, साहित्य [illegible] कोष आचार्य श्री ने कई ग्रंथों का सृजन कि[illegible]। [illegible] मौलिक प्रवचन गुजराती, मराठी भाषा में [illegible] हैं। ऐसी दिव्य महान आत्मा ८० वर्ष की [illegible] शरीर कमजोर था, परंतु आत्म-शांति का [illegible] प्रस्तुत किया। शरीर की देन को सुख [illegible] झलकाते हुए, उस पर अपूर्व शांति [illegible] साधना का अपूर्व चमत्कार था। २७ अक्टू[illegible] उदयपुर में रात्रि १०.४१ बजे सेवारा [illegible] द्वारा हम सब को छोड़कर देवलोक हो गए। [illegible] समाज की अनमोल धरोहर का अचानक [illegible] वज्रपात के समान है। उस आत्मा को [illegible] मिले। साथ ही, संपूर्ण आदर्शों और सिद्धांतों को [illegible] तक फैलाने का दृढ संकल्प लेना ही उनके [illegible] सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

गुरु विन घोर अंधेरा

बुद्धिप्रकाश जैन

गुरु विन घोर अंधेरा, गुरु ही तारणहारा,
गुरुवर की छत्र छांह में होवे भव पारा।
गुरुवर तेरे पुण्य का, कैसा प्रबल प्रताप,
जागा बोध अनित्य का दूर हुए भव ताप।
धर्म दिया गुरुदेव ने, कैसा रतन अमोल,
मृत्युलोक के जीव को, अमृत का रस घोल।
सद्गुरु की संगत मिली, मिला धर्म का सार,
जीवन सफल बना लिया, सिर का भार उतार।
दुर्लभ सद्गुरु का मिलन, दुर्लभ धर्म मिलाप,
धर्म मिला सद्गुरु मिले, मिटे सभी संताप।
गुरुवर तेरा आसरा, तेरा ही आधार,
शुद्ध धर्म ऐसा दिया, होवे भव के पार।
गुरु विन घोर अंधेरा, गुरु ही तारणहार,
सच्चा गुरु जो मिल गया, तिर गये संसार।

-गैसोदा मंडी (मंद[illegible]

मुनि नेमीचंद्र

एक अनूठे व्यक्तित्व और कृतित्व के धनी

सूर्योदय होता है तो धरती आलोक से अलोकित हो जाती है। तमसावृत धरती का एक-एक कण प्रकाशित हो उठता है। अन्धकार से मुक्ति दिलाने वाला दिवाकर लाखों करोड़ों मानवों का महनीय और दर्शनीय माना जाता है। किंतु करोड़ों जन समूह के सिर पर आकाश में चमकने वाला और सुबह उदित होने वाला भास्कर संध्या काल में अस्त होकर जनता की नजरों से अदृश्य हो जाता है।

इसी प्रकार प्रकृति का यह भी शाश्वत नियम है कि जिसका जन्म होता है, उसकी मृत्यु अवश्यम्भावी है। प्रथम क्षण जन्म का है तो इसके अनन्तर द्वितीय क्षण मृत्यु का है। यह तथ्य सामान्य जीवात्माओं के लिए ही नहीं, असाधारण ज्योतिर्मय जीवन जीने वाले तीर्थंकर जैसी महान आत्माओं के लिए भी है। इसमें कोई अपवाद नहीं है। जिस शरीर के साथ वर्षों तक संयोग-संबंध रहे, उन महान आत्माओं के समक्ष भी एक क्षण ऐसा आता है, जब वह संयोग वियोग के रूप में परिणत हो जाता है।

दिनांक २७ अक्टूबर ९९ का दिन भी ऐसा ही था कि जैन जगत के देदीप्यमान सूर्य, समतानिधि, धर्मपाल-प्रतिबोधक, समीक्षण-ध्यान योगी, जैनाचार्य प्रवर श्री नानालालजी म. दिवंगत हो गए। वे भले ही साधुमार्गी संघ के आचार्य कहलाते हों, किंतु धार्मिक समाज के लिए उनका वियोग निःसंदेह महती क्षति कहलाएगी। क्योंकि संत किसी एकांकी, व्यक्ति-विशेष या किसी एक धर्म सम्प्रदाय अथवा समाज से बंधे नहीं होते। वे सभी के और सब उनके होते हैं। उनके उपदेश या प्रवचन सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय होते हैं। उनसे सोई हुई मानव-जाति को नई दिशा, नई जागृति और नई जीवन-ज्योति मिलती है। वे किसी एक का पक्ष लेकर नहीं चलते, जो भी जिज्ञासु, मुमुक्षु या आत्मार्थी होते हैं, उनको उनसे मार्ग-दर्शन मिलता है। जो पक्षपात या तीव्र मोह में उलझा रहे, वह संत कैसा ? संत तो सत्य से जुड़ा हुआ होता है, समता उसकी बुद्धि में बसी हुई है। इन सभी तथ्यों पर विचार करते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि श्रद्धेय आचार्य श्री नानालालजी महाराज में ये सभी विशेषताएं थीं।

उनके विरक्तिमय जीवन से लेकर अब तक के जीवन-पृष्ठों का अवलोकन करते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि सांसारिक जीवन से विरक्ति की भावना में उतरने के पश्चात् वे साधुता के इन मूलभूत गुणों का अभ्यास प्रारंभ करने लगे थे। ऐसे गुरु की शोध में वे अपनी वैराग्य यात्रा कर रहे थे। आखिर उन्हें अपनी शोध में सफलता मिली और परम श्रद्धास्पद महामहिम आचार्य प्रवर (तत्कालीन युवाचार्य) पूज्य श्री गणेशीलाल जी महाराज के चरणों में उन्होंने निर्ग्रन्थ प्रव्रज्या अंगीकार की। दीक्षा लेने के पश्चात गुरु सेवा तथा साधुत्व की साधना के अतिरिक्त अध्ययन की ओर आपका विशेष ध्यान गया। अध्ययन काल के दौरान आप व्यर्थ की बातों और निरर्थक इधर-उधर की पंचायतों से दूर ही रहते थे। हमने देखा कि अध्ययन काल के दौरान भी आप आगम के उस स्वर्ण सूत्र कि अधिक बोलने से मनुष्य की शक्ति भी क्षीण हो जाती है। कई मनुष्य अपनी अनावश्यक बोलने की आदत को लेकर प्रौढ वय में भी अपनी बोलने-सोचने की शक्ति को नष्ट कर डालते हैं और क्लेश का कटु वातावरण बन जाता है। अतः स्वर्गीय आचार्य श्री ने अपने दैनंदिन व्यवहार में मित भाषण को महत्वपूर्ण स्थान दिया। इसी कारण उनकी चिंतन-मनन की क्षमता में आशातीत वृद्धि हुई।

सामाजिक, धार्मिक, राष्ट्रीय और आर्थिक विषमताओं की बेड़ियों से मुक्त करने के लिए समता का संदेश देकर मार्ग प्रशस्त किया। स्थानकवासी परंपरा में एक साथ पच्चीस दीक्षा रतलाम में प्रदान कर नया इतिहास बनाया। समीक्षण ध्यान योगी ने वैज्ञानिक ढंग से आध्यात्मिक ध्यान की पद्धति को विकसित कर विश्व-शांति का मार्ग प्रशस्त किया।

देश के कोने-कोने में हजारों मील की पद-यात्रा कर गरीब-अमीर, ऊंच-नीच की दिवारों से ऊपर उठकर संपूर्ण मानव-समाज को ज्ञानामृत का रसपान कराया। निश्छल व्यक्तित्व और निर्मल वचन सिद्धि के वे धनी थे। मुझे भी दर्शन का सौभाग्य मिला। जब मैं वैराग्यवस्था में था तब आप ही ने संसारी माता श्रीमती मनोहर बाई नागोरी से कहा था कि यह भविष्य में होनहार और महान् बनेगा। आपने जिन शासन की महती प्रभावना की। हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, गुजराती अनेक भाषा के ज्ञाता, गीता, बाइबिल, कुरान [illegible] ग्रंथों के मर्मज्ञ, ऋजुता के धनी, साहित्य [illegible] कोष आचार्य श्री ने कई ग्रंथों का सृजन किया। [illegible] मौलिक प्रवचन गुजराती, मराठी भाषा में [illegible] हैं। ऐसी दिव्य महान आत्मा ८० वर्ष की उम्र [illegible] शरीर कमजोर था, परंतु आत्म-शांति का [illegible] प्रस्तुत किया। शरीर की देन को [illegible] झलकाते हुए, उस पर अपूर्व शांति [illegible] साधना का अपूर्व चमत्कार था। २७ [illegible] उदयपुर में रात्रि १०.४१ बजे संथारा [illegible] द्वारा हम सब को छोड़कर देवलोक हो गए। [illegible] समाज की अनमोल धरोहर का अचानक [illegible] वज्रपात के समान है। उस आत्मा को [illegible] मिले। साथ ही, संपूर्ण आदर्शों और सिद्धांतों को [illegible] तक फैलाने का दृढ़ संकल्प लेना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

गुरु बिन घोर अंधेरा

बुद्धिप्रकाश जैन

गुरु बिन घोर अंधेरा, गुरु ही तारणहारा,
गुरुवर की छत्र छांह में होवे भव पारा।

गुरुवर तेरे पुण्य का, कैसा प्रबल प्रताप,
जागा बोध अनित्य का दूर हुए भव ताप।

धर्म दिया गुरुदेव ने, कैसा रतन अमोल,
मृत्युलोक के जीव को, अमृत का रस घोल।

सद्गुरु की संगत मिली, मिला धर्म का सार,
जीवन सफल बना लिया, सिर का भार उतार।

दुर्लभ सद्गुरु का मिलन, दुर्लभ धर्म मिलाप,
धर्म मिला सद्गुरु मिले, मिटे सभी संताप।
गुरुवर तेरा आसरा, तेरा ही आधार,
शुद्ध धर्म ऐसा दिया, होवे भव के पार।

गुरु बिन घोर अंधेरा, गुरु ही तारणहार,
[illegible] गुरु जो मिल गया, तिर गये संसार।

-गेसोदा गांधी ([illegible]

सामाजिक क्षेत्र में भी आपने कई महत्वपूर्ण कार्य हैं। आपके द्वारा सबसे महत्वपूर्ण कार्य हुआ है- ा, मेवाड़ आदि प्रदेशों में फैली हुई, सुसंस्कारों में द्यो, मांसाहार, पशुहत्या, शिकार आदि दुर्व्यसनों से नैतिकता और आध्यात्मिकता से दूर बलाई जाति तिबोध देकर उनके जीवन में आमूलचूल परिवर्तन और दुर्व्यसन छुड़ा कर उन्हें धार्मिक सुसंस्कारों से कृत करने का। आपने सुदूर प्रदेशों में विचरण करके कौम को शुद्ध धर्म संस्कार प्रदान कर धर्मपाल संज्ञा उनके बालकों के शिक्षण संस्कार के लिए आपकी ा से जगह-जगह विद्यालय एवं केन्द्र बने। इस तरह की प्रेरणा से हजारों धर्मपाल परिवारों के आहार- र एवं विचार-आचार शुद्ध हुए।

आपने देखा कि धर्मप्रधान भारत में आज धकांश परिवार धर्म संस्कारों को त्याग कर अनेक प्रसनों, कुरूढ़ियों एवं कुसंस्कारों में लिप्त हो रहे हैं, शुद्ध धर्म संस्कार देने तथा व्यसनों से मुक्त कराने हेतु - साध्वी वर्ग द्वारा उपदेश प्रदान करने के अतिरिक्त, क्षेत्रों में साधु, साध्वी नहीं पहुंच पाते, वहां आपके दिर्शन से समता-स्वाध्याय-संघ के सदस्य तथा वीर के अन्तर्गत कुछ विशिष्ट उपासक उन-उन क्षेत्रों में च कर वहां की जनता में व्यसन मुक्ति एवं सुसंस्कार ान का आंदोलन चला रहे हैं। इसके अतिरिक जिज्ञासु पिपासु जैन-जैनेतर जनता में शिविरों द्वारा धार्मिक क्षण, समीक्षण ध्यान आदि के कार्यक्रम भी आपके मार्गदर्शन से हुए और हो रहे हैं। आपने विभिन्न प्रांतों में विचरण करके बालकों, युवकों, वृद्धों, समाज-राष्ट्र-सेवकों तथा महिला वर्ग को युगानुकूल उद्‌बोधन दिया है। आपने तथा आपके संघ के साधु-साध्वियों ने समाज के नैतिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक जीवनस्तर को ऊंचा उठाने के लिए समता दर्शन और समीक्षण ध्यान का प्रशिक्षण दिया और प्रचार-प्रसार भी किया है।

पिछले लगभग तीन-चार साल से आप बहुत ही अस्वस्थ थे। वृद्धावस्था के कारण आपके शरीर में काफी अशक्ति, दुर्बलता एवं रूग्णता व्याप्त हो गई थी। इस कारण अधिक लम्बा विहार नहीं हो पा रहा था। शरीर की इस अस्वस्थता को लेकर न चाहते हुए भी आप पिछले लगभग दो वर्षों से उदयपुर में विराजमान थे। इसी दौरान ता. २७ अक्टूबर ९९ को संलेखना संथारापूर्वक आपका स्वर्गवास हुआ।

आपके दिवंगत हो जाने से साधुमार्गी संघ के ही नहीं, समग्र जैन-जैनेतर धर्मसंघों के एक महान व्यक्तित्व एवं कृतित्व के धनी, चारित्रात्मा, मुनिपुंगव की महती क्षति हुई है, जिसकी पूर्ति निकट भविष्य में होनी कठिन है। हम उन महान समतानिधि आचार्य के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शासन देव से करबद्ध प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा जहां भी हो, वहां उन्हें शांति प्राप्त हो।

- द्वारा वसंतलाल पूनमचंद भंडारी
२५८५ - नवाकापड बाजार,
एम.जी. रोड, अहमदनगर (महाराष्ट्र)

म.सा., युवाचार्य श्री काशीराम जी म.सा. के पास पहुंचे। मुनि श्री जवरीलाल जी म.सा. ने कहा पहले यह प्रतिज्ञा करो कि काशीराम जी म.सा. का ही शिष्य बनूंगा। आपको जमा नहीं। भीम में मेवाडी चौथमल जी म.सा. ने आपको दीक्षा के लिए हतोत्साहित कर धन कमाने के लिए फीचर आंक आदि की बात कही। संवत् 1995 में बदनौर चातुर्मास काल मे 3 महीने मेवाड़ी पूज्य श्री मोतीलाल जी म.सा. के पास पच्चीस बोल, प्रतिक्रमण, दशवैकालिक, श्रामण्य जीवन की क्रियाओं का अध्ययन किया। उनोदरी तप चल रहा था चौथाई रोटी वाला। शरीर कृश होता जा रहा था पर तपस्वर्या की अनूठी छाप जन-जन के मन को मोह रही थी। आपको वहां भी आत्म-साधना के पूरे लक्ष्य पूर्ण होते नहीं लगे, अतः आप वहां से लौट आए। ब्यावर में आचार्य श्री जवाहर के संतों के दर्शन कर, जवाहराचार्य का खादी पहनना एवं अन्य दो बातें सुनकर आप प्रभावित हुए। कोटा में युवाचार्य श्री गणेशाचार्य की सेवा में पहुंचे। श्री चरणों में संयम आराधना कर आतम कल्याण की भावना प्रकट करने पर युवाचार्य श्री ने फरमाया। "साधु बनना कोई हंसी खेल नहीं है पहले ज्ञान सीखो। यदि संयमवृति अपनानी है तो पहले गुरु का भी परीक्षण कर लो फिर साधु दीक्षा स्वीकार कर आत्मा को तप की भट्टी पर चढ़ा दो।" निस्पृह, अनासक्त उत्तर सुनकर आपने मन ही मन उक्त महापुरुष को गुरु मान लिया, गुरु की परीक्षा ले चुके थे अब शिष्यत्व की परीक्षा देनी थी। योग्य गुरु का सानिध्य प्राप्त हो गया।

19 वर्ष की आयु मे ज्योर्तिधर जवाहराचार्य के शासन में कपासन में आपकी भागवती दीक्षा पौष शुक्ला 8 संवत् 1996 में तत्कालीन युवाचार्य श्री गणेशीलाल ली म.सा. के मुखारविंद से कपासन शहर के बाहर एक सुरम्य सरोवर के किनारे आम्र वृक्षों के मध्य स्थित विशाल आम्र वृक्ष के नीचे हजारों की जनमेदिनी की साक्षी से संपन्न हुई। पूर्व रात्रि की जोरदार वर्षा यद्यपि आयोजकों के लिए समस्या बन सकती थी, पर प्रकृति ने एक महापुरुष की दीक्षा का पूर्वाभास करवा ही दिया। आप का वैराग्य इतना उत्कृष्ट था, आरंभ-समारंभ के प्रति इतने अनासक्त थे कि न तो आपने परंपरा अनुसार रात्रि मे जुलूस निकलवाया, न मेंहदी लगवाई, सामायिक व्रत धारण कर साधना में तल्लीन हो गए।

दीक्षा की सार्थकता का मूल मंत्र है, ज्ञान आराधना। अतः आप श्री ने अपनी साधना के तीन बिंदु-ज्ञान-आराधना, संयम-साधना एवं सेवा-भावना का लक्ष्य रखा। आपका समस्त जीवन इन साधनाओं का पर्यायवाची रहा। यद्यपि आपका व्यावहारिक अध्ययन बहुत कम था पर पंडितवर्य श्री अंबिकादत्त जी ओझा के सानिध्य में आप श्री ने यथेष्ट ज्ञान प्राप्त कर मेधावी बुद्धि का परिचय दिया एवं आपकी अध्ययन एकाग्रता प्रसिद्ध रही। आपको पूर्ण रूपेण विकसित करने हेतु युवाचार्य श्री गणेशीलाल जी. म.सा. ने ऐसे संतों के साथ चार्तुमास करवाया जिनकी क्रोध प्रकृति के कारण संतों को निभाना मुश्किल होता था पर आप श्री ने विनय एवं सेवा भावना से उनके मन को जीत कर जहां उनकी प्रकृति को बदला वहीं उनके मुख से बरबस निकला- **'यह शासन का होनहार रत्न है, इस अल्प अवधि में ही चमत्कार कर दिखाया।'**

आप श्री ने सतत् जागरुक प्रिय वाणी से, ऐपणीय प्रवृत्तियों से आचार्य श्री का मन मोह लिया। 24 वर्ष की संयम अवधि में 21 वर्ष श्री गणेशाचार्य की सेवा का लाभ उठाया तथा 3 वर्ष वृद्ध एवं रूग्ण संतों की सेवा में रहकर उनका भी आशीर्वाद प्राप्त किया। आप श्री साधना-काल में मौन-साधक एवं अल्पभाषी रहे जिससे कइयों की यह धारणा बन गई कि मुनि श्री नानालालजी विकास नहीं कर सकेंगे। पर जहां प्रभु महावीर ने कहा है साधक साधना की उच्च कोटि पर तभी पहुंच सकता है जब इन्द्रिय दान्त हो। आप श्री में किसी भी प्रकार की हंसी-मजाक एवं बढ़-चढ़ कर बोलने की वृत्ति परिलक्षित नहीं हुई। आप में विनय वृति प्रचुर होने से अत्यल्प दीक्षा पर्याय में ही गणेशाचार्य के अनन्य अन्तेवासी बन गए। आचार्य श्री ने आपकी प्रतिभा को, विलक्षणता को परखा। आपकी दृष्टि पैनी थी, अतः श्रमण संघ संबंधी समस्त

उद्धार नहीं किया तो हमारा कभी उद्धार होने वाला नहीं है। आचार्य प्रवर ने सांत्वना दर्शायी और फरमाया कि आप इतने घबराओ मत। आपको न तो आत्महत्या करनी है और न धर्म परिवर्तन ही करना है। आपके जीवन में मदिरा और मांस सेवन की जो बुराइयां व्याप्त हैं, उन्हें आपको छोड़ना होगा। डूबते को तिनके का सहारा मिला।

गुरुदेव ने फरमाया :-

कम्मुणा बम्भुणो होई, कम्मुणो होई खत्तिओ।
वइसो कम्मुणा होई, सुदो हवई कम्मुणा।

अर्थात् व्यक्ति अपने कर्म से ही क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य अथवा शूद्र बनता है जन्म से नहीं। जैन धर्म में जन्म की नहीं कर्म की महत्ता मानी जाती है। यदि आपकी जाति एक सामूहिक क्रांति के साथ दुर्व्यवसनों से मुक्त हो जावे तो आर्थिक लाभ के साथ सामाजिक प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी। आप कर्मणा उच्च बन सकेंगे। आचार्य श्री ने सप्त कुव्यसन का विवेचन किया। आचार्य देव की मंगलमय पीयुष वाणी से प्रभावित होकर सीताराम जी एवं उनके साथियों ने प्रतिज्ञा की- 'आज से हम सभी सब दुर्व्यसनों से दूर रहेंगे, आप हमें गुरु मंत्र सुनाकर हमारा नवीन नामकरण कर दीजिए।' आचार्य प्रवर ने गंभीर चिंतन के पश्चात् सम्यक्त्व मंत्र पाठ द्वारा जैन धर्म में दीक्षित किया एवं धर्मपाल (यानी धर्म का पालन करने वाला) से संबोधित किया। इस प्रकार दादा गुरु श्री जवाहर की अछूतोद्धार की मशाल आप श्री ने प्रज्वलित की। आप आहार पानी की परवाह किए बिना, एक दो संतों को साथ लेकर, उस क्षेत्र के अन्तरवर्त्ती गांवों में, ढाणियों में पधारे, उपदेश दिया। आप श्री के उपदेश के प्रभाव से, धर्मपाल बने भाइयों ने गांव के लोगों को एकत्रित कर सम्मेलन किए, एक क्रांतिकारी युग का सूत्रपात हुआ। आचार्य श्री एवं सन्तवर्य अपनी मर्यादा में ही उपदेश दे सकते हैं फिर श्रावक संघ ने अपना कर्त्तव्य पहिचाना, उन लोगों से संपर्क किया, प्रवास किए, सम्मेलन आयोजित किए। विवाह शादी या मोसर पर कार्यकर्त्ता जाते उन्हें बुराइयां छोड़ने के लिए आयोजित सभाओं में प्रेरणास्पद भाषण देते। सुश्रावक स्व. श्री गेंदालालजी एवं धर्मपाल गांधी स्व. श्री समीरमल जी कांठेड़ की सेवाएं इस प्रवृत्ति में अविस्मरणीय रहीं। स्व. उदारमना श्री गणपतराज जी साहब बोहरा एवं धर्मपाल माता श्री यशोदा देवी जी तन-मन-धन से इस प्रवृत्ति को समर्पित रहे। आज इस प्रवृत्ति में अथक प्रयत्नों से, अथक परिश्रम से, लाखों लोग व्यसनमुक्त हुए हैं। हजारों लोग धर्मपाल बने हैं। इनकी देखा-देखी गूजर समाज ने भी अपनी पंचायत में निर्णय लेकर शराब और मांस सेवन का त्याग किया। धर्मपाल भाइयों ने अपना संबंध भी, बेटी व्यवहार भी उनसे ही करने का निर्णय रखा जो मदिरा और मांस का त्याग कर धर्मपाल बनेंगे, इससे दृढ़ता रहेगी। श्रावक-श्राविकाओं द्वारा समय-समय पर प्रवास, सम्मेलन, पद-यात्राएं आयोजित होती हैं। पदयात्राओं के साथ-साथ मेडिकल केम्प भी लगाए जाते हैं। धार्मिक शिक्षण हेतु ग्राम-ग्राम में शालाएँ चलती हैं। बालक-बालिकाओं में धार्मिक विकास बहुत उच्च कोटि का है। अष्टमी, चतुर्दशी को उपवास भी होते हैं, बहिनें गीत में गाती हैं, 'हे माली तू फूल मत तोड़ फूल की कली में भी बहुत जीव हैं।' प्रथम पद-यात्रा में बंगाल के तत्कालीन उपमुख्यमंत्री श्री विजय सिंह जी नाहर ने अति प्रमुदित भाव से कहा कि 'लगता है नए युग का क्रांतिकारी सूत्रपात हो रहा है।' रतलाम में दिलीपनगर में धर्मपाल नगर में धर्मपाल छात्रावास चलता है, जिसमें धर्मपाल छात्र व्यावहारिक शिक्षण राजकीय विद्यालयों में प्राप्त कर धार्मिक शिक्षण यहां ग्रहण करते हैं एवं सुसंस्कारी बनते हैं।

हे आचार्य प्रवर! आपने हजारों धर्मपाल बना-कर, लाखों लोगों को व्यसन मुक्त बनाकर, जैन धर्म में एक अनूठा अध्याय विकसित किया है, धन्य-धन्य हैं आप! धन्य है आपका अतिशय, धन्य है आपकी निश्छल साधना।

समता-दर्शन प्रणेता :

संवत् 2029 के जयपुर चातुर्मास में आपने एक विद्वान सुश्रावक के एक ही विषय पर चातुर्मास काल में प्रवचन के आग्रह को मान्य कर किं जीवनम् इस सूत्र का गंभीर विश्लेषण करते हुए स्व निर्मित सूत्र सम्यक् निर्णायकम् समतामयं च यतज्जीवनम् के माध्यम से

अथवा साधु-मर्यादा में कोई दोष नहीं आता हो तो समाज के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत किया जा सकता है। मैं अपनी स्थिति से पूर्ण रूपेण तैयार हूं, मेरा कोई पूर्वाग्रह नहीं होगा। समस्त जैन समाज सर्वानुमति से जो निर्णय लेगी, मुझे मान्य होगा।'' आपका निर्णय सुनकर गदैया जी ने कहा- "हमें आशा नही थी कि आप श्री चारित्रिक साधना में दृढ़ रहते हुए इतने विराट एवं उदार विचार रखते हैं।'' आप श्री के विचार समिति की बैठक में रखने की स्वीकृति लेकर सभी सदस्य अत्यंत प्रभावित हुए। पूरे जैन समाज की संवत्सरी एक नहीं हो सकी। श्रमण संघ ने सादड़ी सम्मेलन के निर्णय अनुसार कि ४९-५० वें दिन संवत्सरी पूर्व मनाना उचित माना गया था, पर संगठन की वृद्धि हेतु बहुमत ने उदारता दिखाकर दो भाद्रपद हो तो दूसरे भाद्रपद की संवत्सरी स्वीकार की थी। लेकिन उसमें भी यह भावना रही कि यदि जैन समाज की संवत्सरी एक दिन मनाना निश्चित हो तो उसके अनुसार परिवर्तन किया जा सकता है। आप श्री ने श्रमण संघ से पृथक् होने पर भी अधिकांश के आधार पर श्रमण संघ का साथ दिया अर्थात् अपनी स्वयं की मान्यता से परे श्रमण संघ के साथ हमेशा सवंत्सरी मनाई।यह आपकी संवत्सरी-एकता का अद्भुत उदाहरण हैं।

लगभग ६ वर्ष आप अनेक व्याधियों, रक्तचाप, मधुमेह, हृदय के साथ साथ गुर्दे की बीमारी से भी ग्रस्त रहे। परिचर्या चलती रही। पर बीकानेर से ब्यावर एवं ब्यावर से उदयपुर तक का विहार, स्थ. प्रमुख ज्ञान मुनि जी की विशेष सेवा एवं आपके अत्यधिक मनोबल का परिचायक है। भोपालसागर में आपकी व्याधियों से चिंतित युवाचार्य श्री आदि को भी आपकी समता, आत्मबल, आध्यात्मिक आलोक शीघ्र ही चिंता मुक्त कराने में सफल रहा।

भोपालसागर में भी आपने युवाचार्य श्री एवं स्थविर प्रमुख ज्ञानमुनि जी म.सा. को संथारे के लिए भोलावन दी थी, और कहा था कि <u>मैं खाली हाथ न चला जाऊं</u>। आपका उदयपुर में २०५५ के चातुर्मास काल में स्वास्थ्य निरंतर गिर रहा था, परिचर्या वरिष्ठ डाक्टरों की चल रही थी। पर चातुर्मास समाप्ति पर विहार नहीं हो सका। उपनगरों में विचरण रहा। आपने मंगलवाड़ चौराहे दीक्षा प्रसंग हेतु विहार भी किया पर स्वास्थ्य की प्रतिकूलता के कारण बीच में से ही वापिस उदयपुर पधार गए। गुर्दे की व्याधि हेतु डायलिसिस की परिचर्या हेतु वरिष्ठ डाक्टरों एवं श्रावकों का भी जोर रहा पर आपने तो दवाई लेना, डाक्टरों को दिखाना प्रायः बंद-सा ही कर दिया था। आपने संलेखना प्रारंभ कर दी। एक बार आपको केट स्केनिंग के लिए अस्पताल ले गए पर आप टेबिल पर से बीच में ही उठ गए। इंजेक्शन लगवाना, औषधि लेना सब बंद कर दिया था। आप युवाचार्य श्री को संथारे के लिए ध्यान रखने के लिए निरंतर कहते थे।

कार्तिक कृष्णा ३ को आपका स्वास्थ्य बिल्कुल गिर गया। यद्यपि डाक्टर बड़जात्या ने परिचर्या हेतु ग्लूकोज चढ़ाने के लिए कहा, पर युवाचार्य श्री एवं स्थविर प्रमुख ज्ञान मुनि जी म.सा. को अंतिम समय का आभास लगा। अत. ९.३० पर आपको पूर्ण चैतन्य में पूछकर, स्वीकृति प्राप्त कर संथारे का पचक्खाण चतुर्विध संघ की साक्षी से करवा दिया। ५.३५ पर आपको पूर्ण चैतन्य में चौविहार संथारे का पचक्खाण करवा दिया। आप पूर्ण समाधि में थे। श्वास की गति धीमी होती जा रही थी। अंत में आपने नेत्र खोले, प्रकाश हुआ एवं अंर्तलीन हो गए। आपका चेहरा काफी प्रकाशमान था। आचार्य श्री का जैसा जीवन था वैसा ही अन्त समय परिलक्षित हुआ।

आपके संथारे के, देवलोक गमन के समाचार सुनकर लोग बहुत बड़ी संख्या में एकत्रित हुए। मध्यान्ह एक बजे आपकी चकडोल यात्रा बहुत भव्यता लिए हुए नगर के प्रमुख मार्गों से होती हुई, गणेश जैन छात्रावास पहुंची। एक लाख की विशाल जनमेदिनी के समक्ष आपका भौतिक देह पंच तत्व में विलीन हो गया।

उस महान् आचार्य को शत शत नमन, हे युग पुरुष आप महान् थे। जब तक सूर्य चांद रहेगा, नाना गुरु अमर रहेगें। आप अपने युग के सर्वश्रेष्ठ आचार्य हैं।

२०४७, पितलियों का चौक, जयपुर

एवं एकता से ही विजयी हो सकते हैं। विघ्न संतोषियों के षड्यन्त्र से सजग रहकर उस संघनायक के स्वप्नों को हम सफल बना सकते हैं।

वह कालजयी यशस्वी आचार्य आज भौतिक शरीर से हमारे बीच नहीं है, किन्तु उनका मार्गदर्शन, आशीर्वाद एवं प्यार पाथेय बनकर हमारा मार्ग प्रशस्त करेगा। उनकी दीर्घदृष्टि हमें आचार्य श्री रामलालजी म०सा० जैसा अनमोल रत्न देकर गई है। हम निष्ठापूर्वक उनके हाथ मजबूत करें, यही कामना है।

उस महान् यशस्वी कालजयी साधक को मेरी एवं मेरे परिवार की विनम्र प्रणति। वह महान् आत्मा सिद्ध बुद्ध होकर शीघ्र परमात्म-पद की प्राप्ति करे, यही मंगल मनीषा है।

-२-ए, क्वीन्स पार्क, बालिगंज, कलकत्ता-१९

गजानन्द के ख्वाब थे

किरण/सीमा पितलिया

१. महावीर संघ की शान थे, जैन जगत के भान थे।
भक्तों के भगवान थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

२. जिन शासन के प्राण थे, हुक्म संघ की आन थे।
समता की पहचान थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

३. समता के उपदेश थे, समता के संदेश थे।
समता मय अरमान थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

४. नाना गुणों की खान थे, सब सन्तों में महान थे।
देते सबको ज्ञान थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

५. सम्यक दर्शन दीप दिखा, श्रद्धा की सर्वोच्च शिखा।
देते दिव्य व्याख्यान थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

६. समता दर्शन प्रदाता थे, धर्मपालों के त्राता थे।
कराते समीक्षण ध्यान थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

७. लाखों जपते जाप थे, हरते सब संताप थे।
जीवन ज्योति आप थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

८. विनय विवेक से बोलते, किन्तु मिश्री सदा घोलते।
विद्वानों के विद्वान थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

९. समन्वय पक्षपाती थे, साधुता के साथी थे।
शुद्ध संयम श्रद्धान थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

१०. सब तत्वों के वेत्ता थे, मन इन्द्रिय विजेता थे।
धर्म पूर्ण विज्ञान थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

११. महाभारत कुरान का, गीता और पुराण का।
अनुभवी आगम ज्ञाता थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

१२. शृंगार मां के लाल थे, पिता मोड़ी के बाल थे।
गणेश गुरु कमाल थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

१३. अनाथों के नाथ थे, आचार्यवर सम्राट थे।
भव्यों के सरताज थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

१४. तेज के धारी थे, गुरुवर चमत्कारी थे।
सन्तों के सुल्तान थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

१५. समता थी हर बात में, हर क्षण दिन रात में।
हर रहे उत्थान थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

१६. मुस्कराते जब बाग थे, अनुशासन में आग थे।
श्रमण संस्कृति धारे थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

१७. लाखों लाख चमत्कार थे, दयामय अवतार थे।
भक्ति पर बलिहार थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

१८. सादा जीवन उच्च विचार, ग्राम ग्राम किया विहार।
समता के उद्यान थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

१९. सब सुखी संसार हो, स्वस्थ सब नर नार हो।
सौम्य सजग पैगाम थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

२०. सज्जनता के शृंगार थे, दाता के श्रेष्ठ उपहार थे।
ओस वंश के उजियारे थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

२१. शुभ गगन के चांद थे, गजानन्द के ख्वाब थे।
खिलते ज्यों गुलाब थे, आचार्य श्री नानेश जी॥

-मोरवन डेम

म.सा. की पावन कृपा दृष्टि के मध्य अध्यक्ष के रूप में संघ और समाज के प्रति अपनी भरपूर सामर्थ्य से समर्पित रहकर कार्य किया। मुझे सम्पूर्ण देश, संघ और श्री संघों का अथाह स्नेह भी मिला। मैं मानता हूं कि यह सब गुरु कृपा का प्रसाद है। मुझ पर स्व. आचार्य श्री नानेश और वर्तमान आगमज्ञाता आचार्य-प्रवर श्री रामेश की अनुपम कृपा रही है। इसी कृपा-प्रसाद के बल पर यह कठिन दायित्व निर्वहन हो सका है।

मेरा रोम-रोम गुरु कृपा से सिंचित है। मैंने स्वर्गीय गुरुदेव की असाधारण संस्कार क्षमता का प्रत्यक्ष अनुभव किया है। समता विभूति आचार्य श्री नानेश व्यक्ति परिवार, राष्ट्र और समाज तथा सम्पूर्ण विश्व के आध्यात्मिक उत्थान को समर्पित रहे। वे दलितों की आशा थे।. धर्मपाल प्रवृत्ति के रूप में अजर-अमर रहेंगे।

उन दिव्य महान् आत्मा को मेरी हार्दिक श्रद्धांजलि।

-'शांति निवास', ५०/७ वां क्रोस,
विल्सन गार्डन, बैंगलोर-५६००२७

हृदयेश! मेरे नानेश!

मंजू भंडारी

मुझ सम नाना भक्तों के तुम ईष्ट,
दिग् दिगन्त में व्याप्त दिव्य विभा,
जैन जगत् के ज्योर्तिधर दिनकर,
कैसे करूं तुम्हारा वन्दन, पूजन, अर्चन ?
अमर मसीहा महावीर के तुम।
किन शब्दों में गुंथूं गौरवगाथा।
तुम्हारे व्यक्तित्व, कृतित्व दायित्व की।
बनकर सूर्य सम तेजस्वी,
अज्ञान तिमिर का हरण किया।
लेकर कुन्द इन्दु की शुभ्रता,
प्रीति सुधा बरसाई तुमने।
पवन की गतिशीलता से,
सरजा आत्म-चेतना को तुमने।
धैर्य धरिणी-सा धरकर,
फैलाया सहज समता का पैगाम।
हे करुणा सागर, हे पुण्य धाम,
कण-कण कृतज्ञ रहेगा हरक्षण,
जन-मानस-मंदिर मे प्रतिष्ठापित,
मंजुल प्रतिमा का महाप्रयाण,
सहन करें कैसे यह वज्रपात ?
जन जन का तन-मन है आहत।

-सन्ध्या बाजार, हावड़ा-७११००१

□ सागरमल चपलोत
महामंत्री, श्री अ.भा.सा. जैन संघ

जन-जन की श्रद्धा के केन्द्र

जन-जन की श्रद्धा के केन्द्र, समता योगी, वर्तमान युग को संस्कार सम्पन्न तथा मानवीय मूल्यों से ओत-प्रोत जीवन जीने के उपदेष्टा, सरलमना आचार्य श्री नानेश आज हम से दूर अपनी संयम साधना की सुगन्ध बिखेर कर चले गये ।

एक बार बचपन में जैन संत मेवाड़ी मुनि श्री चौथमल जी म.सा. ने अपने प्रवचन में फरमाया- 'नरक की वेदनाएं घोरतम और असह्य होती हैं । यह आत्मा इन वेदनाओं को अनेक बार भोगती आई है । मनुष्य भव मिला है अपने आपको जगाने का, उसे संवारने का, आत्मा से परमात्मा बनने का, मोक्ष मार्ग की यात्रा का ।'

इन शास्त्रोक्त वचनों ने बालक नाना के हृदय को झकझोर दिया । चिन्तन ने इस नश्वर जीवन को सार्थक बनाने की । यात्रा में घोड़े पर बैठे-बैठे ही खो गये । सांसारिक क्रिया-कलापों से उदासीन वैराग्य की भावना में बह गये । सच्चा मार्ग प्रदर्शन करने वाले गुरु की खोज प्रारम्भ की । 'जिन खोजा तिन पाइयां' कहावत सार्थक हुई । गुरु गणेश के दर्शन का योग मिला । पूर्व में भिन्न-भिन्न मुनि महात्माओं का योग मिला, वह योग, संयोग नहीं बन सका, कारण कि उन मुनियों ने बालक नानालाल को कई प्रकार की भौतिक सुख-सुविधाएं सुलभ कराने का प्रलोभन-लालच देकर शिष्य बनाना चाहा था । गुरु गणेश ने वैरागी बालक नानालाल को कहा-"संयम लेना आसान नहीं है । वीतरागों के मार्ग पर चलना कांटों की राह पर चलना है । यह समझो कि तलवार की धार पर चलना तो आसान है, परन्तु संयम पथ पर चलना अति दुष्कर है । पहले तो अपने आपको समझने का प्रयत्न करो, फिर मुझे समझो, फिर सोचो कि तुम्हें किस राह पर चलना है ।"

वैरागी नानालाल को दिशा मिल गई कि उसे राह बताने वाले सच्चे गुरु मिल गये हैं । यह योग नहीं संयोग था गुरु गणेश के श्री चरणों में पहुंचने का ।

वैराग्य सच्चा है या बनावटी श्रावकों ने इसकी जांच आवश्यक समझी । श्रावकों ने अच्छे-अच्छे कपड़े निकाल कर नानालाल के सम्मुख रखे । नानालाल ने उन्हें यह कहकर स्वीकार करने से मना कर दिया कि मुझे तो अब रहने दो, ये भी साधारण मोटे कपड़ों में मस्त है । एक दिन नानालाल एक श्रावक की भव्य कोठी में भोजन के लिए आमंत्रित किये गये । भोजन की व्यवस्था ऊपर की मंजिल में थी । जब वह खाना खाकर हाथ धोने गये तो श्रावक जी ने कहा- "खड़े-खड़े आप यहीं हाथ धोलो" नानालाल ने कहा- "ऐसा करने से दो दोष लगेंगे, प्रथम तो ऊपर से पानी डाला जायेगा, उससे अप्काय की विराधना होगी और दूसरा यह पानी किसी व्यक्ति के ऊपर गिरने की संभावना है अतः नीचे जाकर ही शुद्धि करना उचित है' । वह नीचे आये और हाथ धोकर कुल्ला किया । इस प्रकार वैरागी नानालाल संयम पथ पर चलने की तैयारी कर रहे थे ।

यह बात जब गुरु गणेश ने सुनी तो उन्हें विश्वास हो गया कि वैरागी नानालाल में वीतराग मार्ग पर अग्रसर होने की पूरी क्षमता है । वैरागी नानालाल को गुरु गणेश के रूप में सच्चा मार्गदर्शक गुरु और गुरु गणेश को शिष्य के रूप में उनके समान अनमोल शिष्य रत्न मिल गया । नानालाल मुनि बन गये ।

दीक्षित होते ही नानालाल ने अपना जीवन ज्ञानार्जन, गुरु सेवा एवं तपस्या को समर्पित कर दिया। गुरु सेवा, ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की उत्कृष्ट साधना ने गुरु गणेश का दिल जीत लिया। गुरु को उनमें एक विलक्षण प्रतिभा, संत समाचारी पालने और महावीर शासन को दीपाने की क्षमता दृष्टिगोचर हुई।

इठलाती झीलों की ऐतिहासिक नगरी उदयपुर के राजमहलों का विशाल परिसर, जनमेदिनी का सैलाब। गुरु गणेश की जय जयकार। समोसरण सा दृश्य। संत-सतियों, श्रावक-श्राविकाओं (चतुर्विध संघ) के समक्ष गुरु आचार्य गणेश की घोषणा-

'आज मैं अपने (आचार्य के) समस्त अधिकार नानालाल को सौंपता हूं। यह भगवान महावीर के शासन में साधुमार्गी जैन संघ के अष्टम आचार्य होंगे।'

चतुर्विध संघ हर्ष से उछल पड़ा। सर्वत्र जय जयकार होने लगी। सुयोग्य आचार्य को शासन दीपाने वाला सुयोग्य संत मिल गया। गुरु गणेश के स्वर्गस्थ होने पर पुनः वही अवसर उपस्थित हुआ, आचार्य पद की चादर ओढ़ाने का। संतों ने चादर ओढाई-सर्वत्र जय जयकार। प्रातः बेला सूर्यदेव ने बादलों को चीर कर रश्मियों बिखेरी मानों उसने भी नानालालजी के आचार्य पद पर चादर समारोह का स्वागत किया हो।

आचार्य पदारोहण के पश्चात् शौर्य, शक्ति और भक्ति की त्रिवेणी संगम राजस्थान की पावन धरती मेवाड़ अंचल के एक छोटे-से ग्राम दांता (चित्तौड़गढ) का, देह दृष्टि से सामान्य कद काठी का, ओसवाल वंशीय पोखरना कुल दीपक, मां शृंगार का जाया, मोडीलाल जी का लाड़ला 'नाना' अंतरंग से वर्द्धमान महावीर शासन की साधुमार्गी परम्परा रूप मणिमाला का सुमेरू बन गया।

यहाँ यह कहना अतिशयोक्ति पूर्ण न होगा कि आचार्य श्री नानेश ने जहाँ एक ओर अपनी परम्परा की संत समाचारी का दृढता से पालन किया, वहाँ दूसरी ओर मद्य-मांस भक्षी और मानव समाज की विपरीत धारा में चलने वाले, कई लोगों को निरामिषभोजी (शाकाहारी) बनाकर समाज की सीधी राह पर चलते हुए मानवोचित्त जीवन जीने के लिए प्रेरित किया और कई मुमुक्षु आत्माओं को वीतराग मार्ग दर्शाया।

आचार्य नानेश का जीवन एक खुली पुस्तक रहा। कथनी और करनी की एकरूपता के प्रतीक बन वे समता साधक बने। साधक भी ऐसे कि उनके अंतरंग एवं रोम-रोम में समता समा गई। स्वयं तो समता साधक बने ही, भवि जीवों को समतामय जीवन जीने का सरल, सुगम और सहज मार्ग भी दर्शाया।

जीवन में उतार-चढाव तो आते ही हैं। चुनौतियां भी मिलती ही हैं, परन्तु जिस व्यक्ति ने समभाव धारण कर लिया हो, वह कभी अपने ध्येय से विचलित नहीं होगा। वह शिव की तरह विष को पीकर नीलकंठ बन जाता है। आचार्य नानेश के जीवन में भी ऐसे कई प्रसंग उपस्थित हुए, किन्तु उन्होंने सभी झंझावातों को समभाव से सहन किया और समता का आदर्श उपस्थित किया।

वर्तमान आचार्य श्री रामलालजी म.सा., स्थविर प्रमुख श्री ज्ञान मुनि जी म.सा. तथा संघ के सभी संत और सतियां आज उन्हीं के पद चिह्नों पर चलकर कई भवि-आत्माओं का पथ प्रदर्शन कर रहे हैं। अंत मैं आचार्य श्री नानेश को शत-शत वंदन।

-निम्बाहेड़ा (राजस्थान)

✿

□ सागरमल चपलोत
महामंत्री, श्री अ.भा.सा. जैन संघ

जन-जन की श्रद्धा के केन्द्र

जन-जन की श्रद्धा के केन्द्र, समता योगी, वर्तमान युग को संस्कार सम्पन्न तथा मानवीय मूल्यों से ओत-प्रोत जीवन जीने के उपदेष्टा, सरलमना आचार्य श्री नानेश आज हम से दूर अपनी संयम साधना की सुवास बिखेर कर चले गये।

एक बार बचपन में जैन संत मेवाड़ी मुनि श्री चोथमल जी म.सा. ने अपने प्रवचन में फरमाया-' नरक की वेदनाएं घोरतम और असह्य होती हैं। यह आत्मा इन वेदनाओं को अनेक बार भोगती आई हैं। मनुष्य भव मिला है अपने आपको जगाने का, उसे संवारने का, आत्मा से परमात्मा बनने का, मोक्ष मार्ग की यात्रा का।'

इन शास्त्रोक्त वचनों ने बालक नाना के हृदय को झकझोर दिया। चिन्तन ने राह पकड़ी जीवन को सार्थक बनाने की। यात्रा में घोड़े पर बैठे-बैठे ही रो पड़े। सांसारिक क्रिया-कलापों से उदासीन वैराग्य की भावना में बह गये। सच्चा मार्ग प्रदर्शन करने वाले गुरु की खोज प्रारम्भ की। 'जिन खोया तिन पाइया' कहावत सार्थक हुई। गुरु गणेश के दर्शन का योग मिला। पूर्व में जिन-जिन मुनि महात्माओं का योग मिला, वह योग, संयोग नहीं बन सका, कारण कि उन मुनियों ने बालक नानालाल को कई प्रकार की भौतिक सुख-सुविधाएं सुलभ कराने का लोभ-लालच देकर शिष्य बनाना चाहा था। गुरु गणेश ने वैरागी बालक नानालाल को कहा-"संयम लेना आसान नहीं है। वीतरागों के मार्ग पर चलना कांटों की राह पर चलना है। यह समझो कि तलवार की धार पर चलना तो आसान है, परन्तु संयम पथ पर चलना अति दुष्कर है। पहले तो अपने आपको समझने का प्रयत्न करो, फिर मुझे समझो, फिर सोचो कि तुम्हें किस राह पर चलना है।"

वैरागी नानालाल को दिशा मिल गई कि उसे राह बताने वाले सच्चे गुरु मिल गये हैं। यह योग नहीं संयोग था गुरु गणेश के श्री चरणों में पहुंचने का।

वैराग्य सच्चा है या बनावटी श्रावकों ने इसकी जांच आवश्यक समझी। श्रावकों ने अच्छे-अच्छे कपड़े निकाल कर नानालाल के सम्मुख रखे। नानालाल ने उन्हें यह कहकर स्वीकार करने से मना कर दिया कि मुझे तो अल्प कपड़ों, वे भी साधारण सादे कपड़ों में रहना है। एक दिन नानालाल एक श्रावक की भव्य कोठी में भोजन के लिए आमंत्रित किये गये। भोजन की व्यवस्था ऊपर की मंजिल में थी। जब वह खाना खाकर हाथ धोने उठे तो श्रावक जी ने कहा- " खड़े-खड़े आप यहीं हाथ धोलें" नानालाल ने कहा- ' ऐसा करने से दो दोष लगेंगे, प्रथम तो ऊपर से पानी डाला जायेगा, उससे वायुकाय की विराधना होगी और दूसरा राह चलते किसी व्यक्ति के छींटे लगने की संभावना है अतः नीचे जाकर ही शुद्धि करना अभीष्ट है'। वह नीचे आये और हाथ धोकर कुल्ला किया। इस प्रकार वैरागी नानालाल संयम पथ पर चलने की तैयारी पर खरे उतरे।

यह बात जब गुरु गणेश ने सुनी तो उन्हें विश्वास हो गया कि वैरागी नानालाल में वीतराग मार्ग पर अग्रसर होने की पूरी क्षमता है। वैरागी नानालाल को गुरु गणेश के रूप में सच्चा उद्धारक गुरु और गुरु गणेश को शिष्यत्व पालने वाला अनमोल शिष्य रत्न मिल गया। नानालाल मुनि बन गये।

दीक्षित होते ही नानालाल ने अपना जीवन ज्ञानार्जन, गुरु सेवा एवं तपस्या को समर्पित कर दिया। गुरु सेवा, ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की उत्कृष्ट साधना ने गुरु गणेश का दिल जीत लिया। गुरु को उनमें एक विलक्षण प्रतिभा, संत समाचारी पालने और महावीर शासन को दीपाने की क्षमता दृष्टिगोचर हुई।

इठलाती झीलों की ऐतिहासिक नगरी उदयपुर के राजमहलों का विशाल परिसर, जनमेदिनी का सैलाव। गुरु गणेश की जय जयकार। समोसरण सा दृश्य। संत-सतियों, श्रावक-श्राविकाओं (चतुर्विध संघ) के समक्ष गुरु आचार्य गणेश की घोषणा-

'आज मैं अपने (आचार्य के) समस्त अधिकार नानालाल को सौंपता हूं। यह भगवान महावीर के शासन में साधुमार्गी जैन संघ के अष्टम आचार्य होंगे।'

चतुर्विध संघ हर्ष से उछल पड़ा। सर्वत्र जय जयकार होने लगी। सुयोग्य आचार्य को शासन दीपाने वाला सुयोग्य संत मिल गया। गुरु गणेश के स्वर्गस्थ होने पर पुनः वही अवसर उपस्थित हुआ, आचार्य पद की चादर ओढ़ाने का। संतों ने चादर ओढाई-सर्वत्र जय जयकार। प्रातः बेला सूर्यदेव ने बादलों को चीर कर रश्मियों बिखेरी मानों उसने भी नानालालजी के आचार्य पद पर चादर समारोह का स्वागत किया हो।

आचार्य पदारोहण के पश्चात् शौर्य, शक्ति और भक्ति की त्रिवेणी संगम राजस्थान की पावन धरती मेवाड़ अंचल के एक छोटे-से ग्राम दांता (चित्तौड़गढ) का, देह दृष्टि से सामान्य कद काठी का, ओसवाल वंशीय पोखरना कुल दीपक, मां शृंगार का जाया, मोड़ीलाल जी का लाड़ला 'नाना' अंतरंग से वर्द्धमान महावीर शासन की साधुमार्गी परम्परा रूप मणिमाला का सुमेरू बन गया।

यहाँ यह कहना अतिशयोक्ति पूर्ण न होगा कि आचार्य श्री नानेश ने जहाँ एक ओर अपनी परम्परा की संत समाचारी का दृढता से पालन किया, वहाँ दूसरी ओर मद्य-मांस भक्षी और मानव समाज की विपरीत धारा में चलने वाले, कई लोगों को निरामिषभोजी (शाकाहारी) बनाकर समाज की सीधी राह पर चलते हुए मानवोचित्त जीवन जीने के लिए प्रेरित किया और कई मुमुक्षु आत्माओं को वीतराग मार्ग दर्शाया।

आचार्य नानेश का जीवन एक खुली पुस्तक रहा। कथनी और करनी की एकरूपत्ता के प्रतीक बन वे समता साधक बने। साधक भी ऐसे कि उनके अंतरंग एवं रोम-रोम में समता समा गई। स्वयं तो समता साधक बने ही, भवि जीवों को समतामय जीवन जीने का सरल, सुगम और सहज मार्ग भी दर्शाया।

जीवन में उतार-चढाव तो आते ही हैं। चुनौतियां भी मिलती ही हैं, परन्तु जिस व्यक्ति ने समभाव धारण कर लिया हो, वह कभी अपने ध्येय से विचलित नहीं होगा। वह शिव की तरह विष को पीकर नीलकंठ बन जाता है। आचार्य नानेश के जीवन में भी ऐसे कई प्रसंग उपस्थित हुए, किन्तु उन्होंने सभी झंझावातों को समभाव से सहन किया और समता का आदर्श उपस्थित किया।

वर्तमान आचार्य श्री रामलालजी म.सा., स्थविर प्रमुख श्री ज्ञान मुनि जी म.सा. तथा संघ के सभी संत और सतियां आज उन्हीं के पद चिह्नों पर चलकर कई भवि-आत्माओं का पथ प्रदर्शन कर रहे हैं। अंत में आचार्य श्री नानेश को शत-शत वंदन।

-निम्बाहेड़ा (राजस्थान)

✿

□ केशरीचन्द गोलछा
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, श्री अ.भा.सा. जैन संघ

कालजयी आचार्य

आर्य क्षेत्र (भारत) में राजस्थान प्रदेश में पहले मेवाड़ राज्य था। वहाँ धर्म प्रेमी राणा शासक राज्य करते थे- हिन्दू गौरव की रक्षा के लिए इनकी जगत प्रसिद्धि थी। उनके ही राज्य में एक छोटा-सा ग्राम दांता (नानेश नगर), जिसमें एक सद्गृहस्थ सेठ मोड़ीलाल जी निवास करते थे। उनकी धर्मशीला पत्नी शृंगारा थी। उसीकी कुक्षि से एक महान् तपोतेज बालक ने विक्रम सं. १९७७ मिती जेठ सुदी २ के मंगल प्रभात में जन्म लिया। परिवार वाले प्यार से नाना नाम से पुकारते थे। यह बालक दूज के चन्द्रमा की तरह बढ़ता-बढ़ता जब १८ साल का हुआ तो संयोग से एक दिन इसे छठे आरे का वर्णन जैन महात्मा जी से सुनने को मिला। युवा मन संसार की असारता में डूब गया तथा मंथन करते-करते वैराग्य भावना जागृत हुई और गुरु की खोज में निकल गया। खोजते-खोजते सद्गुरु आचार्य श्री जवाहर की शरण में पहुंचा और अपने भाव प्रकट किये। आचार्य श्री ने युवाचार्य श्री गणेश की नेश्राय में शिक्षा-दीक्षा के भाव समझने का संकेत दिया तो युवाचार्य श्री गणेश के पास पहुंचे तथा विनयपूर्वक निवेदन किया कि मैं आपका शिष्य बनना चाहता हूँ तो युवाचार्य श्री ने कहा-'आप हमें परखो, हम आपको परखेंगे'। यह सुनते ही दृढ आस्था धर्म पर हो गई तथा गुरु की चरण शरण प्राप्त हो गयी और ज्ञान-ध्यान सीखकर कालान्तर में मुनि नानालाल, युवाचार्य नानालाल फिर आचार्य नानेश बनकर भगवान महावीर के जिनशासन की छः दशक तक प्रभावी रूप से प्रभावना की और जिनशासन के गौरव को बढ़ाया एवं सदा-सदा के लिए कालजयी हो गया। क्यों ? इस महान् चारित्र सम्पन्न आत्मा की कथनी-करनी एकरूपा थी तथा इनकी संयम-साधना मेरु पर्वत के समान अविचल अड़िग थी। छः काया के प्रतिपालक थे। इनकी मंगलवाणी में पूर्व के आगम पुरुषों का सार था अतः जनमानस पर जादू-सा असर होता था और जिनशासन की प्रभावना बढ़ती थी इसलिए इनकी नेश्राय में करीब तीन सौ पचास मुमुक्षु चारित्र सम्पन्न आत्माओं ने प्रव्रज्या ग्रहण की और संयम साधना मार्ग पर आरूढ हुए। करीब एक लाख बलाई जाति के लोग व्यसन मुक्त होकर 'धर्मपाल' बने और इनके अनुयायी बनकर जैन धर्म की साधना में लग गये। यह इस शताब्दी का एक क्रांतिकारी चमत्कार है।

इसी महापुरुष ने मन के सम्बन्ध में जो कहावत है कि -'मन चंचल चितचोर है, मन की गति है और, मन के मते मत चलिए पल-पल और'। उसको एकाग्र करने के लिए 'समीक्षण ध्यान' की पद्धति का स्वरूप दिया, जिससे मन को साधा जा सकता है।

समाज की विषमता के स्वरूप को देखकर आचार्य श्री ने 'समता समाज रचना' की आदर्श विवेचना, व्याख्या प्रस्तुत की जो आज के समय में अति उपयोगी सिद्ध हुई है।

भगवान महावीर के शासन की निर्ग्रन्थ परम्परा की प्रथम परम्परा के प्रथम आचार्य सुधर्मा स्वामी के ८०वें पाट पर महान् क्रान्तिकारी आचार्य हुए हैं और वीतराग वाणी द्वारा 'जैनं जयति शासनम्' में जनमानस की आस्था को दृढ किया है। भगवान महावीर की २५०० वें निर्वाण शताब्दी पर संवत्सरी एकता के प्रश्न को लेकर जैन डेपुटेशन आपके पास आया तो विनय के साथ आपने अपने अन्तःकरण से कहा कि, 'समग्र स्थानकवासी जैन समाज जिस

तिथि पर एक मत से राजी होता है, मैं अपनी पूर्व परम्परा को छोड़कर उसको मानने के लिए तैयार हूँ। आप मेरी स्वीकृति समझें"। इस विलक्षण घोषणा से साधुमार्ग परम्परा के महान् आचार्य ने समाज एकता के लिए एक नई क्रान्ति का सूत्रपात किया, जो जैन इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गई।

रुग्ण तथा वृद्ध अवस्था में भी आप में पूर्ण समता थी अतः अन्तरसाक्षी से आपने अपने उत्तराधिकारी युवाचार्य श्री रामलालजी म.सा. का चयन करके अपने दृढ मनोबल का परिचय दिया और शासन के पाट की अक्षुण्णता को कायम रखा यह आपकी महान् दूरदर्शिता थी- आपके शासनकाल के ऐसे कितने ही उदाहरण हैं, जिनको मेरी छोटी बुद्धि और कलम से लिखना शक्य नहीं है। ऐसे कालजयी आचार्य को मेरी कोटि-कोटि श्रद्धांजलि एवं प्रणति।

-नोखामंडी (राजस्थान)

तव कीरत अमर हमेश

सोहनदान चारण

संत सती उर शोक समाये, अनगिन श्रावक भया उदास।
परमाचार्य धरम प्रति पालक, बसिया जाय अमरपुर वास॥

भौतिक देह पंच भूतां मिलगी, परमातम आतम परवेश।
अवनी पद किणने दूण आंख्या, नजर नहीं आवे नानेश॥

आवे याद संत री उर में, नैना उमड़ पड़े झट नीर।
नांखे घड़ी-घड़ी निराशा, धरे नहीं कायर मन धीर॥

जिन शासन मरजाद जमाई, जोती ज्ञान मशाल जगाय।
दे उपदेश उधारया अनगिण, जुग-जुग सूता जीव जगाय॥

ध्यान अटल उर समता धारी, तपसी कठिन साधियो तप।
इमरत वाण वखान उचारयो, जपियो मंत्र नवकार जप॥

जुग-जुग अमर रेवसी तो जश, अमर सदा रहसी उपदेश।
अर्पित शब्द सुमन अंजली, नमो-नमो तपसी नानेश॥

संत सती सूरा ने सिद्धजण, धरती राजस्थानी धिन्न।
धिन महावीरम जैन धर्मधारी, निर्मल चित्त नानेश्वर धिन्न॥
जैन अजैन मिल गावे जस, आवे दिये आप उपदेश।

ज्ञानी संत कवि गुण गावे, है तव कीरत अमर हमेश॥

– देशनोक

❑ सम्पतलाल सिपानी
उपाध्यक्ष, श्री अ.भा.सा. जैन संघ

महाज्योति के दर्शन

हमारे आराध्य परम् पूज्य आचार्य प्रवर श्री नानेश अस्वस्थ चल रहे थे। मुझ पर उनकी अनन्त कृपा थी। मैं उनकी अमृतमयी कृपा की वर्षा से सदा प्रमुदित रहता था। चौमासे में सेवा करने की सदा भावना रहती थी, तदनुसार सं. २०५६ के चौमासे में भी गुरुदेव की सेवा हेतु उदयपुर निवास कर रहा था। रात्रि को भी गुरुदेव की पावन सन्निधि बनी रहे, एतदर्थ उनके आवास के समक्ष चौकी पर ही सोया करता था। आचार्य श्री जी की कृपा से आत्मा उनके श्री चरणों में सदा समर्पित रहने की भावना बनी रहती थी।

इन्हीं भावनाओं के सागर में मैं डूबा हुआ था और अपने कर्म क्षेत्र सिलचर के लिये वापस रवाना होने की कामना से गुरुदेव से विदा लेने के लिए पहुंचा।

एक जुलाई १९९९ का दिन था। विदा भी लेनी थी और गुरुदेव की अस्वस्थता के कारण पुन: दर्शन से वंचित न हो जाऊं- यह चिन्ता भी हृदय को सता रही थी। इन्हीं मनोभावों के ज्वार के बीच सहसा मैंने गुरुदेव के समक्ष निवेदन कर दिया कि-हे परम् आराध्य ! आप ऐसी कृपा करो कि जब आपकी महायात्रा का समय आ जावे तो मुझे भी कंधा लगाने का सौभाग्य मिले।

एक पुत्र की जैसी कामना होती है, वैसी ही गुरु के प्रति शिष्य की कामना और भावना होती है। इसी भावना से प्रेरित हो मैंने सरलता से निवेदन तो कर दिया किन्तु फिर तत्काल ही मन में विचार आया- अरे ! मैंने गुरुदेव से यह क्या कह दिया ?

मैं चिन्तन में था, किन्तु गुरुदेव तो चिन्ता मुक्त थे। उन्होंने हास्य और शुभाशीष की वर्षा करते हुए मुझ पर कृपा दृष्टि डाली और मैं उससे निहाल होकर सिलचर को चल पड़ा।

पूर्वांचल संघ प्रतिवर्ष चौमासे में आचार्य प्रवर के दर्शन-वंदन श्रवण हेतु उपस्थित होता रहता है। मैंने श्री अ.भा.सा. जैन संघ के उपाध्यक्ष और पूर्वांचल संघ के अध्यक्ष के नाते संघ सदस्यों से दर्शनों के लिये चलने की तिथि पर विचार-विमर्श करना शुरु किया। काफी भिन्न-भिन्न तिथियों के सुझाव आए। अंत में मैंने अपने मन की साक्षी से श्री कमल जी भूरा को तिथि का सुझाव दिया, जिसे सबने स्वीकार किया। पूर्वांचल संघ गुरुदेव के श्री चरणों में उदयपुर पहुंच गया। पहुंचने की यह तिथि २६.१०.९९ थी। हमारे पहुंचने पर सभी ने आश्चर्य प्रकट किया कि आप लोग ऐसे निर्णायक क्षण में कैसे बिना सूचना के आ पहुंचे हैं ? गुरुदेव का स्वास्थ्य अब बहुत खराब चल रहा है। कभी भी विधान पूर्ण हो सकता है। मुझे गुरुदेव को किया हुआ मेरा निवेदन याद हो उठा। सारा दृश्य चित्रपट-सा स्पष्ट दिखाई देने लगा। गुरुदेव की अनन्त कृपा के प्रति हृदय श्रद्धा से भर उठा। मेरे साथ सम्पूर्ण पूर्वांचल संघ पर भी कृपा कर दी।

दिनांक २७.१० की रात्रि की बात है, मैं मंत्र जाप कर रहा था। सहसा कुछ क्षणों के लिये मुझे तन्द्रा-सी आई और उसी तन्द्रा में मैंने एक महाज्योति के दर्शन किये। सर्वत्र एक प्रशान्त प्रकाश छा गया। उसी समय उदयपुर के एक सुश्रावक ने मुझे झकझोर दिया और कहा कि -गुरुदेव का देवलोक गमन हो गया है।

सभी तारों को जोड़ने पर जो दृश्य उभरता है, जो चित्र बनता है, जो सत्य आकार ग्रहण करता है, वह उन महापुरुष की अलौकिक शक्तियों और उनकी महान् कृपा का प्रसाद दिखाई देता है।

स्वयं मैं तथा पूरा पूर्वांचल संघ उन महापुरुष की महान् कृपा के प्रति हृदय से श्रद्धावनत है। उनकी आत्मा चिरशांति प्राप्ति करें और उनकी सात्विक सामर्थ्य से चतुर्विध संघ सतत प्रगति करे, यही शासन देव से प्रार्थना है।

-अध्यक्ष, पूर्वांचल संघ, सिलचर

✿

प्रेम गंगा बहायी थी

मनोहरलाल मेहता

जग को असार जान, संयम की लीनी ठान,
स्वजन विरोध में, ना मन में कचायी थी।
गुरु की आशीष पाय, ज्ञान भरा हिय मांय,
महाव्रत पालन में, दृढ़ता दिखायी थी।
नाना बन नाना कीनी, भक्ति गुरु नाना विधि,
ना-ना कहते ही रहे, चादर ओढ़ायी थी।
नाना है सयाना, कैसे संघ का बुनेगा ताना,
सोचि-सोचि भक्तन की मति चकरायी थी।
बाल ब्रह्मचारी नाना, आगमों की पहचान प्रकटायी थी।
मेटा घूत अंधियारा, दलित मसीहा प्यारा,
धर्मपाल बना जैन विधि समझायी थी।
कीर्ति शेष नाना की क्या महिमा बखान करूं,
मनहर नाना ने प्रेम गंगा बहायी थी।

- भू.पू. निदेशक, आ.श्री नानेश समता शिक्षण समिति
नानेश नगर (दांता)

□ दौलत रांका
उपाध्यक्ष, श्री अ.भा.सा. जैन संघ

धर्म एवं आध्यात्मिकता के एनसाईक्लोपीडिया

आचार्य भगवन् को जैन धर्म एवं आध्यात्मिकता के एनसाईक्लोपीडिया (महानज्ञाता, विश्वकोष) संबोधित करना अतिशयोक्ति नहीं है । आधुनिक युग के प्रति आचार्यश्री का लगाव एवं जागरुकता को नजदीक से मुझे जानने का जो सुअवसर प्राप्त हुआ, उससे मुझे काफी प्रेरणा मिली- वह सबके लिए ज्ञान स्रोत है।

आचार्य भगवन् का होली चातुर्मास पर भीलवाड़ा विराजने का प्रसंग बना, उसके पश्चात् गुरुदेव का एक रोज का विश्राम घर पर हुआ । तत्पश्चात् भीलवाड़ा के औद्योगिक क्षेत्र में होते हुए पूर ग्राम पधारने का प्रसंग बना। १०-१२ कि.मी. की इस यात्रा में प्रथम बार आचार्य भगवन् के साथ पद विहार मैंने तय किया । इस दौरान आचार्य श्री द्वारा आधुनिक युग में पनप रहे नवीनतम उद्योगों की जानकारी के लिए जो वार्तालाप की गई, उससे मैं आश्चर्य चकित हो गया एवं यह सोचने पर विवश हो गया कि एक व्यक्तित्व जो पुरानी पीढ़ी के हैं एवं आध्यात्मिकता के क्षेत्र में लीन हैं, भला उन्हें उद्योग एवं आधुनिक बातों में कैसे रुचि हो सकती है ? खैर, यह आचार्य श्री के अद्भुत दृष्टिकोण की झलक थी । यह बात वार्ता तक ही सीमित नहीं रही, विहार के दौरान रास्ते में आये छोटे-मोटे कई उद्योगों में पधार कर आचार्यश्री ने उन्हें बारीकी से समझा एवं पूरी तरह जानकारी ली ।

यह बात कुछ वर्षों पूर्व की थी, लेकिन एक-दो वर्ष पूर्व ही उदयपुर पधारने से पूर्व भीलवाड़ा विराजने का प्रसंग रहा, इस दौरान स्वास्थ्य की अनुकूलता न होने पर भी विहार के दौरान कुछ उद्योगों में रुचि दिखाई, उनमें जैन ही नहीं वरन् माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष द्वारा भूरि-भूरि प्रशंसा की गई व ऐसे प्रेरित हुए कि अगले विहारों में उनके साथ पैदल चले ।

अपने युग के महान् प्रशासनिक संत शिरोमणी आचार्य भगवन के असंख्य गुणों का बखान करना किसी एक व्यक्ति के सामर्थ्य की बात नहीं, यही कारण है कि गुरुदेव के शासन से जुड़े हर परिवार का व्यक्ति अपने-अपने नजरिये से गुण-गानों की बौछार करने में लगा हुआ है ।

आचार्य श्री के विशिष्ट गुणों में प्रशासनिक दक्षता एक अद्भुत गुण है । जिसे समस्त आध्यात्मिक जगत आश्चर्य मानता है । इसी प्रशासनिक कला से हमारे गुरुदेव को अपने लम्बे शासन काल में ३५० से अधिक दीक्षाएं प्रदान कर अपने युग में विशालतम शासन के निर्माण करने का श्रेय रहा ।

हर बुद्धिजीवी श्रावक की भांति मुझे भी इस रहस्य को समझने एवं जानने की उत्सुकता बनी रही कि शासन की संयमीय मर्यादा में रहते हुए कैसे इस विशाल समुदाय वाले शासन का गुरुदेव ने पहले तो निर्माण किया और फिर लम्बे समय तक एक कड़ी में पिरोये रखा ? शासन भी भला कैसा- जहां किसी को प्रत्यक्ष में कोई लाभ नहीं, चलने-फिरने को कोई वाहन नहीं, तत्काल बातचीत का कोई साधन नहीं, ऐसे में इतने बड़े शासन समुदाय को एक साथ रखना एवं इस शासन से जुड़े विशाल श्रावक परिवार को एकजुट रखना वास्तव में आचार्य भगवन् की एक अद्भुत प्रशासन कला ही है । आज हम इस बात को भली-भांति समझ सकते हैं कि गृहस्थ जीवन में परिवार एवं व्यवसाय का प्रशासन कितना जटिल है, जहां कि हर प्रकार के प्रलोभन एवं व्यवस्था की भरमार है । जैसा कि मुझे आचार्य भगवन् की इस विशेष कला को जानने की उत्सुकता रही- इस संदर्भ में एक ऐसा अवसर आया, जब गुरुदेव

ने अपने मुखारविन्द से एक संकेत दिया उसकी गहराई को जब समझा तो मुझे गुरुदेव की प्रशासनिक कला के मूलभूत आधार का अहसास हुआ।

यह प्रसंग वर्तमान आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. से संबंधित है। लगभग दो वर्ष पूर्व आचार्य श्री को भीलवाड़ा से विहार करते समय हाईवे पर चलना था, इसके लिए कुछ विशेष व्यवस्थाएं की गईं, जिससे कि हेवी ट्राफिक होते हुए भी विहार में किसी प्रकार का कोई व्यवधान नहीं पड़ा। इस व्यवस्था को देखकर आचार्य भगवन ने मुझे बुलाकर संकेत दिया कि ऐसी ही व्यवस्था उनके विहार में होनी चाहिए। कुछ समय तक मैं समझ न सका तब फिर से फरमाया कि जब युवाचार्य जी का भीलवाड़ा से विहार हो तब भी इसी प्रकार की व्यवस्था रहे।

इस बात को समझने में मुझे थोड़ा समय लगा पर जैसे ही आशय की गहराई को समझा एवं प्रशासनिक नीति के रूप को देखा, तो रहस्य का अहसास हुआ। गुरुदेव में हर व्यक्ति का मान रखने की अद्‌भुत कला है और इसी कला से अपने शासन के हर सदस्य (संत सतियों) की छोटी-छोटी बातों का हर समय ख्याल रखा है, जिससे इतने बड़े विशाल शासन को इतने समय तक एक सूत्र में पिरोये रखना संभव हुआ जिसमें कि प्रत्यक्ष रूप से प्रलोभन का कोई प्रावधान नहीं है।

सरल शब्दों में यह कहें कि गुरुदेव ने शासन के हर सदस्य का मन एवं निहित गरिमा को बनाने का विशेष ध्यान रखा। इस प्रकार मेरे दिमाग में जो बहुत बड़ा प्रश्न था कि इतने बड़े शासन को बिना किसी प्रत्यक्ष प्रलोभन के कैसे व्यवस्थित रखा होगा, उसका इस ज्वलंत उदाहरण से लगभग निराकरण हो गया एवं भली-भांति यह बात मन में उतर गई कि बिना किसी प्रत्यक्ष प्रलोभन के किस प्रकार आचार्यश्री ने अपनी प्रशासनिक नीति से इस विशाल शासन को सुचारु नेतृत्व प्रदान किया।

इस प्रकार के अनेक प्रसंग हैं, जिससे सभी लोग भली-भांति परिचित हैं। अतः सभी की चाह यही होगी कि आचार्य-भगवन् द्वारा विकसित किया गया विशाल शासन समुदाय उन्हीं की प्रशासन कला के आधार पर चहुंमुखी विकास करता रहे, जिससे इस श्री संघ से जुड़े सभी श्रावक परिवार अटूट आस्था रखते हुए श्री संघ के चहुंमुखी विकास हेतु हमेशा के लिए सहयोगी बने रहें।

-भीलवाड़ा

पहुंचाये मुक्ति ठेठ जी

नेमचंद सुराना

एक देव की सेवा करूं तो तथास्तु बोल दे,
एक राजा की सेवा करूं तो भण्डार सारा खोल दे।
एक सेठ की सेवा करूं तो मुनीम बना दे सेठ जी,
नानेश गुरु की सेवा करूं तो पहुंचाये मुक्ति ठेठ जी।

-गंगाशहर

□ जयचन्दलाल सुखानी
कोषाध्यक्ष, श्री अ.भा.सा. जैन संघ

एक सूत्र, जो जीवन-पाथेय बना

हुक्मसंघ के अष्टमाचार्य, अध्यात्म योगी आचार्य श्री नानेश वर्तमान शताब्दी के अलौकिक एवं अप्रतिम साधक थे। आपसे मेरा इतना नैकट्य रहा कि समय-समय पर उनसे जो भी जिज्ञासा करता, उसका सम्यक् समाधान प्राप्त होता था। मैं स्वयं को अत्यन्त सौभाग्यशाली मानता हूं कि मुझे उनका सतत सानिध्य प्राप्त होता रहा और मेरे जीवन में अध्यात्म की जो लगन लगी, वह दिन-ब-दिन वृद्धिंगत रही। गुरुदेव की चिकित्सा व्यवस्था, संघ संबंधी विशिष्ट कार्यों एवं उनके जीवन-संध्या के कतिपय वर्षों में जो नैकट्य रहा, उसकी अनुभूतियों को शब्दों में बांधना अति कठिन है।

लगभग तीन दशक पूर्व आचार्य भगवन् के मन्दसौर वर्षावास में कुछ वैरागी को साथ लेकर सेवा में पहुंचा था। वंदन एवं रत्न-त्रय आराधना की सुखसाता पृच्छा के अनन्तर वार्तालाप के दौरान मैंने आचार्य भगवन् से निवेदन किया-'मुझे ऐसा कार्य बताने की कृपा करावें, जिससे कम से कम समय में अधिकाधिक पुण्यवानी का अर्जन किया जा सके।' आचार्य श्री जी ने सहजता से संक्षिप्त रूप में फरमाया कि 'किसी की दीक्षा में अन्तराय नहीं देना। मैंने चिन्तन किया यह कार्य तो कब सामने आयेगा और कब यह अवसर मिलेगा ? वस्तुत: 'चत्तारि परमंगाणि' चार दुर्लभ अंगों में संयम अंगीकार करना अर्थात् तीन करण, तीन योग से महाव्रतों का पालन अति दुर्लभ है। इसी प्रकार पंचाचार में वीर्याचार अर्थात् संयम में पराक्रम उत्कृष्टतम आचार है। एतदर्थ जो भव्य मुमुक्षु आत्मा इसकी ओर अग्रसर हो, उसमें व्यवधान उत्पन्न न कर सहयोगी बनना अपने आप में विशिष्ट है। चिन्तन की धारा आगे बढ़ी-यह रास्ता तो बहुत दूर है फिर पुण्यावानी की मंजिल कैसे हस्तगत होगी ?

आचार्य श्री जी से पुन: विचार-विमर्श हुआ तो भगवन् ने पूर्व कथित संदेश को इस बार बहुत ही महत्वपूर्ण ढंग से समझाया-'दीक्षार्थी भाई-बहिनों को परिवार से दीक्षार्थ आज्ञा मिलने में परिजनों का मोह, ममत्व अन्तराय का कारण बनता है। यदि उनको समझाकर दीक्षा का कार्य सम्पन्न करा सको तो छ: काया के जीवों की रक्षा करने में सहायक बन सकते हो और निश्चित ही इससे पुण्यवानी बहुत आगे बढ़ेगी।' उस दिन का शिक्षा-सूत्र मेरे हृदय में घर कर गया और मेरी प्रसन्नता का पारावार न रहा। जैसे अंधे को आंखें मिल गई हों। लगता है कोई पूर्व-भव का प्रसंग रहा होगा। तभी आराध्य देव की मुझ पर कृपा रही और इतना वात्सल्य-वर्षण भी। तब से आज तक मुझे गुरुदेव की कृपा से इस महत् कार्य में आशातीत सफलता मिली। मुझे लगभग ३०० (तीन सौ) से अधिक परिवारों में जाने एवं शासन की सेवा मे योगदान करने का अवसर मिला, यह गुरु कृपा का ही सुफल है। आज जब मैं सिंहावलोकन करता हूं तो कतिपय घटनाएं स्मृति-पटल पर उभर आती हैं।

बड़ीसादड़ी में सात दीक्षाओं का प्रसंग था, लेकिन भावना थी कि अष्टमाचार्य के आठवें चातुर्मास में दीक्षाएं भी आठ हों। इसके लिए हमने वैरागिन बहिन चेतन श्री की दीक्षा हेतु काफी प्रयत्न किया, जो कानोड़ में गांधी परिवार की थीं, हमें सफलता न मिल सकी। उदार संघ के कर्मठ, सेवाभावी, संघ/शासननिष्ठ श्री चांदमलजी पामेचा का मुझे पूरा-पूरा सहयोग प्राप्त हो रहा था। हम लगभग साथ-साथ ही यात्रा करते थे। बाद में चेतन श्री जी की दीक्षा टोंक में हुई और मुझे प्रसन्नता है कि आज वे महासती श्री चेतन श्री जी के रूप में शासन की अपूर्व

सेवा कर रहे हैं।

तदनन्तर ब्यावर-बीकानेर फिर ब्यावर जाना पड़ा और १० से १५ तक दीक्षाएं एक साथ सम्पन्न हुईं। इस कार्य में प्रमुख रूप से पूर्व मंत्री शासनचिंतक श्री धनराज जी बेताला, श्री भंवरलालजी कोठारी, श्री मोहनलाल जी श्रीश्रीमाल सहित संघ गौरव, त्यागमूर्ति श्री गुमानमलजी चोरड़िया, धर्मपाल पितामह श्री गणपतराज जी बोहरा, संघप्राण श्री सरदारमलजी कांकरिया का अत्यधिक सहयोग रहा। तत्पश्चात् २५ से अधिक दीक्षाओं का प्रयास रहा, जिसमें श्री पी० सी० चौपड़ा, श्री भंवरलाल जी अब्भाणी आदि महानुभावों का सहयोग रहा। सर्वाधिक सहयोग यदि किसी का रहा हो तो वह पिपलियामंडी के पामेचा परिवार का। आज हमारा संघ इस परिवार का बहुत ही ऋणी है। श्री सुरेश जी पामेचा आदि आज भी इस संघ/शासन की सेवा में अहर्निश संलग्न हैं। इस परिवार का यह गौरव रहा है कि पहले शासन की सेवा है बाकी सब बाद में है। ऐसा ही मेहता परिवार है, उसे भी विस्मृत नहीं किया जा सकता। दीक्षा सम्पन्न कराने में कितना कुछ करना पड़ा, वे क्षण आज भी मेरी आंखों के सामने प्रतिपल उभरकर आते हैं।

श्री धनराजजी सा० बेताला और मैं दीक्षा की स्वीकृति हेतु निकले थे। तब हमारा ब्यावर जाना हुआ। हम श्री मांगीलालजी अमोलकचंदजी मेहता के घर पहुंचे। जैसे ही हमारी गाड़ी रूकी 'ज्ञानू' (श्रद्धेय श्री ज्ञानमुनि जी म० सा०) गाड़ी में आकर बैठ गया। हम अंदर गए और उनकी माता जी (सौरम बाई) से मिले। उनसे इस संबंध में बात की तो उन्होंने कहा-इसे बीकानेर कर्मठ, सेवाभावी, धायमातृ पद विभूपित श्री इन्द्रचंद जी म० सा० की सेवा में ले जावो। फिर हमने सोचा कि सुश्रावक श्री मांगीलाल जी एवं श्री अमोलकचंद जी से भी मिलकर जायें। अंदर गए तो ज्ञात हुआ कि श्री मांगीलालजी सा० को पक्षाघात हो गया था। जब तक ७२ घंटे व्यतीत नहीं हो जाते, कुछ भी कहा जाना कठिन था। फिर भी आदर्श सुश्राविका सौरमबाई ने कहा-आप इसे श्री इन्द्र भगवन् की सेवा में बीकानेर ले जावो। यह हालत देखकर हमें इन्हें ले जाना उचित प्रतीत नहीं हो रहा था। फिर भी धन्य है श्री ज्ञानमुनि जी की वीर माता जो ऐसे समय में भी धर्म के प्रति आस्थावान रही। फिर ज्ञानू को बहुत समझाया, परन्तु उसने भी हमारी एक न सुनी और अविलम्ब चलने का आग्रह करते हुए कहा-पिताजी के स्वास्थ्य संबंधी ध्यान रखने के लिए यह पूरा परिवार है। भाई साहब आदि पूरी सार-संभल कर भी रहे हैं। मैं तो छोटा हूं कुछ कर नहीं सकता। इस पर उनके अग्रज श्री अमोलकचंद जी ने कहा-७२ घंटे निकल जाने के पश्चात् मैं इसको बीकानेर भेज दूंगा। अत: उनकी बात मानकर हम चले आए और उन्होंने तीन दिन पश्चात् ही इन्हें ब्यावर से रवाना कर दिया।

दीक्षाओं का मुहूर्त निकालने में आदर्श सुश्रावक, दानवीर, शासन हितैषी श्री जेसराज जी बैद का सदैव सहयोग रहा है। वे जैन पद्धति से मुहूर्त निकाल दिया करते थे और उन्होंने जितने भी मुहूर्त निकाले, उन सभी मुहूर्त में सम्पन्न हुई दीक्षाएं अति सफल रही हैं। वे भव्य आत्माएं शासन की अवर्णनीय सेवा कर रहे हैं। कर्मठ, सेवाभावी श्री इन्द्रचंद जी म०सा० के निर्देशन में ही हम कार्य करते थे और गुरुदेव का आशीर्वाद हमारे साथ था अत: दीक्षाओं में कोई व्यवधान नहीं आया। इस कार्य में जिन महानुभावों का हमें सहयोग मिला, उन्हें कभी भुलाया नहीं जा सकता। उन सभी महानुभावों ने सुदूर स्थानों तक जाकर मुमुक्षु आत्माओं के परिवारों से व्यक्तिश: मिलकर इनकी स्वीकृति दिलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। संघरत्न श्रीमान गुमानमलजी चोरड़िया, संघ भामाशाह श्री गणपतराजजी बोहरा, श्री डूंगरसिंह जी डूंगरपुरिया, पं० श्री लालचंदजी मुणोत आदि सुश्रावकों का अत्यधिक योगदान रहा है।

दीक्षाओं की दलाली में अनेक खट्टे-मीठे अनुभव हुए। मान-अपमान, मारपीट, झिड़कियां आदि का सामना करते-करते हम परिपक्व हो गए। यदि चिकने घड़े पर असर हो तो हमारे पर भी असर हो। जब दीक्षा होती है तो ये सारी बातें पुन: उभरती हैं, परन्तु फिर शांत भी हो जाती हैं। वस्तुत: दीक्षा दलाली का अर्थ यही है कि

परिजनों के मोह को कम करवाकर उनको मुमुक्षु आत्माओं के निकट लाकर आज्ञा दिलाना। हमारा यह सफर बहुत दूर-दूर तक का रहा। उड़ीसा, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, मारवाड़, मेवाड, पूरा राजस्थान, छतीसगड, बंगाल, दिल्ली, कर्नाटक आदि राज्यों में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

यह सब आचार्य भगवन् की महत्त्वपूर्ण कृपा का ही परिणाम है कि ऐसी पुण्यवानी बांधने का उत्कृष्ट सुअवसर हमें प्राप्त हुआ। हमारे शासननायक और संघनायक की तरफ से हमें शिक्षा-सूत्र मिला, एतदर्थ हम शासन एवं संघ के बहुत ऋणी हैं। पूरा विश्वास है कि आगे भी आप सभी के आशीर्वाद से इस क्षेत्र में आगे बढने का हमें सौभाग्य मिलता रहेगा।

अन्त में एक बात मैं संकोच के साथ और कहूंगा- इस दीक्षा दलाली में श्री इन्द्र भगवन् के साथ-साथ मेरे पूज्य पिताजी, पूज्य माताजी और मेरी जीवन संगिनी का भरपूर सहयोग रहा है। अतः मैं इन सबका भी आभारी हूं। एक बार पुनः आचार्य श्री नानेश की कृपा को हृदयंगम करते हुए उन्हें अशेष नमन करता हूं।

-बीकानेर

दीप से दीप जलाओ

आरती सेठिया

भारत भू का दिव्य रत्नाकर
ज्योतिर्मय ज्ञान दिवाकर
वह दीप
जिससे प्रज्ज्वलित था
जन-जन का अन्तर्मानस
उसकी लौ ने दिखाई थी
संयम पथ की सुदृढ़ राह
और प्रत्येक हृदय में जगाई थी
एक नई चेतना, नया विश्वास
डर गया अज्ञान अंधकार
डर गया मोह तिमिर
उस प्रकाश पुंज के समक्ष
जगमगाता
जो विषम परिस्थितियों में भी
समता का सूत्रधार
जिसने ज्ञान रूप दिव्य तेज से
भवि जीवों का किया उद्धार
करुणामूर्ति धीर गंभीर
आज वो दीप बुझ गया
किन्तु
क्या सचमुच वह दीप बुझ गया ?
क्या उस दीप से नहीं जला सकते
हम
हजारों लाखों असंख्य दीप
दीप से ही दीप जलता है
क्यों न करें
हम इस सच को चरितार्थ
कि हमारी आने वाली पीढी भी
रख सके
उस महान दीप की याद
तो चलो
उस बुझे हुए दीप को जला दो
हां
दीप से दीप जलाओ।

-कलकत्ता

❑ प्यारेलाल भंडारी
उपाध्यक्ष, श्री अ.भा.सा. जैन संघ

चमत्कारी महापुरुष

आचार्य श्री नानेश यद्यपि भौतिक देह-पिण्ड से अब हमारे बीच नहीं रहे, तथापि उनके गुणों की सौरभ से यह धरती सदा सुवासित होती रहेगी जिसकी सुगन्ध से मानव अपना आतमकल्याण व प्रेरणा प्राप्त करता रहेगा। महापुरुषों का जीवन चमत्कारों से भरा है। आचार्य देव एक अलौकिक महापुरुष थे, जिनकी कृपा व आशीर्वाद का वर्णन सदा मुझे मिलता रहा। वैसे तो मुझे आचार्य भगवन् के सान्निध्य, सेवा में रहते कई चमत्कार देखने का अवसर मिला है जिनमें अभी विगत दो वर्ष पूर्व का संस्मरण जो मृत्यु से बचाने वाला बना, वह संस्मरण यहां प्रस्तुत है।

आचार्य भगवन् ब्यावर का ऐतिहासिक वर्षावास सम्पन्न कर भीलवाड़ा, चित्तौड़ को पावन करते हुए अपने स्वीकृत चातुर्मास स्थल उदयपुर की दिशा में श्रीचरण गतिमान थे। भोपालसागर पधारने पर सहसा स्वास्थ्य अत्यधिक नरम हो गया। मुझे स्वास्थ्य की जानकारी मिली। मैं व सुश्रावक श्री कुन्दनमलजी नवलखा मुंबई दोनों अहमदाबाद पहुंचे, वहां से टैक्सी द्वारा हम रवाना हुए, अहमदाबाद से कुछ ही आगे बढे तो बरसात प्रारंभ हो गई। राष्ट्रीय राजमार्ग होने से ट्राफिक की आवाजाही अधिक थी, हम जय गुरु नाना का जाप करते हुए चल रहे थे, कभी नींद के झोंके आ जाते। जब जब तन्द्रा खुलती गुरु गुण स्मरण करते रहते, गर्मी की अत्यधिक स्थिति होने से कार के शीशे खुले थे, मेरी गर्दन कुछ बाहर निकली हुई थी, सहसा सामने से वाहन समीप आता देखकर ड्राईवर ने गाड़ी अपनी साईड में उतारी, गाडी की स्पीड, वाहन की टक्कर का खतरा व साईड में गहरा खड्डा, तीनों तरफ से खतरा देख ड्राईवर घबरा गया, ब्रेक लगाते-लगाते गाड़ी खड्ड में फंस गई। सहसा तंद्रा टूटी, ड्राईवर भयभीत हुआ कि गाड़ी गिरी और मेरी गर्दन धड़ से अलग हो जाती, किन्तु जिन महापुरुषों का , निरन्तर आशीर्वाद व कृपा जिस व्यक्ति को मिलती रहे, उसके संकट टल जाते हैं। हुआ यही, जय गुरु नाना के जाप से मैं बच गया, ड्राईवर कहने लगा-सेठजी आज का खतरा बहुत भंयकर था, बचना कठिन था, किन्तु लगता है आपके साथ किसी अलौकिक शक्ति का चमत्कार काम कर रहा है। बड़ी मुश्किल से गाड़ी खड्डे से निकलवाकर हम श्री चरणों में भोपालसागर पहुंचे, महान् विभूति आचार्य देव के पावन दर्शन कर स्वास्थ्य की संपृच्छा की।

-अलीबाग (महाराष्ट्र)

□ चम्पालाल डागा
सम्पादक-श्रमणोपासक

मेरे अटूट श्रद्धा केन्द्र

समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी, जिनशासन प्रद्योतक, परम पूज्य प्रातः स्मरणीय आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म.सा. एक ऐसे महान् संत, एक ऐसे विशिष्ट योगी थे, जिनके साधनामय जीवन में जो भी इनके निकट आया वह अभिभूत हुए बिना नहीं रह सका। आचार्य श्री की जीवन-साधना के विभिन्न आयामों से यदि हम उनके जीवन प्रसंगों को उद्घाटित करने लगें तो प्रचुर सामग्री हो जाती है।

चरम आधुनिकता के इस युग में श्रमण संस्कृति के अडिग रक्षक के रूप में आचार्य श्री जी की जीवन-साधना युगों-युगों तक साधकों को प्रेरित करती रहेगी। आज चारों ओर से वैज्ञानिकता को आधार मानकर कई प्रवृत्तियों में युगान्तकारी परिवर्तन हेतु वातावरण बनाकर प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया जाता है, लेकिन संयम मार्ग में सिद्धान्तों की सुरक्षा के साथ यदि कोई परिवर्तन की बात सामने आती है तो उस पर आचार्य श्री जी द्वारा मार्गदर्शन व मान्यता प्राप्त हो जाती थी, लेकिन सिद्धान्तों के विपरीत परिवर्तन की बात पर आचार्य श्री जी कभी समझौता स्वीकार नहीं करते थे। ऐसे विशिष्ट योगी के समक्ष अपनी बात प्रस्तुत करने वाला व्यक्ति स्वयं ही नतमस्तक हो जाता था। आचार्य प्रवर के सान्निध्य के स्मरण मात्र से अनेक संस्मरण प्रस्फुटित हो जाते हैं जिनको लिपिबद्ध किया जाय तो न मालूम कितने पृष्ठ चाहिए?

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के क्षेत्र विस्तार, आचार्य प्रवर के विचरण, आचार्य प्रवर से प्रेरित होकर दीक्षित होने वाले साधक-साधिकाओं, आचार्य श्री जी द्वारा मालव प्रान्त में प्रदत्त उद्बोधन मात्र से सप्त कुव्यसन त्याग कर बने धर्मपाल बन्धुओं के विशाल क्षेत्र, समीक्षण ध्यान विधि के प्रयोग एवं उन पर व्याख्यायित अनुभवों को विशेष पुस्तकाकार प्रस्तुति इत्यादि, अनेकानेक कार्यों को सम्पन्न करने में मेरा भी जो योगदान रहा है, उसमें कई बार कई स्थलों को यथोचित विधि से न समझ पाने के कारण मेरे एवं संघ कार्यालय द्वारा त्रुटियां होती रहती हैं। उन स्थलों की समीक्षा के समय आचार्य प्रवर जिस समता भाव से मार्गदर्शन प्रदान करते थे, उससे हमें अपनी कार्यविधि का बौनापन नजर अवश्य आता है, लेकिन निराशा के स्थान पर उत्साह का ही सदैव संचार हुआ है। आचार्य प्रवर की वाणी से जो विलक्षणता प्रस्फुटित होती थी, वह तो अनुभव करने वाला व्यक्ति ही समझ सकता था।

मैंने आचार्य प्रवर के सर्वप्रथम दर्शन राजनांदगांव चातुर्मास में अधिवेशन के समय किये। प्रथम दर्शन से मुझे अपार आत्म-संतोष हुआ एवं मेरी श्रद्धा प्रगाढ़ हुई, जिससे मैं प्रतिवर्ष दर्शन हेतु निरन्तर लालायित रहने लगा। संघ की गतिविधियों के नजदीक आने पर कई बार समस्याओं से घिर जाने से दूर हटने का मन में संकल्प आता, परन्तु ज्योंहि आचार्य प्रवर के दर्शन व सान्निध्य का सौभाग्य मिलता, समस्या का तुरन्त समाधान हो जाता। उसके पश्चात् तो अनेक ऐसे अवसर आये, जब व्यक्तिगत, सामाजिक आदि समस्याओं का समाधान तो आचार्य प्रवर के नाम-स्मरण मात्र से ही होने लगा। मुझे मेरे कार्य में कभी कोई बाधा ज्यादा समय तक रोके नहीं रही।

आचार्य प्रवर की शारीरिक व्याधि के समय अस्पताल में, स्थानक में, विहार में, चातुर्मास में व अन्य समय भी मुझे अनेक बार सान्निध्य प्राप्त हुआ। वे जिस पर विश्वास करते थे, उनकी नजर में, उनकी अन्तर-आत्मा में जो व्यक्ति सही लगता, उन पर वे बहुत विश्वास करते थे। यदि कोई व्यक्ति एक बार भी उनकी नजर से हट जाता

तो उस पर उन्होंने आखिर तक विश्वास नहीं किया, ऐसे प्रसंग भी बहुत आये।

साधुमार्गी जैन संघ की विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यों का संचालन करने हेतु आचार्य प्रवर के चरण कमलों में निवेदन करने, समस्या प्रस्तुत करने, मार्गदर्शन प्राप्त करने का सौभाग्य मुझे हर समय प्राप्त होता रहता था, वह हर सम्पर्क मेरे लिए अविस्मरणीय बन गया। इस दौरान कई राजनेता, विद्वान व प्रमुख व्यक्ति आचार्यप्रवर के दर्शन, विचार-विमर्श व मार्गदर्शन हेतु आते तो उस समय मुझे भी साथ में बैठने का अवसर मिलता। ऐसा ही एक विरल दिवस था- दि० ४ अप्रैल, १९९२ का, जब प्रवचन के पश्चात् जैन विद्वान्, तीर्थंकर मासिक के यशस्वी सम्पादक डा. श्री नेमीचन्दजी जैन, इन्दौर आचार्य प्रवर के दर्शन व विचार-विमर्श हेतु पधारे व उसके पश्चात् उन्होंने अपने मासिक पत्र तीर्थंकर अप्रैल-९२ में जो लिखा, वह हुबहू मैं यहां उद्धृत कर रहा हूं-

'आचार्य श्री नानालाल जी महाराज के प्रति मेरी असीम श्रद्धा है। वे आगम पुरुष हैं। सम्यग्ज्ञानी, अविचल, दांता में जन्मे, कपासन में दीक्षित। जैन दर्शन के असीम मनीषी। जर्रे-जर्रे में ज्ञान की अपूर्व छटा। वाणी में सौम्य। देह से प्रतिपल देहातीत। आभा की रश्मियें का प्रस्फुटन। ज्योतिपुंज। मैंने जब भी उन्हें देखा है, मुझे लगा है जैसे कोई सुबह का सूरज उदयाचल पर अलथी-पलथी में बैठा है। वे सवस्त्र होकर भी अवस्त्र हैं। अत्यन्त निर्ग्रन्थ। उनके मन पर कोई परिग्रह नहीं है। क्रोधित तो मैंने उन्हें कभी देखा ही नहीं। धर्म चर्चा में मैंने उन्हें सदैव प्रबुद्ध, संतुलित, आधुनिक और अधीत पाया। इधर-उधर की बात तो वे करते ही नहीं है, जब भी कोई बात करते हैं- संयत, धर्म पर केन्द्रित। वे मौलिक हैं। पुरातन पंथी नहीं हैं। आग्रही बिल्कुल नहीं हैं। यदि कोई व्यक्ति उन्हें युक्ति-युक्त कुछ कह बता दे तो वे उसे मानते हैं। हाँ, जिसकी पीठ पर कोई युक्ति न हो, उसे भला कैसे मान लेंगे ?

मैंने उन्हें प्रतिपल स्वाध्याय में निमग्न पाया है। उठते-बैठते, चलते-फिरते सतत् स्वाध्याय में अवस्थित- उनके इस आशातीत स्वाध्याय की झंकार सुनायी पड़ती है (सुनने वाला चाहिए)।

ये अस्वस्थ हुए, किन्तु अ-अस्वस्थ कभी नहीं हुए, उनकी आंखें बीमार हुईं, किन्तु भीतर की आंखें अप्रमत्त बनी रहीं। कुल मिलकर वे एक ऐसे संत हैं, जो पुराने कभी नहीं पड़ेंगे-नये के लिए जिनके मन के द्वार खुले रहते हैं, वे पुराने कभी नहीं पड़ते। आचार्य श्री नानालाल जी के मन के द्वार सार्थकताओं के लिए प्रतिपल खुले रहते हैं, पुराने के लिए उनके मन में कोई कड़वाहट नहीं है, और नये के लिए कोई विशेष मिठास नहीं है। वे समता मूर्ति हैं, जो सार्थक हैं उसके लिए वे अत्यन्त संवेदनशील और सु-सह्य हैं।'

उदयपुर विराजने के दौरान निरन्तर आचार्य प्रवर का स्वास्थ्य शिथिल होता गया, दवाएं बन्द, परीक्षण, जांच सभी बन्द। साधना में सतत् लीन, जब भी हम उदयपुर जाते, उस सौम्य मूर्ति के दर्शन करके अपने आपको धन्य समझते, और फिर २७ अक्टूबर, १९९९ बुधवार कार्तिक बदी ३ सं. २०५६ की रात्रि के १०.४१ पर संलेखना संथारापूर्वक देह त्याग। हम उस समय के साक्षी हैं। एक क्षण के लिए उनकी पलकें झपकीं, पुनः खुलीं व एक प्रकाश पुन्ज को प्रकट करके गुरुदेव चिर निन्द्रा में निमग्न हो गये। लगा कि एक ज्योति महाज्योति में मिल गई।

संघ परम सौभाग्यशाली है कि पूज्य गुरुदेव महाप्रयाण के पूर्व प्रतिकृति व युति के रूप में श्री रामलालजी म.सा. को युवाचार्य चयन करके गये।

ऐसे युग-निर्माता, जीवन-निर्माता, कथनी व करनी के धनी, समताधारी, दीर्घ दृष्टा, समीक्षण ध्यान योगी, मेरी श्रद्धा के केन्द्र (जिनकी कृपा मुझ पर हर समय बनी रही) को मेरी, मेरी धर्म सहायिका सुन्दर देवी डागा, मेरे पूज्य पिताजी फतेहचंदजी डागा व मेरे पूरे परिवार की तरफ से हार्दिक श्रद्धा सुमन अर्पित।

अन्त में यही मंगलकामना है कि पूज्य गुरुदेव की आत्मा मुक्तावस्था को प्राप्त करके मोक्ष गमन करें।

पूर्व महामंत्री, पूर्व उपाध्यक्ष, पूर्व कोषाध्यक्ष,
श्री अ०भा०सा० जैन संघ
-चोथरों का चौक, गंगाशहर (बीकानेर)

□ सोहनलाल सिपानी

अध्यक्ष, श्री सुरेन्द्रकुमार सांड शिक्षा सोसायटी

मधुर स्मृति

आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. की अस्वस्थता के कारण बहुत दिनों से उनके दर्शनों की अभिलाषा बढ़ जा रही थी, मानस में कई तरंगें उठ रही थीं, कई भावनाएं पनप रही थीं। अन्ततोगत्वा मैं अपने परिवार के सा १३ अक्टूबर को उदयपुर आचार्य श्री की सेवा में पहुंचा। उस समय वे जीवन और महाप्रयाण से संघर्ष कर रहे थे उनकी शारीरिक व्याधि चिन्ता जनक थी मगर महापुरुष ऐसी स्थिति में भी घबराकर कब हिम्मत हारने वाले होते हैं.. उनके मुंह पर प्रसन्नता झलक रही थी।

मैंने आचार्य श्री से निवेदन किया था कि हमारे लिए क्या सेवा है..? क्या संदेश है..? तब आचार्य श्री कहा कि श्री सोहनलाल जी दो बातों की ओर आपको ध्यान देना है :-

१. साध्वाचार का पालन बड़ी दृढ़ता के साथ हो।

२. संघ में समता के साथ एकता बनी रहे।

दोनों बातें संघ के उत्थान के लिए आवश्यक हैं। अनुशासन के साथ दोनों बातों पर पूर्ण ध्यान दिया गया तो गौरव बढ़ेगा।

साध्वाचार, एकता, अनुशासन और स्नेहपूर्ण वातावरण बनाने के लिए आचार्य श्री के दिल में एक दर्द, पीड़ा और टीस थी। वे चाहते थे संघ के साथ साधु-सन्तों का उत्थान हो, वे अपनी दिनचर्या में दृढ़ रहें, ताकि वीर शासन गौरवान्वित हो सके।

ऐसे कर्मठ और महाप्रतापी आचार्य के मानस में संघ के लिए कितनी तड़प, कितना प्रेम, कितनी आत्मीयता और एकता के लिए कितने मर्मस्पर्शी विचार थे।

मुझमें और मेरे परिवार में जो कुछ धार्मिक संस्कार पनपे हैं जो कुछ मैं बन पाया हूं, उसमें आचार्य श्री की ही महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मैंने आचार्य श्री को निकट से देखा है, घंटों उनके सान्निध्य में रहा हूं, उनके अन्तर को जाना है, ऐसे निस्पृह कर्मयोगी की साधना पर मैं और मेरा परिवार श्रद्धा भक्ति से अवनत है। उनके प्रभाव से मेरे जीवन में भारी परिवर्तन आया है, प्रेरणा मिली है।

उनके जीवन की कई अद्भुत स्मृतियां मेरे मानस पटल पर उभर रही हैं।

१९५९ उदयरामसर के चातुर्मास की ऐतिहासिक स्मृतियों में से एक स्मृति की झलक प्रस्तुत कर रहा हूं, जिसमें गणिवर गौतम स्वामी की सी लब्धि होने की साक्षात अनुभूति को पाया।

मूर्ति पूजक समाज में दादागुरु के मेले का प्रसंग था। मेले में बीकानेर एवं बाहर के श्रावकों का आगमन हुआ। आचार्य भगवन के दर्शनार्थ जब वे पहुंचे तो स्वामी वात्सल्य की परिधि में हमने आग्रह किया। आप आतिथ्य सत्कार का लाभ देने के बाद ही उपाश्रय में पधारें। उन्होंने हमारा आग्रह स्वीकार किया। हजार व्यक्तियों की भोजन व्यवस्था थी, किंतु उस वक्त जो अखूट भंडार हुआ उसे आश्चर्य कहूं या लब्धि व्यवस्था में लगभग पांच हजार व्यक्तियों का आतिथ्य सानंद संपन्न हुआ। महान् लब्धि क्या-२ उल्लेख करूं?

उन्होंने हमें जो दिया उसीसे उपकृत हैं। उनके उपकारों के ऋण से उऋण तो नहीं हो सकते किंतु आस्था भरी अंजली समर्पित करते हुए यही प्रण करते हैं कि हे गुरु, जो संदेश, दिशा निर्देश आप श्री ने प्रयाण से पूर्व हमें दिये हैं उनका दृढ़ता पूर्वक पालन होगा।

तन-मन जीवन की एकरूपता में नवम पट्टधर आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के आदेश-निर्देशों के अनुसार बढ़ते रहेंगे।

-बैंगलोर

वो लाल

भारती नलवाया (मीनल)

अहसान न भूलें हम उसका, जिसने तुझ पर चादर डाली,
वो लाल जवाहर ही का था, और लाल की लाल पे ला डाली,
भाग्य हमारे अच्छे थे और सूझ उन्हीं की थी ऊंची,
देखो नाना कैसा गड़िया दांता ग्राम में मोड़ीलाल घर बजी जोर से थी थाली,
वो लाल जवाहर का ही था और लाल की ... (१)

कपासन में चोला बदला, चादर बदल गई महलों में,
रण बांकुरे राणा भी थे जनता थी पोलों में,
हिम्मत नहीं थी गजानंद की फिर भी बैठ गया डोली में
वो लाल जवाहर का ही था और लाल की...(२)

शुद्ध संयम के पालन हारे, छत्तीस गुणों के धारक हो,
मानवता के प्रेमी, हम सबके तुम तारक हो,
नैया पार लगा दे नाना बस यही अर्ज है खाली,
वो लाल जवाहर का ही था और लाल...(३)

पूज्य गणेशी था मेवाड़ी और नाना तू भी मेवाड़ी,
चाहे जितना संकट आया पर ना हिला यह मर्दाना,
अरे हिलाने वाले उखड़ गये, पर तूने प्रीत वही पाली,
वो लाल जवाहर का ही था और लाल ...(४)

ऊंचा मस्तक लेकर आता, नत मस्तक हो जाता,
अपने आप मिट जाती शंका, मन ही मन शरमाता,
'नाना-नाना' रटता जाता, जाते-जाते जय बोली,
वो लाल जवाहर का ही था और लाल ...(५)

दीक्षाओं का ढेर लगा है, जिन शासन की शान बढ़ी है,
अल्प समय में इतनी दीक्षा अब तक कहां हो पाई है,
अब होने वाली सूची लम्बी, गजानंद भर देगा झोली
वो लाल जवाहर का ही था और लाल ...(६)

-नगरपालिका के पास, बड़ीसादड़ी

❑ सोहनलाल सिपानी
अध्यक्ष, श्री सुरेन्द्रकुमार सांड शिक्षा सोसायटी

मधुर स्मृति

आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. की अस्वस्थता के कारण बहुत दिनों से उनके दर्शनों की अभिलाषा बढ़ती जा रही थी, मानस में कई तरंगें उठ रही थीं, कई भावनाएं पनप रही थीं। अन्ततोगत्वा मैं अपने परिवार के साथ १३ अक्टूबर को उदयपुर आचार्य श्री की सेवा में पहुंचा। उस समय वे जीवन और महाप्रयाण से संघर्ष कर रहे थे, उनकी शारीरिक व्याधि चिन्ता जनक थी मगर महापुरुष ऐसी स्थिति में भी घबराकर कब हिम्मत हारने वाले होते हैं..? उनके मुंह पर प्रसन्नता झलक रही थी।

मैंने आचार्य श्री से निवेदन किया था कि हमारे लिए क्या सेवा है..? क्या संदेश है..? तब आचार्य श्री ने कहा कि श्री सोहनलाल जी दो बातों की ओर आपको ध्यान देना है :-

१. साध्वाचार का पालन बड़ी दृढ़ता के साथ हो।

२. संघ में समता के साथ एकता बनी रहे।

दोनों बातें संघ के उत्थान के लिए आवश्यक हैं। अनुशासन के साथ दोनों बातों पर पूर्ण ध्यान दिया गया तो गौरव बढ़ेगा।

साध्वाचार, एकता, अनुशासन और स्नेहपूर्ण वातावरण बनाने के लिए आचार्य श्री के दिल में एक दर्द, पीड़ा और टीस थी। वे चाहते थे संघ के साथ साधु-सन्तों का उत्थान हो, वे अपनी दिनचर्या में दृढ़ रहें, ताकि वीर शासन गौरवान्वित हो सके।

ऐसे कर्मठ और महाप्रतापी आचार्य के मानस में संघ के लिए कितनी तड़प, कितना प्रेम, कितनी आत्मीयता और एकता के लिए कितने मर्मस्पर्शी विचार थे।

मुझमें और मेरे परिवार में जो कुछ धार्मिक संस्कार पनपे हैं जो कुछ मैं बन पाया हूं, उसमें आचार्य श्री की ही महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मैंने आचार्य श्री को निकट से देखा है, घंटों उनके सान्निध्य में रहा हूं, उनके अन्तर को जाना है, ऐसे निस्पृह कर्मयोगी की साधना पर मैं और मेरा परिवार श्रद्धा भक्ति से अवनत है। उनके प्रभाव से मेरे जीवन में भारी परिवर्तन आया है, प्रेरणा मिली है।

उनके जीवन की कई अद्‌भुत स्मृतियां मेरे मानस पटल पर उभर रही हैं।

१९५९ उदयरामसर के चार्तुमास की ऐतिहासिक स्मृतियों में से एक स्मृति की झलक प्रस्तुत कर रहा हूं, जिसमें गणिवर गौतम स्वामी की सी लब्धि होने को साक्षात अनुभूति को पाया।

मूर्ति पूजक समाज में दादागुरु के मेले का प्रसंग था। मेले में बीकानेर एवं बाहर के श्रावकों का आगमन हुआ। आचार्य भगवन के दर्शनार्थ जब वे पहुंचे तो साधर्मी वात्सल्यता की परिधि में हमने आग्रह किया। आप सब हमें आतिथ्य सत्कार का लाभ देने के बाद ही उत्सव में पधारें। उन्होंने हमारा आग्रह स्वीकार किया। हजार बारह सौ तक के व्यक्तियों की भोजन व्यवस्था थी, किंतु उस वक्त जो अखूट भंडार हुआ उसे आश्चर्य कहूं या लब्धि का चमत्कार। बारह सौ की व्यवस्था में लगभग पांच हजार व्यक्तियों का आतिथ्य सानंद संपन्न हुआ। महान् लब्धि संपन्न गुरु की महिमा, गरिमा का क्या-२ उल्लेख करूं ?

उन्होने हमें जो दिया उसीसे उपकृत हैं। उनके उपकारों के ऋण से उऋण तो नहीं हो सकते किंतु आस्था भरी अंजली समर्पित करते हुए यही प्रण करते हैं कि हे गुरु, जो संदेश, दिशा निर्देश आप श्री ने प्रयाण से पूर्व हमें दिये हैं उनका दृढ़ता पूर्वक पालन होगा।

तन-मन जीवन की एकरूपता में नवम पट्टधर आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के आदेश-निर्देशों के अनुसार बढ़ते रहेंगे।

-बैंगलोर

वो लाल

भारती नलवाया (मीनल)

अहसान न भूलें हम उसका, जिसने तुझ पर चादर डाली,
वो लाल जवाहर ही का था, और लाल की लाल पे ला डाली,
भाग्य हमारे अच्छे थे और सूझ उन्हीं की थी ऊंची,
देखो नाना कैसा गढ़िया दांता ग्राम में मोड़ीलाल घर बजी जोर से थी थाली,
वो लाल जवाहर का ही था और लाल की ... (१)

कपासन में चोला बदला, चादर बदल गई महलों में,
रण बांकुरे राणा भी थे जनता थी पोलों में,
हिम्मत नहीं थी गजानंद की फिर भी बैठ गया डोली में
वो लाल जवाहर का ही था और लाल की...(२)

शुद्ध संयम के पालन हारे, छत्तीस गुणों के धारक हो,
मानवता के प्रेमी, हम सबके तुम तारक हो,
नैया पार लगा दे नाना बस यही अर्ज है खाली,
वो लाल जवाहर का ही था और लाल...(३)

पूज्य गणेशी था मेवाड़ी और नाना तू भी मेवाड़ी,
चाहे जितना संकट आया पर ना हिला यह मर्दाना,
अरे हिलाने वाले उखड़ गये, पर तूने प्रीत वही पाली,
वो लाल जवाहर का ही था और लाल ...(४)

ऊंचा मस्तक लेकर आता, नत मस्तक हो जाता,
अपने आप मिट जाती शंका, मन ही मन शरमाता,
'नाना-नाना' रटता जाता, जाते-जाते जय बोली,
वो लाल जवाहर का ही था और लाल ...(५)

दीक्षाओं का ढेर लगा है, जिन शासन की शान बढ़ी है,
अल्प समय में इतनी दीक्षा अब तक कहां हो पाई है,
अब होने वाली सूची लम्बी, गजानंद भर देगा झोली
वो लाल जवाहर का ही था और लाल ...(६)

-नगरपालिका के पास, बड़ीसादड़ी

□ **धनराज बेताला**
महामंत्री, श्री सुरेन्द्रकुमार सांड शिक्षा सोसायटी

अविस्मरणीय आचार्य

परम पूज्य, प्रात: स्मरणीय, जिन शासन प्रद्योतक, समता दर्शन प्रणेता, धर्मपाल प्रतिबोधक, समीक्षण ध्यान योगी, विद्वद्वर्य शिरोमणि, आचार्य श्री नानालालजी म० सा० एक ऐसे श्रमण सूर्य थे, जिनका जीवनवृत्त के विशेषणों की व्याख्याओं से स्मरण करें तो जीवनवृत्त अनावृत्त होता जाता है। फिर भी हम उनके जीवनवृत्त के कुछ प्रसंगों व उपलब्धियों को ही उल्लेखित कर पाते हैं। ऐसा श्रमण सूर्य का संलेखणा संथारा पूर्वक स्वर्गवास सभी जैन श्रमण वर्ग के लिए आदर्श एवं अनुकरणीय प्रसंग था।

आचार्य पूज्य श्री नानालालजी म० सा० को जिनशासन प्रद्योतक उपमा से उपमित किया जाना उनका सार्थक परिचय था। जैन इतिहास में, इस कलिकाल में लगभग ३५० भाई-बहनों को बोधित करके दीक्षित किया, यह एक विश्व कीर्तिमान था। अत: वे जिनशासन प्रद्योतक के रूप में घोषित हुए।

आचार्य श्री जी ने जैन दर्शन के सार रूप में 'समता दर्शन' की जैसी सटीक व्याख्या प्रदान की, उसे सुनकर, पढ़कर विद्वद्वर्य चकित हो गया। समता दर्शन की विशद व्याख्या ने आचार्य श्री जी की पूरे जैन जगत में पहचान बना दी। आज जैन समाज में जहां समता संबोधन आता है तो उस समय आचार्य पूज्य श्री नानालालजी म०सा० का चित्र सामने प्रकट हो जाता है। आपकी समतायोगी, समताधारी, समतादर्शी साधक के रूप में सर्वत्र पहचान हो गई।

आचार्य श्री जी के धर्मपाल प्रतिबोधक सम्बोधन के विषय में यदि विचारों को लिखना प्रारंभ करें तो अपने आप में पुस्तक बन जाती है। हजारों व्यसनी व मांस मदिरा आदि कुव्यसनों की सेवन करने वाली बलाई जाति को व्यसनों से मुक्त कर धर्मपाल बनाकर आपने एक अविस्मरणीय इतिहास बना दिया। जीव दया का इतना विशाल कार्य मात्र उपदेशामृत से सम्पन्न करना एक विलक्षण घटना है। राष्ट्रीय धरातल पर हम इसकी समीक्षा करें तो इतना प्रमोद होता है कि आचार्य श्री जी में कैसा विशिष्ट चमत्कार था। इतना बड़ा कार्य चमत्कारी महापुरुष ही सम्पन्न कर सकते हैं। आचार्य श्री जी के जीवनकाल की यह घटना अक्षुण्ण रहे, यह हम सबकी जिम्मेदारी बनती है। बलाई समाज तो सदा सर्वदा आचार्य श्री जी का ऋणी रहेगा ही।

आचार्य श्री जी के विशेषणों में समीक्षण ध्यान योगी के सम्बोधन के संबंध में कितना क्या लिखा जाय कि जिससे यह स्थिति स्पष्ट हो सके ? आचार्य श्री जी ने अपनी प्रज्ञा से, जैनागमों से सार तत्त्वों के रूप में समीक्षण विधा का निरूपण किया और जब यह विधा प्रकाश में आई तो बुद्धिजीवी महानुभावों को आचार्य श्री जी के अथाह ज्ञान की अनुभूति हुई तो कुछ अन्य लोगों को यह असहनीय भी लगी। 'प्रेक्षा-ध्यान' पत्रिका में एक मुनि श्री ने तो अन्य प्रचलित ध्यान पद्धतियों से चुराई हुई पद्धति ही उसे लिख डाला। इस पर आचार्य श्री जी से मार्गदर्शन मांगा गया। पूज्य आचार्य श्री जी ने जो फरमाया उसे लिपिबद्ध करके मूर्धन्य विद्वान स्व० डा० श्री नरेन्द्र भानावत को अवलोकन कराने हेतु मेटर मेरे पास आया। मैंने डा० भानावत को अवलोकन हेतु निवेदन किया। हम दोनों ने उक्त मेटर का अवलोकन किया। पूरे मेटर को देखने के पश्चात् डा० भानावत ने बड़ा सुखद आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा कि यह मेटर तो आशातीत है। समीक्षण ध्यान पर इतने शास्त्रीय उदाहरण हो सकते हैं, यह मेरी कल्पना में नहीं था। उक्त मेटर फिर 'श्रमणोपासक' पत्रिका के अंकों में प्रकाशित किया गया, जिसने भी पढ़ा, वह विभोर

हो गया।

आचार्य श्री जी के अन्य विशेषण विद्वद्वर्य शिरोमणि के विषय में तो जितना लिखा जाय, कम ही होगा। आचार्य श्री जी का प्रवचन जिस सूत्र वाक्य पर होता उसकी व्याख्या कई दिनों तक चलती रहती। आचार्य श्री जी द्वारा उद्घाटित क्रोध समीक्षण, मान समीक्षण इत्यादि पुस्तकों का मेटर एक बार वयोवृद्ध पंडित श्री शोभाचन्द जी भारिल्ल को अवलोकनार्थ व सुझाव हेतु प्रेषित किया गया। पंडित सा० ने अवलोकन के पश्चात् टिप्पणी की यदि मैं इस मेटर का अवलोकन नहीं करता तो मेरी ही कमी रहती। ऐसे अनेक उदाहरण स्मृति पटल पर हैं। विस्तार भय से प्रस्तुत नहीं करते हुए मात्र सभी से अपनी-अपनी अनुभूतियों का ही स्मरण करने का निवेदन है।

ऐसे महान् जैनाचार्य का हमारे बीच से उठ जाना सम्पूर्ण जैन जगत ही नहीं मानव मात्र की क्षति है। आज वे हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनके ही उत्तराधिकारी उनके पाट पर विराजित तरुण तपस्वी, परमागम रहस्य ज्ञाता, श्री रामलालजी म० सा० आचार्य पद को सुशोभित करते हुए इस शासन को सुसंचालन पूर्वक आगे बढाने को तत्पर हैं।

मेरी शासन देव से यही कामना है कि स्वर्गस्थ आत्मा को चिर शांति प्राप्त हो।

-नोखा, बीकानेर

क्यों तुम हमको छोड़ गये

सुभाष कोटड़िया (प्रकाश जैन)

बहुत दिया और बहुत किया, लाखों का उद्धार किया
हुक्म संघ के अष्टम पट्टधर, क्यों तुम हमको छोड़ गये।

१) पूज्य नानेश की पुनवाणी को गुरु श्री ने बताया था।
धर्मपाल का किया उद्धार, नया इतिहास बनाया था।
समता का संदेश पढ़े, रोम-रोम मे उनके,
हुक्म संघ के...॥१॥

२) २५ दीक्षा का एक डंका, रतनपुरी में बजाया था।
हिन्दू-मुस्लिम, सिख-इसाई, सभी ने शीश झुकाया था।
वारिस का ये चयन करे, राम मुनिश्वर नाम धरे,
हुक्म संघ के..॥४॥

३) पूज्य नानेश के उपकारों को, कभी न हम भूल पाएगें।
राम गुरु के अनुशासन को, जन-जन में ले जाएगें।
'प्रकाश' में यह बात करें, अंधियारे को दूर करें,
हुक्म संघ के..॥५॥

□ रिधकरण सिपानी
पूर्व अध्यक्ष, श्री अ.भा. सा. जैन संघ

दृष्टा : अन्तरदृष्टा : दूर दृष्टा

अपनी ही अनुभूति की बात कर रहा हूं। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के अध्यक्ष पद का निर्वाह करते हुए आचार्य श्री को अन्तरंग कार्य कलापों एवं संघीय व्यवस्था के संदर्भ में मैंने पाया वे मात्र दृष्टा ही नहीं दूर दृष्टा, अन्तर दृष्टा भी थे। हम जिस चीज का अनुभव तैराकी दृष्टि से करते थे, भगवन् तलस्पर्शता तक पहुंचे हुए मिलते थे। हम जमीं तक ही देख पाते थे, भगवन भूगर्भ तक पहुंचे हुए पाये जाते थे। संयम का विशुद्ध प्रवाह उनकी प्राणधारा थी और इस प्रवाह में थोड़ा भी भटकाव नामंजूर था। जहां कहीं भी ऐसी विसंगति नजर आती तो तुरन्त सम्यक् दिशा निर्देश हो जाया करता था।

आचार्य श्री दृष्टि से ही नहीं अन्तरदृष्टि से घटनाक्रम को पूर्व में ही देख लेते थे और संकेत कर देते थे किंतु हम समझ नहीं पाते। बाद में उन श्री जी का निर्णय सर्वोपरि सत्य ही साबित होता था। समय की तस्वीर में जब जब भी सत्य प्रकट हुआ हमें मानना पड़ा आचार्य श्री की परख, सोच, निर्णय शत प्रतिशत सही घटित होते थे। हम तो फोटोग्राफी से ही देख पाते आचार्य श्री तो हाई माइक्रोवेव रेस पेन्टरी फ्रीक्वेन्सी कैमरे के समान अन्तर्मन की हलचल को अंकित कर लेने वाले थे। धन्य धन्य था चतुर्विध संघ जिनकी रचनात्मक ठोस कार्य शैली का एक-एक आयाम जैन समाज को प्रोन्नतदिशा में ले जा रहा था। उनकी कार्य शैली सौटंच स्वर्ण न बने यह असंभव है और यही कारण था उन श्री के पुनीत सानिध्य में जो भी पहुंचता, श्रद्धा से नत मस्तक हो जाता था। आचार्य श्री एक व्यक्ति रूप में नहीं रहे किन्तु उनकी कृति संचालन कर रही है।

हम पूरी तरह आश्वस्त हैं कि वह विभूति एक ऐसी चमत्कारिक शक्ति होगी जो पूर्वाचार्यों की शासन व्यवस्था का सम्यक् संयोजन बनाए रखेगी। उनके सैद्धांतिक विचारों से जन-जन प्रभावित होगा। उनके अन्तर मन में सहृदयता-सदाशयता तो कूट- कूट कर भरी हुई थी। त्याग तपोमय जीवन एवं व्यक्तित्व में चुम्बकीय आकर्षण था। श्रद्धांजलि के समर्पित स्वरों में कहूंगा हे गुरु! आप गरल पी कर अमृत देते रहे।

वक्त की कटोर छैनी से तराशने पर भी आपका समत्व रूप अखंडित रहा।

श्रद्धाभिसिक्त अश्रुओं की अविरल धार में यही प्रण करते हैं कि भगवन् आप श्री जी ने हमें जो संदेश, निर्देश प्रदत्त किये हैं, उनका, नवम् पट्टधर आचार्य श्री रामेश के सत्सानिध्य में दृढ़ता पूर्वक कदम दर कदम पालन करेंगे।

-बैंगलोर

❁

समता की जो खान

सुमेरचंद जैन

श्रद्धांजलि उस योगी को, समता की जो खान ।
शुद्ध आचरण पालते, सफल किया अभियान ॥
व्यसनमुक्ति का पाठ दे, तारे हजारों हजार ।
चारित्र चूड़ामणि ध्यानयोगी को, नमन है बारम्बार ॥

-बीकानेर

□ सुन्दरलाल दूगड़
पूर्व उपाध्यक्ष, श्री अ.भा. सा. जैन संघ

महा महनीय, अड़िग आस्था केन्द्र

समय की शिला पर वे ही अपने पद चिह्न अंकित कर सकते हैं जो संकल्प के धनी, दीर्घदृष्टा, आत्मबली एंव दृढ प्रतिज्ञ होते हैं, जिनके वचनों एवं करनी में कोई द्वैत नहीं होता है, ऐसे महापुरुषों के सामने समय हाथ बांधकर खड़े रहता है तथा वे परिस्थितियों के पीछे नहीं चलते अपितु परिस्थितियां उनके पीछे चलती हैं। परम् श्रद्धेय आचार्य श्री नानालालजी म० सा० भी ऐसे ही दृढ संकल्पी, प्रबल आत्मशक्ति सम्पन्न, अविचल संयम साधक एवं निर्द्वन्द्व निर्ग्रन्थ थे।

मेरे पूज्य पिताजी, माताजी एवं समग्र परिवार की उनके प्रति अपरिमित श्रद्धा एवं अड़िग आस्था थी। देशनोक चातुर्मास के समय मेरे परिवार ने उनकी सेवा का यथाशक्य लाभ लिया। मेरे छोटे भाई की धर्मपत्नी ने तो मासखमण तक की तपस्या उनके श्री चरणों में रहकर की। उनके उपदेशामृत का पानकर किसके कर्ण कुहर पवित्र नहीं हो उठते थे। उनके अमृतोपम बोल ऐसे प्रतीत होते थे, मानो किसी पर्वत शृंखला के अन्तःकरण से कोई निर्झर कल-कल मृदु संगीत ध्वनि करता बह रहा है।

संसार में व्याप्त अशान्ति, कलह, रागद्वेष, हिंसा एवं आतंक से उनका मन सदैव व्यथित रहता था। वे इसका मूल वैषम्य, वर्ण एवं वर्ग भेद को मानते थे अतः अपने प्रवचनों में बहुधा इस पर कड़ा प्रहार करते थे। विश्व शान्ति का अमोघ उपाय उनकी दृष्टि में समता समाज की रचना में निहित था। कर्म से ही व्यक्ति ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र होता है जन्मना नहीं। महावीर की इस वाणी का उद्घोष न केवल उन्हें काम्य था, अपितु वह उनका साध्य भी था। व्यसनों में लिप्त अस्पृश्य कही जाने वाली बलाई जाति को धर्म का मर्म समझाकर अहिंसक जीवन शैली में ढालकर समता समाज रचना को जो मूर्त रूप दिया, वह एक ऐसी क्रान्तिकारी घटना है, जिसका हजारों वर्षों के इतिहास में कोई मुकाबला नहीं है।

आचरण की शुद्धता के अभाव में चरित्र बालू या ताश के उस घर के समान है, जो हवा के साधारण झोंके में ही तहस-नहस हो जाता है। अतः श्रद्धेय आचार्य प्रवर ने आचरण की शुद्धता, पवित्रता को अकाट्य एवं निर्विकार माना है। इसमें तर्क की कहीं कोई गुंजाईश भी नहीं है। साधुमार्गी जैन संघ का यह महल आचार की शुद्धता और विचार की पवित्रता पर इतनी मजबूती से खड़ा है कि प्रबल से प्रबल आंधी और तूफान के झोंके भी इसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते हैं।

ऐसे महामनस्वी, तपी-त्यागी, समीक्षण ध्यान योगी, समता साधक, आचार्य प्रवर का संलेखना संथारापूर्वक सहसा स्वर्गवास समग्र जैन समाज पर तुषारापात है। जाने से पूर्व वे अपने उत्तराधिकारी के रूप में आचार्य श्री रामलालजी म०सा० रूपी जो बहुमूल्य हीरा दे गये हैं, उनके निर्देशन में यह संघ उत्तरोत्तर विकास की ओर उन्मुख रहेगा एवं हम उसी आस्था एवं दृढतापूर्वक संघनिष्ठ रहेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। श्रद्धेय आचार्य प्रवर को मेरे कोटि-कोटि वंदन एवं नमन।

-कलकत्ता

❑ भंवरलाल कोठारी
पूर्व उपाध्यक्ष, पूर्व महामंत्री, श्री अ.भा.सा. जैन संघ

अप्रमत्त निर्ग्रन्थ समत्व योगी

आचार्य श्री नानालाल जी महाराज इस युग के आध्यात्मिक जगत की एक विरल विभूति रहे हैं। मेवाड़ के एक छोटे से गांव दांता में मोड़ीलालजी पोखरना की धर्मपत्नी शृंगारदेवी की कुक्षी से संवत् १९७७ में जन्म लेने वाला बालक 'नाना', 'अणो र णीयान महतो महीयान' के सूत्र के अनुसार अणु से भी सूक्ष्म पर महान् से भी महान् बन सकेगा, कौन जानता था। 'नाना' नाम ही विविधता सूचक तथा बहुआयामी है। उसमें निश्छल निर्विकार ब्रह्मस्वरूप नन्हापन भी है और मातृत्व तथा पितृत्व समन्वित वात्सल्य भावों का सर्वमंगलकारी विराट रूप भी। नाना ने वस्तुतः अपने नाम को पूर्ण सार्थकता प्रदान की। अपने पर दादा गुरु आचार्य श्री श्री लालजी महाराज की भविष्यवाणी, दादा गुरु आचार्य जवाहर और दीक्षा गुरु आचार्य गणेश का आशीर्वाद, संवत् १९९६ से सतत अप्रमत्त निर्ग्रन्थ-संयमी जीवन की प्रखर साधना व कथनी करनी की एकरूपता ही उनके उस हिमालय सदृश्य विराट व्यक्तित्व का मूल आधार बनी।

समता साधक संत नानालाल जी संवत् २०१९ में आचार्य पद पर आसीन हुए। आचार्य पदासीन होते ही संवत् २०२० का प्रथम चातुर्मास रतलाम में हुआ। रतलाम चातुर्मास अवधि में उन्होंने समता जीवन व्यवहार, समता समाज रचना का सूत्र अभियान चलाया। मालवा के सैंकड़ों गांवों में बसे उपेक्षित व पिछड़े जनजाति वर्ग के बलाई बन्धु उनके सम्पर्क में आए। वे दीन-हीन, दुःखी, पीड़ित और प्रताड़ित थे। उनके सामने सवाल थे-'हम क्या करें ? कहां जाएं ? कैसे अपनी पीड़ित-प्रताड़ित स्थिति को बदलें '? आचार्य श्री ने उन्हें रास्ता बताया, व्यसन छोड़ो। मांस-मदिरा त्यागो। खान-पान बदलो। अपने आप को संस्कार सम्पन्न बनाओ। धर्मपालक बनो। फिर आप किसी से पीछे अथवा पिछड़े नहीं रहोगे। नानेश ने कहा-'कोई जन्म से ऊंचा या नीचा नहीं होता'। व्यसन मुक्ति संस्कार जीवन ही उसे ऊंचाइयों तक पहुंचाता है। श्री-समृद्धि युक्त बनाता है।

आचार्य श्री के प्रेरक उद्‌बोधन और अंतःस्पर्शी वाणी का चमत्कारी प्रभाव पड़ा। बलाई जाति में नव जागरण हुआ। मध्यप्रदेश के नागदा, खाचरौद, मक्सी, शाजापुर क्षेत्रों के गांवों-कस्बों में बलाई जाति के बड़े-बड़े सम्मेलन हुए। औसर-मौसर जैसे अवसरों पर हजारों व्यक्तियों ने मांस-मदिरा आदि दुर्व्यसनों को त्यागने का संकल्प लिया। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ ने व्यसनमुक्त बलाई बस्तियों एवं गांवों में संस्कार शिक्षण-शालाओं का संचालन किया। स्वास्थ्य शिविर लगाए। वहां धर्मजागरण एवं संस्कार निर्माण पदयात्राओं से जीवन की रूपांतरणकारी शृंखला प्रारम्भ हुई। धर्मपाल समाज के नाम से एक व्यसनमुक्त सत्संस्कारी समाज की स्थापना हुई। उनकी आर्थिक, शैक्षणिक, सामाजिक स्थिति में बदलाव आया। उनमें आए सकारात्मक बदलाव से गांव के अन्य जाति समुदायों में भी नवजागरण का संचार हुआ। धर्मपाल समाज के रूप में संस्कार क्रांति का यह एक युगीन शुभारम्भ था।

सन् १९७२ के जयपुर चातुर्मास के प्रारम्भ में एक जिज्ञासु ने आचार्य नानेश से प्रश्न किया, 'किम् जीवनम् ?' आचार्य श्री ने सूत्र रूप में उत्तर दिया-'सम्यक् निर्णायकम् समतामयं च यत् तद् जीवनम्'। सम्यक् निर्णायक समतामय जीवन ही वास्तविक जीवन है। इसी सूत्र की व्याख्या उन्होंने चार माह के चातुर्मासिक प्रवचनों में की। श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ ने इस संकलन का प्रकाशन 'समता दर्शन और व्यवहार' शीर्षक से करवाकर उसका लोकार्पण

आचार्य प्रवर के सन् १९७३ के बीकानेर वर्षावास तथा संघ के वार्षिक अधिवेशन पर श्री जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय देहली के कुलाधिपति प्रख्यात शिक्षाविद् कर्मयोगी डा. डी.एस. कोठारी से करवाया। विषमता की गहराती खाइयों को पाटकर समता समाज की संरचना का दिग्दर्शन करानेवाली यह एक अनुपम कृति है। व्यसनमुक्त, संस्कारयुक्त, प्रकृति-सापेक्ष, समता मूलक, एकात्मकता व विश्व-बंधुत्व के भावों से अनुप्राणित यह ग्रंथ आचार्य श्री की अहिंसक समाज रचना की सम्यक् दृष्टि का परिचायक है।

आचार्य प्रवर का लक्ष्य सर्वाधिक रूप से व्यक्ति के रूपान्तरण पर केन्द्रित रहा उन्होंने तनावों, दबावों, प्रतिक्रियाओं में जी रहे और निरन्तर टूट रहे व्यक्तियों को तनाव-दबाव व रोगमुक्त करने के लिए 'समीक्षण ध्यान साधना' का प्रतिपादन किया। समभाव में, दृष्टाभाव में अपने सहज स्वभाव में आने तथा 'स्व' में स्थित होकर 'स्वस्थ' होने का रास्ता बताया। क्रोध समीक्षण, मान समीक्षण, माया समीक्षण, लोभ समीक्षण के सूत्र प्रदान कर अंतर शुद्धि प्रदान कर अंतर शुद्धि की व्यावहारिक साधना-पद्धति का निरूपण किया। आचार्य प्रवर के शब्दों में -'क्रोध आदि कलुषताएँ कषाय हैं। ये आत्मा के स्वभाव को कषती हैं।' सरल शब्दों में आत्मा के भीतरी कलुष का नाम कषाय है। जब क्रोध, मान, माया, लोभ का समीक्षण करते हैं तब मन की ग्रंथियां अपने आप खुलती हैं। चित्त निर्ग्रन्थ होने लगता है। राग, द्वेष गलने लगता है। राग और द्वेष परस्पर अनन्य हैं। राग में द्वेष और द्वेष में राग गर्भित है। किसी एक को छोड़ने पर दूसरा अपने आप विदा होने लगता है। (आगम पुरुष-पृ० ९९, लेखक डा. नेमीचन्द जैन)

आचार्यप्रवर सत्यान्वेषी थे। संयमी जीवन में किसी भी प्रकार का स्खलन उन्हें स्वीकार नहीं था। आचरण में दृढ रहते हुए भी विचारों में वे उदार तथा अनाग्रही थे। अनेक श्रावकों के बार-बार निवेदन करने पर भी उन्होंने ध्वनि-विस्तारक या टेप रिकार्डर का प्रयोग करना स्वीकार नहीं किया। उनकी दलील थी कि 'इसका उपयोग न करने से अपरिग्रह का अंकुश लगातार बना रहता है। कीर्ति की मूर्च्छा कम होती है और श्रोता सावधानी तथा मनोयोग से सुनता है। यंत्रीकरण की जटिलताओं से भी बचा जा सकता है। यंत्रों का कोई अंत नहीं है। आज इसको काम में लीजिए, कल दूसरा अनिवार्य हो जाएगा। परसों तीसरा दरवाजा खटखटाएगा और अपनी साधना भग्न या घुन हो जायेगी। आप कुछ कर ही नहीं पायेंगे, इसलिए यदि परेशानियों को कम करना हो तो मशीनों के दैत्य से स्वयं को बचाना चाहिए।" (आगम पुरुष, पृ. ९३, लेखक- डा. नेमीचन्द जैन) एक और ध्वनि विस्तारक का उपयोग नहीं करने के लिए वे इतने दृढ थे, पर दूसरी ओर जैन एकता के लिए संवत्सरी एक साथ मनाने के सुझाव पर उतने ही उदार, लचीले तथा अनाग्रही थे। इस संबंध में उनसे मिलने आए जैन प्रतिनिधि मंडल को बेझिझक अपनी तरफ से ऐसे किसी भी दिन संवत्सरी मनाने की सहमति जताई जिसे पूरा जैन समाज स्वीकार करने को तैयार हो।

आचार्य प्रवर यद्यपि महाआरंभी हिंसाकारक यंत्रों के पक्षधर नहीं थे, पर वे विज्ञान के विरोधी नहीं थे। वे विज्ञान को आत्मा का मूल गुण मानते थे। उनका कहना था-'धर्म और विज्ञान परस्पर पूरक हैं, वे एक दूसरे से संघर्षरत नहीं हैं। असल में जब हम खोजना शुरू करेंगे, तभी कुछ पायेंगे।' जैन धर्म विज्ञान का अटूट खजाना है। हम अभागे हैं कि हमसे बार-बार इसकी कुंजी गुम हो जाती है। हमें इस खजाने का न सिर्फ खुद उपयोग करना चाहिए वरन् सारी दुनिया के लिए उसे खोल देना चाहिए। पदार्थ की जो परिभाषा आज विज्ञान दे रहा है, वह तीर्थंकर सदियों पहले दे चुके हैं। उत्पाद व्यय ध्रौव्ययुक्तं सत् और गुण पर्ययवद् द्रव्य के रहस्य को समझ लेने पर पदार्थ की गहराइयों में उतरने में कोई कठिनाई नहीं है। 'आज का वैज्ञानिक यंत्रों और औजारों में उलझ गया है। आत्मतत्त्व उसकी मुट्ठी से खिसक गया है। हमारी पारिभाषिक शब्दावली का यदि अनासक्त विश्लेषण किया जाए तो हम पायेंगे कि धर्म आज भी विज्ञान से दो कदम आगे है। विज्ञान उन्हीं दार्शनिक तथ्यों की पुष्टि कर रहा है, जिन्हें आज से सदियों पहले धर्म ने स्थापित किया था। सापेक्षता शुद्ध ज्ञान की माता

है। अल्बर्ट आंइस्टाइन ने इसे विलम्ब से खोजा और अपनाया है। जैनाचार्यों ने भौतिकी, जैविकी, गणित जैसी जटिल/सूक्ष्म विचारों पर भी काफी गहरा विमर्श किया है।' (आगम पुरुष ९५-९६, डा. नेमीचन्द जैन)'

आचार्य नानेश अहर्निश जागृत, अप्रमत्त, समता-साधक, समीक्षण ध्यान-योगी के रूप में साधनारत रहे। वे दृढधर्मी, तेजस्वी, चुम्बकीय व्यक्तित्व के धनी थे। व्यक्ति को रूपांतरित करने की उनमें अद्भुत क्षमता थी। उनके सम्पर्क में आकर व्यसनी व्यसनमुक्त बने। जो नास्तिक थे, वे आस्तिक बन गए। श्रद्धाविमुख व्यक्तियों में देव, गुरु, धर्म के प्रति आस्था के भाव अंकुरित हुए। भौतिकता के व्यामोह में फंसे युवक-युवतियों में संयम साधना के सम्यक् संस्कार पुष्पित-पल्लवित हुए। उनके आचार्य पद के कार्यकाल में ३५० से अधिक वैराग्य भावना से ओत प्रोत भाई-बहिनों ने मुक्ति पथ के राही के रूप में भागवती दीक्षा अंगीकार की। हजारों गृहस्थों ने नियम-मर्यादाएँ धारण कर व्रती श्रावक बनने का संकल्प लिया।

आचार्य नानालाल जी का जीवन वस्तुतः 'यावत् चंद्र दिवाकरो:' के समान विराट तथा बहुआयामी था। वे नन्हें बालक के रूप में जब एक ओर सदा निर्विकार ब्रह्म स्वरूप स्थिति में रहे, वहीं दूसरी ओर मातृत्व और पितृत्व दोनों की संवेदनाओं को अपने में समाये रखकर प्राणि-मात्र पर वात्सल्य की वर्षा करते रहे। उनके बहुआयामी व्यक्तित्व को शब्दों में बांधा नहीं जा सकता। उनके नाना पक्षों को नाना प्रकार से रेखांकित किया गया है। 'तीर्थंकर' एवं 'शाकाहार क्रांति' के ख्यात सम्पादक और जाने-माने विचारक डा० नेमीचन्द जैन ने 'आगम पुरुष' पुस्तक में जो कहा वह उल्लेखनीय है। वे कहते हैं- "मुझे लगता है यह महापुरुष अपनी तरह का निराला है। सुलझा हुआ है, निष्काम है, समतावान है। इसके लिए न कोई छोटा और न कोई बड़ा, न कोई अमीर, न कोई गरीब। जो भी इसके जीवन में है, वह सब उसने गहरी खोज-परख के बाद स्वीकार किया है। हर स्वीकृति के लिए इसके पास कोई मजबूत/प्रशस्त तर्क है। धीमे, सुदृढ, धीरज में डूबे सुर में बात करने का इसका स्वभाव है। जोर से यह बोलता नहीं है, क्रोध इसे कभी आता नहीं है। इसके रोम-रोम में आतमराम है। यह आठों याम आत्मसंलीन बना रहता है। खादी ओढ़ता है। जात-पांत मानता नहीं है। जहां कोई प्राण या धड़कन है, वहां इसकी सलाम और सलामती पहुंचती है। इसके द्वारा किसी को भी किसी तरह की चोट पहुंचे, यह संभव ही नहीं है। इस/ऐसे विराट मानव से मिलने के नाना अवसर आए और हर अवसर पर मैं कुछ न कुछ पाकर ही लौटा। मैंने उन्हें अपना श्रद्धाकेन्द्र माना। वे कुछ ही ऐसे हैं जिन्हें मैं अपने श्रद्धा पुष्प अर्पित कर पाया हूं। इसमें नर-नारी दोनों हैं। साधु या गृहस्थ कोई हो यदि वह साफ-सुथरा, निष्कलंक है तो वह मेरे लिए सर्वदा पूज्य है। आचार्य श्री में वह सब है जो श्रद्धा को आकर्षित करता है।"

वस्तुतः यही वह श्रद्धा थी जो भारत की दसों दिशाओं से दूर-दराज के लक्षाधिक श्रद्धालुओं को आचार्य श्री की महाप्रयाण यात्रा में उनका अंतिम दर्शन प्राप्त करने की अंतर भावना दिनांक २८ अक्टूबर, ९९ को उन्हें उदयपुर खींच लाई। आचार्य प्रवर का पार्थिव शरीर संलेखना संथारे की चरम स्थिति में दिनांक २७ अक्टूबर, १९९९ के रात्रि ९.४५ बजे के लगभग शांत हुआ था। दूरभाष, दूरदर्शन आदि संचार साधनों से जिसको जहाँ सूचना मिली वह वहाँ से बिना एक क्षण गंवाए जो भी साधन मिला उसी से भाग दौड़ करके उदयपुर पहुंचने के लिए तत्क्षण निकल पड़ा। जन गण का पारावार उमड़ आया। अपार जनमेदिनी अपनी अंतराल की गहराइयों से उमड़ी अश्रुधारा के श्रद्धासुमन उस महान् प्रज्ञा पुरुष की स्मृति में अनवरत अर्पित करती रही। यह श्रद्धांजलि ही उनके जन वल्लभ स्वरूप तथा मृत्युंजयी विराट् व्यक्तित्व का परिचायक है। उन्हें श्रद्धायुक्त नमन।

-ओसवाल कोठारी मोहल्ला, बीकानेर

□ पीरदान पारख
पूर्व महामंत्री, श्री अ.भा.सा. जैन संघ

हुकुम शासन के ज्योति-पुंज

हुकुम शासन की यह गरिमा रही है कि इसमें आने वाले आचार्य ने पीछे वालो की यशोगाथा को आगे बढ़ाया। इसी कड़ी में अपने समय की एक जाज्वल्यमान ज्योति थे-आचार्य श्री नानेश।

दांता जैसे पिछड़े गांव में जन्म लेकर भी जिन्होंने अपने आचार्य पदकाल में प्रगति के एक से एक नये कीर्तिमान स्थापित किये। सारे जैन समाज में खासकर स्थानकवासी समाज में उन्होंने अपनी विशेष पहचान बनाई थी।

जिस समय इनके कन्धों पर युवाचार्य पद का भार आया था, उस समय संघ में श्रमण संख्या बहुत कम रह गई थी, पर आचार्य पद पर आते ही इनका प्रथम चातुर्मास रतलाम में हुआ। यहीं से इनकी यशस्वी आचार्य पद-यात्रा शुरू हुई। इसके बाद इन्होंने पीछे मुड़कर कभी नहीं देखा।

इन्होंने रतलाम चातुर्मास पश्चात् एक ऐसा दिव्य संदेश समाज को दिया, जो युगों-युगों तक स्मरणीय रहेगा। वह कार्य था- पिछड़ी जाति के बलाई भाइयों को व्यसन मुक्त बनाकर धर्मपाल बनाने का। यह संख्या सामान्य न रहकर हजारों में हुई। व्यसन मुक्त होने के कारण इस जाति के लोगों के जीवन में अद्भुत परिवर्तन आया। इनके आचार-विचार, आर्थिक स्थिति, सभी की प्रगति में प्रत्यक्ष दर्शन उस क्षेत्र में जाने वालों को सहज रूप से हो जाते हैं।

इनकी वाणी व संयमी जीवन के प्रभाव से मुमुक्षु आत्माओं की लम्बी संख्या बन गई। आपने अपने आचार्य पदकाल में ३५० उपरान्त दीक्षार्थी भाई-बहनों को महाव्रतों की दीक्षा देकर अध्यात्म के मार्ग पर आरूढ़ किया।

जयपुर के चातुर्मास में वहाँ के निवासियों को इनके प्रवचनों में समता दर्शन का अद्भुत सिद्धान्त मिला। यह एक ऐसा विचार दर्शन है, जिसे अपनाकर समाज में अनेक प्रगति के सोपान सर किये जा सकते हैं।

इन महापुरुष ने जहाँ समाज को अपने उपदेशों से प्रतिबोधित किया, वहीं उत्तम कोटि के विचार दर्शन को दर्शाता साहित्य भी प्रदान किया। 'समता दर्शन और व्यवहार', 'क्रोध समीक्षण', 'आत्म समीक्षण', 'कुंकुम के पगलिये' जैसी कृतियां सिर्फ वर्तमान पीढ़ी ही नहीं वरन् आने वाली पीढ़ियों को भी दिशा-बोध देती रहेंगी।

ऐसे जाज्वल्यमान नक्षत्र का विपरीत स्वास्थ्य की स्थिति के कारण तारीख २७.१०.९९ को देवलोक गमन हुआ। हजारों की संख्या में नर-नारी ने इस महापुरुष के अन्तिम दर्शनों हेतु उदयपुर जाकर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

ऐसे दिव्य ज्योति पुरुष को अन्तःकरण पूर्वक श्रद्धांजलि के साथ शत-शत वंदन।

-डागा सेठिया का मोहल्ला, बीकानेर

□ राजमल चोरड़िया
मंत्री, श्री समता जन कल्याण प्रन्यास

विरल आचार्य

उदयपुर के राजमहल के प्रांगण में आयोजित वह अविस्मरणीय प्रसंग आज भी मेरे मन मस्तिष्क पर अंकित है, जिसमें पूज्य श्री नानालाल जी म.सा. को युवाचार्य पद की चादर ओढ़ाकर हुक्मसंघ के अष्टमाचार्य का पदभार दिया गया। आचार्य बनने के पश्चात् आपका प्रथम ऐतिहासिक चातुर्मास रतलाम में सम्पन्न हुआ। श्री अ.भा.सा. जैन संघ की स्थापना हुई। आपने अपने दृढ संयमी जीवन, प्रेरक व मार्मिक उद्बोधन से मालवा प्रान्त में बसे बलाई जाति के बन्धुओं को उपदेश देकर जिन धर्म का मर्म समझाया तथा उन्हें कुमार्ग से सन्मार्ग पर लाकर धर्मपाल बना दिया। ऐसे हजारों व्यक्तियों का जीवन आज सुसंस्कारित, धर्ममय एवं सम्मानित बन गया है, धन्य है ऐसे आचार्य भगवन्त। आपने शुद्ध संयम एवं विचक्षण ज्ञान से ओत-प्रोत उद्बोधन देकर लगभग ३५० मुमुक्षु आत्माओं को संयम-पथ पर आरूढ़ कर उनका जीवन धन्य किया।

लगभग विगत १० वर्षों से स्वास्थ्य परिचर्या की दृष्टि से मेरा श्रीजी के काफी निकट रहने का सौभाग्य रहा। सुप्रसिद्ध चिकित्सक डा० रत्नू साहब आपके उपचार के लिए विभिन्न स्थानों पर पधारे, मेरा भी साथ में जाने का प्रसंग रहता था वे भी आपके संयमी जीवन के प्रति स्वास्थ्य के प्रतिकूल रहते हुए भी अत्यधिक सजगता को देखकर, आपके आत्मबल को देखकर विस्मृत थे। आपके जीवन के तीसरे मनोरथ के लिए पूर्ण सजग रहते हुए, यह प्रयास रखते थे कि संयमी जीवन के दौरान परिचर्या दोष कम से कम लगे। जीवन के तीसरे मनोरथ के बारे में आपने यह फरमा दिया था कि मेरा जीवन अन्तिम मनोरथ पूर्ण किये बिना नहीं रहना चाहिए। उदयपुर में श्रावकों ने आपका डायलेसिस लेने हेतु निवेदन किया, परन्तु आपने इस हेतु कतई इनकार कर दिया। इसके उपरान्त कोई चिकित्सक निदान हेतु आपके पास आते तो आप परीक्षण के लिए तैयार ही नहीं होते तथा उन्हें जीवन की नश्वरता के लिए उद्बोधन देने लगते थे। आचार्य श्री जी ने अपने जीवन को आजन्म सरल, निष्कपट समता से परिपूर्ण रखते हुए समाज में ज्ञान, दर्शन, चारित्र की जो प्रभावना की, वह विचक्षण है, स्तुत्य है। आपने अपनी परख, गहन चिन्तन से मंथन करके संघ व समाज को जो कोहिनूर हीरा आचार्य श्री रामेश के रूप में प्रदान किया, इसके लिए समाज आपका युग-युग तक उपकृत रहेगा।

आचार्य श्री को बच्चों से बहुत लगाव रहता था। तबियत ठीक नहीं थी फिर भी बच्चों से पूरी बात करते थे। इसी संदर्भ में एक घटना याद आती है- आचार्य भगवन् ब्यावर चातुर्मास हेतु बीकानेर से विहार करते हुए मेड़ता पहुंचे तब हम लोग सपरिवार जयपुर से दर्शनार्थ वहाँ पहुंचे। व्याख्यान पश्चात् आचार्य श्री ऊपर कमरे में विराज रहे थे। हमारे साथ पौत्र वरुण चोरड़िया दर्शन करने के बाद आचार्य श्री की गोद में बैठ गया और आचार्य श्री उससे इतनी आत्मीयता से बात कर रहे थे कि हम विस्मित रह गये। अन्य दर्शनार्थी भाई दर्शन करने के लिए इन्तजार कर रहे थे इसलिए हमने उसे उतारना चाहा तो आचार्य श्री ने कहा, 'आप रहने दो'। आचार्य श्री ने उसे अलग से मंगलपाठ दिया और वह भी एकटक आचार्य श्री की तरफ देखता रहा, यह अद्भुत दृश्य देखकर हम सब भाव-विभोर हो गये। ऐसे सरल थे हमारे आचार्य भगवन्।

जीवन में प्रथम बार वर्ष १९९९ के पर्युषण पर्वाधिराज की आराधना आचार्य श्री के सानिध्य में करने का सौभाग्य मिला। पर्युषण की पूर्व संध्या पर आचार्य श्री में प्रत्यक्ष चर्चा करने की इच्छा मन में संजोकर उनके दर्शनार्थ पहुंचा तो सौभाग्य से आचार्य श्री ने लगभग २० मिनट बात करके मुझे आश्चर्य चकित कर दिया। आपने धर्म, समाज एवं बच्चों के बारे में पूछा। आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं होते हुए भी जिस तरह से बात की वह अद्भुत थी। वास्तव में यह आचार्य श्री का मनोबल ही था।

आचार्य श्री का स्वास्थ्य नरम चल रहा है, ऐसा समाचार मिला और प्रातःकाल मैं एवं धर्मपत्नी निर्मला करीब ९.१५ बजे उदयपुर आचार्य श्री के पास पहुंचे। वहां पर हमारे पूज्य भाई साहब श्री गुमानमलजी चोरड़िया भी पहुंच गये थे। आचार्य श्री की तबीयत गंभीर थी, सभी ने स्वास्थ्य के बारे में विचार विमर्श करते हुए युवाचार्य श्री रामलालजी महाराज ने आचार्य श्री को प्रातः ९.४५ बजे संथारे के पच्चखाण करवाये। असाता होते हुए भी आचार्य श्री जी ने जिस शान्ति व समभाव से पच्चखाण ग्रहण किया वह दृश्य अलौकिक था। गुरु कृपा से ही मैं आचार्य श्री की जीवन संध्या पर उनके दर्शनों का प्रत्यक्ष लाभ ले रहा था। अन्तिम समय में भी मैं वहां उपस्थित था। आचार्य भगवन् की मेरे ऊपर बहुत कृपा थी, उसे व्यक्त करने की मेरी क्षमता नहीं है।

ऐसे महान् अतिशयधारी, समताधारी, जन-जन के श्रद्धानिष्ठ, सरलमना, निश्छल जीवन के धनी प्रातः स्मरणीय आचार्य श्री के चरणों में मेरा शत-शत वन्दन-अभिवन्दन।

आचार्य श्री के बताये गये मार्ग पर हम चलते हुए धर्म के प्रति पूर्ण श्रद्धा व समर्पणा रखें, यही हमारी आचार्य श्री को सच्ची श्रद्धांजली होगी।

-२, भैरव पथ, मोती डूंगरी, जयपुर

वन्दन बारंबार

सोहनलाल खींचा

नाता सबको छोड़ गए, कर गए महाप्रयाण।
जिनशासन में हो गई, सबसे मोटी हाण॥
दिव्य ज्योति धर्म की, चमकी चारों ओर।
बुझी अचानक सुनी जब, दुःख हृदय में जोर॥
दांता नगरी में अवतार लिया, मां शृंगार के लाल।
पीरवरना वंश है आपका, पिता मोड़ीलाल॥
निर उपाय सब कुछ रहे, चला न किसी का जोर।
काल झपट्टा मार गया, हुई निराशा घोर॥
संकट हरण वाला गुरु, प्राणों के आधार।
खींचा सोहन करता वन्दन, शत्-शत् बारम्बार॥

-मु.पो. लीड़ी, जिला अजमेर

□ शांता देवी मेहता
संरक्षिका, श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति

श्रद्धासुमन की दो पंखुड़ियां

सन् १९७६ में मेरी माताजी के स्वर्गवास के पश्चात् गुरु को ही हमने हमारा सच्चा पथ प्रदर्शक , हमारा शुभ चिंतक और हमारे जीवन निर्माण के निर्माता के रूप में माना था। आचार्य भगवन् ने जिस आत्मीयता के साथ हमारे जीवन को संजोया उसकी एकाएक स्मृति आते ही बरबस आंखों से आंसू निकल पड़ते हैं। यद्यपि वे आंसू उनके प्रति श्रद्धा के, भक्ति के और एक निश्छल प्रेम के प्रतीक रूप ही होते हैं।

आचार्य भगवन् के श्रमण संघ से संबंध विच्छेद के बाद और आचार्य पद ग्रहण के बाद का प्रथम चातुर्मास रतलाम में हुआ था। मेरी माताजी श्रीमती आनंद कुंवर बाई पीतलिया उस समय रतलाम संघ की अध्यक्षा थी और वे अध्यक्ष भी इस कारण बनी कि संघ का कोई भी पुरुष सदस्य उस समय संघ की बागडोर संभालने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था। श्रमण संघ के विघटन की स्थिति थी और सब लोग हिचकिचाहट महसूस कर रहे थे। यहां तक कि लोग चातुर्मास की विनती करने में भी घबड़ा रहे थे। ऐसे समय में मेरी माताजी ने पूरे साहस के साथ आगे आकर संघ की अध्यक्षता की बागडोर सम्हाली और उस विषम परिस्थिति में भी प्रथम चातुर्मास अद्वितीय ढंग से संपन्न करवाया और उसी चातुर्मास से हमारे संघ को स्थायित्व प्राप्त हुआ। तभी से आचार्य भगवन् मेरी माताजी को सिंहनी के रूप में मानते थे। उनकी हमारे ऊपर इतनी कृपा रही कि जब भी हम दर्शनार्थ जाते उनके पहले यही शब्द होते थे कि जानती हो तुम्हारी माताजी कौन थी- वे सिंहनी थी। मैं तुम दोनों को उन्हीं सेठ (सेठ वर्धमानजी पीतलिया) और सेठानीजी के रूप में देखता हूं और उन्हीं के अनुरूप तुम्हे संघ के कार्य करते रहना है, उनकी यह आशीर्वाद की छाया हमारे ऊपर अंतिम समय तक बनी रही।

अभी-अभी स्वर्गवास के केवल १२ दिन पूर्व दिनांक १३-१०-९९ को हम आचार्य श्री के दर्शनार्थ उनके कमरे में गये। वे अकेले विराज रहे थे और यद्यपि इन दिनों वे बहुत कम लोगों को पहचान पाते थे और बात भी करीब-करीब नहीं करते थे। लेकिन जैसे ही इन्होने अंदर जाकर चरण स्पर्श किया और बोला मैं रतलाम से मगनलाल मेहता। आचार्य भगवन् ने तुरंत पहचान लिया और पूछा क्या वो भी आये हैं। तुरंत मैं भी अंदर गई और जैसे ही वंदन कर पूछा गुरुदेव आपने पहचाना क्या ? उन्होंने फरमाया हां अभी इन्होने बता दिया है। फिर दूसरे से पूछा तुम्हारी तबियत कैसी है, क्योंकि गुरुदेव के स्मृति में था कि पिछली बार जब मैं गई मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं था। मैंने कहा गुरुदेव आपकी कृपा है। हम तो आपका स्वास्थ्य शीघ्र ठीक हो, यहीं मंगलकामना करते हैं। इतना अटूट स्नेह और कृपा हमारे प्रति गुरुदेव की थी, यह इस छोटे से प्रसंग से विदित हो जाता है।

इसके पूर्व भी जब भी हम गुरुदेव के दर्शनार्थ जाते थे वे यही फरमाते थे कि जानती हो तुम्हारी माताश्री कितनी बहादुर थीं, वे एक सिंहनी थीं। उनके ये शब्द हमारे लिए सदैव प्रेरणा के स्रोत रहते हैं।

अपने दूसरे चातुर्मास के पूर्व कुछ समय के लिए आचार्य श्री जी रतलाम पधारे। स्टेशन पर विराज रहे थे। श्री मेहता जी ने 'समीक्षण ध्यान' सिखाने के लिए गुरुदेव से प्रार्थना की। गुरुदेव ने सहज स्वीकार कर प्रातःकाल ६ बजे का समय दिया। श्री मेहता जी प्रतिदिन निर्धारित समय पर वहाँ पहुंच कर ध्यान साधना सीखते एवं अभ्यास

करते। साथ में श्री पी० सी० चौपड़ा एवं अन्य भाई भी ध्यान-साधना करते थे लेकिन जिस बारीकी एवं गंभीरता से इन्होंने ध्यान-साधना सीखी उतनी अन्य भाई नहीं सीख पाये। फलतः इनके जीवन में एक बड़ा परिवर्तन घटित हो गया। यह श्रद्धेय गुरुदेव की कृपा का ही फल था। ये आज भी इस ध्यान-साधना का अभ्यास करते हैं, शिविर लगाते हैं एवं आमंत्रण पर अन्य स्थानों पर ध्यान सिखाने जाते हैं।

विश्वास नहीं होता कि गुरुदेव नहीं रहे लेकिन सत्य को नकारा नहीं जा सकता। आचार्य भगवन् की कृपा और स्नेह हमारे जीवन को सदैव आलोकित करता रहेगा। इसी विश्वास के साथ ऐसे महान् आचार्य को मेरे हार्दिक श्रद्धा सुमन एवं शत्-शत् वंदन!

-रतलाम

गुरू विन जीवन सुना

कु. मनीषा सोनी

तेरी गुणगाथा लिखने की,
कहां है मुझमें शक्ति।
किन्तु मुझको तत्पर करती,
गुरुवर तेरी भक्ति।

जीवन रूपी पतवार के,
गुरुवर आप थे खिवैया।
आपके बिना डोल रही,
मेरी सूनी जीवन नैय्या।

भविष्य हमारा उजड़ गया,
जो आप हमको छोड़ गये।
क्या थी अविनय अशातना,
जो हमसे नाता छोड़ गये।

आपके बिन मेरा जीवन,
जैसे दीपक बिन बाती।
गुरुवर हर घड़ी हर पल,
तेरी याद मुझको आती।

मार्गदर्शन मिले मुझको,
यही थी मेरी मंगल कामना।
गुरुवर हाथ छुड़ाया आपने,
अधूरी रह गई दर्शन भावना।

मात्र अब इच्छा है यह मेरी,
ध्यान मैं तेरा सदा धरूं।
तेरे आदर्शों पर चलकर,
मै तेरी परछाई बनूं।

-राजनांदगांव

□ श्रीमती कांता बोरा
अध्यक्ष, श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति

महायशस्वी समता विभूति का अनूठा कार्य

आचार्य पदारोहण होने के पश्चात् श्रमण संघीय चुनौती पूर्ण संघर्ष की स्थिति में जब वे महापुरुष इस पद की बागडोर संभाल रहे थे, तब वे क्षण बड़े नाजुक थे।

एक तरफ श्रमण संगठन के लिए कई स्तरों पर चुनौतियाँ थीं, ऐसी स्थिति में घटनाओं के भंवर में से सफलता पूर्वक बाहर निकलना तो दूसरी तरफ स्व. श्रीमद् जवाहराचार्य एवं स्व. श्रीमद् गणेशाचार्य जैसे अति प्रभावशाली महापुरुषों की ऐसी कई योजनाओं को मूर्त रूप देने के लिए कार्य दिशा एवं क्रियान्वन दिशा को सुनिश्चित करना कि जिससे समाज के विभिन्न वर्गों के सुधार और कल्याण के कार्यक्रमों का समावेश होता है।

हमारे चरितनायक आचार्य श्री नानेश विचार, उच्चार एवं आचार के ऐसे समस्थितिक सामर्थ्यवान साधक थे कि जिन्होंने युग परिवर्तन की ओट में अपनी साधना की कठोर नियमवाली से पराभूत होकर कभी भी वैज्ञानिक सुविधाओं से समझौता नहीं किया।

आपने अपने जीवन में अनुभूति बोध के आधार पर देख लिया था कि चरम तीर्थंकर प्रभु महावीर द्वारा दी गई साधना-व्यवस्था आध्यात्मिक उन्नयन के लिए सर्वथा निर्दोष एवं चुस्त-दुरस्त है। शताब्दियों ने उसे सुपरिचित घोषित कर दिया है। आज के सुविधावादी साधकों की मनःस्थिति देखकर आपके मानस पर अनेक प्रश्न उभरे। क्या ये सुविधाएं त्याग, तप और साधना के विकास में सहयोग करेंगी। क्या इनके अभाव में जैन साधकों की आत्म साक्षात्कार-साधना में कोई न्यूनता आई ? क्या भगवान के समय में ये सुविधाएं उपलब्ध नहीं थी ? यदि नहीं थी और होतीं तो क्या वे संन्यास में इसके उपयोग का विधान रखते। भला वे तो सर्वज्ञ थे, क्या उन्हें ज्ञात नहीं था कि आनेवाला युग सुविधावादी युग होगा। अतः मैं अपने साधकों के लिए इनकी उपयोगिता का विधान कर दूं। प्रत्युत आगमों में स्थान-स्थान पर प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से परिग्रह का अस्वीकार ही है।

आपने यह स्पष्ट देख लिया था कि सुविधा भोग का आग्रह आगे चलकर शिथिलाचार को प्रोत्साहित करेगा। लोकप्रियता और पूजा-लिप्सा के विचार आत्मज्ञान के प्रति अनास्था के ही परिचायक हो सकते हैं। आपने श्रमण परम्परा के इतिहास को देखा और अनुभव किया कि केन्द्र में आत्मदृष्टि साधना-निष्ठ गुरु के नहीं होने से ही संघ में शिथिलाचार और विघटन आता रहा है। उसका लौकिक मूल्य ही संभव है, आध्यात्मिक नहीं। इसी अनुभूति के आधार पर आपने श्रमण-श्रमणियों एवं श्रावक-श्राविकाओं को एक आध्यात्मिक गुरु का नेतृत्व प्रदान करते हुए उन्हें सुपरिचित मूल्यों के सान्निध्य में ही चलने का संदेश दिया था।

हमारे दिवंगत शासनेश (परम पूज्य आचार्य श्री नानेश) ने मूल सिद्धान्तों और मूल आदर्शों को आत्मसात् करके संघ शासन को जो उज्ज्वलता प्रदान की और अपने असाधारण कौशल से जो अविस्मरणीय कीर्तिमान संघ में उपलब्ध कराये हैं, वह संघ इतिहास के पन्नों में स्वर्ण मंडित अक्षरों में सदा अंकित रहेंगे।

प्रभु महावीर की करुणा का अमर संदेश देने वाले इस महापुरुष के आचार्यत्व काल में एक साथ दीक्षित होने वाले २५ मुमुक्षुओं की संख्या का रेकार्ड, महातपोज्योति साध्वीजी [illegible] का १०१ दिन का अभूतपूर्व [illegible] एवं महाभाग्यवान महासती श्री [illegible] दिन [illegible] पदना तथा कुल मिलाकर [illegible] होने वाले मुमुक्षुओं की ३५० की संख्या [illegible] के [illegible] आश्चर्यजनक हैं।

हमारे चरितनायकजी (आचार्य नानेश) जैन जैनेतर तत्त्वज्ञान के निष्णात अध्येता ही नहीं, व्याख्याता और यथायोग्य अनुसर्ता भी थे, उनका समग्र जीवन तत्त्वज्ञान से निष्पन्न साधनाचार से परिपोषित था। उन्होंने ज्ञानार्जन के लिए कठिन संघर्ष किया और भविष्य के लिये ज्ञान-साधना की सशक्त परम्परा स्थापित की और जैन वाङ्मय के विविध विषयों को अपनी मौलिक प्रतिभा एवं सूक्ष्म तार्किक प्रज्ञा के द्वारा अभिव्यक्ति दी जिसमें उनके स्वरचित साहित्य की संख्या ७० के लगभग है और आचार्य श्री से संबंधित साहित्य की संख्या करीब १५ है।

इसमें कुछ इस प्रकार से हैं, जैसे-कर्मप्रकृति, समतादर्शन और व्यवहार, समीक्षण धारा, जिणधम्मो, समता क्रांति का आह्वान, समीक्षण ध्यान एक मनोविज्ञान, कषाय समीक्षण, उभरते प्रश्न समाधान के आयाम, उंडाण ना हस्ताक्षर, कुंकुम के पगलिए, ऐसे जिएं, जैन मुणि आणि धर्म, प्रेरणा की दिव्य रेखाएं, नव-निधान, पावस-प्रवचन, प्रवचन पीयूष, लक्ष्य वेध, मंगलवाणी, समीक्षण ध्यान-एक प्रयोग विधि, समता निर्झर, आध्यात्मिक आलोक, आध्यात्मिक वैभव आदि।

आचार्य प्रवर ने जहां अपने कथा साहित्य में जैन ग्रन्थों की तात्त्विक एवं विकासकारी बातों को समझने के लिए सरस एवं प्रेरणाशील कथाओं का उल्लेख करके जैन धर्म का कथा साहित्य प्रकाश में लाकर जो आत्मा-परमात्मा, पुण्य-पाप, बन्ध-मोक्ष आदि गूढ़ तत्त्वों के ज्ञान को सुन्दरता से चित्रित करके सर्वसाधारण के लिए अत्युपयोगी बनाकर साहित्यिक क्षेत्र को अद्भुत योगदान दिया है, वहीं दूसरी ओर जैन दर्शन के मूलभूत सिद्धान्तों को सुगमतापूर्वक सर्वसाधारण को समझाने के लिए और जैन तत्त्वज्ञान के संदर्भ में अपने अनुभूतिगत विचारों को प्रांजल भाषा एवं सुगम शैली में जिणधम्मो में प्रस्तुत करके, आगमों के विविध विषयों को समाहित करके, गागर में सागर भर दिया।

डा. सागरमल जैन, पूर्व निर्देशक, वाराणसी पार्श्वनाथ विद्यापीठ ने इस ग्रन्थ के प्रति अभिव्यक्ति देते हुए कहा कि जिणधम्मो जिन धर्म से संबंधित मूलतत्त्व का संकलन करके पू. आचार्य श्री नानेश ने (जैन धर्म) उसे वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में विलक्षण अभिव्यक्ति प्रदान की है। यह शोध जिनोपदिष्ट धर्म के विविध पक्षों को अपने में समाहित कर जिन धर्म को सम्यक् रूप से प्रस्तुत करती है और इसके अतिरिक्त समीक्षण ध्यान के माध्यम से यह बोध कराया है कि किस प्रकार अर्जित वृत्तियों की अंगीकृति आत्मानुभूति के मूल स्वभाव तक नहीं पहुंचने देती है। किस प्रकार काषायिक वृत्तियां उसके जीवन की विकासशील चेतना को लुप्त कर देती है और अंतर चेतना के दबने से आत्मा अपने स्वभाव को कैसे भूलती है। आचार्य देव ने मन के भीतर रही वस्तु को पहिचानने की अद्भुत कला को आगमिक परिप्रेक्ष्य से विवेचित किया है।

तीर्थंकर के अभाव में चतुर्विध संघ का संचालन व नेतृत्व एकमात्र आचार्य ही कर सकते हैं। धार्मिक मर्यादाओं में योग्य परिवर्तन का अधिकार भी शास्त्रकारों ने उनके हाथों में दिया है। इन आचार्यों के बहुमत से स्वीकृत नियमावली जीत व्यवहार समझी गई है। शास्त्र का सत्यस्वरूप दिखाने वाले धर्माचार्य ही हैं। शास्त्र में योग्यता सूचक धर्माचार्य के ३६ गुण बताएं हैं जो प्राय: प्रसिद्ध हैं। दशाश्रुतस्कंध की चतुर्थ दशा में उनका संक्षेप ८ दशाओं में मिलता है जैसे (१) आचार विशुद्धि (२) शास्त्रों का विशिष्ट और तलस्पर्शी वाचन (३) स्थिर संहनन और पूर्णेन्द्रियता (४) वचन की मधुरता तथा आदेयता (५) अस्खलित वाचन व मूल अर्थ की निर्वाहकता (६) ग्रहण एवं धारणा मति की विशिष्टता (७) शास्त्रार्थ में द्रव्य क्षेत्र शक्ति की अनुकूलता से प्रयोग करना (८) समय के अनुसार साधुओं के संयम निर्वाहार्थ साधन संग्रह की कुशलता। इन आठ विशेषताओं के साथ निर्दोष चारित्र धर्म का पालन करना एवं आश्रित संघ को ज्ञान क्रिया में प्रोत्साहित करते रहना यह आचार्य की खास विशेषता है। शास्त्र में कहा है कि -

जह दीवो दीवसयं, पइप्पई जसो दीवो।
दीवसमा आयरिया, दिप्पंति परं च दीवंति॥

जैसे एक दीपक सैंकड़ों दीपकों को जलाता है और खुद भी प्रकाशित रहता है, ऐसे दीप के समान आचार्य स्वयं ज्ञान आदि गुणों से दीपते और उपदेश दान

आदि से दूसरों को भी दीपाते हैं। इस प्रकार आचार्य पद का महत्त्वपूर्ण स्थान है। क्योंकि उनसे ही प्रभु के शासन संघ की परम्परा प्रवर्तित और प्रवर्धित होती है। धर्माचार्य ही चतुर्विध संघ को गति-प्रगति प्रदान करते हैं। जैन संस्कृति ने धर्माचार्य को तीर्थंकर के समान निरूपित करते हुए धर्माचार्य की आराधना भगवान अरिहंत की आराधना कहा है।

नमस्कार, महामंत्र के पांच पदों में तृतीय पद इसी बात को ध्वनित करता है कि अरिहन्त और सिद्ध हमारे आदर्श उपास्य हैं और उपाध्याय एवं मुनि उपासनारत साधक आत्माएं हैं, जबकि आचार्य इन दोनों कड़ियों को जोड़नेवाले सूत्रधार हैं। इसलिये धर्माचार्य को तुला मध्य स्थान दिया गया है। अर्थात् तराजू के दोनों पलड़ों के बीच चोटियों का स्थान आचार्य को दिया गया है। इ
महान पुरुषों के जीवन से जो कुछ मिलता है, उसे दी
की भांति प्रकाशमान रखने एवं प्रकाश में जीने से।
जीवन की सार्थकता है।

मेरू के समान अडिग, सागर के समान गंभीर ए
सिंह के समान निर्भीक ऐसे हमारे महान पूज्य गुरुदे
दिवंगत आचार्य श्री नानेश ने अपने ही समान ए
अनमोल कोहिनूर रत्न के रूप में पूज्य आचार्य श्री एवं
को उत्तराधिकार प्रदान करके संघ-समाज, देश और ध
संस्कृति पर जो उपकार किया है, उस कृतज्ञता को अल्प
शब्दों में व्यक्त करने की हमारी क्षमता नहीं है।

-२०/७, यशवंत निवास रोड, इन्दौर (म.प्र.

उदयपुर में गूंजी जय जयकार है

छन्दराज "पारदर्शी"

संतों ने संसार सारा, सत्य से सजा संवारा, ज्ञान का ही दान दिया, विद्वेष मिटाए हैं।
चित्तौड़ जिले की शान, 'दांता' गांव खास जान,यही लिया जन्म गुरु, नानेश कहाए हैं।
पिता मोटीलाल प्यारे, माताजी शृंगार बाई, पोखरना गौत्र धार, नाना गुरु आए है।
साहस शक्ति के धनी, ज्ञानी-ध्यानी नाना गुणी, 'पारदर्शी' सही राह, जग को बताए हैं।

आठ वर्ष की आयु में, पिता साथ छोड़ चले, व्यापार संभाला पर, मन नहीं भाए है।
गुरू जवाहरलाल, मिले भोपाल सागर, दर्शन-व्याख्यान सुन, वैराग्य सुहाए है।
पुण्य कर्म उदय से गये जब आप कोटा, आचार्य गणेशीलाल, ज्ञान समझाए हैं।
उन्नीसी छियाणु साल, पौष शुक्ल द्वितीया को, 'पारदर्शी' कपासन, दीक्षा गुरु पाए है।

ज्ञान-ध्यान, तप किया, तन को तपाय लिया, समता में सार जानो, गुरु समझाया है।
दो हजार उन्नीस में, आचार्य पदवी पाए, जैन शासन की शान, मान को बढ़ाया है।
अछूतों को अपनाया, सही पंथ बतलाया, धर्मपाल नाम दिया, व्यसन छुड़ाया है।
गुरूदेव उपकारी, समता हृदय धारी, 'पारदर्शी' सच्चा ज्ञान, हमें समझाया है।

राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र जैसे प्रान्त, मध्यप्रदेश में दर्श, पाए नरनारी है।
गांव-गांव, घर-घर, पैदल ही घुमकर, हटा अज्ञान तिमिर, बने उपकारी हैं।
समता विभूति संत, ज्ञान-ज्योति, क्षमावन्त, उपलब्धियां अनन्त, नाना गुणधारी है।
'पारदर्शी' गुरूवर, समीक्षण ध्यान धर, दूर किए आडम्बर, बने लोकोद्धारी है।
आचार्य श्री नानालाल, चारित्र की दे मिसाल, मृदुल स्वभावी गुरु, मानता संसार है।
संयम पथ-पथिक, साहित्य-सृष्टा अधिक, रत्नत्रयी के पालक, ज्ञान के भंडार हैं।
सत्ताईस अक्टूबर, सन् उन्नीसी निन्याणु, संथारे में देह त्याग, पाया मोक्ष द्वार है।
'पारदर्शी' का वन्दन स्वीकारें श्रद्धा-सुमन, उदयपुर में गूंजी, जय-जयकार है।

-२६१, ताम्बावती मार्ग, आयड़, उदयपुर-३१३ ००१

❑ गौतम पारख
अध्यक्ष श्री अ. भा. सा. जैन समता युवा संघ

संस्मरण एवं सुखद अनुभूति

१. आचार्य श्री के साथ विहार एवं स्वयं का केशलोचन :

आचार्य भगवन् का विहार राजनांदगांव से खैरागढ़ की ओर होना था, उस समय मेरी आयु मात्र ९ या १० वर्ष की ही थी, मैं भी वैरागी की तरह आचार्य श्री के साथ विहार कर गया। प्रथम पड़ाव राजनांदगांव से ५ कि.मी. दूर ग्राम बोरी में हुआ। उस समय तक मैंने स्वयं अपने ही हाथों से अपने सिर का लगभग आधे से अधिक भाग का केश लोचन कर लिया था। उस दिन सांयकाल मेरे पिताश्री व माता श्री मुझे लेने वहां आ गये। मैं उनके साथ जाने से मना करने लगा। फिर कुछ देर बाद मेरे दादा श्री आये, तब आचार्य भगवन के ऐसा कहने से कि- तू अभी छोटा है, फिर आ जाना, मैं अपने घर राजनांदगांव वापस आ गया। दूसरे दिन मेरे दादाश्री मुझे ग्राम बुन्देली ले गये और वहां नाई को बुलाकर मेरे सिर का मुण्डन करा दिया और ऐसा कहने लगे अब क्या लोचन कर पायेगा।

२. सन्तों की वेशभूषा में :

आचार्य श्री के राजनांदगांव वर्षावास के समय जब मैं बहुत छोटा था, कुछ वैरागी बन्धुओं ने मुझे सादा वेश पहनाकर एवं ओघा देकर कहा जाओ, सभा में श्रद्धेय आचार्य भगवन् को वन्दन करके आओ। उस समय सभा में स्वयं आचार्य भगवन् प्रवचन फरमा रहे थे। बाल्यावस्था के कारण मैं अबोध तो था ही, मैंने बाल सुलभ प्रवृत्ति से ऊपर की सीढ़ी से, तेज गति से नीचे आया, आचार्य श्री का वन्दन किया और तेजी से वापस ऊपर चला गया। प्रवचन सभा में उपस्थित लोग मुझ बालक को सन्त समझकर खड़े होने लगे। बचपन की इस घटना से मेरे जीवन की दिशा ही बदल गई।

३. बीकानेर वर्षावास :

प्रार्थना के पश्चात् प्रतिदिन गुरुदेव समता दर्शन एवं व्यवहार की व्याख्या किया करते थे। मैं भी उस व्याख्या में २-३ दिन से शामिल हो रहा था। एक दिन डॉक्टर खून की जांच करने प्रात. आ गये थे। गुरुदेव व्याख्या करते-करते बीच में उठे, अन्दर गये, खून दिया व वापस हाथ में रुई दबाये तुरन्त बाहर आ गये। मैंने कहा भगवन कुछ देर के लिये व्याख्या बन्द कर दें, कल कर देंवे। उन्होंने नहीं माना, जिस हाथ से खून निकाला गया था, रुई लगाकर हाथ मोड़े-मोड़े ही व्याख्या करते चले गये। मैं देखकर अवाक् रह गया।

४. वाक्पटुता नही संयम की निर्मल आराधना महत्वपूर्ण :

एक चर्चा में गुरुदेव सहज ही बोल उठे कि संयमी जीवन में साध्वाचार का पालन ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। साधक की वाक्पटुता, वक्तव्यकला से नहीं बल्कि साध्वाचार के पालन से होती है। साधक यदि पढने भी जाता है, पढने का कितना अधिक विवेक रखता है, यह ज्यादा महत्वपूर्ण है न कि वाक्पटुता।

५. महिला सुरक्षा के प्रति सजग :

एक बार देशनोक से आचार्य श्री का विहार ब्यावर की दिशा में हुआ। मार्ग की दूरी को कम समय में तय करने हेतु श्रावकों ने रेतीले मार्ग से विहार करना उचित समझा किन्तु मैं सीधे मार्ग से आगे गंतव्य स्थान पर पहुंच

गया। मेरी धर्मपत्नी व भतीजी गुरुदेव के साथ पीछे-पीछे आ रही थी। रेगिस्तानी क्षेत्र होने के कारण मार्ग विकट। रास्ता बिल्कुल वीरान व सुनसान था। गुरुदेव जैसे ही गंतव्य स्थान पर पहुंचे, तुरन्त मुझे बुलवाकर कहा- इस प्रकार के रास्तों से महिलाओं को कभी नहीं भेजना चाहिए। महिलाओं की सुरक्षा के प्रति उनकी सजगता का यह संस्मरण आज भी मेरा मार्ग प्रशस्त करती है।

६. <u>विद्रोह करने वाले भी अपने भाई हैं</u> :

घटना बीकानेर की है। कतिपय निष्कासित संतों की वार्ता पूज्य गुरुदेव से चल रही थी। गुरुदेव के समक्ष निष्कासित संतों ने १४ शर्तें रखी। गुरुदेव ने मर्यादाओं के भीतर संघ की एकता की दृष्टि से सभी १४ शर्तें सहर्ष स्वीकार कर लीं। गुरुदेव द्वारा सभी शर्तें मान लेने के बाद, विगत गलतियों के प्रति प्रायश्चित करने की कुछ बात को लेकर निष्कासित संत अति उत्तेजित हो गये। जबकि जैन दर्शन के अनुसार प्रायश्चित कर लेना सन्त जीवन की पवित्रता का प्रथम चरण है। किन्तु निष्कासित संत आक्रोश पूर्वक उपस्थित श्रावकों को हटाते हुए कमरे से तुरन्त निकल पड़े। गुरुदेव उन्हें आवाज देते रहे पर वे लौटकर नहीं आए। वहां लगभग १५० से २०० लोग एकत्रित थे, उसमें मैं भी था। इस घटना व दृश्य को देखकर हमारे नेत्रों से अविरल अश्रुधारा बहने लगी। हिम्मत जुटाकर हम सब उस कमरे में गए, जहां गुरुदेव विराजित थे। हमने गुरुदेव को विश्वास दिलाया कि हम सभी आपके साथ हैं व सदैव आपश्री के आदेशों का पालन करने हेतु तत्पर रहेंगे। अन्त में सभी जनों की बातें सुनने के बाद गुरुदेव ने एक पंक्ति में सहज ही उत्तर दिया- जाने वाले भी सभी मेरे भाई हैं, गुरुदेव की समता, सहनशीलता व सद्भावना को देखकर हम स्तब्ध रह गए। ऐसा अनूठा उदाहरण अन्यत्र दुर्लभ है।

७. <u>स्वभाव में सरलता</u> :

प्रवचनों में आपका यह उद्बोधन कि- मैं तो नाना हूं, छोटा हूं, गांवड़े का आदमी हूं, मैंने तो सांसारिक शिक्षा भी प्राप्त नहीं की है। यह बात बहुत सहजता से वे कहते थे। आगे वे श्रावकों से कहते- आप तो अम्मा, पिया हैं, महान् हैं, जब भी आपको लगे निसंकोच भाव से मुझे संशोधन देते रहा करें। आचार्य भगवन् की उक्त वाणी सहज ही श्रावकों को नतमस्तक कर देती है।

८. <u>नोखा की सुखद अनुभूति</u> :

शासन व संघ के माध्यम से कुछ लेखन करने का सौभाग्य मुझे भी मिला। एक बार नोखा चातुर्मास के समय मैं सुबह से गुरुदेव के दर्शन व प्रवचन का लाभ किसी कारणवश न ले सका। प्रवचन सभा में मुझे उपस्थित न देखकर गुरुदेव ने एक श्रावक से पूछा- गौतम दिखाई नहीं दे रहा है, तुमने उसे देखा क्या ? जैसे ही गुरुदेव द्वारा मुझे पूछे जाने की सूचना मिली, मैं श्री चरणों में तुरन्त उपस्थित हुआ। यह कहकर गुरुदेव ने मुस्करा दिया कि- सुबह से तुम्हे देखा नहीं इसलिए पूछ लिया। अनुपम स्नेह की उस झलक को मैं जीवन भर नहीं भूल सकता।

९. <u>सत्य के प्रति</u> :

आचार्य भगवन् रतलाम अलकापुरी से विहार कर आगे बढ़ रहे थे। मैं भी उस गांव में पहुंच गया जहां आचार्य श्री विराजे थे। गांव का नाम मेरे स्मृति पटल पर नहीं है, वहां किसी एक ग्रामीण भाई के घर के सम्मुख चबुतरे पर सन्त व्याख्यान दे रहे थे। कुछ देर बाद आचार्य भगवन् स्वयं पधारे और सीधे उस ग्रामीण के घर प्रवेश कर ग्रामीण से पूछा कि- बाहर चबुतरे पर के जिस पाटे पर बैठकर सन्तजन प्रवचन दे रहे हैं, वह पाटा सदैव वहीं रहता है या प्रवचन हेतु वहां पहुंचाया गया है। ग्रामीण भाई ने स्वाभाविक रूप से कह दिया कि हमने पाटा पहुंचाया है। फिर गुरुदेव बाहर आये और सन्तों से पूछा- बिना गवेषणा किये, आपने पाटे का उपयोग कैसे कर लिया। फिर गुरुदेव ने लगभग उस एक ही विषय पर प्रवचन दिया कि सदा सत्य बोलना चाहिए। असत्य बोलकर मोहवश सन्तों को दोष नहीं लगाना चाहिए। सत्य ही जीवन की श्रेष्ठतम निधि है।

१०. पूज्य गुरुदेव का बच्चों के प्रति अनुराग :

आचार्य श्री का बच्चों के प्रति बड़ा स्नेह रहा। वे माताओं से सदैव कहते थे कि छोटे बच्चों को कभी नहीं मारना चाहिए, बच्चों को युक्ति पूर्वक समझाना चाहिए। बाल्यावस्था ही ऐसी उम्र है जब ये मन के सच्चे व स्वाभाविक होते हैं। उन्हें प्रारंभ से अच्छे संस्कार दीजिए। वे ही भारत के भावी भाग्य विधाता हैं। गुरुदेव सामूहिक प्रत्याख्यान के समय भी नियम दिला देते कि- आज बच्चों को नहीं मारना है।

पूज्य गुरुदेव के साथ मेरे उक्त संस्मरण जीवन की अमूल्य धरोहर हैं जो जीवन में सदैव मुझे प्रेरणा व उत्साह प्रदान करते हैं। आचार्य श्री के चरणों में सेवा का जो भी अवसर मिला, मैंने उसे पुण्य अर्जन माना व उसे अपने जीवन के स्मृति पटल में संजोकर रखा। उन्होंने इतना अधिक स्नेह, प्रेम व प्रोत्साहन मुझे दिया जिसे मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता। स्व. आचार्य श्री का आशीर्वाद सदैव मेरा पथ प्रशस्त करता है।

-राजनांदगांव

ओ जिन शासन के दिव्य सितारे

भैरूलाल जैन

ओ जिन शासन के दिव्य सितारे, भव्य जीवों के तारण हारे,
कहां छोड़ चले हमें तुम, जन-जन सब यही पुकारे ॥
ओ हुक्म संघ के अष्टम पटधीश तेरा क्या गुण गान करूं,
गुण असीम शब्द ससीम कैसे तेरा बखान करूं ॥१॥
कई भव्य जनों को तूने तारे, कइयों को राह बतायें,
हम सब की नैया के तुम थे, एक मात्र सहारे ॥२॥
जहां कहीं भी हो तुम गुरुवर तुम हमें संभालते रहना,
और जहां कहीं भी विराजो दर्शन जरूर देते रहना ॥३॥
तेरे बिन सूनी दुनियां, मुझसे सब कुछ छीना है ।
किससे कहूं यह मुझसे नाता गुरुवर को ही छीना है ॥४॥
चांद चमन की यही भावना सदा ध्यान मे है रखना,
जैसा नाम वैसा गुण का काम हमें है सदा करना ॥५॥

- अलीगढ़ (रामपुरा)

□ कालूराम नाहर
पूर्व मंत्री, श्री अ. भा. सा. जैन संघ

समता की प्रतिमूर्ति

आन-बान-शान के, शौर्य के प्रतीक मेवाड़ प्रान्त के एक छोटे से ग्राम दांता में जन्मे एक बालक ने महापुरुष के रूप में इतनी ख्याति प्राप्त कर ली, यह एक अनोखा अजूबा है।

जेठ सुदी द्वितीया को एक चमकता सूर्य छोटे से बालक के रूप में वसुन्धरा पर माँ शृंगार की कुक्षि से अवतरित होकर नाना से नानेश की पूर्णता प्राप्त कर सारे जैन समाज को नई रोशनी देकर, साधुमार्गी संघ को ऊंचाइयों के शिखर पर पहुंचा कर स्वर्गगमन कर गया।

यथानाम तथा गुण :

आपका जन्म नाम गोवर्धन था। उस नाम को चरितार्थ करते हुए जिस प्रकार कृष्ण वासुदेव ने अपनी एक अंगुली से गोवर्धन पर्वत को उठाकर ग्वालों (गायों) की रक्षा की, उसी प्रकार इस महापुरुष ने भी अपने शासनकाल में हुक्म संघ की रक्षा कर जो जाहोजलाली की, वह अनुकरणीय है। आपने आचार्य काल के प्रथम वर्षावास में ही समाज को बता दिया कि अपनी अन्तर आत्मा की आवाज पर जो जंचा, उसे करने में वे कभी पीछे नहीं हटे, चाहे सामने दिशाशूल हो या अन्य कोई बाधाएं। जब उदयपुर से विहार करने लगे तो बड़े-बड़े श्रावकों ने कहा इधर दिशाशूल है, रतलाम की तरफ नहीं बढ़ें। परंतु निश्चय के धनी ने इसकी परवाह न करके जो निश्चय किया, उस पर अडिग रहे। उसका प्रतिफल इतना भव्य हुआ कि मालव प्रदेश में एक क्रान्ति का उद्घोष हुआ जो धर्मपाल के रूप में समाज के समक्ष है। जिस जाति के हाथ खून से सने रहते थे आज उनके हाथ में माला और पुंजनी है, मुंह पर मुंहपत्ती है।

समता की साकार मूर्ति :

आप अपने साधु जीवन में किसी से फालतु बोलते नहीं थे, सिर्फ अध्ययन-अध्यापन तथा जीवन साधना में तत्पर रहते, दीवार की तरफ मुंह कर ध्यान में मस्त रहते थे। जब-जब भी आचार्य श्री गणेशाचार्य को श्रावक वर्ग कहते कि भगवन् आप अपने उत्तराधिकारी की घोषणा करने की कृपा करें, तब-तब श्री गणेशाचार्य कहते एक ऐसा तराशा हुआ हीरा दूंगा जो अष्टम पाट पर पूर्ण निखार लायेगा और जब आपके नाम की घोषणा हुई तो लोग कहने लगे यह गूंगे महाराज क्या निहाल करेंगे, किसी से बोलते तक नहीं, परन्तु जब आपने आचार्य पद का भार ग्रहण किया और जो ज्योति समाज को दी वह आज सर्व-व्याप्त है। जैसी कि आचार्य श्री श्रीलाल जी म.सा. ने कहा कि अष्टम पाट खूब चमकेगा [illegible] नजर आ[illegible]

१. ३५० से ऊपर मुमुक्षु आत्माओं को विरक्ति मार्ग पर लगाना।

२. एक साथ पच्चीस दीक्षाएं प्रदान करना।

३. हुक्म संघ में आचार्य पद पर सबसे लम्बी अवधि प्राप्त करना।

आपके द्वारा जो युवाचार्यश्री का चयन हुआ वह आपकी दूरदर्शिता का ही स्पष्ट प्रमाण है, जिस प्रकार आपके गुरु गणेशाचार्य ने चयन कर समाज को अचम्भित किया, उसी प्रकार आपका चयन भी एक अनुपम है। संयम के सजग प्रहरी आगम के मसीहा के रूप में मिले हैं।

-ब्यावर

दृष्टि सिद्धांत रूप थी दिव्य

कमल चंद लूनिया

किधर तुम लुप्त हुए अखिलेश,
दिव्यतम देकर के गणवेश।
कृपाधान दिये हो दिव्य दिशा,
आज क्यों छा गई क्रूर निशा ?

कहां पर खोजें तुझे कृपेश,
रही न जगह कहीं पर शेष।
कहां किस ठौर गये मतिवन्त,
लौट फिर आना धुनिमय संत॥

सरस समता में करें प्रवेश,
रहे न कहीं दुष्ट अभिनिवेश।
समीक्षण धारा का समगान,
नित हम गायें, दे वरदान॥

विनय का लेकर के आकार,
किये तुम साध्य पूर्ण साकार।
अगम निगम पर दिव्य अवधान,
सतत् किया है अनुसंधान॥

लक्ष्य से गये न तुम हो लौट,
कोई दे कितनी गहरी चोट।
दृष्टि सिद्धांत रूप थी दिव्य,
सदा अधिगम का था मन्तव्य॥

सफल किया गुणमय अवतार,
एकय दृष्टि की ले पतवार।
संघ को दिशा मिली अनुकूल,
भला क्यों भविक न पावे कूल॥

- पुंजानी डागों की पिरोल, बीकानेर-३३४००५

□ कालूराम नाहर
पूर्व मंत्री, श्री अ. भा. सा. जैन संघ

समता की प्रतिमूर्ति

आन-बान-शान के, शौर्य के प्रतीक मेवाड़ प्रान्त के एक छोटे से ग्राम दांता में जन्मे एक बालक ने महापुरुष के रूप में इतनी ख्याति प्राप्त कर ली, यह एक अनोखा अजूबा है।

जेठ सुदी द्वितीया को एक चमकता सूर्य छोटे से बालक के रूप में वसुन्धरा पर माँ शृंगार की कुक्षि से अवतरित होकर नाना से नानेश की पूर्णता प्राप्त कर सारे जैन समाज को नई रोशनी देकर, साधुमार्गी संघ को ऊंचाइयों के शिखर पर पहुंचा कर स्वर्गगमन कर गया।

<u>यथानाम तथा गुण</u> :

आपका जन्म नाम गोवर्धन था। उस नाम को चरितार्थ करते हुए जिस प्रकार कृष्ण वासुदेव ने अपनी एक अंगुली से गोवर्धन पर्वत को उठाकर ग्वालों (गायों) की रक्षा की, उसी प्रकार इस महापुरुष ने भी अपने शासनकाल में हुक्म संघ की रक्षा कर जो जाहोजलाली की, वह अनुकरणीय है। आपने आचार्य काल के प्रथम वर्षावास में ही समाज को बता दिया कि अपनी अन्तर आत्मा की आवाज पर जो जंचा, उसे करने में वे कभी पीछे नहीं हटे, चाहे सामने दिशाशूल हो या अन्य कोई बाधाएं। जब उदयपुर से विहार करने लगे तो बड़े-बड़े श्रावकों ने कहा इधर दिशाशूल है, रतलाम की तरफ नहीं बढ़ें। परंतु निश्चय के धनी ने इसकी परवाह न करके जो निश्चय किया, उस पर अड़िग रहे। उसका प्रतिफल इतना भव्य हुआ कि मालव प्रदेश में एक क्रान्ति का उद्‌घोष हुआ जो धर्मपाल के रूप में समाज के समक्ष है। जिस जाति के हाथ खून से सने रहते थे आज उनके हाथ में माला और पुंजनी है, मुंह पर मुंहपत्ती है।

<u>समता की साकार मूर्ति</u> :

आप अपने साधु जीवन में किसी से फालतु बोलते नहीं थे, सिर्फ अध्ययन-अध्यापन तथा जीवन साधना में तत्पर रहते, दीवार की तरफ मुंह कर ध्यान में मस्त रहते थे। जब-जब भी आचार्य श्री गणेशाचार्य को श्रावक वर्ग कहते कि भगवन् आप अपने उत्तराधिकारी की घोषणा करने की कृपा करें, तब-तब श्री गणेशाचार्य कहते एक ऐसा तराशा हुआ हीरा दूंगा जो अष्टम पाठ पर पूर्ण निखार लायेगा और जब आपके नाम की घोषणा हुई तो लोग कहने लगे यह गूंगे महाराज क्या निहाल करेंगे, किसी से बोलते तक नहीं, परन्तु जब आपने आचार्य पद का भार ग्रहण किया और जो ज्योति समाज को दी वह आज सर्व-व्याप्त है। जैसी कि आंचार्य श्री श्रीलाल जी म.सा. ने कहा कि अष्टम पाठ खूब चमकेगा, वह सार्थक नजर आ रहा था।

आपने समाज को समता दर्शन और ध्यान की देन दी है वह सिर्फ अन्यों के लिए नहीं परंतु अपने जीवन पर पूर्ण रूप से चरितार्थ की हैं। जो पदवियां सिर्फ पद-लोलुपता के लिए लगाते हैं उन पर आपका विश्वास नहीं था। जैसी पदवी वैसा ही आचरण आपका ध्येय था।

आपने अपने आचार्यकाल मे अनेक कीर्तिमान स्थापित किये, उसके कुछ उदाहरण हैं :-

१. ३५० से ऊपर मुमुक्षु आत्माओं को विरक्ति मार्ग पर लगाना।

२. एक साथ पच्चीस दीक्षाएं प्रदान करना।

३. हुक्म संघ में आचार्य पद पर सबसे लम्बी अवधि प्राप्त करना।

आपके द्वारा जो युवाचार्यश्री का चयन हुआ वह आपकी दूरदर्शिता का ही स्पष्ट प्रमाण है, जिस प्रकार आपके गुरु गणेशाचार्य ने चयन कर समाज को अचम्भित किया, उसी प्रकार आपका चयन भी एक अनुपम है। संयम के सजग प्रहरी आगम के मसीहा के रूप में मिले हैं।

-ब्यावर

दृष्टि सिद्धांत रूप थी दिव्य

कमल चंद लूनिया

किधर तुम लुप्त हुए अखिलेश,
दिव्यतम देकर के गणवेश।
कृपाधान दिये हो दिव्य दिशा,
आज क्यों छा गई क्रूर निशा ?

कहां पर खोजें तुझे कृपेश,
रही न जगह कहीं पर शेष।
कहां किस ठौर गये मतिवन्त,
लौट फिर आना धुनिमय संत ॥

सरस समता में करें प्रवेश,
रहे न कहीं दुष्ट अभिनिवेश।
समीक्षण धारा का समगान,
नित हम गायें, दे वरदान ॥

विनय का लेकर के आकार,
किये तुम साध्य पूर्ण साकार।
अगम निगम पर दिव्य अवधान,
सतत् किया है अनुसंधान ॥

लक्ष्य से गये न तुम हो लौट,
कोई दे कितनी गहरी चोट।
दृष्टि सिद्धांत रूप थी दिव्य,
सदा अधिगम का था मन्तव्य ॥

सफल किया गुणमय अवतार,
एक्य दृष्टि की ले पतवार।
संघ को दिशा मिली अनुकूल,
भला क्यों भविक न पाये कूल ॥

- पुंजानी डागों की पिरोल, बीकानेर-३३४००५

❑ कालूराम नाहर
पूर्व मंत्री, श्री अ. भा. सा. जैन संघ

समता की प्रतिमूर्ति

आन-बान-शान के, शौर्य के प्रतीक मेवाड़ प्रान्त के एक छोटे से ग्राम दांता में जन्मे एक बालक ने महापुरुष के रूप में इतनी ख्याति प्राप्त कर ली, यह एक अनोखा अजूबा है।

जेठ सुदी द्वितीया को एक चमकता सूर्य छोटे से बालक के रूप में वसुन्धरा पर माँ शृंगार की कुक्षि से अवतरित होकर नाना से नानेश की पूर्णता प्राप्त कर सारे जैन समाज को नई रोशनी देकर, साधुमार्गी संघ को ऊंचाइयों के शिखर पर पहुंचा कर स्वर्गगमन कर गया।

<u>यथानाम तथा गुण :</u>

आपका जन्म नाम गोवर्धन था। उस नाम को चरितार्थ करते हुए जिस प्रकार कृष्ण वासुदेव ने अपनी एक अंगुली से गोवर्धन पर्वत को उठाकर ग्वालों (गायों) की रक्षा की, उसी प्रकार इस महापुरुष ने भी अपने शासनकाल में हुक्म संघ की रक्षा कर जो जाहोजलाली की, वह अनुकरणीय है। आपने आचार्य काल के प्रथम वर्षावास में ही समाज को बता दिया कि अपनी अन्तर आत्मा की आवाज पर जो जंचा, उसे करने में वे कभी पीछे नहीं हटे, चाहे सामने दिशाशूल हो या अन्य कोई बाधाएं। जब उदयपुर से विहार करने लगे तो बड़े-बड़े श्रावकों ने कहा इधर दिशाशूल है, रतलाम की तरफ नहीं बढ़ें। परंतु निश्चय के धनी ने इसकी परवाह न करके जो निश्चय किया, उस पर अड़िग रहे। उसका प्रतिफल इतना भव्य हुआ कि मालव प्रदेश में एक क्रान्ति का उद्घोष हुआ जो धर्मपाल के रूप में समाज के समक्ष है। जिस जाति के हाथ खून से सने रहते थे आज उनके हाथ में माला और पुंजनी है, मुंह पर मुंहपत्ती है।

<u>समता की साकार मूर्ति :</u>

आप अपने साधु जीवन में किसी से फालतु बोलते नहीं थे, सिर्फ अध्ययन-अध्यापन तथा जीवन साधना में तत्पर रहते, दीवार की तरफ मुंह कर ध्यान में मस्त रहते थे। जब-जब भी आचार्य श्री गणेशाचार्य को श्रावक वर्ग कहते कि भगवन् आप अपने उत्तराधिकारी की घोषणा करने की कृपा करें, तब-तब श्री गणेशाचार्य कहते एक ऐसा तराशा हुआ हीरा दूंगा जो अष्टम पाठ पर पूर्ण निखार लायेगा और जब आपके नाम की घोषणा हुई तो लोग कहने लगे यह गूंगे महाराज क्या निहाल करेंगे, किसी से बोलते तक नहीं, परन्तु जब आपने आचार्य पद का भार ग्रहण किया और जो ज्योति समाज को दी वह आज सर्व-व्याप्त है। जैसी कि आचार्य श्री श्रीलाल जी म.सा. ने कहा कि अष्टम पाठ खूब चमकेगा, वह सार्थक नजर आ रहा था।

आपने समाज को समता दर्शन और ध्यान की देन दी है वह सिर्फ अन्यों के लिए नहीं परंतु अपने जीवन पर पूर्ण रूप से चरितार्थ की हैं। जो पदवियां सिर्फ पद-लोलुपता के लिए लगाते हैं उन पर आपका विश्वास नहीं था। जैसी पदवी वैसा ही आचरण आपका ध्येय था।

आपने अपने आचार्यकाल मे अनेक कीर्तिमान स्थापित किये, उसके कुछ उदाहरण हैं :-

१. ३५० से ऊपर मुमुक्षु आत्माओं को विरक्ति मार्ग पर लगाना।

२. एक साथ पच्चीस दीक्षाएं प्रदान करना।

३. हुक्म संघ में आचार्य पद पर सबसे लम्बी अवधि प्राप्त करना।

आपके द्वारा जो युवाचार्यश्री का चयन हुआ वह आपकी दूरदर्शिता का ही स्पष्ट प्रमाण है, जिस प्रकार आपके गुरु गणेशाचार्य ने चयन कर समाज को अचम्भित किया, उसी प्रकार आपका चयन भी एक अनुपम है। संयम के सजग प्रहरी आगम के मसीहा के रूप में मिले हैं।

-ब्यावर

दृष्टि सिद्धांत रूप थी दिव्य

कमल चंद लूनिया

किधर तुम लुप्त हुए अखिलेश,
दिव्यतम देकर के गणवेश।
कृपाधान दिये हो दिव्य दिशा,
आज क्यों छा गई क्रूर निशा ?

कहां पर खोजें तुझे कृपेश,
रही न जगह कहीं पर शेष।
कहां किस ठौर गये मतिवन्त,
लौट फिर आना द्युतिमय संत॥

सरस समता में करें प्रवेश,
रहे न कहीं दुष्ट अभिनिवेश।
समीक्षण धारा का समगान,
नित हम गायें, दे वरदान॥

विनय का लेकर के आकार,
किये तुम साध्य पूर्ण साकार।
अगम निगम पर दिव्य अवधान,
सतत् किया है अनुसंधान॥

लक्ष्य से गये न तुम हो लौट,
कोई दे कितनी गहरी चोट।
दृष्टि सिद्धांत रूप थी दिव्य,
सदा अधिगम का था मन्तव्य॥

सफल किया गुणमय अवतार,
एवय दृष्टि की ले पतवार।
संघ को दिशा मिली अनुकूल,
भला क्यों भविक न पाये कूल॥

- पुंजानी डागों की पिरोल, बीकानेर-३३४००५

❑ डा. सागरमल जैन
पूर्व निदेशक, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी

समता दर्शन प्रवक्ता

आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म.सा. के जीवन दर्शन को जानने और समझने का सौभाग्य मुझे अपने जीवन के आरम्भिक काल से ही मिला। उस समय आप आचार्य पुंगव श्री गणेशीलालजी म.सा. के अन्तेवासी प्रमुख शिष्य के रूप में थे। सर्वप्रथम आपके दर्शन का सौभाग्य सादड़ी सम्मेलन के अवसर पर हुआ था। किन्तु उस समय की एक धुंधली स्मृति के अतिरिक्त मुझे अधिक ज्ञात नहीं है। वस्तुतः मेरी दोनों बहनों, पुत्री एवं पौत्री के परिवार आचार्य श्री के परम् भक्त रहे हैं अतः उन सबके निमित्त से मुझे आचार्य श्री के निकट सम्पर्क में आने का सौभाग्य मिलता रहा है। उनकी वाग्मिता, तर्कशक्ति और तर्क कौशल का प्रथम परिचय मुझे तत्कालीन श्रमण संघ के उपाचार्य श्री गणेशीलालजी म.सा. के जावरा चातुर्मास के समय मिला, तब आप उपाचार्य श्री के प्रमुख सलाहकार थे। उस समय मैं म.प्र. स्थानकवासी जैन युवक संघ का अध्यक्ष था। उस चातुर्मास में श्री चिमन भाई चकु भाई शाह-संसद सदस्य (सालीसिटर-मुम्बई), श्री सौभाग्यमल जी जैन (वकील सा. शुजालपुर) और मैं श्रमण संघ की किसी समस्या को लेकर जावरा पहुंचे थे। उस समय श्री चिमन भाई और सौभाग्यमल जी का कहना था कि इनकी वाग्पटुता के आगे तो हम जैसे कुशल वकील भी पराजितता का अनुभव करते हैं। ऐसी थी आचार्य श्री की वाग्पुटता और तर्क शक्ति।

उनकी दूसरी विशेषता थी, दृढ निर्णय शक्ति। एक बार उन्होंने जो निर्णय ले लिया, उस पर अड़िग रहते थे, फिर चाहे परिस्थिति कितनी ही विकट क्यों नहीं हो। मैंने अनेक प्रसंगों में उनकी इस दृढ निर्णय शक्ति का स्वयं अनुभव किया है। प्रश्न चाहे श्रमण संघ से अलग होने का हो या मुनि रामलाल जी म.सा. को युवाचार्य पद देने का रहा हो, उन्होंने एक बार जो निर्णय ले लिया, उस पर अड़िग रहे। समझौतावादी प्रवृत्ति का उनमें सदैव अभाव ही रहा। परिस्थितयों के सामने उन्होंने कभी झुकना नहीं सीखा। चाहे उन्हें अपनी इस अड़िगता के लिये कितना ही बड़ा बलिदान क्यों नहीं करना पडा हो। वे जहां एक ओर उच्च जीवन मूल्यों के प्रति समर्पित थे, वहीं सत्य के लिए संघर्ष करना भी जानते थे। अपने संघ में उन्होंने अनुशासन-हीनता को कभी प्रश्रय नहीं दिया। चाहे उसके लिए उन्हें ही शिष्यों के एक वरिष्ठ एवं प्रबुद्ध वर्ग को अलग ही क्यों नहीं करना पड़ा हो। निर्णय लेकर पलटना उनके स्वभाव में नहीं था। उन्होंने चरित्र को जिस निष्ठा से स्वीकार किया था, उसी निष्ठा और प्रामाणिकता से उसका पालन किया। उनकी चारित्र रूपी चादर सदैव निर्मल रही। आधुनिक युग में जैन संघ में आचार्य तुलसी के पश्चात् वे ही ऐसे एकमात्र आचार्य थे, जिनके स्वहस्त दीक्षित साधु-साध्वियों की इतनी विपुल सम्पदा हो। धर्मपाल प्रवृत्ति के जनक, समता दर्शन के प्रवक्ता आचार्य श्री का जीवन सदैव ऐसा रहा कि किन्हीं प्रश्नों पर उनसे मत वैभिन्य रखने वाले व्यक्ति भी उनके तप-त्याग और निर्मल चारित्र धर्म के पालन से प्रभावित हो उनके प्रति श्रद्धावनत ही बने रहे। गुजरात और पंजाब की स्थानकवासी सम्प्रदायों में भी उनके प्रति आदर भाव था।

दांता जैसे एक छोटे-से ग्राम में जन्म लेकर विकट परिस्थतियों से जूझते हुए एक प्रमुख स्थानकवासी जैन सम्प्रदाय के आचार्य तक की उनकी जीवन-यात्रा सीधी और सपाट नहीं रही है। उन्होंने अनेक उतार-चढ़ाव देखे हैं, किन्तु उन सबमें उन्होंने अपना संतुलन बनाये रखा, विचलित और उद्वेलित नहीं हुए वस्तुतः वे समता दर्शन के मात्र प्रवक्ता नहीं थे, उन्होंने उसे अपने जीवन में जीने का प्रयास भी किया था।

उन्होंने न केवल समता को जीने का अभ्यास किया है, अपितु सामाजिक समता की स्थापना का प्रयत्न भी किया, उनके द्वारा प्रवर्तित धर्मपाल प्रवृत्ति किस सीमा तक सफल रही, यह एक अलग प्रश्न है, किन्तु उसके पीछे सामाजिक समता की स्थापना, दलितों के उद्धार और व्यसन मुक्ति की जो जीवन दृष्टि रही, वह उनकी दूरदर्शिता और असीम करुणा को ही अभिव्यक्त करती है।

वैसे आचार्य श्री अत्यन्त सहज और सरल थे, किन्तु इतने सजग और सावधान भी कि कोई उनकी इस सहजता का दुरुपयोग नहीं कर ले। उनमें एक और कुसुम-सी कोमलता थी तो दूसरी ओर वे वज्र से भी अधिक कठोर भी थे। हृदय में मृदुता थी, किन्तु निर्णय लेने और उन पर अमल करने में कठोरता एवं दृढ़ता भी थी। उनकी संयम साधना, उनकी धवल चादर के समान ही धवल थी। श्रद्धाशील समाज उनके इन गुणों को आंशिक रूप में भी आत्मसात् कर सके तो यही इनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

-शाजापुर (म.प्र.)

नामाक्षरी काव्य

दिनेश ललवानी

जन्म हुआ दांता ग्राम में नाना जिनका नाम।
मां शृंगार देवी, पिता मोड़ीलाल को प्रणाम॥

गुणों की खान नाना गुरू ने लघु वय में संयम धारा।
रूख बदला बलाइयों का धर्मपाल संघ का भव्य नजारा॥

नाम रोशन किया विश्व में ३५० दीक्षाओं का कीर्तिमान।
नायक धर्म संघ के आचार्य प्रवर नानेश महान॥

राजस्थान, दिल्ली, गुजरात में ज्ञान का दीप जलाया।
महाराष्ट्र व मध्यप्रदेश में जिन शासन का ध्वज फहराया॥

चमन आपने खुद संवारा सिद्धांतों पर रहे अटल।
महक त्याग तप की पावन, संयम जीवन बड़ा सरल॥

कठिनाई में डिगे नहीं, कांटों को फूल बनाया।
तेजस्वी, महाप्रतापी गुरुवर ने पचखा संथारा॥

भाव बड़े उज्वल आपके, प्रकाश पुन्ज का अंतिम नजारा।
नुपूर की ध्वनि जैसे गुंजा नाना का जय जयकारा॥

सबने श्रद्धा सुमन चढ़ाये उदयपुर नगर को किया प्रणाम।
मार्ग आपका सबसे प्यारा मिलकर कदम बढ़ाये।
नाना गुरु के शिष्य आचार्य रामेश को सादर शीश नवायें॥

- सिलीगुड़ी

❑ केशरीचन्द सेठिया
पूर्व उपाध्यक्ष, श्री अ.भा.सा. जैन संघ

अछूतों के मसीहा

आचार्य श्री नानालालजी म.सा. के अंतिम दर्शन १३.१०.९९ को उदयपुर में हुए। आचार्य प्रवर की देह दिनों दिन क्षीण हो रही थी। उनका मनोबल, तपोबल, आत्म तेज प्रखरता से मुखरित हो रहा था। मुखमंडल पर एक अपूर्व अलौकिक आभा झलक रही थी।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ बीकानेर के ३७वें अधिवेशन पर जाने का सुअवसर मिला। वे पौषधशाला की ऊपरी मंजिल के कक्ष में एक काष्ठ के तख्ते पर लेटे रहते थे। मौन, शांत, चिन्तन की मुद्रा में। इच्छा होती तो उठकर उपस्थित मुनि का सहारा लेकर या कभी तत्कालीन युवाचार्य श्री रामलालजी म.सा. या श्री ज्ञानमुनिजी म.सा. के साथ बाहर बरामदे में टहलने लगते।

एक दिन आचार्य श्री के विश्राम कक्ष में चुपचाप आचार्य श्री के तेजवंत, शांत मुखाकृति को निहार रहा था, कि श्री संपतमुनिजी म.सा. के पुत्र डा. एच.सी. धाड़ीवाल आये। बातचीत में बताया कि कल सुबह गुरुदेव को स्केनिंग कराने के लिये ले जायेंगे।

मैंने कहा-वे तो किसी तरह की चिकित्सा, जांच कराना नहीं चाहते। न औषधि सेवन करना चाहते हैं। कहा-किसी तरह उन्हें मना लेंगे।

मुनिवृन्द जांच करवाने के लिये नर्सिंग होम ले गये। जब उन्हें पता चला तो विचलित हो गये। कहने लगे-डाक्टर साहब-यह शरीर तो व्याधियों का घर है। अब इसकी क्या जांच और चिकित्सा करेंगे।

अब तो मुझे ही स्वयं का उपचार करना है और स्केनिंग कराये बिना पौषधशाला पधार गये।

रण बांकुरों, धर्मवीरों की जन्म भूमि मेवाड़ के एक छोटे से गांव दांता में धर्मनिष्ठ श्रावक श्री मोड़ीलालजी पोखरना व धात्री शृंगार बाई के प्रांगन में आप का जन्म हुआ। आगे चलकर इस छोटे से गांव का स्थान भारत के मानचित्र पर प्रमुखता से जाना जाने लगा।

दांता की सौंधी माटी में उन्होंने साथियों के साथ बचपन बिताया। उनकी मोहनी, लुभावनी सूरत को देखकर आपका नाम गोवर्धन रखा। कृष्ण क्रीड़ा पुनः सजीव हो उठी। परिवार में सबसे छोटे, लाड़ले होने के कारण प्यार, दुलार से नाना (नन्हा) कहने लगे। किसे पता था यह कर्मवीर, धर्मवीर आगे चलकर महावीर के शासन के विशाल संघ का नायक बनकर सर्वोच्च स्थान को गौरवान्वित करेगा।

आप पर अनेक विपत्तियां, बाधाएं आईं। किशोरावस्था में ही गृहस्थी का बोझ आ पड़ा। अपना कर्त्तव्य समझ कर गृहस्थ धर्म को निभाया, पर विधि को ओर ही कुछ मंजूर था।

एक दिन आपको जैन मुनि श्री चौथमलजी म.सा. का प्रवचन सुनने का सुयोग मिला। सुप्त आत्मा जग गई। आवरण हटा। द्वन्द्व ने जन्म लिया। चिन्तन-मनन चलने लगा और गुरु की खोज में घूमते-घूमते तत्कालीन युवाचार्य श्री गणेशीलालजी म.सा. के सम्पर्क में आये। कहते हैं जहां चाह होती है वहां राह मिल जाती है।

गुरु चरणों में ज्ञानोपार्जन करने लगे। मेधावी शिष्य के रूप में अल्प समय में ही न केवल जैन शास्त्रों का अध्ययन कर लिया अपितु अन्य धर्म ग्रन्थों का भी तुलनात्मक अध्ययन किया।

गुरु की आज्ञा को शिरोधार्य कर पृथक रूप से विचरने लगे।

साधु सम्मेलन में अधिकांश साधु-साध्वियों ने अपने पद, सम्प्रदायों आदि को त्याग कर एकता के सूत्र में बंध गये। श्रमण संघ बना। सर्वानुमति से श्री गणेशीलालजी म.सा. को उपाचार्य पद से सुशोभित कर श्रमण संघ की बागडोर सौंप दी।

अनुशासन प्रिय, जैन संस्कृति के पक्षधर के समक्ष अनेक समस्याएं आ खड़ी हुईं। छोटी-छोटी बातों को लेकर वादविवाद, पत्राचार। फिर भी आपने संयम, शांति, धैर्य, प्रेम, क्षमा एवं उदारता से काम लिया। किन्तु जब स्वच्छंदता अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच गई तो आपने अपने पद का त्याग कर दिया और पृथक् हो गये। आपने सिद्धान्तों के समक्ष कभी समझौता नहीं किया। उस समय मुनि श्री नानालालजी म.सा. ने अत्यन्त शालीनता एवं दूरदृष्टि से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आचार्य श्री गणेशीलालजी म.सा. ने उदयपुर में आपको अपना उत्तराधिकारी बनाया। आपने जिस लगन से गुरु-सेवा की वह एक मिसाल बन कर रह गई।

संवत् २०१९ माघ कृष्णा को राजप्रासाद के प्रांगण में हुक्म संघ के अष्टम पट्टधर की गौरवशाली धवल शुद्ध खदर की चादर धारण कर आचार्य पद को ग्रहण किया।

अब आप स्वतंत्र रूप से शिष्य मंडली के साथ पदयात्रा द्वारा महावीर वाणी के प्रचार-प्रसार के लिये निकल पड़े। जहां जहां आपके पावन चरण पड़ते, सैंकड़ों हजारों की जनमेदिनी आपकी अमृतवाणी सुनने के लिए एकत्रित होने लगी। उनकी हृदयग्राही, मर्मस्पर्शी आत्मोन्नयनकारी, वैराग्यपूर्ण वाणी को सुनकर गद्-गद् हो जाते। संतप्त मानव को सही दिशा मिली। यही कारण है कि आपके द्वारा ३५० के लगभग मुमुक्षु आत्माओं ने आपसे जैन प्रवर्ज्या ग्रहण कर श्री चरणों में अपने को समर्पित कर दिया। अस्सी वर्ष के यशस्वी जीवन काल में महावीर के शासन की यह एक अभूतपूर्व घटना थी।

आपाधापी, विषमता से घिरे संतप्त मानव आपके सम्पर्क में आने लगे। आप चिन्तित हो उठे। एक ऐसा मार्ग, उपाय ढूंढने में आप प्रयत्नशील थे जिससे संतप्त, उत्पीड़ित मानव को उबार सकें। गहरे चिन्तन के बाद आपने समता-सूत्र, समीक्षण-ध्यान पद्धति जैसा पंच-सूत्री, कार्यक्रम दिया। समता के प्रणेता ने भिन्न-भिन्न रूप से उसका सर्वव्यापी दिग्दर्शन करवाया। उसका सर्वव्यापी दिग्दर्शन, जीवन-साधना और यथार्थ जीवन में समता के महत्वपूर्ण दर्शन को उजागर किया।

गांव-गांव, नगर-नगर पद-यात्रा द्वारा प्रतिबोध देते हुए २२ मार्च १९६४ को अपनी शिष्य मंडली के साथ मालव की धरती पर आपके चरण पड़े। गुराड़िया ग्राम में पधारना हुआ। उनकी यह एक ऐतिहासिक यात्रा रही।

आचार्य श्री का प्रवचन समाप्त हुआ। कुछ लोग थोड़ी दूरी पर करबद्ध खड़े हो गये। आचार्य श्री ने उन्हें नजदीक आने का संकेत किया। झिझकते हुए पास पहुंचे। कहने लगे अन्नदाता! हमारे धन्य भाग हैं आप जैसे महान् संत पधारे हैं। हम पिछड़े हुए हैं। अशिक्षित हैं। लोग हमें अछूत समझते हैं। आप हमारे लिये भगवान के रूप में पधारे हैं। हमारे लिये कुछ करिये।

उनकी दुखद गाथा को सुनकर आचार्य श्री का मन द्रवित हो गया। आपने देखा इन बलाई, भील आदि लोगों में धार्मिक, सामाजिक, संस्कारों का, सत्संग का अभाव है। कुव्यसनों, कुरीतियों, रूढियों से ग्रस्त हैं। उच्च लोगों की उपेक्षा, धर्मान्धता के कारण मानवीय गुणों तक से वंचित हैं।

आपने कहा-

'तुम दीन और हीन नहीं हो। तुममें पुरुषार्थ की अनन्त शक्ति भरी पड़ी है। दुर्व्यसनों, सामाजिक रूढियों ने, कुसंस्कारों निरक्षरता ने उस शक्ति को दबा रखा है। इन सबको त्यागो, वह शक्ति तुम्हारे पास चली आयेगी।'

प्रभु महावीर ने ऊँच-नीच का भेद, वर्ण व्यवस्था के रूप में कभी स्वीकार नहीं किया। जन्म से नहीं, कर्म से छोटा-बड़ा, अच्छा-बुरा होता है। आज से तुम गर्व से अपने को 'धर्मपाल' के नाम से सम्बोधित करो। यह धवल क्रान्ति हवा की तरह फैलने लगी। आज सैंकड़ों

हजारों धर्मपाल भाई गर्व से सुखी जीवन यापन कर रह रहे हैं। अछूतोद्धार के मसीहा ने उन्हें मशाल दिखाकर नये सिरे से सफल जीवन जीने की कला सिखाई। युगयुगान्तर तक समाज उनके इस जनकल्याणकारी क्रान्ति के लिये ऋणी रहेगा।

एकता के लिये बड़ा से बड़ा त्याग करने को आप तैयार थे। आपके मन में एक पीड़ा थी कि आज जैन समाज अलग-अलग टुकड़ों में बिखरा हुआ है। समृद्ध होते हुए भी उपेक्षित हैं। संवत्सरी जैसे महापर्व पर भी हम एक नहीं हो सके।

आपने कहा-'अगर संवत्सरी मनाने के बारे में संपूर्ण जैन समाज की एक मत बन सके तो बड़ी उपलब्धि हो सकेगी। संवत्सरी एकता की दृष्टि से अगर हमें अपनी परम्परा भी छोड़नी पड़े तो मैं किसी पूर्वाग्रह को आड़े नहीं आने दूंगा। सब एक नहीं हो सकते तो भी अगर स्थानकवासी समाज भी एकता के लिये तत्पर हो जाये तो मैं तैयार रहूंगा।'

श्रावक-श्राविकाओं को 'अम्मा पिया' समझते थे। फरमाते थे- आप लोग मेरे संयमी जीवन पालने में सहयोगी हैं। कोई बात देखें तो सूचित करें। उनकी उदारता, आत्मियता, विनम्रता, सेवाभाव, सरलता देखकर मन आत्म-विभोर हो जाता था। श्रद्धा से नतमस्तक हो जाता था। महान् विभूति की निश्चलता देखकर नेत्र सजल हो जाते। जब जब मेरा दर्शन करने का अवसर आया- पूछते मेरे लिये कोई सूचना। मैं समझता था उनके इस गूढ रहस्य को। प्रत्युत्तर क्या देता। इस महान् योगी की निर्मलता, उदारता देखकर हृदय गद्‌गद् हो जाता।

आपने अनेक धर्मग्रन्थ, विभिन्न विषयों पर अनेक ग्रन्थों का लेखन संपादन किया। आप द्वारा सृजित विपुल साहित्य प्रबुद्ध एवं आमपाठक के लिये वरदान सिद्ध हुआ। इसके अतिरिक्त गुजराती, मराठी, अंग्रेजी अदि में भी आपका साहित्य उपलब्ध है।

प्रबल क्रान्ति के जन्मदाता ने जब अस्सीवें वर्ष में प्रवेश किया तो सब तरफ से अपना ध्यान खींच लिया। युवाचार्य श्री रामलालजी म.सा. को विशाल संघ का सम्पूर्ण भार देकर निश्चिंतता से प्रभु के ध्यान में, भक्ति रस में आत्मरमण करने लगे। सब तरह से भौतिक देह का मोह त्याग दिया।

२६ अक्टूबर को निकटवर्ती लोगों ने देखा स्वयं ने ही चैतन्य की ओर देखकर महाप्रस्थान के लिये करबद्ध संलेखना ग्रहण कर ली। एक अद्‌भुत अलौकिक दृश्य था। अपनी गरिमा के अनुरूप चरम लक्ष्य को प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त कर लिया। उनकी चेतना और दृढ संकल्प का एक बेमिसाल उदाहरण।

२७ अक्टूबर ९९ को औपचारिक रूप से चतुर्विध संघ, साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका की साक्षी से संथारा ग्रहण किया जीवन पर्यन्त का (खानपान का पूर्ण त्याग) प्रायश्चित देने वाले ने प्रभु साक्षी से स्वयं की आलोयणा प्रायश्चित कर अपनी आत्मा को विशुद्ध, निर्मल बना लिया।

२७ अक्टूबर ९९ को रात्रि के १०.४१ पर नश्वर देह को त्यागकर समाधि पूर्वक आपका महाप्रयाण हो गया। एक युग का अन्त हो गया। जैन जगत का सूर्य अस्त हो गया।

हजारों श्रद्धालुभक्तों ने अश्रुपूरित नेत्रों से श्रद्धांजलि अर्पित की। नतमस्तक हैं ऐसे युगपुरुष के चरणों में।

इक्कीसवीं सदी के शुभारम्भ पर परम प्रतापी हुक्मगच्छ के नवम् पट्टधर स्व. आचार्य श्री नानेश के उत्तराधिकारी आचार्य श्री रामलालजी म.सा. का स्वागत करते हैं, अभिनन्द करते हैं। नत मस्तक हैं। उनका यह विशाल धर्म-संघ आपको पाकर धन्य हुआ है।

-चैन्नई

❑ भूपराज जैन

साकार दिव्य गौरव विराट

कभी-कभी अत्यन्त साधारण-सी घटना विशाल और महद् रूप धारण कर लेती है। छोटा-सा बीज हवा, रोशनी और जल का संयोग पाकर विशाल वृक्ष के रूप में अनेक का आश्रयदाता बनकर शीतल छाया और मृदु फल प्रदान करता है। साधारण घर में जन्म लेकर कोई नन्हा-सा बालक कब जन-जन का त्राता, अभय प्रदाता महापुरुष बनकर अक्षय कीर्ति का अधिकारी होगा, नहीं कहा जा सकता।

किसने जाना था कि अब्राहम लिंकन, वाशिंगटन जैसे व्यक्ति अमेरिका के भाग्यविधाता बनेंगे। मोहनदास गांधी महात्मा गांधी के रूप में विश्व विख्यात होंगे एवं गुलामी की जंजीरों में जकड़े तीन चौथाई विश्व को अहिंसा एवं सत्याग्रह के बल पर स्वातंत्र्य के प्रकाश से अलोकित करेंगे, यह किसी ने सोचा भी नहीं था। उनके सत्य, अहिंसा और असहयोग के सामने भीषण परमाणु अस्त्र-शस्त्र भी सर झुका देंगे, यह अकल्पनीय एवं अचिन्तनीय था।

चित्तौड़गढ़ जिले के एक छोटे-से ग्राम के साधारण पोखरना परिवार में जन्मा नन्हा-सा गोवर्धन गोकुल के ग्वाल बालों का रक्षक गोवर्धनधारी बनकर तथाकथित दैवीय शक्तियों को ललकार उठेगा, यह उस समय कल्पनातीत था। लेकिन एक राजस्थानी कहावत के अनुसार 'पूत रा पग पालने में दीखे' को उस गोवर्धन ने बचपन में चरितार्थ करना प्रारम्भ कर दिया था।

वृद्धावस्था से जर्जरित, अशक्त बुढ़िया का घड़ा उठाकर उसके घर तक पहुंचा आना, यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त था कि परदु:खकातरता एवं करुणा का एक असीम सागर उसके हृद देश में ठाठें मार रहा है। राजकुमार सिद्धार्थ ने नर कंकाल, असहाय वृद्ध और शव को देखकर जन्म-मरण के बंधन से मुक्त होने का दृढ निश्चय कर लिया था और एक दिन वह महात्मा बुद्ध बनकर सिद्ध बुद्ध परम् पद का अधिकारी बना। छठे आरे की असह्य पीड़ाओं के वर्णन मात्र से विचलित वह गोवर्धन, वह नाना, मुनि नानालाल बनकर स्व पर कल्याण के मार्ग पर चल पड़ा।

एक शिकारी के बाण से आहत क्रौंच पक्षी के करुण रुदन और विलाप ने तमसा नदी के किनारे स्नानरत महर्षि वाल्मीकि के हृदय को व्यथित कर डाला। करुणा विगलित स्वरों में जो श्लोक उनके कंठ से फूटा वह आदिकाव्य का स्रोत बन गया एवं महर्षि वाल्मीकि आदि महाकवि बन गये। कविवर पंत ने भी कहा है-

'वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान।
उमड़कर आंखों से चुपचाप, बही होगी कविता अनजान॥'

महाकवि शैले की यह पंक्ति-

Our sweetest songs are those that tell us shadest thought.

और छठे आरे के दु:खों का वर्णन सुनकर यदि नानालाल मुनि नानालाल बनकर चारित्र चूड़ामणि, धर्मपाल प्रतिबोधक, समता दर्शन प्रणेता, समीक्षण ध्यान योगी के रूप में जगत वंद्य हुए तो प्रकृति की यह यही लीला है जो सिद्धार्थ को महात्मा बुद्ध, महर्षि वाल्मीकि को महाकवि वाल्मीकि और मोहनदास गांधी को महात्मा गांधी के रूप

में प्रतिष्ठापित करती है।

यह संसार अत्यन्त दुःख एवं अत्यन्त सुख से पीड़ित है यदि सुख दुःख और दुःख सुख समान रूप से सब में बंट जाय तो न कोई भूख से मरेगा एवं न कोई वैभव के अजीर्ण से मरेगा। महाकवि पंत ने कहा है-

जग पीड़ित रे अति दुःख से, जग पीड़ित रे अति सुख से
मानव बंट जाये दुःख सुख और सुख दुःख से।

यदि सुख दुःख और दुःख सुख का सम विभाजन हो जाय तो न कोई दुःखी रहेगा न कोई सुखी। यह अमीरी-गरीबी, गरीबी-अमीरी ही मनुष्य के सुख दुःख का कारण है, व्यसन का उत्स है, रोगों का स्रोत है। छूत-अछूत की विभाजन रेखा है। ऊँच-नीच की आधारशिला है। समता निर्झर में अवगाहन से ही इस वैषम्य और वैमनस्य के कलमष को धोया जा सकता है अतः आचार्य श्री नानालालजी म.सा. ने 'किं जीवनम्' के प्रश्न का अचूक समाधान समता दर्शन के प्रणयन से किया। यह समता न केवल सिद्धान्त में अपितु व्यवहार में साकार रूप लेकर ही समता समाज की रचना कर सकती है एवं अशान्त तथा उद्भ्रान्त संसार को शान्ति, सौख्य और समृद्धि प्रदान कर सकती है। जड़ और चेतन की समता प्राणि मात्र ही नहीं सचराचर जगत के लिए अमोघ औषधि है, राम-बाण दवा है। अखण्ड आनन्द की स्रोतस्विनी है।

कामायनीकार जयशंकर प्रसाद कहते हैं-

'समरस थे जड़ या चेतन,
सुन्दर साकार बना था।
चेतनता एक विलसती,
आनन्द अखंड घना था।'

'आत्वत् सर्व भूतेषु', 'सर्व धर्म समभाव' के आदर्श नारों से हमारा सारा धर्म, दर्शन चीख-चीख कर कह रहा है, किन्तु वर्ण, वर्ग की दीवारों ने इसे कभी फलित नहीं होने दिया। इससे परिवार एवं समाज ही बार-बार नहीं टूटा है अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र अनेक बार क्षत-विक्षत हुआ है एवं गुलामी की जंजीरों से जकड़ा गया है। अतः जब तक समता की इन समस्त शक्ति करुणा, प्रीति, स्नेह और वात्सल्य का समन्वय होगा, वैषम्य, वैर और मदान्धता का सिर हमेशा उठा रहेगा। इस ज्वाला को समता-वारि से सींच निर्वेद, अक्रोध और कारुण्य में परिणित किया जा सक है। इसका संयोजन नियोजन समत्व की आत्मश और आत्मबल से ही संभव है।

'शक्ति के विद्युत्कण जो व्यस्त,
विकल बिखरे हों निरूपाय।
समन्वय उसका करें समस्त,
विजयिनी मानवता हो जाय।'

आचार्यवर नानेश सदैव अपने प्रवचनों में समता रस की धारासर पीयूष वर्षा कर जन-जन आप्लावित एवं आप्यायित करते रहते थे। साधारण की इसी पीड़ा, व्यथा, दारिद्रय एवं अशक्यता ने उ मन-मस्तिष्क को झकझोर दिया था और तभी सम समाज-रचना का यह निर्झर उनकी वाणी से प्रस्फुटित हो उठा था।

समता का स्रोत भी मानव मन से तभी प्रवाहित होता है, जब मन की गांठें खुलती हैं। मन की उन गांठों से ही क्रोध, लोभ, मोह, मत्सर, द्वेष, ईर्ष्या का जन्म होता है और ये गांठें ही भेदभाव, उंच-नीच और छूत-अछूत की दीवारें खड़ी कर देता है। अशान्ति, हिंसा, आतंक और भय का वातावरण निर्मित होता है अतः मन का निर्ग्रन्थ होना आवश्यक है। आचार्य ने इस मन को निर्ग्रन्थ बनाने के लिए 'समीक्षण-ध्यान' की साधना को आवश्यक बताया। इस समीक्षण ध्यान से ही क्रोध, लोभ, मोह और कषायों की आग को शान्त कर करुणा, शीतलता और सहिष्णुता में परिणत किया जा सकता है।

हम अपने को देखें द्रष्टाभाव से और परखें तथा मन को निर्ग्रन्थ बनाकर समत्व की ज्योति जलायें। इसी ज्योति से सबको ज्योतित एवं आलोकित करें। इसी दीप से सभी दीप जल उठेंगे। अज्ञान और वैषम्य का यह सघन तिमिर समीक्षण तथा समता प्रकाश पुंज से तार-तार, छिन्न विछिन्न हो जायेगा, यह निर्विवाद है।

उन्नत एवं प्रशस्त भाल, उपनयनों से झांकते करुणा प्लावित दो नयन, आजानुप्रलम्बित भुजाएं, ठिगना कद, गजगति एवं खद्दर की शुभ्र धवल चादर से आवेष्ठित श्यामल कान्तिपूर्ण देह यष्टि कुल मिलाकर यही स्थूल रूप है आचार्य नानालाल का, किंतु शिथिलाचार के प्रति उनका दुर्धर्ष संग्राम, कुसंस्कारों और कुव्यसनों के समूलोच्छेदन का क्रान्तिकारी शंखनाद, क्षमा, औदार्य और औदात्य से जगमग उनका अनाग्रही मन प्रबल तथा प्रभूत आत्मबल से परिपूर्ण साधक नानालाल का एक दूसरा रूप हमारे सामने प्रस्तुत करता है। आभ्यन्तर तप और साधना से उर्ज्जस्वित एकता, शुचिता और निर्मलता की मशाल थामे यह अवधूत काल के थपेड़ों से अव्याहत, निर्भीक, निर्द्वन्द्व भाव से चलता रहा है, अकेला ही अपने घोषित मार्ग पर अविचल, अडिग।

अवयव की दृढ मांस पेशियां,
उर्ज्जस्वित था वीर्य अपार,
स्फीत शिराएं स्वस्थ रक्त की,
होता था, जिनमें संचार।

मार्ग के दुर्दम्य परीषहों से अक्लान्त, अभग्न एवं अभुग्न रहकर अकेले चलते रहने में भी न कभी हारा, न कभी थका वह शान्त, दान्त महर्षि। रामधारी सिंह 'दिनकर' की इस पंक्ति के ही साकार रूप लगते हैं-

साकार दिव्य गौरव विराट,
पौरुष के पुंजीभूत ज्वाल।
मेरी जननी के हिम किरीट,
मेरे भारत के दिव्य भाल।
मेरे नगपति मेरे विशाल।

जिस बहुआयामी रचनात्मक संग्राम को उ[...]
परिग्रह तजकर पंचमहाव्रत धारण कर स्वाध्याय, सा[...]
और समत्व से प्रारंभ किया था, उसे सतत् गतिमान [...]
का दायित्व उनके उत्तराधिकारी आगमज्ञ, वि[...]
आचार्य श्री रामलालजी म.सा. एवं उनके अनुयायिय[...]
है। जिस शुभ्र धवल चादर को उन्होंने ओढ़ा था, [...]
निष्कलंक, पाक, साफ चादर को यत्नपूर्वक सौंप[...]
है। उसकी धवलता, शुचिता एवं निर्मलता की रक्षा अ[...]
अनुयायियों को करनी है। उनके लिए तो यही कहा[...]
सकता है-

आरंभ परिग्रह तजिकरि, पंचमहाव्रत धार
अन्त समय आलोचना, कियो संथारो सार।

संथारा संलेखनापूर्वक आचार्यवर ने यह ल[...]
छोड़कर महाप्रयाण किया, उनकी कालजयी यात्रा [...]
यह तेजोमय समापन है।

व्यसन मुक्ति के सदुपदेश से सहस्त्र, स[...]
लोगों को सात्विक अहिंसक जीवन जीने की प्रेरणा दे[...]
लक्ष-लक्ष जीवों की रक्षा के एक ऐसे क्रान्ति[...]
इतिहास की रचना उन्होंने की है, जो काल के भाल[...]
लिखा अमिट लेख है। डा. नेमीचन्द जैन के शब्दों[...]
यह घटना मानवता के मस्तक को कुंकुंम रोली [...]
तिलक से विभूषित करती है। व्यसन मुक्ति अभि[...]
की इस अमिय धार से संतप्त, त्रस्त, पीड़ित, व्यथि[...]
मानवता आपाद मस्त संतृप्त और शीतल हुई है[...]

ऐसे अनासक्त, स्थितप्रज्ञ, महतो महीयान, ध[...]
योगी, अप्रमत्त साधक आचार्यवर को मेरी अशेष प्रण[...]
एवं भावोच्छवसित भूयसी श्रद्धांजलि।

-कलक[...]

□ जानकीनारायण श्रीमाली

धर्मपाल प्रतिबोधक

भारत अर्थात् विश्व को प्रकाशमान ज्ञानवान और उर्जावान करने के अनन्त, अनथक प्रयास को समर्पित राष्ट्र। विश्व बन्धुत्व की सर्वप्रथम और हार्दिक घोषणा भारत और भारतीय ही कर सके। प्रकृति में प्रथम मानव ने भारत की धरती पर जन्म लिया और उस शिशु ने उदित होते सूर्य के दर्शन किये और उस मनु की सन्तति प्रकाश की आराधना हेतु समर्पित हो गई। विश्व में मनुज मात्र-मनु की सन्तति होने से परस्पर भाई है और इसीलिये 'विश्व बंधुत्व' की, 'सर्वे भवन्तु सुखिन:' की तथा 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की घोषणा भारतीय मनीषा कर सकी।

इस प्रकार की उदात्त-वसुधैव कुटुम्बकम् की भाव धारा में ही समतामय समाज रचना संभव हो सकती है और जगती के तल पर सर्वप्रथम समता समाज ने भारत में आकार ग्रहण किया। युग-युग तक भारत का समता समाज विश्व का आदर्श बना रहा किन्तु शनैः शनैः विकृतियों ने समाज व्यवस्था में प्रवेश किया और योगेश्वर कृष्ण की 'चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टि गुण कर्म विभाग श:' की घोषणा अथवा भगवान महावीर की-'कम्मणा बम्भुणो होई, कम्मणा होई खत्तियो' की उद्घोषणा को अतिक्रांत करते हुए जन्म पर आधारित जाति व्यवस्था ने विषमता के विष बीज का वपन कर दिया। परिणाम स्वरूप एकरस समाज अनेकानेक वर्गों में विभक्त हो गया। 'कोढ़ में खाज' और 'आग में घी' की कहावत को चरितार्थ करते भीषण, दुर्दान्त विदेशी आक्रमणकारियों ने समाज में विषमता को बढ़ावा दिया और हमारा प्रिय देश अस्पृश्यता के दावानल में घिर कर सन्तप्त हो गया।

समाज के शिखर पुरुषों ने, मनीषियों ने इस सामाजिक विघटन की रोक-थाम के समय-समय पर गंभीर प्रयास किये, उनके कुछ सकारात्मक परिणाम भी दिखाई दिये किन्तु विस्तृत भूभाग में विस्तीर्ण विराट समाज के अन्त्यज वर्ग में चेतना की ज्योति अपेक्षित रूप में जग नहीं पाई।

जैन शासन के ज्योतिर्धर आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा. ने खादी, स्वदेशी और अछूतोद्धार के मंत्र का उद्घोष किया। उनके सुशिष्य शांत क्रांति के दाता श्री गणेशाचार्य जी दृढ अनुशास्ता थे और उन्होंने अपने उत्तराधिकारी समता विभूति आचार्य श्री नानेश के अंतर्हृदय में उस ज्ञान दीप की स्थापना की जो समाज की समस्याओं को समाधान का पथ निदेश कर सके।

एक सरल, सहज, सौम्य, प्राकृतिक, ग्रामीण परिवेश में जन्मे और पले श्री नानालालजी में समाज की समस्याओं को पहिचानने की अद्भुत क्षमता थी। गुरु का पारस स्पर्श पाकर, संत जीवन अपना कर वे स्वयं पारस बन गए थे और इसीलिये अपने प्रथम रतलाम चातुर्मास के बाद मालव धरती पर विहार-विचरण करते हुए समाज के अस्पृश्य कहे जाने वाले बन्धुओं की दुर्दशा देखकर उनका करुणापूरित मन द्रवित हो उठा।

'सहानुभूति चाहिये, महाविभूति है यही'- की कवि वाणी सार्थक हो उठी। सहानुभूति शब्द का प्रयोग धड़ल्ले से होता है किन्तु सचमुच सह-अनुभूति होना दुर्लभ है। श्री राम कृष्ण देव ने देखा कि एक धोबी अपने गधे को निर्ममता से मार रहा है। वे सहानुभूति के भाव से भर कर चीत्कार कर उठे। श्री रामकृष्णदेव की पीठ पर लाठी के नीले-गहरे निशान उभर आए थे। ऐसी होती है सहानुभूति तब वह महाविभूति बन जाती है।

आचार्य श्री नानेश भी इसी प्रकार की महानुभूति से द्रवित हो महाविभूति बन गए। उन्होंने बलाई कहे जाने वाले दलितों को व्यसन मुक्त होकर, सत्संस्कारों को अपना कर सर्वप्रथम अपना आचरण सुधारने की प्रेरणा दी। 'अप्प दीपो भव' के प्रशस्त पथ पर उन बलाई जनों को आरूढ़ कर दिया। फलतः स्वतः वे उन्नति करते चले गये और समाज भी उन्मुक्त मन से बाहें फैला कर उनसे भेंटने को आतुर हो उठा।

आचार्य श्री नानेश ने बलाई जन समूह को उपदेश देकर 'धर्मपाल' की संज्ञा प्रदान की। बलाई के काले टीके के स्थान पर 'धर्मपाल' का स्वर्णतिलक अंकित किया। साथ ही अपने सम्पूर्ण अनुयायी वर्ग को भी इन दलित बान्धवों के उत्थान में जुटने की प्रेरणा दी।

यही था आचार्य श्री नानेश का अद्‌भुत शिल्प विधान। सर्वप्रथम दलित स्वयं उत्कर्ष हेतु संकल्पित होकर संस्कार पथ पर अग्रसर हों और साथ ही साथ अग्रज, संस्कारित, समर्थ, समृद्ध समाज झपट कर आगे बढ़े और अपने पिछड़े भाई को बांहों में भरकर हृदय से लगा ले। इस स्पर्श की पुलक, हृदयों की ये धड़कनें, राम-भरत मिलाप की भांति समस्त सन्देहों को समाप्त कर अजस्र प्रेम की अश्रुधारा में समस्त अस्पृश्यताओं को धो डालने में समर्थ होगी-आचार्य श्री का यह भविष्य दर्शन शत-प्रतिशत खरा उतरा।

वे सचमुच अद्‌भुत शिल्पी, अद्‌भुत कर्मयोगी, अद्‌भुत प्रेरणाकुंज और मानव मनोविज्ञान के निष्णात ज्ञाता अद्‌भुत समत्व योगी थे। उनमें अपनी शक्तियों को विराट समाज में संक्रांत और संवितरित कर देने की अद्‌भुत सामर्थ्य थी और इसी सामर्थ्य ने धर्मपाल समाज रचना के रूप में विश्व के धर्मों की इतिहास कथा में एक उज्ज्वल अध्याय का सृजन किया।

धर्मपालों के उत्साह और संघ के आनन्द सागर का दर्शन करके मैं भी कृतार्थ हुआ हूं। आचार्य श्री नानेश गजब के संगठन कर्ता थे। उनके नेतृत्व में चतुर्विध संघ में अपार उत्साह की लहरें प्रतिपल हिलोरें लिया करती थीं। उत्साह के इस महासागर को नियोजित करने की तमन्ना लिए श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ रूपी सार्थवाह को सचमुच धर्मपाल बनाने के असंभव कार्य को संभव बनाने हेतु प्रेरित किया और फिर चला तूफानी प्रवासों और सम्मेलनों का वह दौर जिसने दो को मिलाकर एक कर दिया, द्वैध को समाप्त कर एकात्म स्थापित कर दिया। संस्कार क्रान्ति की वह शांत धारा ऐसी बही कि धर्मपाल क्षेत्रों में धार्मिक-संस्कार पाठशालाओं का जाल बिछ गया, धर्मपाल युवक-युवतियों के, आबाल-वृद्ध के संस्कार शिविरों की बाढ़ आ गई, चिकित्सा सेवाओं, धर्मपाल छात्रावास की स्थापना तथा समता भवनों के निर्माण ने धर्मपाल प्रवृत्ति के पांवों में अंगद सा सामर्थ्य भर दिया। धर्मपाल पदयात्राओं ने इन पांवों में पंख लगा दिये।

इस प्रकार आचार्य श्री नानेश ने पतन के पाताल में पड़े धर्मपालों को बाल हनुमान की तरह उछल कर आकाश में स्थित सूर्य (चरम विकास) को छूने की प्रेरणा और सामर्थ्य प्रदान की तो समृद्धि के शिखर पर बैठे जैन समाज को पाताल की परतों में उतर कर अपने स्वधर्मी बन्धुओं को हृदय से लगाने की प्रेरणा दी। वस्तुतः ये दोनों ही कार्य असंभव थे किन्तु आचार्य-प्रवर के अतिशय ने इस असंभव को संभव कर दिखाया।

पश्चिम बंगाल के पूर्व उपमुख्यमंत्री और प्रसिद्ध विचारक श्री विजयसिंह जी नाहर ने धर्मपाल क्षेत्र में प्रथम संस्कार निर्माण, धर्म जागरण और व्यसन मुक्ति पदयात्रा में धर्मपाल प्रवृत्ति के विषय में कहा था कि - 'यह भारत के धर्मों के इतिहास में अभूतपूर्व है।' संघ ने कालान्तर में धर्मपाल क्रांति को सम्पूर्ण ग्राम के रूपान्तरण का आधार बनाने में अकल्पनीय सफलता प्राप्त कर, व्यक्ति और ग्राम निर्माण के स्वप्न को साकार किया। मालव क्षेत्र में धर्मपाल समाज रचना और समता समाज रचना के प्रयोग साथ-साथ चले और सफल हुए।

भारत की आज की स्थिति में धर्मपाल समाज रचना कर यह सफल प्रयोग धर्मपाल प्रतिबोधक आचार्य श्री नानेश का अक्षय कीर्ति स्रोत है। धर्मपाल प्रतिबोधक के रूप में समता दर्शन प्रणेता आचार्य श्री नानेश अमर हैं।

इस महान् प्रयोग के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक और समरसता मूलक प्रभावों का अर्थात् बहुआयामी प्रभावों का सम्यक् मूल्यांकन अभी शेष है। ज्यों-ज्यों इन दिशाओं में शोध कार्य होगा, आचार्य श्री नानेश के अशेष यश की सुवास परिव्याप्त होकर सम्पूर्ण विश्व को आवेष्टित औ सुवासित करेगी।

उन कालजयी धर्मपाल प्रतिबोधक, समत विभूति आचार्य श्री नानेश को मेरी अनन्त श्रद्धांजलि।

-ब्रह्मपुरी चौक, बीकाने

नानेश गुणाष्टक

वनिता/विकल जैन

१. जिनकी साधना शक्ति आगे,
नत है अखिल जमाना।
समता सुमेरू नाना गुरु की
मुश्किल महिमा गाना॥

२. नाम है नाना काम महाना,
जिनका जग के अन्दर।
उज्ज्वल यशो गाथा से गूंजे,
कण-कण अवनि अम्बर॥

३. सौम्य सुधाकर तेज दिवाकर,
महादेव थे दूजे।
जिनके पावन पद पकज को,
भक्ति भाव से पूजे॥

४. शान्त दान्त गुणी थे,
विलक्षण शास्त्रवेत्ता।
दुनिया को दुर्लभ है मिलना,
ऐसा गुण सम्पन्न नेता॥

५. अपना या पराया है यह,
भेद नहीं था मन में।
राजा रंक फकीर सभी थे,
सम उनके जीवन में॥

६. वचनामृत की छवि अनोखी,
चले पथ अविनाशी।
चातक चकौर पपैया जैसी,
दुनिया दर्शन प्यासी॥

७. यह आस्था का अर्घ्य मेरा,
स्वीकारो गुरु भगवन।
श्वास-श्वास सदा करेगा,
भक्ति भरा श्रद्धा अर्चन॥

८. समता दर्शन के प्राण,
समता सिद्धांत दिया था।
दुष्कर्मी दानव थे जो,
देव उन्हें बनाया था॥

-मोरवन डेम

□ उदय नागोरी
एम.ए. (दर्शन), जै. सि. प्रभाकर

अनन्य आत्मसाधना के साकार स्वरूप

वर्तमान सहस्त्राब्दी के सशक्त हस्ताक्षर, चिन्तन-योग-अध्यात्म को नव आयाम प्रदान करने वाले अभूतपूर्व धर्मप्रभावक, आचार्य श्री नानेश अनुपम आत्म-शक्ति के धारक रूप में समादृत रहे हैं। आचार की दृढता, विचार की उदात्तता एवं व्यवहार की सहजता समन्वित आपके विशिष्ट व्यक्तित्व से संयम, तप, प्रज्ञा, चारित्र, कारुण्य, वात्सल्य का सतत अमिय-वर्षण होता रहता था, जिसमें अवगाहन कर जन-जन ने धर्माभिमुख होकर अपनी चेतना का उर्ध्वारोहण किया। वस्तुतः उत्कृष्ट आत्म-साधना, यथार्थ तपाराधना एवं विशद ज्ञानाराधना द्वारा आचार्य श्री जी दिव्य आत्मदीप (अप्प दीवो) बन गये थे, जिन्होंने अगणित भव्यात्माओं को ज्ञानालोक से प्रकाशित कर स्वयं को चतुष्मंगल (धम्मो मंगल मुकिट्ठं) के प्रतीक रूप में प्रतिष्ठित किया। शाश्वत जीवन मूल्यों को युगीन चेतना/चिन्तन से सम्पृक्त करने की अप्रतिम क्षमता, गहन अनुभूति, अध्यात्म योग, समीक्षण ध्यान एवं तलस्पर्शी अध्ययन के अनन्तर अभिव्यक्ति/ उद्‌बोधन की सरलता से आपने सुषुप्त साधकों को संयम-साधना के राजमार्ग में अग्रसर होने के लिए सम्यक् राह दिखाई तो श्रद्धालुजनों को आत्मा से जुड़ने का सन्देश भी दिया।

लोकैषणा, आकांक्षा/अपेक्षा, पद-प्रतिष्ठा से अलिप्त इस अनूठे महासाधक ने देहव्यापी प्रयोगशाला में अथक प्रयोग कर चिन्तन की जो मुक्ता-मणियां हस्तगत कीं उनका सार यही है कि हम बर्हिमुखी गति को परिवर्तित कर केन्द्र में/आत्मा में अवस्थित हो, भेद-विज्ञान की अनुभूति द्वारा 'पर' पदार्थों से ध्यान हटाएं और आत्म-साक्षात्कार करलें तो पाएंगे कि चिरन्तन सुख/आनन्द का अक्षुण्ण भण्डार हमारे भीतर विद्यमान है। आवश्यकता है आत्म-ज्योति के प्राकट्य की एवं चेतना को विकसित कर परमात्म-पथ में आगे बढ़ने की। इसका प्रथम सोपान हैं- अनेक नहीं एक को जानें (जे एगं जाणइ, से सव्वं जाणइ) अर्थात् अपनी आत्मा को जानें तथा भीतर को जान कर बाहर को जानें। (जे अज्झत्थं जाणइ, से बहिया जाणइ)। आत्मलक्षी साधना के पुरोधा लोकसंत ने अपने प्रवचनों में कर्म, चारित्र्य, आत्मा, परमात्मा, समता, शान्ति, धर्म आदि की व्याख्या करते हुए स्पष्ट किया कि स्थूल चेतना द्वारा सूक्ष्म चेतना में प्रवेश करने का ही नाम है स्व-भाव में रमण करना। यही है आत्म समीक्षण एवं समीक्षण ध्यान-साधना।

आत्मसाधना के शिखर तक आरोहण करना ही गुरुदेव का लक्ष्य रहा और साधन थे संयम, सारल्य एवं सजगता। एतदर्थ 'अध्यात्म गगन के भास्कर' ने चित्त की निर्मलता, विचारों की विराटता, कषायों की कृशता एवं चिन्तन की सूक्ष्मता को मूलाधार मानकर अनवरत मौन साधना, अहर्निश ज्ञानाराधना व उत्कृष्ट समाधि योग द्वारा आत्मस्थ होने के लिए जो आत्मयोग प्रस्तुत किया वह स्तुत्य एवं स्पृहणीय है। चेतना के उन्नयन हेतु वे स्वयं अन्तिम समय तक विविध प्रयोग करते रहे और अपनी सन्निधि में आने वालों को विभाव से स्वभाव में प्रवृत्त होने की प्रेरणा देते रहे। परिणामस्वरूप आपकी तेजस्विता, ज्ञान-गरिमा एवं चारित्रिक ऊर्जा अनेक साधकों की प्रेरक बनी। साधना, विकसित आत्मशक्ति, ओजस्वी आभामंडल, अखण्ड बाल ब्रह्मचर्य पालन एवं भव्यता के प्रतिरूप ये महामनीषी युगाचार्य, युगान्तरकारी विरल विभूति एवं परम यशस्वी/ प्रतापी/ अतिशयधारी आचार्य तो थे ही एक जीवन्त इतिहास-पुरुष व गरिमा मण्डित नर पुंगव भी। जहां आपने सार्वभौमिक शान्ति हेतु 'समता-दर्शन' का अमोघ साधन प्रदान किया वहीं तनाव-मुक्ति व चित्त शुद्धि हेतु समीक्षण ध्यान की अनूठी देन में आत्म-चिकित्सक विशिष्ट

मनोवैज्ञानिक एवं विलक्षण आत्मसाधक भी बन गये।

आपकी आत्मसाधना विधि जटिल नहीं वरन् अत्यन्त सरल है। वहिरात्मा से अन्तरआत्मा एवं परमात्मा की यात्रा का पथ है अपनी अन्तर्गुहा में प्रवेश कर आत्मा तथा कषायों की समीक्षा करना। बाहर के अन्धकार को प्रकाश में परिवर्तित करना और स्वयं से जुड़कर सुखाभास से आत्मिक सुख को प्राप्त करना। वस्तुतः कषायों के आवरण ही आत्मा के प्रकाश को आच्छादित करते हैं अतः आवश्यक है कर्म बीज रूपी कषायों (रागो य दोसो, दोउ कम्म बीओ) को क्षय करना और यह तभी सम्भव है कि हम इनकी समीक्षा करते हुए आत्मा को जानें, पहचानें और अमृत-योग की साधना में प्रवृत्त हों। इस अन्तर्मुखी साधना के दौरान आत्म-विश्लेषण, स्व-बोध व आत्म समीक्षण द्वारा जब आत्म साक्षात्कार होता है तो हम जुड़ जाते हैं शाश्वत सुख व चिरन्तन आनन्द से। अहं के विगलन, क्रोध के दमन एवं लोभ के शमन से भौतिक सुखों/स्थैतिक दुःखों का न कोई अर्थ रह जाता, न अस्तित्व ही। बस अपेक्षित है भारंड पक्षी की भांति अप्रमत्त रह कर (भारंड पक्खीव चेर अपमत्ते) आत्मा में स्थित हो जाना अर्थात् देहस्थ रहते हुए भी देहातीत साधना में प्रवृत्त होना।

अन्तर-प्रवेश कर आत्म-साक्षात्कार की कला आपने किशोरावस्था में ही जान ली थी। आप जब भादसोड़ा से लौट रहे थे, उनके मन में मेवाड़ी मुनि श्री चौथमलजी म.सा. द्वारा सुने गये प्रवचन के शब्द झंकृत हो रहे थे। आत्म कर्तृत्व/भोक्तत्व (अप्पा कत्ता विकत्ता य), आत्म एकत्व (एगे आया), आत्म तुल्यता (आय तुले पयासु) तथा आत्म-संघर्ष (अप्पाण मेव जुज्झई) के सूत्र जानकर उनमें विरक्ति के भाव जागृत हो गये थे। मुक्ताकाश, सुरम्य प्राकृतिक छटा एवं नीरव एकान्त में अश्वारोही 'गोरधन' जैसे स्वप्नलोक में खो गया और रम गया आत्म-सरोवर की गहनता में। बीज रूप में पैठ गई थी उनके हृदय में समता, भेद दृष्टि, जीव-अजीव की विराटता एवं आत्मा की सामर्थ्य। उनका हृदय तड़फ उठा जब उन्होंने जानी छठे आरे की स्थिति और मानव जीवन की दुर्लभता तथा निश्चय कर लिया सागार धर्म से अणगार धर्म अंगीकृत करने/अणुव्रतों की पगडंडी से महाव्रतों के राजमार्ग में अग्रसर होकर आत्मोन्नयन करने का। व्यवहार के धरातल पर बीज में अदृष्ट शक्ति/संवेदना/प्रभावना को जानना तथा स्थूल/व्यक्त/अ[illegible] की ओर बढ़ने का प्रथम सोपान ही [illegible] था 'गुरुदेव' की अखंड आत्मसाधना, अपूर्व ध्यान योग एवं परमात्म दर्शन की उंचाइयां। कालांतर में मुनि, युवाचार्य एवं आचार्य की यात्रा में उनका लक्ष्य रहा आत्मदर्शन व उपलब्धि रही नव आयामी अध्यात्म योग की। वे स्वयं जागे और लाखों को जगाया तथा जिस आलोक को प्राप्त किया उसे मुक्तहस्त से लुटाया प्राणिमात्र को।

अपने उद्‌बोधनों में आपने सदैव इसी पर जोर दिया कि हम आवृत्त/सुषुप्त/सूक्ष्म आत्मशक्ति को देखें/ पहचानें/ स्वभाव-रमण करें और ममत्व-विसर्जन करें! आत्म-विसर्जन करें तो आत्म-विशुद्धि सुनिश्चित है। अनन्त, अविनाशी, चिरन्तन आत्म-शक्ति के प्राकट्य हेतु देह-शक्ति से आगे बढ़ना ध्येय है तो साधन हैं-विषयों को गलाना, कषायों को न्यून करना, पर/विनाशी तत्वों से ध्यान हटाना एवं आत्मा में स्थित/अवस्थित होना।

इस शाश्वत सत्य से साक्षात्कार कर आपने इसे जीवन/व्यवहार में भी उतारा। संघ/शासन के संचालन/सातत्य हेतु यथावसर लिये गए आपके निर्णय आत्मशक्ति प्रेरित व आत्म-प्रेरणा आधारित रहे और किसी आग्रह/कदाग्रह/पूर्वाग्रह को स्वयं पर हावी नहीं होने दिया। सहवर्ती संत-मुनिराजों/स्थानीय संघ पदाधिकारियों को यह ज्ञात नहीं हो पाता कि कल किधर व कब विहार होगा। अन्तर आत्मा से जो संकेत होता तदनुसार ही क्रियान्विति होती। आपके लिए तो जीवन एक सुदीर्घ यात्रा रही, पड़ाव नहीं अतः शिष्यों को स्थायी निर्देश थे कि बस तैयार रहो, ज्योंहि आदेश हो-कदम उसी ओर बढ़ा देना है।

ऐसे दृढ निश्चयी, अनन्त आत्मबल धारी, अपराजेय, अन्तर-आत्मा संचालित अध्यात्म योगी,

रत्नत्रय-आराधक का व्यक्तित्व अप्रतिहत एवं साधना-तपाराधना-चिन्तन-धर्माराधना का दुर्लभ सौम्य रूप था और जीवन में अरुणोदय से स्वर्णिम संध्या तक ज्योतित रहा। दिव्यता युक्त आदर्श निर्ग्रन्थ, दूरदर्शी दार्शनिक एवं जीवन्त दर्शन समन्वित इनके जीवन-दर्शन से अनेक आत्माओं को आत्मप्रकाश प्राप्त हुआ और आपके प्रज्ञा-सुमेरू रूप आत्मलोक से प्रभावित/आलोकित होकर जन-जन की चैतना स्पंदित हुई। आपसे प्रेरित होकर आपके लाखों अनुयायी धर्म को जीवन से जोड़ने हेतु संकल्पित हुए, जो एक विशिष्ट उपलब्धि है।

संयम-साधना के कीर्तिस्तम्भ, विचक्षण प्रतिमा के धनी, विरल विभूति, पारगामी प्रज्ञापुरुष, अध्यात्म-साधना के आदर्श आचार्य श्री नानेश अपने सांध्यकाल में देहातीत आत्मसाधना में लीन रहे व संलेखना संथारा पूर्वक मरण को वरण कर उन्होंने अंतिम मनोरथ हस्तगत कर लिया। उनकी शिक्षाओं का सार यही है कि हम जीवन को कुशाग्र पर ठहरी ओसबिन्दु के समान अस्थिर (कुसग्गे जह ओस बिन्दुए) मान कर क्षण मात्र भी प्रमाद न करें (समयं गोयम मा पमायए) और बाहर से भीतर प्रवेश करते हुए जीवन के परमानन्द व चरम लक्ष्य की ओर पथारूढ़ रहें। 'अन्तरपथ के यात्री' को यही वास्तविक श्रद्धांजलि है।

-कार्यालय सचिव, श्री अ. भा. सा. जैन संघ बीकानेर

तेरे पदरज की सेव

वै. इन्द्रा गुलगुलिया

हुवम क्षितिज पर थे प्रतिभासित
समताधन करुणामय देव
आज कहां हम कर पाएगें
तेरे पदरज की है सेव ॥

निर्मल निश्चलता का झरना
वहता था प्रतिपल सुस्वरूप
आज अस्त तुम हुए कहां हो
हे दिनकर ज्योतिर्मय रूप ॥

दिशा दिखाई सदा शिव की,
की सुखद जीवन की राह
द्वन्द्व भाव के परिनाशक की
रही हृदय में गुणकर चाव ॥

जिन शासन के संवर्धन का
रहा आप में था मन्तव्य
हमें दिखा दो आओ गुरुवर
शान्त भाव कर शुभ गन्तव्य ॥

इन्दु से थे शीतल साधक
भव्य गगन से थे तुम विशाल
तुम्हें खींचकर कहां ले गया
दुर्दित वन करके यह काल ॥

□ इन्दरचन्द बैद
सम्पादक-समता सौरभ

चारित्र चूड़ामणि

राजस्थान के दांता गांव की धरती धन्य है, जिसने भारत तथ समस्त विश्व को आचार्य नानेश जैसा धर्मरत्न प्रदान किया। ऐसे महान संत सदियों में यदा-कदा ही अवतरित होते हैं। अध्यात्म जगत के जाज्वल्यमान नक्षत्र, जैन जगत के सूर्य, मानव जाति के प्राण, चारित्र चूड़ामणि आचार्य श्री नानालाल जी म.सा., अतिशयी व्यक्तित्व के धनी थे। विरल ही होती है ऐसी महान आत्माएँ जो गगन मंडल में सितारों की भांति चमककर अपनी दीप्ति से संसार को आलोकित करती हैं। उनका दिव्य व्यक्तित्व, उज्ज्वल चरित्र, अप्रतिम जीवनशैली तथा प्रखर साधना पद्धति युगों-युगों तक लोगों का मार्गदर्शन करती रहेगी।

आचार्य नानेश का बाह्य जीवन जितना गौरवशाली था उससे कहीं अधिक गरिमामयी थी उनकी अंतर्वृत्ति। उनके चुम्बकीय एवं प्रभावान व्यक्तित्व में आकाश की सी विशालता, पृथ्वी की क्षमाशीलता और समुद्र जैसी गंभीरता समायी हुई थी जिसकी परिधि में प्रवेश मात्र से ही भावों में मंगल परिवर्तन प्रारंभ हो जाता था, और आत्मा अनायास ही दिव्य साधना के मार्ग की पथिक बन जाती थी। वे केवल संत साधक ही नहीं थे, वरन् मानव समाज के सजग प्रहरी तथा अनुपम युग-द्रष्टा भी थे। विचार और आचार की एकरूपता उनके जीवन की ऐसी विशेषता थी कि जो किसी को सहज ही पूज्य बना देती है।

हमें ज्ञात है कि विचार और आचार एक दूसरे के पूरक ही नहीं परस्पर संबद्ध एवं आबद्ध भी होते हैं। यदि किसी आचार के पीछे उसे संबल और स्थैर्य देने वाला कोई सम्प्रेरक विचार नहीं हो तो वह उत्तम होकर भी प्रभावहीन होता है। विचार की उत्कृष्टता अथवा निकृष्टता का प्रभाव आचार पर अवश्य ही पड़ता है। आचार की उत्तमता का परिचय उसके पृष्ठगत विचार से होता है। विचार और आचार मिलकर जीवन एवं चरित्र का निर्माण करते हैं। महापुरुषों के चरित्र प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से सभी के लिए अनंत हितकारी एवं प्रेरणादायी होते हैं। आचार्य नानेश तो चारित्र चूड़ामणि की लौकिक उपाधि से संज्ञापित थे। सहज ही दी गई इस संज्ञा का विश्लेषण शब्दों में करना न उचित है, न सरल ही। आचार्य नानेश की चारित्रिक विशेषताएं तो इतनी बहुमुखी थीं कि उनको एक सूत्र में गूंथ पाना संभव ही नहीं है। फिर भी उनमें से कतिपय प्रमुख विशेषताओं का दिग्दर्शन तो कराया ही जा सकता है।

कल्पना कीजिये एक ऐसे व्यक्ति की कि जिसका हृदय कुसुम कोमल, स्फटिक सम निर्मल, गंगाजल सम पवित्र परंतु वज्र सम कठोर हो जो जीवमात्र के प्रति करुणापूरित हो, स्नेहसिक्त और उदार हो, जिसकी बुद्धि और वाणी निर्मल हो, जिसका प्रभाव उन सभी आत्माओं के लिए पावनकारी हो, जो उसके आभा मंडल में प्रवेश करने को उत्सुक हो, जो संयम साधना, धर्माचरण एवं अनुशासन पालना में वज्र सम कठोर हो, और कर लीजिए साक्षात्कार उस व्यक्ति से जो नानालाल था परंतु वह आचार्य नानेश बन गया। इन्हीं विशेषताओं के कारण जगतवंद्य युग प्रधान संत बन गये। यह संत दूसरों के कष्ट स्वयं उठाकर दूसरों को सुख देना चाहता था, कठोर वचनों का मधुर वचनों से तथा कटु व्यवहार का मृदुल व्यवहार से उत्तर देना जिसका स्वभाव था। विकट परिस्थितियों, कठोर संकटों और समस्याओं के भंवरजाल में फंसकर भी जो धीर-गंभीर और शांत रह सकता था. तथा यश-अपयश, सुख-दुख,

सम्मान-अपमान, प्रशंसा-निन्दा आदि में समभाव बनाये रख सकता था। यही कारण था कि वह समता के दर्शन का प्रतिपादन कर सका। उसके व्यवहार का आदर्श प्रस्तुत कर सका तथा अंतर और बाह्य की तटस्थ भाव से समीक्षा कर समीक्षण ध्यान-साधना का मार्ग दिखा सका।

ऐसे महापुरुष के महाप्रयाण को जो संयम और चरित्र में सदा दृढ़ रहा हो, ज्ञानीजन महोत्सव ही मानते हैं, शोक का विषय नहीं। राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त ने लिखा भी है-

जो इंद्रियों को जीत कर, धर्माचरण में लीन है,
उनके मरण का सोच क्या, वो मुक्त बंधनहीन है।
जो धर्मपालन में विमुख, जिसको विषय ही योग्य है,
संसार में मरना उसी का, सोचने के योग्य है॥

आचार्य श्री नानेश का संपूर्ण जीवन ऐसे ही उज्ज्वल चरित्र का दिग्दर्शन कराता रहा। उन्होंने जीवन भर धर्म के मार्ग को तो आलोकित किया ही संघ के हित-साधन में भी कोई कमी नहीं छोड़ी। ऐसी दिव्य विभूति को आचार्य के रूप में प्राप्त कर चतुर्विध संघ तो धन्य हुआ ही, संपूर्ण समाज भी गौरवान्वित हुआ। अब अपने निर्वाण के बाद वे उन सिद्ध संतों की उस गौरवशाली परंपरा में सम्मिलित हो गये हैं जो अदृश्य रहकर भी समाज का मार्गदर्शन करती रहती हैं। अपने चरित्र और अपनी साधना के बल पर ही आचार्य नानेश ने यह दिव्य स्थान प्राप्त किया है और इस रूप में वे निश्चय ही अमर हो गये हैं।

- देशनोक

महा-प्रयाण

भगवन्त राव गाजरे •

कार्तिक कृष्णा तृतीया को, सत्ताईस अक्टूबर आया।
आचार्य नानेश ने ले संथारा, छोड़ी अपनी भौतिक काया॥

श्रमण सघ के महानायक वे, राष्ट्र संत आचार्य प्रवर।
श्रमण संस्कृति पालक पोषक, जन-जन के थे गुरु प्रवर॥

शक्ति-भक्ति का गढ़ दांता, उनको जन्म दे धन्य हुआ।
वर्ग-वर्ण से ऊपर उठकर, जन-जन भी कृतज्ञ हुआ॥

महावीर के संदेशों की, घर-घर अलख जगाई नित ही।
जय जिनेन्द्र का मंत्र देकर, दिव्य संदेश सुनाए नित ही॥

संयम, सेवा, त्याग, तपस्या, क्षमा, दया का बहा प्रवाह।
वाणी से अमृत झरता था, सूत्रों में ही सदा प्रवाह॥

सरिता बही सत्य-अंहिसा, जन-मन ने भी लाभ उठाया।
अंतिम क्षण तक गरिमा रख ली, सार्थक सफल जीवन पाया॥

जिनके ज्ञान प्रसाद ने अब तक, मेटा जग का जीवन क्रन्दन।
किया प्रेरित जीवन पथ में, उनको शत-शत मेरा वन्दन॥

- निम्बाहेड़ा

□ जसराज चौपड़ा, पूर्व न्यायाधीश

महान् आचार्यों की शृंखला की एक कड़ी

समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी, धर्मपाल प्रतिबोधक, बाल ब्रह्मचारी आचार्य नानालालजी म. उन युग पुरुष महान आचार्यों की महत्वपूर्ण शृंखला की कड़ी थे, जिन्होने शुद्ध साध्वाचार को जीवन का ध्येय बना संघ सेवा में अपने जीवन का उत्सर्ग कर दिया। वे आचार्य श्री आनंद ऋषिजी, आचार्य श्री हस्तीमलजी, आचार्य श्री तुलसी, पं. रत्न श्री समर्थमलजी एवं तपस्वीराज श्री चंपालालजी महाराज जैसे उन महान् आचार्यों की श्रेणी की कड़ी थे, जिन्होंने दीर्घ काल तक अपने-अपने संघ को नेतृत्व, प्रज्ञा व दिशा प्रदान की है। मैंने पं. आचार्य श्री गणेशीलालजी के नेतृत्व में जोधपुर में समस्त श्रमण संघीय (अलावा पू. आत्मारामजी महाराज के) मंत्रिमंडल का सिंहपोल का यशस्वी चातुर्मास भी देखा है व उसके बाद श्रमण संघ से अलग होकर हुक्म सम्प्रदाय का आचार्य पद संभालने का काल भी देखा है। पूज्य आचार्य श्री श्रीलाल जी महाराज ने पहले ही भविष्यवाणी कर दी थी कि इस शासन का आठवां पाट तपेगा व उस भविष्यवाणी को सार्थक करते हुए पू. आचार्य नानालालजी महाराज ने सम्प्रदाय को, ३५० से भी अधिक दीक्षाएं प्रदान कर अभिवृद्धि एवं एक दीर्घता प्रदान की।

धर्मपाल समाज को प्रतिबोधित कर अनेक परिवारों को मांसाहारी से शुद्ध शाकाहारी बनाया एवं अहिंसा के रंग में उन्हें रंगकर जैन बनाया, यह अपने आप में आचार्य प्रवर की अति विशिष्ट उपलब्धि है। समीक्षण ध्यान एवं समत्व की साधना का उपदेश उनके आचार्यकाल की महान उपलब्धियों में रहा है। उन्होने राजस्थान में ही केन्द्रित न रहकर आचार्य श्री तुलसी एवं आचार्य श्री हस्तीमलजी की तरह सम्पूर्ण देश का भ्रमण कर धर्मजागरणा की थी। अपने विशिष्ट व्यक्तित्व के आधार पर उन्होंने शुद्ध साध्वाचार एवं श्रावकाचार की तरफ जैन धर्मावलम्बियों का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित किया। वे गिनती के उन साधुओं व आचार्यों में से एक हैं जिन्हें लब्धियों ने नवाजा। वे एक महान् वचन-सिद्ध संत थे। वे करुणा के साक्षात् अवतार थे। हर श्रावक उनके चरणों में पहुंच ऐसा महसूस करता था कि आचार्य प्रवर उस पर ही स्नेह की वर्षा कर रहे हैं एवं वही उनका सर्वाधिक कृपापात्र है। जबकि वे करुणानिधि सब पर समान रूप से स्नेह वर्षा करते थे एवं सभी समान रूप से उनकी कृपा के पात्र थे।

आचार्य हस्तीमल जी म. की सम्प्रदाय से पू. आचार्य नानालालजी महाराज व उनके पूर्ववर्ती आचार्य गणेशीलाल जी म. एवं पूज्य आचार्य जवाहरलालजी म० के बड़े प्रेम संबंध थे। एक दूसरे के आचार्यों के प्रति समादर का भाव था एवं एक दूसरे के साधुओं एवं श्रावकों में भी बहुत मेलजोल रहा। अब उस प्रवृत्ति में कतिपय स्थानों में, जो थोड़ा बहुत एकान्तिक वर्चस्व का भाव प्रदर्शित किया जाता है उसे बढावा नहीं दिया जाना चाहिये। मिलकर रहने में शक्ति का संचार होता, प्रगाढ़ता बढ़ती है। सहिष्णुता, संवेदनशीलता एवं सम्मान का भाव बढ़ावा पाता है, वह एकान्तिक वर्चस्व के प्रदर्शन में संभव नहीं है। सापेक्षवाद एवं अनेकान्त को आधार मानकर चलने वाला जैन समाज थोडा अधिक सहिष्णु बने तो शायद उसकी सम्मिलित आवाज अधिक गौर से सुनी जायेगी व फलवती बन पायेगी। यह मात्र दो सम्प्रदायों की नहीं समस्त जैन समाज के समक्ष वर्तमान युग में जहां 'संघे शक्ति कलौयुगे' का घोष है, एक युगीन चुनौती है जिसे स्वीकार कर समाज को सही दिशा प्रदान करना बहुत महत्वपूर्ण है।

आचार्य नानेश जैसी महान विभूति यदाकदा ही इस भूमंडल पर अवतीर्ण होती है। उनके व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि.यही होगी कि हम अपने मतभेदों को गौण कर समता एवं सहिष्णुता को जीवन में शीर्ष स्थान प्रदान करें। उनके महाप्रयाण से समाज में वर्चस्वी आचार्यों की शृंखला में एक ऐसी कमी आई है जिसे शायद लम्बे अर्से तक पूरी करना संभव न हो।

-जयपुर

❁

ना ना करते रहे मनुज से देव बन गये

डा. महेन्द्र भानावत

(१)

अंधकार से उठे लड़े आंधी अन्धड़ से ।
समतावादी बने प्रकृति से चेतन जड़ से ॥
संप बिछाया सदाचार से धोया मल को ।
ज्योतिर्मय हो गये ज्योति दे गये सकल को ॥
काया छलनी बना कर्म से विमल छन गये ।
ना ना करते रहे मनुज से देव बन गये ॥

(२)

तुम थे तारनहार पार भवसागर कीना ।
सबको दिया बताय परस्पर रहना जीना ॥
दुःख बांटा सुख बढ़ा मैत्री की मिन्नत मुलकी ।
मिट्टी महकी और चाक पर कुलड़ी चहकी ॥
कोटि-कोटि जन के, जग के मन-मेव बन गये ।
ना ना करते रहे मनुज से देव बन गये ॥

-३५२ श्रीकृष्णपुरा, उदयपुर (राज.)

❑ मदनलाल जैन, बी.ए.
सेवानिवृत्त सेशन जज

निस्पृही आराध्य देव

इस विराट् विश्व में आत्मा चार गति चौरासी लाख योनियों में चक्कर लगाने को विवश है, परन्तु कुछ विरल आत्माएं भी हैं जो संसार के चक्र में न फस कर निरंजन-निराकार के रूप में बन जाती हैं। वह आत्मा, आत्मा से महात्मा एवं फिर परमात्मा के रूप में आसीन होकर संसार के फंदे से मुक्त हो जाती है। पंच परमेष्ठी मंत्र में चार कर्मों के क्षय करने वाले अरिहन्तों को प्रथम नमस्कार किया है, क्योंकि वे उस पद पर व सिद्धावस्था तक पहुंचने की राह बताते हैं। सिद्ध अवस्था दूसरे पद में है, जबकि वे तमाम कर्मों को समाप्त कर सिद्ध, बुद्ध होकर अरूपी हो जाती है। इसके बाद आचार्य, उपाध्याय एवं साधु-साध्वी समुदाय की वन्दना है। अरिहन्त प्रभु भी हमें इन चर्म चक्षुओं से दिखाई नहीं देते। रोज तृतीय पद वाले गुण गरिमा सम्पन्न महापुरुष ही हमें अपने उपदेशों से ज्ञान-दान देते हैं। इसी प्रकार आचार्य देव संघपति होते हैं तो उपाध्याय ज्ञान प्रदान करने वाले महात्मा। जैन धर्म व्यक्ति विशेष की वंदना से दूर विशिष्ट गुण सम्पन्न महात्माओं का उपासक है और इसीलिये गुणों के अनुसार स्मरण का संदेश देता है।

प्रभूत गुण सम्पन्न, अध्यात्म योगी, स्व-पर कल्याणकारी, महामनीषी, समता सिन्धु, सरस्वती गिरा सम्पन्न समता एवं समीक्षण ध्यान प्रणेता हमारे आचार्य श्री नानालालजी म० सा० थे, जो निरन्तर समाज हित की बात को ध्यान में रखते हुए महावीर देशनानुरूप श्रमण आचार के परिपालन के प्रबल समर्थ रहे। श्रमणाचार में कठोरता के साथ अपने शिष्यों के प्रति अनुराग से कोसों दूर केवल तप, संयम एवं आचार संहिता की पालना पर सदैव जोर देते रहे।

ऐसे महान् आचार्य श्री का अवतरण राजस्थान की वीर प्रसूता धरती 'मेवाड़' के दांता गांव में हुआ। इस छोटे से गांव में पैदा हुआ बालक कौन जानता है कि हुक्म संघ के अष्टम पाट को सुशोभित करेगा ? यह धरती वीरों, शूरों एवं भक्ति की साधना करने वाले सन्तों की जननी है। स्वर्गीय आचार्य श्री श्रीलाल जी म०सा० की यह भविष्यवाणी कि, 'इस पाट का क्या देख रहे हो आठवें पाट के ठाठ देखना। वह पाट चमत्कारिक एवं इससे भी अधिक प्रभावपूर्ण होगा।'' और सिद्ध हो गया मोड़ीलालजी पोखरणा के सपूत एवं मां शृंगारा के लाल 'नाना' के तेजस्वी व्यक्तित्व से जिसने बाल्यकाल से ही समस्याओं से समझौता नहीं किया। पिता का साया अल्पायु में उठने के बाद आपने व्यापार शुरू किया तो निष्ठा से, परन्तु धर्म भावना के जागरण के उपरान्त तो सब कुछ त्याग कर दीक्षा लेने को उतारू हो गये। परिजनों ने मोह-ममतावश आज्ञा नहीं दी तो अहिंसात्मक आन्दोलन भी किया। उन्होने पहले 'गुरु' परखा। वे जहां गये, वहां तुम्हें प्रेम से रखेंगे, आनंद से समय बीतेगा आदि प्रलोभन भी सन्तों ने दिये, पर उनकी आत्मा सच्चे गुरु की तलाश में रही। जिससे कि स्व पर कल्याण का मार्ग प्रशस्त होकर संयम की आराधना हो सके। दशवैकालिक सूत्र के अध्ययनोपरान्त तो साधुचर्या से भिन्न भिक्षाओं आदि में संयम पालन की कमी को देखकर वे सच्चे गुरु की तलाश में जुट गये।

उनकी दृष्टि खोजते-खोजते जैन जगत के दिव्य नक्षत्र ज्योतिर्धर जवाहरलाल जी महाराज की तरफ गई। वे प्रखर पाण्डित्य के धनी, सूक्ष्म प्रज्ञा एवं विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, गम्भीर विचारणा, अपूर्व तर्कणा एवं अगाध चारित्राराधन वाले आचार्य थे। उन्हीं के शिष्य युवाचार्य श्री गणेशीलालजी महाराज की सेवा में पहुंच कर उन्हें व

उनकी परम्परा को उन्होंने नजदीक से देखा और संतुष्ट होकर उसी परम्परा में दीक्षित होने की ठानी।

लेकिन परिजन कब मानने वाले थे। उन्हें डराया, धमकाया, कष्ट दिया, ताले में बन्द भी रखा, परन्तु हमारे चरितनायक पर कोई असर नहीं हुआ। उदयपुर चातुर्मास के दौरान धोरी श्रावकों की परीक्षा के उपरान्त उनके द्वारा परिजनों को समझाने पर आज्ञा-पत्र मिल गया व चातुर्मास के बाद कपासन में श्री गणेशीलाल जी महाराज सा० के मुखारविन्द से दीक्षा मंत्र लेकर 'नाना' से मुनि श्री नानालाल बन गये। दीक्षा के उपरान्त तो वे ज्ञान, ध्यान, अध्ययन, सेवा एवं संयम साधना में इतने लीन हो गये कि खाने-पीने, आराम की चिन्ता ही नहीं रखते। हर सेवा कार्य में पहले और इस प्रकार मुनि वेश की धवल चादर की शोभा दिन दूनी रात चौगुनी बढने लगी। साधना, सेवा एवं स्वाध्याय के त्रिवेणी संगम एवं दशवैकालिक सूत्र की पंक्ति 'जुत्तो सया तव समाहिए' (साधक तप समाधि से युक्त रहे) का अनुसरण कर वे खरा सोना बन गये। उनकी चेतना संयम-साधना में ही निरत रही, जिससे वे आचार्य श्री गणेशीलालजी के परम् कृपा पात्र बन गये।

एक विशाल श्रमण संघ की योजना बनने का जब अवसर आया, तब आपने भी अपूर्व योगदान दिया, परन्तु ध्वनिवर्द्धक यंत्र एवं श्रमण शिथिलाचार के कारण श्रमण संघ के उपाचार्य होते हुए भी आचार्य श्री गणेशीलालजी ने पद त्याग कर श्रमण संस्कृति की पालनार्थ दिनांक ३०.११.६० को पूर्व स्थिति में आ गये। उनके आदेश के अनुसार हमारे चरितनायक हर समय एकता के पक्षधर रहे। उन्हें १८.४.६१ को युवाचार्य मनोनीत कर उदयपुर के राजमहलों के प्रांगण में आसोज सुदी २ को चादर प्रदान की गई। तत्पश्चात् श्री गणेशीलालजी म.सा. के स्वर्गवासोपरान्त आप अष्टम पाट को सुशोभित करने लगे।

पाट पर विराजते ही संघ का गौरव बढ़ने लगा। जैन समाज में साधु समाचारी की कठोरता से पालना करने के उपरान्त भी आपके कार्यकाल में सैकड़ों दीक्षाएं हुईं। ज्ञान, ध्यान, संयम साधना में निरत रहकर व समता के प्रणेता बनकर आपश्री अपने संघ का कुशलता से नेतृत्व करते रहे। उनके मन में यह टीस अवश्य रही है कि जिन सन्तों को ज्ञान दान देकर आगे बढाया वे ही पद के मोह में आ गये। उन्होंने काफी कुछ सुपथ पर लाने का प्रयत्न भी किया, पर शिथिलाचार के समर्थक नहीं बने।

गुरुदेव श्री का मंझला कद, भरी-पूरी सुडोल काया, कोमल एवं कांतिमय गेहुंआ वर्ण, तेजोदीप्त विशाल भाल, गंभीर मृदु हास्यमय प्रसन्न बदन एवं सामुद्रिक सुलक्षणों युक्त तथा संयम मय आध्यात्मिक तेज का यह चमत्कार रहा कि भारत भर के जाने-माने नेतागण भी आपश्री के दर्शन कर धन्यता अनुभव करते रहे। जैन धर्म के अन्य आचार्य भी आपकी धवल कीर्ति से प्रभावित थे। उनके चरण सरोजों में बैठकर हजारों हजार मुमुक्षु आत्माओं ने अमृतवाणी का पानकर जीवन को धन्य बनाया। उन्होंने देश के कोने-कोने में जाकर जैन धर्म का प्रचार कर धर्म का सही रूप जन-जन के समक्ष रखकर दया, दान, परोपकार एवं स्व-कल्याण का मर्म समझाया। अन्तिम चातुर्मास भी राजस्थान के मेवाड़ की ही धरती उदयपुर में रहा, जहाँ रुग्णावस्था में डाक्टरों ने इस अध्यात्म योगी के आत्मबल से हार मान ली। उनके अनुसार यह देह उनके आत्मबल से ही चल रही थी- दिये का तेल तो बहुत पहले समाप्त हो गया था और अन्त में उदयपुर चातुर्मास में जन-जन के श्रद्धा केन्द्र अपने भौतिक स्वरूप को त्याग कर ज्योति-पुंज में समाहित हो गये।

हमारे चरित नायक का जीवन जगमगाते ज्योति-पुंज रवि की तरह प्रकाशित रहा। उन्होंने संयम-साधना का अच्छा आदर्श रख कर जैन शासन का गौरव बढ़ाया। हजारों हजार नेत्रों की अविरल अश्रुधारा के बीच मौन आशीर्वाद देते हुए आगे बढ़ने की प्रेरणा दी-ऐसे आचार्य श्री को हार्दिक श्रद्धांजलि एवं अभ्यर्थना। उनका वरद-हस्त सदैव बना रहे, जिससे शासन गौरवान्वित रहता हुआ निरन्तर आगे बढ़े।

-गंगापुर

❑ मुरारीलाल तिवारी
पूर्व न्यायाधीश, मध्यप्रदेश

शताब्दी की महान् विभूति

इतिहास इसका साक्षी है कि वे कहने को श्रमण भगवान महावीर की अहिंसा धर्म परायण श्री साधुमार्गी स्थानकवासी जैन परंपरा के अष्टम पट्टधर थे, इन विभूति को केवल एक संप्रदाय विशेष की परिधि में रखकर देखना उनके महान् व्यक्तित्व के प्रति न्याय नहीं कहा जा सकता।

वे निश्चित ही जैन परंपरा के प्रसिद्ध आचार्य तो थे किंतु उनके व्यापकत्व को उस परंपरा की सीमा तक मर्यादित करना इस महान आचार्य का सही आकलन नहीं कहा जा सकता।

इस लेख के माध्यम से हम उनकी संजीवनी शक्ति तथा नूतन दृष्टिकोण को उत्कीर्ण करने का लघु प्रयास करना चाहते हैं।

अंहिसा धर्म के अनेक आचार्यों की दिव्य वाणी तथा भव्य संदेश से हम परिचित हैं और इस आधार पर उनका बहुमान करते हैं।

आचार्य श्री नानेश के चिंतन का केंद्र बिंदु आम आदमी रहा है, उन्होंने आम आदमी की अवधारणा को अपने आध्यात्मिक प्रयोगशाला में नये स्वरूप प्रदान किये है। चिंतक की दृष्टि से उनकी यह दृढ़ आस्था थी कि मनुष्य स्वभावत: दयामय तथा करुणामय होता है, उसकी क्रूरता का कारण उसका परिवेश है। हृदय परिवर्तन संभाव्य है, उसके पश्चात् उसका सही मानवीय स्वरूप समाज में प्रकट हो सकता है। आवश्यकता है उसके प्रति दृढ़ आस्था तथा सद्विचार एवं संस्कार जिसके माध्यम से नया मनुष्य जन्म ले सकता है।

आपने जीवन भर एक महान प्रायोगिकी की तरह इस प्रयोग में सिद्ध पुरुष का परम पद प्राप्त किया।

आदिनाथ ऋषभदेव से तीर्थंकर भगवान महावीर तक तथा मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, योगीश्वर श्रीकृष्ण तथा पूज्य महात्मा गांधी तक अनेक प्रयोग इस राष्ट्र में हुए हैं। आचार्य श्री नानेश के पूर्व महान् आचार्य श्री जवाहराचार्य ने राष्ट्रीय जीवन में नये रंग भरे थे, उनके अधूरे कार्यों को पूर्णता प्रदान करने का सपना हमारे इन श्रद्धेय आचार्य ने संजोया। यह सपना निश्चित ही दर्शन के क्षेत्र में नवीन था।

उपनिषदों में कहा है-सब में ब्रह्म व्याप्त है। महाकाव्य रामचरित मानस में गोस्वामी तुलसीदास ने इसी भावना को विस्तृत करते हुए कहा है, 'सिया राम मय सब जग जानी, करहुं प्रणाम जोरि जुग पानी।' परंतु यह दर्शन तथा काव्य की भाषा में सिमटकर रह गया।

आचार्य श्री नानेश ने इस दर्शन एवं काव्य की भावना को सगुण रूप प्रदान कर दर्शन और काव्य को प्रामाणिकता प्रदान की है। जैन धर्म के मूल स्वभाव को पहचानने की अद्भुत कसौटी इन आचार्य को परमात्मा की देन थी। उन्होंने बहुत सरल तथा सहज ढंग से जीवन के अमृत सूत्र का सृजन किया, इसी पवित्र सूत्र का नाम 'समता दर्शन' है।

विश्व मानवता का यह सद्विचार विश्व मानवता के राजतिलक का शुभारंभ है।

मानव मात्र के प्रति समता की दृष्टि, समभाव आ जाए तो बंधुत्व जन्म ले सकता है। यदि मानवता के प्रति बंधुत्व का रिश्ता हो जाए तो अन्याय की संभावना समाप्त हो जाए।

प्रत्येक मानव के पास समता के प्रेमबंधन से, मानवता से हिंसक वृत्ति तथा पशुत्व समाप्त करने का स्वतंत्र तथा पूर्ण मानव निर्माण का उनके द्वारा दिया गया यह शिल्प युगों तक हमारी चेतना को जागृत करता रहेगा।

आचार्य श्री नानेश एक तरह से अति संवैधानिक क्रांति के जनक के रूप में पहचाने जाएंगे। इस राष्ट्र के संविधान रचयिता समता, बंधुता,न्याय तथा स्वतंत्रता का उद्घोष करते हुए भारतीय संविधान के आमुख में लिखते हैं तथा संवैधानिक व्यवस्था के माध्यम से समता के सूत्र को स्थापित करना चाहते हैं, जिसमें लोक प्रशासन, न्याय व्यवस्था, संसद तथा विधान सभाएं अपनी भूमिका प्रस्तुत करती हैं, इस विधि सम्मत व्यवस्था में प्राण प्रतिष्ठा का कार्य आचार्य श्री नानेश अपने समग्र यशस्वी जीवन भर करते रहे। इस कार्य की संपन्नता में जैन दर्शन का तथा संस्कृति के समन्वय का सूत्र अनेकांत दर्शन तथा स्याद्वाद की भाषा उनके प्रयोग के सहज उपकरण थे।

उनके ये सारे प्रयोग उनके अंतर चिंतन, अंतर मन में उत्पन्न थे। यह आश्चर्य है कि इस विभूति ने जब योग और ध्यान की ओर अपनी सम्यक् पैनी दृष्टि से देखा तो ध्यान भी समीक्षण ध्यान हो। इसका सीधा अर्थ है कि समता ही सफल जीवन की श्रेष्ठ दृष्टि है।

समता को स्थापित करने के लिए ध्यान भी समीक्षण ध्यान हो, चिन्तन के आधार पर जब जानदार लोगों ने इस आचार्य को समता विभूति कहा तब यह अलंकरण अन्य राजनयिक अलंकरणों से सर्वथा भिन्न था। सत्य तो यह है कि जिस समता के प्रयोग धारक के रूप में पूज्य महात्मा गांधी, आचार्य विनोबा भावे तथा लोकनायक जयप्रकाश की परिगणना की जा सकती है तो परंपरा से हटकर आचार्य श्री नानेश इस विभूति दर्शन के महान आचार्य के रूप में स्मरण किए जायेंगे।

बड़े संकोच के साथ लिखना पड़ता है कि उनका यह प्रयोग मालव भूमि में उजागर हुआ, राजस्थान शौर्य और धर्मवीर के रूप में जब मालव भूमि पर उन विहार हुआ तो उस विहार काल में उनका अंतरमन त अंतरचक्षु जो समता के अमृत से प्लावित था, एक करु की धारा की तरह, मंदाकिनी का रूप धारण करता ह यह मंदाकिनी पौराणिक गंगा से सर्वथा भिन्न थी कथानक के अनुसार महाराज सगर के पुत्रों की भस्मी प्रवाहित करने के लिए महाराज भगीरथ धरती पर गं लाए थे। आचार्य श्री नानेश का यह दूसरा भगी प्रयास था कि मद्यपान, मांसाहार, आचरण विहीन मनु कहलाने वाले हिंसक व्यक्तियों में अहिंसा व करुणामूर्ति की स्थापना करना, उस पौराणिक युक्ति जिसमें मर्दों की भस्मी प्रवाहित करने का उल्लेख हो जीवंत हिंसक मनुष्यों में करुणा और दया की सरिता प्रवाहित करने का नूतन भगीरथ प्रयास था। इस युग एक प्रयोग चम्बल के बीहड़ों में डाकू उन्मूलन समस निदान के रूप में आचार्य विनोबा तथा लोकनाय जयप्रकाश ने किया था, उसके विस्तृत विवेचन आवश्यकता नहीं हैं,परंतु मालवा के जन जीवन दैनन्दिन क्रूरता तथा हिंसा का उन्मूलन कर हिंसक जीव जीने वालों को धर्मपाल में रूपांतर कर मानवता के सृजन में आचार्य श्री नानेश की भूमिका स्तुत्य है। इस राष्ट्र में चल रहे धर्म परिवर्तन तथा धर्मान्तरण अभिशाप से सर्वथा भिन्न प्रयोग था।

यहां न पद का लोभ, न भौतिक सुखों का लो कुछ भी तो नहीं था, केवल आचार्य की मधुर वा थी। एक अहिंसक प्रयोग जिसमें अहिंसा कवच ब जाए, ऐसा प्रयोग एक महान् जैनाचार्य से संभव हो सक यही उनके जीवन का चमत्कार है।

जैन दर्शन में चमत्कारों का कोई स्थान नहीं बिना शल्य क्रिया के प्रेम और माधुर्य से हृदय परिवर्त का यह अद्भुत क्रियात्मक स्वरूप मानव क्रांति नहीं क्या है ? इसलिए एक क्रांति के अग्रदूत की तरह य राष्ट्र, जैन तथा जैनेतर जगत इन आचार्य चरणों को वन्द करता रहेगा, उनकी जीवन यात्रा एक महान प्रयोग थ

यात्रा के रूप में हमारे स्मृति पटल पर चिरस्थायी रहेगी। वे जीवन के शाश्वत मूल्यों के निमित्त जीवित रहे व प्रत्येक मानव को साधुमार्गीय बनाने का प्रयत्न करते रहे ताकि यह राष्ट्र श्रेष्ठ नागरिकों का देश बन सके तथा विश्व मानवता को जहाँ पहुंचना इष्ट है, उसका मार्ग प्रशस्त करते रहे। ऐसे समता विभूति के महाप्रयाण से भारत ने एक आचार्य रत्न को खो दिया।

-उज्जैन

✿

समीक्षण ध्यान

मोतीलाल गौड़

समीक्षण ध्यान की धारा में,
रे मन डुबकी लगाले रे।
समभाव की सीमा में चलता,
सम्यक् दृष्टि बना ले रे ॥
रोगों से ग्रसित तन तेरा।
रागों से दूषित मन मेरा ॥
कैंसर की व्याधि लोभ बना,
लोभ से पिंड छुड़ाले रे ॥१॥

माया में तू यों लिप्त न हो,
लोभ निरन्तर तृप्त न हो।
सब पापों का बाप है यें,
लोभ से दूर हटाले रे ॥२॥

तन का पद का धन का भी,
लोभ बुरा है मन का भी।
झगड़े की जड़ को आज मिटा,
साधक पथ अपनाले रे ॥३॥

मेरा है ये मेरा मेरापन,
माया में ममता का बन्धन।
जीवन में शान्ति मिल जाए,
समता का पाठ पढ़ाले रे ॥

- उपाचार्य, आचार्य श्री नानेश समता शिक्षण समिति, नानेश नगर

❑ प्रो. सतीश मेहता

२०वीं शताब्दी के महानतम् आचार्य

वीर शिरोमणि राजस्थान की धरती वीर प्रसूता है। इस धरती ने जहां असीम साहस, शक्ति, शौर्य और वीरता के धनी जोध जवानों को जन्म दिया, वहां अटूट भक्ति, अनवरत साधना और अखंड समर्पण की त्रिवेणी में अवगाहन करने वाले संतों, भक्तों तथा तपस्वियों को भी जन्म दिया है।

एक ओर इतिहास पुरुष एवं स्वाधीनता के प्रेरक महाराणा प्रताप इसी माटी के पुंजीभूत पौरुष की अद्भुत मिशाल बने हुए हैं। अपनी भक्ति के प्रवल प्रताप से संत शिरामेणि मीरा ब्राई ने गिरधर गोपाल कृष्ण को अपने प्रभुजी के रूप में धारण कर विष का प्याला पिया था। वहीं राणा सांगा हुए जिन्होंने अस्सी घावों से क्षत-विक्षत शरीर की परवाह किये बगैर मातृ भूमि की रक्षा में जीवन समर्पित किया।

ऋषि-मुनियों, साधु-महात्माओं तथा संत-सतियों ने अपने तप-बल से धर्म तथा अध्यात्म का जो आलोक दिया, उससे इस प्रदेश का हर गांव, ढाणी, महल, मगरी, टेकरी, मालिया तथा घर-गली दीपित है। अतः सत्य, शिवम् और सुन्दरम् से परिपूरित इस मेवाड़ की धरती ने न केवल राजस्थान वरन् संपूर्ण भारत भूमि के गौरव में चार चांद लगाये हैं।

इसी धरा पर ऐसा ही एक छोटा-सा गांव है दांता जो ऐतिहासिक चित्तौड़गढ के पास स्थित है। जहां पर एक सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय तथा सर्वोपदेशाय महापुरुष इस भूतल पर अवतरित हुए थे। निःसंदेह भारत के मनीषियों और ऋषियों की परम्परा में उनका नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जाने योग्य है, वे हैं स्वर्गीय आचार्य श्री नानेश।

आचार्य श्री नानेश बीसवीं सदी के महान् संत थे। वे ज्ञान के सागर थे। उनका व्यक्तित्व व्यापक, विशाल, प्रेरक व गौरवपूर्ण था। समता विभूति, अध्यात्म योगी की उपाधि ही उनके व्यक्तित्व की विशालता एवं व्यापकता की द्योतक थी। वे अद्भुत प्रतिभा के धनी थे। उनकी सर्वतोमुखी प्रतिभा किसी विषय विशेष तक ही सीमित नहीं थी अपितु उन्होंने विभिन्न विषयों पर महान् ग्रंथों का प्रणयन कर वांगमय के प्रत्येक क्षेत्र को अपनी लेखनी एवं वाणी से विभूषित और समृद्ध किया। वे एक मूर्तिमान ज्ञान कोश थे। उनमें एक साथ ही वैयाकरण, दार्शनिक, साहित्यकार, इतिहासकार, पुराणकार, धर्मोपदेशक और महान् युग-पुरुष का अन्यतम समन्वय हुआ है। केवल साहित्य के क्षेत्र में ही नहीं अपितु सामाजिक, धार्मिक व अन्य क्षेत्रों में भी आचार्य श्री ने अपूर्व योगदान दिया है।

इस महापुरुष ने १९ वर्ष की उम्र में अपने समय के प्रसिद्ध जैनाचार्य श्री गणेशीलाल जी म.सा. से साधु दीक्षा कपासन में ग्रहण की थी। आपने अल्पकाल में ही जैन शास्त्रों एवं आगमों का गहन अध्ययन करके प्रखर पाण्डित्य एवं प्रवीणता प्राप्त कर ली।

जैनाचार्य श्री नानेश ने विभिन्न ग्रन्थों, कृतियों का लेखन किया था जिनमें जिणधम्मो, समता दर्शन और व्यवहार, समीक्षण ध्यान, आत्म समीक्षण, कषाय समीक्षण, ऐसे जीएं, समता निर्झर, पावस प्रवचन, प्रवचन-पीयूष, संस्कार-क्रान्ति, समीक्षण-धारा, समता क्रान्ति का आह्वान, जलते जाएं जीवन दीप, कर्म-प्रकृति, भगी पर्त के हस्ताक्षर, जीवन और धर्म, अमृत सरोवर, प्रेरणा की दिव्य रेखाएं, मंगलवाणी, आध्यात्मिक वैभव, लक्ष्य वेध, कुंकुम के पगलिए आदि प्रमुख हैं।

समता साधक, आध्यात्मिक योगी, श्री नानेश का व्यक्तित्व आकर्षक एवं प्रभावशाली था। अतः उन्होंने अपने प्रभावी व्यक्तित्व, ओजस्वी तथा आकर्षक वाणी द्वारा समाज को अपनी ओर आकर्षित किया और छः दशक तक संयमी जीवन एवं समतामय साधनारत रहते हुए समाज को नवीन दिशा दी। आचार्य श्री का संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, गुजराती आदि भाषाओं पर समान अधिकार था।

आपकी दीक्षा एवं संयमी जीवन के ५० वर्ष पूरा करने पर देश भर में अर्द्धशताब्दी दीक्षा समारोह संयम सेवा तप-त्याग एवं साधना दिवस के रूप में १९९० में मनाया गया। जो एक 'मील का पत्थर' साबित हुआ। आप संवत् २०१९ में जैनाचार्य श्री गणेशीलालजी महाराज के देवलोक होने पर आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए एवं आचार्यकाल के लगभग चार दशकों में आपने धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक आध्यात्मिक क्षेत्र में क्रान्ति की। आपने अपने साधु जीवन में राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, हरियाणा, दिल्ली, उड़ीसा, उत्तरप्रदेश आदि प्रदेशों के सुदूरवर्ती गांवों में पद विहार कर जन साधारण के आत्म चैतन्य को जागृत कर सदाचार, निष्ठा, नैतिक जीवन जीने की प्रेरणा फूंकी।

जैनाचार्य श्री नानेश का संयमी जीवन सेवा, पुरुषार्थ और समता का साकार रूप था। बढ़ते हुए भौतिक चकाचौंध से परे रहकर आप भगवान महावीर द्वारा श्रमण धर्म के लिए निर्धारित अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह रूप महाव्रतों का मन, वचन, काया से पूर्णतया कठोरता पूर्वक परिपालन करते थे एवं अपने शिष्य परिवार से करवाते थे। पाश्चात्य सांस्कृतिक परिवेश के युग में आपके साधनामय समता जीवन से प्रभावित होकर लगभग ३५० युवक-युवतियों ने सांसारिक मोहमाया छोड़कर आपके चरणों में दीक्षा ग्रहण कर श्रमण धर्म को स्वीकार किया। जो भोग पर योग असंयम पर संयम और रागद्वेष पर वीतरागता की विजय के प्रतीक के रूप में देखने को मिला।

आज विश्व भर में विविध विषमताओं का बोलबाला है। आचार्य श्री नानेश ने अशांति एवं विषमताओं से मुक्ति के लिए राम बाण चिकित्सा के रूप में समता दर्शन का चिंतन किया। समता दर्शन का लक्ष्य है समता विचार में हो, दृष्टि और वाणी में समता हो तथा समता आचरण के प्रत्येक चरण में हो। जब समता जीवन के हर स्तर में प्राप्त होगी और सत्ता तथा सम्पत्ति के अधिकार में होगी तो व्यवहार के समूचे दृष्टिकोण में भी परिवर्तन होगा। समता मनुष्य के मन में होगी तो वह समाज के जीवन में भी होगी। समता जीवन में आये इस हेतु आपने सामायिक व प्रतिक्रमण जैसी धार्मिक क्रियाएं प्रतिदिन करने पर बल दिया है ताकि समता जीवन का अंग बन सके।

आपने मन में उठने वाले क्रोध, मान, माया, लोभ आदि पर नियंत्रण पाने के लिए एक साधना पद्धति दी जो 'समीक्षण ध्यान' के नाम से विख्यात हुई। समीक्षण ध्यान मन को छोटी-मोटी उपलब्धियों में नहीं वरन् परम अध्यात्म परम आंनद की सरिता में गोता लगाने एवं कषाय वृत्ति से रहित रखने में समर्थ है। एक बार उसे अंतरात्मा की झलक मिली की उसे इन्द्रियों के बाह्य विषय आकर्षित नहीं कर सकेंगे।

इस रूप में समीक्षण ध्यान द्वारा हम न केवल मन की शक्ति को ही पहचानते हैं अपितु अन्तः चेतना में जो-जो शक्तियों छिपी हैं उन्हें भी जान लेते हैं। इस ध्यान के द्वारा ही हम अन्तरंग निधि का साक्षात्कार करके दारिद्रय को मिटाकर परम गंभीर, परम श्री सम्पन्न बन जाते हैं। इसी आधार पर ध्यान को कल्पवृक्ष, कामधेनु जैसे तत्त्व से संबोधित किया जाता है। जैसे कल्पवृक्ष कामधेनु मनोवांछित फल प्रदान करने वाले हैं उसी प्रकार समीक्षण ध्यान साधना आनंद प्रदान करने वाली प्रक्रिया है।

आचार्य श्री के उपदेशों से प्रेरणा पाकर मालवा क्षेत्र के ६०० गांवों के एक लाख बलाई अहिंसक एवं व्यसन मुक्त जीवन जीने के लिए संकल्पबद्ध हुए हैं। आपकी प्रेरणा से ये बलाई संयम, समता, सादगी, सुसंस्कारी, व्यसन मुक्ति, स्वच्छता एवं सुस्वास्थ्य का जीवन जी रहे हैं। यह सामाजिक क्रान्ति आचार्य श्री

नानेश ने की जो 'धर्मपाल अभियान' के नाम से जानी व मानी गयी।

धर्मपाल अभियान एक ऐसा लोक कल्याणकारी अभियान है जो समूचे जैन समाज ही नहीं अपितु भारतीय समाज को गौरवान्वित करता है।

आचार्य श्री ने फिजूलखर्ची को राष्ट्रीय अपराध बताते हुए कहा कि भारत जैसे गरीबों के देश में तो इस अपराध का आकार और अधिक गुरुत्तर माना जाना चाहिए। जिस देश में एक ओर करोड़ों लोग भूखमरी के कगार पर हैं तथा छोटे बच्चों को दूध तक दुर्लभ नहीं है, उस देश में आतिशबाजी जैसी निरर्थक प्रवृत्ति पर पानी की तरह पैसा बहाना अपराध ही नहीं मानवता पर घोर अत्याचार है। आचार्य श्री ने कहा है कि फिजूल पूरी तरह रोक दी जाए बल्कि जो उचित खर्च हैं कम करके बचत की जाए तथा उस राशि का गरीबों का दुख दर्द कम करने और मिटाने के कामों में किया जाए।

उनका असामयिक स्वर्गवास मानवता पर घात है, एक अपूरणीय क्षति है।

अध्यात्म योगी, समता साधक, समता समता के प्रणेता को मेरा शत्-शत् वंदन, अभि हार्दिक श्रद्धांजलि।

-श्री जैन पी.जी. कॉलेज,

प्रज्ञा पुरुष को प्रणाम

सुमित्रा मेहता

गुरु नाना तुम्हारे चरणों में
श्रद्धा के फूल चढाते हम।
इतनी शक्ति तुम दो हम को,
समता साधक बन जायें हम॥

सुख शान्ति का आधार है समता,
सम भावों से समता का फूल खिलता।
समता और समानता का वृक्ष लगाकर,
वतन के चमन में अमन का फल लगता॥

आज हमें सदा याद आते रहेंगे,
चरणों में हम शीश झुकाते रहेंगे।
समता, समीक्षण अरु संस्कारों का,
ध्वज डगर डगर में फहराते रहेंगे।
चिरऋणी रहेगा जैन जगत आपका,
प्रज्ञा पुरुष को प्रणाम भव-भव का।

-बड़ीसादड़ी (

❑ डा. कविता मेहता

समता, संयम, समीक्षण साधना के कल्पवृक्ष

परम् श्रद्धेय आचार्य श्री नानालालजी म.सा. भारतीय सन्त परम्परा के आदर्श थे। उनका व्यक्तित्व असाधारण था। अपनी रचनात्मकता और कल्पनाशीलता से उन्होंने न सिर्फ जैन समुदाय वरन् सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। आचार्य श्री के दर्शन एवं आशीर्वचन का लाभ मुझे बचपन से मिलता रहा। आचार्य श्री के व्यक्तित्व से प्रभावित हुए बिना कोई रह नहीं सकता था। जहां समता, साधना एवं स्वाध्याय की त्रिवेणी मिलती है, उसमें अवगाहन किये बिना कोई कैसे रह सकता है। आचार्य श्री का व्यक्तित्व करुणा एवं समता की प्रतिमूर्ति था, उन्हें मैं कभी भूला नहीं पाऊंगी। आपके हृदय में करुणा और वात्सल्य का सागर लहराता था। आपकी सहन शक्ति अपरिमित थी। आपके दीर्घ जीवन में ऐसी कई प्रतिकूल परिस्थितियां आईं, लेकिन आपने मुस्कराते हुए उनका सामना किया।

आप एक बार जो निर्णय कर लेते, उस पर मेरू पर्वत के समान अड़ोल व अकम्प रहते। आपका व्यक्तित्व बहुरंगी और बहुमुखी था। गम्भीरता, धैर्य, निस्पृहता, सतत जागरूकता का अद्भुत मिश्रण था आपके व्यक्तित्व में।

आचार्य श्री भारतीय श्रमण परम्परा के महान् आचार्य, उच्च कोटि के आध्यात्मिक सन्त, विशिष्ट ज्ञानी ध्यानी-साधक, संयम साधना के कल्पवृक्ष, प्रज्ञा पुरुष थे। आप कथनी व करनी की समानता पर सदैव जोर देते रहे। ज्ञान के साथ क्रिया की उत्कृष्टता से ही सार्थक परिणाम मिल सकता है, ऐसी मान्यता आप की सदैव रही। इसी परिप्रेक्ष्य में आपने सामाजिक क्रान्ति-संस्कार क्रान्ति का शंखनाद किया। आपके उपदेशों से प्रभावित होकर मध्यप्रदेश के आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र के एक लाख से भी अधिक, व्यक्ति कुव्यसन त्याग कर व्यसन मुक्त हुए और धर्मपाल कहलाए।

आचार्य श्री का २७ अक्टूबर ९९ को रात्रि के लगभग १०.४१ बजे उदयपुर में एक दिवसीय संथारा पूर्वक समाधिमरण हो गया। संथारा- जैन विधि से इच्छा मरण को सर्वोत्कृष्ट साधना है। इसमें मृत्यु-समय निकट जानकर देह और आत्मा की पृथकता का बोध कर पूर्ण जागरुक रहते हुए समस्त जीवों से क्षमायाचना कर, निर्द्वन्द्व निर्लेप और कषाय रहित होकर आत्माभिमुख अन्तर्लीन हुआ जाता है। आहार का पूर्ण रूपेण त्याग कर दिया जाता है। इस अवस्था में किसी के प्रति यहां तक कि अपने शरीर के प्रति भी आसक्ति नहीं रहती। संथारा में मृत्यु मंगल महोत्सव बन जाती है वह दुःख का कारण न रहकर आनन्द का धाम बन जाती है।

आचार्य श्री भविष्य दृष्टा थे। उनकी चित्तवृत्ति अत्यन्त निर्मल और व्यक्तित्व पारदर्शी था, जिसके फलस्वरूप अपनी मृत्यु का उन्हें पूर्वाभास हो गया था और उसका आलिंगन करने के लिये वे समभाव में स्थित थे। आप श्रमण भगवान महावीर की परम्परा के ८१वें पट्टधर आचार्य थे। स्थानकवासी परम्परा के महान् आचार्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. के नाम से प्रसिद्ध हुकमेश शासन के वे आठवें आचार्य थे। साधुमार्गी आचार्य परम्परा का जो इतिहास हमें मिलता है, उसमें आठ आचार्यों की विशिष्ट भूमिका है। साधुमार्गी समाज में इन आचार्यों को लेकर एक अष्टाक्षरी प्रचलित है। यह अष्टाक्षरी चौहत्तरवें आचार्य से लेकर वर्तमान इक्यासीवें आचार्य के प्रथम नाम अक्षरों से बनायी गई है। यह संपूर्ण इस प्रकार है- हु शि उ चौ श्री जग नाना।

आचार्य श्री नानेश का जन्म १९२० ई. में असहयोग आन्दोलन के जन्म की छाया में हुआ। आप के तीन अप्रतिम अवदान हैं- संस्कृति के क्षेत्र में समता दर्शन, व्यक्ति के क्षेत्र में समीक्षण ध्यान और समाज के क्षेत्र में धर्मपाल अभियान। हम उनके अपूर्व व्यक्तित्व की जीवन्त अनुभूति इस त्रिकोण के बीच ही कर सकते हैं। आप शिथिलाचार के खिलाफ थे, निरभिमानी प्रतिपल जाग्रत रहते थे। आपका साधु संघ और श्रमणोपासक समाज को अप्रमत्त बनाये रखने तथा जैनाचार की मौलिकताओं की रक्षा तथा उनका अनुपालन अमूल्य अवदान था।

आचार्य श्री संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, गुजराती, राजस्थानी आदि भाषाओं के अधिकृत विद्वान थे। उनकी जिणधम्मो, समता दर्शन व व्यवहार, समीक्षण ध्यान, आत्म-समीक्षण, कषाय समीक्षण, अखण्ड सौभाग्य, अमृत सरोवर, कुंकुम के पगलिए, पावस प्रवचन, जलते जांए जीवन दीप, ऐसे जिएं, आध्यात्मिक आलोक, आध्यात्मिक वैभव, प्रवचन पीयूष आदि आदि प्रमुख कृतियां प्रकाशित हुई हैं। आप श्री की लगभग ६० से अधिक कृतियां प्रकाशित है, जो प्रवचन, काव्य, उपन्यास, कथा साहित्य, आदि के रूप में है। आचार्य श्री का प्रवचन साहित्य, हिन्दी धार्मिक, दार्शनिक साहित्य की अमूल्य धरोहर है। इनमें तपोनिष्ठ साधक की अनुभूतियाँ और उच्च कोटि के आध्यात्मिक सन्त की आचरणशीलता अभिव्यंजित हुई है। प्राकृत संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित होते हुए भी आचार्य श्री के प्रवचन कभी भी उनके पांडित्य से बोझिल नहीं हुए।

उनकी प्रवचन सभा से हजारों भक्तजनों का अज्ञानांधकार मिटा है, निराश मन में आशा का संचार हुआ है। खोई हुई दिशाएं गन्तव्य की ओर अभिमुख हुई हैं। थकान मुस्कान में बदली है और आग में अनुराग का नन्दन वन महक उठा है। आचार्य श्री पार्थिव रूप से हमारे बीच नहीं है, पर उनका संदेश जन-जन में व्याप्त है। वे प्रेरणा बनकर युगों तक हमें अनुप्राणित करते रहेंगे, स्फुरणा बनकर हमें जगाते रहेंगे। हम पर उनके अनन्त उपकार हैं, हम उनसे उऋण नहीं हो सकते।

आचार्य श्री के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि तभी होगी जब हम सब मिलकर समाज को आगे बढ़ाएं, उनके दिये उपदेशों को ग्रहण करें तथा उनके समता फरमान को घर-घर तक पहुंचायें। उस प्रज्ञा पुरुष को मेरा कोटि-कोटि प्रणाम।

-रजिस्ट्रार, साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, बीकानेर

मानव कल्याण कर गए

वै. श्रद्धा वैद

देकर सद् उपदेश जगत को
तुम मानव कल्याण कर गए।
मानव को मानवता देकर
जग के लिए महान बन गए।

ऐसे आचार्य नानेश को
अर्पित शत-शत वन्दन
इस युग के मानव होकर
इस युग के वरदान हो गए॥

आप हमारी आस में जिन्दा हो।
आप हमारी श्वांस में जिन्दा हो॥
शरीर से भले ही विलग हो गए
पर हमारे विश्वास में जिन्दा हो।

-सम्बलपुर (म०प्र०)

युग-दृष्टा

स्व. आचार्य नानेश बीसवीं सदी के महामानव थे, जिन्होंने धर्म स्थापना का उच्चतम आदर्श धर्म में कीर्तिमान स्थापित किया। आचार्य श्री नानेश जीवन पर्यन्त सजग प्रहरी के रूप में प्रतिकूल भी समता, समीक्षण-ध्यान व तप आराधना करके अपने आत्म-कल्याण के प्रति समर्पित रहे। स्व. अपने जीवन काल में धर्म को सामाजिक परिवर्तन का अभिकरण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। पाश्चात्य विचारकों (मेक्सवेबर, दुर्खइम एवं टायलर) ने धर्म को सामाजिक नियंत्रण का अभिकरण माना है। इन विचारकों के अनुसार धर्म परंपराओं का प्रहरी है परंतु आचार्य श्री ने धर्म को सामाजिक परिवर्तन व नैतिक उत्थान के लिए उपयोगी व सार्थक बनाने में अपनी धर्म-साधना को प्रमुखता प्रदान की। पूज्य गुरूदेव की मान्यता थी कि धर्म के द्वारा बुराइयों को अच्छाई में परिवर्तित किया जा सकता है, अतं. दलितों व अनुसूचित जनजातियों में यहां निर्धनता, दुर्व्यसन व शोषण का तांडव नृत्य उनकी जीवन की नियति का प्रमुख अंग हैं, उनमें सुधार की परम आवश्यकता है, ऐसा सोचकर व उनको सुसंस्कारित बनाने के उद्देश्य के निमित्त आचार्य श्री ने नगरों व महानगरों की अपेक्षा आचार्य काल के प्रथम दशक में अपेक्षाकृत छोटे स्थानों पर चातुर्मास किये जहां पर निम्न जाति बहुल क्षेत्रों में सघन पदयात्रा करके उनके जीवन में सुधारात्मक व सकारात्मक परिवर्तन लाने का क्रांतिकारी कार्य किया जा सके। उज्जैन, मन्दसौर, नागदा आदि (म.प्र.) के जन जाति बहुल क्षेत्र में आपने एक सकारात्मक ध्येय के साथ ही उनके हृदय पटल पर अमिट छाप छोड़ी। परिणामस्वरूप वहां के लाखों आदिवासियों ने शराब एवं मांस का सर्वथा त्याग कर अपनी आर्थिक स्थिति को सामान्य व उन्नत बनाया एवं भारत की मुख्य धारा में सम्मिलित हुए। आदिवासी जो ईसाई धर्म ग्रहण कर रहे थे। जैन धर्म को अंगीकार करने लगे, जिनके जीवन में हिंसा एक सामान्य नियमित कृत्य था, वे अहिंसा के अनुयायी बन गये। सारे दुर्व्यसनों से अपने आपको मुक्त किया व जैन धर्म के प्रमुख आचार-विचार उनकी जीवन शैली के प्रमुख अंग बन गये। उनके अल्प समय के प्रवास में अछूत जातियों में इतना बड़ा सुधारात्मक, सृजनात्मक एवं सकारात्मक परिवर्तन देखकर तत्कालीन मध्यप्रदेश सरकार अचंभित हो गई। प्रसिद्ध समाज शास्त्री डॉ. इन्द्रदेव ने इस परिवर्तन को अलौकिक कहा। उनके अनुसार परिवर्तन विशेपकर मूल्यों में परिवर्तन का कार्य सरकार दस वर्षों में भी नहीं कर पाती, वह कार्य आचार्य श्री ने सहजता के साथ एक-दो वर्षो में ही करके राष्ट्र व अस्पृश्य समाज का बड़ा कल्याण किया। इनको कुव्यसनों का त्याग करवाकर, उन्हें सुसंस्कारित करके एवं सम्मानित जीवन जीने की भावना जागृत कर आचार्य प्रवर ने अनुसूचित जातियों में सामाजिक परिवर्तन हेतु पदार्पण किया। खटीक व ऐसी ही कुछ अनुसूचित जातियों को अहिंसा के संस्कारों से शृंगारित करके उन्हें जीवन के परंपरागत व्यवसाय (पशु वध व्यवसाय) का त्याग करने की सकारात्मक प्रेरणा प्रदान की। इन जातियों ने जैन धर्म को सामूहिक रूप से स्वीकार किया एवं उनमें से कुछ अहिंसा के प्रचारक बन गए। ऑगबर्न का कथन है कि अभौतिक संस्कृति में परिवर्तन भौतिक संस्कृति की अपेक्षा काफी मंदगति से होते हैं। जिन्सबर्ग की मान्यता है कि परंपराओं को समाप्त करना दुसाध्य कार्य है। परंतु स्व. आचार्य नानेश ने पाश्चात्य विचारकों की इस धारणा को अपने व्यक्तित्व, साधना व सतत सदुपेदेशों द्वारा गलत सिद्ध कर दिखाया।

सामाजिक परिवर्तन के सार्थक वाहक के रूप में स्व. आचार्य श्री ने कुव्यसनों से मुक्ति दिलवाने की दिशा में एक पहल की जो आज एक आंदोलन बन गया है। स्व. आचार्य श्री के सुयोग्य उत्तराधिकारी वर्तमान आचार्य श्री रामेश व्यसन मुक्ति आंदोलन को जन जागरण के द्वारा घर-घर पहुंचा रहे हैं।

विश्व में आर्थिक, सामाजिक व अन्य विषमताएं सदैव रही हैं। परिणाम स्वरूप सामाजिक शोषण को शक्ति प्राप्त होती है। १९वीं-२०वीं शताब्दी में साम्यवाद के द्वार शोषणमुक्त समाज व्यवस्था की कल्पना की गई। साम्यवाद में हिंसा व घृणा को महत्व दिया गया है एवं व्यक्ति की सत्ता को नकारा गया है। इस सदी में महात्मा गांधी ने सर्वोदय सिद्धांत दिया जो प्रमुख रूप से आर्थिक उद्देश्य परक था। सर्वोदय सिद्धांत के द्वारा महात्मा गांधी सभी को आर्थिक रूप से स्वावलम्वी होने की बात करते हैं एवं शोषणमुक्त समाज संरचना की संकल्पना प्रस्तुत करते हैं। परंतु आचार्य श्री ने समता समाज की संरचना का ध्येय बनाया जिसमें समता मात्र आर्थिक ही नहीं होकर सामाजिक व भावात्मक भी हो। देश में जातियों, व्यवसायों के नाम पर असमानता दृष्टिगत है। समता समाज जातिगत दूरियों, आर्थिक दूरियों एवं भावात्मक दूरियों को समाप्त कर बंधुत्व व साहचर्य की समान भावना के विकास की एक अनवरत प्रक्रिया है। जो मानव मन व भावनाओं में शुद्ध सकारात्मक परिवर्तन का संदेश देती है। समता समाज रचना आडम्बर, दिखावे, जातिगत भावना से परे सबको समान समझने का उद्देश्य प्राप्त करने की योजना है। समता समाज के कुछ मौलिक अंश मात्र से विश्व में तनाव, हिंसा, अपराधों में कमी लाई जा सकती है। यह विश्व बंधुत्व की प्रयोगात्मक विधि है।

इस प्रकार पूज्यवर स्व. आचार्य नानेश का प्रत्येक क्षण पीड़ित मानवता को सुसंस्कारित बनाने, जातिविहीन समाज की स्थापना, दुर्व्यसनों से मुक्ति की दिशा में प्रयास करने, अनुसूचित जातियों व अनुसूचित जनजातियों में अहिंसक क्रांति करने एवं आडंबर व प्रचार प्रसार से दूर हटकर आत्मकल्याण का कार्य करने में लगा, जो अपने आप में एक उदाहरण है। वर्तमान युग में जैन साधु भी प्रचार-प्रसार से अछूते नहीं हैं। वहां राजनेताओं को आमंत्रित किया जाता हैं, परंतु आचार्य श्री स्व. नानेश इन सबसे दूर, विरल व्यक्तित्व थे जो यश-मान, सम्मान से कोसों दूर थे। जहां पर बड़े से बड़ा व्यक्तित्व व सामान्य व्यक्ति गुरुदेव के लिए बराबर होते थे। याद नहीं आता कि गुरुदेव से संबंधित किसी समारोह में किसी व्यक्ति को उसकी राजनैतिक या आर्थिक परिस्थिति के कारण निमंत्रित किया गया हो। समता के सागर में सभी समान हैं। यही आचार्य श्री का मूल मंत्र था एवं उन्होंने अपने जीवन काल में अक्षरसः पालन किया जो आज समस्त धार्मिक आचार्यों के लिए अनुकरणीय है।

योगी वही है जो सुख व दुख में समान व सहजता का अनुभव, व्यवहार करे। आचार्य श्री ने प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सरलता व सहजता का जीवन जिया एवं वे अपनी साधना से इच्छा मुक्त व्यक्तित्व हो गये। यह अनुभव जन्य है कि इच्छाओं से मुक्त होने पर मैं शरीर नहीं हूं, मैं प्रभु का अंश हूं, प्रभु ही मेरे अपने हैं, मेरा उन्ही के साथ नित्य संबंध है। आप अपने में संतुष्ट होकर स्थितप्रज्ञ हो गये। श्रीमद्भगवद्गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं :-

प्रज हाति यदा कागान्सर्वान्पार्थ मनोगतान् ।
आतमन्ये वातमना तुष्टः स्थित प्रज्ञस्त दोच्यते ॥
(अध्याय २-५५)

यही कारण था कि उनके अंतिम दिनों में शारीरिक वेदना व अस्वस्थता की स्थिति में भी कहीं कोई किसी प्रकार की वेदनामयी अभिव्यक्ति का आभास भी किसी को नहीं मिला। शारीरिक वेदना को वे समभाव से सहते रहे, यह चिकित्सकों के लिए भी आश्चर्यजनक था। परंतु गुरुदेव महान् योगी थे जो अपने अंतिम श्वांस तक आत्मोत्सर्ग में तल्लीन रहे, ऐसे योगी को मेरा कोटिश- नमन।

-७९-सी, अम्बामाता स्कीम,
उदयपुर (राज.)

□ डा. सुरेन्द्रसिंह पोखरना
भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन में वरिष्ठ वैज्ञानिक

वैज्ञानिक युग के एक बड़े वैज्ञानि

आचार्य १००८ श्री नानालाल जी महाराज साहब भौतिक रूप से आज हमारे बीच नहीं पर हमारे मन में आज भी बसे हुए हैं। आचार्य भगवन के त्याग, ध्यान, ज्ञान, संघ के प्रति समर्पित भाव व समता दर्शन के प्रणेता के रूप में काफी लिखा गया है तथा लिखा जाएगा परंतु इस लेख में उनके वैज्ञानिक चिंतन के बारे में कुछ विचार प्रस्तुत है।

इस विषय पर आगे बढ़ने से पहले मैं आचार्य भगवन से मेरे संबंध के बारे में लिखना उचित समझता हूं क्योंकि बालपन के जो संस्कार बनते हैं तथा बालक जो बचपन में अपने चारों ओर के वातावरण से सीखता है वह उसके पूरे जीवन को प्रभावित करता है तथा ये संस्कार व्यक्ति को जीवन के संघर्ष में गंभीर समस्याओं और तीव्र विरोधाभासों की स्थितियों में सही व उचित निर्णय लेने में सहायक होते हैं तथा महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। इसलिए आचार्य भगवन कई बार अपने व्याख्यानों में बालपन के संस्कारों पर जोर देते हैं।

आचार्य श्री से मेरा संपर्क लगभग ४० वर्ष पुराना है। हमारे घर के सभी लोग स्वर्गीय आचार्य श्री गणेशीलाल जी म.सा. के जीवन काल से ही संघ से जुड़े हुए हैं। जहां तक मुझे याद है मेरी माताजी बचपन में मुझे चातुर्मास के दौरान सुबह वाली प्रार्थना में ले जाती थी। उनका उत्साह, खुशी व उमंग, आज भी मुझे खुशी देती है तथा उस समय की एक प्रार्थना 'यह सत्संग वाला प्याला कोई पियेगा किस्मत वाला', से मुझे सत्संग का अर्थ तथा महत्व का पता लगा। बाद बालपन में सोचता था कि क्यों इन सभी लोगों को धर्म में इतना आनंद आता है। बड़े होकर जब विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की तथा बाद में भौतिक शास्त्र में स्नोत्तकोत्तर तथा पी-एच.डी. की उपाधि ली तब मैं विज्ञान के गूढ़ रहस्यों को समझने लगा व धर्म को वैज्ञानिक दृष्टि से देखने लगा। आचार्य श्री द्वारा दिये गये व्याख्यानों की बातों को भी मैं विज्ञान की दृष्टि से देखता था तथा बाद में जब ज्यादा आनंद आने लगा तो लगभग नियमित रूप से (मौका मिलने पर) शाम को प्रश्नोत्तर वाले कार्यक्रम में जाने लगा।

इन शाम वाली सभाओं में कई प्रकार के व्यक्ति आते थे तथा कई प्रकार के प्रश्न पूछे जाते थे। साधारणतया शुरू के प्रश्नों के उत्तर दूसरे साधु दिया करते थे पर आचार्य भगवन ध्यान से सुनते थे। जब कठिनाई होती थी तो आचार्य भगवन स्पष्टीकरण देते थे तथा गहराई में जाकर असली तत्व ज्ञान का दर्शन करवाते थे। शायद ही कोई ऐसा दिन रहा हो या व्यक्ति रहा हो या कोई प्रश्न रहा हो जिसका संतोषप्रद उत्तर नहीं मिला हो। एक भौतिकी वैज्ञानिक होने के नाते मैं भी कई प्रश्न करता था तथा चर्चा का आनंद लिया करता था। आज एक जिम्मेदार वैज्ञानिक होने के नाते कह सकता हूं कि विज्ञान के इस युग में आचार्य नानालाल जी म.सा. का चिंतन एक बड़े वैज्ञानिक से कम नहीं था।

इस उपाधि को समझने से पहले आधुनिक विज्ञान को समझना होगा जिसकी मूल कुंजी है नाप-तौल की विधि। किसी भी चीज के किसी भी गुण को अगर नापा जा सके या तौला जा सके तथा हर व्यक्ति एक ही निष्कर्ष पर पहुंचे तो कहा जाता है कि यह नाप-तौल वैज्ञानिक है। यह नाप-तौल कोई भी व्यक्ति किसी भी जगह पर कर सकता है। विज्ञान के इस दृष्टिकोण व महत्व के कारण ही विज्ञान का गत दो शताब्दियों में ताबड़तोड़ विकास हुआ

है। इसके साथ नई-नई तकनीकों का विकास हुआ है। परंतु विज्ञान के विकास की सबसे बड़ी उपलब्धि रही है कि व्यक्ति अपनी शक्ति, अपने अधिकार, अपनी इच्छा को अच्छी तरह से समझने लग गया है। क्या यह इस बात से मेल नहीं खाता है कि हर व्यक्ति में मूल रूप से एक ही आत्मा विद्यमान है, जो जैन दर्शन का सबसे बड़ा सिद्धांत है ?

विज्ञान के इस विकास से कई क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए, जैसे कि अंतरिक्ष विज्ञान, परमाणु विज्ञान, कृषि उत्पादन बढ़ाने की नयी-नयी विधियां, टेलीविजन, कम्प्यूटर, स्वास्थ्य क्षेत्र में नई-नई दवायें, टेलीफोन, इलेक्ट्रोनिक्स वगैरह-वगैरह, पर विज्ञान का यह सिर्फ एक रूप है।

विज्ञान का एक दूसरा घिनौना रूप भी हमारे सामने है। वह यह है कि इस विज्ञान के विकास के साथ मानव जाति के पास परमाणु बम, हाइड्रोजन बम, जैविक व रासायनिक हथियार, दूर-दूर तक मार करने वाले प्रक्षेपास्त्र, टैंक, पनडुब्बियां, हवाई हमले करने के लिए बनाए जाने वाले नये-नये विमान व राकेट इत्यादि। इसके साथ ही पर्यावरण का नष्ट होना, हजारों सालों से बहने वाली नदियां, घने जंगल, ऊपजाऊ मिट्टी, हजारों तरह की वनस्पतियां शुद्ध वायु वगैरह इस तरह नष्ट हो गये हैं या प्रभावित हुए कि इन्हें अगर रोका नहीं गया तो आगे आने वाली पीढ़ियां कभी हमें माफ नही करेंगी। विज्ञान के विकास के दूसरे दुष्परिणाम यह है कि एक तरफ शानदार बड़े-बड़े शहरों का विकास हुआ है, वहीं पर हजारों गांवों में कई गंभीर समस्याएं उत्पन्न हो गई है। जहां शहरों में आलीशान अट्टालिकाएं बन गई हैं वहीं हजारों झुग्गी झोपड़िया बन गई हैं। लोगों में शुद्ध प्रेम के बजाय राग, द्वेष, स्वार्थ, झूठा अहम बढ़ गया है। लोगों में सहनशीलता, दया, क्षमा, वगैरह के गुण लगभग लुप्त होते जा रहे हैं।

इस विज्ञान के विकास व विनाश के बारे में आचार्य भगवन से काफी चर्चायें होती थीं तथा आनंद प्राप्त होता था। आचार्य भगवन् का हमेशा यही कहना होता था कि आज जिस भौतिक विज्ञान को पूर्ण ज्ञान का प्रतीक मान लिया गया है, वह उचित नहीं है। इससे परे सोचने की जरूरत है। आचार्य भगवन् हमेशा आत्मा के ज्ञान को ही परम ज्ञान व वास्तविक ज्ञान समझने का आग्रह करते व समझाने की कोशिश करते थे। उनका महत्वपूर्ण विषय यही होता था कि पूर्ण ज्ञान का स्रोत सिर्फ शुद्ध आत्मा ही है जो सभी ज्ञान का भंडार है तथा आत्मा के जो अनुभव व दर्शन हैं, वे ही सबसे महत्वपूर्ण हैं। भौतिक ज्ञान निम्न कोटि का ज्ञान है, इससे बड़ा आध्यात्मिक ज्ञान है। जब आत्मा पुद्गलों के बंधन से अपने आपको अलग कर लेती है तो अनंत ज्ञान को प्राप्त कर लेती है तथा हर प्राणी इस स्थिति को प्राप्त कर सकता है। इसके अलावा उनका यह चिंतन कि आत्मा ही सबसे बड़ा सच है, याने नाप-तौल करने वाली मशीन है जो ज्ञान को, दर्शन को, अनुभवों को, विचारों को, भावनाओं को, प्रेम को, राग को, द्वेष को, ईर्ष्या को तथा ऐसे कई अन्य गुणों को समझ सकती है। इसलिए आत्मा को शुद्ध करके ही व्यक्ति अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत शक्ति व अनंत सुख को प्राप्त कर सकता है।

आज जब विज्ञान एक विरोधाभास की स्थिति में पड़ा हुआ है तो पश्चिम के कई बड़े-बड़े वैज्ञानिक तथा नोबल पुरस्कार विजेता भी आत्मा की बातें करने लगे हैं। ये लोग अब विश्वास करने लगे हैं कि जब तक आत्मा को अच्छी तरह नहीं समझा जाएगा तब तक विज्ञान में आगे प्रगति संभव नहीं है तथा मानव मन व मस्तिष्क को नहीं समझा जा सकता है। इन वैज्ञानिकों में प्रो. ब्रायन जासेफसन, प्रो. युगन विगनर, प्रो. प्रीगोजीन, प्रो. पेनरोज व प्रो. जोन इक्कलीस हैं। ये सभी नोबल पुरस्कार विजेता है (सिर्फ पेनरोज के अलावा)।

आचार्य नानालाल जी म.सा. ने जैन दर्शन के इस मूल सिद्धांत को इसी विज्ञान के युग में वैज्ञानिक रूप से पुनर्स्थापित किया है। उनके अनुसार क्योंकि हर व्यक्ति व प्राणी में एक ही आत्मा की कल्पना की गई है, इसलिए प्रयोग करके समान आत्माओं द्वारा समय से परे (या हर समय पर) एक ही सत्य को समझने की क्षमता

का प्रदर्शन किया जा सकता है। आचार्य भगवन द्वारा नवकार मंत्र गिनना, एकासन व उपवास करना, प्रतिक्रमण करना, सामायिक करना, मौन रखना, पांच महाव्रतों का श्रावक की तरह पालन करना आदि का प्रयोग कर सत्य की तरह स्थापित करने पर काफी जोर दिया जाता था। वे हमेशा इन उपदेशों पर प्रयोग करने के लिए जोर देते थे जो कि एक पूर्ण रूप से वैज्ञानिक विधि का हिस्सा है। अगर परिणाम अच्छा लगे तो उसको जीवन में उतारो वरना छोड़ दो।

आचार्य भगवन् द्वारा स्याद्वाद, समता दर्शन, निमित्त व उपादान पर जो व्याख्यान व चर्चा होती थी उनको आज भी याद कर मैं सोचता हूं कि विश्लेपण क्षमता किसी भी वैज्ञानिक से कम नहीं थी। आज जब आचार्य भगवन हमारे बीच नहीं हैं तो सही श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उनके बताये हुए उपदेशों को तर्क की दृष्टि से प्रयोग कर वैज्ञानिक दृष्टि से परखें तथा जिन शासन के सिद्धांतों को इस वैज्ञानिक युग में वैज्ञानिक दृष्टि से पुनर्स्थापित करें तभी स्वयं की, समाज की, राष्ट्र की, विश्व की जिनशासन की अच्छी तरह सेवा कर सकेंगे।

-अहमदाबाद - ३८००१

नानेश ने उपदेश दिया

शैलेष गुणधर

नानेश ने सारे जग में,
समता का उपदेश दिया।
देश का बच्चा-बच्चा जागे,
यूं नानेश ने उपदेश दिया॥१॥

जन्म दांता में पाया,
नाना ने जग में नाम कमाया।
जैन धर्म की शान बढ़ाने,
नानेश ने अवतार लिया॥२॥

भर यौवन में दीक्षा लेकर,
जग को उसने त्याग दिया।
देश का बच्चा-बच्चा जागे,
यूं नानेश ने उपदेश दिया॥३॥

नाना गुरु का संदेश यही था,
समता मय हो सारा देश।
इस तेरा मेरा के चक्कर में,
मत बिगाड़ो मेरा देश॥४॥

नानेश की वाणी ने सबको,
सच्चा मार्ग दिखाया था।
समता मय नारे को,
घर-घर में पहुँचाया था॥५॥

मिटा कर्म जंजाल यहां से,
देवलोक को प्रस्थान किया।
देश का बच्चा-बच्चा जागे,
यूं नानेश ने उपदेश दिया॥६॥

-सम्बलपुर (बस्तर)

❏ डा. धर्मचंद जैन

समता दर्शन के नायक

आचार्य श्री नानेश बीसवीं सदी के महान जैनाचार्य थे। उन्होंने ३७ वर्षों तक स्थानकवासी जैन संप्रदाय के एक बहुत बड़े समुदाय का कुशल नेतृत्व किया। आचार्य श्री इस धरा पर एक उद्दाम तेजस्विता के केन्द्र बने तथा संघ एवं समाज के चारित्रिक उन्नयन में सहायक बने।

बचपन में आचार्य श्री के दर्शनों का सौभाग्य अपने ग्राम अलीगढ़ एवं सवाईमाधोपुर में मिला। आचार्य श्री अल्पभाषी एवं बच्चों के प्रति स्नेहशील थे। उनकी तेजस्विता, संयमनिष्ठा, सरलता, समता आदि गुणों से अनेक लोग प्रभावित हुए। आचार्य श्री के दिवंगत हो जाने से एक रिक्तता का आभास होता है।

आचार्य श्री समता दर्शन के प्रबल प्रस्तोता, प्रेरक एवं नायक थे। उन्होंने जन-मन में समता का प्रचार किया। वे स्वयं समता की प्रतिमूर्ति थे तथा समता को जीवन दर्शन बनाने की सदैव प्रेरणा करते थे।

समता दर्शन में समस्त जैन दर्शन समाहित हो जाता है। समता साधु और श्रावक दोनों के जीवन में समानरूप से उपयोगी है। आचारांग सूत्र में समता में ही धर्म कहा गया है।

'आरिएहिं समयाए धम्मे पवेइए'

समता से ही राग, द्वेषादि कषायों पर विजय प्राप्त की जा सकती है। इसलिए आचार्य श्री ने समता को एक आंदोलन का रूप दिया। साधु-साध्वी, के लिए तो समता का पालन आजीवन सामायिक व्रती होने के कारण आवश्यक है ही किंतु श्रावक समाज में भी वे समता का व्यापक रूप देखना चाहते थे। आचार्य श्री ने इस दृष्टि से समता के तीन चरण प्रतिपादित किए-

(१) समतावादी :- समता दर्शन में गहरी आस्था रखने वाले समता साधकों की यह प्रथम श्रेणी है। जिसमें समता दर्शन एवं उसके व्यावहारिक पक्ष का समर्थन और प्रचार करने के साथ साधक अपने व्यवहार को समता के आचरण मे संपन्न बनाने के लिए तत्पर रहता है।

(२) समताधारी :- समता के दार्शनिक एवं व्यावहारिक धरातल पर सक्रिय बनकर दृढ़ता पूर्वक चलना प्रारंभ करने वालों की यह द्वितीय श्रेणी है। समताधारी साधक समता दर्शन के सभी पक्षों को हृदयंगम करके समतामय आचरण की सर्वांगीणता की ओर अग्रसर होता है।

(३) समतादर्शी :- इस श्रेणी का साधक संसार, राष्ट्र और समाज को समतापूर्ण बनाने और देखने की क्षमता प्राप्त करने लगता है। ऐसा साधक स्वहित को भी परहित में समाविष्ट करता हुआ संपूर्ण समाज में समता लाने के लिए प्रयत्नशील होता है। इस श्रेणी का साधक समस्त प्राणि वर्ग को अपनी आत्मा के तुल्य समझता है।

प्रत्येक प्राणी के प्रति सौहार्द, सहानुभूति एवं सहयोग की भावना रखते हुए दूसरों के सुख-दुख समझता है। यह जड़ पदार्थो से ममत्व हटाकर चेतना के विकास में ही अपना विश्वास मानता है। राग और द्वेष पर विजय प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील होता है।

आचार्य श्री ने समता समाज के नाम से समतामय समाज की भी परिकल्पना की। वे व्यक्ति और समाज के हितों में तालमेल बिठाकर समता के धरातल पर जन-जन का विकास करने के गुरुतर कार्य में संलग्न थे। आचार्य श्री समता के व्यावहारिक पक्ष पर भी बल देते थे। स्वहित एवं परहित के बीच समन्वय और आत्मतुल्यता के सिद्धांत को उन्होंने सदैव आवश्यक माना। जैन धर्म के विभिन्न पक्षों को उन्होंने समता का दार्शनिक विवेचन करते हुए समता में समाहित कर लिया। आचार्य श्री ने समता के दार्शनिक स्वरूप को चार सोपानों में प्रस्तुत किया- १. सिद्धांत दर्शन २. जीवन दर्शन ३. आत्म दर्शन ४. परमात्म दर्शन।

समता दर्शन को आचार्य श्री ने अपने जीवन में भी अपनाया। बिना किसी भेदभाव के उन्होंने खटीक, बलाई आदि जातियों के लोगों को धर्मपाल बनाकर जैन धर्म में दीक्षित किया। उनके प्रभावी प्रवचनों के माध्यम से इन जातियों के हजारों लोगों ने व्यसनों का त्याग कर धार्मिक संस्कार ग्रहण किया। आचार्य श्री ने आत्म-समीक्षण और समीक्षण ध्यान पर भी बड़ा बल दिया। आत्म-समीक्षण के उन्होंने सूत्र दिए-

१. मैं चैतन्यदेव हूं। मुझे सोचना है कि मैं कहां से आया हूं, किसलिए आया हूं ?

२. मैं प्रबुद्ध हूं, सदा जागृत हूं। मुझे सोचना है कि मेरा अपना क्या है और क्या मेरा नहीं है ?

३. मैं विज्ञाता हूं, दृष्टा हूं। मुझे सोचना है कि मुझे किन पर श्रद्धा रखनी है और कौन से सिद्धांत अपनाने हैं ?

४. मैं सुज्ञ हूं, संवेदनशील हूं। मुझे सोचना है कि मेरा मानस, मेरी वाणी और मेरे कार्य तुच्छ भावों से ग्रस्त क्यों हैं ?

५. मैं समदर्शी हूं, ज्योतिर्मय हूं। मुझे सोचना है कि मेरा मन कहां-कहां घुमता है, वचन कैसे-कैसे निकलता है और काया किधर-किधर भटकती है ?

६. मैं पराक्रमी हूं, और पुरुषार्थी हूं। मुझे सोचना है कि मैं क्या कर रहा हूं और मुझे क्या करना चाहिए।

७. मैं परम प्रतापी सर्वशक्तिमान हूं। मुझे सोचना है कि मैं बंधनों में क्यों बंधा हूं, मेरी मुक्ति का मार्ग क्या है ?

८. मैं ज्ञानपुंज हूं, समत्वयोगी हूं। मुझे सोचना है कि मुझे अमिट शांति क्यों नहीं, अक्षय सुख क्यों नहीं प्राप्त होता ?

९. मैं शुद्ध-बुद्ध निरंजन हूं। मुझे सोचना है कि मूलस्वरूप क्या है और उसे मैं प्राप्त कैसे करूं ?

आत्म-समीक्षण के ये सूत्र यदि कोई साधक प्रतिदिन अपने जीवन में अपनाए तो निश्चित रूप से वह आत्म-स्वरूप को प्राप्त कर अनंत ज्ञान, दर्शन आदि का अनुभव कर सकता है।

आत्म-समीक्षण की सफलता के लिए समीक्षण ध्यान उपयोगी है। आचार्य श्री ने ध्यान की इस प्रयोगात्मक विधि मन को एकाग्र कर द्रष्टा भाव जागृत करने की दृष्टि से विकसित की। समीक्षण ध्यान की प्रक्रिया में श्वास पर ध्यान करते हुए मन को शांत बनाया जाता है तथा फिर अपने द्वारा किए कृत्यों की समीक्षा की जाती है।

आचार्य श्री का समाज को महान योगदान रहा है। वीर संघ की स्थापना साधु एवं गृहस्थ के बीच का प्रचारक वर्ग तैयार करने की दृष्टि से की गई थी। इस योजना में निवृत्ति, स्वाध्याय, साधना और सेवा के स्तम्भ स्वीकार किए गए। आचार्य श्री ने समाज को प्रेरणा प्रदान की तथा निर्व्यसनता, सेवा और समता के संस्कार दिए, वे अपने आप में संघ के लिए वरदान हैं। उन महापुरुष का स्मरण करना हमारी चेतना को असत् से सत् की ओर ले जाने में सहायक है।

-द्वितीय पावटा सी रोड, जोधपुर

✿

□ वीरेन्द्रसिंह लोढा
पूर्व कोषाध्यक्ष, श्री अ.भा.सा. जैन संघ

जीवन जैसा मैंने देखा

आचार्य प्रवर की कथनी और करनी में समरूपता थी। वे सरलता, सहजता, एवं सादगी के प्रतिमूर्ति थे। मैं यो कहूं कि वे सभी गुण जो एक महापुरुष में होने चाहिए, आचार्य देव में विद्यमान थे, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। उन्होंने समता दर्शन की सैद्धान्तिक व्याख्या ही नहीं की, अपितु उसे व्यावहारिक स्वजीवन में साकार कर दिखाया।

प्राय: कुछ महानुभाव यह कहते हैं कि आचार्य श्री से मंगलिक सुनना तो दूर उनके दर्शन होना ही बहुत कठिन कार्य है। वे अपनों के अलावा दर्शन देने भी नहीं जाते। वर्ष १९८१ में जब स्वर्गीय आचार्य श्री का उदयपुर में चातुर्मास था, उस समय की एक घटना याद आती है।

मेरे पड़ोस में एक स्वधर्मी भाई जो सिंघटवाड़ियों की सेहरी में रहते थे, उनके यहां ८ की तपस्या का प्रसंग था, गुरुदेव उधर से पधारे, भाई ने विनती की परंतु गुरुदेव नहीं पधारे। दिन को ही उक्त भाई ने यह चर्चा फैला दी कि नानालाल जी म.सा. हम गरीबों के यहां नहीं आते हैं, और इस चर्चा ने राई का पहाड़ बना दिया। मैं रात्रि को गुरुदेव की सेवा में पहुंचा और निवेदन किया कि अमुक भाई ऐसा बोल रहा है कि आप उनके मकान पर नहीं पधारे। गुरुदेव ने फरमाया कि आपका कहना सही है, मैं जब कभी मौका मिलता है, दर्शन देने चला जाता हूं। परंतु आप जानते हैं कि यदि मैं बिना नियम के चला जाऊंगा तो सम्भव है मैं कुछ जगह जा पाऊं और कुछ जगह नहीं तो आप लोग ही कहेगें कि म.सा. अमुक पैसे वाले के यहां पधारे, हमारे यहां नहीं, अमुक नेता के यहां पधारे, और हमारे यहां नहीं। जबकि मेरे लिए गरीब, अमीर, नेता, साधारण आदमी सभी बराबर हैं। इन सब बातों में एकरूपता लाने के लिए मैंने अपने ११ नियम बना रखे हैं कि जो कोई भी इन नियमों में से एक भी नियम का पालन करेगा उसके यहां मैं निःसंकोच चला जाऊंगा। मुझे ११ नियमों की भी जानकारी आचार्य प्रवर ने दी। दूसरे दिन मैं उन स्वधर्मी बंधुओं के मकान पर गया और सारी जानकारी उनको दी तो वे बहुत खुश हुए। और कहा कि यदि आचार्य भगवन का ऐसा नियम है तो मैं बहुत हर्षित हूं, और कोशिश करूंगा कि आचार्य श्री के बताये हुए नियमों में से कोई एक नियम लेकर लाभान्वित होऊँ।

इसी प्रकार की एक घटना जोधपुर की है। आचार्य भगवान जोधपुर विराज रहे थे, शाम का आहार-पानी का समय था, मैं भी वहीं था, लगभग सवा पांच बजे उदयपुर से कुछ दर्शनार्थी आचार्य श्री के दर्शन करने स्थानक में पहुंचे। उस संघ में स्थानकवासी समाज उदयपुर के कई सुश्रावक एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। वहां पहुंचे और आचार्य श्री से मंगलिक सुनने की बात, वहां खड़े व्यक्ति से जो जोधपुर का ही था, कही तो, उस भाई ने सहज भाव से कहा कि- अभी आहार हो रहा है, अत: थोड़ी देर बाद मंगलिक हो सकेगी। आगन्तुक श्रावकों में से कुछ ने कहा कि यहां तो श्रीनाथ जी के जिस तरह पट खुलते हैं उसी तरह दर्शन होते हैं। हमें तो आगे जाना है यहां ठहरने से कोई फायदा नहीं है।

जब मैंने ये शब्द सुने तो मैं तत्काल उन श्रावकों के पास पहुंचा और शान्ति से निवेदन किया कि आपकी भावना आचार्य श्री के पास पहुंची नहीं है, आप रुकें मैं आचार्य श्री को निवेदन करूं और मुझे विश्वास है कि आपकी

भावना के अनुरूप हो सकता है। जब मैंने यह बात कही तो श्रावकगण शांत हुए और मैं तत्काल आचार्य श्री के पास जो ऊपर मंजिल में आहार कर रहे थे, पहुंचा और निवेदन किया कि उदयपुर के श्रावक लोग आये हैं, और मंगलिक सुनना चाहते हैं तो तत्काल गुरुदेव बाहर पधारे और श्रावकों को संबोधित करते हुए फरमाया कि जब मैं आवश्यक कार्य में लगा रहता हूं तो कदाचित मंगलिक या दर्शन नहीं हो सकते हैं फिर भी यदि उक्त समय में मुझे सूचना मिल जाती है तो मैं कोशिश करता हूं कि आपकी भावना को पूरी करूं। अभी-अभी मुझे लोढ़ा जी से यह बात सुनने को मिली कि आप लोग मंगलिक सुनने आये और मंगलिक नहीं सुना रहे हैं परंतु आपकी भावना मेरे तक पहुंची नहीं तो कैसे क्या बात हो सकती है और जैसे ही मुझे समाचार मिला मैं उपस्थित हो गया। अपने दिल में ऐसा कोई विचार नहीं रखे यह कहकर मंगलिक सुना दी।

आचार्य श्री हमेशा हर व्यक्ति को सुनते थे। तत्काल उसका जवाब देने का प्रयास करते थे। कुछ ऐसे मामलों में जिसमें शासन की गरिमा की बात होती तो तत्काल जवाब नहीं देकर समय आने पर जानकारी प्राप्त करके उचित जवाब दिला देते थे। मैंने प्राय. यह देखा कि जब कोई श्रावक बाहर से आता और उसके चेहरे से ऐसा लगता था कि यह बहुत सारी समस्याएं लेकर आया है आवेश में भी है, परंतु जैसे ही वह आचार्य श्री की सेवा में पहुंचता आचार्य श्री के सामने अपनी बात रखता और जो समाधान प्राप्त होता उससे वह एकदम शांत हो जाता था। जब वह वापस बाहर आता तो वह संतोष व्यक्त करता हुआ पाया जाता। इतना ही नहीं यदि कोई व्यक्ति श्रावक या श्राविका शासन के प्रतिकूल कार्य करते तो उचित तरीके से समझाकर समाधान फरमाते। साधु-साध्वियों को भी जहां कहीं कमी आती, उन्हे उचित प्रायश्चित देने में भी नहीं हिचकिचाते।

आचार्य श्री के व्यक्तित्व के बारे में देखा कि वे सुनते सबकी थे परंतु करते अपने मन की थे। वर्ष १९९८ का वर्षावास पूर्ण कर गुरुदेव उदयपुर से विहार करते हुए दरोली गांव पधारे। (उदयपुर से लगभग ३० कि.मी. दूरी) और वहां स्वास्थ्य ठीक नहीं रहा अधिकतर लोगों की भावना थी (विशेष तौर से मालवा क्षेत्र के) कि वे मालवा पधारें और इसी बात को ध्यान में रखते हुए स्थवीर प्रमुख श्री ज्ञानमुनि जी म.सा. दरोली से आगे भटेवर पधार चुके थे, परंतु जैसे ही आचार्य श्री का दरोली से विहार कर दरोली गांव की मेन सड़क जहां से एक सड़क भटेवर की तरफ जाती है और दूसरी उदयपुर की तरफ। तुरंत आचार्य श्री ने कहा कि जिधर उदयपुर की सड़क जाती है, उधर चलें और भी ऐसे कई प्रसंग हैं चाहे वह नोखा चातुर्मास का हो, बीकानेर से विहार का प्रसंग हो सब जगह आचार्य श्री सुनते सब.की थे, परंतु करते वही थे जो उनकी अंतरात्मा कहती थी। इसी प्रकार उदयपुर विराजने के समय में भी विशेषकर अंतिम समय के पिछले चार महीने में मैं कभी डाक्टर साहब को लाता भी था, तो आचार्य प्रवर की इच्छा होती तो बी.पी. नाड़ी आदि की जांच, खून की जांच करने देते अन्यथा हाथ नहीं लगाने देते। मुझे कई बार फरमाया करते कि लोढ़ा जी आपकी भावना अच्छी है परंतु अब इन सबकी कोई आवश्यकता नहीं है।

वास्तव में इस भौतिकवादी युग में भी अध्यात्म साधना के सर्वोच्च्य शिखर पर विराजित गुरु को पाकर समस्त संघ गौरवान्वित था व अपने आपको धन्य मानता था। अब गुरुदेव का पार्थिव शरीर विद्यमान नहीं तथापि उनका आदर्श मार्ग को आगे चलाने वाले उन्हीं के द्वारा स्थापित वर्तमान आचार्य प्रवर व्यसन मुक्ति के प्रेरक आचार्य पूज्य श्री १००८ श्री रामलाल जी म.सा. हैं। हम सभी उनकी छत्र-छाया में अपने जीवन को अध्यात्म की ओर अग्रसर करते हुए बढ़ेगें, यही आशा और विश्वास है।

-धानमंडी, उदयपुर

❏ डा० मधु एस० जैन

उनके आदर्श आज भी जिंदा हैं

राष्ट्र की समृद्धि का आधार उस देश के नागरिकों की विनाशक सम्पत्ति नहीं और न ही उसका आधार उस देश के सुविस्तृत राजमार्ग हैं। उस देश की प्रोद्यौगिकी के ऊंचे-ऊंचे संयंत्र भी नहीं बल्कि राष्ट्र की वास्तविक प्रगति का यथार्थ आधार है, उस देश के निवासियों का निर्मल चारित्र। हमारा सौभाग्य है कि देश की लब्ध आत्माओं ने अपने महनीय चारित्र से पृथ्वी के जन-जन को शिक्षा प्रदान की है जैसा कि कहा गया है :-

एतद्देशप्रसूतस्य, सकाशादग्रजन्मवनः
स्व चरित्र शिक्षेरन पृथित्या सर्वमानवाः ॥

भारतीय चरित्र नायकों की पंक्ति में अग्रणी, सरस्वती के महान आराधक ज्ञानपुष्ट होकर भी आत्मपुष्ट संत शिरोमणि आचार्यवर्य पूज्य श्री नानालाल जी महाराज साहब अपने पद विहार से इस जगती तल को पवित्र कर रहे थे। इन महान आचार्य श्री के द्वारा भारतीय संस्कृति एवं श्रमण परम्परा पर किए गये सर्वव्यापी उपकारों एवं अवदानों की अभिव्यक्ति करने की सामर्थ्य शब्दों में नहीं है। आचार्य श्री का व्यक्तित्व इतना महान एवं असीम था कि अनेक शोध-ग्रंथ लिखकर भी उसकी सीमा और गहराई की थाह का अंकन नहीं किया जा सकता।

आचार्य नानेश के मुझे प्रथम बार दर्शन का अवसर उनके उदयरामसर चातुर्मास के समय पर हुआ। उस समय उनके उदर मे जबरदस्त दर्द था। मुझे पितृ तुल्य श्री धूड़मल डागा उनके पास ले गये। प्रथम दिन मैंने उनका मात्र निरीक्षण किया और कहा आप मात्र एक खुराक से ही ठीक हो जाएंगे। उनको मेरे इस कथन पर विश्वास नहीं हुआ और उन्होंने चुप्पी साध ली। शाम को डॉ. हेमचन्द्र सक्सेना उन्हें देखने आए तो उन्होंने मेरे बारे में उनसे वार्ता की। डॉ. सक्सेना ने मेरे बारे में उन्हें आश्वस्त किया तो अगले दिन श्री डागा जी पुनः मेरे को लेने आए। मैं होम्योपैथिक दवा की मात्र एक पुड़िया अपने साथ ले गया। आचार्य श्री से विचार विमर्श के पश्चात् उसी समय मैंने पुड़िया की दवा उन्हें दे दी, नि.संदेह भगवान की कृपा से उन्हे आधे घंटे पश्चात् ही काफी लाभ हो गया। तब से आचार्य श्री का वरदहस्त सदैव मेरे ऊपर रहा। फिर उनका चार्तुमास चाहे देशनोक में हो या नोखा, बीकानेर, भीलवाड़ा या उदयपुर में, मेरे से वे सलाह अवश्य ले लेते थे। मुनि राजेश जी उनके स्वास्थ्य की विशेष देख-रेख में रहते थे। अतः वे मेरे से सदैव जानकारी प्राप्त करते रहते थे।

मैं संघ के काफी साधु-साध्वियों के संपर्क में आया। चूंकि आयुर्वेदिक दवाओं का निर्माण भी करता हूं अतः साधु-साध्वियां अपनी ज्ञान पिपासा को मेरे से शान्त अवश्य करते रहते थे।

मैं उस समय धन्य हो गया जब आचार्य श्री बीकानेर से अपनी आंखों के इलाज के लिए पी.बी.एम. अस्पताल पधार रहे थे। रास्ते में मेरा निवास था। जब आचार्य श्री को ज्ञात हुआ कि मेरा निवास रानी बाजार में है तो उन्होंने स्वयं मेरे निवास का उद्धार करने का मन बना लिया और कुछ क्षणों के लिए मेरे निवास में विश्राम किया। उनके पीछे चल रहा विशाल जन-समूह भी आश्चर्यचकित रह गया। श्री जयचन्दलाल सुखानी ने उपस्थित जन-समूह की जिज्ञासा का मधुर शब्दों में निराकरण किया।

भावना के अनुरूप हो सकता है। जब मैंने यह बात कही तो श्रावकगण शांत हुए और मैं तत्काल आचार्य श्री के पास जो ऊपर मंजिर में आहार कर रहे थे, पहुंचा और निवेदन किया कि उदयपुर के श्रावक लोग आये हैं, और मंगलिक सुनना चाहते हैं तो तत्काल गुरुदेव बाहर पधारे और श्रावकों को संबोधित करते हुए फरमाया कि जब मैं आवश्यक कार्य में लगा रहता हूं तो कदाचित मंगलिक या दर्शन नहीं हो सकते हैं फिर भी यदि उक्त समय में मुझे सूचना मिल जाती है तो मैं कोशिश करता हूं कि आपकी भावना को पूरी करूं। अभी-अभी मुझे लोढा जी से यह बात सुनने को मिली कि आप लोग मंगलिक सुनने आये और मंगलिक नहीं सुना रहे हैं परंतु आपकी भावना मेरे तक पहुंची नहीं तो कैसे क्या बात हो सकती है और जैसे ही मुझे समाचार मिला मैं उपस्थित हो गया। अपने दिल में ऐसा कोई विचार नहीं रखे यह कहकर मंगलिक सुना दी।

आचार्य श्री हमेशा हर व्यक्ति को सुनते थे। तत्काल उसका जवाब देने का प्रयास करते थे। कुछ ऐसे मामलों में जिसमें शासन की गरिमा की बात होती तो तत्काल जवाब नहीं देकर समय आने पर जानकारी प्राप्त करके उचित जवाब दिला देते थे। मैंने प्रायः यह देखा कि जब कोई श्रावक बाहर से आता और उसके चेहरे से ऐसा लगता था कि वह बहुत सारी समस्याएं लेकर आया है आवेश में भी है, परंतु जैसे ही वह आचार्य श्री की सेवा में पहुंचता आचार्य श्री के सामने अपनी बात रखता और जो समाधान प्राप्त होता उससे वह एकदम शांत हो जाता था। जब वह वापस बाहर आता तो वह संतोष व्यक्त करता हुआ पाया जाता। इतना ही नहीं यदि कोई व्यक्ति श्रावक या श्राविका शासन के प्रतिकूल कार्य करते तो उचित तरीके से समझाकर समाधान फरमाते। साधु-साध्वियों को भी जहां कहीं कमी आती, उन्हे उचित प्रायश्चित देने में भी नहीं हिचकिचाते।

आचार्य श्री के व्यक्तित्व के बारे में देखा कि सुनते सबकी थे परंतु करते अपने मन की थे। वर्ष १९ का वर्षावास पूर्ण कर गुरुदेव उदयपुर से विहार करते दरोली गांव पधारे। (उदयपुर से लगभग ३० कि. दूरी) और वहां स्वास्थ्य ठीक नहीं रहा अधिकतर की भावना थी (विशेष तौर से मालवा क्षेत्र के) कि मालवा पधारें और इसी बात को ध्यान में रखते स्थवीर प्रमुख श्री ज्ञानमुनि जी म.सा. दरोली से भटेवर पधार चुके थे, परंतु जैसे ही आचार्य श्री दरोली से विहार कर दरोली गांव की मेन सड़क जहां एक सड़क भटेवर की तरफ जाती है और दूसरी उद की तरफ। तुरंत आचार्य श्री ने कहा कि [illegible] की सड़क जाती है, उधर चलें और भी ऐसे कई प्रसं चाहे वह नोखा चातुर्मास का हो, बीकानेर से विहार प्रसंग हो सब जगह आचार्य श्री सुनते सब की थे, करते वही थे जो उनकी अंतरात्मा कहती थी। इसी प्र उदयपुर विराजने के समय में भी विशेषकर अंतिम के पिछले चार महीने में मैं कभी डाक्टर साहब को ल भी था, तो आचार्य प्रवर की इच्छा होती तो बी.पी. नाड़ी आदि की जांच, खून की जांच करने देते अन्य हाथ नहीं लगाने देते। मुझे कई बार फरमाया करते लोढ़ा जी आपकी भावना अच्छी है परंतु अब इन सब कोई आवश्यकता नहीं है।

वास्तव में इस भौतिकवादी युग में भी अध्या साधना के सर्वोच्च शिखर पर विराजित गुरु को पाकर सं संघ गौरवान्वित था व अपने आपको धन्य मा था। अब गुरुदेव का पार्थिव शरीर विद्यमान नहीं है उनका आदर्श मार्ग को आगे चलाने वाले उन्हीं के स्थापित वर्तमान आचार्य प्रवर व्यसन मुक्ति के प्रेरक आ पूज्य श्री १००८ श्री रामलाल जी म.सा. हैं। हम सभी उन छत्र-छाया में अपने जीवन को अध्यात्म की ओर अग्र करते हुए बढ़ेगें, यही आशा और विश्वास है।

-धानमंडी, उदयपुर

❑ डा० मधु एस० जैन

उनके आदर्श आज भी जिंदा हैं

राष्ट्र की समृद्धि का आधार उस देश के नागरिकों की विनाशक सम्पत्ति नहीं और न ही उसका आधार उस देश के सुविस्तृत राजमार्ग हैं। उस देश की प्रोद्यौगिकी के ऊंचे-ऊंचे संयंत्र भी नहीं बल्कि राष्ट्र की वास्तविक प्रगति का यथार्थ आधार है, उस देश के निवासियों का निर्मल चारित्र। हमारा सौभाग्य है कि देश की लब्ध आत्माओं ने अपने महनीय चारित्र से पृथ्वी के जन-जन को शिक्षा प्रदान की है जैसा कि कहा गया है :-

एतद्देशप्रसूतस्य, सकाशादग्रजन्मवनः
स्व चरित्र शिक्षेरन पृथित्या सर्वमानवाः ॥

भारतीय चरित्र नायकों की पंक्ति में अग्रणी, सरस्वती के महान आराधक ज्ञानपुष्ट होकर भी आत्मपुष्ट संत शिरोमणि आचार्यवर्य पूज्य श्री नानालाल जी महाराज साहब अपने पद विहार से इस जगती तल को पवित्र कर रहे थे। इन महान आचार्य श्री के द्वारा भारतीय संस्कृति एवं श्रमण परम्परा पर किए गये सर्वव्यापी उपकारों एवं अवदानों की अभिव्यक्ति करने की सामर्थ्य शब्दों में नहीं है। आचार्य श्री का व्यक्तित्व इतना महान एवं असीम था कि अनेक शोध-ग्रंथ लिखकर भी उसकी सीमा और गहराई की थाह का अंकन नहीं किया जा सकता।

आचार्य नानेश के मुझे प्रथम वार दर्शन का अवसर उनके उदयरामसर चातुर्मास के समय पर हुआ। उस समय उनके उदर मे जबरदस्त दर्द था। मुझे पितृ तुल्य श्री धूड़मल डागा उनके पास ले गये। प्रथम दिन मैंने उनका मात्र निरीक्षण किया और कहा आप मात्र एक खुराक से ही ठीक हो जाएंगे। उनको मेरे इस कथन पर विश्वास नहीं हुआ और उन्होने चुप्पी साध ली। शाम को डॉ. हेमचन्द्र सक्सेना उन्हें देखने आए तो उन्होने मेरे बारे में उनसे वार्ता की। डॉ. सक्सेना ने मेरे बारे में उन्हें आश्वस्त किया तो अगले दिन श्री डागा जी पुनः मेरे को लेने आए। मैं होम्योपैथिक दवा की मात्र एक पुड़िया अपने साथ ले गया। आचार्य श्री से विचार विमर्श के पश्चात् उसी समय मैंने पुड़िया की दवा उन्हें दे दी, निःसंदेह भगवान की कृपा से उन्हे आधे घंटे पश्चात् ही काफी लाभ हो गया। तब से आचार्य श्री का वरदहस्त सदैव मेरे ऊपर रहा। फिर उनका चार्तुमास चाहे देशनोक में हो या नोखा, बीकानेर, भीलवाड़ा या उदयपुर में, मेरे से वे सलाह अवश्य ले लेते थे। मुनि राजेश जी उनके स्वास्थ्य की विशेष देख-रेख में रहते थे। अत. वे मेरे से सदैव जानकारी प्राप्त करते रहते थे।

मैं संघ के काफी साधु-साध्वियों के संपर्क में आया। चूंकि आयुर्वेदिक दवाओं का निर्माण भी करता हूं अतः साधु-साध्वियां अपनी ज्ञान पिपासा को मेरे से शान्त अवश्य करते रहते थे।

मैं उस समय धन्य हो गया जब आचार्य श्री बीकानेर से अपनी आंखों के इलाज के लिए पी.बी.एम. अस्पताल पधार रहे थे। रास्ते में मेरा निवास था। जब आचार्य श्री को ज्ञात हुआ कि मेरा निवास रानी बाजार में है तो उन्होने स्वयं मेरे निवास का उद्धार करने का मन बना लिया और कुछ क्षणों के लिए मेरे निवास में विश्राम किया। उनके पीछे चल रहा विशाल जन-समूह भी आश्चर्यचकित रह गया। श्री जयचन्दलाल सुखानी ने उपस्थित जन-समूह की जिज्ञासा का मधुर शब्दों में निराकरण किया।

आचार्य श्री सेठिया कोटड़ी, बीकानेर में स्वास्थ्य लाभ कर रहे थे, मैं प्रायः उनके उपचारार्थ जाता रहता था। प्रसंग महावीर जयन्ति का है। उस समय आचार्य श्री का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं था उन्हें खड़े होने व चलने में तकलीफ होती थी। ऐसे समय हमारे दिगम्बर जैन समाज द्वारा निकाली गई भगवान महावीर की शोभायात्रा जब सेठिया कोटड़ी के पास पहुंची तो मैंने आचार्य श्री से दिगम्बर जैन समाज के मंत्री होने के कारण शोभायात्रा को मंगलिक हेतु निवेदन किया। उपस्थित श्रावकों ने आचार्य श्री से निवेदन किया आप ऊपर खिड़की से ही शोभायात्रा को मंगलिक फरमा दें परंतु मेरे मुख पर जब उनकी दृष्टि पड़ी तो मेरा अनुनय वे अस्वीकार नहीं कर सके। नीचे मुख्य द्वार तक आकर अपना आशीर्वचन एवं मंगलिक देकर हमें कृतार्थ किया।

मनुष्य जीवन केवल संकुचित स्वार्थों के साधन - मात्र के लिए ही नहीं होता। ऐसे लोगों को कोई स्मरण भी नहीं करता। प्रातः स्मरणीय आचार्य श्री नानेश ने आविर्भाव से लेकर तिरोभाव तक संपूर्ण जीवन साधना, परोपकार एवं समता भाव से समाज के उत्थान में ही समर्पित कर दी। इसलिए मेरी यह भावाञ्जलि है-

तुम्हें मेहरूम कहता कौन, तुम जिन्दा के जिन्दा हो।
तुम्हारी नेकियां बाकी, तुम्हारी खूबियां बाकी॥

उनकी स्मृति मेरे मन मस्तिष्क में अपना स्थान बना चुकी है। उनकी महती कृपा मैं आज भी महसूस करता हूं। दिनांक २७ अक्टूबर ९९ को समाधि पूर्वक उदयपुर नगरी में उन्होंने श्रेष्ठ साहस का परिचय देकर मृत्यु को अपना कर्तव्य करने का अवसर प्रदान किया शान्त चित से और हो गये मृत्युञ्जय। ऐसे प्रातः स्मरणीय महान संत को कोटि कोटि वन्दन।

-बीकानेर

✿

मिल जाए नानेश गुरु

किरण पितलिया

नाना गुरु से मिलने को मेरा दिल ये बेगाना है।
मिल जाए नाना गुरु मेरा दिल ये दीवाना है॥

नोखा में ढूंढा तुझे दांता में ढूंढा तुझे।
बीकानेर के स्थानक में गुरुदेव का ठिकाना है॥१॥

गंगा में ढूंढा तुझे, यमुना में ढूंढा तुझे।
दांता की गलियों मे, नानेश गुरु का ठिकाना है॥२॥

मन्दिर में ढूंढा तुझे, मस्जिद में ढूढा तुझे।
मेरे हृदय में नानेश गुरु का ठिकाना है॥३॥

–मोरवन डेम

❑ डा० अनिलकुमार जैन

बहु आयामी एवं क्रांतिकारी

"कोई भी व्यक्ति न जन्म से महान् होता है न छोटा। छोटे-बड़े अथवा ऊंच-नीच का आरोप व्यक्ति के कार्यों-कर्मों के आधार पर होता है। जैन धर्म की यह स्पष्ट घोषणा है कि अपने कुत्सित कर्मों-कार्यों का परित्याग करके कोई भी व्यक्ति महान् बन सकता है। जैन धर्म का संदेश है कि कोई भी व्यक्ति अपने बुरे कार्यों को छोड़कर जैन कहलाने का अधिकारी हो सकता है।"

ये महान् विचार हैं जैनाचार्य श्री नानेश जी के। उन्होंने इन विचारो को मात्र विचार तक ही सीमित नहीं रखा, बल्कि धर्मपाल अभियान का सूत्रपात करके उन्होंने इन विचारों को कार्यरूप में भी परिणत कर दिखाया। आचार्य श्री जवाहरलाल जी एवं आचार्य श्री गणेशीलाल जी द्वारा प्रदत्त ज्ञान को और अधिक परिष्कृत करते हुए आचार्य श्री नानेश जी सन् १९६४ में मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र में विहार कर रहे थे, वहीं उन्हे बलाई समुदाय के लोगों के बारे में पता चला। आचार्य श्री को इस कार्य में सफलता मिलना अवश्यंभावी है, बस मात्र इसे प्रारंभ करने की आवश्यकता है। २२ मार्च सन् १९६४ के दिन नागदा के निकट बनबना से दो मील दूर स्थित गुराडिया ग्राम में आचार्य श्री नानेश ने एक क्रांतिकारी मंत्रोच्चारण किया, 'धर्मपाल'। फिर तो एक के बाद अनेक लोग इस कार्य में जुड़ते चले गये। यह अभियान सफलता पूर्वक चला तथा इसी का परिणाम यह रहा कि अछूत कहे जाने वाले लगभग एक लाख बलाइयों ने सप्त व्यसन का परित्याग कर दिया। आचार्य श्री ने उन्हें नैतिक् आचरण के लिए दीक्षित कर दिया। इतनी बड़ी संख्या में लोगों को व्यसन मुक्त करा पाना वह भी मात्र एक व्यक्ति की प्रेरणा एवं मार्ग दर्शन से, यह एक महान् ऐतिहासिक कार्य है।

यहां एक बात यह स्पष्ट कर लेनी चाहिए कि इस अभियान का उद्देश्य लोगों को शाकाहार एवं व्यसन मुक्त जीवन की ओर प्रेरित कराना था। यह कोई धर्मान्तरण का कार्य नहीं था। हाँ, यदि लोग आचार्य श्री से प्रभावित होकर या जैन धर्म की विशेषताओं से प्रभावित होकर जैन धर्म अंगीकार करते हैं तो इनका स्वागत है।

कुछ वर्षों पूर्व धर्मपाल अभियान जैसा कार्य दिगम्बर मुनि उपाध्याय श्री ज्ञानसागर जी ने बंगाल-बिहार-उड़ीसा में फैली हुई सराक जाति के मध्य किया। सराक जति मूलतः जैन धर्मानुयायी रही है, लेकिन विभिन्न कारणों से यह जैन समाज की मुख्य धारा से अलग हो गई। उपाध्याय श्री ज्ञानसागर जी ने उन्हें जैन समाज की मुख्य धारा से जोड़ने का भगीरथ प्रयास किया और वे उसमें सफल भी हुए। हालांकि सराक जाति के मध्य कार्य प्रारंभ करने वालों में स्व. पं. बाबूलाल जी जमादार थे, लेकिन इस कार्य को अधिक गति प्राप्त हो पायी उपाध्याय श्री ज्ञानसागर जी म. द्वारा।

वस्तुतः धर्मपाल अभियान जैसे जितने भी कार्य हैं वे अनेक प्रतिष्ठाओं, अंजन शलाकाओं एवं पंच कल्याणकों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं। व्यसन-मुक्त कराने के इस प्रकार के अभियानों को हमें स्थिर नहीं कर लेना चाहिए। उन्हें हमेशा गतिशील बनाए रखना चाहिए।

आचार्य श्री नानेश एक बहुआयामी एवं क्रांतिकारी व्यक्ति थे। धर्मपाल अभियान उनका विशेष कार्य था। उन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों के विरुद्ध भी जन-चेतना जागृत की। दहेज प्रथा, मृत्युभोज तथा बाल विवाह जैसी

कुरीतियों के वे सख्त खिलाफ थे। तन्त्र-मंत्र में इनका कोई विश्वास नहीं था। वे कार्य करने में विश्वास रखते थे। इसी के फलस्वरूप अधिकतर उनके अनुयायी अन्ध-विश्वास एवं कुरीतियों से दूर हैं। यह बात आज छिपी नहीं है कि जैन समाज में विशेषकर साधु वर्ग में दिन-प्रतिदिन शिथिलाचार बढ़ता जा रहा है। यह कहां जाकर रुकेगा कुछ कहा नहीं जा सकता। मेरा ऐसा मानना है कि यदि आचार्य श्री कुछ और वर्ष जीवित रहते तो निश्चित तौर पर वे वर्तमान परिस्थितियों में बाल-दीक्षाओं पर भी अवश्य पुनर्विचार करते।

विज्ञान और धर्म के संबंध में आचार्य श्री का स्पष्ट मत था कि विज्ञान और धर्म एक दूसरे के पूरक हैं। वे विज्ञान को हेय नहीं मानते थे। उनका मानना था कि विज्ञान को धर्म की तथा धर्म को विज्ञान की कसौटी पर कसा जाना चाहिए। जो खरा है उसे किसी भी कसौटी पर कसो, उससे क्या फर्क पड़ता है। हां, इतना अवश्य है कि कार्य एक-दूसरे के सहयोग से ही चलेगा। विज्ञान तो एक अति-सुन्दर एवं अधिक गतिवाली गाड़ी की तरह है, लेकिन उसमें धर्मरूपी ब्रेक का होना अति आवश्यक है। यदि गाड़ी बिना ब्रेक के होगी तो उसका परिणाम भी भयंकर होगा।

अंत में मैं यह कहना चाहूंगा कि हम सभी का यह कर्त्तव्य है कि हम आचार्य श्री के विचारों एवं कार्यों को आगे बढ़ायें, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। समाज-हित एवं देश हित भी इसमें निहित है।

-बी-२६, सूर्य नारायण सोसायटी, साबरमती, अहमदाबाद

✪

कुण्डलियां

आचार्य श्री नानेश के उपदेशों पर आधारित

रतनलाल व्यास

स्वतंत्रता है सादगी, फैशन फांसी जान।
पूज्य गुरुनाना कहे, दो विशिष्ट नर ध्यान॥
दो विशिष्ट नर ध्यान, प्रशंसा छोड़ो भाई।
जहर तुल्य चढ जाए, प्रशंसा बहु अधमाई॥
रतन गुरु उपदेश, सुनो सब प्राणी भ्रता।
गुरु आज्ञा सिर धार, रख सादगी स्वतंत्रता॥१॥

धीरज को मत छोड़ना, यह सतनिष्ठा कर्त्तव्य।
आपस में नित सफलता, देता है यह भव्य॥
देता है यह भव्य फल नित निष्काम भाव में।
पहुंचे उन्नति शिखर, यदि होता समभाव में॥
रतन गुरु आदेश, अन्तर आत्मा को मन॥
फल देता है जरुर, मत छोड़ना तू धीरज॥२॥

भयमुक्त संघर्ष कर, कायरता मत लाय।
बुरी वस्तु संघर्ष नहीं, जीवन विकास समाय॥
जीवन विकास समाय, अलग नहीं करना भाई।
सदाचार को पाल, पवित्रता इसमें समाई॥
रतन गुरु आदेश, संघर्ष करता अभय।
शुद्ध आत्म बन जाय, जीवन सू मिटे सब भय॥३॥

मन पवित्र बनता जभी, जीवन धर्म रमाय।
यह अचूक है औषधि, बाह्य अभ्यंतर मांय॥
बाह्य अभ्यंतर मांय, आराधना मन की भांति।
शुद्ध आचरण के साथ, सफलता दिल रम जाति॥
रतन गुरु आदेश, तज आडम्बर और धन।
सदाचार रख साथ, तबहि बनता पवित्र मन॥४॥

नर दुनियां क्या देखती, मत कर आप विचार।
तू क्या देखे जगत में, इस पर करो विचार॥
इस पर करो विचार, स्वयं ही सुधरो भाई।
सदाचार मन धार, यही है आत्म कमाई॥
रतन गुरु आदेश, पवित्र कर आत्मा जीवन भर।
क्या कहेगी आत्मा, तू सोच रे साहसी नर॥५॥

जीवन साधु, सफल तब, विषय वासना छोड़।
अनासक्त की भावना, इनसे करले होड़॥
इनसे करले होड़, गौण, यही साधु जीवन।
सफल कुंजी आचरण, इसी में लगा तू मन॥
रतन गुरु उपदेश, आत्म-सुधार है बड़ धन।
करले दृढ संकल्प, सफल तबहि साधु जीवन॥६॥

-कानोड़

नाना गुणों के पुंज

नाम है नाना, जग ने माना।
गुण है नाना, सबने जाना॥

अपने युग के महामानव आचार्य श्री नानालालजी म.सा. का जीवन अनेक विशेषताओं से परिपूर्ण था। महापुरुषों के जीवन की सभी विशेषताओं को लेखबद्ध करना असंभव है। आचार्य श्री नानालालजी म.सा. का जीवन अनेक गुणों का पुञ्ज था। मेवाड़ में छोटे को नाना कहा जाता है। आचार्य श्री नानालालजी म.सा. जिनका जन्म नाम तो गोवर्धन था, पर परिवार में सबसे छोटे होने के कारण पारिवारिक जीवन में उन्हें नाना के नाम से पुकारा जाता था। नाना शब्द का दूसरा अर्थ अनेक भी होता है। नाना नाम के इस महामानव ने अपने नाना नाम को सार्थक कर दिया।

1. <u>समता सागर</u> :

स्व. आचार्य श्री नानालालजी म.सा. समता सागर थे। समता का गुण उनमें इतना कूट-कूट कर भरा था कि उनके नाम के साथ समता शब्द जुड़ गया था। उन्हें समता विभूति के नाम से जाना जाता था। कठिन परिस्थितियों में, विपरीत वातावरण में भी आचार्य श्री नानेश ने अत्यन्त धैर्य एवं समता का परिचय दिया। श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ जैसे विशाल संघ के आचार्य पद पर रहते हुए समता को जीवन में साकार कर संघ संचालन का कार्य बडी कुशलता पूर्वक किया। समाज में व्याप्त विषमता से द्रवित होकर उन्होंने समाज के समक्ष समता समाज की रचना का अत्यंत उपयोगी सिद्धांत प्रस्तुत किया। उनके व्याख्यानों के आधार पर लिखी पुस्तक 'समता दर्शन और व्यवहार वर्तमान परिप्रेक्ष्य में 'अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुई है तथा इसका अनुवाद अन्य भाषाओं मे भी किया जा चुका है। निःसंदेह आचार्य श्री नानेश समता के सागर थे।

2. <u>संयम साधना के सजग प्रहरी</u> :

जब से आचार्य श्री नानेश ने दीक्षा ग्रहण की उसी दिन से संयम मार्ग पर पूर्ण दृढ़ता पूर्वक आरूढ़ हो गये। जीवन के अन्तिम क्षणों तक संयम के प्रति पूर्ण जागरूक रहे। जीवन पर्यन्त शुद्ध संयम का पालन किया। संयम के प्रति आपकी दृढ़ श्रद्धा से प्रभावित होकर ही स्व. आचार्य श्री गणेशीलाल जी. म.सा. ने आप श्री को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। वर्तमान युग में शिथिलाचार अधिक बढ़ रहा है परंतु आपने स्वयं सदैव शुद्ध संयम का पालन किया एवं अपने संघ के संत-सतियों को भी शुद्ध संयम पालने की प्रेरणा प्रदान की। संयम मार्ग में दोष लगाने वाले संत संतियों को अवसर आने पर संघ से निष्कासित करने में भी संकोच नहीं किया। जबकि वर्तमान युग में शिष्यों का मोह कैसी विषम परिस्थितियां उत्पन्न कर देता है यह सुज्ञजनों से छिपा हुआ नहीं है।

3. <u>दीक्षाओं का नया कीर्तिमान</u> :

संयम के प्रति आचार्य श्री नानेश की जागरुकता का एक प्रत्यक्ष प्रतिफल यह हुआ कि आप श्री ने अपने संयमी जीवन काल में 350 से अधिक मुमुक्षु आत्माओं को दीक्षा प्रदान की तथा रतलाम में 25 दीक्षाएँ एक साथ

प्रदान कर नया कीर्तिमान स्थापित किया। गत 500 वर्षों के इतिहास में किसी आचार्य द्वारा एक साथ पच्चीस दीक्षाएं प्रदान करने की घटना का उल्लेख पढ़ने-जानने में नहीं आया। यह स्व. आचार्य श्री नानेश की विलक्षण प्रतिभा का परिचायक है।

4. <u>अनूठी प्रवचन शैली</u> :

आचार्य श्री नानेश की प्रवचन शैली अत्यन्त प्रभावशाली एवं विशिष्ट थी। परिमार्जित भाषा शैली में आगमानुसार, तात्कालिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करने से आपके व्याख्यानों में बहुत अच्छी उपस्थिति रहती थी तथा श्रोतागण मंत्र-मुग्ध हो जाते थे। व्याख्यानों में हजारों की उपस्थिति होते हुए भी बिना ध्वनि प्रसारक यंत्र के ही सभी श्रोता शान्ति पूर्वक आपका व्याख्यान सुनते थे तथा व्याख्यान में पूर्ण शान्ति बनी रहती थी। यह आपकी वाणी का अतिशय था। कानोड़ चातुर्मास में विद्वत संगोष्ठी के अवसर पर बिना ध्वनिप्रसारक यंत्र के आपके व्याख्यानों की छटा देख कर डॉ. दयानन्द भार्गव ने अपने वक्तव्य में आपकी इस अनूठी विशेषता पर आश्चर्य व्यक्त किया। युवा पीढ़ी जो वर्तमान युग में धर्म से विमुख होती जा रही है, आपके प्रवचनों से बहुत प्रभावित होती थी तथा आपके प्रवचनों से उनमें भी धर्म-भावना का संचार हुआ। अनेक जैन, अजैन युवक धर्म से जुड़े हैं यह आपकी प्रवचन शैली एवं कथनी-करनी की एक रूपता का परिणाम है।

5. <u>युग पुरुष</u> :

आचार्य श्री नानेश वर्तमान युग की विरल विभूति थे। उन्होने इस युग के मानव की समस्याओं को समझकर प्रत्येक क्षेत्र में आध्यात्मिक धरातल पर समाधान प्रस्तुत किया। परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व में व्याप्त विषमताओं पर विजय पाने के लिए समता सिद्धांत का प्रतिपादन किया जो विश्व को आचार्य श्री नानेश की अनुपम देन है। आज का मानव तनावों में जी रहा है, जिससे हृदयाघात, उच्च रक्त चाप जैसे भयंकर रोगों का बाहुल्य हो रहा है। तनावों से मुक्ति के लिए जन मानस के लिए आप श्री ने समीक्षण ध्यान समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया। श्रावक वर्ग में स्वाध्याय की प्रवृत्ति विकास के लिए तथा संत सतियों के चातुर्मास से वंचित क्षेत्रों मे पर्युषण पर्व के पावन अवसर पर पर्वाराधना सुयोग्य स्वाध्यायियों की व्यवस्था के लिए समता प्र संघ की स्थापना की प्रेरणा प्रदान की। समता प्रचार द्वारा गत पर्युषण पर्व में लगभग ८0 स्थानों पर पर्वारा कार्यक्रम संपादित किया गया। सामाजिक क्षेत्र में त्या मय जीवन के साथ समर्पित भाव से समाज सेवा क वाले सुश्रावक तैयार करने के लिए स्व. आचार्य जवाहरलाल जी म.सा. के स्वप्नानुसार वीर संघ यो को प्रेरणा प्रदान की। आपकी सद्प्रेरणा से उदयपुर वि विद्यालय में प्राकृत विभाग की स्थापना की गई। द वर्ग के उत्थान की दिशा में आप श्री ने मध्यप्रदेश में वाली बलाई जाति के लोगों को कुव्यसनों से मुक्त धर्म के सन्मार्ग पर लगाया। आपकी सद्प्रेरणा से प्रेरि होकर हजारों व्यक्तियों ने व्यसनों का त्याग किया जिन्हें धर्मपाल कहा जाता है। इस समुदाय ने आध्यात्मिक, आर्थिक, सामाजिक, नैतिक, शिक्षा आदि प्रत्येक क्षेत्र में बहुत विकास किया है। जैन समाज एवं अन्य समाज में व्याप्त दहेज प्रथा के विरोध में आपने प्रभावशाली प्रवचन एवं व्यक्तिगत उपदेश के माध्यम से व्यक्तियों को प्रत्याख्यान कराए। इस प्रकार प्रत्येक क्षेत्र में युग की समस्याओं के अनुसार समाधान प्रस्तुत किया। अत आचार्य श्री नानेश बीसवीं शताब्दी के युग पुरुष थे। उन्होंने युगीन परिस्थितियों के अनुरूप सामाजिक, व्यक्तिगत, राष्ट्रीय, धार्मिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया।

6. <u>संघ का कुशल संचालन</u> :

दीर्घकाल तक आचार्य पद पर रहकर विशाल चतुर्विध संघ (37 वर्ष तक) का कुशल संचालन किया एवं लगभग 60 वर्ष तक विशुद्ध संयम का पालन किया। विषम से विषम परिस्थितियों मे भी धैर्य धारण कर समता को साकार किया। समय पर सुयोग्य उत्तराधिकारी के रूप में शास्त्रज्ञ प्रशान्तमना भावी शासन नायक आचार्य प्रवर श्री रामलालजी म.सा. का चयन करना उनकी कुशल

संचालन क्षमता का प्रतीक है। आचार्य श्री नानेश महामानव थे, प्रकाश पुञ्ज थे, संघ सिरताज थे, जैन जगत ज्योतिर्मान नक्षत्र थे, बीसवीं शताब्दी के युग पुरुष। युगों-युगों तक उनका नाम अमर रहेगा। वे मृत्युञ्जय गए। ऐसे महामानव को मैं भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूं। धन्य है अनेक गुणों के पुञ्ज महामानव की उस पवित्र आत्मा को जिसके महाप्रयाण से समाज और संघ की अपूरणीय क्षति हुई है।

संयोजक-समता प्रचार संघ, बड़ीसादड़ी

समता का सूरज अस्त हो गया

सौभाग्यमल कोटड़िया

समता का सूर्य आज अस्त हो गया,
चारों दिशाओं में अंधेरा छा गया ।
समता की राह दिखाने वाले रहनुमा,
समता पथ से आज विमुख हो गया ॥
हुक्म संघ का किया बड़ा विस्तारा,
जवाहर गणेशी लाल का तारा दुलारा
जैन जगत का प्राणों से प्यारा,
धर्मपाल का एक मात्र सहारा
भारत का एक अनमोल रत्न खो गया ।
समता का आज सूर्य अस्त हो गया ॥१॥

संथारा लेकर महाप्रयाण किया जग से,
प्रकृति भी आज रूठ गई हमसे
दर्शन को नैना रह गये तरसते,
मेघ भी रह गए बरसते-बरसते
आसमान भी अकस्मात सो गया ।
समता का सूर्य आज अस्त हो गया ॥२॥

दांता गांव आज तीर्थ बन गया,
पोखरना कुल नाम रोशन हो गया
शृंगार मां का लाल सिद्ध हो गया,
मोड़ीलाल का मस्तक ऊंचा हो गया
नाना गुरु आज अमर हो गया
समता का सूर्य आज अस्त हो गया ॥३॥

देवदूत बनकर धरा को पावन किया,
सद्उपदेश दे लाखों का उद्धार किया
सत्य अहिंसा का जन-जन में प्रचार किया,
मुक्ति पथ का मार्ग सरल बना दिया
उदयपुर नगर आज सूना-सूना हो गया
समता का सूर्य आज अस्त हो गया ॥४॥

मेरे ही स्वास्थ्य ने मुझे धोखा दे दिया,
अंतिम दर्शन से भी वंचित रह गया
गर ख्वाब में भी दीदार मिल जाएगा,
'सौभाग्य' तेरा जीवन सफल हो जाएगा
अश्रुपूरित श्रद्धांजलि से मुंह धो लिया
समता का सूर्य आज अस्त हो गया ॥५॥

उत्कृष्ट य

हुक्मगच्छीय सम्प्रदाय के अष्टमाचार्य जैन जगत के ज्योतिपुंज, महायोगी पूज्य आचार्य श्री नानालाल जी महाराज साहब उदयपुर नगरी में २७ अक्टूबर १९९९ को रात १० बज कर ४१ मिनट पर इस लोक को छोड़कर मोक्ष मार्ग के पथिक बन गए।

६० वर्ष के अपने संयमकाल में एक तरफ जहां पूज्य गुरुदेव कठोर आचार संहिता, साधु मर्यादा का पालन करते हुए तथा ज्ञान व साधना के द्वारा अध्यात्म के उच्च से उच्च शिखर तक पहुंचते गए, वहीं दूसरी तरफ साधु साध्वियों को उत्कृष्ठ संयम जीवन की प्रेरणा व अनुशासित रखते हुए समता की निर्मलधारा को सारा देश, विदेश में प्रवाहित कर जन-जन में जो जागरण उत्पन्न किया और चतुर्विध संघ के समन्वय का जो अनूठा दृष्टांत रखा, वह अपने आप में पूज्य गुरुदेव को बेजोड़ शासन नायक के रूप में युगों-युगों तक स्मरण कराता रहेगा।

पूज्य गुरुदेव का अनोखा व्यक्तित्व, व्यवहार व उनकी दिनचर्या अपने आप में एक वीतरागता की साक्षात प्रतिमूर्ति थी। साधारण से साधारण मानव भी गुरुदेव के सानिध्य में आते ही गुरुदेव की प्रति आकृष्ट हो जाता है। सहज, सरल व चुम्बकीय शक्ति के कारण गुरुदेव के भक्तों की आज कोई सीमां नहीं।

पूज्य गुरुदेव ने भक्तों की अज्ञानता को दूर करते हुए जैन धर्म का सच्चा स्वरूप समझाया। इस बेबुनियाद धारणा को मिटाया कि जैन धर्म का इस भव से कोई नाता नहीं है, जैन धर्म केवल परलोक सुधार के लिए है। गुरुदेव व उनके शिष्य, शिष्याओं ने जीवन में जैन धर्म द्वारा चिंतामुक्त होकर जीने की कला, समीक्षण ध्यान द्वारा कषाय पर विजय पाने की कला, व्यसन मुक्त होकर सुखी निरोग जीवन जीने की कला का ज्ञान दिया एवं जीवन सुधार के साथ साथ पर भव सुधारने का भी ज्ञान देकर जन-जन को अध्यात्म के साथ जोड़ा। धर्म के प्रति उदासीन युवा समाज व शिक्षित समाज गुरुदेव के प्रति विशिष्ट रूप से आकृष्ट होकर आज आगे आया है।

अपनी साधना को गुरुदेव आगे बढ़ाते हुए एक जगह से दूसरी जगह हजारों मील की पदयात्रा करते हुए विश्वशान्ति व मानव उत्थान के कार्य में जुटे रहे। इसीके तहत दलितों व पिछड़ी जातियों के लोगों को भी नई दिशा व सच्चा ज्ञान देकर धर्मपाल बनाकर व्यसनमुक्त किया एवं नयी जीवनधारा उनमें प्रवाहित की। इस प्रकार लाखों व्यक्ति गुरुदेव के नये भक्त बन गये।

पूज्य गुरुदेव के भक्तों की संख्या बढ़ती गयी। जहां भी गुरुदेव विराजित रहते, हजारों की संख्या में भक्त पहुंचते व गुरुदेव के दर्शन, लाभ व पावन वाणी सुनने को आतुर रहते। भारी जनमेदिनी को देखते हुए कई बार भक्तों ने पूज्य गुरुदेव से माइक, लाइट इत्यादि व्यवहार करने की विनती की, लेकिन महायोगी पूज्य गुरुदेव साधु-मर्यादा के साथ किसी भी समझौते की गुंजाइश से साफ इनकार करते रहे। आज भी काफी लोगों को सुनकर आश्चर्य होता है कि हुक्मगच्छीय साधु, साध्वी रात्रि में बत्ती या दीपक का व्यवहार नहीं करते, कितना भी वृहद् जनसमुदाय हो माइक का व्यवहार नहीं करते। सेनिटरी लेट्रिन, बाथरूम का व्यवहार नहीं करते। इनके लिए कोई छोटे से छोटा गांव हो चाहे बम्बई जैसा बड़ा शहर, आचार पालन सभी जगह एक समान है।

एक तरफ उत्कृष्ट धर्म साधना दूसरी तरफ जन-ल्याण करते हुए पावन प्रभुवाणी को जन-जन तक चाने से हमारे पूज्य गुरुदेव भक्तों के मन में भगवान रूप में प्रतिष्ठित होते गये।

साधना के द्वारा प्राप्त शक्ति से गुरुदेव के अनेक मत्कार सामने आये हैं। पूज्य गुरुदेव के स्मरण मात्र से ड़े-बड़े संकट टले हैं। दुःसाध्य रोगों से भक्तों को मुक्ति ली है, दृष्टिहीनों को दृष्टि प्राप्त हुई है। यह सारे चमत्कार नायास घटे हैं। भौतिक चमत्कार को दिखाने की किसी हत्वाकांक्षा के पूज्य गुरुदेव शिकार नहीं थे। इस कारण पनी फोटो भी गुरुदेव रखने की सख्त मनाही करते थे। सी नाम, यश अथवा प्रचार-प्रसार में गुरुदेव कभी भी ग्रणी नहीं रहे। रात १० बजकर ४१ मिनिट का समय भी न्य गुरुदेव ने अपने महाप्रस्थान के लिए चयन किया ताकि स्थानीय संघ को भी कोई परेशानी न रहे और ज्यादा भीड़-भाड़ या आड़म्बर न हो। लेकिन भक्तों के भगवान गुरुदेव के देवलोक के समाचार देर रात तक जगह-जगह पहुंचते गये और देखते-देखते लाखों भक्त गुरुदेव की महाप्रयाण यात्रा में सम्मिलित हुए। गुरु भक्ति की मिशाल व उदयपुर श्री संघ की अभूतपूर्व व्यवस्था देखकर पूर्वांचल संघ इस मौके पर उदयपुर उपस्थिति के लिए अपने को धन्य व गुरुदेव की असीम कृपा मानता है। गुरुदेव की इस असीम कृपा को श्री संघ पूर्वांचल और भी अधिक प्रयास से जन-जन तक पहुंचाने में प्रयासरत होगा। आज जरुरत है गुरुदेव के प्रति हमारी सच्ची प्रार्थना की, ताकि गुरुदेव जहां भी विराजित हों, शीघ्रातिशीघ्र सिद्ध, बुद्ध और मुक्त होकर मोक्ष प्राप्त करें।

-कूचबिहार

समता का पाठ पढाते हैं

राजकुमार जैन

अनार, आम, ए.बी.सी.डी. सिखलाने वाले गुरुवर हैं,
इस दुनिया की हर सीढी का पहला अक्षर गुरुवर हैं।

सम्यक् दर्शन, ज्ञान, चारित्र समझाने वाले गुरुवर हैं,
जैन तत्त्व के ज्ञान प्रकाशक सम्यक्धारी गुरुवर हैं,

ये गुरुवर समताधारी समता का पाठ पढाते हैं,
मोक्ष मार्ग में दीक्षित कर धर्म ध्वजा फहराते हैं।

करे करावे त्याग, तपस्या, राग-द्वेष का काम नहीं,
पाले मन वचन कायिक संयम भेदभाव का नाम नहीं।

अज्ञान तिमिर मय इस जग को पापों ने आकर घेरा है,
बुद्धि धर्म की राहों में गुरु बिन घोर अंधेरा है।

-अकोला (राज.)

चुम्बकीय आकर्षण

परम श्रद्धेय समता विभूति आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. का लगभग डेढ़ दशक से अति निकट
सानिध्य पाने का सौभाग्य मिला। वास्तव में उनका जीवन अन्तरंग व बाहर समान रूप था। कथनी की अपेक्षा
को अधिक महत्व देते थे। कई बार फरमाया भी करते थे कि कहने की अपेक्षा जीवन में उतारना ही आवश्यक
उनके सान्निध्य में समागत सदस्य चाहे वह जैन जैनेतर ही क्यों न हो सदा उनका भक्त बन जाता था। इनका चुम्ब
आकर्षण ही ऐसा था कि व्यसनी व्यक्ति भी जीवन को संस्कारित कर लेता था।

आचार्य देव के सान्निध्य व सेवा के १५ वर्षों में मैंने अनेक घटनाएं प्रत्यक्ष में घटित देखी हैं। उनमें एक
संस्मरण प्रस्तुत कर रहा हूं-

मैं कालेज के विद्यार्थी जीवन में आचार्य देव के दर्शनार्थ फाल्गुणी चौमासी के प्रसंग पर मुंबई पहुंचा। वैसे
तो मुझे पिताश्री के साथ आचार्य देव के कई बार दर्शनों का सौभाग्य मिला किन्तु अभी संघ सेवा (पत्राचार
हेतु श्रीचरणों में पहुंचा। संयोग ही कहा जाय कि मुझ पर दूसरे ही दिन एक आरोप आ गया एक श्रेष्ठीवर्य के
के बटन चुराने का। सेठ लोग मुझे दबाने लगे, धमकिया देने लगे। मैं आचार्य भगवन् के चरणों में पहुंचा, निवे
किया, भगवन् मुझ पर चोरी का आरोप लगाया जा रहा है, सेठ लोग धमका रहे हैं। भगवन् मैं निर्दोष हूं। आचा
भगवन् मेरी तरफ कुछ क्षण तक देखते रहे, मानो व्यक्ति के चेहरे को जैसे पढ़ रहे हों। ये मानव मन के
थे। क्षण मौन रहने के पश्चात् आचार्य देव ने फरमाया। 'घबराओ मत। शांति रखो। समय पर सब कुछ
आयेगा।' मैं असमंजस में था। किन्तु आचार्य भगवन की आत्मीय वात्सल्य वाणी से मन में अपार शांति
अनुभव हुआ। कुछ समय पश्चात् घाटकोपर मुंबई चातुर्मासार्थ पदार्पण हुआ। पूज्य गुरुदेव को उस समय वह
स्पष्ट हुई। एक व्यक्ति जो काफी समय से सन्त सेवा का लाभ लेता था। वही ऐसी हरकत करता रहता था। उ
गुत्थी खुल गई तथा चोरी की गई वस्तु का पता लग गया। आचार्य देव की वाणी सार्थक हो गयी।

ऐसे एक नहीं अनेक उदाहरण- संस्मरण इस १५ वर्ष के सेवाकाल में देखने को मिले, जिससे लगता था
आचार्य श्री नानेश इस युग के अवतारी युगान्तर महापुरुष थे। उन्होंने परिवार, समाज, राष्ट्र को समता दर्शन की
देन प्रदान की वह विश्वस्तर पर ग्रहणीय है। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने संघ का उत्तरदायित्व जिन सशक्त कं
पर डाला है, उससे उनकी दीर्घदृष्टि सावित हुई है। उनकी कृपा प्रत्येक भक्त हृदय को सदा मिलती रहेगी।

-उखलाना जिला टोंक (रा

शिवकुमार सोनी, पत्रकार

संयम, साधना का नजराना

जैनाचार्य श्री नानालालजी म० (नानेश) के स्नेह, आम जन के साथ आत्मीयता, प्रभावी प्रवचन, समीक्षण ध्यान, व्यसन मुक्ति व संस्कार की दिशा में किए गए कार्यों से जैन ही नहीं आम जन नत मस्तक होता है।

आचार्य श्री अनेक नैनों को छलकते हुए छोडकर २७ अक्टूबर को उदयपुर में संलेखणा संथारा सहित अरिहंत शरण हो गए। नाना का संघ, समाज व देश को दिया गया संयम, साधना का नजराना हर युग के लोगों को नाना प्रकार के झंझावतों से दूर हटने तथा अहिंसा परमोधर्म का संदेश देने वाले भगवान महावीर के सिंद्धातों से जोड़ने में सदैव सहयोगी रहेगा। बहुजन वंदित जैन संत नानालालजी का जीवन, अनवरत तपश्चर्या एवं जीवन पर्यन्त की गई पद यात्राएं अविस्मरणीय रहेगी।

आचार्य श्री के नैनों में वीरत्व की गौरव गरिमा से मंडित तत्कालीन मेदपाट (मेवाड़) की राजधानी, सुरम्य उपवनों एवं अरावली श्रेणियों से सुरक्षित अपनी प्राकृतिक छटा से देश विदेश में विख्यात झीलों की नगरी उदयपुर तथा साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक नगरी बीकानेर के प्रति विशेष लगाव रहा है। उदयपुर, बीकानेर, ब्यावर व रतलाम को साधुमार्गी जैन संघ के चार पाये माना गया है। कहा जाता है कि इन स्थानों पर आचार्य श्री के इकरंग श्रावक-श्राविकाएं हैं।

देशनोक में प्रथम चातुर्मास के समय ही श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के नौवें आचार्य श्री व अपने उत्तराधिकारी रामलाल जी को विक्रम सम्वत् २०३१ में माघ माह की द्वादशी को दीक्षा दी। देशनोक में छः दीक्षाओं के बाद उन्होंने त्याग, तप एवं साधना की उज्ज्वल ज्योति प्रज्ज्वलित कर पांचू, झझू सहित अनेक गांवो में विचरण किया। आचार्य श्री ने अपनी यात्रा के दौरान इन गांवों में पारिवारिक वैमनस्य को दूर करवाकर आपसी स्नेहसूत्र में बांधा। वहीं जाट, राजपूत, कसाई व मोची आदि अनुसूचित जाति व स्वर्णजाति के अनेक लोगों ने दारू, मांस, आदि दुर्व्यसनों तथा कई अजैन महिलाओं ने रात्रि भोजन का त्याग किया।

नोखामंडी चातुर्मास के पश्चात् भोपालगढ में गणतंत्र दिवस एवं गणेशाचार्य के पन्द्रहवें स्वर्गारोहण दिवस पर दो गणाधीशों का ऐतिहासिक मिलन हुआ। एक अद्भुत संयोग से आचार्य श्री हस्तीमलजी व नानालाल जी दोनों अपनी-अपनी पाट परम्परा के अष्टम पट्टधर थे और मिलन की पुनीत बेला में आठ-आठ श्रमणों-शिष्यों से परिवृत थे। यह युगांतकारी ऐतिहासिक स्नेह-मिलन अपने आप में विशिष्ट उपलब्धि पूर्ण रहा। उपलब्धि का मुख्य आयाम पारस्परिक प्रेम संबंधों को स्थापना पूर्वक निर्ग्रन्थ श्रमण संस्कृति की सुरक्षा के लिए सुसंगठन की सुदृढ़ भूमिका का निर्माण था। दोनों स्थानकवासी जैन संघ के नायकों ने तीन-चार दिनों की मंत्रणा के उपरांत सुसंगठन की पृष्ठभूमि के रूप में संयुक्त उद्घोष किया, जिसका संपूर्ण स्थानकवासी समाज के प्रबुद्ध वर्ग ने स्वागत किया।

संयुक्त उद्घोष में कहा गया कि परम वीतराम श्रमण भगवान महावीर का धर्मशासन उपशम भाव प्रधान है, वीतराग भाव की प्राप्ति उसका लक्ष्य है। जप-तप की कठोर साधना भी धर्मशासन में उपशम भाव के साथ ही सफल मानी गई है। समाज में व्याप्त राग, द्वेष, निंदा के कलुषित वातावरण को दूर करना और शास्त्राचार परम्परा को सुरक्षित रखना, शांत, स्वच्छ, समताभाव की वृद्धि के लिए तदनुकूल वातावरण का निर्माण करना परमावश्यक है। कषाय

घटाने की शिक्षा देने वाला वीतराग मार्ग यदि राग-द्वेष वृद्धि का क्षेत्र बनता है, तो हर धर्म प्रेमी के लिए सहज चिंता का विषय हो जाता है। दोनों आचार्य आपसी मंत्रणा के बाद इस नतीजे पर पहुंचे कि एक संवत्सरी की भावना पूर्वक कुछ मौलिक नियमों पर आश्रित एक चातुर्मास, निंदावर्जन और एक व्याख्यान की व्यवस्था समाज मान्य हो, तो शासन की सुव्यवस्था का रथ व्यापक रूप से सरलता से गतिमान हो सकता है। दोनों आचार्यों ने समाज की भावना और आवश्यकता को ध्यान मे रखकर अन्य साथियों से विना परामर्श किए तत्काल मंगलाचरण के रूप में यह विचार रखा कि समग्र जैन समाज की अथवा श्वेताम्बर जैन समाज की या स्थानकवासी जैन समाज की सांवत्सरिक एकाग्रता बनने के अवसर पर वे एक चातुर्मास एवं एक पद पर व्याख्यान देने के लिए तैयार हैं। स्थानकवासी जैन समाज के दोनों आचार्यों के मिलन के बाद बीकानेर में हस्तीमलजी महाराज की शिष्याओं ने चातुर्मास किया। एक दो दीक्षाएं भी हुईं। चातुर्मास व अन्य कार्यक्रमों में आचार्य श्री नानालालजी म० के शिष्यों का भी परोक्ष-अपरोक्ष रूप से सहयोग रहा।

१६ फरवरी १९९२ (माघ शुक्ला त्रयोदशी-रविवार) को आचार्यश्री नानालालजी के सान्निध्य में गंगाशहर की बाफना स्कूल परिसर तक २१ मुमुक्षुओं की जूनागढ़ से निकली शोभायात्रा भी अपने आप में अनूठी रही है।

बीकानेर के चार शताब्दी पुराने जूनागढ़ दुर्ग में ही आचार्य श्री नानालालजी ने देशनोक के मुनिश्री रामलालजी को युवाचार्य तथा अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। युवाचार्य श्री रामलालजी ने हाल ही में उदयपुर में आचार्यश्री के अरिहंत शरण होने के बाद [illegible] के नौवें आचार्यश्री का दायित्व संभाला है। [illegible] जैन संघ के हुक्मीचंदजी महाराज की परम्परा में [illegible] की नाक कहे जाने वाले देशनोक ही नहीं बीकानेर [illegible] पहले आचार्य श्री रामलालजी महाराज ही बने हैं। आचार्य श्री ने मुनिश्री रामलालजी में सरलता, [illegible] मृदुता, मैत्रीभाव, संयम साधना, सेवा, कर्तव्य [illegible], धर्म के प्रति श्रद्धा, नम्रता, आगमों की विद्वता आदि गुणों को परख कर युवाचार्य पद पर मनोनीत किया।

शाकाहार, व्यसन मुक्ति व समता का संदेश देने वाले आचार्य श्री नानेश के दिए गए समता दर्शन व समीक्षण ध्यान के दो रत्न संघ व समाज के लिए अनुकरणीय रहेंगे। समता दर्शन वह सिद्धांत है जो [illegible] भी विषम से विषम परिस्थिति में भी हमारे संतुलन को बनाए रखता है। समता दर्शन को समझने वाला व्यक्ति प्रत्येक प्राणी की आत्मा को स्वयं तुल्य मानता है। वह दूसरे के दुःख-दर्द व पीड़ा को अपनी समझकर उनके साथ समानता का व्यवहार करता है।

समीक्षण ध्यान वह साधना है जिसमें [illegible] एकांत स्थान पर बैठकर मन की दृढ़ता के साथ [illegible] को बैठना होता है। पहले कुछ समय तक मन को एकाग्र करने का प्रयास किया जाता है। उसके बाद अपने में व्याप्त एक-एक दूषितवृत्ति का चिंतन किया जाता है। [illegible] चिंतन व दृढ़ संकल्प से जीवन में व्याप्त राग-द्वेष, काम-क्रोध, लाभ-मोह आदि कषायों से छुटकारा मिलता है। ऐसे संयम व समता साधक, समीक्षण ध्यान योगी को [illegible] अनेक वन्दन एवं श्रद्धांजलि।

-राजस्थान पत्रिका, बीकानेर

पं. श्यामाचरण त्रिपाठी

नित्य लीलालीन

शान्त, दान्त समाहित, दीर्घदर्शी, महामना, बाल ब्रह्मचारी, चारित्र चूड़ामणि, समता विभूति, समीक्षण ानयोगी, धर्मपाल प्रतिबोधक, परमादरणीय, श्रद्धेय जैनाचार्य श्री नानेशजी महाराज साहब कार्तिक मास कृष्ण पक्ष तृतीया बुधवार को रात्रि १०-४१ पर इह लीला का संवरण कर नित्य लीला मे लीन हो गए। इनका जन्म १९२० ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया को मेवाड ग्राम दांता में हुआ था। इस प्रकार इनका कार्यकाल आठ दशकों में विभक्त है।

कार्तिक स्यासिते पक्षे तृतीया बुध वासरे ।
ब्रह्मवादी महायोगी नानेशोनिधनं गतः ॥

आचार्य प्रवर अपने तेजस्वी, मनस्वी, ओजस्वी, तथा यशस्वी व्यक्तित्व के कारण सर्वमान्य थे। जिन शासन प्रभावक होते हुए भी सम्प्रदायातीत थे। सहृदयता उनमें कूट-कूट कर भरी थी।

भारतीय अस्मिता समता दर्शन के एक मात्र मार्ग दर्शक होने के कारण वे वस्तुत. 'स्थितप्रज्ञ' थे। समीक्षण ान उनकी साधना का मूलमंत्र था। समीक्षण ध्यान अन्तरचेतना की अन्तर्दृष्टि है। जिससे सर्वानर्थ परिप्लुत दुःखालय सार की अहंता तथा ममता सर्वदा के लिए मिट जाती है। परम श्रद्धेय समीक्षण योगी आचार्य श्री नानेश जी महाराज सानिध्य में अनेक भव्य आत्माओं ने इसका अभ्यास किया।

आचार्य जी की दार्शनिक दृष्टि बड़ी सूक्ष्म थी। उनकी दृष्टि में भाव साधु ही मान्य था। द्रव्य साधु साधन रूप में स्वीकार्य था। नमो लोए सव्व साहूणं। वे अप्रमत्त योग के उपासक थे। अनुशिष्ट, मर्यादित जीवन ही उन्हें य था। साधु जीवन में शिथिलाचार के वे कट्टर विरोधी थे। आचार्य जी के कार्यकाल में त्रिशताधिक भव्य जीव वराभिमुख बने। आचार्य चरण का गुण ग्राहित्व अनुपम था। वे भारतीय महापुरुषों में अन्यतम माने जाएंगे।

उनके मन, वचन, शरीर में पुण्यरूपी अमृत का वास था। तीनों लोकों को अपनी उपकार परम्पराओं से प्रसन्न रते हुए दूसरों के परमाणु जैसे छोटे गुणों को पर्वत के समान बड़ा बना कर अपने मन में सतत सन्तुष्ट रहते हुए नके समान सज्जन कितने हैं ? जैसे महात्मा भर्तृहरि जी कहते हैं-

मनसि वचसि काये पुण्य पीयूष पूर्णाः ।
त्रिभुवनमुपकार श्रेणिभिः प्रीणयन्तः ॥
परगुण परमाणुन् पर्वतीकृत्य नित्यम् ।
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः ।

इस प्रकार यद्यपि अनादि निधन सनातन निर्ग्रन्थ श्रमण संस्कृति के अनन्य प्रभावक, तत्वज्ञ, कर्मयोगी, आचार्य ो का द्रव्य शरीर नित्य लीला लीन हो चुका है तथापि उनका भाव शरीर अपनी पीयूष वर्षी देशनाओं के माध्यम वीतराग प्ररूपित श्रमण संस्कृति का अनन्त काल तक प्रतिनिधित्व करता रहेगा।

-बीकानेर

□ पं. ज्ञानदत्त पाण्डेय

समता-सूर

भारतवर्ष ऋषि मुनियों का देश, उन्होंने अपनी साधना से स्वयं भी सिद्धियों को प्राप्त किया तथा देश की
का भी हमेशा मार्गदर्शन किया। जीवन के सच्चे मूल्यों, आदर्शों की स्थापना की और भवसागर में भटक
आत्माओं को राह दिखायी। ऐसी महान् आत्माओं और विभूतियों में एक विलक्षण व्यक्तित्व वाले आचार्य श्री
जी महाराज हुए जिन्होंने अपनी साधना और व्यक्तित्व के बल पर ही जैन धर्म का खूब प्रचार-प्रसार किया। वे
विभूति, बाल ब्रह्मचारी, धर्मपाल प्रतिबोधक, जिन शासन प्रद्योतक, करुणा के सागर, जैनागम व्याख्याता एवं
मनीषी थे। उन्होंने कभी भी ऊंच-नीच, गरीब-धनी भेद को नहीं माना। उनका कहना था कि परमात्मा की दृष्टि में
सभी समान हैं तथा इस संसार में सभी एक समान ही जन्म लेते हैं। इसलिए मनुष्य के दुर्लभ जीवन को
व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए। वाकई इसका सदुपयोग करना चाहिए। आचार्य नानेश कहा करते थे कि जब तक
के अन्दर वास्तविक रूप से समता का भाव नहीं आयेगा तब तक उसे शान्ति प्राप्त नहीं होगी।

पूज्य गुरुदेव ने समता भाव के कारण ही हजारों की संख्या में पतितों पर करुणा करके उनको अपना
तथा उनको धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। उनसे हिंसा छुड़वायी। गुरु नानेश ने अपने जीवनकाल में
लोगों को शराब, बीड़ी, सिगरेट तथा भांग, गांजा, अफीम आदि नशे की वस्तुओं को न सेवन करने का
दिलाया। वास्तव में जन-कल्याण की दृष्टि से महात्मा गांधी, विनोबाभावे तथा मदर टेरेसा के आलावा यदि
नाम है तो वह आचार्य नानेश का ही है। चाहे किसी धर्म का व्यक्ति हो यदि उनके पास आया तो वह उनसे
प्रभावित हुआ तथा कुछ न कुछ प्रेरणा लेकर गया।

एक बार कुछ श्रावक रात्रि को प्रस्थान करने के लिए मंगलिक लेने गये तो पूज्य गुरुदेव ने जाने से मना
दिया, वे लोग मान गये। प्रात.काल समाचार पत्रों में देखा कि अमुक ट्रेन रात को दुर्घटना ग्रस्त हो गई।
वे उसी से जाने वाले थे। ऐसे ही एक व्यक्ति की कन्या की शादी तय थी तथा कुछ दिन बाद अचानक टूट
तो दुखी भाव से गुरुदेव से कहा गुरुदेव मेरी कन्या की शादी तय थी वह टूट गयी तो पूज्य गुरुदेव ने फरमाया
बहुत अच्छा हुआ। यद्यपि यह बात उस व्यक्ति को उस समय अच्छा नहीं लगी किन्तु बाद में उसे पता चला
जो शादी तय थी वह बहुत खराब थी तब जाकर उसे गुरुदेव की बात का अर्थ समझ में आया।

आचार्य नानेश के विलक्षण व्यक्तित्व तथा उनकी गहन साधना के कारण सभी उन्हें पूज्य मानते थे। आचार्य
नानेश ने अनेक महत्त्वपूर्ण पुस्तकों को लिखकर साहित्य की श्री वृद्धि तो की ही साथ ही अपने अद्भुत ज्ञान
पुस्तकों के माध्यम से जनता को उपलब्ध करा कर महान् उपकार का कार्य किया।

वे अहिंसा को दया धर्म का मूल मानते थे तथा कहते थे कि जिस व्यक्ति में अहिंसा और दया नहीं है
उस फूल के समान है जो सुर्ख तो बहुत है किन्तु उसमें थोड़ी भी सुगन्ध नहीं है। आचार्यश्री छोटे बच्चों से
प्रेम रखते थे तथा कहते थे कि यदि इन बच्चों में अच्छे संस्कार डाले जायें तो ये देश और समाज दोनों का
करने वाले हैं। इसलिए माताओं को हमेशा कहते थे कि बच्चों को कभी मारना मत। आचार्य नानेश दयालु थे
अनुवर्ती संतों सतियों को पुत्र-पुत्री से भी अधिक ममता की छांव देते थे। यह सब होते हुए भी एकदम पानी में

वाले कमल की तरह निर्लिप्त थे। वे सच्चे अर्थों में वसुधैव कुटुम्बकम् के सिद्धांत को चरितार्थ करते थे। वास्तव में बीसवीं सदी के एक महान सन्त तथा युग पुरुष आचार्य नानेश थे। यदि हम उनके बताए मार्ग पर चलें तो निश्चित ही उनके समान अपने जीवन को भी धन्य और सफल बना सकते हैं। ऐसे अद्भुत मनीषी को मैं कोटि-कोटि नमन करता हूं।

-उदयपुर

अष्टम पट्टधर को समर्पित है

डा. संजीव प्रचण्डिया 'सोमेन्द्र'

घनघोर अंधेरा
दूर-दूर तक नहीं दीखता सवेरा
हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील परिग्रह
जंगल में फैले झाड़ की तरह
पसर गए चारों ओर
और मचने लगा
शोर ही शोर।
पीड़ाएं!
जन्म जन्मांतर के अक्षय कोष को
टटोलने लगी,
जिसे देख हमारी आत्माएं,
हमें अपने आप से जकड़ने लगी।
धर्म!
मानो चुक गया
जीवन के हाशिये पर आकर
और हम बीतने लगे
भोग और केवल भोग के योग पर
तभी अचानक मैं
एक तेज प्रकाश को देखता हूं
जो उगा और छा गया समूचे संसार पर
संयम, साधना, तपाराधना, चिंतन योग
ध्यान!
व्यसन मुक्ति के जीवित संस्कार
हमारे घट-घट में
अग जग में
दीपित हो गए
और धर्म का ध्येय फैल गया
यत्र-तत्र-सर्वत्र
ऐसे अलौकिक, अप्रतिम प्रकाश पुंज
समता विभूति
आचार्य श्री नानेश जी
इस धरा पर प्रकट हुए और दे गए
एक नहीं, अनेक दिशाएं-
उत्तम, संयमित जीवन की नित नयी आशाएं
उनके शिष्यत्व में मिली
अर्द्ध त्रिशतक दीक्षाएं
और सुसंगठित संघकुल
उस ऐसे महान व्यक्तित्व
अष्टम पट्टधर को समर्पित हैं,
यह विनम्र काव्यांजलि।

❑ विनोद जैन

शताब्दी के महापुरुष

समय रुकता नहीं है, काल एक अखंड प्रवाह है, घटनाएं घटती रहती हैं। समय के सरोवर में खिलते रहेंगे घटनाओं के कमल। स्मृतियों के झरने झरते रहेंगे। आचार्यों की परम्परा अविच्छिन्न रूप से चली आ रही है, और आगे भी सदियों तक चलती रहेगी। धर्म की धड़कन से प्रतिपल धड़कती-धरा शाश्वत काल से ही ऋषियों मुनियों की तप-जप स्थली रही है। जिस प्रकार भगवान की महिमा अनिर्वचनीय होती है, उसी प्रकार महान संत महात्माओं की महिमा अवर्णनीय होती है।

श्री सुधर्मा स्वामी की पाट परम्परा के इक्यासीवें आचार्य, हुक्म संघ के आठवें पट्टधर, मूर्धन्य विद्वान, चारित्रिक उज्ज्वलता के प्रति सतत जागरुक, नियमों के पालक, श्रमण संस्कृति की सुरक्षा में सदैव प्रयत्नशील आचार्य श्री नानेश इस युग की एक ऐसी विरल विभूति थे, जिन्होंने विघटनशील समाज में नई चेतना जागृत कर संतुलित विकास की आधार शिला रखी थी। कहा जाता है कि चमत्कारी पुरुषों को जन्म से पूर्व उनके जीवन-संबंधित चमत्कारी घटनाओं का पूर्वाभास हो जाता है। आचार्य श्री नानेश के जन्म के कई वर्षों पहले हुक्म संघ के पांचवें पट्टधर श्री श्रीलालजी म.सा. ने अपने आचार्यत्वकाल में सहजभाव से संकेत दिया था कि इस संघ के आठवें पट्टधर युग में इतने प्रभावशाली होंगे कि उनके आचार्य काल में धर्म की महती प्रभावना होगी। संस्कार चेतना के सूत्रधार, वीर शासन के अद्वितीय एवं प्रभावक आचार्य, प्रखर तेजस्वी, धवल यशस्वी और इस शताब्दी के महान साधक, चिंतक थे राष्ट्र संत श्री नानेश। संत जीवन की आरंभिक अवस्था में ही धर्म के गूढ़ तत्वों को जीवन में सहज सत्य के रूप में स्थापित करने की दिशा में वे सलंग्न हो गए थे। समाज के उपेक्षित, तिरस्कृत पिछड़े वर्ग के संस्कारों में सुधार करवाने का बीड़ा उठाया और उन्हें सुधार कर धर्मपाल बनाकर उनका अभिशप्त जीवन ही सुधार दिया। हजारों बलाई परिवारों को कुव्यसनों से मुक्ति दिलवाकर ऐतिहासिक सामाजिक क्रांति का सूत्रपात किया था। छोटे-छोटे गांवों में सतत सघन विचरण कर, धर्म का व्यापक प्रचार-प्रसार कर इन लोगों को प्रभावित किया। इनके सुधरे आचरण और बदलते जीवन आचार्य श्री के प्रयासों की साक्षी अब तक दे रहे हैं। जैन समाज में एकता के लिए आचार्य श्री जीवन भर जागरुक रहे। हमेशा हर चर्चा में हर स्तर पर कहते रहे कि "संपूर्ण जैन समाज एक बने तो उपलब्धि होगी। सांवत्सरिक एकता की दृष्टि से अगर हमें अपनी परम्परा त्यागना पड़े तो किसी पूर्वाग्रह को आड़े नहीं आने दूंगा।"

कौन जानता था, किसे पता था कि राजस्थान में मेवाड़ के छोटे से गांव दांता में ज्येष्ठ सुदी द्वितीया संवत् १९७७ को सामान्य घर के साधारण आंगन में जन्मा बालक महामानव की श्रेणी में उच्च प्रतिष्ठित होगा। वीर प्रसविनी मेवाड़ धरा की गोद में बसा गांव दांता। नाम के अनुरूप दांता ने जो दिया था, वह दुनिया के सामने था। अब वह जाज्वल्यमान विराट व्यक्तित्व आज हमारे बीच नहीं है, उनकी भौतिक काया हमारी निगाहों से ओझल है, पर हमारी मन की आंखों में इस शताब्दी के उस महापुरुष के जीवन की, आचरण की, धर्म की, सिद्धांतों की, आदर्शों की अनंत स्मृतियां तैर रही हैं, जो जैन धर्म के आध्यात्मिक संसार को आलोकित कर रही हैं। आचार्य श्री नानेश की स्वरचित सत्तर कृतियां एवं उनके धवल विराट व्यक्तित्व पर लिखी गई बीस पवित्र रचनाएं मानव समाज को धर्मपथ के लिए आधार देंगी।

-राज मेडिकल हास्पिटल रोड़ नीमच, (म.प्र.)

आत्मिक-गुण-मंजूषा

मेरे जीवन के अनन्य आराध्य देव नानेश को मैं किन शब्दों के घेरे में आवेष्टित करूं ? मेरे पास उस आराध्य देव की आत्मिक गुण मंजूषा को उद्‌घाटित करने की शक्ति नहीं, सामर्थ्य भी नहीं, किन्तु फिर भी उनके हृदय सुमेरू से प्रस्फुटित जो अन्तःसलिला इस भारत धरा पर प्रवाहित हुई जिससे यह धरा अपने सारे अशुचिमय जीवन को शुचिमय बनाकर बड़े ही हर्ष से सागर में निमग्न थी । मेरे पूज्य गुरुदेव ने बनारसीदास की भाषा में शुचिमय जीवन का ही उपदेश दिया :-

भेद विज्ञान साबुन भयो, समरस निर्मल नीर ।
धोबी अन्तर आतमा, धोवे निज गुण चीर ॥

आत्मवत-सर्व भूतेषु यानी अपनी आतमा के समान ही समस्त आत्माओं को समझना आपका अद्‌भुत विज्ञान था । आप श्री जी ने सिद्धान्त के प्रत्येक पहलू को जीवन पाथेय बनाकर जीना ही श्रेष्ठतम माना, आप श्री जी के रग-रग से, कण-कण से ऐसी स्नेह-वात्सल्य की धारा बहती ही रहती । वास्तव में मेरे गुरु ऐसे थे, जैसा कि:-

गुरु ऐसा कीजिए, जैसा पूनम का चांद ।
तेज करे पर तपे नहीं, उपजावे आनन्द ॥

आप श्री जी सम-विषम सभी परिस्थितियों में चन्द्र की भांति सौम्यता, शीतलता एवं प्रकाश प्रदान करते रहे । पर शत्रु सम अगन की तपन का रूप बनकर आने वाले पर भी समतामय पीयुष वचन बरसाकर श्रुत ज्ञान की 'वारि' से शीतलता प्रदान ही करते । कहा भी है-

प्रिय वाक्य प्रदानेन, सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः ।
तस्मान् तदेव वक्तव्यं, वचने का दरिद्रता ॥

आपके मुख मंडल की मुद्रा ब्रह्मतेज की ओजस्विता से चमकती-दमकती ऐसी नजर आती कि मानो वनों का राजा मृगराज साक्षात सुशोभित हो रहे हों ।

मेरे गुरुदेव के अविचल साधना मय जीवन का ऐसा आकर्षण था कि परिचित क्या अपरिचित भी समर्पित हो जाते थे। क्योंकि कहा है -

जग में वैरी कोऊ नहिं, जो मन शीतल होय ।
या आपा को डारि दे, दया करे सब कोय ॥

आप श्री जी के हृदय में समतामय सलिला बहती रहती थी।, आपश्री जी का चित हमेशा औरों की ही प्रसन्नता से ही प्रसन्न रहता था । आपश्री जी के समीक्षण ध्यान का मानस चिंतन संयमी साधना से अनुप्राणित था । यही कारण था कि आप श्री जी तीर्थंकर परम्परा के अनुशासन में उतने ही अडोल-अकम्प-अविचल थे जितने स्वामी सुधर्मा थे ।

इसके विपरीत यदि ऐरे-गैरे गुरुओं की बातें सुनें तो सुनते ही रह जाएंगे। जैसे कि कहा भी है :-

गुरु लोभी चेला लालची, बैठे पत्थर की नाव।
दोनों डूबे बापड़ा, कौन बचावे आय॥

नवम् पट्टधर ने आचार्य देव के श्री चरणों में ही नहीं, अन्तर हृदय में निवास किया है। आपकी मृदुता-ऋजुता-विनयशीलता गजब है।

निश्चय ही यह महाप्रभु भी मेरे हृदय मंदिर के आस्था सिंहासन पर ऐसे विराजमान रहेंगे जैसे आचार्य श्री नानेश।

ये महाविभूतियां ऐसी हैं जो विष से अमृत बनाने की कलाओं के मर्मज्ञ कलाकार हैं। दुनिया के मान अपमान रूपी हलाहल/कालकूट को अमृत बनाना आपके बायें हाथ का खेल है। हंसते-हंसते, मुस्कुराते-मुस्कुराते विष की विषम परिस्थितियों में शिव रूप बन जाते हैं। जैसे कहा है कि -

मनुज दुग्ध से, दनुज रक्त से देव सुधा से जीते हैं।
किन्तु हलाहल इस जग का, शिवशंकर ही पीते हैं।

इसलिए मैं विनम्र भावों के साथ प्रार्थना करता हूं कि मेरे दिवंगत ज्योतिर्मय प्रदीप जहां भी विराज रहे हों, वहां आत्मभाव में रमण करते हुए हमारे वर्तमान शासनेश पर अविराम वरद हस्त की छाया बनाये रखें। निश्चय ही हमारे वर्तमान आचार्य प्रवर श्री रामेश युगों-युगों तक आपकी उज्ज्वल यश की ध्वजा अवनि-अम्बर में लहराएंगे।

-अलाय

अस्त हुआ महासूर्य

पदम जैन

१) नाना लाल आचार्यो, नाना गुण विभूषितः।
नाना रत्नैः प्रतिपूर्णो, यथा हि मन्दरो गिरिः॥

२) नानादेश विहारित्वात्, नाना भाषा विशारदः।
गुरुपार्श्वस्याभ्य श्रमाच्च, शास्त्रेषु परिनिष्ठित॥

३) गुरूणा स्नेह भूमि, न श्राद्ध (श्रद्धाना-श्रावकाना) श्रद्धेय पूजितः।
चतुर्वर्णाकीर्णं संघे, हस्तच्छाया करश्च नः॥

४) गणेशलालाचार्यस्य, शिष्यरत्नोपलक्षितः।
शिष्यसम्पत्तिपतः, मुनि राड् भूमि गड्डि॥

५) जिन प्रवचनमाश्रित्य, प्रवचन प्रभावनाम्।
कुर्वन्नदीपि सर्वत्र, दिवा दीपक भास्करः॥

६) अस्माकं स्नेहतो स्निग्ध, स्निग्धोऽमृत रसैन न।
तपः संयम मूर्तिश्च, पूर्तिश्च मनः स्थिते॥

७) पूर्वाचार्य पट्टस्य, वीतरागेऽभिषिक्तः।
आश्वेन न, आचार्य पदर्थागम्यशुभमत॥

८) स अद्य निधनं यातः, निर्धनी भूत्वानुयायिनः।
अस्माने शब्दभावानाम्, कुर्वेऽहं समर्पणम्॥

-सुभिषाना

□ मिट्ठालाल मुरड़िया, साहित्य रत्न

वे अब नहीं रहे

महाप्रतापी आचार्य श्री नानालालजी म०सा० के दिवंगत होने के समाचारों से सारा राष्ट्र संवेदनशील हो गया। उनके जाने से एक पीढ़ी का अंत हो गया। ऋषि परम्परा का एक बहुत बड़ा बांध टूट गया, लोक जीवन के अंतर का कीर्तिस्तम्भ धराशायी हो गया। प्राचीन पीढ़ी और मर्यादाओं का अंत हो गया। समाज, धर्म और देश ने एक धीर-वीर-गंभीर और संयम साधना का एक चलता-फिरता यशस्वी आचार्य खो दिया।

अगर ये अमेरिका में होते तो वांशिगटन और इब्राहिम लिंकन की तरह पूंजे जाते, अगर इंग्लैण्ड में होते तो वेलिंगटन और नेलशन आचार्य श्री का शिष्यत्व स्वीकार करते, स्काटलैंड में होते तो वालेस और राबर्ट ब्रू आचार्य श्री के सहयोगी बन जाते, फ्रान्स और इटली में होते तो जान ऑफ आर्क और मेजिनी की तरह आचार्य श्री के साथ धर्म जयघोष करते। मगर आचार्य श्री एक निर्ग्रन्थ थे, मर्यादाओं की सीमा में बंधे थे, धर्म की लक्ष्मण रेखा थी। जो कुछ तू था, भारतीय और जैन समाज के लिए पर्याप्त था आज नहीं तो कल तेरा मूल्यांकन अवश्य होगा।

अपने साधना जीवन में आचार्य श्री ने जो ख्याति पाई, जो नाम कमाया, जो प्रतिष्ठा बढायी और जो कीर्ति अर्जित की, वैसी न भूतो न भविष्यति।

काफी समय से आचार्य श्री का जीवन बड़ा संघर्षमय रहा, अंतर्द्वन्द्व अंतर में उथल-पुथल मचाते रहे, तनाव परेशान करते रहे, मगर आचार्य श्री कभी निराश नहीं हुए। अपने अदम्य उत्साह और आन्तरिक प्रेरणाओं से सब कुछ सहते रहे, सब कुछ पीते रहे। समता के साथ धैर्य और विवेकवान बने रहे और संकटों से लोहा लेते रहे। स्वास्थ्य साथ न देने पर भी आन्तरिक संघर्षों से झूझते रहे। विपत्तियों में भी मुस्कराते रहे।

वे तप-त्याग, साधना, समता, ज्ञान-दर्शन और चारित्र्य की अद्‌भुत मूर्ति थे। संयम-साधना के साकार रूप थे, श्रेय में डूबे रहने वाले कर्मयोगी महात्मा थे, चतुर्विध संघ की पतवार थे।

कबीर के शब्दों में इन्होंने संयम साधना की पावन चादर 'ज्यों की त्यों' धर दीनी चदरिया। वही चादर पवित्रता से, मैत्री से, समता से, उदारता से और अधिक उज्ज्वल बनाकर समाज और धर्म को वापस समर्पित कर दी। धन्य है इस आचार्य को, धन्य है आचार्य जवाहर और आचार्य गणेश के इस प्रभावशाली लाल को। यही मेरी श्रद्धांजलि है, शत्-शत् वंदन।

-बैंगलोर-२५

✿

काया महाव्रत निभाकर,
गुरुवर किया प्रयाण।
मुझ को दुख ऐसा हुआ
मानो सुख गया प्राण॥

-मोहनलाल पारख, नोखा

❑ सुमतिकुमार जैन

आलोकमान भास्कर

कठोर संयम साधना, शुद्ध, सात्त्विक साधु मर्यादा, विशिष्ट ज्ञान-ध्यान आराधना के लिए विख्यात, सम्यक् दर्शन, ज्ञान और चारित्र रूप रत्नत्रय की आराधना में जीवन पर्यन्त समाधिभाव में लीन रहने वाले साथ ही संघ व समाज को इस ओर प्रवृत्त होने की सतत प्रेरणा देने वाले आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. ने भगवान महावीर द्वारा प्ररूपित तृतीय मनोरथ को अपनाकर महानिर्जरा, महापर्यवसान कर जैन समाज में एक अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया है। अर्थात् जब सूर्य का प्रभातकाल था तब उन्होंने रात्रि के अंधकार का सफाया किया और कमल राशि को खिलाया, तेजस का प्रसार हुआ कि चन्द्र नक्षत्र सब फीके पड़ गए। मध्याह्न काल में प्रखरता से तपकर वही सूर्य अब संध्याकाल में अस्ताचल के शिखर पर उतर गया, हम सब शोक मग्न हो गए।

अपना संपूर्ण जीवन त्याग, तप एवं संयम की सौरभ से ओतप्रोत कर जनमेदिनी को सत् मार्ग की ओर प्रेरित किया। जैसे गन्ने को किधर से भी चखें, सर्वत्र मिठास ही मिठास है। सूर्य की प्रत्येक किरण तम-नाशक है, पानी का प्रत्येक बिन्दु प्यास बुझाने में सक्षम है, इसी प्रकार आचार्य भगवन्त के पावन जीवन का एक एक क्षण अज्ञानान्धकार में भटकने वाले मानव समाज के लिए प्रकाश स्तम्भ था। आचार्य श्री की वाणी में ओज, हृदय में पवित्रता एवं आचरण में पवित्रता के साथ-साथ आपका बाह्य जीवन जितना नयनाभिराम था उससे भी अनेक गुणा आपके अन्तर जीवन की सौरभ थी। आपका जीवन सागर सी गहराई, पर्वत सी ऊंचाई, चन्द्र सी शीतलता, सूर्य की तेजस्विता, धर्म की महाप्राण सरलता, सरसता आदि अनेक गुणों से युक्त था। जिस प्रकार एक महावृक्ष महावात के योग से गिर जाय उस समय बेचारे पक्षीगण क्रंदन करते हैं, यही स्थिति जैन शासन और संघ की है वे संघ के क्षत्रपति, जैन जगत के आलोकमान भास्कर, माँ भारती के अनुपम लाल आचार्य भगवन् को अपने बीच न देखकर, न पाकर अत्यन्त उद्वेलित हैं। राष्ट्र कवि श्री मैथिली शरण गुप्त ने एक जगह लिखा है-

जो इन्द्रियों को जीत कर, धर्माचरण में लीन है।
उनके मरण का सोच क्या वो मुक्त बंधन हीन है॥

यह भी कटु सत्य है कि जिस महामानव-महापुरुष ने सब कुछ दे दिया, जीवन सौंप दिया। हमारे पास क्या है, जो उनके ऋण को चुका सकें। हमारे पास प्रतिदान करने को कुछ भी तो नहीं है, ऐसे महापुरुष न मालूम कितनी शताब्दियों में आते हैं। सच ही कहा गया है-

हजारों सालों से नरगिस, अपनी बेनूर पर रोती है।
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदार पैदा॥

आचार्य भगवन् अपनी सानी के एक ही थे। आप दीपक के समान थे, जो स्वयं प्रकाशित रहकर अन्य को प्रकाशमान करते हैं। परमाराध्य आचार्य श्री नानालाल जी म.ने अज्ञान की घोर तमिस्रा को नष्ट कर न जाने कितने व्यक्तियों को ज्ञान से प्रकाशमान किया। दिशाहीनों ने दिशा पायी है- पंगु गतिमान हुए हैं। संपत्ति और विपत्ति जीवन और मरण दोनों में महात्मा एक ही भाव-दशा रखते हैं, आप में भी यही भाव हर दम नजर आता है। आचार्य

प्रवर ने जीवन के प्रारंभ से अन्त तक एक तेजस्वी व्यक्तित्व को जिया। उस महान् दिव्य पुरुष की सर्व विशेषताओं को शब्दशः प्रकट करने की ताकत ही नहीं। धन्य हैं ऐसे आराध्य आचार्य देव, धन्य है उनकी साधना। ऐसी समता विभूति के चरण कमलों में सहस्र बार वंदन।

-प्रधान सम्पादक, जगमग दीप ज्योति, अलवर

फरजन्द जाया तुमसा

गोपीलाल गोखरू

हुक्मचंद गच्छ नायक रोशन है नाम तेरा।
लब पे है हर बसर के पूज्य राज नाम तेरा॥
है धन्यवाद उसको फरजन्द जाया तुमसा।
खुशी हुआ था कुनबा सुनकर के नाम तेरा॥
है सम सरीफ तेरा नाम नानालाल जाहीर।
जाने नही बसरे जो कम्बख्त नाम तेरा॥
फादर है मोड़ीलाल मदर शृंगार बाई।
इसी वतन में जन्मा है दांता ग्राम तेरा॥
सम्वत् उनीसो छन्यु बाना फकीरी पहना।
तब से कहाये मुरसद दुनिया में नाम तेरा॥
ओहदा मिला था तुझको उदयपुर के अन्दर।
मकलुक तब से कहती पूज्य राज नाम तेरा॥
करता है तू गरजना तख्ते नसीन होकर।
रुकसत अजाब होते सुनकर के कलाम तेरा॥
चक्कर लगाते रहेंगे समसो कमर फलक में।
तब तक रहेगा रोशन दुनिया में नाम तेरा॥
नहं ताव है जबां में तारीफ कर सकूं मैं।
खिदमत में रहे फरिश्तें बनकर गुलाम तेरा॥
खादीम तेरा ये करता है अर्ज दस्त बसता।
किश्ती को पार कर दे मैं हूं गुलाम तेरा॥
ये गोखरूं भी आया करने दीदार तेरा।
सजदा करे कदम में खादीम सलाम तेरा॥

समता योगी

गंगा की निर्मल धारा सम था जीवन जिनका पावन, ऐसे दिव्य विभूति को कोटि-कोटि वंदन।

भारतवर्ष ऋषियों, त्यागियों और समाज सुधारकों की धरा रही है। यहां ऐसे महापुरुषों ने जन्म लिया जिन्होंने स्व पर कल्याण के पथ पर चलकर युगबोध, युगनिर्माण का पुरुषार्थ किया। ऐसे ही युग चेतनाओं में एक ऐसे आचार्य का नाम आता है जिन्होंने एक ओर अस्पृश्य समझे जाने वाले हजारों लोगों को शुद्ध धर्माचार का उपदेश देकर धर्मपाल बनाया तो दूसरी ओर विषमता, तनाव, व्यग्रता और अशांति से त्राहि-त्राहि करती समाज को समता दर्शन व समीक्षण ध्यान के माध्यम से अंतरावलोकन व अंत निरीक्षण की प्रेरणा दी। भगवान महावीर के वीतराग सिद्धांतों का मुकुट धारण करने वाले एवं विशुद्ध निर्ग्रन्थ श्रमणाचार का पालन करने वाले व कराने वाले थे जैनाचार्य श्री नानेश जी म० सा०।

२०वीं शताब्दी के महामनस्वी, महातपस्वी, महावर्चस्वी, सर्वतोमुखी व्यक्तित्व के धनी आचार्य श्री नानेश जन-जीवन में सर्वांगीण समुन्नत संस्कार निष्ठ धार्मिक प्रतिष्ठा की स्थापना करने में सलंग्न रहे। आपके समतानिष्ठ शांत गंभीर व्यक्तित्व एवं संयमी जीवन का ही प्रभाव है कि आज के भौतिक युग की सुख सुविधाओं और विषय भोगों को निस्सार और निरर्थक समझ कर ३५० से अधिक मुमुक्षु आत्माओं ने भागवती दीक्षा स्वीकार की। एक साथ पांच, सात, नौ, बारह, पन्द्रह, इक्कीस, पच्चीस दीक्षाएं आपश्री के कर कमलों द्वारा संपन्न हुई। रतलाम में लाखों की जनमेदिनी के बीच आपने एक साथ २५ भव्यात्माओं को दीक्षा दी।

आप आगमों, शास्त्रों के मर्मज्ञ थे। अनेक भाषाओं के अच्छे जानकार थे। अन्य धर्म दर्शनों का आपने गूढ़ अध्ययन किया था। वाणी और लेखनी का अनुपम समन्वय था आप में। आप आत्म-साधना व अनुशासन के प्रति सतत जागरूक रहे। आचार्य श्री प्रभावशाली प्रज्ञा पुरुष थे। आपकी प्रभावशाली वाणी जन-जन को आंदोलित कर वीतराग मार्ग की ओर प्रेरित करती रही। गुरुदेव के समता संदेश को ही आत्मसात कर लिया जाए तो व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, विश्व का उद्धार संभव है। आपकी वाणी और व्यक्तित्व में अनूठा आकर्षण था। हर परिस्थिति में सहिष्णुता, समता रखकर दुनिया को आपने समता का सच्चा पाठ पढ़ाया।

आपने अपना उत्तराधिकारी शिष्यों में श्रेष्ठ शिष्य, आगम मर्मज्ञ, व्यसन मुक्ति संस्कार क्रांति के प्रेरक श्री रामभुनि जी को बनाकर जिन शासन व विश्व को एक अनमोल हीरा दिया है।

जैन समाज ही नहीं वरन संपूर्ण मानव समाज को इस विरल विभूति की महाप्रयाण यात्रा एक अनुपम संदेश दे गई। २७ अक्टूबर १९९९ को पूर्ण चैतन्य अवस्था में प्रात. ९.४५ बजे संथारा ग्रहण कर रात्रि १०.४१ मिनट में अपने नश्वर देह को छोड़कर मोक्ष मार्ग की यात्रा की ओर प्रयाण किया। जीवन भर उत्कृष्ट संयम पालन का ही प्रतिफल था कि अंतिम समय पंडित मरण को प्राप्त किया। पिछले छ: माह से इस शरीर का मोह छोड़कर वे अंतर-साधना में लीन हो गये थे। ऐसे महान आचार्य को हमारी हार्दिक श्रद्धांजलि। आपकी यह अमर कहानी युगों-युगों तक जन-जन को प्रेरणा देती रहेगी। इतिहास उनके गुण गाता है जो दीपक की तरह जलते हैं, जो विष की घूंट पीकर भी अमृत की धार उगलते हैं।

-नगरी (छत्तीसगढ़)

❑ इन्द्रमल बाबेल

महानता के प्रतीक

हुक्म संघ के अष्टमाचार्य, समता दर्शन प्रणेता, समीक्षण ध्यान योगी, धर्मपाल प्रतिबोधक, श्री नानालालजी म.सा. के आध्यात्मिक चरमोत्कर्ष पर पहुंचने के मूल कारणों का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि-

आचार्य श्री का जीवन संयमीय साधना व तदनुसार आचरण से ओत-प्रोत था। जीवन की असली संपदा चारित्र ही है। चारित्र किसी भी प्राणी को उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त नहीं होता, वह तो स्वयं को अर्जित करना पड़ता है। आचार्य श्री के चरणों के साथ आचरण के जुड़ जाने से चरण पूज्य हो गए हैं। आचार्य श्री ने पहले स्वयं संयमित व सादगीपूर्ण जीवन अपनाकर बाद में अपने श्री संघ के अनुयायियों (साधु- साध्वी, श्रावक-श्राविकाओं) को भी ऐसा ही संयमित एवं सादगीपूर्ण जीवन जीने हेतु प्रेरणा व मार्गदर्शन का अविरल स्रोत प्रदान किया। स्वयं के विशुद्ध चारित्र पालन द्वारा अपने अनुयायियों पर अमिट प्रभाव डाला।

आचार्य श्री ने यश, कीर्ति की कभी चाहना नहीं की। मान को सदैव पृष्ठ भाग पर रखकर, पद एवं पदवी से सदैव दूर रहकर, सादगी एवं संयम से प्रीति रखी, वही उन्हें चरमोत्कर्ष पर पहुंचाने में सहायक सिद्ध हुई।

आचार्य श्री नानेश को श्रमण नियमों के पालन में शिथिलता कतई स्वीकार्य नहीं थी। उन्होंने कहा कि-स्थानकवासी परंपरा में देश काल व परिस्थिति के नाम पर भी आगम निरूपित श्रमण आचार नियमों की अनदेखी या शिथिलता कतई स्वीकार्य नहीं।

आचार्य श्री का मानना था कि भगवान महावीर के दर्शाये सिद्धांतों--अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह के तहत ही जैन साधु-साध्वियों का आचरण प्रशंसनीय है। जैन साधुओं को मर्यादित जीवन जीने के लिए जैन गृहस्थों को सभी जैन साधुओं के आचरणीय मौलिक सिद्धांतों की जानकारी होना आवश्यक है। उनके कथनानुसार जब भी जहां भी इन नियमों के विपरीत किसी साधु-साध्वी का आचरण होता है, तो जैन ही नहीं, हर व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वे उन्हें नियमों की याद दिलायें।

साधु जीवन में वर्तमान समय में आई गिरावट पर चिंता व्यक्त करते हुए स्थविर प्रमुख श्री ज्ञान मुनिजी म.सा. ने उचित ही कहा कि आज स्वछंदता बढ़ रही है। नैतिक पतन हो रहा है। अगर बचपन के संस्कार सही हैं और वह साधु जीवन अंगीकार कर चुका है तो फिर सांसारिक मृग-मरीचिका से विलग आत्म-कल्याण की राह पर ही चलना होगा।

आचार्य श्री की सदैव यह मान्यता रही कि लघु से लघु भूलों की उपेक्षा करने से जीवन में बड़ी भूलों का निर्बाध रूप से प्रवेश होने लगता है। आपने फरमाया कि-.आरंभ में भूल का प्रवेश खटकता है, परंतु अभ्यस्त हो जाने पर वे बड़ी भूलें भी नगण्य सी प्रतीत होने लगती हैं। फलस्वरूप भूलों से पूर्णतया परिवेष्टित जीवन पतन की ओर बढ़ता चला जाता है। अतः प्रारंभ में ही इन लघु भूलों के प्रवेश पर रोक लगाया जाना नितांत आवश्यक है। इस दृष्टि से यह उचित ही कहा गया कि- रोग, त्रुटि और शत्रु को छोटा समझकर उसकी उपेक्षा नहीं की जाना चाहिए अन्यथा वे घातक बन जाते हैं।

आचार्य श्री के संपूर्ण जीवन, आचरण और व्यवहार में इस तथ्य को भली भांति देखा व परखा जा सकता है। उनकी सादगी, त्याग सभी संतों के प्रति सेवा-भावना का उल्लेख शब्दों की सामर्थ्य से परे है। उनका संपूर्ण जीवन वास्तविक अर्थों में एक दीपक की भांति था, जिसने स्वयं जलकर संपूर्ण मानव व राष्ट्र को आलोकित किया। वे विशुद्ध साध्वाचार के प्रतीक थे। वैसे तो उनके जीवन काल की अनेकानेक घटनाओं, प्रेरक प्रसंगों, चमत्कारिक घटनाओं से हम उनकी महानता व उत्कृष्ट साधना का अनुमान लगा सकते हैं, किंतु यहां एक ऐसी ही लघु भूल की घटना पर आचार्य श्री की प्रतिक्रिया को उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया जा रहा है-

आचार्य श्री अपने संतों व श्रावकों के साथ विहार करके चार मील की दूरी पर निकल आये। अचानक आचार्य श्री के सामने मुनि अमरचंद जी म.सा. आये और निवेदन किया कि मेरे से आज किंचित प्रमाद हुआ है। उन्होंने कहा, 'भगवन आज प्रातः एक श्रावक से सूई लाया था जो स्थानक में ही रह गयी। उसे लौटा नहीं पाया। आप श्री आदेश दें क्या करूं ?''

आचार्य श्री ने तुरंत कहा- 'इसमें क्या सोचना है, किसी श्रावक को साथ लो और ढूंढ कर लौट आओ। भगवान महावीर ने कहा- संयम गोयम मा पमायए (हे गौतम.. एक समय मात्र का भी प्रमाद मत करो)।' उपस्थित श्रावकों ने आचार्य श्री से निवेदन किया भगवन.. आप इन्हें आठ मील (चार जाने व चार आने) का चक्कर न दें। हम वापस जाएंगे ही, जाकर सूई अवश्य लौटा देंगे।

आचार्य श्री ने हंसते हुए कहा- 'आपकी भावना प्रशस्त है किंतु हमारा संयमी जीवन हमें इसकी अनुमति नहीं देता। संयम की अपनी मर्यादाएं हैं। हम अपना काम स्वयं न करें, अन्यों से करवायें, यह उचित नहीं है। एक सामान्य शिथिलता, एक साधारण मर्यादा भंग किसी भी समय बड़ा आकार ग्रहण कर सकता है। सूई तो मुनि अमरचंद जी को खुद ही लौटानी है। सुविधाएं, दुविधाओं को जन्म देती है। जैन साधु सुविधा भोगी नहीं है। वह प्रतिपल, अप्रमत्त, सजग है, अनुपल जाग्रत, अनुक्षण सावधान।

जैसे ही मुनि अमरचंद जी म.सा. ने सुना, वे तत्काल उसी दिशा में चल दिए जिधर से विहार हुआ। स्थानक पहुंच कर सूई ली और उसे श्रावक को लौटाकर पुन. संघ विहार में सम्मिलित हो गये।

इसी एक प्रसंग से आचार्य श्री का साध्वाचार के प्रति दृष्टिकोण स्पष्ट हो जाना चाहिए। इसी प्रकार आचार्य श्री ने सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चरित्र के मार्ग पर दृढ़ता से आरूढ़ होकर साधना के चरम शिखर पर पहुंचने में सफलता प्राप्त की।

श्रमण संघ की साध्वी मेवाड़ कोकिला यश कुंवर जी म.सा. ने चित्तौड़गढ़ में अपनी आचार्य श्री की श्रद्धांजलि सभा में यह उचित ही कहा है कि आचार्य श्री का नाम भले ही नानालाल है, किंतु उनके कार्य मोटेलाल के हैं।

जब तक यह धरती, समाज, राष्ट्र तथा वीर शासन है तब तक आचार्य देव की शालीनता, संतत्व, आचार्यत्व व उनके समत्व भाव की दुंदुभी चहुं दिशा की ओर बजती रहेगी।

-१५, ग्लास फैक्ट्री, मातृ छाया, उदयपुर - ३१३००१

❑ पारसमल श्रीश्रीमाल

गुरु को जब जाना तब पाया

समता विभूति आचार्य भगवन श्रद्धेय १००८ श्री नानालालजी म.सा. का व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व सदा सर्वदा स्वच्छ दर्पण के माफिक था, स्पष्ट था। सैद्धांतिक धरातल पर उन्होंने अपने जीवन को अहर्निश जीने का प्रयास किया। भगवान महावीर के समस्त नियमों के प्रति आस्थावान रहकर साधुमार्गी परंपरा को सतत गति देने में जो भूमिका दीर्घ तपस्वी महान् क्रियोद्धारक श्रद्धेय स्व. आचार्य देव श्री हुक्मीचंद जी म.सा. ने संपादित की उसी विशुद्ध परंपरा को प्रवर्धमान बनाने में उनके बादवाले यथा नाम तथा गुण स्वरूप आचार्य श्री शिवलालजी म.सा., आचार्य श्री उदय सागरजी म.सा., आचार्य श्री चौथमलजी म.सा. आचार्य श्री गणेशीलाल जी म.सा. ने जो प्रयास अपने विवेक के साथ अपनी मर्यादा में रहते हुए किये, आचार्य श्री नानेश ने उसे ही महानता प्रदान करने का सतत कार्य किया तथा जो नवीनता उसमें अनुकूल लगी, वास्तविकता से जुड़ी लगी उसे साकार रूप प्रदान करने में आप श्री जी की भूमिका सराहनीय रही। मूल परंपरा को सुरक्षित रखते हुए, आप श्री जी ने अपनी विचक्षण प्रतिभा के बल पर धर्मपाल उद्धार का जो कार्य किया, वह अपने आपमें विशिष्ट स्थान रखता है। एक व्यसनी व्यक्ति को बदलना जहां मुश्किल है, वहां एक लाख के लगभग बलाई जनों को स्वात्मबोध कराते हुए उनके जीवन के विकास के लिए क्या जरुरी है तथा पारिवारिक व सामाजिक जीवन में सम्मानित स्थान पाने में क्या आवश्यक है, उसको जिस तरह समझाया, यह आप श्री जी की अनुपम शैली का करिश्मा है।

ध्यान क्षेत्र में समीक्षण-ध्यान का आगम सम्मत प्रमाण व स्वरूप समझाकर एक ऐसा दिशा बोध दिया जिससे मनुष्य चिंता फिक्र के भंवर से निकलकर जीवन को यथार्थ रूप से समझकर जीने की कला सीख सके।

स्वाध्याय के क्षेत्र में पर्युर्षण महापर्व एवं अन्य प्रसंगों पर अध्यात्म परक जीवन की स्थिति बनाने के अवसर हेतु एक ऐसा संगठन तैयार किया जिसके द्वारा जिन गांवों, नगरों में संत महापुरुष एवं महासतियांजी म.सा. मर्यादा में बाधकता के कारण नहीं पहुंच सकते हैं या जहां की पूर्ति चातुर्मास के रूप में नहीं हो पाती है वहां पर स्वाध्यायी भाई-बहन पहुंचकर धर्म ध्यान का अलख जगाने लगे।

समता समाज के निर्माण में समता दर्शन और व्यवहार का प्ररूपण कर आप श्री जी ने यह सुस्पष्ट कर दिया कि जीवन को इस तरह भी जीया जा सकता है, जो जीवन का वास्तविक दृष्टिकोण है। जिसे समझ कर भटकने की बजाय अपने गंतव्य की ओर अग्रसर हो सके।

१५-१५, २१-२१, २५-२५ आदि दीक्षाओं का एक साथ होना जैन जगत में बहुत आश्चर्यकारी कार्य है। इतना सब कुछ होने पर भी आप श्री जी के जीवन में कोई अहमन्यता या प्रदर्शन आदि की प्रतिकूल प्रवृत्ति नहीं देखी गई। इसी वजह से आप श्री जन-जन के श्रद्धा केंद्र बने। न सिर्फ हुक्म संघ की परंपरा से जुड़े हुए ही आप श्रीजी को मानते थे, बल्कि अन्य संप्रदाय एवं परंपराओं में भी आप श्री जी अपने व्यक्तित्व एवं कर्तृव्य के कारण समादृत थे।

क्या गुणगान करें ऐसे महामहिम का जिन्होंने अपने जीवन में अनेक उपसर्ग एवं परियह सहकर समतामय जीवन जीते हुए अपनी वह जिम्मेदारी जो प्रबल पुण्य योग से स्व. शांत क्रांति के अग्रदूत श्री गणेशाचार्य से पायी थी, उसे बखूबी निभाने के लिए सर्वदा कटिबद्ध रहे हैं। इधर कई वर्षों के अंदर स्वास्थ्य की परिस्थिति वश एवं

जाहो जलाली जो विभिन्न रूपों में आप श्री जी के सानिध्य में होती रही, उस भार को हलका करने के लिहाज से आप श्री जी ने चित्तौड़ नगरी में तरुण तपस्वी, शास्त्रज्ञ श्री रामलाल जी म.सा. को मुनि प्रवर के पद के साथ मुख्य रूप से चातुर्मास की विनतिया सुनना, चातुर्मास खोलना, संत सतियों के शासन संबंधी पत्र व्यवहार आदि की जिम्मेदारी विधिवत् सौंपी थी, और कालांतर में बीकानेर नगर के अंदर विधिवत परंपरा के अनुसार लिखित व्यवस्था के साथ संघगत उपस्थित साधु साध्वी समुदाय एवं श्रावक श्राविकाओं के समक्ष अपना कार्यभार मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म.सा. को, युवाचार्य बनाकर सौंप दिया। इस कार्य से पूर्ण रूपेण शासन के प्रति वफादार चतुर्विध संघ ने आप श्री की इस आज्ञा का यथाविधि पालन कर अपनी श्रद्धानिष्ठा का परिचय दिया। संप्रति आप श्री जी का साया प्रत्यक्ष नहीं है किंतु परोक्ष रूप से आप श्री जी का वरद हस्त संघगत सभी पुण्य आत्माओं के ऊपर है और रहेगा। क्योंकि जिस तरह से शासन फल रहा है, फूल रहा है, वर्धमान हो रहा है, इससे आप श्री जी के निर्णय की वास्तविकता के दर्शन प्रत्यक्ष करने का मौका वर्तमान शासन प्रणाली को देखते हुए मिल रहा है।

सदा सर्वदा आप श्री जी का वरद हस्त हमारे पर बना रहे, हम निरंतर आप श्री जी के आदेश निर्देश अनुसार वर्तमान आचार्य भगवन रामेश की छायाछत्र में रहते हुए अधिक से अधिक शासन की हर तरह से सेवा, भक्ति, विनय करते रहें, यही कामना है।

-महामंत्री, समता युवा संघ, ब्यावर

समता मंत्र

मोती विगल

विश्व शांति का महा मंत्र,
आचार्य श्री की समता है।
जीवन तो रमता भोगों में,
कर्मों में कुत्सित ढोंगों में
सुख-दुख दोनों साथी हैं
पग-पग बाधा आती है
मेरा-मेरी ममता है ॥१॥

बिगड़ी का ना कोई साथी
अपना भी पराया हो जाती
पुद्गल को जो पहचाने तू
आत्मा का अन्तर जाने तू
क्यों दुख का कारण बनता है ॥२॥

तुझ में जो अहंकार भरा
मान मोह है क्रोध भरा
तू मत्सर दृष्टि पाले रे
नानेश शरण अपनाले रे
मुक्ति का पथ बनता है ॥२॥

तन धन जन का अभिमान
दूजों का क्यों अपमान
क्लेश का कारण बनता
सदा तेरा निरर्थी ममता
करनी का फल तू भरता है ॥४॥

-उपाचार्य, आचार्य श्री नानेश समता शिक्षण समिति, दांता

❑ चंचलकुमार बोथरा

विचक्षण प्रतिभा के धनी

चित्तौड़गढ़ जिले के छोटे से ग्राम दांता में पिता मोड़ीलाल जी एवं मातुश्री शृंगार कंवर बाई की रत्नकुक्षी से जन्म लिया। बचपन का नाम नाना रखा गया। मेवाड़ का यह हीरा जिसकी बुद्धि बचपन में ही तीक्ष्ण थी तथा सेवाभावना प्रखर थी। गांव के बाहर से औरतें पानी लेकर घर-घर पहुंचती। एक बार एक महिला पानी ठीक तरह से ले जा नहीं पा रही थी, नाना ने स्वयं अपने कंधे पर घड़ा उठाया और उस वृद्ध महिला के घर पर छोड़ आये। समता का एक अन्य प्रसंग गृहस्थ जीवन में अपने काकाजी के साथ व्यापार प्रारंभ करने के समय का है। काकाजी को नाना ने पहले ही कह दिया मुझे गुस्सा आए तब आप शांत रहना, कदाचित आपको गुस्सा आएगा तो मैं शांत रहूंगा। क्रोध का जवाब शांति से देना, यह समता भाव का अनुपम उदाहरण है।

१९ वर्ष की उम्र में सच्चे गुरु शांत क्रांति के अग्रदूत आचार्य श्री गणेशीलाल जी म.सा. की खोज के बाद संयम (दीक्षा) ग्रहण किया। दीक्षा लेने के बाद ज्ञान-दर्शन-चारित्र की अभिवृद्धि करते हुए गौरवशाली आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए। आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होने के बाद समता संदेश जन-जन के कल्याण के लिए दिया। केवल संदेश ही समता का नहीं दिया बल्कि अपने जीवन के प्रत्येक क्षण में समता का जीवन जिया और सर्व जनहित के लिए समता का उपदेश दिया। आप श्री जी की सत्प्रेरणा से बलाई जाति के हजारों भाई-बहनों ने कुव्यसन का त्याग किया जो 'धर्मपाल' के रूप में जाने जाते हैं। स्थानवासी समाज में पिछले ५०० वर्षों के इतिहास में एक साथ धर्मनगरी रत्नपुरी में २५ भव्य मुमुक्षुओं को दीक्षा देकर जिनशासन का गौरव ही नहीं बढ़ाया अपितु एक कीर्तिमान स्थापित किया, जिससे जिनशासन की भव्य प्रभावना का प्रसंग बना।

आचार्य श्री नानेश ने संवत्सरी एकता के लिए भी अपनी तरफ से पूरी कोशिश की और यहां तक कह दिया था कि संवत्सरी एकता के लिए यदि सभी जैन समाज भादवा सुदी ४ या ५ की बजाय ६ या अष्टमी कोई भी तिथि तय करते हैं तो मैं भी अपनी पूर्व परम्परा से हटकर एकरूपता के लिए जो तिथि संपूर्ण जैन समाज तय करेगा उस तिथि को संवत्सरी के रूप में मनाने को तैयार रहूंगा।

निर्ग्रन्थ श्रमण संस्कृति को सुरक्षित रखने के लिए आपने एक ही आचार्य के नेश्राय में शिक्षा, दीक्षा, विहार, प्रायश्चित रखने की परंपरा को अक्षुण्ण रखा। आप श्री ने संयम में कहीं पर भी किंचित मात्र भी शिथिलता नहीं आने दी। वे संयम के सजग प्रहरी थे।

आप श्री से बम्बई चातुर्मास में एवं अन्य चातुर्मासों तथा दीक्षा जैसे विशेष प्रसंगों पर तो माईक खोल देना चाहिए का विशेष आग्रह किया लेकिन आपने मूल महाव्रतों को पूर्णतः सुरक्षित रखा तथा जहां प्रवचन सभा में परिषद् बहुत ज्यादा आ जाती तो अलग-अलग ढंग से दो-तीन बार शिफ्ट में प्रवचन दिया जाता। आपने जीवन पर्यन्त महाव्रतों को पूर्णतः सुरक्षित रखा, तभी अन्य धर्माचार्य सहज ही कह देते हैं कि क्रिया देखनी है तो आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. की देखो।

आचार्य श्री नानेश ने अपने मुखारविंद से लगभग ३५० भाई बहनों को दीक्षा प्रदान की जो अपने आप में एक कीर्तिमान है। आचार्य श्री नानेश ने हजारों कि.मी. की पैदल यात्रा करके जिनशासन की भव्य प्रभावना की

जाहो जलाली जो विभिन्न रूपों में आप श्री जी के सानिध्य में होती रही, उस भार को हलका करने के लिहाज से आप श्री जी ने चित्तौड़ नगरी में तरुण तपस्वी, शास्त्रज्ञ श्री रामलाल जी म.सा. को मुनि प्रवर के पद के साथ मुख्य रूप से चातुर्मास की विनतियां सुनना, चातुर्मास खोलना, संत सतियों के शासन संबंधी पत्र व्यवहार आदि की जिम्मेदारी विधिवत् सौंपी थी, और कालांतर में बीकानेर नगर के अंदर विधिवत परंपरा के अनुसार लिखित व्यवस्था के साथ संघगत उपस्थित साधु साध्वी समुदाय एवं श्रावक श्राविकाओं के समक्ष अपना कार्यभार मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म.सा. को, युवाचार्य बनाकर सौंप दिया। इस कार्य से पूर्ण रूपेण शासन के प्रति वफादार चतुर्विध संघ ने आप श्री की इस आज्ञा का यथाविधि पालन कर अपनी श्रद्धानिष्ठा का परिचय दिया। संप्रति आप श्री जी का साया प्रत्यक्ष नहीं है किंतु परोक्ष रूप से आप श्री जी का वरद हस्त संघगत सभी पुण्य आत्माओं के ऊपर है और रहेगा। क्योंकि जिस तरह से शासन फल रहा है, फूल रहा है, वर्धमान हो रहा है, इससे आप श्री जी के निर्णय की वास्तविकता के दर्शन प्रत्यक्ष करने का मौका वर्तमान शासन प्रणाली को देखते हुए मिल रहा है।

सदा सर्वदा आप श्री जी का वरद हस्त हमारे पर बना रहे, हम निरंतर आप श्री जी के आदेश निर्देश अनुसार वर्तमान आचार्य भगवन रामेश की छायाछत्र में रहते हुए अधिक से अधिक शासन की हर तरह से सेवा, भक्ति, विनय करते रहें, यही कामना है।

-महामंत्री, समता युवा संघ, ब्यावर

समता मंत्र

मोती विमल

विश्व शांति का महा मंत्र,
आचार्य श्री की समता है।
जीवन तो रमता भोगों में,
कर्मों में कुत्सित ढोंगों में
सुख-दुख दोनों साथी हैं
पग-पग बाधा आती है
मेरा-मेरी ममता है ॥१॥

बिगड़ी का ना कोई साथी
अपना भी पराया हो नाती
पुद्गल को जो पहचाने तू
आत्मा का अन्तर जाने तू
क्यों दुःख का कारण बनता है ॥२॥

तुझ में जो अहंकार भरा
मान मोह है क्रोध भरा
तू सम्यक् दृष्टि पाले रे
नानेश शरण अपनाले रे
मुक्ति का पथ बनता है ॥३॥

तज धन तन का अभिमान
दूजों का क्यों अपमान
क्लेष का कारण बनता
क्या तेरा जिसकी ममता
करणी का फल तू चखता है ॥४॥

-उपाचार्य, आचार्य श्री नानेश समता शिक्षण समिति, दांता

❑ चंचलकुमार बोथरा

विचक्षण प्रतिभा के धनी

चित्तौड़गढ़ जिले के छोटे से ग्राम दांता में पिता मोड़ीलाल जी एवं मातुश्री शृंगार कंवर बाई की रत्नकुक्षी से जन्म लिया। बचपन का नाम नाना रखा गया। मेवाड़ का यह हीरा जिसकी बुद्धि बचपन में ही तीक्ष्ण थी तथा सेवाभावना प्रखर थी। गांव के बाहर से औरतें पानी लेकर घर-घर पहुंचती। एक बार एक महिला पानी ठीक तरह से ले जा नहीं पा रही थी, नाना ने स्वयं अपने कंधे पर घड़ा उठाया और उस वृद्ध महिला के घर पर छोड़ आये। समता का एक अन्य प्रसंग गृहस्थ जीवन में अपने काकाजी के साथ व्यापार प्रारंभ करने के समय का है। काकाजी को नाना ने पहले ही कह दिया मुझे गुस्सा आए तब आप शांत रहना, कदाचित आपको गुस्सा आएगा तो मैं शांत रहूंगा। क्रोध का जवाब शांति से देना, यह समता भाव का अनुपम उदाहरण है।

१९ वर्ष की उम्र में सच्चे गुरु शांत क्रांति के अग्रदूत आचार्य श्री गणेशीलाल जी म.सा. की खोज के बाद संयम (दीक्षा) ग्रहण किया। दीक्षा लेने के बाद ज्ञान-दर्शन-चारित्र की अभिवृद्धि करते हुए गौरवशाली आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए। आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होने के बाद समता संदेश जन-जन के कल्याण के लिए दिया। केवल संदेश ही समता का नहीं दिया बल्कि अपने जीवन के प्रत्येक क्षण में समता का जीवन जिया और सर्व जनहित के लिए समता का उपदेश दिया। आप श्री जी की सत्प्रेरणा से बलाई जाति के हजारों भाई-बहनों ने कुव्यसन का त्याग किया जो 'धर्मपाल' के रूप में जाने जाते हैं। स्थानवासी समाज में पिछले ५०० वर्षों के इतिहास में एक साथ धर्मनगरी रत्नपुरी में २५ भव्य मुमुक्षुओं को दीक्षा देकर जिनशासन का गौरव ही नहीं बढ़ाया अपितु एक कीर्तिमान स्थापित किया, जिससे जिनशासन की भव्य प्रभावना का प्रसंग बना।

आचार्य श्री नानेश ने संवत्सरी एकता के लिए भी अपनी तरफ से पूरी कोशिश की और यहां तक कह दिया था कि संवत्सरी एकता के लिए यदि सभी जैन समाज भादवा सुदी ४ या ५ की बजाय ६ या अष्टमी कोई भी तिथि तय करते हैं तो मैं भी अपनी पूर्व परम्परा से हटकर एकरूपता के लिए जो तिथि संपूर्ण जैन समाज तय करेगा उस तिथि को संवत्सरी के रूप में मनाने को तैयार रहूंगा।

निर्ग्रन्थ श्रमण संस्कृति को सुरक्षित रखने के लिए आपने एक ही आचार्य के नेश्राय में शिक्षा, दीक्षा, विहार, प्रायश्चित रखने की परंपरा को अक्षुण्ण रखा। आप श्री ने संयम में कहीं पर भी किंचित मात्र भी शिथिलता नहीं आने दी। वे संयम के सजग प्रहरी थे।

आप श्री से बम्बई चातुर्मास में एवं अन्य चातुर्मासों तथा दीक्षा जैसे विशेष प्रसंगों पर तो माईक खोल देना चाहिए का विशेष आग्रह किया लेकिन आपने मूल महाव्रतों को पूर्णतः सुरक्षित रखा तथा जहां प्रवचन सभा में परिषद् बहुत ज्यादा आ जाती तो अलग-अलग ढंग से दो-तीन बार शिफ्ट में प्रवचन दिया जाता। आपने जीवन पर्यन्त महाव्रतों को पूर्णतः सुरक्षित रखा, तभी अन्य धर्माचार्य सहज ही कह देते हैं कि क्रिया देखनी है तो आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. की देखो।

आचार्य श्री नानेश ने अपने मुखारविंद से लगभग ३५० भाई बहनों को दीक्षा प्रदान की जो अपने आप में एक कीर्तिमान है। आचार्य श्री नानेश ने हजारों कि.मी. की पैदल यात्रा करके जिनशासन की भव्य प्रभावना की

और आपश्री के सान्निध्य में १०१ उपवास की तपस्या तपस्विनी महासती श्री प्रभा जी ने संपन्न की एवं वि. महासती श्री गुलाब कंवर जी म.सा. को ८३ दिन का उत्कृष्ट संथारा भी आपश्री के सानिध्य में आया जो कि अपने आप में एक कीर्तिमान है।

आप श्री ने अपने शरीर की तनिक भी परवाह न करते हुये कहा कि जिन शासन् की सेवा करते हुए यह तन भी चला जाये तो कोई बात नहीं है। ऐसे आचार्य जिन्होने अपने शरीर की तनिक भी परवाह न करते हुए वृद्ध अवस्था में बीकानेर से ब्यावर और उदयपुर तक पाद विहार किया वह अपने आप में उनके विशेष आत्मबल का, मनोबल का परिचायक है।

आचार्य का महत्वपूर्ण कर्त्तव्य होता है कि अपने पीछे योग्य उत्तराधिकारी का चयन करना। स्व. पूज्य गुरुदेव अपने पीछे प्रशांतमना, व्यसन मुक्ति के प्रेरक परम पूज्य श्री रामलाल जी म.सा. के सशक्त कंधों पर गुरुत्तर भार सौंप गये हैं। आचार्य प्रवर इस शासन को खूब दैदीप्यमान करेगें एवं खूब चमकायेगें, यही आशा एवं विश्वास है।

स्व. आचार्य श्री नानेश एवं पूर्वाचार्य का आशीर्वाद उनके पास है एवं चतुर्विध संघ उनके साथ है। स्व. आचार्य श्री नानेश के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम वर्तमान आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म.सा. को हर संभव सहयोग करें एवं जैसी उनकी आज्ञा हो, निर्देश हो, उनके अनुसार अनुपालना करें।

-सहमंत्री, साधुमार्गी जैन श्रावक संघ,
गंगाशहर-भीनासर

जन-जन के सिरताज

भागचंद सोनी

गुरुदेव आप थे लोकनायक, समाज के सुधारक,
आप ही तो थे सकल मानव जगत के उद्धारक।
जैसे फूलों बहारों में, गुलाब का है राज,
वैसे बने थे आप गुरुवर, जन-जन के सिरताज।
सपने सभी के ही आपने, किये थे साकार,
पार लगती थी जीवन नैया, था आपका आधार।
समता रस के धारी आपकी, शक्ति अजब निराली,
पत्थर को सोना कर दे, सूखे को हरियाली।
जैसे दूर गगन में चमकते, सूरज चाद सितारे,
वैसे अलौकिक अद्वितीय थे, पूज्य गुरुदेव हमारे।
आप तो थे क्षीर सागर में, शशि सम विराजमान,
धरती का कण-कण करेगा, आपका सदा जयगान।
अब तो दिन रात प्रभु से, केवल एक प्रार्थना,
चिर शांति पाए आपकी, पुण्यशाली आत्मा,
चिर शांति पाए आपकी भव्यात्मा ॥

-राजनांदगाव

अमृतलाल पगारिया

ऐसे थे मेरे गुरु

याद करूं गुरुवर की, करुणा अमिट अपार।
तन मन पुलकित हो उठे चित छाये आभार॥

भारत की भूमि संतों की, अरिहंतो कीं, अवतारों की, वीरों की भूमि है। इस पावन पुण्य भूमि पर अनेक महापुरुषों ने जन्म लिया है और अपने तप त्याग से, संयम वैराग्य से, साधना आराधना से, स्वयं के जीवन को तो निखारा ही है किंतु साथ ही साथ जन-जन को पावन बनाने का पवित्र संदेश भी दिया है। उन्हीं पूज्य महापुरुषों की पावन परंपरा में जैनाचार्य परम श्रद्धेय श्री नानालालजी (नानेश) म.सा. का नाम बड़े आदर एवं सम्मान से लिया जाता है।

जिस प्रकार परम तेजस्वी दैदीप्यमान सूर्य का परिचय कराने की जरूरत नहीं पड़ती है उसका प्रखर तेजोमय प्रकाश एवं उष्मा स्वयं परिचय करा देता है ठीक उसी प्रकार प्रखर प्रतिभा के धनी, वीर, संयमी, समता की प्रतिमूर्ति आचार्य श्री नानेश का भी परिचय स्वयं उनकी साधना एवं ओजस्वी प्रतिभा से हो जाता था। बच्चा-बच्चा आचार्य श्री के नाम से परिचित था।

जिस प्रकार फूलों की महक छिपाये छिप नहीं सकती है उसी प्रकार आचार्य श्री के ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, त्याग,संयम एवं सहिष्णुता तथा समता भाव आदि विविध गुणों की चमक छिपाये छिप नहीं सकती थी।

वास्तव में आचार्य श्री सादगी के अवतार थे। उनके पास आडंबर के नाम पर कुछ नहीं था, और न ही वे आडंबर को पसंद करते थे। यदि उनके पास कोई बालक जाता था तो वे बालकों के सामने बालकों जैसा अपनत्व दिखाते एवं सरल व्यवहार करते थे। एक महापुरुष होते हुए बालकों जैसी सरलता, मुग्धता, भोलापन, विनम्रता उनकी एक महती विशिष्टता थी।

यदि उनके पास कोई विद्वान, दार्शनिक या राजनीतिज्ञ मिलने जाता था तो वह अपने क्षेत्र में आचार्य [illegible] अवश्य प्रेरणा पाकर अपने को धन्य मानता था, यहां तक कि आचार्य श्री को वह सभी क्षेत्रों में निष्णात एवं [illegible] मानकर जाता था, ऐसी विलक्षण प्रतिभा वाले आचार्य नानेश थे।

वास्तव में पूज्य गुरुदेव का व्यक्तित्व अनोखा था, उनके दर्शन मात्र से मानव में मानवता का [illegible] था तथा अपने क्षेत्र में यदि कोई भटका हुआ होता तो उसे अपनी राह दीख जाती थी और आचार्य [illegible] एवं उद्बोधन एक भटके हुए मानव जीवन के पथिक के लिए वरदान हो जाता था। समता विभूति [illegible] व्यक्तित्व सच में सूर्य सा तेजस्वी, चांद सा सौम्य, शेर सा निर्भीक, कमल सा निर्लिप्त तथा [illegible] था।

आप श्री ने भारत के सुदूर प्रान्तों में घूम-घूम कर, गांव-गांव, ढाणी-ढाणी जाकर [illegible] तथा हजारों लोगों को 'धर्मपाल' बनाया।

हिंसा और विभिन्न व्यसनों में लगे हजारों गरीब परिवारों को कुव्यसन का त्याग [illegible] खुशहाली दिलायी तथा उनको मानव जीवन का सही मार्ग दि[illegible]। उनके द्वारा हिं[illegible]

आप श्री ने लाखों पशु पक्षियों को भी जीवन दान दिया। यही कारण है कि आप जन मानस के मन में रच-पच गए। आपकी वाणी अमृत की धारा के समान थी, उसे जिसने एक बार सुन लिया वह कभी अघाता न था। आपके व्यक्तित्व और वाणी में एक अपूर्व आकर्षण था। आपकी जिव्हा पर सरस्वती साक्षात विराजमान थी।

-महामंत्री श्री साधु. जवाहर संघ, जावरा

तुम अखिलेश निरंजन

मिठ्ठूलाल नागोरी

तुम हो समता के प्रणेता, जैन दर्शन के ज्ञाता ।
मानवता के पुजारी, दीनहीनों के दाता ॥१॥
जन-जन के प्यारे हो, कण-कण में समाये हो,
रग रग मे बसे हो, सबके मन भाये हो ॥२॥
गजब जीवन तुम्हारा, विश्व ने तुमको पहचाना,
साधना में लीन हो आत्मा के स्वरूप को जाना ॥३॥
गुरु गणेशी ने भी, तुमको खूब तपाया,
आशीर्वाद दे तुम्हें, युवाचार्य का ताज पहनाया ॥४॥
तुम में कई छिपे हैं, रत्न खोज निकाले,
नव दीक्षित कर नये सांचे में हैं ढाले ॥५॥
तुमने जो भी कुछ किया, याद रखेगा सब कोई,
ऋणी रहेगा समाज हमारा, भूल न सकेगा कोई ॥६॥
शत-शत वन्दन तुम्हें, तुम हो जैनों के पैगम्बर,
स्व पर प्रकाशक हो, जानता है धरती अम्बर ॥७॥
क्या कहें हम तुमको, तुम इस युग के इष्ट हो,
सच्चे माने में तुम, इस युग के सृष्टा हो ॥८॥
ओ विश्व के महामानव, तुमको मेरा शत-शत वन्दन,
श्रद्धांजली करता अर्पित, बनो तुम अखिलेश निरंजन ॥९॥

-भीण्डर

❑ शांतिचन्द्र मेहता, एडवोकेट

समता-व्यवहार के आग्रही

आचार्य श्री नानेश मूलतः एक विचारक थे और मेरी मान्यता है कि वे एक क्रांतिदर्शी विचारक थे। समता दर्शन का उनका विचार इसी तेजस्वी वैचारिकता का सुफल है। सच माने, इसी विचार के विस्तार के प्रति उनका संपूर्ण जीवन समर्पित रहा और उन्होने सदा समता को व्यवहार में उतारने का आग्रह किया। अपने प्रवचनों में समता को उन्होंने इतनी प्रमुखता दी कि सारे समाज ने समता की विशिष्टताओं को भली प्रकार से समझा तथा उसके समाजीकरण की दिशा में भी प्रयत्न किये जा रहे हैं। समता दर्शन एवं उसके व्यवहार के प्रति संपूर्ण समाज कितना अभिभूत हुआ है यह इस तथ्य से ही स्पष्ट है कि आचार्य श्री को समता विभूति, समता दर्शन व्याख्याता आदि विशेषणों से प्रतिष्ठित किया गया।

आचार्य श्री का समता-भाव जीवन में आचरित करने पर इतना आग्रह क्यों था ? इसे सही परिप्रेक्ष्य में समझा जाना चाहिए। मैं दीर्घकाल से आचार्य श्री के सहज संपर्क में रहा हूं और उनके विचारों की गहराई को समझता रहा हूं। उनके प्रवचनों के सम्पादन में भी मैंने उस गहराई को अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया है। वह गहराई यह है कि वे चारों ओर फैले विषमता के वातावरण से पीड़ित रहते थे। कोई क्षेत्र ऐसा उनकी दृष्टि में कम आता था, जहां विषमता का विष न फैला हुआ हो। वे कई बार धन सम्पन्नों के व्यवहार से भी दुःखी होते थे। उनका ध्यान रचनात्मक रूप से दलितों एवं पीड़ितों की ओर नहीं जाता था, वे कहा करते थे कि पूरी जाजम समेटकर उस पर एक व्यक्ति बैठ जाय, कतई उचित नहीं। जाजम बिछाई जानी चाहिए ताकि उस पर सभी समान सुविधा के साथ बैठ सकें। उनके मन-मानस में असमानता की पीड़ा उमड़ती-घुमड़ती रहती थी।

समय-समय पर उपजे अपने उन्हीं विचारों को आचार्य श्री नोट करते रहते थे तथा वे ही टिप्पण मुझे दिए गए थे कि मैं उन्हें एक ग्रंथ के रूप में संकलित एवं संपादित करूं। मैंने उनके आशय को समझा जिसके परिणाम स्वरूप जो ग्रंथ १९७८ में प्रकाशित हुआ वह था- समता दर्शन और व्यवहार। यह ग्रंथ इतना लोकप्रिय रहा कि बाद में इसका दूसरा व तीसरा संस्करण भी निकला तथा अलग से अंग्रेजी अनुवाद भी छपा।

यों तो समता एक शाश्वत सिद्धांत है। जैन दर्शन मानता है कि मूल रूप में सभी आत्माएं समान स्वरूपी होती हैं। याने कि सर्व कर्म क्षय करके जो आत्म-सिद्ध होती हैं, वैसी ही अनन्त शक्ति संसारी आत्माओं में भी समाई हुई है जिसे प्रकट करने के पराक्रम की आवश्यकता होती है। उसी आध्यात्मिक समता के संदर्भ में व्यावहारिक समता को देखना चाहिए और इसी का अंतरदर्शन आचार्य श्री ने अपने ज्ञान-विवेक एवं अनुभव प्रयोग में किया। उन्होंने अपना छोटा (सिर्फ १९ वर्ष की आयु तक का) सांसारिक जीवन व्यतीत किया, उसकी छाप अवश्य उनके मन-मानस पर पड़ी होगी। समता का वही स्पर्श उनके दीर्घ संयमी जीवन में पल्लवित एवं पुष्पित होता रहा। समता का आंतरिक मर्म चूंकि वे अपने जीवन प्रवाह में अनुभूत करते रहे, उनके उपदेशों में प्रधानतः एवं अधिकांशतः वही समता जन जागरण का सफल माध्यम बन सकी। इसी समता की दिव्य आभा के साथ वे संकुचित दायरों से ऊपर उठकर समस्त विश्व की आस्था के प्रतीक बन गये। समाज में वास्तविक रूप में समता की स्थापना हो जो जीवन-यापन से जीवन निर्माण तक संजीवनी के समान प्रभावक बने- यही सदा उनका अंतर्भाव रहा। यह अंतर्भाव और

दर्शन ही उनके जीवन की सर्वोच्च साधना भी था तो उनके जीवन की सर्वश्रेष्ठ विशिष्टता भी।

आज जब वे भौतिक रूप से सब के बीच नहीं रहे हैं, तब उनके प्रत्येक भक्त का यह कर्त्तव्य बनता है कि आचार्य श्री के समता के व्यावहारिक स्वप्न को समाज में साकार रूप देने के लिए आगे बढ़े और तद् हेतु सभी प्रकार के त्याग का परिचय दें। यही उसकी भक्ति की सार्थकता होगी तथा उसका प्रमाण भी।

-ए-४, कुंभानगर चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

त्याग का मकरंद बहाने वाले

कन्हैयालाल बोरदिया

त्याग का मकरन्द जिनके तेज से झरता रहा है,
मन मेरा नित वन्दना, उनकी सदा करता रहा है।
वे सत्य के उदधि, अहिंसा के पुजारी,
उनको पाकर जग हुआ निहाल था।
घर-घर के अन्दर बस रहे हो आज भी,
नाम उनका पूज्य नाना लाल था।
पद आचार्य नित सुशोभित, उन्हें जो करता रहा है,
त्याग का मकरन्द जिनके तेज से झरता रहा है।
भोर का बन स्वप्न वे आये थे मुनिवर,
मोह सबके मन के अन्दर भर गये।
यहां लाख लेते जन्म तो किस काम का,
कर्त्तव्य वे इस जन्म में ही कर गये।
वे फिर जिस छोर पर, मन मेरा फिरता रहा है,
त्याग का मकरन्द जिनके तेज से झरता रहा है।
अन्धकार कैसा धर्म के होते हुए,
चल दिये वे स्नेह भरकर दीप में।
संतोष से बढ़कर ना कोई रत्न है,
चल दिये मोती रख मन सीप में।
नाम उनका कष्ट सारे, विश्व का हरता रहा है,
त्याग का मकरंद जिनके, तेज से झरता रहा है।
रजकण उदयपुर नगरी का अब भी,
हर पल गीत उनके गा रहा है।
नाना गुरु को याद कर आज भी,
रोशनी पावन हमेशा पा रहा है।
सिसकियां उनके बिना कन्हैया का मन भरता रहा है।
त्याग का मकरन्द जिनके तेज से झरता रहा है।

-संयोजक, समता जैन पाठशाला, रायपुर

❑ शकेन्द्र छाजेड़

धार्मिक गगन के दिव्य नक्षत्र

जैन जगत के सजग प्रहरी, समता दर्शन प्रणेता, धर्मपाल प्रतिबोधक, चारित्र चूड़ामणि, इस युग की विरल विभूति आचार्य श्री नानालालजी म.सा. के संसार में अब न होने पर भी हमारे हृदय पटल पर अपनी गुण गरिमा के कारण सदा विद्यमान रहेगें, क्योंकि 'शरीर क्षणविध्वंसि कल्पान्त स्थायिनो गुण'- शरीर तो क्षणभंगुर हैं पर गुण कल्पांत (कालांतर) तक स्थायी रहते हैं । आपका स्मरण करते ही भृर्तहरि का निम्न श्लोक आप श्री की महिमा प्रकट करता हुआ सामने आता है-

मनसि वचसि काये पुण्य पीयुष पूर्णः ।
त्रिभुवनमुपकार श्रेणिभिः प्रीणयन्तः ॥
परगुण परमाणुन्पर्वती कृत्य नित्यम ।
निज हवंद विकसन्तः सन्ति सन्त कियन्तः॥

अर्थात् ऐसे संत इस संसार में विरले ही हैं जिनके मन, वचन और देह में पुण्य रूपी अमृत भरा हुआ है, जिन्होंने अपने उपकारों से तीनों लोकों को प्रसन्न किया है और जो दूसरे के परमाणु बराबर गुण को पर्वत के समान बढ़ाकर अपने हृदय में सदा प्रसन्न रहते हैं । जिन महानुभावों को आचार्यवर के सत्संग और उपदेशों से लाभ उठाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, वे मुझसे सहमत होंगे ।

आचार्य श्री ने अपने गहरे आध्यात्मिक ज्ञान, तप और त्याग से अनेक परीषह तथा परेशानियों का दृढ़तापूर्वक सामना करते हुए हिमालय की भांति अटल और अचल रहकर विश्व को सही, सत्य और शाश्वत विचार प्रदान कर इस युक्ति को चरितार्थ किया कि- **अध्यात्म तर्क का विषय नहीं है वह हृदय की ध्वनि है । अध्यात्म के पास हृदय होता है इसलिए वह विवादों को समेट लेता है ।**

कठोर तप और संयम के साधक, सौम्य समता की प्रतिमूर्ति स्वर्गीय आचार्य श्री थे। बाल्यावस्था में ही संसार की असारता का अनुभव कर, विरक्त बन, ज्ञान, दर्शन और चारित्र की आराधना करते हुए आपने यह सिद्ध किया कि सामर्थ्य का विकास साधना से होता है, और साधना तप के बिना नहीं होती । सतत् साधना और कठिन परिश्रम से ही जीवन निर्माण संभव है ।

आचार्य श्री ने अपने जीवन में रत्नपुरी में २५ मुमुक्षु आत्माओं में अध्यात्म का प्रकाश दैदीप्यमान कर भगवती दीक्षा अंगीकृत कराई एवं एक लाख से अधिक धर्मपाल बनाये जो इस सदी के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित करने योग्य हैं । संघ को आप श्री ने सर्वोत्तम व कुशल मार्गदर्शन देकर मजबूती व वृहद स्वरूप प्रदान किया है, वह आप सबके समक्ष है ही । संघ को अपने भविष्य की उज्ज्वलता का विश्वास हो गया है ।

आचार्य प्रवर श्री नानेश की बच्चों व श्री अ.भा.सा. जैन समता बालक-बालिका मंडली पर अत्यधिक कृपा दृष्टि रहती थी । आप श्री के आशीर्वाद से यह संस्था अल्प समय में ही अखिल भारतीय स्वरूप को प्राप्त कर नये क्षितिज पर पहुंची है व कई धार्मिक व सामाजिक कीर्तिमान स्थापित किए हैं ।

विगत वर्षों की स्मृतियां जब मेरे मानस पटल पर उभरती हैं तो मन और मस्तिष्क पुलकित हो जाते हैं और उस प्रातः स्मरणीय महात्मा का साकार स्वरूप प्रतिफलित हो उठता है। लगता है जैसे वे आज भी विद्यमान हैं और मेरे कर्त्तव्य पथ का निर्देश कर रहे हैं। आप श्री के अभाव में हृदय मर्मान्तिक पीड़ा की अनुभूति कर रहा है।

हमारे आचार्य प्रवर महान प्रतिभा संपन्न, विचारक, क्षमाशील, तपोधनी, समता की साकार प्रतिमूर्ति, त्यागमूर्ति, सरल, निष्कपट हृदय व करुणा सागर थे। आपका व्यक्तित्व महान तेजस्वी था। आप श्री ज्ञान, दर्शन, चारित्र की उत्तरोत्तर वृद्धि, शुद्धतम चरित्र व अक्षुण्ण निर्ग्रन्थ समाचारी पालने व पलवाने में सर्वदा तत्पर व सजग रहे हैं। एक कुशल आचार्य में जो गुण होने चाहिए, वे सब गुण पूज्य गुरुदेव में अक्षरशः विद्यमान थे।

शरीर दुर्बल हो जाने पर भी आप श्री आत्मबल और मनोबल से बीकानेर से उदयपुर पधारे व आत्म-साधना में लीन रहे। आखिर पोद्गलिक पदार्थ कहां तक, टिक सकता है, और २७ अक्टूबर १९९९ को संथारा संलेखनापूर्वक यह दिव्य विभूति आचार्य श्री नानेश इस धराधाम से प्रयाण कर गई। असीम पुण्योदय से आचार्य श्री हमें अपने सुयोग्य उत्तराधिकारी नवम् पट्टधर, शास्त्रज्ञ, विनय की साकार प्रतिमूर्ति, आगमज्ञाता वर्तमान आचार्य श्री रामलालजी म० सा० के हाथों सौंप गये हैं।

मैं स्वर्गस्थ आत्मा के प्रति श्रद्धापूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं एवं नतमस्तक होकर नमन करता हूं।

-अध्यक्ष

श्री अ.भा.सा. जैन समता बालक-बालिका मंडली

सम्यक् बोध सुधाकर

पवनकुमार कातेला

सम्यक् बोध सुधा दाता के, गुण गण गौरव गाए,
तेरे ही आदर्शों का हम, अभिनव दीप जलाएं।

दांता में थे लिये जन्म तुम, मोड़ी परिजन भाए,
मानस सौरभ सा करके, करुणा भाव जगाए।

हुक्म गगन के ध्रुवी साधक, कहां तुम्हे हैं पाए,
जहां कहीं हो है शिवदायक, सादर शीश झुकाएं।

श्रद्धा के सुमनों को अर्पण, करते तव चरण में,
महामहिम प्रकाश पुंज, अभिनव दे गति शरण में।

-देशनोक

दृढ संकल्प के धनी

इस विश्व के विशाल प्रांगण में प्रतिदिन अनंत प्राणी जन्म धारण करते हैं और प्रतिदिन विकराल काल के गाल में विलीन हो जाते हैं। जन्म और मृत्यु का यह काल चक्र अनादिकाल से चला आ रहा है। एक दिन जन्म लेना व एक दिन मरण को प्राप्त करना, यह विश्व का अबाध सनातन नियम है। जन्म-मरण इस दृष्टि से अपने परिवेश में कोई विशेष घटना नहीं रह गई है। पता ही नही चलता कि इस जन्म मरण के चक्रव्यूह में कौन, कब और कहां जन्म लेता है, और इस संसार से कब चला जाता है। इस जन्म मरण को क्या कभी ऐतिहासिक बनाया जा सकता है ? विचारणीय प्रश्न है। प्रिय से प्रिय व्यक्ति के जाने से मन को आघात अवश्य होता है किंतु कुछ समय बाद हम भूल जाते हैं। हमें न तो उनकी जन्म तिथि स्मरण रहती है और नहीं मृत्यु तिथि ही ज्ञात रह जाती है।

इस धरती पर लाखों करोड़ों मनुष्य आते हैं और मरण को प्राप्त कर जाते हैं। मानव जाति को उनसे कोई लाभ नहीं मिल पाता है। जब इतिहास का अवलोकन करते हैं तो अवगत होता है कि अनेक धनपति व सत्ताधीश हो चुके हैं, जिनकी गगन चुंबी अट्टालिकाओं में लक्ष्मी नृत्य करती थी, जिनके विशाल भवनों में वैभव का अंबार बिखरा रहता था, जिसकी सेवा में हजारों सैनिक हाथ जोड़े खड़े रहते थे। अनेक राजा एवं सामंत उनकी सेवा-चाकरी करते थे। किंतु आज विश्व के किस कोने में उनका स्मृति चिन्ह अवशिष्ट है ? परंतु इस संसार में ऐसी महान आत्मायें जन्म लेती है जो भौतिक देह दृष्टि से हमारे सामने से ओझल हो जाती हैं, किन्तु उन्होने आत्म पुरुषार्थ से अपने जीवन में अलौकिक प्रतिभा के धनी मुनि नाना को गणेशीलाल जी ने युवाचार्य के पद से अलंकृत किया तथा २०१९ में ही झीलों की नगरी उदयपुर में हुकम गच्छ के अष्टम आचार्य के रूप में चतुर्विध संघ का नेतृत्व संभाला।

इस महापुरुष ने आत्म-विकास के साथ अनेक भव्य आत्माओं को अपने आलोक से स्वविकास में सहयोग दिया तथा करीब तीन सौ आत्माओं ने इस भौतिक चकाचौंध से हटकर परिवार एवं सगे संबंधियों को परित्याग कर आप श्री के चरणों में समर्पित होकर भागवती दीक्षा अंगीकार की जो अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। इतनी आत्माओं का अभिनिष्क्रमण मार्ग पर आरूढ़ होना महान आश्चर्यकारी घटना है। इस युग में ऐसा बेजोड़ कार्य अन्यत्र देखा नहीं गया। स्व. आचार्य श्री नानालाल जी म० सा० ने अपने समस्त ज्ञान का प्रकाश समाज को वितरित कर समाज की सर्वोत्तम विभूति की रूप में दृश्यमान रहे। आप भटके हुए समाज के लिए एक दिव्य पथ-प्रदर्शक, प्रकाश पुंज थे।

जैन समाज के वे नूर थे, छल और कपट से सदा दूर थे,
जीते जी संग्रह किया संयम धन जब चले तो पूर्णता से भरपूर थे।

इस महान् विभूति ने अपने आलोक से अपने विचारों से जन-मानस पर अमिट प्रभाव डाला। आपकी ज्योति ने अंधकार में प्रकाश, निराशा में आशा की किरण को जन्म दिया था। आपने अपने चिंतन प्रसूत विचार कणों से, अनेक ग्रंथों से समाज में क्रांति लाने का अथक प्रयास किया। समता दर्शन के माध्यम से विषमता के वातावरण को समाप्त किया तथा जो आत्माएं भौतिकता के चक्कर में अपने जीवन को बर्बाद कर रही थी जहां पर चारों ओर विषमता की अग्नि प्रज्वलित हो रही थी, गहन दु:ख की स्थिति बनी हुई थी ऐसे वातावरण में विश्व शांति का अमोघ

□ लालचंद नाहटा 'तरुण'

संघ गौरव बढ़ेगा

परम पूज्य आचार्य भगवन्त के आकस्मिक स्वर्गवास के समाचार सुनकर मन अवसाद से भर गया, मस्तिष्क सुन्न हो गया, किंकर्तव्यविमूढत्व-सी स्थिति हो गई, परन्तु क्या करें ? किसके वश की बात है ? जो आता है, उसको जाना ही है। यही प्रकृति का अटल, अविचल नियम है, जिसमें कहीं कोई अपवाद नहीं है। यही अनित्य भावना पाकर हमें संतोष धारण करना पड़ता है और करना चाहिये।

इस आकस्मिक घटना से वर्तमान आचार्य श्री रामेश के कंधों पर अत्यन्त महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व आ गया है, वह है हुकमगच्छ के इस जहाज को सफलता की नई बुलंदियों का संस्पर्श कराना। परम् पूज्य आचार्य भगवन्त से समाज को, संघ को, शासन को बडी आशाएं हैं, आकांक्षाएं हैं।

पहले तो स्व. पूज्य आचार्य भगवंत रूपी छत्र अपने ऊपर था। हर आपत्ति, विपत्ति में यह अपने आप हमारी रक्षा करता था। छोटी-छोटी और कभी-कभी बड़ी बातें भी स्व. आचार्य भगवन्त की ओजस्विता और तेजस्विता के सामने प्रभावहीन होकर अस्तित्व खो बैठती थी। अब आचार्य श्री रामेश उसी परम्परा में संघ गौरव बढावेंगे, विश्वास है।

-केकड़ी

□ अजीत जैन
महापौर, नगरपालिका निगम

ऊर्जा के जीवंत प्रतिमान

प्राणिमात्र को कल्याण का पथ बतलाने वाले, महान् शासक प्रभावक, समता दर्शन प्रणेता, समीक्षण ध्यान योगी आचार्य भगवन्त का बिछोह, हम सभी के लिये अपूरणीय क्षति व अत्यन्त वेदनाकारी घटना है। वे उर्जा के जीवंत प्रतिमान थे। मानव धर्म और मानवीयता के प्रति उनका उदात्त चिन्तन सदा-सर्वदा सभी का पथ प्रशस्त करता रहेगा। दैहिक रूप से आचार्य भगवन्त हमारे बीच में नहीं हैं किन्तु उनकी दिव्य छवि और जीवनोपकारी वाणी से निरंतर सद्कार्य की प्रेरणा मिलती रहेगी।

वर्तमान गुरुवर आचार्य प्रवर प. पू. श्री रामलालजी म.सा. के तपोमय जीवन तथा गुरु गंभीर चिन्तन को लेकर हम सब आशान्वित हैं कि आप श्री के माध्यम से श्रद्धेय गुरुवर के ज्ञान पथ का अक्षय आलोक सबको सदा प्राप्त होता रहेगा और आपके उत्तराधिकार व दिशा निर्देशन में जिनशासन व श्री संघ की शोभा वृद्धि अविराम होगी।

-राजनांदगांव

❑ गौतम जैन

प्राणिमात्र के लिये महत्त्वपूर्ण

प्रत्येक युग में किसी न किसी महापुरुष का अवतरण होता है। उसी तरह इस कलियुग (कलिकाल) में भी आचार्य श्री नानालालजी म.सा. का अवतरण हुआ। जिन्होंने अपनी दिव्यता से परिवार, समाज एवं राष्ट्र ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व को सुरभित किया है। जनमानस के जीवन में अपने सिद्धान्तों एवं उपदेशों सें अंतर्ज्योति जाग्रत करके अभिनव आलोक को आलोकित किया है। आपश्री के पुण्य इतने प्रबल थे कि इनके स्मरण मात्र से विपदा संपदा बन जाती है, उलझन सुलझ जाती है एवं दुर्लभ पथ सुगम पथ बन जाता है।

आपश्री अपने जीवन में कभी भी पुष्प की तरह प्रशंसा एवं तीक्ष्ण शूलरूपी निंदा की परवाह न करते हुए गजगति सिंह की तरह साधना पथ पर बढते रहे एवं जिनशासन में सूर्य एवं चन्द्रमा की तरह चमकते रहे।

आपश्री की सन्निधि में आने पर अधम से अधम व्यक्ति भी महान् बन गये।

आचार्य श्री जहां जहां पधारे समवशरण का एवं अदृश्य शक्तियों की उपस्थिति का आभास होता था। ऐसे कई प्रत्यक्ष अविस्मरणीय प्रसंगों में से एक आचार्य श्री का जयनगर पधारने पर केसर वर्षा का था।

मेरी हार्दिक श्रद्धांजलि एवं वन्दन।

❑ डा. शान्ता जैन

विशिष्ट जैनाचार्य

पूजनीय आचार्यश्री नानेशजी के देवलोक हो जाने के संवाद ने पूरे जैन समाज को एकबारगी उदासीन कर दिया पर जन्म और मृत्यु की शास्वत परम्परा को कोई नहीं रोक सकता। इस सदी के अन्त में हमने कई जैनाचार्यों एवं विशिष्ट जैन धर्म प्रचारक मुनियों को खोया है। दो वर्ष पूर्व ऐसी ही असहनीय घटना जैन तेरापंथ समाज में घटी थी। श्रद्धेय आचार्य श्री तुलसी को खोकर हम सब खाली हो गये थे। पर जैन श्रमण परम्परा की स्वस्थ एवं गौरवशाली परम्परा रही है उत्तराधिकारी की। तेरापंथ समाज को आचार्यश्री महाप्रज्ञ का नेतृत्व मिल गया। इसी तरह साधुमार्गी सम्प्रदाय में पूज्यश्री रामलालजी म.सा. का आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित होना भी प्रभावक रहेगा।

श्रद्धये आचार्यश्री नानेशजी ने अपनी पवित्र सन्तता के साथ अपने धर्मसंघ को ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं तप की दृष्टि से सक्षम एवं समृद्ध बनाया। उनकी प्रशासना ने श्रमण संघ को गौरवान्वित किया। वे सिद्धान्तवादी थे, साधुता के आचार-विचार पालन में कहीं, कैसा भी समझौता नहीं करते थे। प्रत्यक्षतः दर्शन तो कभी नहीं हुए पर उनका साहित्य, प्रवचन एवं विचारों को पढने, सुनने का बहुत अवसर मिला था। आज श्रद्धाप्रणत हैं उस दिव्यात्मा के प्रति जिसने उम्र भर 'तिन्नाणं तारयाणं' के व्रत का पालन किया और सबको आत्मविकास का नया रास्ता दिखाया।

□ इन्दरचंद जैन
सदस्य, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी

महातेजस्वी आचार्य प्रवर

आगम रत्नाकर में गंभीर अवगाहन करने वाले, सरल, सरस, सुबोध चिन्तन-मनन से जीवन को सम्यक् दिशा प्रदान करने वाले, जिनेश्वरोपदिष्ट विशुद्ध श्रमणाचार का पालन कर सैंकड़ों मुमुक्षु आत्माओं को संयम-महापथ पर अग्रसर करने वाले, विश्व शांति के अप्रतिम उद्गाता, जिनशासन प्रद्योतक, धर्मपाल प्रतिबोधक, समता दर्शन प्रणेता, समीक्षण ध्यान महायोगी, संस्कार क्रांति के महानायक तथा बीसवीं शताब्दी के महामनस्वी सर्वतोमुखी व्यक्तित्व परम पूज्य आचार्य श्री नानेश का विछोह अत्यन्त असह्य व पीड़ाकारी है परन्तु जिनदर्शन प्रणीत आयुष्य के चक्र से उद्घोषित ज्ञान राशि के प्रकाश में मन को समझाना ही पड़ता है कि यह वियोग अपरिहार्य है।

महातेजस्वी आचार्य प्रवर निरंतर श्रमण संस्कृति और मानवीय मूल्यों की संस्थापना के गुरुतर दायित्व का स्तुत्य निर्वहन करते हुए जब छत्तीसगढ अंचल में पधारे थे तब यहां साधु-साध्वियों की संख्या नगण्य थी। परन्तु परम पूज्य आचार्य श्री की प्रभावना, प्रेरणा और मंगल आशीर्वाद ने लगभग ३५० मुमुक्षु आत्माओं में संयम-पथ अंगीकार करने की प्रबल भावना उत्पन्न कर दी।

वयोवृद्ध और ज्ञानवृद्ध आचार्य प्रवर शासन प्रभावना और हुक्मशासन की गरिमा-महिमा को अक्षुण्ण रखने हेतु शारीरिक निःशक्तता को परे रखकर आत्मबल से उदयपुर पहुंच गये। स्मृति शेष श्रद्धेय गुरुवर का पावन सानिध्य प्राप्त करने के अनेक सुअवसर आये, जीवन धन्य हुआ किन्तु कुछ वर्षों पूर्व बीकानेर में आचार्य श्री का सानिध्य ५-७ दिनों के लिए मिला और उनका दिव्य सामीप्य स्मृति पटल पर चिरअंकित हो गया।

महायशस्वी युग पुरुष की छत्र-छाया अब प्रत्यक्षतः नहीं है परन्तु उसका आशीर्वाद व जीवन की दशा व दिशा बदल लेने वाले शुभसंदेश से समतामय, सात्विक जीवन की प्रेरणा सदैव प्राप्त होती रहेगी जिससे शासन की सेवा का बल भी निश्चित रूप से मिलेगा।

वर्तमान आचार्य प्रवर श्री रामलालजी म.सा. भी उच्च कोटि के साधक, शास्त्राध्ययन में गहन रुचि सम्पन्न, अडिग तपस्वी व मनस्वी व्यक्तित्व हैं। प्रत्येक शनिवार मौन पूर्वक उपवास व संयम का विशुद्ध पालन हमें विश्वास दिलाता है कि आचार्य श्री अपने गुरुतर उत्तरदायित्व को निभाने में पूर्णतः यशस्वी होंगे। उन पर अब विशेष जवाबदारी आ गयी है। गुरुदेव का संबल तथा उनके तेज से अर्जित ज्ञान व संयमबल से आचार्य श्री अनवरत जिनशासन प्रभावना करें, यही मंगलकामना है।

-राजनांदगांव

मर्मस्पर्शी देशना

श्रीमद् जैनाचार्य श्री नानेश के चरण रतलाम का ऐतिहासिक चातुर्मास पूर्ण कर जिनवाणी की अमृत वर्षा से क्षेत्रों को सरसब्ज करते हुए छत्तीसगढ के सिंहद्वार राजनांदगांव की ओर बढे । सम्पूर्ण छत्तीसगढ की पावन धरा अपरिमित आनंद की अनुभूति में निमग्न हो गई ।

आचार्य श्री की मर्मस्पर्शी देशना श्रवण कर मछुआरों ने अपनी आजीविका के साधन जाल को जलाकर अहिंसक बन मानवता का रास्ता अपनाया ।

रायपुर में मोहरम के अवसर पर धर्म जुलूस द्वारा बैनर फाड़ने से स्वधर्मी बन्धु उत्तेजित हो गये । दंगे की आशंका से आशंकित पुलिस अधीक्षक एवं मौलवीजी क्षमायाचना करने लगे । आचार्य भगवन् ने कहा, मैं तोड़ने नहीं, जोड़ने आया हूं । सर्व धर्म समभाव का प्रत्यक्ष प्रमाण पाकर एवं मांसाहार का प्रत्याख्यान कर वे प्रसन्नवदन लौटे । राजनांदगांव चातुर्मास में मद्रास श्री संघ, अध्यक्ष श्री गणपतराजजी बोहरा के नेतृत्व में स्पेशल ट्रेन से दर्शनार्थ उपस्थित हुआ ।

सड़क पर विना माइक के शान्त वातावरण में प्रवचन, आवास, भोजन की सुव्यवस्था संघ अध्यक्ष का संघप्रेम एवं अटूट श्रद्धा आज भी हृदय पटल पर चलचित्र की तरह अंकित है ।

दुर्ग चातुर्मासीय कुप्रथाओं को छोड़ने हेतु प्रवचनों से प्रभावित होकर दहेज प्रथा, मृत्युभोज, पल्ला लेने, कृत्रिम रुदन जैसी संघ अध्यक्ष श्री जुगराजजी बोथरा ने खड़े होकर परिवार को सौगन्ध दिलवाये एवं कहा कि मेरी मृत्यु पर कोई पल्ला न लें तथा मृत्यु भोज न करें ।

आचार्यश्री के क्षेत्र खोलने पर छत्तीसगढ क्षेत्र में संतों, महासतियों के चातुर्मास, विचरण, धार्मिक शिविरों का स्थायी आयोजन, क्षेत्रीय समता प्रचार संघ की स्थापना, गांव गांव में नूतन जैन भवनों का निर्माण जैसे महत्त्वपूर्ण कार्य संपादित हुए ।

आचार्य श्री ने अपने मुखारविन्द से छत्तीसगढ अंचल की श्रद्धा समर्पणा की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है ।

-राजनांदगांव

□ मोहनलाल श्रीश्रीमाल

नेह निधि नाना

मुझे जब भी स्व. आचार्य-प्रवर श्री नानालालजी म.सा. के दर्शन-वन्दन और सेवा का अवसर मिलता था, मेरा मन मयूर नाच उठता था। मेरा हृदय एक बालक जैसा हो जाता था और मेरे चाल-ढाल और व्यवहार में भी बालपन झलकने लगता था। पैर धरती पर सीधे नहीं पड़ते थे। प्रौढ़ावस्था को भुलाकर मैं बाल्यावस्था के आनन्द सागर में गोते लगाने लगता था क्योंकि आचार्य श्री नानेश के मातृवत् वात्सल्य में, उनकी नेह निधि में नहा कर मैं भी 'नाना' के साथ नाना-बालक-ही बन जाया करता था। नाना गुरु की पावन सन्निधि में बिताये गये मेरे जीवन के क्षण ही आज मेरे जीवन की अमर निधि बन गये हैं।

धर्मपाल पदयात्राओं में प्रात: की मन्द, शीतल समीर में जब धर्मजागरण यात्रियों के जत्थे एक पड़ाव से दूसरे पड़ाव हेतु प्रस्थान करते थे तो जयगुरु नाना के जयघोष के बीच मेरा स्वर कुछ बुलंद होने के कारण वरिष्ठ संघ प्रमुख और स्नेही संगी-साथी जब मुझसे गीत गाने का आग्रह करते थे तो न जाने क्यों हर बार मेरे कंठों से एक ही स्वर फूटता था-'मेवाड़, देश वस्ती दांता, सिणगार कंवर जिणरी माता, उन मोड़ीलाल जी के नंदन की, जय बोलो नाना गुरुवर की- जय बोलो नाना गुरुवर की'- और फिर यात्री दल इस पावन समूह गीत से एकात्म हो उठता था और गगन मंडल में एक ही ध्वनि-प्रतिध्वनि गूंजती रहती थी-जय बोलो नाना गुरुवर की।

धर्मपाल यात्राओं के बाद जब संघ ने मेवाड़ क्षेत्रीय पदयात्रा का आयोजन किया और यात्रा-अवधि में दांता में भी प्रवास और पड़ाव रखने की घोषणा की तो मेरे सेवक-श्रावकों के हृदय में हर्ष का सागर हिलोरें लेने लगा। ज्यों-ज्यों यात्रा में कदम दांता की ओर बढते थे, त्यों-त्यों मेवाड़ देश, बस्ती दांता का गीत सहज ही मुखरित होने लगता था। हम दांता पहुंच कर धन्य हो गए। धन्य है हमारा संघ भी जो सदस्यों हेतु ऐसे-ऐसे श्रेष्ठ आयोजन करता है।

बीकानेर-ब्यावर-उदयपुर गुरुदेव के सभी प्रवासों में मैंने और मेरे परिवार ने भरपूर धर्मलाभ लेने का प्रयास किया और सभी समयों में गुरुदेव का अमित स्नेह भी अमृत वर्षा करता रहा।

उदयपुर में जब गुरुदेव की अस्वस्थता कुछ वृद्धि पर थी, तब मैंने भी वहां चौका लगाया था। प्रात: सायं-दोपहर बल्कि दिन-रात गुरुदेव का सान्निध्य प्राप्त करने की चाह रहती थी। संघ-प्रमुखों और गुरु भक्त श्रावक-श्राविका वर्ग हमारे चौके में पधारे- यह भी मेरी तथा मेरे परिवार की भावना रहती थी। अत: चतुर्विध संघ का आवागमन बना रहता था और इस अवधि में वार्ता का कुछ भी प्रसंग उपस्थित होता तो उस वार्ता का केन्द्र सदैव 'नाना गुरु' ही हुआ करते थे।

इस प्रकार आचार्य श्री नानेश की कृपा का प्रसाद हम जीवन भर प्राप्त करते रहे। नेह निधि नाना की यह कृपा चिर स्मरणीय रहेगी। साथ ही स्मरणीय तथा वंदनीय रहेगी, उनकी महान् देन-नवम् पट्टधर आचार्य श्री रामेश। उस महाविभूति को कोटि-कोटि वन्दन।

-महावीर बाजार, ब्यावर

❑ मोतीलाल मालू

असीम कृपालु

पूज्य आचार्य श्री १००८ श्री नानालालजी म.सा. से मैं स्वर्गीय पूज्य आचार्य श्री १००८ गणेशीलालजी म.सा. के समय से ही परिचित रहा हूं, सम्पर्क में रहा हूं। कुछ संस्मरण प्रस्तुत कर रहा हूं-

मैं अहमदाबाद से उदयपुर शाम को पहुंचता हूं। गुरुदेव के उस दिन मौन था, बीमार चल रहे थे। मेरी उस समय युवाचार्य श्री नानालालजी म.सा. से जो बात हुई उसका सार है-मालूजी यह संघ कैसे चलेगा, साधु बहुत ही कम हैं, दीक्षाएं भी विशेष नहीं हो रही हैं-अधिकतर वृद्ध साधु हैं। लेकिन आचार्य पद प्राप्त होने के बाद प्रबल पुण्योदय से संघ में करीब ३५० दीक्षाएं हुईं।

भावनगर चातुर्मास की बात है। मैंने गुरुदेव से प्रश्न किया कि आप कोई भी प्रश्न सामने आने पर तुरन्त निर्णय नहीं लेते हैं तो उन्होंने बताया कि, 'मैं एकान्त में सोचता हूं- मनन करता हूं और फिर स्व. गुरुदेव को आदेश के लिए विनती करता हूं और रात में साधना में या स्वप्न में उनकी तरफ से संकेत मिल जाता है और उसी आदेश का मैं पालन करता हूं।'

पूज्य गुरुदेव उदयपुर से अहमदाबाद चातुर्मासार्थ डोली पर पधार रहे थे। लगभग १० किलोमीटर पर एक गांव से दूसरे गांव आ रहे थे। ४ संत, ५वें गुरुदेव, एवं छठा मैं था और कोई नहीं था। लगभग ८ किलोमीटर तक मेरी गुरुदेव से विविध विषयों पर बातचीत होती रही। मेरी जिन्दगी का वह लगभग ८ किलोमीटर प्रथम एवं अंतिम प्रवास था। एक गांव आया वहां रुकना था, पर गुरुदेव वहां रुके नहीं एवं प्रवास चालू रखा और फिर लगभग ८ किलोमीटर पर जाकर रुकना हुआ। भाई पीरदान पारख (मंत्री, अहमदाबाद संघ) चिंतित था कि गुरुदेव पधार गये हैं, पर अहमदाबाद में अब तक रुकने के स्थान का निर्णय नहीं हुआ है- मैंने कहा कि चिंता की कोई बात नहीं है, गुरुदेव के अतिशय से सब कुछ हो जावेगा और जब हम लोग अहमदाबाद पहुंचे तो राजस्थान हॉस्पिटल के मंत्री श्री संपतराजजी हुण्डिया (वकील साहब) ने बताया कि उनकी कार्यकारिणी ने ठहरने के लिए स्वीकृति दे दी है। यह गुरुदेव का अतिशय ही था कि उनके वहां रुकने के पुण्य प्रभाव से हास्पिटल का कार्य जो लगभग ३ वर्ष से मकान बन जाने पर भी अर्थाभाव से रूका हुआ था, चालू हो गया और आज वह हास्पिटल सफलतापूर्वक कार्यरत है और जन-साधारण की सेवा में संलग्न है और गुजरात में प्रथम श्रेणी में गिना जाता है।

स्व. गुरुदेव की मुझ पर अति कृपा थी एवं अहमदाबाद चातुर्मास के बाद मेरी विनती पर मेरे निवास अंबावाड़ी के पास ४ या ५ दिन के लिए नवरंगपुरा से विहार कर पधारे। अंबावाड़ी में अपना स्थानक नहीं था और वहां के श्रावकों ने मुझे कहा कि गुरुदेव से विनती करें कि हमारे यहां एक उपाश्रय हो जावे तो अच्छा रहे-मैंने गुरुदेव से प्रार्थना की और गुरुदेव ने संघ में स्थानक की उपयोगिता के विषय में अति सुंदर व्याख्यान दिया और उनका अतिशय ही समझिये कि वहां (अंबावाड़ी) पर आज अति सुदंर स्थानक बन गया है।

मेरे साथ मेरी धर्मपत्नी पर भी उनकी असीम कृपा थी जब भी मैं दर्शनार्थ पहुंचता तो दर्शनोपरांत उनका पहला प्रश्न यही होता था कि बाई जी आये हैं कि नहीं। हमारे परिवार पर रही असीम कृपा को स्मरण कर मैं अभिभूत हो उठता हूं।

❑ जसकरण डागा

दहेज प्रथा उन्मूलन के समर्थक

वर्ष १९७७ ई. में टोंक में शासन प्रभावी महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. का चातुर्मास था। चातुर्मास में कुछ साम्प्रदायिक तत्त्वों ने, अशान्ति करने का माहौल पैदा कर दिया। तभी मुझे राजकाज से बीकानेर जाना पड़ा। वहां आचार्य श्री नानेश के दर्शन का सुअवसर मिला। जब मैंने उन्हें चातुर्मास काल में, टोंक में हो रही अशान्ति की जानकारी दी, तो उन्होंने उस पर विशेष ध्यान देकर, मेरे से एकान्त में बैठकर, करीब एक घंटे तक टोंक में घटी घटना की सारी जानकारी ली तथा टोंक संघ में शान्ति और सद्भाव बनी रहे, इस हेतु टोंक के सभी श्रावक-श्राविकाओं को समभाव और प्रेमपूर्वक धर्मध्यान कहते हुए, चातुर्मास को सफल बनाने का संदेश प्रदान किया, जिससे टोंक श्री संघ में कोई अप्रिय घटना न घटी और चातुर्मास सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। पू. आचार्य श्री 'सम्प्रदाय' की विशद् व्याख्या करते हुए कहा करते थे कि 'सम्यक् प्रदीयते इति सम्प्रदाय' अर्थात् जो सम्यग् मार्ग प्रदान करे वह 'सम्प्रदाय' है।

दहेज प्रथा उन्मूलन के समर्थक : आचार्य श्री नानेश का चातुर्मास कानोड़ था। तब वहां आपके सानिध्य में अ.भा. विद्वद् परिषद् की डा. नरेन्द्र भानावत के संयोजन में संगोष्ठी थी, जिसमें मुझे भी आमंत्रित किया गया था। मैं जब गोष्ठी में भाग लेने कानोड़ गया, तो कानोड़ के निकट ही एक ग्रामीण यात्री से बस में बैठे सम्पर्क हुआ। उसके पूछने पर, जब मैंने आचार्य श्री के दर्शनार्थ व विद्वद् सम्मेलन में भाग लेने हेतु कानोड़ जा रहा हूं, ऐसा बताया तो उसने कहा, आपके आचार्य महान हैं, किन्तु उन्हीं के वहीं रहते हुए, उन्हीं के अनुयायी एक जैनी ने एक महिला को दहेज मांगनी से प्रताड़ित कर (पूर्ति न होने से) जीवित जला डाला। यह आपका कैसा धर्म है कि एक कीड़ी को तो बचाते हैं और पंचेन्द्रिय मानव को जिंदा जला डाल देते हैं, मात्र दहेज के लालच में। उसकी बात में सत्य तथ्य था और वजन था, जिससे उसका प्रतिकार न कर मुझे तब मौन रहना पड़ा। कानोड़ पहुंच विद्वद् गोष्ठी में भाग लेने के बाद, मैं आचार्य श्री के पास बैठा और उक्त ग्रामीण यात्री की बात कही। पू. आचार्य श्री ने उक्त घटना का कारण दहेज कुप्रथा है, इसे समाज के लिए अभिशाप और कलंक बताया तथा समाज को उसे त्यागने हेतु, प्रवचन में प्रेरणा देने का भी कहा। इस पर मैंने विनम्रतापूर्वक, श्रद्धेय आचार्य प्रवर की सेवा में निवेदन किया, कि यदि आपकी प्रेरणा से भी हमारा समाज इस कलंक को न त्यागे तो फिर शासन व संघ हित मे आपको कुछ ठोस कदम उठाना चाहिए। जैसे उन सभी भाई-बहिनों के यहां से आहार पानी साधु-साध्वी न लावे, जो दहेज मांगनी का त्याग नही करते हैं। पू. आचार्य प्रवर ने मेरे इस निवेदन पर ध्यान देते हुए मौनस्थ हो, आगे चिन्तन करने का भाव व्यक्त किया।

उपरोक्त दोनों चर्चा वार्ता के संस्मरण हम सबके लिये महत्त्वपूर्ण व प्रेरणास्पद हैं। पू. आचार्य श्री नानेश जहां समता दर्शन प्रणेता, व्यसनग्रस्त दलितों के उद्धारक और जीवदया की प्रवृत्तियों के प्रेरणास्रोत थे, वहीं वे एक सम्प्रदाय के आचार्य होकर भी संप्रदायवाद से दूर, उदार वृत्ति वाले होने से जन-जन के श्रद्धा केन्द्र थे और दहेज जैसी कुप्रवृत्तियों के विरोधी भी थे। हम सभी उनके इन संस्मरणों से प्रेरणा लेकर, असंप्रदायवादी उदार स्वभावी बनें जिसमें सभी वीर के अनुयायी संगठित हो सकें। दहेज प्रथा के विरोध की संघ व समाज स्तर पर कार्यवाही करें तो यह उस युग पुरुष, समतामूर्ति, आगम मनीषी, जिनशासन प्रद्योतक, परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। यही मंगल कामना है।

-डागा सदन, संघपुरा, पो. टोंक (राज.) ३०४००१

डा. जैन तो अपने घर के हैं

अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ ने गुरुदेव को मेरे द्वारा दी गयी स्वास्थ्य संबंधी सेवाओं के संदर्भ में मेरे से संस्मरण मांगे वे ये हैं- सर्वप्रथम १९७६ में जब मैं विदेश से उच्च शिक्षा प्राप्त करके बीकानेर के पी.बी.एम. अस्पताल में लगा तब एक दिन दोपहर के समय बीकानेर के कुछ गणमान्य व्यक्ति मुझे एक मरीज दिखाने के लिए नोखा ले जाने के लिए आए। रास्ते में कार में बैठे उन व्यक्तियों से बात करके मुझे लगा कि मुझे किसी बड़े सेठ या धनवान मरीज को नहीं अपितु किसी साधु संत को देखने के लिए ले जाया जा रहा है। नोखा पहुंचने पर पहली बार गुरुदेव के दर्शन हुए और मैंने उनकी बहन, जिनकी कूल्हे की हड्डी टूट गई थी, को देखा और उपचार शुरू किया। बीकानेर लौटते समय जो व्यक्ति मुझे नोखा ले गए थे उन्होंने मुझसे नोखा आने-जाने एवं इलाज की फीस पूछी। गुरुदेव के दर्शन का मुझ पर इतना अधिक प्रभाव था कि मैंने उन व्यक्तियों से कहा कि अगर मैं यह फीस लूंगा तो मुझे नरक भी नहीं मिलेगा। आप लोगों ने मुझे इस योग्य समझा कि मैं महाराज की बहन का इलाज कर सकूं, [illegible] लिए यही सबसे बड़ा सम्मान है। वे व्यक्ति मेरे उत्तर से प्रभावित हुए और वे थे श्री भंवरलाल जी कोठारी एवं [illegible] जयचंदलाल जी सुखानी। घर पहुंचते ही मैंने देखा कि १०-१२ मरीज मुझे दिखाने के लिए इंतजार कर रहे हैं। [illegible] मेरे लिए बिल्कुल नया शहर था और मुझे ज्वाईन किए हुए ज्यादा दिन भी नहीं हुए थे। मरीजों की [illegible] मेरे मन में तुरंत यही विचार आया कि हो न हो यह गुरुदेव का ही चमत्कार है कि उन्होंने मुझे अपनी [illegible] किया एवं मुझे १० गुना फीस मिल गयी।

इस घटना के पश्चात् साधु संतों की सेवा के सिलसिले में मेरा श्री भंवरलाल जी कोठारी एवं [illegible] सुखानी जी से निरंतर संपर्क बढ़ता गया।

उन्हीं दिनों की बात है बंदूक की गोली से हत्या के प्रयास में गोली लगा एक मरीज भर्ती [illegible] में लगी थी एवं कंधे की हड्डी टूटी हुई थी। आपात विभाग में कोई डॉक्टर उपलब्ध नहीं था, [illegible] गया। मैंने मरीज को तुरंत ऑपरेशन कक्ष में लिया। बेहोशी की दवा देने के बाद हड्डी बैठाने [illegible] घाव खोला एकदम से तीव्र वेग से रक्त स्राव हुआ। मरीज बिल्कुल सफेद हो गया। उसका [illegible] गया, जैसे तैसे रक्त स्राव रोककर आपरेशन कक्ष के कपड़ों में ही मैं रक्त बैंक में गया और [illegible] व्यवस्था की। इस समय रात के २ बजे थे। मरीज की गंभीर स्थिति को देखते हुए मैंने [illegible] वरिष्ठ डॉक्टरों को भी बुला लिया। दूसरे डॉक्टर जबकि मरीज को सामान्य करने में लगे [illegible] एक कोने में खड़ा होकर णमोकार मंत्र का जाप कर रहा था एवं गुरुदेव का ध्यान कर रहा [illegible] में फंस गया हूं। मेरे प्रोफेसर ने मुझे और डरा दिया था और कहा कि चूंकि यह मर्डर केस है [illegible] कर लेगी। चूंकि मरीज गोली से नहीं मरा है बल्कि अगर मरेगा तो ऑपरेशन से मरा है। [illegible] के बाहर दरवाजे पर मरीज की बीवी और उसके हाथ में एक बच्चा गंभीर मुद्रा में खड़े हैं [illegible] कि अगर मैं गिरफ्तार हो गया तो मेरे बीवी बच्चे भी इसी अवस्था में हो जाएंगे। [illegible] किया एवं गुरुदेव को याद किया।

लगभग सुबह चार बजे मरीज बिल्कुल सही हो गया, होश में आ गया एवं अपना नाम तक बताने लगा। उस दिन मेरे मन में गुरुदेव एवं णमोकार मंत्र की शक्ति का आभास हुआ। इसके पश्चात् १५ वर्ष तक साधुमार्गी संघ की तरफ से बीकानेर संभाग में भीषण गर्मियों के दिनों में गुरुदेव आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. के आशीर्वाद से मैंने अनेकों पुनर्वास कैम्प लगाए, जिसमें विकलांगों को विकलांग प्रमाण-पत्र ही नहीं अपितु उन्हें कैलीपर, कृत्रिम पैर एवं अन्य उपकरण बांटे। इन सभी कैम्पों में भंवरलाल जी कोठारी एवं सुखानी साहब का अत्यधिक सहयोग रहता था। यह मेरा सौभाग्य है कि उदयपुर स्थानान्तरण पर मुझे गुरुदेव की सेवा करने का पुनः मौका मिला। गुरुदेव अपने डायलेसिस से इनकार करते रहते थे और किसी भी तरह का उपचार लेने के लिए सबको मना कर रखा था।

इन्हीं दिनों उन्हें देखने के लिए मुझे भी बुलाया गया। मैं अपने आपको गुरुदेव के बहुत समीप समझता था, लेकिन जब उन्होंने किसी भी तरह का इलाज कराने से एवं किसी भी तरह का आग्रह मानने से इनकार कर दिया तो मुझे लगा कि गुरुदेव मुझसे नाराज हैं एवं मेरी सेवा से खुश नहीं है। लेकिन ऐसा नहीं था उस समय गुरुदेव की मनोस्थिति ही कुछ ऐसी थी।

१९९८ में एक संत के घुटने में गांठ हुई जिसका मैंने ऑपरेशन किया। ऑपरेशन बहुत सफल रहा। संत को देखने गुरुदेव दूसरी मंजिल पर स्थित वार्ड में आए। वार्ड बड़े-बड़े डॉक्टरों एवं प्रतिष्ठित लोगों से भरा था। जब मैं इन संत महाराज को संभालने गया तब आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. ने अत्यंत प्रेम भरी वाणी में सबके सामने कहा कि डॉक्टर जैन तो अपने घर के हैं, आचार्य श्री के मुखारविन्द से ये शब्द सुन कर मैं भाव-विह्वल हो उठा, वो क्षण मेरे लिए मेरे जीवन में एक अविस्मरणीय क्षण था।

मेरे गुरुदेव से २० साल संपर्क रहा। मेरे एक हड्डी विशेषज्ञ होने के नाते भी वे अपना दूसरा उपचार भी मुझे दिखाते थे। समय-समय पर दवाइयों के बारे में मेरे से राय लेते थे। मेरे लिए यह एक बहुत बड़ा सम्मान था।

सरकारी सेवा में कितने ही उतार चढ़ाव एवं सफलता एवं असफलताएं देखीं लेकिन गुरुदेव की कृपा एवं णमोकार मंत्र ने मुझे शक्ति दी और टूटने से बचाया। मैं आज भी महसूस करता हूं कि गुरुदेव की शक्ति हमेशा मेरे साथ है, जो आज भी मुझे कुछ अच्छा करने के लिए हमेशा प्रेरित करती रहती है।

हे गुरुदेव आपको कोटि-कोटि नमन।

-एम.एस., उदयपुर

चिन्तन मनन

□ प्रो. डॉ. छगनलाल शास्त्री
एम. ए.(त्रय) पी-एच. डी.
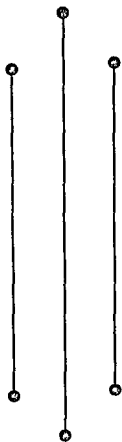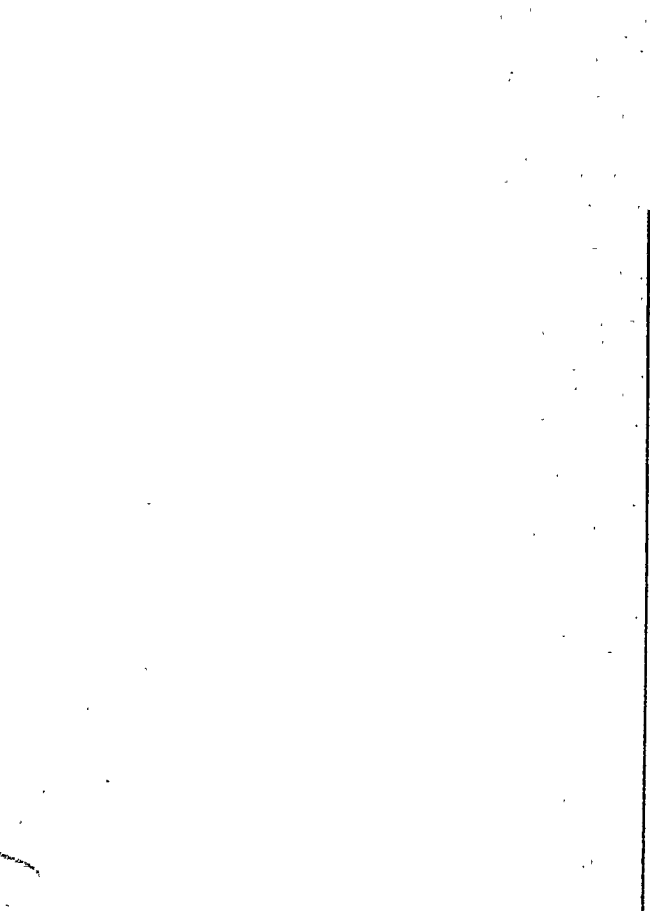
जैनागम : स्वरूप, विकास एवं वैशिष्ट्य

धर्म का मुख्य आधार :

किसी भी राष्ट्र, जाति और समाज के साहित्य का अत्यन्त महत्व है। साहित्य वह प्राणभूत तत्व है, जिस पर इन सबका पल्लवन, संवर्द्धन और विकास होता है। साहित्य ज्ञान और चिन्तनधारा की वह पावन मंदाकिनी है, जिसमें अवगाहन कर जिज्ञासु, आत्म कल्याणेक्षु एवं मुमुक्षु जन उन्नति, अभ्युदय और आत्मोत्थान का प्रशस्त पथ प्राप्त करते हैं। उस पर आगे बढ़ते हुए वे जीवन का महान लक्ष्य सिद्ध कर लेते हैं। भारतवर्ष एक धर्मभूमि या पुण्यभूमि है। यहां के प्रज्ञाशील मनीषियों ने केवल ऐहिक जीवन की समस्याओं के समाधान तक ही अपनी प्रज्ञा का उपयोग नहीं किया वरन् उन्होने जीवन का परम सत्य प्राप्त करने की दिशा में अपनी बुद्धि को अनवरत अध्यवसायरत रखा। यही कारण है कि धार्मिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से यह देश संसार में सर्वाग्रणी माना गया है। भारत के धर्मों में जैन धर्म का अपना अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। अहिंसा, विश्वमैत्री, समता एवं समन्वय की उदात्त भावना के प्रसार द्वारा लोक कल्याण का महान कार्य जो इस धर्म ने किया, वह संसार के धर्मों के इतिहास में वास्तव में अनूठा है। धर्म का वह अनादि स्रोत जो भी अपने प्राकृतन रूप में जीवित है, यह एक गौरव का विषय है। अढ़ाई हजार से भी अधिक वर्ष पूर्व इस धर्म का जो न केवल चिन्तनात्मक वरन् क्रियात्मक रूप था, वह आज भी सहस्रों साधु-साध्वियों के रूप में अक्षुण्णतया विद्यमान है। इस धर्म के आधारभूत शास्त्र आगम कहे जाते हैं, जो तत्व चिन्तन एवं सच्चर्यानुप्राणित जीवनचर्या के अजर अजर दस्तावेज हैं, जो आज भी विश्व को शांति का महान् संदेश प्रदान करते हैं।

आगम :

आगम विशिष्ट ज्ञान के सूचक हैं, जो प्रत्यक्ष या तत्सदृश बोध से जुड़े है। दूसरे शब्दों में यों कहा जा सकता है- 'आवरक हेतुओं या कर्मों के अपगम से जिनका ज्ञान सर्वथा निर्मल एवं शुद्ध हो गया, अविसंवादी हो गया, ऐसे आप्त पुरुषों द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों का संकलन आगम है।'[1]

आगमों के रूप में जो प्रमुख साहित्य हमें आज प्राप्त है, वह अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर द्वारा भाषित और उनके प्रमुख शिष्यों, गणधरों द्वारा संग्रहित है। आचार्य भद्रबाहु ने लिखा है- 'अर्हत अर्थ भाषित करते हैं। गणधर धर्मशासन या धर्मसंघ के हितार्थ निपुणतापूर्वक सूत्ररूप में उसका ग्रंथन करते हैं, यों सूत्र का प्रवर्तन होता है।[2] इसका तात्पर्य हुआ कि भ. महावीर ने जो भाव अपनी देशना में व्यक्त किये वे गणधरों द्वारा शब्दबद्ध किये गये।

आगमों की भाषा :

वेदों की भाषा प्राचीन संस्कृत है जिसे छन्दस् या वैदिकी कहा जाता है। बौद्धपिटक पालि मे हैं, जो मागधी, प्राकृत पर आधृत हैं। जैन आगमों की भाषा अर्द्धमागधी प्राकृत है। अर्हत इसी में अपनी धर्मदेशना देते हैं।

समवायांग सूत्र में लिखा है-

भगवान अर्द्धमागधी भाषा में धर्म का आख्यान करते हैं। भगवान द्वारा भाषित अर्द्धमागधी भाषा आर्य, अनार्य, द्विपद, चतुष्पद, मृग, पशु-पक्षी, सरीसृप- रेंगने वाले जीव आदि सभी की भाषा में परिणित हो जाती है, उनके लिए हितकर, कल्याणकर तथा सुखकर होती है।[3]

आचारांग चूर्णि में भी इसी आशय का उल्लेख है। वहां कहा गया है कि स्त्री, बालक, वृद्ध,अनपढ़ सभी पर कृपा कर सब प्राणियों के प्रति समदर्शी महापुरुषों ने अर्द्धमागधी भाषा में सिद्धांतों का उपदेश किया।

अर्द्धमागधी प्राकृत का एक भेद है। दशवैकालिक वृत्ति में भगवान के उपदेश का प्राकृत में होने का उल्लेख करते हुए पूर्वोक्त जैसा ही भाव व्यक्त किया गया है-चारित्र की कामना करने वाले बालक, स्त्री, वृद्ध, मूर्ख, अनपढ़ सभी लोगों पर अनुग्रह करने के लिए तत्वदृष्टाओं ने सिद्धांत की रचना प्राकृत में की।[4]

<u>अर्द्धमागधी</u> :

भगवान महावीर का युग एक ऐसा समय था जब धार्मिक जगत में अनेक प्रकार के आग्रह बद्धमूल थे। उनमें भाषा का आग्रह भी एक था। संस्कृत धर्म-निरूपण की भाषा मानी जाती थी। संस्कृत का जन-साधारण में प्रचलन नहीं था। सामान्य-जन उसे समझ नहीं सकते थे। साधारण जनता में उस समय बोलचाल में प्राकृत का प्रचलन था। देश-भेद से उसके कई प्रकार थे, जिनमें मागधी, अर्द्धमागधी, शौरसेनी, पैशाची तथा महाराष्ट्री प्रमुख थीं। पूर्व भारत में अर्द्धमागधी और मागधी तथा पश्चिम में शौरसेनी का प्रचलन था। उत्तर-पश्चिम पैशाची का क्षेत्र था। मध्यप्रदेश में महाराष्ट्री का प्रयोग होता था।

शौरसेनी और मागधी के बीच के क्षेत्र में अर्द्धमागधी का प्रचलन था। यों अर्द्धमागधी, मागधी और शौरसेनी के बीच की भाषा सिद्ध होती है, अर्थात् इसका कुछ रूप मागधी जैसा और कुछ शौरसेनी जैसा है। अर्द्धमागधी-आधी मागधी ऐसा नाम पड़ने में संभवत. यही कारण रहा हो।

मागधी के तीन मुख्य लक्षण हैं। वहां श,ष,स तीनों के लिए केवल तालव्य श का प्रयोग होता है। र के स्थान पर ल आता है। अकारान्त संज्ञाओं में प्रथमा एकवचन में ए विभक्ति का उपयोग होता है। अर्द्धमागधी में इन तीन में आये लगभग आधे लक्षण मिलते हैं। तालव्य श का वहां बिल्कुल प्रयोग नहीं होता। अकारान्त संज्ञाओं में प्रथमा एक वचन में ए का प्रयोग अधिकांश होता है। र के स्थान पर ल का प्रयोग कहीं-कहीं होता है।

अर्द्धमागधी की विभक्ति रचना में एक विशेषता और है, वहां सप्तमी विभक्ति में और म्मि के साथ-साथ अंसि प्रत्यय का भी प्रयोग होता है, जैसे-नयरे- नयरम्मि, नयरंसि।

नवांगी टीकाकार आचार्य अभयदेव सूरि ने औपपातिक सूत्र में जहां भगवान महावीर की देशना के वर्णन के प्रसंग में अर्द्धमागधी भाषा का उल्लेख हुआ है, वहां अर्द्धमागधी का ऐसी भाषा के रूप में व्याख्यान किया है, जिसमें मागधी में प्रयुक्त होने वाले ल और श का कहीं-कहीं प्रयोग तथा प्राकृत का अधिकांशतः प्रयोग होता था।[5]

व्याख्या प्रज्ञप्ति सूत्र की टीका में भी उन्होंने इसी प्रकार उल्लेख किया है कि अर्द्धमागधी में कुछ मागधी तथा कुछ प्राकृत के लक्षण पाये जाते हैं।

आचार्य अभयदेव ने प्राकृत का यहां संभवतः शौरसेनी के लिए प्रयोग किया है। उनके समय में शौरसेनी प्राकृत का अधिक प्रचलन रहा हो।

आचार्य हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत व्याकरण में अर्द्धमागधी को आर्ष (ऋषियों की भाषा) कहा है। उन्होंने लिखा है कि आर्ष भाषा पर व्याकरण के सब नियम लागु होते क्योंकि उसमें बहुत से विकल्प हैं।[6]

इसका तात्पर्य यह हुआ कि अर्द्धमागधी में दूसरी प्राकृतों का भी मिश्रण है।

एक दूसरे प्राकृत वैयाकरण मार्कण्डेय ने अर्द्धमागधी के संबंध में उल्लेख किया है कि यह शौरसेनी के बहुत निकट है अर्थात् उसमें शौरसेनी के

बहुत लक्षण प्राप्त होते हैं। इसका भी यही आशय है कि बहुत से लक्षण शौरसेनी के तथा कुछ लक्षण मागधी के मिलने से यह अर्द्धमागधी कहलाई।

क्रमदीश्वर ने ऐसा उल्लेख किया है कि अर्द्धमागधी में मागधी और महाराष्ट्री का मिश्रण है। इसका भी ऐसा ही फलित निकलता है कि अर्द्धमागधी में मागधी के अतिरिक्त शौरसेनी का भी मिश्रण रहा है और महाराष्ट्री का भी। निशीथचूर्णि में अर्द्धमागधी के संबंध में उल्लेख है कि वह मगध के आधे भाग में बोली जाने वाली भाषा थी तथा उसमें अट्ठाईस देशी भाषाओं का मिश्रण था।

इन वर्णनों से ऐसा प्रतीत होता है कि अर्द्धमागधी उस समय प्राकृत क्षेत्र की संपर्क भाषा (Lingua Franca) के रूप में प्रयुक्त थी, जो बाद में भी कुछ शताब्दियों तक चलती रही। कुछ विद्वानों के अनुसार अशोक के अभिलेखों की मूल भाषा यही थी, जिसको स्थानीय रूपों में रूपान्तरित किया गया है।[7]

भगवान महावीर ने अपने उपदेश का माध्यम ऐसी ही भाषा को लिया, जिस तक जन साधारण की सीधी पहुंच हो। अर्द्धमागधी में यह बात थी। प्राकृतभाषी क्षेत्रों में, बच्चे, बूढ़े, स्त्रियां, शिक्षित, अशिक्षित सभी उसे समझ सकते थे।

अंग-साहित्य :

गणधरों द्वारा भगवान का उपदेश निम्नांकित बारह अंगों के रूप में हुआ-

१. आचारांग	२. सूत्रकृतांग
३. स्थानांग	४. समवायांग
५. व्याख्या प्रज्ञप्ति	६. ज्ञातधर्मकथा
७. उपासकदशांग	८. अन्तकृद्दशा
९. अनुत्तरौपपातिक	१०. प्रश्न व्याकरण
११. विपाक	१२. दृष्टिवाद।

प्राचीनकाल में शास्त्र ज्ञान को कण्ठस्थ करने की परम्परा थी। वेद, पिटक, और आगम- ये तीनों ही कण्ठस्थ परम्परा से चलते रहे। उस समय लोगों की स्मरण शक्ति दैहिक संहनन बल उत्कृष्ट था।

आगम संकलन : प्रथम प्रयास :

भगवान महावीर के निर्वाण के लगभग ५६० वर्ष पश्चात् तक आगम ज्ञान की परम्परा यथावत रूप में गतिशील रही। उसके बाद एक विघ्न हुआ। मगध में बारह वर्ष का दुष्काल पड़ा। यह चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन काल की घटना है। जैन श्रमण इधर-उधर बिखर गये। अनेक काल कवलित हो गये। जैन संघ को आगम ज्ञान की सुरक्षा की चिन्ता हुई। दुर्भिक्ष समाप्त होने पर पाटलिपुत्र में आगमों को व्यवस्थित करने हेतु स्थूलभद्र के नेतृत्व में जैन साधुओं का एक सम्मेलन आयोजित हुआ, इसमें ग्यारह अंगों का संकलन किया गया। बारहवां अंग दृष्टिवाद किसी को भी स्मरण नहीं था। दृष्टिवाद के ज्ञाता केवल भद्रबाहु थे। वे उस समय नेपाल में महाप्राण ध्यान की साधना में लगे हुए थे। उनसे वह ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास किया गया। दृष्टिवाद के चौदह पूर्वों में से दस पूर्व तक का अर्थ सहित ज्ञान स्थूलभद्र प्राप्त कर सके। चार पूर्वों का केवल पाठ उन्हें प्राप्त हुआ।

आगमों के संकलन का यह पहला प्रयास था। इसे आगमों की प्रथम वाचना या पाटलिपुत्र कहा जाता है।

यों आगमों का संकलन तो कर लिया गया पर उन्हें सुरक्षित रखने का क्रम वही कण्ठाग्रता का ही रहा। यहां यह ज्ञातव्य है कि वेद जहां व्याकरणनिष्ठ संस्कृत मे निबद्ध थे, जैन आगम लोक भाषा में निर्मित थे, जो व्याकरण के कठिन नियमों से नहीं बंधी थी, इसलिए आने वाले समय के साथ-साथ उनमें भाषा की दृष्टि से कुछ-कुछ परिवर्तन भी स्थान पाने लगा। वेदों में ऐसा संभव नहीं हो सका। इसका एक कारण और था- वेदों की शब्द रचना को यथावत् रूप में बनाये रखने के लिए उनमें पाठ के संहिता पाठ, पदपाठ, क्रमपाठ, जटापाठ तथा घनपाठ ये पांच रूप रखे गये जिनके कारण किसी भी मंत्र का एक भी शब्द इधर से उधर नहीं हो सकता। आगमों के साथ ऐसी बात संभव नहीं थी।

द्वितीय प्रयास :

भगवान महावीर के निर्वाण के ८२७-८४० वर्ष के मध्य आगमों को सुव्यवस्थित करने का एक और प्रयत्न हुआ। उस समय भी पहले जैसा एक दुष्काल पड़ा था। जिसमें भिक्षा न मिलने के कारण अनेक जैन मुनि परलोकवासी हो गये। आगमों के अभ्यास का क्रम यथावत रूप से चालू नहीं रहा। इसलिए वे विस्मृत होने लगे। आगमों के अभ्यास होने पर आर्य स्कन्दिल के नेतृत्व में मथुरा में साधुओं का सम्मेलन हुआ। जिन-जिन को जैसा स्मरण था, संकलित कर आगम सुव्यवस्थित किये गये। इसे माधुरी वाचना कहा जाता है। आगम- संकलन का यह दूसरा प्रयास था।

इसी समय के आसपास सौराष्ट्र के अंतर्गत वल्लभी में नागार्जुन के नेतृत्व में भी साधुओं का वैसा ही सम्मेलन हुआ, जिसमें आगम संकलन का प्रयास हुआ। यह उपर्युक्त दूसरे प्रयत्न या वाचना के अन्तर्गत ही आता है। वैसे इसे वल्लभी की प्रथम वाचना भी कहा जाता है।

तृतीय प्रयास :

अब तक वही कण्ठस्थ क्रम चलता रहा था, आगे इसमें कुछ कठिनाई अनुभव होने लगी। लोगों की स्मृति पहले से दुर्बल हो गई, दैहिक संहनन भी वैसा नहीं रहा, अतः उतने विशाल ज्ञान को स्मृति में बनाये रखना कठिन प्रतीत होने लगा। आगम विस्मृत होने लगा। अतः पूर्वोक्त दूसरे प्रयत्न के पश्चात् भगवान महावीर के निर्वाण के 980 या 993 वर्ष के बाद वल्लभी में देवर्धिगणि क्षमा श्रमण के नेतृत्व में पुनः श्रमणों का सम्मेलन हुआ। सम्मेलन में उपस्थित श्रमणों के समक्ष पिछली दो वाचनाओं का संदर्भ विद्यमान था। उस परिपार्श्व में उन्होंने अपनी स्मृति के अनुसार आगमों का संकलन किया। मुख्य आधार के रूप में उन्होंने माधुरी वाचना को रखा। विभिन्न श्रमण संघों में प्रवृत्त पाठान्तर, वाचना भेद आदि का समन्वय किया। इस सम्मेलन में आगमों को लिपिबद्ध किया गया ताकि आगे उनका एक सुनिश्चित रूप सबको प्राप्त रहे। प्रयत्न के बावजूद जिन पाठों का समन्वय संभव नहीं हुआ, वहां वाचनान्तर का संकेत किया गया। बारहवां अंग दृष्टिवाद संकलित नहीं किया जा सका, क्योंकि वह श्रमणों को उपस्थित नहीं था। इसलिए उसका विच्छेद घोषित कर दिया गया। जैन आगमों के संकलन के प्रयास में यह तीसरी या अंतिम वाचना थी। इसे द्वितीय वल्लभी वाचना भी कहा जाता है। वर्तमान में उपलब्ध जैन आगम इसी वाचना में संकलित आगमों का रूप है।

उपलब्ध आगम जैनों की श्वेताम्बर परंपरा द्वारा मान्य है। दिगम्बर परंपरा में इनकी प्रामाणिकता स्वीकृत नहीं है। वहां ऐसी मान्यता है कि भगवान महावीर के निर्वाण के ६८३ वर्ष पश्चात् अंग साहित्य का विलोप हो गया। महावीर भाषित सिद्धांतों के सीधे शब्द समवाय के रूप में वे किसी ग्रन्थ को स्वीकार नहीं करते। उनकी मान्यतानुसार ईसा की प्रारंभिक शती में धरसेन नामक आचार्य को दृष्टिवाद अंग के पूर्वगत ग्रंथ का कुछ अंश उपस्थित था। वे गिरनार पर्वत की चंद्रगुफा में रहते थे। उन्होंने वहां दो प्रज्ञाशील मुनि पुष्पदन्त और भूतबलि को अपना ज्ञान लिपिबद्ध करा दिया। यह षट्खण्डागम के नाम से प्रसिद्ध है। दिगम्बर परंपरा में इनका आगमवत् आदर है। दोनों मुनियों ने लिपिबद्ध षट्खण्डागम ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी को संघ के समक्ष प्रस्तुत किये। उस दिन को श्रुत के प्रकाश में आने का महत्वपूर्ण दिन माना गया। उसकी श्रुत पंचमी के नाम से प्रसिद्धि हो गई। श्रुत पंचमी दिगम्बर सम्प्रदाय का एक महत्वपूर्ण धार्मिक पर्व है।

ऊपर जिन आगमों के संदर्भ में विवेचन किया गया है, श्वेताम्बर परंपरा में उनकी संख्या के संबंध में एकमत नहीं है। उनकी 84, 84 तथा 32 की तीन प्रकार की संख्यायें मानी जाती हैं। श्वेताम्बर मन्दिरमार्गी सम्प्रदाय में 84 और 45 की संख्या की भिन्न-भिन्न रूप में मान्यता है। श्वेताम्बर स्थानकवासी तथा तेरापंथी जो अमूर्तिपूजक सम्प्रदाय है-में 32 की संख्या स्वीकृत है, जो इस प्रकार है-

पुद्गल विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, एवं तत्वचिंतन आदि के अनेक सिद्धांत आधुनिक भौतिक विज्ञान, वनस्पति विज्ञान एवं मनोविज्ञान की कसौटी पर खरे सिद्ध हो रहे हैं। आवश्यकता इस बात की है कि आगमों का दार्शनिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि के साथ-साथ वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी गहन अध्ययन किया जाये। इस दिशा में उत्साहशील अध्येताओं : अनुसंधित्सुओं को प्रेरणा और सहयोग दिया जाए कितना अच्छा हो, क्योंकि वर्तमान के परिप्रेक्ष्य अहिंसा, समता और अनेकांत दर्शन की अतीव उपयोगिता किंवा आवश्यकता है।

सन्दर्भ :

१. आप्तवचनादाविर्भूतमर्थसंवेदनमागम।
उपचारादाप्तवचनं च ॥ -प्रमाणनय तत्वालोक ४.१.२

२. अत्थं भासइ अरहा, सुत्तं गंथंति गणहरा निउणं।
सासणस्स हियट्ठाए, तओ सुत्तं पवत्तेई ॥ -आवश्यक निर्युक्ति-१२

३. भगवं च णं अद्धमागहीए भासाए धम्माइक्खइ। सावि यणं अद्धमागही भासा भासिज्जमाणी तेसिं सव्वेसि आरियमणारियाणं दुप्पय-चउप्पअ-मिय-पसु-पक्खि-सरीसिवाणं अप्पणो हिय-सिव-सुहय-भासत्ताए परिणमई।
-समवायांग सूत्र ३४.२१, २२,२३

४. बालस्त्रीवृद्धमूर्खाणां, नृणां चारित्रकांक्षिणाम्।
अनुग्रहार्थ तत्वज्ञैः, सिद्धान्तः प्राकृतः कृतः ॥ -दशवैकालिक वृत्ति पृष्ठ २२३

५. अद्धमागहाए भासाएत्ति रसोर्लशौ मागध्यामित्यादि यन्मागधभाषालक्षणं तेनापरिपूर्णा प्राकृत भाषालक्षणबहुला अर्द्धमागधीत्युच्यते। -उववाई सूत्र सटीक पृष्ठ २२४-२२५
(श्रीयुक्त राय धनपतिसिंह बहादुर आगम संग्रह जैन बुक सोसायटी, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित)

६. आर्ष-ऋषीणामिदमार्षम्। आर्षप्राकृतं बहुलं भवति।
तदपि यथास्थानं दर्शयिष्याम:। आर्षे हि सर्वे विधयो विकल्प्यन्ते ॥
-सिद्धहेमशब्दानुशासन ८.१.३

७. भाषाविज्ञान : डा० भोलानाथ तिवारी पृष्ठ १७८
(प्रकाशक : किताब महल, इलाहाबाद, १९६१ ई०)

□ डॉ. मुकुलराज मेहता
रिसर्च साइन्टिस्ट

जैन दर्शन में मोक्ष तत्त्व

जैन दर्शन में वर्णित सातों तत्वों में मोक्ष तत्व का अंतिम स्थान है। सभी भारतीय दर्शनों का अंतिम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति रहा है। प्रायः सभी दर्शनों में मोक्ष प्राप्ति की पद्धति अलग-अलग दृष्टिगोचर होती है अर्थात् सभी दर्शनों ने अपने-अपने ढंग से मोक्ष प्राप्त करने के उपाय बताये हैं।

मोक्ष प्राप्त करने की शृंखला में जैन दर्शन ने मोक्ष की प्राप्ति को जीवन का परम ध्येय माना है। जिसने समस्त कर्मों का क्षय करके, अपने साध्य को सिद्ध कर लिया, उसने पूर्ण सफलता प्राप्त कर ली। कर्म-बंधन से मुक्ति मिलने पर जन्म-मरण रूपी महान दुखों के चक्र की गति रूक जाती है, और वह सदा के लिए सत्-सत् आनन्दमय स्वरूप को प्राप्त कर लेता है।

मोक्ष का अर्थ :

सभी भारतीय दर्शनों ने मोक्ष को स्वीकार किया है। मोक्ष प्राप्ति का अर्थ सभी प्रकार के दुखों से छुटकारा पाना है अर्थात् मोक्ष प्राप्त होने पर जीव परमानंद स्वरूप हो जाता है।

आचार्य पूज्यपाद ने मोक्ष की परिभाषा इस प्रकार दी है- 'कृत्स्नकर्मवियोग लक्षणो मोक्षः'[1] अर्थात् संपूर्ण कर्म का वियोग मोक्ष है। जब सभी प्रकार के मोह, माया से मुक्ति मिल जाती है तब उसे ही मोक्ष कहते हैं। मोक्ष की अवस्था में जीव का पुद्गल से पृथक्करण हो जाता है।[2]

मोक्ष का स्वरूप :

बन्धहेतुओं के अभाव और निर्जरा से सभी कर्मों का आत्यन्तिक क्षय होना ही मोक्ष है।[3] संसार की परिपाटी उस नौका के समान है, जिसमें से पानी तो निकाला जा रहा हो पर पानी आने का स्रोत बंद न हो। यह जीव हर समय नवीन कर्मों का बंध करता रहता है और पूर्वबद्ध कर्मों के फल को भोगकर उसकी निर्जरा भी करता रहता है।

जब बन्ध के हेतुओ का अभाव किया जाता है, तब नवीन बन्ध नहीं होते हैं। बन्ध के पांच हेतु हैं- मिथ्यादर्शन, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग।[4] इन हेतुओं को दूर कर देने से नवीन बंध नहीं होता और जीव को मोक्ष प्राप्त होता है। कैवल्य प्राप्ति के समय मोहनीय आदि चार कर्मों का अभाव होता हैं और बंध के हेतुओं में योग शेष रहता है, जिससे मोक्ष नहीं होता। तब जाकर यह जीव पहले योग का अभाव करता है और तत्पश्चात् शेष बचे चार कर्मो की समग्र निर्जरा करता है, तब इसे मोक्ष प्राप्त होता है।

जैन दर्शन में वर्णित मोक्ष के स्वरूप का क्रमशः विवेचन प्रस्तुत है -

१. समस्त कर्मों का नाश हो जाना मोक्ष है।[5] कर्म तीन प्रकार के हैं- भावकर्म, द्रव्य कर्म और नोकर्म (शरीर)। प्रथम कर्म के नष्ट हो जाने पर शेष दोनों कर्मों का नाश हो जाता है। उसी के साथ जीव के समस्त दुःख नष्ट हो जाते हैं।

२. अस्ति की अपेक्षा से जीव की संपूर्ण शुद्धता मोक्ष है और नास्ति की अपेक्षा से संपूर्ण विकारों से मुक्त होना ही मोक्ष है।

पुद्गल विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, एवं तत्वचिंतन आदि के अनेक सिद्धांत आधुनिक भौतिक विज्ञान, वनस्पति विज्ञान एवं मनोविज्ञान की कसौटी पर खरे सिद्ध हो रहे हैं। आवश्यकता इस बात की है कि आगमों का दार्शनिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि के साथ-साथ वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी गहन अध्ययन किया जाये। इस दिशा में उत्साहशील अध्येताओं और अनुसंधित्सुओं को प्रेरणा और सहयोग दिया जाए तो कितना अच्छा हो, क्योंकि वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में अहिंसा, समता और अनेकांत दर्शन की अपरिहार्य उपयोगिता किंवा आवश्यकता है।

सन्दर्भ :

१. आप्तवचनादाविर्भूतमर्थसंवेदनमागम।
उपचारादाप्तवचनं च ॥ -प्रमाणनय तत्वालोक ४.१.२

२. अत्थं भासइ अरहा, सुत्तं गंथंति गणहरा निउणं।
सासणस्स हियट्ठाए, तओ सुत्तं पवत्तेई ॥ -आवश्यक निर्युक्ति-१२

३. भगवं च णं अद्धमागहीए भासाए धम्माइक्खइ। सावि यणं अद्धमागही भासा भासिज्जमाणी तेसिं सव्वेसिं आरियमणारियाणं दुप्पय-चउप्पअ-मिय-पसु-पक्खि-सरीसिवाणं अप्पणो हिय-सिव-सुहय-भासत्ताए परिणमई
-समवायागं सूत्र ३४.२१; २२,२३

४. बालस्त्रीवृद्धमूर्खाणां, नृणां चारित्रकांक्षिणाम्।
अनुग्रहार्थं तत्वज्ञैः, सिद्धान्तः प्राकृतः कृतः ॥ -दशवैकालिक वृत्ति पृष्ठ २२३

५. अद्धमागहाए भासाएत्ति रसोर्लशौ मागध्यामित्यादि यन्मागधभाषालक्षणं तेनापरिपूर्णा प्राकृत भाषालक्षणबहुला अर्द्धमागधीत्युच्यते। -उववाई सूत्र सटीक पृष्ठ २२४-२२५
(श्रीयुक्त राय धनपतिसिंह बहादुर आगम संग्रह जैन बुक सोसायटी, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित)

६. आर्ष-ऋषीणामिदमार्षम्। आर्षप्राकृतं बहुलं भवति।
तदपि यथास्थानं दर्शयिष्याम :। आर्षे हि सर्वे विधयो विकल्प्यन्ते ॥
-सिद्धहेमशब्दानुसाशन ८.१.३

७. भाषाविज्ञान : डा० भोलानाथ तिवारी पृष्ठ १७८
(प्रकाशक : किताब महल, इलाहाबाद, १९६१ ई०)

❑ डॉ. मुकुलराज मेहता
रिसर्च साइन्टिस्ट

जैन दर्शन में मोक्ष तत्त्व

जैन दर्शन में वर्णित सातो तत्वों में मोक्ष तत्व का अंतिम स्थान है। सभी भारतीय दर्शनों का अंतिम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति रहा है। प्राय: सभी दर्शनों में मोक्ष प्राप्ति की पद्धति अलग-अलग दृष्टिगोचर होती है अर्थात् सभी दर्शनों ने अपने-अपने ढंग से मोक्ष प्राप्त करने के उपाय बताये हैं।

मोक्ष प्राप्त करने की शृंखला में जैन दर्शन ने मोक्ष की प्राप्ति को जीवन का परम ध्येय माना है। जिसने समस्त कर्मो का क्षय करके, अपने साध्य को सिद्ध कर लिया, उसने पूर्ण सफलता प्राप्त कर ली। कर्म-बंधन से मुक्ति मिलने पर जन्म-मरण रूपी महान दुखों के चक्र की गति रूक जाती है, और वह सदा के लिए सत्-सत् आनन्दमय स्वरूप को प्राप्त कर लेता है।

मोक्ष का अर्थ :

सभी भारतीय दर्शनों ने मोक्ष को स्वीकार किया है। मोक्ष प्राप्ति का अर्थ सभी प्रकार के दुखों से छुटकारा पाना है अर्थात् मोक्ष प्राप्त होने पर जीव परमानंद स्वरूप हो जाता है।

आचार्य पूज्यपाद ने मोक्ष की परिभाषा इस प्रकार दी है- 'कृत्स्नकर्मवियोग लक्षणो मोक्षः'[1] अर्थात् संपूर्ण कर्म का वियोग मोक्ष है। जब सभी प्रकार के मोह, माया से मुक्ति मिल जाती है तब उसे ही मोक्ष कहते हैं। मोक्ष की अवस्था में जीव का पुद्गल से पृथक्करण हो जाता है।[2]

मोक्ष का स्वरूप :

बन्धहेतुओं के अभाव और निर्जरा से सभी कर्मों का आत्यन्तिक क्षय होना ही मोक्ष है।[3] संसार की परिपाटी उस नौका के समान है, जिसमें से पानी तो निकाला जा रहा हो पर पानी आने का स्रोत बंद न हो। यह जीव हर समय नवीन कर्मों का बंध करता रहता है और पूर्वबद्ध कर्मों के फल को भोगकर उसकी निर्जरा भी करता रहता है।

जब बन्ध के हेतुओ का अभाव किया जाता है, तव नवीन बन्ध नहीं होते हैं। बन्ध के पांच हेतु हैं- मिथ्यादर्शन, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग।[4] इन हेतुओं को दूर कर देने से नवीन बंध नहीं होता और जीव को मोक्ष प्राप्त होता है। कैवल्य प्राप्ति के समय मोहनीय आदि चार कर्मों का अभाव होता हैं और बंध के हेतुओं में योग शेप रहता है, जिससे मोक्ष नहीं होता। तव जाकर यह जीव पहले योग का अभाव करता है और तत्पश्चात शेष बचे चार कर्मो की समग्र निर्जरा करता है, तब इसे मोक्ष प्राप्त होता है।

जैन दर्शन में वर्णित मोक्ष के स्वरूप का क्रमश: विवेचन प्रस्तुत है -

१. समस्त कर्मों का नाश हो जाना मोक्ष है।[5] कर्म तीन प्रकार के हैं- भावकर्म, द्रव्य कर्म और नोकर्म ([illegible])। प्रथम कर्म के नष्ट हो जाने पर शेष दोनों कर्मों का नाश हो जाता है। उसी के साथ जीव के [illegible] नष्ट हो जाते हैं।

२. अस्ति की अपेक्षा से जीव की संपूर्ण शुद्धता मोक्ष है और नास्ति की अपेक्षा से [illegible] होना ही मोक्ष है।

३. प्रत्येक जीव अपने स्वयं के प्रयास से प्रथम मिथ्यात्व को दूर कर सम्यक् दर्शन प्रकट करता है और फिर क्रमशः विशेष पुरुषार्थ के माध्यम से प्रत्येक विकार को दूर करके मुक्त हो जाता है। पुरुषार्थ के बिना मोक्ष सम्भव नहीं है। हजारों जन्म बीत जाने पर स्वतः मुक्ति नहीं होती है।

अयत्नसाध्यं निर्वाणं चित्तत्वं भूतजं यदि ।
अन्यथा योगतस्तस्यान्न दुःखं योगिनां क्वचित् ॥

यदि पृथ्वी आदि पंचभूतों से जीव की उत्पत्ति हो तो निर्वाण यत्न साध्य है किंतु यदि ऐसा न हो तो योग से निर्वाण की प्राप्ति हो, इसलिए योग साधकों को प्रयत्न करने में दुख नहीं होता। इससे सिद्ध होता है कि बिना पुरुषार्थ के मोक्ष भी सम्भव नहीं होगा।

४. जब जीव मुक्त हो जाता है तब वह अशरीरी हो जाता है अर्थात् उसका कोई रूप रंग, आकार नहीं होता। वह जीव इस लोक में निवास नहीं करता, वह उर्ध्वगमन करते हुए लोक के अग्रभाग में चला जाता है। वहां उनका अनन्त समय के लिए वास होता है। धर्मास्तिकाय जीव की सत्ता लोक तक ही होती है, उसके आगे उसकी गति नहीं होती।

५. जब जीव निर्वाण की दशा में पहुंचता है तब न तो आत्मा का अभाव होता है और न अचेतन ही हो जाता है। जब आत्मा एक स्वतंत्र मौलिक द्रव्य है, तब उसके अभाव की या उसके गुणों की कल्पना ही नहीं की जा सकती।[8] आत्मा के अभाव या चैतन्य के उच्छेद को मोक्ष नहीं कह सकते। रोग की निवृत्ति का नाम आरोग्य है न कि रोग की निवृत्ति या समाप्ति।

अतः जैन दर्शन के अनुसार जीव का निर्वाण न तो बुद्धि से मेल खाता है और न न्याय से। सांख्य और जैन दोनों जीव को अनात्म तत्वों से पृथक और स्वतंत्र होकर शुद्ध चेतन स्वरूप में स्थित मानते हैं।

६. निर्वाण की अवस्था में सभी जीव एक समान शुद्ध चेतन होते हुए भी और अनन्त ज्ञान सम्पन्न होते हुए भी अद्वैत वेदान्त के समान सभी जीव एकत्व में लीन नहीं होते। सांख्य के अनुसार उनका स्वतंत्र अस्तित्व बना रहता है।

७. बन्धन की अवस्था में जीव में बाह्य प्रभाव पड़ते हैं और वह उनके कारण परिणमित होता है, किन्तु मुक्त होने पर वह केवल ज्ञान से संपन्न हो जाता है। वह प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करने की सामर्थ्य रखता है क्योंकि दर्शन और ज्ञान आत्मा के व्यापार है, इंद्रियों के नहीं।[9]

८. जैन दर्शन में जीव का आकार शरीर के बराबर माना गया है। मुक्त होने पर उसका आकार सीमित हो जाता है। उसके आत्म-तत्त्व में एक विशेष गुण होता है, जिसके कारण शरीर के आकार मे विद्यमान रहकर मुक्त आत्माओं के साथ सहअस्तित्व रख सकता है। उसका आकार सीमित होने पर भी उसका ज्ञान अनन्त होता है।

मोक्ष की अवस्था में जीव पुद्गल से अलग होता है। मोक्ष की प्राप्ति तब तक संभव नहीं है जब तक नये पुद्गल के कणों को आत्मा की ओर प्रवाहित होने से रोका न जाए। केवल नये पुद्गल कणों को आत्मा की ओर प्रवाहित होने से रोकना ही मोक्ष के लिए पर्याप्त नहीं है, बल्कि जीव में पहले से उपस्थित कर्म पुद्गल कणों को बाहर न निकाला जाये। कर्म पुद्गल से मुक्त होने पर जीव स्वतः मुक्त हो जाता है।

<u>मोक्ष के प्रकार</u> : जैन दार्शनिकों ने मोक्ष को दो प्रकार का माना है, जो निम्न हैं-

१. भाव मोक्ष

२. द्रव्य मोक्ष [10]

भाव मोक्ष : मोक्ष का क्षय होने से और ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय तथा अन्तराय कर्मों के समाप्त होने पर केवल ज्ञान की उत्पत्ति होती है। केवल ज्ञान की उत्पत्ति होने पर भावमोक्ष होता है अर्थात् जिन भावों से समस्त कर्मों का क्षय होता है, वह 'भाव मोक्ष' कहलाता है यह जीव की अरिहन्त दशा है।

द्रव्य मोक्ष : चार अघाति कर्मों का अभाव होना ही 'द्रव्य मोक्ष' है। इस स्थिति में जीव का आत्मा से किसी

प्रकार का संबंध नहीं रहता। समस्त कर्म आत्मा से अलग हो जाते हैं। इसे ही 'द्रव्य मोक्ष' कहते हैं। यह जीव की सिद्ध दशा है।

मोक्ष प्राप्ति के साधन :

प्रत्येक मनुष्य मोक्ष प्राप्त करने का निरंतर प्रयास करता है किंतु वह अपने आसपास और संसार में उपस्थित प्रत्येक वस्तु को अपना समझता है। वह अनादि काल से अज्ञान के वशीभूत होने के कारण ही ऐसा समझता है। वह अपने शरीर को अपना ही समझता है। इसलिए वह सम्पूर्ण जीवन अपने शरीर की रक्षा और उसी की सेवा में लगा रहता है। यही उसकी सबसे बड़ी भूल है। जीव की इस भूल को मिथ्या दर्शन कहा गया है। मिथ्या रूपी भूल को पाप भी कहते हैं।

इस प्रकार की भूल को दूर करने से ही मोक्ष की प्राप्ति संभव है। जैन दर्शन में मोक्ष प्राप्ति के तीन साधन बताये गये हैं। जो निम्न हैं-

१. सम्यक् दर्शन (श्रद्धा)

२. सम्यक् ज्ञान

३. सम्यक् चारित्र्य

इन तीनों साधनों के समुच्चय से मोक्ष मार्ग प्रशस्त होता है।[12] प्रत्येक व्यक्ति को इन तीनों साधनों का नियम पूर्वक पालन करना चाहिए। क्योंकि तभी उसे सांसारिक मोहमाया से मुक्ति मिल सकती है। जैनाचार्य कुन्दकुन्दाचार्य ने सम्यक् दर्शन, ज्ञान और चारित्र इन तीनों को आत्मा का पर्याय माना है। इनके अलावा अन्य कोई रास्ता नहीं है। व्यवहार पूर्वक दूसरों को भी यही उपदेश देना चाहिए।[13]

इन मोक्षोपयोगी तीनों साधनों को जैन दर्शन में त्रिरत्न या रत्न त्रय की संज्ञा दी गई है।[14] ये तीनों मानव जीवन के अलंकार के समान होते हैं।

आचार्य उमास्वामी ने तत्त्वार्थाधिगम सूत्र में कहा है कि- 'सम्यक् दर्शन, ज्ञान, चारित्राणि मोक्ष मार्गः।[15]

अर्थात् ये त्रिरत्न ही मोक्ष प्राप्ति के मार्ग हैं। तीनों मार्गों के संयुक्त रूप से ही मोक्ष मिल सकता है। क्रमशः तीनों का वर्णन निम्नवत् संक्षेप में प्रस्तुत है-

सम्यक् दर्शन : आचार्य उमास्वामी ने यथार्थ ज्ञान के प्रति श्रद्धा का होना सम्यक् दर्शन कहा है।[16] कुछ लोगों में यह जन्मजात होता है। कुछ लोग इसे अभ्यास या विद्या द्वारा सीखते हैं।[17]

सम्यक् दर्शन का अर्थ अंधविश्वास नहीं है। जैन दार्शनिकों ने स्वयं अंधविश्वास का खंडन किया है। उनका मानना है कि व्यक्ति को सम्यक् दर्शन तभी हो सकता है, जब उसने अपने आपको अनेक प्रकार के प्रचलित अंध विश्वासों से मुक्त कर लिया हो। प्रख्यात जैन दार्शनिक मणिभद्र कहते हैं कि 'जैन मत युक्तिहीन नहीं, वरन् युक्ति प्रधान है।' उनका मानना है कि- 'न मेरा महावीर के प्रति कोई पक्षपात है और न ही कपिल या अन्य दार्शनिकों के प्रति कोई द्वेष है। मैं युक्ति संगत वचन को ही मानता हूं, चाहे वह जिस किसी का हो।'[18]

सम्यक् दर्शन का अर्थ होता है कि बौद्धिक विकास, अर्थात् व्यक्ति किसी भी वस्तु का यथार्थ स्वरूप समझकर उसमें श्रद्धा रखना और उसमें अपनी मान्यता रखना या स्थापित करना, सम्यक् दर्शन कहलाता है। यह तभी हो सकता है, जब हम उस वस्तु के स्वरूप को स्पष्ट रूप से समझ लें।

सम्यक् दर्शन के आठ अंग बताये गये हैं- संदेह से दूर रहना, सांसारिक सुखों की इच्छा का त्याग करना, सबके प्रति प्रेम का भाव रखना, जैन सिद्धांतों को सर्वश्रेष्ठ समझना। इनके अलावा लौकिक अंधविश्वासों, पाखंडों आदि से दूर रहना भी सम्यक् दर्शन में शामिल है। इन सबका अर्थ हुआ कि मनुष्य को सभी प्रकार की बुराइयों से दूर रहना चाहिए तथा अधिक सुख भी नहीं लेना चाहिए।

मनुष्य को अपनी इन्द्रियों को वश में रखकर वस्तु के प्रति सच्ची जानकारी रखना ही सम्यक् दर्शन कहलाता है।

सम्यक् ज्ञान : सम्यक् ज्ञान में जीव और अजीव के मूल तत्वों का विशेष ज्ञान प्राप्त होता है।[19] यदि जीव और अजीव के अन्तर को न समझा जाय तो बंधन का उदय होता है और उस बंधन को रोकने के लिए ज्ञान का होना

अति आवश्यक है। यह ज्ञान शुद्ध, पवित्र, दोषरहित, संशयहीन होता है। दर्शन कारण और ज्ञान कार्य है।

तत्वार्थसार के अनुसार जिस ज्ञान में अपना स्वरूप विषय हो, उसका यथार्थ निश्चय हो, उस ज्ञान को सम्यक् ज्ञान कहते हैं।[20] जिस ज्ञान में विषय प्रतिबोध के साथ-साथ उसका स्वरूप प्रतिभासित हो और वह यथार्थ हो, उस ज्ञान को सम्यक् ज्ञान कहते हैं। इस ज्ञान के पांच भेद स्वीकार किये गए हैं,[21] जो निम्नवत संक्षेप में प्रस्तुत हैं-

१. मतिज्ञान- पांच इन्द्रियों तथा मन के द्वारा अपनी शक्ति के अनुसार होने वाला ज्ञान मतिज्ञान कहलाता है।

२. श्रुतज्ञान- इसमें किसी भी वस्तु का विशेष ज्ञान होता है। उस विशेष ज्ञान को श्रुतज्ञान कहते हैं।

३. अवधि ज्ञान- द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की मर्यादा सहित इन्द्रिय या मन के निमित्त के बिना पदार्थ का प्रत्यक्षीकरण होना, अवधिज्ञान कहलाता है।

४. मन.पर्यव ज्ञान- द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की मर्यादा सहित इन्द्रिय तथा मन की सहायता के बिना ही दूसरे पुरुष के मन में स्थित पदार्थों का प्रत्यक्षीकरण करना मन.पर्यव ज्ञान कहलाता है।

५. केवल ज्ञान- केवल ज्ञान में सभी द्रव्य और उनकी सब पर्यायें एक साथ जानी जाती हैं।

सम्यक् ज्ञान का तात्पर्य यह हुआ कि ज्ञान प्राप्ति में जो कर्म बाधक होते हैं, उनको समूल नष्ट करना आवश्यक है। इस ज्ञान में जीव और अजीव के मूल तत्वों का विशेष ज्ञान प्राप्त होता है।[22] विशेष ज्ञान या सत्य ज्ञान के द्वारा ही कर्मों का विनाश होता है। कर्मों के विनाश के बाद ही सम्यक् ज्ञान की प्राप्ति की जा सकती है। कर्म आठ प्रकार के हैं- ज्ञानावरणीय कर्म, दर्शनावरणीय, मोहनीय, वेदनीय, आयुष्य, नाम, गोत्र, तथा अन्तराय।[23] जब जीव का कर्म से विच्छेद होगा, तभी मोक्ष की प्राप्ति होगी।

सम्यक् चारित्र्य : अज्ञान पूर्वक आचरण की निवृत्ति के लिए और आत्मा में स्थिर होने के लिए प्रयुक्त होता है। यह संवर में सहायक होता है। अहितकर कार्यों का त्याग तथा हितकर कार्य का आचरण करना सम्यक् चरित्र कहलाता है।[24] मोक्ष प्राप्त करने के लिए केवल श्रद्धा तथा ज्ञान ही आवश्यक नहीं है बल्कि साधक को आचरण पर भी नियंत्रण रखना चाहिए। सम्यक् चरित्र के द्वारा ही जीव अपने कर्मों से मुक्त हो जाता है, क्योंकि कर्मों के कारण ही बंधन और दुःख होता है। नये कर्मों को रोकने तथा पुराने कर्मों को नष्ट करने के लिए निम्न क्रियाएं आवश्यक बतायी गई हैं-

१. प्रत्येक व्यक्ति को समिति का पालन करना चाहिए। समिति का अर्थ साधरणतया सावधानी बताया गया है। जैनों ने पांच प्रकार की [25] समिति माना है जिसका संक्षिप्त वर्णन निम्नवत् प्रस्तुत है-

(क) ईर्या समिति- सभी प्रकार की हिंसा से बचने के मार्ग को ईर्या समिति कहते हैं।

(ख) भाषा समिति- मधुर, प्रिय, नम्र, वाणी बोलना भाषा समिति कहलाती है।

(ग) एषणा समिति- आवश्यकतानुसार भिक्षा ग्रहण करना एषणा समिति कहलाती है।

(घ) आदान निक्षेपण समिति- वस्तु के उठाने व नियत स्थान पर रखने को आदान निक्षेपण समिति कहते हैं।

(ङ) उत्सर्ग समिति- निश्चित स्थान पर मल-मूत्र का त्याग करना उत्सर्ग समिति कहलाती है।

२. मन, वचन व कर्म पर संयम रखना आवश्यक होता है। जैन दार्शनिक इसे गुप्ति कहते हैं। गुप्तियां तीन प्रकार की होती हैं जो निम्न हैं-

(क) वाणी पर संयम रखा जाता है।

(ख) वाणी पर नियंत्रण रखना ही वाग्गुप्ति कहलाती है।

(ग) मन पर नियंत्रण रखना ही मनोगुप्ति कहलाती है।

३. व्यक्ति को दस प्रकार के धर्मों का पालन करना चाहिए। दस धर्म ये हैं- सत्य, क्षमा, शौच, तप, संयम, त्याग, विरति, मार्दव, सरलता, ब्रह्मचर्य।

४. जीव और अजीव के स्वरूप के संबंध में समान भाव रखना पड़ता है। जैनों ने जीव और अजीव के संबंध को भावनापूर्ण बताया है।

५. सर्दी, गर्मी, भूख, प्यास आदि से मिले दुःख को सहन करना आवश्यक होता है। जैनों ने इसे परीषह कहा है।

६. समता, निर्लोभता, निर्मलता और सच्चरित्रता का पालन आवश्यक है।

जैनाचार्यो ने त्रिरत्न के अलावा पंच महाव्रत को मोक्ष प्राप्ति के लिए सबसे उत्तम माना है, लेकिन ये पांच महाव्रत्त सम्यक् चरित्र के अन्तर्गत ही आते हैं। संक्षेप में पंच महाव्रत का वर्णन निम्नवत् प्रस्तुत है-

अहिंसा : सम्यक् चरित्र के पालन करने में अहिंसा का प्रमुख स्थान है। अहिंसा का अर्थ सभी प्रकार की हिंसाओं का त्याग है। जैनों के अनुसार सभी जीवों का निवास द्रव्य में होता है। इन द्रव्यों का निवास केवल द्रव्य में ही नहीं बल्कि स्थावर द्रव्यों में भी होता है। जैसे- पृथ्वी, वायु, जल इत्यादि में भी माना जाता है। साधु या सन्यासी इस व्रत का पालन अधिक कठोरता से करते हैं, परतु साधारण मनुष्य के लिए दो इन्द्रियों वाले जीव की हत्या न करने का आदेश दिया है। जैन संन्यासी हिंसा से बचने के लिए मुंह पर कपड़ा बांधे रहते हैं। क्योंकि उनका मानना है कि सांस लेते समय छोटे-छोटे जीवों की हिंसा होने की संभावना रहती है। जैन दार्शनिकों ने यहां तक माना है कि दूसरों को हिंसा के लिए प्रेरित करना या मन में दूषित विचार लाना हिंसा के समान है। कुछ पाश्चात्य विद्वान् यह मानते हैं कि आदिम युग के असभ्य मनुष्य में जीवों के प्रति हिंसा का भय बना रहता था। वही हिंसा का मूल कारण है।[26] इस व्रत का पालन साधक को मन, वचन व कर्म से करना चाहिए। जिससे आचरण साफ व शुद्ध बना रहता है जो मोक्ष प्राप्ति में सहायता करता है।

सत्य : सत्य व्रत का स्थान सम्यक् चरित्र में दूसरा है। सत्य का अर्थ सभी प्रकार के असत्य का परित्याग। इस व्रत में झूठ नहीं बोला जाता। केवल सत्य ही बोला जाता है। सत्य का अर्थ सबका हितकारी हो और प्रिय हो। सत्य के पालन के समय लोभ, क्रोध, भय, से दूर रहना चाहिये। मन में किसी प्रकार की बात को छिपाना, दूसरों को झूठ बोलने के लिए प्रेरित करना, सत्य के नियम का उल्लंघन होता है। सत्य व्रत का पालन मन, वचन व कर्म से करना चाहिए। इसके पालन से मोक्ष प्राप्ति में सहायता मिलती है।

अस्तेय : अस्तेय भी मोक्ष प्राप्ति में सहायक होता है। इसका अर्थ सभी प्रकार की चोर प्रवृत्ति का निषेध करना है। जैनों के अनुसार जिस प्रकार किसी जीव के लिए उसका प्राण प्रिय है, उसी प्रकार उसकी धन-सम्पत्ति भी प्रिय है। मनुष्य का जीवन धन-सम्पत्ति पर निर्भर है। इसलिए धन-सम्पत्ति उसका वाह्य अंग है। किसी के धन के अपहरण की बात सोचना उस व्यक्ति के जीवन के अपहरण के समान है। अहिंसा के साथ अस्तेय का अछेद्य सम्बन्ध है। इस व्रत का पालन मन, वचन व कर्म से करना चाहिए।

ब्रह्मचर्य : ब्रह्मचर्य का अर्थ है-सभी प्रकार की वासनाओं का त्याग। जैन दार्शनिक केवल इन्द्रिय सुख का ही नहीं, बल्कि सभी प्रकरार के कामों के त्याग को ब्रह्मचर्य कहते हैं। मानव अपनी वासनाओं एवं कामनाओं के वशीभूत होकर अनैतिक कर्म करने लगता है। सभी प्रकार के शब्द, स्पर्श, रूप, गन्ध व स्वाद विषय कामना की वृद्धि में उत्तेजक होते हैं। मनुष्य इन्हीं विषयों के कारण बन्धन में फसा रहता है, परिणामस्वरूप वह बार-बार जन्म ग्रहण करता रहता है और वह मोक्ष नहीं प्राप्त कर सकता। मोक्ष प्राप्त करने के लिए इन कुप्रवृत्तियों का सर्वथा त्याग करना होगा। यह त्याग मन वचन व कर्म से करना चाहिए।

अपरिग्रह : सम्यक् चरित्र में अपरिग्रह का अन्तिम स्थान है। अपरिग्रह का अर्थ- सभी विषयों में आसक्ति का त्याग है। इस व्रत में उन सभी विषयों का त्याग करना पड़ता है, जिससे इन्द्रिय सुख की उत्पत्ति होती है। ऐसे विषयों में सभी प्रकार के रस, शब्द, गन्ध, स्पर्श व स्वाद आते हैं। इन विषयों के द्वारा मनुष्य कर्म बंधन में पड़ा

रहता है। जिसके कारण वह लगातार जन्म ग्रहण करता है। वह तब तक मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता, जब तक इन विषयों से अनासक्ति न हो जाये।

उपरोक्त कर्मों को अपनाकर मानव मोक्ष प्राप्त करने योग्य हो जाता है। सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन व सम्यक् चारित्र्य में बड़ा घनिष्ट संबंध है। कर्मों का आस्रव जीव में बंद हो जाता है। पुराने कर्मों का क्षय हो जाता है। इस प्रकार जीव अपनी स्वाभाविक अवस्था को प्राप्त कर लेता है, यही मोक्ष की अवस्था कहलाती है।

आचार्य उमास्वामी ने सभी प्रकार के कर्मों के क्षय को मोक्ष कहा है।[28] जब जीव अपने नैसर्गिक शुद्ध स्वरूप को पा लेता है, तो उसमें अनन्त चतुष्टय, अनन्त ज्ञान, अनन्त वीर्य, अनन्त श्रद्धा व अनन्त शांति की उत्पत्ति होती है। यही कैवल्य की अवस्था होती है।

तात्पर्य यह है कि सम्यक् दर्शन, ज्ञान व चारित्र से सर्वप्रथम संसार के कारण रूप मोहनीय कर्म नष्ट होते हैं तथा नवीन कर्मों का आस्रव बंद हो जाता है और संचित कर्म पुद्गल क्षीण हो जाता है। उस समय ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय व मोहनीय कर्मों का एक साथ क्षय हो जाता है। जैन दार्शन में आत्मा की शुद्ध अनन्त ज्ञानादि गुण से पूर्ण अवस्था को मोक्ष कहा गया है।[29] त्रिरत्न ये गृहस्थ तथा श्रावक के धर्म माने जाते हैं। परंतु ये दोनों मोक्ष के कारण माने गये हैं। अतः मोक्षाभिलाषी को इनका पालन करना अति आवश्यक माना गया है।[30]

दर्शन एवं धर्म विभाग,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी - २२१००५

सन्दर्भ :
१. सर्वार्थ सिद्ध १/४
२. भारतीय दर्शन की रूपरेखा, एच.पी. सिन्हा, पृ० १५९
३. 'बन्धहेत्वभावनिर्जराभ्यां, कृत्स्नकर्म क्षयोमोक्षः' -तत्वार्थ सूत्र १०/२/३
४. "मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमाद कषाया योगा बन्धहेतवः।" -तत्वार्थ सूत्र ८/१
५. तत्वार्थ सूत्र १०/२
६. समाधिशतक-१००
७. तदन्तरमूर्ध्व गच्छत्यालोकान्तात् -तत्वार्थ सूत्र १०/५
८. "आत्मलाभं विवुर्मोक्ष जीवस्यान्तर्मलक्षयात्।
नाभावो नाप्य चैतन्यं न चैतन्यमनर्थकम् ॥" -सिद्धि वृत्ति, पृ. ३८४
९. भारतीय दर्शन भाग एक, डा. राधाकृष्णन्, पृ० ३०५
१०. क. प्रवचन सार, अध्याय-१, गाथा-८४
ख. "सर्वस्य कर्मणो यः क्षयहेतुरात्मनो हि परिणामः।
ज्ञेयः स भाव मोक्षो द्रव्यविमोदश्च कर्मप्रयगभावः।"
११. "सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्षमार्गः" तत्वार्थ सूत्र १/१
१२. "सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्षमार्गः" तत्वार्थ सूत्र १/१

१३. दर्शनज्ञानचरित्राणि सेवितव्यानि साधुनां नित्यम् ।
तानि पुनर्जानीहि त्रीण्यप्यात्मानं चैव निश्चयत:॥ -समयसार, पूर्वरंग १६
१४. भारतीय दर्शन : बलदेव उपाध्याय, पृ० १६७
१५. तत्वार्थधिगम सूत्र १/२-३
१६. तत्वार्थश्रद्धानं सम्यकदर्शन् - तत्वार्थ सूत्र १/२
१७. तत्वार्थाधिगम सूत्र १/२-३
१८. न मे जिने पक्षपात: न द्वेष: कपिलादिषु ।
मुक्तिमद् वचनं यस्य तद् ग्राह्यं वचनं मम ॥
-षट्दर्शन समुच्चय ४४ पर टीका (चौखम्भासंस्करण पृ०३९)
१९. संशयविमोहविभ्रमविवर्जितमात्मपरस्वरूपस्य ।
ग्रहणं सम्यग्ज्ञानं साकारमनेक भेदं च ॥ -द्रव्यसंग्रह गाथा ३१ श्लोक
२०. तत्वसार, पूर्वार्द्ध गाथा, १८
२१. मतिश्रुतावधिमन:पर्याय केवलानि ज्ञानम् । -तत्वार्थ सूत्र १/९
२२. द्रव्य संग्रह श्लोक-४२
२३. ज्ञानदर्शनावरण वेदनीयमोहनीयायुर्नामगोत्रान्तराया : -तत्वार्थ सूत्र ८/४
२४. सामायिकच्छेदोपस्थाप्यपरिहारविशुद्धि सूक्ष्मसम्पराय यथाख्यातानिचारित्रम् । -तत्वार्थ सूत्र ९/१८
२५. ईर्याभाषैषणादान निक्षेपोत्सर्गा समितय: -तत्वार्थ सूत्र ९/५
२६. हिन्दू नीतिशास्त्र, डा० मैकेन्जी पृ० २
२७. आचारांग सूत्र, पृ० २०८
२८. तत्वार्थ सूत्र १०/२-३, भारतीय दर्शन, डा० बलदेव उपाध्याय पृ. १७०
२९. नरेन्द्रसेनाचार्य: सिद्धान्तसार पृ० ८६-८७
३०. क. अमृतचन्द्राचार्य: पुरुषार्थसिद्धयुपाय पृ० ८५
ख. राजचन्द्र : जैन शास्त्रामाला, पंचमसंस्करण, १९६६

❑ आचार्य कनकनंदी जी

ज्ञान-विज्ञान का आविष्कर्त्ता

जिस प्रकार वृक्ष के लिए बीज उसी प्रकार भूतकालीन सभ्यता, संस्कृति, हर राष्ट्र या समाज की जरूरत है क्योंकि उन घटनाओं व परम्पराओं से शिक्षा लेकर हम आगे बढ़ सकते हैं। केवल इतिहास पढ़ लेना यह तो केवल सड़े-गले शव को उखाड़ना है। इतिहास उसे कहते हैं जिसमें महापुरुष के बारे में वर्णन किया गया हो, जिससे हमें प्रेरणा मिले। एक मराठी कवि ने कहा-

महापुरुष हो उनगेले त्यांचे चारित्र पहाजरा ।
आपण त्यांचे समान हवावे यंचि सापड़े बोध खरा ॥

हम इतिहास, पुराण आदि पढ़ते हैं, वह क्या मनोरंजन, गुणगान या समय व्यतीत करने के लिए है ? नहीं.. बल्कि जो महापुरुष हो गए हैं उनका चरित्र अध्ययन करने के लिए, उसको पढ़कर उनके आदर्शों को जीवन में अपना करके, उनके समान बनकर राष्ट्र को विश्व-गुरु के रूप में प्रतिस्थापित करने के लिए।

हमारा भारत कभी विश्व-गुरु था, क्योंकि हमारे भारत में आधुनिक विज्ञान की हर शाखाएं थीं, ऐसा कहा गया है-

कला बहत्तर नरन की, यामें दो सरदार,
एक जीव की जीविका, एक जीव उद्धार।

बहत्तर कलाएँ होती है, उन बहत्तर कलाओं में दो कलाएँ सर्वश्रेष्ठ कलाएँ हैं, एक कला है- जीव की जीविका... क्योंकि 'शरीरमाध्यम् खलु धर्म साधनम्।' जीव की जीविका के अंतर्गत वाणिज्य, शिल्पकला, व्याकरण, इतिहास, पुराण आते हैं। दूसरी कला है- जीव उद्धार। इन बहत्तर कलाओं में समस्त आध्यात्मिक विधायें, पराविधायें हमारे भारत में किस प्रकार थीं, उन सभी के बारे में मैं यहां संक्षिप्त में प्रकाश डालूंगा। सर्वप्रथम मैं यह बताना चाहूंगा कि जिस प्रकार संपूर्ण सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र, ब्रह्मांड, आकाश में गर्भित हैं, उसी प्रकार संपूर्ण ज्ञान विज्ञान का उदय विकास केवली तीर्थंकर से हुआ है। इसलिए संपूर्ण ज्ञान विज्ञान के सम्पादक, आविष्कारक, प्रवक्ता केवली भगवान हैं।

यः सर्वाणि चराचराणि विधि वद् द्रव्याणि तेषां गुणान्,
पर्यायानपि भूत भावि भावितः सर्वाम् सदा सर्वदा ।
जानीते युगपत प्रतिक्षण मतः सर्वज्ञ इत्युच्यते
सर्वज्ञाय जिनेश्वराय महते वीराय तस्मै नमः ॥

Einstin Says, " We can only know the relative truth but the real truth is known only to the Universal observer."

हम सब केवल आंशिक सत्य को जान सकते हैं। कोई भी महान् वैज्ञानिक, दार्शनिक ही क्यों न हो संपूर्ण सत्य को नहीं जान सकता है क्योंकि हमारे पास जो ज्ञान है, वह निश्चित है। जिस प्रकार हमारे पास अनन्त आकाश

होते हुए भी हम अनन्त आकाश को देख नहीं सकते। क्योंकि हमारी दृष्टि-शक्ति सीमित है। तीर्थंकर एक साथ कितनी भाषाएं बोलते हैं ? ७१८ भाषाएं बोलते हैं। इसलिए समस्त ज्ञान-विज्ञान के जन्मदाता तीर्थंकर हैं। उसके बाद सम्पादन करते हैं गणधर। समस्त कलाओं, विधाओं का सम्पादन आदिनाथ भगवान ने किया था। परंतु उसका प्रायोगिक रूप में संक्षिप्त वर्णन मैं करूंगा।

भारतीय संस्कृति में ६०७५ ईसा पूर्व एक धन्वंतरी हुए जो कि शल्य चिकित्सा और रसायन शास्त्र के प्रवक्ता थे। उसी प्रकार अश्विनी कुमार थे जो औषध/आयुर्वेद के माध्यम से चिर युवा रहे और एक च्यवन ऋषि थे वे वृद्ध थे। इसलिए च्यवन ऋषि को उन्होंने औषधि दी। जिसके माध्यम से वृद्ध ऋषि युवक बन गया और औषधि का नाम च्यवनप्राश पड़ गया। ये सभी हमारे प्राचीन ग्रंथ चरक संहिता, आयुर्वेद में वर्णित हैं। इसके बाद पुनर्वसु ऋषि हुए। वे ईसा के २८०० वर्ष पूर्व हुए। शिक्षा पद्धति एवं आयुर्वेद शल्य चिकित्सा का वर्णन, प्रतिपादन उनके शिष्यों ने किया। हिपोक्रिटिश यूनानी थे। इतिहासकार मानते हैं कि हिपोक्रिटिश आयुर्वेदिक शल्य चिकित्सा के आविष्कारक हैं। परन्तु उससे भी कई हजार वर्ष पहले लिखित रूप में, प्रयोग रूप में हमारे देश में शल्य- चिकित्सा से लेकर अन्य प्रकार की चिकित्सा व शिक्षा थी। इस शल्य चिकित्सा के मौजूद मूल ग्रंथ चरक संहिता, वागभट्ट संहिता, योग रत्नाकर आदि में वर्णन मिलता है। ये शल्य चिकित्सा के आद्य प्रवक्ता थे। उन्होंने सुश्रुत संहिता ग्रंथ लिखा। ईसा से ६०० वर्ष पहले भारत, ग्रीक आदि कुछ देशों को छोड़कर अन्य देश अनंत अंधकार में थे। उन्हें अंक व अक्षर का ज्ञान नहीं था और हमारे यहां सभी था। इन सभी के साक्षी शिलालेख और ग्रन्थ हैं। सुश्रुत नाक, कान, गला, आंख, इन सभी की शल्य चिकित्सा करते थे। एक स्थान से मांस काटकर के अन्य स्थान में जोड़ देते थे और उन्होंने शल्य चिकित्सा के १२० प्रकार के यंत्रों का अविष्कार किया था। जीवक बुद्ध के चिकित्सक थे। एक सेठजी की लड़की थी, जिसकी उल्टी के माध्यम से अंदर की जो आंते बाहर निकल गईं, जीवक ने आपरेशन करके पुन. उसका स्थापन कर दिया। भारत में पशु-पक्षी की सुरक्षा और चिकित्सा पद्धति का भी आविष्कार हुआ था।

आदिनाथ भगवान की दो पुत्रियां थीं, ब्राह्मी और सुन्दरी। भरत, बाहुबली को उन्होंने पहले विद्यादान न देकर ब्राह्मी और सुन्दरी को दिया। क्योंकि विद्यादान के पहले आदिनाथ भगवान कहते है-

'विद्यावान पुरुषो लोके सम्मति याति कोविदैः।
नारीचतद्वतिधत्तेस्त्रीसृष्टेरग्रिमपदम् ॥'

जिस प्रकार विद्यावान पुरुष समाज में अग्रिम पद प्राप्त करते है उसी प्रकार शिक्षा प्राप्त करके स्त्री भी समाज में अग्रिम स्थान प्राप्त करती है।

इसलिए स्त्री शिक्षा पहले आदिनाथ भगवान ने प्रारंभ की क्योंकि माता प्रथम गुरु होती है। इसलिए सिद्ध होता है कि पुरुष शिक्षा से महत्वपूर्ण स्त्री शिक्षा है, परंतु मध्यकालीन परतन्त्रता के कारण हम स्त्री शिक्षा को भूल गए और प्रतिलोभी बन गये। हमने स्त्री शिक्षा महत्व के बजाय पुरुष शिक्षा को महत्व दिया और स्त्रियों को केवल भोग की वस्तु मान लिया। आदिनाथ ब्राह्मी सुन्दरी दोनों को गोदी में बैठाकर सिखाते हैं। इसलिए गणित में लिखते हैं वह उल्टी संख्या है, क्योंकि हम १२३ में पहले ३२१ नहीं लिखकर इससे उल्टा लिखते हैं। इस संख्या में १ का स्थानीय मान शतक है। २ का स्थानीय मान दशक है, और ३ का स्थानीय मान इकाई है। हमें पहले एकक ३ लिखना चाहिए फिर दशक २ लिखना चाहिए एवं इकाई ३ बाद में लिखना चाहिए। परंतु हम इसमें उल्टा शतक १ लिखते हैं, फिर दशक लिखते हैं पीछे इकाई ३ लिखते हैं। इसका कारण यह है कि ब्राह्मी को दायां भाग में बैठाकर 'अ, आ' की शिक्षा दी थी जिससे अक्षर (भाषालिपि) की गति बायें और से दांये की ओर होती है। सुन्दरी को बांयी गोद में बैठाकर १,२ की शिक्षा दी थी, जिसके कारण संख्या की गति दायें भाग से बायें की ओर होती है। इसलिए

'अंकानाम् वामतो गति।' अर्थात् अंको की गति वाम से होती है। इससे स्वतः यह सिद्ध हुआ कि ब्राह्मी लिपि का आविष्कार ब्राह्मी के नाम पर हुआ।

आदिनाथ भगवान ने कई खण्डों में व्याकरण शास्त्र को रचा था। परंतु अभी लिपिबद्ध रूप में सबसे प्राचीनतम व्याकरण पाणिनी व्याकरण है। पाणिनी ने व्याकरण ईसा के ५०० वर्ष पूर्व लिखा। हमारे भारत ने '०' व दशामलव पद्धति का अविष्कार किया। यदि दशमलव पद्धति एवं १ से ९ तक का आविष्कार नहीं होता तो गणित व विज्ञान का आविष्कार भी नहीं होता। इससे सिद्ध होता है कि १२०० वर्ष पूर्व एक भारतीय वैज्ञानिक गणित, ज्योतिष लेकर अरब गया और अरब से यूरोप और यूनान। वहां से जाकर अन्यत्र विकास हुआ।

नवीं शताब्दी में नागार्जुन जो भारत के सुप्रसिद्ध रासायनिक वैज्ञानिक थे, उनका ग्रन्थ रसायन शास्त्र था। गणित में महावीर आचार्य का एक शास्त्र है 'गणित सार संग्रह' जिसमें लघुत्तम समावर्त्तक, दीर्घवर्त और अंकगणित व बीजगणित आदि का वर्णन है। ९९८ में ब्रम्हगुप्त हुए जिनका ग्रन्थ १२०० वर्ष पहले विदेशों में गया। उसमें अंकगणित, बीजगणित, रेखा- गणित है और पाई का वर्णन है। भास्कराचार्य ने न्यूटन से ५०० वर्ष पूर्व गुरुत्वाकर्पण की खोज की थी। न्यूटन जब पेड़ के नीचे बैठे थे तो एक एपल उनके सिर पर गिरी तो उन्होंने सोचा कि एप्पल ऊपर या इधर-उधर जाने की बजाय सीधा नीचे ही क्यों आया और उन्होने गुरुत्वाकर्पण सिद्धांत की खोज की किन्तु उनसे पूर्व भास्कराचार्य ने निम्न सूत्र दिया।

'आकृष्टि शक्तिश्च मही तपायत स्वस्थ गुरु स्वामि मुखं स्वशक्या।'

भूमि में आकर्पण शक्ति है, अत. आकाश में स्थित भारी वस्तु को भूमि अपनी शक्ति से अपनी ओर खींच लेती है। हम मानते हैं, पढ़ते हैं और पढ़ाते हैं कि गुरुत्वाकर्पण शक्ति का प्रतिपादन न्यूटन ने किया। दीपक के नीचे अंधेरा है। हमारे अंदर आत्मबल नहीं है, जिससे हम अपने सिद्धांत को स्वीकार नहीं कर पाते हैं। इसी प्रकार वर्गमूल का हाल करके छोड़ दिया, परन्तु भास्कराचार्य ने उस 'पाई' की Value निकाली १३.१४१६६ और आधुनिक गणित के अनुसार २२/७ = ३.१४२ बताया है। आर्कमिडिस ने प्लावन सूत्र को प्रतिपादित किया था। जबकि इसका जन्मदाता ३००० वर्ष पूर्व अभय कुमार था जो श्रेणिक का पुत्र और महामंत्री था। सूर्य सिद्धांत का प्रतिपादन सिद्धांत शिरोमणि भामह व लीलावती ने किया। अभय कुमार ने हाथी का वजन करने के लिए आयतन सूत्र का आविष्कार किया। यह कुछ गरीब ब्राह्मण की रक्षा के लिए किया था। श्रेणिक उनको कष्ट देना नहीं चाहता था, उनकी रक्षा करने के लिए श्रेणिक ने कहा- हाथी का वजन करके ले आओ। इसके लिए अभय कुमार ने आर्कमिडिस का सूत्र दिया कि तुम एक नौका जल में रखो फिर नौका में हाथी को रखो। नौका वजन के कारण डूबेगी, जहां तक नौका डूबेगी वहां तक चिन्ह लगा दो, फिर हाथी को निकाल दो। उसमें ऐसा पत्थर रखो जिससे नौका निशान तक डूबे। इस पत्थर का वजन करो वह हाथी के बराबर वजन हो जाएगा।

आज तक हम यह जानते हैं कि हवाई जहाज का आविष्कार राइट ब्रदर्स ने किया था, लेकिन पुष्पक विमान जो काफी बड़ा था उसका निर्माण महाभारत काल के पूर्व हो चुका था। उसका निर्माण हिन्दू धर्म के अनुसार ब्रह्म ने किया और कुबेर को दिया। कुबेर से रावण युद्ध करके ले आया। पुष्पक विमान एक योजन (१२ कि.मी.) लम्बा था, और चौड़ाई (६ कि.मी.) आधा योजन। उसमें मनुष्य, हजारों हाथी, घोड़े, अस्त्र, शस्त्र, भोजनशाला, बगीचा, व्यायामशाला, तालाब आदि होते थे।

आर्यभट्ट सन् ४७६ गुप्तकाल में हुए और उन्होंने आर्य सिद्धांत का प्रतिपादन किया। शून्य का आविष्कार वर्षों पूर्व हो गया था। लेकिन शून्य का लिपिबद्ध रूप से व्यापक रूप में प्रयोग आर्यभट्ट ने किया। त्रिकोणमिति में Sinø cosø को भी आर्यभट्ट ने दिया। पृथ्वी गोल

है जो अपनी धुरी पर भ्रमण करती है, इस सिद्धांत को भी आर्यभट्ट ने सिद्ध किया। द्वितीय आर्यभट्ट ९५० में हुए जिसने यह महान् सिद्धांत दिया। रॉयल सोसायटी जो कि अभी इंग्लैंड में है ऐसी ही संस्था की स्थापना हमारे भारत में १५०० वर्ष पूर्व हुई थी। यहां पर केवल विशिष्ट वैज्ञानिक ही सदस्य बन सकते थे। दूसरे के लिए स्थान नहीं था। इसे ही विक्रमादित्य के नवरत्न पंडित कहते थे। उसमें एक थे वराहमिहिर, उन्होंने 'वृहत् संहिता' ग्रन्थ लिखा। इसमें ऋतु विज्ञान, कृषि विज्ञान आदि का वर्णन है। सभी विषय के वैज्ञानिक व गुरु हमारे भारत में हुए जिन्होंने सर्वप्रथम वैज्ञानिक आविष्कार किये, इसलिए हमारा भारत विश्वगुरु कहलाया।

हमारा भारत विश्वगुरु था, यह केवल भारतीयों का गुणगान नहीं है, ठोस आधार पर हमारा भारत विश्व गुरु रहा। अभी भी हमारे पास क्षमता, शक्ति व उपलब्धि है, केवल हमें जागना है। जैसे एक व्यक्ति के घर में गड़ी हुई करोड़ों की सम्पत्ति है लेकिन उसे मालूम नहीं है कि उसके यहां सम्पत्ति है तो जीवनभर केवल गरीब व अज्ञानी रहेगा। यदि मालूम होगा तो परिश्रम कर सम्पत्ति निकालेगा व धनपति बन जाएगा। इसी प्रकार हमारे पास सब कुछ होते हुए भी जिस प्रकार मृग की नाभि में कस्तूरी है तथापि इधर-उधर भटक रहा है, उसी प्रकार हम हमारे मूल उद्देश्य से भटक गए, विछिन्न हो गये। जिस प्रकार वृक्ष मूल से कट जाता है तो कितना भी पानी पिलाने पर सूख जाता है। उसी प्रकार हम विकसित नहीं हो पायेंगे। इसलिए हमें मूल से जुड़ना है। पुनः हमारी भारतीय सभ्यता, संस्कृति के ज्ञान-विज्ञान को पल्लवित करके पुष्पित करना है और दिखा देना है कि हमारा भारत विश्वगुरु था। अभी क्षमता हम में है। भविष्य में इसे विश्वगुरु बनाना है और २१वीं शताब्दी का स्वागत हमें ज्ञान, क्रांति, प्रगति से करना है।

(२३-११-९९ को आचार्य रत्न कनकनंदी द्वारा संगोष्ठी में दिया गया प्रवचन जिसे सुनकर उपस्थित वैज्ञानिक, प्रोफेसर, न्यायविद्, पत्रकार, प्राचार्य, शोधार्थीगण रोमांचित हुए एवं गौरव से अभिभूत हुए)।

रुकिये, एक क्षण

जिस समय समाज के हाथ से सामूहिक रूप में अहिंसा का पल्ला छूट जाता है, उस समय की असुरक्षा पर एक क्षण विचार कीजिये। जब किसी नगर या क्षेत्र में कोई साम्प्रदायिक दंगा हो जाता है, तब वहां कैसा वातावरण बन जाता है? हिंसा से पागल हुए लोग एक-दूसरे सम्प्रदाय के लोगों की नृशंस हत्याएं करते हैं। उनके मकान, उनकी दुकानें, उनके कारखाने जलाते हैं और अकरणीय हिंस्र कृत्यों पर राक्षसी अट्टाहास करते हैं। सब ओर मार-काट मच जाती है और सब जैसे हिंसा के उन्माद में क्रूर बन जाते हैं। जो उस हिंसा से दूर बैठा है, क्या वह सर्वथा सुरक्षित रह सकता है? इस परिदृश्य में ध्यान दीजिये कि व्यक्ति और समाज की सुरक्षा के लिए अहिंसा का सामूहिक परिपालन आवश्यक ही नहीं वरन् अत्यन्त अनिवार्य है।

-आचार्य नानेश

धर्म और विज्ञान

धर्म आत्म सम्बद्ध होते हुए भी समाज मूलक वस्तु के रूप में शताब्दियों से जन जीवन में प्रतिष्ठित र है। विज्ञान का भौतिक जगत से सम्बद्ध होते हुए भी धर्म के क्षेत्र में इसका प्रभाव रहा है। धर्म की वास्तवि अभिव्यक्ति आचार मूलक परम्पराओं में निहित है, जो समाज की नैतिक सम्पति है। उच्चतम आचार और विचा द्वारा वासना क्षय ही धर्म का एक सोपान है। आचार विषयक परिस्थितियां परिवर्तित होती रहती हैं - उसका मुख् कारण विज्ञान है। विज्ञान ने धर्म के बाह्य स्वरूप के अन्वेषण में जो क्रांतिकारी रूप दिया है, वह मानव शास्त्र औ समाज शास्त्र की दृष्टि से अनुपम है। पुरातन काल में, वर्तमान अर्थ में प्रयुक्त विज्ञान शब्द सार्थक न रहा हो प जहां तक इसकी भाव मूलक परंपरा का प्रश्न है, इसका नैकट्य स्पष्ट है। समाज मूलक क्रांतियों का जो धर्म पर प्रभा पड़ा है और जो अपेक्षित संशोधन भी करने पड़े हैं, यह सब कुछ विज्ञान की ही देन है। क्योंकि विशुद्ध आध्यात्मि दृष्टि से जीवन- यापन करनेवालों का अस्तित्व भी भौतिक जगत पर ही निर्भर रहता आया है। अतः समाज से ब वैज्ञानिक प्रयोगों को भी धर्म द्वारा समर्थन मिला है। जब हम ज्ञान की विशेष स्थिति को विज्ञान के रूप में अंगीका करते हैं तो स्वतः स्पष्ट हो जाता है कि विज्ञान भी आत्मा का एक मौलिक गुण है। उपनिषदों में 'एक से अने की ओर प्रेरित करने वाली शक्ति' को विज्ञान कहा गया है। पौर्वात्य विज्ञान की परंपरा की जड़ें धर्म के आदिकाल तक बिखरी हुई हैं। हां, कुछ काल ऐसा अवश्य व्यतीत हुआ कि विज्ञान का स्थान श्रद्धा ने ग्रहण किया, पर इसने हमारी सत्यान्वेषिणी वृत्ति को अधिक प्रोत्साहन नहीं मिला। विज्ञान एक ऐसी दृष्टि प्रदान करता है कि जिसके समुचित उपयोग द्वारा आत्म-तत्त्व गवेषण के प्रशस्त क्षेत्र में भी क्रांति की जा सकती है।

यह सर्व स्वीकृत तथ्य है कि मनुष्य स्वभावतः प्रगतिशील प्राणी है। इसलिए वह विज्ञान द्वारा प्राकृति शक्तियों की क्षमता की खोज कर सका। पर, परिताप इस बात का है कि वह भौतिक शक्तियों पर विजय प्राप्ति में इतना लीन हो गया है कि आत्मिक शक्तियों को भी विस्मृत कर बैठा। यहां तक कि वह अपने आपको इतना अधिक शक्ति-सम्पन्न समझने लगा कि परमात्मा, महात्मा, ईश्वर आदि अज्ञात शक्तियों को भी नगण्य मानने लगा। श्रद्धा का अंश जीवन से विलुप्त हो गया। वह एक प्रकार से हक्सले के इस सिद्धांत का अनुगामी बना कि ईश्वर आदि अज्ञात तथ्य मानवीय चिन्तन की अपूर्णता के द्योतक हैं। वह मानता है कि मनुष्य को समुचित या पौष्टिक खाद्य उचित मात्रा में न मिल पाने के कारण उन लोगों में विटामिन की कमी थी। मानसिक शक्ति दुर्बल हो गई थी। तभी वे ज्ञात वस्तुओं को छोड़ अज्ञात के चिन्तन में लीन हो गये। फलस्वरूप दौर्बल्य के कारण वे परमात्मा या अज्ञात शक्ति के लिए प्रलाप करने लगे। नहीं कहा जा सकता कि हक्सले के इस तर्क में कितना तथ्य है, पर यह तो बुद्धिगम्य है कि इस चिन्तन की पृष्ठभूमि भौतिक है। अहिंसा या अध्यात्म प्रधान दृष्टिकोण से चिन्तन किया जाए तो उपर्युक्त विचारों में संशोधन को पर्याप्त अवकाश मिल सकता है। भारत तो सदा से श्रद्धा और ज्ञान में विश्वास करता आया है। इन दोनों के अभाव में जीवन तिमिराच्छन्न हो जाता है। विज्ञान के द्वारा बढ़ी हुई स्वार्थपरायण वृत्ति की खाई को अहिंसा द्वारा ही पाटा जा सकता है। तात्पर्य है कि धर्म और विज्ञान से सम्बंध स्थापित करने में बाधायें आती हैं। कारण कि धर्म का संबंध अज्ञात आत्मा से है और विज्ञान का संबंध पौद्गलिक या दृश्य जगत से। यह वैषम्य

दो दिशाओं की ओर मनुष्य को उत्प्रेरित करता है। धर्म एकत्व का सूचक है तो विज्ञान द्वैध की ओर संकेत करता है। इतना होते हुए भी आधुनिक दृष्टि से जब अहिंसा के द्वारा विज्ञान पर नियंत्रण रखने के प्रयत्न हो रहे हैं तो धर्म के द्वारा भी इसे नियंत्रित किया जा सकता है। हां, विज्ञान से सामंजस्य स्थापित करने वाला धर्म केवल पारम्परिक या कालिक तथ्य न होकर विशाल दृष्टि-सम्पन्न तथ्य है। धर्म का सीधा तात्पर्य केवल इतना ही है कि मानव जाति का अभ्युदय हो, सर्वोदय हो, विज्ञान इसका साधन हो।

धर्म और विज्ञान का समुचित संबंध हो जाने पर मानव को वास्तविक सुख शांति की प्राप्ति होगी। धर्म या विशिष्ट दृष्टि रहित विज्ञान मानव समाज में वैषम्य उत्पन्न कर सकता है। विज्ञान बाह्य विषमताओं को मिटाने में सक्षम होगा तो धर्म आन्तरिक विकारो को दूर करने में सहायक होगा। विज्ञान नित नये साधनों का उत्पादक है तो धर्म उसका व्यवस्थापक। विपुल उत्पादन भी उचित वितरण के अभाव में एक समस्या बन जाता है। ऐसी अवस्था में जीवन का संतुलन दोनों के सामंजस्य पर ही अवलंबित है। श्री ए.एन. व्हाईट हैड कहते है- 'धर्म के अतिरिक्त मानव जीवन बहुत ही अल्प प्रसन्नताओं का केंद्र बिन्दु है।' अतः विज्ञान के साथ धर्म का सामंजस्य मानवता की रक्षा के लिए अनिवार्य है।

कतिपय विज्ञों का मंतव्य है कि धर्म और विज्ञान का सामंजस्य तो अमृत और विष के संयोग के समान है। धर्म, हृदय की वस्तु है, विज्ञान मस्तिष्क की। धर्म श्रद्धा और विश्वास पर पनपता है तो विज्ञान प्रत्यक्ष प्रयोग पर। विचारणीय प्रश्न यह है कि प्राकृतिक शक्ति सम्पन्न विज्ञान अज्ञात तथ्यों को प्रत्यक्ष करा देता है तो धर्म जैसी सजीव वस्तु का जड के साथ चाहे किसी भी रूप में संयोगात्मक या नियंत्रण-मूलक सम्पर्क हो जाने पर विज्ञान का महत्व बढ़ जाएगा और विकारवर्धक वैमनस्य मूलक भावनाएं भी समाप्त हो जाएंगी। पर शर्त यह है कि वह धर्म भी शब्दाडम्बर रहित मानव की आंतरिक भावभूमि से स्पर्श रखता हो, जीवन के सौन्दर्य में अभिवृद्धि कर अन्तर्मन को तृप्त करता हो।

आज राजनैतिक और धार्मिक संस्थाएं धर्म के मर्म से बहुत दूर या उदासीन हैं। धर्म की स्वैच्छिक मर्यादाएं बोझ-सी प्रतीत होती हैं। इसलिए कि मर्यादाओं के प्रति मानव का विशुद्ध दृष्टिकोण था, वह शुष्क विज्ञान की प्रगति के कारण दिनानुदिन विलुप्त हुआ जा रहा है। एक समय था धर्म को श्रद्धा के द्वारा ग्रहण किया जाता था पर आज धर्म को विज्ञान या बुद्धि द्वारा ग्राह्य तत्व समझा जा रहा है। जहाँ तक चिन्तन का प्रश्न है यह ठीक है कि संसार की प्रत्येक ग्राह्य वस्तु बौद्धिक कसौटी पर कसने के बाद ही आत्मस्थ की जाना चाहिए। पर वह चिन्तन और बौद्धिक चातुर्य व्यर्थ है जिससे चिन्तित तथ्य को जीवन में साकार नहीं किया जा सकता। आचार-मूलक श्रद्धान्वित ज्ञान ही वास्तविक चिन्तन का प्रतीक होता है। उत्कर्षमूलक तथ्य केवल मानसिक जगत की वस्तु नहीं है, वह लोक-कल्याण की वस्तु होती है। यदि मस्तिष्क द्वारा चिन्तित वैज्ञानिक तत्वों को अहिंसा-मूलक परम्परा द्वारा जीवन में प्रस्थापित किया जाए तो निःसंदेह इन दोनों के सामंजस्य से न केवल मानवता ही परितुष्ट होगी, अपितु भविष्य में और भी सुखद परिणाम आ सकते हैं। शक्ति बुरी चीज नहीं है, पर शक्ति का वास्तविक रहस्य उचित प्रयोग पर निर्भर होता है। रावण और हनुमान शक्ति सम्पन्न व्यक्ति थे। रावण के पास धर्मरहित वैज्ञानिक शक्ति थी तो हनुमान के पास धर्मसंयुक्त शक्ति। रावण की शक्ति स्वार्थ साधना में प्रयुक्त हुई तो हनुमान की शक्ति सेवा और साधना का ऐसा प्रतीक बनी कि आज भी उन्हें अविस्मरणीय कोटि में स्थान दिया गया है। धर्ममूलक वही शक्ति स्मरणीय होती है, जो सुदृढ, स्वस्थ, प्रेरणाप्रद और उर्जस्वल परंपरा का सूत्रपात कर सके।

❑ पं. बसन्तीलाल लसोड़

शुद्ध साध्वाचार

विश्व का प्रत्येक व्यक्ति प्रगति विकास एवं अभ्युदय करना चाहता है और उसके उठने वाले प्रत्येक कदम के पीछे यही भावना एवं कामना अन्तर्निहित रहती है ।.परंतु हम यह भी देखते हैं कि चाहते हुए एवं प्रयत्न करते हुए भी सबकी भावना साकार रूप नहीं ले पाती । युग-युगांतर से उठने वाले इस प्रश्न का आगम में बहुत सुन्दर समाधान किया है । जब तक व्यक्ति का लक्ष्य ही नहीं होता उस पर दृढ़ विश्वास नहीं जमता, तब तक वह विकास के यथार्थ पथ पर नहीं पहुंच सकता । इसलिए आगमकारों ने विचार एवं आचार के पूर्व विचार शुद्धि या सम्यक् दर्शन को महत्व दिया है, जिसे आगम की भाषा में दर्शन शुद्धि या सम्यक् दर्शन अथवा सम्यकत्व कहा है । विश्वास, दर्शन या श्रद्धा के शुद्ध होने पर ही विचार एवं आचार अथवा ज्ञान एवं चरित्र सम्यक् होता है और वह अपने लक्ष्य की ओर निर्बाध गति से बढ़ता हुआ अपने साध्य को सिद्ध कर लेता है, अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है । इसका तात्पर्य यह है कि जीवन को परिपूर्ण बनाने के लिए सर्वप्रथम श्रद्धा का शुद्ध होना, सम्यक होना आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य है । श्रद्धा की नींव पर ही सम्यक् विचार एवं आचार का भव्य भवन खड़ा किया जा सकता है ।

व्यक्ति के जीवन में श्रद्धा एवं विश्वास तो है ही । कोई व्यक्ति श्रद्धा शून्य नहीं होता । परंतु अनन्त काल से दर्शन मोह के संपर्क मे रहने के कारण श्रद्धा या दर्शन की पर्याय अशुद्ध हो सकती है । जब तक अशुद्ध पर्याय रहती है, तब तक व्यक्ति के जीवन में सत्य को समझने, परखने एवं उसको प्राप्त करने की भावना उद्‌बुद्ध नहीं हो पाती । यथार्थ दर्शन मोह का क्षय या क्षयोपशम होने पर ही व्यक्ति के मन में स्व को एवं स्व स्वरूप को समझने की भावना जागृत होती है । वह अपने स्वरूप को समझकर इसे प्रकट करने या अपनाने का प्रयत्न करता है । इसलिए निश्चय दृष्टि से कहा गया है कि स्व के द्वारा स्व के स्वरूप को समझकर उस पर श्रद्धा करना, विश्वास करना सम्यक् दर्शन है । स्व को जानना सम्यक् ज्ञान है, और स्व स्वरूप मे स्थित होना सम्यक् चरित्र है । जैन दर्शन के महान दार्शनिक उमास्वाति महाराज ने कहा भी है-

सम्यक् दर्शन,ज्ञान, चारित्राणि मोक्ष मार्गः ।

अर्थात् सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चारित्र को भली-भांति समझकर तदनुसार आचरण करना ही मोक्ष प्राप्ति का मार्ग है । अतः जो स्व के द्वारा स्व के स्वरूप को समझ गया जिसने अपने आप को जान लिया, परख लिया, मैं कौन हूं, कहां से आया हूं, अनन्त काल से मैं इस असार संसार में क्यों भ्रमण कर रहा हूं, ये संसार के नाते-रिश्ते सब झूठे हैं, मुझे तो सच्चिदानंद परमात्म स्वरूप को प्राप्त करना है,मेरी आत्मा के प्रत्येक प्रदेश में अनन्त शक्ति है, जो ज्ञान रूप, दर्शन रूप, अव्याबाध रूप,चारित्र रूप, सामर्थ्यरूप है परंतु कर्मों के आवरण से समस्त शक्तियां लुप्त हो रही हैं । अतः सबसे पहले मुझे कर्मों के आवरण को हटाना है । ऐसा जो व्यक्ति समझ जाएगा वह सबसे पहले ऐसी शिक्षा ग्रहण करना चाहेगा जो उसे मुक्ति का सही मार्ग बता सके ।

भारतीय संस्कृति की परम्परा में 'सा विद्या या विमुक्तये' (वही वास्तविक विद्या है जो मुक्ति का कारण बने) का सूत्र सदा से प्रचलन में रहा है । क्योंकि अन्य लौकिक विद्याएं केवल इहलौकिक स्वार्थ सिद्ध करने वाली या

ंहकारोत्पादक होती है, उससे मुक्ति का मार्ग दर्शन नहीं ल सकता। जो विद्या मनुष्य को काम, क्रोध, लोभ, ोह आदि बंधनों से मुक्ति दिलाने वाली, कर्मों के निविड़ धनों को काटना सिखाने वाली और मनुष्य जीवन को फल बनाने की तालीम देने वाली न हो तो वह विद्या व भ्रमण का अन्त नहीं कर सकती। वह तो मस्तिष्क के लिए बोझ रूप और अनर्थ परंपराओं को बढ़ाने वाली ो साबित होती है। अत: जो विद्या स्व पर कल्याण ाधिका, अठारह पाप स्थानों से मुक्ति दिलाने वाली, ामादि पांच मार्ग बताने वाली हो, ऐसी शिक्षा ग्रहण रने के लिए ऐसे गुरु के द्वार जाना चाहिए, जिन्होंने वयं कर्मों की लीला को समझा हो और मुक्ति के मार्ग की ओर बढ़ रहे हों, वे ही संयम मार्ग या दीक्षा के लाभ मझा सकेंगे। आगमों का अध्ययन करा सकेंगे। ऐसे मुमुक्षु को गुरु चरणों में समर्पित हो जाना चाहिए। गुरु ही उसे आगमों का बोध कराते हैं और आर्हती दीक्षा के लाभ समझाते हैं, ताकि वह अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो सके।

<u>आर्हती दीक्षा :</u> दीक्षा एक आध्यात्मिक प्रयोगशाला है, जिसमें स्वाध्याय और ध्यान से, आत्मा में रही हुई शक्तियों को प्रकट किया जाता है। दीक्षा रूपी जाज्वल्यमान अग्नि में तप कर ही राग, द्वेष नष्ट होते हैं। दीक्षा अंतर्मुखी साधना है। दीक्षा वही ग्रहण कर सकता है जिसके अन्तर्मानस में वैराग्य का पयोधि उछालें मार रहा हो। इससे साधक असद् से सद् की ओर, तमस से आलोक की ओर और मृत्यु से अमरत्व की ओर बढ़ता है। अशुभ का बहिष्कार करके शुभ संस्कारों से जीवन-यापन करता है और शुद्धत्व की ओर सुदृढ़ कदम बढ़ाता है। दीक्षा आत्मा से परमात्मा बनाने का श्रेष्ठ साधन है। दीक्षा अनुस्रोत का मार्ग नहीं है, अपितु प्रतिरोध का मार्ग है, जो बहुत ही कठिन है। यह बालू के ग्रास की तरह नीरस है। दीक्षा कुकुक्षु व्यक्ति नहीं अपितु मुमुक्षु व्यक्ति ग्रहण करता है। दीक्षा से ही जीवन जीने की पद्धति में परिवर्तन होता है। चित्त की जो धारा भोग की ओर प्रवाहित होती है, वह दीक्षा से योग की ओर, त्याग की ओर प्रवाहित होने लगती है। दीक्षा धर्माचरण और व्रतारोहण की साधना है। दीक्षा जीवन और कर्त्तव्य से पलायन का नहीं अपितु प्रगति का मार्ग है। दीक्षा से साधक जीवन की चुनौतियों से भागता नहीं वरन् साहस पूर्वक जूझता है। परमाणु की खोज करना सरल है परंतु आत्मा की खोज करना कठिन ही नहीं कठिनतर है। उस खोज के लिए जो अन्तः यात्रा है, वही दीक्षा है। दीक्षा से मन की आधि, व्याधि और उपाधि मिट जाती है और समाधि प्राप्त होती है। दीक्षा का अर्थ केवल वेश परिवर्तन या सिर मुंडन कराना ही नहीं है। दीक्षा का अर्थ है जीवन का परिवर्तन करना। विकारों की जटा का मुंडन करना, ममता का त्याग और कषायों को क्षीण करना है।

आधुनिक भौतिक भक्ति के युग में जो व्यक्ति साधना के कंटकाकीर्ण महामार्ग पर मुस्तैदी से अपने कदम बढ़ाता है, वह अवश्य ही साधुवाद का पात्र है। दीक्षा मार्गदर्शन का मार्ग नहीं इन्द्रिय दमन का मार्ग है। आत्म निर्णय का सर्वतोभद्र मार्ग है। यह ध्यान रहे कि दीक्षा आत्म-कल्याण के साथ-साथ लोक कल्याण का भी मार्ग है। दीक्षा से मुमुक्षु साधु हो जाता है और साधु का लक्षण है-

स्व पर हितं समुचित रूपेण साधयति स साधुः।

अर्थात् जो स्वहित (आत्म कल्याण) और परहित (दूसरों का हित) भली-भांति साधता है, वह साधु है। साधु के लिए स्वहित आत्म कल्याण की साधना करना प्रथम कर्त्तव्य है। दीक्षा ३६ गुणों के धारक आचार्य भगवन्त जो गण के नायक हैं, उनसे या निर्ग्रन्थ गुरु से लेना ही श्रेयस्कर है। निर्ग्रन्थ इसलिए कहा है कि जो मूर्च्छा की गांठ से परिग्रह के, राग-द्वेष के ध्यान से मुक्त हो। दशवैकालिक सूत्र में कहा है-

जं पि वत्थं व पायं वा कंबलं पायपुंछणं।
तं पि संजमलज्जट्ठा धारेंति परिहरेंति य॥

न सो परिग्गहो वुत्तो, नायपुत्तेण ताइणा ।
'मुच्छा परिग्गहो वुत्तो' इह वुत्तं महेसिणा ॥
-दशवैकालिक अ.६, गाथा २८२, २८३

अर्थात् साधु लोग जो वस्त्र,पात्र, कंबल, और पादप्रोंछक आदि रखते हैं उन्हें भी वे संयम निर्वाह एवं लज्जा निवारण के हेतु ही रखते हैं,पहनते हैं । ज्ञान पुंज एवं सर्व जगत के प्राणियों के रक्षक महावीर प्रभु ने इसे परिग्रह नहीं कहा है । मूर्च्छा को परिग्रह कहा है । जिसे सभी महर्षियों ने परिग्रह माना है । अतः साधु इन सब को काम में लेते हुए भी परिग्रह की गांठ से मुक्त हैं ।

<u>साधु धर्म (साध्वाचार) :</u>

मुमुक्षु जीव साधु धर्म की दीक्षा के लाभ समझ जाता है तो वह सच्ची धर्म साधना करने को आतुर हो जाता है । सच्ची धर्म साधना करने का मूल कारण है संसार के जन्म-मरण, इष्ट वियोग, अनिष्ट संयोग, रोग, शोक, आधि, व्याधि, उपाधि और कर्मों की अद्‌भुत दासता से व्यक्ति का ऊब जाना है । उससे छुटकारा पाने को मोक्ष प्राप्ति की इच्छा होती है । इस प्रकार ऊब जाना ही वैराग्य है ।

वैराग्य होने पर भी अभी मोह की परवशता तथा शक्ति की न्यूनता के कारण गृहस्थ में रहते हुए भी धर्म साधना की जाती हैं परंतु दैनिक जीवन में होने पर भी षटकाय जीवों का संहार तथा १८ पापस्थान-प्राणातिपात मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग,द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, रति, अरति, परपरिवाद, माया मृषावाद, मिथ्यात्व शल्य का सेवन उसे अत्यंत खटकता है, अतः वह वीर्योल्लास व वैराग्य वृद्धि के प्रयत्न में रहता है । वह बढ़ते हुए गृहवास,कुटुम्ब परिवार, धन सम्पति और आरम्भ समारम्भ के जीवन से अत्यंत ऊब कर उसका त्याग कर देता है और आचार्य भगवन्त या योग्य गुरु के चरणों में अपना जीवन अर्पित कर देता है। वह अहिंसा, संयम, और तप का कठोर जीवन व्यतीत करने के लिए तत्पर है ।

गुरु भी उसे सावधान और दृढ़ देखकर उसके माता-पिता या अभिभावक की आज्ञा लेकर अरिहन्त परमात्मा की साक्षी से मुनि जीवन की दीक्षा देकर जीवन भर के लिए सावद्य व्यापार (पाप प्रवृत्ति)के त्याग का सामायिक की प्रतिज्ञा कराते हैं । षट्काय के जीवों की रक्षा के लिए भी प्रतिज्ञा कराते हैं । उसे पूर्व जीवन की किसी प्रकार की स्मृति न हो इस उद्देश्य से बहुत स्थानों पर तो नया नाम रख दिया जाता है ताकि उसे ध्यान रहे कि वह अब गृहस्थ से मुनि बन गया है और अनेक स्थानों पर वही नाम रख दिया जाता है पर उसके आगे मुनि लगा दिया जाता है । यह उसकी छोटी दीक्षा है। इसके पश्चात् उसे साध्वाचार और पृथ्वीकायादि षट् जीव निकाय की रक्षा की दीक्षा दी जाती है । अध्ययन भी कराया जाता है और उसे योग्य समझकर हिंसादि पाप, मन, वचन, काया से करूं नहीं कराऊं नहीं, अनुमोदन नहीं करूं ऐसी त्रिविध प्रतिज्ञा दिलाई जाती है । अहिंसादि महाव्रतों का उच्चारण कराके पालन की शिक्षा दी जाती है, यह उसकी बडी दीक्षा है ।

साधु की दिनचर्या रात्रि के अंतिम प्रहर से शुरू होती है । वह निद्रा का त्याग कर, पंच परमेष्ठी स्मरण, आत्म-निरीक्षण तथा गुरु के चरणों में नमन करता है। यदि कुस्वप्न आता है तो उसकी आलोचना करता है। फिर ध्यान, स्वाध्याय करता है । अंत में प्रतिक्रमण कर वह वस्त्र रजोहरण आदि की प्रतिलेखना करता है । तब तक सूर्योदय हो जाता है, इसके बाद सूत्रोध्ययन आदि करके छ. घड़ी दिन-चढ़ने पर पात्र प्रतिलेखन करता है। तदनन्तर आचार्य भगवन्त या गुरु जो भी बड़े हों उनको नमस्कार करता है । भिक्षा के समय गांव में गोचरी के लिए गुरु की आज्ञा से आता है । गोचरी का अर्थ है गाय जैसे जगह छोड़कर चरती है, ताकि और गायों के लिए बाद में काम आवे । इसी तरह मुनि एक ही जगह से आवश्यक सामग्री न लेकर अनेक घरों से लें ताकि देने वाले गृहस्थ के कमी न आवे । किसी को बाद में पीड़ा न हो । भिक्षा में ४२ दोषों का ध्यान रखते हुए लेवें ।

भिक्षा लाकर गुरु को दिखाते हुए लाई हुई गोचरी की सब विगत बताता है। फिर पचक्खाण पार कर आचार्य, अन्य गुरुवृन्द, तपस्वी, ग्लान, बाल, साधु अतिथि (आए हुए साधु) सभी की भक्ति कर और राग द्वेषादि पांच दोष टालकर आहार करता है। प्रात सायं आवश्यकतानुसार शौच के लिए गांव से बाहर स्थंडिल (निर्जीव एकान्त भूमि) में निवृत्त होकर आता है। तीसरे प्रहर के अन्त में वस्त्र पात्रादि की पेडिलेहणा करता है। चौथे प्रहर स्वाध्याय कर गुरु को वन्दन करता है। फिर गोचरी से लाया भोजन करता है। नदनंतर गुरु की उपासना करके रात्रि के प्रथम प्रहर में स्वाध्याय प्रतिक्रमण आदि कर संथारा पोरसी पढकर सो जाता है।

साधु जीवन में सब कुछ गुरु से पूछकर करना पडता है। रूग्णमुनि की सेवा का विशेष ध्यान रखना पड़ता है। इसके अलावा आचार्य, बडे गुरु की सेवा सुशुषा और विनय भक्ति करना, हर एक स्खलना को गुरु के समक्ष बोल, भाव से प्रकट कर प्रायश्चित लेना, यथाशक्ति विगय का त्याग, पर्व तिथि को विशेष तप, वर्ष में दो या तीन बार हाथ से केशों का लोच, वर्षावास के अतिरिक्त शेष काल में ग्रामानुग्राम पाद विहार करना। सूत्रों व उनके अर्थों का भली-भांति पारायण. करना भी आवश्यक है। परिग्रह से और स्त्रियों से सर्वथा अलग रहना, किसी प्रकार का परिचय, बातचीत, निकट वास आदि न करना भी साधु का आचार है। कहा भी है-

पास बैठी कला घटावे, प्रत्यक्ष दीखे भूंडी।
कहे सद्गुरु सुन चेलका यह कोई भली न भूंडी।

अर्थात् अकेली स्त्री यदि अकेले साधु के पास बैठती है तो उसके ब्रह्मचर्य की कलाओं को घटा देती है और आचार्य की १६ कलाओं में भी कमी आती है। लोक व्यवहार में अकेली औरत अकेले साधु के पास बैठी खराब लगती है और वह बदनामी का कारण बनती है। सद्गुरु अपने शिष्य से कहते हैं, स्त्री चाहे साध्वी हो या गृहस्थी हो अकेले साधु के पास बैठी अच्छी नहीं लगती। साधु जीवन में दस प्रकार की समाचारी, अष्ट प्रवचन माता (पांच समिति तीन गुप्ति) संवर, निर्जरा तथा पंचाचार का पालन करना पड़ता है। वन्दन विधि- अपने से बड़े सभी साधु वृन्द को सादर सविधि नमन करना। साध्वी वृन्द को नमन वन्दन नहीं करना क्योंकि जैन आगमों में पुरुष को श्रेष्ठ माना है। साध्वी वृन्द भी अपने से बड़ी को वन्दन करें।

साधु को अपना काम स्वयं करना होता है। यदि कारणवश दूसरों से कराना पड़े तो उनकी इच्छा पूछकर कराना। किसी प्रकार की भूल हो जावे तो तत्काल मिच्छामि दुक्कडं कहना, गुरु कुछ भी कहे तो उसको तत्काल स्वीकार करना। कोई कार्य करने से पूर्व गुरु से पूछना। आहार लेने से पूर्व मुनियों से इच्छा पूछना कि क्या क्या इसमें से लाभ देंगे। भिक्षा लेने जाने से पूर्व मुनियों से पूछकर जाना कि मैं आपके लिए क्या लाऊं? तप, विनय, श्रुत आदि की शिक्षा के लिए उनके योग्य आचार्य का, गुरु का सानिध्य स्वीकार करना। गुरु ने जिन-जिन आचारों के पालन करने की आज्ञा दी हो, मर्यादा का बंधन रखना हो, वह तद्नुसार करना। गुरु की पूर्ण आज्ञा में रहना, मर्यादा के बारे में एक घटना मुझे याद आ गई।

यह मेरा महान सौभाग्य रहा कि स्वर्गीय पूज्य समता विभूति, शासन दीप, समीक्षण ध्यान योगी आचार्य भगवन्त श्री नानालाल जी महाराज साहब का वरदहस्त सदा मेरे मस्तक पर रहा है। अधिकांश वर्षावासों में मैं उनके दर्शनार्थ जाता रहा हूं। रतलाम में एक बार बहुत बडा दीक्षा समारोह पच्चीस मुमुक्षुओं की दीक्षा का था। वहां हजारों की जनमेदिनी उपस्थित थी, नर-नारी गुरुदेव के दर्शन, वंदन व वाणी श्रवण के लिए उमड़ रहे थे। स्थिति ऐसी थी कि आचार्य भगवन्त के मुखारविन्द से एक शब्द भी उनको सुनाई पड़ जावे तो वे अपने आपको धन्य मान रहे थे। इस हेतु धक्का-मुक्की और शोर बढ रहा था। मैं गुरुदेव के चरणों में पहुंचा और विनंती की कि गुरुदेव सामने बैठे महानुभावों को छोडकर

पीछे बैठे हजारों लोगों को आपके प्रवचन के शब्द किसी को सुनाई नहीं दे रहे हैं और मेरे साथ आए ये महानुभाव और जनमानस आपसे प्रार्थना कर रहा है कि हम दूर दराज सैकड़ों किलोमीटर दूर से आपको वन्दन करने एवं आपका प्रवचन सुनने यहां आए है, अतः हमारी हाथ जोड़कर प्रार्थना है कि आप लाउडस्पीकर पर बोलने की कृपा करें। ताकि सबको सुनाई दे। तो गुरुदेव ने फरमाया लसोड़ जी.......

जो हमारा साध्वाचार है, साधु के लिए शास्त्रों में जो मर्यादाएं रखी गई हैं, उनको हम किसी भी हालत में तोड नहीं सकते। कोई विशाल बांध कभी टूट जाता है तो वह कितना भयंकर नुकसान कर जाता है, बाढ़ आ जाती है। बीच में पड़ने वाली फसलों को चौपट कर जाता है। सैकड़ों पशुओं को बहा ले जाता है। जनहानि भी हो जाती है। इसी प्रकार यदि हम अपना आचार तोड़ दें, मर्यादा ताक पर रख दें जनता की इच्छा पर नियम पलटते रहे तो वह अनाचार, अमर्यादाएं हमे कहां ले जाएंगी। फिर कितने आचार, मर्यादाएं तोड़ें और हमें कितना पाप लगेगा इसकी कल्पना कितनी भयावह है। वे कितने कर्मबन्धन का कारण होंगी, यह आप स्वयं सोचें। उन्होने सिंहनाद करते हुए कहा हम अपना आत्म-कल्याण करने निकले हैं, पर-कल्याण भी करते हैं पर साध्वाचार का पालन प्राण रहते करेंगे। यह कभी न हुआ है, न भविष्य में होगा कि हम दूसरों के कहने से अपने आचार तोड़ दें। जिन आचारों की, नियमों की, मर्यादाओं के पालन करने की हमने प्रतिज्ञा ली है उनका सदा सर्वदा पालन करेंगे, यह हमारी प्रतिज्ञा है। पूज्य श्री जी महाराज साहब जीवन पर्यन्त शुद्ध साध्वाचार पालन करते हुए सदा मर्यादा की रक्षा करते रहे। धन्य हैं ऐसे शलाका पुरुष आचार्य देव।

-२० मंडी प्रांगण, नीमच - ४५८४४१

पुरुषार्थी वीर

वीर पुरुष पुरुषार्थ की प्रक्रिया में विश्वास रखते हैं। वे कभी हताश होकर भाग्य के भरोसे नहीं बैठते हैं। ऐसे पुरुषार्थी वीर ही अपने वर्तमान जीवन की सहज सुरक्षा करने में सफल होते हैं तो अपने शुभ पुरुषार्थ से सबके जीवन की सुरक्षा करते हैं। इस वीरता पूर्ण पुरुषार्थ से जो चलते हैं, वे सबसे पहले तो इहलोक को सुन्दर बनाते हैं और उसके माध्यम से परलोक को भी उज्ज्वल बना लेते हैं।

एक बटन दबाने से एक बल्ब भी जलता है तो पूरा बिजली घर भी चलता है और ज्यों-ज्यों जीवन की सुन्दर उज्ज्वलता बढती जाती है, त्यों-त्यों बटन की शक्ति का भी विकास होता रहता है। यह विकास इहलोक में करलें तो वर्तमान जीवन पहले सुधर जायगा और परलोक भी सुरक्षित बन जाएगा।

-आचार्य नानेश

□ प्रो. चांदमल कर्णावट

धर्म साधना : लोक परलोक

यह सच है कि मृत्यु के बाद इस लोक की संपूर्ण सामग्री धन, वैभव, परिवारादि यहीं रह जाती हैं । वह व्यक्ति के साथ नहीं जाती । व्यक्ति के साथ जाती है, धर्म साधना । यह धर्म साधना ही परलोक में उनका साथ देती है, उनको सुख साधन प्रदान करती है ।

तब प्रश्न खड़ा होता है कि क्या इस लोक में धर्म साधना का फल नहीं मिलता ? क्या परलोक में ही उसका फल मिलता है ? क्या धर्म साधना केवल परलोक के लिए ही है ?

धर्म साधना का फल : वास्तविकता यह है कि धर्म साधना का फल लोक परलोक दोनों में मिलता है । शास्त्रों में जगह-जगह उल्लेख मिलता है कि धर्मकरणी का फल इस लोक और परलोक दोनों जगह मिलता है । सम्यक्दृष्टि आत्मा जहां भी हो वह धर्मसाधना में रत रहकर सुखानुभव करती है । कर्म सिद्धांत के अनुसार कर्मों का उदय इस लोक में हो तो उनका फल यहां मिलता है और भविष्य में परलोक में उदय आने पर फल परलोक में मिलता है । जैसे चोर चोरी करते हुए पकड़ा जाए तो उसे वहीं और तत्काल भी सजा हो जाती है । इसी प्रकार प्राणिरक्षा आदि का श्रम कार्य करने पर तत्काल व्यक्ति को सिर पर उठा लिया जाता है । वह लोक में मान-सम्मान का पात्र बन जाता है । उत्तराध्ययन १४ में आत्मा ही सुख-दुख का कर्ता और भोक्ता है । इस आत्मा का दमन ही कठिन है । आत्मा का दमन करने वाला इस लोक और परलोक में सुखी होता है ।

इस लोक में धर्म साधना का फल : धर्म साधना का फल इस लोक में इस जन्म में प्रत्यक्ष मिलता है । संतोष या निर्लेपता धर्म की साधना का परलोक में तो फल मिलेगा ही परंतु इस लोक में पहले सुख शांति का अनुभव होगा इसलिए कहा गया है-

गोधन, गजधन, बाजिधन, और रतन धन खान,
जब आवे संतोष धन सब धन धुलि समान ।

अर्थात् संतोष सबसे बड़ा धन है, सबसे बड़ा सुख है । ज्ञान साधना से आत्मा में विवेक जागृत होगा । विवेकपूर्वक कार्य करने से आत्मा को शांति प्राप्त होगी । आत्मा पापों से बचेगा और धर्म साधना में अग्रसर होगी । ज्ञान से हेय (त्यागने योग्य), ज्ञेय (जानने योग्य) और उपादेय (ग्रहण योग्य) का बोध होने से, आत्मा ज्ञेय से जानकर, त्यागने योग्य का त्याग करेगा और ग्रहण करने योग्य को ग्रहण करेगा । विवेकपूर्ण व्यवहार करने से घर,परिवार और समाज में सर्वत्र शांति का प्रसार होगा । धन संपति एवं सुख साधनों की प्राप्ति तो धर्मसाधना जन्य पुण्य से स्वत प्राप्त हो जाएगी । शास्त्र कहता है- (दशवैकालिक १/१) धर्म उत्कृष्ट मंगल है । जिसका मन धर्म मे लगा रहता है, देव भी उन्हें नमन करते हैं ।

जीवन की विभिन्न समस्याओं का समाधान : सामायिक जैसी क्रिया की सम्यक् साधना एवं उसके अभ्यास से आत्मा में समता गुण का विकास होता है । समतागुण का विकास करके व्यक्ति अनुकूल, प्रतिकूल सभी परिस्थितियों में संतुलित रहने में समर्थ बनता है । वह सभी समस्याओं का धैर्यपूर्वक समाधान प्राप्त कर लेता है । इसके विपरीत

असंतुलित बना व्यक्ति हिंसा, असत्य, क्रोध, लोभ आदि का शिकार बनकर समस्याओं को अधिक जटिल बना डालता है।

वह समभाव रूप सामायिक की साधना से पूर्वकृत अशुभ कर्मों का क्षय करता है। फलस्वरूप शुभ कर्मो का उदय होता है और उसकी समस्याएं स्वतः ही हल हो जाती हैं। समभाव का साधक जीवन में क्रमशः आगे बढते हुए एक दिन समस्त कर्मों के बंधन से छुटकारा पाकर मुक्ति का अधिकारी बन जाता है। वह शाश्वत सुखों को प्राप्त कर लेता है। धर्म साधना के इस मधुर परिणाम को हम प्रत्यक्ष देखते हैं, अनुभव करते हैं। अनेक साधकों के जीवन इसके आदर्श उदाहरण हैं, जिन्होंने ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप की साधना करके कर्मो का क्षय कर इसी इस लोक में अपने जीवन का परम लक्ष्य सिद्ध कर लिया।

<u>स्वस्थ, सुरक्षित एवं समृद्ध जीवन की प्राप्ति :</u> धर्म साधना पूरे जीवन व्यवहारों से जुडी हुई है। पांच समिति तीन गुप्ति में कैसे बोलना, कैसे चलना, क्या कैसे खाना-पीना, किस प्रकार वस्तुओं को रखना, उठाना और त्यागने योग्य पदार्थो का त्याग करना बताया गया है। तीन गुप्ति में मन, वाणी और शरीर को वश में रखने की बात है। पांच समिति में चलने, बोलने, खाने-पीने आदि क्रियाओं में विवेक रखकर जहां व्यक्ति अन्य प्राणियों के जीवन की सुरक्षा करता है, वहीं वह अपने जीवन को स्वस्थ, सुरक्षित एवं समृद्ध बनाता है। वाणी के लिए कहा गया-

ऐसी वाणी बोलिए मन का आपा खोय,
औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय।

व्यक्ति समिति पूर्वक किए गए सद्व्यवहारों से अपने चारों ओर सुदृढ़ रक्षा कवच बना लेता है। इससे उस पर दुख जनक घातक प्रहारों का भी कोई असर नहीं होता। इस समिति गुप्ति की आराधना से व्यक्ति का नित्यप्रति का जीवन सुखपूर्ण होता है और समाज का भी। इस लोक में वह धर्म साधना के मीठे फलों का प्रत्यक्ष अनुभव कर सकता है।

इन्द्रियों एवं मन पर संयम रखकर तथा तप आराधना करके स्वस्थ एवं सुखमय जीवन जी सक है। इस धर्म साधना का फल परलोक में तो मिलेगा परंतु पहले इस लोक में और इस जन्म में मिलेगा। इस अनुभव संयम और तप की साधना करते हम आज अनुभव करते हैं।

धर्म आत्मा का स्वभाव है। आत्मा जब भी ज जहां भी अपने स्वभाव में रहेगी, वहीं उसे उस प्रतिफल मिलेगा। इस लोक में एवं परलोक में।

<u>गुण स्थानों में आरोहण एवं आत्मिक विकास</u> गुणस्थान मिथ्यात्वादि १४ हैं। जैसे-जैसे क्रोध लोभ मोहजन्य कषायों में कमी करता जाता है, वैसे-वै उसकी आत्मा शुद्ध होकर विकास करने लगती है, प बनने लगती है। यहां तक कि एक दिन सद्गुणों की की साधना करते हुए आत्मा मोह, ममता या आसक्ति पूर्ण क्षय करके पूर्णज्ञान, केवल ज्ञान से जगमगा उठ है। वह सर्वज्ञ और सर्वदर्शी बन जाता है। इस जी में ही साधना करने का यह सुखद परिणाम है कि आत मोहजन्य दोषों का क्षय करके अनंत ज्ञान, अनंत बल जागृत कर लेता है। १४वें गुणस्थान में पहुंचकर आत समस्त कर्मों का क्षय करके मुक्त दशा को प्राप्त कर ले है जो हम सभी का अंतिम लक्ष्य है।

धर्म-साधना से शांति और आनंद की प्राप्ति क लिए हमें परलोक की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती, वह तो साधना से इसी लोक में भी प्राप्त हो सकती है।

<u>विशिष्ट उपलब्धियों की प्राप्ति :</u> धर्म साधना का फल विशिष्ट उपलब्धियों के रूप में आत्मा को इस लोक में प्राप्त होता है। सम्यक् दर्शन का शुद्ध पालन करते हुए आत्मा कर्मों की स्थिति का क्षय करके क्रोधादि का पूर्ण क्षय करके क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त कर लेता है। इसे पाने के बाद यदि पूर्व में दुर्गति का बंधन न हुआ हो तो उसी भव में मोक्ष प्राप्त कर सकता है। शाश्वत सुखों को पालता है। सम्यक् दर्शन से आत्मा परित्त संसारी बनकर असीम जन्म-मरण को सीमित कर लेती है। ज्ञानावरणीय

कर्म का क्षय करके आत्मा इसी लोक में परम ज्ञान, केवल ज्ञान, केवल दर्शन को उपार्जित कर लेती है। वह इस ज्ञान से, दर्शन से सब कुछ जानने और देखने की शक्ति प्राप्त करती है।

मुक्ति और मोक्ष की प्राप्ति भी साधक-आत्मा यहीं प्राप्त कर लेती है। संपूर्ण कर्मों का क्षय ही मोक्ष है। (कृत्स्न कर्म क्षयो मोक्ष.) अंतिम गुणस्थान में पहुंचकर आत्मा समस्त कर्मो का क्षय करने से मुक्त बन जाता है और एक समय में यहां से सिद्धालय में पहुंच जाता है।

आवश्यकता है हम धर्म साधना के स्वरूप को भली-भांति समझें और उसका सम्यक् आचरण करें। अनत सुख रूप मोक्ष प्राप्ति का कारण भी आत्म ज्ञानियों ने यही बताया है कि हम सम्यक् ज्ञानादि रत्नत्रयी को समझकर सम्यक् आचरण करें।

आशा है पाठक लघु निबंध में अभिव्यक्त तथ्यों पर विचार करेंगे कि धर्म.साधना परलोक में तो साथ देती ही है परन्तु इस लोक में भी वह साथ देती है। धर्म साधना से हम इस लोक में भी सुखी, शांत, सुरक्षित,स्वस्थ एवं निर्द्वन्द्व जीवन विताने में समर्थ हो सकते हैं।

-प्लाट ३५, अहिंसापुरी, फतहपुरा,
उदयपुर -३१३००४

शरीर और आत्मा

स्वामी रामतीर्थ जब अमेरिका गये थे, तब वहां के लोग उनके जीवन को देखकर आश्चर्य करते थे। वे अपने लिए उत्तम पुरुष का प्रयोग नहीं करते थे। उनसे पूछा जाता कि 'आपको भूख लगी है' तो उनका उत्तर होता-'राम को भूख लगी है।' आपको भूख लगती है या नहीं'? यह पूछे जाने पर वे कहते,-राम को भूख लगती है।' लोग उनसे पूछते कि ''राम का तात्पर्य क्या है, वे कहते, इस शरीर का नाम राम है। शरीर को भूख लगती है, मेरी आत्मा को नहीं लगती। मैं अपने शरीर से परे हूं। शरीर का दृष्टा होकर इसकी देख-रेख करता हूं।' इस प्रकार स्वामी रामतीर्थ शरीर और आत्मा के भेद को व्यवहार में उतार कर बताते थे।

-आचार्य नानेश

समता दर्शन और व्यवहार : एक मूल्यांकन

जैन संत प्रवर आचार्य श्री नानालाल जी महाराज जो आचार्य नानेश के नाम से विख्यात हैं, ने अनेक बहुमूल्य ग्रंथों की रचना की है। 'समता दर्शन और व्यवहार' उनके द्वारा रचित एक महत्वपूर्ण पुस्तक है। जीवन संघर्षों की अग्नि में तपकर कुन्दन बने आचार्य श्री नानेश जी की दीर्घ पदयात्राओं एवं वास्तविक जीवन से झरे अनुभवों की पृष्ठभूमि पर आधारित होने के कारण उनकी यह कृति वर्तमान समाज के लिए एक दीप स्तम्भ हैं। आज जबकि पाश्चात्य सभ्यता की चकाचौंध में भारत का सामान्य से लेकर उच्च वर्ग तक का नागरिक भटका हुआ प्रतीत हो रहा है, और जबकि वह आत्म-केन्द्रित होकर समाज से कटता जा रहा है, ऐसे समय में नानेश जी की यह कृति प्रत्येक नागरिक के लिए दिशा-दर्शन है। मानव जीवन का जो दर्शन है, जीवन के जो उच्च सिद्धांत हैं, उन सबकी एक मात्र कसौटी है मानव व्यवहार। यदि हमारे सामान्य जीवन में नहीं उतारे जा सकें तो उन सिद्धांतों की उपादेयता ही क्या ? प्रस्तुत कृति की रचना करते समय लेखक इस तथ्य के प्रति निश्चित रूप से जागरुक प्रतीत होते हैं। आज का मानव जीवन सभी प्रकार की विषमताओं के दुष्चक्र मे फंस गया है। लेखक ने इसके विशद विवेचन के साथ उन विषमताओं का समाधान भी खोजा है। समता के विचार को जीवन-व्यवहार में लाकर उसे किस प्रकार जीवन आचार का अंग बनाया जाए, यही लेखक की चिंतनधारा रही है।

वैसे इस तथ्य को जान लेना भी आवश्यक है कि आचार्य प्रवर नानेश द्वारा यह स्वतः लिखित कृति नहीं है, वरन् उनके प्रवचनों के आधार पर श्री शांतिचंद्र मेहता द्वारा सम्पादित कृति है। श्री मेहता जी की मान्यता है कि इस कृति में आचार्य प्रवर की मूल भाषा एवं भावों को यथासंभव अक्षुण्ण रखने का प्रयास किया गया है। इसी कारण कृति के मुखपृष्ठ पर लेखक के रूप में आचार्य श्री का ही नाम मुद्रित है।

समता भाव एक प्रकार से मानव मन का एक विकार ही है ठीक उसी प्रकार जिस तरह साहित्य के नौ रस मानव मन के स्थायी विकार हैं। इस समता मनोभाव के विभिन्न आयाम हैं, इस कारण समता से संबंधित संपूर्ण विचारों को कुल बारह शीर्षकों के अन्तर्गत विभाजित किया गया है किंतु विचारों का अंतर-संबंध यथावत् है।

ऐसा सोचा गया कि इस मूल्यवान कृति का भाव एवं भाषा की दृष्टि से सरलीकरण एवं संक्षेपीकरण करते हुए इसकी सामान्य समीक्षा भी की जांए जिससे यह कृति सर्वसाधारण के लिए सुलभ ग्राह्य हो सके। इसे मैं सुखद संयोग ही समझता हूं, कि इस गुरूत्तर उत्तरदायित्व को वहन करने का अवसर संदीप जैन मित्र के द्वारा मुझे प्रदान किया गया। अपने उत्तरदायित्व के निर्वाह में मैने कृति के मूल भावों को यथावत् रखने की चेष्टा तो की है किंतु वैज्ञानिक दृष्टिकोण से एक निष्पक्ष एवं वस्तुनिष्ठ प्रेक्षक होने का प्रयास भी किया है।

वर्तमान विषमता की विभीषिका :

इसे ही इस कृति का प्रथम अध्याय माना जाए। शीर्षक से ही स्पष्ट है कि सर्वत्र व्याप्त विषमता की चर्चा इस अध्याय में की गई है। यह बात ध्यान में रखने योग्य है कि प्रस्तुत कृति प्रवचनों के आधार पर लिखी गई है। इस कारण प्रवचन एवं पुस्तक लेखन की विभिन्नताओं का अंतर दृष्टिगोचर [illegible] स्वाभाविक है। इस अध्याय में जहां एक ओर समाज में व्याप्त भिन्न-भिन्न क्षेत्रों की विषमताओं की [illegible] गया है वहीं उनके कारण

एवं निदान की चर्चा भी की गई है।

समाज में व्याप्त इस विषमता का फैलाव परिवार से लेकर समूचे विश्व के अनेकानेक क्षेत्रों में है। समाज एवं परिवार ही इसका शिकार है। परिवार समाज की महत्वपूर्ण इकाई है, इससे सारा समाज विषमता का शिकार हो गया है। माना कि हमने बौद्धिक क्षेत्र में बहुत विकास किया है किंतु हम अपने परिवार को समन्वय, स्नेह तथा सद्भाव की वांछित शिक्षा नहीं दे सके इसके लिए समाज, राष्ट्र एवं समूचे विश्व में पक्षपात एवं विषमता की दीवारें खड़ी हो गई हैं। कोई भी क्षेत्र इससे अछूता नहीं है। सारा विश्व दो शक्ति गुटों में विभाजित हो गया है। तीसरे गुट के नाम से तटस्थ राष्ट्रों का जो समूह है उसके सदस्य भी वास्तव में प्रच्छन्न रूप से किसी न किसी गुट से संबंद्ध हैं। इन शक्ति गुटों ने संहारक परमाणु क्षमता का विकास कर पशुता की शक्ति को बढ़ावा दिया है। राजनीति के क्षेत्र में मानव ने बड़ी समस्या के बाद लोकतंत्र के रूप में समानता के कुछ सूत्र बटोरे किंतु विषमता के पुजारियों ने मत सरीखे पवित्र अधिकार को भी व्यवसाय बनाकर कलुषित कर दिया। आज समाज में आर्थिक विषमता का जो नंगा नाच हो रहा है, वह अवर्णनीय है।

आर्थिक क्षेत्रों की विषमता का तो कहना ही क्या है। सच पूछो तो इस देश में आर्थिक चिंतन हुआ ही नहीं है। इस स्थिति के कारण ये दोनों वर्ग भोगों में लिप्त हो रहे हैं। विषमता का हमला आध्यात्मिक क्षेत्र पर भी हुआ है। परिणाम यह हुआ है कि संपन्न वर्ग आत्म-विस्मृति के कारण तथा विपन्न वर्ग दमन एवं शोषण के कारण जड़ हुआ जा रहा है। इस प्रकार से दोनों वर्ग धार्मिकता एवं आध्यात्मिकता से दूर होकर रिश्वतखोरी, कालाबाजारी एवं अपराध में लिप्त हो रहे हैं। संपन्न लोगों का बढ़ता हुआ अर्थ अहंकार समाज में और अधिक विषमता पैदा कर रहा है। यह अंहकार छल को जन्म देता है। फिर जहां छल है, वहां सत्य रह नहीं सकता। विज्ञान एवं शक्ति स्रोतों पर चर्चा करते हुए आचार्यवर कहते हैं कि विज्ञान का उपयोग तो मानव विकास के लिए होना चाहिए था किंतु दुख इस बात का है कि यह विनाश का साधन बन गया है। विज्ञान के ही कारण आज अधिक से अधिक शक्ति कम से कम हाथों में एकत्र हो गई है। इससे समूचे विश्व का शक्ति संतुलन बिगड़ गया है। अंततः इसी कारण विश्व स्तर पर विषमता निर्मित हो रही है। इस भोगवाद के युग में आदमी धन, सत्ता और यश लिप्सा में डूब गया है। वह तृष्णा के चक्कर में पड गया है। तृष्णा एक ऐसी चीज है जिसका अंत कभी नहीं होता। इन सब बातों के कारण ही आज व्यक्ति अधिक आक्रामक होता जा रहा है।

आचार्य श्री केवल कोरे आदर्श एवं कोरी कल्पना की बात नहीं करते। उनके समस्त विचार जीवन की वास्तविकता से जुड़े हैं। जब वे परिग्रह और अपरिग्रह की बातें करते हैं तब वे कहते हैं इस तथ्य को स्वीकारना पड़ेगा कि धन का संसारी जीवन पर अमिट प्रभाव ही नहीं है बल्कि वह उसके लिए अनिवार्य है। किंतु उनका मानना है कि अधिक धन अनीति से ही अर्जित किया जा सकता है। तात्पर्य यह कि व्यक्ति को अत्यधिक धन कमाने की लालसा से बचना चाहिए।

आचार्य जी ने धन के संबंध में बड़ी विशद चर्चा की है। वे कहते हैं कि यदि साधु धन रखे तो वह दो कौड़ी का है और यदि गृहस्थ के पास धन न हो तो गृहस्थ दो कौड़ी का है। यदि गृहस्थ के द्वारा धन का उपयोग निर्ममतापूर्वक किया जाता है तो वह विकारवर्धक बन जाता है। आचार्य श्री जी की आकांक्षा है कि धन नहीं वरन् गुण होना चाहिए। इस संबंध में उनका अंतिम कथन यह है कि द्रव्य परिग्रह के अर्जन की पद्धति को आत्म नियंत्रित करना आवश्यक है। यदि ऐसा हो सका तो समता की सृष्टि हो सकती है।

जीवन की कसौटी और समता का मूल्यांकन :

यहां पर आचार्य श्री ने अपने दार्शनिक विचारों को प्रस्तुत किया है। आत्मा चेतन है, शरीर जड है। आवश्यकता इस बात की है कि जड़ के साथ रहते हुए भी चेतन अपने स्वामी स्वभाव को न भूले। इस चेतन एवं जड़ का मिलन ही जीवन है। सार्थक जीवन वह है जो अपने विवेक का उपयोग करते हुए स्वयं चले और

साथ ही दुर्बलों की गति में भी सहायक हो। इसके लिए सम्यक् निर्णायक बुद्धि की आवश्यकता है। जीवन के संबंध में गलत निर्णय से हमारा जीवन खतरे में पड़ सकता है। इस बात को लेखक ने कार एवं उसके चालक के उदाहरण से प्रस्तुत किया है। कार मानो शरीर है और चालक है आत्मा। एक-दूसरे के बिना दोनों निरर्थक हैं किंतु फिर भी कार प्रत्येक दशा में चालक के ही नियंत्रण में रहती है। नियंत्रण के जाते खतरे की घंटी बज जाती है। आत्मा को छोड़कर शरीर मात्र का ध्यान रखना ही भोगवृत्ति है और भोगवृत्ति ही अंततः भ्रष्टाचार, अनीति और अन्याय को जन्म देती है।

आचार्य श्री ने केवल धर्म से जुड़े कठिन सिद्धांतों का ही उल्लेख नहीं किया है वरन् उन्होंने जीवन के व्यवहार पक्ष को भली-भांति समझकर आर्थिक समानता की बात की है। वे ऐसा नहीं कहते कि अपने लिए कुछ मत रखो वरन् उनका यह कहना है कि अल्प त्याग आवश्यक है। वे किसी राजनीतिक दल से राग, द्वेष नहीं रखते। एक ओर तो वे मार्क्स के आर्थिक समभाग का समर्थन करते हैं और दूसरी ओर वे गांधी जी के ट्रस्टीशिप सिद्धांत को अपनाने की बात करते हैं। उनकी कसौटी है व्यापक जनकल्याण। उनका मानना है कि राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक समता के परिवेश में धन संपत्ति के आधार पर व्यक्तियों का श्रेणी विभाजन न होकर गुण-कर्म के आधार पर होना चाहिए। ऊंची प्रतिष्ठा उसी व्यक्ति को मिलनी चाहिए जिसने जीवन में ऊंचे मानवीय गुणों का संपादन किया है। उनके अनुसार समता सिद्धांत दर्शन का निचोड़ तो यही है कि सत्ता या सम्पत्ति की शक्ति से प्रभुता न मिले बल्कि मानवीय गुणों की उपलब्धि से समाज का नेतृत्व प्राप्त हो। मानवता प्रधान व्यवस्था में चेतना, मनुष्यता एवं कर्मनिष्ठा की प्रधानता होना चाहिए।

आचार्य श्री ने अपनी व्यापक विचारधारा के तहत भागवत के सिद्धांत इच्छा, क्रिया और ज्ञान की लयबद्धता का समर्थन किया है। वे किसी भी विचार के प्रति दुराग्रह के पक्षपाती नहीं है। यही महावीर का स्याद्वाद है।

<u>जीवन दर्शन की क्रियाशील प्रेरणा :</u>

आचार्य नानेश ज्ञान के धनी हैं, वे ज्ञान के वास्तविक दर्शन को भली-भांति आत्मसात कर चुके हैं। तभी तो वे कहते हैं कि क्रियाविहीन ज्ञान पंगु होता है और ज्ञानहीन क्रिया अंधी, निरर्थक। समाज में हमें ये दोनों स्थितियां मिलती हैं। किसी भी समाज में ज्ञानवान लोगों की कमी नहीं है, चाहे वह समाज धार्मिक व्यक्तियों का हो, मनोवैज्ञानिकों का हो, दर्शनशास्त्रियों का हो, चिकित्सकों का हो, शाला एवं महाविद्यालय के शिक्षकों का हो, राजनीतिज्ञ या अन्य वर्गों का या समाज के अन्य किसी घटक का हो। अनेक ज्ञानी अपने ज्ञान को धरे बैठे रहते हैं। अपने ज्ञान से ही वे आत्मतुष्ट रहते हैं। समाज उत्थान के लिए ये लोग अपने ज्ञान का कोई उपयोग नहीं करते। समाज को कभी कोई दिशा नहीं देते। ज्ञानियों के इस प्रकार के आचरण के दो परिणाम होते हैं। एक तो यह कि अपने ज्ञान के ही कारण वे अंहकारी हो जाते हैं। यह अहंकार उनके स्वतः के लिए घातक हो जाता है। संत गोस्वामी तुलसीदास ने भी अपने महान् ग्रंथ रामचरित मानस में कहा है कि- 'अंहकार अति दुखद डमरूआ' अर्थात् अंहकार शारीरिक गठिया रोग के समान कष्ट देने वाला एक मानसिक रोग है। इस रोग से बचने का यही एक मात्र उपाय है कि अपने ज्ञान का उपयोग जन-जन के कल्याण के लिए किया जाए। इसी बात को यदि हम आध्यात्मिक रूप से सोचें तो अंततः ज्ञान और क्रिया की संयुक्त शक्ति ही व्यक्ति को सांसारिक बंधनों से मुक्त कर सकती है। वही शक्ति समाज की विपमता के क्षुद्र पाश को न काट सके ऐसा हो ही नहीं सकता। ज्ञान का क्रियाशील होना ही जागरण है और जागरण ही जीवन है व सोते हुए मृत्यु है। आचार्य श्री का यही शास्वत संदेश है कि ज्योति से ज्योति जलाते चलो। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि समाज के समस्त जागे हुए याने विकासोन्मुख व्यक्ति समाज के सोये हुए या मूर्छित व्यक्तियों को अपने करुणामय प्रभाव से निरंतर जगाते रहें। सबके जागने का अर्थ ही है समता का आगमन। आचार्यवर नानेश जी की मान्यता है कि ज्ञान

का जागरण, उसका जीवन व्यवहार में उतरकर क्रियाशील होना और फिर उसका सतत् अभ्यास ही व्यक्ति को अपने लक्ष्य तक ले जा सकता है। उनकी चेतावनी है कि आशा निराशा के ढोल में झूलने वाले व्यक्ति को अपने मन की दुर्बलताओं पर भी विजय प्राप्त करना होती है। अतः समता के साधना पथ पर बढ़ने वाले व्यक्ति को हमेशा सतर्क रहने की आवश्यकता है। जीवन दर्शन की क्रियाशील प्रेरणा को जगाने एवं उसे बनाए रखने के लिए आचार्य श्री ने सात आचरण सूत्र सुझाये है, जो निम्नानुसार हैं-

१. कुव्यसनों का त्याग,
२. पंचव्रत अपनाना,
३. क्षेत्र गरिमा एवं पद मर्यादा का ज्ञान,
४. नियम संयम का पालन,
५. दायित्वों का निर्वाह,
६. सबके लिए एक व एक के लिए सब,
७. सारा विश्व एक कुटुम्ब।

(१) कुव्यसनों का त्याग : ये कुल सात हैं :

१. मांस भक्षण का त्याग :

समता का सिद्धांत मानव मात्र की समता तक ही सीमित नहीं है वरन् उसका विस्तार संसार के समस्त जीवधारियों तक है इसलिए व्यक्ति को जीव हत्या एवं मांस भक्षण का पूर्णतः परित्याग करना चाहिए।

२. मदिरापान का त्याग :

मदिरा से तात्पर्य मात्र शराब नहीं है। नानेश जी का मत है कि व्यक्ति को किसी भी प्रकार का नशा नहीं होना चाहिए। उसे गांजा, भांग, धतूरा, अफीम, एल.एस.डी. की गोलियां आदि सब प्रकार के नशे का त्याग करना चाहिए।

३. जुए से दूर रहना :

जुए से आचार्य जी का मतलब सट्टा, तस्करी, लाटरी आदि उन सब क्रियाओं के त्याग से है जिनके बिना परिश्रम के धन कमाने की संभावना है।

४. चोरी न करना :

इसका मतलब केवल चोरी न करना ही नहीं है वरन् इसका मतलब है हर प्रकार के आर्थिक शोषण से बचना। टैक्स आदि की चोरी भी इसमे शामिल है।

५. शिकार न करना :

अपने मनोविनोद के लिए अन्य जीवों को मारना निंदनीय है।

६. पर-स्त्री गमन का त्याग :

समाज में सैक्स की पवित्रता एवं स्वस्थता को बनाये रखने के लिए ही विवाह संस्था का निर्माण हुआ है। काम विकार से बचने के लिए स्वपत्नी संतोष एवं अन्य सभी नारियों को मां-बहिन मानना ही हमारा उद्देश्य होना चाहिए।

७. वेश्या गमन का त्याग :

वैसे तो यह बिंदु क्रमांक छः में समाहित है, किंतु आचार्य जी का जोर इस बात पर है कि व्यक्ति के संयम से ही इस कुप्रथा का उन्मूलन किया जा सकता है।

(२) पंचव्रत अपनाना :

महावीर स्वामी द्वारा प्रतिपादित पाच व्रतों यथा अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह से अब सभी परिचित हैं। वास्तव में ये पांचव्रत स्थूल रूप से श्रावकों एवं सूक्ष्म रूप से साधुओं के लिए पालनीय हैं। किंतु ये नियम ऐसे नहीं है जिनका उपयोग गृहस्थ न कर सके। संक्षेप में इन पांच महाव्रतों के संबंध में निम्न उल्लेख आवश्यक है-

अहिंसा

१. अंहिसा का सीधा सा अर्थ है मन, वचन व काया से किसी को कष्ट न देना। अहिंसा के दो पक्ष हैं- नकारात्मक एवं सकारात्मक। नकारात्मक पक्ष यह है कि हिंसा न की जाए और सकारात्मक पक्ष यह है कि सभी जीवधारियों के प्राणों की रक्षा की जाए और यदि किसी के प्राण संकट में हैं तो उसे संकट मुक्त करने के लिए यथाशक्ति प्रयास किए जाना चाहिए।

समतापूर्ण जीवन के निर्माण में अहिंसा का बहुत महत्व है। सबको सुखपूर्वक जीने देने में आखिर व्यक्ति को क्या कष्ट है। इस संबंध में यह बात ध्यान देने योग्य है कि वैर से वैर और हिंसा से हिंसा कभी नहीं मिटती। इस कारण अहिंसा को मानव का परम धर्म कहा गया है। अहिंसा में दया एवं करुणा का स्थान सर्वोपरि है। इन दोनों का समावेश होते ही व्यक्ति में क्षमा और प्रेम का उदय अपने आप हो जाता है। अहिंसा की अराधना में जो दृष्टि मिलती है वहीं समदृष्टि कहलाती है और उसमें शत्रु और मित्र का भाव तिरोहित हो जाता है। सीधी सी बात है कि यदि हम स्वयं सुख चाहते हैं तो हमें सबको सुख देना चाहिए। अहिंसा में ऐसी कोई बात नहीं है जिसे सामान्यजन अपने जीवन में न उतार सकें।

सत्य

२. सत्य की सामान्य परिभाषा तो यह है कि जो इंद्रियों के माध्यम से जाना जाय, वह सत्य है। जो आंखों से देखा जाता है, वह सत्य है। इसके अतिरिक्त महापुरुषों ने जो शोध किया है और जो शोध जन-कल्याण की भित्ति पर खड़ा है उसे भी हम सत्य की संज्ञा देते हैं। किंतु ऐसे सत्य को सदैव स्वयं के अनुभव की कसौटी पर कसकर पहले आत्मसात् कर अपना बना लेना चाहिए फिर उस पर आचरण करना चाहिए। सारे सद्गुणों के साथ यह विडम्बना है कि यदि एक सद्गुण हमारे पास आता है तो दूसरा सद्गुण हमसे दूर भागने लगता है। बहुधा सत्य बोलने वाला व्यक्ति कटु एवं कड़ुवा हो जाता है किंतु यदि सर्तकता बरती जाए तो इससे बचा जा सकता है। इसलिए कहा गया है कि "सत्यम् ब्रूयात्, प्रियम ब्रूयात, मा ब्रूयात सत्यम् अप्रियम्।" सत्य भी इस ढंग से बोला जाए कि वह प्रिय लगे और अप्रिय सत्य से बचा जाय। सत्य की साधना मनसा, वाचा, कर्मणा से करने से कठिनाइयां दूर हो जाती हैं। झूठ को पास न आने देना ही उत्तम है। झूठ बोलते-बोलते ऐसी धृष्टता पैदा हो जाती है कि फिर झूठ बोलना अखरता नहीं है। वैचारिक दृष्टि से यही मिथ्यावाद है और इससे व्यक्ति में समदृष्टि का आविर्भाव नहीं होता। ध्यान रहे कि एक बार सत्य के प्रति निष्ठा जागने के बाद उसके पूर्णरूप को पाना कठिन नहीं है।

अस्तेय

३. अस्तेय का अर्थ है चोरी के स्थूल या सूक्ष्म सभी रूपों को निरंतर छोड़ते जाना तथा अचौर्य वृत्ति को सुदृढ़ बनाते जाना। आचार्य श्री के चिन्तन का पैनापन हमें अनेक स्थानों पर देखने को मिलता है। मानव जीवन पर अर्थ के असर पड़ने का उनका सोच कितना सटीक है। उनका कहना है कि जब व्यक्ति का प्रकृति आधारित जीवनयापन छूट गया और वह स्वयं अर्जन करने लगा तभी से अर्थ का असर भी प्रारंभ हुआ। चोरी का अध्याय भी वहीं से शुरू होता है जबसे समर्थ, कमजोर की संपत्ति हरने लगा। आचार्य जी ने एकदम तथ्यात्मक बात कही है कि परिश्रम और नैतिकता के द्वारा उपार्जन करने पर अर्थ का संचय संभव नहीं है। इच्छाएं आकाश के समान अनंत होती है। और तृष्णा का रूप वैतरणी नदी के समान होता है। अर्थात् इच्छाओं की पूर्ति और तृष्णा का अंत संभव ही नहीं है। तृष्णा में यह उक्ति बिल्कुल सही है कि-

एक हुआ तो दस होते, दस होने पर सौ की इच्छा,
सौ होने पर सोच हुआ कि अब सहस्त्र हो तो अच्छा।
इसी तरह बढ़ते-बढ़ते राजा का पद भी पा जाता,
फिर भी संतोष नहीं होता, यह ऐसी डायन तृष्णा है॥

आज आर्थिक क्षेत्र में चोरी के रास्ते अधिक टेढ़े-मेढ़े किंतु इतने व्यापक हो गए हैं कि नम्बर दो की रकम का अर्थ हर व्यक्ति समझता है। आज हर व्यक्ति काले धंधे के द्वारा रातों-रात धनी हो जाना चाहता है। आज राजनीति का मेरूदंड धन हो गया है, इस कारण राजनीति भ्रष्ट हो गई है। राजनीतिज्ञ और व्यापारी मौसेरे भाई हो गए हैं। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि संपूर्ण जनतंत्र ही भ्रष्ट हो गया। विडम्बना यह है कि धनी के घर से गरीब के द्वारा धन ले जाना चोरी है किंतु धनी के द्वारा गरीब का शोषण चोरी नहीं माना जाता। नानेश जी का दृढ़ मत

है कि इस अर्थ प्रधान युग में अस्तेय याने चोरी न करने का व्रत अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गया है।

ब्रह्मचर्य

४. ब्रह्मचर्य का अर्थ समझते सब है किंतु आचार्य श्री ने जीवन की वास्तविक भूमि पर उतरकर ब्रम्हचर्य की बात की है। वे यह तो मानते हैं कि एक साधु एवं तपस्वी के लिए संपूर्ण ब्रम्हचर्य का पालन अनिवार्य है। इसका यह मतलब बिल्कुल नहीं है कि गृहस्थ जो चाहे सो करे। उनका कहना है कि इसका पालन एक सीमा में गृहस्थ के लिए भी जरूरी है इस रूप में कि उसे एक तो स्वपत्नी संतोष की मर्यादा का पालन करना चाहिए और दूसरे यह कि उसे यह याद रखना चाहिए कि कामवासना का अर्थ संतान उत्पत्ति तक ही सीमित है। जब आचार्य जी यह कहते हैं कि रोटी और सेक्स मानव जीवन की महत्वपूर्ण आवश्यकताएं है तब वे दार्शनिक एवं चिंतक सिगमण्ड फ्रायड के निकट होते हैं। वे यह मानते हैं कि सेक्स के नद का वेग इतना प्रबल होता है कि उनके किनारे स्थित विश्वामित्र मुनि सरीखे विशाल बग्गद ढ़ह जाते हैं। एक सांसारिक व्यक्ति को यह समझना चाहिए कि इसी उद्दाम कामवासना को नियमित करने के लिए ही विवाह तथा परिवार संस्था का निर्माण किया गया है। प्रत्येक व्यक्ति को इस संस्था का सम्मान करना चाहिए। आचार्य जी का मानना है कि शासन द्वारा जनसंख्या निरोध के अप्राकृतिक उपाय प्रचारित किए जा रहे हैं, उनसे संयम एवं ब्रह्मचर्य व्रत की अपार हानि हो रही है। शासन को समझना चाहिए कि संयम का प्रचार उसकी योजनाओं को सफलता दिलायेगा और व्यक्ति का भी कल्याण करेगा। इस प्रकार नानेश जी महात्मा गांधी के निकट आते प्रतीत होते हैं।

अपरिग्रह

५. अपरिग्रह का सीधा-साधा अर्थ है त्याग। किंतु मात्र धन एवं वस्तुओं के त्याग से काम नहीं चलेगा साथ में तृष्णा का त्याग भी जरुरी है। परिग्रह याने संग्रह केवल भौतिक साधनों का नहीं होता वरन् ममत्व भाव भी परिग्रह का प्रच्छन्न रूप है। यदि हमारा जीवन सादा रहेगा तो तृष्णा का दौर तीव्र नहीं होगा। तब एक ओर तो व्यक्ति परिग्रह मूर्छा के दुष्परिणाम से बच जाएगा और दूसरी ओर उसके मन में उच्च विचारों का उदय भी होगा। परिग्रहवाद का ही दूसरा नाम पूंजीवाद है। यह पूंजीवाद समाज में अपने पैर पसार रहा है। इससे आर्थिक विषमता फैल रही है। जो सामाजिक विषमता की खाई को चौड़ा कर रही है। संपन्न वर्ग समाज में अन्याय व अत्याचार पर उतर रहा है। इन सबसे बचने के लिए अपरिग्रह व्रत का पालन करना आवश्यक है।

(३) क्षेत्र गरिमा एवं पद मर्यादा का ज्ञान :

इस प्रकरण को पढ़ने से यह बात स्पष्ट होती है कि आचार्य जी ने राष्ट्र एवं समाज को बड़ी गहराई के साथ देखा है। आज के अर्थ प्रधान युग का दुष्परिणाम यह हुआ कि मानव अधिक दम्भी एवं पाखंडी हो गया है। पाखंडी व्यक्ति समाज में सफलता के शिखर पर चढ़ रहा है और मजा यह है कि व्यक्ति के पाखंड को जानते हुए भी उसे आदर इसलिए दिया जाता है कि वह व्यक्ति सफल होता जा रहा है। प्रकारान्तर से इसका परिणाम यह हो रहा है कि दंभ, छल, कपट और पाखंड आज की व्यावहारिकता के सूत्र बनते जा रहे हैं। तभी तो भ्रष्टाचारी खुलेआम भ्रष्टाचार को शिष्टाचार की संज्ञा दे रहे हैं। लोग यह कहते हैं कि घूस लेना पाप नहीं हैं किंतु घूस लेकर पकड़ा जाना पाप है। आज सांप मरे, न लाठी टूटे की कहावत चरितार्थ हो रही है। जहां पाखंड हो वहां मन, वाणी और कर्म की एकरूपता का प्रश्न ही नहीं है। इसलिए आचरण में विषमता का आगमन अनिवार्य है। धर्म और सम्प्रदायों के नाम पर चलने वाले पाखंड ने समाज को अधिक हानि पहुंचाई है। नानेशजी का मत है कि जो अपने जीवन क्षेत्र एवं पद की मर्यादा के अनुकूल काम करे, उसे ही सम्मान दिया जाना चाहिए।

(४) नियम एवं संयम का पालन :

आचार्यवर का मानना है कि वे मर्यादाएं जो समाज एवं व्यक्ति के पारस्परिक संबंधों के सुचारू रूप से निर्वहन के हित परंपराओं के रूप में ढल गई हैं। उनके

निर्वाह में भी अंधानुकरण नहीं होना चाहिए। उनके पालन के लिए भी परख बुद्धि की आवश्यकता है। जो भी सामाजिक नियम बनाये जाते हैं, उनमें आम स्वीकृति रहती है इसलिए विकास के दृष्टिकोण से इनमें संवर्धन एवं परिवर्तन होते रहते हैं। पर नियमों के संबंध में सम दृष्टि आवश्यक है। आज विधि क्षेत्र में यह बात बड़े गौरव से कही जाती है कि व्यक्ति का नहीं वरन् समाज में कानून का राज होता है। पर आवश्यक यह है कि नियम के पालन का आधार समानता हो। पर एक आध्यात्मिक चिन्तन यह है कि नियम भंग करने वाले के सामने कोई अपना प्राप्य छोड़ दे और संयम से काम ले तो दोषी व्यक्ति का दिल भी पलट सकता है। मर्यादा, नियम एवं संयम के अनुपालन में निष्कपट भाव अनिवार्य है। यह भाव ही व्यक्ति को समता-साधना का मार्ग दिखाता है।

(५) दायित्वों का निर्वहन :

परिवार से लेकर समाज और राष्ट्र तक प्रत्येक व्यक्ति को अपने दायित्वों का यथास्थान, यथा अवसर, यथाशक्ति और यथायोग्य रीति से निर्वाह करना पड़ता है। कहीं भी अपने कर्त्तव्य से च्युत होने से अर्थ का अनर्थ हो जाता है। इसलिए प्रत्येक समय जागरूक एवं सतर्क रहने की आवश्यकता है। जब हम समता स्थापित करने निकले ही हैं तो हमें प्रत्येक अवसर का लाभ उठाने के साथ कर्त्तव्यहीनता से भी बचना होगा। ईमानदारी से किये गए कर्त्तव्य ही समता व्यवहार की समरस धारा बहा सकते हैं।

(६) सबके लिए एक और एक के लिए सब :

सबके लिए एक और एक के लिए सब की बात कर आचार्य श्री 'जीओ और जीने दो' के स्वर्ण सिद्धांत का ही अनुमोदन करते हैं। अपने इस विचार के साथ वे आचार्य विनोबा भावे के विचारों के साथ भी एकाकार होते हैं। यदि उपरोक्त सिद्धांत का पालन समाज में होने लगे तो विषमता के विष की अंतिम बूंद भी सूख सकती है। इसी भावना से सहयोग, सहकार और संगठन का वह भाव जागृत होता है जिससे व्यक्ति समाज में समाहित हो जाता है।

(७) सारा विश्व एक कुटुम्ब :

यही समता दर्शन का चरम बिंदु है। कुटुम्ब शब्द का संबंध परिवार का रक्त संबंध है। यदि इसका विस्तार समूचे विश्व एवं प्राणी समाज कर दिया जाए तो सारा विश्व ही एक परिवार हो जाएगा और भारतीय संस्कृति की 'वसुधैव कुटुम्बकम्' कल्पना, साकार हो जाएगी। इस कल्पना के आवश्यकता इस बात की है कि संपूर्ण आस्था के इसे आचरण में उतारा जाए।

आत्म-दर्शन के आनंद पथ पर

अनेकानेक अन्य चिंतकों की तरह आचार्य जी का भी यही मत है कि जीवन का उद्देश्य आनंद की प्राप्ति है। वे ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र की को ही आत्म-दर्शन की संज्ञा देते हैं। यह आत्म- ही आनंद पूर्ण जीवन का पथ है।

सामान्यतः अनेक दर्शनों में मैं को अहं का पर्याय माना गया है। किंतु नानेश जी इस चिंत बिल्कुल अलग हैं। उनके अनुसार मैं ही ईश्वर है अभिमान का स्वर नहीं वरन् यह तो गहन अनुभूति वह क्षण है जब व्यक्ति का मैं विगलित होकर सब घुलमिल जाता है। वैसे आचार्य जी की यह धारणा नहीं है। यह तो सबके लिए स्वयं को विगलित करने क्रिया ही है। नानेश जी के अनुसार चेतना ही आत्मा का दूसरा नाम है। वास्तव में इस प्रकार के स्पष्टीकरण आवश्यकता है क्योंकि अनेक के समक्ष यह प्रश्न है कि आखिर आत्मा है क्या ? क्या वह हृदय के शरीर का कोई अंग है ? नानेशजी के अनुसार मृत के विपरीत जीव या किसी अन्य पर्यायवाची शब्द चैतन्य आत्मा है। यह चेतना ही किसी अन्य शरीर में है और सक्रिय होती है। यदि ऐसा न हो तो विकास के सारे द्वार बंद हो जाएंगे। इसलिए इस बात की है कि अपने शुभ कर्मों के द्वारा इस को सदा पैनापन देते रहना चाहिए इसलिए अपने मैं को परिष्कृत करते रहना चाहिए। क्योंकि यह मैं ही

क्रियमाण होता है और इस शरीर को चलाता है। यह मैं ही आत्मा है जो एंजिन का रूप धारण कर शरीर को चलाता है। इस मैं का मूल तत्व तो ज्ञानमय है किन्तु जब इस पर दुष्कर्मो का मैल चढ जाता है तब चेतना शक्ति दब जाती है याने मैं की वास्तविकता विस्मृत हो जाती है। परन्तु अपने मूल स्वभाव के अनुसार यह मैं हमेशा बुराई के विरूद्ध चेतावनी देते रहता है। बुराई को अपनाने से जो बिगड़ता है वह आचरण है, मैं या आत्मा तो तब भी शुद्ध बना रहता है। निश्चित रूप से चिंतन का यह दृष्टिकोण स्वागतेय है। आचार्य जी का मत है कि अपने इस मैं का विस्तार करना हमारे जीवन का लक्ष्य होना चाहिए और जब हम 'आत्मवत् सर्व भूतेषु' की स्थिति में पहुंचते हैं तब हम जीवन के शिखर पर पहुंच जाते हैं। तब समस्त जीवधारी हमें अपने ही में या अपनी ही आत्मा के तुल्य प्रतीत होने लगते हैं, यही समता की सर्वोच्च स्थिति है। आचार्य जी का मानना है कि समता के साधक को इस स्थिति में पहुंचने के लिए पांच भावात्मक अभ्यास करना चाहिए। ये भावात्मक अभ्यास निम्नानुसार हैं-

(१) सूर्योदय के पूर्व आत्म-चिन्तन एवं सायं आत्मालोचन

इसका मतलब केवल यही है कि प्रत्येक सुबह हम क्षणभर के लिए यह विचार करें कि आज हमारी दिनचर्या कैसी होगी ? महावीर स्वामी के अनुसार हमारे चिन्तन का बिंदु यह हो कि एक क्षण के लिए भी हम प्रमाद के शिकार न हों। उन्होने अपने पट्ट शिष्य गौतम गणधर को यही उपदेश दिया कि आलस्य ही हमारे शरीर में घुसा है। यही हमारा दुश्मन है। नीति शास्त्र में कहा गया है कि- 'आलस्यो ही मनुष्याणां शरीरस्थो महारिपु'। आचार्य जी का मत है कि प्रति संध्या हमें अपना आत्म-आलोचन करके यह विचार करना चाहिए कि दिनभर हमने कौन-कौन से गलत कार्य किए हैं।

(२) सत्साधना का नियमित समय

वैसे तो समता साधना के यात्री के मन में यह धारा निरंतर बहते रहती है किंतु हमें इसका नियमित एवं निश्चित समय पर विचार करना चाहिए। इससे हम पाप प्रवृत्तियों के निरोध एवं समता प्रवृत्तियों के आचरण की ओर अग्रसर होंगे।

(३) सत्साहित्य का अध्ययन

स्व-अध्ययन सदा श्रेष्ठ माना गया है। जरूरत इस बात की है कि हम श्रेष्ठ ग्रंथों का अध्ययन कर मनन एवं चिन्तन करें। यह नियमित रूप से होगा तो हमारी स्वानुभूति परिष्कृत होगी और हमारे खुद के भीतर उत्तम एवं मौलिक विचार पैदा होंगे। अच्छा लेखक बनना, अच्छा पाठक और अच्छा वक्ता बनना, अच्छा श्रोता बनना आवश्यक है।

(४) मैं किसी को दुख न दूं - मैं सबको सुख दूं

यही आत्म-दर्शन का सार है। किसी भी अन्य प्राणी को दुख देना या उसकी हत्या करना वस्तुतः अपने को दुख देना और अपनी ही हत्या करना है। हमारे भीतर यह भाव जागना चाहिए कि मुझे दुख प्रिय नहीं है अर्थात् किसी भी जीव को दुख प्रिय नहीं है। तुलसीदास जी के शब्दों में इसे इस रूप में व्यक्त किया जा सकता है

परहित सरिस धरम नहीं भाई।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई॥

(५) आत्म-विसर्जन की अंतिम स्थिति तक

यह एक मान्य तथ्य है कि जैन धर्म ईश्वर कही जाने वाली किसी अन्य सत्ता में विश्वास नहीं करता पर आचार्य नानेश जी इस संबंध में एक नया दर्शन प्रस्तुत करते हैं। वे कहते हैं कि कोई आत्मा किसी दूसरे के सहारे विशिष्टता प्राप्त नहीं कर सकती। इसका अर्थ यह हुआ कि आत्मा ही परमात्मा बनेगी और नर ही नारायण बनेगा किंतु यह तभी संभव है जब व्यक्ति त्याग एवं सेवा से अपने आपको भूला दे एवं समता के निर्माण हेतु खुद को उस लक्ष्य में विलीन कर दे। यही सच्ची तपस्या है। यही आत्म-दर्शन से परमात्म-दर्शन तक की यात्रा की पूर्णाहुति है।

अन्त में आचार्य श्री सच्चे आनंद को परिभाषित

करते हैं। वे कहते हैं कि खाने-पीने, अच्छा रहने या अन्य भौतिक वस्तुओं के उपभोग से जो सुख मिलता है उसे भी आनंद कहा जाता है। किंतु वह वास्तविक आनंद नहीं है। आनंद एक दूसरी धारा है जिसका उद्‌गम किसी की पीड़ा के हरण में मिलता है। यही आनंद स्थायी होता है।

<u>परमात्म-दर्शन के समतापूर्ण लक्ष्य तक</u>

आचार्य नानेश जी के अंतर का विश्वास बड़ा सबल है। इसी से वे कहते हैं कि विकास का कोई भी चरम बिंदु साहसी व्यक्ति के लिए असंभव नहीं है किन्तु वही विकास एक कायर के लिए अवश्य असंभव है। अतः किसी भी शुभ लक्ष्य की प्राप्ति हेतु मनुष्य की कायरता का लोप आवश्यक है। आचार्य जी का कथन है कि चौर्यवृत्ति से कायरता का जन्म होता है। इस प्रवृत्ति को उन्होंने बिल्कुल सरल ढंग से समझाते हुए कहा है कि- 'जिसको जो प्राप्य नहीं है उसे जब वह चुपके से लेना चाहता है तब उसे चोरी करना कहते हैं। जिसमें यह वृत्ति होगी, वह कायर होगा ही। इसके विपरीत मजबूत व्यक्ति वह होगा जो साहसी होगा। विषमता पर प्रहार करने के लिए इसी साहस की जरूरत है।' आचार्य ने कहा है कि कर्मण्यता के कठोर मार्ग पर चलकर ही समता प्राप्त की जा सकती है। जब विचारों, वाणी और आचरण तीनों एक साथ क्रियाशील रहेंगे तभी कर्मण्यता का सही मार्ग प्रशस्त होगा। इस अध्याय में दर्शन की जिन ऊंचाइयों को छुआ गया है वह सब समाज के सामान्य जन के योग्य नहीं है। अतः सामान्य जन के लिए उनके इस तथ्य को सही ढंग से प्रस्तुत किया जाता है कि निम्न नौ प्रकार से पुण्य अर्जित होता है यथा-

(१) अन्न (२) पान (३) स्थान
(४) शयन (५) वस्त्र (६) मन
(७) वचन (८) काया (९) नमस्कार।

एवं निम्न अठारह प्रकार से मनुष्य पापों में लिप्त होते जाता है यथा-

(१) हिंसा (२) झूठ (३) मैथुन
(४) परिग्रह (५) क्रोध (६) मान
(७) माया (८) लोभ (९) राग
(१०) द्वेष (११) कलह (१२) मिथ्यारोप
(१३) पैशुन्य (चुगली) (१४) परनिंदा
(१५) पाप में रुचि (१६) धर्म में अरुचि
(१७) माया-मृषावाद (झूठ-कपट)
(१८) मिथ्या दर्शन।

उपरोक्त में से प्रत्येक की विशद व्याख्या तो नहीं की गई है किंतु अधिकांश बातों पर किसी न किसी रूप में चर्चा हो चुकी है।

जैसा कि पूर्व में ही निवेदन किया जा चुका है कि प्रस्तुत पुस्तक में आचार्य वर नानेश जी के प्रवचनों का संग्रह है इस कारण अनेक तथ्यों की पुनरावृत्ति भी हुई है और प्रवचनों में यह सहज संभव है। जब विधिवत लेखन के रूप में तथ्यों को प्रस्तुत किया जाता है तब ये संभावनाएं क्षीण हो जाती हैं।

समता के सिद्धांत को जीवन में उतारते समय अनेक बाधायें आती हैं इन बाधाओं का उल्लेख एक अलग अध्याय में किया गया है किंतु अध्ययन के पश्चात ऐसा प्रतीत होता है कि ये सारी बातें पूर्ववर्ती अध्यायों में आ चुकी हैं। अतः पुनरावृत्ति से बचने के लिए उनकी समीक्षा प्रस्तुत करने का औचित्य प्रतीत नहीं होता।

आचार्यवर के हिमालयीन व्यक्तित्व, गहन अध्ययन एवं विस्तृत अनुभव की भावभूमि से निसृत हैं। उनके विचार कहीं-कहीं तो इतने गूढ़ हो गए हैं कि सामान्य पाठक की पकड़ के परे हैं किन्तु संतोष इस बात से होता है कि सामान्य रुचि संपन्न पाठक से लेकर दिग्गज विद्वानों तक के लिए इसमें अमूल्य तथ्य भरे पड़े हैं। व्यक्ति अपनी रुचि एवं योग्यतानुसार चुनाव करके दिशा निर्देश प्राप्त कर सकता है।

❑ डॉ. आदर्श सक्सेना

आचार्य नानेश की साहित्य साधना

जब हम आचार्य श्री नानेश के साहित्य की बात करते हैं तब हमारा ध्यान तुरंत साहित्य शब्द के उस अर्थ की ओर चला जाता है जो साहित्य का इष्ट होता है। क्योंकि यह इष्ट ही वह कसौटी होता है जिस पर किसी भी साहित्य की सार्थकता की परख की जाती है। इस संबंध में यह भी समझ लेना आवश्यक है कि प्राचीन काल में साहित्य को शास्त्र माना जाता था और इसी अर्थ में इस शब्द का प्रयोग होता था। ७वीं शताब्दी के लगभग इसका प्रयोग काव्य के अर्थ में होने लगा। आधुनिक युग में साहित्य शब्द का प्रयोग लिटरेचर शब्द की भांति समस्त लिखित एवं मौखिक रचनाओं के अर्थ में होता है। साहित्य के इन परिवर्तित होते अर्थों के संदर्भ में यदि हम आचार्य श्री नानेश के साहित्य पर दृष्टिपात करें तो वह इन सभी परिवर्तित रूपों का प्रतिनिधित्व करता दिखाई देता है। वह शास्त्र तो इस अर्थ में है ही कि वह शास्त्रों के समान ही समाज के लिए परम हितकारी है। यदि काव्य के अर्थ में देखें तो वह काव्य इष्ट सत्य, शिव और सुंदर का समन्वय अपने में प्रस्तुत करे जो क्षण भर नहीं सर्वकाल का और इस कारण शाश्वत होता है। शिव सर्व कल्याणकारी है, और सुंदर इसलिए कि जो सत्य और शिव होता है वह स्वतः ही सुंदर होता है। लिटरेचर के अर्थ में लें तो वह जितना लिखित (पुस्तकाकार प्रकाशित) है उतना ही मौखिक भी है, प्रवचनों के रूप में।

रूप के बाद जब हम साहित्य के इष्ट की बात करते हैं तब आचार्य नानेश का साहित्य उसके निर्देशित लक्ष्य की पूर्ति करता दिखाई देता है। इस इष्ट अथवा निर्देशित लक्ष्य के संबंध में कहा गया है कि 'हितं सन्निहितं तत् साहित्यम्,' अर्थात् जो हित-साधन करे, वह साहित्य है। इस हित की बात को यों परिभाषित किया गया है- 'अवहितं मनसा महर्षिभः तत् साहित्यम्, अर्थात् यह हित मानव मनोवृत्तियों को उन्नत करता है इस संबंध में गोस्वामी तुलसीदास जी ने स्पष्ट कहा है- 'कीरति भनिति भूति भल सोई, सुरसरि सम सब कहं हित होई,' इस प्रकार भनिति अर्थात् साहित्य सुरसरि गंगा के समान सबका हित करने वाला होता है। आचार्य नानेश का साहित्य तो शाब्दिक अर्थ में भी हितकर है। यह उनके साहित्य की ऐसी विशेषता है जो उसे साहित्य के रूप में विशिष्ट बना देती है और इस रूप में उसके विशेष विवेचन की अपेक्षा रखती है।

आचार्य नानेश साहित्यकार होने से पहले एक संत हैं- सिद्ध संत। वे एक विशेष सम्प्रदाय में दीक्षित अवश्य हुए थे परंतु उसकी सीमाओं में बंधकर नहीं रहे। आचार्य पद पर अधीकृत होने के बाद तो वे पूर्णतः सम्प्रदायातीत हो गए। एक संप्रदाय विशेष के पट्टधर आचार्य होते हुए भी उन्होंने अपनी वाणी से मानव मात्र का किस प्रकार हित साधन किया, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण उनका साहित्य है।

आचार्य नानेश की सभी कृतियों की गणना करा पाना कठिन है क्योंकि गणना तो केवल उतनी कृतियों की ही कराई जा सकती है जो किसी रूप में प्रकाशित हो गई है, उपलब्ध है और इस प्रकार समाज के सम्मुख आ गई है। यद्यपि यह साहित्य भी विपुल है तथापि इससे भी अधिक साहित्य ऐसा भी है जो पांडुलिपियों में, फुटकर लेखों में और भक्तजनों द्वारा संग्रहित प्रवचन के रूप में विद्यमान है। इसमें से कितना समाज के सम्मुख आ पायेगा यह कहना कठिन है। कहते हैं भक्त सूरदास ने सवा लाख पद लिखे थे परंतु मिलते तो बहुत कम हैं। साहित्यकारों के

अवसान के बाद उनका कितना साहित्य उपलब्ध रहता है और कितना नष्ट हो जाता है, यह साहित्य के सभी विद्वान जानते हैं। फिर भी एक बात सत्य है- बटलोई में से चावल का एक दाना देखा जाता है और ढेर में से केवल मुट्ठी भर अन्न के नमूने ही संपूर्ण भंडार की प्रकृति का परिचय करा देते हैं। आचार्य नानेश के साहित्य का भी इसी आधार पर एक महत्वांकन किया जा सकता है और यही उसे समझने का एक मात्र आधार भी है।

आचार्य नानेश के साहित्य को निश्चित वर्गों में बांट पाना संभव नहीं है। क्योंकि उनके भक्तों ने अपनी रुचि, अवसर अथवा आवश्यकता के अनुसार उसके एक निश्चित भाग का सम्पादन कर उसे प्रकाशित कर दिया है। उपयोग को ध्यान में रखकर कई बार उसके रूप को बदला भी गया है। उदाहरण के तौर पर उनके प्रवचनों के बीच में आए हुए ज्ञान सूत्रों अथवा दृष्टांत के रूप में लाई गई कथाओं को उनके सुभाषितों, सूक्तियों, नीति कथाओं अथवा शिक्षाप्रद कथाओं के रूप में संकलित कर प्रकाशित किया गया है। ऐसे दो संकलन मुनि ज्ञान द्वारा संकलित एवं संपादित 'अंतर के प्रतिबंध' एवं श्री विजय मुनि द्वारा संकलित एवं संपादित 'जलते जाये जीवन दीप है।' दोनों ही पुस्तकों की भूमिकाओं में मुनि ज्ञान ने ठीक ही कहा है कि "आचार्य प्रवर की प्रस्तुत अभिव्यक्ति वस्तुतः ज्योतिरहित दीपकों को प्रज्वलित करने वाली है तथा संक्षिप्तिकरण के युग में ये बिंदु में सिंधु के प्रतीक हैं।"

संत ज्ञानी अथवा दार्शनिक की वाणी का महत्व उसकी शैली में न होकर उसमें निहित वस्तु तत्व में विशेष रूप से होता है। यह वस्तु तो वह सोना होती है जिसका मूल्य आकार के अनुपात में नहीं, उसमें निहित उसके अंशों के अनुपात में होता है। इसलिए सामग्री चाहे प्रवचन संकलन हो, चाहे संपादित धर्म ग्रन्थ, चाहे काव्य प्रस्तुतियां हों, चाहे कथा प्रस्तुतियां सबकी सामग्री उसी बहुमूल्य वस्तु से पूरित हैं जो अपनी गहन आध्यात्मिक साधना के दौरान आचार्य श्री ने अर्जित की थी। एक युग प्रवर्तक संत, धर्माचार्य, अनुपम ज्ञानयोगी, पट्टधर आचार्य के साहित्य की महिमा उसी कारण है और वह कारण भी है जो साहित्य बनाता है।

विषयों तथा उनके माध्यम से प्रस्तुत सामग्री की प्रकृति के आधार पर यदि आचार्य नानेश के सम्पूर्ण साहित्य का मूल्यांकन किया जाये तो निश्चित रूप से वह न केवल उस संचित ज्ञानराशि का परिचय करा पायेगा वरन् उसकी उपादेयता को रेखांकित भी कर सकेगा। समाज की दृष्टि से यह उपादेयता ही इस संपूर्ण साहित्य की प्रमुख वृत्ति है। इसलिए वह चाहे प्रवचन साहित्य हो, चाहे कथा साहित्य, चाहे धर्म शास्त्रीय समीक्षण सभी में सामग्री की इस प्रकृति पर दृष्टिपात करना उचित होगा।

सबसे पहले बात करते हैं उन प्रवचनों की जो निबंधात्मक रूप में दो दर्जन से भी अधिक संकलनों में प्रकाशित हुए हैं। इन संकलनों के शीर्षक उनमें संकलित सामग्री की प्रकृति का किसी रूप में परिचय भी कराते हैं। जिस प्रकार 'अपने को समझें'। भाग १,२ और ३ में मनुष्य स्वयं को अपने को समझने की कोशिश में प्रेरित करने का लक्ष्य रखती है। इनमें संकलित प्रवचनों के विषय इस प्रकार के हैं- अन्तर्चक्षुओं का आपरेशन, क्या पानी को मथ कर मक्खन निकाल सकेंगे, सीमित घेरों से विराट की ओर, दिल और दिमाग से दुर्गन्ध निकालें, देखें कि क्या कर रहे हैं, क्या करना चाहिए, वर्तमान की सुरक्षा पहले कीजिए, आदि।

'एकै साधे सब सधे सब साधे सब जाय' सुसंस्कारों के निर्माण का पथ, समता निर्झर के प्रवचन प्रमुख रूप से सामायिक साधना से संबंधित हैं। इसमें इस है कि सामायिक जैन साधना पद्धति की आधार-शिला है। अधिकांश श्रावक सामायिक साधना करते अवश्य हैं किन्तु उसकी सम्यक विधि के ज्ञान के अभाव में पूर्ण लाभ से वंचित रह जाते हैं। सामायिक साधना परिपूर्ण समता साधना का प्रवेश द्वार भी है। इसलिए आचार्य प्रवर ने इस विषय को चुनकर तेरह प्रवचनों में इसकी गहन मीमांसा की है। आचार्य नानेश संसार की समस्त समस्याओं का कारण विषमता को मानते थे इसलिए

प्रायः प्रत्येक प्रवचन में निष्कर्ष के रूप में समता को प्रस्तुत किया गया है। समता दर्शन आचार्य श्री नानेश की भारतीय चिन्तन परंपरा को एक प्रमुख देन है इस दृष्टि से इस संकलन की विशेष सार्थकता है।

चातुर्मासों के दौरान दिये गये प्रवचनों के ऐसे संकलन श्रावकों को उद्‌बोधन देने की दृष्टि से विशिष्ट हैं। ऐसे कतिपय अन्य संकलन है- प्रवचन पीयूष, सर्व मंगल सर्वदा, ऐसे जीये, परदे के पीछे, समीक्षण धारा, पावस प्रवचन, ताप और तप, सुख और दुःख, संस्कार क्रांति आदि।

इन संकलनों में संकलित प्रवचनों के विषय विविध हैं और जीवन के प्रमुख पक्षों से संबंधित हैं। प्रेरणा, ज्ञान, शिक्षा, धर्माचरण आदि की दृष्टि से इनका अपना महत्व है। इनके विषय कर्मों के बंध, उदय और क्षमोपशम, अहिंसा की सूक्ष्म मर्यादाएं, धर्म और विज्ञान का समन्वय, अपरिग्रह का चारित्रिक महत्व, दुःख का हेतु अपने भीतर, पंडित कौन, समता और समीक्षण, शक्ति की पहचान, तर्क, श्रद्धा और विश्वास का संकट, स्वकीय शक्ति की पहचान, राष्ट्र धर्म की महत्ता, आत्म-चिकित्सा, पर्यावरण सुरक्षा, प्रदूषण मुक्ति आदि।

ये और ऐसे विषय मनुष्य की चेतना शक्ति को जाग्रत ही नहीं करते वरन् उसके ज्ञान में अभिवृद्धि भी करते हैं तथा उसे जिज्ञासु भी बनाते हैं। इस प्रकार चरित्र, वृत्ति और व्यवहार के परिष्कार का कार्य ये प्रवचन सहजता से कर लेते हैं और चूंकि आचार्य श्री अपने प्रवचन मानवता, समाज, संस्कृति,राजनीति, राष्ट्र आदि से संबंधित समस्याओं के संदर्भ में देते थे इसलिए ये श्रावकों को समसामयिक जीवन के प्रसंगों के परिप्रेक्ष्य में अपनी चिन्तन शैली एवं व्यवहार को संयोजित करने का रास्ता भी दिखाते हैं। शैली की सरलता इनकी एक ऐसी प्रमुख विशेषता है जो इन्हें सुग्राह्य बना देती है।

आचार्य श्री के श्रावकों के आयु, ज्ञान, चेतना, अनुभव आदि की दृष्टि से अलग-अलग वर्ग एवं स्तर बनते हैं, इसलिए अपने प्रवचनों को वे उदाहरणों, उद्धरणों, कथाओं, संवादों, व्यंग्य विनोदपूर्ण टिप्पणियों आदि से जीवन्त रखते थे। उनके कथनों मे ऐसी सहजता होती थी कि जो किसी के भी दिल में सरलता से उतर सकती थी। कहते हैं सूत्रात्मकता ज्ञान की आत्मा होती है। ऐसे सूत्रात्मक कथनों से उनके प्रवचन परिपूर्ण होते थे। एक-दो उदाहरण ही पर्याप्त होगें-

अविश्वास और चंचलता ये दोनों संगी-साथी हैं।

(पावस प्रवचन पृष्ठ ७३)

विचारों के साथ संस्कारों में जो परिवर्तन आता है, वही स्थायी रहता है।

(अपने को समझें भाग-१ पृष्ठ ७३)

समाज की जड़ व्यक्ति में उसी प्रकार है जिस प्रकार प्रौढ़ावस्था की जड़ बचपन में होती है।

(पावस प्रवचन पृष्ठ १९८)

समसामयिक समस्याओं एवं सामाजिक जीवन की विषमताओं तथा आवश्यकताओं का उन्हें पूरा ज्ञान था। परिस्थितियों की विकटता का वे गहनता से अनुमान करते थे। उनकी प्रकृति पर चिन्तन करते थे और उनके निराकरण के प्रति चिन्तित ही नहीं रहते थे, निराकरण की दिशा का संकेत भी करते थे। उनकी ऐसी सामाजिक संलग्नता के उदाहरण उनके प्रवचनों में बिखरे पड़े हैं। इस संलग्नता की प्रकृति को समझने के लिए उनके कतिपय प्रवचनों पर दृष्टिपात उपयोगी होगा।

दुःख और सुख मनुष्य की चिन्ता के प्रमुख विषय होते हैं। अनागत की आशंका से दुःखी हो जाना मनुष्य का सहज स्वभाव होता है। इस दुराशा से मुक्ति का उपाय बताते हुए वे कहते हैं- 'वास्तव में सुख और दुःख की अनुभूतियां अपने ही मन की अव्यवस्थाएं होती हैं। ये अवस्थाएं किन्हीं बाहरी तत्वों पर आधारित नहीं होती' (दुःख और सुख की समीक्षा, दुःख और सुख पृष्ठ १)

भगवान महावीर को दिये गए दुःखों तथा उनकी निस्संगता का उदाहरण देते हुए वे समझाते हैं- "आप भी सोचें कि दुःख देने वाला व्यक्ति आपके आत्म-स्वरूप पर जमे हुए मैल को साफ कर रहा है... मेरे आत्महित की दृष्टि से वह अच्छा ही कर रहा है।"

(सुख और दु.ख की समीक्षा दु.ख और सुख पृष्ठ ५)

रोगों की बढती के इस युग में रोग के मूल कारण को स्पष्ट करते हुए ये कहते हैं- 'सच बात तो यह है कि बाहर की और शरीर की सभी बीमारियों की जड़ में प्राय: मानसिक रोग ही होते हैं... डॉक्टर भी स्वीकार करते हैं कि किस प्रकार मन की तरह-तरह की ग्रंथियां शरीर की विभिन्न प्रक्रियाओं पर अपना असर डालती हैं और उस असर से इस शरीर में तरह-तरह के रोग किस प्रकार पैदा होते हैं।

(आत्म समीक्षा, सच्चा सौंदर्य पृष्ठ ४८)

दान की महिमा और दान की सच्ची प्रकृति पर उनके विचार हैं- 'वस्तुतः दान देना दूसरों पर नहीं अपने पर ही अनुग्रह है। सोचिये एक व्यक्ति दूसरे के पास आकर उसके शरीर का मैल उतारता है।

(दान ममत्व त्याग का सोपान, प्रवचन पीयूष पृष्ठ ५८)

'दान की शुद्ध भावना को ममत्व त्याग की परिचायिका के रूप में देखिये.. विसर्जन का त्याग दाता का प्रधान लक्षण है।'

(दान ममत्व त्याग का सोपान, प्रवचन पीयूष पृष्ठ ५९)

श्रद्धा में तर्क का क्या स्थान होता है, इस संबंध में उनकी दृष्टि स्पष्ट थी। उन्होंने कहा है- 'तर्क केवल मस्तिष्क को झकझोरता है, और उसकी सीमाओं में ही बंधा रहता है.. सजग श्रद्धा मन और मस्तिष्क दोनों को झकझोरती है। तर्क सम्मत श्रद्धा और श्रद्धापूर्ण विश्वास का मध्यम मार्ग ही ऐसा राजमार्ग हो सकता है जिस पर चलकर मनुष्य अपने वर्तमान जीवन की समस्याओं का समाधान भी पा सकता है।

(तर्क श्रद्धा और विश्वास का संकट, पावस प्रवचन पृष्ठ ७२)

अपनी समस्याओं के समाधान में स्वकीय शक्तियों का कितना महत्व है, मनुष्य प्राय. इसकी अनदेखी कर जाता है। इसलिए आचार्य श्री उसे याद' दिलाते हैं- "आज के युग में लोग अपनी समस्याओं का समाधान पाने के लिए बाहर ही बाहर देख रहे हैं और बाहर ही बाहर दौड़ लगा रहे हैं, उस कस्तूरी मृग की तरह जो वन प्रांतर में भागता है जबकि कस्तूरी उसी की नाभि में होती है। आप भी कस्तूरी को नाभि में खोजिये और बाहर से अपनी दृष्टि और भागदौड़ को हटाकर अपने भीतर झांकिये तथा वहां अपनी शक्ति के अनंत भंडार को खोजिये।"

(पर्याप्ति और प्राण, सर्वमंगल सर्वदा पृष्ठ १६६)

इस शक्ति को प्राप्त करने में मनुष्य की स्वयं की भावना के स्थान का संकेत करते हुए उन्होंने कहा है- 'विराट विश्व में फैली हुई जितनी भी विराट शक्तियां हैं उन शक्तियों से आतमा का संबंध जुड़ा हुआ है किन्तु उस संबंध को सक्रिय बनाने के लिए भावना के विद्युत प्रवाह की आवश्यकता है। जैसे बिजली घर से आपके घर की बिजली फिटिंग का संबंध तो जुड़ा हुआ है लेकिन करंट नहीं है। तो प्रकाश कैसे होगा ? यह करंट ही भावना है। भावना का प्रवाह ज्योंहि दूसरी दिशा में बहने लगेगा त्योंहि आत्मा का अपनी शक्तियों के साथ संबंध सजीव हो उठेगा।"

(स्वकीय शक्ति की पहचान, प्रवचन पीयूष पृष्ठ १७)

आचार्य श्री को ज्ञात था कि वर्तमान में अशांति के लिए जो तत्व उत्तरदायी हैं उनमें धर्म, भ्रष्टाचार, राजनीति और राष्ट्रीय भावना का अभाव प्रमुख है। इनकी प्रकृति और उसके परिणाम की उन्हें पूरी जानकारी थी और एक समत्व योगी संत की दृष्टि से उन्होंने उनकी सम्यक् विवेचना की थी। सच्चे धर्म की प्रकृति को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा था- 'वस्तुत. धर्म सर्व शुद्ध होता है, उसी तरह जिस तरह सारी मानव जाति एक होती है। मानव जाति के टुकड़े नहीं किये जा सकते तो धर्म भी अविभाज्य होता है। पहले भी धर्म की मनमानी व्याख्याएं की गई हैं और आज भी की जाती हैं। आज धर्म के नाम पर लड़ाइयां होती हैं, दंगे होते हैं।

(धर्म का चिन्तन, सर्व मंगल सर्वदा पृष्ठ २५)

भ्रष्टाचार के विकरालतर होते रूप से वे अत्यंत क्षुब्ध थे, उसके कारणों की सहज विवेचना करते हुए उन्होंने कहा था-"जीवन विकास के सारे लक्ष्य भुला

दिये गये हैं, आध्यामिकता और आदर्श प्रायः वाणी-विलास के साधन बना दिए गए हैं और मानवीय गुणों की आभा विरल हो गई है. यही कारण है कि भ्रष्टाचार समाज और स्वयं व्यक्ति की रग-रग में पसरता जा रहा है। नंबर दो की आमदनी की रखैल ही आज के बिगड़े हुए आदमी का शृंगार बन रही है। यही धन लिप्सा विश्व-मानव को अपने प्रभाव से कलंकित करती हुई बहुमुखी विषमता की जननी बन गई है तथा सभी देशों में विकारों के कीटाणु फैला रही है।"

(समता दर्शन और व्यवहार, पृष्ठ ५)

सामाजिक विषमता तथा भ्रष्टाचार के मूल कारण अर्थ की भूमिका की भी उन्होंने सही व्याख्या की है- "अर्थ का अनर्थ जब तक व्यक्ति के लिए ही और व्यक्ति के नियंत्रण में रहेगा तब तक वह अनर्थ का मूल भी बना रहेगा क्योंकि वह उसे त्याग मार्ग की ओर बढ़ने से रोकेगा। उसकी परिग्रह मूर्च्छा को काटने में कठिनाई आती रहेगी। इसलिए अर्थ का अर्थ समाज से जुड़ जाए और उसमें व्यक्ति की अनर्थ आकांक्षाओं को खुलकर खेलने का अवसर न हो तो संभव है कि अर्थ के अनर्थ को मिटाया जा सके।"

(समता दर्शन और व्यवहार- पृष्ठ ५३)

समाजवादी और साम्यवादी चिन्तन को आध्यात्मिक धरातल पर व्याख्यायित कर उन्होंने वाद के दुराग्रह से उन्हें मुक्त कर व्यवहार की गरिमा से विभूषित कर दिया है। स्वयं किसी वाद तथा भौतिकवादी चिन्तन के आग्रह से मुक्त कोई निस्पृह संत ही ऐसी समतामयी दृष्टि से सम्पन्न हो सकता था। वाद की भारत के लिए अनुपयुक्तता बताते हुए उन्होंने कहा था-"भारतीय जनता का मानस इतना गुलाम बन गया है कि उसे अपनी संस्कृति, अपनी रीति-नीति अच्छी नहीं लगती और प्रत्येक क्षेत्र में दूसरों की नकल करना ही उसका एक मात्र लक्ष्य हो गया है.. वे रूस और चीन की नीतियों के राग अलाप रहे हैं, जबकि वहां की जनता उनको असफल मानकर अन्य मार्ग की खोज में लगी हुई है।"

(चरित्र का मूल्यांकन, प्रेरणा की रेखाएँ, पृष्ठ १४८)

हम जानते हैं कि ऐसी स्थिति तब आती है जब देश की राजनीति असफल हो जाती है। वह न लोगों का मार्गदर्शन कर पाती है, न उन्हें प्रेरणा ही दे पाती है वरन् अव्यवस्था और विषमता का पर्याय बन जाती है। देश के ऐसे राजनीतिक पतन पर पीड़ा व्यक्त करते हुए उन्होंने टिप्पणी की थी-"राजनीति के क्षेत्र में नजर फैलायें तो लगता है कि सैंकड़ों वर्षों के कठिन संघर्ष के बाद मनुष्य ने लोकतंत्र के रूप में समानता के कुछ सूत्र बटोरे किन्तु विषमता के पुजारियों ने मत जैसे समानता के प्रतीक को भी ऐसे कुटिल व्यवसाय का साधन बना दिया है कि प्राप्त राजनीतिक समानता भी जैसे निरर्थक होती जा रही है। विषमता के ऐसे पंक में से राजनीति का उद्धार नहीं हुआ तो न सही किंतु वह तो अब दलदल में गहरी डूबती जा रही है। तब आर्थिक क्षेत्र में समानता लाने के प्रयास किए जा सकें, यह और भी कठिन हो गया है।"

(समता दर्शन और व्यवहार, पृष्ठ ४)

राजनीतिक अराजकता, सामाजिक भ्रष्टाचार और वैयक्तिक दुराचरण के परिप्रेक्ष्य में ही उन्होंने राष्ट्रधर्म की महत्ता को प्रतिपादित कर सुख, शांति और विकास का रास्ता दिखाया। उन्होंने श्री ठाणांग सूत्र से उदाहरण देकर बताया कि वहां दस प्रकार के धर्मों का उल्लेख है। उनमें भगवान महावीर ने पहले नगर और ग्राम धर्म का प्रतिपादन कर फिर राष्ट्रधर्म का प्रतिपादन किया है- **दस विहे धम्मे-तंजहा गाम धम्मे, नगर धम्मे, रट धम्मे, पाखंड धम्मे, कुल धम्मे, गण धम्मे, संघ धम्मे, सुत्त धम्मे, चरित धम्मे, अत्थितकाय धम्मे।** ग्राम धर्म, नगर धर्म और राष्ट्र धर्म को पहले रखने का अभिप्राय यही है कि जब ये निष्ठापूर्वक पाले जाएंगे और इनका रूप व्यवस्थित होगा तभी श्रुत, चारित्र आदि धर्मों का पालन सुविधा जनक बन सकेगा।"

(राष्ट्रधर्म की महत्ता, ताप और तप, पृष्ठ १८५)

अराजकतापूर्ण स्थिति में न साधक निर्भय होकर विचरण कर पायेगा न ही धर्म आदि का पालन। उन्होंने प्रश्न किया-"राष्ट्र को समझना कहां हो सकता है ? क्या सिर्फ दिल्ली में बैठकर कुछ कानून बना देने मात्र से देश

में परिवर्तन आ जायेगा तथा राष्ट्र धर्म का पालन होने लगेगा ? स्वयं कानून निर्माताओं एवं शासकों के अपने चरित्र एवं आचार का प्रश्न भी सम्मुख आता है।" बार-बार कानून में परिवर्तन या संशोधन पर असंतोष व्यक्त करते हुए उन्होने आगे कहा था-" परिवर्तनों और संशोधनों का कोई जनहितकारी आधार नहीं होता वरन् सत्ताधारियों के स्वार्थों को पूरा करने के लिए ऐसा किया जाता है।"

(राष्ट्र धर्म की महत्ता, ताप और तप-पृष्ठ १८७)

उन्होने स्पष्ट कहा था कि "जहां सत्ता को स्वार्थ को, पूरा करने का साधन बना दिया गया है वहां राष्ट्र धर्म नहीं टिक सकता-देश में व्यक्तियों में हो या दलों में... सत्ता की लिप्सा ने ऐसा तांडव दिखाया है कि सिर्फ राजनीति ही सबके सिरों पर हावी होती चली जा रही है। सत्ता भोग हो गई है और व्यवसाय बना दी गई है" (पृष्ठ १८८).. "समत्व, एकता एवं साम्य भावना इस राष्ट्रधर्म की मूल आत्मा है और जब तक मूल को ठुकराया जाता रहेगा तब तक शाखाओं और उप शाखाओं को सींचने से फूल कभी नहीं आयेगा। (वही पृष्ठ २००)" इन उदाहरणों के संदर्भ में यदि हम आचार्य श्री के प्रवचनों पर विचार करें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि वे ऐसे धर्म नायक थे जो व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और संसार के जीवन में धर्म की ईमानदारी से स्थापना होना देखना चाहते थे। उनका न राजनीति से कुछ लेना देना था, न अर्थनीति से और न ही शासन व्यवस्था से परंतु वे धर्मानुकूल आचरण करें, जिससे ये अपने आपको चरितार्थ कर सकें और मानव का व्यापक हित साध सकें, यह वे अवश्य चाहते थे। एक ऐसे संत का चिन्तन जिसने समता समाज की स्थापना, आत्मा-आत्मा के बीच समभाव तथा उस हेतु आत्म समीक्षण का मार्ग सुझाया हो और जो स्वयं उस पर जीवन भर चलता रहा हो, इससे भिन्न हो भी नहीं सकता था। आज इस बात की महती आवश्यकता है कि उनके चिन्तन के विभिन्न सूत्रों को संकलित कर एक संपूर्ण दर्शन शृंखला की रचना की जाए जो मनुष्य का सभी स्तरों पर मार्गदर्शन कर सके। इस हेतु उनके प्रवचन संकलनों को विषयानुसार संपादित कर पुन प्रकाशित किया जाना आवश्यक है।

इस दृष्टि से ऐसे दो संकलनों की बात करना समीचीन होगा जो संकलनकर्ताओं के सद्प्रयासों के कारण स्वतंत्र ग्रंथों का रूप ले सके हैं। इनमें एक है 'गुण स्थान : स्वरूप और विश्लेपण', जिसे श्रमणीरत्ना विदुषी साध्वी विपुला श्री जी म.सा. एवं श्री विजेता श्री जी म.सा. ने आचार्य श्री नानेश के गुण स्थान विषयक प्रवचनों को एक स्थान पर संग्रहित कर ग्रंथ रूप दिया है और दूसरा है 'निर्ग्रन्थ परम्परा में चैतन्य आराधना' जिसमें आचार्य श्री नानेश के उद्बोधनों को उनके आज्ञानुवर्ती संत सती वर्ग ने एक स्थान पर संग्रहित किया है।

धर्म शास्त्रों की व्याख्या कर उनकी सामग्री को सामान्य पाठकों हेतु उपयोगी बनाने की दृष्टि से भी आचार्य श्री नानेश ने कठोर श्रम किया था। इस प्रकार आचारांग सूत्र आदि की जो आगम सम्मत विवेचनाएं उन्होंने प्रस्तुत की हैं, वे निश्चय ही शास्त्रों में उनकी गंभीर पैठ के प्रमाण प्रस्तुत करती हैं। शास्त्र ज्ञान में निष्णात तथा आगमों के गंभीर ज्ञाता आचार्य श्री नानेश ने मानस-मंथन द्वारा ज्ञान का नवनीत समता दर्शन के रूप में निकालकर श्रावकों का एक अन्य प्रकार से भी परम हित किया है। तुलसी ने वेद, पुराण और दर्शन ग्रंथों के सार के रूप में रामचरित मानस ग्रंथ की रचना की बात कही थी और उसे 'कलिमल हरनी मंगल' बताया था। उन्होंने उसे 'अमियमूरिमय चूरन चारु' कहकर 'शमन सकल भवरूज परिवारु' के रूप में प्रस्तुत किया था। इसी प्रकार आचार्य श्री नानेश ने समता दर्शन के रूप में शास्त्रों की वाणी का ऐसा सार निकाला है जो विषमता की भीषण व्याधि से ग्रस्त मनुष्य के लिए रामबाण औषधि सिद्ध हो सकता है।

आचार्य श्री नानेश एक उच्च कोटि के साधक थे जिनके जीवन का प्रत्येक क्षण आत्म-समीक्षण को समर्पित था। अपने द्वारा खोजी गई, विकसित की गई तथा प्रयुक्त की गई इस साधना पद्धति से उनकी भाव

भूमि का अंतरंग संबंध था, इसलिए अपने प्रवचनों में समीक्षण ध्यान-साधना के मनोविज्ञान, उसकी विधि, पद्धतियों आदि की विस्तृत चर्चा कर वे उसे सर्वजनोपयोगी बनाने का गुरुतर कार्य कर सके। ऐसे प्रवचनों के जो कतिपय संग्रह प्रकाशित हुए हैं, उनमें प्रमुख हैं- समता दर्शन और व्यवहार, समीक्षण ध्यान एक मनोविज्ञान, समीक्षण धारा, समीक्षण ध्यान एक प्रयोग विधि, क्रोध समीक्षण, मान समीक्षण, माया समीक्षण, लोभ समीक्षण और आत्म समीक्षण।

समीक्षण ध्यान साधना चाहे वह किसी भी रूप में हो आचार्य नानेश की साधना की चरम उपलब्धि है। सच तो यह है कि इन समताविभूति, समीक्षण ध्यान-योगी के समता चिन्तन का समाहार ही समीक्षण ध्यान चिन्तन में हुआ है। अपनी वृत्तियों को समभावपूर्वक देख पाना अभ्यास द्वारा ही संभव है। आचार्य नानेश ने स्पष्ट किया है कि क्रोध, लोभ, मोह, मान आदि प्रवृत्तियां मनुष्य के अंतर्मन को असंतुलित कर देती है। इस मन् को संतुलित करने का एक ही मार्ग है, समीक्षण ध्यान-साधना। इस प्रकार समीक्षण ध्यान-साधना यदि दार्शनिक दृष्टि से निष्काम कर्म सिद्धि का आधार है तो आत्म-समीक्षण आत्मिक शांति की प्राप्ति हेतु आत्मा को समता के सर्वोच्च शिखर पर पहुंचाने की चमत्कारी विधि है। आत्म समीक्षण ग्रंथ इसी साधना की विराट् व्याख्या की अद्भुत रचना है जो आत्म समीक्षण के नौ सूत्रों के साथ ही समत्व की जय यात्रा तक की सांगोपांग विवेचना भी प्रस्तुत करती है। इस ग्रंथ को आचार्य श्री के दार्शनिक चिन्तन की चरम उपलब्धि भी कहा जा सकता है।

धर्माचार्य की एक प्रमुख विशेषता यह होती है कि वह श्रावकों के हित की दृष्टि से ज्ञान अथवा अध्यात्म चर्चा इस रूप में करता है कि गूढ़ तत्वों की भी सरल रूप में विवेचना हो सके। ऐसा वह इसलिए भी करता है क्योंकि आचार्य होने के साथ वह शिक्षक भी होता है और चूंकि कथा के माध्यम से शाश्वत सत्य आबाल-वृद्ध नर-नारियों को सरल ढंग से समझाया जा सकता है इसलिए कथा अत्यंत प्राचीन काल से शिक्षा देने का सार्थक साधन रही है। इस प्रकार चाहे वेदों में बिखरी कथाओं की बात करें चाहे पंचतंत्र और दशकुमार चरित्र जैसी नीति कथाओं की, चाहे द्वादशांगी जैसी शास्त्रीय कथाओं की, चाहे बुद्ध धर्म की जातक कथाओं की। धर्म, नीति और सदाचार की शिक्षा इनके प्रमुख विषय रहे हैं। आचार्य श्री नानेश भी कथा विद्या की शक्ति से भली प्रकार परिचित थे, इसलिए उन्होंने जहां कथाओं और घटनाओं को अपने प्रवचनों में बड़े पैमाने पर स्थान दिया वहीं स्वतंत्र रूप से शिक्षाप्रद कथा साहित्य की रचना भी की। उनका यह शिक्षाप्रद साहित्य कथा, कहानियों और उपन्यासों के रूप में उपलब्ध है। इस वर्ग की जो रचनाएं प्रकाशित हुई हैं उनमें प्रमुख हैं- नल दमयंती, अखंड सौभाग्य, कुंकुम के पगलिये, ईर्ष्या की आग, लक्ष्यवेध और आदर्श भ्राता। इनमें प्रथम पांच औपन्यासिक कृतियां हैं और पांचवी काव्य रचना। कथा यद्यपि इन रचनाओं का शरीर है तथापि शास्त्र प्राण है, इसलिएं जहां ये कथाएं आनंदित करती है, वहीं प्रेरित भी करती हैं।

पहले 'नल दमयन्ती' की बात करें। नल दमयन्ती की कथा भारत की एक प्राचीन लोकप्रिय कथा रही है। आचार्य श्री नानेश ने नल के जीवन के औदात्य और दमयंती के जीवन के शील को महत्व देकर यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि नैतिकता के पथ से विचलित होने पर किस प्रकार भीषण विपत्तियां सम्मुख आती हैं, परंतु जब जीवन का परिमार्जन कर लिया जाता है तब सभी विपत्तियां शनैः-शनैः समाप्त होने लगती हैं। विशेष रूप से दमयंती पवित्रता और नैतिकता के जिस ज्वलंत रूप को प्रस्तुत करती है वह भारतीय नारी का चिरकालीन आदर्श रहा है।

'अखण्ड सौभाग्य' में महाराज चन्द्रसेन उनकी पटरानी, युवराज आनंदसेन तथा विद्याधर पुत्री विश्व सुंदरी के माध्यम से समतामय जीवन-साधना तथा आदर्श नृपति के कर्तव्यों का प्रभावशाली चित्रण किया गया है। दुष्टजनों के षड्यंत्रों से भव्य आत्माओं की रक्षा

के किस प्रकार विचित्र योग बनते हैं, ब्रह्मानंद जैसी दिव्य आत्माएं कैसे उनके साथ सहयोग करती हैं तथा सलखू नाईन और ग्यारह दुष्ट रानियों को लज्जा और पराजय का मुंह किस प्रकार देखना पड़ता है, यह इस उपन्यास का विषय है। अंत में महाराज, उनकी तेरह रानियां, राजकुमारी चम्पकमाला, कई मंत्री एवं सामन्त आदि जैन भागवती दीक्षा अंगीकार करने के पथ पर चल पड़ते हैं।

'कुंकुम के पगलिये' नैतिक सदाचरण प्रधान रचना है। कुंकुम के पगलिये सुख, शांति और श्री सम्पन्नता के प्रतीक होते हैं। ऐसे ही पगलिये शक्ति, शील और सौन्दर्य की देवी मंजुला श्रीकान्त के जीवन में प्रवेश करती है। सीधा, सरल, सुसंस्कारी और स्वाभिमानी श्रीकान्त आत्म-पुरुषार्थ को जाग्रत कर संकल्प शक्ति और साधना के बल पर अपने भविष्य का निर्माण करता है। मंजुला विकट परिस्थितियों में भी अपने शील की रक्षा करती है और अपने पति को प्राप्त करने में सफल होती है। तप, त्याग और सदाचरण के पुरस्कार स्वरूप इस परिवार को अपना खोया हुआ सुख कई गुना बढ़कर प्राप्त होता है। अंत में श्रीकान्त, मंजुला और कुसुम कुमार की भव्य आत्माएं दीक्षा का मार्ग ग्रहण कर अपना जीवन सार्थक करती हैं।

'ईर्ष्या की आग' अपेक्षाकृत एक लघु रचना है जो यह स्पष्ट करती है कि धर्म में आस्था रखने वाला, साधु, संतों के निर्देशों को मानने वाला, संतोषी, समभावयुक्त तथा प्रतिज्ञा का पक्का व्यक्ति, सभी कष्टों से मुक्त होकर सुख वैभव प्राप्त करता है जबकि ईर्ष्यालु, कपटी और स्वार्थी व्यक्ति अपमान का पात्र बनता है। अवधेश और उसकी पत्नी यामिनी प्रथम प्रकार के तथा सुधेश और उसकी पत्नी भामिनी दूसरे प्रकार के पात्र हैं। अपनी संकल्पशीलता तथा समतामयी दृष्टि के कारण जहां अवधेश और यामिनी सदा संतुष्ट एवं प्रसन्न रहते हैं वहीं सुधेश असंतुष्ट और दुखी रहता है। परिस्थितियां उसे जीवन परिवर्तन के लिए विवश कर देती हैं और वह भी सन्मार्ग का पथिक बन जाता है।

'लक्ष्यवेध' मानसिंह और अभयसिंह नामक दो सगे भाइयों के आदर्श प्रेम की कथा है। आचार्य श्री नानेश ने लक्ष्यवेध को प्रतीक के रूप में प्रयुक्त किया है। बाहरी लक्ष्यभेद जहां भोगदृष्टि का संकेत बनाने की सिद्धि की ओर इशारा करता है वहाँ अभय की सात्विक प्रेरणा मानसिंह का जीवन ही बदल देती है। अपनी वीरता, साहस और सुझबूझ से दोनों भाइयों के जीवन का क्रम ही बदल जाता है। उनका दुर्भाग्य समाप्त हो जाता है और आनंद एवं उत्साह की गंगा उनके जीवन में बहने लगती है। मानसिंह और प्रतापसिंह के उपरांत अभयसिंह भी भागवती दीक्षा के मार्ग को अंगीकार कर आत्म-कल्याण के मार्ग पर अग्रसर हो जाता है। 'आदर्श भ्राता' इसी कथा की काव्यात्मक प्रस्तुति है जिसे लोकप्रिय छंद में संगीतबद्ध किया गया है।

इन सभी कथाओं की प्रमुख विशेषता इनमें समाया धर्म तत्व है जिसकी अभिव्यक्ति इनके नायक नायिकाओं के माध्यम से हुई है। धर्म के सिद्धांतों के अनुसार आचरण करनेवाले तथा समता भाव रखने वाले निर्मल चरित्र पात्र सभी कष्टों और संकटों के बीच से सुरक्षित निकल आते हैं और स्वकल्याण के साथ परकल्याण के गुरुत्तर दायित्व का निर्वाह करते हैं। दुष्टता और कुटिलता सदैव पराजित होती है और दुष्टों के हृदय परिवर्तित होते हैं।

सभी रचनाओं में कथा का समाहार प्रमुख पात्रों (नायक एवं खलनायक सहित) में उत्कृष्ट वैराग्य भावना के उदय तथा भागवती दीक्षा ग्रहण कर आत्म-कल्याण के मार्ग पर अग्रसर हो जाने में होता है। नीति कथाओं तथा प्राचीन धार्मिक आख्यानों के संदर्भ में इन कथाओं की ऐसी परिणति पर यदि विचार करें तो वह पूर्णतः शास्त्रानुकूल ही नहीं साहित्य शास्त्रानुकूल भी दीखती है। प्राचीन भारतीय कथाएं सुखांत होती थीं और चार पुरुषार्थों में से किसी एक अथवा अधिक की प्राप्ति का लक्ष्य रखती थी। इसलिए उनका समाहार भरत वाक्य से होता था। आचार्य श्री नानेश की कथाओं में समाहार का यह रूप उदात्ततर बनकर आया है क्योंकि इनमें चार पुरुषार्थों में से धर्म और मोक्ष की प्राप्ति को ही लक्ष्य रखा

गया है और दण्ड के पात्रों दुष्टों का भी हृदय परिवर्तन प्रदर्शित कर क्षमा, दया, करुणा और समता भाव के आदर्शों की प्रतिष्ठा की गई है।

आचार्य श्री नानेश के सम्पूर्ण साहित्य पर जब हम विहंगम दृष्टि डालते हैं तब यह तथ्य अपनी पूर्ण प्रखरता में प्रकट हुए बिना नहीं रहता कि वह सब ज्ञान, दर्शन तथा मानवता का साहित्य है। जिसका एक मात्र उद्देश्य धर्माचरण की प्रेरणा देकर समाज को चरित्र परिष्कार, संस्कार निर्माण तथा समीक्षण ध्यान साधना के मार्ग पर अग्रसर करता है। परंतु यह सब एकांगी रूप में नहीं हुआ है...वर्तमान जीवन की ज्वलंत समस्याओं के संदर्भ में हुआ है। आचार्य श्री ने जीवन की विभीषिकाओं के असत्य-अन्याय, अत्याचार की स्थिति में हिंसा, लोभ, मोह आदि की बढ़ती प्रवृत्तियों अभावों, दुःखों, अशांति एवं असंतोष के पारावार में डूबते उतराते लोगों, अधर्म के विस्तार तथा विषमता अज्ञान और पाखंड के कसते हुए शिकंजों के बीच फंसी मानवता के बहते आसुंओं को देखा था, स्थितियों की विकटता को समझा था तथा उस पर गंभीरता से चिन्तन करने के उपरांत करुणा विगलित होकर अपनी साधना के बल पर उसके उद्धार का मार्ग तलाश किया था। विषमता की पीड़ा से ग्रस्त मानवता के त्राण हेतु जो कार्य उन्होंने धर्म प्रभावना के शास्त्र सम्मत मार्ग द्वारा प्रारंभ किया था, उसे ही साहित्य साधना के मार्ग द्वारा गतिशील बनाये रखा। इस प्रकार उनका संपूर्ण साहित्य चाहे वह किसी भी विधा में हो, 'अवहितं मनसा महर्षिभि· तत् साहित्यम्' की भारतीय साहित्य शास्त्र की अवधारणा पर खरा उतरता है। धर्म, शास्त्र और साहित्य शास्त्र का यह सार्थक समन्वय आचार्य नानेश की साहित्य-साधना की प्रमुख उपलब्धि है।

-बी-१७, शास्त्री नगर, बीकानेर - ३३४००३

शांति का पाठ

एक महात्मा से पूछा गया-आप इतनी उम्र तक असंग, सहनशील और शांत कैसे बने रहे?

महात्मा ने कहा-जब मैं ऊपर की ओर देखता हूं तब मन में आता है कि मुझे ऊपर की ओर जाना है, तब यहां पर किसी के कलुषित व्यवहार से खिन्न क्यों बनूं? नीचे की ओर देखता हूं, तब सोचता हूं कि सोने, उठने, बैठने के लिए मुझे थोड़े स्थान की आवश्यकता है, तब क्यों संग्रही बनूं? आस-पास देखता हूं तो विचार उठता है कि हजारों ऐसे व्यक्ति हैं जो मुझसे अधिक दुःखी हैं, व्यथित और व्यग्र हैं। इन्हीं सब को देखकर मेरा मन शांत हो जाता है।

-आचार्य नानेश

❑ डा० किरण नाहटा

जीवन सन्देश के संवाहक : तीन आख्यान

जैन आख्यानों की परम्परा अत्यन्त समृद्ध रही है । हजारों की संख्या में विविध जैन आख्यान संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं राजस्थानी आदि भाषाओं में मिलते हैं। ये आख्यान विभिन्न युगों में अलग-अलग कथाकारों द्वारा निबद्ध किये जाने के तथा युग-प्रभाव एवं व्यक्ति वैशिष्ट्य के कारण किंचित् परिवर्तित रूपों में भी मिलते हैं। प्राय: जैन साधु उपदेश निमित्त इन आख्यानों का उपयोग करते रहे हैं। उपदेश के साथ ही साथ अपने धार्मिक सिद्धांतों के निरूपण की दृष्टि से भी वे इनका उपयोग करते रहे हैं। चूंकि जैन साधुओं का मुख्य उद्देश्य रोचक एवं उद्बोधक कथानकों के माध्यम से जैन धर्म के गूढ सिद्धान्तों को जन सामान्य के बीच बोधगम्य रूप में प्रस्तुत करना रहा है, *अत: स्वाभाविक है कि इन कथानकों में बीच-बीच में यथाप्रसंग धार्मिक सिद्धान्तों का विशद् विवेचन भी किया* जाता रहा है। ये आख्यान गद्य, पद्य और चम्पू तीनों रूपों में मिलते रहते हैं। जैन साधु इन आख्यानों का उपयोग प्राय: नियमित रूप से दिये जाने वाले आख्यानों के बीच करते रहे हैं, अत: स्वाभाविक है कि प्रवचनकार अपनी रुचि एवं योग्यता के अनुरूप इनके मूल स्वरूप को कायम रखते हुए भी इनको विस्तृत या संक्षिप्त रूप देते रहते हैं। इसी परम्परा की एक सशक्त कड़ी के रूप में आचार्य श्री नानेश प्रणीत, अखण्ड सौभाग्य, कुंकुम के पगलिए एवं लक्ष्य वेध नामक आख्यानों का नाम गिनाया जा सकता है। आगे किंचित् विस्तार से इन आख्यानों की समीक्षा की जा रही है।

जहाँ तक इन आख्यानों के साहित्यिक मूल्यांकन का प्रश्न है, यहाँ हमें एक बात को विशेष रूप से ध्यान में रखना होगा कि इनका प्रणयन एक सामान्य साहित्यकार ने नहीं किया है, वरन् ये एक यशस्वी आचार्य की रचनाएं *हैं और इनका मूल्यांकन करते समय रचनाकार की दृष्टि का प्रश्न है तो* उस पर विचार करते हुए यह तथ्य उभरकर सामने आता है कि सामान्य साहित्यकार और धर्माचार्य की दृष्टि में मूलभूत अंतर होता है। सामान्य साहित्यकार मानवीय चरित्र की विविधताओं को उजागर करने के साथ-साथ उसके अन्तर्जगत् के गूढ रहस्यों को उद्घाटित करने में विशेष रूप में सक्रिय रहता है। वह बहुधा मनोवैज्ञानिक सच्चाइयों को दृष्टिपथ में रखने के कारण नैतिक मूल्यों को गौण कर देता है। इसके साथ ही उसकी सबसे बड़ी सीमा यह है कि वह सामान्यत: पुनर्जन्म, कर्म सिद्धान्त आदि बातों पर विश्वास नहीं करता है और व्यक्ति के व्यवहार का विश्लेषण करते हुए वह उसके इस जन्म के परिवेश और परिस्थितियों तक ही अपने आपको सीमित रखता है, किन्तु इसके विपरीत आध्यात्मिक सोचवाले धर्माचार्य व्यक्ति के जीवन को केवल इसी "भव" तक सीमित नहीं करते हैं। वे व्यक्ति के इस जन्म के कर्मों का विश्लेषण करते समय कर्म सिद्धान्त के आलोक में उसके कृत्यों का सर्वथा भिन्न रूप में विवेचन विश्लेषण करते हैं।

यही बात प्रयोजन के सम्बन्ध में भी है। यहाँ भी दोनों के बीच के अंतर को स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए। आचार्य मम्मट ने काव्य-प्रयोजन की दृष्टि से एक श्लोक में अपनी बात को सारगर्भित रूप से प्रस्तुत करते हुए कहा है कि काव्य का प्रयोजन यश एवं अर्थ प्राप्ति, व्यवहार निपुणता, तत्काल उच्चकोटि के आनन्द की प्राप्ति एवं कान्ता के समान प्रिय उपदेश कथन होता है। आचार्य मम्मट के द्वारा गिनाये गये काव्य-प्रयोजन साधु-समाज पर पूरी तरह लागू नहीं होते हैं, क्योंकि कोई भी सच्चा साधु वित्तैषणा अथवा लोकैषणा से बंधकर काव्य रचना नहीं

करता। हाँ, उसका साहित्य लोक-व्यवहार की निपुणता का हेतु कई बार बनता है, यद्यपि यह भी उसके साहित्य-सृजन का मुख्य प्रयोजन नहीं होता। ऐसी स्थिति में उनके लेखन का प्रयोजन तो मुख्य रूप से अनिष्ट के निवारण अथवा हितप्रद उपदेश को ही माना जा सकता है।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से यह तथ्य स्पष्ट होता है कि दृष्टि एवं प्रयोजन भेद के कारण आधुनिक कथाकार और विविध आध्यात्मिक अवधारणाओं में विश्वास रखने वाले परम्परानिष्ठ कथाकारों के प्रतिपाद्य और शिल्प दोनों में ही महत्वपूर्ण अन्तर दृष्टिगत होता है। आगे इसी आलोक में हम आचार्य श्री नानेश के इन तीनों आख्यानों का मूल्यांकन करने की चेष्टा करते हैं।

'कुंकुंम के पगलिए' एक घटना प्रधान आख्यान है। अनेक कथानक रूढियों एवं घटना प्रसंगों के सहारे इस आख्यान का ताना-बाना बुना गया है। इस आख्यान में प्रधान पुरुष पात्र श्रीकान्त की जीवन गाथा को आधार बनाकर आचार्य श्री ने कुछ महत्वपूर्ण बातों की ओर सद्गृहस्थों का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया है। उन बातों की ओर संकेत करते हुए हिन्दी एवं राजस्थानी साहित्य के वरिष्ठ समालोचक तथा जैन दर्शन और जैन साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान डा० नरेन्द्र भानावत ने लिखा है कि 'यह आख्यान घटना प्रधान होकर भी विभिन्न पात्रों के माध्यम से उदात्त जीवन मूल्यों को रेखांकित करता है।' 'बहिर्द्वन्द और अन्तर्द्वन्द का अनूठा सामंजस्य यहाँ देखने को मिलता है। मंजुला और श्रीकान्त बहिर्द्वन्द्व और अन्तर्द्वन्द्व से ऊपर उठकर निर्द्वन्द्व की स्थिति की ओर कदम बढाते हैं। सेवा, शील पुरुषार्थ, तप, कर्त्तव्यनिष्ठा, प्रायश्चित, धैर्य, स्थिरता. प्रेम, सहयोग मातृभक्ति जैसे उदात्त जीवन मूल्य विभिन्न घटनाओं और पात्रों के माध्यम से इस कथा में सहज उभरते चलते हैं। हिंसा और अहिंसा, भोग और योग, सन्देह और श्रद्धा, राग और विराग का संघर्ष कृति को रोचक और कलात्मक बनाता है।

डा० भानावत का यह कथन समीचीन प्रतीत होता है। मूलतः इस आख्यान की रचना आचार्य श्री ने अपने अजमेर चातुर्मास में प्रवचन के बीच एक सरस वातावरण बनाने की दृष्टि से की थी। स्वाभाविक है कि प्रवचन और कथा दोनों के साथ-साथ चलने पर अनेक अवान्तर किन्तु सामयिक प्रसंगों की चर्चा भी बीच-बीच में होती रही है। ऐसी स्थिति में आख्यान के कारण प्राप्त होने वाले कथारस में बाधा उपस्थित होने की संभावना भी बनी रहती है और विशेष रूप से जब उस आख्यान को पुस्तक रूप में प्रकाशित किया जा रहा हो। चूंकि प्रवचन के दौरान वक्ता और श्रोता का सीधा सम्बन्ध बना रहता है, फलस्वरूप दोनों के बीच एक विशेष भावात्मक संबंध जुड़ जाता है और यह सम्बन्ध उन स्थितियों में और अधिक प्रगाढ हो जाते हैं जबकि प्रवचनकार एक तपोमूर्ति आचार्य हों। वक्ता, श्रोता तथा पाठक और सृजेता के भिन्न संबंधों को समझते हुए इस आख्यान को पुस्तक रूप में प्रकाशित करने से पूर्व श्री शांतिचन्द्र मेहता ने इसका संपादन जिस कुशलता के साथ किया है, उसके कारण इस आख्यान में पाठक को कहीं भी बिखराव या विषयान्तर का अनुभव नहीं होता।

इस आख्यान का मुख्य प्रयोजन कर्म-सिद्धान्त को प्रभावी रूप में प्रस्तुत करना रहा है। इस आख्यान में आचार्य श्री ने बार-बार यह संदेश दुहराया है कि व्यक्ति को वर्तमान के दुःख, अभाव और पीड़ाओं को पूर्वकृत कर्मों का फल मानकर समभावपूर्वक उन्हें सहन करना चाहिए। क्योंकि ऐसा करने से वह आर्त्तध्यान से बचता है और पुनः नये पाप कर्मों का संचय करने से भी बचता है। यही नहीं ऐसी स्थिति में की गई समता भाव की साधना उसके वर्तमान कष्टों, अभावों यानी दुःखों की अनुभूति को बहुत कुछ क्षीण कर देता है। यों कर्म सिद्धान्त के अतिरिक्त भी प्रसंगानुसार अन्य अनेक हितकारी बातों की ओर भी इसमें संकेत किया गया है, जिसकी चर्चा डा० भानावत इसके मूल्यांकन क्रम में कर चुके हैं।

पाठकीय जिज्ञासा को निरन्तर जगाये रखने वाले विविध घटना प्रसंगों के बीच-बीच में धर्म, अध्यात्म और नैतिक जीवन से संबंधित बातों पर भी प्रभावपूर्ण ढंग से प्रकाश डाला गया है। आचार्यवर ने उन गूढ एवं मननीय प्रसंगों की चर्चा अत्यन्त विद्वतापूर्ण ढंग से की है। उदाहरण रूप में आख्यान का एक अंश दृष्टव्य है, 'नीति के मानदण्ड सामाजिक धारणाओं के धरातल पर तैयार होते हैं।' इन्हीं मानदण्डों के आधार पर यह निर्णय लिया जाता है कि किसी व्यक्ति का कौनसा कार्य नैतिक है और कौनसा कार्य अनैतिक ? मूल रूप में नैतिकता और अनैतिकता की मीमांसा जन्म लेती है अन्त:करण के गर्भगृह में और अन्तर्चेतना ही उसकी कसौटी होती है। यही धार्मिकता या आध्यात्मिकता कहलाती है।

समाजहित के सन्दर्भ में व्यक्ति की निजात्मा की कसौटी पर कसा जाकर जो संस्कार, विचार या कार्य बाहर प्रकट होता है, उसे मोटे तौर पर धर्म कह सकते हैं, नैतिक कह सकते हैं या कि सदाशयी कह सकते हैं। इसके विपरीत जहाँ न समाजहित का ध्यान होता है और न ही निज अनुभूति का भान, वैसे व्यक्ति का संस्कार, विचार या कार्य विकार युक्त होने के कारण पाप रूप कहा जाता है।

यह आख्यान इस दृष्टि से भी महत्वपूर्ण बन पड़ा है कि इसमें मातृशक्ति के उज्ज्वलतम रूप को प्रस्तुत किया गया है। भारतीय समाज में शील को सर्वोपरि मूल्य रूप में स्वीकारा गया है। यह आख्यान शील के सर्वोत्कृष्ट रूप को हमारे सामने रखता है। इनकी नायिका मंजुला नानाविध प्रतिकूल परिस्थितियों में जूझती हुई भी कहीं विचलित या स्खलित नहीं होती है। न तो भय ही और न ही प्रलोभन उसे अपने दृढ निश्चय से डिगा सकते हैं। इस आख्यान में दाम्पत्य प्रेम का आदर्श हमारे सामने रखा गया है। दाम्पत्य जीवन की सफलता का आधार पति पत्नी का परस्पर का दृढ विश्वास और एक-दूसरे के प्रति अनन्य प्रेम का भाव होता है, यही सत्र इस आख्यान में चर्चित किया गया है। जीवन भोग-विलास से तृप्त नहीं होता वरन् त्याग और तपस्या के द्वारा उसमें निखार आता है, जहाँ जीवन-आधार सत्यनिष्ठा है, वहाँ अनेकानेक बाधाएं भी उसे पराभूत नहीं कर सकतीं हैं बल्कि यह सत्यनिष्ठा ही व्यक्ति के जीवन का सबसे बड़ा सम्बल बन जाता है। इस प्रकार गृहस्थ जीवन के आदर्श प्रस्तुत करने वाला यह आख्यान प्रेरक एवं उद्बोधक है।

आचार्य श्री नानेश का एक अन्य आख्यान है 'अखण्ड सौभाग्य' इस आख्यान के माध्यम से आचार्यवर ने जीवन में 'समता' की साधना का मंत्र दिया है। आचार्यवर के अनुसार 'सामायिक' के सम्यक् अभ्यास से जीवन में समता क्रमश: सधती चलती है और। इसमें सहायक बनती है आध्यात्मिक आस्था। अपने आराध्य और गुरु के प्रति पूरी तरह आस्थाशील रहने वाला व्यक्ति उसी आस्था के बल पर जीवन में आने वाले बड़े से बड़े संकटों को भी पार कर सकता है। यही नहीं प्रतिकूल से प्रतिकूल एवं भयावह से भयावह या कि विषम से विषम परिस्थितियाँ भी इसी के बलबूते पर अनुकूल, सुखद एवं समरस बन जाती हैं। इन मुख्य बातों के अतिरिक्त इस आख्यान में आचार्यवर ने हिंसा और क्रूरता को प्रेम और करुणा तथा मैत्री एवं अहिंसा से जीतने का संदेश भी दिया है। इस महान् सन्देश के साथ ही आचार्यवर इसमें एक और बात की तरफ भी संकेत करते हैं, कि अन्यायी और आततायी को भय या बल के सहारे नहीं वरन् क्षमा और सदाशयता के सहारे जीतने का प्रयास करना चाहिए। घोर स्वार्थी, अक्षम और लोभी व्यक्तियों का भी हृदय परिवर्तन इन्हीं महान् आदर्शों के माध्यम से किया जा सकता है। इन्हीं सब आध्यात्मिक सत्यों और श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों को सहज और सरल रूप में हृदयंगम करवाने की दृष्टि से उन्होंने इस कहानी का ताना-बाना बुना है।

इस आख्यान की कथा भी प्राचीनकाल से संबंधित है। प्राचीन भारतीय साहित्य में नगर राज्यों का वर्णन अनेक बार आया है। इस आख्यान का आधार भी ऐसे ही नगर राज्य रहे हैं। चम्पा नामक एक नगर का शासक पुत्र प्राप्ति की लालसा से प्रेरित होकर एक-एक

कर बारह विवाह करता है, किन्तु फिर भी उसकी मनोकामना सिद्ध नहीं होती। ऐसी स्थिति में वह अपनी पटरानी के धर्म एवं नीतिपूर्ण आचरण से, तपस्या के माध्यम से देवशक्ति की आराधना करता है, फलस्वरूप उसे पुत्र प्राप्ति का वर मिलता है। राजा देव द्वारा निर्दिष्ट पथ का अनुसरण करते हुए विश्व सुन्दरी जैसी अनिन्द्य सुन्दरी से विवाह करता है और एक सुन्दर राजकुमार और राजकुमारी का पिता बनता है, किन्तु पूर्वजन्म के कर्मों के कारण एक लम्बी अवधि तक राजा और उसकी प्रिय रानी विश्व सुन्दरी उन दोनों संतानों के सुख से वंचित रहते हैं। राजा की पूर्व विवाहित रानियों के षड़यन्त्र के फलस्वरूप नवजात शिशुओं के स्थान पर सद्यजात कुत्ते के पिल्ले विश्व सुन्दरी के पास लिटा दिये जाते हैं और यह दुष्प्रचारित कर दिया जाता है कि नयी रानी की कुक्षी से इन्हीं श्वान-शावकों का जन्म हुआ है। उसके पश्चात् उन बच्चों को अन्यत्र पालित-पोषित, शिक्षित और संस्कारित होने की कथा सामने आती है और अपने माता-पिता से उनके मिलन से पूर्व घटनाओं के अनेक उतार-चढ़ावों के बीच उन दोनों को अनेक चुनौतियों एवं संकटों का सामना करना पड़ता है। ये चुनौतियां और संकट पूरे आख्यान को अधिक रोचक और कुतुहलपूर्ण बना देते हैं।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि ऐसे आख्यानों में संयोग तत्त्व का भरपूर सहयोग लिया जाता है और पूरे कथानक का तानाबाना अनेक कथानक रूढ़ियों के सहारे बुना जाता है। यह आख्यान भी इसका अपवाद नहीं है। मणिधर सर्प, बावड़ी के तल में बसा भव्य महल, जनविहीन नगर आदि अनेक प्रसंग विविध आख्यानों में भिन्न-भिन्न रूप में आते रहते हैं और इस आख्यान में इन सभी का उपयोग कौशल के साथ किया गया है।

आचार्य नानेश का एक अन्य आख्यान है 'लक्ष्य वेध'। अतिमानवीय पात्रों और अलौकिक घटना प्रसंगों के सहारे इस आख्यान की कथा का निर्माण किया गया, जिसमें कथानक रूढ़ियों का भी भरपूर प्रयोग किया गया है। दो राजकुमार-मानसिंह और अभयसिंह इस आख्यान के प्रमुख पात्र हैं। इन्हीं दोनों भाइयों के घटना बहुल जीवनवृत्त के सहारे पूरा आख्यान गढ़ा गया है। इस आख्यान का मुख्य उद्देश्य जीवन में नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठापना है। आचार्य श्री ने इस आख्यान के माध्यम से यह प्रतिपादित किया है कि जीवन में श्रेष्ठ नैतिक मूल्यों को धारण करने वाले व्यक्तियों को अनेक बाधाओं संकटों से गुजरते हुए भी अन्ततोगत्वा सुख और संतोष प्राप्त होता है।

विषम से विषम परिस्थितियां एवं प्रतिकूल से प्रतिकूल प्रसंगों में भी ऐसे पात्र अपने जीवनादर्शों से विचलित नहीं होते हैं। वस्तुतः ऐसी विपरीत परिस्थितियाँ तो उनके जीवन की कसौटी बनती हैं और वे उस पर खरे उतरते हैं। दुःख, अभाव, पीड़ा या सन्ताप की अग्नि में तपकर उनका जीवन अधिक भास्वर एवं प्रखर बनकर उभरता है। यहाँ यह बात विशेष रूप से ध्यातव्य है कि अभयसिंह के जीवन में जिन नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठापना की गयी है, उसकी पृष्ठभूमि में है- उच्च आध्यात्मिक आदर्श। वस्तुतः इस आख्यान के चरित्र नायक अभयसिंह के जीवन का नियामक तत्त्व उसकी अध्यात्म चेतना ही है। यों तो वह पूर्व जन्मों के संस्कारों के कारण सहज ही नीतिनिष्ठ एवं धर्मपरायण व्यक्ति है, किन्तु जंगल प्रवास के दौरान एक महात्मा के संसर्ग से नमस्कार महामंत्र के महात्म्य से परिचित होने के बाद तो उसकी अध्यात्म-चेतना इतनी अधिक प्रबल हो जाती है कि मृत्यु के प्रतिरूप प्रतीत होने वाले भयावह से भयावह प्रसंग भी उसे क्षण भर के लिए भी विचलित नहीं कर पाते हैं।

वस्तुतः यह आख्यान आज की भोगमूलक भौतिकतावदी संस्कृति में जीने वाले लोगों को एक बहुत बड़ा सन्देश देता है। यह आख्यान हमें दिखलाता है कि जहाँ व्यक्ति की आस्था आध्यात्मिक मूल्यों के प्रति दृढ़ होती है, वहाँ न तो असफलताजन्य कुण्ठाएं जन्म लेती हैं और नहीं संत्रास और मृत्यु-भय की काली छायाएं उसके जीवन को घेरती हैं। इसके विपरीत उसकी

आध्यात्मिक निष्ठा उसमें गहरे आत्म-विश्वास को जन्म देती है और यही निष्ठा उसकी चेतना को उर्ध्वगामी बनाती है। ऐसा व्यक्ति विपत्तियों, बाधाओं और असफलताओं से क्षुब्ध या विचलित नहीं होता और न ही सफलताएं, सुख और उपलब्धियां उसके मन में अहंकार के भाव को जगाती हैं। वह तो सुख और दु:ख दोनों में सम रहने की साधना करता है। वस्तुत: उसकी यह साधना समता-दर्शन का एक श्रेण्य रूप हमारे सामने प्रस्तुत करती है।

इस आख्यान की एक और उल्लेखनीय विशेषता है कि इसमें छोटे-छोटे रोचक घटना-प्रसंगों के बीच आध्यात्मिक जीवन के कुछ महत्त्वपूर्ण सूत्रों को इस कौशल के साथ पिरोया गया है कि पाठक को कहीं भी यह नहीं लगता है कि वह गूढ़, दार्शनिक प्रश्नों में उलझ रहा है। जैन धर्म के महत्त्वपूर्ण कर्म सिद्धान्त को अत्यन्त सरल रूप में कथा के साथ इस तरह अनुस्यूत किया गया है कि उसकी दुरूहता या जटिलता का भान भी सामान्य पाठक को नहीं होता। आचार्य श्री ने प्रसंगवशात् धर्म और अध्यात्म के गूढ़ सिद्धान्तों को भी अत्यन्त सरल भाषा एवं सुबोध रूप में प्रस्तुत किया है। इसके साथ ही जहाँ कहीं भी उन्हें अवकाश मिला है, वहां-वहां वे नैतिक मूल्यों के समर्थन में भी अपने उद्गार व्यक्त करते चले जाते हैं।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि आचार्य श्री नानेश के ये तीनों आख्यान प्राचीन कथासूत्र को लेकर भी वर्तमानयुग को एक महत्त्वपूर्ण उद्बोध देते हैं। इनमें जीवन के शाश्वत् मूल्यों की स्थापना का महत्त्व कार्य सम्पादित हुआ है। धर्म और अध्यात्म, नीति और मूल्यनिष्ठा, पवित्रता और दृढ़ता इन सभी को साथ लेकर चलते हुए ये आख्यान अपनी प्रासंगिकता को सदैव बनाये रखेंगे, ऐसा विश्वास है।

-७ ग १५, पवनपुरी, दक्षिण विस्तार, बीकानेर

समीक्षण ध्यान की प्रासंगिकता

<u>समीक्षण शब्द क्या है ?</u>- हिन्दी साहित्य में एक शब्द है 'समीक्षा'। जब किसी पुस्तक की समीक्षा की जाती है तो उस पुस्तक में क्या अच्छाइयां है और क्या कमियां है, इसका विश्लेषण किया जाता है। यही उस पुस्तक के समीक्षक का कार्य होता है। 'समीक्षण' शब्द भी तद्नुरूप है। यह एक अध्यात्मिक शब्द है जिसका अर्थ भी लगभग इसी तरह का है। यहां समीक्षण का अर्थ लिया गया है समभाव से देखना। यह समभाव क्या है और समभाव से किसे देखना, यह समझना पहले आवश्यक है ? देखते तो हम प्रतिदिन हैं अपने नेत्रों से लेकिन बाहरी व्यक्ति अथवा वस्तु को। यहां देखने से तात्पर्य है स्वयं को देखना। स्वयं के द्वारा स्वयं का अवलोकन। दूसरे को देखने के लिए आंख चाहिए लेकिन स्वयं को देखने के लिए इन बाहरी आंखों की आवश्यकता नहीं है। स्वयं को देखने के लिए चाहिए अंतर मन की आंखें।

प्रश्न होता है स्वयं में क्या देखें ? क्या भीतर का हाड़, मांस अथवा शरीर की रचना को देखना है ? तो उत्तर है नहीं। यहां स्वयं को देखने से तात्पर्य है स्वयं की वृत्तियों को देखना।

<u>वृत्तियां क्या हैं ?</u> - प्रत्येक मनुष्य में अनेक प्रकार की वृत्तियां होती हैं। जिन्हें हम उसकी आदतें अथवा स्वभाव के रूप में पहचानते हैं। हमें थोड़ा-सा कोई अपशब्द कह दे, अपमान कर दे, अथवा हमारे स्वार्थ के कहीं चोट लग जाए तो हमें तुरंत क्रोध आ जाता है। थोड़ी सी संपत्ति अथवा पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति हो जाती है तो अहंभाव की जागृति होना स्वाभाविक है। स्वार्थ की पूर्ति के लिए छलकपट करना, संसार के सारे सुख मुझे प्राप्त हो जावें, ऐसी इच्छा करना और तदनुरूप व्यवहार करना ये सब मनुष्य की वृत्तियां हैं। इन्हीं वृत्तियों के फलस्वरूप हिंसा, झूठ, चोरी, व्यभिचार, संग्रह आदि अन्य दूषित वृत्तियां भी मनुष्य में उत्पन्न हो जाती हैं। आवश्यक नहीं कि मनुष्य में सभी वृत्तियां दूषित ही होती हैं। अनेक अच्छी वृत्तियां भी होना संभव है। दान, दया, करुणा, प्रेम, सेवा, तप,त्याग,साधना आदि शुभ वृत्तियां भी मनुष्य में होती हैं। इन सारी वृत्तियों के उभरने का मूल कारण है राग अथवा द्वेष की भावना। इसी राग अथवा द्वेष के कारण कभी शुभ वृत्ति और कभी अशुभ वृति मनुष्य में उभरती रहती है।

<u>वृत्तियां निर्मित कैसे होती हैं</u> - मनुष्य का स्वभाव दो कारणों से निर्मित होता है और इन्हीं से उसकी जीवन शैली का पता लगता है। पहला- उसके पूर्व भवों में किये गये कर्मों के फलस्वरूप और दूसरा उसके वर्तमान जीवन में जिस वातावरण में और जिन लोगों के साथ वह रहता है उसके अनुसार उस संस्कार का निर्माण होता है। मनुष्य का यह भी स्वभाव है कि वह दूसरों की दूषित वृत्ति को तो बहुत जल्दी देख लेता है और उसे काफी बढ़ा-चढ़ाकर वर्णित करने में भी अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव करता है। दूसरे व्यक्तियों के गुण देखनेवाले विरले पुरुष ही होते हैं। इसी के साथ मनुष्य की स्वयं के अवगुण तथा स्वयं की दूषित वृतियां कभी दिखाई नहीं देती हैं। अपने को तो वह सदैव सर्वगुण संपन्न ही समझता है। अपने अवगुणों को भी वह सद्गुणों के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

वृत्तियों का जीवन पर प्रभाव- आध्यात्मिक - मनुष्य की इन वृत्तियों के कारण उसके जीवन पर दो तरह का प्रभाव होता है। एक आध्यात्मिक और दूसरा व्यवहार का। आध्यात्मिक दृष्टि से हम सोचें तो हमें यह दुर्लभ मनुष्य जन्म प्राप्त हुआ है। जिसे प्राप्त करने के लिए देवता भी लालायित रहते हैं। धर्म को थोड़ा भी समझने वाला व्यक्ति जानता है कि जीव की चार गतियाँ होती हैं। देव, मनुष्य, तिर्यंच और नरक। अपने द्वारा किये गये शुभ अथवा अशुभ कर्मों के कारण वह इन चारों गतियों में परिभ्रमण करता रहता है। और इस कर्मबंध की प्रक्रिया का प्रमुख कारण है हमारी वृत्तियां। अशुभ वृत्तियां नरक और तिर्यंच गतियों के कर्मबंध और शुभ वृत्तियां देव और मनुष्य गति के कर्मबंध का कारण है। देव और नरक गति को हम प्रत्यक्ष नहीं देखते लेकिन शास्त्रों में वर्णित उनके स्वरूप में हम विश्वास करते हैं। मनुष्य और तिर्यंच गति हमारे सामने प्रत्यक्ष है। तिर्यंच गति में होनेवाले दुखों को हम प्रतिदिन देखते हैं। इसी प्रकार मनुष्य जाति में भी बिरले पुरुष होते हैं जिन्हें स्वस्थ शरीर, उत्तम कुल, धर्मश्रवण के सुअवसर और सुने गए धर्म के मार्ग पर चलने की रुचि जागृत होती है। उत्तम धर्मगुरुओं का संयोग भी सद्भाग्य से ही प्राप्त होता है, अन्यथा मनुष्य भव प्राप्त करके भी वह जीव पशु की तरह जीवन जीता है और पशु की तरह ही मर जाता है। मनुष्य गति ही एक ऐसी गति है, जहां वह उत्कृष्ट साधना कर सर्वश्रेष्ठ मोक्ष गति को प्राप्त करने का सद्प्रयास कर सकता है। मनुष्य में ज्ञान शक्ति और आचरण शक्ति दोनों विद्यमान होती है।

व्यावहारिक - व्यावहारिक जीवन की दृष्टि से हम देखें तो इन दूषित वृत्तियों के कारण मनुष्य सदैव तनावग्रस्त रहता है।

आज के मानव को हम देखें तो चाहे गरीब हो या अमीर, चाहे संत हो या साधारण व्यक्ति, पदासीन हो अथवा पद विहीन, प्रत्येक व्यक्ति प्रतिक्षण तनावग्रस्त रहता है, चिंता से घिरा रहता है और जितना अधिक धन, जितना बड़ा पद उतना ही अधिक तनाव। इस तनाव का भी सबसे बड़ा कारण यह है कि मनुष्य अपनी इच्छाओं को, आकांक्षाओं को इतना बढ़ा लेता है कि वे दुष्पूर हो जाती हैं और जब इच्छाएं पूरी नहीं होती तो तनाव ग्रस्त हो जाता है और उन्हें पूर्ण करने के लिए अनेक प्रकार के अनैतिक कार्य करने लग जाता है। फिर भी मनुष्य की सभी इच्छायें कभी पूरी नहीं होती हैं। रोज नई-नई इच्छाएं जागृत होती रहती हैं। इसी मानसिक तनाव के कारण मनुष्य अनेक प्रकार की बीमारियों से ग्रसित हो जाता हैं और समय से पूर्व मृत्यु को प्राप्त कर लेता है। हार्ट अटैक, हेमरेज, ब्लडप्रेशर, डायबिटिज आदि तनावग्रस्त जीवन के दुष्परिणाम हैं।

समीक्षण साधना क्यों ?

संसारी दूषित वृत्तियां हमसे कैसे दूर हों। हमारे स्वयं के दोष हमें कैसे दिखाई दें और कैसे हम तनाव-मुक्त, सुखी, प्रसन्न और आत्मिक शांति युक्त जीवन जी सकें, उसका एक मात्र तरीका है- 'समीक्षण ध्यान-साधना'। आचार्य श्री नानेश की यह एक अनुपम देन है जो मनुष्य को सुखी और शांत जीवन जीने की कला सिखाती है। उन्होंने केवल इस साधना विधि को उपदेशित ही नहीं किया लेकिन पहले इसे अपने स्वयं के जीवन में उतारा फिर हमें उस मार्ग पर चलने की प्रेरणा प्रदान की। इसी साधना के फलस्वरूप अनेक विषम परिस्थितियों में भी वे अपने आपको समभाव में स्थिर रख सके।

ध्यान क्या है ?- ध्यान साधना प्रत्येक धर्म में एक प्रचलित साधना विधि है। जैन साहित्य में मन की किसी एक दिशा में स्थिरता को ध्यान कहा है और इसके चार स्वरूप बताये हैं। आर्तध्यान, रौद्रध्यान, धर्मध्यान और शुक्ल ध्यान।

इनमें प्रथम दो अशुभ ध्यान हैं जो अशुभ कर्मबंध के कारण और बाद के दो शुभ ध्यान हैं जो हमें कर्म मुक्ति के मार्ग की ओर अग्रसर करते हैं। शुक्ल ध्यान ध्यान की वह श्रेष्ठतम अवस्था है जो अत्यंत उग्र साधना के पश्चात मोक्ष के निकट होने पर ही पैदा होती है। लेकिन धर्मध्यान ऐसी प्रक्रिया है जो साधारण अभ्यास से कोई

ी साधक प्राप्त कर सकता है । समीक्षण ध्यान-साधना अपनी इन्हीं वृत्तियों को अशुभ से शुभ की ओर मोड़ने की कला है । यद्यपि हमारा अंतिम लक्ष्य है कर्ममुक्त अवस्था प्राप्त करना लेकिन उसे प्राप्त करने के पूर्व अशुभ से शुभ की ओर प्रवृत्त होना आवश्यक है ।

साधक का लक्ष्य - हमारे सबके जीवन का एक मात्र लक्ष्य है- सच्चा सुख और शांति प्राप्त करना । बाहरी भौतिक सुख चाहे वह किसी व्यक्ति से संबंधित हो अथवा वस्तु से, वह निश्चित रूप से अस्थाई है , केवल सुखाभास है । ऐसा सुख एक न एक दिन निश्चित रूप से दुख में परिवर्तित होने वाला है । क्योंकि वह नाशवान वस्तुओं पर आधारित है । सच्चा सुख स्वयं के भीतर आत्मा में है, क्योंकि वह स्थाई है, सदैव साथ रहने वाला है । हमारी आत्मा की तीन स्थितियां होती हैं- बहिरात्मा जो संसार में ही सुख ढूंढ रही हैं, अंतरात्मा जो स्वयं में लीन हैं और परमात्मा जो कर्ममुक्त अवस्था को प्राप्त कर चुके हैं । हमारा लक्ष्य है बहिरात्मा से अंतरात्मा और अंतरात्मा से परमात्म-पद की ओर अग्रसर होना ।

साधना कैसे करें ? : इस परमात्म दशा को प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम हम हमारी दूषित वृत्तियों को अशुभ से शुभ की ओर मोड़ने का प्रयास करते हैं । समीक्षण ध्यान-साधना हमें यही कला सिखाती है । इस साधना के द्वारा सर्वप्रथम हम हमारे मन को एकाग्र करने का प्रयास करते हैं जिसके लिए प्राणायाम की अनेक क्रियाओं का प्रयोग किया जाता है । तत्पश्चात् हम हमारी एक-एक दूषित वृत्ति का चिंतन करते हैं- उसकी उत्पत्ति का कारण और उससे होने वाले दुष्परिणामों का चिन्तन करते हैं और उन्हें अशुभ से शुभ की ओर मोड़ने का प्रयास करते हैं ।

प्रयोग विधि : ध्यान साधना प्रारंभ करने के पूर्व द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावों की शुद्धता और निर्मलता देखना प्रथम आवश्यकता है । आहार की सात्विकता और परिमितता तथा वाणी की निश्चलता अथवा मौन, साधना के अन्य सहायक तत्त्व हैं ।

साधक किसी शांत एकांत स्थान पर, अनुकूल समय देखकर ध्यान मुद्रा में बैठ जाए । नेत्र बंद रखें, गर्दन और रीढ़ की हड्डी सीधी रखे । अपने पहनने के वस्त्र, आसन आदि की शुद्धता और अनुकूलता का पूरा ध्यान रखे । संक्षेप में इस बात का पूरा ध्यान रखे कि किसी तरह का प्रमाद, आलस्य अथवा निद्रा न आने पाये । ध्यान प्रारंभ करने के पूर्व अपने मन में साधना और उससे प्राप्त होनेवाले फल के प्रति पूर्ण विश्वास और उत्साह होना तथा अपने भावों की निर्मलता बनाये रखना अत्यंत आवश्यक है । इसी साधना के द्वारा अनेक महापुरुष मुक्त हुए है

आसन ग्रहण करने के पश्चात् मन को एकाग्र करने के लिए श्वांस के प्रयोग ५-१० मिनट तक करें । मन की एकाग्रता प्राप्त होने पर अपनी विगत दैनिक जीवन-चर्या का चिंतन कर उसका विश्लेषण करें । दिन भर में कौन-कौन से गलत विचार अपने मन में आये अथवा गलत कार्य अपने द्वारा किए गये, उनको एक-एक कर ध्यान में लाये । कभी क्रोध, कभी गलत शब्दों का प्रयोग, कभी अहंकार, कभी किसी रूपवती को देखकर वासना की वृत्ति, कभी स्वार्थ के वशीभूत होकर किसी को ठगने की भावना- ऐसे जो भी गलत कार्य हों उनका चिंतन करे । उनसे होनेवाली हानियां और कर्मबंध का चिंतन करें । इसी प्रकार दिन भर में जो शुभ भाव पैदा हुए हों । दान, दया, करुणा, सेवा के उन्हें भी एक-एक कर ध्यान में लावें । इसके पश्चात् जो गलत कार्य हुए हैं उनके लिए पश्चताप करते हुए भविष्य में न करने का संकल्प अपने मन में करे और जो अच्छे कार्य हुए है उन्हें और अधिक पुष्ट करने का संकल्प करे । पन्द्रह मिनट तक उक्त प्रयोग करने के बाद अंत में मनुष्य जीवन की दुर्लभता, कर्मबंध के स्वरूप और अपनी आत्मा तथा परमात्मा की समानता का चिंतन करते हुए अपनी आत्मा की पवित्रतम दशा प्राप्त करने का चिंतन करे । अंत में चार शरण ग्रहण करते हुए अत्यंत शांत एवं प्रसन्न मुद्रा में ध्यान-साधना से बाहर आने का प्रयास करे । इस दैनिक साधना के अतिरिक्त हम हमारी जो विशेष दूषित वृत्ति हो चाहे वह क्रोध, मान, माया, लोभ की हो अथवा हिंसा,

झूठ, चोरी, वासना, अथवा संग्रह की या अन्य कोई वृत्ति हो तो उस पर भी विशेष चिन्तन करते हुए उसे दूर करने की साधना कर सकते हैं।

संकल्प के साथ साधना सफलता की कुंजी है। प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह संत हो या साधक। साधारण व्यक्ति, स्त्री हो या पुरुष उसके लिए इस प्रकार की दैनिक साधना निश्चित रूप से लाभकारी होगी। आत्म कल्यान के मार्ग पर अग्रसर होने में सहायक होगी।

सभी का कल्याण हो, सबका मंगल हो।

-चांदनी चौक, रतलाम (म.प्र.)

संयमित जीवन हो

एक डाक्टर थे। उनका नाम था डाक्टर थूर। वे अपने क्षेत्र में तो कार्य करते ही थे, उसके अतिरिक्त छात्रों को शिक्षा देने का भी कार्य करते थे। एक दिन एक छात्र ने पूछा-'डाक्टर साहब मैं इस संसार में रहता हुआ सुखी कैसे रह सकता हूं।' कृपया मुझे एक मंत्र बताइये। डाक्टर थूर ने कहा-'यदि तुम सुखी रहना चाहते हो, तो ब्रह्मचर्य का पालन करो।' यह सुनकर छात्र ने कहा-'मेरे लिये,आजीवन ब्रह्मचर्य रखना तो कठिन है। तलवार की धार पर तो एक बार चला भी जा सकता है, किंतु यह व्रत तो लगभग असम्भव है।' डाक्टर ने कहा-'यदि आजीवन ब्रह्मचारी न रह सकते हो तो जीवन में एक बार के अतिरिक्त ब्रह्मचारी रहो।' छात्र ने कहा कि यह भी कठिन है तो डाक्टर ने कहा कि 'महीने में एक बार के अतिरिक्त ही ब्रह्मचारी रहना।' छात्र को इसमें भी कठिनाई प्रतीत हुई तो डाक्टर ने कहा कि महीने में दोबार के अतिरिक्त ही ब्रह्मचारी रहो। किन्तु छात्र के लिये तो यह भी कठिन था। तब डाक्टर ने कहा कि यदि यह भी तुम्हारे लिये कठिन है 'तब तो जब तुम जिस किसी के भी साथ रहो, कफन की सामग्री अपने साथ रखना।'

इस प्रसंग को आपको सामने रखने का यही अभिप्राय है कि जीवन में संयम की अत्यन्त आवश्यकता है। यदि आप मर्यादित जीवन व्यतीत करेंगे तो सुखी रह सकेंगे, अन्यथा अमर्यादित जीवन कभी सफल और सुखी नहीं बन सकेगा।

-आचार्य नानेश

समता दर्शन : एक दृष्टि

समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी, धर्मपाल प्रतिबोधक आचार्य श्री नानेश ने अपने चिन्तन-मनन से ज्वलन्तम युगीन समस्याओं का समाधान आध्यात्मिक दृष्टि से किया। आज के युग में व्याप्त कुरीतियों, व्यसनों, भ्रष्टाचारों का बहिष्कार कर जन समुदाय को दिशा बोध देना उनका प्रमुख ध्येय रहा है।

ऐसे समय में आचार्य श्री नानेश ने विश्व में फैली विषमता का प्रतिघात करते हुए सभी जन को एक अमोघ उपाय बताया है, वह है समता दर्शन।

समता दर्शन पर एक दृष्टि : समता के दार्शनिक एवं व्यावहारिक पहलुओं पर विस्तार से चिंतन किया जा सकता है। समता समग्र जीवन में समाहित होनी चाहिए। समता की विरोधी स्थिति होती है, ममता की स्थिति। ममता में मम शब्द का अर्थ होता है मेरा और ममता का अर्थ है मेरापन। जहां ममता है वहां समता नहीं। समता का अर्थ है- सम, समभाव, समत्व। समभाव बनता है तो समदृष्टि जन्म लेती है। तब सम आचरण ढलता है और साम्यता आ जाती है।

समता का साधक सुख को अपने ही अन्तःकरण में खोजता है और उसके लिए सबसे पहले अन्तरावलोकन करना सीखता है। इस प्रक्रिया से वह एक ओर प्रभु के निर्मल स्वरूप को देखता है तो दूसरी ओर अपनी आत्मा के मैल को धोने के लिए आगे बढ़ता है और वह समतावादी, समताधारी एवं समतादर्शी के सोपानों पर चढ़ता हुआ समता दर्शन से जीवन दर्शन की गहराइयों से, आत्म-दर्शन से साक्षात्कार करता हुआ परमात्म दर्शन की ओर अग्रसर होता है।

समता दर्शन की परिभाषा : दर्शन की परिभाषा प्रस्तुत करते हुए ज्ञानियों ने कहा है कि- दर्शन वह उच्च भूमिका है जहां पर तत्वों का सूक्ष्म विश्लेषण किया जाता है।

समता दर्शन ऐसी तमाम विषमताओं तथा विपरीतता के बीच का ऐसा मार्ग है, जो आज के संतप्त मनुष्य को शांति, सौख्य, मैत्री और आत्मोन्नयन की मंगलकारी दिशा में ले जाता है।

किं जीवनम् ? सम्यक निर्णायकं समतामयच्च यत् तज्जीवनम्।

समता वह अमोघ शास्त्र है जिसका प्रयोग करने से आक्रमणकारियों के जीवन पक्ष भी सभ्य बनकर बलिदान एवं साहस की वास्तविकता को स्वीकार कर लेते हैं

विश्व शांति का एक मात्र अमोघ उपाय है.. समता-दर्शन ....। समियाए धम्मे आरिएहिं पवेइए।

समभाव, समन्वय, साम्यदृष्टि, साम्य विचार व सादगी आदि समता के सूत्र हैं।

समता दर्शन का उद्देश्य : अन्तर्बाह्य विषमताओं का अंत करना ही समता दर्शन का उद्देश्य है। समता दर्शन केवल विचार सामग्री नहीं, विचार क्रांति भी नहीं अपितु यह तत्वत: आचार क्रांति है। अत: इसके विस्फोट की परली आवश्यकता है कि चेतन, जागृत होकर अपने स्वत्व के प्रति सावधान हो जाएं।

आचार्य श्री ने समता दर्शन को व्यापक एवं व्यावहारिक बनाकर प्रस्तुत किया। उन्होंने कर्मासक्ति से कर्म समृद्धि की ओर बढ़ने का आह्वान किया।

'सव्वेसिं जीवियं पियं'

सद् शिक्षा को प्रत्येक मानव के उदात्त मस्तिष्क में भरना ही समता-दर्शन का मूल उद्देश्य माना जाता है।

<u>समता दर्शन के सोपान</u> : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में चहुँ ओर जो विष फैल रहा है उसको मिटाने के लिए आचार्य श्री ने हमें समता-दर्शन दिया। समता दर्शन को प्रत्येक व्यक्ति से लेकर सारे संसार में सकारात्मक रूप देने के लिए आचार्य भगवन ने समता दर्शन के चार सोपान बताये ताकि विश्व में फैली विषमता, विडंबना, विपरीतता, तकरार, विद्रोह की स्थिति मिट सके।

१. समता सिद्धांत-दर्शन : किसी भी वस्तु को अपनाने से पहले उसकी उपयोगिता, अनुपयोगिता का अवलोकन किया जाता है। समता को जीवन में अपनाने से पहले उसके सिद्धांतों को उपयोगी माना जाए, इसका अवलोकन करना चाहिए। मानव ही नहीं प्राणी समाज से संबंधित सभी क्षेत्रों में यथार्थ दृष्टि वस्तु स्वरूप उत्तरदायित्व तथा शुद्ध कर्त्तव्याकर्त्तव्य का ज्ञान एवं सम्यक् सर्वांगीण एवं संपूर्ण चरम विकास की साधना, सिद्धांत दर्शन का मूलाधार है। जीवन के प्रत्येक कार्य में समता सिद्धांत का होना नितांत आवश्यक है। दूसरे के अस्तित्व और अपने अस्तित्व को समान मानना होगा यही इस सोपान के सिद्धांत की प्रमुखता है।

२. समता जीवन-दर्शन : सिद्धान्त रूप से समता को ग्रहण करने के बाद व्यावहारिक जीवन में समता अपने आप आने लगती है। समता जीवन-दर्शन व्यक्ति के व्यावहारिक जीवन को विषमता से हटाकर समता में बदल देता है। सबके लिए एक तथा एक के लिए सब 'जियो और जीने दो' के सिद्धांतों को जीवन में उतारना समता दर्शन है। संयम नियमों को स्वयं को तथा समाज में प्रतिपादित करना समता जीवन-दर्शन है।

३. समता आत्म-दर्शन : समता जीवन दर्शन की साधना से ऊपर उठता हुआ व्यक्ति समता आत्म-दर्शन की ओर अग्रसित होता है। समता आत्म-दर्शन से स्वयं की चेतना में अमूल्य शक्ति स्फूरित करने का आत्मरथ साधन है। आत्म-साधक व्यक्ति जड़ व चेतन के स्व को समझ जाता है और नित्य आत्म-दर्शन के लि साधना में तल्लीन हो जाता है। सतत् एवं सत्य सा पूर्ण सेवा तथा स्वानुभूति के बल पर पुष्ट करते हुए 'स जहां ही अपना घर है' कि भावना उसमें व्याप्त हो जा है और आत्म-दर्शन को प्राप्त कर लेता है।

४. समता परमात्म दर्शन : जब आत्म-साध व्यक्ति विश्व की समस्त आत्माओं के साथ अप आत्मा के समान व्यवहार करेगा तो उसे अपने आप परमात्म दर्शन हो जाएगा क्योंकि उसमें मेरे, तेरे का भ मन में नहीं रहेगा। परमात्मस्वरूप प्रकट होने लगेगा और वीतरागी बन जाएगा। उज्ज्वलतम स्वरूप प्राप्त कर स्वयं परमात्मा बन जाएगा।

इक्कीस सूत्रीय योजना : इन चार सोपानों को मूल बनाकर आचार्य देव ने समता समाज सर्जना पर विशेष बल दिया। विषमता से विषाक्त विश्व में अमृत का संचार करने के लिए समता दर्शन को अपनाना होगा। समता समाज रचना के लिए आचार्य प्रवर ने इक्की सूत्रीय योजना का प्रतिपादन किया।

<u>समता-दर्शन का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महत्व</u> - वर्तमान युग में आत्मा और परमात्मा संबंधी चर्चाएं कुछ धूमिल सी हो रही हैं। पूर्णता की गहराई में मनुष्य प्रवेश नहीं करता वह आत्माभिमुखी नहीं बन पाता। आज की इस स्थिति का कारण यह है कि मानव केवल भौतिक वातावरण के प्रवाह में अपने जीवन को बहा रहा है इसके लिए समता दर्शन का महत्व आवश्यक है, क्योंकि समता दर्शन विषमता के विरूद्ध विवेक युक्त चिन्तन है। विषमता के मूल मानव मन को आज व्यवस्थित एवं संतुलित बनाने की सबसे अधिक आवश्यकता है। इस मानव मन की विषमता को हटाने के लिए समता दर्शन अत्यधिक आवश्यक कड़ी है। समता दर्शन के धरातल पर यदि वर्तमान मानव मन की समस्याओं का समाधान खोजा जाए तो विश्व की सभी समस्याओं का समाधान भी सरलतापूर्वक खोजा जा सकता है। समता दर्शन के मर्म को आंतरिकता से समझना होगा। समता दर्शन क

दिग्दर्शन हमें आचार्य प्रवर ने हर समय कराया। यह किसी व्यक्ति, जाति या दल की धरोहर नहीं है, यह तो आत्मीय गुणों की विकसित अवस्था है, आत्मशक्ति का उभार है, जो आत्मशक्ति प्रत्येक प्राणी में रही है। आज सावधान होकर इस आत्म-शक्ति को पहचानना होगा। तभी अंदर बाहर की सारी विषमता समाप्त होगी। इस युग में आचार्य श्री नानेश के बताये मार्ग पर चलकर समता साधकों एवं चरित्र संपन्न व्यक्तियों का एक ऐसा वर्ग बने जो समता सिद्धांत का प्रचार-प्रसार करे। युद्ध की विभीषिका आज जहां सभ्यता एवं संस्कृति का हनन करने के लिए तत्पर है, वहां समता का मंगलमय स्वर उसे सुरक्षित रख सकता है।

आचार्य भगवन् ने सुदीर्घ-साधना एवं गहन चिन्तन की विथिकाओं में विहरण कर समता-दर्शन का अद्भुत उपहार हमें भेंट किया है। समता से भावी एवं वर्तमान' का नव्य-भव्य निर्माण संभव है। यह समता-दर्शन इस युग के लिए ही नहीं अपितु प्रत्येक युग-युगान्तर के लिए प्रकाश स्तम्भ बनकर रहेगा। शांति का विमल ध्वज इसी के आधार पर फहराया जा सकता है। वर्तमान विषम जीवन को सभी स्तरों पर एक नया परिवर्तन देने के लिए समता दर्शन ही अमृतमय उपाय है। समता-दर्शन डूबते हुए जन-जीवन की एक मात्र पतवार बन सकती है। अन्त में मैं यह कहना चाहती हूं कि इस समता दर्शन को सुनें, पढें व गहन चिन्तन करें और अपने जीवन में उतारें। दूसरों को भी प्रेरणा देवें और अपने आराध्य देव आचार्य श्री नानेश का स्वप्न पूरा करें।

-गंगाशहर (बीकानेर)

गीता का रहस्य

एक बार गांधीजी साबरमती आश्रम का निर्माण करा रहे थे तो गुजरात के एक बड़े विद्वान उनके पास आए और कहने गले, '''महात्मन! मैं आपके पास रह कर गीता का गूढ़ रहस्य समझना चाहता हूं।'' महात्माजी ने उनकी बात सुन ली और उन्होंने रावजी भाई को बुलाया। वे आश्रम की जिम्मेदारी लेकर चल रहे थे। रावजी भाई आए तो महात्माजी ने कहा ''ये गुजरात के प्रख्यात व्यक्ति हैं और अपने पास कोई काम हो तो इन्हें उस पर लगा दें।''

रावजी भाई के पास आश्रम निर्माण का सारा काम था। उन्होंने उनसे कहा कि आप गांधीजी के पास रहना चाहते हैं तो ईंटे उठाकर रखते जाइये वे कुछ बोल नहीं सके। दो चार रोज तो उन्होंने ईंटे उठाई, फिर तंग आ गए और रावजी भाई से कहने लगे-'मेरी तो आपने दुर्दशा कर दी। मै तो गीता का गूढ़ रहस्य समझने के लिए आया था और आपने मजदूर का काम मेरे सुपुर्द कर दिया मेरा काम यह नहीं है। यह तो मजदूरों का काम है।'

यह बात जब गांधीजी के पास गई तो उन्होंने कहा कि यही तो गीता का गूढ़ रहस्य है। आप केवल गादी तकिये के सहारे बैठकर गीता का गूढ़ रहस्य समझना चाहते हैं तो क्या वो समझ में आ सकता है। आप अपने कर्त्तव्य को समझें और जिस क्षेत्र में चल रहे हैं, उसकी जिम्मेदारी लें तो वह गूढ़ रहस्य समझ में आ सकता है।

-आचार्य नानेश

समता दर्शन : एक अनुशीलन

समता, साम्य या समानता मानव जीवन एवं मानव-समाज का शाश्वत दर्शन है। आध्यात्मिक या धार्मिक क्षेत्र हो अथवा आर्थिक, राजनीतिक व सामाजिक- सभी का लक्ष्य समता है, क्योंकि समता मानव-मन के मूल में है। इसी कारण कृत्रिम विषमता की समाप्ति और समता की अवाप्ति सभी को अभीष्ट होती है। जिस प्रकार आत्माएँ मूल में समान होती हैं किन्तु कर्मों का मैल उनमें विभेद पैदा करता है और जिन्हें संयम और नियम द्वारा समान बनाया जा सकता है, उसी प्रकार समग्र मानव में भी स्वस्थ नियम प्रणाली एवं सुदृढ़ संयम की समाजगत समता का भी प्रयत्न किया जा सकता है।

आज जितनी अधिक विषमता है, समता की मांग भी उतनी ही अधिक गहरी है। काश, कि हम उसे छू और महसूस कर सकें तथा समता दर्शन के विचार को व्यापक व्यवहार में ढ़ाल सकें। विचार पहले और बाद उस पर व्यवहार-यही क्रम सुव्यवस्था का परिचायक होता है।

वर्तमान विषमता के मूल में सत्ता व सम्पत्ति पर व्यक्तिगत या पार्टीगत लिप्सा की प्रबलता ही विशेषरूप से कारणभूत है और यही कारण सच्ची मानवता के विकास में बाधक है। समता ही इसका स्थायी व सर्वजनहितकारी निराकरण है।

समता दर्शन का लक्ष्य है कि समता, विचार में हो, दृष्टि और वाणी में हो तथा समता, आचरण के प्रत्येक चरण में हो। जब समता, जीवन के अवसरों की प्राप्ति में होगी और सत्ता और सम्पति के अधिकार में होगी तो वह व्यवहार के समूचे दृष्टिकोण में होगी। समता, मनुष्य के मन में, तो समता समाज के जीवन में। समता भावना की गहराइयों में तो समता साधन की ऊँचाइयों में। प्रगति के ऐसे उत्कृष्ट स्तरों पर समता के सुप्रभाव से मनुष्यत्व तो क्या-ईश्वरत्व भी समीप आने लगेगा।

<u>विकासमान समता-दर्शन</u> :

मानव जीवन गतिशील होता है। उसके मस्तिष्क में नये नये विचारों का उदय होता है। ये विचार प्रकाशित होकर अन्य विचारों को आन्दोलित करते हैं। फिर समाज में विचारों के आदान-प्रदान एवं संघर्ष-समन्वय का क्रम चलता है। इसी विचार-मन्थन में से विचार-नवनीत निकालने का कार्य युग-पुरुष किया करते हैं।

कहा जाता है कि समय बलवान होता है। यह सही है कि समय का बल अधिकांशतः लोगों को अपने प्रवाह में बहाता है, किन्तु समय को अपने पीछे करने वाले ही युगपुरुष होते हैं जो युगानुकूल वाणी का उद्घोष करके समय के चक्र को दिशा-दान करते हैं। इन्हीं युगपुरुषों एवं विचारकों के आत्म-दर्शन से समतादर्शन का विकास होता आया है। इस विकास पर महापुरुषों के चिन्तन की छाप है तो समय-प्रवाह की छाप भी। और जब आप समतादर्शन पर विचार करें तो यह ध्यान रखने के साथ कि अतीत में महापुरुषों ने इसके सम्बन्ध में अपना विचार-सार क्या दिया है-यह भी ध्यान रखने की आवश्यकता होगी कि वर्तमान युग के संदर्भ में और विचारों के नवीन परिप्रेक्ष्य में आज हम समता-दर्शन का किस प्रकार स्वरूप निर्धारण एवं विश्लेषण करें ?

महावीर की समताधारा :

ऐतिहासिक अध्ययन से यह तथ्य सुस्पष्ट है कि समता दर्शन का सुगठित एवं मूर्त विचार सबसे पहले भगवान पार्श्वनाथ एवं महावीर ने दिया। जब मानव समाज विषमता एवं हिंसा के चक्रव्यूह में फंसा तड़प रहा था, जब महावीर ने गंभीर चिन्तन के पश्चात् समता दर्शन की जिस पुष्ट धारा का प्रवाह प्रवाहित किया, वह आज भी युगपरिवर्तन के बावजूद प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है। इस विचारधारा और उनके बाद जो चिन्तन-धारा चली है- यदि दोनों का सम्यक् विश्लेषण करके आज समता-दर्शन की स्पष्टता ग्रहण की जाय और फिर उसे व्यवहार में उतारा जाय तो निस्सन्देह मानव समाज को सर्वांगीण समता के पथ की ओर मोड़ा जा सकता है।

महावीर ने समता के दोनों पक्षों-दर्शन एवं व्यवहार को समान रूप से स्पष्ट किया तथा वे सिद्धान्त बता कर ही नहीं रह गये किन्तु उन्होंने उन सिद्धान्तों को साथ ही साथ स्वयं क्रियात्मक रूप भी दिया। महावीर के बाद की चिन्तनधारा का सही अध्ययन करने के लिये पहले महावीर की समता धारा को ठीक से समझ लें- यह अधिक उपयुक्त रहेगा और समतादर्शन को आज उसके नवीन परिप्रेक्ष्य में परिभाषित करने में अधिक सुविधा रहेगी।

'सभी आत्माएँ समान हैं' का उद्घोष :

महावीर ने समता के मूल बिन्दु को सबसे पहिले पहिचाना और बताया। उन्होंने उद्घोष किया कि सभी आत्माएँ समान हैं याने कि सभी आत्माओं में अपना सर्वोच्च विकास सम्पादित करने की समान शक्ति रही हुई है। उस शक्ति को प्रस्फुटित एवं विकसित करने की समस्या अवश्य है किन्तु लक्ष्य प्राप्ति के सम्बन्ध में हताशा या निराशा का कोई कारण नहीं है। इसी विचार ने यह स्थिति स्पष्ट की कि अप्पा सो परमप्पा अर्थात् ईश्वर कोई अलग शक्ति नहीं, जो सदा से केवल ईश्वर रूप में ही रही हुई हो बल्कि संसार में रही हुई आत्मा ही अपनी साधना से जब उच्चतम विकास साध लेती है तो वही परम पद पाकर परमात्मा का स्वरूप ग्रहण कर लेती है। वह परमात्मा सर्वशक्तिमान् एवं पूर्ण ज्ञानवान तो होता है किन्तु संसार से उनका कोई सम्बन्ध उस अवस्था में नहीं रहता।

यह क्रान्ति का स्वर महावीर ने गुंजाया कि संसार की रचना ईश्वर नहीं करता और इसे भी उन्होंने मिथ्या बताया कि ऐसे ईश्वर की इच्छा के बिना संसार में एक पत्ता भी नहीं हिलता। संसार की रचना को उन्होंने अनादि कर्म प्रकृति पर आधारित बताकर आत्मीय समता की जो नींव रखी- उस पर समता का प्रासाद खड़ा करना सरल हो गया।

सबसे पहले समदृष्टि :

आत्मीय समता की आधारशिला पर महावीर ने संदेश दिया कि सबसे पहले समदृष्टि बनो। समदृष्टि का शाब्दिक अर्थ है समान नजर रखना, लेकिन इसका गूढ़ार्थ बहुत गंभीर और विचारणीय है।

मनुष्य का मन जब तक संतुलित एवं संयमित नहीं होता तब तक वह अपनी विचारणा के घात-प्रतिघातों से टकराता रहता है। उसकी वृत्तियां चंचलता के उतार-चढाव में इतनी अस्थिर बनी रहती हैं कि सद् या असद् का उसे विवेक नहीं रहता। आप जानते हैं कि मन की चंचलता राग और द्वेष की वृत्तियों से चलायमान रहती है। राग इस छोर पर तो द्वेष उस छोर पर मन को इधर-उधर भटकाते हैं। इससे मनुष्य की दृष्टि विषम बनती है। राग वाला अपना और द्वेष वाला पराया तो अपने और पराये का जहां भेद बनता है, वहां दृष्टिभेद रहेगा ही।

महावीर ने इस कारण मानव-मन की चंचलता पर पहली चोट की क्योंकि मन ही तो बन्धन और मुक्ति का मूल कारण होता है। चंचलता राग और द्वेष को हटाने से हटती है और चंचलता हटेगी तो विषमता हटेगी। विषम दृष्टि हटने पर ही समदृष्टि उत्पन्न होगी।

सबसे पहले समदृष्टिपना आवे-यह वांछनीय है क्योंकि समदृष्टि जो बन जायगा यह स्वयं तो समता पथ पर आरूढ होगा ही किन्तु अपने सम्यक् संसर्ग से वह

दूसरों को भी विषमता के चक्रव्यूह से बाहर निकालेगा। इस प्रयास का प्रभाव जितना व्यापक होगा उतना ही व्यक्ति एवं समाज का सभी क्षेत्रों में चलनेवाला क्रम सही दिशा की ओर परिवर्तित होने लगेगा।

<u>श्रावकत्व एवं साधुत्व की उच्चतर श्रेणियां</u> :

समदृष्टि होना समता के लक्ष्य की ओर अग्रसर होने का समारंभ मात्र है। फिर महावीर ने कठिन क्रियाशीलता का क्रम बताया। समतामय दृष्टि के बाद समतामय आचरण की पूर्ति के लिए दो स्तरों की रचना की गई।

इसमें पहला स्तर रखा श्रावकत्व का। श्रावक के बारह अणुव्रत बताये गये हैं, जिनमें पहले के पांच मूल गुण कहलाते हैं एवं शेष सात उत्तर गुण। मूल पांच व्रत हैं- अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह। अनुरक्षक सात व्रत हैं- दिशा मर्यादा, उपभोग-परिभोग-परिमाण, अनर्थदंड त्याग, सामायिक, देशावकासिक, प्रतिपूर्ण पौषध एवं अतिथि-संविभाग व्रत।

श्रावक के जो पांच मूल व्रत हैं- ये ही साधु के पांच महाव्रत हैं। दोनों में अन्तर यह है कि जहां श्रावक स्थूल हिंसा, झूठ, चोरी, परस्त्रीगमन एवं सीमित परिग्रह का त्याग करता है, वहां साधु सम्पूर्ण रूप से हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन एवं परिग्रह का त्याग करता है। नीचे का स्तर श्रावक का है तो साधु त्याग की उच्च श्रेणियों में रमण करता हुआ समता दर्शन की सूक्ष्म रीति से साधना करता है। महावीर का मार्ग एक दृष्टि से निवृत्तिप्रधान मार्ग कहलाता है- वह इसलिये कि उनकी शिक्षाएं मनुष्य को जड़ पदार्थों के व्यर्थ व्यामोह से हटाकर चेतना के ज्ञानमय प्रकाश में ले जाना चाहती हैं। निवृत्ति का विलोम है प्रवृत्ति अर्थात् आन्तरिकता से विस्मृत बनकर बाहर ही बाहर मृगतृष्णा के पीछे भटकते रहना। जहां यह भटकाव है, वहां स्वार्थ है, विकार है और विषमता है। समता की सीमा रेखा में लाने, बनाये रखने और आगे बढ़ाने के उद्देश्य से ही श्रावकत्व एवं साधुत्व की उच्चतर श्रेणियां निर्मित की गईं।

जानने की सार्थकता मानने में है और मानना तभी सफल बनता है जब उसके अनुसार आचरण किया जाय। विशिष्ट महत्त्व तो करने का ही है। आचरण ही जीवन को आगे बढ़ाता है- यह अवश्य है कि आचरण अन्धा न हो, विकृत न हो।

<u>विचार और आचार में समता</u> :

दृष्टि जब सम होती है अर्थात् उसमें भेद नहीं होता, विकार नहीं होता और अपेक्षा नहीं होती, तब उसकी नजर में जो आता है वह न तो राग या द्वेष से कलुषित होता है और न स्वार्थभाव से दूषित। वह निरपेक्ष दृष्टि स्वभाव से देखती है। विचार और आचार से समता का यही अर्थ है कि किसी समस्या पर सोचें अथवा किसी सिद्धान्त पर कार्यान्वयन करें तो उस समय समदृष्टि एवं समभाव रहना चाहिये। इसका अर्थ यह नहीं कि सभी विकारों की एक ही लीक को मानें या एक ही लीक पर भेड़ वृत्ति से चलें। व्यक्ति के चिन्तन या कृतित्व या स्वातंत्र्य का लोप नहीं होना चाहिये बल्कि ऐसी स्वतन्त्रता तो सदा उन्मुक्त रहनी चाहिये।

समदृष्टि एवं समभाव के साथ बड़े से बड़े समूह का भी चिन्तन या आचरण होगा तो समता का यह रूप उसमें दिखाई देगा कि सभी एक दूसरे की हितचिन्ता में निरत हैं और कोई भी ममत्व या मूर्छा का मारा नहीं है। निरपेक्ष चिन्तन का फल विचार समता में ही प्रकट होगा, किन्तु यदि उस चिन्तन के साथ दंभ, हठवाद अथवा यश लिप्सा जुड़ जाय तो वह विचार संघर्षशील बनता है। ऐसे संघर्ष का निवारक महावीर का सिद्धान्त है, अनेकान्तवाद या सापेक्षवाद, जिसका अर्थ है कि प्रत्येक विचार में कुछ न कुछ सत्यांश होता है और अपेक्षा से भी सत्यांश होता है तो अंशों को जोड़कर पूर्ण सत्य से साक्षात्कार करने का यत्न किया जाय। यह विचार संघर्ष से हटकर विचार समन्वय का मार्ग है ताकि प्रत्येक विचार की अच्छाई को ग्रहण कर लें।

आचार समता के लिये पांच मूल व्रत हैं। मनुष्य अपनी शक्ति के अनुसार इन व्रतों की आराधना में अपने

बढ़ता रहे तो स्वार्थ-संघर्ष मिट सकता है। परिग्रह का मोह छोड़ें या घटावें और राग द्वेष की वृत्तियों को हटावें तो हिंसा छूटेगी ही- चोरी और झूठ भी छूटेगा तथा काम-वासना की प्रबलता भी मिटेगी। सार रूप में महावीर की समताधारा विचारों और स्वार्थों के संघर्ष को मिटाने में सशक्त है, बशर्ते कि उस धारा में अवगाहन किया जाय।

चतुर्विध संघ एवं समता :

महावीर ने इस समता दर्शन को व्यावहारिक बनाने के लिये जिस चतुर्विध संघ की स्थापना की, उसकी आधारशिला भी इसी समता पर रखी गई। इस संघ में साधु, साध्वी, श्रावक एवं श्राविका वर्ग का समावेश किया गया। साधना के स्तरों में अन्तर होने पर भी दिशा एक ही होने से श्रावक एवं साधु वर्ग को एक साथ संघ-बद्ध किया गया। दूसरी ओर उन्होंने लिंग भेद भी नहीं किया-साध्वी और श्राविका को साधु एवं श्रावक वर्ग की श्रेणी में ही रखा। जाति भेद के तो महावीर मूलत: ही विरोधी थे। इस प्रकार महावीर के चतुर्विध संघ का मूलाधार ही समता है। दर्शन और व्यवहार के दोनों पक्षों में समता को मूर्त रूप देने का जितना श्रेय महावीर को है, उतना संभवत: किसी अन्य को नहीं दिया जा सकेगा।

समता दर्शन का नवीन परिप्रेक्ष्य :

युग बदलता है तो परिस्थितियाँ बदलती है। व्यक्तियों के सहजीवन की प्रणालियाँ बदलती हैं तो उनके विचार और आचार के तौर-तरीकों में तदनुसार परिवर्तन आता है। यह सही है कि शाश्वत तत्त्व में एवं मूल व्रतों में परिवर्तन नहीं होता। सत्य ग्राह्य है तो वह हमेशा ग्राह्य ही रहेगा, किन्तु सत्य-प्रकाशन के रूपों में युगानुकूल परिवर्तन होना स्वाभाविक है। मानव समाज स्थगित नहीं रहता बल्कि निरन्तर गति करता रहता है तो गति का अर्थ होता है एक स्थान पर टिके नहीं रहना और एक स्थान पर टिके नहीं रहे तो परिस्थितियों का परिवर्तन अवश्यंभावी है।

मनुष्य एक चिन्तक और विवेकशील प्राणी होता है। वह प्रगति भी करता है तो विगति भी। किन्तु यह सत्य है कि वह गति अवश्य करता है। इसी गतिचक्र में परिप्रेक्ष्य भी बदलते रहते हैं। जिस दृष्टि से एक तत्त्व या पदार्थ को कल देखा था, शायद समय, स्थिति आदि के परिवर्तन से वही दृष्टि आज उसे कुछ भिन्न कोण से देखे और कोण भी तो देश, काल और भाव की अपेक्षा से बदलते रहते हैं। अत: स्वस्थ दृष्टिकोण यह होगा कि परिवर्तन के प्रवाह को भी समझा जाय तथा परिवर्तन के प्रवाह में शाश्वतता तथा मूल व्रतों को कदापि विस्मृत न होने दिया जाय। दोनों का समन्वित रूप ही श्रेयस्कर होता है।

इसी दृष्टिकोण से समता दर्शन को भी आज हमें उसके नवीन परिप्रेक्ष्य में देखने एवं उसके आधार पर अपनी आचरण विधि निर्धारित करने में अवश्य ही जिज्ञासा रखनी चाहिये।

वैज्ञानिक विकास एवं सामाजिक शक्ति का उभार :

वैज्ञानिकों के विकास ने मानव जीवन की चली आ रही परम्परा में एक अचिन्तनीय क्रान्ति की है। व्यक्ति की जान पहिचान का दायरा जो पहले बहुत छोटा था- समय एवं दूरी पर विज्ञान की विजय ने उसे अत्यधिक विस्तृत बना दिया है। आज साधारण से साधारण व्यक्ति का भी प्रत्यक्ष परिचय काफी बढ़ गया है तो रेडियो, टेलीविजन एवं समाचार पत्रों के माध्यम से उसकी जानकारी का क्षेत्र तो समूचे ज्ञात विश्व तक फैल गया है।

इस विस्तृत परिचय ने व्यक्ति को अधिकाधिक सामाजिक बनाया क्योंकि उपयोगी पदार्थों के विस्तार से उसका एकावलम्बन टूट सा गया-समाज का अवलम्बन पग-पग पर आवश्यक हो गया। अधिक परिचय से अधिक सम्पर्क और अधिक सामाजिकता फैलने लगी। सामाजिकता के प्रसार का अर्थ हुआ सामाजिक शक्ति का नया उभार।

तब तक व्यक्ति का प्रभाव अधिक था जब समाज का सामूहिक शक्ति के रूप में प्रभाव नगण्य था। अतः व्यक्ति की सर्वोच्च प्रतिभा से ही सारे समाज को किसी प्रकार का मार्गदर्शन संभव था। तब राजनीति और अर्थनीति की धुरी भी व्यक्ति के ही चारों ओर घूमती थी। राजतंत्र का प्रचलन था और राजा ईश्वर का रूप समझा जाता था। उसकी इच्छा का पालन ही कानून था। अर्थनीति भी राजा के आश्रय में ही चलती थी।

वैज्ञानिक विकास एवं सामाजिक शक्ति के उभार ने परिवर्तन के चक्र को तेजी से घुमाना शुरू किया।

राजनीतिक एवं आर्थिक समता की ओर :

आधुनिक इतिहास का यह बहुत लम्बा अध्याय है कि इस प्रकार विभिन्न देशों में जनता को राजतंत्र से कठिन और बलिदानी लड़ाइयाँ लड़नी पड़ीं तथा दीर्घ संघर्ष के बाद अलग-अलग देशों में अलग-अलग समय में वह राजतंत्र की निरंकुशता से मुक्त हो सकी। इस मुक्ति के साथ ही लोकतंत्र का इतिहास प्रारंभ होता है। जनता की इच्छा का बल प्रकट होने लगा और जन प्रतिनिध्यात्मक सरकारों की रचना शुरू हुई। इसके आधार पर संसदीय लोकतंत्र की नींव पड़ी।

लोकतंत्र की जो छोटी सी व्याख्या की गई है कि वह तंत्र जो जनता का, जनता के द्वारा तथा जनता के लिये हो-इस स्थिति को प्रकट करती है कि एक व्यक्ति की इच्छा नहीं, बल्कि समूह की इच्छा प्रभावशील होगी। व्यक्ति अच्छा भी हो सकता है और बुरा भी तथा एक ही व्यक्ति एक बार अच्छा हो सकता है तो दूसरी बार बुरा भी, अतः एक ही व्यक्ति की अच्छाई पर अगणित व्यक्ति निर्भर रहें- यह समता की दृष्टि से न्यायोचित नहीं माने जाने लगा। समूह की इच्छा एकायक नहीं बदलती और न ही अनुचित की ओर आसानी से जा सकती है, अतः समूह की इच्छा को प्रमुखता देने का प्रयत्न भी लोकतंत्र के रूप में सामने आया।

लोकतंत्र के रूप में राजनीतिक समानता की स्थापना हुई कि छोटे बड़े प्रत्येक नागरिक को एक मत समान रूप से देने का अधिकार है और बहुमत मिलाकर अपने प्रतिनिधि का चुनाव किया जाय। यह पक्ष उ... है कि व्यक्ति अपने स्वार्थों के वशीभूत होकर किस प्रक... अच्छी से अच्छी व्यवस्था को तहस-नहस कर सकते हैं किन्तु लोकतंत्र का ध्येय यही है कि सर्वजन हित एवं साम्य के लिये व्यक्ति की उद्दाम कामनाओं पर नियंत्र... रखा जाय।

चिन्तन की प्रगति के साथ इसी ध्येय को आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में भी सफल बनाने के प्रयास प्रारं... हुए। इन प्रयासों ने मनुष्यकृत आर्थिक विषमता पर करा... चोटें की और जिन सामाजिक सिद्धान्तों का निर्मा... किया, उनमें समाजवाद एवं साम्यवाद प्रमुख हैं। इ... सिद्धान्तों का विकास भी धीरे-धीरे हुआ और कार्ल मार्क्स ने साम्यवाद के रूप में इस युग में एक पूरा जीवन-दर्शन प्रस्तुत किया। युग अलग-अलग था, किन्तु क्रान्ति की जो धारा अपरिग्रह के रूप में महावीर ने प्रवाहित की, वैचारिक दृष्टि से कार्ल मार्क्स पर भी उसका कुछ प्रभाव था। कार्ल मार्क्स की भी यही तड़प थी कि यह अर्थ व्यक्तिगत स्वामित्व के बन्धनों से छूट कर जन-जन के कल्याण का साधन बन सके। व्यक्तिगत स्वामित्व के छूटने का अर्थ होगा परिग्रह का ममत्व छूटना। सम्पत्ति पर सार्वजनिक स्वामित्व की स्थापना से धन-लोलुपता नहीं रहती है। मानवता प्रमुख रहे और धन उसके साधन रूप में गौण स्थान पर, यह साम्यवाद का लक्ष्य मार्क्स ने बताया कि एक परिवार की तरह सारे समाज में आर्थिक एवं सामाजिक समानता का प्रसार होना चाहिए।

अर्थ का अर्थ और अर्थ का अनर्थ :

सामाजिक जीवन के वैज्ञानिक विकास की ओर दृष्टिपात करें तो विदित होगा कि इस प्रक्रिया में अर्थ का भारी प्रभाव रहा है। जिस वर्ग के हाथों में अर्थ का नियंत्रण रहा, उसी के हाथों में सारे समाज की सत्ता सिमटी रही बल्कि यों कहना चाहिए कि समाज के विभिन्न क्षेत्रों में समता प्राप्त करने के जो प्रयत्न चले अथवा कि जो प्रयत्न सफल भी हो गये-अर्थ की सत्ता

वालों ने उन्हें नष्ट कर दिया। आज भी इसी अर्थ के अनर्थ रूप जगह-जगह लोकतंत्र की अथवा साम्यवाद तक की प्रक्रियाएं भी दूषित बनाई जा रही हैं।

सम्पत्ति के अनुभाव का उदय तब हुआ माना जाता है जब मनुष्य का प्रकृति का निखालिस आश्रय छूट गया और उसे अर्जन के कर्मक्षेत्र में प्रवेश करना पड़ा। जिसके हाथ में अर्जन एवं संचय का सूत्र रहा- सत्ता का सूत्र भी उसी ने पकड़ा। आधुनिक युग में पूंजीवाद एवं साम्राज्यवाद तक की गति इसी परिपाटी पर चली जो अनर्थ का विषमतम रूप इन प्रणालियों के रूप में सामने आया जिनका परिणाम विश्व युद्ध, नरसंहार एवं आर्थिक शोषण के रूप में फूटता जा रहा है।

अर्थ का अर्थ जब तक व्यक्ति के लिए ही और व्यक्ति के नियंत्रण में रहेगा तब तक वह अनर्थ का मूल भी बना रहेगा, क्योंकि वह उसे त्याग की ओर बढने से रोकेगा, उसकी परिग्रह-मूर्छा को काटने में कठिनाई आती रहेगी। इसलिए अर्थ का अर्थ समाज से जुड़ जाय और उसमें व्यक्ति की अर्थाकांक्षाओं को खुल कर खेलने का अवसर न हो तो संभव है, अर्थ के अनर्थ को मिटाया जा सके।

<u>दोनों छोरों को मिलाने की जरूरत</u> :

ये सारे प्रयोग फिर भी बाह्य प्रयोग ही हैं और बाह्य प्रयोग तभी सफल बन सकते हैं, जब अन्तर का धरातल उन प्रयोगों की सफलता के अनुकूल बना लिया गया हो। तकली से सूत काता जाता है और कते हुए सूत से वस्त्र बनाकर किसी भी नंगे बदन को ढका जा सकता है लेकिन कोई दुष्ट प्रकृति का मनुष्य तकली से सूत न कातकर उसे किसी दूसरे की आंख में घुसेड़ दे तो क्या हम उसे तकली का दोष मानें ? सज्जन प्रकृति का मनुष्य बुराई में भी अच्छाई को ही देखता है लेकिन दुष्ट प्रकृति का मनुष्य अच्छे से अच्छे साधन से भी बुराई करने की कुचेष्टा करता रहता है।

तो एक ही कार्य के दो छोर हैं-व्यक्ति आत्म-नियंत्रण एवं आत्म-साधना से श्रेष्ठ प्रकृतियों में ढलता हुआ उच्चतम विकास करे और साधारण रूप से और उसकी साधारण स्थिति में सामाजिक नियंत्रण से उसको समता की लीक पर चलाने की प्रणालियां निर्मित की जाय। ये दोनों छोर एक दूसरे के पूरक बनें-आपस में जुड़ें, तब व्यक्ति से समाज और समाज से व्यक्ति का निर्माण सहज बन सकेगा।

सामान्य स्थिति अधिकांशत: ऐसी ही रहती है कि समाज के बहुसंख्यक लोग सामान्य मानस के होते हैं, जिन पर किसी न किसी प्रकार का नियंत्रण रहे तो वे सामान्य गति से चलते रहते हैं, वरना रास्ते से भटक जाना उनके लिए आसान होता है। तो जो लोग प्रबुद्ध होते हैं, वे स्वयं भ्रष्ट न होकर अपनी सत्चेतना को जागृत रखते हुए यदि ऐसी सामाजिक स्थितियां बनावें जो सामान्यजन के नैतिक विकास को प्रोत्साहित करती हो तो वह सर्वथा वांछनीय माना जायेगा।

<u>समता के समरस स्वर</u> :

वर्तमान विषमता की कर्कश ध्वनियों के बीच आज साहस करके समता के समरस स्वरों को सारी दिशाओं में गुंजायमान करने की आवश्यकता है। सम्पूर्ण मानव समाज ही नहीं, समूचा प्राणि-समाज भी इन स्वरों से आह्लादित हो उठेगा। जीवन के सभी क्षेत्रों में फैली विषमता के विरुद्ध मनुष्य को संघर्ष करना ही होगा क्योंकि मनुष्यता का इस विषम वातावरण में निरन्तर ह्रास होता ही जा रहा है।

यह ध्रुव सत्य है कि मनुष्य गिरता, उठता और बदलता रहेगा किन्तु समूचे तौर पर मनुष्यता कभी समाप्त नहीं हो सकेगी और आज भी मनुष्यता का अस्तित्व डूबेगा नहीं। वह सो सकती है, मर नहीं सकती और अब समय आ गया है जब मनुष्यता की सजीवता लेकर मनुष्य को उठना होगा-जागना होगा और क्रांति की पताका को उठाकर परिवर्तन का चक्र घुमाना होगा। क्रांति यही कि वर्तमान विषमताजन्य सामाजिक मूल्यों को हटाकर समता के नये मानवीय मूल्यों की स्थापना। इसके लिए प्रबुद्ध एवं युवावर्ग को विशेष रूप से आगे आना होगा और

तब तक व्यक्ति का प्रभाव अधिक था जब समाज का सामूहिक शक्ति के रूप में प्रभाव नगण्य था। अतः व्यक्ति की सर्वोच्च प्रतिभा से ही सारे समाज को किसी प्रकार का मार्गदर्शन संभव था। तब राजनीति और अर्थनीति की धुरी भी व्यक्ति के ही चारों ओर घूमती थी। राजतंत्र का प्रचलन था और राजा ईश्वर का रूप समझा जाता था। उसकी इच्छा का पालन ही कानून था। अर्थनीति भी राजा के आश्रय में ही चलती थी।

वैज्ञानिक विकास एवं सामाजिक शक्ति के उभार ने परिवर्तन के चक्र को तेजी से घुमाना शुरू किया।

राजनीतिक एवं आर्थिक समता की ओर :

आधुनिक इतिहास का यह बहुत लम्बा अध्याय है कि इस प्रकार विभिन्न देशों में जनता को राजतंत्र से कठिन और बलिदानी लड़ाइयाँ लड़नी पड़ी तथा दीर्घ संघर्ष के बाद अलग-अलग देशों में अलग-अलग समय में वह राजतंत्र की निरंकुशता से मुक्त हो सकी। इस मुक्ति के साथ ही लोकतंत्र का इतिहास प्रारंभ होता है। जनता की इच्छा का बल प्रकट होने लगा और जन प्रतिनिध्यात्मक सरकारों की रचना शुरू हुई। इसके आधार पर संसदीय लोकतंत्र की नींव पड़ी।

लोकतंत्र की जो छोटी सी व्याख्या की गई है कि वह तंत्र जो जनता का, जनता के द्वारा तथा जनता के लिये हो-इस स्थिति को प्रकट करती है कि एक व्यक्ति की इच्छा नहीं, बल्कि समूह की इच्छा प्रभावशील होगी। व्यक्ति अच्छा भी हो सकता है और बुरा भी तथा एक ही व्यक्ति एक बार अच्छा हो सकता है तो दूसरी बार बुरा भी, अतः एक ही व्यक्ति की अच्छाई पर अगणित व्यक्ति निर्भर रहें- यह समता की दृष्टि से न्यायोचित नहीं माने जाने लगा। समूह की इच्छा यकायक नहीं बदलती और न ही अनुचित की ओर आसानी से जा सकती है, अतः समूह की इच्छा को प्रमुखता देने का प्रयत्न भी लोकतंत्र के रूप में सामने आया।

लोकतंत्र के रूप में राजनीतिक समानता की स्थापना हुई कि छोटे बड़े प्रत्येक नागरिक को एक मत समान रूप से देने का अधिकार है और बहुमत मिलाकर अपने प्रतिनिधि का चुनाव किया जाय। यह पक्ष अलग है कि व्यक्ति अपने स्वार्थों के वशीभूत होकर किस प्रकार अच्छी से अच्छी व्यवस्था को तहस-नहस कर सकते हैं, किन्तु लोकतंत्र का ध्येय यही है कि सर्वजन हित एवं साम्य के लिये व्यक्ति की उद्दाम कामनाओं पर नियंत्रण रखा जाय।

चिन्तन की प्रगति के साथ इसी ध्येय को आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में भी सफल बनाने के प्रयास प्रारंभ हुए। इन प्रयासों ने मनुष्यकृत आर्थिक विषमता पर करारी चोटें की और जिन सामाजिक सिद्धान्तों का निर्माण किया, उनमें समाजवाद एवं साम्यवाद प्रमुख है। इन सिद्धान्तों का विकास भी धीरे-धीरे हुआ और कार्ल मार्क्स ने साम्यवाद के रूप में इस युग में एक पूरा जीवन-दर्शन प्रस्तुत किया। युग अलग-अलग था, किन्तु क्रान्ति की जो धारा अपरिग्रह के रूप में महावीर ने प्रवाहित की, वैचारिक दृष्टि से कार्ल मार्क्स पर भी उसका कुछ प्रभाव था। कार्ल मार्क्स की भी यही तड़प थी कि यह अर्थ व्यक्तिगत स्वामित्व के बन्धनों से छूट कर जन-जन के कल्याण का साधन बन सके। व्यक्तिगत स्वामित्व के छूटने का अर्थ होगा परिग्रह का ममत्व छूटना। सम्पत्ति पर सार्वजनिक स्वामित्व की स्थापना से धन-लोलुपता नहीं रहती है। मानवता प्रमुख रहे और धन उसके साधन रूप में गौण स्थान पर, यह साम्यवाद का लक्ष्य मार्क्स ने बताया कि एक परिवार की तरह सारे समाज में आर्थिक एवं सामाजिक समानता का प्रसार होना चाहिए।

अर्थ का अर्थ और अर्थ का अनर्थ :

सामाजिक जीवन के वैज्ञानिक विकास की ओर दृष्टिपात करें तो विदित होगा कि इस प्रक्रिया में अर्थ का भारी प्रभाव रहा है। जिस वर्ग के हाथों में अर्थ का नियंत्रण रहा, उसी के हाथों में सारे समाज की सत्ता सिमटी रही बल्कि यों कहना चाहिए कि समाज के विभिन्न क्षेत्रों में समता प्राप्त करने के जो प्रयत्न चले अथवा कि जो प्रयत्न सफल भी हो गये-अर्थ की सत्ता

वालों ने उन्हें नष्ट कर दिया। आज भी इसी अर्थ के अनर्थ रूप जगह-जगह लोकतंत्र की अथवा साम्यवाद तक की प्रक्रियाएं भी दूषित बनाई जा रही हैं।

सम्पत्ति के अनुभाव का उदय तब हुआ माना जाता है जब मनुष्य का प्रकृति का निखालिस आश्रय छूट गया और उसे अर्जन के कर्मक्षेत्र में प्रवेश करना पड़ा। जिसके हाथ में अर्जन एवं संचय का सूत्र रहा- सत्ता का सूत्र भी उसी ने पकड़ा। आधुनिक युग में पूंजीवाद एवं साम्राज्यवाद तक की गति इसी परिपाटी पर चली जो अनर्थ का विषमतम रूप इन प्रणालियों के रूप में सामने आया जिनका परिणाम विश्व युद्ध, नरसंहार एवं आर्थिक शोषण के रूप में फूटता जा रहा है।

अर्थ का अर्थ जब तक व्यक्ति के लिए ही और व्यक्ति के नियंत्रण में रहेगा तब तक वह अनर्थ का मूल भी बना रहेगा, क्योंकि वह उसे त्याग की ओर बढ़ने से रोकेगा, उसकी परिग्रह-मूर्छा को काटने में कठिनाई आती रहेगी। इसलिए अर्थ का अर्थ समाज से जुड़ जाय और उसमें व्यक्ति की अर्थाकांक्षाओं को खुल कर खेलने का अवसर न हो तो संभव है, अर्थ के अनर्थ को मिटाया जा सके।

दोनों छोरों को मिलाने की जरूरत :

ये सारे प्रयोग फिर भी बाह्य प्रयोग ही हैं और बाह्य प्रयोग तभी सफल बन सकते हैं, जब अन्तर का धरातल उन प्रयोगों की सफलता के अनुकूल बना लिया गया हो। तकली से सूत काता जाता है और कते हुए सूत से वस्त्र बनाकर किसी भी नंगे बदन को ढका जा सकता है लेकिन कोई दुष्ट प्रकृति का मनुष्य तकली से सूत न कातकर उसे किसी दूसरे की आंख में घुसेड़ दे तो क्या हम उसे तकली का दोष मानें ? सज्जन प्रकृति का मनुष्य बुराई में भी अच्छाई को ही देखता है लेकिन दुष्ट प्रकृति का मनुष्य अच्छे से अच्छे साधन से भी बुराई करने की कुचेष्टा करता रहता है।

तो एक ही कार्य के दो छोर हैं-व्यक्ति आत्म-नियंत्रण एवं आत्म-साधना से श्रेष्ठ प्रकृतियों में ढलता हुआ उच्चतम विकास करे और साधारण रूप से और उसकी साधारण स्थिति में सामाजिक नियंत्रण से उसको समता की लीक पर चलाने की प्रणालियां निर्मित की जाय। ये दोनों छोर एक दूसरे के पूरक बनें-आपस में जुड़ें, तब व्यक्ति से समाज और समाज से व्यक्ति का निर्माण सहज बन सकेगा।

सामान्य स्थिति अधिकांशतः ऐसी ही रहती है कि समाज के बहुसंख्यक लोग सामान्य मानस के होते हैं, जिन पर किसी न किसी प्रकार का नियंत्रण रहे तो वे सामान्य गति से चलते रहते हैं, वरना रास्ते से भटक जाना उनके लिए आसान होता है। तो जो लोग प्रबुद्ध होते हैं, वे स्वयं भ्रष्ट न होकर अपनी सत्चेतना को जागृत रखते हुए यदि ऐसी सामाजिक स्थितियां बनावें जो सामान्यजन के नैतिक विकास को प्रोत्साहित करती हो तो वह सर्वथा वांछनीय माना जायेगा।

समता के समरस स्वर :

वर्तमान विषमता की कर्कश ध्वनियों के बीच आज साहस करके समता के समरस स्वरों को सारी दिशाओं में गुंजायमान करने की आवश्यकता है। सम्पूर्ण मानव समाज ही नहीं, समूचा प्राणि-समाज भी इन स्वरों से आह्लादित हो उठेगा। जीवन के सभी क्षेत्रों में फैली विषमता के विरुद्ध मनुष्य को संघर्ष करना ही होगा क्योंकि मनुष्यता का इस विषम वातावरण में निरन्तर ह्रास होता ही जा रहा है।

यह ध्रुव सत्य है कि मनुष्य गिरता, उठता और बदलता रहेगा किन्तु समूचे तौर पर मनुष्यता कभी समाप्त नहीं हो सकेगी और आज भी मनुष्यता का अस्तित्व डूबेगा नहीं। वह सो सकती है, मर नहीं सकती और अब समय आ गया है जब मनुष्यता की सजीवता लेकर मनुष्य को उठना होगा-जागना होगा और क्रांति की पताका को उठाकर परिवर्तन का चक्र घुमाना होगा। क्रांति यही कि वर्तमान विषमताजन्य सामाजिक मूल्यों को हटाकर समता के नये मानवीय मूल्यों की स्थापना। इसके लिए प्रबुद्ध एवं युवावर्ग को विशेष रूप से आगे आना होगा और

व्यापक जागरण का शंख फूंकना होगा, जिससे समता के समरस स्वर उद्भूत हो सकें।

समता दर्शन का नया प्रकाश :

सत्यांशों के संचय से समता दर्शन का जो सत्य हमारे सामने प्रकट होता है- उसे यथाशक्ति, यथासाध्य सबके समक्ष प्रस्तुत करने का नम्र प्रयास यहाँ किया जा रहा है। यह युगानुकूल समता दर्शन का नया प्रकाश फैला कर प्रेरणा एवं रचना की नई अनुभूतियों को सजग बना सकेगा।

समता दर्शन को अपने नवीन एवं संपूर्ण परिप्रेक्ष्य में समझने के लिये उसके निम्न चार सोपान बनाये गये हैं :-

१. सिद्धान्त-दर्शन :

मानव ही नहीं, प्राणी समाज से संबंधित सभी क्षेत्रों में यथार्थ दृष्टि, वस्तुस्वरूप उत्तरदायित्व तथा शुद्ध कर्त्तव्याकर्त्तव्य का ज्ञान एवं सम्यक्, सर्वांगीण व सम्पूर्ण चरम विकास समता सिद्धान्त का मूलाधार है। इस पहले सोपान पर पहले सिद्धान्त को प्रमुखता दी गई है।

२. जीवन-दर्शन :

सबके लिए एक व एक के लिए सब तथा जीओ और जीने दो के प्रतिपादक सिद्धान्तों तथा संयम नियमों को स्वयं के व समाज के जीवन में आचरित करना समता का जीवन्त दर्शन करना होगा।

३. आत्म-दर्शन :

समतापूर्ण आचार की पृष्ठभूमि पर जिस प्रकाश स्वरूप चेतना का आविर्भाव होगा, उसे सतत व सत्साधना पूर्ण सेवा तथा स्वानुभूति के बल पर पुष्ट करते हुए 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की व्यापक भावना में आत्मविसर्जित हो जाना समता का उन्नायक चरण होगा।

४. परमात्म-दर्शन :

आत्मविसर्जन के बाद प्रकाश में प्रकाश के समान मिल जाने की यह चरम स्थिति है। तब मनुष्य न केवल एक आत्मा अपितु सारे प्राणि-समाज को अपनी सेवा व समता की परिधि में अन्तर्निहित कर लेने के कारण उज्ज्वलतम स्वरूप प्राप्त करके स्वयं परमात्मा हो जाता है। आत्मा का परम स्वरूप ही समता का चरम स्वरूप होता है।

इन चार सोपानों पर गहन विचार से समता दर्शन की श्रेष्ठता अनुभूत हो सकेगी और इस अनुभूति के बाद ही व्यवहार की रूपरेखा सरलतापूर्वक हृदयंगम की जा सकेगी।

१. सिद्धान्त-दर्शन :

(१) समग्र आत्मीय शक्तियों के सम्यक् और सर्वांगीण चरम विकास को सदा सर्वत्र सम्मुख रखना।

(२) दुर्भावना, दुर्वचन एवं दुष्प्रवृत्ति के परित्याग पूर्वक सत्साधना में विश्वास रखना।

(३) समस्त प्राणिवर्ग का स्वतंत्र अस्तित्व स्वीकार करना।

(४) समस्त जीवनोपयोगी पदार्थों के यथा-विकास यथायोग्य समवितरण में विश्वास रखना।

(५) जनकल्याणार्थ संपरित्याग में आस्था रखना।

(६) गुण एवं कर्म के आधार पर विश्वस्थ प्राणियों के श्रेणी-विभाग में विश्वास रखना।

(७) द्रव्य-सम्पत्ति व सत्ता-प्रधान व्यवस्था के स्थान पर चेतना तथा कर्त्तव्यनिष्ठा को प्रमुखता देना।

२. जीवन-दर्शन :

(१) अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह और सापेक्षवाद (स्याद्वाद) को जीवन में उतारना।

(२) जिस पद पर जीवन रहे, उस पद की मर्यादा को प्रामाणिकता से वहन करने का ध्यान रखना।

(३) जिस परिवार की सदस्यता को लेकर व्यक्ति चलता हो, उस परिवार के अन्य सदस्यों के साथ निष्ठापूर्वक आत्मीय-दृष्टि बनाना।

(४) व्यक्ति, जिस सामाजिक क्षेत्र में प्रवेश करे उसमें निष्कपटभाव से अपने जीवन की शुद्धता रखे तथा सामाजिक क्षेत्र में उत्पन्न कुरीतियों एवं घातक प्रवृत्तियों का परिमार्जन करता हुआ मानव-कल्याणकारी उत्तम मर्यादाओं के निर्माणपूर्वक अपने जीवन-स्तर को इस प्रकार बनाये, जिससे कि प्रत्येक सामाजिक प्राणि शान्ति की श्वास ले सके।

(५) व्यक्ति, स्वयं से सम्बन्धित राष्ट्र एवं विश्व के साथ यथायोग्य सम्बन्ध को ध्यान में रखता हुआ अपने आपके हिस्से में कितनी जिम्मेवारी किस रूप में आ सकती है- इसका ईमानदारी से विचार करे और तदनुरूप यथाशक्ति, यथास्थान जीवन को ढालने हेतु सम्यक् चेष्टा करे।

(६) पद को महत्व देने के स्थान पर कर्त्तव्य को महत्त्व देने की प्रतिज्ञा हो।

(७) सप्त कुव्यसन (मांस, मदिरापान, जुआ, चोरी, शिकार, परस्त्री व वेश्यागमन) का त्याग हो।

३. आत्म-दर्शन :

विश्व में मुख्य दो तत्त्व हैं- एक चेतन तत्त्व और दूसरा जड़ तत्त्व। चेतन तत्त्व स्व-पर प्रकाश-स्वरूप है और जड़ तत्त्व उससे भिन्न है। इन दोनों तत्त्वों के संमिश्रण से कर्मयुक्त संसारी प्राणिजगत् है। इनमें व्यवस्थित न्यूनाधिक कलापूर्ण विकासशीलता आत्मा का प्रतीक है और घुणाक्षर-न्याय के तरीके से बनने वाली स्थिति का प्रतीक प्राय: जड़ तत्त्व है।

सम्यक् आचरण से आत्मा का साक्षात्कार चिन्तन-मनन व स्वानुभूति द्वारा करना आत्म-दर्शन है। इसके लिए निम्नोक्त भावना एवं नियमितता आवश्यक है-

(१) अपने जीवन के रात-दिन के घंटों में नियमित रूप से मर्यादा करना।

(२) प्रात:काल सूर्योदय के पहले कम-से-कम एक घंटा आत्मदर्शन के लिए नियुक्त करना।

(३) जो भी घंटा, जिन मिनटों से नियुक्त किया जाये, ठीक उन्हीं मिनटों का हमेशा ध्यान रख कर साधना में बैठना।

(४) साधना के समय पापकारी प्रवृत्तियों का निरोध करना और सत्प्रवृत्तियों को आचरण में लाना।

(५) समस्त प्राणिवर्ग को आत्मा के तुल्य समझना।

जैसा सुख-दु:ख अपने को होता है अर्थात् सुख प्रिय और दु:ख अप्रिय लगता है, वैसे ही अन्य प्राणियों को भी होता है। अत: हम किसी को दु:ख न दें। सब को सुख हो, इस भावना से अपनी सम्यक् प्रवृत्ति का ध्यान रखना चाहिए।

किसी भी जीव का हनन करने की भावना रखना अपने आपका हनन करना है। दूसरों के सुख में अपना सुख समझना कष्ट में अपना कष्ट समझना परमावश्यक है। इस प्रकार आत्मदर्शन की भावना को यथास्थान सम्यक् रीति से आगे बढ़ाते रहना चाहिए तथा इन भावनाओं को पुष्ट करने के लिए सत्साहित्य का यथावकाश अध्ययन करना चाहिए।

४. परमात्म-दर्शन :

राग-द्वेष आदि विकारों के समूल-नाशपूर्वक चरम-विकास पर पहुँचने वाली आत्मा सही अर्थ में परमात्म-दर्शन को प्राप्त होती है और परमात्म-दर्शन पद-प्राप्त आत्मा की समग्र आत्मीय तथा अनन्त गुणों का उपयोग करती हुई जगत् में मंगलमय कल्याण-अवस्था की आदर्श स्थिति उपस्थित करती है।

इस विषय में निरन्तर ध्यान रखते हुए जो व्यक्ति क्रमिक विकास पर चलता है, वह समता-दर्शन की स्थिति से विश्व-कल्याण में महत्त्वपूर्ण योगदान करता है। अत: समता-दर्शन को परिपूर्ण रूप से जीवन में उतारना चाहिए।

आचरण के इक्कीस सूत्र

समता-दर्शन में श्रद्धा (विश्वास) रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति को निम्नलिखित २१ नियमों का पालन करने के लिए संकल्पित एवं प्रयत्नशील रहना है :-

१. ग्रामधर्म, नगरधर्म, राष्ट्रधर्म आदि की सुव्यवस्था अर्थात् तत्सम्बन्धी सामाजिक (नैतिक) नियमों का पालन करना। उसमें कोई कुव्यवस्था पैदा नहीं करना एवं कुव्यवस्था पैदा करने वालों का सहयोगी नहीं होना।

२. अनावश्यक हिंसा का परित्याग करना तथा आवश्यक हिंसा की अवस्था में भी भावना तो व्यक्ति, परिवार, समाज व राष्ट्र आदि की रक्षा की रखना तथा विवशता से होने वाली हिंसा में लाचारी अनुभव करना, न कि प्रसन्नता।

३. झूठी साक्षी नहीं देना। स्त्री, पुरुष, पशु, भूमि आदि के लिए झूठ नहीं बोलना।

४. वस्तु में मिलावट कर धोखे पूर्वक नहीं बेचना।

५. ताला तोड़कर, चाबी लगाकर तथा सेंध लगाकर वस्तु नहीं चुराना। किसी की अमानत को हजम नहीं करना।

६. परस्त्री का त्याग करना, स्व-स्त्री के साथ भी अधिक से अधिक ब्रह्मचर्य का पालन करना।

७. व्यक्ति, समाज व राष्ट्र आदि की जिम्मेदारी के आवश्यक अनुपात के अतिरिक्त धन-धान्य पर अपना अधिकार नहीं रखना। आवश्यकता से अधिक धन-धान्य हो तो ट्रस्टी बन कर यथा आवश्यक सम-वितरण की भावना रखना।

८. लेन-देन, व्यसाय आदि की सीमा एवं मात्रा का अपनी सामर्थ्य के अनुसार मर्यादा रखना।

९. स्वयं, परिवार, समाज एवं राष्ट्र के चरित्र में कलंक लगे वैसा कोई भी कार्य नहीं करना।

१०. नैतिक धरातल पूर्वक आध्यात्मिक जीवन के निर्माणार्थ तद्नुरूप सत्प्रवृत्ति का ध्यान रखना।

११. मानव जाति में गुण-कर्म के अनुसार वर्गीकरण पर श्रद्धा (विश्वास) रखते हुए किसी भी [illegible] व द्वेष नहीं रखना।

१२. संयमी उत्तम मर्यादाओं का पालन करना अनुशासन को भंग करने वालों को [illegible] असहयोग के तरीके से सुधारना, पर द्वेष की [illegible] न लाना।

१३. प्राप्त अधिकारों का दुरुपयोग नहीं करना।

१४. कर्त्तव्य-पालन का पूरा ध्यान रखना लेकिन प्र[illegible] सत्ता में आसक्त (लोलुप) नहीं होना।

१५. सत्ता और सम्पत्ति को मानव सेवा का साधन मानना, न कि साध्य।

१६. सामाजिक व राष्ट्रीय चरित्रपूर्वक भावात्मक एक[illegible] को महत्त्व देना।

१७. जनतंत्र का दुरुपयोग नहीं करना।

१८. दहेज, बींटी, तिलक, टीका आदि की मांगने, सौदेबाजी एवं प्रदर्शन नहीं करना।

१९. सादगी में विश्वस रखना और कुरीति-रिवाजों [illegible] परित्याग करना।

२०. चरित्र निर्माण पूर्वक धार्मिक शिक्षण पर बल दे[illegible] एवं नित्य प्रति कम से कम एक घंटा धार्मिक [illegible] पूर्वक स्वाध्याय-चिंतन-मनन् करना।

२१. समता-दर्शन के आधार पर सुसमाज व्यवस्था [illegible] विश्वास रखना।

व्यवहार के तीन सोपान

समता के दार्शनिक विश्लेषण को व्यवहा[illegible] दृष्टि से निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है [illegible] समता दर्शन की क्रमबद्ध रीति से साधना की जा [illegible]

(अ) समतावादी- पहली श्रेणी उन साधक[illegible] हो जो समता-दर्शन में गहरी आस्था, नया [illegible] जिज्ञासा और यथास्थिति की सुविधा से [illegible] व्यवहार में प्रयासरत होने की इच्छा रखते हों। उनके निम्न नियम आचरणीय हो सकते हैं-

(१) विश्व के समस्त प्राणियों में सामान्य[illegible] समता की मूल स्थिति को स्वीकार करना एवं [illegible]

कर्म के अनुसार ही उनका वर्गीकरण मानना। अन्य सभी विभेदों को अस्वीकार करना एवं गुणकर्म के विकास से व्यापक समता की स्थिति बनाने का संकल्प लेना।

(२) समस्त प्राणिवर्ग का स्वतंत्र अस्तित्व स्वीकारना तथा अन्य प्राणी के कष्ट को स्वकष्ट मानना।

(३) पद को महत्त्व देने के स्थान पर कर्त्तव्य को महत्त्व देने की प्रतिज्ञा करना।

(४) सप्त कुव्यसन (मांस, मदिरा, जुआ, चोरी, शिकार, परस्त्री व वेश्यागमन) का त्याग करने की दिशा में आगे से आगे बढ़ते रहना।

(५) प्रातःकाल सूर्य उदय से पूर्व एक घंटा अथवा अपनी अनुकूलता के अनुसार २४ घंटों में से १ घंटा नियमित रूप से अपने चिन्तन, समालोचन एवं समता-दर्शन के अध्ययन के लिये नियत करना।

(६) कदापि आत्मघात न करना एवं प्राणिमात्र की यथाशक्ति रक्षा का प्रयत्न करना।

(अ) समताधारी- दूसरी श्रेणी के लिये निम्न अग्रगामी नियम प्रयोग में लिये जा सकते हैं-

(१) विषमता-जन्य अपने विचारों, संस्कारों एवं आचारों को समझना तथा विवेक पूर्वक उन्हें दूर करना। अपने आचरण से किसी को क्लेश न पहुंचाना व सबसे सहानुभूति रखना।

(२) द्रव्य सम्पत्ति व सत्ता प्रधान व्यवस्था के स्थान पर समता पूर्ण चेतना एवं कर्त्तव्यनिष्ठा रखना।

(३) अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह और अनेकान्त एवं सापेक्षवाद के स्थूल नियमों का पालन करना तथा भावना की सूक्ष्मता तक पैठने का प्रयास करना।

(४) समस्त जीवनोपयोगी पदार्थों के सम वितरण में आस्था रखना तथा व्यक्तिगत रूप से इन पदार्थों का यथाविकास यथायोग्य जन कल्याणार्थ परित्याग करना।

(५) परिवार की सदस्यता से लेकर ग्राम, नगर, राष्ट्र एवं विश्व की सदस्यता को निष्ठापूर्वक आत्मीयदृष्टि एवं सहयोगपूर्ण आचरण से अपने उत्तरदायित्वों को निभाना।

(६) जीवन में जिस किसी पद पर या कार्यक्षेत्र में कार्यरत हों, उसमें भ्रष्टाचरण से मुक्त होकर समताभरी नैतिकता एवं प्रामाणिकता के साथ कुशलता से कार्य करना।

(७) स्वजीवन में संयम को व सामाजिक जीवन में नियम को प्राथमिकता देना।

(इ) समतादर्शी- समताधारी से आगे की सीढ़ी में बोलने व धारने से आगे सारे संसार को समतामय देखने की प्रवृत्ति का उच्च विकास साधा जाना चाहिये। इस हेतु निम्न नियम सहायक हो सकते हैं-

(१) समस्त प्राणिवर्ग को निजात्मा के तुल्य समझना तथा समग्र आत्मीय शक्तियों के विकास में अपने जीवन के विकास को देखना तथा अपनी समस्त दुष्प्रवृत्तियों के त्यागमय आदर्श से सत्प्रवृत्तियों के विकास को बल देना।

(२) आत्मविश्वास की मात्रा इतनी सशक्त बना लेना कि विश्वासघात न अन्य प्राणियों के साथ और न स्वयं के साथ जाने या अनजाने संभव हो।

(३) जीवन क्रम के चौबीस घंटों में समतामय भावना व आचरण का विवेकपूर्ण अभ्यास करना।

(४) सामाजिक न्याय का लक्ष्य ध्यान में रखकर आत्मबल के आधार पर अन्याय की शक्तियों से संघर्ष करना तथा समता के समस्त अवरोधों पर विजय पाना।

(५) प्रत्येक प्राणी के प्रति सौहार्द्र, सहानुभूति एवं सहयोग रखते हुए दूसरे के सुख, दुःख को अपना सुख, दुःख समझना-आत्मवत् सर्वभूतेषु।

(६) चेतन व जड़ तत्त्वों के विभेद को समझकर जड़ पर से ममता हटाना, जड़ की प्रधानता हटाने में योग देना तथा चेतन को स्वधर्मी मान उसकी विकास पूर्ण समता में अपने

जीवन को नियोजित कर देना।

(७) राग और द्वेष दोनों को संयमित करते हुए सर्व प्राणियों में समदर्शिता का अविचल भाव ग्रहण करना।

ये जो तीनों श्रेणियों के नियम बनाये गये हैं, इनके अनुरूप एक से दूसरी व दूसरी से तीसरी श्रेणी में बढ़ने की दृष्टि से प्रत्येक को अपना आचरण विचारपूर्ण पृ के साथ संतुलित एवं संयमित करना चाहिये ताकि स व्यक्ति के मन में और समाज के जीवन में स्थायी ग्रहण कर सके। यही आत्म-कल्याण एवं विश्व-कि का प्रेरक पाथेय है।

-प्रस्तुति-भंवरलाल कोठारी, बीव

दीप से दीप

साधु-मार्ग की परपम्परा अनादि-अविच्छिन्न है। आचार ही साधुत्व की प्राण-सत्ता. एवं कसौटी है, अतः वही साधु-मार्ग की धुरी है। धुरी ध्वस्त हो जाए, तो रथ पर झण्डी-पताकाएँ सजाकर तथा उसके चक्कों पर पॉलिश करके कुछ समय के लिए एक चकाचौंध भले ही उपस्थित कर दी जाय, उसे गतिमान नहीं बनाया जा सकता।

वन्द्य विभूति आचार्य श्री हुक्मीचंदजी म.सा. ने "सम्यक् ज्ञान सम्मत क्रिया" का उद्घोष करके आचार की सर्वोपरिता का सन्देश दिया। इस आचार-क्रान्ति ने जिन शासन परम्परा में प्राण-ऊर्जा का संचार किया। अगले चरण में ज्योतिर्धर जवाहराचार्य ने आगमिक विवेचन की तैजस छैनी से कल्पित सिद्धान्तों की अवान्तर पर्तों की छील-छांट कर "सम्यक् ज्ञान सम्मत क्रिया" को विशुद्ध शिल्प में तराश दिया। आगे चलकर श्री गणेशाचार्य ने इस विशुद्ध शिल्प के साक्ष्य में "शांत-क्रान्ति" का अभियान चलाया।

समता विभूति आचार्य प्रवर श्री नानेश के सम्यक् निर्देशन में शांत क्रान्ति का रथ उत्तरोत्तर आगे बढ़ा एवं वर्तमान में आचार्य प्रवर श्री रामेश के निर्देशन में वही गति तीव्रता से प्रवहमान है। युग पर आश्वासन की सात्विक आभा फैलती जा रही है। विश्वास हिलकोरे लेने लगा है कि सात्विक साध्वाचार का लोप नहीं होगा। अंधकार छंटता और छूटता जा रहा है। दीप से दीप जलते जा रहे हैं।

□ प्रो. कल्याणमल लोढा
पूर्व कुलपति-जोधपुर विश्वविद्यालय

साहुं साहुं त्ति आलवे

मैं यह मानता हूँ कि मानव समाज के वर्तमान संकट और व्यामोह के लिए जैन धर्म ही एक समर्थ और सार्थक उपचार है। मैं तो उसे हमारी आधिव्याधि के लिए परमोपरक संजीवनी ही कहना चाहूंगा। यह एक भ्रांति है कि जैनधर्म व्यक्ति-परक है। वह जितना व्यक्ति के लिए है, उतना ही समाज के लिए भी। वह लोक-मानस का धर्म है, लोक सिद्ध। जैन धर्म की विशेषता है कि वह दर्शन, अध्यात्म, आचार, नैतिकता और वैज्ञानिक प्रतिपत्तियों में अन्यतम महत्त्व रखता है। वह जितना प्राचीन है, उतना ही आधुनिक। वर्तमान युग में उसकी प्रासंगिकता निर्विवाद है। हमारे आदि तीर्थंकर ने समूचे विश्व को असि, मसि और कृषि का पाठ पढ़ाया। बौद्ध धर्म की भांति वह अनेक देशों में भले ही नहीं गया हो, पर इससे उसका विश्वव्यापी महत्त्व क्षुण्य नहीं हुआ, अपितु यह उसके अधिकृत रहने का भी एक पुष्ट कारण है। बौद्ध धर्म की भांति जैन धर्म में वज्रयान जैसी साधना पद्धति कभी नहीं रही। हमारे धर्माचार्यों ने उसके प्रकृत्त और मूल सिद्धान्तों और संस्थानों को यथावत् रखा। मैं नहीं समझता कि अन्य कोई धर्म इतना अधिकृत रह पाया हो। जैन धर्म की प्राचीनता अब सर्वमान्य है। ईसाई पादरियों ने किसी तीर्थंकर की निन्दा नहीं की। कन्याकुमारी की शिला पर जिसे आज विवेकानन्द शिला कहते हैं-पार्श्वनाथ के चरण-चिह्न अंकित थे। वस्तुतः चरण पूजा का प्रारम्भ ही जैनियों से हुआ। मैसूर में बेल्लुर के केशव मंदिर में 'अर्हम् नित्यय: जैन शासनरता:' लिखा है।

जैन धर्माचार्यों, साधुओं और मुनियों ने उदार व व्यापक दृष्टिकोण अपनाया। वे कभी पूर्वाग्रह ग्रसित नहीं हुए, न कभी संकीर्ण और अनुदार रहे। हरिभद्राचार्य, आचार्य सिद्धसेन व हेमचन्द्राचार्य के कथन इसके प्रमाण हैं। एक उदाहरण ही पर्याप्त होगा-

पक्षपातो न मे वीरे, न द्वेषः कपिलादिषु।
युक्तिमद् वचनं यस्य, तस्य कार्यः परिग्रह :॥

यह उदारता और महिष्णुता जैन धर्म की अन्यतम विशेषता है। वह सदैव यही स्वीकारता रहा-

ब्रह्मा व विष्णुर्वा, हरो जिनो वा नमस्तस्मै।
बुद्धं व वर्धमानं शतदल निलयं केशवं वा शिवं वा॥

वह सब प्राणियों को समान दृष्टि से देखता है, पर उसका ध्येय है 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्'। न कोई उच्च है और न कोई नीच। जन्म से न कोई ब्राह्मण होता है और न शूद्र। कर्म ही वैशिष्ट्य रखता है। महावीर ने कहा- 'समयाए समणो होइ, बंभचरेण बंभणो'। उनका उद्घोष था-

न वि मुण्डिएण समणो, न ओंकारेण बंभणो।
न मुणणी नण्णवासेणं, कुसी चरेण न तावसो॥

उस युग में यह क्रांति का स्वर था। बुद्ध ने भी यही माना-

न जटाहि न गोत्तेन, न जच्चा होति ब्राह्मणो ।
यम्हि सच्चंच धम्मो, च सो सुचोः सो च ब्राह्मणो ॥
(ब्राह्मण वग्गो-११)

हमने माना 'कम्मेवीरा ते धम्मेवीरा'। वशिष्ठ भी यही कहते हैं-

कर्मेण पुरुषोराम पुरुषस्यैव कर्मता ।
एते ह्यभिन्ने विद्धि त्वंयथा तुहिन शीतते ॥

'महाभारत' में भीष्म कहते हैं-

अपारे यो भवेत्पारमल्पवे यः भवोभवेत् ।
शूद्रो व यदिवऽप्यन्यः सर्वथा मान मर्हति ॥

मैं जैनधर्म को विश्व में सभी धर्मों, दर्शनों और अध्यात्म का विश्वकोष गिनता हूं। 'महाभारत' के लिए कहा जाता है कि 'यन्न भारते तन्न भारते', जो महाभारत में नहीं है, वह भारतवर्ष में नहीं है। मैं तो समझता हूं कि 'यन्न जिन धर्मे: तन्न अन्य धर्मे:' । यह कोई गर्वोक्ति नहीं, सत्योक्ति है।

भगवान महावीर ने मनुष्यत्व को श्रेष्ठतम गिना- 'माणस्सं खु सु दुल्लहं' । वे मनुष्यों को 'देवाणुप्पिय' कहकर संबोधित करते थे । आचार्य अमितगति ने दोहराया 'मनुष्यं भव प्रधानम्' सभी धर्म भी यही मानते हैं। व्यास ने कहा-'नहि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित्'। ग्रीक दार्शनिकों की भी यही आवाज थी-'मनुष्य ही सब पदार्थों का मापदण्ड है । जैन धर्म इसी मनुष्यता के उद्घोष का पावन धर्म है। यहां यह भी कहना संगत है कि मनुष्यता का यह उद्घोष उसके पुरुषार्थ का उद्घोष है-उसकी उच्चतम स्थिति का । जैन धर्म मनुष्य के पुरुषार्थ का धर्म है। वह बताता है कि देव केवल कल्पना मात्र है । मनुष्य अपने पौरुष के बल पर ही श्रेष्ठतर पद प्राप्त करते हैं-

''पुरिसा तुममेव तुममित्तं, किं बहिया मित्तमिच्छसि''

विश्वकोष में कोई ऐसा रत्न नहीं है जो शुद्ध पुरुषार्थजनित शुभ कर्म से न प्राप्त हो सके। पुरुषार्थहीन व्यक्ति सदा परतन्त्र है। जिस पुरुषार्थ की देशना महावीर ने दी, वही अन्यत्र भी कहा गया-

दैवं न किंचित् कुरुते केवलं कल्पनेद्देशी।
मूढै प्रकल्पितं दैवं तत्परास्ते क्षयं गताः।
प्राज्ञास्तु पौरुषार्येन पदमुत्तमतां गताः ॥

संसार के सभी धर्मों के ग्राह्य तत्वों का सन्निवेश जैन धर्म में मिल जाएगा । महावीर कहते हैं-'वऊ अच्चेति जोव्वणं व'-आयु और जीवन बीता जा रहा है। काल के लिए कोई समय-असमय नहीं- न कोई उससे मुक्त है, 'नत्थि कालस्स णा गमो'। इसीलिए अप्रमत्त होकर जीवन-यापन कर और विवेकपूर्ण जीवन पथ पर चलकर सत्य युक्त हो। काल सदा परिवर्तनशील है और उपयोग जीव का धर्म। इसलिए 'समयं गोयम मा पमायए' क्षण भर का प्रमाद भी घातक है। सत्य की खोज और विश्व के सभी प्राणियों के प्रति मैत्री का भाव ही सम्यक्त्व है और इसके लिए अनिवार्य है आत्म-विजय, वही तो सबसे कठिन है। प्रभु कहते है-'बाह्य युद्ध सारहीन है, अपने से युद्ध कर'। आत्म-विजय ही सच्चा सुख है। अपने से युद्ध का यह अवसर दुर्लभ है-

अप्पाण मेव जुज्झहि, किं ते जुज्झणं वज्झओ।
अप्पाण मेव अप्पाणं, जइत्ता सुह मेहए ॥

यही जीवन का सार तत्त्व है- यही सच्चा पुरुषार्थ भी। इसी से मैं कहता हूं-जिसने जैन धर्म को जाना, उसने सभी धर्मों को जाना।

वैदिक ऋषियों ने कहा-'आयुषं क्षणं एको हि सर्वरत्नेन लभ्यते' । सभी रत्नों में आयु का एक क्षण मूल्यवान है। यही तो वीर प्रभु ने भी कहा पर अधिक दृढता से-'''परिजूरइ ते सरीरयं केसा पण्डुरया हवन्ति ते' एवं '''खण जाणाहि पंडिए'। हे साधक ! तुम क्षण को पहिचानो-क्योंकि-

जागरहणरा णिच्चं जागर माणस्स
जागरित सुचं।

जे सुवति न से सुहिते जागरमाणे
सुह होति ।

जैन धर्म बताता है क्षमा, संतोप, सरलता और
नय ही धर्म के चार द्वार हैं। सभी धर्मों ने भी यही
ीकारा। छांदोग्य उपनिषद् में कहा गया-आत्म-यज्ञ
ी दक्षिणा है-तप, दान, आर्जव, अहिंसा व सत्य।
हाभारत' में विदुर सदैव क्षमा, मार्दव, आर्जव और
तोष का उपदेश धृतराष्ट्र को देते रहे। महावीर ने अहिंसा
ो सर्वोपरि बताया, यही सभी धर्म भी कहते हैं, पर जो
यमता और व्यापकता जैन धर्म में है, उतनी अन्यत्र
हीं। महावीर ने अहिंसा को 'भगवती' कहा। 'ऋग्वेद'
ा मंत्र है-"अहिंसक मात्र का सुख व संगति हमें प्राप्त
ो (५-६४.३)। वैदिक प्रार्थना में 'अहि सन्ति' का
योग हुआ। यजुर्वेद ने भी स्वीकारा-'पुमान पुमां सं
रिपातु विश्वम्' (३६-८), दूसरों की रक्षा ही धर्म है।
अथर्व वेद' में तो प्रार्थना की गई-'तद वृण्मो ब्रह्म वो
हे संज्ञानं पुरुषेभ्य:' हे प्रभो, परिचित अपरिचित सबके
ति समभाव-सद्भाव रखूं। 'विष्णुपुराण' कहता है-
हिंसा अधर्म की पत्नी है'। बौद्ध धर्म का भी यही
ूलस्वर था- उसे कहां तक गिनाएं। सबने एक ही स्वर
ं गाया-

अहिंसा, सत्य वचनं दानाभिन्द्रिय निग्रहः ।
एतेभ्यो हि महाराज, तपो नानत्रनात्परम् ॥

ईसाई धर्म में यही दोहराया गया-"यदि कोई कहे
के वह ईश्वर से प्रेम करता है पर अपने भाई से घृणा व
्वेष, तो समझो, वह झूठा है। दस आदेशों में भी अहिंसा
ी मुख्य है। मनुष्यत्व की जिस साधना का वर्णन, जिस
ुरुषार्थ का विवेचन, जिस आत्म-विजय का महत्त्व,
जिस अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह का
उपदेश हमारे तीर्थंकरों ने आदिकाल से दिया, वही सबने
स्वीकारा। महावीर कहते हैं-

चत्तारि परमंगाणि, दुल्लहाणीह जन्तुणो ।
माणा सुत्तं, सुई सद्धा संजमंमिय वीरियं ॥

संसार में चार बातें दुर्लभ हैं-मनुष्यत्व, सद्धर्म
का श्रवण और अनुपालन, श्रद्धा और संयम में पुरुषार्थ।
इसीसे महावीर ने देवताओं के कामयोग को मनुष्य से
हजार गुना अधिक बताया। आचार्य समन्तभद्र ने
जिनशासन को सर्वोदय कहा-'सर्वोदय तीर्थमिदं तवैव'।
यह आत्मश्लाघा नहीं, एक निर्विवाद सत्य है।

भारतीय मनीषा का मूल स्वर परोपकार का रहा
है। परोपकार रहित जीवन से मरण अच्छा है। जिस मरण
से परोपकार होता है, वही जीवन वास्तव में अमूल्य
जीवन है, "परं परोपकारार्थ यो जीवित स जीविति"।
अन्यत्र भी-

जीवितान्मरणं श्रेष्ठं परोपकृति वर्जितात् ।
मरणं जीवितं मन्ये यत्परोपकृति क्षमम् ॥

जैन शासन ने सदैव परोपकार को ही जीवन
बताया। "सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रानि मोक्षमार्ग:" कहने
वाले उमास्वाति ने इस सूत्र में जीवन के परम लक्ष्य की
ही बात कही। जैन धर्मावलम्बी की यही प्रार्थना है-

सत्वेषु मैत्री, गुणीषु प्रमोदं,
क्लिष्टेषु जीवेषु कृपा पर त्वम्।
माध्यस्थ भावं विपरीत वृत्तौ,
सदा ममात्मा विद्धातु देव।

जीवन की यह चरम उपलब्धि है। स्थानांग सूत्र
(४-४-३७३) में कहा है-मनुष्यायु का बंध चार प्रकार से
होता है- सरल स्वभाव, विनय भाव, दयाभाव और
ईर्ष्यारहित भाव। 'तत्वार्थ सूत्र' में इसी की व्याख्या करते
हुए उमास्वाति कहते हैं-

अल्पारंभ परिग्रहत्व स्वभाव मार्दवार्जव च
मानुष स्यायुष : (६-१८)

जैन धर्म की वैज्ञानिकता तो आज सर्वविदित हो
रही है। हमने जीव-अजीव तत्त्व का जो वर्णन किया,
आज विज्ञान भी उसे स्वीकार कर रहा है। 'नन्दी सूत्र'
में कहा गया है-पंचत्थिकाए न कयावि नासि, न कयाइ
नत्थि, न कयाइ भविस्सइ। भुविं च भुवइ अ भविस्सइ
आ। धुव्रे नियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठि
निच्चे, अरूवो" (५८)। पांच अस्तिकायों का यह वर्णन

कि वे सदा थे, सदा हैं और सदा रहेंगे-ये ध्रुव, निश्चित, सदा रहने वाले, अनष्ट और नित्य पर अरूपी हैं। विज्ञान ने इस सत्य को प्रमाणित कर दिया। परमाणु दो प्रकार के होते हैं-सूक्ष्म और व्यवहार। सूक्ष्म अव्याख्येय हैं। व्यवहार परमाणु, अनन्त अनन्त सूक्ष्म परमाणु, यह दलों का समुदाय है जो सदैव अप्रतिहत रहता है (अनुयोग द्वार-३३०-३४६)। वर्तमान विज्ञान ने एक नयी खोज की है 'सुपर स्ट्रिंग्स' की इस खोज के अनुसार (जिसे टी.ओ.ई. कहते हैं) विश्व की संरचना सूक्ष्मातिसूक्ष्म तंत्री (स्ट्रिंग्स) से हुई है। प्रोटोन, न्यूट्रोन, शरीर और नक्षत्र सभी इनसे बने हैं। यह प्रोटोन का एकपद्म अति सूक्ष्म रूप है-जो मनुष्य की कल्पना से परे हैं-किसी यंत्र से भी। इस अनुसंधान ने विज्ञान की समूची प्रक्रिया को ही बदल दिया। यह आधुनिक खोज जैन तत्त्व दर्शन की वैज्ञानिकता को पुनः प्रमाणित कर देती है। विज्ञान के दो महत्वपूर्ण सिद्धान्त "फलकृम ऑफ रेस्ट" एण्ड "फलकम् ऑफ मोशन" भी वस्तुतः अधर्म और धर्मास्तिकाय हैं। *आज विश्व के प्रबुद्ध चिन्तक जैन धर्म* के वैज्ञानिक विवेचन से आकृष्ट हो रहे हैं।

आज समूचा मानव जीवन मानसिक, उन्माद, उत्ताप और उपमर्दन से पीड़ित है। समाज-शास्त्री कहते हैं कि आज व्यक्ति अपने को अस्तित्वहीन, आदर्शहीन प्रयोजनहीन और अलगाव की स्थिति में समझकर आत्मा और समाज से विपर्यस्त हो रहा है। एक ओर उसकी अन्तहीन आकांक्षाएं और एषणाएं हैं, दूसरी ओर उनकी *पूर्ति के साधन सीमित हैं और अल्प। व्यक्ति और* परिवेश एक-दूसरे से विच्छिन्न हैं। विनोबाजी के शब्दों में सत्ता, सम्पत्ति और स्वार्थ का ही बोलबाला है। व्यक्ति, समाज और राष्ट्र-सबमें ज्ञात-अज्ञात युद्धोन्माद है। फ्रांस में धनिक समाज का महत्व है, इंग्लैंड में सामाजिक प्रतिष्ठा का और जर्मनी में राज्य सत्ता का। अमेरिका इन तीनों से ग्रसित है। वहां वैयक्तिक और सामाजिक जीवन आधुनिक सभ्यता की जड़ता और भौतिकता से संत्रस्त है। मानव से अधिक मशीन का महत्त्व है। आकाश के सुदूर नक्षत्रों का संधान किया मानवीय संवेदनशीलता सिकुड़ती गयी। बाह्य विस्तार और अन्तर का समंचन-यही विसंगति है। आ जिस सांस्कृतिक क्रांति की आवश्यकता है उसका स्रोत जैन धर्म, दर्शन और संस्कृति में ही विद्यमान है महावीर जितने क्रांतदर्शी थे उतने ही शांतदर्शी भी। धर्म ने सदैव युद्धोन्माद का विरोध किया। जिस व्य और विराट सत्य की प्रतिष्ठा की-वह था विश्व आत्म और विश्वजनीन समाज। उन्होंने चींटी और ह में समान आत्म-भाव को देखा। महावीर ने मनुष्य पुरुषार्थ और आत्मविजय का संदेश दिया। प्राचीन होने के साथ वह नवीनतम भी है। एक ओर जैन धर्म सदैव अंधविश्वासों, जड़ परम्पराओं और पाशवि वृत्तियों के विरुद्ध क्रांति की तो दूसरी ओर उसने मा जीवन को उच्चतम विचार, आचार और व्यवहार की ओर अग्रसर किया। उसकी यह रचनात्मक दे अनुपमेय है- हमारे आचार्य, उपाध्याय और स *'तत्वज्ञः सर्वभूतानां योगज्ञः सर्व कर्मणा'* के आदर्श पु थे।

यस्य सर्व समारम्भाः कामसंकल्पवर्जिताः।
ज्ञानाग्निदग्ध कर्माण तमाहु पण्डितं बुधाः॥

जैन-मुनि पूर्णार्थ में पण्डित हैं। अपनी ज्ञानाग्नि में उनके कर्म दग्ध हो गए हैं।

आज भी शत-शत श्रमण-वृन्द तत्वज्ञ, योग सुविज्ञ और प्रमाज्ञ होकर व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और मानवता के वर्तमान का परिष्करण कर उन्हें मंगल भविष्य की ओर ले जा रहे हैं। पारसी धर्म के तीन महाशब्द हैं- हुमदा, हुखदा और हुविस्तार-अर्थ सुविचार, सत्य, वचन और सुकार्य। यही तो हमारे श्रमण समाज का जीवन है। पूज्य नानालालजी म.सा. का जीवन श्रमण आदर्शों की मंजूषा है। उन्होंने अपनी साधुता और श्रेष्ठता से जैन समाज का ही नहीं, वरन् सम्पूर्ण मानव-समाज और लोक मंगल का पांचजन्य फूंका है। उन्हें मेरी प्रणति।

- २ ए, देशप्रिय पार्क, बोध

❑ कन्हैयालाल भूरा

वीर संघ : एक अभिनव योजना

उद्‌गम :

आज से लगभग १०८ वर्ष पूर्व साधुमार्गी संघ के महान आचार्यों में षष्ठ पाट पर क्रांतिकारी, युगद्रष्टा, युगपुरूष श्रीमद् जवाहराचार्य हुए जो महान दूरदर्शी संत थे। उनके द्वारा जो आगम सम्मत ज्ञान प्रस्तुत किया गया वह आज भी आधिकारिक रूप में स्वीकृत है। ज्ञान की उसी कड़ी में जैन धर्म की युगीन आवश्यकता पर बल देते हुए आज से लगभग ९८वर्ष पूर्व उन्होने नव आयामी चिन्तन का जो स्वरूप प्रस्तुत किया था वह उनके जीवन चरित्र में प्रकाशित है। यथा-

दिनांक ११-१०-१९३१ को दिल्ली में स्थानकवासी जैन कांफ्रेस की जनरल कमेटी का अधिवेशन हुआ जिसमें मुख्य विषय था 'साधु सम्मेलन'। उसी प्रसंग में एक दिन पूज्य श्री ने कहा "हमारे समाज में मुख्य दो वर्ग हैं, साधु वर्ग और श्रावक वर्ग, पर साधु वर्ग पर समाज का बोझ पड़ने से अनेक हानियां हो सकती हैं। अतएव समाज-सुधार का कार्य श्रावक वर्ग को करना चाहिए। मगर हमारा श्रावक वर्ग दुनियादारी के पचड़ों में अत्यधिक फंसा रहता है, उसमें शिक्षा का अभाव तो है ही उसका धर्म संबंधी ज्ञान भी इतना पर्याप्त नहीं है कि वह धर्म का लक्ष्य रखकर तथा धर्म मर्यादा को अक्षुण्ण बनाये रखकर, तद्नुकूल समाज सुधार का कार्य कर सके। मेरी सम्मति के अनुसार इस समस्या का हल ऐसे तीसरे वर्ग की स्थापना करने से ही हो सकता है जो साधुओं और श्रावकों के मध्य का हो। यह वर्ग न तो साधुओं में ही परिणित किया जाए और न गृहकार्य करने वाले साधारण श्रावकों में। इस वर्ग में वे ही व्यक्ति शामिल किये जावें जो ब्रह्मचर्य का अनिवार्य रूप मे पालन करें और अकिंचन हों। वे लोग समाज एवं धर्माचार्य की साक्षी से निर्धारित व्रतों को ग्रहण करें।

इस प्रकार एक तीसरे वर्ग के बन जाने से धार्मिक कार्यों में बड़ी सहायता मिलेगी। यह वर्ग न तो साधु पद की मर्यादा में बंधा रहेगा और न ही गृहस्थी के झंझटों में फंसा होगा, अतएव यह वर्ग धर्म प्रचार में उसी प्रकार सहायता पहुंचा सकेगा जैसी चित्त प्रधान ने पहुंचाई थी।

इसके अतिरिक्त इस तीसरे वर्ग से समाज सुधार के अतिरिक्त कार्य का भी लाभ मिलेगा। 'अगर अमेरिका या अन्य किसी देश में सर्व धर्म सम्मेलन होता है तो वहां सभी धर्मों के अनुयायी अपने-अपने धर्म की श्रेष्ठता का प्रतिपादन करने हेतु जाते हैं परंतु ऐसे सम्मेलनों में मुनि सम्मिलित नहीं हो सकते, अतएव धर्म प्रभावना का कार्य रूक जाता है। यह तीसरा वर्ग ऐसे अवसरों पर उपस्थित होकर जैन धर्म की वास्तविक उत्तमता का निरूपण करके धर्म की बहुत सेवा कर सकता है।

<u>भविष्य द्रष्टा</u> :

इस योजना के संबंध में आचार्य श्री ने फरमाया था, यह चाहे आज कार्यान्वित न हो सके मगर एक दिन आयेगा जब इसे अमल में लाना अनिवार्य हो जाएगा। पूज्य श्री की यह ऐसी योजना है जिसे अमल में लाये बिना संघ का श्रेयस सध नहीं सकता।

(ज्योतिर्धर पूज्य आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा. की जीवनी से)

प्रारंभिक प्रयास :

उपर्युक्त अति महत्वपूर्ण योजना के अत्यंत उपयोगी होते हुए भी संयोगवश उस समय वह साकार रूप नहीं ले सकी तो कालांतर में अनेक नये आयामों के प्रणेता अष्टम पट्टधर आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म.सा. के द्वारा वि.सं. २०३२ देशनोक चातुर्मास में यह योजना वीर संघ योजना के रूप में प्रारंभ की गई। कुछ उत्साही सदस्यों द्वारा कई वर्षो तक इसका संचालन हुआ पर ज्योतिर्धर जवाहराचार्य का प्रमुख चिन्तन जो धर्म प्रचार का था वह साकार नहीं हो पा रहा था। अतएव इस योजना एवं इनके सदस्यों का विलीनीकरण समता प्रचार संघ (स्वाध्यायी संस्था) में कर दिया गया।

स्वरूप निर्धारण :

स्वर्गीय आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म.सा. के सं. २०५४ (१९९७) के ब्यावर वर्षावास में आश्विन शुक्ल द्वितीया, जो आचार्य प्रवर का शुभ चादर प्रदान दिवस भी है, के दिन आचार्य प्रवर के चिन्तन में इसे पुनर्स्थापित करने की भावना जगी। आचार्य प्रवर की उन्हीं भावनाओं के अनुरूप श्रद्धेय स्थविर प्रमुख एवं ओजस्वी वक्ता श्री ज्ञानमुनिजी म.सा. ने सामायिक प्रतिक्रमण वर्ष की घोषणा के साथ ही वीर संघ योजना को साकार रूप देने के लिए प्रबल प्रेरणा प्रदान की। परिणाम स्वरूप वीर संघ योजना को अनोखा बल मिला।

प्रसंगवश उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व वि.सं. २०२५ (सन १९९५) में वर्तमान आचार्य प्रवर नवम् पट्टधर तरुण तपस्वी आगमज्ञाता श्री रामलालजी म.सा. (तत्कालीन युवाचार्य प्रवर) द्वारा अष्टम पट्टधर स्व. आचार्य श्री नानालालजी म.सा. के चादर प्रदान दिवस के प्रसंग पर व्यसन मुक्ति, समता समाज रचना एवं संस्कार जागरण जैसे अभियानों की घोषणा हो चुकी थी। सारे देश में फैले हुए विशाल साधुमार्गी जैन समाज, अजैन समाज एवं उन स्थानों में जहां संत सती कम पहुंच पाते हैं, या नहीं पहुंच पाते हैं इस तरह देश के कोने-कोने में इस चिन्तन को पहुंचाने की आवश्यकता थी। इस योजना को आचार्य प्रवर द्वारा निर्धारित प्रत्याख्यानों के तहत 'वीर संघ धर्म प्रचारक' योजना के रूप में व्यस्थित कर स्थापित कर फैलाने की आवश्यकता अनुभव की गई।

निश्चित नियमों का प्रत्याख्यान :

वीर संघ प्रचारकों के लिए निम्न नियमों की पालना का प्रावधान किया गया-

१. सचित्त का त्याग।
२. जूते नहीं पहनना।
३. एक वक्त का अनिवार्य रूप से प्रतिक्रमण।
४. सैंगटा (स्त्री-पुरुष का प्रत्यक्ष स्पर्श न होना)
५. खुले मुंह नहीं बोलना।
६. असत्य नहीं बोलना।
७. चोरी नहीं करना।
८. ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना।
९. रात्रि में चौविहार (चारों आहारों का त्याग)
१०. पुरुषों का पुरुषों से स्त्रियों का स्त्रियों से भी हाथ आदि नहीं मिलाना।
११. एक विगय का रोज त्याग।
१२. द्रव्यों की मर्यादा (स्व विवेक से)
१३. रूई के गद्दी तकिये का उपयोग न करना।

वर्तमान स्वरूप :

वीर संघ योजना के तहत कार्यकर्ता फिलहाल निश्चित दिनों के लिए धर्म प्रचार के कार्य हेतु जा सकते हैं। जब तक धर्म प्रचारक सेवा में रहे तब तक उनके लिए अनिवार्य रूप से उपरोक्त १३ नियमों का पालन करना अनिवार्य है। प्रचार का कार्य संपूर्ण होने पर वे पुनः अपने घर जा सकते हैं। प्रचारक के वेश पर वीर संघ- धर्म प्रचारक (स्त्री हो तो प्रचारिका) लिखा रहेगा। वीर संघ धर्म प्रचारक के लिए निश्चित वेश में रहना आवश्यक होगा।

धर्म प्रचारक द्वारा सेवा के पश्चात् घर जाने के उपरांत भी पालनीय नियम :

१. सप्त कुव्यसनों (जुआ, मांस, शराब, चोरी, शिकार, पर स्त्री गमन, वेश्यागमन) का आजीवन त्याग ।
२. बीड़ी, सिगरेट, जर्दा, पान मसाला, गुटका आदि का आजीवन त्याग ।
३. प्रतिदिन एक सामायिक करना ।
४. आधा घंटा स्वाध्याय करना ।
५. प्रतिदिन नवकारसी करना ।
६. निर्धन असहाय रोगियों की यथासंभव सहायता एवं सेवा करना ।
७. नैतिकता एवं सदाचार पूर्ण जीवन जीने का प्रयास करना ।
८. बारह व्रतों को समझकर यथाशक्य ग्रहण करना ।

इस तरह वीर संघ धर्म प्रचारक के लिए उपरोक्त तेरह व इन आठ इस प्रकार कुल २१ नियमों के तहत चलने का प्रावधान किया गया है ।

<u>साधुमार्गी संघ के अंतर्गत संचालित</u> :

इस योजना को श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ (प्रधान कार्यालय, बीकानेर) के अंतर्गत रखे जाने से इसके संचालन का संपूर्ण भार संघ पर है । प्रचारकों को भेजने हेतु योजना बनाना, उनका समुचित लाभ लेना, उनके प्रशिक्षण की व्यवस्था करना, स्थानीय संघों को प्रचारकों से लाभ लेने हेतु जागरूक करना तथा उनके मार्ग व्यय आदि व्यवस्था का उत्तरदायित्व संघ पर है ।

<u>धर्म प्रचारकों द्वारा करणीय प्रचार</u> : दिशा निर्देशन

निर्देशित २१ नियमों का पालन करते हुए संघ निर्देशित स्थानों पर निम्न कार्यों को करने का निर्देश वीर संघ प्रचारक को दिया गया है-

१. भाई-बहिन, बालक-बालिकाओं को धर्मोपदेश के माध्यम से सत्संस्कार देना ।
२. सामायिक, प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल आदि धार्मिक क्रियाओं का अध्ययन करवाना तथा उसकी प्रेरणा देना ।
३. व्यसन मुक्त जीवन जीने के लिए व्यसनों से होने वाली हानियां समझकर लोगों से उनका त्याग करवाना ।
४. स्कूलों, कालेजों एवं अन्य सार्वजनिक स्थानों पर भी यथायोग्य उपदेश देना तथा व्यसन मुक्ति की प्रेरणा देना ।
५. तरूण तपस्वी, शास्त्रज्ञ आगम ज्ञाता परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म.सा. द्वारा संप्रेरित व्यसन मुक्त समता समाज की रचना पर भी बल देना ।
६. श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ की प्रवृत्तियों व गतिविधियों का प्रचार । कोई अर्थ सहयोग देना चाहे तो प्रचारक स्वयं नहीं ले परंतु संघ को भेजने की प्रेरणा दे सकता है ।
८. अधिक से अधिक त्याग- वैराग्य पूर्वक रहना, सांसारिक बातें नहीं करना ।

<u>निषिद्ध कार्य</u> :

कोई भी धर्म प्रचारक जब तक सेवारत रहेगा तब तक निम्न कार्य नहीं करेगा-

१. सोफासेट पर नहीं बैठेगा ।
२. सबके साथ डायनिंग टेबल पर बैठकर भोजन नहीं करेगा ।
३. किसी से हाथ नहीं मिलायेगा ।
४. घूमने-फिरने के उद्देश्य से पर्यटन स्थलों पर नहीं जाएगा ।
५. किसी भी प्रकार की खरीददारी हेतु स्वयं नहीं जाएगा ।

(आवश्यक हुआ तो दूसरे से कहकर मंगा सकते हैं)

६. किसी के शादी-विवाह, जन्मदिन जैसे सांसारिक कार्यों में सम्मिलित नहीं होगा । (सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव को देखते हुए भाग लेने की छूट है)

विशेष ध्यातव्य बातें :

जब तक धर्म प्रचारक के रूप में कोई प्रत्याख्यानित होकर चल रहा है तब तक उसके साथ सभी भाई, बहिन आदरपूर्वक व्यवहार करें-यह अपेक्षित है। यदि उससे कोई स्खलना भी हो जाए तो उसका हंसी, मजाक नहीं उड़ाया जाए और न ही व्यंग्य की भाषा का प्रयोग किया जाए। सुधार का लक्ष्य रखा जाना जरूरी है। इसके लिए केंद्र को सूचना देना अपना कर्त्तव्य समझा जाना चाहिए। जिस किसी संघ में धर्म प्रचारक पहुंचे, वहां के संघ अध्यक्ष, मंत्री तथा श्री अ.भा.सा. जैन संघ के पदाधिकारी, कार्यकारिणी सदस्य, शाखा संयोजक एवं साधारण सदस्यों का कर्तव्य है कि वे स्वयं उसके कार्यक्रमों में पूरा-पूरा भाग लें, उनके आयोजनों को सफल बनाने में योगदान दें तथा अन्य लोगों को भी प्रेरित करें। इस प्रकार का समर्पित सहयोग उपलब्ध होने पर ही ऐसे प्रचारक संघ की सच्ची सेवा कर सकेंगे क्योंकि वह साधु तो नहीं होता अतः उसमें कभी किसी दुर्बलता का प्रकट हो जाना सहज है।

धर्म प्रचारक जिज्ञासुओं के लिए :

जो लोग धर्म प्रचार के कार्यों में भाग लेना चाहते हैं वे फिलहाल श्री गुमानमल जी चोरडिया जयपुर से संपर्क करें। उन्हें कुछ आता है यह इतना महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण यह है कि उनकी धर्म प्रचार के लिए जाने की भावना कितनी प्रबल है। ऐसे जिज्ञासु प्रथम चार ऐसे धर्म प्रचारकों के साथ (जो सेवा दे चुके हों) जाकर मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं। उसके बाद उन्हें स्वतंत्र रूप से भेजने का प्रसंग बन सकता है।

(वीर संघ धर्म प्रचारक- क्या कैसे से उद्धृत)

विशेष प्रशिक्षण व्यवस्था :

आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म.सा. एवं स्थविर प्रमुख श्री ज्ञान मुनि जी म.सा. का विशेष आशीर्वाद इस योजना को उपलब्ध है। धर्म प्रचार हेतु सेवा देने की भावना रखने वाले भाई-बहिनों के सूचना देने पर संघों द्वारा उनके सानिध्य में या आचार्य प्रवर के अपनी मर्यादानुसार प्राप्त संकेतों के आधार पर संघ के अन्तर्गत सतीवृंद के सानिध्य में या ऐसे ही शिविरों के माध्यम से उनके विशेष प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाती है। इस हेतु भी श्री गुमानमल जी चौरडिया से संपर्क किया जाना अपेक्षित है।

योजना का शुभारंभ :

दिनांक ३-१०-९७ को ब्यावर शहर में आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म.सा. की भावनाओं के अनुरूप स्थविर प्रमुख एवं ओजस्वी वक्ता श्री ज्ञानमुनि जी म.सा. द्वारा प्रेरित होने पर दिनांक १२-१०-९७ को ब्यावर शहर से ही सर्वप्रथम हम दम्पति (कन्हैयालाल भूरा एवं कमला देवी भूरा) ने व्याख्यान में, वीर संघ की निर्धारित वेश-भूषा में उपस्थित होकर जनमेदिनी के समक्ष आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म.सा. से निर्देशित नियम पचक्खाण लिये और लीड़ी जाकर पांच दिनों तक धर्म प्रचार का कार्य अति सफलता पूर्वक किया। वहां के लोगों ने अत्यंत संतुष्ट होकर धर्म प्रचारकों को पुनः भिजवाने हेतु आचार्य भगवन के चरणों में निवेदन किया। ब्यावर संघ के विशिष्ट लोग धर्म प्रचारकों को पहुंचाने व लेने गये।

विशेष आह्वान : सुरक्षित बल का निर्माण :

धर्म में बढती हुई अनास्था से आज के वातावरण को सुधारने की दृष्टि से अपेक्षित है ज्योतिर्धर जवाहराचार्य के इस स्वप्न को संघ साकार रूप करने में पूरी तरह से सहयोगी बने। आज हमें जबकि आचार्य प्रवर के सामने सारे देश से साधु-साध्वियों को भेजने की मांग निरंतर आ रही है। तब वीर संघ धर्म प्रचारकों के रूप में सैकड़ों लोगों (भाई-बहिनों) का एक सुरक्षित बल यदि मौजूद हो तो साधु-साध्वियों के न पहुंच पाने की स्थिति में धर्म प्रचार के कार्य की किसी सीमा तक तो पूर्ति हो ही सकती है।

एक सिक्के के दो पहलू :

वीर संघ योजना एवं व्यसन मुक्ति संस्कार जागरण के साथ समता समाज रचना एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जो धर्म प्रचारक जाते हैं वे धर्म प्रचार के

अनेक कार्य सम्पादित करते हैं, जैसे- सुबह ध्यान, प्रार्थना, फिर व्याख्यान तदुपरांत दिन में विद्यालयों में व्यसन मुक्ति संस्कार जागरण कार्य, दोपहर में महिलाओं की उन्नति हेतु विशेष कार्यक्रम, रात्रि में प्रतिक्रमण, बच्चों में संस्कार जागरण के कार्य तथा इस प्रकार समता समाज रचना का प्रयास। इस तरह यह योजना अनेक स्तरों पर कार्य संपादित कर रही है।

कर्म निर्जरा का अपूर्व अवसर :

स्वर्गीय आचार्य भगवन फरमाते थे कि धर्म प्रचारक जो उपरोक्त कार्य करते हैं, उनसे समाज को तो लाभ मिलता ही है, स्वयं धर्म प्रचारकों के कर्मों की निर्जरा का भी प्रसंग बनता है।

जैन/अजैन सभी में प्रिय :

धर्म प्रचारकों के जो कार्य हैं, वे सार्वजनिक हित के हैं, जिनसे सिर्फ जैनी ही नहीं समग्र समाज और इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति जैन, अजैन सभी लाभान्वित होते हैं। मांसाहारी क्षेत्रों में जाकर लोगों को अहिंसा का उपदेश देकर शाकाहारी बनाया जाता है और नशा करने वाले व्यक्तियों का जीवन उनकी प्रेरणा से सुधरता है, तो समता समाज की रचना भी होती है। दहेज जैसी सामाजिक कुरीतियों के त्याग से समता का प्रचार होता है। इस प्रकार वीर संघ योजना मानव मात्र के लिए हितकर है।

संघ का लक्ष्य : आजीवन धर्म प्रचारक :

इस तरह अगर धर्म प्रचारकों के रूप में सेवा देनेवालों और उनसे जुड़नेवालों की भावना प्रवर्द्धमान रहे तो भविष्य में इस योजना के व्यापक स्तर पर विस्तार की प्रबल स्थिति बन सकती है। तब जीवन भर के लिए भी धर्म प्रचारक बनाये जा सकेंगे और समता समाज की स्थापना की दिशा में प्रभावी कदम उठाये जा सकेंगे।

विदेशों में प्रचार का प्रावधान :

विशेष योग्यता प्राप्त धर्म प्रचारकों को इस कार्य हेतु विदेशों में भेजने का प्रावधान भी रखा गया है।

सेवानिवृत्त व्यक्तियों से विशेष निवेदन :

आपने जीवन भर कहीं न कहीं वैतनिक/व्यावसायिक सेवा दी है। आप में उल्लेखनीय योग्यता व प्रतिभा तो है ही जीवन भर का प्रचुर अनुभव भी आपके पास है। तब आइये इस योजना से जुड़कर अपने जीवन की सांध्य बेला को समाज हित के कार्य में लगाकर सफल बनाईये।

-एन.एन. रोड कूचविहार (प.बंगाल)

फिजूलखर्ची : राष्ट्रीय अपराध

"मैं कहता हूं कि सरकार का काम सरकार" जाने, किन्तु फिलहाल तो यही बहुत है कि आप लोग अपना काम जान लें।

'फिजूलखर्ची राष्ट्रीय अपराध है और भारत-जैसे गरीबों के देश में तो इस अपराध का आकार और अधिक गुरुत्तर माना जाना चाहिए। जिस देश में एक ओर करोड़ों लोग भुखमरी के कगार पर हों तथा छोटे बच्चों को दूध तक दुर्लभ हो, उस देश में आतिशबाजी जैसी निरर्थक प्रवृत्ति पर पानी की तरह पैसा बहा देना अपराध ही नहीं, मानवता पर घोर अत्याचार है।'

'जरूरत इस बात की है कि फिजूलखर्ची पूरी तरह रोक दी जाए बल्कि जो उचित खर्च हैं, उन्हें कम करके बचत की जाए तथा उस राशि का सदुपयोग उन गरीबों का दुःख-दर्द कम करने और मिटाने के हितकारी कामों में किया जाए। सच तो यह है कि ऐसी संकटापन्न परिस्थितियों में आतिशबाजी जैसी फिजूलखर्ची को एक दंडनीय अपराध घोषित किया जाना चाहिए।"

-आचार्य नानेश

□ डा. शोभनाथ पाठक

सामाजिक संवार में चतुर्विध संघ की महत्ता

भगवान महावीर ने केवलज्ञान प्राप्त कर वैभार पर्वत पर जो लोक मंगलकारी उपदेश दिये उससे गणधर, बड़े-बड़े राजा-महाराजा-रानियां-राजकुमार व असीम जन-समूह अभिभूत होकर उनके आदर्शों को अंगीकार कर विनय स्वीकार जन जागृति के लिए संकल्पित हुए जिससे सभी प्राणियों का कल्याण हो जैसा कि निर्वाण भक्ति[1] में कहा गया है कि -

अधभगवान्सम्प्रापदिव्यं वैभार पर्वतं रम्यं ।
चातुर्वर्ण्य-सुसंघस्तत्राभूद गौतम प्रभृति ॥

उक्त सम्पूर्ण शिष्य समुदाय के लिए महावीर ने जो व्यवस्था दी, उसे चतुर्विध संघ व्यवस्था कहा गया। यथा- चउविहे संघे प.स. समणा समणीओ, सावगा, सावियाओ । [2]

यही नहीं अपितु भगवती सूत्र में भी बताया गया है कि-

तित्थं पुण चाउवन्नाइन्ने समणसंघो ।
तं समणा, समणीओ, सावया, सावियाओ ॥ [3]

चतुर्विध संघ की पावनता को परख कर इसे तीर्थ कहा गया । यथा-

"'तीर्थनाम प्रवचनं तच्चं निराधानं न भवति तेन साधु-साध्वी श्रावक-श्राविका रूप चतुर्वर्णः संघ'[4] भगवान महावीर इस महातीर्थ अथवा धर्म-तीर्थ के कर्त्ता कहे गये । यथा-

णिस्संसय करो वीरो महावीरो जिणुत्तमो ।
रागदोसमयादीदो धम्मतीत्थस्सकारओ ॥[5]

सबके उत्थान, सबके कल्याण एवं समाज के अद्वितीय नवनिर्माण के परिपेक्ष्य में इसे 'सर्वोदय तीर्थ' भी कहा गया । यथा-

सर्वान्तवत्तद्गुण मुख्यकल्पं, सर्वान्तशून्यं च मिथोऽनपेक्षम् ।
सर्वापदामन्तकरं निरन्तं, सर्वोदयं तीर्थमिदं तथैव ॥[6]

सभी प्राणियों के अभ्युदय के समस्त कारणों हेतु मानते हुए इसे बहुजन हिताय बहुजन सुखाय के परिप्रेक्ष्य में भी परखा गया । यथा-

'सर्व सत्वानं हितसुखायं'

सुव्यवस्था, सुसंस्कार, धर्म परायणता, लोकोपकार, नैतिक-निखार, सामाजिक संवार आदि के परिप्रेक्ष्य में श्रमण-श्रमणी एवं श्रावक-श्राविका की भूमिका को महत्ता प्रदान की गई जिसकी यथावत गरिमा से चतुर्विध संघ गतिशील एवं गौरवान्वित है । आज भी श्रमण श्रमणी, गांव-गांव, नगर-नगर देश के एक छोर से दूसरे छोर तक पैदल, बिना पादुका के (नंगे पैर) कंटकाकीर्ण पथ पर चलकर अपने सदुपदेशों से समाज का कल्याण करते हैं इनके

श्रावक-श्राविका भी अपनी अटूट आस्था उनके प्रति अर्पित कर मर्यादा का पालन करते हैं । इस प्रकार जन जागृति का अद्वितीय कीर्तिमान स्थापित करना जैन धर्म की विशेषता है, जिसमें पांच महाव्रतों के पालन को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती है । आत्म संयम, सदाचार, सत्कर्म, सामाजिक समन्वय, जप-तप-नियम, सत्य-अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य आदि सांस्कृतिक उच्चादर्शों को स्वयं के जीवन में उतारने का आह्वान करते हुए लोकोपकारी कार्य करते हैं । इस परिप्रेक्ष्य में चातुर्मास की महत्ता अद्वितीय मानी गई है, जिसमें धर्म-ध्यान, पठन-पाठन, प्रवचन आदि कल्याण-कारी कार्य किये जाते हैं ।

'श्रमण' शब्द की व्युत्पत्ति की वरीयता को परखना भी उक्त परिप्रेक्ष्य में आवश्यक है । यह 'तप' और 'खेद' (परिश्रम) अर्थ वाली 'श्रम' धातु 'श्रम' तपसि खेदे च से 'ल्यु' प्रत्यय होकर 'श्रमण' शब्द बनता है । आचार्य हरिभद्र सूरि ने कहा है कि 'श्राम्यतीति श्रमणः तपस्यन्तीत्यर्थः'[५] अर्थात् जो श्रम करता है वह श्रमण है । आचार्य रविषेण ने 'तप' को ही श्रम कहा है । यथा-

परित्यज्य नृपो राज्यं, श्रमणो जायते महान् ।
तपसा प्राप्य सम्बन्ध, तपो हि श्रम उच्यते ॥[६]

अर्थात् राजा लोग भी राज्य का त्याग कर 'तप' से सम्बन्ध जोड़ कर 'श्रमण' बन जाते हैं । जिसके ऐतिहासिक उदाहरण अत्यधिक प्रेरक हैं ।

'श्रम' धातु के 'तप' और 'खेद' अर्थ को ध्यान में रखकर अभिधान राजेन्द्र कोश में 'श्रमण' की व्युत्पत्ति निम्न रूप में की गई है यथा-

'श्रममानयति पन्चेन्द्रियाणि मनश्चेति वा श्रमणः श्राम्यति संसर विषयेषु...........'[१]

'श्रमण' का मूल प्राकृत रूप 'समण' है । इसका संस्कृत रूपान्तर श्रमण, समन और शमन तथा श्रम, शम और सम है, जो श्रमण संस्कृति का मूलाधार है । 'समन' शब्द 'सम' उपसर्ग पूर्वक 'अण' धातु (अण प्राणने) से बनता है, जिसका अर्थ है-सभी प्राणियों पर समानता का भाव रखने वाला । उत्तराध्ययन सूत्र (२५/३१) में भी कहा गया है-'समयाए समणो होई' अर्थात् समता से 'श्रमण' होता है । यही नहीं अपितु-

णत्थि य से कोइ वेसो, पिओ य सव्वेसु जीवेसु ।
एएण होई समणो, एसो अन्नो नि पज्जाओ ॥

अर्थात् जो किसी से भी द्वेष नहीं करता, जिसे सभी जीव समान भाव से प्रिय होते हैं, वह श्रमण है । टीकाकार हेमचन्द्र ने 'श्रमण' 'समण' शब्द का निर्वचन 'सममन' किया है, जिसका तात्पर्य है सभी जीवों के प्रति समान भाव । इस परिप्रेक्ष्य में स्थानांगसूत्र का यह पद पठनीय है यथा-

सो समणो जइ सुमणो, मावेण जइण होइ पायमणो ।
सयणे अजणे य समो, समो अ माणावभाणेसु ॥

(स्थानांग सूत्र ६)

तथ्यतः शब्द अपनी महत्ता में असीम आदर्श संजोये सांस्कृतिक संवार एवं सामाजिक निखार का अतुलनीय भाव प्रकट करते हुए सभी प्राणियों के मंगल का आह्वान करता है, जिस पर बहुत कुछ लिखा जा सकता है ।

तथ्यतः 'श्रमण' संस्कृति का सूत्रधार श्रमण शब्द असीम, अनंत, अतुलनीय रहस्य स्वयं में समाहित किये हुए हैं तभी तो भगवान महावीर भी इस शब्द की महिमा से मंडित हुए । कठोरतम तप की तुला पर गुरुत्तर होकर तभी उनका एक नाम 'श्रमण' भी है । यथा-

'सहसमुइयाणे समणे'

Jain Sutras (S B E) Pt. 1, Page 193

इसकी टीका इस प्रकार की गई है-सहस मुदिता सहभाविनी तपः करुणादिशक्तिः तया 'श्रमण' इति द्वितीयः नामः[१] 'यही नहीं वरन् यह भी कहा गया है कि 'तएणं समणं भगवं महावीरे अरहा जाये, जिणो केवली सवन्न सव्व दरसी ।' संसार की सुख-शांति के लिए 'श्रमण' की गरिमा को परखना आवश्यक है । इस परिप्रेक्ष्य में यह उद्धरण विचारणीय है । यथा-

जह मम ण पियं दुक्खं, जाणिअ एमेव सव्वजीवाणं। ण हणइ ण हणावेइ, अ सममणइ तेण सो समणो॥ [११]

अर्थात् जिस प्रकार दुःख मुझे अच्छा नहीं लगता, उसी प्रकार संसार के अन्य सभी जीवों को अच्छा नहीं लगता। यह समझ कर कि जो न स्वयं हिंसा करता है न दूसरों से करवाता है। अपितु सर्वत्र सम रहता है, वह समण है। उक्त यथार्थता को यदि सभी [illegible] समझें, पीड़ा की अनुभूति स्वयं के समान अन्यों के प्रति भी करें तो संसार में असीम सुख-शांति हो जायेगी। अतः 'समण' की सामाजिक महत्ता को गंभीरता से परखना चाहिए, जिससे स्वयं का व समाज का कल्याण हो।

-कनवानी (उ.प्र.) २२२१४९

<u>सन्दर्भ :</u>

१. नि. भ. १३ (पूज्यपाद)
२. ठाणांग सूत्र सटीक पू. ठा. ४३, ४ सूत्र ३६३ पत्र २८१-२
३. भगवती सूत्र सटीक शतक २, ३,८. सूत्र ६८२ पत्र १४६१
४. सत्तरिसय ठाणावृत्ति १०० द्वार . आ.म. राजेन्द्रभिधान भाग ४ पृ. २२७६
५. जयधवला टीका
६. युक्तानुशासन
७. दशवैकालिक सूत्र १-३
८. पदमूचरित ६/२१२
९. भारतीय संस्कृति और श्रमण परम्परा-डा. हरीन्द्रभूषण जैन पृ० ८
१०. कल्पसूत्र, सुबोधिनी टीका पत्र २५४
११. स्थानांग सूत्र-३

वन्दना के स्वर
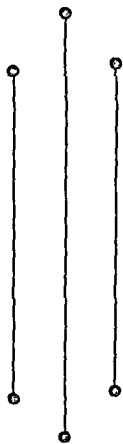
संदेश

अध्यात्म साधना केन्द्र
मेहरौली, नई दिल्ली

आचार्य महाप्रज्ञ
युवाचार्य महाश्रमण

जैनशासन में चतुर्विध धर्मसंघ की व्यवस्था है। उसमें आचार्य का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। ढाई हजार वर्ष की परम्परा में अनेक आचार्य हुए हैं और उन्होंने जिनशासन की सेवा की है।

आचार्य श्री नानालालजी म. साधुमार्गी परम्परा के एक प्रभावी आचार्य थे। उन्होंने अपने संघ के लिए अनेक कार्य किए। जिनशासन की एकता के लिए विशेषतः संवत्सरी की एकता के लिए उनकी प्रबल भावना थी। देवगढ़ (मेवाड़) में जब आचार्य श्री तुलसी से मिले उस समय भी संवत्सरी की चर्चा प्रमुख रूप से सामने आई। उनका स्वर्गवास जैनशासन के एक समर्थ व्यक्तित्व की रिक्तता का अनुभव करा रहा है। उनकी आध्यात्मिक यात्रा के लिए मंगल भावना। विश्वास है उनके उत्तराधिकारी आचार्य श्री रामलालजी, साधु-साध्वियाँ तथा श्रावक समाज सभी जिनशासन की सेवा के लिए कृत संकल्प रहेंगे।

आचार्य राजयश सूरिश्वर

आज व्यक्ति अपने घर के सदस्यों का भी नेतृत्व ठीक से नहीं कर सकते फिर इतने विशाल साधु-समुदाय एवं संघ को लेकर चलना आचार्य श्री नानेश के अद्वितीय एवं विलक्षण नेतृत्वगण का परिचायक है। आचार्य श्री नानालालजी म. सा. इस सदी के महान् आचार्य थे जो संप्रदाय में रहते हुए भी सम्प्रदायवाद से अलग थे। आपके चले जाने से जैन समाज ने एक महान् चिंतक आचार्य खो दिया जिसकी रिक्तता को हम निकट भविष्य में पूर्ण नहीं कर सकते।

राष्ट्रपति सचिवालय
राष्ट्रपति भवन
नई दिल्ली-११०००४

भारत के राष्ट्रपति श्री के. आर. नारायणन् जी को यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर अपने पाक्षिक मुखपत्र श्रमणोपासक का आचार्य श्री नानेश स्मृति विशेषांक प्रकाशित कर रहा है।

राष्ट्रपति जी इस प्रकाशन की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करते हैं।

आपका
प्रेम प्रकाश कौशिक

डा. गिरिजा व्यास सांसद
अध्यक्ष
राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा धर्मपाल प्रतिबोधक परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर नानालालजी म.सा. जिनका दिनांक २७.१०.९९ को महाप्रयाण हो गया था, की स्मृति में 'आचार्य श्री नानेश स्मृति विशेषांक' प्रकाशित करने जा रहे हैं।
मैं इस सुअवसर पर श्रद्धेय स्वर्गीय आचार्य प्रवर श्री नानालालजी को अपने हृदय स्पर्शी श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए बार-बार नमन करती हूं तथा आचार्य श्री के उत्तराधिकारी युवाचार्य शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, विद्वत शिरोमणि, प्रशान्त-मना पूज्य श्री रामलालजी म.सा. को भी साथ-साथ नमन करती हूं एवं आशा करती हूं कि भक्तजन आचार्य श्री के उपदेशों एवं निर्देशों का हृदय से सम्मान कर अनुकरण एवं स्मरण पूर्वक श्रद्धा अर्पित करते रहेंगे।

भवनिष्ठा
डा. गिरिजा व्यास

अशोक गहलोत

मुख्यमंत्री, राजस्थान

जैन अध्यात्म, दर्शन को नवीन दिशा बोध कराने में आचार्य श्री नानालालजी म.सा.का योगदान स्वत: सिद्ध है तथा उन्होंने विभिन्न नवाचारों के माध्यम से सामाजिक समरसता का जिस प्रकार सूत्रपात किया, वह अपने आप में प्रेरणादायी है। यह शुभ है कि उस विलक्षण संत के जीवन आदर्शों पर विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है

मुझे विश्वास है कि आचार्य श्री नानेश स्मृति विशेषांक की सामग्री आचार्य श्री जी के व्यक्तित्व-कृतित्व एवं जीवन दर्शन का ज्ञान कराने वाली होगी।

मैं चिरस्मृति शेष आचार्य श्री का श्रद्धापूर्वक स्मरण एवं संघ के नवमें पट्टधर आचार्य श्री रामलालजी म. सा. को श्रद्धापूर्वक नमन करते हुए विशेषांक की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

आपका

अशोक गहलोत

दिग्विजय सिंह

मुख्यमंत्री

मध्यप्रदेश शासन

आचार्य श्री नानेश जी ने भगवान महावीर के रास्ते पर चलकर समाज को, लोगों को एक नई दिशा दृष्टि प्रदान की। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने संत महापुरुषों के विचारों को आत्मसात् कर इनके दिखाये मार्गो पर चलने का प्रयत्न करें ताकि हम एक बेहतर समाज और राष्ट्र का निर्माण कर सकें।

मुझे आशा है कि आचार्य श्री नानेश स्मृति विशेषांक राष्ट्र और समाज को बेहतर बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

शुभकामनाओं सहित।

आपका

दिग्विजय सिंह

डा. बी. डी. कल्ला
मंत्री-कार्मिक, सामान्य प्रशासन, मंत्रिमंडल
सचिवालय एवं इंदिरा गांधी नहर परियोजना विभाग

स्वर्गीय आचार्य श्री नानेश भगवान महावीर द्वारा स्थापित सिद्धान्तों के प्रवर्तन की श्रृंखला में एक महत्वपूर्ण कड़ी सिद्ध हुए हैं। आचार्य श्री नानेश के सद्प्रयासों में सर्वाधिक प्रभावशाली कदम था, समता के विचार को साकार रूप प्रदान करना, पतित व वंचित वर्ग को भी बराबरी का स्थान दिलाया जाना। उन्होंने अपने जीवन काल में जो कुछ भी प्रचारित करना चाहा, वह स्वयं करके दिखाया। संभवतः यही कारण था कि उनके आचार्य काल में उन्हीं की प्रेरणा से ३५० से अधिक उपासकों ने दीक्षा प्राप्त की।
मुझे विश्वास है कि आचार्य श्री नानेश के उत्तराधिकारी के रूप में पूज्य आचार्य श्री रामलालजी म.सा. पूर्व में स्थापित साधुमार्गी जैन संघ सन्तों की स्वस्थ परम्पराओं को निरन्तर सशक्त बनाये रखने में संलग्न रहेंगे।

डा. बी.डी. कल्ला

न्यायाधीश मिलापचन्द जैन
लोकायुक्त, राजस्थान

स्मृति विशेषांक में आचार्य श्री के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर लेख प्रकाश डालेंगे जिससे जन-जन को उनके विषय में पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो सकेगा। आचार्य प्रवर विनम्रता से समस्त विश्व को समता का उपदेश व संदेश अपने जीवन में देते रहे हैं और इस संदेश के द्वारा अछूतोद्धार का महान् प्रयास उन्होंने किया। वे त्याग तपस्या व साधना की प्रतिमूर्ति थे। उनका नाम त्यागी, तपस्वी व साधक के रूप में हमेशा विश्व को याद रहेगा और जन-जन उनसे प्रेरणा लेगा, आत्मबोध, आत्मज्ञान, आत्मकल्याण के लिए प्रयत्नशील होगा और पूर्ण शान्ति प्राप्त कर सकेगा।

आपका
मिलापचन्द जैन

राजेन्द्र चौधरी
सूचना एवं जन सम्पर्क मंत्री
राजस्थान सरकार

आचार्य श्री जी ने विश्वशांति तथा मानसिक तनाव
से मुक्ति हेतु समाज को नई दिशा दी।

राजेन्द्र चौधरी

अशोक सिंघल
कार्याध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद्

महापुरुषों का जीवन ही समाज के पथ प्रदर्शन का कार्य सदैव से करता आ रहा है, उन्हीं के जीवन से व्यावहारिक शिक्षा समाज को प्राप्त होती है। विश्वास है कि इस स्मृति ग्रंथ के माध्यम से उनके जीवन का व्यावहारिक पक्ष समाज के सम्मुख आकर प्रेरणादायी सिद्ध होगा।

अशोक सिंघल

भैरोंसिंह शेखावत
नेता, प्रतिपक्ष
राजस्थान विधान सभा

आचार्य श्री नानेश जी महाराज ने संयमीय साधना के साथ वैचारिक संदेशों का शंखनाद कर भू-मण्डल को चमत्कृत किया है। उत्सूत्र सिद्धान्तों का उन्मूलन, समता सिद्धान्तों की प्रतिष्ठापना तथा अछूतोद्धार की धर्मपाल प्रवृत्ति का बीजारोपण करने में आचार्य श्री जी की प्रेरणा से अभिनव आयाम का सृजन किया है। आचार्य श्री ने सिर्फ जैन समाज को ही नहीं अपितु सम्पूर्ण समाज को धर्म एवं साधना का मार्ग दिखाया है।

मैं आचार्य श्री के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं।

भैरोंसिंह शेखावत

शांतिलाल चपलोत
पूर्व अध्यक्ष, राजस्थान विधानसभा

आचार्य श्री नानेश ने व्यसन मुक्ति का अभियान चलाकर असंख्य लोगों का कल्याण किया व उन्हें नवीन जीवन शैली प्रदान की।

आपका समता दर्शन हर युग में प्रासंगिक बना रहेगा।

शांतिलाल चपलोत

दिलीपसिंह भूरिया
अध्यक्ष, राष्ट्रीय अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति आयोग

श्री नानेश जी ने विषमता से त्रस्त विश्व को समता का संदेश दिया तथा समता के विचार को साकार रूप प्रदान करते हुए अछूतोद्धार की धर्मपाल प्रवृत्ति का बीजारोपण किया। उनके उत्तराधिकारी के रूप में आसीन पूज्य श्री रामलालजी उनके द्वारा रोपित वृक्ष एवं अन्य कार्यकलापों को और अधिक सफलतापूर्वक आगे बढायेंगे जिससे जन-मानस का कल्याण हो, यही मेरी शुभकामना है।

दिलीपसिंह भूरिया

प्रो. रासासिंह रावत
संसद सदस्य (लोकसभा)

स्वर्गीय आचार्य श्री नानेश जी के दर्शन करने का सुअवसर मुझे ब्यावर तथा पीपलियांकलां में मिला था, उनके मुखारविन्द से अमृतमयी वाणी से व्यक्ति, समाज और राष्ट्र में समता और ममता का संदेश सुनकर मैं गौरवान्वित हुआ था, उन्होंने भगवान महावीर के आदर्शों को अपने जीवन में उतारकर अपना जीवन मानवता के कल्याण हेतु समर्पित कर धार्मिक सिद्धान्तों को जो रचनात्मक एवं व्यावहारिक स्वरूप प्रदान किया वह सदैव स्मरणीय रहेगा, उनके द्वारा अपने अनुयायियों को छुआछूत मिटाने, दीन दुखियों की सेवा करने तथा रोगियों का उपचार करने हेतु कैंसर निदान केन्द्र (अस्पताल) खुलवाने तथा आध्यात्मिक शक्ति को जागृत करने का जो महत्वपूर्ण कार्य किया है वह सदैव समाज और राष्ट्र के लिए दीप स्तम्भ का कार्य करेगा। उन्होंने अपने आचार्य काल में ३५० से भी अधिक दीक्षायें प्रदान कर अपनी आत्मशक्ति और अनन्त प्रेरणा के अभिनव आयाम का जो सृजन किया है वह अत्यन्त स्तुत्य एवं प्रशंसनीय है।

रासासिंह रावत

डा. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी
पूर्व उच्चायुक्त ग्रेट ब्रिटेन एवं
अन्तर्राष्ट्रीय संविधान विशेषज्ञ
सांसद, राज्यसभा

परम् श्रद्धेय, साधु शिरोमणि, आचार्य श्री नानेश जिन शासन के अनन्य गतिबोधक और उद्बोधक थे। उनका जीवन साधना का पर्यायवाची रहा। मानवीय मूल्यों को उन्होंने अपने जीवन में जिया और सिद्ध किया। उपदेश और क्रियापक्ष से उन्होंने समाज को दिशा और कर्त्तव्यबोध की चेतना दी। अधूतोद्धार में उनका नेतृत्व एक अनुपम कीर्तिमान रहेगा। संस्कार निर्माण और व्यसन मुक्ति हेतु उन्होंने जो अभियान चलाया था, वह अविस्मरणीय है। मैं परम् श्रद्धेय आचार्य प्रवर की स्मृति को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने में गौरव का अनुभव करता हूं। वे साधुमार्गी जैन समुदाय के ही नहीं, श्रमण परम्परा के और भारत की वैश्विक दृष्टि के प्रखर और मुखर व्याख्याता और प्रवक्ता थे। उनकी स्मृति को मेरा विनयावनत् प्रणाम।

लक्ष्मीमल्ल सिंघवी

डा. लक्ष्मीनारायण पाण्डेय
संसद सदस्य (लोकसभा)
सभापति - रक्षा संबंधी संसदीय स्थायी समिति

पूज्यपाद आचार्य श्री नानेश जी एक अद्वितीय संत थे। देश की महान विभूतियों में उनकी गणना है। समता का संदेश उनका जहां 'मंत्र' था, वहीं आत्मानुभूति के लिए मानवीय प्रवृत्तियों में जागरुकता लाना उनकी अपनी आध्यात्मिक शैली का परिचायक स्वरूप था।

संघ के आचार्य के दायित्व के रूप में उत्तराधिकारी बनाकर पू. श्री रामलालजी महाराज को पदासीन किया है, यह हम सबके लिए गौरव का विषय है।

मैं श्रद्धावनत हूं पूज्यपाद श्री रामलालजी म.सा. के प्रति जो न केवल तरुण तपस्वी हैं अपितु वे शांत होने के साथ उनमें गांभीर्य है।

भारत को आज ऐसे ही संतों के आध्यात्मिक ज्ञान संदेश की आवश्यकता है।

डा. लक्ष्मीनारायण पांडेय

वन्दना के स्वर
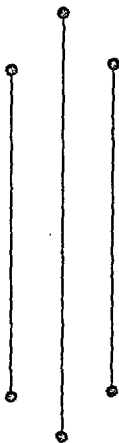
अणगार

स्फटिक मणि के समान पारदर्शी

नवोदित आचार्य प्रवर श्री रामलालजी म.सा. ने उपस्थित जन समुदाय को आचार्य देव के जीवन प्रसंग को उजागर करते हुए फरमाया कि-"आचार्य श्री का जीवन स्फटिक मणि के समान था, मैंने निकट से देखा है। मेरा परम् सौभाग्य रहा कि दीक्षा ग्रहण के पश्चात् पिछले दो चातुर्मासों को छोड़कर प्राय: उनके चरणों में रहने का प्रसंग बना एवं संयमी जीवन की साधना करता रहा। निकट रहने के कारण उनके हृदय की गहराइयों को पाने का प्रयास किया। उन महापुरुषों की गहराइयों की थाह पाना अशक्य नहीं तो दुष्कर अवश्य है। जहर पीकर उसे पचाना शंकर ही कर सकता है। साधारण व्यक्ति नहीं। आचार्य भगवन् भी अलौकिक महापुरुष थे। उन्होंने हर परिस्थितियों में समभाव बनाए रखा। कई जगह देखा आशापूर्ण हनुमानजी, चिन्ताहरण हनुमान जी आदि। उनके यहां आशा पूर्ण हुई या नहीं। चिन्ता दूर हुई या नहीं ? किन्तु आचार्य देव के स्मरण से आशापूर्ण एवं चिंता दूर हुई हैं। अनेक संकट दूर हुए हैं। जय गुरु नाना के जाप से कई कार्य सिद्ध हुए हैं। वे किसी को दु:खी देखना नहीं चाहते थे। मानवता के मसीहा महापुरुष थे आचार्य देव। उनका वियोग खलने जैसा है।"

'शांत क्रान्ति के अग्रदूत स्व. आचार्य श्री गणेशीलालजी म.सा. की तन्मयता पूर्वक सेवा की, सेवा के क्षेत्र में वे हमेशा तत्पर रहे। छोटे से छोटे संत की सेवा करने में भी पीछे नहीं रहते। उनका जीवन साधनामय जीवन रहा है। जो भी आचार्य देव के निकट रहा है, उसने देखा है कि वे सचमुच में समता की प्रतिमूर्ति थे। उनके जीवन से समता की प्रेरणा स्वत: ही मिल जाती थी। उनका जीवन उपलब्धियों से भरा था, वे कथनी की अपेक्षा करनी को विशेष महत्त्व देते थे।'

'जीवन की संध्या में भी उनका आत्मबल सुदृढ था। पिछले ८-१० दिन से स्वास्थ्य सुधर नहीं पा रहा था, बीच में उतार-चढाव आते रहे। ८ दिन से उसी कमरे में विराजते, चलना-फिरना भी उन्हें पसंद नहीं था। २६.१०.९९ की रात्रि को वे स्वयं अपने हाथों से सर दबाने लगे। मैंने सर दबाते-दबाते देखा, एक नस में भारी वेदना थी, कान में दर्द था। डाक्टर को दिखाना चाह रहे थे, किंतु आचार्य देव उसके लिए तैयार नहीं थे। डाक्टर पहुंचे, कहने लगे, 'एक इन्जेक्शन लगाना है।' आचार्य देव ने कहा-'दया पालो, अब मुझे उपचार नहीं लेना है।' स्वास्थ्य में उतार-चढाव आते रहे। मैंने कहा चौरासी लाख जीवयोनि से खमत-खामणा करना है। गुरुदेव ने खमत खामणा का उच्चारण किया। २७.१०.९९ को प्रात: डाक्टर पहुंचे, देखना चाह रहे थे, किन्तु जब आचार्य प्रवर ने स्पष्ट फरमा दिया है तो अब अलग से कुछ करने की आवश्यकता नहीं है। ऐसी स्थिति में बिना सहमति के जबरदस्ती करना उचित नहीं समझा। सबका एक ही मत था कि अब प्रत्याख्यान करवा दिये जांय, प्रत्याख्यान करवा देवें। स्थविर प्रमुख श्री जी म.सा. ने भी आचार्य देव की भावना से अवगत कराया। आचार्य देव के उत्कृष्ट भावों को देखते हुए स्थविर प्रमुख जी म.सा. ने प्रात: ९.४५ पर तिविहार संथारा करा दिया, जिसकी घोषणा सायं ४ बजे श्रावकों के बीच कर दी गई तथा ५.३५ पर चौविहार प्रत्याख्यान करा दिया। रात्रि के १०.३० पर देखा तो हाथ की नाड़ी ऊपर चली गई। नब्ज धीमी चल रही थी, उस समय न हिचकी आई, न डकार ही आई तथा न उल्टी-दस्त हुई। रात्रि के लगभग १०.४१ पर दाहिनी आंख की पलक गिरी और उठी। उसी समय आत्मा नश्वर देह से अलग हो गई।'

हमारा सिर छत्र जो हमारी रक्षा करने वाला था, मार्ग दृष्टा था, वह दैहिक रूप में हमारे बीच नहीं रहा है। यद्यपि आचार्य देव शरीर के रूप में हमारे समक्ष नहीं है, तथापि उनकी छत्र-छाया मेरे सिर पर सदा बनी रहेगी। उनके सहारे हमारी साधना चलती रहे। महापुरुषों का आशीर्वाद बना रहेगा। जिस विश्वास के साथ आचार्य देव ने संघ का गुरुतर उत्तरदायित्व मेरे निर्बल हाथों में सौंपा है, उनके वरदहस्त से मैं इस चतुर्विध संघ की जितनी बन सकेगी, उतनी सेवा करता रहूंगा। आचार्य देव ने मुझे चतुर्विध संघ की गोद में बैठाया है, इसलिए मैं सुरक्षित हूं। एक व्यक्ति से संघ नहीं चलता। सबके सहयोग, सहकार से ही संघीय व्यवस्था सुचारू रूपेण चलती है। संघ के आप सदस्य हैं, संघ आपका है। इसे ऊंचाइयों तक पहुंचाना हम सबका कर्त्तव्य है। इसके लिए सन्त-सतीवर्याएं अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, महिला समिति, समता युवा संघ, बालक मंडली, सभी का समर्पण भाव से सहकार जरूरी है।

उदयपुर संघ ने स्वर्गीय आचार्य श्री गणेशीलालजी म.सा. की जिस तन्मयता, निष्ठापूर्वक सेवा की थी, वह इतिहास के रूप में सामने है। आचार्य देव का पिछला चातुर्मास यशस्वी रूप से सम्पन्न हुआ। यहां से विहार कर दिया था, किन्तु उदयपुर संघ की श्रद्धा भक्ति एवं आचार्य देव के स्वास्थ्य को देखते हुए कारणवश यह चौमासा भी यहीं हो रहा था, किन्तु बीच में ही यह स्थिति बन गई। इस अवधि में उदयपुर संघ ने जो सेवाएं कीं, वे अन्य संघों के लिए स्मरणीय हैं।

आज चारित्रिक मूल्यों का पतन हो रहा है। अखबारों के पृष्ठ ऐसी घटनाओं से भरे हुए हैं। राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक क्षेत्रों में क्या अवस्थाएं घटित हो रही हैं [illegible] है। यदि ऐसा होता रहा, उस ओर [illegible] क्या होगा पिछली पीढ़ी का? [illegible] ? राजनैतिक धरातल पर [illegible] में लग जाते हैं, कुर्सी [illegible] [illegible] में

रहा है। प्रचार तभी महत्वपूर्ण होगा जब आचरण में होगा? बिना आचरण के किया गया प्रचार तभी महत्वपूर्ण होगा जब आचरण सही होगा। बिना आचरण के किया गया प्रचार प्राण रहित शरीर की तरह है। हमारे विचार सुन्दर हों, आचरणयुक्त हों, श्रेष्ठ विचारों पर ही चारित्रिक मूल्य सुरक्षित रह सकते हैं। आचार्य देव के विचारों को जीवन में उतारेंगे तो जीवन उज्ज्वल बन सकेगा।

आचार्य देव ने सांवत्सरिक एकता आदि के संदर्भ में जो उद्गार व्यक्त किये उन्हीं का मुझे निर्देश दिया है। तद्नुसार मैं चलने को तत्पर हूं।

यहाँ विराजित शासन प्रभावक श्री सम्पतमुनिजी म.सा. इस अवस्था में शासन सेवा में लगे हुए हैं। [illegible] त्यागी श्री रणजीत मुनिजी म.सा., घोर तपस्वी श्री [illegible] मुनिजी म.सा. की सेवाएं भी चल रही हैं। स्थविर प्रमुख श्री ज्ञानमुनिजी म.सा. विलक्षणता व प्रखरता के [illegible] शासन सेवा में लगे हुए हैं, यह गौरव का विषय है, जिसे आप सब अनुभव कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त [illegible] प्रभावक श्री सेवन्त मुनिजी म.सा., शासन प्रभावक [illegible] धर्मेश मुनिजी म.सा. की शासन सेवाएं प्रशंसनीय हैं। विद्वान् श्री विनयमुनिजी म.सा., आदर्श सेवामूर्ति [illegible] पद्ममुनिजी म.सा., प्रज्ञा सम्पन्न श्री कांति मुनिजी म.सा., तरुण तपस्वी श्री अशोक मुनिजी म.सा. और सभी सन्त जो अलग-अलग क्षेत्रों में शासन की [illegible] प्रभावना कर रहे हैं, जिसके प्रति प्रमोद भाव है। इसी प्रकार महासतीवर्याएं भी अपनी शक्ति के साथ संघ [illegible] अदम्य उत्साहपूर्वक लगी हुई हैं, जिसके प्रति अभिनन्दन है। जिन वक्ताओं ने आचार्य देव के गुणगान किये व जो नहीं कर पाये, उनकी भावनाएं प्रशंसनीय हैं। महापुरुषों के [illegible] स्मरण से कर्मों की निर्जरा का प्रसंग बनता है। आचार्य भगवन् का सान्निध्य प्रत्यक्ष रूप से नहीं तो [illegible] में आशीर्वाद स्वरूप हमें मिलता रहे, जिससे हमारी [illegible] साधना आगे बढ़ती रहे। आचार्य देव के वियोग को [illegible] करने के लिए हमें हृदय को मजबूत करना है तथा उनके आदर्शों को कायम रखते हुए शासन सेवा में तत्पर रहें।

प्रस्तुति : रतनलाल [illegible]

तीन शरीर एक प्राण

स्थविर प्रमुख श्री ज्ञानमुनिजी म.सा. ने समयाभाव को ध्यान में रखते हुए अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। आपने कहा-'आचार्य भगवन् ने एक-एक जीवन का सर्जन करने में महान् योगदान देकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।' मुनि श्री ने आचार्य देव की सन्निधि में बीते क्षणों, संस्मरणों को भावपूर्वक चतुर्विध संघ के समक्ष रखा। जिसे श्रवण कर प्रत्येक मानस रोमांच से भर उठा। मुनिश्री ने संघ विभाजन की परिस्थिति से लेकर आचार्य देव के संथारा ग्रहण तक की स्थिति में अपनी सेवा-समर्पणा की भूमिका को सहज रूप में व्यक्त करते हुए आचार्य देव के श्रीमुख से उच्चरित उन शब्दों का स्मरण किया, जिसमें आचार्य देव ने फरमाया था कि "मैं, युवाचार्य श्री एवं ज्ञानमुनि-तीन शरीर एक प्राण हैं और इसी रूप में शासन की सेवा करनी है। तीन शरीर एक प्राण की तरह शासन में जो कार्य करना होगा वह तीनों की सलाह से होगा।" अनेक विध संस्मरणों को ताजा करते हुए मुनिश्री ने आचार्य देव द्वारा समय-समय पर उच्चारित "'तू मुझे खाली मत भेजना। जब भी उतार-चढ़ाव की स्थिति आए तो तू मुझे संथारा करवा देना' - इस वाक्य को सदन में रखा। आपने कहा-मेरे दिमाग में निरन्तर इस बात का टेंशन रहता था कि मैं इस प्रकार की जिम्मेदारी को निभा पाऊँगा कि नहीं ....। प्रसंगोपात मुनि श्री ने युवाचार्य श्री (नवोदित आचार्य प्रवर) के संकेतानुसार वज्रपात को सहते हुए संथारे की विधि पूर्ण कराने एवं दशवैकालिक सूत्र के चार अध्ययन सुनाने संबंधी कार्य की सिलसिलेवार जानकारी दी। आपने कहा-'आचार्य भगवन् ने पूरी शांति के साथ अंतिम श्वास को छोड़ा। श्वास की गति में उतार-चढ़ाव नहीं आया। समाधिपूर्वक रात को दस बजकर इकतालीस मिनट पर स्वर्गधाम को पा लिया।'

इस प्रसंग पर मुनिश्री ने साधु-साध्वी के समय मुख वस्त्रिका के उपयोग, सेल की घड़ी को न पहनने के संकल्प, बच्चों के साथ मारपीट नहीं करने तथा जप, तप, नियम वर्ष को सफल बनाने की प्रेरणा दी तथा नवोदित आचार्य प्रवर के प्रति शुभकामनाएं व्यक्त कीं।

प्रस्तुति : रतनलाल जैन

हमारा सिर छत्र जो हमारी रक्षा करने वाला था, मार्ग दृष्टा था, वह देहिक रूप में हमारे बीच नहीं रहा है। यद्यपि आचार्य देव शरीर के रूप में हमारे समक्ष नहीं है, तथापि उनकी छत्र-छाया मेरे सिर पर सदा बनी रहेगी। उसके सहारे हमारी साधना चलती रहे। महापुरुषों का आशीर्वाद बना रहेगा। जिस विश्वास के साथ आचार्य देव ने संघ का गुरुत्तर उत्तरदायित्व मेरे निर्बल हाथों में सौंपा है, उनके वरदहस्त से मैं इस चतुर्विध संघ की जितनी बन सकेगी, उतनी सेवा करता रहूंगा। आचार्य देव ने मुझे चतुर्विध संघ की गोद में बैठाया है, इसलिए मैं सुरक्षित हूं। एक व्यक्ति से संघ नहीं चलता। सबके सहयोग, सहकार से ही संघीय व्यवस्था सुचारू रूपेण चलती है। संघ के आप सदस्य हैं, संघ आपका है। इसे ऊंचाइयों तक पहुंचाना हम सबका कर्त्तव्य है। इसके लिए सन्त-सतीवर्याएं अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, महिला समिति, समता युवा संघ, बालक मंडली, सभी का समर्पण भाव से सहकार जरूरी है।

उदयपुर संघ ने स्वर्गीय आचार्य श्री गणेशीलालजी म.सा. की जिस तन्मयता, निष्ठापूर्वक सेवा की थी, वह इतिहास के रूप में सामने है। आचार्य देव का पिछला चातुर्मास यशस्वी रूप से सम्पन्न हुआ। यहां से विहार कर दिया था, किन्तु उदयपुर संघ की श्रद्धा भक्ति एवं आचार्य देव के स्वास्थ्य को देखते हुए कारणवश यह चौमासा भी यहीं हो रहा था, किन्तु बीच में ही यह स्थिति बन गई। इस अवधि में उदयपुर संघ ने जो सेवाएं कीं, वे अन्य संघों के लिए स्मरणीय हैं।

आज चारित्रिक मूल्यों का पतन हो रहा है। अखबारों के पृष्ठ ऐसी घटनाओं से भरे हुए हैं। राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक क्षेत्रों में क्या अवस्थाएं घटित हो रही हैं, इस पर चिन्तन जरूरी है। यदि ऐसा होता रहा, उस ओर हमारा ध्यान नहीं गया तो क्या होगा पिछली पीढ़ी का? क्या सीखेंगे आने वाले बालक? राजनैतिक धरातल पर भी कोई सिद्धान्त नहीं रहे। जोड़-तोड़ में लग जाते हैं, कुर्सी बचाने की चिन्ता में रहते हैं। नैतिकता को भूलते जा रहे हैं। इसका प्रभाव हर क्षेत्र में पड़ता जा रहा है। धार्मिक क्षेत्र में भी आचरण की बजाय प्रचार-प्रसार को महत्त्व दिया जा रहा है। प्रचार तभी महत्त्वपूर्ण होगा जब आचरण [illegible] होगा? बिना आचरण के किया [illegible] होगा जब आचरण सही होगा। बिना आचरण के [illegible] गया प्रचार प्राण रहित शरीर की तरह है। [illegible] सुन्दर हों, आचरणयुक्त हों, श्रेष्ठ विचारों पर [illegible] मूल्य सुरक्षित रह सकते हैं। आचार्य देव के विचारों [illegible] जीवन में उतारेंगे तो जीवन उज्ज्वल बन सकेगा।

आचार्य देव ने सांवत्सरिक एकता आदि के संदर्भ में जो उद्‌गार व्यक्त किये उन्हीं का मुझे निर्देश दिया है, तदनुसार मैं चलने को तत्पर हूं।

यहाँ विराजित शासन प्रभावक श्री सम्पतमुनिजी म.सा. इस अवस्था में शासन सेवा में लगे हुए हैं। आदर्श त्यागी श्री रणजीत मुनिजी म.सा., घोर तपस्वी श्री बलभद्र मुनिजी म.सा. की सेवाएं भी चल रही हैं। स्थविर प्रमुख श्री ज्ञानमुनिजी म.सा. विलक्षणता व प्रखरता के साथ शासन सेवा में लगे हुए हैं, यह गौरव का विषय है, जिसका आप सब अनुभव कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त शासन प्रभावक श्री सेवन्त मुनिजी म.सा., शासन प्रभावक श्री धर्मेश मुनिजी म.सा. की शासन सेवाएं प्रशंसनीय हैं। विद्वान् श्री विनयमुनिजी म.सा., आदर्श सेवामूर्ति श्री पद्‌ममुनिजी म.सा., प्रज्ञा सम्पन्न श्री कांति मुनिजी म.सा., तरुण तपस्वी श्री अशोक मुनिजी म.सा. आदि सभी सन्त जो अलग-अलग क्षेत्रों में शासन की भव्य प्रभावना कर रहे हैं, जिसके प्रति प्रमोद भाव है। इसी प्रकार महासतीवर्याएं भी अपनी शक्ति के साथ संघ उन्नयन में अदम्य उत्साहपूर्वक लगी हुई हैं, जिसके प्रति अहोभाव है। जिन वक्ताओं ने आचार्य देव के गुणगान किये व जो नहीं कर पाये, उनकी भावनाएं प्रशंसनीय हैं। महापुरुषों के गुण स्मरण से कर्मों की निर्जरा का प्रसंग बनता है। आचार्य भगवन् का सान्निध्य प्रत्यक्ष रूप से नहीं तो अप्रत्यक्ष रूप में आशीर्वाद स्वरूप हमें मिलता रहे, जिससे हमारी संयम-साधना आगे बढ़ती रहे। आचार्य देव के वियोग को सहन करने के लिए हमें हृदय को मजबूत करना है तथा उनके आदर्शों को कायम रखते हुए शासन सेवा में तत्पर बने रहें।

प्रस्तुति : रतनलाल जैन

तीन शरीर एक प्राण

स्थविर प्रमुख श्री ज्ञानमुनिजी म.सा. ने समयाभाव को ध्यान में रखते हुए अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। आपने कहा-'आचार्य भगवन् ने एक-एक जीवन का सर्जन करने में महान् योगदान देकर महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।' मुनि श्री ने आचार्य देव की सन्निधि में बीते क्षणों, संस्मरणों को भावपूर्वक चतुर्विध संघ के समक्ष रखा। जिसे श्रवण कर प्रत्येक मानस रोमांच से भर उठा। मुनिश्री ने संघ विभाजन की परिस्थिति से लेकर आचार्य देव के संथारा ग्रहण तक की स्थिति में अपनी सेवा-समर्पणा की भूमिका को सहज रूप में व्यक्त करते हुए आचार्य देव के श्रीमुख से उच्चरित उन शब्दों का स्मरण किया, जिसमें आचार्य देव ने फरमाया था कि "मैं, युवाचार्य श्री एवं ज्ञानमुनि-तीन शरीर एक प्राण हैं और इसी रूप में शासन की सेवा करनी है। तीन शरीर एक प्राण की तरह शासन में जो कार्य करना होगा वह तीनों की सलाह से होगा।" अनेक विध संस्मरणों को ताजा करते हुए मुनिश्री ने आचार्य देव द्वारा समय-समय पर उच्चारित '"तू मुझे खाली मत भेजना। जब भी उतार-चढाव की स्थिति आए तो तू मुझे संथारा करवा देना' - इस वाक्य को सदन में रखा। आपने कहा-मेरे दिमाग में निरन्तर इस बात का टेंशन रहता था कि मैं इस प्रकार की जिम्मेदारी को निभा पाऊँगा कि नहीं ....। प्रसंगोपात मुनि श्री ने युवाचार्य श्री (नवोदित आचार्य प्रवर) के संकेतानुसार वज्रपात को सहते हुए संथारे की विधि पूर्ण कराने एवं दशवैकालिक सूत्र के चार अध्ययन सुनाने संबंधी कार्य की सिलसिलेवार जानकारी दी। आपने कहा-'आचार्य भगवन् ने पूरी शांति के साथ अंतिम श्वास को छोड़ा। श्वास की गति में उतार-चढ़ाव नहीं आया। समाधिपूर्वक रात को दस बजकर इकतालीस मिनट पर स्वर्गधाम को पा लिया।'

इस प्रसंग पर मुनिश्री ने साधु-साध्वी के समय मुख वस्त्रिका के उपयोग, सेल की घड़ी को न पहनने के संकल्प, बच्चों के साथ मारपीट नहीं करने तथा जप, तप, नियम वर्ष को सफल बनाने की प्रेरणा दी तथा नवोदित आचार्य प्रवर के प्रति शुभकामनाएं व्यक्त कीं।

प्रस्तुति : रतनलाल जैन

- आदर्श त्यागी श्री रणजीत मुनिजी

विनय की प्रतिमूर्ति

आदर्श त्यागी, तपस्वी श्री रणजीत मुनि जी म.सा. ने आचार्य देव की विचक्षणता, गहरी चिंतन शक्ति के स्मरण करते हुए वर्तमान संघ अनुशास्ता को विनय की प्रतिमूर्ति बताया । श्रीमद् रामेशाचार्य की निराभिमानता सरलता, सहजता एवं सौम्यता को मुनि श्री ने समर्पित भाव से व्यक्त किये ।

- घोर तपस्वी श्री बलभद्र मुनि जी

दिखावे एवं आडम्बर से दूर

घोर तपस्वी श्री बलभद्र मुनि जी म.सा. ने आचार्य देव की शिक्षा एवं संकेतों को जीवन में उतारने का आह्वान किया । आचार्य देव को दिखावा, आडम्बर पसंद नहीं था । वे कहने की अपेक्षा करने में विश्वास रखते थे। तपस्वीराज ने अपने संसारी पिताश्री एवं भ्राता के संयमी जीवन के संस्मरण भी सुनाये ।

प्रस्तुति : रतनलाल डोसी

विश्व शांति के मसीहा

जिनका जीवन ही समतामय बन गया ऐसे नाना गुरु, जन-जन के मन भावन बालक गोवर्धन के नाम से माता शृंगारबाई पिता मोडीलाल द्वारा अलंकृत, मेवाड़ के चितौड़ जिले के कपासन कस्बे के दांता ग्राम को विश्व पटल र प्रस्थापित करने वाले आचार्य नानालालजी ने अपने जीवन के ८ दशक पूर्ण किए और सं २०५६ कार्तिक कृष्णा तृतीया दि. २७-१०-९९ को रात्रि १०.४५ पर स्वर्गस्थ हुए।

६० वर्ष के संयम पर्याय व ३७ वर्ष के आचार्य काल में उन्होंने छः काया के कल्पवृक्ष समान भव्य मुमुक्षु आत्माओं को दीक्षित, शिक्षित, सिंचित, पल्लवित, पुष्पित एवं फलित किया।

निकट भूत में स्थानकवासी साधुमार्गी संघ में इतनी दीर्घ आयु, दीक्षा पर्याय एवं लंबा आचार्यकाल कीर्तिमानीय है।

परिवर्तिनि संसारे, मृतः को वा न जायते।
सजातो येन जातेन, यतिवंश समुन्नतिम्।

इस परिवर्तनशील संसार में किसने जन्म नहीं लिया और कौन नहीं मरा, किंतु जन्म उन्हीं का सार्थक होता है, जो अपने कुल, वंश के साथ-साथ संघ का भी गौरव बढ़ाता है।.

इस महापुरुष ने प्रभु महावीर के शासन एवं हुक्म संप्रदाय के गौरव को बढ़ाया है। उनका जीवन हमारे लिए आदर्श और अनुकरणीय है।

उन्होंने अपने ६० वर्ष के साधक जीवन में साधना, ध्यान एवं मौन द्वारा जो शक्ति अर्जित की है तथा उन्होंने जीवन जीने का जो आदर्श हमारे सामने प्रस्तुत किया है, हम भी उनके पद-चिन्हों पर चलकर वैसा ही आदर्श दुनिया के सामने उपस्थित कर अपना अंतिम समय सफल बनावें।

वर्तमान आचार्य श्री से निवेदन है कि उन महापुरुषों की आपने २४ वर्ष की अनुपम सेवा से जो शक्ति एवं आगम-मंथन से जो उपलब्धि हस्तगत की है, उसे द्विगुणित करते हुए विश्व को नया आयाम देवें।

जोश न ठंडा होने पावे, कदम बढ़ाकर चल।
मंजिल तेरी राह चूमेगी, आज नहीं तो कल॥

आप श्री जी भी अपने आत्मबल को बढ़ाते हुए प्रभु महावीर एवं हुक्म शासन की इस परंपरा की अपार वृद्धि करें। सारा चतुर्विध संघ आपके साथ है। शासन को दिन दूना, रात चौगुना चमकावें।

आपके युवाचार्य पद के समय हुक्म शासन के अष्टम पाट को सुशोभित करने वाले आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. और भावी नवम पट्ट का गौरव बढ़ाने वाले युवाचार्य (आप श्री) का अष्ट सिद्धि और नव निधि के रूप में योग मिला था। आज स्व. आचार्य श्री हमारे बीच में भौतिक शरीर से नहीं है, उनकी आत्मा का वरद हस्त अभी भी हमारे ऊपर मौजूद है। आप और हम सभी अपनी संपूर्ण शक्ति से शासन के अप्रतिम विकास में सहयोगी बनें। भारत के विभिन्न क्षेत्रों के अंचल में जैन सिद्धांतों को प्रसारित करने में हमारा योगदान सहायक हो सकता है।

स्वर्गीय आचार्य श्री जी ने आचार्य काल के ३७ वर्षों में जिस प्रकार भारतवर्ष के अनेक गांव को स्पर्श कर जिनशासन को चमकाया उसी प्रकार उन महापुरुषों का दायित्व आप श्री जी के सशक्त कंधों पर आया है। चतुर्विध संघ के प्रत्येक सदस्य के सहयोग से आप जिन शासन की शोभा बढ़ावें।

चमकेगा वीर शासन, नेतृत्व एक होगा,
एक शिक्षा, दीक्षा होगी, चौमासा एक होगा।

विचरण आलोचनाएं आचार्य एक देंगे।
सच्चे हृदय से कहते हम प्रेम से रहेंगे॥
सम्पत समाज के हित हम सब करें समर्पण,
शिव सुख तभी मिलेगा कहता है जैन दर्शन।
जो राग द्वेष त्यागेंगे, वे ही सुखी बनेंगे,
सच्चे हृदय से कहते, हम प्रेम से रहेंगे॥

व्यक्तित्व विराट सुहाना था

शा.प्र. महाश्रमणी श्री केशर कंवरजी म.सा.

आयारियाणं पद के स्वामी
खो गए कहां है आज अहो।
ये मुकुट मणि जिन शासन के
सो गये कहां है आज अहो।

व्यक्तित्व विराट सुहाना था
इस जग ने उनको माना था
सुर-असुर-नरों की श्रद्धा का
शुभ-केन्द्र-कुंज गुरु नाना था।
श्री संघ-चतुर्विध के स्वामी-२
विलीन हुए हैं जो अहो-ये मुकुट....।१।

महावीर दूत बन गुरु राई
महायोगी बनकर आए थे
आंखें खोली तारी नैया
चिंतामणि तुल्य सुहाये थे
समता के अभिनवतम सर्जक-२
वे चले गए क्यों आज अहो- ये मुकुट....।२।

वे धर्मपाल के प्राणेश्वर
महागोप यहां कहलाए थे
जनता को दिशा बोध देने वे
ध्यान समीक्षण लाए थे
जिनवाणी का संवर्धन कर-२
गए दिव्य लोक में आज अहो-ये मुकुट....।३।

देवराज इन्द्र भी नमते थे
सुर-असुरों की क्या गिनती है
नर-नारी वृन्द सभी मिलकर
करते चरणों मे विनती है
इस युग की विरल विभूति थेर
विदीर्ण हुए हैं आज अहो- ये मुकुट ....।४।

धरती रोती अम्बर रोता
रोता है जन-जन सारा
वे कहां गये नानेश गुरु
सूना है कण-कण सारा
राम गुरु के महागुरु-२
स्वदेश गये क्यों आज अहो ये.. मुकुट..।५।

किन शब्दों में कहूँ आज उन्हें
नहीं काव्य- कविता आती है
नहीं बृहस्पति गुण गा सकते
क्या मेरी गति कहलाती है
श्रद्धा-भक्ति से पूज रहे-२
वे कहां गये हैं आज अहो ... ये मुकुट..।६।

श्री वीर प्रभु के अनुगामी
दे गये हमें गुरु राम महा
इनकी आज्ञा में रहने का
संकल्प हमारा भव्य रहा
शत् शत् वंदन लें केशर
आलोप हुए हैं आज अहो- ये मुकुट ...।७।

अध्यात्म जगत के कोहिनूर

जिस प्रकार कोहिनूर हीरा एक साधारण खदान से निकल कर भी सारे विश्व के रंगमंच पर स्थापित हुआ है, उसी प्रकार अध्यात्म जगत के कोहिनूर आचार्य नानेश ने, राजस्थानान्तर्गत मेवाड़ की पावन धरा, जो कर्मवीर महाराणा प्रताप, दानवीर भामाशाह के इतिहास से गौरवान्वित है, चित्तौड़ जिलान्तर्गत कपासन तहसील के एक छोटे से ग्राम दांता ग्राम में श्रेष्ठीवर्य श्री मोडीलाल जी पोखरना की धर्मपत्नी सिणगार बाई की रत्न कुक्षि से वि.सं. १९७७ की जेठ सुदी द्वितीया तदनुसार १९ मई १९२० बुधवार को जन्म लेकर विश्व रंगमंच को आलोकित किया। ग्रामीण संस्कृति में बालक नाना का पोषण हुआ। तत्कालीन व्यवस्थानुसार वर्णमाला, जोड़, बाकी, गुणा, भाग आदि विद्यार्जन करके गृहकार्य एवं व्यापारिक क्षेत्र मे प्रवेश किया। धार्मिक क्रिया के संस्कार की कमी के कारण धार्मिक क्रियाओ में भले अरुचि थी पर अन्तर्मन में धार्मिकता के वे सारे सद्गुण बीज रूप में अवस्थित थे, जिसके कारण ही उनके जीवन के हर व्यवहार में प्रामाणिकता, दया, करुणा, स्नेह की पावन सरिता प्रवाहित थी। इसी कारण छोटी अवस्था में ही सारे ग्रामवासियों के स्नेहभाजन बने हुए थे। पितृ-वियोग का दुःख मातृ ममता में अत्यधिक सहायक बनता गया जिसके कारण माता की सेवा मे अहर्निश जुट गए।

निमित्त पाकर बीज रूप में अवस्थित वे आध्यात्मिक, धार्मिक व नैतिकता के बीज मेवाड़ी मुनि चौथमलजी के प्रवचन से अंकुरित हुए, पूज्य मोतीलाल जी. म.सा. के सानिध्य से पल्लवित हुए और पूज्य श्री गणेशाचार्य की चरण शरण में पुष्पित, फलित हुए। इसी के फलस्वरूप विक्रम संवत १९९६ की पौष शुक्ला अष्टमी दि. १८ जनवरी १९४० को कपासन में जैन भागवती दीक्षा ग्रहण करके मुनिधर्म में प्रवेश पाया। विनीत शिष्य के रूप में अहर्निश गुरु चरणों की उपासना करते हुए अपने जीवन को ज्ञानालोक से आलोकित किया। समग्र जैन वांगमय के साथ ही वैदिक ग्रंथ, कुरान, बाईबिल एवं मुख्य रूप से प्रचलित षट्दर्शन के साथ विज्ञान चिंतकों के मंतव्यों का भी गहन अध्ययन किया। दादा गुरु आचार्य श्री जवाहर एवं दीक्षा गुरु आचार्य श्री गणेश के व्यक्तित्व व वैचारिक उत्क्रांति से राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, सरदार वल्लभ भाई पटेल, सर मनु भाई देशाई, बाल गंगाधर तिलक, गोखले, कस्तूर बा गांधी, विनोबा भावे जैसे राष्ट्र के सर्वोच्च नेता प्रभावित थे। उन जवाहराचार्य, गणेशाचार्य की हर कसौटी पर मुनि नाना कोहिनूर हीरे की तरह खरे उतरे। मुनि नाना को धर्म संघ के भावी संघ नायक के प्रतीक युवाचार्य पद पर वि.सं. २०१९ की असोज सुदी द्वितीया, ३० सितम्बर १९६२ को उदयपुर के राजप्रांगण में सूर्य झरोखे के ठीक नीचे तीस हजार की विशाल जनमेदिनी के सामने महाराणा भगवतसिंह जी की उपस्थिति में प्रतिष्ठित किया। तदनंतर साढ़े तीन माह बाद वि.सं. २०१९ माघ वदी २, दि. ११ जनवरी १९६३, शुक्रवार को अपने आराध्य गुरुदेव श्री गणेश के महाप्रयाण के पश्चात् आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए। तत्कालीन विरोधी वातावरण के भयंकर उन्माद का सामना करते हुए अध्यात्म क्षेत्र में एक नई उत्क्रांति का सिंहनाद करते हुए इस नर-केसरी ने अपने चरण आगे बढ़ाए।

गुरु नाना की सिंह गर्जना से दुराग्रहियों का विरोधी वातावरण तो अपने आप ही शमन होता गया तो सत्याग्रहियों में एक नया उत्साह उमड़ पड़ा। ज्यों-ज्यों व्यक्ति आपके संपर्क में आने लगे सहज ही आपसे प्रभावित हुए बिना न रहे। फिर वे व्यक्ति चाहे राजकीय क्षेत्र से प्रभावित हों, चाहे अध्यात्म क्षेत्र से अथवा वैज्ञानिक क्षेत्र

से। चाहे फिर वह बालक हो, युवा हो अथवा प्रौढ़ या वृद्ध। उनमें से विशेषकर आदिवासियों के प्रमुख बालेश्वरदयाल जी, तत्कालीन मंत्री गंगवाल जी, गौतम जी शर्मा, प्रकाश जी सेठी, पाटस्कर साहेब, मोहनलाल सुखाड़िया, भूतपूर्व प्रधानमंत्री देवगौड़ा, मोतीलाल जी वोरा, गिरिजा व्यास, भैरोसिंह जी शेखावत आदि अनेक राष्ट्रीय नेता व अध्यात्म क्षेत्र के जैन-जैनेतर उद्भट विद्वान श्री सिद्धनाथ जी उपाध्याय, गजानंद जी शास्त्री, विष्णुकुमार जी, वज्रधर जी आदि सानिध्य पाकर मुक्तकंठ से प्रशंसक बने। साथ ही वैज्ञानिक क्षेत्र के महान चिंतक डॉ. दौलतसिंह जी कोठारी, डॉ. लक्ष्मीमल संघवी आदि अनेक महानुभाव आपकी प्रतिभा एवं सचोट समाधान से प्रभावित एवं चमत्कृत भी।

आपने विश्व समस्या के समाधान हेतु जिज्ञासुओं की भावनाओं का समादर करते हुए 'समता दर्शन-व्यवहार' जिसके हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती आदि विभिन्न भाषाओं के संस्करणों की प्रबुद्ध वर्ग ने मुक्त कंठ से सराहना की। साथ ही तनाव मुक्ति के अपने अनुभूत प्रयोग रूप प्रचलित ध्यान योग पद्धतियों से बिल्कुल अलग-थलग, सहज सरल योग पद्धति के रूप में समीक्षण की धारा प्रवाहित की जो आत्म समीक्षण, क्रोध समीक्षण, मान समीक्षण, माया समीक्षण, समीक्षण ध्यान एवं मनोविज्ञान के रूप में पठनीय एवं प्रशंसनीय है।

जयपुर चातुर्मास के प्रसंग पर विद्वत्जन के आग्रह के अनुरूप किं जीवनम्? इस एक ही सूत्र पर चार महीने तक जो प्रवचन धारा प्रवाहित हुई वह 'पावस प्रवचन' के रूप में प्रकाशित होकर साहित्य जगत् में समादृत हुई है।

सारे जैन वांगमय के सहज ज्ञानार्जन की जिज्ञासा के समाधान हेतु 'जिण धम्मो' की कृति से आचार्य देव ने विद्वत्तापूर्ण विचारधारा दी जो सहज ही पाठकों को प्रभावित किए बिना नहीं रहती। ऐसी अनेक पुस्तकों के रूप मे साहित्य जगत को आचार्य देव की देन जो कुंकुम पगलिए, आदर्श भ्राता, अखंड सौभाग्य, लक्ष्य वेध आदि हैं-उनका भविष्य ही मूल्यांकन करेगा।

आचार्य नानेश ने साधनाकाल में राजभवन से लेकर सामान्य झोपड़ों में, महानगरों से लेकर छोटे से छोटे ग्राम्यांचलों में बड़े-बड़े राजा, महाराजा, राष्ट्रनेता, जागीरदार आदि से लगाकर साधारण ग्रामवासियों के बीच में पहुंचकर प्रभु महावीर के मिशन का प्रसाद बांट कर सब को जीवन जीने की कला बताकर उनका मार्ग प्रशस्त किया, लेकिन विशेष रूप से वे लोग जो रात-दिन व्यसनों मे रचे पचे रहते, जो मांस-मदिरा मे धुत रहते, साथ ही दुनिया की दृष्टि मे अस्पृश्य गिने जाते, जो हिन्दुस्तान में जन्म लेकर हिन्दू संस्कृति से पतित कहलाते थे, गौरक्षक के स्थान पर गौभक्षक बनते जा रहे थे, उन लोगों को अपनी आत्मीयता से आप्लावित कर मानवता का संदेश दिया जो आज आचार्य देव द्वारा प्रदत्त धर्मपाल विशेषण से विभूषित होकर एक लाख से अधिक व्यक्ति गौरवमय मानव जीवन जी रहे हैं। यह आचार्य देव की हिन्दू राष्ट्र व संस्कृति को विशिष्ट देन है। आचार्य श्री के संयमित, मर्यादित उपदेश मात्र से पूरे भारत में अनेक जगह शिक्षण संस्थान, स्वास्थ्य केन्द्र, ग्रंथालय, वाचनालय, छात्रावास आदि बनें। जिनसे जैन जैनेतर सभी लाभान्वित हो रहे हैं और होते रहेंगे। साथ ही जिस जैन कुल में उन्होने जन्म लिया, जिस जैन धर्म में वे दीक्षित हुए, जिस जैन धर्म व संप्रदाय के वे आचार्य बने, उसके अभ्युदय में तो उन्होंने कोई कसर नहीं रखी। अपने खून पसीने से उसको सींचा, आपने साठ वर्ष की दीक्षा पर्याय, अड़तीस वर्ष के आचार्यकाल में अपने पूर्वाचार्यों से प्रदत्त धर्मसंघ की बहुगुणी अभिवृद्धि की। चाहे वे श्रावक श्राविका रूप मे हों और चाहे क्षेत्र के रूप में (कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक)। आपने आचार्यत्वकाल में लगभग साढे तीन सौ मुमुक्षुओं को दीक्षित किया जो स्थानकवासी समाज के लिए तो पांच सौ वर्षों में अपने आप में नया कीर्तिमान है। आपके सानिध्य में १०-१२-१५-२१-२५ दीक्षाएं एक साथ संपन्न हुई हैं।

आपके जीवन की सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी

कि आप स्वभाव से जितने सहज, लचीले व मनमोहक थे, सिद्धांत व संयमित मर्यादा के साथ अनुशासन में उतने ही कठोर भी थे। झूठी पद-प्रतिष्ठा प्राप्त करने हेतु सिद्धांत छोड़कर समझौता करने के लिए कभी तत्पर नहीं हुए। सैद्धांतिक सुरक्षा रखते हुए एकता के भी पूर्ण पक्षधर रहे। चाहे वह संवत्सरी से संबंधित हो या अन्य कोई प्रसंग हो। जहां सिद्धांत व अनुशासन मर्यादा में न्यूनता का प्रसंग आया, वहां अपमानजनित विष का घूंट पीकर व अपने ममत्व की कुर्बानी देने में भी कभी पीछे नहीं हटे। जो शिष्य-शिष्या अनुशासन, मर्यादा और सिद्धांत पर अड़िग रहे, उनको अपने हृदय का हार समझकर उन पर अपना स्नेहवर्षण करने में कसर नहीं रखी। चाहे फिर वह साधारण से साधारण ही क्यों न हो। इसके विपरीत चाहे बड़ा से बड़ा विद्वान, व्याख्याता व प्रभावक भी क्यों न हो, जब तक अपनी गलती का परिमार्जन नहीं किया तो उनको अनुशासन के नाते संघ से निष्कासित करने में भी कभी हिचकिचाए नहीं। अपनी वृद्धावस्था को लखकर संघ के आग्रह से अपनी गहरी परख के आधार पर भावी संघ व्यवस्था को व्यवस्थित रूप देने हेतु वि.सं. २०४८ की फाल्गुन सुदी तृतीया, ७ मार्च १९९२ शनिवार को बीकानेर के जूनागढ़ के राजप्रांगण में चतुर्विध संघ की साक्षी से विशाल जनमेदिनी के समक्ष महाराज नरेन्द्र सिंह जी की उपस्थिति में युवाचार्य पद की प्रतीक रूप चादर मुनिप्रवर श्री रामलाल जी.म.सा. को देकर अन्त:साधना में संलग्न हुए।

शारीरिक अस्वस्थता एवं पदलोलुपी कुशिष्य-शिष्याओं के दुर्व्यवहार के तीव्र प्रहार की ऐसी विकट स्थिति में भी आप अपने समता विभूति के विशेषण को सार्थक करते रहे। पूर्ण समता भाव से उपचार, खानपान आदि से भी उदासीन बनकर भयंकर वेदना में भी पूर्ण शांति, धैर्य व चेहरे पर वही मंद मुस्कान बिखेरते हुए बड़े-बड़े चिकित्सकों को आश्चर्यान्वित करते रहे। दिनांक २७.१०.९९ को प्रात: ९ बजकर ३५ मिनट पर साधना के अंतिम मनोरथ को सार्थक कर संथारा संलेखना सहित पूर्ण जागरूक अवस्था में रात्रि को ठीक १० बजकर ४१ मिनट पर इस भौतिक देह का परित्याग कर विशाल शिष्य-शिष्या परिवार व लाखों भक्तों को रोते-बिलखते छोड़ कर स्वर्ग की ओर महाप्रयाण कर गए। जिनकी अंत्येष्टि ता. २८.१०.९९ को चांदी के भव्य विमान में बिठाकर लाखों व्यक्तियों के विशाल जुलूस के साथ मुख्य मार्गों से होती हुई श्री गणेश जैन छात्रावास के प्रांगण मे चंदन की चिता में अग्नि प्रज्वलित कर समर्पित कर दी गई। हमारे सिर का सदा-सदा का छाया-छत्र उठ गया। अब तो केवल उनकी आदर्श प्रेरणादायी स्मृतियां ही पाथेय रूप में अवशेष हैं। वे मेरे गुरु भाई व बहनें धन्य हो गई जिनको गुरुदेव की अंतिम सेवा, सान्निध्य व मंगलमय शिक्षा का पाथेय प्राप्त हुआ। मेरे जैसा अभागा तो गुरु सेवादि से वंचित ही रह गया।

खैर, इस क्रूरकाल के आगे किसी का कुछ जोर चल ही नहीं सकता। फिर भी सात्विक गौरव एवं नाज है ऐसी विरल विभूति को गुरु के रूप में पाकर जिन्होंने एक मुनि, आचार्य, एक गुरु के जितने उत्तरदायित्व, कर्त्तव्य होते हैं उन सब को पूर्ण खूबी से पूर्ण दृढ़ता के साथ ही पूर्ण मर्यादा की अक्षुण्णता पूर्वक पूर्ण किए। साथ ही संघ को आचार्य श्री राम जैसे शास्त्रज्ञ, तरूण तपस्वी, प्रशांतमना, निर्लेप संयमी साधक के हाथों में सौंप कर सनाथ बनाकर गए हैं। आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि आचार्य राम को जो गुरु प्रदत्त संस्कार व अधिकारमय हस्ताक्षर वसीयत रूप में प्राप्त हैं, उसके संबल से वे शासन की दिन दूनी रात चौगुनी अभिवृद्धि करेंगे।

साथ ही मेरी मंगलकामना व भावना है कि आप (आचार्य श्री राम) अपने तप, तेज व सहृदयता से वात्सल्य का ऐसा स्रोत बहायें कि चतुर्विध संघ को गुरुदेव का ही नजारा दृष्टिगत हो। मेरे तन का अंतिम श्वांस शासन को समर्पित है।

आत्म-साधना के महान् साधक

पूज्य गुरुदेव श्री का जीवन समता, सेवा, सहिष्णुता, वात्सल्य, दूर-दर्शिता आदि गुणों से ओतप्रोत था। आकृति, प्रकृति एवं मनोवृत्ति से उच्चकोटि के आदर्श आचार्य थे। उनके चिंतन में मौलिकता, विचारों में एकरूपता, करनी व कथनी में समानता तथा हृदय में विशालता का असीम साम्राज्य था। उनके महान व्यक्तित्व को शब्दों की परिधि में नहीं बांधा जा सकता। अपार प्रज्ञा के धनी, विद्वद्‌ शिरोमणि स्वर्गीय गुरुदेव के व्यक्तित्व में हिमालय की उच्चता, सागर की गहराई, अध्यात्म की गहनगंभीरता, चंदन की शीतलता के समान गुण हमारे लिए आज भी आदर्श रूप हैं। गुरुदेव की प्रवचन शैली बेजोड़ थी। उनकी वाणी में ओज तथा व्यक्तित्व में अद्वितीय प्रभाव था।

पूज्य गुरुदेव की इसी विशिष्टता के संबंध में मैंने व्यक्तिगत रूप से अनुभव किया कि वे जैन-अजैन सभी के हृदयहार थे। उनके सारगर्भित प्रवचनों में सभी धर्मों का संदर्भ आता था। गुरुदेव के महान व्यक्तित्व की उपमा कमल के रूप में की जा सकती है। जिसमें सहजता, सरलता तथा सरसता के मिठास के बाहुल्य का अखंड साम्राज्य था। उन्होंने धर्म की पावन ज्योति हर गांव, शहर तथा घर-घर में ही नहीं व्यक्ति के दिलों में जलाई। उन्होंने अपना खून पसीना बहाकर जिन शासन की बगिया को सरसब्ज बनाया था तथा अपना सर्वस्व जन मंगलकारी कार्यों के लिए लुटाया।

आचार्य श्री जी का नाम एक विशिष्टतम समतादर्शी व उच्च आचार संहिता के अनुपालक के रूप में जाना जाता है। आज साधुमार्गी जैन संघ स्वर्गीय आचार्य श्री के इन महान उपकारों का ऋणी है और भविष्य में भी रहेगा। वे विश्व के महान आध्यात्मिक चिकित्सक थे। जो मन व आत्मा के रोगों की चिकित्सा करते हुए संपूर्ण मानव समुदाय के मार्ग को प्रशस्त बना रहे थे। गुरुदेव की अमोघ वाणी के प्रभाव से एक लाख से भी अधिक बलाई जाति के लोग अहिंसक बने, जो धर्मपाल जैन के नाम से जाने जाते हैं, तथा व्यसनमुक्त एवं सुसंस्कारित जीवन जी रहे हैं। पूज्य गुरुदेव प्रत्येक कार्य अंतर-आत्मा की साक्षी से करते थे। आपने आचार सम्पदा को अधिक महत्त्व दिया था। यही कारण है कि आपने योग्यतम संत, प्रशान्तमना, विद्वत प्रवर श्री रामलालजी म.सा. को अपना उत्तराधिकारी बनाया।

स्वर्गीय गुरुदेव का व्यक्तित्व कितना महान था यह निरूपित नहीं किया जा सकता। फिर भी क्षीर समुद्र का पानी कितना मधुर है उसका स्वाद पूरा समुद्र नहीं बल्कि थोड़ा सा पीकर भी जाना जा सकता है। स्वर्गीय गुरुदेव के अनेकानेक गुणों में सबसे महत्त्वपूर्ण गुण था, सरलता व सहजता। साधक जीवन की यही विशेषता व महानता होती है कि वह कितना सहज व सरल होता है। जिसका अंतर एवं बाह्य दोनों प्रकार का जीवन जितना सहज व सरल होता है वह उतना ही अधिक सुखी होता है। गुरुदेव इतने महान होते हुए भी सदैव हर व्यक्ति के साथ सरलता का ही व्यवहार करते थे। कभी कोई दुराव नहीं दुर्भाव नहीं, जो था वह सब खुली किताब की तरह था। विनम्रता भी उनके व्यक्तित्व की एक विशेषता है। साधक सदा ज्ञानवंत होता है और वही मोक्ष-मार्ग का साधक भी। विनयवान साधक अपने मधुर व्यवहार में क्रोधी से क्रोधी व्यक्ति को अपने वश में कर लेता है तथा वह सबका प्रिय पात्र बन जाता है।

मुझे गुरुदेव से संबंधित सुना हुआ एक संस्मरण याद आ रहा है। जब पूज्य गुरुदेव मुनि अवस्था में थे तब की घटना है। एक बार तेज प्रकृति स्वभाव के संत मुनिश्री रतनलालजी म.सा. स्वर्गीय गुरुदेव श्री गणेशीलाल जी म.सा. के पास आए और कहने लगे गुरुदेव ये छोटे संत नानालालजी म.सा. कैसे हैं ? दूसरे सारे संतों पर मुझे क्रोध आता है पर इन पर चाहते हुए भी क्रोध नही आता। मैं कारण नही समझ पा रहा हूं। गुरुदेव ने कारण समझाते हुए कहा मुनिराज ये मुनिश्री विनम्र एवं मधुरभाषी हैं, इनके मधुर व्यवहार के सामने आपकी क्रोधरूपी आग शांत हो जाती है। मुनिश्री को कारण समझ में आ गया और वे आपश्री के विनम्र एवं मधुर व्यवहार से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अपने जीवन का परिवर्तन कर लिया। वे भी क्षमा के अवतार बन गए। ऐसे चमत्कारी व्यक्तित्व वाले थे हमारे गुरुदेव।

स्वर्गीय आचार्य श्री नानेश युग प्रणेता महापुरुष थे। तप, संयम, साधना की गहराइयों में उतर कर आपने युग को अभिनव रूप से मोड़ा था। आपश्री को वचन सिद्धि भी प्राप्त थी। जो भी श्रीमुख से सहज रूप मे निकल जाता था वह होकर रहता था। यहीं नहीं , आपकी संयमीय साधना की विशुद्धता से शरीर का कण-कण अनुवासित था। जहां भी आपके चरण पड़ते वह रजकण भी चमत्कारिक शक्ति देने वाला बन जाता था। जब आप ध्यान-साधना में निमग्न हो जाते थे तब आपका आभामंडल विशेष भव्य बन जाता था। गुरुदेव के नेत्रों से समता, मैत्री, करुणा की दिव्य किरणें निकलती रहती थीं। जो सामने वाले व्यक्ति के कालुष्य को समाप्त कर एक विशिष्ट प्रकार की शांति की अनुभूति करा जाती थीं। जिस प्रकार भयंकर गर्मी से संतप्त व्यक्ति को एअरकंडिशन कमरे में बिठा दिया जाए तो उसे शीतलता महसूस होने लगती है, वैसे ही कषाय और रोग संतप्त व्यक्ति को गुरुदेव के सानिध्य में शांति महसूस होने लगती थी।

प्रत्यक्ष देखी हुई घटना है सं. २०३७ का पावस प्रवास गुरुदेव के साथ रागवास पिपा नगरी में था। एक दिन का प्रसंग है, वैयावच्च सेवा के कार्य से निवृत्त होकर मैं शयन की तयारी कर रहा था। तभी भव्य दृश्य देखकर आश्चय चकित हुआ कि गुरुदेव के पैरों को कोई दबा रहा था अर्थात् वैयावच्च कर रहा था। दिव्य प्रकाश हो रहा था सभी संत महापुरुष विश्राम कर रहे थे। मैंने विचार किया गुरुदेव की सेवा करने वाला कौन है ? निकट में पहुंचा तब तक शक्ति अदृश्य हो गयी थी। गुरुदेव के चरण स्पर्श किए तो गुलाब जैसी सुवास से पाद पद्म सुगंधित हो रहा था। ठीक ही कहा है शास्त्रकारों ने-

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो ।
देवावितं नमंसंति जस्स धम्मे सया मणो ॥

धर्म उत्कृष्ट मंगल है। धर्म का लक्षण है- अहिंसा संयम और तप। जिसका मन सदा धर्म में लीन रहता है उसे देव भी नमस्कार करते हैं। गुरुदेव भी देवों के पूजनीय तथा वंदनीय थे।

गुरुदेव का जीवन प्रतिकूल अवस्थाओं, विषमताओं एवं विघटन की घड़ियों में भी सदैव स्वर्णवत खरा उतरा था। उनके मुखारविंद पर समता व शीतलता की स्मित फुहार हमें भी आत्मोन्मुख एवं समतामय होने की प्रेरणा देती थी। समता, सहिष्णुता व आत्मानुसंधान की त्रिवेणी रूप आपका जीवन खुली किताब के समान स्पष्ट था।

गुरुदेव का व्यक्तित्व महान, असीम, अनुपम एवं बहु आयामी था। श्रद्धा और उपासना के भाव ही उनके प्रति वास्तविक श्रद्धा है। मेरे जीवन का कण-कण उन पावन चरणों का ऋणी है, जिनके रज कणों ने मुझ जैसे लोहे को स्वर्ण बनाने में, पत्थर से प्रतिमा बनाने में, मिट्टी को सुंदर कुम्भ का रूप देने में और अंधकार से प्रकाश में लाने के लिए प्रयास किया था। भौतिक संसार की मृग-मरीचिका से अलिप्त अमरता के आलोक का पथ प्रदर्शन किया। समीक्षण ध्यान के महान साधक के समतानुरंजित जीवन से समता का संदेश मिला। जिन्होंने अहिंसा, संयम, तप की त्रिवेणी में स्नान करवाया उन्हीं के विराट व्यक्तित्व, कृतित्व तथा संयम मूलक साधना का लेखा-जोखा बनाना बिंदु में सिंधु की महिमा एवं

अणु में सुमेरु की विराटता को बताने के समान अत्यधिक कठिन है।

गुरुदेव के गुण रत्नों के प्रतिबिम्ब से हम सभी का जीवन प्रतिबिम्बित होता रहे, यही मेरी मंगल कामना है। शास्त्रज्ञ, तरूण तपस्वी, प्रशांतमना हुक्म गच्छ के उदीयमान नक्षत्र आचार्य प्रवर पूज्य श्री १००८ श्री रामलालजी म.सा. को चतुर्विध संघ एकजुट होकर सैनिक की तरह सहयोग प्रदान करता रहे और स्वर्गीय गुरुदेव के अरमानों को हम पूर्ण करें। संघ का प्रत्येक सदस्य आत्मनिष्ठ, संघनिष्ठ और गुरुनिष्ठ होकर चले। हुक्म संघ का गौरव निरंतर प्रवर्धमान हो, यही शासनदेव से अभ्यर्थना है।

चिन्मय, तुमको भाव प्रणाम

साध्वी नमन श्रीजी

हुक्म क्षितिज के दिव्य सूर्य,
दीना समता का मार्ग भव्य।
भव्य भविजन तिर तिर जाए
लेकर शिवमय गन्तव्य नव्य।

संबोध भव्य प्रेरक गुणमय,
करुणा का स्रोत प्रवाहित था।
जग जग में आगम के घन का,
दिव्य ज्ञान सुधा अवगाहित था।

साम्यभाव का दीप जलाकर,
किया तमिस्रा को नित दूर।
हुक्म संघ को प्रतिभासित कर,
कहां गए शिवमय गुणपूर।

संघ में अभिनव आकार दिये,
जन मन का उपकार किये।
समता की दिशा दे सुखकर,
जग में ज्ञान प्रतिवासित किये॥

मेरू सम अविचल अटल रहे,
सिद्धांत भाव में है गुणकर।
तुम हमें दिये हो हे गुरुवर,
श्री राम नाम सा शुभ दिनकर।

स्मृति में तेरे सद्गुण का,
सागर लहराएगा भव्य।
जहां कहीं हो सदा दिखाना,
आत्म भाव का ही गन्तव्य।

हुक्म क्षितिज पर सदा सदा,
रहेगा अंकित तेरा नाम।
श्रद्धा भावों से अर्पित है,
चिन्मय, तुमको भाव प्रणाम।

हुक्म संघ की दैदीप्यमान मणि

गुरु सम जग में कोई नहीं, ज्ञान दान दातार।
जाणी ने माने नहीं, सांचा तेह गंवार॥

मूलार्थ- गुरु के बराबर संसार में और कोई ज्ञान-दान देने वाला नहीं है, ऐसा जानकर भी जो गुरु की शिक्षा को नहीं मानता वह सचमुच में मूर्ख ही है।

विराट विश्व के बीच आया था एक अद्‌भुत योगीराज जिनका नाम था आचार्य श्री नानेश। जो समता विभूति के नाम से विश्व विख्यात हुआ है। उस महान व्यक्ति के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को शब्दों की सीमा में बांधना अशक्य है। परम् श्रद्धेय अनन्त-अनन्त उपकारी गुरुदेव ने हुक्म उपवन को समता की सौरभ से महकाया है। उन गुरु की महिमा का शब्दों के द्वारा वर्णन नहीं किया जा सकता है। गुरु के महत्व को वही समझ सकता है जिसकी आत्मा जागृत हो जाती है और जो समझ लेते हैं कि गुरु अगर मार्गदर्शन न करे तो मुक्ति के मार्ग पर एक कदम भी चला नहीं जा सकता। आगम कहते हैं -

न बिना यान पात्रेण तरिंतु शम्यतेउर्णव।
नर्ते गुरुदेशान सुतरोउयं भवार्णवः॥

जैसे जहाज के बिना समुद्र को पार नहीं किया जा सकता है, वैसे ही गुरु के मार्गदर्शन के बिना संसार सागर को पार पाना शक्य नहीं है।

जहा अन्तो तहा बाहि,
जहा बाहि तहा अन्तो।

महापुरुष का जीवन जो अन्दर है वही बाहर है, जो बाहर है वही अन्दर है। कथनी,करनी एक एवं सत्य संयम के अगाधप्रेमी, चरित्र के प्रति दृढ़ आस्था, शिथिलाचार एवं आडम्बर से सर्वथा दूर,अल्पभाषी, मितभाषी, अल्पाहार एवं अल्प निद्रा से युक्त हो, अप्रमत्त भावों में रमण करते हुए गुरु सेवा में तत्पर रहकर गुरु के इंगित इशारों पर चलते हुए आगमों का गहन अध्ययन चिन्तन करते हुए उन्होंने अनेक सत् साहित्यों का अतुल ज्ञानाभ्यास किया। मान-प्रतिष्ठा की भूख से सदा विलग रहते थे। आपकी पैनी दृष्टि एवं तीव्र मेधा से प्रायः सभी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते थे। बड़े-बड़े मुनिगण भी आपकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए नहीं थकते थे।

शांत क्रांति के अग्रदूत पूज्य गणेशाचार्य एवं बड़े-बड़े श्रावकों ने भी खूब परखा, कई तरह से परीक्षा की। आप हर परीक्षा में उत्तीर्ण हुए और संघ की नजरें आप पर टिकी।

आपने पूज्य स्वर्गीय गणेशाचार्य की दीर्घावधि तक तन-मन से सेवा की और आपके दिल में "एकलव्य" के समान गुरु भक्ति पूर्णरूपेण समाहित थी फिर गुरु कृपा से अष्टम पाट को अलंकृत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आप श्री ने गुरुतर भार वहन करते हुए भी शिष्य-शिष्याओं के व्यामोह से दूर रहकर, गंगाचार्य सम दृढ़ प्रतिज्ञा पूर्वक आपने अपनी संयमी मर्यादा में रहते हुए लाखों दलितों का उद्धार कर दानव से मानव बनाया।

परम् प्रतापी पूज्य श्री श्री लाल जी म.सा. की वाणी साक्षात परिलक्षित हुई और अष्टम सूर्य लगा चमकने, कुछ समय पश्चात् ही ऐसा लगने लगा कि साक्षात् गणेशाचार्य ही इस हुक्म क्षितिज पर विराजमान हैं, आपने तपोतेज साधना के प्रभाव से थोकबंद २५-२१-१५-१५-७-८ आदि अनेक मुमुक्षु आत्माओं को दीक्षित कर एक रेकार्ड कायम किया।

बीहड़ विकट क्षेत्रों में गंध हस्ती के समान विचरण करते हुए सिंह सम गर्जना करते हुए शासन की खूब जाहोजलाली की।

ऐसे समता विभूति गुरु की समय-समय मेरे पर असीम कृपा बरबस बरसती रही। आदि से अन्त तक में अपनी इस चर्म जिह्वा से जितना भी गुणानुवाद करूं उतना ही कम है।

मेरी तो गुरुदेव के प्रति जबसे संयम का बाना पहना तब से मेरूवत् आस्था व श्रद्धा थी। विकट परिस्थितियों में भी मुझे डोलायमान करने वाले मिले लेकिन किसकी ताकत कि मुझे मेरे अनन्य आराध्य मार्गदर्शक के पथ से चलित कर सके। ऐसे विकट समय में मेरी गुरुदेव के पास पहुंचने की बहुत ललक थी किन्तु मैं समय पर नहीं पहुंच पाई। मेरे अन्तराय कर्म आगे-आगे भागे थे।

एक दिन ऐसा स्वर्णिम अवसर आया कि मुझे अचानक आंखों से दो-दो वस्तुएं दिखाई देने लगीं तब डॉक्टर ने कहा कि आप उदयपुर पधारो आपका आपरेशन होगा। तब मेरी इच्छा नहीं थी कि मैं डोली पर बैठकर जाऊं किन्तु सतियों का अति आग्रह होने से मैं अनायास नेत्र चिकित्सा के लिए उदयपुर पहुंची। आचार्य भगवन् के दर्शन किये, मेरा हृदय हर्ष से सराबोर हो गया और अनिर्वचनीय आनंद की अनुभूति हुई। आचार्य भगवन् को भी अत्यन्त खुशी हुई। दोनों की तमन्ना थी दर्शन देने की और दर्शन करने की। वह चिर भावना पूर्ण साकार हुई। लगभग तीन महीने की स्वर्णिम सेवा व दर्शन का लाभ मुझे मिला और परस्पर में अने-अपने हृदय में भरे हुए उद्गार उजागर किये। मैंने कहा 'भगवन् आपका शारीरिक स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन कमजोर होता चला जा रहा है, फिर भी आप श्रीजी का है आत्मबल बड़ा ही अलबेला है। गुरुदेव कहते हैं कि-'यह शरीर नाशवान है, एक दिन हंसा उड़ जाएगा।' तब मैंने कहा कि भगवन् आप युगों-युगों तक तपो। भगवन् अभी तो ऐसी वाणी न फरमावें। आप किसी प्रकार की चिन्ता न करें हीरे की परख जौहरी ही कर सकता है न कि कुम्भकार। आपकी महान कृति आप जैसी ही शासन की जाहोजलाली दिन-दूनी, रात चौगुनी फैलाएगी व नवांपाट हुक्म व नानेश गुलशन का महकता हुआ एक सुन्दर पुष्प है, उसकी सौरभ दिग्-दिगंत तक प्रसारित होती रहेगी।

किन्तु कुछ समय बाद ही ऐसे समाचार सुने कि सुनते ही हृदय धक् रह गया। अहो क्रूर काल ने ऐसे महापुरुष को छीन लिया किन्तु वे महापुरुष अन्तरात्मा से तो मेरे हृदय मंदिर में मानो विराजित हैं। शास्त्र-मर्मज्ञ,तपो तेज श्रद्धेय आचार्य भगवन् रामेश के ऊपर शासन की बहुत बड़ी जिम्मेदारी आ गई है। जिनेश्वर देव से प्रार्थना है कि आपका यश भी पूज्य गुरुदेव की भांति दिनों-दिन वृद्धि को प्राप्त हो और आपकी वक्तृत्व कला चिर नवीन आयाम पाए। मुझे पूरा विश्वास है कि सन्त सतियों से मधुर व्यवहार विचार विमर्श करते हुए अनुशासनबद्ध गति देते हुए चतुर्विध संघ को प्रगति पथ में अग्रसर करेंगे और प्रभु महावीर के उज्ज्वल शासन के संवाहक बन हुक्म गच्छाधिपति आचार्य श्री नानेश की गरिमा को प्रवर्धमान करते रहें, इसी मंगल भावना के साथ शत्-शत् वन्दन-अभिनंदन।

महासती श्री सरदारकंवर जी म.सा.

जिनशासन की देदीप्मयान मणि

इस विराट भूतल पर अनन्त प्राणी जन्म लेते हैं एवं जन्म-मरण के भीषण चक्रवात में फंसकर समय के साथ अगले मुकाम पर चले जाते हैं किन्तु विश्व विभूति समीक्षण ध्यान योगी, आराध्य पूज्य गुरुदेव एक ऐसी विरल विभूति थे जो लाखों प्राणियों के मन रूपी मंदिर एव हृदय रूपी कैमरे में विराजित थे। वस्तुतः आराध्य गुरुदेव सम्पूर्ण विश्व एवं जिन शासन की दैदीप्यमान मणि थी जो अपना प्रकाश इस दुनिया में बिखेर कर पार्थिव देह से पंचत्व में विलीन हो गई।

ऐसे महापुरुषों का जन्म ज्ञान-साधना के लिए, जवानी संयम-साधना के लिए एवं बुढ़ापा वरदान के लिए होता है। ऐसे नानेश गुरुवर की उपमा मन करता है सूर्य से करूं किन्तु सूर्य तो दिन में ही देदीप्यमान होता है। आचार्य भगवन् जिन शासन मे, हुक्म शासन में हमेशा दैदीप्यमान होते रहेंगे। मन करता है ऐसे समता-सिन्धु की उपमा चन्द्रमा से करूं, चंद्रमा में कहीं काले धब्बे नजर आते हैं किन्तु करुणा-सिन्धु समता की साक्षात प्रतिमूर्ति में किसी प्रकार के राग, द्वेष, ईर्ष्या, दाह के धब्बे नजर नहीं आते। मन करता है अध्यात्म योगी जन-जन के आस्था के केन्द्र की उपमा बादलो से करू किन्तु फिर विचार आता है बादल तो सूर्य की ओट में छुप जाते है और ये महापुरुष किसी की ओट में नहीं छुपते हैं, संघर्षों से जुझते रहते हैं। ऐसे विराट व्यक्तित्व एवं कृतित्व के धनी की उपमा समय रूपी चक्र से कर सकती हूं जिस प्रकार समय रूपी चक्र निरंतर गतिशील रहता है, उसी प्रकार लाखों के मसीहा ज्ञान-दर्शन-चारित्र की अभिवृद्धि में निरंतर गतिशील रहते थे और यही कारण है कि ऐसे वचन सिद्ध योगी के मुखारविन्द से वाणी सुनने के लिए सैकड़ों संत-सती वर्ग एवं लाखों भक्त आतुर रहते थे एवं घंटों-घंटों प्रतीक्षा करते रहते थे। यह आराध्य गुरुदेव की वाणी का जादुई चमत्कार था। आराध्य भगवन के जीवन का महत्वपूर्ण गुण ऐसा था कि विषमता में भी सदैव मुस्कराते रहते थे।

दीर्घ-दृष्टा आचार्य भगवन् ने हमें रामेशाचार्य जैसा महान् तेजी तपस्वी गुरु दिया। ऐसे नवम् पट्टधर जिन शासन में सुनहरे नक्षत्र की भांति हमेशा चमकते रहेंगे। गुरुदेव श्री की आत्मा जहां कहीं भी विराजी हों सुखों में विराजे एवं शाश्वत सुखों को प्राप्त करें। यही श्रद्धा सुमन गुरु चरणों में अर्पित है।

महाव्यक्तित्व के धनी

एक माली ने सुन्दर पुष्प वाटिका में एक सुन्दर गुलाब से कहा तुम इतने सुन्दर हो, मनोहर हो, तुम अपने अन्दर कांटों के बीच भी सुखी अनुभव करते हो, तुम अपनी महत्ता का बखान करने के लिए कोई प्रयत्न [illegible] प्रशंसा, तुम्हारी खुशबू सर्वत्र वाटिका में कैसे फैल जाती है ? इस पर फूल मुस्कराकर मौन रह गया।

महापुरुषों का जीवन भी उसी गुलाब की तरह है कि वह अपने आपको जीवन के प्रत्येक उतार-चढ़ाव में प्रफुल्लित महसूस करते है औरों का कल्याण करने के लिए अपना जीवन समर्पित कर देते हैं। उनके अन्दर इतने गुण विद्यमान होते हैं कि फिर उसी गुलाब की खुशबू की तरह उसे फैलाने या बखान करने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। आचार्य भगवन् का संपूर्ण जीवन कांटों से भरे संयम जीवन में भी सदा मुस्कराता हुआ रहा।

मेवाड़ देश के छोटे से ग्राम दांता में आचार्य नानेश का जन्म हुआ। उनका जीवन महान् था,उन्होंने अपने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्र, समाज, संघ एवं कई मुमुक्षु आत्माओं पर अनंत उपकार किया।

आपने साधु-साध्वी के लिए शिक्षा परीक्षा की प्रेरणा दी जिससे कईयों के जीवन में ज्ञान-ध्यान के प्रति [illegible] जिज्ञासा ने जन्म लिया। आपने कई संत-सतियों को दीक्षा देकर विद्वता प्रदान कराई। सहज भाव से सभी को [illegible] का अध्ययन करो और कुछ नहीं तो जवाहर किरणावलियां ही पढ़ो।

संस्कृत, प्राकृत और व्याकरण पढ़ाने के लिए पंडित और अच्छे शिक्षकों को बुलाने की सदैव प्रेरणा [illegible] कहते फिक्र न करो मैं सब व्यवस्था करने की कोशिश करूंगा। इस तरह शिक्षा-दीक्षा का काम अपने हाथ में लिया [illegible] उसे बखूबी निभाया।

आचार्य भगवन् की समता, संयम-साधना उत्कृष्ट कोटि की थी। अन्य सम्प्रदाय वाले भी कहते ऐसे [illegible] के धनी आचार्य का मिलना बहुत दुर्लभ है, जो कोई श्रद्धा भाव से उनका स्मरण करता, वह निहाल हो जाता।

एक ग्राम में गुरुदेव एक बहिन के यहां गोचरी के लिए पधारे, वह बहिन भाव सहित बहुत सा आहार बहराने लगी, आचार्य भगवन् ने उसे मना किया तो बहिन ने कहा-महाराज श्री आप चिंता न करें मेरा एक ही बच्चा है, उसे कुछ खिलाकर उदरपूर्ति कर दूंगी। बच्चा आया और उसने दाल-चावल खाने की जिद्द की, मां ने कहा बेटा मैं तुझे [illegible] बना दूंगी। तुम पैसे ले जाओ और बाजार से कुछ खा लेना। बच्चे की जिद्द को देखकर मां ने बच्चे को [illegible] के लिए ढंके बर्तनों को उसे दिखाया तो देखा दाल-चावल के भरे भराये बर्तन मिले और बच्चे ने प्रसन्न होकर उसे को खाया। माता विचारों में उलझ गई। ऐसा चमत्कार देखकर उसी दिन से आचार्य श्री के प्रति अटूट श्रद्धा जम गई।

आज उन्हीं आचार्य श्री जी की स्मृतियां ही शेष रह गई। उन्होने अपनी इतने वर्षों की [illegible] से मुनि राम को इस शासन को समर्पित किया, जिन्हें हमें गुरु का आशीर्वाद समझकर उसी श्रद्धाभाव से आचार्य श्री के चरणों में अपने जीवन को समर्पित करना चाहिए। इनका जीवन भी अनंत गुणों से भरा पड़ा है। ये शास्त्रज्ञ,तरुण तपस्वी होने के साथ ही उत्कृष्ट संयम साधना में रमण करने वाले महान साधक हैं।

आज स्वर्गीय आचार्य भगवन् को भाव सहित श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उन्हें अतिशीघ्र मोक्ष रूपी परम [illegible] प्राप्त हो, ऐसी मंगल कामना करती हूं।

❑ महासती श्री सुशीला कंवर जी म.सा.

संत परम्परा पर गर्व है

रशियन प्रजा को अपनी वैज्ञानिक शक्ति पर गर्व है, तो अमेरिका के लोगों को अपने वैभव पर, अंग्रेज प्रजा को अपनी जलशक्ति पर गर्व है, तो फ्रांस अपनी विलासिता तथा चमक-दमक पर फूला नहीं समाता, परन्तु हम भारतवासियों को सबसे अधिक गर्व है अपनी संत परंपरा पर।

संत भारतीय संस्कृति के प्राण और आत्मा कहे जायें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं है। भगवान ऋषभदेव से लेकर आज तक इस पवित्र भूमि में भिन्न-भिन्न जाति तथा भिन्न-भिन्न पंथों में अनेक संत महापुरुष पैदा हुए हैं। इसी संत परंपरा तथा भ. महावीर की पट्ट परंपरा में हुक्म संघ के अष्टम पट्टधर समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी, विश्व वंदनीय आचार्य श्री नानेश भी एक महान संत रत्न थे।

आचार्य श्री नानेश इस धरा पर ज्ञान का दिव्य प्रकाश फैलाकर, त्याग, तप की सौरभ महकाकर, समता का बिगुल बजाकर, सहिष्णुता को अपनाकर, जिनशासन को दीप्तिमान कर, समीक्षण ध्यान की धारा बहाकर, दलितों का उद्धार कर, लाखों भक्तों के मन मंदिर में विराजकर परमात्म पथ की ओर प्रस्थान कर गये। कभी सोचा भी नहीं था कि यह अलौकिक दिव्य विभूति हमें रोते-बिलखते छोड़कर प्रस्थान कर जाएगी किन्तु नीतिकार ने कहा है-

'स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्।
परिवर्तनि संसारे मृतः को वा न जायते॥'

इस परिवर्तनशील संसार में प्रतिदिन हजारों मनुष्य जन्म लेते हैं और हजारों मृत्यु को भी प्राप्त हो जाते हैं, लेकिन यों ही जन्मने और मरने का महत्व नहीं होता। इन हजारों मनुष्यों में विरला ही कोई महापुरुष होता है, जो जन्म लेने के बाद आत्म कल्याण के लिए, देश और समाज के लिए अपने जीवन को बलिदान कर देता है। आचार्य भगवन भी ऐसे ही महापुरुष थे जिन्होंने आत्म कल्याण हेतु जैन भागवती दीक्षा ग्रहण करने के अनन्तर अपना जीवन देश,समाज व राष्ट्र के लिए अर्पित कर दिया। उनके जीवन का प्रत्येक क्षण दीपक के समान संसार को प्रकाश देता रहा। वे महापुरुष महाप्रयाण करने पर भी सदा हमारे पास हैं।

'धर्म पर जो हैं फिदा, मरने से वो डरते नहीं।
लोग कहते मर गए, दरअसल वो मरते नहीं॥'

आचार्य भगवन् पार्थिव देह से हमारे बीच में नहीं रहे किन्तु वे यश रूपी शरीर से सदा-सदा के लिए विद्यमान रहेंगे। आचार्य भगवान की साधना बेजोड़ थी, उसी अजोड़ साधना के कारण कई चमत्कार हुए।

मेरे स्वयं के जीवन का प्रसंग है। पिछले वर्ष मारवाड़ चातुर्मास के लिए, उभय गुरु भगवन्तों का आशीर्वाद लेकर चित्तौड़ से विहार किया, फूलिया कलां के आसपास एकाएक मौसम परिवर्तित हुआ। आसमान काले कजराले मेघों से अच्छादित हो गया। देखते ही देखते मूसलाधार वर्षा होने लगी। आसपास का भू-भाग जलमग्न हो गया, सारे मार्ग अवरूद्ध हो गए, कहीं कोई रास्ता दिखाई नहीं दे रहा था। सहवर्ती साध्वियों सहित मैं चिन्तामग्न हो गयी। तुरन्त गुरुदेव का स्मरण किया- भगवन् अब क्या करें आप ही मार्ग दिखावें। गुरुदेव का स्मरण करते ही

मेघधारा भी बंद हो गयी और मार्ग भी मिल गया। यथासमय गंतव्य स्थान पर पहुंच गये, यह है गुरुदेव की साधना का प्रभाव जिससे सारे उपसर्ग परीषह काफूर हो गये।

इसी प्रकार गुरुदेव का तपोपूत जीवन अद्भुत शक्ति का स्रोत था, अलौकिक दिव्य सिद्धियों का कोष था, शांत-प्रशांत जल का निर्मल झरना था। उनका उत्कृष्ट मंगलमय साधना युक्त जीवन इस लोक में उत्तम था और परलोक में भी उत्तम रहेगा ताकि लोक में उत्तम स्थान को प्राप्त कर सिद्ध गति को प्राप्त होंगे। जैसा उत्तराध्ययन सूत्र में कहा है-

इह सि उत्तमो भंते, पच्छा होहिसी उत्तमो।
लोगुत्तमुत्तमं ठाणं, सिद्धिं गच्छसि णीरओ॥

हम सौभाग्यशाली हैं कि ऐसे गुरुदेव की पावन सन्निधि मिली, दर्शन सेवा का किंचित लाभ हुआ, आज के इन गम के क्षणों में उनके [illegible] लेकर के साधना पथ पर आगे गति करें, इन्हीं भावों के साथ हार्दिक श्रद्धांजलि।

-[illegible]

म्हांने क्यूं छिटकाया जी

मुनि श्री धर्मेश मुनि जी म.सा.

म्हारा शासन रा सिरताज, प्यारा नाना गुरु गणीराज ।
म्हांने क्यूं छिटकाया जी, म्हांने क्यूं बिसराया जी ॥ टेर ॥

कुटुम्ब कबीलो छोड़ने सब, आप शरण में आया ।
करसी बेड़ो पार गुरुवर, आशा मन में लाया ॥
म्हांने छोड़ चल्या मझधार, कुण लेसी अब सार संभाल ॥ १ ॥

महा उपकार आप रो गुरुवर, नहीं उऋण हो पाया ।
अंतिम दर्शन री मन में रह गई, सेवा भी नहीं पाया ॥
उठे मन में इणरी झाल,हो रह्या हाल म्हारा बेहाल ॥२॥

आप तो स्वर्ग में जाय विराज्या मैं तड़फां गुरुनाथ ।
छोटा मोटा चेला चेली बिलख रह्या दिन रात ॥
कठे जावां अब गुरुराज, पावां संयम रो साज ॥ ३ ॥

अब तो एक अर्ज है गुरुवर, शासन शक्ति दीजो ।
राम राज्य जस पावे जग में, म्हारी खबरां लीजो ॥
दीईजो धर्म रो साज, पाईजो वेगो मोक्ष रो राज ॥४॥

प्रेषक- महेश नाहटा, राजनांदगांव

बाप से बेटे सवाया

छोटा सा मिट्टी का घड़ा आंगन में पड़ा। उसकी महत्वकांक्षा जाग उठी कि प्रकाशमान सहस्र रश्मि सूर्य को अपने में बांध लूं। कैसा विचित्र है यह संसार ? कैसे समझाएं उस मूर्ख घट को ? कभी असंभव, संभव हो सकता, किंतु इस विचित्र संसार में असंभव भी संभव हुआ है, पनिहारिन उस घट को पनघट पर ले गई। पानी से भरकर आंगन में लाकर रख दिया। बस हो गई मनोकामना उस घट की पूरी। घड़ा मूर्ख नहीं था।

मैं भी सोच रही हूं कि जिस समता के देवता ने जगत को एक सूत्र दिया है

"किं जीवनम् ?"

सम्यक् निर्णायकं समतामञ्च यत् तत् जीवनम्

क्या मैं उस अवर्णनीय महापुरुष का वर्णन अर्थात् अवाच्य को वाच्य नहीं बना रही। अपने शब्द घट में उस ज्योतिर्मय सूर्य को आमंत्रण नहीं दे रही ?

चित्तौड़ जिले मे छोटा-सा ग्राम दांता, मां शृंगारा, पिता मोड़ी के आगंन में किलकारियां भरता गोवर्धन। माता का अत्यधिक लाडला होने से विश्व में नाना नाम से प्रसिद्धि पा गया। बालक नाना १५ वर्ष की उम्र में भगिनी को तप की चुनरी ओढ़ाने भादसोड़ा के धर्मस्थान में प्रतीक्षा कर रहा था कि एकल विहारी चौथमल जी म. के शब्द कान में पड़े कि छठा आरा कैसा होगा। क्या उस प्रकाश पुंज को किसी प्रकाश की जरूरत थी। नहीं। किन्तु एक निमित्त। मार्ग में चलते अश्वारोही नाना ने मार्ग खोज ही लिया, घर से निकटस्थ विराजित संतों के पास पहुंच गये। वहां देखा प्रलोभन का अंबार। वह अंबार नाना के मन को जीत नहीं पाया। एक आत्म-शोधक भले प्रलोभनो से कैसे लुभायेगा ? उन्होंने सोचा, जहां प्रलोभन हैं वहां जीवन की नैतिकता नहीं है। जो स्वयं सर्जक है, द्रष्टा है, सृष्टा है, उनके लिए राह और थाह अति सुलभ है। शांत क्रांति के अग्रदूत आचार्य श्री गणेश का सानिध्य उन्हें साधक से साध्य की ओर बढ़ा देता है, मुनि नाना से आचार्य नाना तक पहुंचा देता है। संघ के लिए इस मनीषी ने रात देखा न दिन, साधना से सधते और सधाते ही रहे। क्या नहीं दिया संघ और समाज को ? एक बार एक संत गुरुदेव के छत्तीसगढ़ के प्रवास की झलक बता रहे थे कि हम सब बालक संत थे, गुरुदेव युवा थे, लम्बा-लम्बा विहार करते, छोटे-छोटे गांवों में आहार कम मिलता था, गुरुदेव उपवास पच्चक्ख लेते और हम सबको आहार करवाते, आहार से बचे समय मे हमको लगातार पढ़ाते, बेले-बेले, तेले-तेले की तपस्या गुरुदेव की हो जाती किन्तु पढ़ाने से विराम नहीं। धन्य है.. ऐसे महापुरुष को जिन्होंने खाया नहीं खिलाया, पिया नहीं पिलाया। कुछ प्रसंग सामने देख लेते तो स्वयं सोये नहीं संतो को सुलाया। एक माता भी अपने संतान के लिए क्या कर सकती है ? उससे भी अनन्तगुना गुरुदेव ने शिष्य-शिष्याओं को प्रदान किया।

वे पूज्यों में पूज्य, श्रेष्ठों में श्रेष्ठ, ज्येष्ठों में ज्येष्ठ संसार-सागर में भटकती हुई लाखों लाख आत्माओं के लिए महासूर्य थे। जल में कोई सामर्थ्य नहीं है कि वह सूर्य को अपने में बांध सके। तद्वत शब्दों में कोई सामर्थ्य नहीं है कि वे महापुरुषों के गुणों को शब्दों में बांध सके। एक विद्वान ने ठीक ही कहा है कि-

'सर्वातिशायि महिमासि मुनिन्द्रलोक'

जिनकी मन, वाणी और कर्म जन-जन के अन्दर छाये घने अंधकार को दूर करने में प्रयत्नशील थे, उदात्त मन जन -कल्याण की कामना से ओत-प्रोत था, जहां मन, वाणी और कर्म तीनों एक हो चुके है, वहीं परमात्म रूप है।

आप श्री की वाणी मानो प्रकृति की गोद से झरते झरने वत् झंकृत होती हुई निकलती थी। महान् कर्मयोगी गुरुदेव कभी ज्ञान, कभी ध्यान, कभी चर्चा, पठन-पाठन तो कभी जप-तप स्वाध्याय, में लीन रहते। अकर्मण्यता ने आपकी तरफ आंख उठा करके भी नहीं देखा। प्राचीन और अर्वाचीन सारा साहित्य इस श्रुतवारिधि के स्मृति-कक्ष के द्वार पर करबद्ध खड़ा था। आपकी जिह्वा का स्पर्श पाकर शब्द, शब्द ही नहीं रहा, अमृत बन गया।

पारस रूप गुरुदेव के स्पर्श से [illegible] मन रूप लोहा भी कोमल कान्त स्वर्ण बन जाता। [illegible] स्वर्ग में रूपान्तरित हो जाता, आंसू हंसी में [illegible] जाते। अंधत्व दृष्टि में परिवर्तित हो जाता, [illegible] चिकित्सक की यह अद्भुत चिकित्सा चकित कर दे[illegible]

यह विराट पुरुष विविध रंगी इन्द्रधनुष [illegible] था। प्रत्येक रंग अनोखा और अद्भुत था, [illegible] था। यह वह बाग था, जिसमें अनेक रंग बिरंगे पुष्प [illegible] थे। हर पुष्प रंग-सुगंध रूप, तप-संयम से भरा था।

स्वयं सजग एवं दो पहरुओं को भी [illegible] दिया 'ध्यान रहे मैं खाली हाथ न चला जाऊं' [illegible] समय तक संलेखना एवं १३ घंटे लगभग संथारा, [illegible] पूर्वक पण्डित मरण यह किन्हीं महाभाग्यशाली पुण्य[illegible] आत्मा को ही प्राप्त होता है।

कहां ढूंढूं अनमोल रत्न को

महासती कल्पमणि जी म.सा.

नाना मेरे नाना थे,
सबसे निराले थे।
आत्मबली निरभिमानी
सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी थे ॥१॥

नाना मेरे दिल के हार थे,
ज्ञानरत्नों से सजे थे।
संघ शिरोमणि तेजस्वी,
महाध्यानी संघ सितारे थे ॥२॥

अनुपम प्यार लुटाकर,
सबको गले लगाया था।
नयनों से अमृत बरसाकर,
सबका भ्रम मिटाया था ॥३॥

राम में नाना को निहारूं,
मनहर मूरत को ध्याऊं मैं।
मन मंदिर के देव को,
ध्याती रहूं निश दिन मैं ॥ ४ ॥

तेरी यादों में मन रो रहा,
तेरी सेवा में तन समर्पित रहा।
रोते बिलखते छोड़ा जन जन को,
कहा ढूंढूं अनमोल रतन को ॥ ५ ॥

□ साध्वी श्री कुसुमलता जी म.सा.

सद्गुणों की सौरभ

दीप बुझा प्रकाश अर्पित कर , फूल मुरझाया सुवास समर्पित कर ।
टूटे तार पर सुर बहाकर, नानेश गुरुवर चले गये नूर फैलाकर ॥

वृक्ष की डाली पर जब फूल खिलता है, तो वह चारों ओर आसपास के वातावरण में अपनी सौरभ को बिखेर देता है ।

महापुरुषों का अवतरण फूलों से भी बेहतर होता है, विशिष्ट होता है, महान् होता है । महापुरुष जब तक इस दुनिया में मौजूद रहते हैं तब तक उनका व्यक्तित्व जन-मानस को अपनी ओर प्रभावित करता ही है और अपने अपूर्व सद्गुणों की सौरभ से जन-जन में एक नवीन ताजगी भर देता है । आंखों से ओझल हो जाने के बाद भी उनके गुणों की सुवास जन-जन को एक नवीन चेतना नव स्फूर्ति एवं नव जीवन प्रदान करती रहती है ।

उनके दैदीप्यमान व्यक्तित्व को तुच्छ शब्दावली से व्यक्त नहीं किया जा सकता । वे हिमालय से विराट,सागर से गंभीर, चंद्र से उज्ज्वल एवं सूर्य से तेजस्वी उन गुरुवर के जीवन दर्शन को शब्दों की सीमा में बांधे भी कैसे ?

उनके जीवन पर दृष्टि डालने पर मेरा मस्तक गौरव से ऊंचा हो जाता है और अन्तर हृदय श्रद्धा से झुक जाता है । वे संयम साधना के ताप से तपे..निरंतर तपते रहे, निखरते रहे और निखरते-निखरते वे निर्मल हो गये । शुद्ध कुंदन बन गये । उनकी अन्तरात्मा निर्मल, निश्चल, स्वच्छ और पवित्र थी ।

वह तप: पूत संयमी आत्मा इस नश्वर तन को छोड़कर हमसे विदा हो गयी । जिसने भी इस बात को सुना उनके दिल पर मानो वज्रपात हो गया ।

आचार्य प्रवर इतने जल्दी छोड़कर चल देंगे ऐसा स्वप्न में भी नहीं सोचा था । आचार्य प्रवर के इस महाप्रयाग से सबको अपार व्यथा हुई । हम जैसी लघु शिष्याओं को अत्यधिक गहरा आघात लगा कि वे हमें असमय ही छोड़कर चले गये ।

हमारे विभु शरीर पिंड से भले ही चले गये पर उनका उज्ज्वलतम चारित्र, यश. सौरभ के साथ हमारे लिए प्रकाश-पुंज बनकर अमर है । प्रभु वीर के शासन को उन्होंने जिस भांति गौरवान्वित किया, वह इतिहास गगन का दैदीप्यमान नक्षत्र बनकर चमकता रहेगा । हम उनके बताये मार्ग पर चलकर श्रमणी जीवन को समुज्ज्वल बनायेगें ।

गुरुवर तेरी मीठी स्मृतियां युग बोध जगायेगी ।
सुख दुख में उलझे मन की उलझन को सुलझायेगी ।
कल्याणकारी है आपका च्यवन, मंगलकारी है आपका जन्म ।
पावनकारी है आपकी प्रवज्यां, प्रेरणादायी है आपका निर्वाण ।

अंत में मैं वीर प्रभु से यही अभ्यर्थना करती हूं कि मेरे आस्था-पुंज परम श्रद्धेय पूज्य गुरुवर की आत्मा यथाशीघ्र चरम लक्ष्य को प्राप्त करे ।

❑ साध्वी श्री सोमप्रभा जी म.सा.

आस्था के अमृत सिंधु

चले गये हमें छोड़कर, हम न सकेगें तुमको भूल,
सदा आपकी स्मृति में; करेंगे अर्पित श्रद्धा फूल।

वास्तव में यह अनादि कालीन सिद्धांत है कि जो मिलता है, अवश्य बिछुड़ता है। जो उदित होता है वह अवश्य अस्त भी होता है। जिसका जन्म होता है उसकी मृत्यु भी होती है। जिस प्रकार रात्रि के आकाश में असंख्य तारे उदित होकर टिमटिमाते हैं, अपनी चमक चांदनी दिखाकर अन्ततः प्रभात में विलीन हो जाते हैं। उसी तरह इस पृथ्वी तल पर अनंत-अनंत प्राणी आते हैं एवं अपनी छटा दिखाकर चले जाते हैं।

संसार में सफल साधक वही गिने जाते हैं, जो अपने आपको संयम साधना में लगाये हुए एक पवित्र उज्ज्वल आदर्श स्थापित कर जाते हैं। आचार्य श्री नानेश उन्हीं साधक महापुरुषों में से एक हैं। आप श्री जी का मृदु हृदय करुणा, दया एवं अनुकंपा से लबालब भरा हुआ था। आचार्य भगवन् का सद्गुणमय जीवन महानता का द्योतक था। वे गुणों के अक्षय कोष थे। अनंत गुणों के प्रशांत महासागर थे।

आचार्य श्री नानेश इस विश्व वाटिका के सौरभयुक्त सदाबहार सुमन थे। वे अपने जीवन की सुमधुर सौरभ विश्व में फैलाकर इस असार संसार से चले गये। उनकी स्मृतियों की सौरभ हमारे जीवन को आज भी सुरभित कर रही है। जिस प्रकार अगरबत्ती एवं मोमबत्ती अपनी देह के कण-कण को जलाकर वातावरण को सुवासित व सुगंधित बनाती है। उसी प्रकार समता सिंधु आचार्य देव भी अपने जीवन का प्रत्येक अमूल्य क्षण समाज को समर्पित कर समाज में ज्ञान के प्रकाश एवं प्रेम की सुवास फैलाते रहे। व्यवहार दृष्टि में आचार्य श्री नानेश चले गये हैं, पर हमारे अन्तर हृदयों से वे कभी भी नहीं जा सकते। मेरे भावलोक के देवता, मेरी शत-शत वंदना स्वीकार करें।

महकता था जिससे घर संसार का सारा गुलशन,
वह फूल अपनी महक बिखेरे हमें छोड़ गया,
हृदय का सम्राट जिगर का हुक्मरा जाता रहा,
यार का महबूब गुलों का महरवां जाता रहा,
मौन क्यों गुच्छे हैं, क्यों हर कली मुरझा गई,
आज हमारे बाग से बागवां जाता रहा।

अंत में मैं मेरे आराध्य भगवन् के लिए शासन देव से यही प्रार्थना करती हूं कि वे अतिशीघ्र मोक्षगामी बनें।

महान् अमर साधक

आप बादल नहीं स्वयं आसमान थे,
आप फूल नहीं वरन् उद्यान थे ।
क्या कहना आपकी समता साधना का,
आप पुजारी नहीं स्वयं भगवान थे ।।

पूज्य गुरुदेव का जीवन नाना गुणों से ओत-प्रोत था । आपके अन्तर और बाह्य जीवन में ऐसा दिव्य और भव्य संयम था मानो गंगा और यमुना का संगम हो । आपने यौवन की दहलीज पर ही संयम साधना के कठोर कण्टकाकीर्ण महामार्ग पर अपने मुस्तैद कदम बढ़ाए और वीर की तरह बढ़ते गये । आगम साहित्य के प्रति आपके अर्न्तमन में गहन निष्ठा थी एवं सयम साधना के प्रति सहज अभिरुचि । वयोवृद्ध होने पर भी मन में अंहकार का अभाव था । दीप से दीप प्रज्वलित होता है उक्ति के अनुसार श्रद्धेय आचार्य भगवन् के जो भी सम्पर्क में आया वही आलोकित हो गया । आपने लाखों साधकों को प्रेरणा की एवं जिनवाणी का अमृत पान करवाया ।

पूज्य गुरुदेव एक जगमगाते दिव्य तेज सितारे थे । आपका संयमित जीवन त्याग, वैराग्य का ज्वलंत उदाहरण था । वे इस कलिकाल के एक महान् पुरुष थे । उनके जैसा ज्ञानबल, आत्मबल एवं चरित्रबल बहुत कम महापुरुषों में होता है । उनके उज्ज्वल संयमी जीवन का प्रभाव अनूठा, गहरा और अमिट था । विषमता से परे समता से जीवन आप्लावित था । उनकी साधना का लक्ष्य समता था और वही बना उनका स्वभाव ।

जिनमें सूर्य सी तेजस्विता, शशि सी शीतलता, सागर सी गंभीरता, धरा सी धीरता, सहिष्णुता, वज्र सी संयमी कठोरता, फूल सी कोमलता, कमल सी निर्लिप्तता, सुमेरू सी अडिगता समाहित थी । ऐसे महापुरुष के ज्ञान की गरिमा, गुणों की महिमा, जीवन का संयम माधुर्य चतुर्विध संघ को अपनी ओर आकृष्ट किए बिना नहीं रहता । आप द्वारा सम्पूर्ण समाज को समय-समय पर नव चेतना उत्साह व जीवन निर्माण की राह मिलती रही । साथ ही-

जिनके जीवन उपवन में खिले हैं सद्गुण सुमन,
मधुर सौरभ से भक्तगण के पुलकित होते अर्न्तमन ।
संयम, समता और सरलता जीवन में है सदा,
श्रद्धानत है जनता सारी भुला सकेगी नहीं कदा ।।

जिस प्रकार कुशल कारीगर एक अनगढ़ पत्थर को प्रतिमा का रूप देकर पूजनीय बना देता है ठीक उसी प्रकार विश्व शांति के मसीहा, संघ शिरोमणि, हुक्मेश संघ के अष्टम पट्टधर आचार्य नानेश ने हम सभी नन्ही-नन्ही कोमल कलियों को पल्लवित एवं पुष्पित किया । अन्य शब्दों में कहें तो प्रस्तर से प्रतिमा का रूप दिया । ऐसी महान विभूति का महाप्रयाण दिल को गमगीन करने वाला बना गया, शोक का सलिल बरसा गया तथा दुःख का अहसास करा गया ।

व्यक्ति जब नहीं रहता है तो उनकी यादें झकझोरती हैं। समता सौरभ से महकता महापुरुष का जीवन प्रेरणा स्रोत था। उनकी पार्थिव देह भले ही हमारे बीच नहीं हैं, किन्तु उनकी कीर्ति पताका दीर्घावधि तक फहराती रहेगी।

फूल के चले जाने पर भी मिट्टी में महक रह जाती है, व्यक्ति के चले जाने पर भी दिल में स्मृति रह जाती है। धन्य है ऐसे महापुरुष जिनके इहलोक से जाने पर भी, श्रद्धा और आस्था भरी गाथाएं अवशिष्ट रह जाती है॥

अष्टम पट्टाधीश के चमकते-दमकते नवम् पट्टाधीश आचार्य श्री रामेश देहरी के दीपक की तरह हैं, जो भीतर बाहर सर्वत्र श्रद्धा का प्रकाश बिखेर देंगे। आप उस सुमन की तरह है जो कण-कण में [illegible] भर देंगे। पूर्वाचार्यों की पुनीत परम्पराओं/ [illegible] तथा वर्तमान पीढ़ी रूपी बाह्य क्षेत्रों में व्यसन [illegible] संस्कार क्रांति के माध्यम से भीतर बाहर [illegible] रश्मियां प्रकाशित करते रहेंगे। पूर्वाचार्यों की [illegible] दिव्य प्रकाश स्वतः आपमें प्रकट होगा और [illegible] भी आचार्य नानेश की भांति ही जैन जगत के [illegible] दैदीप्यमान नक्षत्र के रूप में अपनी गरिमा तथा [illegible] प्राप्त कर गौरवान्वित होंगे और शासन की [illegible] करते हुए हम सबकी आशाओं और अपेक्षाओं [illegible] करेंगे।

-कानोड़ (राज[illegible]

दीपक से दीपक जलता है

मंजु नाहर

गुरु को दीपक कहा,
न कि चांद सूरज,
गुरु को पतवार कहा,
न कि सुन्दर नौका,
गुरु को डोर कहा,
न कि सुन्दर पतंग,
गुरु को धागा कहा,
न कि सुन्दर सुई,
गुरु को दीपक कहा,
दीपक से, दीपक जलता है,
नानेश को श्रद्धा सुमन,
राम को अभिनन्दन।

महासती श्री शकुंतला श्री जी म. सा.

आस्था के अमर दीप

सामने लखकर, खिलता था कमल मन में,
लेकिन दूर जाकर मधुगंध बन गये हो ।
आप रहते प्रभु..तो थी दर्श की अभिलाषा,
विभु ! दूर जाकर उर-स्पंदन बन गये हो ॥

सुनसान के सहचर को लेकर बैठी पर क्या लिखूं ? समझ में नहीं आ रहा है । कोई कहे चांद की शीतलता को शब्दों में बांध दो, खुशबू को कागज में उतार दो, मां की ममता का रंग बता दो, इन सबको अनुभूति के आलोक में अनुभव किया जाता है किन्तु समझाया नहीं जा सकता । पितृ-मातृवत् स्नेह दाता महाप्राण गुरुदेव के विषय में क्या कहूं ? जिन्होंने जीवन भर हम जैसे अज्ञों को स्नेह लुटाया । विशाल वात्सल्य से विशाल संघ निर्मित किया । भगवन्.. इतना ममत्व क्यों दिया । इतना वात्सल्य क्यों उड़ेला ? अनन्य आत्मीयता क्यों दी । हृदय में स्थान क्यों दिया ? नापसंद को पसंद क्यों किया ? आपका स्मरण, वचनामृत अन्दर से हिलाने वाला ? मक्खन से भी मुलायम और हम इतने कठोर कि आपको भूला दें, महाप्रयाण हो चुका, लाख मन को समझा लें पर मन नहीं मान रहा है । प्यासे नयनों को तृप्त करने एक बार आ जाओ । जिसे सानिध्य मिला, स्नेह मिला वे स्नेही जन जान सकते हैं । क्या गुरुदेव को युग ने पहचाना ? काश.. पहचाना होता । परम पूज्य प्रियजनों का वियोग कितना कष्टकर होकर शूल की तरह चुभता है । लग रहा है जैसे कोई कलेजा निकाल रहा है अथवा परम प्रिय खुशी को छीन रहा है । अब केवल स्मृति भर रह गयी । अभी सभी सहृदयों की यही मनोभूमि बन रही है । फिर भी न जाने क्यों ? गुरुदेव की उपस्थिति अपने मध्य है, इसका संकेत मिल रहा है । इस सफर में लक्ष्य तक तुम हमारे दृढ़ विश्वास हो ।

"हर धड़कन में नाना बोल रहे हो,
आप श्वासों के तार में डोल रहे हो ।
कैसे कहें महाप्राण का महाप्रयाण हुआ,
अस्तित्व के कण-कण को खोल रहे हो ॥

परमार्थ के परिप्रेक्ष्य में नाना हर धड़कन में बोल रहे हैं- क्योंकि पूज्यवर ने उदासी में उल्लास दिया, आशीषों के आंचल में आवास दिया, मुस्कानों से भरा राम जैसा मधुमास दिया ।

पूज्य प्रवर की समर्पणा संजीवनी शक्ति हमारे जर्रे-जर्रे में संचरित हो रही है तो कहना होगा कि सूर्य अस्त नहीं हुआ, प्रकाश नहीं बुझा । आपने कभी प्रकाश को बुझते देखा ? कल की सुबह सूरज ले आज धरती पर उतर गया । गुरुदेव हमारे हाथ में दीप थमा के गये हैं जमीन को उर्वरा बना के गये हैं, चुनौतीपूर्ण समस्या में हमें जगा गये हैं । यदि हम उनके आदर्शों पर न चलें, उनकी परम्परा को अक्षुण्ण बनाये नहीं रखें तो प्रस्तुत श्रद्धांजलि दिखावा मात्र होगी । गुरुदेव के मात्र नारे लगाकर नहीं, गुरुदेव बाद में उजागर हमें जो अन्तिम सीख देकर गये उन्हें कर के दिखायें तभी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी । हे भगवन् ! आप हमें ऐसी शक्ति, ऐसी कृपा किरण हम पर डाले

ताकि हम सब में आपके संकल्प को पूर्ण करने की शक्ति जागृत हो सके।

आपके अनुदानों के कर्ज का हम एक शतांश को चुका सकें, ऐसी वीर प्रभु हमें सामर्थ्य दें।

गंध बनकर हवा में बिखर जाए हम,
ओस बनकर पंखुरियों से झर जायें हम।
तूने न देखा बाग भी तो क्या,
तेरे आंगन को खुशियों से भर जाएं हम॥

-प्रेषक : किरण देगलिया

घट घट में बसा है तूं

मु. सुमित्रा ममता बोथरा

हे देवों के प्रिय,
नाना तूं कहां गया।
अनंत को पाने,
हम सबको छोड़ गया ॥१॥

ध्यान तेरा था समीक्षण,
जीवन में थी समता।
इसीलिए प्रभुवर तूने,
सबसे मारली है ममता ॥२॥

क्या होगा पीछे हमारा,
नहीं सोचा था तूने।
छोड़ा मझधार में हमको,
हो गये अरमान सूने ॥३॥

कहां ढूंढूं कहां पाऊं,
कहां जाय मन बावरिया।
कैसे भूलूं मैं तेरी शिक्षा,
घट-२ में बसा है तूं सांवरिया ॥४॥

हाथ लिये श्रद्धा का अर्चन,
करती मैं तेरा पूजन।
स्वीकारो गुण पुंज भगवन्,
नित्य रहेगा तेरा स्मरण ॥५॥

❑ महासती श्री लक्ष्यप्रभा म. सा.

प्रबल पराक्रमी एवं पुरुषार्थी

एक प्रश्न उठता है पर उसका समधान सागर की अनन्तता के समान सुविस्तृत है, जिसका ओर छोर पाना दुसाध्य है।

प्रश्न है कि समता विभूति प्रात. स्मरणीय स्वर्गीय आचार्य श्री नानेश कैसे विनयी थे, कैसे विचारक थे, कैसे सम्यज्ञ थे, कैसे अप्रमत्त थे और कैसी निष्ठा के साथ कुशल पराक्रमी पुरुपार्थी थे ? आदि-आदि...

इन उभरते महान प्रश्नों का मैं तुच्छ बुद्धि से क्या समाधान खोज सकती हूं। परंतु एक मात्र उन्हीं की परम कृपा प्रसाद के बल पर कुछ प्रयत्न कर रही हूं।

<u>अद्भुत विनयी</u> :

आचार्य भगवन् बचपन से ही परम दयालु, परम कृपालु एवं विनयी थे। आप श्री जी अपनी मातुश्री के द्वारा भोजन करते, मातु श्री प्रत्येक कार्य में सहयोगी रहते, मातुश्री जी ही नहीं, अपितु आसपास के सभी ग्रामवासियों का कार्य नि संकोच करते थे। इसलिए आप श्री जी को सभी अतीव प्यार स्नेह के साथ मधुर भाषा में नाना कहकर पुकारते थे। जन्म नाम तो आपका गोवर्धन था जो नाना नाम व्यापक विराटता में समाहित हो गया। नाना नाम की व्यापकता वस्तुत सार्थक सिद्ध हुई।

एक बुढ़िया पानी का घड़ा ले जा रही थी, आप श्री जी की विनय भावना दया के रंग में ओत-प्रोत बोल उठी कि लाओ मांजी मैं आपके घर पहुंचा देता हूं। कितने उदार दिल के थे, आप श्री जी को उस बुढ़िया ने क्या-क्या आशीष दी ? कहा भी है-

वस्तुतः आचार्य भगवन् ने मुंह से देने वाली आशीष नहीं मांगी, उन्होंने आंतड़ियों की आशीषें पाई। तदनुरूप आप श्री जी ने जब आध्यात्मिक जगत शिरोमणि शांत क्रांति के अग्रदूत परम श्रद्धेय श्री गणेशाचार्य श्री जी की पुनीत सन्निधि मे चैतन्य देव की परामाराधना प्रारंभ की तब तो क्या कहना ?

आप श्री जी ने सैद्धांतिक विनय की विभूषा आत्मिक गुणों में संजोना प्रारंभ किया कि विश्व के क्षितिज में विभूषित होकर चमकने लगे। आप श्रीजी ने गणेशाचार्य श्री जी की आज्ञा का गौतम गणधर के भांति पालन करते हुए चैतन्य की ज्योति को ज्योतिर्मय बना ली, जो त्रिलोक में चमत्कारिक सिद्ध होने वाली है। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है। सच्चे दिल से भगवान की आराधना करने वाला भक्त निसंदेह भगवान बनता है। आप श्री जी ने वीर वचनों के कहे अनुसार जीवन जिया जैसा कि आचारांग सूत्र में कहा है-

"जाए सद्धाए निक्खन्तो, तमेव अणुपालिया विजहित्तु विसोत्तियं"

आचार्य देव ने अपने चमत्कारिक जीवन मे जन-जीवन को जीत लिया। मैं इस महान् विभूति का क्या विनय गुण वर्णित कर सकती हूं, इतना जरूर कह सकती हूं कि पुण्य खजाने की विपुल राशि प्राप्त की।

आप श्री जी बचपन से सागर की उठती तरंगों के समान उत्तुंग विचारों के विचारशील महोदधि थे। आप श्री जी की प्राकृतिक प्रवृति पर क्या कुछ कहा जाए ? आप श्री जी की संवेदना, सहानुभूति इतनी गजब की थी

कि आप श्री जी ने हरियाली संबंधी संहार देखा तो विचारों में इतने गहरे उतर गये कि हृदय की कारुण्य सरिता नयनों से बह पड़ी।

आप श्री जी ने उसी समय अपने वैराग्य को अतीव मजबूत बना लिया। आप श्री जी ने वीर वाणी "अहिंसा तस थावर सव्व भूय खेमकारी" को यथार्थता में पाला और आप श्री जी आत्मोन्नति के आधारभूत सत्य के ऐसे अन्वेषी बने कि-

"सच्चं लोगम्मि सारभूयं गम्भीग्र महासमुद्दाओ", आप श्री जी के विचारों की क्रांतिकारी मथनी षट्दर्शनों के महासमुद्र में अनवरत चलती रहती जिसकी बदौलत आप श्री जी ने "समता दर्शन समीक्षण ध्यान" की अद्भुत धरोहर प्रदान की है। जो विश्व शांति की, अमन चैन की शहनाइयां बजाने वाली है।

समयज्ञ : आप श्री जी समय की सत्यता को. जानने वाले धीर, वीर, गंभीर, प्रज्ञाशील महापुरुष थे। आप श्री जी को समय- निपुणता के कारण घड़ियाल की उपमा दी गई थी। घड़ियाल समय के बिना नहीं बोलता, वैसे ही आप श्री जी सुनना, समझना सब कुछ करते हुए भी बिना अवसर के नहीं बोलते। अवसर आने पर भी फूलों की तरह कोमल मृदु वचन फरमाते कि प्राणी गद्गद् हो जाते। वाद-प्रतिवाद करने वाले भी श्रद्धानत होकर लौटते। समय की सधी हुई साधना ही साधक को निर्जी लक्ष्य तक, मंजिल तक पहुंचाने में फलीभूत होती है। जैसा कि कहा है-

"सच्चं जगं तु समयाणु पे ही, पियमप्पियं कस्सं वि नो करेज्जा"

आचार्य देव ने समय की मौलिकता को आत्मसात् किया।

अप्रमत्त : जो समय के विज्ञ होते हैं वो प्रमादी का उपशमन कर अप्रमादी जीवन जीते हैं। [illegible] पक्षी की तरह अप्रमत्त भावों में [illegible] थे। भले ही आप श्री जी [illegible] विराजमान रहते।

"से भिक्खु वा, भिक्खुणी वा, पडिहय पावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा," [illegible] आत्मार्थी थे। आचार्य देव की अप्रमत्त [illegible] निरन्तर प्रगतिमान थी। आप श्री जी की [illegible] पवित्र-सेवा जब कभी सुअवसर मिलता उस [illegible] हम साध्वियां कुछ लापरवाही या अन्य बातें [illegible] आचार्य देव उस समय फरमाते कि सतियों जी, [illegible] व्यर्थ गंवाना मुझे पसंद नहीं है। साथ ही फरमाते कि भगवान ने क्या फरमाया कि "समयं गोयम मा पमाए", आचार्य भगवन् ने चरम तीर्थंकर ही नहीं अपितु [illegible] तीर्थंकरों की अप्रमत्त साधना को आत्मसात किया। आप श्री जी का बाह्य आभ्यन्तर जीवन अप्रमत्त भावों से अलौकिक तपस्या से अनुप्राणित था, जैसा कि [illegible] का कहना है-

"सम्पूर्ण कुम्भो न करोति शब्द, मर्धो घटो घोष मुपैति नूनम।

विद्वान कुली न करोति गर्व, गुणोर्विहिना [illegible] जल्पयन्ति॥"

अतएव कैसी भी उचित अनुचित परिस्थितियां आई पर समता शिरोमणि आचार्य देव सागर सम [illegible], प्रशांत, गंभीर और अथाह बने रहे थे। कहा भी है कि-

"जहा से संयभू रमणे, उदही अक्खओ दए।
णाणा रयणे पडिपुण्णे, एवं हवई बहुस्सुए।"

आचार्य भगवन् ने इससे सहिष्णुता [illegible] और अनुशासन प्रियता पाई। जिसका ज्वलंत साक्षी है, गणेश शासन की अभिवृद्धि।

कुशल पराक्रमी : परमाराध्य देव ऐसे कुशल [illegible] जैसे कि रणवीर बांकुरे [illegible] श्री [illegible] क्षेत्र में जब से [illegible] तक बढ़ते गये, [illegible] भूमि [illegible] का सामना [illegible] श्री [illegible] समक्ष सभी को [illegible] आसं व छंद व [illegible] परित्याग [illegible] ही कार्य.

"सद्धं णगरं किच्चा, तव संवर मंगलं ।
रवन्ति निऊण पागारं, तिगुत्त दुप्प धसयं ॥
धणु परक्कमं किच्चा, जीवं च इरियं सया ।
धिइँ च केयणं किच्चा, सच्चेण पलिमंथए ॥
तव णाराय जुत्तेण, भित्तुणं कम्मं कंचुयं ।
मुणी विगय संगामो, भवाओ परिमुच्चए ॥

आचार्य देव ने अपना पराक्रम नहीं छिपाया ल्कि अधिक सद्‌पराक्रम किया इसलिए मैं यह स्पष्ट ह सकती हूं कि आचार्य देव ने अपने गुरुदेव व शासन ट कोई अवज्ञा नहीं की न ही आशातना की। कोई-ई अल्प बुद्धि मूढ कह देते हैं "गुरुदेव की तो साठी द्धि नाठी" ऐसे कहने वालों मूर्खों को पता नहीं है कि ह लोकोक्ति किसको कही जाती है जो कर्महीन, च्यूत ते हैं। जिन्हें इस देव दुर्लभ जीवन का भान नहीं है। ने गैर भला और क्या करेंगे। स्वयं का जीवन थोथा ल है, वे ऐसे लोकोत्तर परमोपकारी, कुशल, पराक्रमी, षार्थी महान् गुरुदेव की अवज्ञा आशातना करके संसार अथाह सागर भटकने को पायेंगे। इसमें कोई संदेह हीं है। आचार्य देव के कुशल पराक्रम और पुरुषार्थ का महान फल है।

१. धर्मपाल जीवन।
२. शिष्य-शिष्याओं की अभिवृद्धि।
३. त्यागी तपस्वियों की महकती फुलवारी।
४. आध्यात्मिक सत्साहित्य का सर्जन।
५. वृद्धावस्था में जगत कल्याण के लिए पाद विहार।

इनके विकास को आप श्री जी ने लक्ष्य के चरमान्त तक पहुंचाने में कोई कसर नहीं रखी, नहीं इस कठोरतम कदम की गति से विश्रान्ति ली किन्तु अनवरत रथ को आगे बढ़ाते चले। इसकी साक्षी सारी दुनिया का श्रद्धालुजन है।

आचार्य देव ने इन सारे उन्नतिशील कार्यों के मार्ग में आने वाली विघ्न बाधाओं को संयम से जीता। आप श्री जी ने दिग्-दिगन्त में ऐसी यश ध्वजा लहराई है जो सदैव अविचल रूप से लहराती रहेगी।

आप श्री जी असाधारण पराक्रमी पुरुषार्थी थे।

प्रेषक : निर्मला लोढा

समता शिवधन विधायी

कविरत्न श्री वीरेन्द्र मुनिजी म.

समतामय शिवधन विधायी,
तुम्हें ही हम याद करें।
श्री संघ के प्रचेता सुखदायी,
तुम्हें ही हम याद करें।

शृंगार नंदन, भव भय भंजन,
सौम्य सुधा रस के दिव्य स्पन्दन,
थे आत्म गुणों के संपायी ॥१॥

दिशा विहीन को दिशा दिखाई,
नित प्रति समता सरित् बहाई,
दिये संघ में राग गुणदायी ॥२॥

महिमावन्त गुण रूप उजागर,
हुक्म क्षितिज के भव्य विभाकर,
किए धर्मपाल संघमायी ॥३॥

कीर्तिमन्त श्री संघ को संवारे,
भक्ति हृदय भव सिन्धु उबारे,
नित अभिनय कलि विकसाई ॥४॥

जहां कहीं ही ध्यान लगाना,
शिव सुषमामय देश बनाना,
देना दृष्टि परम बरसाई ॥५॥

□ साध्वी प्रमोद श्रीजी म.

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी

बहुरत्ना वसुंधरा की उक्ति के अनुसार इस पुण्यश्लोका भारत की उर्वरा भू-धरा पर अनेक महापुरुषों ने ज
लिया। उन्हीं में से एक महापुरुष हुए हैं, अनंत श्रद्धा के केन्द्र स्व. पू. गुरुदेव आचार्य श्री नानेश। उस अनंत
अप्रतिम व्यक्तित्व के धनी के अनंत अविराम जीवनवृत्त को शब्दों में बांधना संभव नहीं है। फिर भी भक्ति में
को नहीं देखा, तोला जाता है। "स्त्रोतम् समुद्यत मतिर्विगतत्रपोऽहम" इस बात को स्मरण कर मेरी आस्था
आलम्बन पूज्य गुरुदेव के ३९ वर्षों के आचार्यत्वकाल को लक्ष्य में रखकर उनके जीवन की सहस्र रश्मियों में
कतिपय रश्मियों को यथामति यथाशक्ति स्पर्श करने का प्रयत्न कर रही हूं।

(१) कीर्ति निकुंज - विश्व विश्रुत महान् चारित्रनिष्ठ पू. गुरुदेव की कीर्तिलता अटक से कटक, कश्मीर
से कन्याकुमारी, आसाम से तमिलनाडू तक ही नहीं अमेरिका बैंकाक जैसे सुदुर पाश्चात्य देशों में भी फैली।

(२) पुण्यश्लोक - पूज्य गुरुदेव के संयमी तेज का प्रभाव जैन जैनेतर समाज पर फैला हुआ है। आप श्री
जी के भक्त ही नहीं अन्य सम्प्रदायों में भी आप श्री जी के तेज का लोहा माना जाता है। स्वयं मेरे समक्ष
के एक सुश्रावक स्व. अमरचन्द जी सा. लोढ़ा ने कई बार कहा कि इस युग में जितने भी आचार्य, उपाध्याय,
या प्रभावी सन्त मनीषी हैं, उन सबमें यह तो मानना पड़ेगा कि आपके गुरुदेव (आ.श्री नानेश) की पुण्यवानी जबर्दस्त
है।

(३) जिनशासन प्रद्योतक - १०० से ऊपर मुमुक्षुओं को दीक्षा देने वाला साधक जिन शासन प्रद्योतक
कहलाता है। आप श्री जी ने अपने आचार्यत्वकाल में ३०० दीक्षाएं (जहां तक मुझे स्मरण है) दी है।

(४) अध्यात्म निनाद के धारक -आप श्रीजी के जीवन में हर समय अध्यात्म निनाद अनुगुंजित
था। संयम में जरा सा भी प्रमाद या शिथिलता आप श्री जी को असह्य थी। समिति गुप्ति व महाव्रतों का
सजगता से पालन करते एवं शिष्य परिकर से भी करवाते थे। राणावास चातुर्मास से पूर्व रचित "अध्यात्म
आप श्री जी के चिन्तन की मौलिक देन है। उसके एक-एक सूत्र पर कई दिनों तक विवेचन, प्रवचन किया जा
है।

(५) समाधि सदन - जिनके सानिध्य में बैठने से चतुर्विध संघ ही क्या बच्चे बड़े जैन जैनेतर हर भक्त
अनुपम आनन्द की अनुभूति होती थी, जिनकी आंखें अध्यात्म का अनुकम्पा का अमृत बरसाती थी, जिसे
दर्शक धन्य-धन्य हो जाता था।

(६) परमागम पारीण - पू. गुरुदेव वाग्मी श्रेष्ठ आगम के गूढ़ विवेचक, जैन एवं जैनेतर दर्शन के गहन
थे। आप श्री जी की प्रखर प्रतिभा किंवा पैनी दृष्टि ग्रन्थों की शब्दमयी पर्तों को चीरकर अर्थ की गहराई तक
जाती थी। सन १९६३ के लगभग की घटना है, धार जिला कांग्रेस कमेटी के तत्कालीन अध्यक्ष वकील
जी उपाध्याय जो वैदिक दर्शन के अधिकृत विद्वान थे, उनसे ईश्वर, सृष्टि कर्तृत्व एवं जैन धर्म के नास्तिकत्व
पर खुलकर चर्चा हुई। आप श्री जी के गहन चिन्तन ने उन्हें सम्यक् अर्थ का नवनीत दिया। जैन धर्म के
उनकी शंकाएं निर्मूल हुईं।

(७) अमित तेजपुंज - पू. गुरुदेव के साधना दीप्त अमित प्रभाव व लय को देखना साधारण लोगों के बलबूते के बाहर था, कई भक्तों से ऐसा सुना और व्यावर में सन् १९९७ के प्रवास में १७ से २० अगस्त के बीच प्रवचन सभा में लेखिका ने स्वयं अनुभव भी किया व समीपस्थ सतियों को भी इंगित कर बताया।

(८) अमित मेधा के धनी - विद्यार्थी जीवन के कई दशक बीत जाने पर भी आप श्री जी की मेधा शक्ति इतनी जबरदस्त थी कि व्याकरण के कई सूत्र व्युतपत्तियां एवं स्याद्वाद से संबंधित दुरूह ग्रन्थों की कारिकाएं धड़ाधड़ सुना देते थे। बोरीवली प्रवास में स्याद्वाद मंजरी की पांचवी कारिका भगवती सूत्र की वाचनी के प्रसंग पर श्रीमुख से सुनकर सभी महासतियांजी आश्चर्यचकित हो गई थीं।

(९) तत्व निष्णात - जिनागम तत्वों का सार निकालने में आप श्री जी बड़े निष्णात थे। एक बार किसी विद्वान एवं आप श्री जी के शिष्यों में सम्यक्त्व के संबंध में उलझी गुत्थी को सुलझाते हुए आप श्री जी ने चौथे गुण स्थान की क्षायिक सम्यत्व नवनीत के समान है और १३वें गुण-स्थान की क्षायिक सम्यक्त्व तपे हुए घृत के समान है, समाधान दिया, ऐसे कई उदाहरण हैं।

(१०) शिव सुख-आलय - जो भी आप श्री जी का श्रद्धान्वित हो पुण्य दर्शन पा लेता, वह अपने जीवन में अनुपमेय सुख एवं शांति की अनुभूति करता था। वह बारबार आप श्री जी के दर्शन पाने को लालायित रहता था।

(११) गुण के निधान - अनुशासन प्रियता, मोहक मृदुता, कमनीय कोमलता, सौम्य शीतलता, परम पौरषता, संयम की धवलता, संकल्प में कर्मठता, कठोर क्रिया पात्रता, हृदय की सहृदयता, दृष्टि में विशालता, व्यवहार में कुशलता, विनीतता, सागर सी गंभीरता, मेरू पर्वत सी अडोलता, सूर्य सी तेजस्विता, वाणी में ओजस्विता, आदि सद्गुण सुमन आप श्री जी पर न्यौछावर हो अपने को कृतकृत्य मानते थे।

(१२) महिमा मकरन्द - जिनका महिमा मकरन्द चतुर्दिक प्रसृत है, हम भी उसी से गौरवान्वित हैं। कैसे ? कभी अपरिचित सज्जनों द्वारा पूछा जाता- आप किनकी शिष्या है ? जब हमारे मुख से आप श्री जी का नाम उच्चरित होता श्रोता प्रश्नकर्ता श्रद्धावनत हो जाते और कहते ओ हो... कितने महान् आचार्य हैं वे।

(१३) क्षमा-क्षान्त - यौवन की दहलीज पर पहुंचने से पूर्व ही आप श्री जी ने क्रोध पर इतना काबू पा लिया था कि चतुर्विध संघ के सदस्यों या अन्यों के द्वारा कई बार क्रोध के प्रसंग उपस्थित होने पर भी और शासन व्यवस्था की इतनी जिम्मेवारी होते हुए भी आप श्री जी के चेहरे पर क्रोध की शिकन तक नहीं आती थी।

(१४) कुशल शासक - इन सबके बावजूद उन्हें संयम में शिथिलता, जरा सा भी प्रमाद असह्य था। उभयकाल प्रतिक्रमण और वन्दना विधि में या दैनिक चर्या में जरा सा भी ऊंचा-नीचा होता तो आप श्री जी संबंधित व्यक्ति को आगाह करते, प्रायश्चित देते अन्यथा उस दिन पोरुषी (३ घंटे के लिए अन्न जल का त्याग) कर लेते।

(१५) परम इन्द्रिय जयी - कई बार आहार, वितरित करने वाले संतों को ध्यान नहीं रहता, दूध फीका ही पी लेते, ख्याल आने पर पूछा जाता तो बस यही उत्तर मिलता- मेरा ध्यान दूध पीने में था, फीके मीठे के उपयोग में नहीं। कई बार फीका मीठा कड़वा जो भी इन्द्रिय के प्रतिकूल आता स्वंय उदरस्थ कर लेते।

(१६) करुणा कुंज- पूज्य गुरुदेव की शिष्यों, भक्तों पर दया तो स्वाभाविक थी पर प्राणि-मात्र पर अनुकम्पा का अजस्त्र स्रोत आप श्री के दिल में बहता रहता था। मुनि अवस्था में एक बार एक बकरे को बचाने का करुणामय प्रसंग आप श्री जी के श्रीमुख से श्रवण करने को मिला।

(१७) स्वस्थ परंपरा के संपोषक - आधुनिक भौतिकता की चकाचौंध में बहने वाले साधकों एवं श्रावकों में श्रमण संस्कृति की स्वस्थ परंपरा के संपोषण में आप अद्वितीय थे। आधुनिक बुद्धिजीवियों एवं समाज

में संयमीय नियमों में शिथिलता रखने वालों से आपने कभी समझौता नहीं किया। कोई न कोई उचित मार्ग आप अपनी प्रखर प्रतिभा से निकाल लेते। उदाहरण है- घाटकोपर वर्षावास में संवत्सरी महापर्व पर विशाल जनसमुदाय को प्रवचन सुनाने हेतु आप श्री जी ने अपने संत मतियों से व स्वयं छह जगह प्रवचन करवाये।

(१८) वाचोयुक्ति पटु - सादड़ी सम्मेलन में श्रमण संघ के तत्कालीन प्रधानमंत्री पद पर रहे हुए स्व. आ. श्री आनन्द ऋषिजी म.सा. के शब्दों में "मुनि श्री नानालाल जी म.में वाणी संयम इतना जबरदस्त है कि ये कहीं पर भी भाषा की दृष्टि से पकड़ाते नहीं है।"

(१९) कमनीय कलाकार - विशाल साधुमार्गी संघ में अनेक प्रवचन पटु, विद्वान, साहित्यकार, कवि, उग्र तपस्वी, विश्रुत संथारे के धारक, कठोर क्रियापात्र श्रमण-श्रमणी एवं श्रावक गण में भी कई सद्धर्म प्रचारक, स्वाध्यायी, ध्यानी, तपस्वी, विद्वान सेवाभावी आदि बनकर सामने आए उन सबका श्रेय पू. गुरुदेव श्री जी की कमनीय कला को है।

(२०) धर्म ध्वज - वैसे तो लक्षाधिक कि.मी. पांव पैदल विहार कर आप श्री जी ने सद्धर्म की अतुल प्रभावना की किन्तु छत्तीसगढ़ जैसे दुर्गम क्षेत्र के उड़ीसा जैसे विकट क्षेत्र में आर्य संदेश फैलाने का सर्वप्रथम श्रेय पू. गुरुदेव को ही है।

(२१) समता सागर - कई बार कोई दीक्षार्थी परिवार मोहवश कुछ कह देते अथवा सामाजिक धार्मिक प्रसंगों पर कोई आवेश दिलाते, तर्क-कुतर्क करते अथवा साधकों में भी कभी वैचारिक मतभेदता होती ऐसे में आवेग आना सहज है पर आप श्री जी वहां भी समता सागर ही बने रहते। बोरीवली (बम्बई) चातुर्मास में एक बार श्री शांतिमुनि म.सा. ने प्रवचन में अपना अनुभव बताया कि कल रात्रि में गर्मागर्मी का वातावरण था, हमें विचार था आज पू. गुरुदेव को पूरी रात नींद नहीं आवेगी पर यह क्या ? उसी समय उसी स्थान पर आ. श्री ने अपना शयनोपकरण (बिस्तर) मंगवाया, १०-१५ मिनट में तो गहरी नींद सो गए।

(२२) अपूर्व अध्ययनशील - [illegible] विद्यार्थी अवस्था में आप श्री जी का नियम था [illegible] (पाठ) आज सीखा उसे आज ही ग्यारह बार [illegible] फिर क्रमशः दस दिन उसे एक-एक बार दोहराना। [illegible] प्रकार अपूर्व लगन एवं श्रम से आप श्री जी ने [illegible] में ठोसता पाई। हितोपदेश में वर्णित- "[illegible] बकोध्यानं, श्वान निद्रा तथैव च। अल्पाहारी [illegible] विद्यार्थिन् पंच लक्षणम्।" श्लोक को अक्षरशः [illegible] अभी भी समय मिलने पर एकाग्रता से अध्ययन करते [illegible] बार पू. गुरुदेव को देखा गया है।

(२३) चिन्मय चिराग - आप [illegible] अनेकानेक साहित्यिक कृतियों में "समता दर्शन [illegible] व्यवहार" तथा 'समीक्षण ध्यान विधि विधान' [illegible] दो कृतियों का ही आद्योपान्त वाचन, मनन और [illegible] करें तो व्यक्ति से विश्व तक इस शांति [illegible] अवगाहन कर तनाव मुक्त होकर मानसिक [illegible] सराबोर हो सकता है। ये रोशनी के मीनार [illegible] चिराग का काम करने वाले है।

(२४) अवाग्धिपोत - उदयरामसर निवासी [illegible] नयमलजी सिपानी व्यावसायिक दृष्टि से [illegible] थे। एक बार बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ [illegible] जलपोत में भरकर बराकी नदी से जा रहे थे कि नाव [illegible] गई। गुरुनाम का स्मरण करते ही भारी भरकम [illegible] की बोरी के सहारे तैर गया। गुरु कृपा से नाव से [illegible] पुनः गुरु चरणों में १६ की तपस्या की। यह तो [illegible] से तिराना हुआ पर भाव नैय्या भी आप श्री जी ने [illegible] की तैराई। लगभग ३०० (२९७) मुमुक्षु, [illegible] धर्मपाल एवं अनगिनत श्रावक श्राविकाओं को [illegible] तिराने में आप श्री जी सचमुच पोत सदृश ही थे।

(२५) युग प्रहरी - सुना गया है [illegible] श्री आत्माराम जी म.सा. के स्वर्गारोहण के बाद [illegible] स्थानकवासी सम्प्रदाय को नेतृत्व देने वाले [illegible] आचार्य समता विभूति पूज्य गुरुदेव श्री नानेश थे। [illegible] लगभग १३ महीने बाद अजमेर में स्व.आ.श्री [illegible] ऋषिजी म.सा. को आचार्य पद दिया गया। [illegible]

वाध्याय संदेशक पू. श्री हस्तीमल म.सा. भी तब पाध्याय पद पर थे।

(२६) चक्खुदयाणं - नोखामण्डी पावस प्रवास (सन् १९९६) में स्व. श्री खीमराज जी लुणावत की र्मपत्नी ८५ वर्षीय पन्नी बाई एवं (सन् १९९४ में) यावर निवासी श्री नोरतनमल जी छल्लाणी की अग्रजा श्रीमती कंचन बाई को आप श्री जी की पुनीत कृपा से नेत्र ज्योति प्राप्त हुई और ज्ञानांजन शलाका से तो आप श्री जी ने कइयों के भावनेत्र उद्घाटित किये।

(२७) पारस-पुरुष - जो भी भव्य आत्मा लोह पिण्ड के रूप में आप श्री जी के सम्मुख आता आप श्री जी उसे स्वर्ण ही नही वरन् अपने सदृश पारस बनाने में पुरजोर यत्नशील रहे है।

(२८) ऊर्जा केतु - आप श्री जी के विशुद्ध संयमीय प्रभाव से आप श्री जी के चरणरज की उर्ज्जस्वित ऊर्जा से कई भक्तों ने अकलप्य लाभ उठाया व उठा रहे हैं।

(२९) मुक्ति मंदिर - जिनकी अपूर्व कृपा से एवं नाम स्मरण से २०वर्षीय गलित कुष्ठ तथा कैंसर जैसे अनेक भयंकर रोगों से ग्रस्त भक्तों को मुक्ति मिली। रत्नत्रय का प्रसाद वितरण कर आप श्री जी ने अनेक को भावमुक्ति की तरफ प्रोत्साहित किया है।

(३०) विश्व बंधु - हिण्डौन (अलवर)में हरिजन को चरण स्पर्श की स्वीकृति देना तथा अछूत कहलाने वाली बलाई जाति को जैनत्व प्रदान करना, आप श्री जी के विश्व बंधुत्व को बोधित करता है।

(३१) दूरदर्शी - आसन्न घटित होने वाली या दूर भविष्य में होने वाली कई घटनाएं आप श्री जी पहले ही फरमा देते जो कि प्राय. अक्षरश. घटित होती थीं। किसी बात का निर्णय भी आप श्री जी काफी चिन्तन-मनन पूर्वक लेते थे। अत. आप श्री जी के निर्णय कसौटी पर शत-प्रतिशत खरे उतरते थे।

(३२) अवधिज्ञानी - ऐसी कई अदृश्य,अद्भुत घटित घटनाओं का हृदय् श्रीमुख से वर्णन सुनकर नोखामण्डी प्रवास में मेरे द्वारा तथा श्री भंवरलाल जी मा. कोठारी (बीकानेर) के अत्याग्रह पूर्वक पूछने पर आप श्री जी ने प्रकारान्तर में फरमाया- अवधिज्ञान की अल्प पर्यायों का निषेध नहीं है।

(३३) वरवर्चस्वी - पू. गुरुदेव का वर्चस्व सिर्फ साधुमार्गी संघ पर ही नहीं किन्तु संपूर्ण जैन व जैनेतर समाज में छाया हुआ था, चाहे कोई कहे या न कहे किन्तु वर्चस्व का लोहा सभी मानते थे।

(३४) विचक्षण वाग्मी - शुरु से ही आप श्री जी की अल्पभाषिता व वचन संयम को देखकर बड़े संत आप श्री जी के लिए फरमाते थे- तुम्हारा बोलना घंटाघर की घड़ी के समान हैं जो सभी ध्यान से सुनते हैं और हमारा मंदिर की झालर के समान है।

(३५) आस्था-आलम्बन - आप श्री जी पर आस्था रखकर अनेक ने मनवांछित सिद्धि पायी व पा रहे हैं। आप श्री जी का नाम ही जिनके लिए मंत्र का काम करता था।

(३६) विरल विभूति - हरिभद्रचार्य के शब्दों में- "वपुरैव तव आचष्टे,भगवान वीतरागतामान ही कोटर-संस्थेऽग्नौ, तरूर्भवति शाद्वल.। जिनकी भव्याकृति ही वीतरागता को प्रकट कर रही है, ऐसी वह विरल विभूति है।

(३७) कुशल जीवन शिल्पी - [illegible] गलती का अहसास व सुधार कराने में आप श्री जी विचक्षण थे। वात्सल्य के बहाने [illegible] एक्यूप्रेशर करते सामने वाले से अपनी गलती [illegible] करवाकर मनोवैज्ञानिक ढंग से उसके [illegible] करने में आप श्री जी बहुत ही कुशल थे।

(३८) अद्भुत अन्तेवासी - [illegible] आप श्री जी की अनन्य गुरु भक्ति [illegible] स्वास्थ्य के लिए कई रातें खड़े-खड़े [illegible] जैसे विनयवान अन्तेवासी की [illegible] है। मेरे हृदय मंदिर में प्रतिष्ठापित [illegible] प्रमोद बनाने वाले आचार्य श्री [illegible] अर्चा करती हूं, यावत मुनि [illegible] आप श्री जी का सुखद [illegible] के साथ....

[illegible]

साध्वी ललिता श्री जी म.

अपरिमित गुणों के स्वा[illegible]

अपरिमित गुणों के स्वामी गुरुवर,
तुम्हें भूल हम नहीं पायेंगे ।
तेरी सद् शिक्षाओं से ही गुरुवर,
जीवन सत्व को हम पायेंगे ॥

स्थानांग सूत्र के चौथे ठाणे में चार प्रकार के पुष्प बताये गये हैं-

1. एक पुष्प रूपवान है किन्तु सुगंध नहीं होती है, जैसे : रोहेड़ा का पुष्प ।
2. एक पुष्प रूपवान तो नहीं होता किन्तु सुगंध युक्त होता है, जैसे : मोरसली का पुष्प ।
3. एक पुष्प रूपवान भी होता है व सुगंधवान भी होता है, जैसे गुलाब का पुष्प ।
4. एक पुष्प रूपवान भी नहीं होता है व सुगंधवान भी नहीं होता है, जैसे धतूरे का पुष्प ।

आचार्य भगवन् का जीवन खिलते गुलाब के फूल की तरह से था । उनका बाहरी व्यक्तित्व भी बड़ा [illegible] था तो आंतरिक तेजस्विता भी महान् साधना की सुवास से आपूरित थी ।

पुष्पवत खिलता था, जिनका जीवन,
हर क्षण हर पल लगते थे सबको मनभावन ।
जब भी आते तेरे द्वार पे गुरुवर नाना,
कृपा पूरित बरसता था तब घन सावन ॥

आचार्य भगवन् - जैसा समता का उपदेश फरमाते थे । वैसा ही उनका आचरण भी समता से [illegible] था । जीवन का कण-कण समता की सुगंध से आप्लावित था ।

मुझे मेरे संयमी जीवन के पच्चीस वर्षों में आचार्य के सानिध्य में चार चातुर्मास करने का सुअवसर [illegible] हुआ । चातुर्मास के अलावा भी कई बार दर्शन, सेवा, प्रवचन, श्रवण व प्रश्न पृच्छा आदि का अलाभ [illegible] होता रहा । उन सभी प्राप्त अवसरों के साथ में आचार्य श्री को सदा-सदा समता के अनुरूप ही पाया ।

गुलाब के फूल को कोई देखे या न देखे व हर क्षण अपनी मधुर पराग बिखेरता ही रहता है । जंगल में [illegible] रहा है तो भी सर्वतोभावेन अवस्था के साथ खिलता रहता है और नगर के मध्य में भी खिलता हुआ अपनी [illegible] सुवास बिखेरता रहता है । उसी प्रकार आचार्य भगवन् को जब भी देखा, जहाँ भी देखा, पब्लिक के मध्य [illegible] या एकांत में देखा, गरीब के साथ बात करते देखा, हर स्थान पर समता के आसन पर विराजकर समतानन्द [illegible] की सुवास को बिखेरते ही देखा । आपश्री के चरणों में जो भी दर्शनार्थी पहुंचता वह भी आप श्री के [illegible] अनवरत निसृत समता की परिमल से आप्लावित हुए बिना नहीं रहता ।

जो भी आता तब चरणों में सच्ची शांति पाता था । भावनगर सौराष्ट्र में जब आप श्री का चातुर्मास [illegible] समय बरवाला संप्रदाय के आचार्य श्री सरदारमुनिजी म.सा. भी अपने गुरु आचार्य श्री चंपकलालजी म.सा. के [illegible]

मुनि अवस्था में विराजमान थे। चातुर्मास के अंत में कार्तिक सुदी पूर्णिमा को धर्मसभा में उपस्थित जन समुदाय के समक्ष सरदार मुनिजी म.सा. ने फरमाया कि 'मैं बड़े-बड़े संत महापुरुषों के सानिध्य में गया। समता का उपदेश देने वाले तो बहुत हो सकते हैं किन्तु कथनी-करणी की एकता जैसी मैंने आचार्य भगवन् श्री नानालालजी म.सा. में देखी है वैसी और कहीं देखने को नहीं मिली। आचार्य भगवन् समता की जीवन्त प्रतिमूर्ति हैं। ये समता का जैसा उपदेश फरमाते हैं वैसा ही इनका जीवन भी है।'

ऐसे थे समता विभूति आचार्य श्री नानेश। आचार्य भगवन् ज्ञान के सहस्र रश्मि सूर्य थे। सूर्य का प्रकाश तो फिर भी बादलों से आच्छादित हो जाता है किन्तु आचार्य भगवन् के ज्ञान रूपी सूर्य की रश्मियां सदा-सदा अनावृत ही रहती थीं। जब कभी किसी भी समय ज्ञान पिपासु श्री चरणों में पहुँचकर आपश्री के मुखारबिंद से निर्झरित ज्ञान रस का आस्वादन कर सकता था। आप श्री के सानिध्य में पहुँचने वाले का अज्ञान अंधकार दूर हुए बिना नहीं रह सकता था। आपश्री की सत्-सन्निधि में नवीन विषयों का निरंतर परिज्ञान प्राप्त होता था।

एक पिता अपनी दो संतानों को बराबर नहीं संभाल पाता। वहाँ पर आचार्य श्री अपने साढ़े तीन सौ शिष्य- शिष्याओं के शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक उन्नयन का पूरा-पूरा ख्याल रखते थे। शिष्य-शिष्याएँ भी हर पल आचार्य भगवन् की आज्ञा की राह देखते रहते। जैसी आज्ञा आयेगी वैसा ही हमें करना है। यह सब कुछ पुण्यवानी के बिना नहीं हो सकता।

दिल्ली महानगर में रोहिणी सेक्टर-3 के चातुर्मास में कार्तिक सुदी पूनम को प्रवचन सभा में रोहिणी संघ के भूतपूर्व मंत्री श्री सुरेन्द्रकुमार जी जैन ने कहा था कि 'मैं 'अष्टाचार्य गौरव गंगा' नामक पुस्तक को पढ़कर बहुत प्रभावित हुआ हूँ। मैं यह दावे के साथ कह सकता हूँ कि यदि किसी को मंत्र की आवश्यकता है तो ओं ह्रीं श्री हु शि उ चौ श्री ज ग नाना नमः, इस मंत्र को जपें। यह सर्व सिद्धि साधक मंत्र है। इसे जो भी जपेगा वह हर तरह से फलीभूत हुए बिना नहीं रहेगा।'

सोनीपत संघ- हरियाणा के तात्कालीन मंत्रीजी ने प्रवचन सभा के मध्य कहा कि 'आचार्य श्री नानालालजी म.सा. जिनकी संयम की धाक पूरे भारतवर्ष में है उनके आज्ञानुवर्तिनी महासतियाँ जी म.सा. पधारे हुए हैं, इनके दर्शन व प्रवचन मांगलिक श्रवण मात्र से ही मालामाल हो जावोगे।' इस प्रकार देश के कोने-कोने तक आचार्य के जीवन की गुणमय सुवास विकीर्ण थी।

आपश्री भवजलधि में भटक रहे जीवों के लिये प्रकाश स्तंभ के रूप में थे। लाखों भक्तों ने आपश्री से ज्ञान-प्रकाश पाया है। लाखों मानव, अपथ, कुपथ विपथ से सुपथ की ओर अग्रसर हुए हैं। यह था आचार्य भगवन् का गुलाब के फूलों से भी बढ़कर प्रेरणादायक व्यक्तित्व।

आचार्य भगवन् में रहे हुए अनेकानेक गुणों को लेखनी के माध्यम से लिपिबद्ध करना असंभव है।

विशद विज्ञान भरा था तेरा जीवन।
मिलता सभी को सदा सुख संजीवन।
अकुलाए प्राण आज भी खोज रहे,
कैसे पायें गुरु नाना का दर्शन॥

सतत् जागरूक रहे जीवन की सांध्य वेला तक। अप्रमत्त साधना में रमन करते रहे जिन्दगी के अंतिम दम तक तेरी साधना को हृदय से हम नत मस्तक हैं।

विश्व वंद्य श्रद्धेय

एक दिन मेरे मन के मालिक, महती महीयान, मन मंदिर के देवता आचार्य भगवन् के दर्शनार्थ निकली [illegible] मे निकलते ही-जमीन की पवित्र धूली ने पूछा- 'अरे भैया किधर जा रही हो, मैंने कहा गुरुदेव के दर्शनार्थ। (वह बोली) अरे भैया मुझे भी साथ ले चल। क्यों.. बहिन ? इन्हे तू कैसे पहचानती है। अरे ! उनको कौन नहीं [illegible] उनका तो मेरे पर अनन्त उपकार है।देख, दुनिया के लोग, मुझे पैरों से ही क्या जूते चप्पलों से दबाते थे [illegible] ही गुरुदेव ने मुझे अपने पावन चरणों से स्पर्श किया त्यों ही भक्तों ने मुझे हाथों से उठाकर मस्तक पर [illegible]

हां मस्तक पर तो चढ़ाया ही, किन्तु हर दुख दर्द में मेरा उपयोग लेकर अपने को स्वस्थ एवं प्रसन्न [illegible] लिया। उन्होंने मेरे जीवन में आई निराशा, को आशा के रूप में परिवर्तित कर दिया। मेरे बिगड़े भाग्य [illegible] मेरा मूल्य दवाई, मन्त्र-तन्त्र आदि से भी अधिक बढ़ गया है। अब लोग मुझे बड़े सम्मान से चरणरज [illegible] हैं। असलियत में मैं पूज्य गुरुदेव के चरण स्पर्श कर धन्य हो गई।

अब तू मुझे वहीं ले चल जहां मेरे गुरुदेव विराजते हैं। मन ने कहा, चल ! अपने एक से दो [illegible] ज्योंहि थोड़ा आगे बढ़ा मुझे एक ग्रामीण युवक ने पुकारा भैया किधर जा रहे हो ? मैंने अपनी बात [illegible]

उसने कहा अरे भाई, उनके पास तो मुझे भी चलना है मैंने कहा क्यों भाई तू उन्हें जानता है ? हां, [illegible] नाना गुरु भगवन् को अच्छी तरह जानता हूं। वे एक बार हमारे गांव में पधारे। हमने, उनको पहचाना नहीं [illegible] हंसने लग गये, पर कमाल है, उन्होंने हमारे ऊपर गुस्सा नहीं किया और हमें समझाया, हमारे बच्चों को समझाया। [illegible] समझाने का हमारे ऊपर ऐसा प्रभाव हुआ कि हमने तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट, जर्दा, शराब आदि सभी नशीली [illegible] को छोड़ दिया। वे हमारी बहुत सारी बीमारियों और कुरीतियों को नष्ट कर गये।

पहले हमारे बहुत सारे पैसे नशीली चीजों और बीमारियों में खत्म हो जाते थे। अब हम उनके पुण्य [illegible] से खुश रहते और भगवन् का नाम लेते हैं। उन्होंने हमें अच्छे इन्सान बन कर जीना सिखाया है, भैया [illegible] साथ चलता हूं।

मैंने कहा, भैया चलो। अपन दो से तीन भले। अब मैं थोड़ा और आगे बढ़ा तो एक बलाई जाति के [illegible] धर्मपाल ने पुकारा- मैंने वही उत्तर दिया मैं नाना गुरु के दर्शन करने जा रहा हूं उसने भी साथ चलने का [illegible] किया, मेरे पूछने पर उसने भी अपना वृत्त कह सुनाया। अरे मन, वह तो हमारे देवता हैं, भगवान हैं, और [illegible] वे हमारे सब कुछ हैं- उन्होंने हमें अधर्मी से धर्मी, नीच कर्मी से उच्च कर्मी बनाया है। मानो पाप तो [illegible] इनके दर्शन के बाद हमारे पास केवल धर्म ही धर्म रह गया है। मैंने कहा भैया बताओ तो सही आखिर [illegible] गुरुदेव का क्या उपकार है ? वह बोला सुनो- उनकी धर्मकथा इतनी प्रभावशाली है कि उनके एक ही [illegible] हम हजारों लोगों को जुआ खेलना, शिकार खेलना, मांस खाना, शराब पीना, अण्डा खाना आदि [illegible] को छुड़वा दिए उनके उपदेश से पहले हम रात दिन गांजा, भांग, चरस आदि का सेवन कर [illegible] हमारे पास शांति नाम की कोई चीज नहीं थी, हमारा जीवन दुखों का घर बना हुआ था। पर [illegible] गरम गरम मन भर तेल में एक बावने चन्दन की बूंद डालने पर तेल ठण्डा हो जाता है। वैसे ही इस [illegible]

ही उपदेश से हमारा जीवन बदल दिया।

उन्होंने हमें पापों से छुड़ाकर ही नहीं छोड़ दिया, अपितु हमें तो धर्म से जोड़कर धर्मपाल बना दिया। आज हमारी संख्या लाखों में है। अहो, उनकी महिमा से आज हम धर्मी, धनी, सम्मानित, श्रेष्ठ और श्रीमंत बन गये हैं, मैं भी उनके पास चलूंगा और वहीं पर रहूंगा। मैं तो सुनते सुनते दंग रह गया। बोला भाई चलो तुम भी चलो अब अपने तीन से चार हुए। मैं तनिक सा आगे बढ़ा- तो एक पढ़ा लिखा विद्वान युवक मिला उसने भी पूछा अहो, मन राजा, आज किधर जा रहे हो ? मैंने कहा मैं धर्म की कमाई करने आचार्य श्री जी के चरणों में जा रहा हूं। अहो- उन पूज्य गुरुदेव के श्री चरणों में तो मुझे भी चलना है। मैंने मुस्करा कर कहा क्यों भई ?

उसने उत्तर दिया, अरे भाई, उनके उपदेश ने अनेक श्रीमंतों की आंखें खोल दी। स्थान-स्थान पर छात्रावास की व्यवस्था हुई। देखो में एकदम गरीब पिता का पुत्र हूं, मेरी पढ़ने की बहुत इच्छा थी सो में छात्रावास में दाखिल हो गया, वहां मैंनै भौतिक ही क्या, आध्यात्मिक अध्ययन भी किया, और कमाने, खाने के योग्य बन गया, अब मैं गृहस्थावस्था में भी विवेक पूर्वक कार्य करके व्यसन रहित सात्विक जीवन जीता हूं, पाप कर्मों से बचकर चलता हूं, ऐसे में मैंने एक ही क्या, मेरे अनेक साथियों ने जीवन सुधारा है। उनको धर्म भी मिला है और धंधा भी।

धन्य हैं ऐसे आचार्य श्री नानेश जिनकी निर्दोष आगम व्याख्या ने अनेक को जीवन दान दिया है। मैंने कहा, चलो अपने पांच की संख्या को प्राप्त हो गए। अब मैं आगे बढ़ ही रहा था, उसी समय एक रोगमुक्त- युवक से मुलाकात हो गई, उसने भी उसी तरह से अपनी बात दोहराई। अरे मन राजा, देखो इन आचार्य देव की गरिमा की क्या बात कहूं, मैं गरीब और अनाथ था। मुझे भयंकर टी.बी. की बीमारी ने घेर लिया। मेरे पास इलाज कराने का कोई साधन नहीं था। ऐसे समय में मुझे समता चिकित्सा संस्थान जयपुर से भरपूर सहायता मिली, मैं अब पूर्ण स्वस्थ हो गया हूं। यह इन परम पूज्य आचार्य देव की ही कृपा फल का है। जो मुझे जैसे या मेरे जैसे अनेक का जीवन, काल के मुंह में जाकर भी लौट आता है, मेरी बहुत समय से प्रबल इच्छा है कि मैं भी उनके चरणों में रहूं।

मैंने कहा अच्छा यह तो बहुत खुशी की बात है हम पांच से छ: हुए।

आगे कदम बढ़ाया एक नगर में प्रवेश करते ही एक नागरिक ने हमें पूछा आप सब कहां जा रहे हैं ? मैंने कहा आचार्य भगवन् के दर्शनार्थ।

बस इतना सुनना था कि वह हर्ष से उछल पड़ा। अरे वहां तो मैं भी चलूंगा। जब गुरुदेव हमारे नगर में आये थे, तब उन्होंने मुझे समझाया। मेरे अनेक उलझे हुए प्रश्नों को सुलझाया। मैं भौतिक चकाचौंध में आत्मा को भूल ही गया था पर गुरुदेव तो ऐसे लोकोत्तर महापुरुष हैं जिनके दर्शन मात्र से ही हमारा मन धर्म की ओर आकर्षित हो गया। सच, मैंने देखा है वे दो-दो तीन-तीन घंटे लगातार हमारे एक के बाद एक प्रश्नों को हल करते थे पर उनके चेहरे पर न कोई शिकन थी, न कोई परेशानी और न कोई उकताहट वास्तव में अपूर्व ज्योतिपुंज उन गुरुदेव से प्रभावित होकर हम बहुत सारे लोगों ने सप्त कुव्यसन के त्याग किये ही साथ में गुटखा, चुटकी, पान पराग, शैम्पु, सेंट आदि नशीली एवं हिंसाकारी चीजों का भी परित्याग कर दिया। हमने सामायिक, प्रतिक्रमण सीखा और अब नियमित रूप से सामायिक, प्रतिक्रमण करते हैं, उन्होंने नगर में होने वाली कई कुरीतियों पर रोकथाम लगायी और हम सभी को मोक्ष मार्ग दिखाया।

(मन) मैं तो इस नागरिक की बातें सुनते-सुनते आनन्द.विभोर हो गया, और बोला चलो भई चलो अब हम सात और सोने की परात बन गये।

जब हम नगर में आगे बढ़े तो एक श्रावक जी मिल गये वे कभी बेले-२ कभी तेले-२ की तपस्या से पारणा करते थे। ये बारह व्रतों को धारण करके आगार धर्म की शोभा बढ़ा रहे हैं। मैंने इनको पहचाना- उन्होंने मुझे पहचाना। मैं धर्म की पहचान से सराबोर हो गया। जब उन्होंने हमारे निर्णय को जाना तो बहुत खुश हुए और

❑ महासती श्री विद्यावती जी म.सा.

विश्व वंद्य श्रद्धेय गुरुदे

एक दिन मेरे मन के मालिक, महतो महीयान, मन मंदिर के देवता आचार्य भगवन् के दर्शनार्थ निकली
से निकलते ही-जमीन की पवित्र धूली ने पूछा- 'अरे भैया किधर जा रही हो, मैंने कहा गुरुदेव के दर्शनार्थ। (
बोली) अरे भैया मुझे भी साथ ले चल। क्यों.. बहिन ? इन्हे तू कैसे पहचानती है। अरे ! उनको कौन नहीं
उनका तो मेरे पर अनन्त उपकार है।देख, दुनिया के लोग, मुझे पैरों से ही क्या जूते चप्पलों से दबाते थे
ही गुरुदेव ने मुझे अपने पावन चरणों से स्पर्श किया त्यों ही भक्तों ने मुझे हाथों से उठाकर मस्तक पर लगा

हां मस्तक पर तो चढ़ाया ही, किन्तु हर दुख दर्द में मेरा उपयोग लेकर अपने को स्वस्थ एवं प्रसन्न
लिया। उन्होंने मेरे जीवन में आई निराशा, को आशा के रूप में परिवर्तित कर दिया। मेरे बिगड़े भाग्य बन गये,
मेरा मूल्य दवाई, मन्त्र-तन्त्र आदि से भी अधिक बढ़ गया है। अब लोग मुझे बडे सम्मान से चरणरज कह कर पु
हैं। असलियत में मैं पूज्य गुरुदेव के चरण स्पर्श कर धन्य हो गई।

अब तूं मुझे वहीं ले चल जहां मेरे गुरुदेव विराजते हैं। मन ने कहा, चल ! अपने एक से दो हुए,
ज्योंहि थोड़ा आगे बढ़ा मुझे एक ग्रामीण युवक ने पुकारा। भैया किधर जा रहे हो ? मैंने अपनी बात दोहराई

उसने कहा अरे भाई, उनके पास तो मुझे भी चलना है मैंने कहा क्यों भाई तूं उन्हें जानता है ? हां,
नाना गुरु भगवन् को अच्छी तरह जानता हूं। वे एक बार हमारे गांव में पधारे। हमने, उनको पहचाना नहीं
हंसने लग गये, पर कमाल है, उन्होंने हमारे ऊपर गुस्सा नहीं किया और हमें समझाया, हमारे बच्चों को समझाया।
समझाने का हमारे ऊपर ऐसा प्रभाव हुआ कि हमने तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट, जर्दा, शराब आदि सभी नशीली
को छोड़ दिया। वे हमारी बहुत सारी बीमारियों और कुरीतियों को नष्ट कर गये।

पहले हमारे बहुत सारे पैसे नशीली चीजों और बीमारियों में खत्म हो जाते थे। अब हम उनके पुण्य
से खुश रहते और भगवन् का नाम लेते हैं। उन्होंने हमें अच्छे इन्सान बन कर जीना सिखाया है, भैया मैं भी
साथ चलता हूं।

मैंने कहा, भैया चलो। अपन दो से तीन भले। अब मैं थोड़ा और आगे बढ़ा तो एक बलाई जाति के
धर्मपाल ने पुकारा- मैंने वही उत्तर दिया मैं नाना गुरु के दर्शन करने जा रहा हूं उसने भी साथ चलने का
किया, मेरे पूछने पर उसने भी अपना वृत्त कह सुनाया। अरे मन, वह तो हमारे देवता हैं, भगवान हैं, और क्या
वे हमारे सब कुछ हैं- उन्होंने हमें अधर्मी से धर्मी, नीच कर्मी से उच्च कर्मी बनाया है। मानो पाप तो भाग
इनके दर्शन के बाद हमारे पास केवल धर्म ही धर्म रह गया है। मैंने कहा भैया बताओ तो सही आखिर तुम्हारे
गुरुदेव का क्या उपकार है ? वह बोला सुनो- उनकी धर्मकथा इतनी प्रभावशाली है कि उनके एक ही उपदे
हम हजारों लोगों को जुआ खेलना, शिकार खेलना, मांस खाना, शराब पीना, अण्डा खाना आदि सातों ही व्य
को छुड़वा दिए। उनके उपदेश से पहले हम रात दिन गांजा, भांग, चरस आदि का सेवन कर दिन रात घूमते
हमारे पास शांति नाम की कोई चीज नहीं थी, हमारा जीवन दुखों का घर बना हुआ था। पर क्या बताऊं
गरम गरम मन भर तेल में एक बावने चन्दन की बूंद डालने पर तेल ठण्डा हो जाता है। वैसे ही इस महापुरुष ने

उपदेश से हमारा जीवन बदल दिया।

उन्होंने हमें पापों से छुड़ाकर ही नहीं छोड़ दिया, अपितु हमें तो धर्म से जोड़कर धर्मपाल बना दिया। आज हमारी संख्या लाखों में है। अहो, उनकी महिमा से आज हम धर्मी, धनी, सम्मानित, श्रेष्ठ और श्रीमंत बन गये हैं, मैं भी उनके पास चलूंगा और वहीं पर रहूंगा। मैं तो सुनते सुनते दंग रह गया। बोला भाई चलो तुम भी चलो अब अपने तीन से चार हुए। मैं तनिक सा आगे बढ़ा- तो एक पढ़ा लिखा विद्वान युवक मिला उसने भी पूछा अहो, मन राजा, आज किधर जा रहे हो ? मैंने कहा मैं धर्म की कमाई करने आचार्य श्री जी के चरणों में जा रहा हूं। अहो- उन पूज्य गुरुदेव के श्री चरणों में तो मुझे भी चलना है। मैंने मुस्करा कर कहा क्यों भई ?

उसने उत्तर दिया, अरे भाई, उनके उपदेश ने अनेक श्रीमंतों की आंखें खोल दी। स्थान-स्थान पर छात्रावास की व्यवस्था हुई। देखो मैं एकदम गरीब पिता का पुत्र हूं, मेरी पढ़ने की बहुत इच्छा थी सो मैं छात्रावास में दाखिल हो गया, वहां मैंने भौतिक ही क्या, आध्यात्मिक अध्ययन भी किया, और कमाने, खाने के योग्य बन गया, अब मैं गृहस्थावस्था में भी विवेक पूर्वक कार्य करके व्यसन रहित सात्विक जीवन जीता हूं, पाप कर्मों से बचकर चलता हूं, ऐसे में मैंने एक ही क्या, मेरे अनेक साथियों ने जीवन सुधारा है। उनको धर्म भी मिला है और धंधा भी।

धन्य हैं ऐसे आचार्य श्री नानेश जिनकी निर्दोष आगम व्याख्या ने अनेक को जीवन दान दिया है। मैंने कहा, चलो अपने पांच की संख्या को प्राप्त हो गए। अब मैं आगे बढ़ ही रहा था, उसी समय एक रोगमुक्त- युवक से मुलाकात हो गई, उसने भी उसी तरह से अपनी बात दोहराई। अरे मन राजा, देखो इन आचार्य देव की गरिमा की क्या बात कहूं, मैं गरीब और अनाथ था। मुझे भयंकर टी.बी. की बीमारी ने घेर लिया। मेरे पास इलाज कराने का कोई साधन नहीं था। ऐसे समय में मुझे समता चिकित्सा संस्थान जयपुर से भरपूर सहायता मिली, मैं अब पूर्ण स्वस्थ हो गया हूं। यह इन परम पूज्य आचार्य देव की ही कृपा फल का है। जो मुझे जैसे या मेरे जैसे अनेक का जीवन, काल के मुंह में जाकर भी लौट आता है, मेरी बहुत समय से प्रबल इच्छा है कि मैं भी उनके चरणों में रहूं।

मैंने कहा अच्छा यह तो बहुत खुशी की बात है हम पांच से छ: हुए।

आगे कदम बढ़ाया एक नगर में प्रवेश करते ही एक नागरिक ने हमें पूछा आप सब कहां जा रहे हैं ? मैंने कहा आचार्य भगवन् के दर्शनार्थ।

बस इतना सुनना था कि वह हर्ष से उछल पड़ा। अरे वहां तो मैं भी चलूंगा। जब गुरुदेव हमारे नगर में आये थे, तब उन्होंने मुझे समझाया। मेरे अनेक उलझे हुए प्रश्नों को सुलझाया। मैं भौतिक चकाचौंध में आत्मा को भूल ही गया था पर गुरुदेव तो ऐसे लोकोत्तर महापुरुष हैं जिनके दर्शन मात्र से ही हमारा मन धर्म की ओर आकर्षित हो गया। सच, मैंने देखा है वे दो-दो तीन-तीन घंटे लगातार हमारे एक के बाद एक प्रश्नों को हल करते थे पर उनके चेहरे पर न कोई शिकन थी, न कोई परेशानी और न कोई उकताहट वास्तव में अपूर्व ज्योतिपुंज उन गुरुदेव से प्रभावित होकर हम बहुत सारे लोगों ने सप्त कुव्यसन के त्याग किये ही साथ में गुटखा, चुटकी, पान पराग, शैम्पु, सेंट आदि नशीली एवं हिंसाकारी चीजों का भी परित्याग कर दिया। हमने सामायिक, प्रतिक्रमण सीखा और अब नियमित रूप से सामायिक, प्रतिक्रमण करते हैं, उन्होंने नगर में होने वाली कई कुरीतियों पर रोकथाम लगायी और हम सभी को मोक्ष मार्ग दिखाया।

(मन) मैं तो इस नागरिक की बातें सुनते-सुनते आनन्द विभोर हो गया, और बोला चलो भई चलो अब हम सात और सोने की परात बन गये।

जब हम नगर में आगे बढ़े तो एक श्रावक जी मिल गये वे कभी बेले-२ कभी तेले-२ की तपस्या से पारणा करते थे। वे बारह व्रतों को धारण करके आगार धर्म की शोभा बढ़ा रहे हैं। मैंने इनको पहचाना- उन्होंने मुझे पहचाना। मैं धर्म की पहचान से सराबोर हो गया। जब उन्होंने हमारे निर्णय को जाना तो बहुत खुश हुए और

बोले-

वाह, तुम तो तारण तिरण की जहाज, भव्यों के सार्थवाह, समता दर्शन के प्रणेता, समीक्षण ध्यान योगी या ऐसे कहूं महायोगी के चरणों में जा रहे हो।

जब वह गुरु भगवन्त हमारे यहां पधारे तो 'किं जीवनम्' इस प्रश्न के उत्तर पर चार महिने उपदेश फरमाते गये। इतना गहरा फरमाया कि वह बढ़कर समता समाज की संरचना का हेतु और सेतु बन गया। देखो आज यह समता समाज नगर नगर और डगर डगर में कितने सुन्दर तरीके से इस लोक और परलोक को सुधार रही है।

उनके पधारने से समता समाज की रचना तो हुई ही है। साथ में समीक्षण ध्यान विधि पर अनेक प्रयोग हुए हैं। हम उनसे बहुत लाभान्वित हैं। ये गुरुदेव हमारे इस भरत क्षेत्र में सूर्य के समान तेजस्वी, जिन नहीं पर जिन सरीखे हैं, इनकी शरण में आने वाला, सच्चे दिल से सेवा करने वाला कभी भी अशांति का अनुभव नहीं करता- चलो आप सभी के साथ अष्टम पट्ट आचार्य भगवन् के दर्शनार्थ मैं भी चलूं।

मैंने कहा अवश्य पधारिये। हम हो गए आठ अब गुरुदेव से पढ़ेंगे समता पाठ।

आगे बढ़ने पर हमें श्राविका जी मिली इनसे सामान्य परिचय के बाद सुनने को मिला-

अहो अनाथों के नाथ, जैसे मां बच्चे की सुरक्षा करती है, वैसे ही ये गुरुदेव भी संयम-मर्यादा, अनुशासन की सुरक्षा करने वाले हैं। हमारे नगर मे तो एक वृद्ध महिला जो बरसों से प्रज्ञा चक्षु थी उसकी आंखे खुल गईं, उनका नाम लेने से अपने कइयों के रोग ठीक हो गये, हमारी महिला समिति उनके हर निर्णय को तहे दिल से स्वीकार करती है। वह समत्व योगी भगवन महावीर की देशना में नया प्राण फूंकने वाले हैं। इन्होंने अपने उत्तराधिकारी के रूप में नवम् पट्ट युवाचार्य श्री रामेश का चयन किया है। यह बहुत ही अभिनंदनीय चयन है। हम सभी इनकी आज्ञा अनुशासन में रहकर जीवन को धन्य बनायें। लो आप सभी के साथ, मैं भी गुरुदेव के प्रत्यक्ष दर्शनों का लाभ लेने चलती हूं।

इन श्राविका जी ने नवम् पाट की बात बताई और स्वयं भी हमारे मंडल की नवमी सदस्या के रूप में स[illegible] हो गई।

हम सभी दर्शन वंदन सेवा की भावना से आगे बढ़ रहे थे कि पुण्यवशात् हमें पूज्य मुनि मण्डल के दर्शन हो गये।

हमने दर्शन, वन्दन के साथ अपना प्रोग्राम बता[illegible] तो मुनिराज अत्यंत प्रफुल्लित हो गये। वे फरमाते हैं- अहो! इन प्रभा पुंज गुरुदेव में इतनी शक्ति और तेजस्विता है जो हम चींटी जितने मनुष्यों को हाथी जितना बड़ा ही नहीं, कंकर को शंकर, नर को नारायण और जीव को शिव बनाने की योग्यता रखती है।

विश्व की समस्त शक्तियों के द्वारा पूज्यता को प्राप्त हैं। वे विशाल संघ का संचालन करते हुए भी ध्यान, मौन-साधना में रत हैं, उनको क्रोध करते हमने देखा ही नहीं। लगता है घमण्ड तो इन्हें छू ही नहीं पाया है। वे संघ के छोटे बच्चे के साथ भी बड़े प्रेम के साथ व्यवहार करते हैं, हम छोटे छोटे सन्तों को भी आदर से पुकारते हैं। उनकी जितनी प्रशंसा करें, उतनी ही कम है। वे हमारे आराध्य है, वंदनीय हैं, पूज्यनीय है। हम भी गुरुदेव के दर्शनार्थ चल रहे हैं।

मैंने कहा, मत्थएणं वंदामि, पधारो हमें भी सेवा का लाभ मिल जायेगा हम नौ सदस्य आगे बढ़ गये।

कुछ ही दूरी पर हमें महासती मंडल के दर्शन हुए हमने हमारी भावना रखी, महासतियां जी. म.सा. ने फरमाया, अहो हमारे श्रद्धा केन्द्र गुरुदेव! कितने महान हैं। उन्होंने छोटी सतियों को भी बड़ी सुन्दर रीति से पढ़ाया है। जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड के द्वारा सभी आगम और न्याय शास्त्र, दर्शन शास्त्र व्याकरण आदि का परिबोध कराया है। इन आचार्य भगवन् की कृपा से यूं कहे गूंगा भी ज्ञानी बन जाता है। हम छोटी-छोटी महासतियां जी जिन्होंने सभी आगमों का अध्ययन कर लिया है और बड़ी सरलता से सरस व्याख्यान फरमाती हैं, हम हर क्षण, हर पल उनकी कृपा का अनुभव कर रहे हैं।

हम भी हमारे आराध्य प्रवर के दर्शनार्थ आ रही । मैंने कहा बड़े आनन्द की बात है हम चुतर्विध संघ लकर गुरु देव से आशीर्वाद प्राप्त करेंगे और आगे ढ़ेंगे । हम कुछ और आगे बढ़े ही थे कि छोटे से बच्चे मुलाकात हो गयी उसने हमसे पूछा हमने अपना योजन बताया तो वह कहने लगा ।

अंकल मैं भी आपके साथ दर्शन करने चलूंगा ने कहा अभी तू छोटा है, बड़ा हो तब चलना ।

तो बच्चा कहता है अंकल क्या आप नहीं जानते, इतना बड़ा भी गुरुदेव की कृपा से हुआ हूं ? नहीं तो तो गर्भ में ही मर जाता । मैंने कहा वो कैसे ?

बच्चा- देखो अंकल सच बताऊं मैं जब गर्भ में । मेरी मम्मी ने सोचा कि अब बच्चा नहीं चाहिए । वे स्पिटल जाकर एबोर्सन के लिए तैयार हो गयी, किन्तु च में ही सुना कि गुरुदेव नानेश पधारे हैं । सो पहले रुदेव का प्रवचन सुन लें । उस दिन गुरुदेव का प्रवचन या था, मानो मेरे लिए वरदान था । गुरुदेव ने गर्भपात हापाप पर व्याख्यान दिया और बहनों को गर्भपात के त्याख्यान करवाये । मेरी मम्मी का भी मानस बदला और प्रत्याख्यान कर लिए ।

अगर गुरुदेव न होते तो, मैं गर्भ कोठरी से, काल कोठरी में चला जाता । देखो गुरुदेव की महिमा, मैं भी चलूंगा और धर्म ध्यान करूंगा ।

मैंने कहा, वाह राजकुमार ! तुम भी कितना ज्ञान रखते हो चलो हम तुम्हे भी साथ ले चलते हैं ।

अब हम दस जने हो गये । आगे बढ़े एक बालिका मिल गई । उसने भी साथ चलने को आग्रह किया । मैंने कहा अभी नहीं बाद में, वह कहती है प्लीज अंकल ऐसे मत कहो, जब गुरुदेव हमारे यहाँ पधारे थे तो हमारी बालक-बालिका मण्डल का गठन हुआ था । धार्मिक पाठशाला शुरू हुई । उसमें हम सामायिक, प्रतिक्रमण सीखते हैं, प्रार्थना बोलते हैं यहां में ही क्या सब बालिकाएँ आपके साथ चलने को तैयार हैं ।

मैंने कहा बहुत अच्छी बात है मैं चला था, तुम दस मिल गये तो हम सब एक से ग्यारह हो गये।

हम सभी खुशियों के साथ आगे बढ़ रहे थे, रास्ते में हिरण, भालू, बकरी, शेर, गाय, खरगोश, मछलियां, कबूतर, तोता, मैना, सारस, बतख, नाग आदि अनेक तिर्यंच पंचेन्द्रिय प्राणी मिले । कह रहे थे- उन गुरुदेव को हमारी भी वन्दना । उन्होंने शिकारियों को हिंसा का त्याग करवाकर हमें जीवन दान दिया है । आकाश में परिभ्रमण शील सूर्य चन्दा बोल रहे थे । हमारा प्रकाश और ऊर्जा अभिनन्दनीय आचार्य भगवन् के चरणों में समर्पित करके, वन्दना करना । डालियों के महकते सुमनों ने कहा, हम संयम फैलाने वाले गुरुदेव के चरणों में समर्पित हैं ।

ऊषा काल ने कहा मेरी रमणीयता से भी बढ़कर गुरुदेव की भक्ति रमणीय है । धरती ने कहा, मेरी ऊर्जा से भी बढ़कर गुरुदेव की ऊर्जा है ।

दीपक ने कहा, गुरुदेव मुझसे भी बढ़कर उजाला करने वाले हैं तो स्वर्ण थाल ने कहा मेरा रंग उनके धर्म रंग के सामने फीका है, चलते हुए पेन ने कहा मेरी सार्थकता गुरुदेव के गुणानुवाद लिखने में है तो कापी ने कहा मेरी सार्थकता उनके जीवन अंकन में है ।

हम चल रहे थे मार्ग में देवों के स्वर गुंजरित हुए हम इन महापुरुषों को ही वन्दना करते हैं हम सभी की बातें सुनते हुए गुरुदेव के चरणों में पहुंचे । सभी ने प्रमोद भाव से गुरुदेव के दर्शन किये हम सब वहीं सेवा में निमग्न थे, वहां का वर्णन करने में मेरी मति और कलम सक्षम नहीं है ।

इसी बीच एक दिन हमारे पर, दुखों का पहाड़ टूट पड़ा दिशायें शून्य हो गयीं, ऐसा लगा मानो कुछ करना ही शेष नहीं रहा ।

क्या कहूं आचार्य भगवन् ने विधि पूर्व संलेखना संथारा स्वीकार किया और अपनी दिव्य चेतना के साथ देहातीत हो गये ।

गुरुदेव सच सच बताइये आपको यहां क्या कमी थी जो हमें साथ लिये बिना ही आप दिव्य लोक में पधार गये हो । देखो, यह मन तो वहां भी आ जायेगा । पर क्या बेचारे सभी जीव वहां आ सकते हैं ।

हां एक बार हमें आप अपना पता तो बताइये, फिर देखना आपके वहां भी हम पहुंचने की कोशिश करेंगे।

आप कृपा करें इस शासन फुलवारी को जैसे लगाकर महकाया है वैसे इसे बढ़ाकर और अधिक. सुगन्ध से भरें।

हमें संभालने के लिये आप एक बहुत बड़ा संबल दे गये हैं, हम इनकी आज्ञा का पालन करेंगे। इनकी छत्र-छाया में रहेंगे। पर हां आप भी एक बार फरमा[illegible] कि आप जहां भी हो वहीं से [illegible] रखेंगे।

हे महाचेतन्य महापुरुष, आप को मेरा [illegible] यानी सम्पूर्ण सृष्टि का श्रद्धा सहित कोटि कोटि प्र[illegible]

मन मन्दिर के देव हमारे, जन जीवन के [illegible]
जहां विराजो आप वहीं से, रखना हम पे हाथ।

❑ साध्वी सुनिता जी म.सा.

परम कृपा-साग[illegible]

बीकानेर में विराजित आराध्य आचार्य भगवन् के दर्शनार्थ पीपाड़ से बीकानेर की तरफ विहार किया। पीप[illegible] से ७ कि.मी. के लगभग आगे पांव की नस खिसक गई, भयंकर दर्द हुआ चलते नहीं बनता। रास्ते में कहीं [illegible] की सुविधा नहीं। मालिश सेक करते-२ बढ़ते गये मन में एक ही लक्ष्य था आचार्य भगवन् के दर्शन करना। नोख[illegible] से विहार कर भामटसर जा रहे थे शाम का समय बहुत कम था। रास्ता लम्बा, पांव में दर्द, पांव उठ नहीं [illegible] था। चिंता होने लगी क्या करें कैसे गन्तव्य को पायें, चेहरा उतर रहा था उसी समय मन ही मन जय गुरु नाना [illegible] लगाना सबकी रक्षा करते हैं मेरी भी रक्षा करो कहते-२ तो पांवों में ऐसी ताकत आई कि पीछे चल रही थी [illegible] हो गई सबसे पहले पहुंच गई। इसी प्रकार से कठिन दुर्गम मार्ग भी सरल सुलभ हो गया।

साध्वी श्री मंजुला श्री जी म. सा.

बेजोड़ व्यक्तित्व

आचार्य देव का धवल, यशस्वी, समता-सहिष्णुता से ओत-प्रोत व्यक्तित्व जन जीवन के लिए अत्यंत चुम्बकीय एवं गरिमापूर्ण था। लोक मानस में कल्पना नहीं थी कि यह 'नाना' क्या करेगा पर अपनी अद्वितीय साधना द्वारा आपने अचिंत्य को भी साकार कर दिया। जैन जगत के कोहिनूर आचार्य श्री हुक्मीचंद म.सा. से लेकर गणेशाचार्य तक के अधूरे स्वप्नों को आपने अपनी तीक्ष्ण न्याय तुला से पूर्ण किये। आचार्य श्री नानेश का मुख्य मंत्र 'समता' था। समतामय जीवन ही उनके व्यक्तित्व को उजागर करने वाला था। यह सत्य है कि व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति बिना व्यक्ति के नहीं होती, लेकिन अध्यात्म शास्त्र का कथन है कि व्यक्ति क्षर है, और व्यक्तित्व अक्षर है। व्यक्ति को मिटना होता है जबकि व्यक्तित्व अमिट होता है। आचार्य श्री नानेश आज व्यक्ति के रूप में नहीं है किन्तु व्यक्तित्व के रूप में साक्षात हैं और आने वाले समय में भी होंगे। उनकी पुण्य स्मृति जागरण का संदेश देती रहेगी।

आपके जीवन में प्रदर्शन नहीं दर्शन था। कृत्रिमता नहीं वास्तविकता थी। आपके स्वरूप में संतत्व गौरवान्वित हुआ था। गुरुदेव विद्वता के अगाध सागर थे, सिद्धियां आपके चरण चूमती थीं, वैराग्य आपका अंग रक्षक था संयम आपका जीवन साथी था। आप जीवन मुक्त ऐसे महान संत थे, जो सदैव साधना में संलग्न, आराधना-उपासना में स्थित रहते थे। आपका हृदय स्फटिक की भांति उज्ज्वल था, आप अपनी आत्म साक्षी को ही महत्व देते थे। आपकी वाणी में अभूतपूर्व शक्ति थी, आपकी स्मरण शक्ति अनमोल थी। आपने स्व को छोड़कर संघ सेवा को सर्वोपरि माना, आपने अनल्प उपकार करके संघ सुरक्षा के लिए अनमोल हीरा गुरु 'राम' के रूप में दिया। मेरा हृदय आप श्री जी के उपकारों से कभी भी उऋण नहीं हो सकता और जीवन की अंतिम धड़कन तक भी आपको भूला नहीं जा सकता। मेरी एक-एक श्वास और मेरे खून का एक-एक कतरा सदैव वर्तमान आचार्य श्री रामेश व संघ के लिए पूर्णरूपेण समर्पित रहेगा।

लोकोत्तर सूर्य अस्त हुआ

कुमारी दीक्षा

गुरु नानेश तेरे, दर्शन से हो जाती थी निहाल।
तेरे भजन गाकर, रहती थी खुशहाल ॥
उठ गया तेरा साया, मुझ पर से ।
गुरुवर तेरे अस्ताचल से, हो गई बेहाल ॥

अलौकिक गुरु नाना

१९९२ हुबली का चातुर्मास संपन्न कर गुरुदेव का नाम लेकर मार्ग में बढ़ते जा रहे थे। होली चौमासा पूर्ण कर धुलिया से आगे बढ़े। सेन्धवा से इन्दौर का रास्ता बड़ा विकट था। गुजरी के बाद घाट पढ़ता था। मनु २१ कि.मी. पड़ता है। बीच में कोई शाकाहारी गांव, बस्ती, घर नहीं है। शाम को विहार कर गणेश मंदिर देखा तो एक दम खुला है। सतियों के योग्य जगह नहीं है। आगे चले टावर तक पहुंचे, सूर्यास्त होने लगा। कोई सुरक्षित जगह नहीं मिली। टावर में गये, बाहर बरामदे में रुके। इतने में वहां का व्यवस्थापक आया। को देखकर घबरा गया, रुकने के लिए इन्कार करने लगा। उसको समझाया गया। जैन साधु-साध्वी का आचार विचार कहा। फिर भी बड़ा चिंतित था। बिजली घर था खतरे की जगह थी। अन्दर प्रवेश निषिद्ध था। आखिर बाहर बरामदे में रुकने की स्वीकृति दी। सडक का किनारा, रात भर ट्रक, मोटरें चलती रहीं। पास में ही शराब की दुकान। चालक लोग उतरते, दारू पीते, विश्राम करते फिर चलते। जगते रहे, नवकार मंत्र गिनते रहे, जय गुरु नाना पार लगाना, जाप करते रहे। इस जाप के प्रभाव से शराबियों के इस दिशा में कदम ही नहीं बढ़े। इधर जाते शराब पीने के लिए मगर पीने के बाद इस तरफ नहीं आये। सबेरा होते-होते हल्की सी नींद की झपकी लगी तो आचार्य भगवन् की प्रसन्न मुद्रा स्वस्ति के रूप में उठा हुआ हाथ का स्वप्न देखा। ऐसे भयानक बीहड़ मार्ग में पांच छोटी-२ सतियां, प्रतिमा बोकड़िया। साथ में कर्नाटक का भाई कन्नड़ भाषी हिन्दी से अनभिज्ञ। हम लोगों ने उस मार्ग को तय किया। दूसरे दिन सबेरे भी घाट मार्ग को गुरुदेव की कृपा से पार कर मानपुर पहुंचे।

नाना महा पुण्यशाली गुरु

अनिता नागोरी

निर्मल मन मनीषी, करुणा निधान करुणा करो,
कर से दे दो आशीष,
ओ सयम पथ के सारथी, श्रमण संघ शृंगार,
अष्टम पद आचार्य प्रवर, वन्दन सौ-सौ बार।
महापुण्यशाली गुरु,
धर्मपाल प्रतिबोधक, श्रमण संस्कृति के प्राण,
संघ नायक सरदार हो, सत-पथ का दे दो वरदान,
वन्दन सौ-सौ बार।
मोक्ष धाम की पुनीत बेला में, महाप्रयाण उदयपुर में
श्रद्धा सुमन अर्पण करे, 'अनिता' अर्पित तन-मन, प्राण,
स्वीकार करो मेरी वन्दना,
सकल संघ करे अरदास।

-बीकानेर

गुरुदेव का प्रथम दर्शन, संयमी जीवन का सर्जन

आदर्श त्यागी शासन प्रभावक पूज्य श्री धर्मेशमुनि जी म.सा. हमारे गांव बड़ाखेड़ा पधारे जो सांसारिक रिश्ते में काका सा म.सा. लगते थे। प्रथम बार दर्शन किये धार्मिक शिविर में भाग लिया था, कुछ सीखा था। योग संयोग पिताजी का देहांत हो गया, ससुराल वाले मेरे (पुष्पा) अनुकूल नहीं थे। माता जी दाखु बाई मांडोत मद्रास में विराजित पंडित रत्न धर्मेश मुनि जी म.सा. के दर्शन किए फिर राजस्थान आए। मैं माता जी के साथ सारोठ दर्शनार्थ गई, कुछ दिन रही। संयोग से आचार्य भगवन् का चातुर्मास उदयपुर था। कार्तिक में दीक्षाओं का प्रसंग था। उदयपुर जाने का अवसर मिला। गुरुदेव के पावन मंगलकारी दर्शन किए। गुरुदेव का अलौकिक चेहरा देखती ही रह गई। मन में पक्का संकल्प कर लिया कि मुझे तो दीक्षा ही लेना है। तब से मैं ज्ञानार्जन करने लगी। रतलाम में २५ दीक्षाओं में मेरी भी दीक्षा गुरुदेव के श्री मुख से हुई। इन्दौर से विहार कर चांगुटोला चातुर्मास के लिए हरदा से बैतुल आ रहे थे। भयानक जंगल, कुरसना गांव के निकट पहुंचे, तब चार सतियां गुणरंजना श्री जी, प्रभावना श्री जी, चितरंजना जी, चंदना जी पुलिया के उस पार और जय श्री जी, सुनिता श्री जी एवं साथ में भाई सुन्दरम पुलिया के इस पार थे। एक उद्दण्ड बैल सिंह सा चेहरा, कोपायमान, अनिमेष दृष्टि, दौड़ता आया और प्रभावना श्री जी को धक्का लगाया, वे गिर गये। आगे दौड़ता-२ बैल पहले सुनिता श्री जी म.सा. की तरफ मुख किया। सामने मौत दीख रही, किधर जाएं, क्या करें ? किंकर्त्तव्यविमूढ हो गये। एक मात्र जय गुरु नाना पार लगाना शब्द मुखरित हो रहे थे। बैल की दृष्टि वहां से हटी, जय श्री जी म.सा. की तरफ, फिर सुन्दरम की तरफ। सुन्दरम ने साइकिल आगे कर दी। कसकर पकड़ ली बैल के पांव चक्के में फंस गये, फिर भी धक्का लगाता रहा। सुन्दरम ने साईकिल छोड़ दी। अपना बचाव किया। जब तक वह बैल अपना पांव साइकिल से निकाले उतने समय में सब सुरक्षित हो गये। प्रभावना श्री जी म.सा. नदी में गिरते-२ किनारे के पत्थर के कारण बच गये। सिर में, हाथ में, पांव में चोट आई। खून बहने लगा, चश्मा फूट गया। यथा स्थान लाये। संयोग से गुरुदेव की कृपा से वहां डॉक्टर आ गया। पट्टी बांधी और बैतुल समाचार मिल गये। सब लोग पहुंच गये। ऐसे भयानक जंगल में बचाने वाला गुरू का नाम ही था।

गुरुदेव तेरी महिमा, देव भी नहीं गा सकते।
तेरे गुण लिखना भी होगी बाल हरकतें॥

❑ साध्वी श्री किरण प्रभा जी म.सा.

विराट व्यक्तित्व के धनी

मेवाड की पावन वीर प्रसविनी भूमि पर एक विशिष्ट तपोपूत आत्मा अवतरित हुई, जिनका नाम था नाना । नाम कितना सुन्दर और प्यारा है, नाम छोटा काम किया है मोटा... ग्राम छोटा दांता, आज वह नानेश नगर बन गया है मोटा, क्योंकि जिस भूमि पर तीर्थपति जन्म लेते हैं वह भूमि जंगम तीर्थ बन जाती है , जैसा कि दांता आज नानेश नगर के नाम से विश्व विख्यात हो गया है । धन्य है माता शृंगारा जिनकी कुक्षि से एक विशिष्ट तपोपूत आत्मा ने जन्म ग्रहण किया । वह रत्न प्रसूता माता शृंगारा तो धन्य धन्य हुई, किंतु यह संपूर्ण जगत ही कृतार्थ हो गया । मेवाड़ की धरती कर्मवीरों से यशस्वी बनी है तो धर्म वीरों से गौरवान्वित भी ।

आपकी प्रवचन शैली बडी ही मधुर, आगम सम्मत तथा जन-जन को आकर्षित करने वाली थी । आपकी पीयूष वर्षी वाणी एवं वैराग्य भावों से ओत-प्रोत प्रवचनों को सुनकर अनेक भाई-बहिनों ने संसार से विरक्त होकर संयम मार्ग अंगीकार किया और जो आपके वरदहस्त व सुखद सामिप्य की छाया में आपकी महिमा, गरिमा में बढ़ाते हुए शासन की शोभा द्विगुणित कर रहे हैं । ऐसा नयनाभिराम व दैदीप्यमान व्यक्तित्व था आचार्य श्री नानेश का । आचार्य भगवन् का जीवन सहजता, मधुरता, सद्‌गुणों का गुलदस्ता था । ऐसी आध्यात्मिक साधना में तल्लीन सरलता व समता की एक जीवन्त छवि जिसके दर्शन होते ही मानव मस्तिष्क स्वतः ही श्रद्धाशील हो, नमन कर अपूर्व आनन्दानुभूति प्राप्त करता था । मैं ऐसी दुर्भाग्यशाली थी कि मुझे गुरुदेव के दर्शन नहीं हुए और अनुपम सेवा का अवसर भी प्राप्त नहीं हुआ । मन की मुरादें मन में ही रह गईं । दिल के संजोए अरमान अधूरे ही रह गये ।

आप श्री जी का समता का गुंजायमान नाद तथा अनुपम प्रेरणा की सारी स्मृतियां और अनुभूतियां स्मृति पटल पर उभरकर सामने आ रही हैं । आप श्री जी के वात्सल्य समता रूपी मुक्ताओं को शब्द सूत्र में पिरोने का मेरा प्रयत्न सूर्य को दीपक दिखाने के तुल्य ही है ।

आज उनका विरक्ति प्रधान प्रेरक व्यक्तित्व हमारे लिए प्रकाश-पथ एवं प्रेरणा स्तम्भ बनकर दिशा दर्शन करता रहेगा ।

उस सौम्यमान करुणा, वरूणा को हृदय की हर धड़कन के साथ श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं ।

नाना गुरु हमारे नयनों के तारे थे ।
नाना गुरु इस धरती के चांद सितारे थे ।
युग-युग अमर रहेगी तेरी गौरव गाथा ।
नाना गुरु भव्यों को तिराने वाले थे ।

नवम् पट्टधर प्रशांतमना, महामनीषी आचार्य भगवन् के आचार्य पद पर सुशोभित होने की खुशी में वन्दन अभिनन्दन ।

मानवता के दीप, तुम्हारा अभिनन्दन,
दिव्य धरा के द्वीप, तुम्हारा अभिनन्दन ।

❑ महासती श्री अंजलि श्री जी म.सा.

गुण रत्नाकर

खोजती हूं मैं स्वयं ही, क्या तुम्हें अर्पित करूं ।
हां मुझे कुछ याद आया, श्रद्धा सुमन समर्पित करूं ॥

मेरे पूज्य समता विभूति श्रद्धेय आचार्य भगवन् के जीवन में अनेकानेक गुण विद्यमान थे । पूज्य गुरुदेव में एक विशेष प्रकार की चुम्बकीय शक्ति थी, जिससे कि मानव स्वत: ही आपकी ओर खिंचा चला जाता था और आकर्षित हो जाता था । मुझे भी ऐसी महान विभूति के पावन पवित्र सानिध्य में रहने का अवसर मिला, पावन दर्शनों का लाभ मिला-

डालियां न होतीं तो फूल लटकते ही रहते ।
आप जैसे सद्गुरु न होते तो हम भटकते ही रहते ॥

सचमुच में मेरा जीवन धन्य हो गया, ऐसे महान सद्गुरु को पाकर । पूज्य भगवान का जीवन कोहिनूर हीरे के समान, शरद् ऋतु की धवल चांदनी सा शुभ्र-शीतल व सबको सुखमय बनाने वाला था । आपका त्याग प्रणम्य तथा साहस अनुकरणीय था । पूज्य भगवन् का प्रभाव ही ऐसा था कि आपका नाम लेने से भक्तों के संकट दूर हो जाते थे, आप श्री जी की दृढ़ता मेरू पर्वत के समान थी और संयम साधना अनुपमेय थी । जो भी आपकी पीयूष वर्षिणी वाणी सुन लेता था वह अपने आप को भूल जाता था और आपके श्री चरणों का पुजारी बन जाता था ।

नाना तेरे गुणों को मुझसे गाया नही जाता ।
तेरी समता का अन्दाज लगाया नहीं जाता ।

श्रद्धेय आचार्य भगवन् के गुण ही इतने हैं और मेरी बुद्धि अल्प है, मेरी जिन्दगी ही सारी निकल जाये तो भी पूज्य गुरुदेव के गुणो का वर्णन करना मुश्किल है । ऐसी महान विरल विभूति आज हमारे बीच में नहीं हैं पर आपका यशस्वी जीवन तो सदैव जीवन्त रहने वाला है । आप श्री जी के कृतित्व एवं व्यक्तित्व को कोई भी विस्मृत नही कर सकता है ।

पूज्य गुरुदेव का प्रशस्त उदार विचार एवं उन्नायक सत्कार्य सदैव हमारा पथ प्रदर्शन करते रहेंगे । श्रद्धेय आचार्य भगवन् के आदर्शों पर चलकर हम उनकी स्मृतियों को चिरंजीव बनाएं, यही हमारी गुरु नाना के प्रति श्रद्धांजलि होगी ।

तेरे गुणों की गाथा जमाना सदा गाता रहेगा ।
जब तक सांस में सांस है, स्मृति का तराना बजता रहेगा ॥

नानेश पट्टधर आगमों के निगूढ़ रहस्यों को उजागर कर ज्ञानियों का मनमोहने वाले, प्रशांत मन से जिनशासन की सेवा करने वाले, तपस्या से आत्मा को उज्ज्वल बनाने वाले ऐसे गुरुवर रामेश को पाकर मेरा मन मुदित है । गुरुवर, आप दिन दुगुनी रात चौगुनी प्रगति करते रहें । नानेश शासन में चार चांद लगायें, भगवन् आप श्री जी के वरद्हस्त तले मेरा मार्ग भी प्रशस्त बने, इसी शुभ मंगल मनीषा के साथ-

□ साध्वी श्री किरण प्रभा जी म.सा.

विराट व्यक्तित्व के

मेवाड़ की पावन वीर प्रसविनी भूमि पर एक विशिष्ट तपोपूत आत्मा अवतरित हुई, जिनका नाम था नाना। न नाम कितना सुन्दर और प्यारा है, नाम छोटा काम किया है मोटा... ग्राम छोटा दांता, आज वह नानेश नगर ब गया है मोटा, क्योंकि जिस भूमि पर तीर्थपति जन्म लेते हैं वह भूमि जंगम तीर्थ बन जाती है, जैसा कि दांता अब नानेश नगर के नाम से विश्व विख्यात हो गया है। धन्य है माता शृंगारा जिनकी कुक्षि से एक विशिष्ट तपोपूत आ ने जन्म ग्रहण किया। वह रत्न प्रसूता माता शृंगारा तो धन्य धन्य हुई, किंतु यह संपूर्ण जगत ही कृतार्थ हो गया। मेवाड़ की धरती कर्मवीरों से यशस्वी बनी है तो धर्म वीरों से गौरवान्वित भी।

आपकी प्रवचन शैली बड़ी ही मधुर, आगम सम्मत तथा जन-जन को आकर्षित करने वाली थी। आपकी पीयूष वर्षी वाणी एवं वैराग्य भावों से ओत-प्रोत प्रवचनों को सुनकर अनेक भाई-बहिनों ने संसार से विरक्त होकर संयम मार्ग अंगीकार किया और जो आपके वरद्हस्त व सुखद सामिप्य की छाया में आपकी महिमा, गौरव है बढ़ाते हुए शासन की शोभा द्विगुणित कर रहे हैं। ऐसा नयनाभिराम व दैदीप्यमान व्यक्तित्व था आचार्य श्री नानेश का। आचार्य भगवन् का जीवन सहजता, मधुरता, सद्गुणों का गुलदस्ता था। ऐसी आध्यात्मिक साधना में तल्लीन सरलता व समता की एक जीवन्त छवि जिसके दर्शन होते ही मानव मस्तिष्क स्वत. ही श्रद्धाशील हो, नमन कर अद्भुत आनन्दानुभूति प्राप्त करता था। मैं ऐसी दुर्भाग्यशाली थी कि मुझे गुरुदेव के दर्शन नहीं हुए और अनुपम सेवा का अवसर भी प्राप्त नहीं हुआ। मन की मुरादें मन में ही रह गईं। दिल के संजोए अरमान अधूरे ही रह गये।

आप श्री जी का समता का गुंजायमान नाद तथा अनुपम प्रेरणा की सारी स्मृतियां और अनुभूतियां स्मृति पटल पर उभरकर सामने आ रही हैं। आप श्री जी के वात्सल्य समता रूपी मुक्ताओं को शब्द सूत्र में पिरोने का मेरा प्रयत्न सूर्य को दीपक दिखाने के तुल्य ही है।

आज उनका विरक्ति प्रधान प्रेरक व्यक्तित्व हमारे लिए प्रकाश-पथ एवं प्रेरणा स्तम्भ बनकर दिशा दर्शन कराता रहेगा।

उस सौम्यमान करुणा, वरूणा को हृदय की हर धड़कन के साथ श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं।

नाना गुरु हमारे नयनों के तारे थे।
नाना गुरु इस धरती के चांद सितारे थे।
युग-युग अमर रहेगी तेरी गौरव गाथा।
नाना गुरु भव्यों को तिराने वाले थे।

नवम् पट्टधर प्रशांतमना, महामनीषी आचार्य भगवन् के आचार्य पद पर सुशोभित होने की खुशी में अन्तर अभिनन्दन।

मानवता के दीप, तुम्हारा अभिनन्दन,
दिव्य धरा के द्वीप, तुम्हारा अभिनन्दन।

महासती श्री अंजलि श्री जी म.सा.

गुण रत्नाकर

खोजती हूं मैं स्वयं ही, क्या तुम्हें अर्पित करूं ।
हां मुझे कुछ याद आया, श्रद्धा सुमन समर्पित करूं ॥

मेरे पूज्य समता विभूति श्रद्धेय आचार्य भगवन् के जीवन में अनेकानेक गुण विद्यमान थे । पूज्य गुरुदेव में एक विशेष प्रकार की चुम्बकीय शक्ति थी, जिससे कि मानव स्वत: ही आपकी ओर खिंचा चला जाता था और आकर्षित हो जाता था । मुझे भी ऐसी महान विभूति के पावन पवित्र सानिध्य में रहने का अवसर मिला, पावन दर्शनों का लाभ मिला-

डालियां न होतीं तो फूल लटकते ही रहते ।
आप जैसे सद्गुरु न होते तो हम भटकते ही रहते ॥

सचमुच में मेरा जीवन धन्य हो गया, ऐसे महान सद्गुरु को पाकर । पूज्य भगवान का जीवन कोहिनूर हीरे के समान, शरद् ऋतु की धवल चांदनी सा शुभ्र-शीतल व सबको सुखमय बनाने वाला था । आपका त्याग प्रणम्य तथा साहस अनुकरणीय था । पूज्य भगवन् का प्रभाव ही ऐसा था कि आपका नाम लेने से भक्तों के संकट दूर हो जाते थे, आप श्री जी की दृढ़ता मेरू पर्वत के समान थी और संयम साधना अनुपमेय थी । जो भी आपकी पीयूष वर्षिणी वाणी सुन लेता था वह अपने आप को भूल जाता था और आपके श्री चरणों का पुजारी बन जाता था ।

नाना तेरे गुणों को मुझसे गाया नही जाता ।
तेरी समता का अन्दाज लगाया नहीं जाता ।

श्रद्धेय आचार्य भगवन् के गुण ही इतने हैं और मेरी बुद्धि अल्प है, मेरी जिन्दगी ही सारी निकल जाये तो भी पूज्य गुरुदेव के गुणों का वर्णन करना मुश्किल है । ऐसी महान विरल विभूति आज हमारे बीच में नहीं हैं पर आपका यशस्वी जीवन तो सदैव जीवन्त रहने वाला है । आप श्री जी के कृतित्व एवं व्यक्तित्व को कोई भी विस्मृत नहीं कर सकता है ।

पूज्य गुरुदेव का प्रशस्त उदार विचार एवं उन्नायक सत्कार्य सदैव हमारा पथ प्रदर्शन करते रहेंगे । श्रद्धेय आचार्य भगवन् के आदर्शों पर चलकर हम उनकी स्मृतियों को चिरंजीव बनाएं, यही हमारी गुरुनाना के प्रति श्रद्धांजलि होगी ।

तेरे गुणों की गाथा जमाना सदा गाता रहेगा ।
जब तक सांस में सांस है, स्मृति का तराना बजता रहेगा ॥

नानेश पट्टधर आगमों के निगूढ रहस्यों को उजागर कर ज्ञानियों का मनमोहने वाले, प्रशांत मन से जिनशासन की सेवा करने वाले, तपस्या से आत्मा को उज्ज्वल बनाने वाले ऐसे गुरुवर रामेश को पाकर मेरा मन मुदित है । गुरुवर, आप दिन दुगुनी रात चौगुनी प्रगति करते रहें । नानेश शासन में चार चांद लगायें, भगवन् आप श्री जी के वरद्हस्त तले मेरा मार्ग भी प्रशस्त बने, इसी शुभ मंगल मनीषा के साथ-

जीवन अनुपम था जो मेरे सोचने की शक्ति से, मेरी समझ से, मेरी बुद्धि से बहुत परे था। हमारे आराध्य प्रवर अपने लिए जितने कठोर थे, दूसरे के प्रति उतने ही कोमल थे, मधुर थे, सरल थे। ऐसी आत्माओं के लिए एक मनीषी ने कहा था :

"वज्रादपि कठोराणि, मृदुनि कुसुमादपि।"

एक ओर वज्र से भी अधिक कठोर जीवन। वज्र भी क्या कठोर होगा उनके समक्ष, दूसरी ओर फूल से भी कोमल, हम उपमा देकर रह जाते है परंतु वह दिव्यात्मा उससे भी कहीं आगे थी। ऐसी अद्वितीय आत्मा के मन का, चित्त का कौन सही मूल्यांकन कर पाया है। जैसे मेरू पर्वत को तराजू में तौलना असंभव है वैसे ही आपके सभी गुणों का वर्णन करना असंभव है। यह महान आत्मा आज हमारे मध्य नहीं रही किन्तु उनकी अनश्वर कालजयी दिव्यात्मा हमारे साथ है। वह आत्मा जहाँ भी है निश्चित रूप से हमारे ऊपर हजारों हजार हाथ से अमृत बरसा रही है। आशीर्वाद प्रदान कर रही है। तीन लोक से बढ़कर इस महान निधि को हमें अपने अन्तर में संजोकर रखना है, जहां से निरन्तर आशीर्वाद प्राप्त होते रहेंगे। उसी के बल पर हमारा चतुर्विध संघ दिन दूनी, रात चौगुनी प्रगति करता रहेगा।

उस दिव्य आत्मा की महायात्रा को स्वीकारते हु[illegible] भी अन्तरमन उनके वियोग वेदना से विकल है। [illegible] सहज प्रेम, स्नेह एवं अनुराग का वह निर्मल प्रवाह [illegible] ही अश्रु जल के रूप में आंखों से प्रवहमान हो [illegible] है। आराध्य देव की स्मृति गुरुणी प्रवर एवं हम सभी के हृदय को, दिल को द्रवित कर रही है। आचार्य [illegible] का वियोग एक बहुत बड़ी क्षति है। इस वज्रपात को [illegible] सभी धैर्यता के साथ सहन करें। उनका अनन्त [illegible] हम अंतिम सांस तक नहीं भूल पायेंगे। उनकी साधना [illegible] उनके सद्गुणों की तेजस्विता आज भी विद्यमान है [illegible] भविष्य में भी रहेगी, ऐसी पवित्र आत्मा को मेरे [illegible] विभोर भक्ति स्निग्ध श्रद्धा सुमन अर्पित-समर्पित। [illegible] ही हुक्म संघ के अनुपम मोती, नानेश की दिव्य [illegible] परम आराध्य शासनेश नवम् पट्टधर के प्रति मंगल [illegible] है कि वे दिनानुदिन गुलाब के विकसित पुष्प की [illegible] ज्ञान रूपी सुरभि से संपूर्ण जगत को युगों तक सुवासित करते रहें, आलोकित करते रहें। जन जन को [illegible] सुधा का पान कराते रहें और हम लघु शिष्याओं [illegible] उनका वरद्हस्त सदा बना रहे, इन्ही शुभ कामनाओं के साथ।

मेरे गुरुवर नाना

कु. पायल कांकरिया

नाना गुरुवर जग के दिव्य सितारे,.
मेरी आंखे तुझे निहारे।
आंखों में वो मूरत घूमे,
जय गुरु नाना में हम झूमें।
समता की वह मशाल थी,
मूरत से समता बरसती थी।
नयनों में आत्मीयता की झलक,
विश्व की बेजोड़ मिशाल।
गुरु को देख हो गई निहाल॥

जैन जगत के जाज्वल्यमान नक्षत्र

जिनकी सौरभ से महक रहा, हुक्मेश नन्दन वन,
जिनकी यशोगाथा, गा रहा हर एक अन्तर्मन,
ऐसे आराध्य प्रवर मां शृंगारा के नन्दन,
आपकी स्मृति मुखरित है जन-जन के मन ।

वेदना के उफनते वेग में सारा ज्ञान अवाक् रह गया है। विह्वलता की आंधी में धैर्य धराशायी हो गया है। सान्तवना का छोटा-सा तिनका कैसे सहारा दे, इस शोक में बहते नेत्रों को ? कलेजा कांप रहा है, हृदय रो रहा है, मन में उदासीनता है, वातावरण में शून्यता छा गई है। वाणी स्तम्भित हो गई है और आंखें मानो उस मृत्यु के मूल को खोजने आंसुओं के रास्ते से बेतहाशा भाग रही है। पूछ रही हैं कि क्या कभी दिव्य आत्माओं की लोककल्याणी देह अमर नहीं हो सकती ? क्या उनकी आयु हजारों वर्ष लम्बी नहीं हो सकती ? क्या हम जैसों की आयु उन्हें समर्पित नहीं की जा सकती ? मन में उत्पन्न होते इन प्रश्नों का कौन समाधान करे। इन आंखों को कैसे समझाएं, जो दिव्य दर्शन के लिए उस पावन महामानव को देखने के लिए तरस रही है। कानों की उत्सुकता कैसे मिटे जो उस स्नेह मूर्ति के स्नेह भरे शब्दों को सुनने के लिए आतुर है। भगवन् आपकी स्मृतियां हम सभी के हृदय को उद्वेलित कर रही हैं। गंगोत्री के जल के समान दिव्य और पवित्र आपका जीवन अब हमें कहां प्राप्त होगा। आपके एक एक गुण को पाने के लिए, जाने कितने जन्मों तक हमें साधना करनी पड़ेगी। जैसे स्फटिक रत्न सी आपकी स्वच्छ निर्मल काया थी, वैसा ही शुद्ध पवित्र और सरल आपका अन्तःकरण था। मानो संसार के सारे गुणों ने और सारी अच्छाइयों ने ही आपकी देह को धारण कर रखा है। महान आत्माओं का जीवन महान हुआ करता है।

आचार्य भगवन् का जीवन अवस्था की दृष्टि से ही नहीं ज्ञान और आचार की दृष्टि से भी हीरे की तरह ज्योतिर्मय और आलोकपूर्ण था। हीरे की दो प्रमुख विशेषताएं होती है-. कठोरता और तेजस्विता। आचार्य भगवन् संयम-साधना में हीरे की तरह कठोर थे और ज्ञान-आराधना एवं आत्म-साधना में तेजस्वी थे। आचार्य भ. के जीवन में ही अनेकानेक गुण विद्यमान थे। आचार्य भ. का मंगल स्मरण, उनकी प्रेरक पावन स्मृतियां, वे पुनीत यादें, आदर्श संस्मरण जन-जन के अन्तरमन को आनन्द विभोर कर देती हैं। इस युग पुरुष के जीवन से संबंधित कोई भी घटना जब भी स्मृति पटल पर उभरती है, भले ही वह दांता ग्राम की हो, बाल्यावस्था की हो, वैराग्यमय जीवन की हो, अभिनिष्क्रमण यात्रा की हो, धर्मपाल क्रांति की हो तो जीवन का कण कण आनंद से प्रफुल्लित हो जाता है। उस वीर पुरुष का विराट व्यक्तित्व मानो ऐसा था जैसे कि एक क्षीरसागर, जिसका न कोई किनारा है, न कोई सीमा है। जिस ओर से भी उसका पान करें अमृत है, मधुर है। वस्तुतः महामनस्वियों का जीवन आकाश की तरह अनन्त व्यापक, विराट सागर सदृश गंभीर, सर्वदर्शी होता है। अभीष्ट के पूरक और सर्वोपयोगी सर्वदर्शी होता है। उनमें धरा सी धीरता, हिमाचल सी अचलता एवं गंगा सी पवित्रता समाविष्ट होती है। आचार्य भ. भी ऐसी ही महान विभूतियों में से एक थे, जिनका विमल व्यक्तित्व और उर्ध्वमुखी विचारधारा का सुमधुर निर्झर आज भी जन जीवन

को आप्लावित कर रहा है।

जैसे गुलाब का फूल जिस डाली से जिस पौधे से जुड़ा रहता है, वह केवल उस डाली को, उस पौधे को ही सुवासित नहीं करता है, अपितु वह अपने आसपास के संपूर्ण वायुमंडल को भी सुरभित कर देता है। हमारे आराध्य देव का जीवन भी उस गुलाब के फूल की तरह ही था।

आप श्री जी ने संयमी जीवन स्वीकार करके हुक्म शासन को सुवासित किया, महकाया। आप श्री जी पार्थिव देह के रूप में भले ही आज हमारे सामने नहीं रहे लेकिन आपके गुणों की महक सुवास युगों-युगों तक इस शासन को महकाती करती रहेगी। मैं उस ज्योतिर्मय आत्मा को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं। हमारे नवम् शासनेश, प्रखर प्रतिभा-संपन्न, दृढ़ निश्चयी तथा साहस की प्रतिमूर्ति हैं। त्याग, तप के तेज से आपका मुख मंडल आलोकित है। ऐसे आराध्य देव के प्रति प्रभु से मंगल मनोकामना करती हूं कि आप सदा-सदा तक हुक्मेश शासन को दीप्तिमन्त करते रहें, चमकाते रहें और हम शिष्याओं पर आपका वरद् हस्त हमेशा बना रहे, जिससे हमारा जीवन निरंतर प्रगति करता रहे, इन्हीं शुभ भावनाओं के साथ-

❑ साध्वी सुभद्राजी म.

रोगी के लिए उपचार

गुरु के प्रति श्रद्धा रखने वाला भव सागर से तिर जाता है। गुरु नाम में अनन्त शक्ति है। कभी भूलकर गुरु की आशातना नहीं करना चाहिए।

गुरु नाना के नाम में इतनी शक्ति है कि जब कभी कोई भी संकट किसी पर आवे तो नाना गुरु की एक माला श्रद्धा के साथ जपे, उसका संकट सदा-सदा के लिये टल जाएगा।

परम उपकारी गुरुदेव

महापुरुषों का नाम ही बड़ा चमत्कारी होता है, क्योंकि उस नाम में साधना का बल होता है। शुरू में नाम सुना आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. का, मन अपूर्व आह्लाद से भर गया। नाम और महान जीवन को सुनकर दर्शन की तीव्र ललक जग गयी और ज्योंहि स्वर्णिम क्षण आये, उस महान विभूति के दिव्य दर्शन कर मुझे जो अनुभूति हुई। वह शब्दों की क्षमता के बाहर का विषय है।

मैं अपनी किस्मत की सराहना करती हुई गौरव का अनुभव करती हूं कि मुझे ऐसे महान् साधनामय, सत्यमय, समतामय, महायोगी आचार्य श्री की चरण-शरण प्राप्त हुई। ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से मैं इस महान विभूति को पहचान पाई। आप श्री जी का नाम लेते ही भक्तों के कष्ट काफूर हो जाते है। जन्मों-जन्मों का कर्म रोग मिटाने मुझे संयम दान दिया। आपका नाम लेते ही अद्भुत शक्ति मिलती है, आत्मबल जाग उठता है। हे साधना पुरुष ! आंखें आज भी आपको ढूंढ रही हैं। पार्थिव शरीर नहीं रहा पर आप श्री जी के आदर्शों का, सिद्धांतों का, गुणों का वह प्रेरक जीवन सदा हमें साधुमार्ग की ओर प्रेरित करता रहेगा।

दीपक बुझा प्रकाश देकर,
फूल मुर्झाया सुवास देकर।
टूटा तार भी सुर बहाकर,
तुम चले पर नूर प्रकटाकर ॥

अनन्त उपकार है आपका कि आपने मेरे जीवन की डोर निर्लेपता के निर्मल नूर, ज्ञाननिधि, अद्वितीय आत्म साधक युवाचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के सशक्त हाथों में सौंपी है, जो हमे निश्चित ही चरम उत्कर्ष तक पहुंचाने में सहयोगी हैं। आचार्य श्री रामेश की हर आज्ञा प्राणों से बढ़कर है। आपके चरणों में वंदन-अभिवंदन।

नाना पार लगाते हैं

आशीष ललवाणी

शुद्धमन से गुरुवर का ध्यान जो लगाते हैं,
नाना गुरु उनको सदा भवपार लगाते है ॥टेर॥
नाना गुरुवर तो समता के दाता हैं।
समभाव-२ में रहना जन-जन को बताते है।१।
नाना गुरुवर तो संयम की मूरत हैं।
त्याग तप-२ सयम का पाठ पढ़ाते है।२।
नाना गुरु तो करुणा के सागर हैं।
अहिंसा के-२ उपदेश से सच्ची राह दिखाते है।३। -नई लाईन, गंगाशहर

□ साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा.

ज्योति पुरुष

अलौकिक साधना-पथ के पथिक को आज हमारे बीच न पाकर अन्तर्मन व्यथित हो रहा है, हृदय की अव्यक्त को अक्षर देह में कैसे अलंकृत करूं ? समझ नहीं पा रही हूं।

मेरे परम उपकारी, प्रतिपल स्मरणीय, वन्दनीय, अनुकरणीय आचार्य भगवन् करुणा के मसीहा थे। दयालु धर्मरुचि सम करुणा सागर थे, अमृत पुरुष थे। पर आज जिन शासन की शान, हुक्म संघ की आन, संयम प्रधान आराध्य भगवान हम सभी को छोड़कर अनन्त में विलीन हो गये। हे प्रभो, आप श्री के पवित्र पावन दर्शनों के लिए ये अंखियां सदा प्यासी की प्यासी रहेंगी। आचार्य श्री के सद्गुण रूपी मुक्ता को शब्द सूत्र में पिरोने का मेरा प्रयास सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। जैसे फूल की प्रत्येक पंखुड़ी सुवासित होती है, उसी प्रकार आचार्य भगवन् का सम्पूर्ण जीवन अनेकानेक सद्गुणों की सुवास से सुवासित था। गुरुदेव का जीवन चंद्रमा की तरह समुज्ज्वल, अगरबत्ती की तरह सुवासित, मोमबत्ती की तरह प्रकाशित था। नवनीत सम मृदु था। कथनी-करनी में समन्वय थी। प्रभो का जीवन, वाणी से नहीं कार्य से प्रकट था।

'बुझ गयी जीवन ज्योति स्मृतियां सदा ही अमर हैं,
अब कहां हो सकते उन जैसे शिव शंकर हैं।'

आचार्य भगवन् के श्री चरणों में पहुंचने पर विरोधी भी विनोदी बन जाता। नवीन आचार्य भगवन श्री रामेश आचार्य भगवन् द्वारा प्रदत्त चादर की उज्वलता, धवलता को प्रवर्धमान करते हुए शासन में चार चांद लगायेंगे, यही कामना है।

कलियुग में सतयुग लाया था, वो सच्चा प्रेम पुजारी था।
जो नानाचार्य कहाया था, वो जग का बड़ा उपकारी था॥
उदयपुर में पद पाया था, उदयपुर में स्वर्ग सिधाया है।
वह संघ गौरवशाली है, जिसने गुरु सेवा का लाभ उठाया है॥
अब राम मुनि आचार्य बने, संघ की शोभा महकायेंगे।
आओ हम सब मिलकर गीत गुरु के गायेंगे॥

❑ महासती श्री नेहा श्री जी म.सा.

जन-जन के वन्दनीय

जीवन-उपवन को कभी सावन-भादों की शीतल समीर परम आल्हादित करती है, तो कभी ग्रीष्म ऋतु की तेज तपती हुई लूएं दिल को दहला देती हैं। कभी खुशियों का ढेर इठलाता हुआ हमारे सामने होता है, तो कभी दुखों का पहाड़ टूट पड़ता है। कभी उतार आता है तो कभी चढ़ाव, कभी अन्धकार तो कभी प्रकाश, कभी आशा और कभी निराशा। इस द्वन्द्वात्मक जगत में अनचाहा भी नियति की डोर में बंधकर सामने आ जाता है।

मन में विश्वास तो अभी तक नहीं हो रहा है कि मेरी जीवन नैय्या के पतवार, आस्था के आधार, सद्गुण मोतियों के हार, हुक्म संघ की आन, आचार्य भगवन् हम सभी को छोड़कर अनन्त में समाहित हो गये।

आज हम किस सूर्य को स्मृतियों में ला रहे हैं। मेरा तात्पर्य उस सूर्य से नहीं जो प्रातःकाल की स्वर्णिम बेला में उदित होकर लोक का अंधकार नष्ट कर संध्या बेला में पुनः अस्ताचल की ओर चला जाता है, अपितु मेरा तात्पर्य उस सूर्य से है जो अंधकार में भटके पथिक को सन्मार्ग दिखलाने वाला है, दिव्य प्रकाश प्रदान करने वाला है। इस दिव्य सूर्य का प्रकाश युगों तक हमें सन्मार्ग सुझाता रहेगा।

विश्व वाटिका में अनेक पुष्प विकसित होते हैं जिनमें से कुछ पुष्प शहीदों के काम आ जाते हैं तो कुछ सज्जनों के गले का हार बनकर शोभा प्राप्त करते है, तो कुछ डाली से गिरकर अपने जीवन को समाप्त कर देते हैं, कुछ देव चरणों में समर्पित हो जाते हैं। कुछ पुष्प इन सभी से भिन्न प्रकार के होते हैं और वे ही सच्चे पुष्प कहलाते हैं जो दुनियां के लिए अपना सर्वस्व लुटा देते हैं तथा सम्पूर्ण विश्व को अपनी सुवास से सुवासित कर देते हैं। हुक्म वाटिका में आचार्य भगवन् भी ऐसे ही पुष्प थे जो हमारे बीच भले ही न रहे लेकिन स्वयं के सद्गुणों की महक से संपूर्ण विश्व को भर दिया और अपना नाम अमर कर गये। जैन, अजैन जाति, कुल, देश को ही नहीं अपितु सभी को उन्नत बनाया, उन्हें कुव्यसनों से दूर कराया।

आप श्री के बिना हमारा जीवन गंध हीन पुष्प, नाविक हीन नाव, डोरहीन पतंग के समान हो गया।

अन्त में यही कामना है कि आचार्य भगवन् जहां भी पधारे हैं, भव शृंखला को तोड़कर अतिशीघ्र सिद्धत्व पद को प्राप्त करें।

साध्वी श्री प्रीति सुधा श्री जी

चिन्तन का चिन्तामणि

ओ मेरे जीवन बगिया के माली,
पाई थी तुमसे ही खुशहाली।
अनन्त उपकार है मुझ पर तुम्हारे,
अर्पण करती हूं, सुमनांजली ॥

आचार्य भगवन् का मौलिक चिन्तन जगत की गहराई का उद्घाटन करता है। उनकी मौलिक विचार ... एवं साहित्यिक उद्भावनाएं आत्मिक उत्थान के दिशा-निर्देश हैं। आप श्री का जीवन विकास का मूल मंत्र था। ... श्री अध्यात्म के प्राण थे। उनका अध्यात्म-चिन्तन जग-जीवन को प्रकाश देता है। कठोर साधना सप्राण थी। ... आध्यात्मिक और अनेकान्तिक अनुभूतियों से भरा हुआ था। प्रवचन शैली कर्ण कुहरों को छूती हुई अन्तर को ... देती थी।

गुरुदेव की मधुर मुस्कान जंगल में भी मंगल कर देती थी। आधि, व्याधि और उपाधि से दूर रखने वाले ... श्री के दर्शनों से अंधे को नेत्र, डूबते को किनारा प्राप्त करवा देता था। पापी से पापी आपकी मेहर नजर से पावन ... जाते। वाणी का माधुर्य हर पीड़ा को हरण करने वाला था। अति संक्षिप्त में कहें तो आपका हर कार्य चतुर्विध संघ ... नई दिशा प्रदान करता था।

बात वीर सं. २०५५ की है। जेठ का माह, गुरुदेव का विहार चित्तौड़ से दांता की ओर हो रहा था। दर्शन ... रेल्वे पुलिया के नीचे मैं गुरुणी मैय्या के साथ खड़ी थी। आचार्य श्री फरमा रहे थे, सतियांजी आप यहां से ... जावें। जल्दी जाना, सेवाभावी प्रकाश मुनिजी तथा चन्द्रेश मुनिजी को जल्दी भेजना। मार्ग कम है फिर भी धूप ... रही है, समय पर पहुंचना ही ठीक है। मुनिद्वय आवें, उनके साथ भाईं।'' मैं विचार कर रही थी कि क्या मार्ग संतों ... मालूम नहीं है। कोई २०साल के दीक्षित हैं, कोई २५ साल के दीक्षित हैं। फिर भी गुरु का वात्सल्य कम नहीं है। ... गुरु संसार की सर्वोत्तम शक्ति है। कामना का कामधेनु, चिन्तन का चिन्तामणि है। आज शरीर से हमारे मध्य न ... किन्तु उनके द्वारा प्रदत्त अध्यात्मरूपी जीवन-संजीवनी हमारे पास है। ऐसे अनन्त-अनन्त उपकारी गुरुदेव को ... भावभीनी श्रद्धांजलि।

प्र. ...षिता ममता बो...

❑ साध्वी अनुपम श्री जी

गुरुदेव समयज्ञ थे

अकथ अनुदान भरा तेरा जीवन,
गुरुवर हम कभी भूला नहीं पायेगें ।
गुरु राम में लख मूरत तेरी,
नाना तव दर्शन नित-नित पायेंगे ॥

किसी महान् व्यक्तित्व के असीम गुणों को ससीम शब्दों की परिधि में पिरोना बड़ा कठिन होता है और उससे भी ज्यादा कठिन होता है गुरु जैसे महान् व्यक्तित्व को पिरोना। ऐसे गुरु समता विभूति मेरे आराध्य भगवन् का समग्र जीवन सभी के लिए प्रेरणादायी था, उनका संपूर्ण जीवन गुणों से भरा खजाना था।

एक छोटे से ग्राम दांता में जन्मे गुरुदेव हृदय से भी दाता थे। वे केवल कहने के ही नाथ नहीं बने बल्कि एक लाख से ऊपर दलित, पतित, दुखी आत्माओं को उन्होंने सहर्ष गले लगाया। उन्हें धर्म का सुपथ बताकर अपना बनाया। इसी का सुखद् परिणाम था कि समग्र जैन समाज ने उन महामहिम को समवेत स्वर से 'धर्मपाल प्रतिबोधक' की उपमा/विशेषण से उपमित किया।

वे पूज्य गुरुदेव जिन्हें संस्कारों की अमीरी जन्म के साथ ही मिली थी, जो गुरु गणेश के सुखद् सानिध्य में विस्तृत रूप से खिली-

जिनके जीवन का शुरू हुआ प्रभात,
लेकर सद् संस्कारों की सौगात ।
मां शृंगारा ने शृंगारित किया जिसे,
ऐसे गुरु नाना की क्या बात करूं ॥

कुशल जौहरी की भांति जिसने,
किया था गुरु गणेश का साथ ।
समता समीक्षण ध्यान का दे संदेश,
नाना बने चतुर्विध संघ के नाथ ॥

ऐसे यशस्वी, वर्चस्वी, तेजस्वी, मनस्वी, ओजस्वी व्यक्तित्व के धनी महामहिम आचार्य श्री नानेश पूज्य गुरुदेव का सत् सानिध्य मुझे प्राप्त हुआ और मैं स्वयं को नानेश के नन्दन वन में पाकर पुलकित हो उठी और सराहना करने लगी अपने प्रबलतम पुण्य की। पर हाय विडम्बना... यह क्या हुआ जिनकी प्रत्यक्ष सन्निधि की हमें परम् आवश्यकता थी वह पुण्य पुरुष चल दिए हमें छोड़कर...।

छीन नहीं सकता कोई महाकाल हमसे,
उस शाश्वत चैतन्य रूप चिराग को ।

जिनकी समता लौ जल रही है जन-जन में,
वे पूर्ण करते हैं आज भी हर मुराद को ॥

ऐसे विशाल व्यक्तित्व के धनी मेरे गुरुदेव... जिन्होंने जिंदगी के अंतिम दम तक हमें दिया ही दिया है । उन्होंने समता पूर्वक जीना ही नहीं अपितु समता पूर्वक मरना भी सिखाया ।

हमें नाज है कि हमारे गुरुदेव ने गरिमायुक्त, गौरवशाली श्रेष्ठ पण्डित-मरण का वरण किया । इससे बढ़कर साधना का सुखमय नवनीत और क्या हो सकता है ?

उन्होंने हर कार्य को बड़ी कुशलता से अपने दृढ़तम आत्मबल से पूर्ण किया ।

कैसे हो करुणा मूर्ति के अनन्त उपकारों का वर्णन,
प्रतिपल सदा करती हूं, गुरु नाना नाम सुमिरण ।
परम कृपा से पायी मैंने, सम्यक् ज्ञान किरण,
उनकी कृपा से गुरु राम मिले हैं तारण तिरण ।

सम्प्रति बाल ब्रह्मचारी, चारित्र चूड़ामणि, शास्त्रज्ञ, तपो तेजस्वी, नवम् पट्टधर आचार्य प्रवर श्रद्धेय श्री रामलाल जी म.सा. इस चतुर्विध संघ को ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, संयम का उद्बोधन देकर तिण्णाणं-तारयाणं रूप वीतराग वाणी को चरितार्थ कर रहे हैं, यह समता विभूति आचार्य श्री नानेश की समयज्ञता है ।

जरा देखें गुरु राम की लघु काया में,
गुरु नाना ही गुण रूप समाये हैं ।
उस कर्ता की अनुपम कृति में देखो,
गुरु राम हमें हरदम सुहाये हैं ॥

पूज्य गुरुदेव नानेश हमसे कभी दूर नहीं । हम समझें आगमोक्त सूक्ति 'एगे आया' (आत्मा एक है) । तद् रूप से गुरुदेव सदैव हमारे सन्निकट हैं । यह सत्य है कि द्रव्य रूप से गुरुदेव आज हमारे से दूर चले गये हैं, मुक्ति नगर की सुरम्य सुखद् यात्रा हेतु ।

वे महापुरुष अपनी यात्रा के चरम छोर को शीघ्रातिशीघ्र संप्राप्त करें, यही हमारी हार्दिक अभिलाषा है और कामना है वर्तमान आचार्य प्रवर नवम् पट्टधर, पूज्य गुरुदेव रामेश की सुखद छत्र-छाया तले परम ज्ञान को प्राप्त करके अपने जीवन-पुष्प को सुवासित करें । यही हमारी अनन्त-अनन्त आराध्य, समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी, पूज्य गुरुदेव नानेश के प्रति सच्ची भावाञ्जलि होगी ।

नाना तू कहां खो गया

वै. जय श्री

यह दिल मेरा रो रहा,
चहुं दिशा में नाना को ही ढूंढ रहा ।
कहां छुप गई वह विरल विभूति,
जिसे जग जला चाहता था ।
फिर भी हो गया अलविदा,
कर गया जहान् सूना-सूना,
कहीं नजर नहीं आता,
जिस पर दृष्टि मेरी टिक जाए ।
और हम निहाल हो जाएं,
इस भीड़ भरी दुनिया में,
तुम सा नहीं कोई सानी,
जितना शून्यता नजर आए,
गुरुवर अब तुम्हें कहां ढूंढ पाएं ।

देवों के अर्चनीय

महापुरुषों का जीवन एक आदर्श जीवन होता है। उनका जीवन पावन होता है, वह हमारे लिए प्रेरणा स्वरूप होता है। स्व-पर कल्याण की भावना उनकी रग-रग में कूट-कूट कर भरी रहती है। उनकी वाणी में मिठास, नजरों में वात्सल्य, पर हेतु हार्दिक सहानुभूति एवं असीम स्नेह होता है।

उनका ज्ञान सागर सम गंभीर था, दर्शन चांद सम निर्मल, चारित्र रवि सम उज्ज्वल, हृदय नवनीत सम कोमल, गेहुंवा वर्ण, सरसिज नेत्र अर्थात् उनका सारा जीवन ही गुणागार था। उनकी कथनी-करनी एक सरीखी थी। जैसा वे कहते थे, वैसा वे करते थे और जैसा वे करते थे, वैसा कहते थे। जो स्थान गगन में प्रथम नक्षत्र को, माला में प्रथम मोती को, उपवन में प्रथम सुमन को होता है, वही स्थान हमारे पूज्यनीय श्रद्धेय आचार्य भगवन् का था। वे लोकपूज्य, लोक वन्दनीय, जन-जन के श्रद्धा केन्द्र सरल, सरस, विनम्र, मधुर तथा गंभीर विचारों के धनी थे।

उपवन में हजारों की संख्या में फूल खिलते हैं, सभी के रंग, रूप, सौरभ अलग-अलग होते हैं। जिसका सौन्दर्य सबसे अधिक विलक्षण होता है, दर्शकों का ध्यान उसी पर केन्द्रित होता है और लोग उसी फूल को लेने, देखने तथा घर में लगाने को लालायित रहते हैं। उसी प्रकार संसार रूपी उपवन में जिस मनुष्य में अद्भुत गुण सौरभ, परोपकार का माधुर्य और शील सदाचार का सौन्दर्य विलक्षण होता है, संसार उसी की ओर आकृष्ट होता है, उसे ही अपने शीश एवं नयनों पर चढाता है। सूर्य हमेशा पूर्व दिशा में उदित होता है और पश्चिम में अस्त हो जाता है किन्तु चेतना सूर्य के लिए ऐसा कोई नियम नहीं हैं। महापुरुष इस धरती पर किसी भी दिशा में प्रगट हो सकते हैं, उनके लिए दिशा का कोई प्रतिबंध नहीं है। वस्तुत. तत्व दृष्टि से देखा जाय तो दुनिया में महापुरुष कभी अस्त होता ही नहीं, क्योंकि उसके सजीव आदर्श मानव मन में अक्षुण्ण रहते हैं।

जिसने त्याग से रोग को, योग से भोग को, समता से ममता को, क्षमा से क्रोध को, विनय से अभिमान को, संयम से स्वच्छंद प्रकृतियों को जीतने का आजीवन प्रयास किया, संयम की साधना में, जप-तप की आराधना में जो हर वक्त संलग्न रहा, ऐसी महाविभूति आचार्य नानेश वि.सं. २०२८ जेष्ठ माह का अन्तिम सप्ताह कड़ाके की धूप, मदारिया का पहाड़ी क्षेत्र, भीषण कष्टों को सहते हुए कठिन तप की आराधना करते हुए देवगढ़ पधारे। लगभग तीन माह से निरन्तर कभी डेढ़ तथा कभी दो पोरसी होती थी। लम्बे विहार और यह कठोर तप, कोमल तन को मंजूर नहीं था, तनिक भी प्रतिकूल परिस्थितियों में पुष्प मुरझाये बिना नहीं रहता, तद्वत आचार्य श्री नानेश की शारीरिक स्थिति बन जाती थी किन्तु उनका आत्मबल बड़ा मजबूत था, यह हमने उनके जीवन के अंतिम क्षणों तक अच्छी तरह से देखा है। संत-सती एवं श्रावक-श्राविका वर्ग अर्थात् चतुर्विध संघ अनुनय विनय कर कहते थे कि गुरुदेव आखिर शरीर को इतना कठोर दण्ड क्यों ?

आचार्य भगवन् दोपहर के समय विराजे थे, संत सती वर्ग तथा मुमुक्षु वर्ग वाचना कर रहे थे इसी बीच में उस देवाणुप्रिय ने संत सती वर्ग को संबोधित करते हुए कहा, आप लोगों ने तो आज दो पोरसी की होगी, कारण

प्रवचन देर से उठा। तत्काल एक श्रमणीवर्या ने पूछा, 'गुरुदेव आप श्री का स्वास्थ्य तो अनुकूल है न ? गुरुदेव ने फरमाया थोड़ा नरम तो है किन्तु कल मैं लगभग सुबह चार बजे ध्यानावस्था में था, कानों में आवाज आई आप लम्बे समय से दो-दो पोरसी करके विराजते हो, यह उपयुक्त नहीं है। मैंने सामने देखा आचार्य जवाहर खड़े थे। मुझे मना करते हुए क्षण भर में आंखों से ओझल हो गये।

आज ठीक चार बजे के समय ध्यान में आवाज आती है कि कल क्रांतिकारी युगदृष्टा आचार्य जवाहर पधारे थे, मेरा तुम्हें आज कहना है कि पोरसी के क्रम को गौण कर दीजिए। शरीर आपका नहीं चतुर्विध संघ का है। इसको संभालना आपका कर्त्तव्य है। स्वास्थ्य आपका बड़ा कोमल है। आप इस प्रकार की खींचतान मत कीजिए। गुरुदेव फरमाने लगे, 'मैं आंखें खोलकर सामने देखता हूं तो शांति क्रांति के अग्रदूत आचार्य श्री गणेशीलाल जी म.सा. सामने खड़े हैं, देखते-देखते कुछ ही क्षणों में वही एक दिव्य रूप खड़ा है, हाथ जोड़ अनुनय कर रहा है कि आत्मन् हमारा विनय स्वीकार कीजिए। हम विनय पूर्वक अर्ज करते हैं। आप श्री को संघ को अभी तक बहुत कुछ देना है। यूं कहते हुए वह आवाज अदृश्य होती है। मुझे यह सुनते हुए शय्यंभवाचार्यरचित दशवैकालिक सूत्र की प्रथम गाथा याद आ रही-

" देवावितं नमं संति जस्स धम्मे सया मणो".

ऐसे एक नहीं अनेक उदाहरण श्रमण-श्रमणियों से सुने जा सकते हैं। ऐसे महामहिम आचार्य भगवन् को मेरी भावभीनी अञ्जलि।

नाणेस पंचयथुई

मुनि रमेश

'णाणेस' णाम सूरीसो, सुरालये विरायइ।
सुयं मया जया अज्ज, तया हं पीडिओ परं ॥१॥

नानेश अर्थात् नानालालजी म. नामक आचार्य भगवान देवलोक में विराजमान हैं, ऐसा आज जब मैंने सुना, तब मुझे अत्यधिक पीड़ा हुई अर्थात् मैं खेद-खिन्न हुआ हूं।

रायत्थाणम्मि पंतम्मि, णयरो 'मेड़ता' इय।
तत्थ ताण मया पत्तं, पढमं दंसणं सुहं ॥२॥

राजस्थान प्रान्त में मेड़ता नामक नगर है। वहां मैंने उनके अर्थात् आचार्य नानेश जी म. के प्रथम प्रशस्त दर्शन प्राप्त किये।

गणेस सरियाणं ते, सीसा आसि पहावगा।
संता दंता परं सोमा, जिण सासण भूसणा ॥३॥

वे अर्थात् आचार्य नानालाल जी म., आचार्य गणेशलालजी म. के शान्त, दान्त, अत्यन्त सौम्य, जिन शासन के भूषण रूप प्रभावशाली शिष्य थे।

तम्मि काले मया दिठो, सरला निम्मला परं
ते सहावेण गंभीरा, तवस्सिणो मणस्सिणो ॥४॥

उस समय में मैंने देखा, वे स्वभाव से अत्यन्त सरल, निर्मल, गम्भीर, मनस्वी और तपस्वी थे।

उवज्झायो महापण्णो, संपुज्जो गुरु पोक्खरो।
ताण सीसो रमेसोऽहं, वंदामि तं गुणीसरं. ॥५॥

उपाध्याय, महान् प्रज्ञावान्, परम पूज्य गुरुदेव पुष्कर मुनिजी म. हुए हैं। उनका शिष्य मैं, रमेश मुनि हूं। मैं उनको अर्थात् आचार्य नानालालजी म.सा. को वन्दन करता हूं।

सच्चे पूज्यपाद के अधिकारी

उद्यान में पुष्प विकसित होता है, आसपास का वातावरण सुवासित हो जाता है। धरा पर सूर्य देवता का अवतरण होता है तो सघन अंधकार विलुप्त हो जाता है। उसी प्रकार इस पृथ्वी तल पर ऐसे यशस्वी नर रत्नों का आविर्भाव होता है कि संसार का दुःख और दारिद्रय समाप्त हो जाता है। ऐसे यशस्वी नर रत्नों में समता विभूति आचार्य श्री नानेश भी एक थे। जन-जन की श्रद्धा के एक मात्र केन्द्र, घट-घट के अन्तर्दर्शक, भव्य जीवों के पथ प्रदर्शक का ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए जहां भी पदार्पण होता वहां नाना गुणों के पुंजस्वरूप नाना हृदय में नाना विराजमान हो जाते।

गुरुदेव का सम्पूर्ण जीवन अलौकिक गुणों का पुंज था, जिस प्रकार मिश्री को कहीं से भी चखा जाय, वह मिठी ही लगती है। उसी प्रकार गुरुदेव के जीवन का आदि, मध्य या अन्त देखें वह अद्वितीय ही दिखाई देता है। व्यवहार में गुरुदेव मिश्री के समान मृदु थे। चरित्र में मिश्री के समान स्वच्छ थे। इसी व्यावहारिक शुद्धता, चारित्र पालन की उत्कृष्टता एवं संयमी जीवन की निर्मलता के कारण वे जन-जन के मन मस्तिष्क में छा गए। बाल हो या आबाल,साधु हो या साध्वी, किसी की अवहेलना, निन्दा तो वे करना जानते ही न थे, वे तो दशवैकालिक सूत्र के नवें अध्ययन के अनुसार पूज्यपाद के अधिकारी थे। जैसा कि कहा गया है-

तहेव डहरं च महल्लगं वा. इत्थिं पुमं पव्वइयं गिहिं वा।
णो हीलए णो विय खिंसइज्जा थंभं च कोहं च चए स पुज्जो ॥

गुरुदेव के जीवन के कण-कण में, मन के अणु-अणु में सरलता, सहजता और निष्कपटता थी। गंभीर गिरा के यशस्वी कवि ने भी महात्मा का परिचय देते हुए यही कहा है -

'मनस्येकं, वचस्येकं, कर्मण्यस्ये कं महात्मानाम्।'

इन अर्थों में गुरुदेव का जीवन सच्चे महात्मा का जीवन था। उनके जीवन में त्याग था किन्तु त्याग का दर्प नहीं ज्ञान था, किन्तु ज्ञान का अहंकार नहीं विनय था। ऐसे साहजिक साधक ने अपने दिव्यज्ञान से ऐसा ही अद्‌भुत अलौकिक, अद्वितीय दीपक प्रज्वलित किया है, जिसके प्रकाश में जन-जन प्रकाशित हो रहा है। ऐसा ही अद्वितीय दीपक है, वर्तमान अनुशास्ता आचार्य प्रवर श्री रामलालजी म.सा.। उनका जीवन भी विशाल और विराट है। उनकी साधना की गहराइयों को यह अज्ञ मन छू नहीं सकता, उनके जीवन की ऊंचाइयों को यह माप नहीं सकता किन्तु उपकारी गुरुदेव नानेश के उपकारों को विस्मृत नहीं किया जा सकता। जिनके एक दो नहीं अनन्त उपकार हैं। मुझे इस संसार सागर से उबारा, संयम रत्न प्रदान किया, उस रत्न को पाकर मेरा मानस सुखद अनुभूति कर रहा है।

तीन वर्ष पूर्व गुरुवर्या श्री जी की पावन सन्निधि में बड़ीसादड़ी में वर्षावास था, पूरे वर्षावास में असाता वेदनीय कर्म का उदय रहा। डॉक्टर, वैद्यादि से चिकित्सा करवाई किन्तु स्वास्थ्य में सुधार नहीं हुआ। चातुर्मास काल समाप्त हो गया, विहारादि में भी स्वास्थ्य की प्रतिकूलता प्रतीत हो रही थी, किन्तु मन में उमंग थी, उत्साह था। युवाचार्य भगवन (वर्तमान आचार्य भगवन) निम्बाहेड़ा से विहार कर निकुंभ पधार रहे हैं। महापुरुषों के दर्शन, सेवा तथा

सानिध्य का लाभ प्राप्त होगा, हृदय में अपूर्व श्रद्धा थी कि महान आत्मा की मंगलमय कृपा दृष्टि से मांगलिक श्रवण से रोग भी काफूर हो जायेगा। वस्तुत: यही हुआ रोग छूमंतर हो गया, स्वास्थ्य में समाधि प्राप्त हुई।

ऐसे परमाराध्य देव के विषय में स्वर्गीय गुरुदेव फरमाते थे इनका तपो.पूत जीवन आचार्य हुक्मीचंद जी म.सा. की तथा प्रवचन प्रभा आचार्य जवाहर की याद दिलाती है।

ऐसे संघ सिरताज से यह हुक्म संघ दिनदूनी, रा चौगुनी उन्नति करेगा और गुरु नाना के अरमानों को पूर्ण करेगा, इसी मंगल मनीषा के साथ नवोदित आचार्य भगवन् के चरणों में कोटि-कोटि वंदना

प्रेषक : मु. सुमिता ममता बोथरा

संयम का ताज दिया था

राष्ट्रसंत गणेश मुनि शास्त्री

जिनका जीवन परिमल साधना के सूत्र से सधा का सधा रहा।
संयम की कठोर चट्टान पर समता का स्रोत अनवरत बहा।
आचार्य श्री नानालाल जी महाराज सचमुच एक युगपुरुष थे,
उन्होंने जो पाया, आचरित किया, वही जग के सन्मुख कहा॥

आचार्य नानेश समय की गति को ठीक-ठीक जानते थे।
प्रतिपल को सार्थक करने की बात मन में ठानते थे।
जप-तप-स्वाध्याय में निमग्न रहे जब तक जिये,
क्योंकि वे हर सांस-सांस का मूल्य पहचानते थे॥

आचार्य नानेश ने शरण में आये पतितों को पावन किया था।
अनेकानेक मुमुक्षु आत्माओं को संयम का ताज दिया था।
उनकी पारखी निगाहों में हर नर नारायण का रूप था-
तभी तो धर्मपालों को प्रतिबोधित कर अपना लिया था॥

आचार्य नानेश जैन धर्म के एक दिव्य दिवाकर थे।
शांत दांत गम्भीर और गुण गरिमा के सागर थे।
उनका संयमी जीवन बाहर-भीतर से एक का एक रहा-
वे समता साधक ज्ञान-दर्शन के सच्चे उजागर थे॥

आचार्य नानेश की मधुर स्मृतियां मानस में चमकती रहेंगी।
एक महानायक की कहानी दुनिया सतत् कहती रहेगी।
मुनि गणेश करता है अर्पित उन्हें श्रद्धा सुमन भीगे नयनों से-
उनके सद्गुणों की अजस्र धारा युगों-युगों तक बहती रहेगी॥

❑ साध्वी चन्दना श्रीजी म.

अंतर्प्रज्ञ

आचार्य भगवन् के महाप्रयाण के समाचार सुनकर मन स्तब्ध रह गया। गुरुदेव हमें छोड़कर चले गये। अहो.. कैसी विरल विभूति थी।

गिरते हुए व्यक्ति को सहारा दिया तुमने।
डूबते हुए व्यक्ति को किनारा दिया तुमने॥
पालन महाव्रतों का करते व कराते थे।
भ्रमित व्यक्ति को सही ज्ञान दिया तुमने॥

आचार्य श्री नानेश का जीवन मेरू शिखर सम उच्च, शरदकालीन चन्द्रिका की ज्योत्स्ना वत् धवल एवं प्रात:कालीन उषावत मोहक होता था। उत्फुल्ल नील कमल के समान स्नेह, स्निग्ध, निर्मल आंखें, दीर्घ तपस्याओं से दैदीप्यमान भव्य ललाट, कर्मयोग की प्रतिमूर्ति थे आराध्य देव। उनका बाह्य जीवन अत्यन्त नयनाभिराम था।

आप श्री जी का आभ्यन्तर जीवन मनोभिराम था। उदार आंखों के भीतर से बालक के समान स्नेह सुधा छलकती थी। जब भी देखिये वार्तालाप में सरस एवं शालीनता दर्शित होती थी। आपकी मधुर वाणी में अद्भुत चुम्बकीय आकर्षण था, जिससे कि अपार जन समूह दर्शनार्थ उमड़ पड़ता था। आप श्री के गुणों का वर्णन करने में न लेखनी समर्थ, न वाणी। ऐसे उर्जस्वल व्यक्तित्व के धनी अद्भुत महापुरुष पिता के समान परम पूज्य शिक्षक और गुरु की सफल भूमिका को निभाते हुए अचानक हम सबको छोड़कर चले गये।

आचार्य प्रवर श्री नानेश की मेरे ऊपर अनुपम कृपा दृष्टि रही जब भी कोई संकट के बादल मंडराते कि जय नानेश, जय गुरु नाना का नाम स्मरण करते ही तिरोहित हो जाते। ऐसी ही मेरे जीवन की एक घटना है-

पिछले वर्ष शरद ऋतु में विहार यात्रा चल रही थी, प्रतापगढ़ के पास छोटा सा गांव है, बारावरदा। रात्रि के समय शीत परीषह से बचाव के लिए दो शटर वाली छोटी सी दुकान में निद्राधीन थे। तभी मध्य रात्रि का समय हुआ। बाहर से दो चार व्यक्ति आये एक सटर के बाहर ताला लगा था, दूसरा भीतर से बन्द था। ताला तोड़ने का बहुत देर तक उनका प्रयास चलता रहा। मैं घबरा गई, यदि ताला खुल जाएगा तो क्या होगा। संयमी जीवन की सुरक्षा कैसे होगी ? परंतु मन-मस्तिष्क में गुरुदेव की स्मृति आयी, जय गुरु नाना, जय गुरु नाना जाप करने लगी। हे गुरुदेव तू ही सहारा है। आखिर गुरुदेव ने अर्जी सुनी ताला नहीं टूटा।

वास्तव में गुरुदेव महासागर के यात्रा पथ पर आगे बढ़ते पोत की तरह इस संसार सागर में बहते चलते मानवों के लिए प्रकाश स्तंभ थे। उनकी स्मृति को अशेष नमन।

विराट व्यक्तित्व के धनी

नत-मस्तक हो मैं कहूं, गुरुवर का उपकार ।
उऋण मैं नहीं हो सकती हूं, मन बोले बारम्बार ॥

महापुरुषों की गरिमा और महिमा अपरम्पार है । महापुरुष का जीवन विराट होता है । महापुरुषों का जीवन समुद्र की भांति गंभीर होता है ।

मेरे अन्तर मानस में अथाह भावों का समुद्र लहलहा रहा है । आचार्य श्री नानेश मेरे आस्था पुंज गुरु थे। आचार्य भगवन् की साधना को मैंने निकट से देखा है । अत. मैं अपने गुरु भगवन् के बारे में संपूर्ण आत्म-विश्वास के साथ कह सकती हूं । पूज्य श्री ज्ञान के भंडार थे, दर्शन के सुमेरू थे, चारित्र के चूड़ामणि थे । उनके जीवन की स्मृतियां मेरे जीवन के कण-कण पर अंकित है ।

आप श्री का प्रभाव ऐसा लोकोत्तर था कि आप श्री जी के नाम मात्र से भक्तों के संकट दूर हो जाते थे। उनके जीवन में इतनी विनम्रता थी कि इतने महान् आचार्य होते हुए भी वे हमेशा यही फरमाया करते थे कि मैं हूं नाना हूं नाना । आप श्री जी महान् होते हुए भी अपने आपको छोटा मानकर चलते थे ।

आचार्य प्रवर अनंत श्रद्धा के केन्द्र थे । आचार्य प्रवर गंभीर विचारक थे, दीर्घ दृष्टा थे, वे संगठन के सजग प्रहरी थे, उनका जीवन बहुआयामी था, वे जीवन के हर क्षण सजग, सतर्क रहते थे ।

आज मेरा अन्तर मानस ऐसे महापुरुष के वियोग से व्यथित हो रहा है । आज मेरे ज्योति पुंज आचार्य प्रवर अपने पार्थिव शरीर मे भले ही विद्यमान नहीं है पर उनका यशपुंज महिमावंत व्यक्तित्व सदा मेरे स्मृति पटल पर अजर-अमर है ।

आचार्य श्री नानेश ने नवम् पट्टधर के रूप में आचार्य श्री रामेश को चतुर्विध संघ को प्रदान किया । उनमें भी सच्चाई समता रही है । यह मैंने अपने जीवन में अनुभव किया है । वर्तमान आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. से यही हृदय से प्रार्थना करती हूं कि आप श्री जी की छत्र-छाया, कृपा दृष्टि सदैव हम अज्ञ बालाओं पर बनी रहे।

आचार्य श्री नानेश ने जिस अपार विश्वास के साथ आप श्री जी को यह गौरवशाली पद प्रदान किया है उसे आप श्री जी अपनी प्रखर प्रतिभा, प्रज्ञा के द्वारा संघ की महिमा और गरिमा में द्वितीया के चांद की तरह अभिवृद्धि करते रहें, इस आशा और विश्वास के साथ में मैं अपनी अनंत श्रद्धा समर्पित करती हूं ।

महासती श्री सुवर्णा जी म.सा.

संसार सहज सपनों की माया

जो महापुरुष आत्मा को शाश्वत समझ लेते हैं वे मौत का नाम सुनकर भय व 'दहशत' की बजाय आनंद अनुभव करते हैं। उनके लिए मरण ही जन्म का रूप लेते हुए महोत्सव बन जाता है। शरीर की नश्वरता व मौत 'अपरिहार्यता' को प्रभावी अंदाज में रेखांकित करते हुए हमारे अनंत आराध्य ने मरण का वरण किया। लोग सी तरह से विकारों को जीतकर, जीते ही मौत को प्राप्त कर लेते हैं। शरीर के त्यागने के साथ ही उसका 'द्रव्यमरण' रूर होता है, पर भाव मरण नहीं होता है। शाश्वत सत्य को स्वीकार करके ही ज्ञानी जन अपने जन्म को मरण मरण को जन्म मानते हैं। उनकी नजर में संसार 'मरघट' व श्मशान 'बस्ती' होती है क्योंकि जहां लोग मरते हैं, हीं तो मरघट है।

कहा है कि- संसार सहज एक सपने की तरह, सपनों की माया है, जो कभी रूलाता है तो कभी हंसाता । अतः ज्ञान व विवेक का उपयोग करने वाली आत्मा कभी विचलित नहीं होती है। जिनके जीवन में जन-जन लिए नई दिशा, जिनके पोर-पोर में समता का नाद व संयम साधना का संगम था, ऐसे महापुरुष का भव-भव सहयोग मिलना अति दुर्लभ है।

शिल्पकारी सम थे गुरुवर गढ़-गढ़ मुझे सुधारा,
अनगढ़ पत्थर सम था जीवन तुमने इसे निखारा।
फूलों के संग कांटे भी महक जाते हैं,
सावन के महीने में मरूस्थल भी चहक जाते हैं।
जो कर देते अपनी हर धड़कन शासन पर कुर्बान,
इतिहास में सदा-सदा के लिए वे अंकित हो जाते हैं ॥

प्रेषक : दीपक सांखला

विकाल मन खोज रहा है

ललिता चोरड़िया

किस दिशा में चले गये, गुरुवर हमें छोड़कर,
किस दिशा में बसे हो, गुरुवर हमें बिसार कर।
जब-जब याद आती है, गुरुवर मन रोता है,
चहुं दिश विकल आंखें खोज रही हैं, दौड़-दौड़कर ॥

-पंसारी बाजार, ब्यावर (राज.)

साध्वी पुष्पलता जी म.सा.

मुक्तिपथ के संव

किसी चिन्तक की इन पंक्तियों को पढ़ा- " संसार में सबसे बड़ा अधिकार त्याग और सेवा से मि है" । सेवा का भाव हृदय की विशालता का परिचायक है । आराध्य देव आचार्य श्री नानेश के जीवन में सेवा की ज्यो लौ सदा जलती रही । जिसने सिर्फ संघ गृह को नहीं अपितु देहरी दीप की भांति अन्दर बाहर प्रकाश फैलाया। त्या और सेवा का साकार स्वरूप बनकर आचार्य देव ने स्वामी सुधर्मा की पीठ का अधिकार बखूबी निभाया।

मेरे मानस पटल पर संस्मरण की तस्वीर अंकित है । मैं विरक्ति पथ पर चल रही थी । साम्प्रदायिक र के कारण परिजनों का अवरोध दीक्षा पथ में बना हुआ था । आचार्य देव और गुरुवर्या श्री जी का वर्षावास बन्न के प्रांगण में ही था । समय अपनी गति से चल रहा था । आज्ञा पत्र प्राप्ति की आशा किरण नजर आ रही थी संयोग की बात समझिये जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म.सा. के संत श्री प्रतापमल जी म.सा. एवं साध्वि चातुर्मास भी वहां था । पिता श्री का कहना था- दीक्षा इस संप्रदाय में दूंगा और मेरा मन मधुकर समता सिंधु रूप आचार्य श्री नानेश की शरण में संयम पराग का पिपासु था । एक दिन श्रद्धेय गुरुवर्या श्री जी दो साध्वियों के स उस स्थानक की ओर जा रहे थे । मैंने चरण वंदन करके पूछा- अभी आप कहां पधार रहे हो ? तब उन्होंने फर पुष्पा... तुम भी साथ में दयापालो । मुझे वयोवृद्ध महासति जी बालकंवर जी म.सा. की सेवा में जाना है । आ भगवन् का आदेश है, तुम शीघ्र पहुंचो । अतः मैं वहां जा रही हूं । इतने वर्ष बीत जाने के बाद भी उस क्ष स्मृति सजीव-सी है । आचार्य देव के अन्तर में सेवा के प्रति कैसा अनुराग । व्याख्यान स्थल पर सहसा मुझे देख ज्योंहि व्याख्यान पूरा हुआ पसीने से भीगी चादर सहित ही आचार्य देव ने वहां महासती श्री बालकंवर जी म के समीप गुरुवर्या श्री जी को भी चेतावनी दे दी, देखो इनकी सेवा का पूरा ध्यान रखना ।' महान आचार्य पद नेतृत्व संभालते हुए प्रत्येक आत्मा के प्रति कितना सौहार्द्र भाव । उन क्षणों की स्मृति से आज अन्तर श्रद्धावनत जाता है । उनकी इस सहृदयता के प्रतिफल स्वरूप ही परिजनों का भी हृदय परिवर्तन हो गया । मेरी अंत अभिलाषा सफल हुई । आचार्य देव ने स्वयं के आचरण से सेवा पाठ पढ़ाया । भगवन् के पथ का अनुसरण क वाली सेवा समर्पित महासती श्री गंगावती जी म.सा. ने भी अपना जीवन सेवा सौरभ से महकाया । इस वर्ष उ साथ ही वर्षावास का सौभाग्य प्राप्त हुआ । काल की चपेट से भला कौन बच पाया ? कुछ ही अवधि के अंत में द्वय साधनाशील आत्माओं की कृपा छाया हम पर से उर्ध्वगामी हो गई । उनका अभाव हृदय को उद्वेलित क है तथापि उनके गरिमामय जीवन का स्वरूप मुक्ति पथ हमारा धृतिरूप सम्बल है । सेवा की दीप्त रश्मियों से दे आपका आलोकमय जीवन हमारी राह प्रशस्त करता रहेगा ।

असीम अनुग्रह के प्रति हृदय सदा कृतज्ञता से प्रणत है, अमर पथ के राही भगवन... पहुंचे शीघ्र मुक्ति में, यही मेरा श्रद्धा सुमन समर्पण है ।

कृपा निधान

भारतीय संस्कृति में अजपाभ्यास पर प्रायः समस्त धर्म परंपराओं का चिन्तन मुखरित हुआ है। संत कबीरदास जी ने यहां तक कह दिया-

"सांइ सुमिरण सांचे हृदय करे, जो कोई मन।
संत सुमिरण से देखो पावे, सुख राम धन॥"

हृदयतंत्री में ये शब्द गूंजे वैसे ही बाल्यवय से ही अनुवांशिक संस्कारों के रूप में हुक्म शासन के प्रति आस्था का बीजारोपण हो चुका था, उन्हीं संस्कारों के फलस्वरूप आराध्य आज्ञार्य देव नानेश के प्रति मेरी प्रगाढ़ आस्था प्रारंभ से ही थी।

रायपुर (म.प्र.) में शिक्षण शिविर (छत्तीसगढ़ स्तरीय) का आयोजन हुआ। अबोध बच्चों को धार्मिक ज्ञान संस्कार देने हेतु पूज्य गुरुवर्या श्री जी का मुझे निर्देश मिला। उन बच्चों को पढ़ाने में बड़ा आनन्द आ रहा था। बच्चों की बाल सुलभ चेष्टाओं पर मन बाग-बाग हो रहा था। मध्यान्ह में लगभग तीन बजे बच्चों के स्वल्पाहार का समय हुआ, अचानक जोरों की आंधी आई एवं सभी में हलचल मच गई।

सरल हृदय एक नन्हा बालक बोल उठा। आओ-आओ, हम सब 'जय गुरु नाना' का जाप करें। बच्चों के द्वारा जय गुरु नाना, जय गुरु नाना की धुन प्रारंभ करते ही स्वल्प क्षणों में ही आंधी थम गई, इस बालक ने एक घटना सुनाई। मेरे पापा मद्रास जा रहे थे, अचानक टिकिट कहीं रखकर भूल गये, इधर टी.टी. आया, पापा ने सारा सूटकेश छान डाला, अपने पेंट की जेब भी टटोल ली, पर टिकिट नदारद, चिन्तित हो उठे। इधर टी.टी. ने कुछ सख्ती बताई। तब पापा ने कहा 'भाई धैर्य रखो, मैं स्वंय सत्य का पक्षधर हूं। टी.टी. कुछ शांत हुआ। आसपास के यात्रियों का निरीक्षण करने लगा। इधर पापा एक धुन से 'जय गुरु नाना' का जाप करने लगे। मुश्किल से १०-१५ बार जय गुरु नाना बोले होगें कि अचानक उन्हें ऐसा अन्तर आभास हुआ कि अरे.. टिकिट तो तूने छोटी डायरी में रखा है, और तू पेंट, सूटकेश, संभाल रहा है, शीघ्र ही डायरी निकाली, उसमें टिकिट सुरक्षित पडा था। टिकिट चेकर भी आश्चर्य चकित रह गया। कहने लगा, यह 'जय गुरु नाना' किस पीर पैगम्बर का नाम है। तुम नाम जपते ही चिन्ता मुक्त हो गये हो, मुझे भी यह मंत्र दे दो। मैं रात-दिन टेन्सन में रहता हूं सो मैं भी चिन्ता मुक्त हो सकूं।" पापा जी ने कहा- लो तुम भी सीख लो, बस छोटा सा नाम है, मेरे आराध्य गुरुदेव का, सब संकटों को दूर करने वाला है। उस टी.टी. ने घर का एड्रेस लिया। ६ महीने के बाद हमें खबर मिली वह लिखता है कि "मैं बड़े आनन्द में हूं। तुम्हारे गुरु अब मेरे भी स्वीकृत हो चुके हैं। छोटे से इस 'नाना' नाम में बड़ा चमत्कार है, मेरी उनके प्रति धनीभूत आस्था जागृत हो चुकी है। एक बार मुझे भी उस नाना गुरु दर्शन करना है"। पापा ने जब यह घटना हमें सुनायी तब से हमारे घर में किसी भी देवी देवताओं की मनौती न करके सिर्फ 'जय गुरु नाना' का ही जाप करते है और हर दुख से मुक्ति पा लेते हैं। उस श्रद्धानिष्ठ बालक की सारी बात सुनकर मेरा अन्तर हृदय मेरे आराध्य के प्रति विशिष्ट गौरव के अहोभाव से आपूरित हो उठा। क्लास का समय पूर्ण होने पर मैं पूज्य

गुरुवर्या श्री जी के चरणों में पहुंची, वंदना कर प्रतिलेखन की क्रिया में संलग्न हो गई। अपनी छोटी बहिनों के माध्यम से मेरे कानों में स्वर पहुंचे कि "गुरुणी प्रवर एवं सेवानिष्ठ पूज्य गंगावती जी म.सा. चातुर्मास विषयक विचार विमर्श में संलग्न है। आराध्य आचार्य भगवन् के आदेशानुसार सिंघाड़े जमा रहे हैं। मेरा मन पूर्व दिवस की चर्चा से आशंकित था। श्री मुख से हम सभी को संकेत' मिला कि मैं किसी को भी कहीं भी रख सकती हूं, तब सभी ने अनुशासन के साथ एक स्वर में 'तहति' कहकर स्वीकृति दे दी। पर मन मेरा चाह रहा था- पूज्य गुरुवर्या श्री जी के पावन चरण सन्निधि में चातुर्मास करना। चूंकि लम्बे समय से मुझे सेवा में चातुर्मास करने का अवसर *नहीं मिला था। न जाने इस बार भी कहीं वंचित न रहना* पड़े। दिल का दर्द आंखों में उतर पड़ा। दिल को थामे सारे कार्यों से निवृत्त हो रात्रि में प्रतिक्रमण के बाद जा पहुंची, मातृ हृदया पूज्यनीया श्री गंगा मैया के पास में। अपनी आंतरिक इच्छा जाहिर करते हुए नेत्र सजल हो गये, अविरल अश्रुधारा प्रवाहित होने लगी, गुरु चरणों का प्रशस्त अनुराग नहीं चाह रहा था गुरु से दूर अन्य क्षेत्र में चातुर्मास हेतु जाना। गुरु चरण सेवा में जो मिलता है वह स्वतंत्र चातुर्मास में लभ्य नहीं हो पाता। बस एक ही चाह-"इस बार चातुर्मास में पूज्य गुरुवर्या श्री जी मुझेअपने साथ रख लें। तब गंगा मैया ने [illegible] देते हुए कहा-"अरे.. तुम इतने समझदार होकर [illegible] विह्वल होते हो? अपने संयमी जीवन का एक ही सूत्र "गुरुणामाज्ञा गरीयसी" गुरु आज्ञा ही अपना [illegible] सर्वस्व है। आशा की लौ बुझ चुकी थी। रात्रि के [illegible] क्षण, निद्रा भी मुझसे रूठ चुकी थी। अचानक [illegible] बालक की बताई घटना स्मृति में उभर आई, मेरा [illegible] दृढ़ आत्मविश्वास एवं आस्था की जगमगाती [illegible] आलोकित हो उठी। तन्मयता के साथ, "जय गु[रु] नाना", के जाप में लीन हो गई। द्वितीय दिवस [illegible] के पश्चात ज्योंहि पूज्य गुरुवर्या श्री जी के श्री चरणों में वंदना की, आशीर्वचन सुनने को मिला, पूज्यवर [illegible] से कह रहे थे- "मुझे अंजना को तो चातुर्मास में [illegible] साथ रखना है"। खुशियों का पार नहीं रहा। आस्था [illegible] कनेक्शन जुड़ते ही कृपा का पावर मिला। धन्य है [illegible] अनंत-अनंत आस्था के आयतन तेजस्वी, [illegible] अलौकिक चारित्र्य संपन्न, आराध्य भगवन्, जिनके [illegible] स्मरण में भी अचिन्त्य शक्ति है। शब्दकोष के शब्द [illegible] उन्हें वर्णित करने में सक्षम नहीं है। भगवन नानेश, [illegible] संयमदाता, जीवनत्राता महोपकारी। युगों-युगों तक [illegible] श्री की जीवन, स्मृति का चिर सहचर बना रहेगा।

हर पल आज पुकारूं

कन्हैयालाल चोरड़िया

नानेश गुरु, नानेश गुरु हर पल-पल आज पुकारूं।
श्रद्धा की पावन पुण्य भेंट, तेरे चरणों पे डारूं ॥टेर॥

युग की दृष्टि, युग की सृष्टि, इस युग की दिव्य विभूति थे।
युग अवतारी युग उपकारी इस युग में एक अवधूती थे।
खोये हो कहां ये दिल रोता हर दिल में तुम्हें निहारूं ॥
श्री संघ के पूज्य शिरोमणि थे, श्री संघ के अभिनव निर्माता।
कई लाखों भक्तों के स्वामी, जिनवर की बगिया के दाता ॥
हृ दि ऊ ची श्री जय नाना, गुरु राम नाम उच्चारूं ॥

-[illegible]

❑ .साध्वी अंजना श्री जी म.

गुरु एक, सुरक्षा कवच

गुजराती भाषा की वह अबूझ पहेली मुझे याद आ रही है- "गिण्या गणाय नहीं बिण्या बिणाय नहीं, तोय मारा आभला मां माय" गिनना चाहो तो गिन नही सकते, बिनना चाहो तो बिन नहीं सकते, फिर भी मेरे आसमान में समा जाते हैं। यही स्थिति उन संस्मरणों रूपी सितारों की है।

परम आराध्य, पूज्य गुरुदेव का जीवन विराट, उदात्त और अपने आपमें एक खोजी जीवन था। उन्होंने जो सिद्धांत हमें दिये, उनका सर्वप्रथम स्व जीवन में प्रयोग किया और फिर समाज के समक्ष रखा।

उनकी प्रज्ञा गहरी, सूक्ष्म व पैनी थी, वे किसी की कही हुई बात पर विश्वास नहीं करते, वरन् उस विषयक पूरी खोज करने के बाद आत्म-साक्षी से ही स्वीकृत करते। सदैव संघ संगठन व एकता के हिमायती रहे। सैद्धांतिक ठोस धरातल के आधार पर सारा संघ एक रूप बन जाय, ऐसी भावना सदा बनी रही। प्रभु महावीर के द्वारा उपदर्शित सिद्धांतों में कहीं मोच न आये एतदर्थ सदैव सजग रहते। उनका संयम के प्रति इतना लगाव था कि अपने प्रवचनों में भी संयमी मर्यादाओं का प्रतिपादन सूक्ष्मता से करते थे।

वे हमारे सुरक्षा कवच थे, उनका अनुग्रह सकल संघ पर छत्रवत् था। अपने शिष्य-शिष्याओं को सदैव वात्सल्यपूर्ण प्रोत्साहन देते। जब हम उनकी चरणोपासना में बैठते तो सुशिक्षा के अनमोल मुक्ताकणों से आप्लावित करते तथा हम बाल सुलभ चेष्टा से कहते भगवन.. हमें आपका प्रत्यक्ष सत्सानिध्य कम मिलता है, हमें आपकी चरण सेवा करनी है, तो भगवन् यही फरमाते- द्रव्य से मैं कहीं भी रहूं पर मेरा ध्यान प्रत्येक संत सती वर्ग की ओर रहता है। उनकी इस अहेतुकी कृपा का यही सुपरिणाम है कि जीवन में कहीं विघ्न बाधाओं के दौर आये भी तो पूज्य गुरुदेव ने सुरक्षा कवच बन संरक्षित किया।

एक घटना प्रसंग- इस संयमी परिवेश के तीसरे वर्ष में पूज्य गुरुणी प्रवर ने अमीय आशीष का पाथेय देकर खिड़किया वर्षावास हेतु उज्जैन से रवाना किया। विहार यात्रा चालु थी। एक-एक पड़ाव पार करते-करते इन्दौर से छोटे से गांव सिमरौल पहुंचे, रात्रि विश्राम वहीं किया। उस रात्रि में जो घटना बनी उसे कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता। वर्षा का मौसम, आकाश मेघ घटा से आच्छादित। रात में सघन अंधकार के बीच कभी-कभी बिजली की चमक से प्रकाश आ रहा था, संध्या प्रतिक्रमण के पश्चात् सभी भगिनीवृन्द के साथ गुरु गुण-स्तुति में लीन थे, तभी एक स्कूल के बरामदे में एक अजनबी व्यक्ति आया और कहने लगा मुझे यहां विश्राम करना है। उसे साध्वाचार संबंधी नियम बताये और कहा तुम यहां नहीं रह सकते, वह कुछ उटपटांग बातें करने लगा। हमने सोचा, आज विकट स्थिति है। यह कोई उपद्रव खडा न कर दे, अतः हमें सावधानी रखना है, आज की रात्रि पूर्ण धर्म जागरणा से व्यतीत करना है। गुरुदेव हमारी रक्षा अवश्य करेंगे। सभी महामंत्र के जाप एवं गुरुनाम-स्मरण में तल्लीन बन गये। जिस हाल में हम थे उसके सभी द्वार खिड़कियां बंद कर दी, सभी को वस्त्र के टुकड़ों से बांध दिया। पर आखिर यह तन जो ठहरा, बैठे-बैठे ही कुछ समय के लिए सभी पर निद्रा देवी ने अपना प्रभाव डाल दिया, करीब १५-२० मिनट का समय हुआ होगा, अचानक आंख खुली तो देखा सभी द्वार और खिड़कियां खुले पड़े हैं। बिजली चमकी किन्तु

उस प्रकाश में कोई भी नजर नहीं आया। किसी की भी अन्दर आने की हिम्मत न हुई, हो भी कैसे ? गुरु का सुरक्षा कवच जहां है, वहां कोई पहुंचने की हिम्मत नहीं कर सकता। सूर्योदय के बाद देखा समीप वाले स्थान में तीन-चार व्यक्ति सोये हुए हैं। पर गुरु कृपा से हमारी रात्रि निराबाध बीत गई। ऐसे एक नहीं अनेक प्रसंग जीवन में आये, पर गुरुनाम रूपी मंत्र ने ही पार लगाया। क्योंकि शिष्य चाहे जाने या न जाने पर प्रत्यक्ष व परोक्ष में रहे हुए प्रत्येक शिष्य-शिष्या पर गुरु का परिपूर्ण वरद् हस्त रहता है, वे स्वयं साधना पूत जीवन जीते हुए सबश [illegible] चाहते हैं। ऐसे महान गुरु का वियोग [illegible] कर्मोदय का कारण है। उनकी आत्म-शांति [illegible] तो औपचारिक है, वस्तुतः साधक अपनी [illegible] निर्माता स्वयं ही होता है और वह यहीं पर [illegible] की शांति का सूत्रपात करके विश्वास है आचार्य देव ऐसी प्रस्थित हुए हैं।

❁

❑ साध्वी सुमति श्री जी म.

क्षमा सिंधु

शयन से पूर्व नियमित चर्या के अनुरूप गुरु चरणों में उपस्थित हुई, अपनी दिनचर्या का विवरण प्रस्तुत [illegible] शिक्षा सूत्र पाने की जिज्ञासा में निवेदन किया। संयम एवं अनुशासन पूर्वक सुसंस्कारों का सिंचन करने में [illegible] मुखारविन्द से अमृत कण झरने लगे। देखो बहिनों.... ममता सिंधु आचार्य भगवन् का जीवन हमारे लिए अनुकरणीय है, उन महान विभूति ने शास्त्रीय सूत्रों को याद ही नहीं किया, प्रत्युत गहन अनुप्रेक्षा के साथ आचरण में [illegible] लिए। प्रथम फलौदी चातुर्मास का प्रसंग- शांतक्रांति के अग्रदूत स्व. गणेशाचार्य से श्री रतनचंद जी म.सा. [illegible] शब्दों में कह रहे हैं-'भगवन्... मैं महाक्रोधी हूं, मुझे निष्कारण ही क्रोध आता रहता है। पर मुझे इस [illegible] मुनि नानालाल जी पर क्रोध क्यों नहीं आता। यदि इस निर्ग्रन्थ के साथ मैं दो-तीन साल रह जाऊं तो मैं [illegible] क्षमावीर बन सकता हूं।' यह सुनकर गणेशाचार्य को कितना प्रमोद हुआ होगा और कितना आशीर्वाद [illegible] पड़ा होगा जिससे वे २७ गुण से ३६ गुणों के अधिकारी एवं बुद्धानं बोधिदाता पद को प्राप्त हो गये। [illegible] गुरुणी श्री जी के अनुभूति पूर्ण वचनों को सुनकर हृदय अहोभाव से भर गया। धन्य है, हमारे आराध्य, जिन्होंने अपने जीवन से हमें बोध दिया है। कितना भव्य जीवन था उन महामहिम का। भगवन्..ऐसे असीम [illegible] आपके निर्झर हैं जिन्हें चुन-चुनकर हम अपने जीवन को सजा पाए, यही मेरी श्रद्धा अर्पित है।

साध्वी दर्शना श्री जी म.

हे संघ नायक कहाँ चले तु

हे संघ नायक कहां चले तुम,
किस अदृश्य जगत में ।
निश दिन याद सताये गुरुवर,
हृदय की धड़कन में ।
हाय काल तूने गजब कर डाला,
सोच न पाया क्षण भर,
जन-जन की इच्छायें कुचर्लीं,
दया न आई हम पर ॥

परमोपकारी पूज्य गुरुदेव की वाणी दूसरों के दु:ख निवारणार्थ होती थी । अपने लिये उसमें कुछ भ नहीं था । समाज, राष्ट्र, देश और विश्व के सभी प्राणी समता सरोवर में अवगाहन कर विषमता का पंक धो डाले ऐसी उच्चतम भावना सदा बनी रही । स्वयं तो समता की जीवन्त प्रतिमा ही थे । आज के इस वैज्ञानिक युग भौतिक साधनों के अम्बार लगे हैं पर आन्तरिक शांति के अभाव ने मानव को विक्षुब्ध बना रखा है । इस अशां को दूर कर आत्मीयानन्द में रमण कराने के लिए पूज्य गुरुदेव ने हमें समीक्षण ध्यान का महासूत्र दिया, वह हमा लिए वरदान स्वरूप है । यदि गुरुदेव को हमें सदैव स्मृति में तरोताजा रखना है तो उनके द्वारा प्रदत्त स्वर्णिम दोन सूत्रों को (समता व समीक्षण ध्यान) जीवन में साकार रूप देने का प्रयास करें ।

कमल से निर्लिप्त थे, सागर से विशाल,
हम जिन्हें रख रहे थे हृदय मंदिर में संभाल ।
ओ शृंगार नन्दन, हुक्म संघ के चन्दन,
छिपे हो कहां तुम्हें नयन रहे निहार ॥
पूज्य गुरुवर के चरणों में, श्रद्धा सुमन समर्पित ।
कर देना मंगलमय नित हो यह संघ सदा संवर्धित ॥

साध्वी प्रेमलता श्रीजी म.

समो निन्दा पसंसासु

"सव्वओ पमत्तस्स भयं, सव्वओ अप्पमत्तस्स नत्थि भयं" प्रभु महावीर से मुखरित सूत्र का सहज चिन्तन उस समय मन में उभरा। प्रमाद शत्रु अति भयंकर दुरावह स्थिति में ले जाने वाला है। धन्य है उन महापुरुषों को जिन्होंने प्रमाद पर सर्वथा विजय प्राप्त की। ऐसी महान् चेतनाओं के नाम स्मृति पथ पर आ ही रहे थे कि मेरे अनंत-अनंत आराध्य प्रवर, महोपकारी, जर्जर नैया के पतवार, समता सिंधु, शृंगार नन्दन का वह करुणायुक्त ब्रह्म तेज से आपूरित दीदार नयनों के समक्ष अचिन्त्य उपस्थित हो गया। सहसा मेरा अंतर हृदय प्रणत हो गया। भीषण संघर्षमय झंझावातों मे संयम, सेवा, साधना को अखंडित रखते हुए अपनी निरंजन पद प्राप्ति की ललक को गुंजारित करते रहे। आचारांग सूत्र तो जिनकी आत्मा में देह संचारित रक्त सदृश रमा हुआ था। प्रत्येक संयमी गतिविधियां अप्रमाद से परिपूर्ण थी। मेदपाट के अन्तर्गत लघु ग्राम, अध्यात्मयोगी आचार्य प्रवर के प्रथम शिष्य श्री सेवन्त मुनि जी म.सा. की जन्म भूमि में आचार्य भगवन् की सेवा का अवसर पूज्य गुरुवर्या श्री जी के साथ प्राप्त हुआ। विहार का समय, संत पाट-पाटला लौटाने हेतु जा रहे हैं। हम विहार कराने हेतु श्री चरणों में उपस्थित हुए। दृश्य देखते ही हमारे नयनों में भी नमी आ गई। आचार्य भगवन् लघु प्रस्तरों को चुन-चुन यतनापूर्वक एक स्थान पर रख रहे थे, सहसा हृदय रो पड़ा। इस कलिकाल में जहां प्रभुत्व के पीछे गहन अंहकार से सना जीवन और कहां जिन शासन के प्राणभूत ३६ गुणाधिकारी "पचायाण" के सूत्र को उपदेश रूप में ही नहीं किन्तु आचरण में ढाले हुए हैं। फिर भी सितारों की गिनती वैज्ञानिक सहायता से शक्य हो सकती है। परन्तु परमाराध्य भगवन् के गुणों का आकलन बाल चेष्टावत ही होगा। याद आ रही है उत्तराध्ययन सूत्र की शिक्षा "समो निन्दा पसंसासु" का सूत्र गुरु श्री जी की रग-रग में रमा हुआ था। जिन्दानोचियों के बीच में भी वे अपने स्वरूप में ही रमा करते थे। आत्म स्व निरीक्षण करते हुए विद्वेष भरे विसर्जन में भी समता सुधा संचार का ही लक्ष्य रहा। सम्यक्त्व आचार का पालन गुरु तो न जाने क्षायिक सम्यक्त्व की ओर ही चरण बढ़ा चुका था। हम नादान [illegible] पर भी इतना अधिक [illegible] वर्षण था कि उससे हम अभिभूत हो जाते। मेरे पास शब्द नहीं है जिनसे [illegible] कर सकूं। [illegible] कि बहुना...॥

हम अनार्य ही रह जाते

प्रभु महावीर की साधना भूमि अनार्य देश रही, परिषहों के बीच जीकर प्रभु ने विशिष्ट उपलब्धि हासिल की। शौर्य संपन्न आत्माओं की तेजस्विता समरांगण में ही निखरती है। प्रभु के पथानुगामी, हमारे हृदयेश आराध्यदेव आचार्य नानेश का ध्यान आचार्य पदारोहण के अनन्तर अनार्य देश स्वरूप पिछड़े क्षेत्र की ओर गया। छत्तीसगढ़ ग्राम्यांचल का जन जीवन धर्म स्वरूप के बोध से शून्यवत् था। आप श्री के पदन्यास से ही वहां धर्म जीवन्त बना। संयमी मर्यादाओं की अनुपालना करते हुए उस क्षेत्र में पदन्यास करना अभूतपूर्व घटना थी। उस विहार यात्रा के दौरान आगत परीषहों की स्मृति मात्र रोंगटे खडे कर देती है, किन्तु भगवन ने परवाह नहीं की। करुणा आपूरित हृदय परमार्थ हेतु मचल रहा था, वह बाधाओं से भला क्या घबड़ाये।

सुकुमार तन में आचार्य भगवन् का फौलादी मन था, अपने कठोर तप त्याग के निर्मल नीर से उस धरा को सिंचित कर चिरन्तन उर्वरता दे दी। केवल एक प्रवास का यह सुफल रहा कि स्वल्पावधि के सानिध्य से ही वह बंजर भूमि सरसब्ज बन गई। यदि आपने धर्म बीज का वपन न किया होता तो वहां की आज जो छटा है कदापि नजर नहीं आती। आपके अप्रतिम जीवन की छवि भव्य मानस की अतल गहराइयों में अंकित हो गई है। वंश परम्परा से वे संस्कार आज भी विरासत के रूप में संचरित हो रहे हैं।

सम्यक्त्व और संयम का उपहार देकर अनेक का उद्धार किया। जैन ही नहीं जैनेत्तर बंधुओं पर आपके ओजस्वी जीवन का प्रभाव पड़ा। मछली मारकर आजीविका करने वाले अपने व्यापार से निवृत्त हो गये, आज भी आपकी वाणी उनके हृदय में अंकित है। हृदय कृतज्ञता से प्रणत है, भगवन के अनल्प उपकारों के प्रति। कई बार अन्तर की ध्वनि स्फुरित हो जाती है-

भगवन् ! यदि तुम न होते,
तो हम अनार्य ही रह जाते।

तरसे नयन

विशाल लोढा

सांस आती है, सांस जाती है, सिर्फ मुझको है इंतजार तेरा,
आंसुओं की घटाएं पी अब तो, कहता है यही भक्त तेरा।
दर्श पाने के लिए तरसे नयन, नाना गुरुदेव तुम्हें मेरा नमन।
तेरे दर्श का मैं दीवाना हुआ, तेरी रहमतों का फसाना हुआ।
जमाने से अब मैं बेगाना हुआ, नाना गुरुदेव तुम्हें मेरा नमन।

प्रबल समता विश्वासी

"सत्पथ का दिग्दर्शन, तुझ बिन कौन करेगा भगवन् ।
संयम जीवन का संवर्धन, तुझ बिन कौन करेगा भगवन् ॥"

सबकी अपनी-अपनी निकटता थी पूज्य भगवन से । सबके अपने-अपने संस्मरण हैं एवं अपनी निजी [illegible] इच्छा होती थी कि भगवन् का पावन सानिध्य पाते ही रहें । बहुत कुछ था भगवन के पास सुनाने को । वे [illegible] मुखारविन्द से अपनी अनुभूतियां सुनाते ही रहते थे । मानो उन्हें ऐसा लगता था कि मेरे ये छोटे-छोटे संत एवं [illegible] वर्ग उन अनुभूतियों से कहीं अबूझ न रह जांय ।

सन् १९९५ में बीकानेर चातुर्मास में जब-जब हम गुरु निश्रा में पर्युपासनार्थ पहुंचते तब-तब पूज्य [illegible] हमें अपने अनेक निजी एवं ऐतिहासिक अनुभवों से अवगत कराते रहते थे । उनकी अनंत उज्वल स्मृतियां मेरे [illegible] दिमाग में बिखरी हुई है ।

कैसे सांचे में ढला था वह व्यक्तित्व ? शायद शताब्दियों में कभी कभार ही ऐसे व्यक्तित्व उभरते हैं, [illegible] दुर्लभ । मुझे प्रतीत हुआ मैं अपनी सारी श्रद्धा अर्पित करके भी इस शत शाखी वट वृक्ष की ऊंचाइयों को स्पर्श [illegible] कर पाऊंगी,पर अभिलाषा थी, इस दिव्य विभूति की विराटता के दर्शन की ।

पूज्य भगवन् के वचन में अजीब तासीर थी एवं उनके शुभ आशीर्वाद में अद्भुत शक्ति निहित थी । वे [illegible] भी बोलते थे एवं करते थे, यह सब उनके जीवन की आंतरिक गहराइयों एवं अनुभूतियों से उद्भूत होता था । [illegible] तक पहुंचने वाली उनकी अन्तर्दृष्टि अनुपम थी । चुम्बकीय शक्ति भी अनूठी थी इस समता विभूति में और सबके [illegible] साथ एक-सा सम्य-व्यवहार, मां की ममता-सा दुलार । पूज्य भगवन् का ध्येय था कि समता ही हमारा [illegible] है । आप श्री के जादुई व्यक्तित्व में पता नहीं क्या तेज था कि बड़े से बड़ा विद्वान राजनेता भी आप श्री की [illegible] सुनकर वशीभूत हो जाता था, तो अनपढ़ ग्रामीण व निपट अनाड़ी भी । किसी व्यक्तित्व के सम्मोहन के [illegible] होना तभी संभव है, जब साधक के जीवन में मन-वचन-कार्य की एकरूपता होती है, और होती है [illegible] लोक-कल्याणी पवित्र भावना ।

लोग कहते हैं कि उनके पास सिद्धि थी, वे वचन सिद्ध पुरुष थे । उन्हें अमुक देव इष्ट था किन्तु [illegible] यह है कि अरिहंत देव वीतराग प्रभु का सच्चा उपासक क्या किसी सरागी देव की उपासना या साधना कर [illegible] है ? वह तो सिर्फ आत्म-देव की आराधना या उपासना करता है । पूज्य गुरुदेव भी आत्मदेव अरिहंत एवं [illegible] प्रभु के सच्चे उपासक थे । उनकी उपासना, आराधना एवं भक्ति में निष्ठा थी, संयम था, तन्मयता थी और [illegible] कल्याणी शुभंकर भावना ।

ऐसे दिव्य विभूति के दर्शन एवं अमृत वाणी श्रवण का [illegible] बम्बई में सौभाग्य मिला था । [illegible] नहीं ज्ञात था कि यह जीवन का अंतिम स्वर्ण अवसर है । उस अल्प चरण सेवा के समय दिया गया उनका [illegible] एवं [illegible] उपदेश मेरे जीवन की अनमोल थाती है जो मेरे आचरण की उज्ज्वलता का पाथेय बनेगा । पूज्य [illegible] की स्मृति उस परम हंस की अमृत स्मृति को जितने शाश्वत शब्द अर्पित किए जावें वे अल्प ही होंगे ।

□ साध्वी सिद्ध प्रभा श्रीजी म.

तेजस्वी व्यक्तित्व

आचार्य भगवन् का व्यक्तित्व एक तेजोदलय था, जो चतुर्दिक अपनी चारित्रिक आभा की ज्योति विकीर्ण कर रहा था। पूज्य गुरुदेव के संयमी तेज से युक्त व्यक्तित्व का वर्णन हमारी चर्म मंडित जिह्वा नहीं कर सकती। बाल्यकाल से ही आप श्री ने अपना जीवन अनूठे साँचे में ढालना शुरु कर दिया। आप श्री के जीवन की अनेक विशेषताओं में एक विशेषता यह भी थी कि आप श्री प्रत्येक व्यक्ति के साथ स्नेह सौहार्द्रता का व्यवहार करते थे। वे प्रत्येक प्रवृत्ति को स्वजीवन में लागू करने के बाद ही अन्यों को प्रतिबोध देते थे। संत्रस्त मानव मात्र को समता का पथ दिखाकर आपने संपूर्ण विश्व पर बहुत बड़ा उपकार किया तथा बलाई जाति का उद्धार करके आप श्री ने छुआछूत के भेद को मिटाया।

श्रमण संस्कृति का मूल समता पर अवलंबित है। क्षणभंगुर मुक्ति पथ से मन मोड़कर अटल, सुखद, निर्मल-मुक्ति की ओर सहज सरल एवं सात्विक गति से बढ़ना एवं इसके अवरोधक अज्ञान और मोह को वायु प्रेरित सघन घन की तरह दूर करना ही इस श्रमण संस्कृति का पवित्रतम लक्ष्य माना गया है जो समभाव से ही सिद्ध हो सकता है। अनन्त-अनन्त आस्था के आधार पूज्य गुरुदेव श्रमण संस्कृति एवं समत्व के एक मूर्तिमान सजीव प्रतीक थे। उन श्री की सहज सरलता, भद्रता, आत्मीयता, समता व सहृदयता आज भी जनमानस में सम्मान पा रही है। उनका गुणमय शरीर आज भी हमारे समक्ष है और आगे भी सदा रहेगा।

स्वर्गवास के कुछ मास पूर्व ही उन दिव्य महापुरुष के पावन दर्शन एवं सुखद सानिध्य का सुअवसर प्राप्त हुआ था। निकट से देखा तो पाया कि वे मान-सम्मान और महिमा पूजा की कामना से सर्वथा परे थे। आचार्य देव के जीवन में "समयाए समणो होई" इस सूत्र का साक्षात्कार होता था। और "समोनिंदा पसंसासु" का अन्तर्नाद गूंजता रहता था। इस प्रकार आपश्री का जीवन उस विराट सत्य का खुला पृष्ठ है जो सदा सभी के लिए परमोपयोगी सिद्ध होगा। उस पावन तेजस्वी व्यक्तित्व के प्रति मैं अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करती हूं।

गुरु महाउपकारी

श्याम बया

तेरे बिना गुरुवर हमारा नहिं कोई रे।
तेरे बिना गुरुवर सहारा नहिं कोई रे।
भाई बन्धु कुटुम्ब कबीला, सुत और नाली छैल छबीला।
बिगड़ी साथ बनाया नहिं कोई रे।
गहरी नदियों नाव पुरानी, बड़े-बड़े भंवर गहरे पानी।
डूबन लागी नाव बचाया नहिं कोई रे।
जबसे मैंने तुझको बचाया नहिं कोइर्य रे।
तेरे जैसा ज्ञान सिखाया, नहिं कोई रे।
घर-घर तेरा नाम जपाऊं तेरी महिमा सबको सुनाऊं।
तेरे जैसा लाड लड़ाया नहिं कोई रे।

-गीदर

जीवन संस्कारकर्त्ता-गुरु

पावन वर्षावास का स्वर्णिम अवसर, मेरे अनन्त पुण्योदय से आशा फली पूज्य गुरु प्रवर के चरणों का सानिध्य थी। रात्रि में पूज्या गुरुणी श्री अपने चिन्तन में संलग्न थी। मैंने कहा, "क्या आपको नींद नहीं आ रही है ?" तब फरमाया, गर्मी का विशेष प्रकोप व मच्छरों की बहुलता है तू थोड़ी दूरी पर सो जा, मेरे साथ तुझे भी जागना पड़ रहा है। यह सुन मेरे मनोमानस में विचार लहरी उठी कि गुरु का आत्मीय स्नेह कितना अनुपम होता है, गुरु कृपा से व्यक्ति भाव अटवी तो क्या भयाटवी को भी पार कर सकता है। मैंने निवेदन किया नहीं मैं यहीं सोऊंगी दिन भर तो कुछ भी सेवा नहीं मिल पाती, रात्रि का ही वक्त है सेवा से आप्लावित होने का। इसी बीच चिंतन उभरा मेरे अतीत के जीवन का जब मैंने अपने अनन्त आराध्य के प्रथम बार दर्शन किये। कितनी ही भव्य छटा। पूज्य गुरुदेव अपनी ओजस्वी अमृत देशना से सबको मंत्रमुग्ध कर रहे थे। वह दृश्य मानो भगवान महावीर की याद दिला रहा था। गुरुदेव के मुखारविंद से, "असंखयं जीविय मा पमायए", यह शास्त्रीय गाथा सुनाई हुई और उसका विशद विवेचन श्रवण कर मन में दृढ़ संकल्प किया कि इस जीवन को गुरु ही संस्कारित कर सकते हैं। जीवन संस्कारकर्ता-गुरु के चरणों में अपना सर्वस्व समर्पित करने मन आतुर हो उठा। चूंकि गुरु शरण ही उनकी तीव्र वेग से उत्थान पथ पर अग्रसित करती है। संतवाणी का भी उद्घोष है- शीश दिये गुरु मिले, तो भी सस्ता जान।

गुरु के कुशल कलापूर्ण हाथों से मेरा जीवन प्रस्तर गढ़ा गया। उनके उपकारों से उऋण नहीं हो सकती। उन पावन चरणों में मैं अपनी अन्तः श्रद्धा व कृतज्ञता का अर्घ्य अर्पण करती हूं। भगवन्.. तव पद चिन्हों पर चलकर चरम मंजिल को प्राप्त कर सकूं।

ओ सुधर्मा के पट्टधर

रानी सुराणा

ओ सुधर्मा के पट्टधर,
"हुक्म गच्छ" के प्रभाकर,
तुम्हें नमन तुम्हें नमन।
समता दर्शन के प्रणेता,
[illegible]
तुम हो शासन बाग के चन्दन,
तुम्हें नमन तुम्हें नमन।
[illegible]
[illegible]
[illegible]
तुम्हें नमन तुम्हें नमन।
गंगा सा देते दिव्य परिधान,
ओ साधना का विस्तृत वितान,
उपकारी गुरु का अर्चन पूजन,
तुम्हें नमन तुम्हें नमन।
सुना 'गुरु नाना' का प्रयाण,
चले गये, मैं करती रही गुणगान,
मेरी श्रद्धा के तुम ही स्पंदन,
तुम्हें नमन तुम्हें नमन।

❑ महासती श्री चमेली जी म. सा.

अमर व्यक्तित्व

जन-जन के आराध्य, दांता के लाड़ले सपूत, मेवाड़ माटी के गौरव, राजस्थान के राजहंस, विश्व की विरल विभूति आचार्य देव भंगुर देह का त्याग कर सदा-सदा के लिए अनन्त सागर में विलीन हो गई।

आचार्य श्री नानेश आज व्यक्ति रूप में नहीं है, लेकिन व्यक्तित्व रूप में आज भी हैं और आने वाली सदियों तक रहेंगे क्योंकि जिन पुण्यात्माओं ने आचार्य प्रवर को आंखों से देखा है वे उनकी पावन मूर्ति को अपने चित्त पर चित्रित किए हुए सदैव दीदार पाते रहेंगे। जिन्होंने उनके जीवन के विषय में सुना भर है वे अपनी कल्पना में याद करते रहेंगे। जिन्होने उस दिव्य विभूति का चरणाश्रय प्राप्त कर सेवा का प्राण प्रण से लाभ लिया, उन्होने निश्चित ही मानव जीवन को सफल कर लिया।

अतीत की स्मृति में, अनागत की कल्पना में और वर्तमान की विचार वल्लरियों में.उनका व्यक्तित्व सागर की गंभीरता, हिमालय की उत्तुंगता, गगन की विशालता, धरा सी धैर्यता, शशि की शीतलता, रवि की प्रखरता, मां की ममता, संयम की सुदृढ़ता लिए हुए सही मार्गदर्शन कराता रहेगा।

कहूं चारु चारित्र का चमकता मार्तण्ड,
या तुझे जिन शासन का मेरूदण्ड।
सभी उपमाएं बौनी हैं, तेरे व्यक्तित्व से,
तेरे बिन सूना है चमन, गगन और भूखंड॥

जैन संस्कृति के सुरक्षा कवच आचार्य श्री जी का संयम गंगा के नीरवत् पवित्र, उज्ज्वल एवं बेदाग था। कथनी - करनी में एकरूपता थी। आगम समेरू आचारांग सूत्र में एक सूत्र है " जहा अंतो तहा बहि" को आपने पूर्णरूपेण आत्मसात् किया था। श्रमण संस्कृति की सुरक्षा के लिए आपके फौलादी कदम निरन्तर गतिशील रहे। समय के साथ समझौता कर मर्यादा पर आंच आने देना आपके लिए नामुमकिन था। यही कारण है कि आपका अपने द्वारा शिक्षित, दीक्षित शिष्यों के प्रति भी मोह नहीं रहा। क्योंकि वे उन्हीं शांत क्रांति के उन्नायक आचार्य श्री गणेश के सुशिष्य एवं पट्टधर थे, जिन्होंने श्रमण संस्कृति की सुरक्षा के लिए संपूर्ण श्रमण संघ के उपाचार्य होने का मोह, लगाव या अभिमान नहीं रखा। शिथिलाचार पर अंकुश न लगते देख अपने आपको सुरक्षित कर लिया यानी उपाचार्य पद का त्याग कर दिया था। जीवन की अंतिम संध्या तक भी आपके यही उद्‌गार रहे कि श्रमण संस्कृति की सुरक्षा के लिए मुझे पसीना तो क्या खून की बूंदे भी देना पड़ा तो भी मेरे कदम पीछे नहीं हटेंगे।

हजारों आंखों ने प्रत्यक्ष देखा था कि इस वीर शिरोमणि ने अपनी वृद्धावस्था एवं शारीरिक अस्वस्था के बावजूद भी संघ की सुरक्षा के लिए प्रभु महावीर के शासन की जाहोजलाली करने एवं पूर्वाचार्यों की परंपरा को सुरक्षित रखने के लिए किस प्रकार मुस्तैदी चाल से मरूधरा से मेदपाट की ओर विहार किया।

आपका अमित आतमबल, सुदृढ़ साधना अंतिम संध्या तक प्रवर्धमान रही। फलस्वरूप निर्ग्रन्थ के तृतीय मनोरथ के साथ पूर्ण सजगता पूर्वक इस भौतिक देह से बिदाई ली। आप जहां भी हो सुखों में तल्लीन रहे और शीघ्रताशीघ्र शिवरमणी का वरण करें एवं हम आपके बताये मार्ग पर चलते हुए नवम पट्टधर की आज्ञा अनुशासन में रहकर लक्ष्य को प्राप्त करें।

प्रेषक : दीपिका सांखला

□ साध्वी वन्दना श्री जी म.

जीवन संस्कारकर्त्ता-गुरु

पाली वर्षावास का स्वर्णिम अवसर, मेरे अनन्त पुण्योदय से आशा फली पूज्य गुरु प्रवर के पावन कर सानिध्य की। रात्रि में पूज्या गुरुणी श्री अपने चिन्तन में संलग्न थी। मैंने कहा, "क्या आपको नींद नहीं आ रही है ?" तब फरमाया, गर्मी का विशेष प्रकोप व मच्छरों की बहुलता है तू थोड़ी दूरी पर सो जा, मेरे कारण तुझे भी जागना पड़ रहा है। यह सुन मेरे मनोमानस में विचार लहरी उठी कि गुरु का आत्मीय स्नेह कितना अनुपम होता है, गुरु कृपा से व्यक्ति भाव अटवी तो क्या भवाटवी को भी पार कर सकता है। मैंने निवेदन किया नहीं म.सा. मैं यही सोऊंगी दिन भर तो कुछ भी सेवा नहीं मिल पाती, रात्रि का ही वक्त है सेवा से आप्लावित होने का। उसी बीच चिंतन उभरा मेरे अतीत के जीवन का जब मैंने अपने अनन्त आराध्य के प्रथम बार दर्शन किये। समवशरण की सी भव्य छटा। पूज्य गुरुदेव अपनी ओजस्वी अमृत देशना से सबको मंत्रमुग्ध कर रहे थे। वह दृश्य मानो भगवान महावीर की याद दिला रहा था। गुरुदेव के मुखारविंद से, "असंख्यं जीविय मा पमायए", यह शास्त्रीय गाथा मुखरित हुई और उसका विशद विवेचन श्रवण कर मन में दृढ़ संकल्प किया कि इस जीवन को गुरु ही संस्कारित कर सकते हैं। जीवन संस्कारकर्ता-गुरु के चरणों में अपना वर्चस्व समर्पित करने मन आतुर हो उठा। चूंकि गुरु शरण ही आत्मा को तीव्र वेग से उत्थान पथ पर अग्रसित करती है। संतवाणी का भी उद्घोष है- सीस दिये गुरु मिले, तो भी सस्ता जान।

गुरु के कुशल कलापूर्ण हाथों से मेरा जीवन प्रस्तर गढ़ा गया। उनके उपकारों से उऋण नहीं हो सकती। उन पावन चरणों में मैं अपनी अन्तः श्रद्धा व कृतज्ञता का अर्घ्य अर्पण करती हूं। भगवन्.. तव पद चिन्हों पर चलकर चरम मंजिल का वरण कर सकूं।

ओ सुधर्मा के पट्टधर

रानी सुराणा

ओ सुधर्मा के पट्टधर,
"हुक्म गच्छ" के प्रभंकर,
तुम्हें नमन तुम्हें नमन।
समता दर्शन के प्रणेता,
संघर्षों में हो आत्मविजेता,
तुम हो शासन भाल के चन्दन,
तुम्हें नमन तुम्हें नमन।
समीक्षण ध्यान की दीप शिखा-
कई भव्यों का भाग्य लिखा,
मिटाया तूने विषय, कषाय, क्रंदन,
तुम्हें नमन तुम्हें नमन।
गंगा मा देते दिव्य परिधान,
ओ साधना का विस्तृत वितान,
उपकारी गुरु का अर्चन पूजन,
तुम्हें नमन तुम्हें नमन।
सुना 'गुरु नाना' का अवसान,
कहां गये, मैं करती रही संधान,
मेरी श्रद्धा के तुम हो स्पंदन,
तुम्हें नमन तुम्हें नमन।

-इन्दौर

❑ महासती श्री चमेली जी म. सा.

अमर व्यक्तित्व

जन-जन के आराध्य, दांता के लाड़ले सपूत, मेवाड़ माटी के गौरव, राजस्थान के राजहंस, विश्व की विरल विभूति आचार्य देव भंगुर देह का त्याग कर सदा-सदा के लिए अनन्त सागर में विलीन हो गई।

आचार्य श्री नानेश आज व्यक्ति रूप में नहीं है, लेकिन व्यक्तित्व रूप में आज भी हैं और आने वाली सदियों तक रहेंगे क्योंकि जिन पुण्यात्माओं ने आचार्य प्रवर को आंखों से देखा है वे उनकी पावन मूर्ति को अपने चित्त पर चित्रित किए हुए सदैव दीदार पाते रहेंगे। जिन्होंने उनके जीवन के विषय में सुना भर है वे अपनी कल्पना में याद करते रहेंगे। जिन्होंने उस दिव्य विभूति का चरणाश्रय प्राप्त कर सेवा का प्राण प्रण से लाभ लिया, उन्होंने निश्चित ही मानव जीवन को सफल कर लिया।

अतीत की स्मृति में, अनागत की कल्पना में और वर्तमान की विचार वल्लरियों में उनका व्यक्तित्व सागर की गंभीरता, हिमालय की उत्तुंगता, गगन की विशालता, धरा सी धैर्यता, शशि की शीतलता, रवि की प्रखरता, मां की ममता, संयम की सुदृढ़ता लिए हुए सही मार्गदर्शन कराता रहेगा।

कहूं चारु चारित्र का चमकता मार्तण्ड,
या तुझे जिन शासन का मेरूदण्ड।
सभी उपमाएं बौनी हैं, तेरे व्यक्तित्व से,
तेरे बिन सूना है चमन, गगन और भूखंड॥

जैन संस्कृति के सुरक्षा कवच आचार्य श्री जी का संयम गंगा के नीरवत् पवित्र, उज्ज्वल एवं बेदाग था। कथनी - करनी में एकरूपता थी। आगम समेरू आचारांग सूत्र में एक सूत्र है " जहा अंतो तहा बहि" को आपने पूर्णरूपेण आत्मसात् किया था। श्रमण संस्कृति की सुरक्षा के लिए आपके फौलादी कदम निरन्तर गतिशील रहे। समय के साथ समझौता कर मर्यादा पर आंच आने देना आपके लिए नामुमकिन था। यही कारण है कि आपका अपने द्वारा शिक्षित, दीक्षित शिष्यों के प्रति भी मोह नहीं रहा। क्योंकि वे उन्हीं शांत क्रांति के उन्नायक आचार्य श्री गणेश के सुशिष्य एवं पट्टधर थे, जिन्होंने श्रमण संस्कृति की सुरक्षा के लिए संपूर्ण श्रमण संघ के उपाचार्य होने का मोह, लगाव या अभिमान नहीं रखा। शिथिलाचार पर अंकुश न लगते देख अपने आपको सुरक्षित कर लिया यानी उपाचार्य पद का त्याग कर दिया था। जीवन की अंतिम संध्या तक भी आपके यही उद्गार रहे कि श्रमण संस्कृति की सुरक्षा के लिए मुझे पसीना तो क्या खून की बूंदे भी देना पड़ा तो भी मेरे कदम पीछे नहीं हटेंगे।

हजारों आंखों ने प्रत्यक्ष देखा था कि इस वीर शिरोमणि ने अपनी वृद्धावस्था एवं शारीरिक अस्वस्था के बावजूद भी संघ की सुरक्षा के लिए प्रभु महावीर के शासन की जाहोजलाली करने एवं पूर्वाचार्यों की परंपरा को सुरक्षित रखने के लिए किस प्रकार मुस्तैदी चाल से मरूधरा से मेदपाट की ओर विहार किया।

आपका अमित आत्मबल, सुदृढ़ साधना अंतिम संध्या तक प्रवर्धमान रही। फलस्वरूप निर्ग्रन्थ के तृतीय मनोरथ के साथ पूर्ण सजगता पूर्वक इस भौतिक देह से विदाई ली। आप जहां भी हो सुखों में तल्लीन रहे और शीघ्रातिशीघ्र शिवरमणी का वरण करें एवं हम आपके बताये मार्ग पर चलते हुए नवम पट्टधर की आज्ञा अनुशासन में रहकर लक्ष्य को प्राप्त करें।

प्रेषक : दीपिका सांखला

मां की ममता से भी बढ़कर वात्सल्य

हे समताविभूति कैसे करें तेरे गुणों का वर्णन,
तेरे ही खून-पसीने से बना यह संघ नन्दन वन ।
तेरे परम पावन पवित्र मुख कमल के दर्शन,
पाने लालायित थे सारी धरती के कण-कण ॥

पूज्य गुरुवर की आचार निष्ठा अंहिसा के अमृत से अनुरंजित थी तो जीवन ब्रह्मचर्य की तेजस्विता से स्पन्दित था । आपने क्रान्तिकारी महापुरुषों के शासन रथ को निरन्तर ऊंचाइयां प्रदान की ।

भगवन् आपका मंगल स्मरण, प्रेरक पावन और आदर्श संस्मरण आज अन्तर्मन को उद्वेलित कर रहे हैं। चाह रहे हैं कि हमारी अभिव्यक्ति सर्वप्रथम हो पर उन सब को शब्दों की डोर में बांधना मेरे लिए असंभव ही प्रतीत होता है ।

हे युगपुरुष, तेरे जीवन से संबंधित प्रत्येक घटना चाहे वह दांता ग्राम की हो, बाल्यावस्था की हो, अध्ययन विषयक हो, तरुणाई के काल की हो, धर्मपाल क्रांति की हो, मुमुक्षुओं हेतु मुक्तिमार्ग के संबल की हो, समता दर्शन दिव्य देन की हो...युगीन समस्याओं के जाल में फंसी मानव जाति का उद्धार कर समाधान की सुव्यवस्था सिद्ध करने वाली है ।

हे वात्सल्यवारिधि, तेरी ममता मां के ममत्व से भी अधिक निश्च्छलता, निस्पृहता से भरपूर जीवन को खुशियों के बसन्त से सदाबहार बनाने वाली है । इसका एक प्रत्यक्ष अनुभूत उदाहरण है, सन् १९९६ में हमें आपके पावन सानिध्य का लाभ लम्बे अर्से के बाद प्राप्त हुआ । महासती कल्याण कंवर जी म.सा. के पेट में गांठ थी। डॉक्टरी परामर्शानुसार आपरेशन कराना आवश्यक था, पर महासतीजी आपरेशन करवाना नहीं चाहते थे। कुछ भय भी था और सोचा कि पूज्य गुरुदेव की सेवा में अन्तराय लगेगी सो अन्य हौम्योपैथिक आदि से पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद एवं कृपा दृष्टि से सब ठीक हो जाएगा..पर भगवन् को जब पता चला तो तुरन्त बुलवाया और स्नेहसिक्त मधुर वाणी से फरमाया कि संयम की साधना के लिए शरीर की स्वस्थता अति आवश्यक है, आपको आपरेशन करवाना जरूरी है, आप किसी प्रकार की चिंता न करें मैं सब संभाल लूंगा । मैं आपका भाई हूँ, मेरे से किसी प्रकार का संकोच न करें ।

पूज्य गुरुदेव के पुनीत सानिध्य में ही आपरेशन सफलता पूर्वक संपन्न हुआ, थियेटर से बाहर आने के बाद आराध्य देव अपने शिष्य परिवार सहित दर्शन देने, मंगल पाठ सुनाने, पधारे की जबकि भगवन् की आंखों का आपरेशन करवाया हुआ था । इन्फेक्शन का भय था फिर भी अपने शरीर की परवाह न करके कई बार संभालने के लिए पधारे थे और जब भी पंहुचते तो स्वास्थ्य एवं पथ्य परहेज का ध्यान दिलाते । हमें भय था कि हम दो तीन छोटी-छोटी साध्वियां कैसे सेवा करेंगी पर आपके अपूर्व वात्सल्य एवं वरदान स्वरूप आशीर्वाद के तले न तो किसी प्रकार की कमी महसूस हुई और न ही कोई गड़बड़ हुई, यह है आपकी अनुपम कृपा दृष्टि का चमत्कार। ऐसे एक

हीं अनेक प्रसंग है कि आपके नाम स्मरण मात्र से विपत्ति (संकट) के घनघोर बादल पल भर में छूमंतर हो जाते थे।

हे समत्व साधक महायोगी ! आप में कषाय का उपशमन इतना जबरदस्त था कि कोई आपकी निंदा करे या स्तुति आप संभाव से रंच मात्र भी नहीं हटते थे। यही कारण है कि मौलाना साहब भी आपके चरणों मे नतमस्तक हो गए। आपकी चरणधूली से कई नीम-हकीम रोगियों के शारीरिक रोग रफू चक्कर हो गये। एक विचारक की वाणी में - सुख की चांदनी में सभी हंस सकते हैं, पर दुःख की दोपहरी में हंसना सरल नहीं। श्रद्धेय आचार्य प्रवर ने सुख की शुभ्र चांदनी में नहीं किंतु कष्टों की कठिन दुपहरी में हंसना ही सीखा था। इसीलिए आज जनमानस में समता यानी आचार्य श्री नानेश, आचार्य श्री नानेश यानी समता, ये दोनों पर्याय बन चुके हैं। अंत में -

हे गुण सिंधु ! तेरी गरिमा का नहीं है कोई पार।
कृपा की छांव सदा रखना सिर पे कृपावतार॥
तेरे ढ़ेर सारे उपकारों की बहुत लंबी है कतार।
प्रभु ! आप तो चले गये अब कैसे पाऊंगी उतार॥

- प्रेषक : मोनिका सांखला

❑ साध्वी श्री चन्द्रप्रभा श्री जी

व्यष्टि ज्योति समष्टि में लीन

परमाराध्य क्रान्तदर्शी आचार्य भगवन् के अनन्त में लीन हो जाने के कारण निर्ग्रन्थ संस्कृति की अपूरणीय क्षति हुई है।

आचार्य प्रवर ने अपने जीवन काल में ऐसे अनेक कार्य किए हैं जो सामान्य व्यक्ति के लिए संभव नहीं हैं। आप श्री का जीवन एक आदर्श जीवन था, फलतः उनकी गणना भारत के विशिष्टतम महापुरुषों में की गई है।

आचार प्रधान वीतराग संस्कृति के वे अनुपम उपमान थे। उनके सानिध्य में अनेक भव्यात्माओं ने अपूर्व शांति का अनुभव किया। यद्यपि आज उनका भौतिक विग्रह हम लोगों के समक्ष नहीं हैं तथापि उनका दिव्य भव्य सिद्ध स्वरूप सदा हम लोगों का मार्गदर्शन करता रहेगा। इसी कामना के साथ परमाराध्य के चरणों में श्रद्धा सुमन समर्पित है :-

चन्द्र कला सा रूप हृदय में,
आता उभर-उभर कर नाम।
पाद पद्म में करती प्रतिपल,
श्रद्धा रूप तुम्हें प्रणाम॥

❑ साध्वी श्री ज्योति प्रभा जी

मां की ममता से भी बढ़कर वात्सल्य

हे समताविभूति कैसे करें तेरे गुणों का वर्णन,
तेरे ही खून-पसीने से बना यह संघ नन्दन वन ।
तेरे परम पावन पवित्र मुख कमल के दर्शन,
पाने लालायित थे सारी धरती के कण-कण ॥

पूज्य गुरुवर की आचार निष्ठा अंहिसा के अमृत से अनुरंजित थी तो जीवन ब्रह्मचर्य की तेजस्विता से समन्वित था। आपने क्रान्तिकारी महापुरुषों के शासन रथ को निरन्तर ऊंचाइयां प्रदान की।

भगवन् आपका मंगल स्मरण, प्रेरक पावन और आदर्श संस्मरण आज अर्न्तमन को उद्वेलित कर रहे हैं। कह रहे हैं कि हमारी अभिव्यक्ति सर्वप्रथम हो पर उन सब को शब्दों की डोर में बांधना मेरे लिए असंभव ही प्रतीत होता है।

हे युगपुरुष, तेरे जीवन से संबंधित प्रत्येक घटना चाहे वह दांता ग्राम की हो, बाल्यावस्था की हो, अध्ययन विषयक हो, तरुणाई के काल की हो, धर्मपाल क्रांति की हो, मुमुक्षुओं हेतु मुक्तिमार्ग के संबल की हो, समता दर्शन दिव्य देन की हो...युगीन समस्याओं के जाल में फंसी मानव जाति का उद्धार कर समाधान की सुव्यवस्था सर्जित करने वाली है।

हे वात्सल्यवारिधि, तेरी ममता मां के ममत्व से भी अधिक निरच्छलता, निस्पृहता से भरपूर जीवन को खुशियों के बसन्त से सदाबहार बनाने वाली है। इसका एक प्रत्यक्ष अनुभूत उदाहरण है, सन् १९९६ में हमें आपके पावन सानिध्य का लाभ लम्बे अर्से के बाद प्राप्त हुआ। महासती कल्याण कंवर जी म.सा. के पेट में गांठ थी। डॉक्टरी परामर्शानुसार आपरेशन कराना आवश्यक था, पर महासतीजी आपरेशन करवाना नहीं चाहते थे। कुछ भय भी था और सोचा कि पूज्य गुरुदेव की सेवा में अन्तराय लगेगी सो अन्य हौम्योपैथिक आदि से पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद एवं कृपा दृष्टि से सब ठीक हो जाएगा..पर भगवन् को जब पता चला तो तुरन्त बुलवाया और स्नेहसिक्त मधुर वाणी से फरमाया कि संयम की साधना के लिए शरीर की स्वस्थता अति आवश्यक है, आपको आपरेशन करवाना जरूरी है, आप किसी प्रकार की चिंता न करें मैं सब संभाल लूंगा। मैं आपका भाई हूँ, मेरे से किसी प्रकार का संकोच न करें।

पूज्य गुरुदेव के पुनीत सानिध्य में ही आपरेशन सफलता पूर्वक संपन्न हुआ, थियेटर से बाहर आने के बाद आराध्य देव अपने शिष्य परिवार सहित दर्शन देने, मंगल पाठ सुनाने, पधारे की जबकि भगवन् की आंखों का आपरेशन करवाया हुआ था। इन्फेक्शन का भय था फिर भी अपने शरीर की परवाह न करके कई बार संभालने के लिए पधारे थे और जब भी पंहुचते तो स्वास्थ्य एवं पथ्य परहेज का ध्यान दिलाते। हमें भय था कि हम दो तीन छोटी-छोटी साध्वियां कैसे सेवा करेंगी पर आपके अपूर्व वात्सल्य एवं वरदान स्वरूप आशीर्वाद के तले न तो किसी प्रकार की कमी महसूस हुई और न ही कोई गड़बड़ हुई, यह है आपकी अनुपम कृपा दृष्टि का चमत्कार। ऐसे एक

नहीं अनेक प्रसंग है कि आपके नाम स्मरण मात्र से विपत्ति (संकट) के घनघोर बादल पल भर में छूमंतर हो जाते थे।

हे समत्व साधक महायोगी ! आप में कषाय का उपशमन इतना जबरदस्त था कि कोई आपकी निंदा करे या स्तुति आप संभाव से रंच मात्र भी नहीं हटते थे। यही कारण है कि मौलाना साहब भी आपके चरणों मे नतमस्तक हो गए। आपकी चरणधूली से कई नीम-हकीम रोगियों के शारीरिक रोग रफू चक्कर हो गये। एक विचारक की वाणी में - सुख की चांदनी में सभी हंस सकते हैं, पर दुःख की दोपहरी में हंसना सरल नहीं। श्रद्धेय आचार्य प्रवर ने सुख की शुभ्र चांदनी में नहीं किंतु कष्टों की कठिन दुपहरी में हंसना ही सीखा था। इसीलिए आज जनमानस में समता यानी आचार्य श्री नानेश, आचार्य श्री मानेश यानी समता, ये दोनों पर्याय बन चुके हैं। अंत में -

हे गुण सिंधु ! तेरी गरिमा का नहीं है कोई पार।
कृपा की छांव सदा रखना सिर पे कृपावतार ॥
तेरे ढ़ेर सारे उपकारों की बहुत लंबी है कतार।
प्रभु ! आप तो चले गये अब कैसे पाऊंगी उतार ॥

- प्रेषक : मोनिका सांखला

□ साध्वी श्री चन्द्रप्रभा श्री जी

व्यष्टि ज्योति समष्टि में लीन

परमाराध्य क्रान्तदर्शी आचार्य भगवन् के अनन्त में लीन हो जाने के कारण निर्ग्रन्थ संस्कृति की अपूरणीय क्षति हुई है।

आचार्य प्रवर ने अपने जीवन काल में ऐसे अनेक कार्य किए हैं जो सामान्य व्यक्ति के लिए संभव नहीं हैं। आप श्री का जीवन एक आदर्श जीवन था, फलतः उनकी गणना भारत के विशिष्टतम महापुरुषों में की गई है।

आचार प्रधान वीतराग संस्कृति के वे अनुपम उपमान थे। उनके सानिध्य में अनेक भव्यात्माओं ने अपूर्व शांति का अनुभव किया। यद्यपि आज उनका भौतिक विग्रह हम लोगों के समक्ष नहीं हैं तथापि उनका दिव्य भव्य सिद्ध स्वरूप सदा हम लोगों का मार्गदर्शन करता रहेगा। इसी कामना के साथ परमाराध्य के चरणों में श्रद्धा सुमन समर्पित है :-

चन्द्र कला सा रूप हृदय में,
आता उभर-उभर कर नाम ।
पाद पद्म में करती प्रतिपल,
श्रद्धा रूप तुम्हें प्रणाम ॥

विलक्षण नेतृत्व सम्पन्न

इतने बड़े संघ के नाथ होते हुए भी स्वयं के लिए कहते हैं नाना (छोटा बालक) हूं। सचमुच में गुरुदेव नाना ही तो थे, बालक की तरह उनकी निश्छल वृत्ति, सहज सौम्य प्रवृत्ति थी, स्वयं को कितना लघुभूत समझा उन्होंने। अपने जीवन में लघुता की अनुभूति ही दुःशक्य है। लघुभूत बनने वाला ही ऊर्ध्वारोही बनता है।

सत्तालिप्सु व्यक्ति थोड़ी सी पद प्रतिष्ठा पाकर मदान्ध हो जाता है, पर धन्य है, प्रभु आपका जीवन कितना निस्पृह है। सं. २०३० की बात है- बीकानेर में चतुर्विध संघ के बीच आचार्य देव ने फरमाया- "कोई इस पद का भार संभाल ले तो मैं अपनी साधना में लगना चाहता हूं।" सबकी आंखें सजल हो गईं। ऐसी निस्पृहता क्यों न होगी ? निस्पृह साधक की शरण जिन्होंने पाई थी। श्रमण संघ के विशाल समुदाय के नायक शांत क्रांति के जन्मदाता स्व. गणेशाचार्य ने पद नहीं, कर्त्तव्य को महत्वपूर्ण माना था। वस्तुतः सत्तालिप्सा से दूर व्यक्ति ही कर्त्तव्य को प्रधानता दे सकता है। वे स्वयं के नहीं पूर्वाचार्यों के कीर्ति-केतु को फहराने के लिए संकल्पित थे। शासनोत्कर्ष का ऐसा अनुराग जिस हृदय में हो वही प्राणप्रण से संस्कृति के उन्नयन का दायित्व निर्भर करता है।

"समोनिंदा पसंसासु"

सामान्य व्यक्ति प्रशस्ति परक वचनों से प्रमुदित होता है किन्तु उपालम्भ या आक्षेप परक वचनों में संतुलन बनाये रखना बहुत मुश्किल है। महान विभूतियां होती हैं वे ही अन्यथा आरोप को सुनकर भी विचारों को समतोल बनाए रख सकती है। सूर्य की रश्मियों की प्रखर तेजस्विता में भी उल्लू को अंधकार का ही आभास मिले तो इसमें सूर्य का क्या दोष ? समताधीश आचार्य प्रवर की समता की परीक्षा अड़ोस-पड़ोस किसने नहीं की, परन्तु वे धृति-संपन्न पुरुष हर परीक्षण में उत्तीर्ण हुए उनका उदार मानस मधुर नीर ही बरसाता रहा। पत्थर फेंकने वालों को भी मधुर फल देता रहा।

विलक्षण नेतृत्व-क्षमता :

समय-समय पर शिष्य-शिष्याओं के मनोभावों की टोह लेकर तदनुरूप ही चातुर्मासिक क्षेत्र का निर्देश करते। जब उनकी अन्तरात्मा से कोई आवाज उठती और विशेष शासन, प्रभावना का लाभ दृष्टिगत होता तो, योग्यतानुरूप निर्देश भी फरमाते थे। जिस वक्त बड़ीसादड़ी हेतु मेरा नाम संकेतित किया, तब मैंने निवेदन किया- भगवन् .. बड़ीसादड़ी ऐसा क्षेत्र है जहां के वरिष्ठ श्रावकों ने आचार्य श्री आनंद ऋषि जी म.सा. जैसे महापुरुषों को भी विचाराधीन कर दिया। मैं तो ठहरी छोटी साध्वी। तब आचार्य देव के श्रीमुख से सहज वाणी निसृत हुई- सतीजी... आप इतना क्यों सोच रही हो, आपका चातुर्मास अच्छा होगा, ऐसी कोई बात नहीं है.. "गुरु आज्ञा गरीयसी" इसी चिन्तन के साथ बड़ीसादड़ी क्षेत्र की तरफ कदम बढ़ गये। "गुरु आज्ञा ही आशीर्वाद" की उक्ति से वह चातुर्मास भव्य रहा। संघीय विभेद की दीवार ढ़ह गई। मैंने अनुभव किया वह चातुर्मास गुरु कृपा की बदौलत ही उपलब्धिपूर्ण बना।

जिन्होंने उनके जीवन को समझा, वह उनकी महक से प्रभावित हुए बिना नहीं रहा, उनके गुण केवल भक्तों ने ही नहीं गाये, इतर सम्प्रदाय के संत-सती वर्ग ने भी तहेदिल से उनका गुणकीर्तन किया।

मैं अपनी अल्प बुद्धि से उनके जीवन की विशिष्टताओं का क्या आकलन करूं, जैसे सुदृढ़ बुनियाद पर भव्य प्रासाद निर्मित होता है, ठीक वैसे ही आचार्य देव ने संयमी जीवन में प्रवेश करने के साथ ही 'अक्रोध तप' की बुनियाद डाल दी और सतत बढ़ते चरणों ने 'साधना के प्रासाद पर समता का भव्य कलश'' स्थापित किया।

भगवती सूत्र में वीर वाणी का उद्घोष हुआ है- यदि आचार्य शुद्ध संयम के परिपालन पूर्वक चतुर्विध संघ की सार संभाल पूर्ण वफादारी के साथ करते हैं, तो तीसरे भव में अवश्यंभूत कर्म विमुक्त बन अजर-अमर-सिद्ध-स्वरूप को उपलब्ध होते हैं।

हमारे रग-रग में आचार्य देव के प्रति समर्पित भावना रक्त कोशिकावत अविरल प्रवहमान है। आचार्य भगवन् ने जो धरोहर अपनी ही प्रतिकृति शासन नायक के रूप में प्रदान की है, वह धरोहर है आचार क्रांति की। उस आचार क्रांति में विचार क्रांति और संस्कार क्रांति भी सम्मिलित है। उस आचार, विचार और संस्कार क्रांति को विराटता प्रदान कर संघ गौरव की अभिवृद्धि करें, यही मंगलाभिप्सा है। गणेशाचार्य की शांत क्रांति को समता के परिवेश में महाक्रांति के रूप में ढालकर नानेशाचार्य ने ''राम के भरोसे'' काम सौंप दिया है। अवश्य ही ये महापुरुष चतुर्विध संघ को नवीन गरिमा प्रदान करेंगे।

जीवन सफल किया

पं. श्री उदयमुनिजी म.सा., जैन सिद्धान्ताचार्य

धन्य ग्राम दांता जहां आपने जन्म लिया।
धार संयम जीवन कुल का नाम रोशन किया॥
मोड़ी-शृंगार के लाल, श्रद्धा से नमन है तुम्हें।
बनाए सहस्त्रों धर्मपाल, धर्म ध्वज ऊंचा किया॥
महापुरुषों का जीवन प्रेरणादायी होता है।
सफल जीवन उनका जो सीख लेता है॥
पूज्य नाना का जीवन गुणों का भण्डार 'उदय'।
अपनायें इसे जो नर वह भव पार होता है॥
सांसारिक नश्वरता को भर यौवन में जान लिया।
त्याग भोग-विलास, संयम अपनाने का ठान लिया॥
शुद्ध हो भावना तो अवश्य फलती है प्रिय-शिष्य।
गणेश गुरु का पा सानिध्य जीवन सफल किया॥
आचार्य श्री नानेश को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।
मिले शांति तव आत्मा को यही कामना करते हैं॥
महासंतों का जीवन सदा प्रेरणादायी होता 'उदयचंद'।
मिलती रहे आपसे प्रेरणा यही शुभ भावना धरते हैं॥

-मंदसौर (म.प्र.)

❑ आचार्य नानेश की प्रथम शिष्या महासती श्री सुशीलाजी म.सा.

सत्य, समता व सहिष्णुता की त्रिवेणी

वरिष्ठ व्यक्तित्व के धनी हमारे आचार्य भगवन् जैन जगत के दैदीप्यमान नक्षत्र थे। प्रारंभ से ही समतामय जीवन जिया और समतामय जीवन जीने का उपदेश दिया। अपने प्रचण्ड पुरुषार्थ से इस नाना बगिया को खूब सिंचित किया। नाशवान तन की परवाह न कर सारा जीवन ही चतुर्विध संघ को सशक्त बनाने में लगा दिया।

गुरुदेव की गुणपूंजा को मेरी छोटी सी जिह्वा व्यक्त करने में सक्षम नहीं है। आप श्री की वाणी में त्याग का ओज, मनन का गांभीर्य तथा तत्त्व दर्शन का अमिट सत्य था। आपने शास्त्र में "खंति से विज्ज पंडिए" की सूक्ति को आत्मसात कर लिया। संघ की विपरीत परिस्थितियों में आप श्री बिना किसी व्यग्रता के समता का आचरण ही करते रहे। भगवन् के नेत्रों से ऐसा अमृत झरता था कि उस झरने में अवगाहित होने के लिए जनता उमड़ पड़ती। एक बार जो दर्शन कर लेता पुन. चरणों में पहुंचता। ऐसा चुम्बकीय आकर्षण कि वहां से हटने का दिल ही नहीं करता। सत्य, समता, सहिष्णुता की त्रिवेणी निरंतर बहती रहती। उसी समता करुणा से एक लाख दलित वर्ग का उद्धार करके उन्हें धर्मपाल बनाया। तनाव युक्त जीवन को सही जीने के लिए समीक्षण ध्यान की विधि बतलाई। साथ ही हमें विपुल साहित्य दिया।

हमारे ऊपर आचार्य श्री के महान् उपकार हैं। हम इस उपकार के ऋणी हैं व ऋणी रहेंगे। ऐसे महान आचार्य वर्तमान समय में एक ही थे। उनकी सानी का कोई साधक नहीं। ऐसी विरल विभूति को हमने खो दिया। गुरुदेव ने तो जीवन को अंतिम संध्या तक जाग्रति के क्षणों में जिया। समझ लिया कि साधना शरीर को सताना नहीं बल्कि आत्मा को साधना है। आत्म-साधना व विशिष्ट त्याग तप की धूप में आसक्ति को सूखाकर अंतिम सांस तक साधना की गहराई में रम गये। शरीर थक गया किन्तु आत्मा कुन्दन की भांति दीप्त हो उठी।

शरीर से ममत्व छोड़कर आत्म-साधना में तल्लीन बन गये। उस अस्वस्थ अवस्था को भी हर क्षण, जाग्रत रहकर, अगले जीवन का पाथेय रूप संथारा लेकर मृत्यु का स्वागत किया। ऐसे वीर साधक महान आचार्य भगवन् को श्रद्धांजलि किन शब्दों में अर्पित करूं यह बुद्धि से परे है। कहा है-

देह छतां जे नी दशा वर्ते देहातीत।
ते ज्ञानी ना चरण मां वंदन अगणित।

अतः आप श्री का जीवन उत्सव बन गया व मृत्यु महोत्सव बन गई।

देह में रहते हुए भी आपने देहातीत की साधना की। आज वह महान् ज्योतिपुंज हमारे बीच में भौतिक पिण्ड से नहीं है। वे तो अपनी साधना की अपरिमित खुशबू फैलाकर अनंत में विलीन हो गये। लेकिन भगवान की अद्‌भुत ज्ञान ज्योति से दीप्त विचार तमसावृत हृदयों को आलोकित करते रहेंगे।

गुरुदेव के दर्शन की तीव्रतम तड़फ लग रही थी कि चातुर्मास उठते ही पहुंच जाएं, लेकिन भाग्य में दर्शन नसीब कहां ? दर्शन की ये प्यासी आंखें सदा सदा के लिए अब प्यासी रहेंगी।

आराध्य देव ने हमें एक ऐसा हीरा दिया जो कि आज नवम पट पर सुशोभित हो रहा है। वे चर्तुविध श्री संघ को अपनी ज्ञान की प्रभा से प्रकाशित, चारित्र की सुगंध से सुवासित और तप की प्रकर्षता से प्रभावित कर रहे हैं। ऐसे नवम् पट्टधर को अभिनन्दन एवं बधाई।

प्रेषक - सुशील खटोड़, मनावर

हृदय रूपी कैमरे में सुरक्षित

किस्मत पर कहर ढाने वाली ए मौत.. तू क्यों न मरी,
तूने ही तो इस जहां की अंखियां गम के अश्रुओं से भरी।
काश, न जाती समता विभूति पर तेरी यों तिरछी नजर,
तो सूनी ना होती, हुक्म शासन की बगिया ये हरी-भरी ॥

२७ अक्टूबर की निस्तब्ध रात्रि, सहसा आराध्य प्रवर के महाप्रयाण का दुःखद समाचार सुनते ही मन व्यथित हो गया, धैर्य विह्वलता की आंधी में धराशायी हो गया, वाणी स्तंभित हो गई, वातावरण में शून्यता छा गई, मति विवेक शून्य हो गई। नेत्र सजल हो गये, आंखें उस मृत्यु के मूल को खोजने अश्कों के पथ बेतहाशा भागने लगी और पथिकों से पूछने लगी क्या वात्सल्य निर्झर, आगम पुरुष उस दिव्य आत्मा की देह अमरता की राही नहीं बन सकती ? हम जैसे पामरों की आयु उन्हें समर्पित नहीं हो सकती।

अन्तर की गहराई में दृष्टिपात किया तो अहसास हुआ कि उस दिव्य विभूति का महाप्रयाण नहीं हुआ, वे तो अमर हो गये। चर्म चक्षुओं से उनका देहपिण्ड ओझल हो गया, पर उनकी अमर कृतियां, पावन स्मृतियां, प्रेरणास्पद सद् शिक्षाएं हमारे हृदय रूपी कैमरे में तस्वीर का रूप धारण किए सुरक्षित हैं। जब चाहे तब शीश झुकाकर अन्तर्निहित पावन तस्वीर का दिव्य दर्शन हमारे लिए वरदान स्वरूप है। जो जीवन के हर मोड़ पर 'रडार' की भांति पथ प्रदर्शक बनने की अतुल सामर्थ्य रखती है-

संयम, समता, क्षमता, सरलता, सहिष्णुता, आदि अनन्त गुण सदैव आप श्री की जीवन सरिता में प्रवाहित होते थे। आपका जीवन महान् था। उस महानता का मूल्यांकन चंद शब्दों में या सतही दृष्टि से नहीं किया जा सकता। न ही ऐसी कोई तराजु है जिसमें उसे तौल सकें। जो साधक स्व का विसर्जन कर स्वयं को तराशता है, अपने अस्तित्व को विविध आयाम देता है, उसकी जीवन दृष्टि, उसका जीवन दर्शन अनूठा होता है।

हे समता सिन्धु, आप कोहिनूर हीरे एवं रत्नों का परीक्षण करने वाली विचक्षण प्रज्ञा के धनी थे। शांत क्रान्ति के अग्रदूत श्री गणेशाचार्य ने जब भावी उत्तराधिकारी की भावना से आपका परीक्षण किया,कसौटी पर कसा तब आप विनय, विवेक, जीवंतता, सहनशीलता, माध्यस्थता, दूरदर्शिता, निर्णय क्षमता, आदि सभी अर्हताओं में सर्वोपरि रहे, यानी कसौटी पर शत प्रतिशत खरे उतरे और अद्भुत प्रज्ञापुञ्ज पंचमाचार्य पूज्य श्री श्रीलाल जी म.सा. की वाणी को सार्थकता दृष्टि से परख कर अपने सुघड़ करों से तराशकर अनमोल रत्न समाज को समर्पित किया है। जो पूर्वाचार्यो की समस्त परम्पराओं, आदर्शों एवं सिद्धांतों की रक्षा करते हुए सार्वभौम चिन्तन से, ऊर्जस्वल क्षमताओं से दूरदर्शिता पूर्ण निर्णयों से, शासन को समृद्ध, सिंचित एवं विकसित कर रहे हैं।

हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि प्रशान्त मूर्ति आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म.सा. आपकी हर ख्वाहिश को बखूबी पूर्णता प्रदान करेंगे और भव्य आत्माओं को अनुपम अपवर्ग की राह दिखायेगें।

दीप दीप से जला, दीप जलकर अमर हो गया।
राम को अनुशास्ता बना, गम में खुशी दे अमर हो गया ॥

प्रस्तोता- अंगुरबाला जैन

सत्य, समता व सहिष्णुता की त्रिवेणी

वरिष्ठ व्यक्तित्व के धनी हमारे आचार्य भगवन् जैन जगत के दैदीप्यमान नक्षत्र थे। प्रारंभ से ही समतामय जीवन जिया और समतामय जीवन जीने का उपदेश दिया। अपने प्रचण्ड पुरुषार्थ से इस नाना बगिया को खूब सिंचित किया। नाशवान तन की परवाह न कर सारा जीवन ही चतुर्विध संघ को सशक्त बनाने में लगा दिया।

गुरुदेव की गुणपूंजा को मेरी छोटी सी जिह्वा व्यक्त करने में सक्षम नहीं है। आप श्री की वाणी में त्याग का ओज, मनन का गांभीर्य तथा तत्त्व दर्शन का अमिट सत्य था। आपने शास्त्र में "खंति से विज्ज पंडिए" की सूक्ति को आत्मसात कर लिया। संघ की विपरीत परिस्थितियों में आप श्री बिना किसी व्यग्रता के समता का आचरण ही करते रहे। भगवन् के नेत्रों से ऐसा अमृत झरता था कि उस झरने में अवगाहित होने के लिए जनता उमड़ पड़ती। एक बार जो दर्शन कर लेता पुन चरणों में पहुंचता। ऐसा चुम्बकीय आकर्षण कि वहां से हटने का दिल ही नहीं करता। सत्य, समता, सहिष्णुता की त्रिवेणी निरंतर बहती रहती। उसी समता करुणा से एक लाख दलित वर्ग का उद्धार करके उन्हें धर्मपाल बनाया। तनाव युक्त जीवन को सही जीने के लिए समीक्षण ध्यान की विधि बतलाई। साथ ही हमें विपुल साहित्य दिया।

हमारे ऊपर आचार्य श्री के महान् उपकार हैं। हम इस उपकार के ऋणी हैं व ऋणी रहेंगे। ऐसे महान आचार्य वर्तमान समय में एक ही थे। उनकी सानी का कोई साधक नहीं। ऐसी विरल विभूति को हमने खो दिया। गुरुदेव ने तो जीवन को अंतिम संध्या तक जाग्रति के क्षणों में जिया। समझ लिया कि साधना शरीर को सताना नहीं बल्कि आत्मा को साधना है। आत्म-साधना व विशिष्ट त्याग तप की धूप में आसक्ति को सूखाकर अंतिम सांस तक साधना की गहराई में रम गये। शरीर थक गया किन्तु आत्मा कुन्दन की भांति दीप्त हो उठी।

शरीर से ममत्व छोड़कर आत्म-साधना में तल्लीन बन गये। उस अस्वस्थ अवस्था को भी हर क्षण, जाग्रत रहकर, अगले जीवन का पाथेय रूप संथारा लेकर मृत्यु का स्वागत किया। ऐसे वीर साधक महान आचार्य भगवन् को श्रद्धांजलि किन शब्दों में अर्पित करूं यह बुद्धि से परे है। कहा है-

देह छतां जे नी दशा वर्ते देहातीत।
ते ज्ञानी ना चरण मां वंदन अगणित।

अत. आप श्री का जीवन उत्सव बन गया व मृत्यु महोत्सव बन गई।

देह में रहते हुए भी आपने देहातीत की साधना की। आज वह महान् ज्योतिपुंज हमारे बीच में भौतिक पिण्ड से नहीं है। वे तो अपनी साधना की अपरिमित खुशबू फैलाकर अनंत में विलीन हो गये। लेकिन भगवान की अद्भुत ज्ञान ज्योति से दीप्त विचार तमसावृत हृदयों को आलोकित करते रहेंगे।

गुरुदेव के दर्शन की तीव्रतम तड़फ लग रही थी कि चातुर्मास उठते ही पहुंच जाएं, लेकिन भाग्य में दर्शन नसीब कहां ? दर्शन की ये प्यासी आंखें सदा सदा के लिए अब प्यासी रहेंगी।

आराध्य देव ने हमें एक ऐसा हीरा दिया जो कि आज नवम पट पर सुशोभित हो रहा है। वे चर्तुविध श्री संघ को अपनी ज्ञान की प्रभा से प्रकाशित, चारित्र की सुगंध से सुवासित और तप की प्रकर्षता से प्रभावित कर रहे हैं। ऐसे नवम् पट्टधर को अभिनन्दन एवं बधाई।

प्रेषक - सुशील खटोड़, मनावर

हृदय रूपी कैमरे में सुरक्षित

किस्मत पर कहर ढाने वाली ए मौत.. तू क्यों न मरी,
तूने ही तो इस जहां की अंखियां गम के अश्रुओं से भरी।
काश, न जाती समता विभूति पर तेरी यों तिरछी नजर,
तो सूनी ना होती, हुक्म शासन की बगिया ये हरी-भरी ॥

२७ अक्टूबर की निस्तब्ध रात्रि, सहसा आराध्य प्रवर के महाप्रयाण का दुःखद समाचार सुनते ही मन व्यथित हो गया, धैर्य विह्वलता की आंधी में धराशायी हो गया, वाणी स्तंभित हो गई, वातावरण में शून्यता छा गई, मति विवेक शून्य हो गई। नेत्र सजल हो गये, आंखें उस मृत्यु के मूल को खोजने अश्कों के पथ बेतहाशा भागने लगी और पथिकों से पूछने लगी क्या वात्सल्य निर्झर, आगम पुरुष उस दिव्य आत्मा की देह अमरता की राही नहीं बन सकती ? हम जैसे पामरों की आयु उन्हें समर्पित नहीं हो सकती।

अन्तर की गहराई में दृष्टिपात किया तो अहसास हुआ कि उस दिव्य विभूति का महाप्रयाण नहीं हुआ, वे तो अमर हो गये। चर्म चक्षुओं से उनका देहपिण्ड ओझल हो गया, पर उनकी अमर कृतियां, पावन स्मृतियां, प्रेरणास्पद सद् शिक्षाएं हमारे हृदय रूपी कैमरे में तस्वीर का रूप धारण किए सुरक्षित हैं। जब चाहे तब शीश झुकाकर अन्तर्निहित पावन तस्वीर का दिव्य दर्शन हमारे लिए वरदान स्वरूप है। जो जीवन के हर मोड़ पर 'रडार' की भांति पथ प्रदर्शक बनने की अतुल सामर्थ्य रखती है-

संयम, समता, क्षमता, सरलता, सहिष्णुता, आदि अनन्त गुण सदैव आप श्री की जीवन सरिता में प्रवाहित होते थे। आपका जीवन महान् था। उस महानता का मूल्यांकन चंद शब्दों में या सतही दृष्टि से नहीं किया जा सकता। न ही ऐसी कोई तराजु है जिसमें उसे तौल सकें। जो साधक स्व का विसर्जन कर स्वयं को तराशता है, अपने अस्तित्व को विविध आयाम देता है, उसकी जीवन दृष्टि, उसका जीवन दर्शन अनूठा होता है।

हे समता सिन्धु, आप कोहिनूर हीरे एवं रत्नों का परीक्षण करने वाली विचक्षण प्रज्ञा के धनी थे। शांत क्रान्ति के अग्रदूत श्री गणेशाचार्य ने जब भावी उत्तराधिकारी की भावना से आपका परीक्षण किया,कसौटी पर कसा तब आप विनय, विवेक, जीवंतता, सहनशीलता, माध्यस्थता, दूरदर्शिता, निर्णय क्षमता, आदि सभी अर्हताओं में सर्वोपरि रहे, यानी कसौटी पर शत प्रतिशत खरे उतरे और अद्भुत प्रज्ञापुञ्ज पंचमाचार्य पूज्य श्री श्रीलाल जी म.सा. की वाणी को सार्थकता दृष्टि से परख कर अपने सुघड़ करों से तराशकर अनमोल रत्न समाज को समर्पित किया है। जो पूर्वाचार्यो की समस्त परम्पराओं, आदर्शों एवं सिद्धांतों की रक्षा करते हुए सार्वभौम चिन्तन से, ऊर्जस्वल क्षमताओं से दूरदर्शिता पूर्ण निर्णयों से, शासन को समृद्ध, सिंचित एवं विकसित कर रहे हैं।

हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि प्रशान्त मूर्ति आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म.सा. आपकी हर ख्वाहिश को बखूबी पूर्णता प्रदान करेंगे और भव्य आत्माओं को अनुपम अपवर्ग की राह दिखायेंगे।

दीप दीप से जला, दीप जलकर अमर हो गया।
राम को अनुशास्ता बना, गम में खुशी दे अमर हो गया॥

प्रस्तोता- अंगुरबाला जैन

❑ महासती श्री मंगला श्री जी म.सा.

मैत्री के संदेशवाहक

आचार्य नानेश एक तेजस्वी, यशस्वी, वर्चस्वी आचार्य थे। बीसवीं सदी के भाल (मस्तक) पर आपने अपने कृतित्व की अमिट छाप छोड़ी है, वह इतिहास के पृष्ठों पर स्वर्ण अक्षरों में अंकित रहेगी। आपका आभावलय पवित्र और मुख मंडल प्रसन्नता का निकेतन था। आपके अंतःकरण में सदा समता का निर्झर प्रवाहित था। आप श्री जी का हृदय करूणा, वत्सलता का दरिया था।

आप में सूर्य की तेजस्विता, चंद्र सी निर्मलता,सागर सी गंभीरता के दर्शन एक साथ किए जा सकते थे। आकाश व सागर अमाप्य हैं, वैसे ही आप श्री के गुणों को कागज पर उतारना अशक्य है। आप श्री जी आत्म-चेतना के महासागर थे जिसे शब्दों की सीपी मे कैसे भरा जा सकता है ?

आप श्री जी के पद पंकज पवित्रता के पथ पर गतिशील थे। अभय की मुद्रा में आपके हाथ उठते थे। नयनों में करुणा का तेज व मुख मंडल पर समता का ओज था, वचनों से हमेशा मंगल मैत्री का संदेश प्रस्फुटित होता था।

पू. गुरुदेव ने धर्म संघ को ही नहीं पूरी मानव जाति को समता, करुणा, वात्सल्यता दी है। वे जन-जन के आस्था के केन्द्र बन गए थे। हम आपके उपकारों से एक जनम तो क्या कभी भी ऋणमुक्त नहीं हो पायेंगे। जगत के रंगमंच से आपने बिदाई ली है, किन्तु आपके स्पंदन समग्र मानव जाति के लिए प्रेरणा स्रोत रहेगें। आपकी शिक्षायें सदियों तक मानव जाति का उद्धार करती रहेंगी।

कण–कण करता क्रन्दन

महासती श्री हेमप्रभा जी म.सा.

रामेश गुरु तुम्हे वंदन है, करते शत्-२ अभिनन्दन हैं।
नानेश गुरु बिन जीवन का, हर कण-२ करता क्रन्दन है ॥ टेर ॥

दांता नगरी के दातारा है, मोड़ी कुल के उजियारा है।
ओसवंश की शान गुरु, मां शृंगारा के नन्दन है ॥१॥

गणेशी से संयम पाया, आतम का सच्चा धन पाया
समता और समीक्षण ध्यानी ने, जीवन को बनाया है ॥२॥

गुरुवर तुम किस लोक चले, यहां आतम का आलोक जले,
पावन कृपा की ऊर्जा से मेरा जीवन करना चंदन है ॥३॥

दुख के बादल सब दूर हुए, संघपति श्रीराम हुए,
जिनशासन महके गुलाब सम, सतीमंडल करती गुंजन है ॥४॥

मृत्यु से अमरत्व की ओर

जन्म आपका मंगलकारी, प्रवर्ज्या थी पावनकारी,
प्रकृति जिनकी प्रेम क्यारी, जिनाज्ञा जिन्हें प्राण से प्यारी ।
कृति जिनकी कल्याणकारी, आहुति जिनकी आह्लादकारी,
थे अनंत गुणों के धारी, स्वीकारो श्रद्धांजलि हमारी ॥

परम आराध्य आचार्य नानेश के महाप्रयाण की सूचना संपूर्ण भारत में काली घटा बन व्यथा (पीड़ा) का सलिल बरसा गई । लाखों हृदय की आशापूर्ण ज्योति अचानक बुझ गई । ऐसा लग रहा है मानो संपूर्ण संघ आज प्राण विहीन हो गया । जिनकी एक दृष्टि मात्र पाने को लोग तरसते थे । आज वे ही आंखें उस दृष्टि को पाने के लिए फिर तरस रही हैं, तलाश रही हैं ।

कबीर की पंक्ति में-

कबीर जब पैदा हुए, जग हंसा हम रोए ।
ऐसी करनी कर चलो हम हंसे जग रोए ॥

प्रकृति का अटल नियम है "बर्थ इज मेसेज आफ डेथ" किन्तु वे महान् आत्माएं मरकर भी अमर हो जाती हैं । आप श्री जी के गुणों का वर्णन करने के लिए शब्द कोष में हमें शब्द नहीं मिल पा रहे हैं । जितने गुण गायें जाएं उतने कम हैं । आप श्री की मधुर मुस्कान जन-मानस को बरबस अपनी ओर लोह चुम्बक वत् खींच लेती थी । एक बार जो दर्शन कर लेता वह सदा-सदा के लिए उपासक बन जाता था । आप श्री के दर्शन मात्र से भक्तजनों को गौरव की अनुभूति होती थी । मृग मरीचिका में भटके लोगों को आपने सद्राह दिखाई व 'तिण्णाणं तारयाणं ' बने ।

आप श्री जी का जीवन चंदन वन के समान था । चंदन जब हरे-भरे वृक्ष के रूप में रहता तब जगत के जीवों को शीतल छाया देता है । जब चंदन काटा जाता है तब कुल्हाड़ी को खुशबू से भर देता है । जब चंदन घिसा जाता है तब भी वातावरण को सौरभमय बना देता है, वैसे ही आप श्री जी ने हर परिस्थिति में जन-जन को तप-त्याग व धर्म की सुवास ही दी ।

आप पुष्प बनकर, जग को सुवासित कर गये ।
आप दीपक बनकर जग को आलोकित कर गये ॥
समता के सागर भक्तों के संबल,
क्यों छोड़ चले गये, आंखों में गागर ॥

आपने-

अहिंसा की आसंदी से प्रेम का पाठ पढ़ाया ।
नफरत के नासूर पर स्नेह का मरहम लगाया ॥

करुणा की कर्मशाला में परोपकार सिखाया ।
समता की लेखनी से विश्व बंधुत्व का लेख लिखाया ॥

हुक्म संघ की कीर्ति पताका दिग् दिगंत में लहरायेंगे ।
नानेश-रामेश वाटिका को सदा हरित बनाये रखेंगे ॥

❑ महासती श्री कांता श्री जी म.सा.

अज्ञान-तम के नाशक

मिट्टी में मिलने पर भी महक जाती नहीं,
तोड़ भी डालो तो हीरे की चमक जाती नहीं ।
महापुरुष कहीं भी किसी भी दशा में रहें,
मगर सद्गुणों की सुवास छिपती नहीं ॥

अज्ञानतम के नाशक, सद्गुणों के प्रकाशक, करुणा के आराधक, समता के विस्तारक परम आराध्य गुरूदेव के निर्वाण के समाचार सुन हृदय धक् से रह गया ।

इस संसार में असंख्य व्यक्ति जन्म लेते हैं व असंख्य कुसुम के समान खिलकर मुरझा जाते हैं । उनके अस्तित्व का समाज के लिए कोई विशेष महत्व नहीं रहता है । पर जो महान् आत्मा अपने आदर्श व्यक्तित्व और कर्त्तव्य की सुगंध से विश्व को सुवसित करते हैं, प्रेरणा प्रदान करते हैं, वे महापुरुष इतिहास के पृष्ठों पर अमर हो जाते हैं । समाज के लिए चिरस्मरणीय बन जाते हैं, ऐसे ही विशिष्ट महापुरुष थे आचार्य नानेश ।

वीर प्रसूता, पुण्य सलिला, रत्नगर्भा भारत भू ने अनेक ऋषि, मुनि, महर्षियों को अपनी पवित्र माटी में प्रश्रय दिया व उन्हें परवान चढ़ाया । उसी शृंखला में आचार्य नानेश के जन्म से लेकर निर्वाण (जन्म, दीक्षा, युवाचार्य, आचार्य, संथारा) तक की यात्रा का गौरव मिला है वीर भूमि मेवाड़ को ।

गुरु ही हमारी जीवन यात्रा के पथ प्रदर्शक होते हैं । वे हमारी नौका को सही दिशा में खेते हुए भव सागर पार उतार देते हैं । ऐसे अनंत उपकारी गुरुदेव ने जैन जगत के नभ में प्रखर सूर्य बन ज्ञान की रश्मियां बिखेरी हैं तथा समता की संजीवनी का जनमानस में संचार किया है । आपका जीवन ज्योतिर्मय व आचार निर्मल था । कथनी करनी में एकरूपता थी । इसलिए आपके दिव्य जीवन की छाप जन-जन में अंकित है, ऐसे अनंत उपकारी गुरुदेव का स्मरण करते हृदय भर आ रहा है । मानवता के प्रति किये गये उनके कार्य सदा याद किये जायेंगे ।

मानवता का मसीहा

जीवन में सद्‌गुरु मिले, जीवन होय महान,
अंतर का विष निकाल दे अमृत करावे पान।

आचार्य नानेश रूप समता सूर्य अचानक अस्त हो गया, जैसे पहाड़ से उतरती बरसाती नदी जम गई, से विराट चेतना शून्य में खो गई। मानवता का मसीहा इस धरती से उठ गया।

वह वाणी मौन हो गई, जिसमें संसार की कल्याण कामना थी,
वे आंखे मुंद गई जो सभी की आंखों में समता भर देती थी।

भले ही पार्थिव शरीर से आप विद्यमान नहीं है पर आप द्वारा प्रदत्त शिक्षाएं हमारे हृदय में गुंजती रहेगी।

ऐसा आशीर्वाद दो मुझे, मैं जीवन को सफल कर सकूं।
चरण चिह्नों पर चल, जीवन में महक भर सकूं।

पावन शरणा दे दो

महासती श्री सरदारकंवरजी म.सा.

ओ नाना पूज्य गुरुवर, पावन शरणा दे दो।
श्रद्धा से भजते हैं, गुरु ध्यान जरा दे दो॥
ओ अष्टम पूज्य गुरुवर, वन्दन हम करते हैं।
तेरी समता मय मूरत, गुरु उर में धरते हैं॥१॥

रामेश गुरु का मान, अंतर से बढ़ाएंगे।
तुमसे बढ़कर प्रीति, हम इनसे लगाएंगे॥
बनकर सच्चे हर दम, भक्ति शक्ति दे दो॥ २॥

पा लें मुक्ति का पद, तब तक गुरु साथ रहो।
आये जो भी संकट, पल में उनको हर लो॥
चंदना सा वीर बनके, भव पार हमें कर दो।
सरदार सतीवर को, गुरु भव से पार कर दो॥३॥

प्रेषक : तेजकुमार तांतेड़, इंदौर

वह नयन निधि अब कहाँ ?

आज हजारों हजार आंखे उन्हें ढूंढ रही हैं। सबके मन-प्राण जल बिन मीन की भांति छटपटा रहे हैं। मगर वो नयन निधि अब कहां ? एक दुस्सह वज्रपात हुआ हम पर। हम तो सोच रहे थे चातुर्मास उठते ही तुरंत आचार्य भगवन् की सेवा में पहुंचेंगे। मगर हमारी भावना मन की मन में ही रह गई।

आचार्य भगवन् के साथ बिताये हुए क्षणों की स्मृतियां एक के बाद एक मानस पटल पर उभरने लगीं। दीक्षा से पूर्व जब-जब मैं गुरु चरणों में पहुंची, आचार्य भगवन् यही फरमाते कि ममता अब तुम समता कब बनोगी। उनके मुखारविन्द से निकले हुए शब्द, उनकी शिक्षाएं, उनके निर्देश क्रमशः आंखों के आइने में तस्वीर बनकर उभर रहे हैं।

इस वर्ष हमारी बहुत इच्छा थी कि हम आचार्य भगवन् के चरणों में चातुर्मास करेंगे। मगर हमारे अंतराय कर्म थे कि हमें चातुर्मास नहीं मिल पाया। फिर भी मन में उत्साह था कि अगले वर्ष हम आचार्य भगवन् के सानिध्य में ही चातुर्मास करेगें। मगर मन की इच्छा मन में ही रह गई और रात्रि १२ बजे तो यह समाचार आ गये कि आचार्य भगवन् अपनी पार्थिव देह से हमेशा-हमेशा के लिए अलविदा हो गये। हृदय विदारक यह समाचार सुनते ही दिल रो पड़ा। कानों को विश्वास नहीं हो रहा था।

यद्यपि आचार्य भगवन् का सानिध्य मुझे बहुत कम मिल पाया क्योंकि मेरी दीक्षा को अभी सवा दो वर्ष ही हुए। फिर भी मुझे लगता है कि आचार्य भगवन् की मुझ पर बहुत कृपा थी।

जब-जब हम आचार्य भगवन के चरणों में पहुंचे एक अपूर्व शांति का अनुभव होता। इतनी अधिक प्रसन्नता होती थी कि जैसे स्वर्ग का साम्राज्य मिल गया हो। आचार्य भगवन् में इतनी अधिक आत्मीयता थी कि जो भी एक बार आप श्री के दर्शन कर लेता फिर उसे लगता कि और कहीं जाने की जरूरत ही नहीं है। आचार्य भगवन् के रोम-रोम में समता बसी हुई थी। आचार्य भगवन् का जीवन सरल, निर्मल एवं प्रांजल था।

आप श्री का जीवन अथ से इति तक वंदनीय और पूज्यनीय रहा है।

अश्रु धार बरसे

साध्वी सुप्रज्ञा जी म.सा.

नाना गुरु तुम बिन, जमाना तरसे तरसे,
तुमको ढूंढ़ें लाखों आंखें अश्रुधार बरसे ॥

पिता मोडी शृंगार मां का, हिया हरसे हरसे,
दांता गांव हुआ धन्य जन्म लिया जब से ।१।

हुक्म संघ में, गुरु गणेशी कृपा से,
शिक्षा दीक्षा पाई और, तिरा भवजल से ।२।

धर्मपाल क्षमाशील समता सौरभ से,
समीक्षण ध्यान, विनय सेवा से जीवन सरसे ।३।

चमका था संघ ऐसे धीर वीर से,
मिले मुक्ति शीघ्र ही कर्म जंजीर से ।४।

एक महकता फूल गुलाब का

यह भारत धरा अवतारों की अवतरण भूमि है, संतों की पुण्यभूमि है, वीरों की कर्मभूमि है, विचारकों की प्रचार भूमि है। यहां अनेक नर-रत्न समाज में, राष्ट्र में पैदा हुए और हो रहे हैं, उसी भारत की मेवाड़ धरा पर हमारे आराध्य महाप्रभु आचार्य नानेश का जन्म लघु ग्राम दांता में हुआ। आप श्री ने पोखरना वंश को ही गौरवान्वित नहीं किया अपितु समस्त जैन समाज को गौरवान्वित करके अपने जन्म को सार्थक कर दिया।

हमारे आचार्य करुणा के अवतार थे। उन्होने बचपन में संत के मुखारविन्द से छठे आरे का वर्णन सुना, सुनकर चिन्तन की धाराएं स्वयं को प्रेरित कर गयी और उन्होंने अपनी चिन्तन धारा को निर्मल बना दिया। आप श्री ने गणेशीलाल जी म.सा. के समीप पंच महाव्रत दीक्षा अंगीकार कर ली। दीक्षा लेते ही आप श्री के समक्ष उग्र स्वभावी संतों की सेवा का अवसर आया, आप श्री ने उन संतों की सेवा भी अच्छी तरह की जिससे उग्र स्वभावी संत को भी यह कहना पड़ गया कि अरे इस संत के सामने तो मेरा गुस्सा कपूर के समान उड़ जाता है।

जिनकी प्रज्ञा प्रखर होती है, तीक्ष्ण होती है, उनकी वाणी प्रायः मधुर व शालीन होती है, क्योंकि महापुरुष नगारे की तरह अपनी महत्ता का ढोंग नहीं पीटते, किन्तु बांसुरी की तरह शांति और धीरज के साथ जो कुछ भी बोलते हैं, सबका मन मुग्ध कर लेते हैं।

आचार्य श्री रूपी सुमन की समीपता जिस किसी भाग्यशाली को प्राप्त हुई उसे ज्ञान की सुगंध और चरित्र की सुंदरता का अनुभव अवश्य हुआ होगा। आज वह फूल हमारी आंखों के सामने नहीं है लेकिन ज्ञान की सुगंध और आचार की महक आज भी विद्यमान है। आपश्री के दिल में बच्चों के प्रति असीम अनुकंपा थी। हर मां को त्याग करवाते कि बच्चों को नहीं मारना, बच्चे की रोने की आवाज उनके दिल को झकझोर देती थी, रोते हुए बच्चे के पास वे स्वयं पहुंच जाते थे

जयपुर का चातुर्मास संपन्न करके हम विहार करके जा रहे थे। महला गांव के पूर्व मेरा एक्सीडेंट मारूति कार से हो गया। बेहोशी की अवस्था हो गई थोड़ी देर बाद ज्योंहि मुझे होश आया, आचार्य श्री मुझे दर्शन दे रहे और हिम्मत व धैर्य बंधाते हुए कह रहे, उठो चलो। मेरे पैर में ज्यादा चोट थी, खून की धारा बह रही थी, मरहम पट्टी हुई, जयपुर से डॉक्टर आए और कहा इनको जल्दी से जल्दी जयपुर पहुंचा दीजिए, एक्सीडेंट होने के बाद स्वयं डेढ कि.मी. महला गांव में पहुंचे। स्कूल में रुकने के लिए स्थान नहीं मिल पा रहा था, धर्मनिष्ठ चोरड़िया परिवार भी स्कूल वाले को समझा रहे थे। लेकिन बार-बार वह मना ही कर रहे थे लेकिन जैसे ही गुरुदेव का नाम लिया कि रक्षा करना, गुरुदेव की कृपा से स्थान मिल गया। गहरा घाव होने से एक महीने हास्पीटल में रखा गया। मेरा घाव एकदम ठीक हो गया, किसी भी तरह की तक्लीफ मेरे पैर में नहीं रही।

धन्य है ऐसे गुरु की चरण शरण को जिनके नाम की स्मृति से ही भवों-भवों के रोग, दुःख टल जाते हैं, ऐसे गुरु को पाकर हम तो क्या चतुर्विध संघ का प्रत्येक सदस्य उनका ऋणी रहेगा। आचार्य श्री भले ही पार्थिव शरीर

से हमारे मध्य विराजमान नहीं है किन्तु उनके गुण सदैव हमारे साथ रहेगें । मैं अनन्त श्रद्धा के साथ उनके श्री चरणों में अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं।

अन्त में मैं आचार्य श्री रामेश को नवम् पट्टधर बनने की बधाई देती हूं और शुभकामना करती हूं कि उनका शासन सदैव विस्तार पाता रहे...॥

❑ महासती समता श्री जी म.सा.

अमरता के संदेशवाहक

एक दिव्य दिवाकर अपना दिव्य ज्ञानालोक वसुंधा तल पर विकीर्ण कर अस्त हो गया। हरी-भरी पुष्पित पल्लवित सरस बगिया का बागवान जाता रहा। वह ज्ञान-प्रदीप बुझ गया। तप, त्याग, समता की सौरभ लुटाकर वह पथ-प्रदर्शक अनंत में समा गया। आचार्य श्री ने अपने जीवन के अंतिम श्वास तक समता का परिचय दिया । कोई भी पूज्य भगवन् को पूछते स्वास्थ्य कैसा ? आप श्री फरमाते थे, आनंद है। चेहरे को देखने पर लगता साधना उर्ध्व स्थिति की ओर बढ़ रही है। उनके चिन्तन में सूक्ष्मता, विचारों में अनंतता, संयम साधना में वज्र सम कठोरता, हृदय में फूल सी मृदुता परिलक्षित होती थी।

आज हमें प्रखर तेजस्वी संघ नायक संप्राप्त हुए हैं, पूज्य नानेश ने खून पसीने से इस हुक्म संघ के बगीचा का सिंचन किया। पूज्य रामेश को इसका माली बनाकर श्री संघ पर महद् उपकार किया। उनके गुणों की सुवास से समस्त वायुमंडल ओत-प्रोत है। आप श्री की सत्य-क्रांति की मशाल युगों-युगों तक जलती रहेगी। संघ का उपवन शत-शत युगों तक फले फूले, महकता रहे। हम सब इस शासन के सिपाही हैं, शासन की प्रगति के लिए एकजूट, रहें ताकि पूर्वाचार्यों की धरोहर सुरक्षित और हरी-भरी रह सके।

आराध्य के चरणों में

जिन व्यक्तियों के कार्य महान होते हैं उनके प्रति सहज श्रद्धा उद्बुद्ध होती है। जिन व्यक्तियों का व्यक्तित्व, ाजस्वी और उर्जस्वी होता है, उन व्यक्तियों के प्रति भक्ति भावना पैदा होती है। जिनमें सद्गुणों का मधुर समन्वय ोता है,वह व्यक्ति आराध्य बन जाता है। सुवासित सुमनों की मधुर सौरभ बिना प्रयास किए अपने आप फैलती ! वैसे ही जो महान आत्माएं होती हैं, उनके ज्ञानोपयोग, दर्शनोपयोग और आत्मानुभूति की चर्चायें भी बिना प्रयास ज दिग् दिगन्त में फैलती हैं और उस मधुर सौरभ को ग्रहण करने के लिए भक्तरूपी भंवरे भी उनके चारों ओर ांडराते हैं।

असीमता को सीमाओं में नापना, समुद्र की लहरों को नापना, तारिकाओं को गिनती की चदरिया ओढ़ाना आसान कार्य नहीं है। इसी प्रकार जाज्वल्यमान मुक्ति पथ की ओर अग्रसर आचार्य देव के अध्यात्म ज्ञान सम्पन्न जीवन को लेखनी में बांधना भी आसान नहीं। सूर्य प्रतिदिन अस्ताचल में डूबता नजर आता है, किन्तु वह कभी डूबता नहीं बल्कि प्रकाशमान ़हता है, भले ही हम उसे देख नहीं पाते ऐसे ही अध्यात्म जगत के सूर्य थे, आचार्यश्री नानेश। आप श्री का सानिध्य मुझे प्राप्त हुआ उसे भुलाया नहीं जा सकता। आचार्य भगवन् के सानिध्य में ब्यावर चातुर्मास में दोपहर मे अध्ययनार्थ जाने का सुअवसर मिलता। दोपहर में जब मैं कुछ वृद्ध महासतियां जी के साथ जैसे ही समता भवन में पहुंची वैसे ही मूसलाधार वर्षा शुरू हो गयी। अध्ययन करने के पश्चात् आचार्य श्री का सुखद सानिध्य प्राप्त हुआ। आचार्य भगवन् ने फरमाया कि वापस जाते समय वृद्ध महासतियां जी का हाथ पकड़ कर ले जाना, उनका ध्यान रखना, पैर आदि न फिसल जाए। इतनी वृद्धावस्था के बावजूद भी आचार्य भगवन् में सेवा का गुण कूट-कूट कर भरा था। यह गुण उनमे नैसर्गिक था। उनके समक्ष जब भी यह जिज्ञासा कर कि हमारे योग्य कोई सेवा ? तो आप श्री जी फरमाते कि शासन की प्रभावना ही मेरी सेवा है और वर्तमान आचार्य श्री की आज्ञा पालन हेतु प्रेरणा देते थे। अतः श्रद्धेय आचार्य श्री की आत्मा की उर्ध्वमुखी विकास की मंगल भावना के साथ श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनकी शिक्षा के अनुसार वर्तमान आचार्य श्रीजी की आज्ञा का पालन में तत्पर रहूं, यही कामना है।

पतवार बिन नौका हमारी

साध्वी चन्दनाजी म.

जीवन नौका के तुम पतवार
पतवार बिन नौका हमारी।

कहां मिलेंगे गुरु नानेश हमें,
कोई तो बता दो हमें तरीका।

नमक बिन भोजन फीका
नानेश बिन जीवन फीका।

एक बार आकर दर्शन देदो,
प्यासी अंखियां तरस रही।

राह तुम्हारी देख रही,
नयनों से आंसू बहा रही।

❑ महासती श्री हेमप्रभा जी म. सा.

माली के बिना चमन का पत्ता-पत्ता उदास

सहसा ही पूज्य आचार्य श्री के स्वर्गवास के समाचार पर विश्वास नहीं हुआ पर एक गहन धक्का-सा लगा। मनमस्तिष्क पर रह रहकर गुरुदेव की स्मृतियां कचोटती सी प्रतीत हुईं। गुरुदेव के साथ बिताए वे श्रद्धापूरित क्षण, वे प्रसंग मन के द्वार खटखटाते से प्रतीत हुए। उनकी स्मृतियां मेरे हृदय के अत्यंत कोमल तार को झंकृत करती रही और अनजाने ही कृतज्ञता से बोझिल तथा ममता व श्रद्धा से अश्रुबून्द मेरी आँखों से झलके व लुढक पड़े। मैं जानती हूं कि आँसु एक दुर्बलता का प्रतीक है। संसार के किसी भी दुःख की आग अश्रु के जल से बुझा नहीं करती, लेकिन जब तक आंखों से बूंदे नहीं छलकीं तब तक मुझे यह प्रतीत नहीं हुआ कि मेरा मन हल्का हो गया। पता नहीं था सब के गम को मिटाने वाले गुरुदेव इतनी जल्दी गहरा गम देकर चले जायेंगे। जो सुख, जो ज्ञान, जो स्नेह आप श्री के चरणों में मिलता था वह कहां मिलेगा। आज चंहु ओर घोर तमिस्रा ही व्याप्त है। आज हमारा मार्गदर्शक कहीं खो गया है। माली के बिना आज इस चमन का पत्ता-पत्ता उदास है। प्रत्येक पुष्प मुरझा गया है। उपवन की इस वीरानी को देखकर हृदय हाहाकार कर रहा है। विधि का विधान अटल है। आना-जाना सृष्टि का क्रम है, कौन बच पाया है, नियति के क्रूर हाथों से ?

गुरुदेव के अनन्त-अनन्त उपकारों की दीप शिखा हृदय मंदिर में सतत् जगमगाती रहती है। वही ज्योति हमारा सबल पाथेय है। उसी के आश्रय से ही यह जीवन सरिता आगे बढ़ती जाएगी।

आचार्य भगवन् महान् पुरुष थे। फलस्वरूप गुरु राम जैसे प्रतिभा के धनी, गुरु के नाम को दीपाने वाले योग्यतम शिष्य प्राप्त हुए। देह से गुरुदेव हमारे बीच नहीं है पर उनकी सरलता, सजगता, समता, मधुरता का प्रकाश जीवन के अंतिम सांस तक हमें मार्गदर्शन देता रहेगा। उनकी निर्देशित शिक्षाप्रद बातें हमें आज भी याद आ जाती हैं तो मन श्रद्धा से अभिभूत हो जाता है।

तू नहीं लेकिन तेरी उल्फत अभी तक दिल में है।
बुझ चुकी है शमा लेकिन रोशनी महफिल में है॥

हुए हम निराधार

साध्वी सुनीता श्रीजी

शब्दों के भावों की अभिव्यक्ति असंभव है,
गुरु नानेश की महिमा बताना असंभव है।१।

गुरु नानेश की शक्ति पहचानना असंभव है,
गुरु नाना की गरिमा गाना असंभव है।२।

नूतन अध्यात्म दृष्टि के थे सूत्रधार,
भव्य जीवन नैया के सुदृढ़ पतवार।३।

समता के आप साक्षात अवतार,
आप बिना आज हुए हम निराधार।४।

एक अधूरा स्वप्न

हमारी अनंत, असीम श्रद्धा के केन्द्र, आश्रय प्रदाता, जीवन निर्माता, परम आराध्य आचार्य श्री नानेश इस श्वर संसार से महाप्रयाण कर गए तो हम नन्हीं-नन्हीं कलिकाओं के जीवन में अनहोनी अंनचाही घटना का घट ना ही नियति का खेल है। प्रथम बार नोखामण्डी में महामहिम पुण्यात्मा महापुरुष के इन नेत्रों से दर्शन हुए । तभी से मेरे मन में उनकी सरलता, मधुरता, समता, सहजता, नम्रता आदि बस गई थी। तभी मुझे ऐसा अनुभव आ था कि पंडित, विद्वान, तार्किक, वक्ता, प्रवक्ता, सब कुछ आसानी से मिल सकते हैं, किन्तु ऐसे स्नेहिल, साधना गी गहराई में निमग्न, लाखों आंखों को शीतल शांति पहुंचाने वाली विरल विभूति, समत्व योगी का मिलना अत्यन्त ष्कर है।

मनुष्य का स्वप्न कभी साकार नहीं होता है, वह हमेशा एक टीस बनकर सालता रहता है। जब मुझे गुरुदेव क परम पवित्र शासन में आश्रय प्राप्त हुआ उस वक्त मेरे मन में भी कुछ अरमान थे। मैने भी बड़ी आशा से स्वप्न जोया था कि संयमी जीवन में एक बार गुरुदेव के प्रत्यक्ष दर्शन का लाभ लेकर बहुमूल्य सानिध्य को प्राप्त रूं। एक पोती की तरह अपने दादा की सेवा का मौका प्राप्त कर उनकी मधुर वाणी के रस को ग्रहण करूं। लेकिन रा स्वप्न टूट गया। मन के सारे संजोए गए फूल बिखर गए। चमन वीरान हो गया। मेरा जो स्वप्न था वह अधूरा ह गया। उनकी शेष यादें, उनकी मधुर स्मृतियां, जीवन को कल्याण देने वाला पैगाम मन मंदिर में बसा हुआ । मैं प्रभु से यही मंगल मंजुल मनीषा करती हूं, आशीर्वाद चाहती हूं कि मेरी साधना में, मेरी आराधना में, मेरी पासना में, जीवन के हर मोड़ पर वे वज्र के समान सम्बल बने तथा चतुर्विध संघ के हृदय सम्राट, परम आराध्य रुदेव की आत्मा क्षपक श्रेणी पर आरूढ़ होकर अतिशीघ्र मुक्ति मंजिल को प्राप्त करे।

आत्मगुणों की शीतल छांव

साध्वी सुमेधा श्री जी

समत्व भाव का दीप जलाकर,
किया है जगत उद्धार,
ध्यान समीक्षण के द्वारा ही,
खोले गुणमय भव्यतम द्वार॥

करुणा निलय दांता में जन्मे,
किया दीप्ति मय संघ परिवार,
आज लुप्त-सा देख तुम्हें,
है गिरती अश्क की कतार।

आभा विशिष्ट व्याप्त आदर्श था,
सतत स्वर थे अभिगम रम्य,
दिया विश्व को भव्य सुनहरा,
समता भाव का सुन्दर रूप॥

शान्त दान्त अक्लान्त जहां हो,
स्वीकारें अनन्त मेरे भाव,
सतत-२ देता रहता है,
आत्म गुणों की शीतल छांव॥

प्रभुता के चरणों में लघुता की पांखुरी

मैं जिस प्रकाशपुंज जीवन का संकेत कर रही हूं, उन्हीं के पावन चरणों में बहुत से साधकों ने अपने जीवन को प्रकाश की ओर बढ़ने की प्रेरणा ली और संयमाचरण की ओर अग्रसर हुई है, उस महाज्योति का नाम है- आचार्य नानेश। इस नाम के उच्चारण मात्र से अंतर में पवित्र भाव उर्मियां उत्पन्न होती हैं।

जीवन का स्वभाव-सा बन गया है, जब-जब भी हमारा नेही या परिचित हमसे बिछुड़ता है तो हमें पीड़ा होती है, परन्तु हमें वीतराग प्रभु ने मोह से विमुक्त रहने का प्रतिबोध दिया है।

मैं उनके जीवन की विशिष्टताओं को जितना ग्रहण कर पायी हूं, उन सबका सार संक्षेप यही है कि उनकी सरलता, पवित्रता, आचार निष्ठा, कष्ट सहिष्णुता, समता और विपत्ति वियोग इत्यादि को आत्मसात करने की विमल भावना हममें भी साकार हो जाए या उसका अशांश भी हममें प्रवेश पा जाए तो उनका स्मरण सच्चा साबित हो सकता है।

पर्वत में उंचाई है, परन्तु गहराई नहीं, समुद्र में गहराई है तो ऊंचाई नहीं, अमृत में रोग निवारक शक्ति है परन्तु दुर्लभ है, और जल में शीतलता है तो वह चंचल है, किन्तु संत का जीवन बहुत ही विलक्षण होता है। ऐसे ही विलक्षण व्यक्तित्व के धनी, साधना के महाप्राण, समत्व योगी, आराध्य प्रवर आचार्य श्री नानेश में पर्वत की तरह ऊंचाई भी थी तो समुद्र की तरह गहराई भी। वे अमृत की तरह दुर्लभ नहीं किन्तु सुलभ भी थे, जल की तरह शीतल होकर भी चंचल नहीं, किन्तु धीर-वीर गंभीर थे।

मेरी ओर से यही प्रभुता के चरणों में लघुता की पुष्प पांखुरी।

दे दो कृपालु हमें दर्शन

साध्वी प्रेमलताजी म.

याद करते नानेश का जीवन, भर आते हैं मेरे नयन,
क्या मुरा की छटा, पापों से हटा,
बन गये थे तारण तिरण।
भरे कांटों के पथ ये चले, राहों पे हो पत्थर भले,
अन्तर की रटन, नहीं कोई दुश्मन।
महावीर सा ही रहा चिन्तन ॥१॥
चारों तीर्थ के गुरु थे ज्ञाता, गंभीरता की कथा न पाता,
ज्ञान कितना गहन, क्रिया का मन्थन
नलिनी नीर सा था भी मनन ॥२॥
इन्द्र दया क्या गुरु की गाऊं, नहीं ऐसा अवग में पाऊं,
याद जबर करें, झोली मेरी भरे,
दे दो कृपालु हमें दर्शन ॥३॥

आस्था के अमर देवता

माला में प्रथम मणि का उपवन में प्रथम पुष्प का, गगन में प्रथम नक्षत्र का जो महत्वपूर्ण स्थान है, उससे भी सर्वोपरि स्थान वर्तमान सन्त समुदाय में मेरे आराध्य देव, मेरी आस्था के अमृत सिन्धु, आचार्य भगवन् का था। आप श्री केवल जैन जगत के उज्ज्वल सितारे ही नहीं अपितु भारतवर्ष के चमकते-दमकते ज्योतिर्पुंज रत्न थे। वे एक ऐसे अलौकिक महापुरुष थे जिनकी महिमा और गरिमा को भाषा के द्वारा व्यक्त करना संभव नहीं है। वास्तव में आचार्य देव अपने आप में इस सदी के सर्वथा मौलिक इतिहास पुरुष थे। जिनका प्रत्येक पृष्ठ और प्रत्येक पृष्ठ की पंक्ति प्रेरणास्पद थी।

आप श्री का जीवन बीज से वृक्ष, बिन्दु से सिन्धु और कण से विराट की महायात्रा का रहा है। चरैवेति-चरैवेति मन्त्र के प्रमुख स्मरण कर्ता और आचरण कर्ता रहे हैं। उन्होंने गांवों से लेकर महानगरों तक, गलियों से लेकर राजपथों तक, कुटियों से लगाकर भव्य राजप्रासादों तक निरन्तर घूम-घूमकर हुक्मेश के शासन को दीप्तिमान किया। प्रभु महावीर एवं हुक्मेश की इस बगिया में कोई आंच न आये इसलिए आपने कहा था कि "संघ एवं शासन की सुरक्षा के लिए मेरी इतनी तत्परता है कि यदि इसकी सुरक्षा करते हुए मेरा तन भी चला जाए तो मुझे कोई परवाह नहीं है।" आप श्री स्वस्थ न होने पर भी सानिध्य में रहने वाले साधु साध्वियों का पूरा-पूरा ध्यान रखते थे। आचार्य भगवन् का व्यक्तित्व महान था।

आप श्री अपने संयमशील शिष्यों से घिरे हुए व्याख्यान मण्डप में विराजमान होते तो ऐसा प्रतीत होता जैसे तारा मण्डल से घिरा हुआ चन्द्रमा सुशोभित हो रहा है। आश्चर्य तो यह है कि आपका मुख सूर्य की भांति दैदीप्यमान रहता था। मगर मुख से निकलने वाले वचन इतने मधुर और शांतिप्रद थे मानो चन्द्रमा से अमृत बरस रहा हो। उस अमृत का पान करने हजारों हजार भक्त लालायित रहते थे। ऐसे दिव्य योगीराज शरीर पिण्ड से आज हमारे बीच में नहीं हैं, लेकिन चेतना स्वरूप उन महापुरुष की दिव्य आत्मा हमारे मन मंदिर में विराजमान है। मुझे नाज है उन अनंत ज्योत पुञ्ज आचार्य नानेश के प्रति जिन्होंने अपने दीर्घ अनुभव और सूझ-बूझ के आधार पर गुदड़ी का लाल वर्तमान आचार्य प्रवर रामलाल जी म.सा. जैसे दिव्य महापुरुष को देकर हमारे ऊपर बहुत उपकार किया है। इन्हीं भावनाओं के साथ-

सीप का मोती कहूं या ज्ञान की ज्योति कहूं।
आपके दिव्य संदेश से पाप मल धोती रहूं॥

कल्पतरु चिन्तामणि सम

शासन एवं गुरु का सदा करिए सम्मान,
भूल करके भी कभी कोई न करें अपमान।
यदि कोई करोगे भूलकर भी अपमान,
तो याद रखियेगा नीचे गिरोगे धड़ाम ॥
ओ शृंगारा के कुल केतु,
बांध गये भव्यों के लिए शिवसेतु।

खिलते हुए हुक्मोद्यान में एक महान कल्पतरु वह सदा लहलहा रहा था, उस महान कल्पतरु की छत्र छाया तले भव्य आत्माएं पा रही थी विश्रान्ति और मिटा रही थी भव-भव की भ्रांति। इतने समय तक तो हम कल्पवृक्ष की महिमा सुनते ही आ रहे थे कि कल्पवृक्ष से हर व्यक्ति अपने अरमान पूर्ण कर सकते हैं लेकिन हम तो साक्षात् महाकल्पतरु रूप आचार्य श्री नानेश को पाकर हर अरमान को पूर्ण कर रहे थे और जब चाहते तब सम्पूर्ण इच्छाएँ आटोमेटिक रूप से पूर्ण हो जाती।

अचानक ही जब सुना कि गुरुदेव ने संथारा पच्चक्ख लिया है फिर भी मन को विश्वास नहीं हो रहा था। मन अवाक् रह गया। अरे यह क्या ? कुछ क्षण तो स्तब्धता छा गई। बेचारे नेत्र तो बिन दर्शन के प्यासे ही रह गये। अन्तरात्मा चिन्तन में डूबी कि अचानक ही समता विभूति आचार्य श्री नानेश को जबरन हमसे किसने छिन लिया, यह तो विधि का विधान है, इसे कौन टाल सकता है।

धन्य है, गुरुदेव आपकी समता को। आपने जो दो महान् देन संघ को दी है, "समता दर्शन व समीक्षण ध्यान", यह सदा-सदा अविस्मरणीय है। गुरुदेव जब समीक्षण ध्यान की गहन साधना में विराजते तब साक्षात भगवन का रूप ही नजर आता।

दोनों के आगे लग रहा है ध्यान। एक अकारान्त तो दूसरा इकारान्त। हम तो निहाल एवं कृतार्थ हो गए ऐसी तरण तारण की जहाज को पाकर। महापुरुषों का जीवन अनेक उपलब्धियों एवं चमत्कारों से भरपूर रहता है। उत्कृष्ट ..., साधना-शील पूज्य गुरुदेव का जीवन ठीक ऐसा था कि प्राणी प्रभावित हो जाता था। जहां भी पधारते वन , शून्य जीवन सरसब्ज बन जाते।

आपका दीप्तिमन्त रूप सहसा ही भव्यों को अपनी ओर आकर्षित कर लेता था। बिना आमन्त्रण निमंत्रण के ही भक्तगण कमल पर भ्रमरवत् मंडराने लग जाते। फलस्वरूप लाखों दलितों का उद्धार कर दानव से मानव बना दिया जिन हाथों में शस्त्र रहते थे, उन हाथों में शास्त्र एवं धार्मिक ग्रंथ थमा दिये। आचार्य देव एक विशिष्ट कलाकार एवं सच्चे जौहरी थे। सैकड़ों अनगढ़ पाषाणों को गढ़कर मूर्ति का रूप देकर उनको पूजा-प्रतिष्ठा के योग्य बनाया। मुझ बाला पर भी गुरुदेव ने अनन्त-अनन्त उपकार कर चारित्र रत्न प्रदान किया। धन्य है गुरुदेव की कृति व वृति को

।

हर परिस्थितियों में समता विभूति के रोम-रोम में समता निर्झर प्रवाहित होता हुआ ही नजर आता था। महापुरुष के जीवन में एक बहुत बड़ी विशेषता थी। पूज्य गुरुदेव हमेशा यही फरमाया करते थे, "मैं सुनता सबकी हूं करता वहीं हूं जो मेरी अन्तरात्मा को मंजूर हो।" कोई भी कार्य क्यों नहीं हो। वाणी में अद्भुत जादू कि नाम स्मरण से सारे संकट टल जाते। वे आत्मज्ञानी, समीक्षण ध्यानी, सागर सम गंभीर, पृथ्वी सम धीर, संयम साधना में मेरूवत अड़िग, अचल।

जौहरी बनकर ही हीरा परखा, गुरु राम को तुमने निरखा।
राम बनेगा नाना सरीखा, इनको पाकर जग सारा है हरखा॥

आंधी तूफान के सैंकड़ों थपेडों को सहते हुए भी उन्होंने प्राणपण से शासन की सुरक्षा की है। कोटि-कोटि धन्यवाद ऐसी उत्कृष्ट ज्योति पुंज आत्मा को आचारांग सूत्र में एक छोटा-सा सूत्र है-

"खणं जाणाहि पंडिए"

क्षण अर्थात् समय को जानने वाला ही वास्तविक पण्डित कहलाता है। आचार्य श्री नानेश के जीवन में यह सूत्र अक्षरसः घटित हो गया। ऐसी विकट परिस्थिति एवं इतनी रूग्णावस्था में बड़े-बड़े साधक भी चेतना खो बैठते हैं लेकिन शासननायक आचार्य नानेश ने आत्मव्याधि में भी अपूर्व समाधि धारण की। वे आत्माएं धन्य हुई जिन्होंने ज्योति पुंज आत्मा की अन्तिम महाज्योति के पावन दर्शन किए। भौतिक देह से भले ही गुरुदेव दूर हो गये हो लेकिन उनकी स्मृतियां हर समय मानस पटल पर अंकित रहेंगी। आचार्य श्री नानेश की आत्मा शीघ्र ही परमात्म पद को वरण करे, यही मेरी कामना है। शास्त्रज्ञ, आगम मनीषी, तरुण तपस्वी आचार्य श्री रामेश जैसे गुरुराज को पाकर मन पुलकित है।

प्रतिपल वन्दनीय अर्चनीय आप श्री की धवल कीर्ति युगों-युगों तक दिग् दिगंत में प्रसरित होती रहे, यही आन्तरिक भावना है।

❑ महासती श्री भावना श्री जी

गुलाब की तरह महका जीवन

आप श्री के गुणों का वर्णन करना मेरे लिए संभव नहीं। आप श्री की वाणी में मिठास, तन में सेवा और जीवन में निर्मलता थी। मन गद्गद् हो रहा है, आप श्री की अनेक स्मृतियां मानस पटल पर अंकित हैं। आप श्री का जीवन ज्ञान, दर्शन और चारित्र में बेजोड़ था। सुख-दुख के कांटों में भी आप श्री का जीवन गुलाब की तरह महका।

❑ महासती शर्मिला श्री जी म.सा.

प्राण ऊर्जा के सम्प्रेषक

आचार्य श्री नानेश विलक्षण महापुरुष थे। उनका व्यक्तित्व विलक्षण था, विलक्षण था पौरुष, विलक्षण था मनोबल, विलक्षण थी कार्यशैली, विलक्षण थी रुचि, विलक्षण थी प्रतिभा। एक वाक्य में कहें तो उनका हर कार्य अद्भुत और अनुपम था। विलक्षणता के साथ ही वे महान ऊर्जावान और प्राणवान थे। ऊर्जा शक्ति के भण्डार थे। उनका आभा मण्डल तेजस्वी, शरीर शक्ति सम्पन्न था। सामान्यतया अवस्था के साथ-साथ तेजस शक्ति मंद पड़ने लग जाती है किन्तु गुरुदेव का तेज तो और अधिक बढता गया। उनकी सम्प्रेषण शक्ति गजब की थी। वर्तमान आचार्य श्री जी का व्यक्तित्व आचार्य श्री नानेश के समान होने का मुख्य कारण सम्प्रेषण ही है।

कुछ लोग अंगुलियों से शक्ति संप्रेषण करते हैं, कुछ आंखों से, कुछ चरण स्पर्श से,कुछ समुच्चारित शब्द ध्वनि से किन्तु ऐसे तीर्थंकर तुल्य भगवान स्वरूप विरले ही मिलते हैं, जिनका संपूर्ण शरीर ही चुंबकीय होता है, प्राणवान होता है। आचार्य श्री नानेश ऐसे ही ऊर्जा पुरुष थे। "शरीरं ऊर्जा मंदिरं", यह उनके लिए चरितार्थ हो चुका था। मात्र उनके नाम की रचना ही कुछ ऐसी थी कि उसे उच्चारित करते ही प्राणों में नई चेतना भर जाती थी।

जैन ग्रंथों में एक घटना प्रसंग उपलब्ध है, कहा है- गौतम स्वामी अष्टापद पर जा रहे थे, रास्ते में सैकड़ों तापस गौतम स्वामी की अद्भुत क्षमता से प्रभावित होकर दीक्षा का पथ स्वीकार कर लेते हैं। रास्ते में गौतम स्वामी भगवान के समोशरण की विशेषताओं का वर्णन कर रहे थे, उसे सुनते-सुनते ही सभी को केवल ज्ञान की उपलब्धि हो गई। गुणों में कितनी बड़ी शक्ति है। जिस प्रकार गौतम स्वामी ने भगवान की विशेषता बताई और सारे तापस स्वयं को धन्य कर लिए, वैसे ही पूज्य गुरुदेव के नाम, दर्शन व चरण स्पर्श से जीवन धन्य हो जाता है।

<u>'नाना' नाम का चमत्कार</u> : दो शब्दों का यह छोटा सा नाम बड़ा चमत्कारी है। डूबते को सहारा देने वाला है। उदयरामसर के नथमल जी सिपाणी आसाम में नाव में बैठकर यात्रा कर रहे थे, अकस्मात् तूफान उठा और नाव डोलायमान हो गई। उन्होंने सिर्फ नाना नाम का स्मरण किया। वह नाव जो मझधार में डोलायमान थी, स्थिर बन गई और वे पार उतर गए। ऐसे एक नहीं अनेक उदाहरण हैं। इस नाम ने संजीवनी बूटी का काम किया है।

<u>आंखों का सम्प्रेषण</u> : नजर का प्रभाव जादुई था। कौन व्यक्ति होगा जो आप श्री के सानिध्य को पाकर छोड़ने की इच्छा करता हो ? भावनगर की वह पावन भूमि, जहां दो-दो आचार्यों का चातुर्मास एक साथ, एक ही स्थान पर था। पारिवारिक जन गुरुदेव के दर्शन करने जा रहे थे। मन में विचार हुआ मुझे भी दर्शन करना चाहिए। इस प्रकार विचार कर घरवालों से आग्रह किया, मेरे विशेष आग्रह से मुझे जाने की अनुमति मिल गई। लम्बे समय तक ट्रेन का सफर प्रथम बार करने के पश्चात् हम भावनाओं से प्रेरित भावनगर के स्थानक भवन में पहुंचे। जहां आचार्य भगवन् विराज रहे थे। प्रथम बार दर्शन किए। दर्शन करते ही मनोभावों ने नया मोड़ लिया। विचार हुआ, ये दर्शन कितने पावनकारी, शांतिदायक हैं। मुझे यह संयोग छोड़कर अब कहीं नहीं जाना है। बस वहां से भावनाओं ने नया मोड़ ले लिया। लगभग एक महीने की अवधि में मुझे बहुत कुछ सीखने, सुनने का अवसर मिला। वहां से रवाना होते-होते एक सामायिक और चौविहार का नियम लेकर घर गए। पहले से ही बहन श्री प्रमिला अपनी दीक्षा की भावनाओं में आगे बढ़ रही थी। किन्तु मैं उनसे हमेशा यही कहा करती थी कि आप भले ही दीक्षा लीजिए किन्तु

मैं नहीं लूंगी। लेकिन गुरुदेव के दर्शन मात्र से ही दीक्षा लेने की इच्छा हो गई। मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता था। इसी कारण सभी बोलते थे कि ऐसी हालत में दीक्षा लेकर क्या करोगे ? किन्तु मैंने तो मन में ठान लिया था कि मेरा स्वास्थ्य ठीक हो जाएगा, मैं अवश्य ही दीक्षा लूंगी। गुरुदेव की मुझ पर ऐसी कृपा हुई कि मेरा स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक हो गया। बस...फिर पारिवारिक जनों ने हम दोनों बहनों को आज्ञा दी और हम दोनों दीक्षित हुए। हमें ही नहीं अनेक मुमुक्षु भाई-बहनों को गुरुदेव के द्वारा ऊर्जा शक्ति प्राप्त हुई और वे हमेशा-हमेशा के लिए गुरुदेव के चरणों में समर्पित हो गए।

चरणों का सम्प्रेषण : आचार्य श्री जी के चरणों का स्पर्श मां की गोद जैसा था। प्रवचन के पश्चात् हजारों लोग लयबद्ध तरीके से उनके चरणों का स्पर्श करते रहते थे। उस समय आचार्य भगवन् को कई बार दो-तीन घंटों तक भी बैठना पड़ता था। जहां वे चरण रखते, उसके नीचे रही हुई धूल को लोग उठाकर अपने पास सुरक्षित रखते थे। आधि-व्याधि के समय उस धूल का उपयोग औषधि के रूप में करते थे।

दर्शन का सम्प्रेषण : आचार्य श्री जी के दर्शन मात्र से अनेक जीवात्माओं की आधि-व्याधियां समाप्त हुई हैं। नोखामण्डी की श्रीमती पन्नीबाई की विगत ११ वर्षों से नेत्र ज्योति समाप्त हो गई थी। गुरुदेव के दर्शन एवं मांगलिक श्रवण की इच्छा पारिवारिक जनों के समक्ष रखी। गुरुदेव पधारे, मांगलिक श्रवण कर वह वृद्धा जो गत वर्षों से खाट पर सोई थी, उस दिन उठ गई। पारिवारिक जनों ने साश्चर्य पूछा- क्या तुम्हें दीखने लगा है ? वृद्धा मां ने कहा, हां। गुरुदेव की मुझ पर असीम कृपा है। वह ८५ वर्षीय महिला दूसरे दिन तो आचार्य भगवन् के दर्शनार्थ स्वयं स्थानक में आ गई। गुरुदेव के गुणों का वर्णन मैं स्वयं अपनी लेखनी के माध्यम से अधिक लिखने में समर्थ नहीं हूं। अथ से इति तक उनका सारा जीवन क्रान्तिकारी रहा।

❑ महासती श्री प्रियलक्षणा जी म.सा.

अणु-अणु से मधु वर्षा

आचार्य भगवन् के जीवन में संयम की सजगता, शास्त्र का गंभीर ज्ञान, सहिष्णुता और चारित्र की पराकाष्ठा थी। हम इंतजार में थे कि कब चातुर्मास समाप्त हो और हमें गुरु दर्शन मिले। पर अंतराय कर्म, आप श्री की आत्म-चेतना छ महीने पहले ही जाग गई और आप देहातीत होकर स्व रमण की ओर चले गए। कितनी जागृति थी स्वयं में ? आप श्री ने समता का आचरण कर प्रयोग में दिखाया। पूज्य गुरुदेव तन से चले गये तो क्या हुआ वे हमेशा हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे, सहारा देते रहेंगे। हमें एक रत्न दिया है आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के रूप में। आज हम गुरुदेव के सिद्धांतों को जीवन में उतारे। मैं परम् पूज्य गुरुदेव से यही आशीर्वाद चाहती हूं कि मेरी संयम-यात्रा सकुशल चलती रहे। शासन चमकता रहे और वर्तमान आचार्य भगवन् हमें गुरुदेव की तरह संभालते रहें।

श्रद्धा सुमन अर्पण गुरु प्रतिपल तव चरणन ।
आन्तर से अभिनंदन करते जांये अर्चन ॥
सहिष्णुता के बादल से समता रस टपके,
सजगता के सूर्य से चारित्र किरण चमके ।
तेरे जीवन के प्रतिपल मैं गुण गाऊं,
तेरे जीवन के अणु-अणु से मधु ही मधु बरसे ॥"

गुरु कृपा बिन जीवन सूना

नैया चाहे कितनी ही सुंदर हो, परन्तु नाविक न हो तो नौका पार नहीं पहुंचती। इसी प्रकार जीवन एक नैया है, जिसके नाविक गुरुदेव थे। आत्मा अज्ञान की आंधी में फंस गई थी, उसे गुरुदेव ने ज्ञान प्रकाश दिया। मिथ्यात्व की ग्रंथि को तोड़कर सम्यक्त्व प्राप्त करने की सही राह बताई। सच कहूं तो गुरुदेव जीवन के सच्चे निर्माता थे। घड़ा मिट्टी से बनता है, पर बनता किस प्रकार है ? कुम्हार मिट्टी लाता है, उसमें पानी डालकर पिण्ड बनाता है, फिर उस पिण्ड को चाक पर चढ़ाता है, घड़े का आकार देता है, फिर अग्नि में पकाता है, तब उस घड़े की कीमत होती है। हीरा खान में पड़ा है तब उसका कोई मूल्य नहीं होता। जौहरी कच्चा माल लाकर घिसवाता है, उन्हें खराद पर चढ़ाकर चमकाता है, तब हीरा कीमती बन जाता है।

<u>गुरु अर्थात् नूतन जीवन का निर्माता</u> : बस इसी प्रकार गुरुदेव शिष्य और शिष्याओं के जीवन का नवसर्जन करते हैं। अज्ञानी व असंस्कारी जीवन के हर पल को सुसंस्कारी, गुणवान और पराक्रमी बनाते हैं और उनके जीवन का नवनिर्माण करते हैं। आपके घर में जो बल्ब का प्रकाश होता है, वह कहां से ? पावर हाऊस से कनेक्शन जुड़ा हुआ हो तो वहां से आपका घर चाहे कितना भी दूर हो, फिर भी प्रकाश आपको प्राप्त होगा और पावर हाऊस के पड़ोस में झोंपड़ी हो, पर यदि कनेक्शन जोड़ा हुआ नहीं तो बगल में होते हुए भी वहां अंधेरा रहेगा। इसी प्रकार गुरुदेव की आज्ञा और उनकी सीख के साथ यदि कनेक्शन जुड़ा होगा तो आपका जीवन भी प्रकाशित हो उठेगा। और कनेक्शन न जोड़ा हो तो उनके सानिध्य में रहने पर भी जीवन रूपी झोंपड़ी में अंधेरा ही रहेगा।

गुरुदेव के मुझ पर अनंत-अनंत उपकार हैं। गुरुदेव ने संसार में डूबती मेरी नैया को संयम का आलंबन देकर पार लगा दिया। माता-पिता तो मात्र जन्म देते हैं, पर गुरुदेव का उपकार तो जन्म-जन्मांतर तक का है। गुरुदेव सुंदर तरीके से जीवन जीने की कला सिखाते हैं। उसी प्रकार पूज्य गुरुदेव के संयम, ब्रह्मचर्य का अद्भुत प्रभाव मुझ पर पड़ा, उससे अपूर्व शांति और शीतलता अनुभव की। संयम मार्ग का जैसा सरल सर्वोच्च और स्पष्ट प्रकार का मार्गदर्शन उन्होंने दिया है, वह भवों-भव तक भूला नहीं जा सकता है। संत भगवंत जी ने मुझे गुरुदेव की राह पर चलने की प्रेरणा दी। गुरुदेव ने राणावास में ऐसी अमृतधारा बहायी कि मेरे जीवन रूपी क्षेत्र में वैराग्य का बीज दृढ़ हो गया। वैराग्य रस का झरना बहाती वाणी की वर्षा ने मेरी अंतर वीणा के तारों को झंकृत कर दिया। वे मेरे जीवन के सच्चे सलाहकार और जीवन के खिवैया बने। ऐसे तारणहार, जीवन के सच्चे खिवैया, पूज्य गुरुदेव का मुझ पर उपकार है। ऐसे ज्ञानदाता, संयमदाता, अनंतानंत उपकारी गुरुदेव के लिए मैं क्या कहूं, उनके गुण इस जीभ से वर्णित [illegible] किए जा सकते। न कलम से लिपिबद्ध किए जा सकते हैं। वे उत्तम कोटि के महान् आत्मार्थी साधक थे। कषायों की कचरापेटी और अज्ञान के अंधेरे में भटकती मुझे गुरुदेव ने सच्चे जीवन का प्रकाश प्रदान कर पांच महाव्रत रूपी अमूल्य रत्न से सजा दिया। मात्र संयमी जीवन का दान नहीं दिया अपितु संयमी जीवन की अनेक कलाएं भी सिखाई। वात्सल्य और प्रसन्नता की धारा उनके हृदय में सदैव बहती रहती थी। गुरुदेव यदि न मिले होते तो मेरी यह जीवन नैया इस भीषण संसार में थपेड़े खाती रहती। संसार में डूबती नौका को बाहर निकाल संयमी जीवन की

अनमोल भेंट देने वाले, मुरझाती जीवन नैया को अमृत स्नान कराने वाले, मिथ्यात्व के महावन में भटकती एक अबोध बाला को सही मार्ग बताने वाले, संसार की ज्वाला से उबारकर संयम का साज सजाने वाले, मोक्ष मार्ग के सोपान पर चढ़ाने वाले, अनंत-अनंत उपकारी, समीक्षण ध्यान योगी, समता विभूति पूज्य गुरुदेव का उपकार भला कैसे भूला जा सकता है ? आज अरिहंत प्रभु की गैर हाजिरी में गुरु ही जीवन का आधार है "गुरुब्रह्मः, गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः, गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः" गुरु ही ब्रह्म है, गुरु ही विष्णु है और महेश्वर है। इसलिए गुरुदेव को कोटिशः नमस्कार है।

गुरु की उपेक्षा करने वाला चाहे जितनी मेहनत करे पर मोक्ष महल में प्रवेश नहीं कर सकता। साधना कितनी भी कर ले पर केन्द्र में सद्गुरु होगा तो साधना सफल होगी। पूज्य गुरुदेव के उपकारों का ख्याल आता है तो लगता है उनके उपकारों का बदला अनेक भवों में भी चुकाना मुश्किल है। गुरु की इतनी महत्ता क्यों गाई जाती है ? जरा शांत चित्त से विचार कीजिए। उनके हृदय की कृपा पाने के लिए कितना त्याग करना पड़ता है, यह समझने की जरूरत है। जिसे गुरुदेव की कृपा प्राप्त हो गई, उसका भाग्य खिल जाता है। मुझ जैसी पुण्यहीन को कहां गुरुदेव के दर्शन सेवा का लाभ मिल पाता, इसलिए तो १७-१८ वर्ष की सयम पर्याय में भी एक चातुर्मास नहीं मिल पाया। गुरुकृपा के बिना हमारा जीवन अंक शून्य जैसा है। इसलिए जीवन में गुलाब की तरह महकने का व सूरज की तरह चमकने का प्रयास करें। जीवन में अगर कुछ प्राप्त करने जैसा है तो वह है- गुरुकृपा। आईये हम राम गुरु की चरण-शरण में जिनशासन की सेवा करते हुए अपने जीवन में गुरु नाना के गुणों को उतारने का, रामकृपा पाने का प्रयास करें।

❑ महासती श्री प्रांजल श्री जी

अवर्णनीय जीवन

महापुरुषों के गुणों का वर्णन करना असंभव है। मुझे भी उन्होंने आकार दिया। अनन्त उपकार है मुझ पर। महाप्रयाण सुनकर ही शरीर में, मन में, कानों में उथल-पुथल, कंपन और अश्रुधारा का समागम होने लगा। जब भी आप श्री के पास आती अपनी मीठी वाणी में कहते- ममता, समता में बहुत अंतर है, मुझ ममता को समता का रूप प्रदान कर दिया, आप श्री की समता मेरे जीवन में भी आई।

"तन मन जीवन किया था अर्पण फिर भी तुमने ठुकराया,
भूल हुई क्या ऐसी जो, यहां रहना रास न आया।
"रो रहा हृदय, रो रहा अम्बर, रो रहा है सारा जहां,
सुध-बुध सारी खो गई आओ न इक बार यहां"।

भव्यों के कर्णधार कहाँ विलीन हुए ?

मन के प्रश्नों का समाधान कहां होगा ? दिल की बातें भी किसे सुनाऊं ? आत्मीयता किससे पाऊं ? तुं मार्गदर्शन कैसे प्राप्त होंगे ? पथ में सावधानी की शिक्षा भी कौन दे ? आलोचना किसके समक्ष करूं ? भावी जीव किस तरह प्रशांत बने ? आदि आचार्य भगवन् के बिना जीवन शून्य प्रतीत हो रहा है। मानो सर्वस्व ही लुट गया। रिक्त की पूर्ति असंभव सी लगती है। हृदय के ईश्वर मुझे छोड़ सकते हैं.. नहीं-नहीं मेरा भ्रम है। भगवन् को कहीं खोजना नहीं, स्वयं में ही पाऊंगी, मुझसे विलग हर्गिज नहीं हो सकते। मात्र दृष्टि परिवर्तन की आवश्यकता है। आचार्य भगवन् का जीवन, अनुभव का विषय है, शब्दों का नहीं। सिद्ध के सुखों की उपमा संसारी वस्तु से नहीं दी जा सकती है तथा गुरुदेव के चरण-शरण को प्राप्त कर जो अलौकिक आनन्द की अनुभूति होती है, वह शब्दातीत है। श्रद्धा से गम्य है, तर्क से अगम्य है। वाणी से मूक हो दर्शन-पान से ही शक्य है। गुरुदेव के जो भी एक बार दर्शन कर लेता, निहाल हो जाता। नेत्र अनिर्निमेष निहारते ही रहते हैं। मन्दसौर यात्रा के लिए जब मैं जा रही थी। अज्ञात स्थान, पता भी विस्मृत। मात्र गुरुदेव के नाम स्मरण ने सकुशल स्थानक पहुंचा दिया। अहमदाबाद में जब आचार्य भगवन् के दर्शन हेतु गई। आठ दिन की चरण सेवा कर पुन. लौटने के लिए पूरी तैयारी कर मांगलिक हेतु पहुंची तो गुरुदेव का प्रश्न था, किसके साथ रतलाम जा रही हो ?" मैंने जब कहा कि अकेली ही जा रही हूं, कल पर्युषण लग रहे हैं मैं उसमें आवागमन नहीं करना चाहती हूं। तब गुरुदेव ने फरमाया, पर्युषण पूर्ण कर लो,,संवत्सरी के दूसरे दिन ही जो श्रावक रतलाम जा रहे थे, उन्हें सपरिवार सतियों की सेवा में ठीक से सौंपने की सीख दे, जिम्मेदारी सहित कहा व मंगलिक सुनाई। इस आत्मीयता से ओत-प्रोत हो मेरा हृदय गद्गद् हो गया। सोचा मुझ जैसी बालाओं का भी भगवन कितना ध्यान रखते हैं। एक बार मैंने नादानी वश गुरुदेव की बात नहीं मानी तब संकट में फंस गई,तब भी गुरुदेव ने बिना उपालंभ दिए मुझको संकट से उबारा। मैं आजीवन गुरुदेव के निःस्वार्थ उपकार को विस्मृत नहीं कर सकती।

गुरुदेव के मन में करुणा का स्रोत प्राणिमात्र के प्रति बहता रहता था। संयम के प्रति जहां सजगता के दर्शन होते हैं, आत्म शुद्धि हेतु प्रायश्चित लेने को तत्पर भी रहते हैं। गुरुदेव से एक बार मैंने कहा, 'भगवन् मैं नियाणा तो नहीं करती किन्तु मन में सदैव विचार रहता है कि मैंने पूर्व भव में माया का सेवन किया जिससे स्त्री जन्म मिला व आपके चरणों में दीक्षित होकर भी चरण सेवा से वंचित रहती हूं। भगवन् इस जन्म में कभी माया न करूं जिससे आपके चरणों की सेवा व मार्गदर्शन मिले। आगे जब भी जन्म लूं आपके चरन में शरण प्राप्त हो।' आचार्य भगवन मेरी बात श्रवण कर मुस्कराने लगे व फरमाया कि तुम्हारे विचार प्रशस्त हैं। अंतःकरण से यही चाहती हूं भगवन आपकी आत्मा शीघ्र कर्म मुक्त हो, शाश्वत सुख को प्राप्त करें तथा आपकी कृपादृष्टि से मैं ज्ञान, दर्शन, चारित्र की निरंतर वृद्धि कर आपके मार्गदर्शन व चरण सेवा को प्राप्त कर अंतिम लक्ष्य मोक्ष को शीघ्र प्राप्त कर सकूं। जिन आज्ञा से विपरीत कभी भी मन में विचार, वचन से उच्चार व काया से आचरण हुआ हो उसका अंतःकरण से आलोचना, प्रायश्चित कर आत्मशुद्धि द्वारा आराधक बन सकूं।

☐ महासती श्री वैभव श्री जी म.सा.

अनुपम संयम साधक थे

एक बार एक व्यक्ति अपने दोस्त के यहां गया, वह रेलवे टाईम टेबल देख रहा था, उसने अपने दोस्त से पूछा कि तुम हर समय यह टाईम टेबल क्यों देखते हो,कहीं जाते नहीं हो। उसने कहा नहीं मैं इस बार जरूर कश्मीर जाऊंगा। इस तरह हम प्रोग्राम तो बहुत बनाते हैं, पर उन्हें कार्य रूप में परिणित नहीं करते। भगवन् ने भी ३२ शास्त्र रूप में टाईम टेबल दिया है कि कौन कहां जाता है। आचार्य श्री नानेश ने उन सबको जीवन में उतारा। कथनी करनी में कोई अंतर नहीं। छठे आरे का वर्णन सुनकर गुरु की खोज में निस्पृह साधक की तलाश में लग गये। कइयों ने प्रलोभन दिए मगर उन्हें सच्चे गुरु की तलाश थी। अंत में उन्हें कोटा में गणेशाचार्य गुरु के रूप में मिले जिन्हें पाकर अलौकिक शांति मिली और दीक्षा ग्रहण कर जीवन सफल बनाया। आप श्री की सूझबूझ एवं ज्ञान अकथनीय है। रतलाम में कोई सतियां जी अस्वस्थ थीं। संथारा का कहने पर आप श्री ने कहा अभी आयुष्य है, यह था आपका ज्ञान। सेवा भावना भी आप श्री की अटूट थी। अपने गुरु आचार्य श्री गणेश की अद्भुत सेवा की। संयम, इंद्रिय निग्रह भी आप श्री का अनुपम था। दिल्ली में एक बार अस्वस्थ होने पर डॉक्टरों के कहने से ९ महीने सिर्फ मट्ठे के आधार पर बिताये। मुझ पर कितने उपकार रहे। आप श्री जी की ओजस्वी वाणी सुनकर मुझे जलगांव में वैराग्य आया। मेरा वैराग्य काल लगभग ६वर्ष आप श्री के सानिध्य में ही रहा। आप श्री ने हमें बहुत कुछ दिया, हम आपका ऋण नहीं उतार सके। इस तन की अस्थियां होने से पहले आस्था को जगाया फिर चिता से पहले चैतन्य जगा लिया। इस तन के जाने से पहले मोक्ष धन को खोज लिया। अपने पाट पर श्री रामलाल जी म.सा. को बिठाया, यह उनका नवम पाट नव अखंण्ड का सूचक है।

करती रहेगी हमारा पथ रोशन

साध्वी हर्षिला जी म.

थी वह उज्ज्वल ज्योति
किया आलोकित जग को
निराशा के तम में डूबे
अशान्त मानस में भी
भर दी भव्य स्फुरणा
समीक्षण की वीणा से
होता है स्वर झंकृत
है तुम्हारे भीतर
आनंद का अक्षय स्रोत

मत देखो पर दोष
करें सदा स्व का निरीक्षण
स्व के भूल की स्वीकृति
करती है आत्म संशोधन
आत्मोन्नति की राह दिखाकर
किया महाप्रयाण भगवन्
तुमने विकीर्ण की है रश्मियां
करती रहेगी हमारा पथ रोशन।

गुरु बिना कौन बतावे बाट

गुरुदेव के जीवन को शब्दों में सजाने के लिए मेरे पास कोई शब्द नहीं है। सुरम्य वाटिका में मंद-मंद मुस्कुराने वाले, भीनी-भीनी मधुर सुगंध बिखेरने वाले, सुविकसित मनोहारी सुमन का क्या परिचय देना..? उनका परिचय किसी से नहीं..उनका मानवतावादी दृष्टिकोण ही संसार को उनका परिचय करा देता है। जिधर भी वायु बहती है, उनके सौरभ को लेकर निकलती है। अजस्र ज्योति धारा का सतत वर्षन करता हुआ दिव्य रूप ही उनका परिचय संसार को करा देता है। दिव्य पुरुष के युगल चरण जहां जहां पड़े वहाँ-वहाँ पर कमल खिलते गये। "वाणी में जादू"- जिसने आपकी वाणी को सुना वह पा गया अपने जीवन में चिन्तामणि रत्न को ... आप श्री की वाणी पर हजारों हृदय अर्पण थे। अमृत तुल्य वाणी सुनकर जन-मन हर्षित हो उठता था। वार्तालाप में सरलता, सहजता, उदारता श्रोता के मन और मस्तिष्क को एक साथ प्रभावित करती थी। आपकी जादुई वाणी श्रोताओं के दिल को तो लुभाती ही थी अपितु देश के चोटी के विद्वान और नेतागण भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहते थे। भावों की लड़ी, भाषा की झड़ी और तर्कों की कड़ी का ऐसा मधुर समन्वय होता था कि श्रोता झूम उठते थे।

आप श्री जी की संयमाराधना, निर्भीकता, निष्पक्षता, धीरता, गंभीरता, सहनशीलता समूचे भूमंडल को ज्योतिर्मय करने वाली थी। आपको उच्च चरित्र ने ही लोकमान्य बनाया। त्याग और संयम की प्रतिमूर्ति इस महान के प्रति लाखों पुरुषों की श्रद्धा थी। आपकी वैराग्य भरी वाणी में अद्भुत जादू था। जहाँ-जहाँ आप विचरते थे, उस पुण्य भूमि के असंख्य नर नारी आपके भक्त हो जाते थे। लाखों पुरुषों ने आपके सदुपदेशों से प्रभावित होकर व्यसनों को जीवन भर के लिए छोड़ा। ऐसे युगपुरुष पूज्य गुरुदेव ऐसे ही सुरभित सुमन थे, जिनके गुणों से यह मधुबन सुवासित हो रहा है और सदा होता ही रहेगा। उनकी अपार आत्मीयता, अत्यधिक सूझबूझ, सहिष्णुता एवं दूरदर्शिता विस्मृत करने के लिए नहीं, अपितु सदा अपने मन मस्तिष्क रूपी खजाने में अमूल्य निधि की भांति प्रयत्न पूर्वक संजोकर रखने के लिए है। उनके वरदहस्त की छाया सबको समान रूप से प्राप्त है।

गुणों को याद जब मैं करती हूं, तब आंखें अश्रु से भर आती हैं। गुरु नाना के बराबर विद्वता किसी में नहीं...चाहे कितने ही गहन सवाल क्यों न किये जायें..हाजिर जवाब...बुद्धि बैरिस्टर जैसी..। ऐसे अनन्त उपकारी गुरुदेव हमें छोड़कर चले गये... लेकिन उनके सद्गुणों की सुवास हम सभी के जीवन को सुरभित करती रहेगी..। आपसे एक अलौकिक सौगात मांग रही हूं, यह सौगात है आपका आशीर्वाद.. आशीर्वाद का अमृत बरसावें.. जहां कहीं भी हों...चतुर्गति के फेरों को मिटाकर पंचम गति को प्राप्त करें, यही भव्य भावना है..॥

"दिव्य ज्योतिर्मय महान गुरुवर कहां हो तुम,
आज तुमको नहीं पाकर व्यथित है मन।
बिलखते-बिलखते छोड़कर गये हो कहां,
एक नजर घुमाकर देख लो यहां।"

❑ महासती श्री जय श्री जी म.सा.

युग युगान्त तक जिंदाबाद

आत्मीयता की साक्षात मूर्ति, पृथ्वी सम क्षमाशील, सर्वतोमुखी, प्रतिभा के धनी, महान् दिव्य ज्योति, दृष्टा, अनुभूतियों के स्रोत, आराध्य आचार्य भगवन् श्री नानेश को व्यक्ति तो क्या जमाना भी भुला नहीं सकेगा आचार्य भगवन् ने अमूल्य समय निकालकर हम अल्पज्ञ को देशनोक, अलाय, गोगोलाव में सेवा का अवसर प्रदा किया। भूल ही नहीं सकते मुख कमल से निसृत मधुर वचन। गौतमलाल जी पिरोदिया अशोक जी सुराणा के साम उच्चरित शब्द अब भी कानों में गूंज रहे हैं। गुरुदेव के शब्द कितने ऊंचे हैं, छोटों को भी कितना मान देते हैं जो प्यार स्नेह, ममता माता-पिता, भाई-बहिन से नहीं मिलता वह गुरुदेव से मिलता। गुरुदेव की निर्भीक मानवत बरबस सबको प्रभावित करने वाली है।

फूल गुलाब का खुशबू देकर करता आबाद।
नाम गुरु नानेश का युगान्त तक जिन्दाबाद॥

उमडते भावों को शब्दों में बांधना अक्षरों में पिरोना अशक्य है, ऐसे अनंत उपकारी गुरुदेव शीघ्र सिद्ध, बु मुक्त बनें, यही कामना है।

नूतन नवम् शासनेश आगम नवनीत निधि आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. को शत्-शत् अभिनन्दन

कैसे भूलें नाम तुम्हारा

साध्वी प्रभावना श्री जी म.

कैसे भूलें गुरुवर नाम तुम्हारा
उपकार तेरे, जीवन सुधारा॥
मैं थी गुरुवर, एक अभागिन
खुले भाग्य मेरे, पाये जब दर्शन,
भव-२ हुआ सफल संयम पुष्प खिला॥१॥

जब से गुरु का सबल पाया।
जीवन में खुशियों का सावन आया॥
गुरुवर नाना.. तू ही हमारा॥२॥
नाना के नाम से कष्ट मिटा था,
नाना के नाम से इष्ट मिला था।
ऋद्धि सिद्धि पग-२ चमका सितारा॥३॥

स्नेह-मूर्ति को श्रद्धा सुमन

उस दिव्य मूर्ति के दर्शन के लिए मन मचल रहा था। उस पावन प्रतिमा को देखने आंखें तरस रही थीं। अब इन अश्रुपूरित नेत्रों को कौन सहारा देगा। मन गमगीन है। चारों ओर के वातावरण में शून्यता छा गई है। मन को कैसे शांत करें। हे गुरुदेव...आपकी स्मृतियां हृदय को उद्वेलित कर रही हैं। इस हृदय को कैसे समझाएं, गुरु की गौरवता कैसे प्रकट करूं। वे महायोगी, महाज्ञानी, महाध्यानी, महासाधक, महागुरु, महामानव सभी रूपों में महान् थे। जिनका हृदय कोण साम्य धन से भरपूर था, असीम आराध्य जिनका सम्राट था, हिमवती संभाषण जिनका मंत्री था, मधुर मुस्कान जिनकी चेरी थी, पुण्य जिनका दिन रात जागने वाला सेवक था, आध्यात्मिक स्वर जिनका गाना था, मैं अपनी इस छोटी सी बुद्धि, लचर सी जिह्वा, टूटी हुयी लेखनी कागज से उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को सीमा में बांध नहीं सकती। आपके एक-एक गुण को पाने हेतु न जाने हमें कितने जन्मों तक साधना करनी पड़ेगी। खुद के कष्टों की आपने कभी चिंता नहीं की किन्तु हमारी थोड़ी सी पीड़ा भी आप सहन नहीं कर पाते थे। स्वयं के लिए जितने कठोर, चतुर्विध संघ (विशेष तौर से साधु, साध्वी) के लिए उतने ही कोमल। सबकी मनोकामना पूरी करते थे। मुझ पर पूज्य गुरुदेव की अपार कृपा थी।

राणावास प्रथम दर्शन में ही आपकी कृपा नजर से मेरा काया-कल्प हो गया। मात्र १४ वर्ष की उम्र में दांत की भयंकर व्याधि जिससे रात को तकिया मवाद से भर जाता था, जिसके लिए डॉक्टरों ने कहा कि दांत निकालने के अलावा दूसरा कोई इलाज नहीं होगा। संयोग से आप श्री जी के दर्शनों का सौभाग्य मिला, दर्शन करते ही सारा रोग तिरोहित हो गया। मेरे इन पैरों में ५०-१०० कदम चलने की शक्ति भी नहीं थी। पूज्य गुरुदेव की कृपा ने इन पैरों में ३५-३५ कि.मी. चलने की शक्ति भर दी। मेरी इन आंखों के सामने बार-बार अंधेरा छा जाता था। पूज्य गुरुदेव ने इसमें ज्योति भर दी। भगवन् आपके इन अनन्तानंत उपकारों का बदला कैसे चुका सकेंगे। कोई मार्ग बता दें जिससे हम आपके ऋण से उऋण हो जाएं। मेरा तन-मन सब कुछ आपके चरणों में समर्पित है। जब-जब आपकी भक्ति में भाव विभोर हो जाती हूं, तो लगता है आपकी कृपा नजर से अनेकानेक अमृत कलश एक साथ छलक उठे हैं, मानो जनम-जनम की संचित निधि जागृत हो उठी हो।

इस प्रकृति ने आपके पार्थिव देह से भले ही हमें जुदा कर दिया है पर प्रभो..आपकी दिव्य, भव्य मूर्ति को हमने अपने भीतर सहेज लिया है। आपका दिव्य रूप हमारे अंतर में समाहित हो गया है। जहाँ से हमें निरंतर आशीर्वाद प्राप्त होते रहेंगे। उन आशीषों के बल पर हम इस संयमी रथ पर चलाते रहेंगे। उस महान आत्मा को अंतर ... से श्रद्धा सुमन समर्पित करती हूं। प्रभु महावीर से यही अभ्यर्थना है कि उनका साधना आलोक हमें दिशा दर्शन ... रहे, उनकी दिव्य आत्मा को परम शांति मिले। उनकी देदीप्यमान स्मृति को शत्-शत् वंदन।

❑ महासती श्री स्थितप्रज्ञा जी म.सा.

जिनका जीवन बोलता था

आगम सूत्र है- 'समियाए समणो होई,' समता भाव वाला श्रमण कहलाता है।

असिप्पजीवी अगिहे अमिते, जिइन्दिए सव्वओ विप्पमुक्के ।
अणुकसाई लहु अप्पभक्खी, चिच्चा गिंह एगचरे सभिक्खु ॥

जो संयम को आजीविका का साधन नहीं बनाता, वह अणगार होता है। जो मित्र शत्रुत्व भाव से ऊपर रहता है, इन्द्रिय विजयी होता है। अनासक्त भावों में अवगाहन करने वाला होता है,अल्पकषायी होता है, गर्व नहीं करता है, अल्प भोजी होता है आत्मरमणता वाला है, वह भिक्षु है।

ये ही आगम सूत्र जब किसी जीवन में साकार रूप ले लेते हैं, तो वह जीवन एक असाधारण, अलौकिक, उर्ध्वमुखी व अनिर्वचनीय ही होता है। ऐसे ही जीवन के धनी थे, आराधना की उर्ध्वता पर आसीन, साधना के शिखर पर शोभित, समता समन्वय की अद्‌भुत निशानी, महायोगी, चारित्र चूड़ामणि आचार्य श्री नानालाल जी म.सा.। आपका संपूर्ण जीवन साधना की अतल गहराइयों में अवगाहन करने वाला और प्राप्त ज्ञान मुक्ता मणियों को जन-जन में वितरित करने वाला इस भू-मण्डल के लिए विरल वरदान स्वरूप था।

ऐसे आगम पुरुष भले मुख से कुछ उच्चारण करे या न करे लेकिन उनका जीवन बोलता है, और उनको हर हृदय सुनता है, फिर उन महापुरुष के मुखारविन्द से निसृत शब्द मकरन्द का तो कहना ही क्या ?

यही कारण था कि ज्योंहि आपको देखा, मन चरण-पिपासु बन गया, बुद्धिजीवी हो या कोई भी भव्य जनमानस, सबकी निगाहों में आपका विराजना सहज स्वाभाविक हो गया। आप सभी के आकर्षण व श्रद्धा के केन्द्र बन गये। नहीं सोचा था कि ये प्रत्यक्ष जिन नहीं पर जिन सरीखे आचार्य प्रवर इतनी जल्दी हमारे बीच से दिव्यता की ओर प्रयाण कर जायेंगे। मन यकीन नहीं कर पा रहा था पर विधि के विधान के आगे गुजारिश की गुंजाईश कहां ? पार्थिव शरीर से भले ही आप हमारे बीच नहीं रहे पर आपका गुण रूप जीवन सदा हमारा मार्गदर्शन करता रहेगा। हृदय की हर धड़कन से श्रद्धांजलि अर्पित है।

परमतोष तो इस बात का है कि आपकी प्रखर मेधा ने संयम सुमेरू हुक्म शासन की आवरू श्रद्धास्पद आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. को चतुर्विध संघ के सरताज के रूप में दिया है।

आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. की सारणा-वारणा-धारणा में हमारा जीवन ज्ञान-दर्शन-चारित्र की सम्यक् आराधना करता हुआ अपने लक्ष्य प्राप्त को करेगा, यह पूर्ण विश्वास है। आप श्री जी की हर आज्ञा शिरोधार्य है। आप सदा जयवन्त हों, यही शुभाशा।

□ महासती श्री सौम्यशीला जी म. सा.

तुम एक, अनेक की जान थे

सूर्य एक होता है, लेकिन अनेक का जीवन आलोकित करता है। पानी अनेक की प्यास बुझाता है, शीतलता देता है, प्राण देता है, एक धरती सबको आधार देती है। ऐसा ही होता है महापुरुषों का जीवन।

समत्व के मसीहा, समीक्षण ध्यान योगी, चारित्र चक्रवर्ती हुक्म संघ के अष्टम पट्टधर आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. का जग में महान विभूति के रूप में आगमन 'तिन्नाणं तारयाणं' के रूप में हुआ। अज्ञान की अंधेरी गलियों में ठोकरें खाते प्राणियों को ज्ञान प्रकाश देकर सन्मार्ग बताया। वन में भटकते प्राणी को जिससे राह का दिग्दर्शन होता है, कितना उपकार वह राही उस मार्गदर्शक का मानता है। हमें जिन्होंने अमरत्व की राह बताई उनके अनन्त उपकारों का तो कहना ही क्या ?

'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की अन्तर चाह आपके चरणों से पूर्ण हुई। आपकी समता-साधना इस जग को एक विशिष्ट देन है। विश्व को, राष्ट्र को, समाज को, व्यक्ति को आज जिस बात की आवश्यकता है उस आवश्यकता की पूर्ति हुई आप समता-विभूति से। समता दर्शन और व्यवहार एवं समीक्षण ध्यान की अमूल्य औषधि हर संतप्त मन को स्वस्थता देने वाली है। समस्याओं ने समाधान का मार्ग दिया। "समता समाज रचना" की इस दिव्य किरण से अमन चैन की सांस ली भव्य प्राणियों ने। ऐसे महापुरुष संसार में धरती के समान आधारभूत हैं। प्रकृति के अटल नियमों ने ऐसी महान विभूति को अपनी गोद में ले लिया।

आपका यशस्वी गुणमय जीवन सदा जग को सन्मार्ग दिखाता रहेगा। श्रद्धा सुमन अर्पित करता हुआ मन कहता है-

उपकारों से उपकृत जग,
भूल नहीं पायेगा नाना को ।
इतिहास के उज्ज्वल पन्नों पर देखेंगे,
समता से दीप्ति मंत्र, इस दिव्य दीदार को ॥

आप श्री जी ने शासन नायक के रूप में आगम मर्मज्ञ, साधना पुरुष युवाचार्य श्री रामलाल जी म.सा. को दिया जो आप श्री जी की गहरी शोध है। युवाचार्य श्री जी की पूर्ण योग्यता के साथ ही संघ का परम भाग्योदय है। पुण्य की प्रकर्षता है, कि हमें योग्य अनुशासक मिला ! आचार्य श्री रामेश के चरणों में शरण, वंदन, अभिनंदन।

यह दिल की आवाज है

गुरुदेव के प्रति जब समर्पण भाव आता है तब हृदय गद्‌गद्‌ हो जाता है। इस महापुरुष की वाणी सुनते थे, उस समय हृदय के तार झंकृत हो जाते थे। आचार्य प्रवर एक दार्शनिक थे, महान विचारक थे, अध्यात्मवादी थे,सबके ऊपर एक समान भाव रखते थे। उनके मन में यह विचार नहीं था कि यह मेरी सेवा करता है, दूसरा नहीं करता। वे एक समदर्शी थे, किसी के प्रति राग-द्वेष नहीं था। वे अद्‌भुत योगी थे। प्राचीनकाल में एक शिष्य ने गुरु से प्रश्न किया "गुरुदेव किं जीवनम्‌ ?" अर्थात्‌ जीवन क्या है ? गुरु ने उत्तर दिया "दोषविवर्जित यत" अर्थात्‌ जिसमें बुराइयां कम हों, दोष कम हों और अच्छाइयां अधिक हों, वह जीवन है। यही महापुरुषों का उत्तर है कि अच्छाइयों का जीवन ही जीवन है। सत्व गुणयुक्त जीवन ही जीवन है। वही जीवन जीवन है जो दूसरों के जीवन में सहयोगी बने। दूसरों के जीवन की कठिनाइयों में पहुंचकर उन कठिनाइयों का समाधान करना ही जीवन है। आचार्य श्री नानेश का हर समय यही उद्‌गार था कि-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित दुःख भाग भवेत्‌ ॥

उन महापुरुष में प्रेम दया, क्षमा, सद्‌भाव, समता और सरलता के गुण कूट-कूट कर भरे हुए थे। उनका हृदय विराट व विशाल था। वे जीवन को क्षणभंगुर समझते थे, वे शारीरिक दृष्टि से जीवन को क्षणभंगुर मानते थे। जीवन घास पर पड़ी ओस की बूंद के समान है। वृक्ष के पीले पत्ते के समान है, पता नहीं किस समय टूटकर गिर जाए। मनुष्य को सदा सावधान रहना चाहिए। गफलत व प्रमाद में नहीं रहना है। इस देह से अमरत्व पाना चाहिए। महापुरुषों का चिन्तन- असतो मा सद्‌ गमय, मृत्योर्मामृतं गमय: । हे प्रभो ! मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो। असत्य जो है क्षणभंगुर है, ये दंभ, घृणा, राग-द्वेष आदि असत्य हैं। इनसे मुझे बचाओ। तमसो मा ज्योतिर्गमय: मुझे अंधेरे से प्रकाश की ओर ले चलो। काम, क्रोध, वैर आदि अंधेरा छाया हुआ है। उसमें खुद भी ठोकरें खा रहा हूं और दूसरे भी टकरा रहे हैं। अब मुझे तमस्‌ से प्रकाश की ओर चलना है। ऐसा प्रकाश जिसमें अपने को भी देख सकूं। अंधकार मृत्यु है, प्रकाश जीवन है। मुझे मृत्यु से अमृत्व की ओर चलना है। क्षण-क्षण में मरण हो रहा है। हर क्षण मृत्यु बढ़ती चली आ रही है। जन्मा हुआ शरीर का जन्मते ही मृत्यु पीछा करती है। जन्म के साथ ही मृत्यु साथ हो जाती है। संसार की जितनी भूमिका है, जिसे हम दृश्य कहते हैं वह सब मृत्यु के क्षणों के निकट पहुंच रहा है। किन्तु यह भी एक स्थिति है हमारी, अजर अमरत्व है हमारा। मृत्यु से अमृतत्व की ओर जाना है, वह अमृतत्व है सत, सत जीवन है, प्रकाश जीवन है, वही सही जीवन है। अमरता सत्व गुण से युक्त है। नहीं तो जीता हुआ भी मरे के समान है। अगर मर भी गया तो शरीर की दृष्टि से। सद्‌गुणों से, ज्योतिर्मय जीवन से, अपनी अच्छाइयों से तो वह मरकर भी जीवित है, वह मरा नहीं है। मुझे बुद्धि मिली है, ज्ञान मिला है, इन का सद्‌ उपयोग कर जन-कल्याण करूं वाणी से, मन से, काया से तथा मेरी आत्मा का भी मुझे कल्याण करना है। केवल श्वांस के आधार पर ही नहीं जीना है। मुझे जीने की कला प्राप्त हुई है, मुझे जीवन पुष्प खिलाना है। मुझे शक्तियों का उपयोग करना है।

इस तरह हमारे आचार्य भगवन् हर पल, हर क्षण, सजग थे। वे स्वयं सजग थे। अपने शिष्य, शिष्याओं को यही सद् संदेश देते थे। उनका फरमान था कि यह जीवन मिला है, इसको हर समय अच्छे कार्य के अन्दर लगाओ, हाथ मे समय चला जाए तो फिर मिलना दुर्लभ है। ऐसा उनका शुद्ध विचार और शुद्ध आचार था। वे जैसा फरमाते थे, वैसा ही करते थे। उनकी करनी और कथनी में अन्तर नहीं था। हम उस महापुरुष के लिए मृत्यु शब्द का प्रयोग नहीं कर सकते, क्योंकि उनकी अच्छाइयां जीवित हैं। उनके सत् कर्मों की ज्योति प्रकाशमान है। अब भी इस प्रकाश में हम अपना रास्ता देख सकते हैं, और उस पर चल सकते हैं। उनके जीवन की प्रभा अब तक मौजूद है। फूल खिला और खिलकर मुरझा गया, मिट्टी में मिल गया, मगर मिट्टी में सुगंध मौजूद है। आचार्य भगवन् का जीवन रूपी पुष्प दिव्य भाव पुष्प बन गया है। गुणी महापुरुषों का गुण करना अर्थात गुणानुवाद करना जिह्वा से परे है क्योंकि मैं अल्पज्ञ हूं। सद्गुणों के प्रति मेरी सद्भावना सुश्रद्धा बने। जिन महापुरुषों का जीवन पवित्र है, उन महापुरुषों की मृत्यु भी पवित्र है। उनके गुणों का पुनः पुनः सत्कार करती हूं।

❑ महासती श्री प्रेमलता जी म.सा.

स्नेह का सागर

अनन्त-अनन्त आस्था के केन्द्र मेरे परम पूज्य गुरुदेव के बारे में मैं क्या कहूं जितना कहूं, उतना सूर्य को दीपक दिखाने तुल्य है। गुरुदेव के अथाह गुणों को शब्दों की सीमा में नहीं बांधा जा सकता। असीम लहलहाते स्नेह-सागर ने बचपन से ही मुझे इतना स्नेह दिया कि उसका वर्णन नहीं कर सकती। आचार्य भगवन् का विरल विराट व्यक्तित्व था।

संयम के सजग प्रहरी जरा सी भी भूल दीखने पर इतने प्रेम से समझाते थे कि सभी का हृदय गद्गद् हो जाता।

दृष्टि में कृपा की वृष्टि- महावीर जयंती के प्रसंग पर मैं गुरुणी प्रवर श्री पानकुंवर जी म.सा. के साथ भीलवाड़ा, तब अत्सर के कारण पेट दर्द हुआ। प्रात: पूज्य गुरुदेव दर्शन देने पधारे आप श्री की कृपा दृष्टि से दर्द में ... महसूस होने लगी। ऐसी श्याम सलोनी मूरत को कहां से पाऊं, कहां दर्शन करूं, प्यासे नयन की प्यास कैसे बुझाऊं?

फूल डाली से जुदा हुआ, खुशबू से नहीं।
गुरुदेव तन से जुदा हुए गुणों से नहीं॥

❑ महासती श्री कमल श्री जी म. सा.

सम्पूर्ण जिंदगी को जागकर जिया

आत्म सिद्धि के अमर साधक, महान संयमी, चेतना के धनी, मेरे रोम-रोम में बसने वाले आराध्य इस दुनिया से सदा-सदा के लिए बिदा हो गये। ऐसे भगवान के वियोग में हम सभी का मन एवं चतुर्विध संघ उद्विग्न है। दिल आंसुओं से बोझिल है। हृदय भर रहा है, कैसे गुण गान करूं।

रात्रि में, नील गगन में अनेक गृह, नक्षत्र, तारे उदित एवं अस्त होते हैं। बगीचे में अनेक पुष्प खिलते, मुरझाते हैं लेकिन किसी को पता नहीं। अध्यात्म क्षितिज पर संत सितारे उदित होते वे अपनी विशिष्ट साधना के दिव्य प्रकाश से जनमानस को आकर्षित कर इतिहास के सुनहरे पृष्ठों में अपना नाम अंकित कर जाते हैं, उनके न रहने पर भी उनकी प्रज्ञा का प्रभा मण्डल दिशा को आलोकित करता रहता है।

ऐसे ही विराट व्यक्तित्व के धनी आचार्य नानेश के महाप्रयाण से हृदय पर वज्रपात हो गया। उनका जीवन बहते हुए गंगाजल के समान निर्मल था। उस निर्मल गंगाजल में जो अवगाहन करता उनका कष्ट, रोग, शोक, संताप सब दूर हो जाते थे।

असीम, अनन्त व्योम मण्डल से भी विराट एवं अगाध महासागर से भी गहन आचार्य भगवन् के विशिष्ट व्यक्तित्व को देखते तो वहां समता, मृदुता, सौम्यता, वात्सल्यता, का झरना प्रवाहित होता रहता था। विषमता से संतप्त इस विश्व को समता दर्शन की अनुपम देन दी उन्होंने।

स्व-पर कल्याण करते हुए ३५० के लगभग मुमुक्षु आत्माओं को उन्होंने संयम धन दिया। शास्त्रकार कहते हैं कि इस प्रकार ग्लान भाव से चतुर्विध संघ की सेवा करने वाले आचार्य उसी भव या तीसरे भव में मोक्ष जाते हैं। ऐसे महान संयम की विरल विभूति ने अपने ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप द्वारा "तिण्णाणं तारयाणं" पद को सार्थक कर दिया।

"मिट्टी का तन मस्ती का मन" था। शरीर रूपी मिट्टी से अनासक्त रहे। उन्होंने समझ लिया कि जीवन व मरण एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। आचार्य भगवन् ने इस शाश्वत सत्य को समझा और उस तन का ममत्व छोड़कर मृत्यु का सहर्ष आलिंगन कर लिया।

क्या पूछते हो जिंदगी मेरी कैसी गुजरी,
सोचो इस बात पर कि वह कैसी गुजरी।
मैं मरा तो मेरे को इस तरह उठाया गया,
एक शहंशाह की मानो सवारी गुजरी॥

वह मनमोहक महान् मूर्ति हमारी आंखों से ओझल हो गई लेकिन हमारे हृदय से नहीं।
ऐसे महान् आराध्य देव व अमरता के राही को सभक्ति कोटि-कोटि श्रद्धांजलि।

– प्रेषक : सुशील खटोड़, मनावर

□ महासती श्री संयम प्रभा जी म. सा.

अविरल यादें

जिस गुलाब की सरस सौरभ से हुआ संसार सुरभित।
आज वह मुरझा गया हाय..रह गए नयन स्तम्भित ॥
धरा रो रही है, गगन रो रहा है,
नयन ही नहीं, आज मन रो रहा है ।
आपकी याद में आज गुरुवर,
जहान् रो रहा है, वतन रो रहा है ॥

स्वर्ग प्रयाण... देवलोक गमन वह भी पूज्य गुरुवर का, इस हृदय विदार्ण समाचार को श्रवण कर दिल भर आया। असह्य वेदना। ऐसी भयंकर वेदना मानो किसी ने एक साथ ही तन-मन पर हजारों-हजारों बाणों का प्रहार कर दिया हो। इस चराचर विश्व में अनेक प्राणी जन्म धारण कर मृत्यु को प्राप्त होते हैं पर विरल व्यक्तित्व ही ऐसे होते हैं, जो अपने जीवन को आदर्श एवं अद्भुत बनाकर अपना नाम इस लोक में अजर अमर कर जाते हैं। ऐसी महान् विरल विभूतियों की शृंखला में मेरे अनन्त-अनन्त श्रद्धा के केन्द्र, समता क्रांति के संवाहक, निगूढ़ ध्यान योगी, परम पूज्य आचार्य श्री नानेश की कड़ी जोड़ना चाहूंगी जिन्होंने अपना जीवन निरन्तर समुज्वल बनाया। बचपन की बाल-सुलभ क्रियायें, पर यौवन के देहलीज पर कदम रखने के बाद संयम के परिवेश को प्राप्त कर बेजोड़ गुरु निष्ठा एवं आत्मा समर्पण का आदर्श ऐसे विशाल जीवन के प्रति कुछ कहना अपने आप में सहज नहीं फिर भी श्रद्धा के सुमन समर्पित करती हूं।

पुष्प खिलते हैं बहुत पर सुगन्ध देता है कोई-कोई,
पूजा करते हैं बहुत पर पूज्यनीय होता है कोई-कोई ।
जीवन के हर मोड़ पर स्वयं को स्थिर बनाकर विश्व में,
समताधीर श्री नानेश सा वन्दनीय है कोई-कोई ॥

परमाराध्य आचार्य भगवन् का जीवन कांटों के बीच गुलाब ही था। सुन्दर गुलाब ने कांटे अर्थात् कठिनाइयों को सहकर अपना जीवन प्रभु चरणों में अर्पित कर दिया था, इस गुलाब ने अपने जीवन सौरभ से केवल एक प्रान्त ही नहीं, संपूर्ण भारत को महका दिया।

नाना नाम से धन्य थे गुरुवर मेरे,
लुटाकर सौरभ गए गुरुवर मेरे ।
इस जिह्वा से गुण किस तरह गाऊं,
हृदय मंदिर के भगवान थे गुरुवर मेरे ॥

हार्दिक श्रद्धा सुमन समर्पित करती हुई नव आचार्य श्री के मंगलमय भविष्य के लिए कोटि-कोटि शुभकामना करती हूं।

सेवा सरलता समर्पनादि सर्वगुण जिसमें हो साकार।
ऐसी प्रखर विभूति को आस्थाभिसिक्त वंदन बारंबार॥
मेरे अनन्त-अनन्त आस्था की हो तुम प्रतिमूर्ति,
चतुर्दिक में प्रसृत है तव अनुपम तप कीर्ति।
गुरुनाना की शुभाशीष साकार हुई जो,
लख कर तुम्हारी शुद्ध संयम की हर प्रवृत्ति॥

❑ महासती नमन श्री जी

महकती खुशबू

जब गुलाब खुशबू से भर जाता है तो सारा उपवन महक उठता है, वीणा जब मधुर स्वर में बजती है तो उसकी स्वर लहरियां सम्पूर्ण सत्ता को मुग्ध कर देती है। इसी प्रकार जब किसी का जीवन सुवास एवं सुस्वर से परिपूरित हो जाता है तब सम्पूर्ण समाज एवं देश उसके व्यक्तित्व पर मंत्र मुग्ध हो जाता है। ऐसा ही मंत्र मुग्ध कर देने वाला व्यक्तित्व था आचार्य श्री नानेश का। पार्थिव शरीर से यद्यपि वे निःशेष हो गए हों परन्तु अपने यशस्वी शरीर से वे सर्वदा जीवित रहेंगे।

गुण रूपी गुलाब से महकते जीवन बाग के असीम गुणों का वर्णन करना हमारी शक्ति से बाहर की बात है। सरलता, निरभिमानता, नम्रता, अपूर्व क्षमा, स्नेह, करुणादि गुण तो उनके जीवन में रचे बसे थे। अस्वस्थता में भी अजब समाधि साधी, दुःख में रहे समभावी, तेजस्वी, यशस्वी। गुरुदेव थे आत्मभावी परन्तु जिनशासन का अनमोल कोहिनूर रत्न काल-राजा ने छीन लिया। सोलह कलाओं से खिला हुआ चांद जगत को अंधेरा करके विलीन हो गया। यह समाचार वायुवेग से प्रसारित हुआ, पर लोग सुनकर अचंभित रह गये कि क्या यह सत्य है ? समस्त देश के कोने-कोने में हाहाकार मच गया। इस दुखद समाचार के मिलते ही श्रद्धालुओं की भीड़ दर्शनार्थ उमड़ पड़ी। उनका पार्थिव शरीर देख सबके मन में आता है कि कैसा अद्भुत है इस तेजस्वी मूर्ति का अलौकिक तेज।

दीप बुझा प्रकाश अर्पित कर,
फूल मुरझाया सुवास समर्पित कर।
टूटे तार सुर बहा कर,
गुरुवर चले पर नूर फैला कर॥

कुशल बागवां

चमन वाले खिजा के नाम से कभी घबरा नहीं सकते ।
कुछ फूल ऐसे खिलते हैं, जो कभी मुरझा नहीं सकते ॥

महापुरुष मानव समाज में खिले हुए ऐसे फूल हैं, जो कभी मुरझाते नहीं, कुम्हलाते नहीं। उनकी जिंदगी फूल की तरह खिली हुई, उसकी खुशबू समाज, बगिया में महकती रहती है। गुलशन में कुछ ही फूल खिलते हैं, किन्तु महापुरुषों के जीवन में सद्गुणों के हजार फूल खिला करते हैं। उन्हीं महापुरुष की अमर कड़ी में गुरु नानेश दीर्घकाल की तपस्या से इतनी ऊंचाई तक पहुंच पाये। वट बनने से पहले बीज को धरती की कोख में, अंधकार में जाना पड़ता है। तब कहीं जाकर वृक्ष आकाश की ऊंचाइयां छू पाता है। "मुश्किलों में भी कदम रुके नहीं" जिन्हें खुद पर भरोसा है, वे कब मुश्किलें समझते हैं। जहां पर शाम हो जाये, वहीं मंजिल समझते हैं। जीवन में अनेक कड़वे मीठे अनुभव आए, अपना संतुलन कभी नहीं खोया। समत्व की आराधना ही उनका सच्चा लक्ष्य था। फूल खिले भंवरों को पता न चले। उसकी सुगंध सब ओर फैल जाती है। कितने तूफान, कितने जख्म अपनों ने दिए पर कमाल कभी किसी से शिकायत नहीं। इस वयोवृद्धता में इतने आघातों को सहन करने पर भी वे समाज के उत्थान, विकास के लिए सतत प्रयत्नशील, चिंतनशील थे। उनके व्यक्तित्व में आकाश सी ऊंचाई, विचारों में सागर सी गंभीरता, कृतित्व में विराटता जीवन की जितनी विशेषताएं होना चाहिए, उन सबका अन्तर्भाव आपके महान् व्यक्तित्व में निहित था।

भारतीय मनीषा के बहुश्रुत पुरुषों में शीर्षस्थ नाम रहेगा, आचार्य श्री नानेश का। वे अध्यात्म की अंतर गहराई में डुबकी लगाने वाले योगी साधक थे, तो व्यवहार में जीने वाले मुनि थे। ये प्रज्ञा के पारगामी थे तो विनम्रता की बेमिसाल नजीर थे। ये करुणा के सागर थे, तो प्रखर अनुशास्ता भी। उनमें वक्तृत्वता थी तो प्रतिसंलीनता भी थी। पौरुष और समर्पण के सुयोग का अद्भुत करिश्मा ही था। स्याद्वाद को युगभाषा में प्रस्तुत करने में वे आईन्स्टीन की भांति थे। ऐसी बहुआयामी विभूति का अलविदा हो जाना, आंतरिक चेतना को झंकृत कर रहा है। युगपुरुष ! पुण्य पुरुष ! ओ गुरुवर...मेरी श्रद्धा और समर्पण का थोड़ा मोल दो। कृपा वाला दो नयन खोलकर, एक लब्ज तो बोल दो।

हृदय का सम्राट जिगर का टुकड़ा जाता रहा,
चमन का महबूब गुलों का महरबां जाता रहा ।
मौन क्यों गुच्छे हैं, और हर कली मुरझा रही,
आज हमारे बाग से बागवां जाता रहा ॥

बिन बागवां के जीवन बगियां सूनी-सूनी, रीति-रीति लग रही है। जिंदगी का कारवां बिखर रहा। भगवन्, पर कैसी आंख मिचौली कर रही ? कुछ तो कह देना था और कुछ सुन लेना था।

मगर भगवान् मौनस्थ हैं, क्योंकि सुनने, सुनाने के लिए पट्टधर को नियुक्त कर दिया। इस नवम पट्टधर में भी वे सारी शक्तियां निहित हैं, जो आचार्य श्री हुक्मेश से लेकर आचार्य श्री नानेश में अन्तर्निहित थी। नवम पट्टधर

के व्यक्तित्व को शब्दों की सीमा में नहीं बांधा जा सकता। आचार्य श्री रामेश का जीवन श्रद्धा और समर्पण का दस्तावेज है। प्रज्ञा और अर्न्तदृष्टि का अभिलेख है। शांति और विधायक दृष्टि से परिपूर्ण जीवन का संदेश है। आचार्य श्री की सृजन-चेतना से संपूर्ण मानव जाति, साधुमार्गी संघ लाभान्वित होगा। नवम् आचार्य पदाभिषेक पर अन्त:कामना है कि-

जिन्दगी के हर मोड़ पर एक नई बहार मिले, झोली का दामन कम पड़ जाए, इतनी बहार मिले

आरव्यां भर आई

साध्वी चंचल श्री जी

नवम पट्टधर ने देवां बधाई
अष्टम पाट बिना ... आंरव्या भर आई॥ टेर॥

वीर शासन की रीति पुरानी,
एक से एक आये पाट में ज्ञानी
नाना थारे बिन म्हारी २.. आत्मा अकुलाई।१।

हु शि उ चौ श्री ज्योतिर्धर ने
गणपति गुरुवर पूरे सब सपने
समता के प्रणेता गुरु ने।२।

कार्तिक बदी तीज का दिन गमगीन आया
संथारा गुरुवर के मन में समाया
मृत्यु महोत्सव गुरुवर .. तुमने मनाई।३।

अश्रु बहाए गुरुवर लाखों आंखे
विकल हृदय, बद मन की सलाखें
अपवर्ग वरो गुरुवर ... अतर भाव लाई।४।

राम गुरु को पाके राहत पाये
श्रद्धा समर्पण से गुरु को बंधाये
गुलाब बगिया की .. कलियां हरखायी।५।

ओ पावन पूज्यवर

साध्वी श्री इन्दुबालाजी म.सा.

ओ मेरे गुरुवर, ओ पावन पूज्यवर
कहां गये छोड़ के, राम गुरु से मुखड़ा मोड़ के
सती मंडल के दिल को तोड़ के.... ॥ टेर॥

मोहनी मूरत मोहनी गारी-२, समता मुरत थी प्रियकारी-२
दिव्य दिवाकर-२ ज्ञान गुणाकर
थे गुरुवर अनूठे कि हम से क्यों रूठे
कहां गये छोड़ के ।१।

वर्ष अड़तीस गणि पद पे विराजे-२
निर्मल कीर्तिचहु दिश राजे-२
किया संथारा स्वर्ग सिधारा
नानेश गुरुवर प्यारा ओ संघ का सितारा
कहां गये छोड़ के।२।

धन्य हुई है नगरी उदियापुरी-२
सकल साधना हुई है पूरी -२
रह गई दूरी इच्छा अधूरी
पेप बाट निहारे, ओ गुरुवर प्यारे
कहां गये छोड़ के।३।

□ महासती श्री वनिता श्री जी म. सा.

कुशल बागवां

चमन वाले खिजा के नाम से कभी घबरा नहीं सकते ।
कुछ फूल ऐसे खिलते हैं, जो कभी मुरझा नहीं सकते ॥

महापुरुष मानव समाज में खिले हुए ऐसे फूल हैं, जो कभी मुरझाते नहीं, कुम्हलाते नहीं। उनकी जिंदगी फूल की तरह खिली हुई, उसकी खुशबू समाज, बगिया में महकती रहती है। गुलशन में कुछ ही फूल खिलते है, किन्तु महापुरुषों के जीवन में सद्गुणों के हजार फूल खिला करते हैं। उन्हीं महापुरुष की अमर कड़ी में गुरु नानेश दीर्घकाल की तपस्या से इतनी ऊंचाई तक पहुंच पाये। वट बनने से पहले बीज को धरती की कोख में, अंधकार में जाना पड़ता है। तब कहीं जाकर वृक्ष आकाश की ऊंचाइयां छू पाता है। "मुश्किलों में भी कदम रुके नहीं" जिन्हें खुद पर भरोसा है, वे कब मुश्किलें समझते हैं। जहां पर शाम हो जाये, वहीं मंजिल समझते है। जीवन में अनेक कड़वे मीठे अनुभव आए, अपना संतुलन कभी नहीं खोया। समत्व की आराधना ही उनका सच्चा लक्ष्य था। फूल खिले भंवरे को पता न चले। उसकी सुगंध सब ओर फैल जाती है। कितने तूफान, कितने जख्म अपनों ने दिए पर कभी किसी से शिकायत नहीं। इस वयोवृद्धता में इतने आघातों को सहन करने पर भी वे समाज के उत्थान, विकास के लिए सतत प्रयत्नशील, चिंतनशील थे। उनके व्यक्तित्व में आकाश सी ऊंचाई, विचारों में सागर सी गंभीरता, वृत्ति में विराटता जीवन की जितनी विशेषताएं होना चाहिए, उन सबका अर्न्तभाव आपके महान् व्यक्तित्व में निहित था।

भारतीय मनीषा के बहुश्रुत पुरुषों में शीर्षस्थ नाम रहेगा, आचार्य श्री नानेश का। वे अध्यात्म की अंतल गहराई में डुबकी लगाने वाले योगी साधक थे, तो व्यवहार में जीने वाले मुनि थे। वे प्रज्ञा के पारगामी थे तो विनम्रता की बेमिसाल नजीर थे। वे करुणा के सागर थे, तो प्रखर अनुशास्ता भी। उनमें वक्तृत्वता थी तो प्रतिसंलीनता भी थी। पौरुष और समर्पण के सुयोग का अद्भुत करिश्मा ही था। स्याद्वाद को युगभाषा में प्रस्तुत करने में वे आईंस्टीन की भांति थे। ऐसी बहुआयामी विभूति का अलविदा हो जाना, आंतरिक चेतना को झंकृत कर रहा है। गुरुवर! गुरु पुकर! ओ गुरुवर...मेरी श्रद्धा और समर्पण का थोड़ा मोल दो। कृपा बरसा दो नयन खोलकर, एक शब्द तो बोल दो।

हृदय का सम्राट जिगर का टुकड़ा जाता रहा,
प्यार का महबूब गुलों का महरबां जाता रहा।
गौर क्यों गुच्छे हैं, और हर कली मुरझा रही,
आज हमारे बाग से बागवां जाता रहा ॥

बिन बागवां के जीवन बगियां सूनी-सूनी, फीकि-फीकि लग रही है। जिंदगी का कारवां बिखर रहा। भगवन्... यह कैसी आंख मिचौली कर रही ? कुछ तो कह देना था और कुछ सुन लेना था।

मगर भगवन् मौनस्थ हैं, क्योंकि सुनने, सुनाने के लिए पत्थर को नियुक्त कर दिया। इस नयन पत्थर में भी वे सारी शक्तियां निहित हैं, जो आचार्य श्री हुक्मेश से लेकर आचार्य श्री नानेश में अन्तर्निहित थी। राम पत्थर

के व्यक्तित्व को शब्दों की सीमा में नहीं बांधा जा सकता। आचार्य श्री रामेश का जीवन श्रद्धा और समर्पण का दस्तावेज है। प्रज्ञा और अन्तर्दृष्टि का अभिलेख है। शांति और विधायक दृष्टि से परिपूर्ण जीवन का संदेश है। आचार्य श्री की सृजन-चेतना से संपूर्ण मानव जाति, साधुमार्गी संघ लाभान्वित होगा। नवम् आचार्य पदाभिषेक पर अन्तःकामना है कि-

जिन्दगी के हर मोड़ पर एक नई बहार मिले, झोली का दामन कम पड़ जाए, इतनी बहार मिले।

आरव्यां भर आई

साध्वी चंचल श्री जी

नवम पट्टधर ने देवां बधाई
अष्टम पाट बिना ... आंरव्यां भर आई॥ टेर॥

वीर शासन की रीति पुरानी,
एक से एक आये पाट में ज्ञानी
नाना थारे बिन म्हारी २.. आतमा अकुलाई।१।

हु शि उ चौ श्री ज्योतिर्धर ने
गणपति गुरुवर पूरे सब सपने
समता के प्रणेता गुरु ने।२।

कार्तिक बदी तीज का दिन गमगीन आया
संथारा गुरुवर के मन में समाया
मृत्यु महोत्सव गुरुवर .. तुमने मनाई।३।

अश्रु बहाए गुरुवर लाखों आंखें
विकल हृदय, बंद मन की सलाखें
अपवर्ग वरो गुरुवर ... अतर भाव लाई।४।

राम गुरु को पाके राहत पाये
श्रद्धा समर्पण से गुरु को वंधाये
गुलाब बगिया की .. कलियां हरखायीं।५।

ओ पावन पूंज्यवर

साध्वी श्री इन्दुबालाजी म.सा.

ओ मेरे गुरुवर, ओ पावनं पूज्यवर
कहां गये छोड़ के, राम गुरु से मुखड़ा मोड़ के
सती मंडल के दिल को तोड़ के.... ॥ टेर॥

मोहनी मूरत मोहनी गारी-२, समता मुरत थी प्रियकारी-२
दिव्य दिवाकर-२ ज्ञान गुणाकर
ये गुरुवर अनूठे कि हम से क्यों रूठे
कहां गये छोड़ के ।१।

वर्ष अड़तीस गणि पद पे विराजे-२
निर्मल कीर्तिचहुं दिश राजे-२
किया संथारा स्वर्ग सिधारा
नानेश गुरुवर प्यारा ओ संघ का सितारा
कहां गये छोड़ के।२।

धन्य हुई है नगरी उदियापुरी-२
सकल साधना हुई है पूरी -२
रह गई दूरी इच्छा अधूरी
पेष बाट निहारे, ओ गुरुवर प्यारे
कहां गये छोड़ के।३।

महानतम् आचार्य श्री नानेश

मेरी कल्पनाओं को शक्ल दी तुमने,
मेरे जीवन को संबल दिया तुमने ।
जिन्दगी के घने अंधेरों को,
रोशनी में बदल दिया तुमने ॥

मेरा परम सौभाग्य रहा कि मुझे सद्गुरुवर्य नानेश जैसे संघ अनुशास्ता जीवन निर्माता प्राप्त हुए थे। जिनका जीवन समता, ममता, और सहिष्णुता का पावन संगम था। आपका व्यक्तित्व अनन्त आकाश में सुशोभित इन्द्रधनुष की तरह बहुरंगी प्रतिभा से युक्त था। उपवन में खिले हुए विविध प्रकार के रंग-बिरंगे फूलों की तरह आपकी संयम साधना पल्लवित और पुष्पित थी, जो भी आपके सानिध्य में पहुंचता वह चरित्र की सौरभ से सुवासित हो जाता था। चरित्र बल से भक्त गण स्वतः खिंचे चले आते थे।

मैं कैसे भूल सकती हूं आपको। आपने मेरे जीवन को विविध सद्गुणों के रंग से रंग, जीवन को नया मोड़ दिया। आपके सानिध्य को पाकर मेरा जीवन धन्य हो उठा। अंधे को आंख, पंगु को पैर और संतृप्त हृदय को सांत्वना मिलने से जितनी आनंद की अनुभूति होती है, उससे कई गुणा आनंद की अनुभूति मुझे हुई। आपके स्नेह से पली हुई छांव को पाकर मुझे उसी तरह की अनुभूति हुई कि मध्यान्ह की चिलचिलाती धूप में किसी घने वृक्ष की छांव सुस्ताने को प्राप्त हुई हो। प्रत्येक सांस में आपने त्याग और वैराग्य की संयम साधना की और स्वाध्याय की प्रेरणा दी। आज वे सारी स्मृतियां और अनुभूतियां स्मृति पटल पर उभरकर आ रही हैं। आपके सद्गुण रूपी मुक्ताओं को शब्द सूत्र में पिरोने का मेरा यह प्रयास है। आपका जीवन सूर्य की तरह तेजस्वी था, तो मेरा यह प्रयास नन्हें से दीपक की तरह है। हे..महानतम् गुरु मैं अब क्या लिखूं ?

तुम्हें हम बुलाएं

श्री उन्नति श्री जी म.सा.

आवाज देके तुम्हें हम बुलाएं,
ये बस नहीं है कि तुमको भुलायें,
यादें तुम्हारी हरपल रूलाए... १

आचार्य भगवन थे, मेरु से अविचल
जीवन था जिनका, गंगा से निर्मल
समता की ऐसी निधि जो लुटाए ... २

तुम्हीं मेरी नैया के खेवन हारे,
जीवन सभी के तुम्हीं हो सहारे
साथ जो छूटा कदम लड़खड़ाये... ३

दिल का हर तार तुमको पुकारे
नानेश पूज्यवर कहां तुम सिधारे
श्रद्धा सुमन हम सब मिलकर चढ़ाएं...४

प्रेषक : मणिलाल घोटा

दार्शनिक, धर्मप्रवण और वैज्ञानिक

ऋतम्भरा प्रज्ञा के धनी आचार्य श्री नानेश जिनकी साधना सशक्त, प्रांजल, परिष्कृत, निर्मल, निमर्मत्व की ओर बढ़ रही थी। अलौकिक साधना के स्नातक थे। चातुर्मास के प्रारंभ से ही श्रुतिगोचर हो रहा था कि आचार्य श्री का प्रशमरतित्व भाव गहन होता जा रहा है। शारीरिक अस्वस्थता का उपचार बाहरी औपध से नहीं अपितु वीतराग भावों के रसायन से ही चल रहा था। उनकी दीप्तिमन्त आन्तरिक चेतना में नियत संल्लेखना प्रवृत्त थी। यह संल्लेखना वृत्ति उनकी स्थित प्रज्ञता के अनवरत सघन होने का संसूचन कर रही थी। यह भी एक दिन या एक वर्ष की परिणति नहीं थी, वरन् सुदीर्घकालीन तपश्चर्या का सर्वोत्तम परिणाम थी, जिनकी चारित्रिक आराधना का हर पृष्ठ स्फटिक सा उज्वल रहा, जिनकी धड़कन में अध्यात्म जागृति का संदेश था। ऐसी अप्रतिम विरल विभूति की वरदानी, उदात्त छांव में चतुर्विध संघ महक रहा था कि अचानक विपत्ति के बादलों ने काल की काली कजरारी मेघ घटाओं को विस्तीर्ण कर दिया और २७ अक्टूबर ९९ की सुबह एक दर्दभरी सूचना लेकर दस्तक हुई। हम सिर से पैर तक हिल गये। मन परत दर परत कुरेदा जाने लगा। यकायक यह संथारा कौन सा ? एक अन्तहीन उदासी, अनुताप भीतर ही भीतर सिसकने लगा। इस तेजाबी खबर से मन का जर्रा-जर्रा कांपने लगा। कर्ण भी विह्वल थे, हालात तो कटे पंख पंछी से बन गये। दिन क्या गुजारा ? दिल वीरान, विपण्ण था। बेंगलोर की चारों दिशाओं में इस खबर ने विद्युत लहर सी पैदा कर दी। आगन्तुकों की चहलकदमी रफ्तार ले रही थी। एक तरफ जाप की मंगल ध्वनि गूंज रही थी, तो दूसरी तरफ प्रति समय परम आराध्य गुरुदेव के स्वास्थ्य संबंधी उतार-चढ़ाव का जिक्र था। ज्यों-ज्यों खबर मिल रही थी, त्यों-त्यों मन गहरी शून्यता में डूब रहा था। भीतर बाहर खामोशी ही खामोशी व्याप्त थी कि एक ऐसी अप्रत्याशित बिजली गिरी। जिसका करंट असह्य था, जिसमें सारी कल्पनाएं मटियामेट थी। जीवन का अस्तित्व खण्ड-खण्ड हो रहा था।

१० बजकर ४१ मिनट का क्षण जीवन की समग्रता को छिन्न-भिन्न कर गया और मुंह से सहसा निकला, हे भगवन्..यह क्या किया ? यह कैसा वज्रपात ? किस लोक में छिप गये।

बरस पड़े हजार बादल एक साथ आंखों से
मगर अलविदा तक न किया अपने हाथों से..
तीर तलवार बरछी का घाव तो भरेगा।
किन्तु लगा जो जख्म हरदम गीला ही रहेगा॥

कुछ क्षण के लिए नि.स्तब्धता छा गई। उस नीरव नि.शान्त वातावरण में मानो पूज्य गुरुदेव ने संदेश संप्रेषित किया,

"मैंने तो अपना कर्त्तव्य पूर्ण कर लिया अब तुम अपने कर्त्तव्य पथ पर आरूढ़ हो जाओ। अगर मुझे कुछ सुना हो, समझा हो तो शोक संतप्त नहीं, अपितु होश और ताजगी के साथ बढ़ते रहना नवम पट्टधर के इंगित, इशारों पर।"

रन्ध्र-रन्ध्र में संग्रहित उनके उपदेश, वचन स्फूर्त, स्पन्द होने लगे। वे तो एक निस्पृह अध्यात्म-योगी थे, उन्हें कहां रंजोगम।

जीवन और मृत्यु उनके लिए पर्याय बने हुए थे। वस्तुत: उनमें न तो जीवन के प्रति आकर्षण ही था और न ही मृत्यु का विषाद। उनकी अन्तर्यात्रा नि:संग एवं सतेज थी।

समय के क्षितिज पर अपनी ही हथेली से एक सूर्य को उदित कर चुके थे। जिसमें रफ्ता-रफ्ता रोशनी की चमक सुनहरी बनती जा रही थी। संघ अभ्युदय की नव्य चेतना सजग हो रही थी और देखा अब यह तिग्मरश्मि तमिस्रा को वितिमिरित करने लगी है। तो शनैः-शनैः शासकीय कार्यों से विनिर्मुक्त रहने लगे।

आचार्य श्री नानेश की वाणी सिद्धांत ही नहीं अनुभवों की निष्पत्तियां थी, वे दार्शनिक, धर्मप्रवण एवं वैज्ञानिक थे। आगम पुरुष थे। आचार्य श्री देश के, जैन समाज के ऐसे धर्मवृक्ष थे, जिनकी वरदायी छांव में बैठकर चतुर्विध संघ ने दर्शन चारित्र ज्ञान का क ख ग सीखा था। कार्तिक कृष्णा तृतीया आंसुओं के बादल भर लाई। हजारों हजार दिलों के आधार स्तंभ को छीन लिया। विचरण काल में ही दीर्घकाल की यात्रा कर गये। आचार्य श्री का समूचे देश,जैन समाज पर सात्विक प्रभाव था। खासतौर से अपनी आम्नाय, साधुमार्गी के तो वे प्राणप्रिय थे। जनप्रिय संत थे, तो लोकप्रिय आचार्य भी थे। उनके जीवन में कभी दो बात नहीं, दो पांत नहीं, यह क्षतिपूर्ति असंभव है, क्योंकि हर व्यक्ति व्यक्ति से भिन्न होता है। श्रमणत्व जीवन में भौतिक शिक्षा मूल्यवान नहीं, मूल्यवान होती दीक्षा किस गुरु से पाई और उसका निर्वाह जीवनान्त तक कितना किया, यह देखा जाता है।

आपने देश में फैली हुई विषमता का युगीन समाधान समता दर्शन द्वारा किया। उनकी समतामय प्रकृति से परिचित होकर उन्हें समता विभूति कहा जाने लगा। उनकी प्रेरणा से साधर्मी वात्सल्य, व्यसन -मुक्त, स्वाध्यायी, वीरसंघ जैसी पवित्र प्रणालियां निर्मित हुईं। ३६५ करीबन मुमुक्षुओं को प्रवर्ज्या प्रदान की। शताधिकों को तपस्या पथ पर, सहस्त्राधिकों को ज्ञानचक्षु दिये। उनका जीवन वृत्त श्लाघनीय था। हरक्षेत्र में उनकी प्रज्ञा के दीप जले। जीवन भर साधना के क्षेत्र में अग्रवर्त रहे। आचार्य श्री की महिमा अपनी वय पूर्ण करने के वर्षों पूर्व पूरे देश के जन गण मन पर छाई हुई थी क्योंकि *उनका जीवन श्रुत और चारित्र के मणि कांचन का सुयोग* था। उनके निकट में जो भी गया उन्हीं का हो गया। फिजाओं में उनका नाम आध्यात्मिकता की शुभ सुगंध बिखेर रहा है। रोम-रोम में उनकी उज्ज्वल चारित्रिक आभा के दर्शन होते थे।

जीवन के हर मोड़ पर समता की झलक थी। समूचे देश में उनके लक्षाधिक भक्त थे। देश के श्रावक *गण ही नहीं, जैनाचार्य जी भी उनके गुणानुरागी रहे, यह* सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। उनके वियोग से दुख होना परंपरागत क्रिया है। किन्तु उनकी जागतिक चेतना को पाकर पुलकित हैं। धन्य हैं ये क्षण। समाज, भक्त, श्रावक उन्हें श्रद्धांजलियां देते रहेंगे। संस्मरण दोहराते रहेंगे। ज्ञान क्रिया की संगति में उनकी आदर्शमयी योजना को सन्मुख रखकर चलेंगे और संकल्प करेंगे कि मरण दरम्य संथारामय सचेतन अवस्था में हो तो महान् कृपा होगी।

मेरे आराध्य मेरे श्रद्धा लोक में

आगम पुरुष के महाप्रयाण के अश्रवणीय समाचारों को ज्योंहि सुना मानो मानस शून्य सा हो गया और हृदय क्षण भर के लिए स्तब्ध हो गया। क्या अनहोनी होनी हो सकती है ? क्या जो सुना वह सत्य हो सकता है। विश्वास तो नहीं हो पाया, दिल ने स्वीकार नहीं किया, स्वीकारें भी तो कैसे ? दिल उन अशुभ समाचारों को मिथ्या देखना चाहता था। पर काल कितना क्रूर और बेरहम है जिसने हजारों हजार नयनों को (रोते बिलखते) देखकर भी सही सिद्ध कर दिया। आज हृदय अपार वेदना से व्यथित है, मन में उदासीनता है, वातावरण में चहुं ओर शून्यता है। आचार्य भगवन हमारे जीवन में सर्वेसर्वा थे, अनन्य आराध्य थे, हमारा सब कुछ उन चरणों में न्यौछावर था, जिनका व्यक्तित्व, आत्मबल, आगम ज्ञान अद्भुत अद्वितीय था। वे सिर्फ साधुमार्गी संघ के ही आचार्य नहीं अपितु विश्व के मूर्धन्य शीर्षस्थ संत शिरोमणि थे। जिन्होंने जीवन के प्रत्येक क्षण को साधना के स्वर्णिम सूत्रों में पिरोकर युगों-युगों तक के लिए यशस्वी जीवन मे परिणत कर लिया। आज भले ही वे महापुरुष पार्थिव शरीर से हमारे बीच नहीं है फिर भी हृदय कमल की प्रत्येक पंखुड़ी पर उनकी छबि के दर्शन करती हूं। चंद्रमा की शीतल किरणों में उनकी गुण कौमुदी सदा विद्यमान रहेगी, धरती के कण-कण में उनकी सहनशीलता अंकित है, चट्टानों के हर प्रस्तर में उनकी दृढ़ता के साक्षात दर्शन होते हैं। मेरे गुरुदेव मेरे आत्मा-लोक के शासक हैं, मेरे श्रद्धालोक के परम अधिकारी हैं। मेरी भक्ति नगर के अधिष्ठाता हैं और रहेगें, ऐसा मेरा अपना दृढ़ विश्वास है। कहने को सभी कहते हैं आचार्य भगवन् का देवलोक गमन हो गया है पर नहीं, मैं तो समझती हूं कि वे मेरे श्रद्धालोक में विराजमान है। वे आत्म- बोधक मेरे आत्मलोक में विराजमान है। मेरे परम पूज्य गुरुदेव...। आपके द्वारा प्रदान किये गए लोक में सदा सत्पथ पर आरूढ़ रह आपके आत्मीय संदेश अपनत्व भरे निर्देशों से अपने जीवन को सजाती रहूं। उनकी हर प्रेरणा हमारी अर्चना बन जाय, उनका हर संदेश हमारी साधना बन जाय, उनका हर मंत्र हमारी आराधना बन जाए, अन्त में पूज्य गुरुदेव ने दीर्घ साधना का नवनीत रूप शासन को जो महान धरोहर दी है, ऐसे परम् आराध्य श्रद्धा समेरू, प्राज्ञ पुरुषोत्तम वर्तमान आचार्य भगवन रामेश की चरण छांव में तन-मन जीवन से सदा समर्पित रहते हुए उनके आदेश निर्देशों पर सदा तत्पर रहेंगे। इन्हीं अन्तर भावों की अभिव्यक्ति के साथ जिनके अनगिनत उपकारों को कभी चुकाया नहीं जा सकता, जिनकी निर्मल शिक्षाओं को कभी भुलाया नहीं जा सकता, उन्हें कोटि-कोटि वन्दन।

□ महासती श्री कुसुमलता जी म. सा.

डूबतों का एक सहारा कहूं

समता विभूति अनन्तानन्त परमोपकारी आचार्य भगवन के संलेखना संथारा युक्त, देवलोक गमन का श्रवण कर मन मुरझा गया, दिल भर गया,-

क्या कहूं कैसे कहूं कहा बिन रहा न जाय,
गुरुदेव में गुण बहुत थे जिसका वर्णन किया न जाए ।

शास्त्र में दो प्रकार का मरण बताया है- (१) बालमरण (२) पंडित मरण । दोनों का विवेचन करते हुये पंडित मरण पर जोर दिया कि विरल आत्माओं को पंडित मरण आता है, ऐसा मरण हमारे जीवन निर्माता, भाग्य विधाता, आचार्य भगवन् को आया । आप श्री जी के गुण गरिमा मंडित जीवन की महिमा जितनी गाई जाय, उतनी कम है ।

आपका जीवन हिमालय से भी ऊंचा था,
आपका जीवन सागर से भी गंभीर था ।
आपका जीवन मिश्री से भी मधुर था,
आपका जीवन नवनीत से भी कोमल था ॥

अम्बर का तुझे सितारा कहूं या धरती का प्यारा रत्न कहूं, त्याग का एक नजारा कहूं या डूबतों का सहारा कहूं ।

नाम रोशन कर गये जग में गुणों का न पार था,
लेखनी ना लिख सके जो आपका उपकार था ॥

हरियाली कौन लाये

महासती सुमंगला श्री जी

मन दर्शन करना चाहे लेकिन दर्श न पावे ।
सूना है मन का गुलशन हरियाली कौन लावे ॥
नानेश से मिलते आशीष गुरु का पाते
लेकिन वो अब कहां है, जिनसे थी हमको राहें ।
ऐसे गुरु थे ज्ञानी अब कैसे उनको पावे ॥
सागर से थे गंभीर, समता का नीर बहाते,
जो भी शरण में आते गुरु की कृपा पाते,
ऐसे गुरु की याद हरपल हमें रुलाए ।
बच्चे बड़े हर कोई उनको दिल से चाहें,
ऐसा दिया था वात्सल्य कभी न भूल पायें,
हमसे हुई भूल क्या गलती हम समझ न पाये ।

-प्रेषक : कमलचंद डागा, महामंत्री दिल्ली संघ

❑ महासती श्री सन्मति शीला जी म. सा.

जीवन के स्मृति-कोष में तुम जिन्दा हो

ओ अखिल विश्व की बेमिसाल ज्योति तुम्हें नमन,
आगम-निगम की विमल विश्रान्ति तुम्हें नमन ।
चिंतन महार्णव के निर्मल मोती तुम्हे नमन,
समता सिद्धांत के विशिष्ट व्याख्याता तुम्हें नमन ॥

एक उर्ज्वस्वल चेतना दीप जो कि प्रखर दीप्ति से प्रदीप्त हो प्रलयकारी तूफानी झंझावतों के बीच भी अपनी ज्योति से निरंतर तमिस्रा को हरने वाला था, वह प्रज्वलित दीप क्रूर काल की हवा से बुझ गया। इस अप्रत्याशित घटना से दिल को बहुत बड़ा आघात लगा। मन द्रवित हुआ, श्वांसों में धड़कन, रोम-रोम में स्पंदन, अधरो पर क्रंदन किंकर्तव्यविमूढ सी रह गयी। कुछ देर तक तो ऐसा लगा जैसे तन से प्राण ही पृथक हो गए। यकायक विश्वास नहीं हो रहा था।

वेदना विह्वल मन बारबार प्रभु से यही अभ्यर्थना कर रहा था -

हे प्रभु ! क्यूं छोड़ गए इस कदर हमें, बिलखते नयन निहार रहे है बारबार तुम्हें ।
क्या कसूर था कि हम से मुख मोड़ चले, यह हंसता खिलता उपवन छोड़ चले ॥

तमन्ना है दिल की कि-

आप श्री की वरद् छाया,
सदैव छत्र बन इस संघ पर रहे ।
जिससे कि हम नन्हें-नन्हें सुमन् कभी,
कलिकाल की अनुश्रोत लहर में ना बहे ॥

अत्यधिक खेद हो रहा है कि आज आचार्य श्री की पार्थिव देह हमारे बीच नहीं रही किन्तु उनकी मधुर स्मृतियां चलचित्र की भांति उभर-उभर कर आ रही हैं। उन सारी स्मृतियों को वाणी का रूप देना असंभव है। फिर भी समय-समय पर आचार्य श्री से प्रदत्त शुभ शिक्षाएं प्राप्त हुईं वे आज भी स्मृति-कोष में सुरक्षित हैं और भविष्य में भी रहेंगी। जब-जब भी आचार्य श्री के चरणों में विशेष रूप से शिक्षा-याचना का प्रसंग बनता, आचार्य देव के श्रीमुख से यही भव्य भाव निसृत होते कि - "संयमीय मर्यादाओं में रहकर स्वजीवन को अनुशासन में आबद्ध करते हुए समय को सार्थक करना और समतामय जीवन बनाना"।

आचार्य देव ने समता का सिर्फ उपदेश ही नहीं दिया अपितु समता को आत्मसात करके दिखाया, जीवन भर की समता साधना आज चरमोत्कर्ष के सन्निकट पहुंच गयी क्योंकि मनुष्य जीवन की साधना का निष्कर्ष अंतिम समय में उपस्थित होता है। जिनकी साधना का हर पल संयम की सजगता के साथ निकला हो उनका अंतिम समय भी पूर्ण सचेतावस्था में ही पंडित मरण के रूप में सार्थक होता है, इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

सारी योग्यताओं को मध्यनजर रखते हुए संघ के भावी उत्कर्ष एवं उज्ज्वल भविष्य की कामनाओं को साकार रूप प्रदान करने के लिए आचार्य देव ने अपना पावन उत्तरदायित्व प्रशांतमना, आगममर्मज्ञ, स्थितप्रज्ञ, तरुण तपस्वी आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के सशक्त कंधों पर सौंपकर समस्त चतुर्विध संघ पर जो गुरुतम उपकार किया है, उनके इस महान् उपकार के प्रति आभार प्रकट करने में हम सक्षम नहीं हैं।

पूर्वाचार्यों की दूरदर्शिता एवं उदात्त चारित्र का ही सुप्रतिफल है कि सहस्त्राब्दियां बीत जाने पर भी आज प्रभु महावीर की शासन प्रणाली अक्षुण्ण एवं अजस्रधारा में प्रवहमान है।

कोटि-कोटि अभिनंदन :

हुक्मशासन के नवम् पट्टधर अभिनव आचार्य देव के श्री चरणों में अंतर की अनंत-अनंत आस्थाभिषिक्त अभिवंदना के साथ यही शुभकामना करती हूं।

ओ आध्यात्म की उत्कृष्ट साधना में,
अहर्निश अवगाहन करने वाले तपोपूत महामनीषियों।
अत्यधिक आल्हाद की अनुभूति होती है जब-जब,
श्रवण करती हूं वीतराग वाणी का अर्थ गांभीर्य।
सर्वस्व समर्पणा से काम्य कामना है श्री चरणों में,
युगों-युगों तक श्रीमुख से भव्य मानस,
पाता रहे निस्यन्द का रस माधुर्य।

अंत में स्वर्गीय आचार्य भगवन् के लिए यही मंगल मनीषा है कि वह विराट आत्मा दिव्यलोक में जहाँ भी पहुंची हो वहां से शीघ्र ही संयम ले मोक्षगामी बने एवं हमें आप श्री के चरण चिन्हों पर चलने की शक्ति प्रदान करें।

आज भी तुम जिन्दा हो, जीवन के स्मृति-कोषों में।
सांसों की हर धड़कन में, श्रद्धा के पावन रेशों में॥

युगों युगों तक तेरी याद रहेगी

साध्वी अक्षय प्रभाजी म.सा.

जब-जब याद आए तुम्हारी,
अश्रु बहाए अँखियाँ हमारी
सदा शान्ति पाए आत्मा तुम्हारी
यही श्रद्धांजलि है हमारी ॥१॥

चैतन्य की चांदनी लुप्त हो गई
सहसा अंधकार छा गया,
अंबर की बूंद के बहाने
उषा ने आंसू टपका दिया ॥२॥

प्रकृति रोई रुलाया सभी को क्या
अमूल्य लाखों का लाल हार
खो गया, जो भी हो
इन बातों से मन अधीर हो गया ॥३॥

सुनो भगवन् आप सुनोगे हम कहेंगे,
जहाँ भी हो हम आपको जुदा ना कहेंगे॥
हम आपके थे आप हमारे थे
हम अक्षय सुख को वरेंगे॥४॥

❑ महासती श्री सूर्यमणि जी म.सा.

एक घर का चिराग बना लाखों घर का प्रकाशक

नानेश चरण में झुका शीश तो, अन्तर तर में ज्वार उठा।
स्वीकार करेगा कौन, नमन यह गिरि अम्बर पुकार उठा॥

अध्यात्म की उर्ज्जस्वल धारा के प्रवहमान युग पुरुष :-

गौरव बढ़ाया हुक्म संघ का, बनायें लाखों धर्मपाल थे।
हे कोटि गच्छाधिपति आचार्य तेरी प्रतिज्ञा विशाल थी॥
साधुमार्गीय महासंघ का बना तू महाप्राण था।
हे समीक्षण ध्यानयोगी तेरी महिमा महान् थी॥

भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में त्यागमय संस्कृति का विशेष महत्व रहा है। इस संस्कृति में आत्म जागृति, पुरुषार्थ, पराक्रम तप, संयम, सदाचार एवं कर्त्तव्य परायणता से युक्त व्यक्तित्व एवं कृतित्व को पूजा गया है। संयमीय साधना के ज्वलंत आदर्श विश्व शांति के अनन्य मसीहा, श्रमण परंपरा के महान् श्रुतधर ध्रुव, नैष्ठिक क्रांति के उद्‌गाता, संयम साधना के कल्पवृक्ष, विषमता की विभीषिका में व्याप्त समता की जगमगाती मशाल, अध्यात्म जगत के सुदक्ष यात्री, प्रभु महावीर की अक्षुण्ण परंपरा को लेकर चलने वाले, भौतिकवादी युग के सुपुप्त जनों में चेतनात्मक दिव्य प्राण संचारक, जैन जगत के महासरताज,परम श्रद्धेय समता विभूति आचार्य श्री नानेश इस युग के महाप्राण थे।

क्या कहूं, कैसे कहूं कहा कुछ अब जाता नहीं।
आचार्य के वियोग का दुःख सहा जाता नहीं॥

सच है, वियोग संयोग प्रकृति के विरल खेल हैं, किन्तु हम देखते हैं जिनकी यशोगाथा इस धरा के कण-कण में व्याप्त है, जिसके चरित्र की आभा, विशुद्ध विचारों की विभा वायुमंडल के हर अणु-अणु में विद्यमान है। मन कह उठता है-

गुरु तू नहीं तेरी उल्फत हर किसी के दिल में है।
शमां तो बुझ गई रोशनी सदा महफिल में है॥

अवर्णनीय महाजीवन :

आध्यात्मिक जगत के प्रज्ञा पुरुष के समता की अजस्र ज्योति, आचार्य देव के जीवनांशों, घटनाक्रमों एवं समस्त चारित्रिक जीवन दर्शन रूप महानताओं की अभिव्यक्ति को शब्दों में आलेखित नहीं किया जा सकता।

कहा है-

सात समुद्र मसि करूं, समस्त लेखनी वनराय।
असंख्य जीवन पूरे करूं, गुरु गुण लिखे न जांय॥

मिश्री के सुख को उत्प्रेरित नहीं किया जा सकता। घी के स्वाद को बताया नहीं जा सकता। गूंगे को गुड़ की अनुभूति अवर्ण्य रहती है, यही दशा हमारी है। महान् जीवन दर्शन के सांगोपांग वर्णन की क्षमता अबोध लेखनी में नहीं, फिर भी भावों की विशदता को सोना मान शब्दों का बाना पहनाकर छोटी सी भावउर्मि समर्पित..।

श्रम कागज उच्च आचार विचारों की स्याही।
२१वीं सदी में है अपूर्व समता शांति की गवाही॥

साधना के शिखर पुरुष का मेवाड़ी आन-बान-शान को सवांरने वाली, कर्मवीरों की उसी महान् धरा पर धर्मवीरों के रूप में नन्हें से गांव में वैदूर्य मणि के रूप में अवतरण हुआ, जिसकी चमक दमक अपनी विराटता के लक्ष्य को लेकर प्राणिमात्र के लिए दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती गई। आचार्य श्री का जीवन असंख्य गुण शाखा का विटप था। जिनके व्यक्तित्व के घटक गुण गणना में देखें जायें तो कौन सा ऐसा सद्गुण पुष्प नहीं था उनमें, जो महागट रूप जीवन शाखा पर पल्लवित, पुष्पित, सुरभित न हुआ हो। विश्व की कौन सी ऐसी दुर्लभ विशिष्टता थी जो उस बहुआयामी व्यक्तित्व में नहीं पाई गई हो। ऐसे यादीमान दिशासूचक समतादर्शी को पाकर भव-भव निर्भय हो जाते हैं।

महापुरुषों का जन्म ही जीवन का मंगल होता है। गुरुदेव का तेजस्वी व्यक्तित्व जन-जन के लिए प्रेरणा स्रोत रहा है। धर्म के शंखनाद, आचारों के दिव्य निनाद में गुरुदेव का जीवन निर्धूम दीप शिखा की तरह जीवन के संध्याकाल तक धूमरहित रहा। जिन्दगी की अरुणाई से अन्त तक मन के कण-कण व जीवन के अणु-अणु को करुणा का सिंदूर लेकर आपूरित किया। अनेक के प्राणाधार, पतितों के पावनहार, शुद्ध आचार विचार से जन-जीवन में छाते चले गये।

संत जीवन महान् है, चले महन्त के पंथ :

संत जीवन स्वयं धर्म का जीता जागता स्वरूप होता है। सूर्य का प्रकाश देना, धरती का कर्म धारण करना, संत का धर्म जीवन को, आत्मा को परमात्म रूप देना है।

मन कहने लगा-

चलो मानस मानवी बढ़ें संत के पंथ।
बीत जाए रात पतझड़ की बारह माह बसंत॥

गुरुवर मेरे नाना गुणों का खजाना

साध्वी सुजाता जी

गुरुवर-२ करो मोहे भव छोड़ पार,
गुरुवर मेरे नाना, गुणों का खजाना,
गुण गण की माला ये जपते ही जाना॥ टेर॥

नाना गुरुवर जी गुणों के सागर,
जिधर जिधर भी देखो गुणों के थे गागर।
समता का तो हर पल बजता था डंका,
इस सर्वांग जीवन में गुण गुण है भरना॥ १ ॥

सौम्य सलोनी सूरत प्यारी लगती थी,
तेरी अनुपम वाणी मन को हरती थी।
तुझ दर्शन बिन तरसे प्यासे है नयना,
तेरे मन को कैसे जाए है कहना॥ २ ॥

ज्योति में ज्योति की जगमग होना था,
तेरी यादों में मेरा मन खोया था।
जहाँ कहीं भी हो गुरु पद दिखा देना,
नानागुरु की शरणागति में है रहना॥३॥

❑ महासती श्री विवेक शीला जी म.

तुम अब भी जिन्दा हो

अपने युग के महापुरुष हो तुम,
जग की वीणा यह बोल उठी।
इतिहास बनाया है तुमने,
मन की हर उर्मि बोल उठी।
तुम गए और हम खड़े ,
आंसु की धार बहाते हैं।
नाना गुरु यश की गाथा तेरी,
हम मन ही मन दोहराते हैं ॥

इस विशाल विश्व में कौन किसको स्मरण करता है। काव्य के महासिंधु में मानव जीवन-बिन्दु का क्या मूल्य हो सकता है। फिर भी कुछ महापुरुष मन मस्तिष्क पर ऐसी अमिट छाप व प्रभाव छोड़ जाते हैं कि उन्हें भुलाने की बात ही कभी दिल और दिमाग में नहीं आती। उनका संस्मरण तो अन्तर्मन में केशर के रंग की भांति नित्य प्रति गहरा होता जाता है। ऐसी महापुरुषों की पंक्ति में मैं आज निगूढ़ ध्यान योगी, सर्वतोमुखी प्रतिभा के धनी श्रद्धेय आचार्य भगवान की कड़ी अनुस्यूत कर अपनी भावाजंलि अभिव्यक्ति के रूप में प्रस्तुत कर रही हूं।

जिस प्रकार गुलाब खुशबू से भर जाता है, तो सारा उपवन महक उठता है। वीणा जब मधुर स्वर में बजती है तो उसकी स्वर लहरियां संपूर्ण सभा को मंत्र मुग्ध कर देती है, ऐसे ही सुवास एवं सुस्वर से परिपूरित जन-जन को मंत्रमुग्ध करने वाले विशिष्ट व्यक्तित्व के प्रतीक थे आचार्य श्री जैसा उनका नाम वैसी ही विशेषता उनके जीवन में क्षीर नीर सी भरी हुई थी। उनके गुणों एवं महत्वपूर्ण खूबियों को शब्दों की परिधि में बांधना सहज नहीं हैं। क्योंकि महापुरुषों के गुण शब्दातीत होते हैं। दायरे से परे होते हैं। उनके गुणों की व्याख्या पुस्तकों में नहीं जीवन की आचरण परक गहराइयों में समाहित है। उनका जीवन आदर्श तो जन-जन के लिए प्रेरणा श्रोत बन जाता है। हृदयोद्‌गार मुखर हो उठते हैं कि-

हुक्म संघ के भगवान तुम्हारा जीवन जग में था आदर्श,
मानव पावन हुए तुम्हारे चरण मणि का पाकर स्पर्श।
गुरु पद श्रम से सफल किया आपने श्रेयकार,
हर पल हर क्षण वंदना करता मन बार हजार ॥

आज आचार्य श्री के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करती हुई यह कामना करती हूं कि आप श्री ने इस संघ के लिए जो अनमोल धरोहर छोड़ रखी है, उसे हम सुरक्षित रखकर सदा-सदा के लिए समर्पण भावों से स्वर्णिम इतिहास की अजरामर पंक्तियों पर एक अनुपम आदर्श उपस्थित करने की-आशा रखते हैं। नूतन आचार्य श्री के लिए दीर्घायु की कामना करती हूं। आप श्री हम अबोधों का मार्ग प्रशस्त कर उर्ध्व दिशा में गति प्रदान करावें, बस इन्हीं आशाओं के साथ नमन।

□ महासती श्री पूज्य प्रभा जी म.सा.

मेरे संयमी आवास

पुण्य प्रसंग से आचार्य श्री नानेश की विराट छत्रछाया में मुझ अकिंचन को संयमी आवास मिला। आप श्री चरण शरण अध्यात्म राह पर चलने की सतत् प्रेरणा में नन्हें-नन्हें कदमों को अग्रसर कराती रही। स्नेहाभूत अन्तर ज्ञान की अनुपम दीपशिखा से आपने मेरे इस दीप को ज्योतिर्मय बनाया। आपने संकीर्ण विधिका से विगत गलियों से गुजरती हुई मेरी चेतना को अपने शाश्वत गंतव्य की ओर गतिमान किया।

हे अनंत उपकृतियों के केन्द्र, संख्यातीत उपकृतियों से उपकृत कर कर्मावृत्त आत्मा को उन्मुक्त मुक्ति गमन का पथिक बनाया। यह सब प्रबल पुण्योदय से हुआ।

हे महाभाग.. आप श्री जी का साधना निस्पंद रूप संथारा पूर्वक देह त्याग ध्रुव तारे की तरह दिशानिर्देश अवस्था में सम्यक् राह दर्शायेगा। फिर भी आप श्री को वीर शासन तख्त पर न पा हृदय विह्वल हुए बिना नहीं रहता। समता, शिक्षा, संयम, साधना, सहिष्णुता, के चैतन्य गुलशन चित्र की यह विभावरी हमें व्यथित कर रही है।

शोक की सघन शर्वरी में असहाय की तरह अनुभूत कर रहे हैं मानो किसी ने प्राणों को ही हमसे छीन लिया। बेबस मन आर्तनाद कर उठा-

रोता है दिल गुरु यादों में प्राणों का सहारा छूट गया।
अब दर्श कहां तेरे कर पायेंगे, आशाओं का तारा टूट गया॥

महावीर की वाणी से तुमने, अनुपम चेतन शृंगार किया।
समता की सौरभ महकाकर, हर मानव पर उपकार किया॥
तेरी ध्यान समीक्षण धारा ने, अनिगन सांसों को लूट लिया॥१॥

संलेखना और संथारे से, जाने की कर ली तैयारी,
'नमो आयरियाणं' पद की, गुरु राम को दी जिम्मेदारी,
दिव्य लोक में आप पधार गये, किश्ती का किनारा छूट गया॥२॥

गुरु राम की मंगल मूरत में, नानेश का दिव्य दीदार मिले,
आशीष की प्रतिपल धार बहे, जब तक ना मुक्ति मीनार मिले,
'इन्द्र' भूले ना अहसानों को, गुरु ज्ञान खजाना अटूट दिया॥३॥

❑ महासती श्री जयप्रज्ञा जी म. सा.

हुक्म क्षितिज के सूर्य

मन ने कैसी की नादानी,
जो तुम्हारा इतिहास लिखने को मचला।
जैसे नन्हा जुगनू,
सूरज की पूजा करने को निकला ॥

"कुलं पवित्र, जननी कृतार्था, वसुन्धरा पुण्यवनीच तेनं" कुल को पवित्र करने और जननी को कृतार्थ करने के लिए महापुरुष जन्म लेकर वसुंधरा को भाग्यशाली बनाते हैं। महापुरुषों का जीवन सद्‌गुणों से भरा रहता है। उनके सद्‌गुणों की अनुभूति के विषय को शब्दों की परिधि में बांधना सहज काम नहीं है। जैसे कोई माली चाहे समस्त उपवन के फूलों को एक गुलदस्ते में सजा दूं तो क्या कर सकता है ? नहीं, ऐसे ही मेरे गुरुदेव ! सागर के समान गंभीर, समता, सहिष्णुता, त्याग, अनासक्ति, वात्सल्य आदि गुणों के समुद्र थे। विश्वास नहीं हुआ था कि आप हमें बीच मझधार में छोड़कर चले जाओगे। सदा-सदा के लिए हमसे रूठ जाओगे।

मैं नन्ही सी बूंद वह भी ओस की, आपके जीवन को न तो कागज में बांधा जा सकता है न गुणों को गिनाया जा सकता है। बस यही प्रार्थना करती हूं, हे हुक्म गगन के सूर्य ! आप श्री जी के दर्शन प्रतिपल मेरे राम गुरु में होते रहें व मोक्षपुरी में हमें अपने साथ-साथ अंगुली पकड़कर ले चलें।

अश्रुपूरित नयनों से आपके चरणों में श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं।

जब तक आसमां है और जमीं यहां रहेगी।
जिन शासन को आपकी देन अक्षुण्ण रहेगी,
'नाना' नाम ही हमें दिशा देगा अनवरत,
गाथा आपकी हमको यहां 'राम' जुबां कहेगी ॥

अंतर मनवा रोये

साध्वी श्री मंजुलाश्री जी म.सा.

विरह व्यथा यह कैसी आई अन्तर मनवा रोये,
कि गुरुवर छोड़ चले हैं,
रोम रोम यह तुझको पुकारे हो गई कैसी जुदाई,
कि गुरुवर छोड़ चले हैं,

साया उठाया देखो काल ने कैसी की है क्रूरता,
महायोगी को ले गये धरती को कोना-२ धुनता,
गम के बादल हैं मंडराये दिल ये नाना गाये।

राम की आज्ञा पे तन मन जीवन ये कुर्बान है।
आये कसौटी कितनी सारी संघ बलिदान है।
दिया है हीरा तूने अनूठा इन्द्र यश पैनाए।

-प्रेषक : कु. अंशु

□ महासती श्री ललित प्रभा जी म.सा.

मेरे अनन्य उपास्य देव

साधना स्नेह से आलोक फैलाया
उस दीपशिखा की मैं हूं परवाना !
अणु-अणु में श्रद्धा का स्पंदन परिस्पंदन
'गुरु नाना' तुझे भुला न पायेगा जमाना ।

मेरे हृदय देवालय में बसित, कण-कण में अनुगूंजित परम आराध्य आचार्य नानेश का महाप्रयाण श्रवणकर रोम-रोम कांप उठा। शासन के अप्रतिम नायक हम सबको छोड़कर चले जाएंगे, स्वप्न में भी नहीं सोचा था। कोटि-कोटि जनमेदिनी की आस्था के महा केन्द्र आचार्य भगवन् के स्वास्थ्य प्रदीप की ज्योति मंदतम होती जा रही थी, पर फिर भी हमारी आशा थी कि आराध्य गुरुदेव अभी शासन संरक्षण कुछ समय और करेंगे। लेकिन २७ अक्टूबर की वह रात, वे दुखद अशुभ क्षण अविश्वसनीय शब्द कानों में प्रवेश कर ही गये कि अष्टम पट्टधर प्रकाश-पुंज दिवंगत हो गये। संलेखना संथारा (पंडित मरण) महोत्सव पूर्वक जिस शान से जिये उसी शान के साथ देहोत्सर्ग हुआ। भगवन् का सभी के लिए कीर्तिमान संदेश संदीप बना।

अतीत के उस पार झांका तो पाया कि अमरावती का पुनीत प्रांगण मेरे उपास्य देव के समक्ष समर्पित प्रश्न करने उपस्थित हुआ, आचार्य देव ने देखा पूछा कि, आप वैरागिन बहिन हो, इन आप्त वाणी ने मुझे रोमांचित कर दिया। आश्चर्य हुआ तब मैं वैराग्य से अपरिचित, अज्ञात तो विरक्ति कैसे हो सकती थी। मगर महासाधक के शब्द अक्षरशः पांच वर्ष में ही सत्य हो गये। बीकानेर की धरा पर सर्वविरति के महापथ को स्वीकारने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आचार्य श्री नानेश की चरण शरण में संयम पथ पर चलती हुई बाला को, महाश्रमणी रत्नाश्री इन्द्रकंवर जी म.सा. का सान्निध्य मिला और समय-समय पर प्रबल पुण्य से सेवा, शिक्षा से लाभान्वित होती रही।

भगवन, आप हमें अविलंब ही शिवपद के अधिकारी बनायें।

□ महासती श्री जिनप्रभा जी म.सा.

संयमी जीवन के प्राण

संयमी जीवन के प्राण थे तुम,
संघ के नाथ थे तुम ।
छोड़ा क्यों प्रभु तुमने हमें,
भवसागर नैया खेवनहार थे तुम ॥

साधना के अंतरंग चाह की स्पर्शना करने वाले परम आराध्य गुरुदेव के संथारे पूर्वक देह त्याग के समाचार ज्योंहि मिले, अरमानों के सारे महल ढह गये। दर्शन प्यासी आंखे अश्रुओं की निर्झरणी बन गई, कंठ अवरुद्ध हो गया, हृदय व्यथा से ओत-प्रोत।

दीर्घ समय से विमुक्त लघु शिष्याओं पर अचानक तुषारापात हो जाएगा, आशाओं के दीप बेसमय ही बुझा दिए जाएगें। भगवान लंबे अंतराल के बाद पूना में दर्शनों की तीव्र प्यास उपशांत हुई और निर्देशों के अनुकरण हेतु श्रद्धेय गुरुदेव ने बिदा दी। वर्षों के वर्ष गुजर गयें, प्रगाढ़ अन्तराय मेघावरण से भाग्य रवि प्रच्छन्न रहा और दुर्दैव से दर्शन वंचित अन्तर कसक रहा है। मेरे भाग्य विधाता गुरुदेव अब दर्शन की तीव्र पिपासा कौन उपशांत करेगा ? अब आप श्री के मुखारविन्द से अमृतोपदेश श्रवण करने का अवसर कहां प्राप्त होगा ?

मानस सरोवर में रह रह स्मृति लहरें लहराती,
नाना गुरु नाम लेते ही आंखें बरस-बरस जातीं।
संयम जीवन दे किया उपकार अनंत तूने
गुण गाते यह जिह्वा कभी नहीं अघाती ॥

कहता है ये दिल मेरा

महासती श्री मनन प्रज्ञा जी

कहता है ये दिल मेरा, मेरी धड़कन कहती है
लाखों मे तू एक था नाना-२, तुझको नमन मैं करती हूं
कहता है ये दिल मेरा ॥ टेर ॥

तुम ही ज्ञान दिवाकर थे,
समता के सागर थे।
करूणा रस का दरिया थे तुम,
तुम ही गुण रत्नाकर थे ॥

भुला न सकूंगी तुझको गुरुवर,
जब तक धड़केगा प्राण ।
तेरे नाम की आशाओं पर,
इन्द्र रहे सदा कुर्बान ॥

संयम पथ के महापथिक

श्रुत के ही विषय रह गये मेरे गुरुवर,
आंखों का सौभाग्य कहां दर्शन का ?
संयम का महापथ तुझ बिन हो गया सूना,
दर्शन वंचित क्यों रखा क्या किया गुनाह ?

संयमी परिवेश में मैंने अपने आराध्य आचार्य भगवन् की दर्शन, सेवा, सन्निधि को नहीं पाया। क्षण-क्षण रीतते गए और द्रव्यत: दूरी, दूरी ही बनी रही। दुर्दैव से कहूं कि उस पल को श्रुतिगम्य करना पड़ा कि आचार्य देव का संथारा पूर्वक पण्डित मरण ...

विचित्र अनुभूतियों से अंतर विचित्र दशापत्र हो गया। शतसहस्र चेतना प्रतिदिन आचार्य नानेश के दर्शनों से अपने को कृतार्थ बना रही है। मुझे वरदहस्त से अध्यात्म पुरुष आशीर्वाद दें, गुरुवर वैश्विक वात्सल्य के विरूद से अलंकृत हो और मैं अमाप वर्षिणी धारा के अभिसिंचन से वंचित रह गयी। इससे बढ़कर और क्या अशुभ योग हो सकता है। विनम्र भाव से सदैव श्री चरणों की परिक्रमा करती रही। रोम-रोम से समर्पण के सितार झंकृत होते रहे। मंगल ध्वनि अंतर में अनुगूंजित होती रही। दिव्य भावों से आपकी सानिध्य स्मृति को विलुप्त नहीं होने दिया। सतत् स्मरण धारा मे प्रवाहित मेरी चेतना इस दिव्यगति गमन से अत्यंत आहत हो गयी। आशा की रश्मि निराशा के तम में तिरोहित हो गयी।

कहां ढूंढू गुरु नाना तुम्हें,
कहां देखूं अब इस जहां में ।
बस मुक्ति की मंजिल मिल जाए
अभिलाषाएं तेरी पनाह में ॥

वंदन वारम्वार

सरला अशोक

पूज्य गुरु गणेशीलाल के, तुम शिष्य बने महान् !
हे ! संयम पथ के सच्चे अनुगामी, बारंबार करते तुम्हें प्रणाम ।
त्याग, धैर्य, सहनशीलता की, तुम बन गए अविस्मरणीय मिसाल ।
जब तक रहेंगे सूरज चांद, तब तक रहेगा तुम्हारा नाम ।
समता का संदेश तुम्हारा, पहुंचाएंगे हर घर, हर द्वार ।

समता सागर के राजहंस

ओ गुरुवर नानेश तुम थे भाग्य सितारे,
हजारों हजार को पहुंचाया तुमने भव किनारे ।
श्रद्धा सुमन चढ़ाने तब चरणों में भगवन्,
भव-भव में संयम दाता बन पंहुचाना मुक्ति द्वारे ॥

वीर शासन क्षितिज पर शुभ क्षणों में जो दैदीप्यमान रवि उदयापुरी मे उदियमान हुआ, उसी पुनीत धरा पर दिवंगत हो महानतीर्थ के रूप में युगों-युगों तक के लिए उसे कीर्तिमान रूप प्रदान किया। ऐसे मेरे श्रद्धा संदीप गुरु नाना कभी स्मृत्याकाश से विलीन नहीं हो सकते, जिन्होंने संयम रत्न दे ज्योर्तिमान बनाया, समय-समय पर शिक्षा सूत्र में विकीर्ण जीवनधारा को अनुस्यूत कर सम्यक् पथ पर चलना सिखाया । संघर्षों के बीच हंसते-हंसते समता रस का पान कराने वाले नानेश गुरुदेव महादिव्य देव के रूप में जनमानस के मानस पटल पर आलेखित हो चुके हैं। ऐसे महाक्षेमंकर गुरुदेव की वियुक्ति क्षण-क्षण हमें व्यथित बना रही है। श्रद्धासिक्त अनन्त श्रद्धापुष्प मन समर्पित कर रहा है।

समता सागर के राजहंस, आप श्री के दर्शाये हुए महापथ पर अनवरत चलते हुए इस संसार की अनादि भव परिभ्रमणा को पर्यवसित कर पायें, यही अभीप्सा है।

कहां चले हो तुम निर्मोही

साध्वी प्रमिला पुण्य रेखा

महायोगी तुमसे ही मैंने नव जीवन में गति पाई।
तेरी प्राण चेतना गुरुवर मेरे प्राणों बीच समाई॥

कहां चले हो तुम निर्मोही, कैसा खेल विधाता का।
किस दर्पण में कहा निहारूं, समता दर्शी मुख त्राता का॥
मन अधीर कुंठित है वाणी, याद तुम्हारी कलपाई ॥१॥

चले गए हो तुम गुरुवर पर, यह विश्वास सदा रखना।
रहा काम हम पूर्ण करेंगे, शक्ति बढ़ने की देते रहना॥
जहां कहीं भी हो गुरुवर, आशीष देना हमको हर्षाई॥२॥

जो दीप जलाया है तुमने, वो कभी नहीं बुझने देंगे।
जो फूल खिलाया है तुमने, वो कभी नहीं मुरझाने देंगे॥
सदा जलेगी यह मशाल, जो तुमने हमें थमाई ॥३॥

कल की सुबह गुलाबी होगी, नयी चेतना जागेगी।
तेरी समता से ही गुरुवर, विषम तमिस्त्रा भागेगी॥
राम राज्य होगा यह, नयी सदी होगी सुखदायी।

-प्रेषक : संजु कुम्भट, संबलपुर

संयम पथ के महापथिक

श्रुत के ही विषय रह गये मेरे गुरुवर,
आंखों का सौभाग्य कहां दर्शन का ?
संयम का महापथ तुझ बिन हो गया सूना,
दर्शन वंचित क्यों रखा क्या किया गुनाह ?

संयमी परिवेश में मैंने अपने आराध्य आचार्य भगवन् की दर्शन, सेवा, सन्निधि को नहीं पाया। क्षण-क्षण रीतते गए और द्रव्यतः दूरी, दूरी ही बनी रही। दुर्दैव से कहूं कि उस पल को श्रुतिगम्य करना पड़ा कि आचार्य देव का संथारा पूर्वक पण्डित मरण ...

विचित्र अनुभूतियों से अंतर विचित्र दशापन्न हो गया। शतसहस्र चेतना प्रतिदिन आचार्य नानेश के दर्शनों से अपने को कृतार्थ बना रही है। मुझे वरदहस्त से अध्यात्म पुरुष आशीर्वाद दें, गुरुवर वैश्विक वात्सल्य के विरुद से अलंकृत हो और मैं अमाप वर्षिणी धारा के अभिसिंचन से वंचित रह गयी। इससे बढ़कर और क्या अशुभ योग हो सकता है। विनम्र भाव मे सदैव श्री चरणों की परिक्रमा करती रही। रोम-रोम से समर्पण के सितार झंकृत होते रहे। मंगल ध्वनि अंतर में अनुगूंजित होती रही। दिव्य भावों से आपकी सानिध्य स्मृति को विलुप्त नहीं होने दिया। सतत् स्मरण धारा में प्रवाहित मेरी चेतना इस दिव्यगति गमन से अत्यंत आहत हो गयी। आशा की रश्मि निराशा के तम में तिरोहित हो गयी।

कहां ढूंढू गुरु नाना तुम्हें,
कहां देखूं अब इस जहां में।
बस मुक्ति की मंजिल मिल जाए
अभिलाषाएं तेरी पनाह में ॥

वंदन वारम्वार

सरला अशोक

पूज्य गुरु गणेशीलाल के, तुम शिष्य बने महान् !
हे ! संयम पथ के सच्चे अनुगामी, बारंबार करते तुम्हें प्रणाम।
त्याग, धैर्य, सहनशीलता की, तुम बन गए अविस्मरणीय मिसाल।
जब तक रहेंगे सूरज चांद, तब तक रहेगा तुम्हारा नाम।
समता का संदेश तुम्हारा, पहुंचाएंगे हर घर, हर ग्राम।

समता सरोवर के राजहंस

ओ समता सरोवर के राजहंस, ओ अध्यात्म के अनुपम अवतंस
सूना हो गया जहां तुझ बिन, तुम थे, नाना फूलों से सुवासित बसंत।

विविध तापों से तप्त शोकाकुल निराश आत्माओं को सुधावर्षिणी वाणी से अवर्णनीय उपकार करने वाला, विश्व के पार्थिव बंधनों को तोड़कर श्रमण संस्कृति का अटल राही अनंत का राही बन गया। कर्तव्य पालन में प्राण की परवाह न करने वाले उस स्थितप्रज्ञ और स्वरूप में स्थित महापुरुष का देह प्रेम तो न मालूम कब का छूट गया था किन्तु हमारी आशाओं और आकांक्षाओं को पूर्ण करने में समर्थ और सक्षम हमारे भाग्य विधाता के छीन जाने के समाचारों को सुनते ही हृदय कांप उठा। सुषुप्त हृदय की अंधकारमय गुहा में जीवन ज्योति का प्रकाश फैलाने वाला वह असाधारण मधुर वाणी का वचनामृत देने वाला वह भगवान क्या सचमुच नहीं रहा ? क्या उनकी दिव्य देह अमर नहीं हो सकती थी ? किन्तु इन प्रश्नों का समाधान कौन दे ?

आज से १४ वर्ष पूर्व की स्मृति चलचित्र की तरह सजीव हो उठी। पूज्य आचार्य श्री की आनन्दायिनी चरण सन्निधि विछोह के दुख सत्य को स्वीकार करना पड़ रहा है। सन् १९८५ में घाटकोपर (बम्बई) का वर्षावास सम्पन्न करके महावीर जयंती पर्व पर सन् १९८६ के इन्दौर चातुर्मास हेतु पूना में भगवन् की श्री मंशा से छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र,गुजरात, म.प्र, में लगभग ११-१२ वर्षों तक विचरण होता रहा। बाद में रामपुरा चातुर्मास सम्पन्न करके श्री चरणों में पहुंचने की तमन्ना संजोए चल रही थी कि अकस्मात् तीव्र असातावेदनीय ने इस देह पर अचूक आक्रमण कर दिया। औदारिक शरीर की इस रुग्णता ने मजबूर कर दिया।

अन्तराय की सघन पर्तों के नीचे दर्शन के क्षण दब से गये, १४ वर्ष की अवधि पूर्णता पर थी, मगर मन की भावनाएं अपूर्ण रह गई, सपने अधूरे रह गए। किसे पता था कि १४ वर्ष पूर्व के दर्शन हमारे अंतिम दर्शन के रूप में होंगे। वे सफल घटिकाएं, उस समय का मनोरम दृश्य और उन सुमधुर स्वरों से अब हमेशा हमेशा वंचित रहना पड़ेगा।

दुर्भाग्य एवं प्रगाढ़ अन्तराय की वह कसक जिन्दगी भर खटकती रहेगी, ऐसे निरभिमानी स्फटिक रत्न जैसे निर्मल हृदय वाले महापुरुष के अगणित उपकार युगों-युगों तक उनकी उपस्थिति का अहसास कराते रहेंगे। यह अलौकिक महापुरुष इस हुक्म संघ उपवन के संरक्षक थे। इस बगिया के हर पुष्प, पत्तों, पौधों, और लताओं के संवर्धन, के लिए जिन्होंने जीवन के रक्त से निरंतर सिंचन किया।

समर्पण भावना से कार्य करते हुए अपने प्राणों की परवाह नहीं करने वाले इस महापुरुष ने लिया कुछ नहीं जीवन भर दिया ही दिया है। हम कुबेर को लुटाकर भी प्रतिदान में कुछ नहीं दे सकते। पूज्य की मधुर मुस्कान ने जहां कंटकों को फूल बना दिया, और वज्र धैर्य ने विषमता भरे प्रसंगों में समता के दीप जलाए। समत्व योग की साधना जीवन का अभिन्न अंग बन गई थी। जहां संयम की कसौटी का प्रसंग आया वहां धैर्य की कृपाण ले स्थिरता के प्रतीक बनकर खड़े रहे। और जहां दूसरों की समस्या का प्रश्न आया वहाँ फूल बनकर कोमलता लुटाते रहे।

आप श्री नाम से 'नाना' नहीं थे अपितु नानाविध गुणों के कारण भारत भर में सम्मान और श्रेष्ठता के पर्याय गुरु नानेश बनकर अलौकिक सूर्य की तरह चमकते रहे।

प्राणदायिनी ऊर्जा के महास्रोत की पावन परिधि में हम सभी प्रसन्न पुलकित थे कि अचानक हमारा भाग्य रवि अस्त हो गया। शासन का महासूर्य अस्त होकर भी उदित है। जिनका आलोक सदियों तक कभी मंद नहीं होगा।

अंत में भरे हृदय में साधना शिखर के आरोही को श्रद्धा नमन...। शासन देव से प्रार्थना है कि हमारे भगवन् शीघ्र ही मोक्षगामी बनें। हमें प्रसन्नता है कि आप श्री जी ने दूध से धुले जिस शुद्ध अन्तःकरण से इस हुक्म गुच्छ के उत्तराधिकारी के रूप में नवम् पट्ट पर पूज्य श्री रामलालजी म.सा. को प्रतिष्ठित किया है, वे महापुरुष इस पद के सर्वथा योग्य हैं। हम सभी इस महापुरुष के निर्देशों में आप श्री के आदर्शों को आगे बढ़ाते रहेंगे।

जग को निहाल किया

महासती श्री सुशीला कंवर जी म.सा.

समता दर्शन दिया, जग को निहाल किया, गुरुवर नाना
दे गये संघ को राम सुहाना...
भोली दुनियां ने नहीं जाना।
क्या कर रहे गुरुवर नाना।
वो थे अंतर मगन, किया निज का ज्ञान गुरुवर - १
समता नाद को जग में गुंजाया।
विषमता को दूर भगाया।
खिला हुक्म चमन, हुआ नव सर्जन, गुरुवर - २
वेदना ने जोर दिखाया।
उस देह को खूब सताया।
व्याधि तन में रही, समाधि मन में रही, गुरुवर - ३
तेरी साधना थी निराली।
खिल गई कितनों की किस्मत डाली।
नयन ज्योति मिली वचनशक्ति मिली, गुरुवर-४
संथारा जीवन में धारा।
अपने अंतर को खूब निखारा।
शुभ भाव में रमन, किया देवलोक गमन, गुरुवर - ५
तुम बन गये देवलोक वासी।
तुम बिन छाई है यहां उदासी।
राम दरबार को हुक्म सरकार को, देखने आना - ६
जो भी संकट में तुझको सुमरे।
उनकी बिगड़ी सारी सुधरे।
नाना गहर महान, गाएं गुरु गुणगान, गुरुवर - ७
जो भी चरणों में तेरे (नाना के) आया।
वो आनंद सदा ही पाया।
नहीं भूलेगा जग, समता चाद का रंग, गुरुवर ८

प्रेषक : राकेश चोपड़ा, जोधपुर

□ महसती श्री अर्पणा श्री जी म.

प्राणों को गति देने वाले पूज्य गुरुदेव

वे हाथ कहां जो ऊर्जा देकर हमें जगा रहे थे ।
वे नयन कहां जो, वात्सल्य देकर ममता लुटा रहे थे ॥

बीसवीं सदी के अन्तिम चरण का मर्मातंक दृश्य, कलेजा कांप रहा है, हृदय रो रहा है, तृतीया कार्तिक बुधवार का दिन । हे भगवन ! अभी तो आपसे बहुत उम्मीदें थीं, आपके मूर्तिमन्त स्नेह से अनेक अनबुझे प्रश्न समाधित होते । रोते-बिलखते कैसे हमें छोड़ गये ? लवण समुद्रवत अन्तर में वेदना के तूफान उठ रहे हैं । समुद्री उफान को तीर्थंकर के अतिशय रोकने में प्रभावी होते हैं । मुझे पूर्ण विश्वास है कि मन अन्तर्वेदना के उफान को पूज्य प्रवर का समत्व अतिशय रोकने में प्रभावी हो सकता है । पूज्य प्रवर का समत्व चेतन हम सब में सचेतन होगा तो यह तूफान अवश्य रुकेगा ।

सचमुच, पूज्य प्रवर के लिए क्या कहें ? क्या श्रद्धा पुष्प समर्पित करें । वास्तविकता के आईने में देखें तो पं. श्री राम शर्मा आचार्य का यह कथन कि, "सही अर्थों में उन्होंने समता योगी, सन्त, सुधारक, शहीद की उपमा को अपने में चरितार्थ किया ।" उनके अगणित गुणों के कुछ अंश लेकर अपने जीवन में लोक कल्याण हेतु प्रेरणा लें तो हम श्रद्धा पुष्प चढ़ाने की कुछ योग्यता प्राप्त कर सकेंगे । तो आइये आदर्श के आईने में झांकें उनका जीवन :-

<u>समत्व योगी साधक :</u> पूज्य श्री नानेश ने समता को अपने श्वांस-श्वांस एवं प्राण-प्राण में प्रतिष्ठित कर सही अर्थों में साधना की मिशाल हम सबके हाथो में देकर समत्व योगी साधक की उक्ति को चरितार्थ किया है ।

सुधारक : पूज्य प्रवर ने लाखों दलित, पतित, शोषित वर्गों को व्यसनमुक्त बनाकर तिण्णाणं-तारियाणं के पद को सिद्ध कर दिया । वास्तविकता के परिपेक्ष्य में उन्हें बीसवीं सदी का अद्वितीय सुधारक कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगा।

शहीद : अपने आत्म तेज से उन्होंने जैनेत्तर के लिए सब कुछ समर्पित करके "मैं दर्द दीवाना, मेरा दर्द न जाने कोय" के रहस्य को दुनिया के समक्ष उद्घाटित करके शहीद की शक्ति संसार के समक्ष समुपस्थित की तो सच्चे अर्थों में अन्तर्मानस की श्रद्धांजलि के पुष्प समर्पित हैं-

ए मौत ! आखिर तुझसे भी नादानी हुई ।
फूल तूने वो चूना, जिससे गुलशन की वीरानी हुई ॥

पूज्य प्रवर आप जहां विराज रहे हैं, वहीं से शीघ्र कर्म क्षय कर व्याख्या प्रज्ञप्ति के अनुसार "सूत्तानुसारेन अग्रिमभवे" आचार्य पद पराकाष्ठा को सम्पन्न कर तृतीय भव शीघ्र मुक्ति को वरण करें । यही वीर प्रभु से पूज्य प्रवर के प्रति प्रार्थना है । नवम् पट्टधर के प्रति शुभ भावांजलि :

"नवम् पाट पर आप हैं आये, २००९ जन्म हैं पाये,
नव त्रिक अंक आचार्य कहाये, त्रिक-त्रिक-त्रिक नव निधि प्रकटाये"
आर्य रक्षित बनें आचार्य श्री नानेश,
आर्य रक्षित सम आप हैं, पुष्यमित्र सम राम ॥

❑ महासती श्री चरित्रप्रभा जी म.सा.

हाय मौत ! गजब कर डाला

मौत भी गजब कर जाती है,
न गाती है न गुनगुनाती है।
मौत जब भी आती है, चुपके से ही आती है,
परन्तु, हाय मौत ! गजब कर डाला, सोच न पाये पल भर भी,
जन-जन की आशाओं को कुचला दया न आई हम पर भी ॥

जाना तो सभी को है, यह जानते हुए भी दिल आज बुझा बुझा-सा है, सब कुछ सूना-सूना, उजड़ा-उजड़ा लग रहा है, क्योंकि गुरुदेव हमारे आधार थे, आस्था विन्दु थे। जीवन के अन्तिम क्षणों तक उस सम्यक्त्व योगी साधक ने समता को रगों में उतारा, उस सम्यक्त्व साधना की यादें हमारे पास हैं। पूज्य गुरुदेव हंस दृष्टिवत सार को ग्रहण करते असार को छोड़ देते। जिन्दगी में सार तत्व समय की सदुपयोगिता को पहचानने वाले थे, फूल की सौरभवत् सम्पूर्ण संसार में सम्यक्त्व की सौरभ फैलाकर चले गये। हे भगवन्...आप जहां भी रहो, हमें विश्वास देना, ममत्व का आभास देना, कृपाभाव से न रहे जुदाई, ऐसी दिलासा देना। मन में भव्य भावों से विहार करके हौसले बुलंद का भास देना ताकि हम जन-जन को बता सकें कि गुरुदेव हमारे साथ हैं।

अन्त में पूज्य प्रवर के असीमित गुणों को शब्द सीमा में बांध नहीं सकती, एतदर्थ यह प्रार्थना करुंगी कि हे भगवन् ! आप जहां भी हो समत्व की पराकाष्ठा को पूर्ण कर समत्व शिवालय में शीघ्र विराजें, यहीं भावांजलि अर्पित करती हूं।

नवम् पट्टधर के प्रति : आपने शासन की ज्योति को अखण्ड प्रज्वलित करने हेतु शासन की वागडोर नवम् पट्टधर श्री रामलाल जी म.सा. को दी, जिनके शासन सेवी बनकर आपकी आज्ञा में सब कुछ समर्पित करें। आप श्री दीर्घायु बनकर प्रकाश-स्तम्भ के समान युगों-युगों तक हमारे मार्ग को आलोकित करते रहें। आपके सानिध्य में संयम यात्रा निर्मल बने, यही शुभकामना है।

कहाँ ढूंढे हम आचार्य भगवन् को

सागर सूना एक सीप बिना, सीप सूना एक मोती बिना।
मन्दिर सूना एक मूर्ति बिना, दीप सूना एक बाती बिना।
आज यह हृदय हो गया सूना, आचार्य भगवन् के बिना।।

नहीं सोचा था कि हुक्म शासन को दैदीप्यमान करने वाले एक दिव्य मशाल का अचानक ही अवसान हो जाएगा। ज्योंहि मध्य रात्रि में यह दुःखद समाचार मिला सुनते ही हृदय फट पड़ा। अरे! अंतर के आकाश में चमकता चांद क्या अस्त हो गया ? विशाल वट की छाया के समान शान्ति प्रदान करने वाले गुरुदेव हमें निराधार छोड़कर चले गये। रत्न समान तेजस्वी, आचार्य भगवन् इस अवनि को अलविदा कहकर प्रस्थान कर गये। उनके जाने से जैन शासन की बहुत गहरी हानि हुई। आचार्य भगवन् तो गये परन्तु अपने गुणों की सुवास को छोड़कर गये।

पूज्य आचार्य भगवन् यदि मुझे न मिले होते तो मेरी यह जीवन नैया इस भीषण संसार अटवी में भटकती रहती, संसार सागर में डूबती नौका को बाहर निकालकर संयमी जीवन की अनमोल भेंट देने वाले, मुरझाती जीवन बगिया को अमृतजल के सिंचन से नवपल्लवित करने वाले, अज्ञान के आलम में अटके जीवन को ज्ञान का प्रकाश प्रदान करने वाले, मिथ्यात्व के महावन में भटकती अबोध बाला को सही मार्ग बताने वाले, मोक्षमार्ग के सोपान पर चढ़ाने वाले अनन्त-अनन्त उपकारी गुणनिधि पूज्य गुरुदेव का उपकार भला कैसे भूला जा सकता है ?

भले ही आज गुरुदेव सशरीर उपस्थित नहीं हैं, पर उनके गुणों की सुवास से तो वे अमर हैं। पूज्य गुरुदेव के दिखाये मार्ग पर आगे-आगे प्रगति करते रहें, उनके जीवन के अमूल्य गुणों के भंडार से यत्किंचित गुणों को जीवन में अपना लें। उनके द्वारा अर्पित सद्बोधों को जीवन में जड़कर, मन में मढकर, स्वभाव में सजाकर, विभाव से दूर करें। जीवन का ताना-बाना बुनने के सद्भागी बनें। इसी अभिलाषा के साथ मैं आचार्य भगवन् के प्रति श्रद्धानत हूं।

धरा रो रही है आसमां रो रहा है।
आपकी याद में हे गुरुवर, सारा जहां रो रहा है।।

प्रेषक : मणिलाल

❑ महासती मंजूबाला जी म.सा.

हुक्म संघ के मान

जग में जीवन श्रेष्ठ वहीं जो फूलों सा मुस्कराता है।
समता सौरभ से जग के कण-कण को महकाता है॥

वृक्ष की डाली पर जब फूल खिलता है तो वह चारों ओर आसपास के वातावरण में अपनी सौरभ को बिखेर देता है, कण-कण को महका देता है। महापुरुषों का अवतरण, फूलों से अनंत-अनंत गुणा बेहतर होता है, विशिष्ट होता है, महान् होता है। महापुरुष जब तक दुनिया में मौजूद रहता है, तब तक उनका व्यक्तित्व जनमानस को अपनी ओर प्रभावित करता ही है। तप,संयम के सौरभ से जन-जन में एक नवीन चेतना, नवस्तुति एवं नवजीवन का संचार करता है। आचार्य श्री नानेश हुक्म संघ के उपवन के वह माली थे, जिसने हर पौधे, हर फूल, हर पत्ती को अपने जीवन के कण-कण से सींचा। वह कल्पवृक्ष जिसने इच्छित फल प्रदान किया, वह चिंतामणि जिसने जन-जन के दु:ख दर्द को हर लिया, वह छत्र जिसने जन-जन को छूने तक नही दिया। समता विभूति आचार्य श्री नानेश हिमालय से विराट, सागर से गंभीर, चन्द्र से उज्ज्वल एवं सूर्य से तेजस्वी थे। उस गुरु की महिमा को शब्द की सीमा से बांधा भी नहीं जा सकता। वे इस धरती के सबसे ऊंचे मान थे। उन्हें नापने का कोई पैमाना नहीं है हमारे पास। उन महापुरुषों के जीवन पर दृष्टि डालते ही हमारा मस्तक गर्व से ऊंचा हो जाता है, और अन्तर्हृदय श्रद्धा से झुक जाता है। वे संयम-साधना के ताप में खूब तपे, निरंतर तपते रहे, निखरते रहे। निखरते-निखरते शुद्ध निर्मल समत्व योगी बन गए। विधि के कठोर विधान के सामने जिन शासन की चमकती हुई मणि का प्रकाश लुप्त हो गया। आज हमारे धैर्य का बांध टूट गया। आज आचार्य भगवन् भले ही चले गये, हमें दिव्य आशीर्वाद से वंचित कर गए किन्तु उन महापुरुषों का उज्ज्वलतम चरित्र यश सौरभ के साथ हमारे लिए प्रकाश पुंज बन कर अमर है, और युगों-युगों तक अमर रहेगा। प्रभु वीर के शासन को उन्होंने जिस भांति चमकाया वह इतिहास गगन में नक्षत्र की भांति हमेशा चमकता रहेगा। इसलिए कहा गया है-

जब तक सूरज चांद रहेगा, नाना गुरु का नाम रहेगा।
क्योंकि इतिहास कायरों से नहीं महापुरुषों से बनता है।
गुरुवर तेरी मधुर स्मृतियां युग-युग बोध जगाएगी,
दु:ख दर्द में उलझे मन की उलझन को सुलझाएगी।

अंत में यही कहना है हम महापुरुषों के बताए मार्ग पर चलकर श्रमण जीवन को समुज्ज्वल बनाएं।

मानवता के शृंगार

बीसवीं सदी का अन्तिम चरण समस्त विश्व व हमारे लिए बड़ा ही आघातपूर्ण रहा, क्योंकि सम आध्यात्मिक चेतना के संवाहक, जन-जन के आस्था केन्द्र हुक्म संघ एवं साधुमार्गी संघ की बगिया के बागवां, अष्ट पट्टधर, समता दर्शन की साक्षात प्रतिमूर्ति, महामहिम आचार्य भगवन् इस नश्वर काया को त्याग कर अपनी सर्वोच्च पदवी को पा गये। यह समाचार प्राप्त होते ही हृदय को गहरा आघात लगा, चारों तरफ गहरा सन्नाटा छा गया मन में हाहाकार मच गया। मर्मान्तिक वेदना से हृदय विदीर्ण हो गया और आंखें बरबस ही छलक पड़ीं। अने प्रश्न, अनबुझे प्रश्न, उदास तरल आंखों में तैरने लगे,वो महापुरुष क्या चले गये सारा संसार खाली हो गया।

जब हम भीलवाड़ा से विहार कर उदयपुर आचार्य भगवन् के दर्शनार्थ सेवा में पहुंचे, तब आचार्य भग के श्री चरणों में सद्शिक्षाओं का पाथेय पाया। उनकी मधुर स्मृतियां ज्यों की त्यों नव्य भव्य रूप में एक चलचि की भांति मानस पटल पर आकर हृदय एवं अन्तर्मन को सुखद रूप में प्रसन्नता दे रही थी। अचानक तभी ऐसा ल मानो हंसते खेलते मन पर बिजली गिर पड़ी। जिनके पावन दर्शनों की हर पल तमन्नाएं एवं आशाएं थीं, साधुमा संघ के गगन मंडल पर उस विश्व विभूति को अभी और चमकना था, वह महापुरुष दीर्घ साधनामय जीवन जी क तप, त्याग व संयम की ज्योति से जगमग हो आज हम सभी को छोड़कर उस अनंत ज्योति में लीन हो गया।

जब जरूरत थी हमें तुम्हारे सहारे की।
हमें बेसहारा छोड़कर तुम चले गये॥

समता विभूति आचार्य भगवन् हमारी आस्था के केन्द्र बिन्दु थे, हमारे जीवन आधार थे, उनके बिना म वीरान सा, सूना-सूना, उजड़ा-उजड़ा हो गया। जाना तो सभी को है, यह सनातन सत्य जानते हुए भी दिल आ बुझा-बुझा है, क्योंकि महापुरुष तो मोह माया के जंजाल को तोड़ चले जाते है और हम सब के दिलों में स्मृति छोड़ जाते हैं।

जग कहता गुरुवर चले गए, मन कहता गुरुवर गए नहीं।
जग भी सच्चा मन भी सच्चा, गुरुवर जाते पर मिटते नहीं॥

महापुरुषों की यादों के रूप में अब हमारे पास आचार्य भगवन के स्वरूप में उनके पथ प्रदर्शक व नेक का ही हैं।

आचार्य भगवन् की दृष्टि सदा हंस दृष्टि रही है। सारयुक्त को ग्रहण करना, असार को त्याग देना।

सादा जीवन उच्च विचारों के धनी आचार्य श्री जाति, पंरपरा, राष्ट्र को सन्मार्ग बताने वाले विश्व संत रूप में कहूं तो अतिशयोक्ति न होगी। आचार्य भगवन् का लेखन, वक्तव्य, अध्ययन, अध्यापन एवं साहित्य संपूर्ण विधाओं पर आधिपत्य आज भी सुशोभित है और सदा रहेगा। जैसे फूल की विशेषता उसकी सुगंध है, दीप की विशेषता उसका प्रकाश है, वैसे ही आचार्य भगवन् की विशेषता उनका साहित्य है। आचार्य भगवन् सहनशीलता, विनयशीलता, उदारता, प्रभु भक्ति, गुरु भक्ति, संघ भक्ति, राष्ट्र भक्ति, मानव सेवा, प्राणिमात्र के प्र

करुणा, दया के भाव आदि सर्वतोभावेन उपलब्ध थे ।

कलिकाल में ऐसे महान् समत्वयोगी साधक का मिलना दुष्कर ही नहीं महा दुष्कर है । क्योंकि आचार्य भगवन् के जीवन में अनेक संघर्ष आए। आचार्य भगवन् ने शिवशंकर की भांति गरल पीकर समता की प्रतिमूर्ति बन सहन किया इसलिए कहा जाता है- "नाना गुरु का है संदेश, समतामय हो सारा देश ।"

हुक्म संघ के सप्तम पट्टधर आचार्य श्री गणेश के धर्मरूपी चक्र को धारण कर देश के कोने-कोने में विहार कर धर्म का शंखनाद किया। यह उनकी श्रमशीलता और शासन के प्रति अपने कर्त्तव्य का बेजोड़ उदाहरण है ।

आचार्य भगवन् ने अपने शरीर की परवाह न करके प्रभुवीर की वाणी को जन-जन तक पहुंचाने का जो अथक प्रयास किया, वह युगों-युगों तक अमर रहेगा ।

न हर समुद्र से मोती सदा निकलते हैं,
न हर मजार पर दीप सदा जलते हैं ।
जिनके खिलने से उपवन महक उठता है,
ऐसे पुष्प उपवन में सदियों बाद खिलते हैं ॥

जैसे सुयोग्य संतान पिता का गौरव बढ़ाती है, वैसे ही सुयोग्य शिष्य गुरु गौरव में हमेशा अधिक वृद्धि करते हैं। ऐसे ही वर्तमान आचार्य श्री रामेश हैं जो उनकी कृपा एवं पुण्य निधि का साक्षात् फल है ।

हुक्म संघ के दीपावनहार, संघनायक, संघरूपी रथ के कुशल महारथी इस युग के महान संत आचार्य श्री नानेश थे।जहां वे स्वयं त्याग पथ के राही थे। वहीं संपूर्ण जैन वाङ्मय के साथ इतर धर्मों के भी प्रकांड ज्ञाता थे । आप श्री का आभा मण्डल प्रभावपूर्ण था । ओजस्वी, तेजस्वी, मुखाकृति सहज में दूसरों को नतमस्तक करने में सक्षम थी । तभी कहा है-

यूं तो दुनिया के समुंदर में कमी कभी होती नहीं ।
लाख जौहरी देख लो, इस आब का मोती नहीं ॥

आचार्य श्री को हमने देखा, वे सरल, विनीत एवं भद्रिक परिणामी के साथ वचनसिद्ध योगी थे । यह अनुभव की बात है, जैसे १० की तपस्या के दिन आचार्य भगवन ने फरमाया- सतीजी आप तो तपस्विनी बनने लग गई । उपवास से मासखमण की तपस्या होना, महापुरुषों की वचन सिद्धि का द्योतक है । आचार्य भगवन् फरमाया करते थे- "सतियां जी मेरी सेवा क्या करती हो, युवाचार्य भगवन् की सेवा करिए ।" मेरे में और उनमें कोई फर्क नहीं है । यह बात महापुरुषों की सरलता एवं वर्तमान आचार्य श्री के प्रति सुखद उज्ज्वल भविष्य का प्रतीक है । ऐसे महान योगी की चरण सेवा में बैठकर ऐसा प्रतीत होता था मानो थके हुए पक्षी को कल्पतरु की ठंडी सुहानी छाया मिली हो ।

ये नजरों की खुश नसीबी थी, दर्शन हुए करीब से ।
देखते ही लगा बस खुदा मिला खुश नसीब से ॥

मृदुभाषी, मितभाषी आचार्य भगवन् का एक ही विषय "किं जीवनम्" पर चार माह प्रवचन देना आपकी प्रखर एवं विलक्षण प्रतिभा को दर्शाता है । किसी भी धर्म एवं संप्रदाय का खंडन न करके, एकता सूत्र में बांधना आप श्री को प्राप्त मौलिक गुण था । हुक्म संघ के बगिया के उस कुशल बागवां की आत्मा की चिर शांति के लिए हम प्रार्थना करते हैं । आचार्य भगवन् की आत्मा जहां कहीं भी हो, चिर शांति को प्राप्त करे एवं वहां से महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेकर अपने चरम लक्ष्य को प्राप्त करें ।

हम सभी पर उनकी परोक्ष कृपा बनी रहे । चतुर्विध संघ आचार्य भगवन् के उपकारों को युगों-युगों तक भूल नहीं सकता ।

युग मनीषी आचार्य प्रवर के श्री चरणों में हृदय की असीम आस्था, श्रद्धा, भक्ति एवं विश्वास के साथ श्रद्धांजलि ।

□ महासती श्री स्वर्ण रेखा जी म.सा.

नींव के पत्थर

घड़ी का चमकता डायल, रेडियम लगे अंक और लंबी सुइयां हमारी आंखों को भले ही आकर्षित कर लेती है, किन्तु विशेषज्ञ की आंखें इनमें से एक पर भी नहीं टिकती। वह देखता है भीतर छुपे नन्हें पुर्जों और छोटी सी स्प्रिंग को जो घड़ी को जीवन देती है। कारण महापुरुषों की दृष्टि एक्सरे मशीन की तरह अंतरंग होती हैं। आज समाज उभरे हुए व्यक्तित्व और प्रखर वाणी पर रीझता है किन्तु समाज रूपी यंत्र में प्राण भर देने वाले भीतरी पुर्जे दूसरे होते हैं. उन्हें देखने के लिए विशेषज्ञ एवं अंतरंग दृष्टि चाहिए। हमारे असीम आस्था के मसीहा श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश समाज में रेडियम लगी हुई सुई बनकर नहीं नन्हें पुर्जे बनकर आए। आप श्री ने अपनी विलक्षण प्रतिभा से जिस अनमोल हीरे को परखा एवं तराशा ऐसे वर्तमान आचार्य भगवन का जीवन मंदिर का कलश नहीं, नींव का पत्थर बना। शिखर का पत्थर अपने में चमक एवं आकर्षण भले ही रखें नींव के अनगढ़ पत्थर से महत्वपूर्ण नहीं हो सकता।

आचार्य भगवन् के अनन्त-अनन्त उपकार, मुझे जैसी अबोध साधिका को प्राप्त हुआ, इसलिए स्वर मुखरित होता है।

उपकार किया जो मुझ बाला पर कभी न भूला जायेगा।
चाहे उपानह कर दूं तन का फिर भी चूक न पायेगा॥

ऐसे समत्वयोगी साधक के श्री चरणों में अपना सर्वस्व अर्पण कर दूं तो भी उनके उपकारों से उऋण नहीं हो सकती हूं। अनन्त-अनन्त आराध्य जब तक जिये समाज के लिए जिये। अपने जीवन की अंतिम बूंद तक वह संघ व समाज के लिए संवारते रहें।

गुरुदेव श्री का जीवन अति सरस, सरल एवं माधुर्य से युक्त तथा तप, संयम और सुदीर्घ साधना की ज्योति से ज्योतित था। आचार्य भगवन् के मन में किसी प्रकार का दुराग्रह नहीं था, सत्य को परखने की व उज्ज्वल भविष्य की पैनी दृष्टि थी। उन महापुरुषों के असीम गुणों को ससीम शब्दों में अभिव्यक्त करना सूर्य को दीपक दिखाने व अथाह समुद्र को एक कटोरी से ढकने जैसा है क्योंकि आप श्री जी के चरणों में जो भी आया चाहे गृहस्थ हो, साधक हो, मूर्ख हो, विद्वान, आबाल, वृद्ध हो सहज अपूर्व आत्मीयता प्राप्त होती थी। ऐसा लगता मानो हम आनंद और आत्मीयता के लहराते हुए सागर के पास बैठे हैं। वह प्रेम, स्नेह, वात्सल्य का छलकता कलश था जो बिखर कर चला गया।

वे समता साधक पार्थिव देह से हमारे बीच नहीं है किन्तु उनकी अविनश्वर कालजयी दिव्यात्मा हमारे साथ है, वे जहां पर भी हैं हम सब पर हजार-हजार हाथ हैं, वे हम सब पर अमृत बरसा रहे हैं क्योंकि कहा गया है-

"आग में तपा दो सोना मगर चमक जाती नहीं।
सिंहनी मर जाती मगर घास को खाती नहीं॥"

आचार्य भगवन् के सद्गुणों की महक युगों-युगों तक हमारा मार्ग प्रशस्त करती रहेगी क्योंकि जीवन को उज्ज्वल, समुज्ज्वल, महोज्ज्वल बनाने के लिए हमें चतुर्विध संघ को आचार्य भगवन् के 'आणाय धम्मो' की आज्ञा और निर्देशों को अपनाने की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। कहा गया है- 'होगा गुरु का जिधर इशारा उधर बढ़ेगा कदम हमारा, यही भाव हृदयंगम करना है।

मेरी नयन-निधि

महान् संगीतकारों के कंठ से निःसृत रागिनी बंद हो जाती है फिर भी उसके कर्णप्रिय स्वर वर्षों तक गुंजते रहते हैं। स्वप्न प्रभात बेला में तिरोहित हो जाते हैं किन्तु उनकी स्मृति वर्षो तक मानस को बैचेन किए रहती है। हाथ मे लगी हुई मेंहदी थोड़े समय के बाद सूख जाती है, लेकिन उसके निशान कई दिनों तक सुन्दरता बनाए रखते हैं। गुलाब का फूल थोड़े ही समय के पश्चात मुरझाने लगता है लेकिन उसकी सुवास तथा मृदुता उसकी पखुड़ियों में स्थायी बनी रहती है।

ठीक वैसे ही मानवता के सजीव प्रहरी आचार्य श्री नानेश चाहे हम सभी से ओझल होकर अनंत के गर्भ में समा चुके हैं परन्तु आपकी अमर कृतियां, आपका संदेश, आपका प्रेरक आदर्शमय जीवन, चुनौती देता हुआ हम सभी को मार्गदर्शन दे रहा है।

हे अनंत गरिमागुण से मण्डित, आप श्री की जिन्दगी का हर क्षण आप श्री के अंतस्तल में छिपे हुए एक-एक गुण को प्रकट करने वाला था। अतीत की स्मृतियां मेरे मानस पट पर चलचित्र की तरह घूम रही है, किस-किस प्रसंग को उजागर करूं ?

जिस प्रकार रेडियम का एक कण भी कीमती होता है। कहा जाता है कि उसकी एक कणी भी बहुत से रोग मिटा सकती है। जिसकी एक कणी भी ऐसी अमूल्य होती है, उसको अगर उस रेडियम का पूरा पहाड़ मिल जाए तो कितनी प्रसन्नता होती है। ठीक वैसे ही जिस किसी ने भी आप श्री के जीवन सानिध्य का एक पल भी पाया वह जन्म जन्मान्तर के रोग को दूर करने वाला बना। जब मैं छोटी थी तब मैंने सुना था कि कामधेनु, कल्पवृक्ष व चिंतामणि रत्न ऐसे होते हैं, जिनसे सभी मनोकमनाएं पूर्ण होती हैं। हर चिंता गायब हो जाती है, मैंने सोचा इन तीनों में से जिसके पास यह एक भी होगा तो वह दुनिया का बहुत भाग्यशाली होगा। अगर मेरे पास होता तो मैं ये मांग लेती वो मांग लेती, इसी चिंतन ही चिंतन में आचार्य श्री के दर्शन किए और वह अटूट खजाना मुझे प्राप्त हो गया। जो बिल्कुल अकिंचन हो उसको ये तीनों मिल जाएं तो उसको कितनी प्रसन्नता होगी।

आप श्री का महान् व्यक्तित्व प्राप्त कर मेरी कल्पनाएं, कल्पनाएं ही नहीं अपितु जीवन की उपलब्धि के रूप में बदल गई। आप श्री का सानिध्य इस लोक व परलोक दोनों को सुधारने वाला बना। मैंने आप श्री के चरणों से जो चाहा सो पाया। इस प्रकार आप श्री की चरण शरण में मुझ जैसी अनेक आत्माओं को स्थान मिला।

शासन प्रभावना के लिए आपने देश के विभिन्न अंचलों में हजारों मीलों की पदयात्राएँ करते हुए मार्ग में समागत लाखों लोगों को सत्य, अहिंसा, प्रेम, मानवता और भाईचारे का पाठ पढ़ाकर मानवीय गुणों पर चलने का पुनीत संदेश दिया। आप श्री जी अपने शिष्य के काफिले के संग जिन गली, गलियारों, मार्ग, चौराहों से गुजरते वहां की धूल पवित्र आचरण युक्त चरण युगल के संस्पर्श से चंदन की उपमा को धारण कर लेती और जहां यह चलता-फिरता तीर्थ चंद दिनों के लिए भी पड़ाव डाल देता सच मानो वहां के वातावरण को देखकर ऐसा लगता मानो कोई समवसरण ही लग रहा है। आप श्री का सम्पूर्ण जीवन सद्गुणों का महकता गुलदस्ता था। उन सद्गुणों में से शतांश को भी प्रकट करना मुझ जैसी अबोध के सामर्थ्य से परे है।

सुन्दर कमल की जड़ें कर्दम में जमी रहती है, गुलाब के फूल की जीवन दायिनी डाली कांटों से घिरी रहती है और शीतल चंदन का वृक्ष सर्पों से लिपटा रहता है ठीक वैसे ही संघर्ष तथा विकटता के क्षणों में भी आप श्री सदा प्रसन्न रहते थे, चाहे शारीरिक वेदना है, या मानसिक, आप श्री के लिए तो आह में विषमता नहीं, वाह में प्रसन्नता नहीं। आह और वाह दोनों में तटस्थ रहते थे। ऐसे युग पुरुष आचार्य श्री नानेश के श्री चरणों में भावांजलि।

बगिया के माली कहां गये ?

श्री लब्धि श्री जी म.सा.

हुक्म संघ के अष्टम पट्टधर नानेश छोड़ हमें कहां गए
ये अंखियां तुमको ढूंढ रही बगिया के माली कहां गए ।

मेवाड़ी वीर गुरु नाना शृंगार ने तुमको सिणगारा,
जन्म लिया जिस क्षण तुमने दांता में हुआ था उजियारा ।
पोखरणा कुल के चन्दा शुभ ज्योत्स्ना फैलाकर कहां गए-१

क्रांतिकारी गणपति गुरु से संयम का बाना था पहना
विनय, ज्ञानार्जन, गुरु सेवा का पहना तुमने गुण गहना
समता की मधुरम बीन बजा, जीने की कला सिखला गये-२

अमृतमय तेरी सुधावाणी अब हमको कौन सुनायेगा
आत्मोन्नति की सद्शिक्षाएं अब हमको कौन बताएगा
हे भक्तों के भगवान हमें, मझधार छोड़कर कहां गए-३

लाखों को जीवन बोध दिया, लाखों को राह दिखायी थी
लाखों के कारज पूर्ण किये, लाखों ने शांति पायी थी
संघनिष्ठा, समृद्धि की लगन, जन-२ के मन में जगा गए-४

तेरे दिव्य आदर्शों की झांकी, हम राम गुरु में पायेंगे
तेरे पदचिन्हों पे चलके, हम आत्मसिद्धि पायेंगे
तेरी दृष्टि संघ पर सदा रहे चाहे दिव्य लोक में समा गए - ५

प्रेषक : अंगूर बाला जैन

बहुआयामी व्यक्तित्व

इस विराट विश्व के अन्दर बहुत से मनुष्यों का जन्म भी होता है व मरण भी। जो अपने आपको बहुजन हिताय के पवित्र उद्देश्य के लिए समर्पित कर देते है, उन्हीं की गौरव गाथा गायी जाती है। आचार्य श्री नानेश का जीवन बहु आयामी, बहु यशस्वी, प्रतिभा सम्पन्न था, उनके जीवन के हर क्षेत्र में दया, सहिष्णुता, विशालता, सरलता की असंख्य धारा प्रवाहित होती थी। अमीर से अमीर व गरीब से गरीब व्यक्ति कोई भी आप श्री के चरणों में पहुंच जाता तो ऐसा महसूस करता कि गुरुदेव की असीम कृपा मेरे पर ही है। जैसे चन्द्रमा को देखकर व्यक्ति यही सोचता है कि चन्द्रमा मेरे साथ-साथ चल रहा है।

आचार्य श्री नानेश का जीवन गुड़ के समान सर्वोपयोगी व सार्वजनिक था। गुड़ का महत्व मिठाई से भी ज्यादा होता है। मिठाई तो अमीर लोग ही खरीद सकते हैं पर गरीब नहीं। गुड़ राजघरानों में भी जाता है, सेठ साहूकारों के यहां पर भी और गरीब के यहां पर भी ठीक वैसे ही आचार्य भगवन् का जीवन भी वसुधैव कुटुम्बकम् की उदार भावना को लिए हुए था। आचार्य भगवन् के नाम में भी ऐसा जादू था कि नाम लेने मात्र से सारे कष्ट दूर हो जाते हैं। एक बार हम बीकानेर से उदयपुर चातुर्मास प्रवास पर जा रहे थे, बीच में रास्ता भूल गए, गर्मी का मौसम चलते-चलते रात्रि हो गई घोर निशा न पगडंडी दिखाई दे न कोई रास्ता कहां जाए क्या करें, कुछ समझ में नहीं आ रहा था, उसी समय गुरुदेव को पुकारा गया भगवन् अब तो रास्ता बता दो, ज्योंहि नाम लिया और सामने एक व्यक्ति दिखाई दिया और उसने हमें रास्ता बता दिया। इस प्रकार आप श्री का समग्र जीवन मानवता के लिए प्रेरणा स्रोत रहा है। आप श्री ने अपने जीवन को आध्यात्मिकता की ओर उन्मुख करते हुए अपने ज्ञान प्रदीप की शिखा से जन-जन के मानवीय गुणों को आलोकित किया। अपने अध्यात्म पूर्ण जीवन से समता दर्शन की प्रमुख देन विश्व को देकर विश्व की प्रसुप्त जनता को जागृत किया। ऐसे महान् आराध्य प्रवर आज हमारे बीच नहीं है पर उनके गुणों की खुशबू आज भी महक रही है। हम श्रद्धा की अगरबत्ती जलाकर त्याग तप का नैवेद्य चढ़ाकर आत्मगुणों की आरती कर आपकी अमूल्य शिक्षा का पान कर हम अपने जीवन को आगे बढ़ायें।

है मानवता के मसीहा मेरे आराध्य देव,
आपने ही बताया मुझे परमात्मा का भव्य द्वार।
आपने ही दी मुझे आत्म स्वरूप की सच्ची समझ,
आपने ही समझाई मुझे कषायों की भयंकरता।
आपने ही लगाया मेरे दुर्गति का ताला,
संसार की याद न आ जाए इसलिए,
आपने ही बहाया ज्ञान व वात्सल्य का सुखद झरना।
इसलिए श्रद्धाविनत हो जाता मेरा जीवन आपके शरणा॥

-प्रेषक-कु. मोनाली सिसंरा, करही

□ महासती सुप्रतिभा श्री जी म. सा.

जैन जगत् के भास्कर

जिन घड़ियों की प्रतीक्षा नहीं की जाती है, कभी कभी वे अनचाही घड़ियां भी सामने आ खड़ी होती है। कल तक जिन्हें सुनते थे, जिन्हें देखकर रोम-रोम खुशियों से झूम जाता था, जिनके इंगित, आकार और चेष्टा हमारे आलम्बन थे, वे संघ के छत्रपति जैन जगत के आलोकमान भास्कर, मां भारती के अनुपम लाल, शृंगार सती के अनुपम बाल, आचार्य श्री नानेश को आज हमारे बीच न देखकर, न पाकर हृदय उद्वेलित हुए बिना नहीं रहता।

जाएण हीर माणम्मि चेइयम्मि मणोरम ।
दुहिया अशरणा अत्ता; ए ए कंदति गो तगा ।

एक महावृक्ष महावात के योग से गिर गया, उस समय बेचारे अशरण पक्षीगण क्रंदन करते हैं, यही स्थिति आज जैन शासन और संघ की है। महावत महाकाल जिसे आचार्य प्रवर ने ललकारा था, जो स्वयं उनसे भयभीत हो गया था, जो दूर खड़ा पास आने की हिम्मत नहीं कर रहा था आखिर दबे पांव आकर उस महापुरुष को उसने हमसे सदैव के लिए छीन लिया।

पिछले तीन-चार महीने से उनकी समाधिमरण की साधना चल रही थी। वे क्षण-क्षण आत्म-साधना की उस सर्वोच्च दशा की ओर बढ़ रहे थे, पर हम लोग उनकी इस महालीला को शायद जल्दी नहीं समझ पाए, इसलिए हम अपने प्रयत्न और ढंग से चल रहे थे। वे निरंतर मृत्युंजय दशा की ओर बढ़ रहे थे, वे स्वयं कभी-कभी शेरो शायरी में यों कहते थे-

मरने से मुकर नहीं, जब भय अकब्बार।
बेहतर यही है, खुशी से मरना सीखो ॥

वे कहते थे-

मरते मरते कह गया, लुकमान सा दाना हकीम।
दर हकीकत मौत की, यारो दवा कुछ भी नहीं ॥

बस इनके भावों को आप समझ ही गये होंगे। तो जीवन सूत्र ही बना गए और यही कारण था कि वे जीवन की संध्या बेला में उस अंतिम साधना को भी परवान चढ़ा गये।

जाज्वल्यमान जीवन : कल तक जिन महापुरुषों को हम अपने बीच पा रहे थे, जिन्हें देखकर मन भरता ही नहीं था, आज वे हमारे बीच से चले ही गये। एक शायर ने कहा है-

कल तक तो कहते थे कि बिस्तर से उठा जाता नहीं,
आज दुनिया से चले जाने की ताकत आ गई ॥

आज हमारी यही दशा है। बाहर महोत्सव है, पर भीतर का हाल कहने लायक नहीं है। ऐसी दशा क्यों है? कारण यह है कि जिस महापुरुष ने सब कुछ दे दिया, जीवन समर्पित कर दिया। हमारे पास क्या है, जो उनके

ऋण को चुका सकें ।

जग हित जिन सर्वस्व दान कर, तुम तो हुए अशेष ।
क्या देकर प्रतिदान करूं मैं, पास नहीं लवलेश ॥

अरे, जिसने उस महापुरुष का दर्शन पाया, सानिध्य पाया, ज्ञान पाया, उस व्यक्ति का तो भाग्य भी दूसरों के लिए ईर्ष्या का कारण बन जाता है । एक मारवाड़ी कवि ने कहा है -

सो सज्जन अरू मित्र लख, बंधु सुबंधु अनेक,
ज्यां देख्यां ही दुःख टले, सो लाखन में एक ।

सागर सी गहराई पर्वत सी ऊंचाई : आप सच्चे प्रभावी प्रवचनकार थे । विशिष्ट त्याग प्रधान जीवन जीने वाले महापुरुषों की वाणी ही प्रवचन है । आपकी वाणी में सहज मधुरता थी । बातों की लड़ी, भाषा की कड़ी एवं तर्कों की झड़ी का सुमेल ऐसा होता कि श्रोता आपकी वाणी सुन झूम उठता था । किस समय क्या बोलना, कितना बोलना, और कैसे बोलना, इस बात का आपको पूरा-पूरा ज्ञान था । अतः जो कोई आपके सम्पर्क में आता आपका बने बिना नहीं रह सकता, चाहे जैन हो या अजैन ।

इस प्रकार मैं आपकी कौन सी विशेषता पर प्रकाश डालूं, लेखनी से आपके गुणों को अंकित करना संभव ही नहीं । क्या कभी विराट समुद्र को नन्ही सी अंजलि में भरा जा सकता है ?

गुरु जीवन रूपी ट्रेन का स्टेशन है, जीवन नौका का नाविक है, जीवन दीपक की ज्योति है, प्रकाश पुंज है, गुरु हमारे जीवन के निर्माता हैं ।

तराजू की चोटी की तरह देव और धर्म के बीच गुरु है, चोटी में कसर होने पर तोल की गड़बड़ी हो जाती है, गुरु की प्रामाणिकता समाप्त होने पर चतुर्विध संघ की व्यवस्था ही खत्म हो जाती है, पर हमें तो जो गुरु मिले थे, वे सच्चे अनुशास्ता थे । उन्होंने चतुर्विध संघ में जीवन निर्माण के लिए तिल-तिल जलकर अपने को खपाया । वे जिये तो स्व एवं संघहित के लिए और स्व एवं संघ हित में ही मृत्युंजय बनकर चतुर्विध संघ को धन्य कर गये ।

आलोक जो जीवन की संध्या में और भी निखर उठा : रूस को अपनी वैज्ञानिक शक्ति पर गर्व है, तो अमेरिका के लोगों को अपने वैभव पर । अंग्रेज प्रजा को अपनी जल शक्ति पर गर्व है, तो फ्रांस अपनी विलासिता तथा चमक-दमक पर फूला नहीं समाता है । परन्तु हम भारतवासियों को सबसे अधिक गर्व है अपनी संत परंपरा पर । संत भारतीय संस्कृति के प्राण व आत्मा कहे जाएं तो कोई अतिशयोक्ति नहीं है । भ. ऋषभदेव से लगातार आज तक अपनी इस पवित्र भूमि में अनेक संत पुरुष पैदा हुए । इसी संत परम्परा में जैन समाज के संत रत्न हैं - आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. ।

अप्रमत्त मोक्ष लक्षी : जैसे दिशासूचक यंत्र कहीं भी रहे, उसका झुकाव सदा ध्रुव तारे की ओर रहता है, जैसे नदियां किधर भी बहें, अन्ततः उनका बहाव समुद्र की ओर रहता है । वैसे ही हमारे आचार्य प्रवर कहीं भी कैसी भी परिस्थिति में रहें, सदा उनका लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति का रहा ।

शरीर की अन्तिम स्थिति जान, देख, अनुभव करके उन्होंने स्वयं ही संथारे का निर्णय ले लिया । अपने पाप दोषों की संलेखना (लेखा, जोखा और पश्चाताप, आलोचना) की, सभी आहारों का त्याग किया, पूरे १२ घंटे सतत आत्म साधनारत, अर्थात् मौन शांत, शरीरादि से परे मनातीत, वचनातीत, परम-आत्मानन्द में लीन रहे और नश्वर देह को त्याग दिया । जैन समाज की अपूरणीय क्षति हुई । ऐसी आत्मा ज्ञान, ध्यान, समाधि में लीन रही ऐसी आत्मा को शत-शत वन्दन और भावपूर्ण श्रद्धा अर्पित है ।

अत्यंत दयालु और परोपकारी : मैंने अपने जीवन में किसी महात्मा में अगर परमात्मा स्वरूप देखा है तो वे हैं परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म.सा. । जिन्होंने प्रतियोगिता व प्रतिद्वंद्विता के इस प्रवाह में प्रसिद्धि से दूर रहकर अपना कार्य सिद्ध कर लिया । वैसे उनका जीवन जन-जन की कल्याण भावनाओं को लेकर समर्पित था । कोई भी दुखी अगर अटल श्रद्धा और प्रबल भावना से उनके निकट गया, कभी खाली हाथ नहीं

लौटा। हर संत यही कहते हैं कि आचार्य भगवन् की मुझ पर असीम कृपा थी। हर श्रावक यही कहता कि मुझे गुरुदेव ने बचाया। प्रत्येक व्यक्ति उनके जीवन से, परोपकार वृत्ति से, आत्म संयम व साधना से प्रभावित हुए बिना नहीं रहा। इसके साथ यह भी कहना गलत नहीं होगा कि कुतर्क और विवादों को लेकर जो उनके सामने आया, वह जरूर खाली हाथ गया।

तेरे दरबार की दाता, निराली शान है देखी,
कि रहमत तेरी गलियों के ही, चक्कर काटते देखी।
फैलाया जिसने कर, दाता तेरे दरबार के आगे,
तुझे देते नहीं देखा, झोली भरी देखी॥

ऐसे परम पूज्य आचार्य श्री के चरणों में श्रद्धा युक्त भावान्जलि समर्पित करती हुई यही कामना करती हूँ कि मेरी साधना, मेरी आराधना, मेरी उपासना को उनकी सत्य साधना से ऐसी शक्ति मिले कि मैं अपने संयमी जीवन को शुद्ध, प्रबुद्ध एवं संबुद्ध बनाते हुए मुक्ति मार्ग की ओर अग्रसर हो सकूं।

प्रस्तोता : मणिलाल घोटा

समर्पित है श्रद्धा के फूल

साध्वी रिद्धि प्रभाजी म.

१. समता सागर के
राज हंस आचार्य थे
नानेश गुरु महाराज
जिनकी महिमा गा रहा
चतुर्विध संघ समाज॥

२. उनकी करणी का नहीं
कोई भी था पार
उनके पावन नाम पर
दुनिया है बलिहार॥

३. विश्ववंद्य नानेश रहे
देख सामने कष्ट
होने दिया न आपने
समता साधन नष्ट॥

४. श्री जिनवाणी के सिवा
भाया न कुछ और
जनगण को सामने
रखते थे हर तौर॥

५. निद्रा लेते अल्प थे
और अल्प आहार
गुप्त तपस्वी आपश्री जी,
करते रहे अपार॥

६. वाणी भी थी आपकी,
ऐसी अमृत धार
मंत्रमुग्ध से सब खिंचे,
आते थे नरनार॥

७. चारों तीर्थों को दिया
ऐसा था कुछ बोध
फटके उनके पास न,
ईर्ष्या, वैर विरोध॥

८. क्या बतलाऊं आपश्री का
भारी पुण्य प्रताप
समस्त जैन संघ पर आपकी
बहुत बड़ी थी छाप॥

९. जिनशासन प्रद्योतक
आचार्यश्री को
हम कहें कभी न भूल
भेंट करें उनको हम सभी,
सभी श्रद्धा के फूल॥

□ महासती तेजप्रभा जी म. सा.

छाप अमिट रहेगी

सीख लिया है जिसने मरना, जीने का अधिकार उसी को ।
कांटों के पथ पर हँस-हँस खेले श्रद्धा का उपहार उसी को ॥

इस परिवर्तनशील संसार में अनेक जीव आते हैं और अपना रोब-राब, रंग-राग, वैभव आदि भोग कर अंत में मृत्यु के मुंह में चले जाते हैं। लेकिन जन्म लेना उन्ही महापुरुषों का सार्थक होता है जो सद्गुणों की सुवास संसार में प्रसरित कर अपने नाम को रोशन कर जाते हैं। शास्त्र वचनानुसार 'जीवियस्स मरणस्समय विप्पुमुक्का' मृत्यु के मुंह में पड़े हुए व्यक्ति को मृत्यु नहीं आए, यह बहुत असंभव कार्य है किन्तु मृत्यु का महोत्सव मनाना महापुरुष ही जानते हैं। महापुरुष चले जाते हैं पर अमिट छाप संसार में छोड़ जाते हैं।

हम भी समत्व योगी गुरुदेव के जीवन से समतामय जीवन जीना सीख लेते हैं तो अवश्य हम भव-भव के रोगो से मुक्त हो सकते हैं।

अंत में आराध्य भगवन् की आत्मा सुखों में विराजे एवं महाविदेह क्षेत्र से सिद्ध, बुद्ध, मुक्त हो शाश्वत सुखों को प्राप्त करे।

हम श्रद्धा की तुच्छ भेंट ले द्वार तुम्हारे आए हैं।
और नहीं है कुछ भी गुरुवर श्रद्धा सुमन चढाते हैं॥

गुणों के सागर

महासती श्री सुबोधप्रभा जी

संयम के १४ वर्ष मे एक बार,
झलक दिखाकर,
कहां चला गया तू नाना,
अब कहां से लाऊँ तुझे,
यश अपयश निंदा प्रशंसा की,
तुला पर कोई तोल न पाया तुझे,
अपने पराये के बंधन में,
कोई बांध न पाया तुझे
राजनीति के जंजाल में,
कोई फंसा न पाया तुझे,
सुख दुःख का भंवर कभी,
डूबा न पाया तुझे,
तू दिव्य दिव्यतर दिव्यतम,
तू अलौकिक अनुत्तर अनुपम,
जब भी मैंने तुझे,
प्रेम भक्ति से पाया,
ऋजुता से पाया,
समर्पण से पाया,
धन्य धन्य हो मैंने,
अपना भाग्य संवारा।

□ महासती श्री वसुमति जी म. सा.

एकोअहं बहुस्याम

आध्यात्मिक जगत का एक महान् अद्‌भुत व्यक्तित्व पुन्ज महापुरुष "जो नाम से नाना, काम से प्रजान" के अवतरण से पिता मोड़ी और माता शृंगारा ही क्या सम्पूर्ण विश्व निहाल हो गया। नाना ने नाना प्रकार की विशुद्ध कलाएं दुनिया को जीने के लिए बताईं। द्वितीया का चन्द्र कलाएँ बढ़ाते-बढ़ाते पूर्णिमा को शत सहस्र सौम्य किरणें फैलाने वाला अनन्तानन्त नभांगन में अवतरित हो जाता है।

जहा से उडुवई चंदे, णक्खत परिवारिए।
पडिपुण्णे पुण्णमासीए, एवं हवइ बहुस्सुए॥

आप श्री जी ने आध्यात्मिक जगत के आचार्य पद की गौरव गरिमा, महिमा का गुरुतर भार अपने सशक्त कंधों पर शांतक्रांति के जन्मदाता "स्वर्गीय आचार्य श्री गणेश" से जिस रूप में पाया उस रूप में बखूबी शान से सर्वोत्तम सुमेरु की ऊंचाइयों तक पहुंचाया।

आप श्री जी के अखंड समता नेतृत्व में अनेकानेक मुमुक्षात्माओं ने नव ज्ञान ज्योति पाई। उनमें एक 'मैं भी हूं' जो आचार्य भगवन् के सौम्यतम दर्श भी नहीं पा सकी। तब साक्षात् अलौकिक सन्निधि कहां ? मन की बुंदें मन में ही रह गईं किन्तु आप का इतना उपकार है कि जिसको मैं लेखनी या शब्दों में अभिव्यक्ति नहीं कर सकती।

अनेकानेक प्रसंगों पर आप श्री जी ने मेरी डुबती नैया को तारा है। एक प्रसंग बहुत जबरदस्त है कि हमारा चातुर्मास 'भदेसर' था और पूज्य गुरुदेव का चातुर्मास कानोड़ था। मेरे सिर का दर्द बहुत खतरनाक होता था। इस प्रसंग पर डॉक्टरीय इलाज चल रहे थे। यहां तक कि दर्द उपशमन के लिए डॉक्टर लोगों ने मेरी आंखों की भौंहों में इन्जेक्शन लगाया। पर हुआ क्या जैसे ही मेरे इन्जेक्शन लगे वैसे ही स्थिति बदलने लगी। थोड़ी देर में चेहरा फूलकर २०-२५ किलो जितना बड़ा बन गया। और शरीर सारा नील-सा हो गया। मुझे कुछ भी भान नहीं था। यह सारी स्थिति तीन दिन तक चली, ऐसे समाचार पूज्य गुरुदेव को किसी ने दिये या नहीं, मालूम नहीं।

हमारी समझ के अनुसार तो पूज्य गुरुदेव ने अपने विश्रुत विशुद्ध ज्ञान से ही जान लिया होगा, ऐसा अटल विश्वास है। पूज्य गुरुदेव की परम कृपा हुई और अनमोल भाव वचनामृत के तीन दोहे छः पंक्तियों में पत्र के माध्यम से लिखवाये। वो पत्र सतियों ने मुझे "२१" बार सुनाया। सुनाते-सुनाते ही बेडौल स्थिति में सुधार आ गया और उपचार लग गया।

मै तो करबद्ध हो सानुनय प्रार्थना करती हूं कि आप श्री जी जहां भी विराजमान हों, हम पर वरदहस्त का छत्र रखना और आप श्री जी ने जो महान् प्रदीप प्रज्वलित किया है उसकी भव्य ज्योति में हम अविराम आलोक का दिव्य आनन्द पाती रहें।

मैं तुच्छ बुद्धि क्या बताऊं ? ये महान् नाना का लाल अभी भी निसंकोच सबकी आस्था का अनन्य केन्द्र है और भविष्य में भी।

निश्चित हमें राम में नाना मिलेंगे,
यही हमारे लिए सर्वोत्तम साधना श्रेय है।

पुरुषोत्तम राम श्रीलंका जा रहे थे। उस समय पुल बनाने का कार्य तीव्र गति से चला। उस पुण्य कर्म के महत्व को समझने वाली एक लघुकाय गिलहरी सोचने लगी मैं क्यूं पीछे रहूं, वह अपनी लघुकाया को सागर में भिगोती और बाहर आकर धूल लगाती एवं उस पुल में डालती।

श्रीराम के पूछने पर गिलहरी ने कहा कि पुरुषोत्तम श्रीराम सत्य निष्ठ हैं उनकी कुछ सेवा मैं भी करके पुण्य उपार्जन कर लूं।

ठीक वैसे ही हमें भी शुभकर्म करने का सुअवसर मिले। जिससे हमारा जीवन भव से तिर जाए।

भव-भव में कभी न भुला पाऊँ

साध्वी श्री लब्धि श्री जी म.सा.

ओ समता के सागर, जिनशासन दिव्य दिवाकर
तेरी भव्य साधना की पुनीत रश्मियां पाकर
मोह कलिमल से आवेष्टित लाखों जीवों ने
विकसाया जीवन सरोवर, खुशियों के कमल खिलाकर।१।

संघर्षों में सीखा था तुमने सदा मुस्कराना
दृढ़ सकल्प था शीघ्र आगे कदम बढ़ाना।
कठिन क्या महाकठिन है तेरे व्यक्तित्व को
वाचा का परिधान पहनाना
क्योंकि नाम, काम, गुणो के मुकाम थे तुम नाना।२।

नानेश तेरे जीवन की क्या गुण गाथा गाऊँ
तेरे अनन्त उपकारों को इस जन्म में तो क्या
भवोभव में कभी न भूला पाऊँ
किया था तुमने इस जग की सुख शांति के लिए
तन-मन, जीवन का बलिदान॥३॥

बलिहारी जाऊं तो कैसे जाऊँ
श्रद्धांजलि की अवसर यही भावना भाऊँ
तेरा सुखद सानिध्य सदैव मिलता रहे
जब तक मैं अपनी शाश्वत मंजिल न पा जाऊँ॥ ४॥

□ महासती श्री श्रद्धा श्री जी म.सा.

संत जीवन का भूषण

जिनका जीवन सदा समता की रसधार रहा,
जिनका जीवन सदा साधना का आधार रहा,
जिसने जीना सीखा, सिखाया सभी को जीना
जो अंतिम सांसों तक संघ का आधार रहा।

महापुरुषों की पुनीत स्मृति तो प्रतिपल बनी रहती है क्योंकि वे इस लोक से प्रयाण कर जाते हैं। यह अमिट स्मृति रेखा कभी भी धूमिल नहीं होती है, निरंतर प्रकाशमान रहती है। यही कारण है कि मेवाड़ की महिमामयी पुण्य धरा पर यह अध्यात्म पुष्प विकसित हुआ, उसी पुनीत धरा पर आपश्री ने दीक्षा, युवाचार्य पद, आचार्य पद लिया तथा स्वर्गधाम पहुँचे। हुक्म वाटिका का यह महकता सुवासित दिव्य सुमन काल कवलित हो गया। सद्गुणों का दिव्य पराग विश्व में फैलाकर अस्ताचल में विश्राम के लिए चला गया।

क्रूर काल की कराल आंधी से असमय में ही वह पुष्प टूटकर धराशायी हो गया। समता विभूति आचार्य श्री नानेश इस देह देवल को सूना करके इस लोक से प्रयाण कर गये।

क्षमा, करुणा, दया उनके अंतर जीवन के भूषण थे। वाणी में सहज आकर्षण था। माधुर्य था। जीवन के कण-कण में सत्य, अहिंसा की ज्योति प्रज्ज्वलित थी। जीवन उस स्वर्ण कलश के समान था जिसमें सद्गुणों की दिव्य सुधा भरी हुई थी। उनके अंतर में निहित थी, संघ, समाज एवं राष्ट्र के कल्याण के अभ्युदय की मंगल भावनाएँ। आज वह दिव्य-आत्मा इस लोक से प्रयाण कर गयी है। उनके महान मंगलमय उपदेश मानव को दिशा बोध देते रहेंगे।

महिमा मंडित ज्योति पुरुष करुणा के तुम सागर हो,
लाखों जन के तारणहारे, नाना ज्ञान सुधाकर हो,
अवनितल के दिव्य दिवाकर, संत रत्न हो गुरुराज,
सुमनांजलि अर्पित तुमको, साधु संघ के निर्मल ताज।

❑ महासती श्री सुमन प्रभा जी म.सा.

कलियुग के कल्पवृक्ष

तप संयम की साधना और मधुर व्यवहार,
सचमुच आदर्श था पावन शुद्ध आचार,
हुक्म संघ की शान थे , जाने सकल जहान,
महिमा गरिमा क्या कहें, नानेश गुरु महान ।

आचार्य श्री नानेश कलियुग के कल्पवृक्ष थे । प्राय लोग संतों की समता की तुलना कल्पवृक्ष से करते हैं । किंतु आचार्य श्री नानेश उस कल्पवृक्ष से भी महान थे । कल्पवृक्ष के पास पहुँच कर व्यक्ति जो मांगता है उसकी इच्छा पूर्ण करता है पर, समता विभूति आचार्य श्री नानेश को तो हजारों कोस दूर रहने वाला भक्त यदि श्रद्धा के साथ उनका नामस्मरण कर लेता है तो उसकी आशा फलीभूत हो जाती थी । लाखों भक्तों की मनोकामना पूर्ण की । कल्पवृक्ष तो केवल भौतिक संपदाएं ही प्रदान करता है किंतु आचार्य भगवन् ने भौतिक संपदाओं से उपराम हो आध्यात्मिक संपदाओं से लोगों को निहाल किया । वे पापों, परितापों और संतापों को नष्ट कर आत्म-शांति प्रदान करते थे । अत: कलियुग के साक्षात् कल्पवृक्ष थे ।

उन्होंने अपनी झोली को ज्ञान-दर्शन-चारित्र रूपी रत्नों से भर रखी थी तथा अपने शिष्यों की झोलियां भी संयम, ज्ञान तथा दृढ़ता के असीमित भंडार से भर दी थी । श्रमण जीवन के तीन लक्ष्य बताये हैं- संयम साधना, ज्ञान आराधना एवं गुरु सेवा । आचार्य भगवन् का जीवन तो एक पाठशाला था । जिसकी ज्ञान सरिता में निरन्तर अवगाहन होता था । मानवीय चेतना के उर्ध्वमुखी सोपानों पर आरोहण करते हुए आपश्री ने जहाँ समाज को ज्ञान दिया, संयम साधना दी, वहाँ एक अमूल्य हीरा भी हमें प्रदान किया । वर्तमान आचार्य श्री रामेश के रूप में जिसको उन्होंने स्वयं तराशा, संवारा एवं संभाला । यह जैन साधुमार्गी संघ का अहोभाग्य है कि वे इतनी बड़ी देन हमें दे गये । इसके लिए सदैव हम आपके ऋणी रहेंगे । संघ आपके ऋण से कभी उऋण नहीं हो सकता है । ऐसे आचार्य श्री, लाखों भक्तों की इच्छाओं को पूर्ण करने वाले हमें छोड़कर चले गये । उस रिक्तता की पूर्णता में परिवर्तित करने में सक्षम आचार्य श्री रामेश हैं । उनश्री के प्रति हम सर्वतोभावेन समर्पित होकर नानेश भगवन् के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं ।

भूल न सकेगें तेरी यादें जब तक,
नभ में चाँद सितारे ॥

तीर्थंकर सूर्य-चंद्र की तरह : आचार्य दीपक की तरह

काम-समाप्त हो जाता है पर कामनाएँ समाप्त नहीं होतीं,
कार्य समाप्त हो जाता है पर कल्पनाएँ समाप्त नहीं होतीं,
नाद समाप्त हो जाता है पर झणकार समाप्त नहीं होती,
व्यक्ति समाप्त हो जाता है पर व्यक्तित्व समाप्त नहीं होता ।

मैं उस महान् समता विभूति को क्या समर्पित करूं ? उद्यान में अनेक पुष्प होते हैं पर सभी के आकर्षण का केन्द्र गुलाब होता है । उसे तोड़ना चाहें तो कांटे चुभते हैं । विरल विभूति का जीवन बाल्यकाल से कांटों के बीच रहा । बाल्यकाल में लगभग 8 वर्ष की उम्र में पिता का साया उठ गया । सारे परिवार का उत्तरदायित्व आपश्री के नाजुक कंधों पर आया, जिसे आपश्री ने सहर्ष वहन किया । एक ही प्रवचन से आत्मा-जागृत बनी । उन महापुरुष का जीवन काली मिट्टीवत् व हृदय नवनीत सा कोमल था । हमारी स्थिति रेत व चट्टानवत् है । आचार्य श्री ने यौवन की देहली पर पैर रखते ही भोगों को ठुकरा दिया । जहाँ आज के युवाजन भोगों के अंदर आसक्त बन कल्पनाओं के महल खड़े करते हैं वहाँ इस महात्यागी ने योगों को सहर्ष अपनाया ।

योग को अपनाकर ही नहीं रहे किंतु संयम लेकर कठोर साधना कर गुरु के प्रति तन-मन से अपना जीवन सर्वस्व समर्पण कर दिया । तभी गुरु ने आशीर्वाद रूप अपना सारा दायित्व इनके सशक्त कंधों पर डाला ।

आचार्य पद पाते ही इनका संघर्ष शुरू हुआ जो जीवन के प्रत्येक पहलू को छूता रहा । आचार्य बनते ही अति अल्प अवधि में सैकड़ों को दीक्षा देकर इस शासन को गौरवान्वित किया । शरीर को शरीर नहीं गिना एवं मन जीवन संघ व शासन की सुरक्षा के लिए बलिदान करने हेतु तत्पर बने ।

इस समता की महाविभूति ने परिषहों को समता के साथ सहन करते हुए वीर प्रभु की अंतिम देशना को साकार कर दिखाया ।

बाल्यकाल में ही ट्रेन को देखकर उनके मन में ख्याल आया कि इस ट्रेन के संचालन कर्ता इंजनवत् बनूं । उस बालक की कल्पना को सुन कोई भी उस समय हँसी कर सकता था । जब उन्होंने यह कल्पना की तब सोचा भी नहीं होगा कि मैं चतुर्विध संघ की ट्रेन को चलाने वाला चालक बनूंगा ।

स्थानांग सूत्र के चौथे ठाणे के चतुर्थ उद्देशक में चार प्रकार के आचार्य का वर्णन मिलता है-

१. श्वपाक करण्डक समान- चाण्डाल, चर्मकार आदि के करण्डक (पेटी) में चमड़े को छीलने काटने आदि के उपकरणों और चमड़े के टुकड़ों आदि के रखे रहने से वह असार या निकृष्ट कोटि का माना जाता है उसी प्रकार जो आचार्य केवल ६ काया प्रज्ञापक मर्यादित अल्पसूत्र का धारक और विशिष्ट क्रियाओं से रहित है वह आचार्य श्वपाक करण्डक के समान है ।

२. वेश्या करण्डक : जैसे वेश्या का करण्डक लाख भरी सोने के दिखाऊ आभूषणों से भरा होता है, वह श्वपाक से अच्छा है । वैसे ही आचार्य अल्पश्रुत होने पर भी अपने रूप, वचन, चातुर्य से जनता को आकर्षित करता है ।

३. गृहपतिकरण्डक समान : जैसे गृहपति या सम्पन्न गृहस्थ का करण्डक सोने - चाँदी आदि के आभूषणों से भरा है। वैसे ही जो आचार्य स्व पर के मत के ज्ञाता चारित्र सम्पन्न होते हैं वे गृहपति के करण्डक के समान कहे गये हैं।

४. राजकरण्डक : जैसे राजा के करण्डक में बहुमूल्य मणि, माणक, हीरा-पन्ना, जवाहरात आदि - रत्नों से भरे होते हैं। उसी प्रकार जो आचार्य अपने पद के योग्य सर्वगुणों से सम्पन्न होते हैं उन्हें राजकरण्डक कहते हैं। ऐसे राजकरण्डकवत् विश्व वंदनीय आचार्य श्री नानेश थे।

इसमें से प्रथम के दो करण्डकवत् आचार्य असार व त्यागनेवत् हैं। अगर किसी ने इनका आश्रय ले भी लिया तो वह पत्थर की नौका में बैठ संसार-सागर से तिरनेवत् है। पश्चात् के दो आचार्यों का आश्रय लेकर लकड़ी की नौका में बैठ संसार सागर से तिरनेवत् हैं।

आचारांगसूत्र में तीर्थंकर व आचार्य दोनों का वर्णन आता है। तीर्थंकर को शास्त्रों में सूर्य की उपमा क्यों दी ? एक सूर्य और एक चन्द्र अपने जैसा दूसरे सूर्य व चंद्र पैदा नहीं करता वैसे ही एक तीर्थंकर दूसरे तीर्थंकर को पैदा नहीं करता। किंतु आचार्य को दीपक की उपमा दी। जैसे एक दीपक अपने जैसे अनेक दीपक प्रज्जवलित करता है वैसे ही एक आचार्य अपने जैसा दूसरा आचार्य संघ को देकर जाता है। वैसे ही आचार्य श्री ने अपने पीछे उत्तराधिकारी के रूप में संघ को दूसरा दीपक दिया।

ऐसा ज्योतिर्धर ज्योतिर्मय महामनीषी दिव्यात्मा को श्रद्धायुक्त भावसुमन समर्पित।

छोड़ चले क्यों गुरुवर नाना

महासती जय श्रीजी म.

छोड़ चले क्यों गुरुवर नाना,
कौन सिखाए अब जीना,
पंचम आरा सुखी बना था, नाना गुरु की कृपा से।

कलयुग में सतयुग आया नाना गुरु के चरण तले,
विषमता का दुःख छाया, ईर्ष्या तृष्णा छांव तले,
आके तुमने भू-मण्डल पे दुनिया का दुख दूर किया - १

वीर प्रभु की समता देखी गौतम स्वामी की लब्धि,
सुदर्शन सी दृढ़ता देखी माँ की ममता प्यारी,
नाना कहकर गुरु वर तुमने सबका मन जीत लिया - २

मन में बसी है प्यारी मूरत वाणी गूंजे कानों में,
शिक्षा तेरी बैचेन बनाती याद दिलाती क्षण क्षण में,
आगे पीछे देख के चलना कौन कहेगा गुरु वर नाना - ३

युग पुरुष थे नाना तुम तो राम बनाया अपना जैसा,
पंडित मरण और आसन देखा वीर प्रभु की झलक मिली,
धर्मानन्द जी ने आके सुनाया आँखों से निकली ज्योति किरण - ४

गुरुदेव की जादुई नजर

आज आँख के सामने बार-बार वही दृश्य उभर कर आ रहा है, जब मेरी अनंत आस्था के केन्द्र पूज्य गुरुदेव चातुर्मासार्थ भीनासर में विराज रहे थे। मैं भी वैराग्य अवस्था में वहीं पर थी, मन में उथल-पुथल मची थी कि दीक्षा लूँ या नहीं ? कई विचार आते और चले जाते पर निर्णय नहीं हो पा रहा था। कारण था- विहार में पैरों के अंदर होने वाले लगभग दो-दो इंच के बड़े-बड़े छाले जो कि २-४ कि.मी. चलने पर ही हो जाते थे ज्यादा से ज्यादा खींचतान के चलूँ तो भी ५-६ कि.मी.। उसके बाद तो एक-एक कदम रखना भी असह्य हो जाता था। एक बार छाले हुए तो फिर ५-७ दिन तक रेस्ट ही रेस्ट, बिल्कुल भी चला नहीं जाता। कई इलाज भी किये, पर कोई फर्क नहीं। वैराग्य जीवन में तो फिर भी चप्पल पहनकर समस्या से निपट लेती पर दीक्षा के बाद कैसे क्या होगा ? मैंने अपनी मन स्थिति कई बार महासतियाँ जी के सामने रखी, वे भी बार-बार समझाते रहे तू चिंता मत कर, दीक्षा के बाद तेरे से जितना चला जाएगा उतना चलेंगे। मन सोचता - संयमी जीवन में ४-५ कि.मी. के विहार ही होंगे, ऐसा कैसे संभव है ? अनुकूल गाँव आदि न हो तो ज्यादा भी चलना पड़ता है। एक दिन दोपहर में इस चर्चा के पश्चात् महासतियाँ जी के साथ गुरुदेव के कमरे में भी गई। गुरुदेव उस समय अकेले ही विराज रहे थे सतियाँ जी ने वंदना करके खड़े-खड़े सुखशांति आदि पूछी। उसी वक्त मैंने भी अपनी उलझन गुरुदेव के चरणों में रखी। भगवन् ने पूछा - तुम्हारी भावना में तो दृढ़ता है ? संयम तो लेना है ? मन में कोई अन्य विचार तो नहीं ? मैंने कहाँ, नहीं भगवन्। संयम तो लेना ही है, समस्या हल हो या न हो पर मन में विचार आ जाता है कि मेरे कारण सभी म.सा. को परेशानी होगी। आदि ....। भगवन् ने कहा विचार में दृढ़ता है तो कोई बात नहीं। भगवन् ने नजर उठाई एवं मेरे पैरों की तरफ निर्निमेष दृष्टि से कुछ क्षणों तक देखते रहे, फिर कहा- मंगल पाठ सुन लो, मैंने श्रद्धा पूर्वक मांगलिक सुनी व पुनः महासतियांजी के साथ अपने स्थान पर लौट आई। संयोग ऐसा बना कि वहीं से चातुर्मास उठने से पहले ही मुझे रतलाम - घर पर आना पड़ा। शेषकाल में होली पर युवाचार्य भगवन् का चातुर्मास भी खुल गया, मेरी दीक्षा की संभावना भी बनी। युवाचार्य भगवन् व महासतियांजी म.सा. चातुर्मासार्थ रतलाम पधारे तो मैं जावरा नामली तक भी अगवानी के लिए नहीं गई, यह सोचकर कि विहार में मुझे चलना पड़ेगा और मेरे पैर में तो छाले हो जाते हैं। पारिवारिक जनों को पता चलेगा तो वे दीक्षा में शायद विलंब कर देंगे यथासमय रतलाम चातुर्मास में ही युवाचार्य भगवन् के मुखारविंद से मेरी दीक्षा सम्पन्न हुई। चातुर्मास उठने के बाद प्रथम विहार सैलाना की तरफ हुआ, मेरे मन में हलचल हो रही थी कि आज क्या पता कैसे विहार होगा ? क्योंकि गुरुदेव के भीनासर चातुर्मास के पूर्व मैंने विहार किया। उसके बाद एक डेढ वर्ष के दौरान में मैंने ३-४ कि.मी. भी बिना चप्पल के पैदल चलकर नहीं देखा था। पर सैलाना की ओर विहार करते हुए उस समय मुझे बड़ी खुशी हुई कि जब हम धामनोद गाँव जो रतलाम से करीब ८-९ कि.मी. दूर पड़ता है, पहुँचने पर मेरे पैर में, बड़ा तो क्या छोटा सा भी छाला नहीं था। हल्की-हल्की सी जलन जरूर महसूस हुई बाकी कोई पीड़ा नहीं। उसके बाद दूसरे दिन विहार किया, वह भी आराम से हुआ। दीक्षा लिये हुए अभी तक लगभग दो वर्ष पूरे हो गये और

इस बीच १०-१५-२० व २५ कि.मी. के विहार भी करने का प्रसंग बना पर पैरों में एक भी छाला आज तक नहीं हुआ, यह सब गुरु देव की कृपा का चमत्कार है। उन अनंत आराध्य गुरुदेव की परम कल्याणी नजरों का। उनकी नजरों में ही वह जादू था, जो मेरे जीवन में साक्षात् घटित हुआ है।

ऐसे अनंत-अनंत उपकारी आराध्य भगवन् हमारे बीच नहीं रहे तो उनकी यह उपकृति मुझे रह-रह कर याद आ रही है। परन्तु वर्तमान आचार्य श्री रामेश की अलौकिक छवि को निहारते हुए मुझे लगता है कि यही है एक वैसा ही आसरा, जहाँ दुखी अपना दुःख मिटा पायेंगे। स्व. गुरुदेव अपने उत्तराधिकारी की प्रतीक चादर के साथ ही अपनी पतित पावनी ऊर्जा भी इन्हें सौंप कर ही गये हैं। अतः इनकी छत्र-छाया में श्री संघ निश्चिंत रहेगा।

❑ महासती महिमा श्री जी म. सा.

उत्कृष्ट संयमी साधक

स्व. आचार्य श्री नानेश संसार के उच्चकोटि के साधकों में से एक थे। वे संसार की विरल विभूतियों में से थे। स्व. आचार्य श्री नानेश ने अपनी आत्मा को बलवान व हृष्ट-पुष्ट बनाने के लिए लगातार ६१ वर्षों तक, बिना प्रमाद किये, संयमीय जीवन की उत्कृष्ट साधना की, ज्ञान, दर्शन, चारित्र की निरंतर अभिवृद्धि की।

आचार्य भगवन् को इतनी वेदना के होने पर भी संथारे के साथ महाप्रयाण करना- उनकी उत्कृष्ट संयमीय साधना की सफलता, साधना की सजगता का ही परिणाम है, वरना जिसको ऐसी बीमारी हो, वेदना हो उसे एकाएक संथारा आ नहीं सकता। संथारा विरले साधकों को ही आता है। जिसकी किडनी खराब हो वह व्यक्ति अचानक चला जाता है किन्तु आचार्य भगवन् अपनी संयमीय साधना में ऐसी बीमारी के होते हुए भी अत्यंत सजग, सावधान थे। वे अंतिम समय तक परमात्म-साधना में तल्लीन बने हुए थे। मेरी भी यही तमन्ना है कि मैं अपनी संयमीय साधना में सजग रहती हुई अंतिम समय में संलेखना संथारा को अंगीकार करूँ।

आज आचार्य भगवन् की पार्थिव देह हमारे बीच में नहीं है किन्तु उनके द्वारा दी गई शिक्षाओं को हम अपने जीवन में उतार कर अपने जीवन का उत्तरोत्तर विकास कर सकें, यही कामना है।

आदर्श गुरु

इतनी गहराई से कभी सोच भी नहीं पायी कि ऐसा गम (वियोग) का अवसर मुझे इस अल्पायु में देखना पड़ेगा। परंतु संयोग है वहाँ वियोग को भी स्वीकारना पड़ता है। मुनिजनानुसार नियति के इस वज्रपात को भी अथाह वेदना के साथ स्वीकार करना पड़ा। पूज्य गुरुदेव नहीं रहे, यह वाक्य एक जड़ कलम (लेखनी) भी जब लिखने को तैयार नहीं, तो चैतन्य मानस कैसे स्वीकारे। परंतु नियति ने इस विडम्बना को स्वीकार करने के लिए मजबूर कर दिया। जैसे ही सुना कि गुरुदेव अब नहीं रहे तो मन द्वन्द्व में फंस गया कि यह क्या हुआ। नयनों में गुरुदेव की छवि उभर आई।

पूज्य गुरुदेव की कौन सी विशेषताओं का वर्णन किया जाय ? मन के लिए सोचना भी दुष्कर है। वर्तमान युग में सम्पूर्ण स्थानकवासी समाज ही नहीं वरन् सम्पूर्ण जैन समाज के सितारे साधुमार्गी संघ के अष्टम पट्टधर, समता की दिव्य विभूति ऐसे आचार्य भगवन् जिनका अनंत उपकार मेरे जीवन पर है, उससे मैं कभी उऋण नहीं हो सकती। आपश्री के समीप जो भी आया उसे अपने ही समान बनाने की कोशिश करते अर्थात् आत्मा से परमात्मा तक पहुँचाने में आपश्री एक विशिष्ट महात्मा थे।

मैं भी अपने आपको धन्य मानती हूँ कि ऐसे महान् गुरु का वरदहस्त मुझे प्राप्त हुआ। आपश्री ने असीम कृपा करके अज्ञान अंधकार में भटकती हुई मुझ आत्मा को संयम का दान देकर ज्ञानरूपी प्रकाश से सुमार्ग पर लगाया।

सचमुच आचार्य भगवन् का जीवन विराट था - जल में कमलवत्। देह में रहकर देहातीत था। वास्तव में आचार्य श्री के पास जो भी आये उनके जीवन से समता की सौरभ को लेकर गये।

वस्तुतः आचार्य प्रवर का जीवन पारस पत्थर की तरह था। जिस तरह पारस से हर लोहा, सोना बन जाता है, वैसे ही गुणमय जीवन था आपश्री का। आचार्य प्रवर का सदैव एक ही लक्ष्य रहता था कि उनके सानिध्य में रहने वाले साधु-साध्वी शुद्ध स्वर्णवत् संयम का पालन करें। ऐसा था गुरुदेव का संयम के प्रति लगाव।

आचार्य श्री का जीवन एक कुशल कलाकार की भांति था। क्योंकि आचार्य श्री द्वारा शिक्षित दीक्षित साधु, साध्वी दुनिया के किसी भी कोने में जायें, शुद्ध ज्ञान, दर्शन, चारित्र की अनूठी छाप छोड़कर आते हैं। वास्तव में यह आचार्य भगवन् की कला-कुशलता का ही प्रमाण है। ऐसे :-

एक नहीं अनेक गुण भरे थे जीवन में,
कहाँ खोजूं ऐसे गुरु समझ नहीं पाई मन में।
नजर जब गई नाना तेरे खिलते नंदन वन में,
तेरे दर्श हुए मुझे श्री राम के आनन में॥

ऐसे महान् विशिष्ट, अध्यात्म योगी, जन-जन के श्रद्धा केन्द्र-बिन्दु, उन गुरुदेव के संयमीय जीवन को-

श्रद्धा सुमन अर्पण है, अर्पण है भावों का चंदन।
शुभ भाव संजोये हैं गुरुवर, शीघ्र कटे मेरे भव बंधन॥

महासती अस्मिता श्री जी म. सा.

समता मूर्ति गुरुदेव

आचार्य भगवन् का जीवन ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप से परिपूर्ण कुंभ कलश की भांति था। पूज्य आचार्य भगवन् के विषय में जितना कहा जाय, सोचा जाय, गुणगान किया जाय, लिखा जाय उतना ही कम है। क्योंकि महापुरुषों के जीवन में एक दो नहीं अनेक गुण होते हैं। उनके जीवन का हर पहलू शिक्षाप्रद होता है। आचार्य भगवन् का जीवन चाहे बचपन से, चाहे जवानी से, चाहे संयमावस्था से, चाहे वृद्धावस्था से देखें जीवन का हर मोड़ अपने मन को झकझोर देता है। अगर उनके जीवन के अनेक गुणों में से एक समता गुण की सौरभ अपना लें तो भी जीवन धन्य हो जायेगा। इतना ही नहीं जिन्होंने उन महापुरुष, उन समता मूर्ति के दर्शन कर लिये, उनका नाम स्मरण कर लिया उनका जीवन भी कृत्य- कृत्य हो गया। उनकी मझधार में डोलती नैया तिर गई।

आचार्य भगवन् बेसहारों के सहारा थे। उनकी कृपा वर्षा हर पल उनके भक्तों पर होती रहती थी मगर अब भगवन् के दर्शन चाहे हम चर्मचक्षु से करने में समर्थ नहीं हैं किन्तु अगर हम सच्चे दिल से भक्ति करेंगे, उनके इंगितानुसार चलेंगे तो हम आज भी आचार्य भगवन् को अपने नजदीक पायेंगे। आचार्य भगवन् देह से हमारे बीच में नहीं रहे पर गुणों से सदैव वे अमर रहेंगे।

वहे नयनन अश्रुधार

महासती श्री सुमुक्ति श्री जी

नयन् अश्रुधार बहे, पूछे सारे नरनार, क्यों हमको छोड़ चले
करें दर्शन की पुकार, रहे जन२ नयना निहार, क्यों हमको।

तेरे नाम के आगे गुरु, जग सारा झुकता था
हर कदम सफल होता, हर संकट रुकता था
मेरी नैया के किरतार, अब नाव पड़ी मझधार, क्यों।

तेरी वाणी से विभुवर एक झरना बहता था
समता दर्शन देकर, दर्द गम को हरता था
जन जन नयनों के हार, ओ कलयुग के अवतार, क्यों हमको।

तेरे बिन जग सारा, बंजर सा लगता है
कोई कली नहीं खिलती, हर तारा कहता है
न है रौनक न है बहार, ओ दुखियों के आधार, क्यों हमको।

महासती आस्था श्री जी म. सा.

क्यों हुए हमसे विदा

आचार्य श्री नानेश एक विरल विभूति थे ।

> दांता गाँव में जन्मे गुरुवर , नाना नाम पाया था,
> समता रस से सुरभित वो तरूवर, माँ शृंगार का जाया था ,
> जन्म-मृत्यु के चक्कर मिटाने, शुभ अवसर जब आया था,
> भवसागर से तिरने के लिए, तब मिला गणेश का साया था ॥

ऐसे ही जन-जन के प्रिय, सभी के आस्था के केन्द्र, परम पूज्य गुरुदेव का जन्म जब इस वसुन्धरा पर हुआ तो यह भी धन्यता का अनुभव करने लगी । क्योंकि ऐसे तो करोड़ों जीव इस धरा पर जन्म लेते हैं पर विरले ही होते हैं जिन्हें सदा-सदा के लिए याद रखा जाता है । हमारे आचार्य श्री का जीवन सहज-जीवन था अर्थात् बाहर-भीतर एक । आपश्री में सत्य और प्रेम की महक भरी हुई थी । आप मृदुभाषी, शालीन, कुशल व्यवहारी व उत्कृष्ट आचार के धनी थे । आपश्री का जीवन गुणों की महक से ओतप्रोत था, हर व्यक्ति आपश्री की स्नेहिल दृष्टि का स्पर्श पाकर इतनी अधिक प्रसन्नता का अनुभव करता था कि ऐसा लगता मानों उसे सारी सम्पन्नता प्राप्त हो गई है । वह शांति और आनन्द का अनुभव करता था । कहते हैं- "पदहि सर्वत्र गुणे. निधीयते" अर्थात् गुण सर्वत्र अपना प्रभाव जमा लेते हैं । वैसे ही आपश्री के गुणों से आकृष्ट होकर, आपके पावन जीवन को देखकर हर व्यक्ति प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता था । वास्तव में आपका व्यक्तित्व शब्दों में कम व आचरण में ज्यादा झलकता था, ऐसी विरल विभूति का जिसे सानिध्य मिलेगा तो वह व्यक्ति अपने भाग्य की सराहना किए बिना नहीं रह सकता । उनमें भी अधिक मैं बहुत पुण्यशाली हूँ कि आपश्री का सानिध्य मिला और जीवन को सजाने का एक सुनहरा अवसर मिला ।

आप श्री के सान्निध्य में ही मेरा पहला चातुर्मास हुआ । जहाँ मुझे निकटता से आपश्री के गुणों का आस्वादन करने का अवसर मिला, सचमुच गुरुदेव के जीवन में कोमलता, करुणा, ममता आदि अनेक गुण मुझे देखने को मिले, तब मुझे ऐसी अनुभूति हुई कि वास्तव में साधना के उच्च शिखर पर, उत्थान के मार्ग पर हर कोई नहीं पहुँच सकता ।

आचार्य भगवन् का जितना भी गुण-कीर्तन किया जाए, उतना ही कम है । मैंने जब यह सुना कि आचार्य भगवन् परम ज्योति में लीन हो गए, गुरुदेव नहीं रहे । बार-बार गुरुदेव के उपकारों की स्मृति आती तो मन भर आता, तुम जैसी विभूति को हम अब कहाँ खोजें और कैसे इस मन को तृप्त करें । मेरे आराध्य अस्तित्व रूप में नहीं है किन्तु व्यक्तित्व के रूप में हमारे सामने विद्यमान है । अरे, वह व्यक्ति जिसने अपने जीवन का एक-एक क्षण परमार्थ में अर्पित कर दिया, वह नाना हो नाना गुणों में आज भी विद्यमान होकर हमें निरंतर जीवन को सच्चा बनाने की शक्ति प्रदान कर रहे हैं । गुरुदेव आपका वरद् हस्त हम सभी के ऊपर बना रहे ताकि हम आपश्री के जीवन से प्रेरणा लेकर गुणों की सौरभ से महक उठें । आपश्री के गुणों का वर्णन मेरी यह लेखनी करने में असमर्थ है । हमें भी ऐसी चाहना है कि हम भी सद्गुणों से, सद्कर्मों से जीवन को उच्च बनाकर साधना के शिखर पर पहुँचें । आपकी कृपादृष्टि हम पर पड़ती रहे और हम आपश्री की कृपा से जीवन को उच्च बनाकर साधना के शिखर पर पहुँचें । हमें आपश्री

की कृपा से जीवन को सजाने के लिए आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. का आधार व साया मिला है। उस छाँव तले अंतर में रही हुई ज्ञान की ज्योति को प्रकट करते हुए संयम पथ पर अविचल रूप से बढ़ते रहें।

❑ महासती रत्ना श्री शान्ता कंवर जी म.सा.

क्षीर समुद्र-सा जीवन

ओ दिव्यालोक में जाने वाले आचार्य श्री नानेश,
कैसे भूल सकेंगे तुम्हारी साधना स्मृति।
दिल थामकर, अश्रु रोककर हृदय में,
आँखों में तैर रही है तेरी सौम्य आकृति॥

आचार्य श्री नानेश का व्यक्तित्व और कृतित्व मेरू पर्वत से अधिक ऊँचा और सागर से भी अधिक गहरा था। इस महान् आचार्य श्री के गुण गरिमा का वर्णन कैसे किया जा सकता हैं। शब्दों के बाट से जीवन तोला नहीं जा सकता है।

उनके गुणों को किन शब्दों में आबद्ध करूं। उनका हृदय मक्खन से भी अधिक मुलायम था और वाणी मिश्री से भी अधिक मधुर थी। उनके जीवन का कण-कण हीरे की तरह चमकदार था। मोती की तरह उनमें आब थी और माधुर्य से लबालब भरा हुआ क्षीर समुद्र सा उनका जीवन था। कवियों ने संत हृदय की तुलना नवनीत से की है। नवनीत मुलायम होता है और गर्मी से पिघल जाता है पर आचार्य भगवन् का हृदय तो उससे भी बढ़कर था। किसी भी दीन-दुःखी को देखकर आचार्य श्री का हृदय दया से द्रवित हो उठता था। रोते हुए उनके चरणों में आता पर लौटते समय हंसते हुए जाता था। आपकी तरह हमारा जीवन भी बने। यही उनके चरणों में भावभीनी श्रद्धार्चना।

क्यों हुए हमसे विदा

आचार्य श्री नानेश एक विरल विभूति थे।

दांता गाँव में जन्मे गुरुवर , नाना नाम पाया था,
समता रस से सुरभित वो तरूवर, माँ शृंगार का जाया था ,
जन्म-मृत्यु के चक्कर मिटाने, शुभ अवसर जब आया था,
भवसागर से तिरने के लिए, तब मिला गणेश का साया था ॥

ऐसे ही जन-जन के प्रिय, सभी के आस्था के केन्द्र, परम पूज्य गुरुदेव का जन्म जब इस वसुन्धरा पर हुआ तो वह भी धन्यता का अनुभव करने लगी। क्योंकि ऐसे तो करोड़ों जीव इस धरा पर जन्म लेते हैं पर विरले ही होते हैं जिन्हें सदा-सदा के लिए याद रखा जाता है। हमारे आचार्य श्री का जीवन सहज-जीवन था अर्थात् बाहर-भीतर एक। आपश्री में सत्य और प्रेम की महक भरी हुई थी। आप मृदुभाषी, शालीन, कुशल व्यवहारी व उत्कृष्ट आचार के धनी थे। आपश्री का जीवन गुणों की महक से ओतप्रोत था, हर व्यक्ति आपश्री की स्नेहिल दृष्टि का स्पर्श पाकर इतनी अधिक प्रसन्नता का अनुभव करता था कि ऐसा लगता मानों उसे सारी सम्पन्नता प्राप्त हो गई है। वह शांति और आनन्द का अनुभव करता था। कहते हैं- "पदहि सर्वत्र गुणेः निधीयते" अर्थात् गुण सर्वत्र अपना प्रभाव जमा लेते हैं। वैसे ही आपश्री के गुणों से आकृष्ट होकर, आपके पावन जीवन को देखकर हर व्यक्ति प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता था। वास्तव में आपका व्यक्तित्व शब्दों में कम व आचरण में ज्यादा झलकता था, ऐसी विरल विभूति का जिसे सानिध्य मिलेगा तो वह व्यक्ति अपने भाग्य की सराहना किए बिना नहीं रह सकता। उनसे भी अधिक मैं बहुत पुण्यशाली हूँ कि आपश्री का सानिध्य मिला और जीवन को सजाने का एक सुनहरा अवसर मिला।

आप श्री के सान्निध्य में ही मेरा पहला चातुर्मास हुआ। जहाँ मुझे निकटता से आपश्री के गुणों का आस्वादन करने का अवसर मिला, सचमुच गुरुदेव के जीवन में कोमलता, करुणा, समता आदि अनेक गुण मुझे देखने को मिले,तब मुझे ऐसी अनुभूति हुई कि वास्तव में साधना के उच्च शिखर पर, उत्थान के मार्ग पर हर कोई नहीं पहुँच सकता।

आचार्य भगवन् का जितना भी गुण-कीर्तन किया जाए, उतना ही कम है। मैंने जब यह सुना कि आचार्य भगवन् परम ज्योति में लीन हो गए, गुरुदेव नहीं रहे। बार-बार गुरुदेव के उपकारों की स्मृति आती तो मन कह उठता नाना, तुम जैसी विभूति को हम अब कहाँ खोजें और कैसे इस मन को तृप्त करें। मेरे आराध्य अस्तित्व रूप में नहीं हैं किन्तु व्यक्तित्व के रूप में हमारे सामने विद्यमान हैं। अरे, वह व्यक्ति जिसने अपने जीवन का एक-एक क्षण परमार्थ में अर्पित कर दिया, वह नानां तो नाना गुणों में आज भी विद्यमान होकर हमें निरंतर जीवन को सफल बनाने की शक्ति प्रदान कर रहे हैं। गुरुदेव आपका वरद् हस्त हम सभी के ऊपर बना रहे ताकि हम आपश्री के जीवन से प्रेरणा लेकर गुणों की सौरभ से महक उठें। आपश्री के गुणों का वर्णन मेरी यह जिह्वा करने में असमर्थ है। हमें भी ऐसी चाहना है कि हम भी सद्गुणों से, सद्कर्मों से जीवन को उच्च बनाकर साधना के शिखर पर पहुँचें। आपकी कृपादृष्टि हम पर पड़ती रहे और हम आपश्री की कृपा से जीवन को उच्च बनाकर साधना के शिखर पर पहुँचे। हमें आपश्री

की कृपा से जीवन को सजाने के लिए आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. का आधार व साया मिला है। उस छाँव तले अंतर में रही हुई ज्ञान की ज्योति को प्रकट करते हुए संयम पथ पर अविचल रूप से बढ़ते रहें।

❑ महासती रत्ना श्री शान्ता कंवर जी म.सा.

क्षीर समुद्र-सा जीवन

ओ दिव्यालोक में जाने वाले आचार्य श्री नानेश,
कैसे भूल सकेंगे तुम्हारी साधना स्मृति।
दिल थामकर, अश्रु रोककर हृदय में,
आँखों में तैर रही है तेरी सौम्य आकृति॥

आचार्य श्री नानेश का व्यक्तित्व और कृतित्व मेरू पर्वत से अधिक ऊँचा और सागर से भी अधिक गहरा था। इस महान् आचार्य श्री के गुण गरिमा का वर्णन कैसे किया जा सकता है। शब्दों के बाट से जीवन तोला नहीं जा सकता है।

उनके गुणों को किन शब्दों में आबद्ध करूं। उनका हृदय मक्खन से भी अधिक मुलायम था और वाणी मिश्री से भी अधिक मधुर थी। उनके जीवन का कण-कण हीरे की तरह चमकदार था। मोती की तरह उनमें आब थी और माधुर्य से लबालब भरा हुआ क्षीर समुद्र सा उनका जीवन था। कवियों ने संत हृदय की तुलना नवनीत से की है। नवनीत मुलायम होता है और गर्मी से पिघल जाता है पर आचार्य भगवन् का हृदय तो उससे भी बढ़कर था। किसी भी दीन-दुःखी को देखकर आचार्य श्री का हृदय दया से द्रवित हो उठता था। रोते हुए उनके चरणों में आता पर लौटते समय हंसते हुए जाता था। आपकी तरह हमारा जीवन भी बने। यही उनके चरणों में भावभीनी श्रद्धार्चना।

□ महासती जागृति श्री जी म. सा.

ऐसे थे मेरे नाना गुरु

जिन नहीं पर जिन सरीखे, केवली नहीं पर केवली सरीखे पूज्य आचार्य भगवन् का महाप्रयाण सुनकर मन में उथल-पुथल मच गई। क्या सचमुच गुरुदेव हमें छोड़कर चले गए। मन को एकाएक विश्वास नहीं हुआ फिर भी मन को समझाया कि इतने दिन जो मैं नाना और राम को अलग-अलग रूप में देख रही थी लेकिन अब मैं राम में नाना को देखूँगी।

पूज्य आचार्य भगवन् ने जब से इस चतुर्विध संघ की बागडोर हाथ में ली शासन दिन दुना रात चौगुना बढ़ता ही गया। इस हुक्म शासन को सींचने में आपश्री ने खून -पसीना एक किया।

गुरुदेव ने स्वयं की आत्मा के साथ-साथ सम्पूर्ण मानव जाति की पीड़ा को परखा। राग-द्वेष पर विजय प्राप्त करने वाले पूज्य आचार्य भगवन् ने अनुकूल और प्रतिकूल कैसी भी विकट से विकट परिस्थिति आयी हो सदैव समता का ही परिचय दिया। यही कारण रहा कि इस सम्पूर्ण विश्व में समता विभूति के नाम से प्रसिद्ध हुए। आपश्री तो समता योगी थे ही लेकिन आपने जन-कल्याण हेतु गाँव-गाँव, डगर-डगर में समता का बिगुल बजाया जिसका यह प्रतिफल रहा कि विषमता से ग्रसित मानव भी समता की राह पर चल पड़े।

समता के तीर चलाकर तूने,
विषमता को परास्त किया।
हर मानव की पीड़ा को सुनकर,
समता से जीना सिखलाया।

समता के साथ-साथ ओजस्वी, तेजस्वी, यशस्वी, वर्चस्वी, मधुरता, सरलता, वात्सल्यता आदि अनेक गुणों से युक्त पूज्य गुरुदेव थे। जब भी हम गुरुदेव के पास जाते बड़े स्नेह से बात करते थे। मन एकदम गद्‌गद् हो जाता था। मेरे गुरुदेव की असीम स्नेहमयी वाणी की स्मृति रह-रह कर मेरे मानस पटल पर उभर रही है क्योंकि मेरे गुरुदेव का व्यक्तित्व कुछ अनूठा ही था। मैं किन गुणों की व्याख्या करूँ।

कैसे करूँ नाना तेरे गुणगान।
नहीं है सक्षम मेरी जुबान।
तेरी खूबी को जानता है सकल जहान्।
कि तेरी जीवन था कितना महान्।

महान् विभुतियों का आदर्श महान् और विराट होता है उसे शब्दों के माध्यम से व्यक्त नहीं कर सकते। आचार्य भगवन् का प्रेरणास्पद जीवन युगों-युगों तक प्रेरणा देता रहेगा। ईसी प्रेरणा के सहारे मैं केवल ज्ञान को पाती हुई मोक्ष मंजिल को प्राप्त कर सकूंगी।

अंत में मैं आपश्री के महान् उपकारों के प्रति श्रद्धा से नतमस्तक होती हुई श्रद्धा सुमन अर्पित करती हूँ।

□ महासती श्री रौनक श्री जी म.सा.

अद्भुत एवं निराला व्यक्तित्व

मानवता का मान बढ़ाकर मानव जीवन सफल किया,
जिन वाणी का मंथन करके चिंतन का नवनीत दिया,
श्रमणों में है श्रेष्ठ श्रमण जिनकी पावन प्रखर मति,
सरस्वती के वरद पुत्र है, काव्य कला में निपुण अति ॥

महापुरुष आचार्य नानेश का व्यक्तित्व बहुत ही अद्भुत और निराला था। समाज की संकीर्ण सीमाओं में आबद्ध होकर भी सर्वतोमुखी विकास हेतु उन्होंने जन-मन में अनंत आस्था समुत्पन्न की। उनकी दिव्यता, भव्यता और मानवता को निहार कर जन-जन के अंतर्मानस में अभिनव आलोक जगमगाने लगा था। उन्होंने समाज की विकृति को नष्ट कर संस्कृति की ओर बढ़ने के लिए सदा प्रेरणा दी थी। उन्होंने आचार और विचार में अभिनव क्रांति का शंख फूंका था। वे अध्यवसाय के धनी थे जिससे कंटकाकीर्ण दुर्गम पथ भी फूल बन गया। ऐसे थे महापुरुष आचार्य श्री नानेश।

आप श्री की दार्शनिक मुख मुद्रा, चमकती दमकती हुई निश्चल स्मित रेखा, दमकता हुआ भव्य ललाट निहार कर किसका हृदय श्रद्धा से नत नहीं होता था। जितना आपका बाह्य व्यक्तित्व नयनाभिराम था उससे भी अधिक मनोभिराम आभ्यंतर व्यक्तित्व था। आपकी मंजुल मुखाकृति पर निष्कपट विचारधारा की भव्य आभा सदा दमकती रहती थी। आपकी निर्मल आँखों के भीतर से सहज, सरल, स्नेह, समता शालीनता के दर्शन होते थे। उनका सौरभ युक्त जीवन सदा भव्य आत्मा को सुरभित करता रहेगा। इसी मंगल मनीषा के साथ आप श्री के चरणों में भाव-भीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

छोड़ गये जो चमक सवाई, पीछे तेज सितारा,
गुरुवर की शिक्षाओं पर चलना, अब है काम हमारा ॥

तुम्हीं हो मेरे गुरुवर नाना

साध्वी जय श्री जी

तुम्हीं हो मेरे गुरुवर नाना ।
तुम बिन जग मे कोई ने मेरा । टेर...

तुम जो गुरुवर मुझे ना मिलते ।
सच्ची राह पर कैसे चलते ।
मेरी जिन्दगी तूने बनाई ।
संयम दाता तुम्हीं हमारा २.

खुलते ही होठ रटते थे नाना।
जिव्हा भी गाती तेरा तराना ।
दर्शन की प्यासी अँखियां थी मेरी
सावन बरसे नाम से तेरा ३.
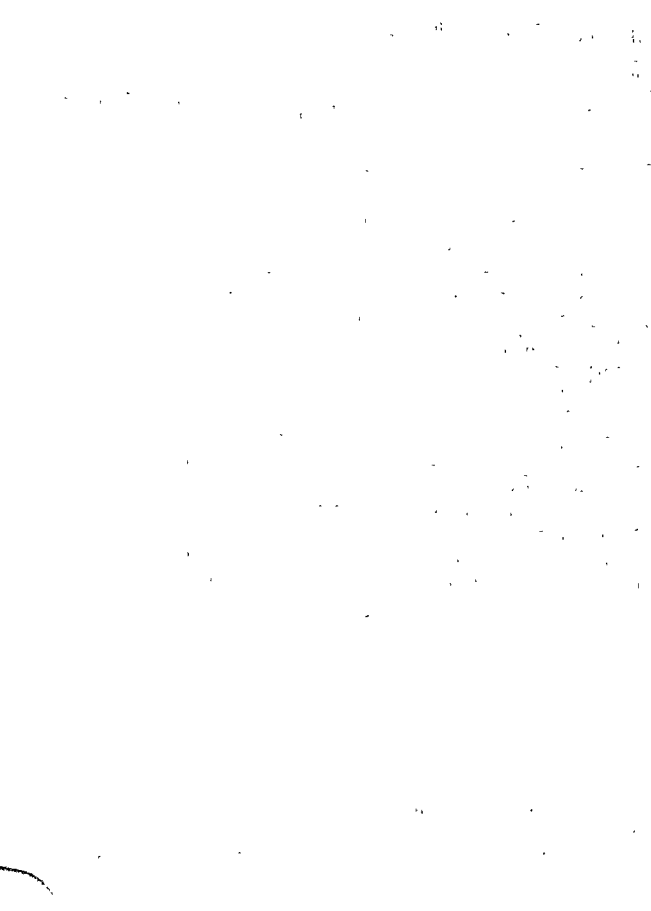
वन्दना के स्वर
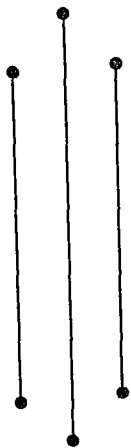
आगार

संयम के सजग प्रहरी

श्रद्धेय आचार्य श्री जब बीकानेर से विहार कर ब्यावर पधार रहे थे, उस समय प्रकृति भी अनुकूल बन रही थी, वैसाख और जेठ के महीने में गर्मी का मौसम होते हुए भी बिना मौसम के रात्रि में बरसात का होना, दिन में बादल व धूप को देखते हुए ऐसा लग रहा था मानो इन्द्र देव स्वयं प्रभु की सेवा में रह कर विहार कर रहे हैं। विहार करते-करते बाबरा से पुरानी ब्यावर पधार रहे थे, रास्ते में एक जगह पानी व हरियाली थी, उसे देख कर संयम के सजग प्रहरी ने इस पर पैर रखने के लिए स्पष्ट मना कर दिया, इस अस्वस्थता की हालत में भी डेढ़ मील का चक्कर काटकर दुर्गम पहाड़ी पर चलकर पधारे एवं संयम की खरी कसौटी समाज को दिखाई, वह चिरस्मरणीय रहेगी।

जितने गुण गायें जायें, उतने ही कम है। ऐसे महापुरुष को मेरी सादर वन्दना एवं श्रद्धांजलि अर्पित है।

-विनोद कुमार नाहर, ब्यावर

अनुपम वात्सल्य

स्वर्गीय गुरुदेव आचार्य श्री नानेश की सत् सन्निधि मुझे सदा सुलभ रही। यह मैं अपना परम सौभाग्य मानता हूं। जब भी दर्शन की भावना जगी और गुरुदेव के श्री चरणों में पहुंचे तो सदैव मंगल आशीष मिली। उनका मुक्त मन, हमारे मन की गांठों को भी सहज ही सुलझा देता था। अनेक बार सामाजिक कार्यकर्त्ता निष्ठापूर्ण, प्रामाणिक सेवा के बाद भी समाज से उपालंभ मिलने पर हताश हो जाता है। ऐसे क्षणों में गुरुदेव बड़े वत्सल भाव से समझा कर हताशा को आशा और उत्साह में बदल देते थे।

कानोड़ में एक बार इसी प्रकार की स्थिति में आचार्य गुरुदेव ने एक देशी कहानी सुना कर कहा-"लोग तो चढ़यो नैं ई हंसे अर उपाले नैं ई"। वे मनोविज्ञान के महान ज्ञाता थे और इसलिये उनके समीप पहुंचते ही संशय का विनाश हो जाता था। व्यक्ति पुनः कर्म प्रवण होकर समाज सेवा को समर्पित हो जाता था।

गुरुदेव अपने आज्ञानुवर्ती संत-सती वृन्द को प्रोत्साहित करने और उनके सुख-दुख में सहभागी बनने को सदैव उद्यत रहते थे। संत-सती वृन्द के ज्ञान-ध्यान के प्रति वे अत्यधिक सजग और सचेष्ट रहते थे। उनके इस अनुपम वत्सल भाव ने ही इस विराट चतुर्विध संघ को सुगठित-साकार और आत्म-पर कल्याण हेतु समर्पित बनाया।

उनका अनुपम वात्सल्य आज भी स्मरण मात्र से रोम-रोम को स्पंदित और हर्षित कर देता है। उन वात्सल्य महोदधि को मेरे विनम्र प्रणाम।

-सुरेन्द्रकुमार दस्साणी, मुम्बई

कृतार्थ

आचार्य श्री नानेश की मुझ पर महती कृपा थी। वे देश भर के श्रद्धावान श्रावकों को सदैव नाम लेकर पुकारते थे। ऐसी विलक्षण उनकी स्मरण शक्ति थी किन्तु इससे भी बढ़कर उनकी विशेषता थी-श्रावकों के गुणों का सवर्धन करना। गुरुदेव की वाणी में प्रतिक्षण एक सात्विक प्रोत्साहन का भाव रहता था।

मेरे जीवन का ऐसा ही एक क्षण गुरुदेव के ब्यावर चौमासे में घटित हुआ। मैं उस क्षण को आजीवन भूल नहीं सकता। ब्यावर में आचार्य श्री नानेश का चौमासा चल रहा था। प्रवचन पांडाल खचाखच भरा था। देश के कोने-कोने से आए श्रद्धालु ध्यानमग्न हो अपने आराध्य की अमृत-वाणी का पान कर रहे थे।

इसी समय आचार्य गुरुदेव ने मेरी संघनिष्ठा और शासन सेवा का उल्लेख करते हुए मुझे श्रावक रत्न कहकर संबोधित किया। मैं विस्मय विमुग्ध हो गया। यद्यपि मैंने मेरी दो संसारपक्षीय पुत्रियों को दीक्षा दिलाई थी जो आज महासती श्री तरुलताजी म.सा. और महासती श्री अंजलि श्री जी म.सा. के रूप में शासन सेवा में समर्पित हैं किन्तु यह सब तो श्रावक का धर्म है। गुरुदेव की अमिय वाणी से मैं कृतार्थ हो गया।

सन् १९९० के चित्तौड़गढ़ चौमासे में भी आचार्य श्री नानेश मेरे घर पधारे और हमें पवित्र किया। मुझ पर और मेरे परिवार पर उनकी जो कृपा थी, हम उससे कभी उऋण नहीं हो सकते। उस दिव्यात्मा को हमारी हार्दिक

श्रद्धांजलि ।

-भंवरलाल अभाणी, चित्तौड़गढ

जाज्वल्यमान दीप स्तंभ

आचार्य प्रवर का जीवन समता, सहिष्णुता, सादगी और सेवा का जाज्वल्यमान दीप स्तम्भ था, जो युगों युगों तक अपने ज्ञान प्रकाश से संसार को आलोकित करता रहेगा । समूचा रत्नवंश आचार्य प्रवर के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि व्यक्त करता है कि नई संयम व समता की साधना तथा संथारे के साथ मरण से उन्होंने अपने जीवन के लक्ष्य को बहुत नजदीक कर लिया ।

-रतन सी० बाफना

पारस सम

जिन संतों की तुलना पारस से की जाती है और जिनके संस्पर्श से ही क्षुद्र व्यक्ति नर से नारायण व निम्न कोटि से उच्च श्रेणी का बनने लगता है । उनकी चिकित्सा सेवा करके मुझे शुभाशीर्वाद प्राप्त करने का शुभ अवसर मिला । उन्होंने मुझ जैसी नाचीज को जो सेवा का अवसर प्रदान किया । उसके लिए मैं उनका आभारी हूं ।

जिनके सम्पर्क से लाखों करोड़ों को शांति की अनुभूति हुई उन श्री चरणों में मेरा बारम्बार प्रणाम है ।

-डा० आलोक व्यास

एक और स्तम्भ ढहा

संघ-शास्ता श्री सुदर्शन जी महाराज और आचार्य श्री देवेन्द्रमुनिजी महाराज के स्वर्गवास के बाद आचार्य श्री नानालालजी महाराज का स्वर्गवास, इतने-इतने वज्रपात आज हमें सहने पड़ रहे हैं । लगता है जैन समाज का अमूल्य रत्न भंडार खाली होता जा रहा है । उनके बारे में कुछ भी लिखना आकाश को मुट्ठी में भरने के सदृश है ।

उनके त्याग में निर्मलता थी, व्यवहार में पवित्रता थी और वाणी में अनुभूति की ललकार थी । आज ऐसी महान् आत्मा हमारे बीच से स्वर्गगमन कर गई है । हमारी सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि उनके जीवन से प्रेरणा लें और उनके गुणों और शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारने की कोशिश करें ।

-रोशनलाल जैन

युग प्रभावक आचार्य

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश साधुमार्गी जैन संघ के ही नहीं बल्कि स्थानकवासी समाज व पूरे जैन समाज के भी प्रभावक आचार्यों में से एक थे । आप २०वीं शताब्दी के प्रभावक आचार्य थे । आपश्री के देवलोक होने पर जैन समाज की अपूरणीय क्षति हुई है । मैं अपनी तरफ से व श्री मारवाड़ समता बालक-बालिका मंडल बीकानेर की तरफ से भावभरी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं तथा मेरी शुभकामना है कि आपश्री शीघ्र मोक्षगामी बनें ।

वर्तमान आचार्य श्री युग पुरुष १००८ श्री रामलालजी म.सा. २१वीं शताब्दी के प्रभावक आचार्य होंगे ।

-निर्मल छल्लाणी

वो दीप बुझ गया

वो दीप बुझ गया जिसके सानिध्य में स्थानकवासी जैन समाज ही नहीं सारा विश्व प्रकाश से आलोकित हो रहा था । वो दीप था आचार्य श्री नानेश ।

आचार्य श्री नानेश ने तीर्थंकरों द्वारा प्रतिपादित मूलभूत सिद्धान्तों को बिना खंडित किये समता दर्शन व समीक्षण ध्यान द्वारा जबरदस्त आध्यात्मिक ज्योति फैलाई ।

मुझे सन् १९९८ के जुलाई मास में अंतिम बार उदयपुर में आचार्य श्रीजी के दर्शनों का लाभ मिला । मैं बहुत सौभाग्यशाली था कि अस्वस्थता के बावजूद गुरुदेव के दो व्याख्यान सुनने को मिले । दोनों ही दिन एक विषय पर व्याख्यान सुनने का मौका मिला । यदि लक्ष्य सही है और लक्ष्य तक पहुंचने का मार्ग सही है तो भय का त्याग कर आगे बढ़ो, सफलता अवश्य मिलेगी ।

-रिखबचंद बोथरा, अध्यक्ष
अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ, बंगाईगांव

पूर्ण समर्पण

वर्तमान आचार्य श्री रामेश के प्रति पूर्ण समर्पित बनें, स्वर्गीय पूज्य प्रवर के बाद उनके विशाल वट वृक्ष वत् व्यक्तित्व और कृतित्व जीवन और कर्म की सर्वग्राही परम्परा का निर्वहन करने की चुनौती और दायित्व अपने सबके सबल कंधों पर आ गयी है। इस हुक्म संघ की परम्परा का सकल निर्वहन करके हम आचार्य श्री जी के प्रति एवं आने वाली पीढ़ी के प्रति न्याय कर सकेंगे, एतदर्थ निर्णायक क्षण में आचार्य श्री रामलालजी म.सा. के प्रति पूर्ण समर्पित बन आचार्य श्री नानेश द्वारा रखी हुई अमर नींव के ऊपर भावी जीवन का स्वर्णिम भवन निर्मित करने हेतु संकल्प करें।

वीर प्रभु की पाट परम्परा में होने वाले वीर निर्वाण सम्वत् ५८४ में पूर्व के ज्ञाता जिन्होंने शास्त्र को चार अनुयोग से पृथक् किया, ऐसे प्रकाण्ड विद्वान, शास्त्रों के ज्ञाता आर्यरक्षित के कई शिष्य जो वाद-विद्या में प्रवीण होते हुए भी उत्तराधिकारी के मनोनयन की वेला में घी, तेल या चना के दृष्टांत देकर, सर्वाधिक सार ग्रहण करने वाले चना घट के दृष्टांत सम पुष्यमित्र को चयन किया अर्थात् उत्तराधिकारी रूप में घोषित किया। उस समय क्या कुछ प्रसंग बना, इतिहास साक्षी है। चिंतन के क्षणों में सुज्ञ पाठक चिंतन करें कि आचार्य श्री नानेश ने अपनी सूझ-बूझ व अन्तर्आत्मा की साक्षी से अपना उत्तराधिकार दृढ़संकल्पी, आचारनिष्ठ, हुक्म संघ की आचार क्रान्ति परम्परा को अक्षुण्ण बनाने में परम्परा के प्रति पूर्ण समर्पित श्रद्धा, विनय, अनुशासन के अनुगामी वर्तमान आचार्य श्री रामेश को दिया।

उन क्षणों में जब कुछ विघटन की स्थिति बनी तब यह कहना अतिशयोक्ति युक्त नहीं होगा कि उस समय शकुन्तलाजी म.सा. आदि हम सब साध्वियों की क्या विचित्र स्थिति निर्मित हुई। हम पर क्या बीती ? एक तरफ परमपिता, मातृत्व-स्नेह वात्सल्य-प्रदाता, पूज्य प्रवर के नाम के साथ हमारा नाम जोड़ने का सौभाग्य प्रदान कराने वाले अनंताराध्य आचार्य देव ! एक तरफ मातृवात्सल्य हृदया गुरुणी प्रवर क्या करें कि कर्तव्यविमूढवत् हम सबकी स्थिति बन गई। महाभारत का दृश्य घूम रहा है, नेत्रों के समक्ष एक भीष्म पितामह एवं गुरु द्रोणाचार्य। मन में उथल-पुथल। कृष्ण बोधित अर्जुन वत् अन्तर आत्मा में शासन सर्वोपरि लगा। इस आत्म साक्ष्य एवं पूज्य उभय गुरुदेव के अनन्य आस्था विश्वास तले आश्वस्त बन शासन रहने हेतु निर्णय लिया।

रहे हम आपके आपके ही रहेंगे।
लोक देखकर हमें यही कहेंगे ॥

अन्त में वर्तमान आचार्य प्रवर की ऊर्जा से हम सब युगों-युगो तक ऊर्जास्विल बनें।

हम सबकी यही भावना रहे एवं पूज्य श्रीचरणों में यही भाव अर्पणा रहे कि "पूज्य नानेश ने चाहा वह कभी न भूलें, उन्होंने नही चाहा वह कभी न चूनें"।

इतना भी हम यदि करके दिखायें तो श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

-राजेन्द्र कुमार जैन, केसिंगा

जीवन के उन्नायक

आचार्य भगवन् श्री नानालालजी म.सा. ने हम धर्मपालों पर जो उपकार किया है वह हम कभी नहीं भूल सकते हैं।

हमें नीच जाति से उठाकर ऊपर जाति के लोगों के साथ बैठने का अवसर दिया है। हमें अधर्म के मार्ग से हटाकर धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी है। हमें दुर्व्यसनों से हटाकर व्यसन मुक्त जीवन जीने की कला सिखाई है। इसी से हम अधिक पैसा बचाकर अच्छा जीवन जीना सीख रहे हैं।

नये आचार्य भगवन् को हमारा शत-शत वंदन है। वे भी हम धर्मपालों का पूरा ध्यान रखेंगे, ऐसा विश्वास है। -रामचंद्र धर्मपाल, सुराना (रतलाम)

सादगी का निधन

आचार्य श्री नानालालजी महाराज ने गत कुछ वर्षों से अस्वस्थ होते हुए भी आगमोक्त साधु-चर्या का

अक्षरशः अप्रमत्त परिपालन किया ? उनका जीवन पारदर्शी, सादा, सरल, समत्वपूर्ण, अनासक्त और अनुपल गतिशील था। एक मायने में वे डायनेमिक संत थे। उन्होंने जैन धर्म की मौलिकताओं का कदम-दर कदम भरपूर खयाल रखा। स्वदेशी में उनकी अडिग आस्था थी, अतः उन्होंने तथा उनके संघस्थ साधु-साध्वियों ने सदैव खादी का उपयोग किया। वे लोकेषणाओं से कोसों दूर बने रहे। उन्होंने कैमरा, लाउडस्पीकर, टेपरिकार्डर, पंखे इत्यादि का कभी उपयोग न तो खुद किया और न ही अपने संघ में होने दिया। उन्होंने अपनी पूज्या माँ शृंगारबाई के इस वाक्य (३० सितम्बर ६२) का, कि म्हारा धोरा दूधरी अणी चादर में काला दाग मत लगाइजो (बेटे, मेरे धौले-उजले दूध की इस चादर पर कोई काला दाग मत आने देना), प्रतिपल ध्यान रख अन्तिम श्वास तक उसे स्वच्छ-शुभ्र बनाए रखा। हमें विश्वास है उस महान् विभूति की बहुमूल्य परम्पराओं पर साधुमार्गी संघ निःसंकोच चलेगा और मात्र देश ही नहीं वरन् सारी दुनिया को सुख, शान्ति, बन्धुत्व, समत्व, एकत्व और सारल्य का संदेश देगा। हमारे विनम्र मत में उस महामनीषी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही हो सकती है कि साधु-संघ सावित बने और मिलजुल कर काम करें।

-डॉ. नेमीचंद जैन,सम्पादक, तीर्थंकर

महामनीषी की अनुपम देन

क्रान्तदृष्टा जवाहराचार्य ने जिस प्रकार अपने ज्ञाना लोक से भविष्य में मानव जीवन के लिए सुख मार्ग प्रदर्शित किया ठीक वैसे ही आचार्य नानेश ने पाश्चात्य संस्कृति, जो वैज्ञानिक व भौतिकता प्रधान है, के कारण मानसिक रूप से ग्रसित, चिन्ता सागर में निमग्न मानव को, शारीरिक रोगों से आक्रांत मानव मात्र के लिए अवतारी पुरुष बन सुखी भविष्य का राजमार्ग बताया। आचार्य भगवन् का जीवन अनुपमेय, अतुलनीय है। चाचा नेहरू के समान वे बच्चों को ज्यादा चाहते थे। अप्रमत्त, अल्पभाषी समयज्ञ थे। उनमें अनंत शक्ति थी, ऊर्जा थी। क्रोधी को शान्त बनाने की, रोगी को निरोग बनाने की, दुखी को सुखी बनाने की पत्थर को प्रतिमा बनाने की, निरक्षर को विद्वान बनाने की, बीज को वट वृक्ष बनाने की, नीमं को आम बनाने की, शत्रु को मित्र बनाने की, आग को नीर बनाने की, गजब की क्षमता थी। दुखियों की व्यथा सुनकर दुख दूर करते, बिछुड़े को मिलाते, टूटे दिल को जोड़ते, फूटे घर को सांधते, मेरु सम कष्ट सहते, घनघोर बादल सम स्नेह बरसाते, स्नेह नीर ममत्व माँ सम लुटाते, पिता सम देते दुलार, छोटी छोटी सतियों को, छोटे-छोटे संतों को आवश्यकता पूछते, आहार पानी दवा औषध पूछते। आचार्य भगवन् नर रत्न के सच्चे परीक्षक थे, अपनी पैनी बुद्धि से शिष्यों को परखा। जिस प्रकार स्वर्ण-शोधक कचरे के कणों में से स्वर्ण कण निकालते हैं, तथावत विषमता के क्षणों में समता लहर निर्मित करते थे। उस दिव्य योगी पुरुष को आने वाली अनेक शताब्दियां याद करेंगी।

-जितेन्द्र वैद्य, बालाघाट

ज्वलंत समस्याएं एवं समता सिद्धांत

आचार्य श्री नानेश के संयमी जीवन में एवं विशेष रूप से आचार्य पद प्राप्त होने के पश्चात् जिन शासन में अभूतपूर्व उपलब्धियां प्राप्त हुई हैं। अधिकाधिक दीक्षा प्रसंग, धर्मपाल जैन, समीक्षण ध्यान, समतादर्शन आदि अनेक अवदान जन समुदाय की आत्म-साधना हेतु उपलब्ध हुए। इसमें आज के इस ज्वलंत युग में जहां देश, परिवार, समाज में विषम परिस्थितियां बन रही है। हर जगह मानव अपने को असहाय महसूस कर रहा है। इन विषम परिस्थितियों में समता दर्शन की आवश्यकता अधिकाधिक है। यदि इस समता को समझ लें तो ये विषम परिस्थितियां उत्पन्न ही न हों और मानव सुख चैन से अपना जीवन व्यतीत कर सकता है।

-धरम पाड़ीवाल, रायपुर (म. प्र.)

तू ताज बना सिरताज बना

जग में जीवन श्रेष्ठ वही, जो फूलों सा मुस्काता है।
अपने गुण सौरभ से, जग के कण-कण को महकाता है॥

ऐसे थे आचार्य श्री नानेश जो अपने सद्गुणों की [सु]वास से अनेक आत्माओं का कल्याण कर हमारे बीच [से] चले गये।

वस्तुतः समूचे जैन समाज ने एक ऐसा रत्न खो [दि]या है जिसने अपने दृढ़ संकल्प से भीड़ से अलग रहकर [श्र]मण संस्कृति की रक्षा की।

[तु]म स्वयं शंकर थे, तुम्हें अमृत की जरूरत न पड़ी।
[तु]म स्वयं गौरव थे, तुम्हें हजारों की जरूरत न पड़ी॥
[सर]ताज बना सिरताज बना, चमका चांद सितारों से।
[अ]मर रहेगा नानागुरुवर, गूंजा जय जयकारों से॥

-अनिल बरखेड़ावाला, खाचरौद

उड़ीसावासी धन्य हुए

जिन शासन के दिव्य सितारे आचार्य भगवन् का [दि]व्यालोक कभी बिखर नहीं सकता। जन मानस के अनमोल मोती जिन-शासन की दिव्य ज्योति का [गु]णानुवाद असंभव है। लगभग ३४ वर्ष पहले आचार्य भगवन् १००८ श्री नानालालजी म.सा. ने उड़ीसा की [पा]वन धरती का स्पर्श किया। उड़ीसावासी आप के [द]र्शन पाकर धन्य-धन्य हो गये। आपके उड़ीसा पधारने [से] खरियार रोड़ काटाभांजी, बगुमोण्डा, टिटलागढ़, केसिंगा में जो हरियाणा के रहने वाले थे। उन्होंने अपने आप को आचार्य भगवन् से समकित लेकर साधुमार्गी जैन श्रावक संघ के नाम से स्थापित किया।

-रामचंद्र जैन

आत्मा नहीं मरती

सिर्फ जैन दर्शन ही नहीं प्राय सभी दर्शन और [य]हां तक कि वैज्ञानिक मानने लग गये हैं-आत्मा कभी मरती नहीं, वह कहीं न कहीं अवश्य रहती है। गर यह सत्य है तो हमारे परम आराध्य आचार्य भगवन् हमें छोड़कर चले गये कैसे कहा जा सकता है ? अत. मैं समझता हूं कि वे आज भी हमारे पास हैं और भविष्य में भी हमारे पास रहेंगे। उनका समतामय जीवन हमारी आंखों से कभी ओझल हो नहीं सकेगा।

आत्मदृष्टि सर्वदा आपके दर्शन करती रहती है, करती रहेगी।

-भोमराज गुलगुलिया

विराट व्यक्तित्व के धनी

जननी जणे तो ऐड़ो जण का दाता का सूर।
नहीं तो रहिजे बांझड़ी मता गंवाजे नूर।

ऐसे ही जिन शासन के मसीहा शूरवीर बालक नाना का माता शृंगार की कुक्षि से छोटे से गांव दांता में जन्म हुआ। आप विराट प्रतिभा के धनी, स्पष्ट वक्ता निडर, दृढ़ प्रतिज्ञ, सहृदय एवं सदाशयता के भंडार थे। आपका मुख मण्डल सूर्य के समान तेजस्वी चन्द्रमा के समान शीतलता प्रदान करने वाला था, आपने अपने संयमी जीवन में, आडबंर भौतिकवाद से हमेशा दूर रहते हुए शुद्ध संयम शुद्ध चरित्र की निर्मलता बहाई वह जैन जगत मे एक अनोखी मिसाल है। साधुता के नाम पर आपकी संयम साधना के अनेक आयाम रहे हैं। समता दर्शन, समीक्षण ध्यान, धर्मपाल प्रवृत्ति, व्यसनमुक्ति आदि आदि। उसके लिए समूचा जैन समाज, समूचा मानव समाज आपका युगों-युगों तक आभारी रहेगा।

आपने लगभग ८० वर्ष तक जिन शासन की सच्ची सेवा की है वो स्वर्णिम अक्षरों में युगों-युगों तक अंकित रहेगी। आपके संयमित जीवन के प्रति अन्य सम्प्रदाय के धर्माचार्य, साधु, साध्वी भी नतमस्तक होते थे। आप धर्मयोद्धा के रूप में अडिग रहकर जिनवाणी का प्रचार-प्रसार करके भव्य जीवों को सन्मार्ग पर लाते रहे।

आपकी मर्मस्पर्शी शैली से अभिसिंचित विद्वता की वर्चस्वी वाणी-छवि को कोई कैसे भूल सकता है ? आपके जीवन काल के अन्तिम समय कई विपत्तियां आईं पर भगवान महावीर के सच्चे सेनानी ने आगम के विपरीत कभी भी किसी भी परिस्थिति में समझौता न करते हुए विशुद्ध आचार क्रिया, धार्मिक क्रिया के समर्थक बनकर

माणकचन्दजी बोहरा ब्यावर वाले सोजत सिटी पहुंचे, रास्ते में ही एक परिचित श्रावक मिले। बोहराजी ने पूछा कि आचार्य भगवन् का चातुर्मास राणावास खुल गया क्या ? जबकि संतों को पता नहीं था। उस श्रावक ने कहा-राणावास। इतना सुनकर बोहराजी आचार्य भगवन् के दर्शनार्थ स्थानक पहुंचे तो उन्होंने बीच में संतों से कहा-महाराज चातुर्मास राणावास खुल गया क्या ? जबकि संतों को पता नहीं था। न तो आचार्य भगवन् ने और न ही पंडितजी ने किसी को बताया। बोहराजी से ऐसा सुनकर संत तुरन्त आचार्य भगवन् के पास पहुँचे। उनसे पूछा-भगवन् क्या चातुर्मास राणावास खोल दिया है ? आचार्य भगवन् ने संतों से प्रश्न किया, आपको किसने कहा, तो संत बोले हमें बोहराजी ने बताया। उसी समय बोहराजी से पूछा गया, आपको किसने कहा, बोहराजी ने उस श्रावक का नाम बताया। फिर उस श्रावक को बुलाया गया तथा पूछा गया- भाई आपको किसने कहा। श्रावक ने कहा गुरुदेव मुझे तो किसी ने नहीं कहा, बस मुझे लग गया कि चातुर्मास तो राणावास ही होगा, इसलिए मैंने कह दिया, फिर आचार्य भगवन् मुस्करा दिए सभी को पता लग गया कि चातुर्मास राणावास खुल गया है। कहने का तात्पर्य यही है कि आचार्य भगवन् कितने गंभीर थे। चातुर्मास स्वीकृति पत्र दोनों संघों के पास पहुंचने से पूर्व किसी को भी नहीं बताने का अभिप्राय यही था कि पहले दोनों संघों को जानकारी होनी चाहिए, फिर अन्य को ऐसा सोचकर ही भगवन् ने इस बात को मन में रखा। ऐसी गंभीरता के कई उदाहरण हैं। ऐसे महान् आचार्य श्रीजी के गुणों के प्रति मैं नतमस्तक हूं तथा तहेदिल से एक बार फिर भगवन् के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करके परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि इस सदी के महानतम आचार्य श्रीजी की आत्मा को शांति प्रदान करें।

-मीठालाल सोढा, ब्यावर

अद्भुत योगीराज

मेवाड़ की भक्ति व शक्ति की पूज्य धरा दांता गांव में जन्मे गोरधन लाल जी से नानेश बने, यह मेवाड़ के सपूत जिन्होंने पूरे विश्व को ज्ञान का प्रकाश दिया।

छुआछूत व भेदभाव के कारण धर्मान्तरण के समय में एक अद्भुत महात्मन् मेवाड़ में उगा सूर्य आचार्य श्री नानेश मालवा में पधारे। एक भाई ने आकर कहा आपके उपदेश को सुनकर मेरा जन्म सफल हो गया। भगवन् आपसे निवेदन है कि पास के गांव में सामूहिक भोज हैं। ५० गांवों के लोग एकत्रित हो रहे हैं। यदि आपकी अमृतमय वाणी की वर्षा होती है तो जो हिन्दुत्व के रास्ते से भटकने की स्थिति में डोल रहे हैं, व्यसनों में लिप्त हैं वे दिशा पा सकते हैं। आचार्य श्री नानेश ने उद्बोधन दिया। सभी को मांसाहार व व्यसन से मुक्त रहने का उपदेश दिया और कहा आप भी समाज के वीतराग शासन के सम्माननीय श्रावक हैं। आपके प्रति कोई छुआ-छूत, भेदभाव, उपेक्षा पूर्ण व्यवहार नहीं करेंगे व आप बलाई, चमार, रेगर के नाम से नहीं धर्मपाल के नाम से पहचाने जाओगे।

लाखों व्यक्ति मांसाहार, शराब का त्याग कर धर्मपाल बने। इस अद्भुत योगी ने लाखों हिन्दुओं को ईसाई होने से बचा लिया। हिन्दुत्व की धारा में जोड़े रखा। हिन्दुत्व के रक्षक महान योगीराज को शत-शत नमन।

-कन्हैयालाल बोरदिया, संयोजक,
समता जैन पाठशाला

ज्योति पुंज युगाचार्य

क्रियोद्धारक महातपस्वी परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री हुक्मीचन्द जी म.सा. द्वारा संवर्धित परम्परा आज विराट वट वृक्ष का आकार लिए संघ में नये पुष्पों को फलित कर रही है। आचार्य प्रवर श्री शिवलालजी म.सा., श्री उदय सागर जी म.सा. व श्री चौथमल जी म.सा. के तद्नुरूप ही विराट व्यक्तित्व के धनी आचार्य प्रवर श्री श्रीलाल जी म.सा. हुए जिन्होंने संघ में उत्क्रान्ति का उद्घोष किया एवं युगद्रष्टा ज्योतिर्धर श्रीमद् जवाहराचार्य ने समाज में व्याप्त कुरूढ़ियों का उन्मूलन

करने में अपना सर्वस्व समर्पित करते हुए राष्ट्र में क्रान्ति का सिंहनाद करते हुए नित नूतन आयाम प्रस्तुत किये, जो आज भी जन जीवन के लिए प्रासंगिक व प्रेरणादायी हैं। उन्हीं के पट्टासीन शान्त क्रान्ति के अग्रदूत आचार्य प्रवर श्री गणेश जिन्होंने गणानाम् ईशः गणेश की उक्ति का यथानुरूप से निर्वहन किया। वे श्रमण संघ के उपाचार्य के पद पर उपशोभित होते हुए भी संघ में व्याप्त शिथिलता को देखकर व परिवर्तन के अभाव में अपने महत्वपूर्ण सर्वोच्च पद का भी परित्याग करके उत्तराध्ययन सूत्र में वर्णित गर्गाचार्य के अध्ययन को साक्षात् कर दिया। उन्हीं के दिशा निर्देशन, संवर्धन में समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी, परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री नानेश हुए, जिन्होंने संघ में नव चेतना का संचार करते हुए अभिनव आकार प्रदान किया। अपने आचार्यकाल में जो-जो क्रियान्विति की है वह जैन क्षितिज पर उद्भापित भव्य विभा के रूप में विद्यमान रहेगी।

-कमलचन्द लूणिया, बीकानेर-३३४००५

मेरे आराध्यदेव

जो इन्द्रियों को जीत कर, धर्माचरण में लीन हैं।
उनके मरण का शोक क्या, वो मुक्त बन्धन हीन हैं॥

कवि के कथनानुसार महापुरुषों के मरण का शोक नहीं होता। उनका मरण तो महोत्सव हो जाता है। समता विभूति जिन शासन प्रद्योतक, समीण ध्यान योगी, धर्मपाल प्रतिबोधक, प्रातः स्मरणीय परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म.सा. हुक्म संघ के आठवें आचार्य हुए, जिन्होंने लगभग ३७ वर्ष तक संघ का कुशल एवं सफल नेतृत्त्व किया इनके शासन काल में ३०० से अधिक मुमुक्षु आत्माओं ने भागवती दीक्षा अंगीकार की। एक साथ २५ दीक्षाओं का कीर्तिमान भी उनके शासन की शान का उत्कृष्ट उदाहरण है।

आचार्य श्री के दर्शनों का सौभाग्य मुझे बचपन से ही मिलता रहा। मेरा पूरा परिवार आचार्य नानेश के प्रति सदैव श्रद्धावनत रहा है। मेरे विशेष पुण्य कर्मों के प्रतिफल स्वरूप आचार्य श्री का जब मेवाड़ संभाग में आगमन हुआ, उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता था। तब जयपुर, बीकानेर, उदयपुर आदि के चिकित्सकों के साथ मुझे भी नर्सिंग सेवाओं का लाभ प्राप्त हुआ। मुझ पर सदैव आचार्य श्री का विशेष आशीर्वाद रहा और गुरुकृपा से हर संकट पलभर में टलता रहा। आपकी वाणी में एक विशेष आकर्षण एवं मृदुता थी जो उनके दर्शनार्थ आने वाले श्रद्धालु को अपना बना लेती थी।

-शांतिलाल नलवाया, उदयपुर

स्नायविक तनाव के प्रभंजक

आज का मानव जिस विषमता जन्य संघर्षों से गुजर रहा है सर्व विदित है, पर्यावरण प्रदूषण से स्नायविक तनाव बढ़ रहा है तो पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, मानसिक तनाव भी भरपूर बढ़ रहा है। ऐसे में एक युग पुरुष के अवतरण की अपेक्षा थी, जिसकी संपूर्ति के हेतु बने आचार्य नानेश जिन्होंने अपने संदेश द्वारा विचार क्रांति का उद्घोष कर नव्य समाज संरचना की पृष्ठभूमि तैयार की।

वर्ण भेद व जातिवाद से पृथक रहकर सप्त व्यसन मुक्ति के अभियान द्वारा आपने अस्पृश्य जनों को जैन धर्म के मौलिक सिद्धांतों की जानकारी दी और उन्हें मानवता से जीने व समाज में, शालीनता से संवर्धनशीलता का अधिकार दिया। उन्हें 'धर्मपाल' से अभिसंज्ञित किया।

आप श्री ने अपनी मर्यादा में रहकर समाज में व्याप्त कुरीतियों पर वैचारिक क्रान्ति की छैनी से प्रहार किया, जिससे समाज स्वस्थ वातावरण में प्रगतिशील बना।

आप श्री ने अपने आध्यात्मिक उद्बोधन से समाज की दिशा व दशा में अभिनव रूपान्तरण किया। जिससे व्यक्ति में नई स्फुरणा, नया आलोक व नूतन जागृति का अन्तर्नाद अनुगुंजित होता रहा है।

आप श्री का प्रेरक व्यक्तित्व व कृतित्व स्थानकवासी समाज के लिए ही प्रेरक नहीं अपितु संपूर्ण जैन समाज व जैनेतर समाज के लिए प्रेरणा पुंज के रूप

में रहा।

आप श्री को लोगों ने पुराण पंथी व सिद्धान्त वादी संज्ञा से अभिव्यक्त किया किन्तु आप श्री ने आगम सिद्धांत से भिन्न दृष्टि कोणों को कभी भी स्थान नहीं दिया। हर क्षेत्र में निकषोपल पर खरे उतरकर संघ को सतत गति प्रदान करते रहे।

आचार्य देव सरल व स्पष्ट वक्ता, सहज स्फूर्त, तर्क प्रज्ञा के धनी, तेजोमय व्यक्तित्व इस तीन संपुटी के समष्टि रूप रहे। महामहिम आचार्य देव भले ही पार्थिक देह मे अविद्यमान हैं, किन्तु उनके द्वारा प्रदत्त समता की दिव्र प्रतिपल प्रतिक्षण मार्ग प्रशस्त व पावन करती रहती है।

-नवीन कुमार कोठारी, बीकानेर

गुण रत्नाकर

मेरा यह परम सौभाग्य रहा कि मुझे पूज्य आचार्य श्री नानेश जी महाराज का समय-समय पर सान्निध्य प्राप्त हुआ है। आचार्य श्री के देशनोक में अनुष्ठित चातुर्मास काल में सप्ताह में प्राय. दो बार उनके स्वास्थ्य परीक्षण हेतु मुझे उनके दर्शन प्राप्त होते थे। उसी बहाने उनसे प्रत्यक्ष वार्तालाप का अवसर भी मिल जाता था। उनके आध्यात्मिक जीवन के उच्चादर्शों से तो कोई भी व्यक्ति प्रभावित हुए बिना रह ही नहीं सकता, उनकी दैनन्दिन जीवन क्रिया भी हम सभी के लिए अनुकरणीय हैं। समय के प्रति पाबन्दी, संयमित जीवन, व्यवहार की मधुरता, सर्वमंगलकारी भावना आदि श्रेष्ठ गुणों ने मुझे अतिशय प्रभावित किया है। उनके नोखा तथा बीकानेर प्रवासों में भी मुझे यह सौभाग्य प्राप्त होता रहा है। मैं अपनी क्षमतानुसार सश्रद्ध उनकी चिकित्सकीय सेवा कर अपने आप को धन्य मानता हूं।

-डॉ. आर.पी. अग्रवाल,बीकानेर

श्रमण संस्कृति के सजग प्रहरी

साधुमार्ग की इस पवित्र पावन धारा को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए बड़े-बड़े आचार्यों ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। भगवान महावीर के बाद अनेक बार आगमिक धरातल पर क्रांति के प्रसंग आये हैं, जिनका उद्देश्य श्रमण संस्कृति को जीवन्त बनाए रखने का रहा। ऐसी क्रांति-धारा में क्रियोद्धारक महान् आचार्य 1008 श्री हुक्मीचंद जी म.सा. का नाम विशेष रूप से उभर कर सामने आया था। आचार्य प्रवर केवल तपस्वी अथवा संयमी ही नहीं थे, वरन् श्रमण संस्कृति के गहरे आगमिक अध्येता थे। 'तिन्नाणं तारयाणं' के आदर्श, आचार्य प्रवर ने योग्य मुमुक्षुओं को दीक्षित किया और जो देशव्रती बनना चाहते थे, उन्हें देशव्रती बनाया। इस प्रकार सहज रूप से ही चतुर्विध संघ का प्रवर्तन हो गया।

फिर साधुमार्ग में क्रान्ति की धारा पश्चात्‌वर्ती आचार्यों से निरन्तर आगे बढ़ी। हमें परम प्रसन्नता है कि अष्टम पट्टधर, समता विभूति विद्वद् शिरोमणि, जिन शासन प्रद्योतक, धर्मपाल प्रतिबोधक 1008 आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म.सा. का सान्निध्य हमें प्राप्त हुआ। श्रद्धेय आचार्य प्रवर का व्यक्तित्व, कृतित्व अनूठा एवं महनीय है। आपने रतलाम में 25 एवं बीकानेर में 21 दीक्षाएं देकर सैंकड़ों वर्षों से अतीत के इतिहास को प्रत्यक्ष कर दिखाया है। ऐसी एक नहीं अनेक क्रान्तियां आचार्य प्रवर के सानिध्य में हुई। आपके शिष्य शिष्या रूप साधु-साध्वी वर्ग ने सम्यक् ज्ञान विज्ञान की दिशा में भी आश्चर्यजनक विकास किया है।

चतुर्विध संघ को आध्यात्मिक दृष्टि से सम्पन्न बनाकर ज्ञान, दर्शन, चरित्र को ध्यान में रखकर इस कलियुग में आचार्य प्रवर श्री नानेश ने समतामयी ज्ञान-रूपी गंगा, छोटे-बड़े हर व्यक्ति के मन में बहायी थी। आचार्य प्रवर के जिसने भी दर्शन किए वह उनका भक्त बन जाता था। ऐसा इसलिए होता था कि आपके चेहरे से सदैव समता, शांति ही झलकती थी। आपके कितने ही गुणगान करें, कम है।

आपके व्याख्यानों के प्रभाव से संघ (समाज) द्वारा अनेक वृद्ध आश्रम/विद्यालय, धार्मिक संस्थाएं स्थापित की गईं। आचार्य श्री नानेश समता शिक्षण

समिति नानेश नगर दांता में गरीबों के लिए निःशुल्क शिक्षण, आवास एवं धार्मिक संस्कार प्रदान करने की व्यवस्था है ।

आचार्य प्रवर ने अनेक गैर जाति के भाई-बहिनों को जैन धर्म का उपदेश देकर, धर्मपाल बनाया यह एक अप्रतिम उपलब्धि है ।

आचार्य प्रवर ने बीकानेर में युवाचार्य पद के लिए मुनि श्री रामलालजी म.सा. को चुना एवं समाज के सामने आपने अपने शिष्य की प्रशंसा करते हुए कहा-मैं चतुर्विध संघ को अनमोल हीरा दे रहा हूं जो मेरे बाद नवम पट्टधर रूप में कोहिनूर हीरे की तरह सारे देश में चमकता रहेगा, अनेक वर्षों तक चमकता रहेगा ।

-सुरेश पटवा, 63, वर्धमान नगर, इन्दौर

शताब्दी के विशिष्ट आचार्य

आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. का महाप्रयाण जैन जगत की विरल विभूति संघ एवं शासन के लिए ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व के लिए आघात है । विश्व वंदनीय आचार्य श्री नानेश मात्र जैन समाज के आचार्य ही नहीं बल्कि जन-जन के प्रेरक थे । जन-जन की श्रद्धा के केन्द्र थे ।

अपने 61 वर्ष के संयमकाल में अपनी कठोर आचार संहिता, साधु मर्यादा व अनुशासन का पालन करते हुए आप अपनी साधना के माध्यम से अध्यात्म के शिखर की ओर निरंतर अग्रसर होते रहे । वहीं अपने शासन में, संघ में साधु-साध्वी को उत्कृष्ट संयम जीवन की प्रेरणा देकर अनुशासित रखते हुए, समता की निर्मल धारा को देश-विदेश में प्रवाहित कर जन-जन में जागरण उत्पन्न किया और चतुर्विध संघ के समन्वय का जो अनूठा दृष्टान्त प्रस्तुत किया वह अपने आप में पूज्य गुरुदेव को बेजोड़ शासन नायक के रूप में युगों-युगों तक स्मरण कराता रहेगा ।

-गुलाब चौपड़ा, पूर्व अध्यक्ष,
श्री अ.भा. साधु. जैन समता बालक बालिका मंडली

श्रमणोपासक से नाना की जाना

यद्यपि पूज्यश्री के प्रत्यक्ष दर्शन का सौभाग्य तो मुझे प्राप्त नहीं हुआ, लेकिन श्रमणोपासक द्वारा उनके विचारों एवं कार्यों की जानकारी बराबर मिलती रही । श्रद्धेय स्व. आचार्य प्रवर उच्च कोटि की आत्मा थी । संस्कार निर्माण एवं व्यसनमुक्ति अभियान की प्रेरणा द्वारा आपने जन जागृति का बिगुल बजाया । धर्मपाल प्रवृत्ति द्वारा निम्न दर्जे के लोगों को ऊपर उठाया। समता का संदेश देकर आपने महावीर वाणी को जन-जन तक पहुंचाया ।

पूज्य श्री के स्वर्गगमन से शासन ने एक अमूल्य रत्न खोया है ।

भाव भरी वंदना ।

-जे.के. संघवी
संपादक-शाश्वत धर्म

वात्सल्य वारिधि

समता विभूति आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. की वाणी में जादुई असर था । जिन्हें वे प्रेरणा प्रदान करते थे उसको सामने वाला सहर्ष अंगीकार कर लेते था । सैंकड़ों हजारों भक्तों से वे सदा घिरे रहते थे । उनके व्यक्तित्व में चुंबकीय आकर्षण था । छोटे बड़े सभी पर समान भाव रखते थे । मैं लगभग ५-६ वर्ष से उनके चरणों में निकट से रहा । छोटे से बालक पर भी वे असीम वात्सल्य बरसाते थे । मुझे उनके सानिध्य में रहते हुए जो आत्मीय वात्सल्य मिला वह वर्णनातीत है । वे श्रद्धालुओं को वात्सल्य का प्रसाद प्रदान करते थे । इन सब को देखते हुए सिद्ध होता है कि आचार्य देव वात्सल्य के समुद्र थे जो समागत भक्तों को लुटाते रहते थे । ऐसे आस्था के अमर देवता आचार्य श्री नानेश के महाप्रयाण से समूचा जैन समाज रिक्तता का अनुभव कर रहा है ।

-गणेश बैरागी

नाम छोटे गुण बड़े

आचार्य श्री नानालाल जी म. का नाम छोटा था,

जन्म स्थान दांता गांव भी छोटा सा परंतु उनमें गुण बड़े थे। आचार्य भगवन् ने जो देन समाज को दी है, वह अजर-अमर रहेगी। शताब्दियों तक उन्हें याद किया जाएगा। उनमें जो महान् गुण थे उनका वर्णन करना हमारी बुद्धि से परे है। आज विश्व में अनेक समस्याएं हैं, समता दर्शन से उन सभी समस्याओं का हल खोजा जा सकता है।

आचार्य भगवन् ने अपने जीवन को कितना उपलब्धिपूर्ण बनाया कि आज वे जन-जन की आस्था के केन्द्र बन गए। कितना आत्मबल था उनमें, कितने कष्ट आये पर विचलित नहीं हुए। वे कष्टों को साधारण मानकर सहज रूप से झेल लेते थे। जीवन के अन्तिम समय में उन्होंने प्रगाढ़ समता का परिचय दिया। कितने कष्ट थे शरीर में पर उफ तक नहीं किया। दवाई नहीं, डॉक्टर नहीं मैं अपनी साधना में ही लीन रहूंगा कितनी महान साधना थी उनकी। उनकी दूसरी देन थी समीक्षण ध्यान। इसके द्वारा उन्होंने अपना जीवन तो संजोया ही साथ ही समाज के हम सभी भाई बहिनों को भी समझाया कि तुम अपने अन्तर को टटोलो उसमें कहां-कहां गंदगी है, कहां-२ राग-द्वेष है कहां काम क्रोध है मान है माया है लोभ है इन सब दुष्प्रवृत्तियों को एक-एक करके बाहर निकालो। जब तुम्हारी ये दुष्प्रवृत्तियां एक-एक करके कम होती जाएगी तो तुम्हारी आत्मा स्वच्छ बनती जाएगी। तुम प्रभु के निकट पहुंच जाओगे। वे जब भी व्याख्यान देते, यही कहते कि तुम अपने अन्तर मन को टटोलो, अन्तर को देखो। जैसे हम अपने शरीर व घर को झाड़-पोंछ कर स्वच्छ करते हैं वैसे ही इस आत्मा की सफाई करो। प्रयत्न करते रहने से अवश्य यह एक दिन स्वच्छ बन जायेगी और तुम प्रभु के निकट पहुंच सकोगे। अपेक्षित है कि हम उनकी शिक्षाओं को आत्मसात् करें।

-यशवन्त सरूपरिया, उदयपुर

ज्ञान, दर्शन, चारित्र की प्रतिमूर्ति

आचार्य श्री का संपूर्ण जीवन ही त्याग, तप एवं संयम की सौरभ से ओतप्रोत था। आचार्य श्री की वाणी में ओज, हृदय में पवित्रता एवं आचरण में उत्कर्ष था। आपका बाह्य जीवन जितना नयनाभिराम था उससे भी अनेक गुणा बढ़कर आपका अन्तर जीवन सौन्दर्य था। आपके जीवन में सागर सी गहराई, पर्वत सी ऊंचाई, चन्द्र सी शीतलता एवं सूर्य की तेजस्विता थी। धर्म की महाप्राण सरलता, सरसता तो आपके जीवन में कूट-कूट कर भरी थी। आपकी वाणी, विचार एवं भाव सरलता पूर्ण थे।

आचार की दृढ़ता और विचार की उदारता आपके व्यक्तित्व की महत्वपूर्ण विशेषताएं थीं। आचार्य श्री कहा करते थे कि आचार में मेरु पर्वत की तरह अडोल बने रहो और विचार में गंगा की पवित्रता लिए बहते चलो। सभी सम्प्रदाय के लोगों को आप में पूर्ण आस्था एवं आगाध श्रद्धा भक्ति थी।

आचार्य श्री नानेश सौम्य, प्रशान्त एवं उदात्त प्रकृति के महान सन्त थे। उन्होंने अपने जीवन काल में अनेक विधाओं में सत्कर्म की धाराएं प्रवाहित कीं। समता साधना के प्रचार में तो उनका अपना एक विशिष्ट स्थान है, जो चिरकाल तक भक्तगणों के हृदय में सुरक्षित रहेगा।

इतिहास मर्मज्ञ, ज्ञान और क्रिया के साकार रूप आचार्य श्री का देवलोक गमन जैन समाज के लिए अपूरणीय क्षति है। ऐसी दिव्यात्मा के चरणों में सादर नमन।

-नेमनाथ जैन, उपाध्यक्ष जैन कांफ्रेन्स, इन्दौर

छल कपट से दूर थे

हिमालय सा उंचा था उनका साधुता भरा जीवन,
वे जिन शासन के नूर थे।
आचार्य श्री नानेश छल-कपट से दूर थे।
जीते जी किया संग्रह संयम का धन।
जब चले तो पूर्णतया भरपूर थे।

आचार्य श्री जी पद, ज्ञान, सदाचार, सच्चरित्रता और साधुता आदि गुणों से हिमालयवत उच्च व सहज थे। वे विनम्र, सरल, सहज और मधुरभाषी भी थे। एक

विशाल धर्म संघ के आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होकर भी वे छोटे-बड़े, धनी-गरीब सभी को पुण्यवान जैसे आदर पूर्वक मधुर संबोधनों से पुकारते थे।

स्वभाव में अत्यंत विनम्रता, वाणी में मिश्री सी मधुरता और चेहरे पर हर समय प्रसन्नता। मुस्कान देखकर लगता था आचार्य श्री नानेश अनुशास्ता ही नहीं श्रावक श्राविकाओं के माता-पिता, हितचिंतक और कल्याणकारी भी थे। आज उन श्रद्धास्पद समताधारी का नाम स्मरण करते ही हृदय गद्‌गद् हो जाता है। युग-युगान्तर तक आपके संयम की महक इस चतुर्विध संघ में गूंजती रहेगी तथा वह आगे आने वाले मुमुक्षुओं को ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र की अभिवृद्धि के लिए प्रेरित करती रहेगी।

-मनोहरलाल चण्डालिया सचिव,
आचार्य श्री नानेश समता विकास ट्रस्ट, नानेश नगर

सेवा, सारल्य व सहजता की त्रिवेणी

आचार्य श्री नानेश ने अपना तन-मन समर्पित करते हुए पूज्य गुरुदेव श्री गणेशीलाल जी महाराज साहब की जो सेवा की, उनके प्रति जो अडिग आस्था का समर्पण भाव रखा उसी का यह प्रमाण है कि ३८ वर्ष के आचार्य काल में ही उनकी कीर्ति चारों ओर फैल गई। जहां भी पधारे, हजारों की भीड़ उनके दर्शनों के लिए उमड़ पड़ती थी और लोग उनकी मुख मुद्रा देखकर/वाणी सुनकर धन्य-धन्य हो उठते।

आचार्य श्री नानेश के कपासन होली चातुर्मास के अवसर पर सत्संग का लाभ मिला। उनके प्रवचन सुनने व उनसे बातचीत करने का अवसर मिला। तब यह अनुभव हुआ कि इतने विशाल साधुमार्गी जैन संघ के अष्टम आचार्य ३५० से अधिक साधु-साध्वियों के संरक्षक अपने दैनंदिन व्यवहार में कितने सरल व कितने मिलनसार हैं। कितनी नम्रता है। इनके जीवन में और वाणी में कितनी मधुरता है। कभी भी देखो, उनका मुख मंडल प्रसन्नता से दमकता रहता था।

-मदन चण्डालिया, कपासन

मेरे श्रद्धा दीप

पूज्य गुरुदेव भौतिक रूप से हमारे बीच में नहीं रहे, किन्तु साधक का महत्त्व तो अभौतिक होता है। वे अपनी समता साधना की ज्योति, सेवा और सद्भावना की सुरभि जो हमारे बीच छोड़ गये हैं, वह अभौतिक है, स्मरणशील है। जब भी हम उनका ध्यान करें उन्हें अपने समीप विद्यमान पाते हैं। बालवय से ही पैतृक संस्कारों की बदौलत आचार्य श्री नानेश के प्रति हमारे दिलों में अटूट श्रद्धा थी। आराध्य के प्रति आस्था गहराती है तो उपलब्धियों के द्वार स्वतः उद्घाटित होते चले जाते हैं और हमारे अनन्त-२ पुण्योदय से साधना सुनिष्ठ आराध्य हमें मिले थे, जिनकी सौम्य छवि देखते हुए नयन तृप्त ही नहीं होते थे। जीवन के क्षणों मे जब कभी भी संकट के बादल घिरते हैं, आस्थाशील मानस सहज ही आराध्य की उपासना में तल्लीन हो जाता है।

मेरी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य विगत कुछ वर्षों से अस्वस्थ चल रहा था। चिकित्सकों से जांच करवाने पर पता चला कि उनके पित्ताशय में पथरी है, जिसका इलाज सिर्फ आपरेशन द्वारा ही संभव है।

भोले के भगवान होते हैं की कहावत के अनुसार इस वर्ष श्री नाना-राम की कृपा से पू. महाश्रमणी रत्ना शा. प्र. श्री इन्दुकंवर जी म.सा. आदि ठाणा १४ का चार्तुमासिक सानिध्य प्राप्त हुआ। म.सा. श्री जी के स्वयं के रग-रग में शासन व शासनेश के प्रति अपूर्व निष्ठा है। जिनके सद्‌संस्कारों व उपकारों से मेरी श्रद्धा का रंग और गहराता गया। एक दिन रात में अचानक मेरी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य गड़बड़ होने लगा। रात में जब चिकित्सक को दिखाया तो उन्होंने कहा कि आपरेशन करवाना ही पड़ेगा अन्यथा मरीज की हालत और बिगड़ सकती है, रातभर में फिर ये प्रोग्राम बना कि सवेरे जोधपुर ले जाकर ऑपरेशन करवा देंगे। जोधपुर जाने से पूर्व मैं सपत्नीक म.सा. की सेवा में उपस्थित हुआ। म.सा. ने अपने वात्सल्य पूर्ण शब्दों से धैर्य बंधाते हुए कहा तीर्थंकर भगवन्तों की स्तुति व गुरु नाम का स्मरण हृदय

में रखना। मांगलिक सुनकर मैं जोधपुर के लिए लिए रवाना हो गया एवं रास्ते भर एवं डॉ. के सलाह अनुसार सोनोग्राफी थियेटर में जाने तक मैं सपत्नीक जय गुरु नाना, जय गुरु नाना के स्मरण में तन्मय था। विस्मय -कारी घटना घटी। चिकित्सकों ने रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा ऑपरेशन की जरूरत नहीं है जिसकी वजह यह थी कि सोनोग्राफी में पथरी आई ही नहीं न जाने कहां चली गई। हृदय अपार खुशियों से भर गया। गुरु के नाम की महिमा ने बिना ऑपरेशन आरोग्य लाभ दे दिया। उस दिन से आज तक कोई भी तकलीफ महसूस नहीं हुई। आचार्य देव के हृदय में सदैव करुणा की धारा बहती थी, यही कारण है श्रद्धा से अवगाहन करने वाला अपूर्व ताजगी से भर जाता था, ऐसे आराध्य का साया हमारे ऊपर से उठ गया। अन्तर वेदना स्मृति के क्षणों में व्यतीत कर देती है। आपका साधनापूत जीवन अंतिम श्वांसों तक स्मृति में उभरता रहेगा।

-सुभाष सेठिया, पाली

तुमको माना था अपना खुदा

तुमको माना था अपना खुदा।
पर गुरुदेव तुम तो हो गए हमसे जुदा॥

भगवान महावीर ने कहा है घोरा मुहुत्ता, अबलं सरीरं। भारंड पक्खीव चरे अपमत्ते। समय बलवान है और शरीर निर्बल है और यही हुआ जन-जन के श्रद्धेय आचार्य भगवन् के साथ। यद्यपि तन में वेदना का महाप्रकोप था पर उस वेदना क्रांत काया-मंदिर में भी संयम, समता समीक्षण की दिव्य ज्योति अखंडरूप से जलती रही। चिकित्सकीय सुविधाएँ, भक्तों की भक्ति, चतुर्विध संघ का अनुपम समर्पण उपस्थित थे परंतु काल के समक्ष सभी असहाय बन देखते ही रह गये और वह समता विभूति जो जिन शासन की महान विभूति थी, पुनीत निधि थी, दिव्यलोक की यात्रा पर चल पड़ी। संपूर्ण मानव समाज के मसीहा रूप इस चिराग के गुल हो जाने से सभी वियोग वेदना से व्यथित हो उठे।

मानवता की सुवास से सुवासित महिमा मंडित आचार्य भगवन् का जीवन करुणा की सरिता प्रवाहित करता हुआ निरंतर भारंड पक्षी की तरह अप्रमत्त रहा।

अपने आदर्श चिह्न अंकित कर
प्रयाण कर गये उज्ज्वल दिशा में
श्रद्धा समर्पणा के दीप जलाकर
आंखों से ओझल हो गये
न जाने किस दिव्य दिशा में॥

आप जहां भी पधारे हो हमें वहां से दिव्य शक्ति प्रदान करते रहे, शासन की फुलवारी खिलाते रहें।

-सुन्दरलाल सिंघवी, गंगापुर

आस्था के अमर देवता

आचार्य नानेश हुक्म संघ के अष्टम पट्टधर रूप में जिन शासन प्रख्यात अनुशास्ता थे। संयम साधना के अनूठे संगम व श्रुत चारित्र रूप आराधना के मंगलमय सेतु थे। नानेश बनाम समता और समता बनाम नानेश के श्रुति पक्ष को उन्होंने सम्यक् चरितार्थ किया था। मैं तो यह मानने को कतई तत्पर नहीं कि आचार्य नानेश हमारे बीच नहीं है। उनका सक्षम चयन समता सुविध्य के रूप में नवोदित नवम पट्टधर के समाधिकृत स्वरूप में आचार्य श्री राम है। इस महनीय अवदान पर हमें यथेष्ट एहसास की अनुभूति, गुरुगम्य यथोचित अहोभावों में ही हो सकती है। इसे अपेक्षाकृत महत्वाकांक्षाओं के अन्तरंग पक्षों में समाहृत या शब्दांकित नहीं किया जा सकता। संयम और साधना की तुला पर ही इसे सम्यक् संतुलित किया जा सकता है। श्रुति रूप श्रुत व चारित्र का यह एक समूहार्द है।

समता के अमर देवता ने हमें समता के चतुर्मंत्र दिए- समता सिद्धांत, समता जीवन, समता आत्म दर्शन व समता परमात्म दर्शन। उनके पट्टधर आचार्य श्री राम ने समता समाज रचना में व्यसनमुक्ति, जीवन संस्कार हेतु पंच सूत्रों का आह्वान किया है :-

विनय, अनुशासन, शुद्ध जिज्ञासापूर्ति, सम्यक् समीक्षण एवं आत्म अन्वेषण। उपरोक्त नव सूत्रों की

हृदयंगम करते हुए जिन शासन की भव्य प्रभावना में ही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

-सोहनलाल लूणिया, देशनोक

भारत की महान् विभूति

भारत कृषि और ऋषि प्रधान देश है। भारत वर्ष अनादि काल से आध्यात्मिक महापुरुषों को समय-समय पर जन्म देता रहा है, जिन्होंने विश्व मानवता को सन्मार्ग पर चलने का संदेश दिया है। ऐसे महापुरुषों एवं ऋषि मुनियों की परम्परा में आधुनिक काल में जैनाचार्य स्व. नानालालजी म.सा. का महत्वपूर्ण स्थान है।

श्रमण भगवान् महावीर की वाणी को सही रूप से पालन कर आपने आत्म कल्याण पर विशेष जोर दिया। आप सत्य प्रिय थे और सदा सत्य पर हिमालय की तरह अटल रहे। अनेक बाधाएं आईं परंतु आप चट्टान की तरह मार्ग पर डटे रहे। मानव मात्र के लिए आपने जो सेवा की उसे विस्मृत नहीं किया जा सकेगा। वास्तव में आप एक युग पुरुष थे। विनय, विवेक, विनम्रता आप के रग-रग में समाहित थी।

आप जैसे महायोगी को देखकर जन मानस के मन में सुखद आन्तरिक अनुभूति का संचार हो जाता था। आप एक मात्र ऐसे जैनाचार्य थे जिन्होंने संपूर्ण विश्व को समता का संदेश दिया।

किसी भी आचार्य के लिए अपने उत्तराधिकारी का निष्पक्ष चयन करना बहुत बड़े महत्त्व की बात होती है। आपने बहुरत्ना वसुंधरा देशाणे के सच्चे सपूत निर्मल प्रज्ञा निधि, शास्त्रज्ञ वर्तमान आचार्य श्री रामलालजी म.सा. को १७ वर्ष लगातार अपने पास रखकर इस पद के योग्य निर्मित कर अपने उत्तराधिकारी के रूप में चयनित कर चतुर्विध संघ को एक अमूल्य रत्न सौंपा। धन्य है ऐसे महान् आचार्य को जिनकी सूक्ष्म चेतना ने कोहिनूर के समान व्यक्तित्व का सृजन किया। हम देशनोकवासी गौरव का अनुभव करते हैं।

आपने पूर्ण सजगता की स्थिति में संलेखना संथारा कर समाधि पूर्वक उदयपुर मे देहोत्सर्ग किया। ऐसे थे हुकम गच्छ के अष्टम पट्टधर समता संदेश वाहक आचार्य श्री नानेश।

-धूड़चन्द बुच्चा, देशनोक

युग पुरुष आचार्य

मेवाड़ के कण कण में साहस, शौर्य और वीर रस का रक्त बिखरा हुआ है। जहां रानी कर्मवती, जवाहर बाई, मीरा बाई, पन्ना धाय ने अपने प्राणों की परवाह किये बिना सहर्ष हंसते-हंसते बलिदान कर दिया। जहां बप्पा रावल, राणा सांगा, राणा लाखा और महाराणा प्रताप ने देश प्रेम की ज्वाला प्रज्वलित की थी। उसी दांता गांव में जन्म लेने वाली महान आत्मा के पिताश्री मोड़ीलालजी, माता शृंगार बाई को क्या मालूम था कि वह एक दिन मेरा पुत्र लाखों का वंदनीय बन जाएगा व एक दिन राष्ट्र धर्म को दीपाने वाला राष्ट्रीय सन्त बन जाएगा। इतिहास बनाने वाले कीर्ति पुरुष आचार्य श्री नानेश भौतिक शरीर से अवश्य ही चले गये हैं मगर ज्ञान, दर्शन, चारित्र तप त्याग की महक, विराट व्यक्तित्व की अपनी छाया छोड़ गये हैं।

वे हमेशा संकटों में अटल रहे, मुसीबतों में दृढ़ रहे, दृढ़ संकल्पी बने, इसी से इतिहास बनता गया। ऐसे आगमज्ञ तत्वदर्शी आचार्य श्री ने हिम्मत नहीं हारी संकटों से जूझते रहे। निरन्तर प्रगति पथ पर आगे बढ़ते गए। जन मानस को ज्ञान का निर्भीक चिन्तन प्रदान करवाते रहे।

हिम्मत कीमत होय, बिन हिम्मत कीमत नहीं।
करे ना कोई आदर कोय, रद्द कागज ज्यूं राजिया॥

वे युग के महापुरुषों में है जिनके पीछे लाखों व्यक्ति चलते हैं। साधु मर्यादाओं ने अपनी आन बान शान के साथ सात आचार्यों की कीर्ति गाथाओं को और गौरवान्वित किया। वे इतिहास के महान यशस्वी युग पुरुष बन गए जिनके दिल में सदा दया, करुणा का झरना बहता था। अनेकों के झगड़े मिटा दिए। उस महामना ने स्वयं अगरबत्ती की तरह जलकर सुगंध संसार प्रदान की। ऐसे युग पुरुष, महान तपोधनी, विरल विभूति महात्मा को युगों-युगों तक

मानव याद करता रहेगा।

-शान्तिलाल नलवाया, मंत्री
श्री साधुमार्गी जैन संघ, करजू

जैन इतिहास की धरोहर

जैन धर्म के ओजस्वी व्याख्याता परम् पूज्य आचार्य प्रवर का सम्पूर्ण जीवन जैन इतिहास की धरोहर है। आप महान क्रांतिकारी युगदृष्टा महापुरुष थे। आपने अपने विशिष्ट ज्ञान से समता जीवन दर्शन एवं समीक्षण ध्यान की विशिष्ट विवेचना की। आप द्वारा निर्दिष्ट राह ही सदा हमारी चाह रही है। हम उनकी पुण्यात्मा की आध्यात्मिक प्रगति हेतु मंगल कामना करते हैं।

-इन्दरचन्द, जितेन्द्र कुमार, देवेन्द्र कुमार
एवं समस्त सेठिया परिवार विराटनगर (नेपाल)

युवाओं के लिए समता सूरज

युवाओं के लिए आचार्य श्री नानेश समता का सूर्य बनकर आये थे। उन्होंने युवाओं में धर्म के प्रति जो जागृति पैदा की वह एक महानतम् उपलब्धि रही। उन्हीं की प्रेरणा से युवाओं में धर्म के प्रति, जिनवाणी के प्रति विशेष उत्साह सृजित हुआ। आज गांव-गांव, शहर शहर में युवा इस शासन की जाहोजलाली में लगे हुए हैं। विराट व्यक्तित्व के धनी आचार्य भगवन् के बारे में कुछ कहना चाहें तो शायद मेरी यह जिन्दगी ही कम पड़ जाये। वो गुणों के अथाह सागर थे। सौम्यता सदैव उनके चेहरे से झलकती थी।

-मदनलाल बोथरा, बीकानेर

उत्पतम साधना के प्रतीक

गुरुदेव की जीवन साधना बहुत ही कठोर और अद्भुत थी। उसी का प्रमाण है कि उनका भव्य पंडित मरण हुआ। आचार्य श्री जी ने जिस जागरूकता के साथ अपने संयममय जीवन का उत्कर्ष किया वही उनकी उत्पतम साधना का प्रतीक है। ऐसा साहसिक अनुष्ठान उनके लिए महा निर्जरा का हेतु बना। वही हमारे लिए मननीय एवं अनुकरणीय आदर्श है।

जिन्होंने अपने ज्ञान के प्रकाश से लाखों भक्तों का सही मार्ग दर्शन किया ऐसे अलौकिक महा व्यक्तित्व के धनी की स्मृति ही शेष है।

गुरुदेव की दिव्य आत्मा स्थायी एवं अखण्ड पूर्ण शान्ति प्राप्त कर शीघ्रातिशीघ्र मोक्ष में पधारे, इसी शुभ मंगल भावना के साथ अनन्त श्रद्धा सुमन समर्पित।

-उदयचन्द अशोक कुमार डागा, नोखा मण्डी

जिन नहीं पर जिन सरीखे

मेरा महान अहोभाग्य है कि इस पंचम आरे में मुझे मनुष्य जन्म मिला। साथ ही जैन कुल व जैन कुल के साथ जिन नहीं पर जिन सरीखे वर्तमान में भगवान महावीर की तरह हुक्म संघ के इस शासन में आचार्य श्री नानेश का मुझे सत्सानिध्य व सेवा दर्शन-वन्दन करने का सौभाग्य मिला। आचार्य श्री जी का जीवन समता रस से भरा था। आपके चेहरे पर सदा मृदु मुस्कान रहती। आपश्री जी हमेशा बच्चों में बच्चों की तरह, युवाओं में युवा व प्रौढ़ में प्रौढ़ की तरह हो जाते। तरुणाई में आपने संयम लेकर जिन शासन की भव्य प्रभावना की। संयम ग्रहण करके आप प्रायः मौन साधना व शास्त्रवाचन पढ़ने लिखने में लीन रहते। आचार्य पद प्राप्त हो जाने के बाद आपश्री जी को धायमातृ पद अलंकृत कर्मठ सेवाभावी श्री इन्द्रचन्द्रजी म.सा. व दीर्घतपस्वी राज श्री ईश्वरचन्दजी म.सा. का पूरा सहयोग रहा। आचार्यपद प्राप्त करने के बाद प्रथम चातुर्मास रतलाम करने के बाद मालवा क्षेत्र में आपश्री जी का विचरण हुआ जहां बलाई जाति के लोग रहते थे व मद्यपान, मांसाहार करते एवं व्यसन युक्त थे। आपने समतामय उपदेश देकर एक लाख से अधिक लोगों को आपने मद्यपान-मांसाहार का त्याग कराके व्यसनमुक्त बनाया जो आज वर्तमान में 'धर्मपाल' नाम से जाने जाते हैं। रतलाम में एक साथ २५ दीक्षाएं आपके मुखारविन्द से संपन्न हुई जो कि एक विश्व रिकार्ड है। आपने अपने हाथों से ३५० के लगभग मुमुक्षु

आत्माओं को दीक्षा देकर नया कीर्तिमान स्थापित किया। साथ ही जैन संवत्सरी महापर्व एकता में आपश्री प्रथम आचार्य थे जिन्होंने कहा कि यदि पूरा जैन समाज एक होकर जो भी तिथि तय करे वह मुझे सर्वोपरि मंजूर है, मैं उसके लिए हमेशा तैयार हूं।

आपश्री जी की गंगाशहर-भीनासर पर विशेष महत् कृपा दृष्टि रही। सं. २०३४ व २०५३ का चातुर्मास के अतिरिक्त होली चातुर्मास, अक्षयतृतीया, महावीर जयंती व एक साथ सर्वप्रथम २१ दीक्षाएं यहां सम्पन्न हुई जिसे श्रीसंघ युगों-युगों तक भुला नहीं पाएगा। मुझे भी इस संघ में इस शासन में स. २०२८ से २०३४ तक सहमंत्री व २०३५ से आज तक मंत्री पद पर रहकर सेवा करने का अवसर मिला। मेरे द्वारा अनेक बार अनेक त्रुटियां हुई फिर भी आचार्य श्री जी का मुझ पर आशीर्वाद रहा। आपश्री हमेशा हंसकर मुझे समझा देते। मेरी ही भाषा में मुझे संतुष्ट कर देते। आपश्री जी इस युग में अवधिज्ञान के धनी थे। एक बार का प्रसंग है कि संवत् २०५३ के चातुर्मास काल में सायं ४ बजे मुझे कहा कि अध्यक्ष महोदय धुड़मलजी डागा को बुलाना, कार्यालय में है, लेकिन मुझ अज्ञानी को पता नहीं था कि आप कहते वह सत्य हैं। मैंने कहा कि भगवन् वे घर गये हैं मेरे को बोलकर गये हैं, यहां पर नहीं है। पुनः आचार्य श्री जी ने कहा कि जाकर पता करो हैं या नहीं। फिर भी मैंने कहा, अच्छा मैं जाता हूं उनको घर गये १५-२० मिनट हो गये अभी बुलाकर लाता हूं। तो भगवन् ने कहा जाओ। पंडाल से उतरकर जैसे ही उनके घर जाने का मानस बनाया तो देखता हूं कि धुड़मलजी कार्यालय में ही खड़े हैं।

मैं तुरंत उनको गुरुदेव के पास ले गया लेकिन वहां जाने पर मानो मेरे पैरों की जमीन खिसक गयी। मुझे बड़ी शर्म आयी, लेकिन दया के सागर आचार्य भगवन् ने ऐसी बात कहकर मेरा मनोबल बढ़ाया कि मैं जिंदगी में आपश्री का उपकार भूल नहीं पाऊंगा।

-महेन्द्र मिन्नी, मंत्री
श्री साधुमार्गी जैन संघ, गंगाशहर भीनासर

गुरु हृदय में स्थान पाया

अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ का विश्व में अपना विशिष्ट स्थान है। मेरा एवं मेरे परिवार का इस संघ से जुड़ाव प्राकृतिक है तथा इस सम्प्रदाय के संतों एवं सतियों, आचार्यों के साथ जुड़ाव पीढ़ी दर पीढ़ी चला आ रहा है व रहेगा। लेकिन आचार्य श्री १००८ श्री नानालाल जी म.सा. के साथ सम्वत् २०५३ भीनासर चातुर्मास में जो नजदीक से संपर्क हुआ, उसके बाद तो गुरु हृदय में स्थान मिल गया। उस समय गुरुदेव की नेत्र ज्योति काफी कमजोर थी। मन में ख्याल आता था कि गुरु हृदय में स्थान देने के बावजूद गुरुदेव मुझ नाचीज को शायद चेहरे से नहीं जानते हैं, सिर्फ आवाज से ही पहचानते हैं। आवाज के माध्यम से जब भी गुरुदेव का सानिध्य प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, तब वे हमेशा पहले यही फरमाते कि तुम्हारे तो गौत्र भी दो है, सिपानी भी व बोथरा भी। कई बार इस बात का उल्लेख व्याख्यानो में व सन्तों के सामने करते थे। भाग्यशाली समझता हूं मैं अपने आपको कि आखिर वह क्षण भी आ गया जब बीकानेर में गुरुदेव की आंखों का सफल आपरेशन हो गया। तब मन इस बात से अत्यंत हर्षित हुआ कि अब गुरुदेव आवाज के साथ-साथ चेहरे से भी जानने लगे हैं। गुरुदेव का जब बीकानेर से विहार हुआ तो उदयरामसर, मलजी की प्याऊ, देशनोक, नोखा, पारवा, भामटसर, अलाय, गोगोलाव, इंडाना आदि स्थानों पर उनके साथ रहने का अवसर मिला। लेकिन परमानन्द तो तब प्राप्त हुआ, जब हम ११ युवा साथी भाई गोरधन दास सेठिया के साथ साथ मेड़ता, बोकड़िया फार्म, कत्यासनी, धनौरिया आदि स्थानो का विहार करते हुए गुरुदेव की सेवा में ३ दिन तक दिन-रात रहने का सौभाग्य मिला। एकदम देहाती एवं अजैनियों का इलाका था। आवागमन भी बहुत कम था। तब स्थविर प्रमुख श्री ज्ञान मुनि जी म.सा. गुरुदेव के दोनों हाथ पकड़कर, सहारा देकर, कभी डोली में बैठाकर (४ सन्तों के माध्यम से) साथ चलते थे। वह मनोहारी दृश्य आज भी आंखों में रच-बस सा गया है। सब साधियों की

गुरुदेव से प्रतिदिन दो-ढाई घंटे बातें होती थीं। तब गुरुदेव ने स्व-कल्याण तथा सर्वजन हितार्थ कार्य करने के लिए प्रेरित किया और कहा :-

जो बिना कहे करे देवता, कहने पर जो करे वह इंसान, जो कहने पर भी न करे उसे क्या कह सकते हैं। आप जानते ही हैं। इसके बाद तो ऐसा महसूस होता था जैसे गुरुदेव के साथ जन्म जनमांतर का रिश्ता है। संघ कार्य एव अन्य अवसरों पर गुरुदेव का सान्निध्य प्राप्त करने के सैकड़ों बार अवसर प्राप्त हुए। ऐसी सौम्य सूरत, समता का साकार रूप जीवन पर्यन्त हृदय में बसा रहेगा। असीम गुरु कृपा को देखिए जब वैराग्यवती राजमती डागा (विराट श्री जी म.सा.) की दीक्षा प्रसंग से उदयपुर गया। उस वक्त गुरुदेव काफी अस्वस्थ थे। बावजूद इसके इन्होंने मुझसे सहजता एवं सजगता से बातचीत की, गंगाशहर भीनासर संघ के बारे में पूछा, धर्म ध्यान करने के लिए प्रेरणा दी।

-नवरतनमल बोथरा, भीनासर

अद्भुत-व्यक्तित्व

महापुरुषों का व्यक्तित्व बहुत ही अद्भुत और निराला होता है। समाज की सीमाओं में आबद्ध होकर भी वे अपना सर्वतोमुखी विकास कर जन-जन के मन में अनंत श्रद्धा समुत्पन्न करते हैं। उनकी दिव्यता, भव्यता और महानता को निहार कर जन-जन के अन्तर्मानस में अभिनव आलोक जगमगाने लगता है। वे समाज की विकृति को नष्ट कर संस्कृति की ओर बढ़ने के लिए आगाह करते हैं। वे आचार और विचार में अभिनव क्रांति का शंखनाद करते हैं। वे अध्यवसाय के धनी होते हैं, जिससे कंटकाकीर्ण दुर्गम पथ भी सुमन की तरह सहज सुगम हो जाता है। पथ के शूल भी फूल बन जाते हैं। विपत्ति भी संपत्ति बन जाती है। उन्हीं महापुरुषों की पावन पंक्ति मे आते थे मेरे परमश्रद्धेय सद्गुरुवर्य, अध्यात्मयोगी समता सरोवर के राज हंस आचार्य श्री नानेश।

-मुकेशकुमार श्रीश्रीमाल, पाली मारवाड़

इस शताब्दी के युग-पुरुष

आचार्य श्री नानेश स्थानकवासी ही नहीं समस्त जैन समाज के अति विशिष्ट आचार्य थे। [illegible] तो प्रतिमूर्ति थे। उनका जीवन ही उनका संदेश था।

आचार्य श्री नानेश के पावन दर्शन का [illegible] मुझे वर्तमान आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. ([illegible] पक्षीय मामाजी) के वैराग्य काल से प्राप्त हुआ। [illegible] बराबर मैं संपर्क में रहा।

अहमदाबाद चातुर्मास में लगातार [illegible] पत्राचार के माध्यम से सेवा का अवसर प्राप्त हुआ [illegible] तब से मेरा हर क्षण, हर लम्हा उनके आशीर्वाद की [illegible] ज्योत्स्ना से रोशन रहता है।

उनके आशीर्वाद का ही साया था कि आज [illegible] मेरी जिन्दगी में जब कभी भी मुसीबत बांहें फैलाती [illegible] स्मरण मात्र से वह खुद ब खुद काफूर हो जाती [illegible] श्रद्धा और आभार का ही सैलाब है जो शब्द [illegible] आज मेरी कलम से फूट पड़ा है।

-कमलकिशोर बोथरा, पहाड़ी धीरज, दिल्ली-[illegible]

अमृतमयी गंगा सी पावनता रत्नाकर सम गांभीर्य

आचार्य श्री नानेश इस शताब्दी के महान [illegible] पुरुष, आध्यात्मिक योगी, महामनीषी, [illegible] दिव्यमशाल, शीतल सुधाकर, संयम सुमेरु, [illegible] मृदुता, क्षमा-सिन्धु, ज्ञान-सागर के पर्याय [illegible] प्रतिपल वंदनीय एवं अभिनंदनीय है। [illegible] आप श्री जी के सरल सरस सद्गुणों को मुखरित [illegible] थकते नहीं है। आप श्री जी का अमिट प्रभाव [illegible] ही सीमित नहीं था अपितु आपने मालवा की [illegible] पर ग्रामीण अंचलों मे हजारों दलितों को व्यसनों [illegible] कर उनका जीवन रूपान्तरित किया। [illegible] पूर्ण आधिपत्य रहा। समग्र जैन समाज में एक [illegible] रिकार्ड है कि एक ही दिन एक ही स्थान [illegible] दीक्षाएं और बीकानेर में २१ दीक्षाएं [illegible]

पावन सानिध्य में संपन्न हुई।

आचार्य श्री नानेश सच्चे अर्थों मे साधुता के प्रतीक रहे। प्रवचनों के साथ संपूर्ण विश्व कल्याण हेतु तथा आंतरिक मन की शांति हेतु अनेक सफल प्रयोग किए। अंतिम समय तक रोम-रोम से समता का झरना प्रवाहित हो रहा था जो इस शताब्दी में पूरे विश्व का सर्वश्रेष्ठ दृष्टांत है।

-राजेन्द्र बराला, रतलाम

अप्रमत्त महासाधक

परमपूज्य आचार्य देव का व्यक्तित्व व कृतित्व जैन समाज के लिए ही नहीं अपितु समग्र समाज व मानव के लिए दीप्तिमन्त प्रेरणा दीप था। आपने समाज को नई दिशा प्रदान की। मर्यादा के भीतर रहते हुए समाज में व्याप्त कुरीतियों, रिवाजों पर अपनी शाब्दिक छैनी से प्रहार कर नया स्वरूप प्रस्तुत किया।

परम आराध्य देव अप्रमत्त महासाधक अपने लक्ष्य को लक्ष्यीभूत हो, इन्हीं श्रद्धा सुमनों के साथ।

-नथमल तातेड़, बीकानेर

ऐसे थे हमारे आचार्य

आचार्य श्री नानेश के व्यक्तित्व में सरस और सहज स्फूर्त वात्सल्यमय कोमल सुस्पष्ट वाणी की अभिव्यंजना सहित छोटे बड़े सभी के प्रति नवनीत सी मृदुता एवं कुसमु सी कोमलता झलकती थी। आधुनिक संदर्भ विज्ञान की चकाचौंध से पराभूत जन चेतना में विज्ञान, दर्शन एवं संस्कृति के समन्वय सूत्र प्रस्तुत कर जनजागृति करने में आचार्य श्री नानेश अनुपम अग्रगामी, सर्वाधिक सजग, सर्वतोभावेन लोकप्रिय थे। आचार्यदेव का आचार सदैव सौहार्द्र, स्नेह, सद्भाव, समत्वयोग वाला था। उनका विराट व्यक्तित्व उस इन्द्र धनुष की तरह सुनहला और मोहक है जिसे अनेकानेक बार देखने पर भी नेत्र तृप्ति का अनुभव नहीं कर पाते हैं। साधुत्व की दृष्टि से वे साधना के उच्चशिखर को छूते थे तथा उनका आचरण वैचारिक एवं व्यावहारिक मेरूवत् अचल, निष्कंप एवं अडोल था। स्वयं के जीवन को सफल बनाना और दूसरो का जीवन निर्माण करना इन दोनों में काफी अन्तर है। जगत में आत्मसाधना और आत्मध्यान करने वाले और उसी में तल्लीन रहने वाले निवर्तक साधु पुरुष कम नहीं है लेकिन आचार नियमों का यथाविधि पालन करने के साथ-साथ जन समाज का जीवन निर्माण करना जन-जन को ज्ञान और चरित्र का/ शक्ति का दान देकर जैन बनाना और मानव समाज को सद्धर्म का मर्म शास्त्र रीति तथा विज्ञान नीति द्वारा युक्ति-प्रयुक्ति पूर्वक समझाकर धर्मनिष्ठ बनाना आदि धर्ममूलक सत्प्रवृतियां करने वाले साधु पुरुष विरले ही होते हैं। ऐसे विरले महापुरुषों में आचार्य श्री नानेश थे। आचार्य श्री की व्याख्यान शैली अत्यन्त मधुर, अनुभूति पूर्ण, सरल, मार्मिक और आडम्बरों से रहित थी। वह हृदय तक पहुंच करने वाली होती थी। उनका जीवन समग्रत: समताभिमुख था। उनके योग और प्रयोग और ध्यान साधना तथा वैराग्यवाणी और कर्म आचार व्यवहार सबका आधार समत्व था। उनका साहित्य समताभिमुख था। त्यागमय श्रद्धा शब्द-शब्द में टपकती थी। उनकी वाणी में समत्वघोष था। ध्यान समत्वग्रही था जीवन के अतल से वे समत्व रस ग्रहण करते थे। वे समग्रत. समत्व एवं चेतनानुवर्ती न्याय के मूर्त स्वरूप थे। ऐसी महान विभूति का वर्णन जितना करें, उतना ही कम है। वह समतामय आत्मा, वह गौरवशाली प्रतिभा, वह त्याग-तपस्या व तेज, वह सत्यप्रियता और वह मधुर वाणी अब कहां।

-कंवरीलाल कोठारी, पद्मा देवी कोठारी, नागौर

कालजयी व्यक्तित्व के धनी

आचार्य नानेश जैसे महापुरुष तो शताब्दियों में एकाध ही पैदा होते हैं। इस महात्मा का शरीर राख में मिल कर भले नामोनिशां मिटा गया है परन्तु सद्भावना की सुवास दिग्दिगंत में व्याप्त हो चुकी है। वह संत तो

कालजयी व्यक्तित्व का धनी बन चुका है। आचार्य नानेश की संघ विस्तार की प्रवृत्ति महावीर के शासन में सदैव स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगी। इनकी सादगी-साधना-चारित्र और मधुरवाणी की खुशबू शताब्दियों तक उनके सुशिष्यों-अनुयायियों के जीवन को महकाती रहेगी। इनकी राख के कण जिस स्थान को स्पर्श करेंगे वह सीमा भी कुंदन बन जाएगी। गुरुदेव का नाम इतिहास में अमर हो गया है। उनकी कीर्ति पताका, काल की सीमाएं लांघकर कालातीत बनेगी। वे कंधे धन्य हैं जिन पर सवार होकर गुरुदेव मरुधरा से विहार कर मेवाड़ अंचल में गुरु गणेश की समाधि के समीप आकर अपनी समाधि में समा गये।

प्रत्येक दृष्टि से उनका व्यक्तित्व आदर्श एवं मानवीय संवेदनाओं से ओतप्रोत रहा है। उनकी साधना का पारदर्शी आभामंडल अनेक के मांगलिक जीवन का दस्तावेज बन गया। जिस प्रकार एक दीपक की लौ हजारों दीपक को प्रकाशित कर सकती है वैसे ही नाना जैसे महापुरुष ज्ञान-दर्शन-चरित्र के गुणों से अपने हजारों अनुयायियों को दिशा निर्देश दे सकते हैं। उनके उपदेशों पर चल कर अनुपालना करते हुए अपना इह लोक एवं परलोक सुधार सकते हैं तथा समाज के पिछड़े वर्ग के बेरोजगार नवयुवकों को प्रशिक्षण, रोजगार में मदद करके, असहाय विधवा बहनों के लिए सहायता, भूखे को भोजन, रोगी को दवा, निर्वस्त्र को वस्त्र, देकर हम सब अपनी सक्षमता का सही उपयोग करें, यही आचार्य नानेश को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

आपका जाज्वल्यमान व्यक्तित्व संत विनोबा को भी प्रभावित किए बिना नहीं रहा। मानवीय संवेदनाओं के परिप्रेक्ष्य में हरिजन, गिरिजन, बलाई जाति के व्यक्तियों के जन कल्याण संस्कार, व्यसन मुक्ति, शाकाहार आदि पर आपने मौलिक चिंतन कर मार्ग प्रशस्त किया।

भूले-भटके नवयुवकों को महावीर का अमर संदेश देकर सदा सदा के लिये अपनत्व प्रदान किया। काम-क्रोध, मद, लोभ को सदा ना.....ना करते अपने नाना शब्द को सार्थक किया। अहम् को त्यागने [illegible] और अर्हम को जपने वाले आचार्य नानालालजी म.सा. सदैव अमर रहेंगे। उनका कृतित्व एवं व्यक्तित्व हजारों सालों तक समता के धरातल पर अपनी सदैव [illegible] बनाए रखेगा। आपश्री के वचनों में अमृत और [illegible] में फूल खिले होते थे।

समता विभूति स्व. आचार्य नानेश जीवन [illegible] व्यर्थता एवं सार्थकता दोनों को देख चुके थे। [illegible] अन्तर मन के नयनों से अपने जीवन को पढ़ा है [illegible] अनुभव किया है स्वयं की आत्मा की आवाज से बढ़ [illegible] कोई प्रेरणा नहीं है। यदि हम उनके जीवन को [illegible] से पढ़े तो नित नये ज्ञानवर्द्धक अध्याय पढ़ने को मिलेंगे। जब भी उनके भीतर के गांभीर्य में गोता लगा कर अनुभव करेंगे तो एक पंक्ति में अन्तर मौन एक सूत्र [illegible] आयेगा। वह संदेश उतना ही पवित्र होगा जितना [illegible] वेद का प्रवचन होता है।

आचार्य नानेश चिंतनशील, जीवनद्रष्टा, [illegible] मनीषी थे। उनका दृष्टिकोण सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् और विचार सार्वभौम थे। गंभीर विषयों को भी व्यावहारिक और मधुर बना देते थे। मेवाड़ के दांता ग्राम में जन्म लेने वाले जैनाचार्य नानालाल जी महाराज [illegible] एवं चारित्रिक उज्ज्वलता के पर्याय थे।

आपने समीक्षण ध्यान के प्रणेता एवं लेखक होने के नाते अनेक ग्रंथों की रचना की जिससे उनका [illegible] साहित्य युगों-युगों तक स्मरण किया जाता रहेगा।

-विजयसिंह लोढ़ा 'विजय'

रिक्तता की अनुभूति

ये आसमां, चांद, सितारे, पवन, [illegible], महकती प्रफुल्लित धरती, पक्षियों की चहचहाहट, [illegible] की खनखनाहट, भंवरों का गुंजन, सब अपनी जगह [illegible] विद्यमान है, लेकिन फिर भी लगता है कि कुछ खाली [illegible] है, कहीं रिक्तता है।

न जाने ऐसा क्यों है कि इनकी हंसी की [illegible], इनका इठलाना, इनका बसना समुद्र की लहरों [illegible]

पहाड़ों की कंदराओं में कहीं गुम हो गया है, पत्थर की दीवारों में कहीं कैद हो गया है, जिनकी कमी से ये खामोश, वीरान, निःशब्द हैं ? वे है......पूज्य गुरुदेव नाना।

जिनकी स्नेह की अमृतमय छांव में मैंने अपना अब तक का सफर तय किया, जिनसे श्रद्धा की अनुपम भेंट मिली है मुझे। श्रद्धा के उस दीपक को, भक्ति की उस ज्योति को, स्नेह की उस निशानी को भूल पाना मुमकिन तो नहीं होगा, मेरी भावमय श्रद्धा सुमन।

-डॉ. सुनील बोथरा, नोखा (बीकानेर)

आत्मबल व सेवा के आदर्श

आचार्य श्री की स्मरण शक्ति कुशाग्र थी व आत्म-बल बहुत तेज था। आपके आत्म-बल को देखकर डॉक्टर हैरान होते थे कि इतनी अस्वस्थता के बाद भी आपका आत्मबल अनुपम था।

आपने फरमाया था कि संघ के लिए यदि उनका शरीर भी चला जाये तो कोई परवाह नहीं। आप श्री संतों की सेवा का पूरा ध्यान रखते थे। जब आपश्री बीकानेर हॉस्पिटल में विराज रहे थे। श्रद्धेय श्री ज्ञान मुनि जी म.सा. को तीव्र बुखार आ गया था। डॉक्टर सा. ने कहा दूध लेना है। आप श्री किसी को न कहकर दूध लेने खुद पधार गये। जब वापस पधारे तब पता चला आप श्री में सेवा भावना कितनी थी। आपश्री का गुणगान जितना करें, कम है।

-सुन्दरलाल नाहर, कलईन (आसाम)

संपूर्ण भूमि के वजन से वजनी था वह दिन

प्रातः स्मरणीय भारत माँ की गोद में अनेक महापुरुष पैदा होते आये हैं। ऐसी वीर प्रसूता, ऋषि मुनियों का तपवन, राम, गौतम एवं महावीर की इस पवित्र भूमि भारत में जो सच्चे सुपुत्र पैदा हुए हैं उनमें से परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानालाल जी महाराज साहब एक थे। आज से ८० वर्ष पूर्व शृंगार माता की कोख से जन्म लेने वाले एक नन्हे बालक की जो कि नाना के नाम से जाना गया, आज पूरे भारत में ही नहीं वरन् विश्व में आध्यात्मिक ज्योति चमक रही है।

२७ अक्टूबर ९९ का दिन आचार्य भगवन् श्री नानेश के महाप्रयाण का दिन था। वह दिन कैसा था ? उस दिन पत्थर हृदय व्यक्ति भी रो पड़ा तो जन साधारण की बात कुछ और ही थी। आचार्य श्री नानेश ने एक ऐसी ज्योति जलाई थी जो कभी विलीन नहीं हुई और उसका प्रकाश भी कभी कम नहीं हुआ। कभी अस्त न होने वाले सूर्य के समान आचार्य श्री जी की आध्यात्मिक ज्योति आज भी पूरे संसार में चमक रही है। इस ज्योति का नाम है समता। समता सिद्धांत उनके शब्दों में ही नहीं वरन् उनके व्यवहार में भी दृष्टिगोचर होता था। उनकी कथनी और करनी में कोई अन्तर नहीं रहता था जो वह कहते थे वही वह करते थे। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण मुझे देखने को मिला। आचार्य भगवन् जब रतलाम में दूसरी बार चातुर्मास करने हेतु पधार रहे थे। उस वक्त मुझे उनके साथ विहार में पैदल चलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। आचार्य गोधरा से विहार कर रहे थे। उस वक्त विहार करके अगले गाँव चंचेलाव रेल्वे स्टेशन पर ठहर गए थे। उस स्टेशन पर आहार के लिये गोचरी का अवसर आया चूंकि गोधरा से रतलाम तक समता युवा संघ रतलाम ने आचार्य श्री के साथ विहार करने का निर्णय लिया था मैं भी उसी विहार चर्या में साथ में था। चंचेलाव रेल्वे स्टेशन पर मात्र तीन घर में थे। तीनों घर ही जैन साधुओं को आहार बहराने के नियम से परिचित नहीं थे। मुनिराज का एक घर में प्रवेश हुआ, उसी समय गृहस्थ ने बिजली का बटन दबाकर बत्ती चालू कर दी। दूसरे घर मे गए, वहाँ गोचरी लेने का कारण बताते हुए बाहर चले आए। दूसरे घर में गए, वहाँ गोचरी लेने योग्य था परन्तु खाना नहीं बना था तीसरे और अंतिम घर की जब बारी आई तो वहाँ से थोड़ी सी उड़द की दाल एवं मक्का की रोटी उस गृहस्थ ने मुनिराज को दे दी। गोचरी लेकर संत मुनिराज अपने ठहरने के स्थान पर आ गए, जरा सोचिए पत्थर किलोमीटर चल कर आना

एवं जोरों से भूख लग रही हो और उस वक्त अगर खाना नहीं मिलता है ऐसी स्थिति में हम कैसे सब्र करेंगे। मक्की की मात्र तीन रोटी एवं खाने वाले सात संत मुनिराज, आधी- आधी रोटी सभी संतों ने बाँटकर खाने की इच्छा प्रकट की। उस वक्त आचार्य श्री ने कहा आप छ संत मुनिराज आधी-आधी रोटी खा लो। आज मुझे भूख नहीं है। संत मुनिराज अंदर बैठकर आहार कर रहे थे और मैं बाहर बैठा था। आचार्य श्री छोटे संतों का कितना ध्यान रखते हैं ? उनके प्रति वात्सल्य भाव देखते ही बनता था। वास्तव में ऐसी स्थिति में या विषम परिस्थिति में धैर्य रखना समता सिद्धांत का मूल स्वरूप है। ऐसी स्थिति में जो मैंने देखा और सुना वह आज भी स्मरण आता है तो आँखों से अश्रुधारा बह निकलती है।

यही बात हमारे आचार्य श्री जी के व्यवहार में देखने को मिली है। यही कारण है कि आज हम उन्हें समता विभूति कहते हैं। रतलाम चातुर्मास के दौरान हम सब बैठे हुए थे आचार्य श्री अपने नाम को कभी भी प्रचारित नहीं करवाते थे। उनकी अंतर आत्मा से यह बात निकलती थी कि नाना बालक मंडली नाम से कोई भी संस्था अथवा संघ नहीं हो। नाम को नहीं वरन् सिद्धांत को प्रचारित करें। नाम तो आज है और कल नहीं परन्तु जैन सिद्धांत का मूल स्वरूप समता है। हर क्षेत्र में समता का ही आधार होना चाहिए। आचार्य श्री ने मात्र साधु भाषा में संकेत दिया और नाना बालक मंडली ने अपना नाम बदल कर समता बालक मंडली कर लिया। ऐसे संत मुनिराज को भारत में ही नहीं वरन् पूरे विश्व में वंदन करने की आवश्यकता है। वर्तमान आचार्य भगवन् श्री १००८ श्री रामलालजी महाराज साहब उनके बताये गये मार्ग पर चलाकर इस शासन को बहुत दीपायेंगे एवं संघ की पूर्व शान बढ़ायेंगे। वर्तमान आचार्य के प्रति मेरी हार्दिक शुभकामना है कि आप यशस्वी हों, आप दीर्घायु हों, युगों-युगों तक महावीर के बताये गये मार्ग पर चलाकर हम सभी संघ निष्ठों को आशीर्वाद प्रदान करेंगे।

-धीरजलाल मूणत, राष्ट्रीय संयोजक
श्री धर्मपाल प्रचार-प्रसार समिति

महामानव का महाप्रयाण

अब तो केवल स्मृतियों का कोष ही रह गया और रह गया स्मृति पटल पर उनके पावन सान्निध्य में बिताई घड़ियों, घटनाओं का सजीव चित्रण। मनुष्य की चेतना का विराट रूप जब समग्र लोक में फैलता है तो मानवीय गुणों का आभा मंडल अपने दिव्य आलोक से पूजनीय, वंदनीय अभिनंदनीय बन जाता है, देह मंदिर बन जाती है एवं आत्मा परमात्मा का स्मरण कराने लगती है।

आचार्य भगवन् श्री नानेश का भव्य व्यक्तित्व अपने उस अलौकिक आभामंडल में आज तक दैदीप्यमान होता रहा है। समता सिद्धांत को केवल कहते नहीं वरन् उस सिद्धांत को आत्म-तत्व बनाकर पूरे जीवन में उतार कर पल-पल सजगता पूर्वक उसका पालन करते थे। यह केवल आचार्य नानेश जैसा व्यक्तित्व ही कर सकता था।

आपकी व्याख्यान की शैली में मानों ज्ञान के सागर समाया रहता था। लड्डू की भांति आपके जीवन के किसी भी कोने को देखो, ऐसा लगता था कि मिठास से आत्मा भर गई, तृप्त हो गई। मैं तो अपने जीवन की उन्हीं घड़ियों को सार्थक एवं श्रेष्ठ मानता हूँ जो उनके पास रहकर उनके सानिध्य में गुजरी बाकी का जीवन तो व्यर्थ जा रहा है।

आप प्रकाश स्तंभ हैं, जहाँ से आपके गुणों का प्रकाश निरंतर प्रकाशित होता रहेगा, उसी प्रकाश में हम अज्ञानी मानव शायद अपनी राह पाकर लक्ष्य को प्राप्त कर लें और जीवन को सफल बना लें। हे समता मूर्ति! आप प्रेम, करुणा, दया के भंडार थे, हमें अपनी करुणा से वंचित मत रखना हम बार-बार क्षमा प्रार्थी हैं। आप क्षमा करें।

-सुरेन्द्रकुमार धारीवाल, [illegible]

THE GREAT SAINT ACHARYA NANESH

An Incomparable sight of similarity Acharya shree Nanesh was not only a [illegible]

t also a national saint. Actually saint is at who does not belong to any special oup but truth.

Acharya shree uplifted not only his vn soul but he uplifted the whole world. charya shree's life was very great. He was noble saint of the current age.

He was adorable every moment for . He was a radiant star of shramanakash.

His life was a ornament with similar-y and sobrienty which is an illuminator day also to his reverents.

He was the ocean of knowlege, God Philosophy reflected on his forehead. The ixture of his endless knowledge and char-ter gave him a wonderful appearance.

Actually he was trinity of GYAN, ARSHAN and CHARITRA. He was no-le spirited and glorious YUGDRASHTA of is age. He was glittering both inside and utside. He was the accumulation of power Pity. His every moment was aware of oderation .

His life was an endless spring of enevalent blessing which is still flowing in ll the followers with its inspiring fragrance.

-V.Guddu Dhariwal

इस शताब्दी के महानायक

आचार्य गुरु भगवन् को चिर निद्रा में सुला दिया। अपने समाज के लिए ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारतवर्ष लिए अपूरणीय क्षति है।

शांत, सौम्य, ममता व समता के नायक आचार्य ना गुरुदेव आज हमारे मध्य नहीं है पर उनकी अमृत णी, उनके द्वारा सुझाये गये व बतलाये गये रास्ते वश्य विद्यमान है। यदि हम गुरुदेव के सुझावों पर सिर्फ मल ही करें तो हमारे भव -भव का बेड़ा पार है।

मेरी जिनशासन देव से प्रार्थना है कि गुरुदेव की आत्मा जहाँ कहीं भी हो अपने लक्ष्य को प्राप्त करके सब त्मक सुखों को प्राप्त करें। -गणपत बुरड़, मद्रास

युग पुरुष

आचार्य श्री नानेश एक विशिष्ट आध्यात्मिक योगी थे, जिनका तप और त्याग देश-विदेश के जन-जन को आकर्षित किये बिना नहीं रहा। उनका व्यक्तित्व अत्यन्त आकर्षक एवं चमत्कारी था। संयम साधना, संघ उन्नयन, तपाराधना, योगध्यान आदि क्षेत्रों में अभूतपूर्व अवदान से आपने अपनी पृथक पहचान बनाई और विषमता पूर्ण विश्व को शांति हेतु समता दर्शन का अमोघ साधन दिया।

परम पूज्य आचार्य श्री जी की महिमा का वर्णन करना सूर्य को दीपक दिखाना है। गुरुदेव की वाणी से कितने ही लोगों को मार्गदर्शन मिला है, कितने ही भाई-बहनों (३५०) ने संसार का त्याग किया है और आत्म-कल्याण की ओर अग्रसर हुए हैं। अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने अपने जीवन को संस्कारित किया है। उनकी महिमा असीमित है और हमारी दृष्टि सीमित है। आप जैसे महापुरुष के चमत्कार पूर्ण व्यक्तित्व को शत्-शत् वंदन।

-गौतमचंद श्रीश्रीमाल, ब्यावर

समता के सागर-वाणी के जादूगर

पूज्य श्री का जीवन अत्यन्त सरल था- आपश्री के विचार, उच्चार, आचार की एकरूपता अनुकरणीय थी। आप की वाणी मे माधुर्य की सरिता विद्यमान थी। आप श्री हर समय प्रसन्न मुद्रा में रहते थे एवं आपश्री का जीवन संसारी प्रपंचों से बिल्कुल दूर था। आपके जीवन में क्षमा-शांति, सरलता हरसमय झलकती रहती थी।

आपने जिन शासन के सजग प्रहरी रहकर जिनवाणी का डंका बजाया।

ऐसे समता के सागर, वाणी के जादूगर, जिन शासन सिरताज, धर्म दिवाकर को हमारा कोटिश वंदन। रतलाम कोट श्री संघ की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

-पेमचंद तातेड़, मंत्री

लब्धि पुरुष : अमर संत

संत हृदय नवनीत समाना की जगत प्रसिद्ध उक्ति को चरितार्थ करने वाले, हमारी अनन्य आस्था के श्रद्धा केन्द्र, परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर श्री नानेश को कहां खोजूं..? कहां ढूंढूं..? गुरुदेव श्री श्री का जीवन सचमुच में सद्गुणों का संग्रहालय रहा था। आप सच्चे महामनीषी थे।

गुरुदेव श्री जी की महान आत्मा को चिर-शांति मिले, इसी मंगल भावना से उनके पावन श्री चरणों में भाव-वन्दन के साथ कोटि-कोटि वंदन।

-आनंदमल सांड, मनोहरी देवी सांड, देशनोक

व्यसनमुक्त जीवन के उद्घोषक

अहिंसा, अपरिग्रह, एवं अनेकान्त के साथ ही आचार्य नानेश ने जन-जन के मन में समता संदेश की सुरसरित प्रवाहित की। विषमता से समता की ओर लाने में प्रयत्न पुरुषार्थ किया। आचार्य नानेश का संपूर्ण जीवन ही समतामय था। उन्होंने व्यसन-मुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी। आज के जन जीवन में व्यसनों की बाढ़ आई हुई है। आज का मानव तनाव से मुक्त होने के लिए पान पराग, गुटखा, सिगरेट, शराब का सहारा ले रहा है। उससे अधिक तनाव पैदा हो रहा है। हम स्वर्गस्थ आत्मा की याद में यह प्रतिज्ञा करें कि हम सब व्यसन मुक्त जीवन जीयेंगे।

-पी. शांतिलाल रवींवसरा, कोषाध्यक्ष
श्री साधुमार्गी जैन संघ, बैंगलोर

सूर्यास्त और चन्द्रोदय

आंतरिक पीड़ा है कि जैन समाज के महान् आचार्य श्री नानेश जो सूर्य की तरह तेजस्वी रहते हुए अपनी दिव्य आभा से समाज को आलोकित कर रहे थे, वह पिछले कुछ दिनों से अस्ताचल की ओर अग्रसर होते हुए दि. २७ अक्टूबर ९९ को पूर्ण विलीन हो गये। स्थानकवासी जैन समाज में एक गहन अंधकार व्याप्त हो गया है।

हमारी मान्यता के अनुसार केवल शरीर का नाश होता है, आत्मा तो अजर अमर है। इसलिए पार्थिव देह से भले ही वे हमारे बीच न रहे हों, लेकिन उनके [illegible] और उज्ज्वल चरित्र की आभा आज भी इस लोक को प्रकाशित कर रही है। निश्चय ही यह सूर्य [illegible] दिव्य लोक में उदित होकर अपनी आभा से उसे प्रका[illegible] कर रहा होगा।

यह भी सत्य है कि सूर्य के अस्त होते ही चन्द्र का प्रकाश उदीयमान होता है। चन्द्रमा भी सूर्य से ही प्र[illegible] प्राप्त करता है। उसी तरह आचार्य श्री नानेश के [illegible] से आलोकित वर्तमान आचार्य श्री रामेश चन्द्रमा की [illegible] उदीयमान हुए हैं। शीतल चांदनी की तरह शांत, मधुर [illegible] गांभीर्य इनका स्वभाव रहा है, जो प्रत्येक व्यक्ति [illegible] आत्मीयता का संचार करता है।

आचार्य श्री नानेश ने श्रमण परम्परा के उच्च [illegible] का जीवन पर्यन्त पालन किया है और यही अपेक्षा [illegible] शिष्यों से रखी है। भौतिक सुख सुविधाओं की [illegible] दौड़ से दूर रहकर संत समुदाय के लिए यह उच्च [illegible] आदर्श उन्होंने उपस्थित किया है। श्रावक समाज के लि[illegible] समता दर्शन का वास्तविक स्वरूप उपस्थित करते हुए [illegible] आत्मसात् करने के लिए समीक्षण ध्यान का अनूठा [illegible] प्रदर्शित किया है। आज के इस तनाव पूर्ण वातावरण में सच्चा सुख और आत्मिक शांति प्राप्त करने का यह अनूठा साधन है।

हमें विश्वास है कि वर्तमान आचार्य श्री [illegible] पूर्वाचार्यों की श्रमण परम्पराओं का अबाध गति से [illegible] करते हुए उच्च चारित्र का आदर्श समाज के सामने [illegible] विद्यमान रखेंगे। इसी के साथ अपने ज्ञान के [illegible] जन-जन का उत्साहवर्धन एवं मार्ग दर्शन करते रहेंगे। उनकी आभा विकसित होते हुए चन्द्र की तरह प्रतिदिन [illegible] प्रकाश पुंज की ओर अग्रसर हो इन्हीं शुभकामनाओं के साथ कोटी नमन।

-मगनलाल मेहता, [illegible]

नाना से नानेश की यात्रा

हुक्मसंघ के अष्टम पट्टधर आचार्य श्री नानेश [illegible]

जीवन अनेकानेक गुणों की सौरभ से आप्लावित था। उन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन में जन कल्याण का स्तुत्य प्रयास किया। आचार्य श्री बचपन से ही विराट व्यक्तित्व के धारक थे, उन्होंने एक बार जब चलती रेल को देखा और चिंतन किया कि एक इंजन गाड़ी के समस्त डिब्बों को खींच रहा है तो मैं भी इंजन के समान बनकर लोगों की जीवन की गाड़ी को संसार सागर में भटकने के बजाय मोक्ष तक पहुंचाने का प्रयास करूं, अपनी स्वयं की आत्मा को भी मोक्ष की मंजिल तक पहुंचाने का प्रयास करूं।

उसी बचपन की उम्र में नेतृत्व करने की भावना जाग गई। स्कूली जीवन में भी नेतृत्व की सहज प्रतिभा उभर कर आई। स्कूल में जो भी दूसरे बच्चे पढ़ने आते उन बच्चों को सिखाने का प्रयास करते और कई बालक बिना पैसे और बहुत प्रेम से दी गई उस शिक्षा को बालक नानालाल से ग्रहण करते।

लेकिन जिन्हें संयम का व्यापार करना था तो उसे संसार के व्यापार से क्या लेना देना। मेवाड़ी मुनि श्री चौथमलजी म.सा. का प्रवचन सुना और विरक्ति आ गई और गुरु की खोज में चल पड़े। शान्त क्रान्ति के अग्रदूत श्री गणेशाचार्य को गुरु बनाकर संयम अंगीकार कर लिया। अपनी विनय सेवा और पैनी प्रज्ञा से गुरु के मन को जीत लिया। गुरु की दिन रात सेवा कर महान कर्म निर्जरा का प्रसंग उपस्थित किया। गुरु आज्ञा की आराधना कर गुरु आज्ञा का हृदय से पालन कर गुरु के हृदय को जीतकर गुरु के हृदय में बस गये। जिसके फलस्वरूप शान्त क्रान्ति के अग्रदूत श्री गणेशाचार्य ने उन्हें अपनी चादर देकर श्री साधुमार्गी जैन संघ के सत्ता संपन्न युवाचार्य का पद दे दिया फिर वे आचार्य बने।

आचार्य बनने के बाद आचार्य श्री नानेश ने बलाई जाति का उद्धार किया। उन्हें शाकाहारी बनाया। उन्हें धर्मपाल की संज्ञा दी।

विश्व शान्ति का अमोघ उपाय समता है। समता ही सब सुखों की जननी है, ऐसा उद्घोष करके आपने समता दर्शन का सिद्धांत दिया और समता समाज रचना का नया आयाम दिया।

भौतिक चकाचौंध के इस युग में ३५० से अधिक भव्य आत्माओं को प्रभु महावीर के शासन में दीक्षित कर कश्मीर से कन्या कुमारी तक भगवान महावीर का शासन फैलाया।

लाखों अनुयायियों को सम्यकत्व श्रावक व्रत दिलवा कर उन्हें सुसंस्कारित बनाया। अपने साधु-साध्वियों को आगम का ज्ञान देकर उन्हें ज्ञानवान बनाने में अथक सहयोग दिया तथा संघ की सुरक्षा के लिए कटु अघातों को भी सहन करते रहे।

हुक्म संघ की सुरक्षा में चार चांद लगें, संघ में शिथिलाचार प्रवेश न करे, अनुशासन के आधार पर भविष्य में भी एक ही आचार्य की नेश्राय में शिक्षा-दीक्षा प्रायश्चित होता रहे, इसके लिए बीकानेर में *आचार्य श्री नानेश ने मुनि प्रवर श्री रामलालजी म.सा.* को अपनी चारित्र की उज्ज्वल चादर ओढ़ाकर अपना उत्तराधिकारी घोषित किया और कहा ये मेरे पट्टधर अपने जमाने में एक महान आचार्य बनेंगे। इसलिए आप सभी इनकी निश्रा में रहकर तप संयम की आराधना करें। इस प्रकार प्रबल आत्मबल से भावी शासन नायक की नियुक्ति कर आपने संघ को एक अमूल्य रत्न दिया है।

-श्रेणिक कुमार, नागदा

चन्द्रमा की शीतल छाया से संघ वंचित हो गया

शुक्ल पक्ष की द्वितीया को चन्द्रमा की भांति उदय होकर पूर्णिमा की तरह सारे संसार को प्रकाश देने वाले आचार्य श्री नानेश निष्कलंक अड़तीस वर्ष तक संघ का संचालन कर, संघ की चादर भावी आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. को सौंप कर महाराणा प्रताप की भूमि को तीर्थधाम बनाकर, संथारा सहित देवलोक पधारे गए।

आपने रतलाम में एक साथ [illegible] भव्य [illegible] को जैन भागवती दीक्षा प्रदान कर पिछले तीन सौ वर्षों के स्थानकवासी समाज के इतिहास में एक नया [illegible]

आपके शासन काल में लगभग चार सौ मुमुक्षु आत्माओं ने दीक्षा लेकर जिनशासन की महती प्रभावना की।

मैं सन् १९५९ में जन्म भूमि निम्बाज से कर्म भूमि के लिए दक्षिण में बैंगलोर आया। मेरे पूज्य पिताश्री स्वयं मुझे मारवाड़ी जंक्शन तक पहुंचाकर, बाद में उदयपुर में विराजित पूज्य आचार्य श्री गणेशीलाल जी म.सा. के दर्शनार्थ पधार गए। वहां पहुंचकर गुरु गणेश के चरणों में अर्ज किया कि आज बाबू गणेश दक्षिण भारत (दिसावर) गया है। उस महापुरुष की अनंत कृपा थी तथा सहज ही बोल उठे कम से कम दर्शन व मांगलिक तो देकर भेजना था, पिताश्री को बड़ी भूल महसूस हुई। लम्बे अन्तराल बाद सन् १९७१ में आमेट में मैंने पूज्य आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म.सा. के दर्शन किए, एक क्षण परिचय पाते ही बारह वर्ष पूर्व की बात सामने रखी- मैं उसी दिन से चरणों में समर्पित हो गया। जहां लाखों-लाख भक्त चरणों में आते हैं, वहां मेरे जैसे नादान बालक को अपने चरणों में जगह दी। यह कितना स्वर्णिम व दुर्लभ अवसर था मेरे लिए।

भोपालगढ़ मैत्री सम्बन्ध का सिलसिला भी निम्बाज में विराजित पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में जयपुर निवासी सुश्रावक श्रीमान गुमानमल जी चोरड़िया ने रखा। सन् १९९२ के पीपलिया चातुर्मास में पधारने पर व्यावर से ही मैं चरणों में (सेवामें) रहा, निम्बाज पधारने की विनती करता रहा किन्तु मौसम की अनुकूलता नहीं होने से आप बर से सीधे पीपलिया पधार गये।

आपने उत्तराधिकारी के रूप में आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. को नवम् पट्टधर पर प्रतिष्ठित किया, जो सर्वथा इस पद के योग्य चारित्र-निष्ठ एवं आगम-मर्मज्ञ श्रमण हैं।

मैं स्वर्गीय आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म.सा. को अपनी ओर से एवं अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ जोधपुर- बैंगलोर की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। आप शीघ्र सिद्ध, बुद्ध और मुक्त बनें।

-गणेशमल भण्डारी (निम्बाज), चामराजपुर
बैंगलोर-२ (कर्नाटक)

क्रांतिदृष्टा

स्थानकवासी सम्प्रदाय में स्वर्गीय आचार्य श्री नानालालजी म.सा. को विशेष, आदर व श्रद्धा की दृष्टि से देखा जाता है। इसके कई कारण हैं। उन्होंने अपने जीवनकाल में ३०० के लगभग मुमुक्षु-आत्माओं को संयमित जीवन जीने की दीक्षा का पाठ दिया। उन्होंने एक कुशल शिल्पकार की भांति अपनी शिष्य सम्पदा को आगम की वाणी का अमृतपान करवाकर साधना पथ पर आरूढ़ किया और जिसकी सौरभ समाज में फैल रही है।

जिस समय हुक्म संघ के आठवें पाट पर वह आसीन हुए तब स्थितियां बेहद विकट थी। स्वभाव से एकांत प्रिय, कम बोलना और थोड़े लोगों से मेल मिलाप, बाहर से दिखाई देने वाले ये दो चार गुण उनकी कुल जमा पूंजी थी। आचार्य पद पर आसीन होने के बाद पहला चातुर्मास रतलाम में हुआ। आरंभ का यह समय दुरूह जरूर था। उन्होंने समय की नजाकत को समझ सधे कदमों से अपने आचार्यत्वकाल की संयमित किन्तु विराट जीवन यात्रा का श्री गणेश समाज के सबसे छोटे व्यक्ति को धर्मदृष्टा देकर की। बलाई समाज में अहिंसा का प्रचार कर उन्हें शाकाहारी जीवन जीने के लिए सहज तैयार किया। उनके प्रयासों से लाख से अधिक परिवारों ने मांसाहार व शराब छोड़कर अपने जीवन को धन्य किया। जात-पांत के बंधनों को तोड़कर दलित व पतित लोगों का उद्धार किया।

अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ ने उन्हें अपना लिया और धर्मपाल के रूप में गले लगाया। आचार्य श्री के इस जीवन व्यवहार से धर्मपालों के जीवन में क्रान्ति आ गई। इसका प्रभाव धर्मपालों की आने वाली पीढ़ियों तक में उभरने लगा है। छुआछूत को मिटाने की बातें तो कई बार हुई है पर उन्हें गले लगाने का समय आता है तब अच्छे-अच्छों के छक्के छूट जाते हैं।

हरिजनों व गिरिजनों को गले लगाकर धर्मसंघ की मुख्यधारा से जोड़ने के इस उपक्रम ने आचार्य श्री को मानव से महामानव बना दिया है। जन्म से लगाकर निर्वाण तक आचार्य श्री नानेश की अहर्निश यात्रा न कभी रुकी और न थमी।

साधना का क्रम दिन-प्रतिदिन दिनकर की भांति प्रशस्त होता रहा। उसमें समीक्षण ध्यान विद्या और समता जीवन दर्शन जैसे आयाम प्रकट होकर प्रकाशित होते रहे जो आज समाज की अमूल्य धरोहर है और जिन पर शोध की आवश्यकता है।

साहित्य सृजन के क्षेत्र में अनेक ग्रंथों की रचना हुई है। उनमें जिण धम्मो का जिक्र करना समीचीन होगा। ग्रंथ बेहद उपयोगी एवं स्वयंसिद्ध है। जिसका अनुभव सुविज्ञ पाठक मनन के बाद ही ठीक से कर पाएंगे।

आचार्य श्री जी का जीवन सागर के समान धीर-वीर और गहन गंभीर रहा है और उसको समझने में अनेक जन्मों की साधना और एकाग्रता की आवश्यकता है। हम केवल उसका एक छोर पकड़ अपने जीवन में परिवर्तन की शुरूआत भर करें और देखें कि भला आगे होता क्या है।

आचार्य श्री ने अपने रहते युवाचार्य के रूप में श्रीरामलाल जी म.सा. को अपने उत्तराधिकारी के रूप में प्रतिष्ठापित किया। इसके पीछे दूरदृष्टि- गहन सोच विचार अनुभव व विश्वसनीयता प्रमुख है। संघ व शासन के हित में ही आचार्य श्री ने संघ को यह हीरा आचार्य के रूप में दिया है।

नवमपट्ट पर आसीन नये आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के सामने रास्ता आसान नहीं है। वैसे उन्हें साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविकाओं के रूप में अकूत संपदा प्राप्त है। सभी संघों का सहयोग भी उन्हें मिला हुआ है। स्व. आचार्य श्री के विश्वास पात्र भी वे ही रहे हैं, उन्हें संघ का संचालन करने का अनुभव है। उन पर गुरु नानेश की छत्र छाया है, गुरु नानेश का विश्वास है, आशीर्वाद है। उनके सामने सारे शूल-फूल बन उठेंगे।

-चंद्रप्रकाश नागोरी

जैन जगत के दिव्य नक्षत्र

भारतीय संस्कृति में ऋषि मुनियों एवं संतों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, समय समय पर महामना युग पुरुषों ने जन्म लेकर इस धरा धाम को धन्य बनाया। मानव की सुप्त चेतना जागृत कर नया आलोक प्रदान किया। अध्यात्म जागरण के मंगलमय संदेश वाहकों ने समूचे जीवन को नई दृष्टि प्रदान की एवं मार्ग दर्शन प्रदान किया।

श्रमण भगवान महावीर के शासन में अनेकानेक श्रेष्ठ परम्पराएं विकसित हुई। उसी शृंखला में साधुमार्गी परम्परा में (युगदृष्टा) आचार्य प्रवर का स्थान अत्यधिक महत्वपूर्ण माना गया है। संघ का उत्कर्ष या उपकर्ष आचार्य के व्यक्तित्व पर आश्रित है, आचार्य देव की अनुपस्थिति में संघ अनाथ माना जाता है। अतः सुयोग्य सफल एवं कुशल आचार्य देव की सदैव आवश्यकता रही है।

प्रभु महावीर के 81 वें पाट पर हमें एक ऐसे आचार्य देव का संजोग मिला जिससे यह संघ रूपी बगिया विकसित हुई। विषमता के इस युग में समता का दर्शन, दरिद्र नारायण का उद्धार, परिमार्जित, विशाल शिष्य मंडल का संचालन, धर्मव्यवस्था का सूत्रपात, शिथिलाचार के विरूद्ध क्रान्ति, पवित्र संयमयात्रा, ओजस्वी वाणी का प्रवाह, शांत स्वभाव, परोपकार, तोड़ने के स्थान पर जोड़ने का सिद्धांत, कथनी करनी की समन्वयात्मकता, अनुशासन, आत्मबल, अन्तर भावना पर विश्वास एवं सुयोग्य उत्तराधिकारी का चयन आपकी जीवन यात्रा के महत्वपूर्ण चमत्कार एवं विशेषता थी।

आपके सुशिष्य युवाचार्य से आचार्य श्री बने श्री रामलाल जी म.सा. मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की तरह मर्यादा और परम्परा के समर्थ अनुपालक, निष्काम कर्म योगी और युग दृष्टा हैं। मानव सेवा और बंधुत्व का संदेश एवं व्यसन मुक्ति एवं संस्कार क्रांति के नए आयामों की विवेचन कर प्रभावी उपदेश आप सदैव सुनाते रहते हैं। आपका आकर्षक व्यक्तित्व, ओजस्वी, तेजस्वी आकृति मधुर मुस्कान, सदा प्रसन्न आनन, वाणी का माधुर्य एवं दृढ़ निश्चयता, अपने से बड़ों के प्रति समर्पणा की भावना जिन शासन की वृद्धि में सदैव सहायक होंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

-श्रीपाल बोथरा, दिल्ली

वज्रपात

आचार्य श्री नानेश का सन् १९९८ का फाल्गुन

करने का लाभ अनपचंदजी श्री गंग को मिला था जो कि उस समय के हिसाब से आज भी अविस्मरणीय कहलाता है। आप श्री के सानिध्य में स्व. श्री सागरचंद जी सुराणा की स्वागताध्यक्षता में साधुमार्गी जैन संघ का अखिल भारतीय अधिवेशन आयोजित किया गया था। जिसमें संपूर्ण भारतवर्ष से लगभग ६-७ हजार महानुभावों ने भाग लिया था। इसमें संघ और समाज के हित की दृष्टि से कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित कर उन्हें कार्यान्वित करने का संकल्प किया। जिसमें प्रमुख प्रस्ताव दहेज देना व लेना इस पर स्वयं स्फूर्ति से बंधन लगाया गया। कई युवकों और बालकों की प्रतिज्ञा के लिए अनूठा एवं अविस्मरणीय रहा है।

जैन समाज में समय को देख कर उनके जैसा प्रतिभाशाली, शास्त्र सिद्धान्त तथा नियमबद्ध ज्वलंत उपदेश देने वाले महापुरुष, महात्मा विरले ही होंगे और इसीलिए जैन समाज के संसार व्यवहार को धर्म की दृष्टि से सुधारने को तत्पर आप जैसे संत के देवलोक गमन से जैन समाज को बड़ी भारी क्षति हुई है।

हजारों परिवारों ने इनकी शरण में अपने आपको समर्पित कर मांस मदिरा एवं कुव्यसनों का त्याग कर अपने जीवन को स्वर्णमय बनाया है। इन परिवारों को धर्मपाल की संज्ञा से सम्मानित किया गया है।

मैंने मेरे अपने जीवन में अनेक संत सतियों का पवित्र दर्शन एवं सत्संग किया है किन्तु आचार्य श्री नानेश मेरी उम्र में विरले ही दिखे हैं, जिनका प्रताप, जिनकी वाणी, जिनकी शासन रक्षा शैली, जिनका सद्उपदेश, जिनका तप एवं तेज, जिनका उद्योत, जिनका उत्साह, ये सब गुण एक साथ विरले ही महापुरुषों में भाग्य से ही होते हैं।

एक कवि की भाषा में अगर कहूं तो अहिंसा समता इनके जीवन का मूलमंत्र था और वह इनके जीवन में ताने-बाने की तरह फैल गया था। सत्य आप श्री का मुद्रालेख था। तप आप श्री का कवच था। ब्रह्मचर्य आपका मर्म [illegible] था। सहिष्णुता इनकी रक्षा थी। उत्साह जिनका [illegible] था। अटूट श्रद्धा बल जिनके हृदय पात्र या वक्षस्थल में भरा था। समाज दोनों कुल के यह योग [illegible] थे। राग द्वेष के दावानल से आप अलग थे। मेरे तेरे कि ममत्व भाव से दूर थे। सभी मुमुक्षु जीवों के कल्याण के लिए इच्छुक थे। इतना ही नहीं सब के कल्याण के उपदेश में ये सदा जागृत रहते थे। ऐसा जैन जगत का संपूर्ण भारत के एक [illegible] महान धर्मगुरु धर्माचार्य शासन के शृंगार परोपकारी, [illegible] वक्ता, समर्थ क्रियापात्र, कर्तव्यनिष्ठ, गच्छाधिपति का महापरिनिर्वाण होने से हमने एक अनुपम, अमूल्य [illegible] खोया है। आप श्री की आत्मा को विनम्र श्रद्धांजलि।

फलक तूने इतना हंसाया तो न था।
कि जिसके बदले यों रुलाने लगा॥

—अगरचंद राजमल चौरड़िया, अपासरी

छात्र जीवन की वह स्मृति

अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के आचार्य स्व. नानालालजी महाराज के रायपुर प्रवेश पर तप के माध्यम से स्वागत करने का पहला अवसर महाविद्यालयीन छात्र जीवन में प्राप्त हुआ। आचार्य श्री के स्वागत में चातुर्मास हेतु श्री रतनचंद सुराना भवन छोटापारा में पहले ही दिन लगातार पांच दिन के निराहार उपवास का प्रत्याख्यान लेने के लिए ज्यों ही आचार्य श्री से विनती की तो वे और प्रसन्न हो गए।

समतायोगी आचार्य श्री नानालालजी के चातुर्मास के समय की अनेक हस्तियां जो उस समय उनके दर्शन कर अपने को धन्य मानती थी वे अधिकांश लोग अभी नहीं हैं। उस समय उनके दर्शनों का सौभाग्य महंत [illegible] दास, मूलचंद देशलहरा, पं. शारदाचरन तिवारी, [illegible] हमिद अली, लक्ष्मीचंद पारख, [illegible] भूरचन्द देशलहरा, चंपालाल सुराना, [illegible] टीकमचंद डागा, मोतीलाल पारख, मोहनलाल भंसाली, लालचंद लूंकड़, पंचालाल बोथरा, [illegible] कोचर, भीखमचंद बैद, अमरचंद बैद, सोहनलाल [illegible] चुन्नीलाल झाबक, सोनराज सिंघी आदि अनेक व्यक्तियों को प्राप्त हुआ था। जिनके सहयोग से चातुर्मास को अपूर्व सफलता भी प्राप्त हुई थी।

राजनांदगांव में आचार्य नानालालजी महाराज के मुखारविन्द से आठ दीक्षा का एक साथ होना उनके छत्तीसगढ़ में आगमन की सफलता का द्योतक सिद्ध हुआ।

-ओमप्रकाश बरलोटा,संरक्षक
स्थानकवासी जैन युवक संघ रायपुर

A Tribute to a great saint

Achaarya Shree Nanesh has a record of long Sadhna for 60 years. Such examples of glorious success in the field of spiritual attainment are very rare. Pujya Gurudev was a source of spiritual rays to millions of his followers all over the country, He had not only preached ideology of Bhagwan Mahavir but also practiced them without any exception. He remained Acharya for 37 years and given long lasting solutions to the problems faced by the entire society in general and Jain Community in particular. His Stress on Samata has unparalled example in the recent history of Jain Religion Which has proved most effective philosophy for achieving the ultimate supreme aim of the life.

He was a great source of inspiration to me and I was highly motivated by his principle of Samata which led in forming of a Trust at his own holy birth place, DANTA, now known as Nanesh Nagar under the Nanesh Samta Vikas Trust. I along with my two colleagues, Shri. R.K. Sipaniji and Shri, U.C. Khivensaraji decided to start a fully residential higher secondary school based on Gurukul System which is now developed into a fully equipped school based on Jain Ideology in the remote traibal area for the benefit of tribals and poor people belonging to that area. The trust has now taken up a hospital project with the help of Shri. Sohanlalji Sipani which will be commissioned soon. The Trust is also planning to develop a Samata Sadhna Kendra for advance spiritual attainment by the followers of Acharya Shree Nanesh.

It would be a real tribute to such a great saint, if we are able to take his message further to our country and international society for ultimate good of human kind. This can only be done by having an Institute of Jainology to research on Jainisam as preached by Bhagwan Mahavir and practiced by Acharya Shree Nanesh. I am sure, all his followers would give a cool thinking to this proposal and organise such an institue to keep the remembrance of such a great spirtual leader of the country.

I wish a great success to this special edition of Shramanopasak for Acharya Shree Nanesh which is the right step to pay our respect to Acharya Shree Nanesh for his spiritual blessings bestowed on all of us.

-H.S. Ranka, Mumbai

स्वयं तिरे औरों को तिराये

जगत में जीवन और मृत्यु तथा मृत्यु और जीवन साथ-साथ घटित होते हैं, परन्तु महावीर के साधक के जीवन के साथ मृत्यु और अमृत घटित होता है क्योंकि वह साधक मृत्यु का नहीं अमृतत्व का उपासक होता है। वह अमृत को पीता है, अनुभव करता है, बांटता है उस अमृत की रसधार में स्वयं उसका जीवन तो तन्मय बनता ही है। साथ ही अनेक जीवन भी तन्मय हो जाते हैं जैसे प्रातः काल का समय हो, पूर्व दिशा की ओर यदि दृष्टि

कराने का लाभ अमरावती श्री संघ को मिला था जो कि उस समय के हिसाब से आज भी अविस्मरणीय कहलाता है। आप श्री के सानिध्य में स्व. श्री ताराचंद जी मुणोत की स्वागताध्यक्षता में साधुमार्गी जैन संघ का अखिल भारतीय अधिवेशन आयोजित किया गया था। जिसमें संपूर्ण भारतवर्ष से लगभग ६-७ हजार महानुभावों ने भाग लिया था। इसमें संघ और समाज के हित की दृष्टि से कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित कर उन्हें कार्यान्वित करने का संकल्प किया। जिसमें प्रमुख प्रस्ताव दहेज देना व लेना इस पर स्वयं स्फूर्ति से बंधन लगाया गया। कई युवकों और पालकों की प्रतिज्ञा के लिए अनूठा एवं अविस्मरणीय रहा है।

जैन समाज में समय को देख कर उनके जैसा प्रतिभाशाली, शास्त्र सिद्धान्त तथा नियमबद्ध ज्वलंत उपदेश देने वाले महापुरुष, महात्मा विरल ही होंगे और इसीलिए जैन समाज के संसार व्यवहार को धर्म की दृष्टि से सुधारने को तत्पर आप जैसे संत के देवलोक गमन से जैन समाज को बड़ी भारी क्षति हुई है।

हजारों परिवारों ने इनकी शरण में अपने आपको समर्पित कर मांस मदिरा एवं कुव्यसनों का त्याग कर अपने जीवन को स्वर्णमय बनाया है। इन परिवारों को धर्मपाल की संज्ञा से सम्मानित किया गया है।

मैंने मेरे अपने जीवन में अनेक संत संतियों का पवित्र दर्शन एवं सत्संग किया है किन्तु आचार्य श्री नानेश मेरी उम्र में विरले ही दिखे हैं, जिनका प्रताप, जिनकी वाणी, जिनकी शासन रक्षा शैली, जिनका सद्उपदेश, जिनका तप एवं तेज, जिनका उद्योत, जिनका उत्साह, ये सब गुण एक साथ विरले ही महापुरुषों में भाग्य से ही होते हैं।

एक कवि की भाषा में अगर कहूं तो अहिंसा समता इनके जीवन का मूलमंत्र था और यह इनके जीवन में तानेबाने की तरह फैल गया था। सत्य आप श्री का मुद्रालेख था। तप आप श्री का कवच था। ब्रह्मचर्य आपका सर्वस्व था। सहिष्णुता इनकी त्वचा थी। उत्साह जिनका ध्वज था। अखूट क्षमा बल जिनके हृदय पात्र या कमंडल में भरा था। सनातन योगी कुल के यह योग मालिक थे। राग द्वेष के दावानल से आप अलग थे। मेरे तेरे कि ममत्व भाव से परे थे। सभी मुमुक्षु जीवों के कल्याण के आप इच्छुक थे। इतना ही नहीं सब के कल्याण के उपदेश में ये सदा मशगूल रहते थे। ऐसा जैन जगत का संपूर्ण भारत के एक वर्तमान महान धर्मगुरु धर्माचार्य शासन के शृंगार परोपकारी, सर्व वक्ता, समर्थ क्रियापात्र, कर्त्तव्यनिष्ठ, गच्छाधिपति का महापरिनिर्वाण होने से हमने एक अनुपम, अमूल्य आचार्य खोया है। आप श्री की आत्मा को विनम्र श्रद्धांजलि।

फलक तूने इतना हंसाया तो न था।
कि जिसके बदले यों रूलाने लगा॥

-आगरचंद राजमल चौरड़िया, अमरावती

छात्र जीवन की वह स्मृति

अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के आचार्य स्व. नानालालजी महाराज के रायपुर प्रवेश पर तप के माध्यम से स्वागत करने का पहला अवसर महाविद्यालयीन छात्र जीवन में प्राप्त हुआ। आचार्य श्री के स्वागत में चातुर्मास हेतु श्री रतनचंद सुराना भवन छोटापारा में पहले ही दिन लगातार पांच दिन के निराहार उपवास का प्रत्याख्यान लेने के लिए ज्यों ही आचार्य श्री से विनती की तो वे और प्रसन्न हो गए।

समतायोगी आचार्य श्री नानालालजी के चातुर्मास के समय की अनेक हस्तियां जो उस समय उनके दर्शन कर अपने को धन्य मानती थी वे अधिकांश लोग अभी नहीं हैं। उस समय उनके दर्शनों का सौभाग्य महंत लक्ष्मीनारायण दास, मूलचंद देशलहरा, पं. शारदाचरण तिवारी, मौलाना हामिद अली, लक्ष्मीचंद धाड़ीवाल, आसकरन चोपड़ा, भूरचन्द देशलहरा, चंपालाल सुराना, केवलचंद बैद, टीकमचंद डागा, मोतीलाल धाड़ीवाल, मोहनलाल भंसाली, लालचंद लूंकड़, भंवरलाल बोथरा, आसकरन कोचर, भीखमचंद बैद, अमरचंद बैद, सोहनलाल सुराना, चुनीलाल झामर, सोनराज सिंगी आदि अनेक व्यक्तियों को प्राप्त हुआ था। जिनके सहयोग से चातुर्मास को अपूर्व सफलता श्री प्राप्त हुई थी।

राजनांदगांव में आचार्य नानालालजी महाराज के मुखारविन्द से आठ दीक्षा का एक साथ होना उनके छत्तीसगढ़ में आगमन की सफलता का द्योतक सिद्ध हुआ।

-ओमप्रकाश बरलोटा,संरक्षक
स्थानकवासी जैन युवक संघ रायपुर

A Tribute to a great saint

Achaarya Shree Nanesh has a record of long Sadhna for 60 years. Such examples of glorious success in the field of spiritual attainment are very rare. Pujya Gurudev was a source of spiritual rays to millions of his followers all over the country. He had not only preached ideology of Bhagwan Mahavir but also practiced them without any exception. He remained Acharya for 37 years and given long lasting solutions to the problems faced by the entire society in general and Jain Community in particular. His Stress on Samata has unparalled example in the recent history of Jain Religion Which has proved most effective philosophy for achieving the ultimate supreme aim of the life.

He was a great source of inspiration to me and I was highly motivated by his principle of Samata which led in forming of a Trust at his own holy birth place, DANTA, now known as Nanesh Nagar under the Nanesh Samta Vikas Trust. I along with my two colleagues, Shri. R.K. Sipaniji and Shri. U.C. Khivensaraji decided to start a fully residential higher secondary school based on Gurukul System which is now developed into a fully equipped school based on Jain Ideology in the remote traibal area for the benefit of tribals and poor people belonging to that area. The trust has now taken up a hospital project with the help of Shri. Sohanlalji Sipani which will be commissioned soon. The Trust is also planning to develop a Samata Sadhna Kendra for advance spiritual attainment by the followers of Acharya Shree Nanesh.

It would be a real tribute to such a great saint, if we are able to take his message further to our country and international society for ultimate good of human kind. This can only be done by having an Institute of Jainology to research on Jainisam as preached by Bhagwan Mahavir and practiced by Acharya Shree Nanesh. I am sure, all his followers would give a cool thinking to this proposal and organise such an institue to keep the remembrance of such a great spiritual leader of the country.

I wish a great success to this special edition of Shramanopasak for Acharya Shree Nanesh which is the right step to pay our respect to Acharya Shree Nanesh for his spiritual blessings bestowed on all of us.

-H.S. Ranka, Mumbai

स्वयं तिरे औरों को तिराये

जगत में जीवन और मृत्यु तथा मृत्यु और जीवन साथ-साथ घटित होते हैं, परन्तु महावीर के साधक के जीवन के साथ मृत्यु और अमृत घटित होता है क्योंकि वह साधक मृत्यु का नहीं अमृतत्व का उपासक होता है। वह अमृत को पीता है, अनुभव करता है, बांटता है उस अमृत की रसधार में स्वयं उसका जीवन तो रसमय बनता ही है। साथ ही अनेक जीवन भी रसमय हो जाते हैं जैसे प्रातः काल का समय हो, पूर्व दिशा की ओर यदि दृष्टि

डालें तो बड़ा ही सुन्दर और लुभावना दृश्य सामने उपस्थित होता है। जिसे देखने वाला हर प्राणी एक नई स्फूर्ति का अनुभव करता है और संपूर्ण विश्व में एक नई चेतना का संचार होता है। मन प्रमुदित और आनन्दित हो जाता है तथा धीरे-धीरे उसका प्रकाश बढ़ता जाता है परन्तु जैसे-जैसे समय आगे बढ़ता जाता है वह प्रकाश घटने लगता है और नन्हा सा प्रकाश पश्चिम में अस्त हो जाता है। अनन्त गहराइयों में विलीन हो जाता है कितना छोटा सा जीवन है एक किरण का। परन्तु दूसरी ओर इसी संसार रूपी गगन में कभी कभी ऐसा प्रकाश उदित होता है जो एक बार उदित होकर फिर घटित नहीं होता, यूं तो देह सबको ही तजनी पड़ती है परन्तु इसके प्रकाश रूपी जीवन में जो अच्छाइयां और सद्गुण प्रगट होते हैं उनकी चमक संसार रूपी गगन में फैलकर फिर सिमटती नहीं है, अपितु बढ़ती ही जाती है। अपने साथ-साथ दूसरे को भी अपने प्रकाश की किरण बना लेते हैं। महान आत्मा गुरुदेव परम सेवाभावी संघ गौरव परम श्रद्धेय श्री आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. का जीवन उस चमकते हुए सूर्य की भांति था जो खुद तो प्रकाशित होता ही है और दूसरे को भी प्रकाशवान करता है। इसी पुण्य आत्मा ने अपनी सेवा एवं तप से जिन धर्म के उपासकों को एक नई राह दी तथा लाखों का कल्याण किया जब मैंने गुरुदेव के दर्शन प्रथम बार राजनांदगांव म.प्र. में किया तब मुझे ऐसा लगा जैसे ज्ञान की गंगा करुणा की भावना दोनों मिलकर बह रही हो। जैसे सूर्य अपने प्रकाश के साथ उदयमान हो रहा हो। ज्ञान की आंखों में श्रद्धा की ज्योति हो ऐसे व्यक्ति को शब्दों में गुम्फित करना संभव नहीं है।

किसी कवि ने कहा है-

महान है जो त्याग संसार, संयम धारे,
महान है वे जो मन केविषय विकार निवारे।
बन जाते हैं दुनिया की नजर में बड़े उदय,
महान है वे जो स्वयं तिरे औरों को तारे॥

-सुभाषचन्द्र बराड़िया

ऐ युग तू कैसे आभार व्यक्त करेगा?

मध्य रात्रि फोन की घंटी सिसक पड़ी। चौंका! संदेश था सूरज अस्त। श्रद्धा सुमेरू नानेश निर्वाण पद पर विहार कर गए। तन-मन व मस्तिष्क सब कुछ अचेत था। तभी सोनल ने हतप्रभ हो झंझौड दिया। क्या हुआ? परिवार को दु:खद समाचार दिया। गमगीन था पूरा कड़ावत परिवार ड्राइवरों को बुलवाया गाड़ियां निकली। जिसने जो पहना ओढ़ा था, उसी से शीघ्र गुरु चरणों में पहुंचने की उत्कंठा। गाड़ियां अंधेरे में ही उदयपुर की ओर भाग रही थी, सब निशब्द बैठे थे। मानस अतीत की वादियों में जा पहुंचा। तीस-बत्तीस वर्ष पहले आचार्य भगवन् का चातुर्मास मन्दसौर था, मेरी उम्र रही होगी ११ या १२ वर्ष की तब प्रथम दर्शन किए थे। वह स्थापना दिवस था। सौम्य मुस्कराती आंखों से झरता अमिय। नन्हे मानस पर अंकित हो गया। उम्र के साथ-साथ अंकन गहरा होता गया और गुरु श्रद्धा सुमेरू बन गए। वहां से आज तक जीवन के हर पल में जब-जब भी चित्त डांवा-डोल हुआ, मन घबराया तब-तब जय गुरु नाना का जाप ही सम्बल बना और मैं भीषण से भीषण उहापोह के भंवर में भी सकुशल रहा।

दुकान के आवश्यक कार्य से बाहर जाना था। समय कम था दूरी ज्यादा थी। जर्जर सड़क बेभान भागती गाड़ी। गाड़ी में मैं और ड्राइवर। तारों भरी रात, उषा की लाली भी नहीं चमकी थी कि तेज भागती गाड़ी से आगे भागता टायर पुलिया पर दौड़ता नदी में गिर गया ड्राइवर बोला बचाना। मैं बोला जय गुरु नाना। लहराती गाड़ी कोई मील के पत्थर पर टिक गयी। भीड़ जुटने लगी। तरह-तरह की प्रतिक्रिया होने लगी। मेरा तन-मन नमित था वंदित था जय गुरु नाना के जाप में। ऐसी कृपा के एक नहीं अनेक प्रसंग मेरे जीवन में घटित हुए और वे पल मेरे गांव की गरिमा के ऐतिहासिक पृष्ठ बन गए। भगवन् आंत्री विराज रहे थे, मन में संकल्प हुआ गुरुदेव को रामपुरा लाना- समय कम, मार्ग लम्बा गुरु का जाप ही इस संकल्प विकल्प के भंवर से उबारेगा यह तय कर

बैठे। ग्रामीण मार्ग का सर्वे किया। दूरी सिकुड़ गई कुछ झूठ का सहारा लिया। जानते थे हमारी चालाकियों को फिर भी मेरे भगवन् आचार्य प्रवर मान गए। भक्त की भावना को भर देने की अद्भुत औदारता थी। आंत्री से चपलाना और यहां रामपुरा। ग्रामीण क्षेत्र कंटकाकीर्ण पगडंडियां, छोटे-छोटे नुकीले पत्थर, तीखे शूल से भरे रास्ते पर हमारी आस्था के आधार बढ़ रहे थे। हम साथ चल रहे थे। नन्हे कोमल पद पंकज जिन पर हम मस्तक रगड़ निहाल हो जाते हैं वे ही कोमल कमल चरण कंकर और कांटों से लहूलुहान हो रहे थे। हम पश्चाताप् से गलते, संकुचाते भगवान से निवेदन करते, कष्टों के लिए क्षमायाचना करते दो राहे पर लकड़ी से निशान बना गतिशील थे। एक लम्बा नुकीला कांटा एड़ी में धंस गया। दर्द असीम हुआ होगा, पर टीस तो दूर, समता सुमेरु के चेहरे पर दर्द की झलक तक नहीं थी। साथ के मुनिराज ने लकड़ी की सुई मिटमटी से काफी मशक्कत के बाद निकाला पर उस कांटे ने दो दिन का बुखार तो दिया ही। इस यात्रा में कष्ट तो घनेरे थे। पर उपकार भी बहुत हुआ।

भाग्य सराहूं या पुण्यवानी बाचूं कि आचार्य भगवन् की कृपा मेहर सदा प्राप्त हुई। राणावास के चातुर्मास में स्वयं के भी मुख से जीवन गाथा सुनी। हर चातुर्मास में मुझे कुछ न कुछ मिला। ब्यावर के चातुर्मास में २-२ घंटे तक अकेले सेवा का अवसर मिला। श्रीमुख से मुझ नादान को इतिहास, वर्तमान और भविष्य के कई संकेतों की जानकारी मिली। संयमी हृदय एवं समता का सम्यक् आचरण, दया, करुणा, विश्वास, जिनवाणी में अनुपम रसीलापन सहज प्रत्यक्ष था।

उदयपुर आ गया था। गुरुदेव ने पूर्ण विश्रांति पाई और आचार्य श्री रामेश का जप-तप की जय का आह्वान गूंज रहा था। भक्तों की याद नानेश शिष्य रामेश के चरणों में नमित थी। -अजीत कढ़ावत

गुरु मुख से निकले वे शब्द

वर्ष १९७६-७७ में आचार्य श्री नानालाल जी महाराज साहब श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, भीनासर में विराजित थे। मुझे आचार्य प्रवर के दर्शनों के लिए कहा गया और जब मैं वहां पहुंचा तो एक सज्जन जो इस संघ के बड़े श्रावक भी हैं, मुझे मिले। वे बोले- डॉक्टर साहब क्या आप आचार्य श्री की आंख की जांच यहीं पर कर लेंगे? मैंने कहा- इसमें मनाही की तो बात ही क्या है। यह तो सेवा का मौका है जो भाग्य से ही मिलता है।

यह कहते हुए मैं आचार्य प्रवर के दर्शन के लिए कमरे की ओर बढ़ा जहां वे विराजमान थे। मैंने उनकी आंख देखी और आगे की जांच के बारे में अपने मन में सोचते हुए आचार्य वर से निवेदन किया। आपकी आंख की जांच तो यहां पर भी हो सकती है, परंतु मैं यह कार्य यहां नहीं करूंगा। आचार्य वर मेरी ओर विस्मित से देखते हुए बोले- क्यों मरोटी जी ?

मैंने भी विनम्र मुस्कान के साथ कहा, 'आचार्यवर यही तो एक मौका है मेरे घर पर आपके पधारने का। भला मैं इससे वंचित क्यों रहूं।'

हमारे इस वार्तालाप के साथ ही आंख की जांच के लिए आचार्य प्रवर का घर पर पधारना तय हो गया। समय रखा दोपहर के तीन बजे का। आचार्यवर साधु-श्रावकों के साथ पधारे। कमरे में प्रवेश करने के साथ ही एक श्रावक बोले- डॉक्टर साहब पंखा बन्द कर दो। मेरा उत्तर था- पंखा तो पहले से ही चल रहा है। आचार्य वर के कानों में यह बात पड़ गई। सुनते ही तत्काल बोले- जो जैसी स्थिति में है वैसे ही रहने दो।

आंख की जांच हो जाने के बाद उन श्रावकजी की ओर इंगित करते हुए आचार्य श्री ने कहा, 'डॉक्टर साहब को श्रावक ज्ञान भी अच्छा है।' आचार्य श्री के श्री मुख से मेरे लिए ऐसे शब्द निकलने से मेरा मन पुलकित होना स्वाभाविक था। तब मेरे मन में एक और बात भी उठी कि आचार्य श्री नानालालजी कितने समदृष्टि हैं। मुझे भली-भांति मालूम था कि आचार्य श्री को यह जानकारी है कि मैं तेरापंथी श्रावक हूं। तब भी मेरे लिए ऐसे सारगर्भित उद्गार आचार्य श्री की समता के द्योतक हैं।

आचार्य श्री नानालालजी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि तभी होगी जब समूचे श्रावक समाज में समदृष्टि और समता भाव जागृत होगा।

-डॉ. जे.एम. जैन मरोटी, गंगाशहर,

तांगे का चक्का निकल गया

अभी सज्जनमल जी मूणत सपरिवार चांगुटोला राजनांदगांव दर्शन करके सकुशल लौटे। हल्का हल्का पीठ पसलियों में कई दिनों से दर्द था मगर ख्याल नहीं किया, वायु का उठाव समझा २७-९ को ब्लड प्रेशर बढ़ गया। इन्दौर ले गये, डॉक्टरों को दिखाया, जांच कराई कुछ डॉक्टर कहने लगे- नस डेमेज हो गई, हार्ट का आपरेशन कराना पड़ेगा। जय गुरु नाना का नाम रटने लगे, देखो फिर चमत्कार हुआ, आपरेशन टल गया, डॉक्टर ने बताया आपकी किस्मत बहुत बढ़िया है, जो वेन (नस) डेमेज थी उसका खून दूसरी वेन में चला गया अगर नीचे पैर में जाता तो लकवा, हार्ट में जाता तो अटेक, माईंड में जाता तो ब्रेन हेमरेज हो जाता लेकिन गुरुदेव की कृपा से बच गये।

-सज्जनमल, सुभाषचंद, ताराबाई, सुनिता मूणत

गुरु नानेश की चरण रज का चमत्कार

मेरी नानी जी श्रीमती जड़ाव बाई चौरड़िया के पांव रोगाक्रान्त थे। पांव हाथी के पांव जैसे मोटे थे और भैंस की चमड़ी जैसे कठिन स्पर्श वाले थे। इतनी खुजाल थी कि पूछो मत। नाखूनों से भी खुजाल नहीं मिटती थी। खुजालना तांबे के सिक्कों से पड़ता था। काफी उपचार कराया मगर कोई मतलब सिद्ध नहीं हुआ। १९९१ में पीपल्याकला में श्रद्धेय आराध्य गुरु देव के पावन दर्शन किये। चलते चलते गुरुदेव के चरण तले की रज को उठाया। घर आकर उसकी पोटली बनाकर पांव पर फिराया। चंद ही रोज में पांव सामान्य हो गया। सूजन, खुजाल गायब। आराम व चैन की नींद आने लगी। जहां भी हो वहीं शीघ्र परमात्मपद का वरण करें।

-अजय भावना, चांगाटोला

जय गुरु नाना मुख की वाणी

मद्रास धोबीपेट ब्रिज पर एक्सीडेंट हुआ, बस के नीचे दोनों पैर आ गए एक पैर कुचला गया, उसी समय बेहोश हो गया। पुलिस वाला आया। देखा, बोला मर गया, सिर पर डालने कपड़ा लेने गया, इतने में एक मुस्लिम आदमी ने आकर देखा। मेरी जेब से बटवा, गले से चैन एवं घड़ी सब खोल दिया। कहीं पुलिस वाले न ले लेवें। बटवे में फोन नम्बर था। जब घड़ी खोल रहा था, बेहोश अवस्था में मेरे मुंह से आवाज निकली। होंठ हिले, जय गुरु नाना इस प्रकार तीन आवाज सुनी जब कि मेरे होठ नहीं खुले। पुलिस कपड़ा लेकर आई। मुस्लिम बोला अरे यह तो जिन्दा है, उसके अन्दर से गुरु की आवाज आयी। तब तुरन्त हास्पिटल ले गये। मुस्लिम ने घर फोन किया। रात को ८ बज रही थी। पत्नी घर पर नहीं थी। शादी पर उदी गई हुई थी। बच्चे सुनते ही दौड़े आये। पहले हास्पिटल में मना कर दिया, दूसरे हास्पिटल ले गये। सर का स्केन लिया, फिर भर्ती किया क्योंकि सिर से बहुत खून बह चुका था, खून चढ़ाया। चार आपरेशन हुए दो पांव में एक हाथ में। फ्रेक्चर हुआ था। प्लास्टिक सर्जरी हुई। सवा महीने में ठीक हुआ। आशा ही नहीं थी कि इतना सुधार हो जाएगा। सभी आश्चर्य करते हैं। सब गुरु नाम का चमत्कार। मौत के मुख से निकला गत् २९-९-९९ को ही उदयपुर में आराध्य देव के अन्तिम दर्शन किये। गुरु महिमा को कहने लिखने की मेरी क्षमता नहीं है।

-गौतम गुणवन्ती, विनोद,पिंकी, मद्रास

साँस-साँस में रोम-रोम में बसे हैं

बात उस समय की है जब हम अपनी मम्मी-पापा, मासाजी-मासी जी और अपने परिवार के अन्य सदस्यों के साथ पू. गुरुदेव के दर्शनार्थ जा रहे थे। हम और भी स्थानों में संत सतियों के दर्शन करते हुए गुरुदेव की कृपा से सकुशल थे कि अचानक एक हादसा हुआ। हमारी गाड़ी एक पेड़ से जा टकराई और मेरा मौसेरा भाई रोड़ पर जा गिरा। इधर हम सभी जय गुरु नाना का स्मरण करने लगे

ार उस तरफ गए जहां वह गिरा था । उसी समय उसके
ार से जीप चली गई हम उसके पास पहुंचे तो उसे उठा
: लाये और गाड़ी में बिठाया और देखा तो उसके पैर
न ही खरोंच थी और न ही शरीर में कोई तकलीफ या
। यह तो गुरुदेव की कृपा थी। चमत्कार का ही शुभ
त जो इतनी बड़ी दुर्घटना टल गयी। ऐसी दुर्घटना की
ी में संकट मोचक उपकारी जीवन दान देने वाले गुरुदेव
ऋण से उऋण होना इस जीवन में तो असंभव लगता
।

उस महापुरुष को हमारा यही श्रद्धा सुमन समर्पित
के वह दिव्यात्मा शीघ्र शिवपद वरे, हमें भी सम्यक् मार्ग
ान दे।

-विजय चौरड़िया, रूपल चौरड़िया

गुरुदेव की महती कृपा

जब-जब पूज्य आचार्य भगवन् के दर्शन हेतु जाने
। काम पड़ता तब चातुर्मास स्थल पर पहुंचकर दर्शन
वचन का लाभ लेता था। दर्शन का लाभ लेने के पश्चात्
य आचार्य भगवन् स्वयं ही फरमा देते कि दोपहर २ बजे
तरी संघ के साथ बैठेंगे। दोपहर में जब बैठते थे तब
र्मिक चर्चा, प्रश्नोत्तर, त्याग-प्रत्याख्यान की बातें होती
ार हमारे साथ दर्शनार्थ जाने वाला हर व्यक्ति सीख के
प में कुछ न कुछ त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण कर ही लौटता
ार हर श्रावक, श्राविका पूज्य गुरुदेव के दर्शन कर अपने
। धन्य समझता और अपने जीवन में एक आत्मीय आनंद
ी अनुभूति करता। यह सब गुरु दर्शन का चमत्कार है
ार गुरुदेव की महती कृपा का प्रतिफल है।

-दीपक बाफना, नानेश रामेश संघ सदस्य, धमतरी

क्या गुरुदेव पीछे खड़े हैं

संवत् २०५१ का चातुर्मास नोखामंडी था। प्रति
वेवार बीकानेर संघ की बस आचार्य प्रवर व युवाचार्य
वर के दर्शनार्थ जाती थी। पूज्य माता-पिता के पुनीत
स्कारों के कारण बचपन से ही सन्त भगवन्तों के प्रति दृढ़
श्रद्धा व विश्वास मुझमें प्रतिपल विद्यमान है। महामहिम
आचार्य देव की असीम कृपा मुझ अकिंचन प्राणि पर
निरन्तर प्रवहमान रही। जिसके कारण आज भी महापुरुषों
के दिव्य संस्कारों की जीवन में अमिट छाप विद्यमान है।

हुआ यूं कि आचार्य भगवन् के दर्शनार्थ नोखामंडी
पहुंचा। उभय भगवन्तों के अमृतोपमय प्रवचन से लाभा-
न्वित हो मांगलिक आदि का श्रवण कर बस स्टैण्ड पहुंचा।
वहीं बीकानेर के कई आए हुए दर्शनार्थी भी थे, उन्हीं के
साथ मैं भी जोंगा (जीपनुमा) बस में बैठा और बीकानेर के
लिए वह जोंगा प्रस्थित हुई। हम लोग मात्र ११ कि.मी.
पहुंच पाये थे कि सामने से एक ट्रक लहराता हुआ आया
और उसने जोंगा को टक्कर मार दी। जोंगा में बैठे सभी लोग
एकदम बिखर गये। किसी को कहीं चोट किसी को कहीं
चोट आई परंतु आचार्य भगवन् की सुखद मांगलिक का
प्रतिफल यह हुआ कि इतनी जोरदार भीड़न्त के बावजूद भी
सामान्य रूप से मुझे चोट लगी व आंखों के आगे अंधेरा
छा गया। मैंने गुरुदेव का स्मरण किया और शीघ्र ही
सामान्य हो गया। बीकानेर से आई रोडवेज की बस के
ड्राइवर व कंडक्टर ने मानवता का उदाहरण पेश किया और
शीघ्र ही बस के यात्रियों को उतार कर घायल हुए सभी
लोगों को बस में बिठाकर नोखामंडी अस्पताल पहुंचाया
जिससे समय पर प्राथमिक उपचार संभव हुआ।

आज भी वह स्मृति उभरती हैं तो आचार्य प्रवर व
युवाचार्य प्रवर के प्रति मानस श्रद्धा से नत अवनत हुए बिना
नहीं रहता।

अष्ट सिद्धि सब निधि के दाता।
गुरुवर है भव्यों के त्राता॥

-कमलचन्द लूणिया

आचार्य नानेश के संस्मरण

आचार्य नानेश एक युगान्तरकारी आचार्य बनेंगे,
इसकी उस समय कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था।
गुदड़ी में छिपे ऐसे अनमोल रत्नों को कोई विलक्षण जौहरी
ही परख सकता है। गुरु की अभिलाषा को आपने पूरा
किया। आज तक आपके पास ३०० से भी अधिक
दीक्षाएं हो चुकी हैं।

उदयपुर में गणेशाचार्य के किडनी का आपरेशन होने के बाद स्वास्थ्य में सुधार आया और फिर अस्वस्थ हो गये। तब ? अनेक की यह राय हुई कि अब पूर्ण संथारा करा दिया जाय, पर आचार्य नानेश ने नाड़ी देखकर कहा कि अभी पूर्ण संथारा कराने की स्थिति नहीं है, तीन दिन अचेतन अवस्था में सागरी संथारा चलता रहा, बाद में चेतना आई, उसके बाद करीब ३ वर्ष तक गणेशाचार्य जीवित रहे। यह सब आचार्य श्री नानेश की दीर्घदृष्टि का प्रतीक है।

जब आप विचरते हुए दांता पधारते तब आपकी संसार पक्षीय माता शृंगार ने कहा, 'नानालाल जी महाराज, आप सब के पूज्य बने हुए हैं, प्रसन्नता की बात है लेकिन अभिमान में मत आ जाना, सबको साथ लेकर चलना।

एक अन्य प्रसंग पर माता शृंगार ने गणेशाचार्य को निवेदन किया-अन्नदाता ए घणा भोला टाबर है, या पर अतरो बोझोमती नाको ? तब आचार्य श्री ने कहा नाना नी रया, मोटा वेइग्या है। नानेशाचार्य ने उपरोक्त वचनों को सार्थक कर दिखलाया। कौन जानता था कि शृंगार मां का यह लाल शाहों का शाह बन जावेगा।

ऐसे गुरुवर नयनों के तारे, नाना गुरुवर प्राणों से प्यारे।

-माणकचन्द जैन, चेंगलपेट

नाम-स्मरण-चमत्कार

एक बार मेरी धर्मपत्नी श्रीमती त्रिवेणी देवी बीकानेर से मद्रास अकेली आ रही थी। दिल्ली से मेरे सालाजी ने इनको तमिलनाडु-एक्सप्रेस में बैठा दिया। अचानक आमला से नागपुर के बीच इसी गाड़ी के १३ डिब्बे पटरी से उतर गये। इनका डिब्बा भी पलट गया। भयंकर गड़गड़ाहट के साथ दिन में भी रात का सन्नाटा छा गया। ऐसी स्थिति में इनको जय गुरु नाना, जय गुरु नाना के नाम स्मरण के अलावा कुछ नहीं सूझा। स्मरण करती गई। अचानक जब होश आया तो जैसे किसी ने इनको साक्षात् बचा लिया। ऐसी है गुरु नाना की महिमा का चमत्कार।

ऐसे गौरवशाली आचार्य श्री नानेश को शत् शत् वंदन एवं श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

-तोलाराम मिन्नी, मद्रास

बैग मिला

आचार्य श्री का चातुर्मास नोखामंडी था। राजनांदगांव श्री संघ अध्यक्ष श्री दुलीचन्द जी पारख, श्री मांगीलाल जी लोढा, श्रीमती पारसबाई पारख, श्रीमती कंचन बाई बैद, श्री जेठमल जी ओस्तवाल आदि श्रावक-श्राविकाओं के साथ दर्शनार्थ इन्दौर पहुंचा।

इन्दौर में शासन प्रभाविका स्थविरा महासती रत्ना श्री इन्दर कुंवर जी. म.सा., श्री प्रेमलता जी म.सा. आदि ठा. का चातुर्मास था। दर्शन प्रवचनान्तर रेल्वे स्टेशन पहुंचे। अनायास ध्यान आया कि बैग जिसमें ४० टिकिट टिकिट एवं ५००० रुपये थे कहीं छूट गया।

चिन्तित हो स्टेशन मास्टर से निवेदन किया, टिकिटों की फोटो स्टेट कापी दिखाई वो कहने लगे मुख्य स्टेशन दुर्ग जहां से टिकिट बनाये गये इन्क्वारी करेंगे। इस प्रक्रिया में ३ दिन लगना स्वाभाविक है।

प्लेटफार्म पर सभी बैठे नानेश चालीसा तन्मयता से गाने लगे। गाड़ी छूटने में १० मिनिट शेष थे। इतने में ऑटो चालक हमारा बैग पकड़े सम्मुख आया। कहने लगा मुझे ऑटो चलाते इतना समय हो गया। कभी-कभी प्राप्त वस्तु लौटाने की भावना नहीं बनी। इस बार दिल कचोटने लगा। जब बेग खोलना चाहा करन्ट सा लगा। जब तक बैग मालिक को न पहुंचा दूं चैन न पड़ेगा। गुरु स्मरण का चमत्कार आज भी हृदय पटल पर अंकित है।

-पुखराज जैन, राजनांदगांव

टोकरिया ऐसे कहलाया

आज से करीब २५ साल पूर्व की घटना मुझे याद आ रही है। श्रद्धेय आचार्य भगवन् बीकानेर विराज रहे थे, हमारे नोखा संघ के अग्रगण्य सुश्रावक श्री मूलचन्द जी पारख जो श्रद्धेय आचार्य भगवन् के प्रति अनन्य श्रद्धावान

थे, ने अपने सहयोगी श्रावकगणों से वार्ता करते हुए कहा कि क्या करें, करनीदान जी बोथरा (जो कि मेरे पिता श्री हैं) यहां नहीं है। अपने को आचार्य भगवन् के यहां बीकानेर जाकर नोखा चातुर्मास की विनती करनी है। दो-तीन बार उपाश्रय में खड़े-खड़े कहा तभी मैं वहां अपनी दादी मां के साथ दर्शनार्थ उपाश्रय में पहुंचा। पारख जी के बार-२ यह कहने पर कि विनती किससे करवाएं तभी मैं शीघ्र ही बोल पड़ा कि बोथरा जी के कौनसा टोकर लटका रहा है, अर्थात् बोथरा जी के बिना क्या कोई विनती नहीं कर सकता। विनती ही तो गानी है इसे मैं गा दूंगा।

श्री पारख जी पहले तो मेरे मुंह से निकली बात पर बहुत हंसे फिर मुझे कहा कि अच्छा तुम यह विनती गाकर सुनाओ, मैंने शायद बहुत अच्छे ढंग से जैसे पारख जी चाह रहे थे वैसे ही सुनाया। इस पर पारख जी बहुत खुश हुए व मेरी दादी मां से बोले कि इसे तो हमारे साथ बीकानेर भेजना पड़ेगा और कहा कि यह बच्चा वास्तव में विनती गाएगा और यही हुआ। श्री पारख जी ने बीकानेर जाकर श्रद्धेय आचार्य भगवन् के यहां नोखा में चातुर्मास हेतु विनती की एवं मेरे से भजन के रूप मे विनती गवाई। श्रद्धेय आचार्य भगवन् बहुत प्रभावित हुए एवं पारख जी ने सारी बात श्रद्धेय आचार्य भगवन् को बताई कि ये कह रहा है कि बोथरा के कौनसा टोकरिया लटक रहा है, अर्थात् क्या विनती बोथरा जी के बिना नहीं गाई जा सकती।

श्रद्धेय आचार्य भगवन् बड़ी विनोदपूर्ण मुद्रा में कह उठे-

वाह भई टोकरिया
वाह भई टोकरिया

यह उपनाम टोकरिया श्रद्धेय आचार्य भगवन् द्वारा कहा गया। जब भी मैं दर्शनार्थ जाता सर्वप्रथम यह पूछते कि बोथरा जी का वो टोकरिया कहां है ? जब कभी पास बैठे श्रद्धालु पूछ लेते कि भगवन् यह टोकरिया क्या है तो आचार्य भगवन् सहज ही सारी पूर्व की कथा विनोद पूर्ण भाव में कह देते और जब कभी भी मैं दर्शनार्थ जाता तो सन्त मुनिराज कहते कि भगवन् आपका वो टोकरिया आया है।

यह टोकरिया उपनाम उन्हीं भगवन् की देन है। यह उपनाम सदियों-सदियों तक मेरी स्मृति पटल पर रहेगा। ऐसी महान विभूति आज हमारे बीच नहीं है। लेकिन उनके साथ गुजारे हर पल, हर क्षण की याद तो हमारे बीच है।

श्रद्धानत हूं इनके प्रति मैं जिनके स्नेह की अमृतमय छांव में मैंने अपना बचपन बसर किया, जिनके स्नेह रस से सुगंधित अनुपम भेंट मिली है मुझे, जिनके आशीर्वाद का झरना आज भी बह रहा है। श्रद्धा के उस दीपक को भक्ति की उस ज्योति को, स्नेह की उस निशानी को भूल पाना मुमकिन नहीं होगा। इसी भावना के साथ भावमय श्रद्धा सुमन।

-विमल बोथरा

ऐसे थे मन-जीत आचार्य भगवन्

आचार्य श्री नानेश समता शिक्षण समिति के तत्वावधान में गुरुदेव की जन्म भूमि दांता को धर्मस्थली एवं तीर्थस्थली के साथ-साथ कर्मस्थली में सुस्थापित करने का विचार बना, तब यह कार्यभार मुझे सौंपा गया। इसे मैं अपना सौभाग्य समझ कर पूर्ण मनोयोग से कार्य प्रारंभ कर रहा था। दांता ग्राम में प्राथमिक सुविधाओं का भी अभाव था तथा विश्वस्त व्यक्तियों के न मिलने तक व्यवस्था का भार दूसरों पर भी डालना मैंने उचित नहीं समझा। इसी कारण हर कार्य के लिए बाहर जाना पड़ता था। संस्थान में जीप उपलब्ध थी अत कुछ लोगों ने समझा कि मैं यहां न रहकर बाहर ही घूमता रहता हूं। इसी बात की शिकायत हमारे दूसरे महानुभावों से भी ये लोग करते रहते थे। एक तो जीप फिर उबड़ खाबड़ रास्तों पर सर्दी, गर्मी, वर्षा की परवाह न कर दौड़ते रहना दूसरे पीठ में अत्यधिक यात्रा से दर्द होने के उपरान्त भी इस तरह की आलोचना से व्यथित होकर कार्य भार छोड़ने का विचार बना रहा था कि अचानक अगस्त ९४ को जीप एक्सीडेंट होने से लगभग दो माह अस्पताल में रहना पड़ा तथा एक वर्ष तक आचार्य भगवन् के दर्शनार्थ भी नहीं जा सका। जब एक वर्ष के बाद मैं दर्शनार्थ पहुंचा तो आचार्य भगवन् ने फरमाया कि बहुत दिन बाद दया पाली है। मैंने निवेदन

किया कि एक्सीडेंट की वजह से मैं दर्शनार्थ उपस्थित नहीं हो सका तथा दो माह तक विद्यालय भी नहीं जा सका। तब गुरुदेव ने फरमाया कि अब याद आ गया। मैंने एक्सीडेंट की खबर सुनी थी आप स्कूल नहीं गये तब भी कोई बात नहीं आपका पराक्रम काम करता है। उत्साहवर्धक ये वाक्य सुनकर मैं अत्यन्त भाव विभोर हो गया तथा अधिक उत्साह पूर्वक संस्था को व्यवस्थित करने लग गया। गुरुदेव के वे शब्द आज भी मुझे अति सांत्वना देते हैं। यही कारण था कि उसके बाद भी ४ वर्ष तक संस्था में सेवाएं दे पाया। संस्था कैसी बनी यह समाज के समक्ष है।

-मनोहरलाल मेहता भू.पू. निदेशक एवं सचिव
आचार्य श्री नानेश समता शिक्षण समिति, दांता

नाना नाम का चमत्कार

नाना नाम में है महाशक्ति करते जो उनकी भक्ति।
बीच भंवर से प्राणि तरे, जो नाना का ध्यान धरे॥

घटना ९ वर्ष पूर्व जुलाई १९९० की है। बारिस का समय था, परंतु मौसम साफ था। मकान का निर्माण कार्य चल रहा था। मकान की छत नहीं डाली गई थी। खुला आसमान था। निर्माण सामग्री १०० बोरी सीमेन्ट व अन्य सामान वह भी मकान के अन्दर जमीन पर खुला रखा था, शाम को ५-६ बजे निर्माण कार्य बंद हुआ। अचानक आधी रात को इन्द्रदेव की कृपा से आंधी तूफान के साथ घमासान बारिस शुरू हो गई। बारिस इतनी तेजी से हो रही कि सड़कों पर पानी घुटनों से ऊपर भर गया था। बारिस के साथ बिजली भी बन्द हो गई थी। जिस स्थान पर निर्माण कार्य चल रहा था उससे करीब आधा कि.मी. दूरी पर हम रह रहे थे। नींद खुली देखा घड़ी में रात्रि के २ बज रहे थे। मेरे मन में विचार आया कि अब क्या होगा सीमेन्ट खुले में पड़ी है, पानी में बह जाएगी। चाहकर भी निर्माण स्थल पर पहुंच पाना असंभव था। फिर भी रात्रि में ही सच्चे मन से गुरु को याद किया तथा जय गुरु नाना नाम का संस्मरण किया। गुरु करे सो खरी कहकर गुरु के ऊपर छोड़ दिया तथा रात्रि में सो गया। सुबह ९ बजे कारीगर मजदूर के साथ निर्माण स्थल पर गये, बारिस चालू थी। पूरे मकान के अन्दर १-१ फीट पानी भरा था लेकिन यह गुरु नाना नाम का ही चमत्कार था कि जिस स्थान पर सीमेन्ट की बोरियां पड़ी थीं, उस स्थान पर जमीन सूखी थी तथा सीमेन्ट पर एक बून्द भी पानी नहीं गिरा था। फिर मजदूरों से सीमेन्ट की बोरियों को उठवाकर पड़ौस के मकान में एक कमरे में रखवाई। उस वक्त भी बारिस चालू थी पर १०-१५ मिनट पश्चात् ही हमने देखा कि जिस स्थान पर पहले सीमेन्ट रखी हुई थी वहां पर भी १-१ फीट पानी भर गया था।

-रखबचन्द नागोरी, खैरादीवाड़

गुरु भक्ति

बाल ब्रह्मचारी, धर्मपाल प्रतिबोधक आचार्य श्री नानालालजी म.सा. आज से करीब ७-८ साल पहले जेतारण से ४० कि.मी. दूर एक छोटे से गांव में विराजमान थे। गंगाशहर से आया हुआ एक परिवार शाम को उनके दर्शन करने गया। आचार्य श्री उन्हें देखकर बहुत खुश हुए व बातों में लग गये। बीच-बीच में सन्त आकर उन्हें कहते आहार का समय निकला जा रहा है आप पहले आहार ले लीजिये। आचार्य श्री ने कहा कि ये आये हुए हैं अतः मैं इनके साथ बात कर रहा हूं- उन सज्जन के मन में एक विचार आया कि मैं कभी इनके दर्शन करने नहीं जाता फिर भी आचार्य श्री कि इतनी कृपा क्यों व उन्होंने आचार्य श्री से इसकी जिज्ञासा की। आचार्य श्री का उत्तर था कि मेरे पूर्व के दो आचार्यों ने इन परिवारों को विशेष भोलावन दी थी।

इसी साल नवम्बर में इसी परीवार का एक सदस्य आचार्य श्री के दर्शन हेतु उदयपुर गया। पिछले कुछ महीनों से आचार्य श्री की स्मृति प्राय. लोप हो गई थी- उस परिवार के सदस्य को देखते ही आचार्य श्री ने उन्हें नजदीक बुलाया। पूछताछ की व मांगलिक दी। वह सदस्य भी आचार्य श्री के इस व्यवहार से अवाक् रह गया पर वास्तव में आचार्य

श्री को अपने पूर्व आचार्यों की भोलावन शारीरिक अवस्था में भी याद थी। यह उनकी असीम गुरु भक्ति व गुरु श्रद्धा का ही उदाहरण है। पूर्व आचार्यों की भोलावन के बारे में खोज-बीन करने पर मालूम पड़ा कि आज से करीब ७० साल पूर्व आचार्य जवाहरलाल जी म.सा. भीनासर में विराजमान थे। एक सम्प्रदाय के लोगों ने यह निश्चय किया कि एक पंडित से शास्त्र चर्चा के समय इन आचार्य की मुहपति छीन लेनी है। पर इन परिवारों की गुरु भक्ति के आगे यह चाल सफल न हो सकी।

-रिधकरण बोथरा, कलकत्ता

अनूठी स्मृति

काफी समय से बहिन अनिता वैराग्य भाव में रमण कर रही थी, उसकी प्रबल भावना के आगे परिवार वालों को झुकना पड़ा एवं परिवार में दीक्षा लेने की चर्चा चली। दीक्षा पूर्व बहिन अनिता को आचार्य भगवन् के दर्शन हेतु बीकानेर ले गये, उस समय आचार्य भगवन् सेठिया कोटड़ी में विराजमान थे। दर्शन वन्दन कर स्वास्थ्य के बारे में पूछा, आचार्य देव ने हमारी तरफ देखा और दूसरे ही क्षण फरमाने लगे, भदेसर से मोदी परिवार ने दया पाली है। भगवन् ने आगे फरमाया परिवार में गेहरीलाल जी, भैंरूलाल जी आदि धर्म-ध्यान करते होंगे। परिवार के बुजुर्गों का नाम आचार्य भगवन् के मुंह से सुनते ही हम अवाक् रह गये और मन में आया इतनी वृद्धावस्था में संयीय अनुकूलता नहीं होते हुए भी इस महायोगी की गजब की स्मृति है। सेवा में निवेदन किया बहिन अनिता दीक्षा लेना चाहती है, भगवन् ने फरमाया इतने वर्षों तक परीक्षा ली। आपको अब विश्वास हो गया हो तो धर्म कर्म मे विलम्ब अच्छा नहीं है। यह सब सुनकर लगा आचार्य भगवन् की स्मृति कितनी गजब की है। ऐसे थे हमारे आराध्य देव नानेश। उनके पावन चरणों में हमारा मोदी परिवार श्रद्धावनत रहेगा।

-राजकुमार मोदी, बानसेन

देव रूपी महापुरुष

मैं अपनी वैराग्य भावना को लेकर आचार्य भगवन् के साथ विहार में साथ-साथ रहता था। उस समय आचार्य भगवन् मेवाड़ को परसते हुए ब्यावर चातुर्मास हेतु पधार रहे थे। आचार्य भगवन् के तप तेज के दर्शन कर भावना और बलवती होती जा रही थी। आप श्री जी जहां पधारते वहां भक्तों का सैलाब उमड़ पड़ता था। विहार करते हुए आप श्री जी का टाटगढ़ पदार्पण हुआ। धर्म-ध्यान का ठाठ रहा। सायंकाल प्रतिक्रमण के बाद थकान से मुझे जल्दी नींद आ गयी। आधी रात के करीब उठना पड़ा और मै अपने काम से निवृत्त होकर अपने स्थान पर आया और सोने लगा तो सहसा दृष्टि आचार्य भगवन् के पाटे पर चली गई। दृष्टि से जो कुछ देखा अवाक् रह गया। श्वास जहां की तहां रुक गई। समझ में नहीं आया कि क्या किया जाय। आवाज तक नहीं निकाल पाया। आंखें एक टक उसको देख रही थी। जहां गुरुदेव सोये थे उस आसन पर साक्षात् शेर बैठा था। करीब २-३ घंटे तक उस आसन पर वह शेर बैठा रहा। पिछली रात के आगमन के आभास के साथ वह दीखना बन्द हो गया। जल्दी से उठा और आचार्य नानेश को आवाज देने लगा। आचार्य भगवन् को अपनी ध्यान मुद्रा में विराजित देख कर दंग रह गया। मन में सोचने लगा जहां कुछ समय पूर्व शेर बैठा था वहीं पर आचार्य भगवन् को ध्यान रत देख कर सोचने लगा यह कोई महायोगी साधक हैं।

-मनोहरलाल मोदी, बानसेन

क्षेत्र को नया जीवन दिया

हमारे क्षेत्र को नया जीवन व चेतना प्रदान करने का श्रेय आचार्य श्री नानेश को ही है। आचार्य श्री नानेश की महती अनुकम्पा के कारण आज हम धार्मिक, नैतिक व सामाजिक क्षेत्र में उन्नति कर रहे हैं। आचार्य श्री नानेश का मोरवन आगमन बार-बार हुआ। एक बार आचार्य भगवन् का मोरवन आगमन हुआ तब जिन्नी ने वनेश से प्रस्तुत होकर मोरवन पधारने का मार्ग बना दिया। यह मार्ग कंकड़, पत्थर व कांटों से भरा हुआ था। मगर सीधा

था। आचार्य भगवन् इस मार्ग पर बढ़ गए। जब प्रमुख श्रावकों व संतों को पता चला कि मार्ग कंकरमय है तो उन्हें बहुत ही कष्ट हुआ। उन्होंने हमें डांटा और कहने लगे कि यह कैसा मार्ग बताया है, पूरा कांटों से भरा हुआ है। आचार्य श्री को कितना कष्ट होता है। हमने सभी श्रावकों व अन्य सभी सन्तों से क्षमायाचना की। श्रावकों की भावना भी कितनी महान थी उन्होंने आचार्य भगवन् के कष्टों पर अधिक ध्यान दिया। मगर आचार्य भगवन् की महानता देखिए कि इतना खराब मार्ग होने पर भी एक शब्द नहीं कहा वरन् मुस्कराते रहे। चेहरे पर वही आभा, वही चमक दिखाई दे रही थी। रूपपुरा पहुंच कर आचार्य भगवन् ने विश्राम किया एवं पुनः मोरवन के लिए प्रस्थान कर दिया। आचार्य भगवन् के मोरवन आगमन का उत्साह हर आत्मा में था। छोटे-छोटे बालक भी छः सात कि.मी. तक आचार्य भगवन् के साथ पैदल चल रहे थे। इसका प्रमुख कारण था आचार्य श्री का आशीर्वाद व प्रेरणा। आचार्य भगवन् ने मोरवन के सभी युवकों में नवचेतना भर दी। सभी हर समय चैतन्य रहने लगे। आचार्य श्री ने सभी में साहस, धैर्य व शक्ति का संचार कर दिया। आचार्य श्री की कृपा व आशीष से आज भी पूरा संघ एक है। हर क्षेत्र में अग्रणी है। यह सारी कृपा उस युग पुरुष की है, जैन समाज के साथ-साथ पूरा मानव समाज आचार्य श्री के उपकारों का कीर्तन करते हुए कहता है कि-

उपकार यह गुरुवर, हम भुला न सकेंगे,
और चाहे तो भी यह कर्ज उतार न सकेंगे।

-पंकज, कमलेश पितलिया, मोरवन डेम

एक पत्र से चातुर्मास मिला

समता के मसीहा आचार्य श्री नानेश की कथनी व करनी में कितनी एकरूपता थी, इसका अनुभव हम नगरी सिंहावा क्षेत्रवासियों को हुआ। गुरुदेव कहा करते थे, चातुर्मास के लिए आवागमन जरूरी नहीं है। श्री संघ का अगर एक पत्र भी आ जाए उसे उतना ही महत्त्व दिया जाएगा। १९८९ में नगरी जैन श्री संघ ने चारित्र आत्माओं के चातुर्मास की पुरजोर विनती एक पत्र के माध्यम से गुरुदेव के श्री चरणों में प्रस्तुत की। गुरुदेव ने महान् विदुषी श्री ताराकंवर जी म.सा. आदि का चातुर्मास स्वीकृत कर दिया। घर बैठे ही श्री संघ को चातुर्मास स्वीकृति प्राप्ति होने से संघ व क्षेत्र खुशी से झूम उठा और गुरुदेव की कथनी करनी की एकता के प्रति नतमस्तक हो गया।

आपकी यादों के चिराग हमारे दिलों में जलते रहेंगे।
प्रण यही है हमारा, आपके पथ पर चलते रहेंगे॥

-महेश नाहटा, नगरी

ऐसे बना तव भगत मैं

बात उस समय की है जब आचार्य नानेश रतलाम में महासती गुलाब कंवरजी की शिष्या महासती विनय श्री जी म.सा. वैराग्य काल में थे। उस समय हम तीनों भाई नास्तिक ही थे, तथा बहन की दीक्षा के नाम पर रही सही धर्म से रुचि भी घट रही थे। उस समय अचानक विनय श्री जी जो (उस समय सांसारिक नाम विमला था) की तबीयत बिगड़ने लगी। नाड़ी की गति आप ही आप मंद पड़ने लगी। उस समय देवी, देवता भी घर पर आये उनका भी दांव नहीं चला। हमारे यहां अच्छे जानकार भी आये। वे भी कुछ नहीं कर सके। पूरा परिवार व घर में जो मेहमान थे स्थिति देखकर सभी रोने लगे। उस समय भी विनय श्री जी घर में आपस में सभी को प्रेम से व मिल-जुलकर रहने की समझाइश देते रहे। वे बोलते रहे कि मेरी दीक्षा होनी की नहीं थी सो नहीं हो सकी। कोई बात नहीं। वैराग्य काल में हमनें विमला को तंग भी बहुत बहुत किया। बचाने का कोई उपाय नहीं सूझ रहा था, बाहरी बाधा जबरदस्त थी। अचानक ही मेरे मन में आचार्य भगवन् श्री नानेश का ध्यान आया कि गुरुदेव अगर आपमें शक्ति होगी तो विमला को बचा लीजिए। मैं उसकी दीक्षा में बाधा नहीं डालूंगा। दीक्षा दे दूंगा। इन बातों को मैंने अपने मन में ही रोते हुए संकल्प किया था। किसी को बताया नहीं था। उसके बाद अचानक कुछ ही देर में तबियत सुधरने लगी व जिसमें उठने बैठने की शक्ति भी नहीं थी, वह अचानक

ध्यान मुद्रा में बैठकर नवकार का जाप करने लगी तथा उस समय उसके शरीर में मुझे ऐसा लगा कि कोई दैदीप्यमान शक्ति सफेद वस्त्र में उसमें प्रवेश की व प्रबल शक्ति दी। उसी समय उस जानकार महोदय ने तुरन्त कहा की बाहरी बाधा दूर हो गयी व किसी ईश्वरी शक्ति ने प्रवेश कर तबियत में सुधार की। उस दिन आचार्य नानेश के स्मरण मात्र से ही उनका प्रभाव देखकर मैं चकित हो गया व उनका परम भक्त बन गया व विमला को दीक्षा की आज्ञा भी दे दी। हम तीनों भाई संत संतियां जी के दर्शन भी नहीं करते थे। यह बात उस समय वहां विचरण करने वाले सती संत-संतियां जी भी जानते थे।

-उत्तमचंद सांखला, छुईखदान

हमारा मुन्ना

हमारा मुन्ना दो साल का हो गया फिर भी न चलता था, न बोलता था। सारे परिवार वाले बड़े चिन्तित थे। सोच रहे थे कि क्या करें? डॉक्टर को दिखाया मगर कोई काम नहीं बना। एक दिन बैठी मैंने मन ही मन संकल्प किया, आराध्य गुरुदेव का स्मरण किया। गुरुदेव आप ही हमारे तारक हैं, आपका ही सबल सहारा है। आप ही हमारी चिंताओं को दूर करने वाले हैं। अगर यह चलने बोलने लग जायेगा तो हम दंपत्ति शीघ्र ही श्री चरणों में पहुंचेंगे। इसको (प्रतीक को) दर्शन करायेंगे। मन में कल्पना ही चल रही थी, एकाग्रता से चिंतन चल रहा था। गुरुदेव के नाम का चमत्कार कि कुछ ही समय बाद हमारा मुन्ना चलने बोलने लग गया। हमारा जीवन, परिवार सुखमय बन गया। हम प्रतिवर्ष दर्शन लाभ लेते। जब भी दर्शन करते हमारे जीवन में उन्नति होती रही। उसका (प्रतीक) कितना सौभाग्य प्रबल पुण्योदय, कल्पना भी नहीं थी। पूज्य पिताजी धर्मचन्दजी चोरड़िया, आशा बाई चोरड़िया के साथ एक बार कहते ही चल पड़ा। उदयपुर दर्शनार्थ अंतिम दर्शनों का सौभाग्य पाया। पार्थिव शरीर को कांच देकर कहने लगा ऐसा क्यों कर दिया। गुरुदेव ऐसे क्यों हो गये? बोलते क्यों नहीं, ऐसे क्यों बैठे हैं। समझ नहीं पाया कि वह दिव्य जीवन्त आत्मा प्रयाण कर गई। तब उसको बताया कि यह तो शरीर है। ऐसे अनन्त उपकारी गुरुदेव को भला कैसे भूलें? श्वासों के साथ नाना का नाम जुड़ा हुआ है। उन गुरुदेव के प्रति हमारी श्रद्धा का अर्चन यही है कि वह आत्मा शीघ्र सिद्ध बने। हमको भी उस पथ का राही बनावे।

नवम पट्टधर आचार्य भगवन् को हमारी शुभ कामना। राम राज्य में हमारी जीवन नैया को पार उतारें। आप महापुरुष सूर्य सम चमके, दमके गुलाब सम महकें।

-प्रवीण चोरड़िया, सुषमा चोरड़िया, चांगोटोला

लब्धिधारी

आचार्य नानेश का अपने विद्वान सन्तों के साथ देवगढ़ विराजना हुआ, उस अवसर पर देवगढ़ के ही एक श्रेष्ठी परिवार के मुखिया को दर्शन और मंगल पाठ के लिए गुरुदेव के पास लेकर गया, मैंने गुरुदेव से अनुनय विनय के साथ प्रार्थना की।

यह श्रावक आपका अनन्य भक्त है, कुछ ही दिनों में इनके दो बच्चों की शादियां है, साधनों की बहुत ही कमी है, उन्हे आशीर्वाद स्वरूप मंगलपाठ फरमाने की कृपा करावे।

आचार्य भगवन् ने फरमाया हम तो साधु हैं, क्या कर सकते हैं? फिर एकदम उस श्रावक की तरफ देखा कहा, प्रतिदिन २० लोगस्स का ध्यान करना और मंगलपाठ सुनाया।

कुछ ही दिनों बाद उस श्रावक के यहां दो बच्चों की शादियां आयोजित हुईं, बहुत ही शानदार शादियों की व्यवस्था हुई, यही नहीं पुराना कर्ज भी उतरा और उसके बाद भी धन की बचत रही, इस प्रकार आचार्य भगवन् का यह अद्भुत चमत्कार और लब्धि आज भी जब स्मृति में आती है, अत्यन्त श्रद्धा के साथ भावविभोर हो जाता हूं। ऐसे स्वर्गस्थ आराध्य गुरुदेव को कोटि-कोटि वन्दना।

-चन्दनमल जैन, देवगढ़ मदारिया

गुरु नाम स्मरण करने से संकट टला

मेरे परिवार के कुल ८ सदस्य प्रतापुर मेल [illegible]

में सवार होकर आ रहे थे। १ अगस्त १९९९ रविवार देर रात २ बजे गैसल स्टेशन पर गाड़ी की अवध-असम एक्सप्रेस से भयंकर टक्कर हुई। डिब्बे में धक्के लगने लगे और चारों तरफ चिल्लाने की आवाज आने लगी। नेत्र खुलते ही मेरे पारिवारिक सदस्यों ने जय गुरु नाना, जय गुरु राम नाम का उच्चारण किया। देखते ही देखते जैसे डिब्बे को किसी शक्ति ने रोक दिया और वह डिब्बा पटरी से उतरते-उतरते बच गया। मेरे आत्मज श्री राजकुमार व जमाता श्री रतनलाल मालू ने नीचे उतर कर देखा तो हृदय विदारक दृश्य था।

यह गुरुदेव की कृपा व उनके नाम स्मरण करने का चमत्कार ही कहा जाएगा कि इस भयंकर रेल दुर्घटना में मेरे परिवार के सभी आठों सदस्य मौत के मुंह से बच गये और सकुशल देशनोक पहुंच गये।

- लिखमीचन्द सांड, देशनोक

पूरे परिवार पर चमत्कार

मेरी पौत्री सीमा पुत्री प्रकाश चन्द सुराणा देशनोक निवासी का मात्र सात वर्ष की आयु में पूरा शरीर उबलते पानी से जल गया था। उसके पहने हुए कपड़े शरीर पर चिपक गये थे, उसको तुरन्त कलकत्ता के बड़े अस्पताल में उपचार हेतु ले गये डॉक्टरों के अथक प्रयास से भी उसको २ दिन तक होश नहीं आया, तीसरे दिन डॉक्टरों ने बोला कि इसको होश नहीं आ रहा अब इसको ईश्वर ही बचा सकता है। उसी समय मेरी पुत्र वधू मंजु सुराणा ने मन ही मन आचार्य भगवन् का स्मरण करके बोली,' हे भगवन् आप कृपा करें '। सीमा होश में आकर ठीक हो जायेगी तो मैं प्रतिवर्ष आपके दर्शन कराऊंगी। लगभग आधा घंटा में आचार्य भगवन् की कृपा से सीमा को होश आ गया और लगभग १५ दिन में अस्पताल से छुट्टी मिल गयी तथा लगभग २ माह में बिल्कुल ठीक हो गयी। आचार्य भगवन् उस समय जलगांव चातुर्मास हेतु विराज रहे थे। मेरे पुत्र प्रकाश ने सपरिवार आचार्य भगवन् के दर्शन करके सारी बात बतायी तो आचार्य भगवन् बोले मैं क्या किसी को जिन्दगी दे सकता हूं, आप सामायिक व धर्म-ध्यान का पूरा ध्यान करें। ऐसे महान युग पुरुष आचार्य भगवन् श्री नानेश को हमारा सपरिवार शत शत वंदन। जिनेश्वर देव ऐसे महान आत्मा को उनके पथ पर चलते मोक्ष प्रदान करें। यही हम सबकी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

- खेमचन्द सुराणा, भंवरी देवी सुराणा

नानेश सदगुरु तं नमामि

गुरु एक ऐसी शक्ति है, जो व्यक्ति के जीवन का निर्माण करती है और उसे विकास की ओर ले जाती है। गुरु के बिना जीवन की सारी गतिविधियाँ लक्ष्यहीन हो जाती हैं। जीवन की डोरी गुरु के हाथ है। गुरु वही करें जो शिष्य के हित में हो। कहा गया है कि -

तीन लोक नव खंड, गुरु से बड़ा न कोय।
करता करे न कर सके, गुरु करे सो होय॥

सारे जगत में व्यक्ति गुरु के बिना कुछ कर नहीं पाता। गुरु की कृपा एवं आशीर्वाद से ही सब कुछ करता है। इसलिये गुरु को जीवन का कर्ताधर्ता माना जाता है। गुरु के प्रति समर्पण भाव है तो गुरु की आज्ञा पालन में तत्परता रहेगी ही। गुरु जो आज्ञा दें, उसे मान लेना चाहिए उसमें किसी प्रकार का सोच-विचार, तर्क-वितर्क नहीं करना चाहिए।

जैनागमों में कहा है कि 'गुरु आणाए धम्मं,' गुरु की आज्ञा में चलना ही धर्म है और कहा है कि जो गुरु के समीप रहता है, उनकी आज्ञा का पालन करता है, उनकी भावनाओं को समझता है, उनके द्वारा किए गए इंगिता इशारों को जानता है, वह विनीत शिष्य आसानी से जीवन धर्म के गूढ़ रहस्यों को जानकर आत्म-कल्याण करने में समर्थ होता है।

अज्ञानरूपी अंधकार को नष्ट करने के लिए नेत्रों में ज्ञान रूपी सुरमा (अंजन) डालते हैं और नेत्रों को दिव्य ज्ञान ज्योति से भर देते हैं ऐसे नानेश गुरु को मैं नमस्कार करती हूं। परोपकारी गुरु के चरणों में पुनः पुनः वंदन।

ओ काल बता तुझको क्यों तरस आता नहीं,

किसी का सुख चैन तुझ को भाता नहीं,
मिला क्या, बता छीनकर तुझे इस हस्ती को,
कोई समझ पाता नहीं काल तेरी इस मस्ती को।

-मीनू गोखरु

दीप स्तम्भ

महामहिम श्री नानेशाचार्य उन महापुरुषों में से हैं, जिन्होंने अपने जीवन की अमर ज्योति जलाकर जैन संस्कृति के महान प्रकाश पुंज से संसार को प्रकाशित कर दिया। आप जिधर भी गये उधर ज्ञान दीपक का प्रकाश फैलाते गये। जनता के बुझे हुए हृदय दीपकों में ज्ञान के प्रकाश का संचार करते गये और शास्त्रों के दीप सम आयरिया के सिद्धांत को पूर्ण सत्य के रूप में चमकाते गये।

किन्तु दीपक तथा आचार्य का महत्त्व अपने-सा प्रकाश दूसरों में उतारने के लिये है। आचार्य श्री जी ने अपने महान व्यक्तित्व की छाया में युवाचार्य श्री रामलाल जी म.सा. आदि ऐसे महान संत तैयार किये हैं जो भविष्य में अधिकाधिक ऊर्ध्वगामी होते जावेंगे। आचार्य भगवन् की साधना-किरणों का प्रकाश नवोदित शासन सूर्य आचार्य श्री रामेश में प्रतिबिम्बित होता रहेगा और यह हुक्म शासन उन श्री जी के कुशल नेतृत्व में उन्नयन की दिशा में अग्रसर होता रहेगा। प्रशांतमना आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म.सा. श्री के चरणों में अपनी श्रद्धा समर्पण पूर्वक अभिनंदन करती हूँ।

-किरण देशलहरा, नहरपारा, रायपुर

मेरी आस्था के केन्द्र

गुरुदेव के नाम में इतनी शक्ति है कि जब भी गुरुदेव का नाम लेते हैं सभी संकट टल जाते हैं।

मरने वाले मरते हैं, लेकिन फना होते नहीं।
ये हकीकत में कभी, हमसे जुदा होते नहीं॥

पूज्य गुरुदेव हमारे समीप नहीं है, किन्तु उनके गुण हमारे बीच कायम हैं। उन्हीं के बताए मार्ग पर हमें चलना है, यही हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। अत: मैं गुरुदेव के चरण कमलों में श्रद्धा के अधखिले पुष्प समर्पित करती हूँ।

धरती अंबर गूंज उठे,
गुरुवर के जयनादों से।
प्रणाम उन्हें मैं करती हूँ,
श्रद्धा के अनगिन हाथों से॥

-किरण देवी गुलगुलिया, बीकानेर

एक दिव्य मशाल

गुरुदेव की गुण गरिमा का गान करना मेरी कथनी और लेखनी की शक्ति सीमा से बाहर है। महापुरुषों के रास्ते पर चलना ही हमारा लक्ष्य बनना चाहिए। गुरुदेव तो अनन्त गुणों के भंडार थे। स्वभाव से भी इतने भोले थे कि कई बार भक्तजन उनके भोलेपन पर समर्पित हो जाते थे। उनका ज्ञान विशाल था। आज भी गुरुदेव के संयम, ज्ञान, सेवा, तप की सौरभ समस्त वातावरण को महका रही है। उनके चरणों में भावांजलि अर्पित करती हूँ। संसार की सभी दिशाओं में आपका यश फैल रहा है और वह दिनों दिन फैले तथा हर भक्त आपको याद करे एक मिशाल समझकर।

गए फूल गुलिस्तां से, बहारें चली गई,
सुन्दरता मिटी खशबू और निखारें चली गई।
था जाम जिन्दगी का, भक्ति से लबालब,
टूटे तार श्वासों के, झंकारें चली गई॥

-कु. रचना बैद, धमतरी

सब कुछ दिया तुम्ही ने

हे अमृत वर्षी मेघ, तुम चारों ओर की तपिश को शान्त करते रहे हो, छोटी-छोटी सीपियों में मोतियों को भरते रहे हो, मानवी-खेतों को सींच-सींच कर हरा-भरा करते रहे हो, चंदनादि महान वृक्षों को पल्लवित करते रहे हो। तुमने तो सागर से केवल खारा पानी ही लिया, बदले में विश्व को जीवन-दान दिया। संसार में तुमने

कोई गुण गा सकता है। मन की सीप खाली थी और विचारों का क्षेत्र सूखा पड़ा था। ऐसे में एक महामेघ ने मुझे बहुत कुछ दिया, बिना मांगे, बिना सोचे और बदले में मुझसे कुछ लिया भी नहीं। वही महामेघ थे मेरे जीवन के आराध्य सर्वस्व पूज्य गुरुदेव श्रीनानेश। मैं तो क्या कोई भी उनके गुणों का वर्णन नहीं कर सकता।

- मोना गुलगुलिया, आसाम

हे महामानव! आप अमर हैं

जीवन में आदर्श पुरुषों का संयोग बड़ा ही दुर्लभ है, जो जीवन की अनजान और अंधेरी गलियों में भटकते हुए प्राणी को बाँह थामकर उबारते हैं। वरदहस्त एवं कृपा-दृष्टि से आत्मा को कृत-कृत्य करते हैं। जिस तरह फूलों की संख्या का नहीं सुगंध की सुंदरता का महत्व है, उसी तरह इस संसार के अनन्तानंत प्राणी की नहीं चरित्र की सुंगध से भरपूर आत्मा की चाह होती है। यूं तो इस कालचक्र में असंख्य प्राणि आये हैं, गये हैं और अनेक बीच में ही फंसे हैं। इस कालचक्र में रहते हुए भी अपने जन्म-मरण को सार्थक और सीमित करने वाले विरले ही हैं। इन्ही कड़ियों के अधिकारी महानपुरुष, धर्म की पावन गंगा, जैन गगन के चंद्र, जैन शासन की ज्योति, करुणा सागर, समता, सरलता के अक्षुण्ण भंडार, महान विभूति परम पूज्य आचार्य श्री 1008 श्री नानालाल जी म.सा. थे।

योग शास्त्र में वीतराग विषय चित्तम् द्वारा स्पष्ट किया गया है कि महापुरुषों के चिंतन मात्र से ही चित्तवृतियों का निरोध होकर परमात्मा की प्राप्ति होती है।

वीर प्रभु से मेरी कामना है कि गुरुदेव आप प्रत्यक्ष तो नहीं पर परोक्ष रूप से निश्चित ही हमारे बीच विद्यमान रहेंगे और गुरुदेव की आत्मा उच्चकुल गोत्र गति को प्राप्त कर शीघ्र ही स्वल्पभव में शाश्वत पद को वरेगी।

-शारदा जैन, केसिंगा

साधक व इनके पत्थर

समय बड़ी रफ्तार से चलता है,
इंतजार करना उसका काम नहीं।
सलिला वेग से बहती है,
उसे पथ ढूंढ़ने की फुरसत नहीं।
रोक नहीं पाता कोई समय
की गति औ सलिला के वेग को।
रोक ले शक्तिवान सलिला वेग,
पर संभव नहीं समय की गति को॥

मेरी चाह थी कि जीवन नैया के तारक उभय भगवन्तों की सन्निधि में ही संयम जीवन अंगीकार करके परम-पवित्र चरण कमलों की छत्र-छाया में त्रय-रत्न की आराधना करूं। बहुत कोशिश की किन्तु परिवार वालों की भावना थी अपने क्षेत्र में दीक्षा कराने की। मैं अपने महाप्रभुद्वय की अर्चना करने वाली अर्चनिका थी अत: मैंने परिवार वालों से भी उनके पावन विचारों का आदर किया। मेरी भावना तीव्र व उत्कट हो रही थी कि ऐसा अनूठा सुनहरा-सुखद-सुअवसर मिल जाये और मैं इन महान लोकोत्तर गुरुभगवन्तों में संयम धन प्राप्त करुँ।

पर विडम्बना है, इन कर्मों की, मेरे अरमानों के स्वप्न अधूरे के अधूरे ही रह गये। अब मैं चाहे लाख उपाय करूँ, पर उन अद्भुत ब्रह्मयोगी, परमोपकारी नानेश गुरु को कहाँ से लाऊँ। फिर भी अपने आप में संतोष कर लेती हूँ कि मेरे बौद्धिक कल्पतरु गुरु नानेश ने एक ऐसी महान कला कृति को परम-पिता परमेश्वर के रूप में उत्तराधिकारी बनाया, तदर्थ सभी आभारी हैं। मेरे ही नहीं, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के सपने साकार होंगे नाना के अनोखे राम गुरु में।

-मुमुक्षु निर्मला लोढा, पांचोड़ी

हुक्म संघीय गुलशन के अनमोल पुष्प

हम छोटे-छोटे बच्चे थे आसाम की अनार्य सदृश्य भूमि पर जन्मे, भगिनी (समीक्षणा जी म.सा.) की दीक्षा से पहले मैंने गुरुदेव श्री के दर्शन भी नहीं किए थे

किन्तु नाना नाम में कितना चमत्कार है यह मम्मी ने हम को प्रत्यक्ष अनुभव करवा दिया था। घर में बड़े छोटे किसी को भी मस्तिष्क या पेट, पीठ में कहीं भी दर्द होता मम्मी जय गुरु नाना नाम का स्टीकर या नाना गुरु की चरण रज लाकर मल देती। दर्द गायब हो जाता। पापा यही फरमाते थे कि गुरुदेव सभी रोग, शोक, दुःख के हरणकर्त्ता हैं। इस अनुभूति के बाद मैंने गुरुदेव श्री के दर्शन किए-मुझे लगा मैं एक गहन सागर, विराट ब्रह्माण्ड और अनन्त क्षितिज के सामने खड़ी हूँ।

संघ के गुलशन में खिला हुआ यह एक अनमोल पुष्प, जिसकी खुशबू से सम्पूर्ण संघ/समाज की बगिया महक उठी है। यह नाना, नाना ही नहीं है महावीर का स्याद्वाद और अनेकान्त है। हिमालय अपनी उत्तुंग ऊंचाई के लिए प्रसिद्ध है पर उसमें गहराई का सर्वथा अभाव है,इसी प्रकार हिन्द महासागर अपनी अतल गहराई के लिए विख्यात है पर उसमें ऊंचाई के लिए कोई स्थान नहीं। एक साथ ऊंचाई और गहराई यदि देखना हो तो आचार्य श्री नानेश में देखें। जहाँ उनमें आगमोक्त सम्यक् ज्ञान राशि की अथाह गहराई है वहीं चारित्रिक तप साधना की ऊर्ध्वगामिता भी है।

स्वरूप में आकर्षण, स्वभाव में सरलता, दुख द्वन्द्व नाशिनी- अविनाशी वाणी का मधुर आस्वाद पाकर अपना सारा क्लेश मिटा लेता और अपने अंतर को मोद-प्रमोद से भर लेता, ऐसे गुरु नाना कहाँ हैं।

-मुमुक्षु ममता बोथरा, पथारकांदी

समता की दिव्य ज्योति

27.10.99 रात को दो बजे अचानक आँख खुली - गली में माईक की आवाज आई- अत्यंत दुःख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि समता विभूति आचार्य भगवन् का.... बस सुनते ही अवाक् रह गई। एकाएक ऐसा लगा कि सारी दुनिया सूनी हो गई, जैसे हमारा सब कुछ चला गया।

तभी दिल से एक आवाज उठी ... गुरुवर की मात्र पार्थिव देह ही गई है शेष सब कुछ यहीं है। मेरे गुरुवर तो बच्चे - बच्चे के मुंह से बोलेंगे ... धर्मपालों की आँखों में दिखाई देंगे। उनका अस्तित्व तो जन-जन में है।

मेरे गुरुवर चुप कहाँ है ? उनका ज्ञान बोल रहा है, ध्यान हमें शिक्षा दे रहा है, त्याग हमें दिशा दे रहा है, गुरुवर की करनी दिखाई दे रही है, कथनी सुनाई दे रही है.... कहाँ गये हैं मेरे गुरुवर सब कुछ तो यहीं है, गुरुवर की सत्ता तो कण-कण में समाई हुई है।

नानेश वाटिका में आचार्य भगवन् के लगाये हुए संत- सती रूपी पौधों की हरी-भरी बगिया और सबसे बढ़कर युवाचार्य श्री राम जैसे बागवाँ हमारे लिये छोड़ गये हैं जो सदा इस बगिया को सुरक्षित रखेंगे। इसमें नित-नई कलियाँ चटकेगीं, फूल खिलेंगे और उन फूलों की खुशबु दूर-दूर तक फैलेगी व सारे वातावरण को सुरभित कर देगी। गुरुवर का संदेश-'समतामय हो सारा देश' जब तक जन-जन में रहेगा, तब तक समता विभूति की मशाल सदा-सदा के लिये प्रज्ज्वलित रहेगी।

यह दिव्य मशाल कभी नहीं बुझेगी, सदियों तक जलती रहेगी अविचल .... अविराम ... हमें राह दिखाती रहेगी, दूर-दूर तक हमें प्रकाश देती रहेगी।

-अनिता डूंगरवाल

सहज और सरल महासाधक

आचार्य श्री के आभा मण्डल से अमृत बरसता था। मुझे कई बार प्रत्यक्ष अनुभव हुए। दूसरे मासक्षमण की तपस्या में अद्भुत शांति की अनुभूति हुई। माली सरिता कुसुमाकर ने जय गुरुनाना धार लगाना से प्रभावित होकर ही गुरु दर्शन का लाभ लिया।

मुझे डाक्टरों ने जवाब दे दिया था, रात में सोते वक्त गुरुदेव का ध्यान करके सोयी थी। ध्यान में आचार्य श्री के दर्शन हुए। मैं बिस्तर से उठ भी नहीं सकती थी किन्तु गुरुकृपा से पूर्ण स्वस्थ हूँ। मेरा भानजा नर्वस सिस्टम की प्राब्लम से पीड़ित था 'जय गुरु नाना धार लगाना' के जाप से पूर्ण स्वस्थ्य हुआ।

आचार्य श्री नानेश त्याग और वैराग्य के साक्षात् प्रतिविम्ब थे; अनुकूल और प्रतिकूल दोनों परिस्थितियों में समभाव रखते थे। अखंड साधना आपके जीवन की विशेषता थी। आप सहज और सरल महासाधक थे।

आचार्य श्री जी प्राणिमात्र के प्रति आत्मीय भावना रखते थे। आपके प्रवचनों में आत्मज्ञान की निर्मल साधना मुखरित होती थी। समन्वित प्रवचन आत्मलक्षी नैतिकता, चरित्र निष्ठा, समता, राष्ट्रप्रेम और वैराग्य रस आधारित थे।

ऐसे युगपुरुष आचार्य भगवन् के अनुशासन की छत्र-छाया में शाश्वत सुख उपलब्ध होता रहा। आचार्य श्री का रजत जयंती वर्ष इन्दौर में एक ऐतिहासिक चार्तुमास के रूप में मनाया गया। उस समय वर्तमान आचार्य श्री रामेश ने वात्सल्य भाव से पूछ लिया- इन्दौर में इस वर्ष को कैसे मनाया जाए तो मैने सहज भाव से कहा- मुनिप्रवर 25 मास खमण का प्रसंग बन जाये तो बहुत ही अच्छा। लेकिन आचार्य श्री नानेश का अतिशय था कि 40-45 के करीब मास खमण हुए।

ऐसे महापुरुष का जीवनवृत इतना विराट है कि इसे शब्दों में बांधना सागर को गागर में भरने सदृश है।

आचार्य श्री नानेश के स्वर्गारोहण के पश्चात् आचार्य पद पर पू. आचार्य श्री रामेश प्रतिष्ठित हुए। आपके करुणामय उच्च विचार से युग-युगों तक धर्म संदेश मिलता रहे, सत्प्रेरणा प्राप्त होती रहे, यही मेरी हार्दिक कामना है।

-सौ. पुष्पा तांतेड़, इन्दौर

अब कौन राह दिखाएगा ?

वस्तुतः ये वीतराग मार्ग व हमारे आचार्य श्री नानेश न होते तो हमारी क्या दशा होती ? हम पुद्गल के सुखों की भीख मांगते, भटकते और यह सुख हमें केवल मृगतृष्णावत नचाता रहता। हम आशा तृष्णा के चक्कों में पिसते रहते। कौन पूछता ? कौन सम्भालता ? कौन राह दिखाता ? पूज्य गुरुदेव का अनन्त उपकार जिन्होंने इस उत्तम मार्ग पर चलना सिखाया। ऐसे महान उपकारी गुरुदेव को मेरा शत्-शत् वंदन ...

जिनका पुरुषार्थ प्रतिपल जागृत होकर वीतरागता प्राप्त करने में लगा रहा, राग-द्वेष रूपी रेशम की उलझी गांठ खोलने में ही लगा रहा। जीवन में समता, सहिष्णुता व वात्सल्य की त्रिवेणी का संगम था। उनके दर्शन मात्र से हर - आत्मा को सुख की अनुभूति होती, दर्शन मात्र से आधि-व्याधि से शान्ति मिलती, नाम मात्र से लोगों के दुख दूर होते व श्रद्धा से सिर झुक जाता।

जिन्होंने देवों से वंदनीय पूजनीय मुनिवेश को सदैव सुरक्षित रखा। पूज्य गुरुदेव जो इतनी वृद्धावस्था में इस संघ को जयवन्त रखने के लिए मारवाड़ से मेवाड़ तक पद विचरण किया। जिनका आत्मबल अनुपमेय था, मात्र एक ही भावना थी कि प्रभु का यह संघ सुरक्षित रहे। आपने अपने तन की चिन्ता नहीं, संघ की चिन्ता रखी।

आचार्य श्री जी ने कभी इस श्वेत चद्दर पर मलिनता नहीं आने दी, कुछ भी सहना पड़ा, कैसे भी रहना पड़ा वो सब कुछ सहे व रहे। जिनके हृदय में एक ही घंटी बजती- बस शासन सदैव जयवन्त रहे। सदैव शासन व संयम शील साधकों की जय हो, भले ही प्राण देना पड़े लेकिन इस शासन संघ में आँच नहीं आने पाये। इस साधक ने अनेकों को भव पार किया, कर रहा है व करेगा।

-अंजु सांड, देशनोक

सामाजिक क्रान्ति के सूत्रधार

आचार्य श्री नानेश जैसे निपुण, प्रज्ञासंपन्न महापुरुष की सुसंगत धर्मपाल बंधुओं को सुलभ हुई जिससे उनकी जीवन दिशा ही बदल गई। वर्षों की सेवा साधना के बाद आचार्य देव ने अपने आगमिक चिंतन एवं मंथन से वैश्विक जनता को समता एवं समीक्षण ध्यान का गहन व सहज मार्ग प्रशस्त किया और अपने गुरुदेव द्वारा प्रदत्त उत्तरदायित्व पर लेशमात्र भी आंच नहीं आने दी। वीर प्ररूपित अछूतोद्धार के कार्य को प्रवर्धित करते हुए अपने आचार्यत्व के प्रथम चातुर्मास से ही

अपना महानतम अभियान प्रारम्भ किया । चातुर्मासोपरांत व्यसन ग्रस्त मानव समूह के मध्य जाकर मर्मस्पर्शी बातें निर्भीकता से कहना और उनका जीवन परिवर्तन कर देना यकीनन नाना के अवतारी पुरुष होने का प्रमाण देता है । अन्यथा उपदेश देने वाले दस हजार से भी अधिक साधु-साध्वी वर्तमान में मौजूद हैं क्यों नहीं सभी प्रतिबोधक बन जाते। "एकला चलो रे" की तर्ज पर उन्होंने ऐसी क्रांति कर दिखाई कि जो लोग समाज से अलग-थलग पड़ गये थे। उन्हें नव सन्देश दिया। गुराड़िया ग्राम में पन्द्रहवें तीर्थंकर धर्मनाथ प्रभु की प्रार्थना एवं मंगलाचरण कर संस्कारों युक्त जीवन जीना सीखाया । शराब, माँस में रचे पचे समाज को अवतारी युगपुरुष ने मार्मिक एवं हृदय स्पर्शी प्रवचन द्वारा प्रतिबोधित किया । मानो इस हाड़-मांस के पुतले में विद्यमान आत्मा ने वचन लब्धि धारण की हो, 70 गांवों के हजारों व्यक्ति तत्क्षण व्यसनमुक्त बन गए। फिर यह संख्या लाखों में पहुंच गई । ऐसे प्रभावी आचार्य भले ही आज हमारे बीच नहीं हैं मगर उनकी कीर्ति विद्यमान है ।

-श्रद्धा पारख,जलगांव

दिव्य ज्योति

जैन जगत के चमकते सितारे
पा तुमको खिले भाग्य हमारे ।
युगों-युगों तक अमर मां शृंगार के दुलारे
पावन चरणों में कोटि-कोटि वंदन हमारे ॥

परन्तु इस संसार में कुछ ऐसी महान आत्माएँ जन्म लेती हैं जो भौतिक देह की दृष्टि से तो मृत्यु को प्राप्त कर लेती हैं परन्तु आत्मपुरुषार्थ से अपने जीवन में संयम-साधना के दीप जलाकर विश्व में अलौकिक प्रकाश फैलाती है । उन ज्योतिर्मय किरणों के प्रकाश में मानव उत्थान के मार्ग पर गति करता है प्रगति करता है । इसीलिए ऐसी महान आत्मा जन-जन के हृदय में अमर बन जाती है, ऐसी ही विरल विभूति थे आचार्य श्री नानेश ।

उनकी सजीव स्मृतियाँ हमारे मनोजगत में विद्यमान हैं जो हमें अपने जीवन में सरलता, भद्रिकता, सहजता, सहिष्णुता आदि सीखायेंगी और युगों तक भव्य आत्माओं के पथ को आलोकित करती रहेंगी ।

ऐसी परम आराध्य, दिव्य ज्योतिर्मय, शाश्वत पवित्र आत्मा को समस्त धींग परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि ।

-ललिता धींग, कानोड़

समता के सागर

जगती तल की पूर्ण प्रभूति तुमको नमन,
सहस्र सूर्यों की चमक तुमको नमन ।

भारत में मेवाड़ अंचल एक ऐसी धरती है जिसने समय-समय पर देश भक्तों एवं संत-साध्वियों को जन्म देकर देशभक्ति एवं आध्यात्मिक जागृति पैदा करने का सौभाग्य प्राप्त किया है । इसी पुण्य वसुन्धरा ने 80 वर्ष पूर्व एक ऐसे अनमोल रत्न को पैदा किया, जिसने दीर्घ अवधि तक हुक्मेश शासन को दीपाया ।

समता सागर आचार्य श्रीनानेश की दिव्य ज्योति स्थूल रूप से अदृश्य हो गई, परन्तु उनका आलोक हमारा पथ प्रदर्शित करता रहेगा । उनका सौम्य मुख मंडल आज भी हमारी आँखों के सामने घूम रहा है । आचार्य श्री नानेश का आकर्षक व्यक्तित्व असाधारण था । आपकी वाणी में मधुरता, मृदुता और सहजता थी ।

एक घटना जो मेरे ही परिवार में घटी वह जिसके कारण मेरी उन पर अनन्त श्रद्धा उत्पन्न हुई, मेरे छोटी गठान थी । डॉक्टरों से चेकअप भी करवाया गया । सभी ने आपरेशन के लिए कहा । लेकिन छोटी होने के कारण आपरेशन नहीं करवाया गया अनेक दवाइयां दीं, लेकिन कोई आराम नहीं हुआ । उन्ही दिनों आचार्य श्री का चातुर्मास कानोड़ में हुआ । आचार्य श्री की चरन रज की महत्ता को सुनकर मेरी माता जी ने श्रद्धा सहित नवकार मंत्र गिनकर आचार्य श्री की चरन रज 2-4 बार तक गठान पर लगाई जिससे गठान नदारद हो गई । इससे हमारे परिवार की श्रद्धा अत्यधिक बढ़ गई ।

जैसे महासमुद्र को भुजाओं से पार करना असंभव है वैसे ही आपके सभी गुणों का वर्णन करना असंभव है। उस आलोकपूर्ण महान आत्मा को मैं समस्त नागोरी परिवार की ओर से श्रद्धांजलि समर्पित करती हूँ एवं नवम् पटधर के प्रति मंगल शुभ मनोकामनाएँ।

-ममता नागोरी, कानोड़

सच्चा पाठ पढ़ा गए मुझ बाला को

पूज्य गुरुदेव सदैव छोटे बच्चों से विशेष बात करते थे। मैं भी तीन माह पूर्व- उदयपुर पूज्य गुरुदेव के दर्शन करने गई। मुझे गुरुदेव ने पूछा- तुम्हारा नाम क्या ? तुम कहाँ रहती हो आदि ? फिर पूज्य गुरुदेव ने अपने मुखारविन्द से मुझे महामंत्र नवकार का उच्चारण करवाया। जब से मेरा मन पूज्य गुरुदेव के प्रति अटूट-श्रद्धा से नत मस्तक हो गया।

मैं जब जब महामंत्र का स्मरण करती हूँ तो पूज्य गुरुदेव की सौम्य छवि सामने आ जाती है। मेरे सोये मन को जागृत कर गए आचार्य प्रवर मुझ छोटी सी बाला में प्राण फूंक गए।

-कु. आशा सांड

गुरु नाना मुझे भा गए

मैंने कई आचार्यों व बड़े-बड़े संतों के दर्शन किए, लेकिन मेरा मस्तिष्क श्रद्धा के साथ कहीं नहीं झुका। आचार्य श्री नानेश के दर्शन करते ही मेरा मस्तिष्क व मन वंदन करने के लिए आतुर हो उठा। प्रथम दिव्य दर्शन प्राप्त हुए मुझे देवगढ़ की पूज्य धरा पर। उसके पश्चात् मैं सदैव गुरुदेव के दर्शन करती रही लेकिन आज पूज्य गुरुदेव का देवलोक गमन सुनकर मन बड़ा ही व्यथित हो रहा है।

जिंदगी में अनेक ठोकरें खाईं,
जिधर गई उधर निराशा पाई।
प्रसन्नता की जिन्दगी तो तब जी,
जब नाना गुरु से पावन समकित पाई।

पूज्य गुरुदेव को हार्दिक श्रद्धांजलि देती हुई। वर्तमान आचार्य प्रवर को बहुत-बहुत बधाई।

-मंजू बाफना (नेपाल)

समता की महान विभूति

पूज्य गुरुदेव समता की महान विभूति थे, उनके रग-रग में समता समाई हुई थी, उनकी अमृतमय वाणी से ही समता का दिग्दर्शन होता था। गुरुदेव विषम परिस्थिति में भी समता से ही पेश आते थे।

रायपुर की घटना है जहाँ बैनर के लिए लोग आपस में लड़ने लगे। जब गुरुदेव को ज्ञात हुआ तो उन्होंने पूछा-भाई क्या हुआ तो एक भाई ने कहा गुरुदेव हमें ज्ञात नहीं था कि ये परदा आपके नाम का है और आप एक पहुँचे हुए साधक हो अब हमारा क्या होगा ? हमारा मुस्लिम ईद का जुलूस निकल रहा था लेकिन परदा तो फाड़ दिया अब आपके भक्त हमारी गलती के कारण आगे बढ़ने नहीं देते।

इतने में ही अमृतवाणी की वर्षा हुई। गुरुदेव ने कहा-अरे मैं यहाँ भाई को भाई से गले लगाने आया हूँ। लड़ने-झगड़ने के लिए नहीं। बोले- मैं इस परदे में थोड़े ही हूँ। यह तो जड़ है चैतन्य की पूजा भक्ति की जाती है। मुस्लिम भाई नतमस्तक हो गए व भक्त बन गए।

इस प्रकार गुरुदेव के जीवन में समता रग-रग में भरी थी। एक नहीं अनेक उदाहरण गुरुदेव के जीवन में थे। मुझे पूज्य गुरुदेव का देशनोक के दौरान बहुत ही निकटता से सान्निध्य प्राप्त होता रहा। गुरुदेव का एक ही कहना था कि बाई जी शुभकार्य में विलम्ब न करो। मैं उनके महान संकेत को समझकर भी उनके मुखारविन्द से दीक्षा सम्पन्न न करवा सकी। मेरा सौभाग्य नहीं था कि मेरी अपनी पुत्री की दीक्षा पूज्य प्रवर के हाथों से होती। मैं इसका दान गुरुनाना को न दे सकी। मेरी जैसी कौन अभागन होगी ?

मेरी पूज्य गुरुदेव को हार्दिक श्रद्धांजलि। वर्तमान आचार्य श्री जी को बहुत-बहुत बधाई। आप इस हुक्मशासन का गौरव बढ़ाएं व मेरे कुल व देशनोक श्री संघ

का नाम रोशन करें, यही वीर प्रभु से मंगल कामना है।

-श्रीमती कमला देवी सांड

(वर्तमान आचार्य प्रवर की सांसारिक बहन)

बहुआयामी व्यक्तित्व

सौम्य सलोनी छवि देखकर,
सदा श्रद्धानत हो जाती।
भीगी पलकों से अश्रु झरे,
गुरुवर याद तुम्हारी आती॥

आपने बाल्यावस्था में ही भौतिकता की चकाचौंध से दूर वीतरागता की शीतल छाँव में अपना जीवन अर्पण कर दिया। आप में आगमों के गूढ़ रहस्यों को जानने की हर क्षण जिज्ञासा बनी रहती और समय-समय पर अपनी हर जिज्ञासा को शांत करते रहे। यही कारण है कि आप शास्त्रों के मर्मज्ञ विद्वान और गूढ व्याख्याता होने के साथ ही सर्जनात्मक क्षमता के धनी भी थे। सिद्धांतों के प्रति गहरी निष्ठा होने से आप किसी भी कीमत पर कितने ही दबाव होने पर भी अपने सिद्धांतों पर कोई समझौता नहीं करते। अपनी इसी दृढ़ सिद्धांत निष्ठा के कारण आज के युग में आपने सुविधावादी नवीनता के अंधप्रवाह में श्रमण संस्कृति को बहने से बचाया। साथ ही इसे आत्म-साधना से प्रकाशित किया तथा स्व और पर का कल्याण करने के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन दांव पर लगा दिया।

आप अनंत गुणों की खान थे। जिस तरह गगन में तारों को गिन पाना दुस्साध्य है उसी तरह उनके गुणों को गिन पाना या उनका बखान करना बहुत ही कठिन काम है। वे तो स्वयं एक सूर्य थे, जिन्होंने अपने जीवन की अंतिम श्वासों तक इस संघ को प्रकाशित किया।

हम सभी मिलकर उनके गुणों को अपने जीवन में अंगीकार करेंगे और अविरल गति से अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ते रहेंगे तो यही हमारी अपने गुरु के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। अंत में मैं जिनेश्वर देव से कामना करती हूँ कि हमारे नाना गुरु की लोक में और परलोक में भी सदा विजय हो।

-कुमारी सीमा संघवी, जावरा

सर्वतोमुखी व्यक्तित्व

मेवाड़ की पवित्र धरा दांता में जेठ सुदी दूज वि.स. 1977 को जन्मा बालक नाना से नानेश बन गया। ऐसा उन्होंने अपने शक्तिपुंज अर्थात् आत्मशक्ति को पहचानकर किया। पाषाण युग से आज तक एक दिन भी ऐसा नहीं आया जब समाज ने शक्ति का महत्व नकारा हो, परंतु आचार्य भगवन् नानेश ने शक्ति के उपयोग को लोक कल्याण के पक्ष में देखने का प्रयत्न किया।

आचार्य श्री नानेश महान् कलाकार, धर्मनिष्ठ साहित्यकार, विपुल साहित्य के रचयिता, समतादर्शन प्रणेता, कर्त्तव्य और समता के सेतु व दलितों तथा पतितों के लिये प्रकाश पुंज थे।

आचार्य की आगमिक मर्यादाओं का उन्होंने बड़े ठाठ के साथ निर्वाह किया था। भौतिक चकाचौंध से वे कभी आकर्षित नहीं हुए। अपनी ख्याति के लिये वे कभी आगे नहीं आये, पद, प्रतिष्ठा और प्रशंसा के लिए कभी कोई भाव नहीं लाये।

उन्होंने केवल समता सिद्धांत दिया ही नहीं, वरन अपने व्यवहार में अर्थात् इसे अपने जीवन में सर्वप्रथम उतारा। उनका सम्पूर्ण जीवन समतामय था। समता उनके रोम-रोम में व्याप्त थी। वे वास्तविक अर्थों में समत्व-योगी थे। इसीलिये अप्रिय घटनाओं के असह्य मानसिक त्रास को समता भाव से सहन कर लिया। वे दया की अनूठी प्रतिमूर्ति थे। संसार में उलझे हुए व पापकर्मों में जकड़े हुए प्राणियों को देखकर उनका हृदय दया व करुणा से ओतप्रोत हो जाता था। इसी का उदाहरण है :
व्यसन मुक्त समाज के लिए प्रयास करना, धर्मपाल बनाना।

छोटे-छोटे बच्चों के लिए उनके हृदय में विशेष स्नेह व दया भाव था। उनके सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक बच्चे से वे पूछते थे कि आपको मम्मी-पापा मारते तो नहीं है तथा मम्मी-पापा को बच्चों को नहीं मारने की सौगंध कराते थे। मैं उनके व्यक्तित्व व गुणों की व्याख्या कहां तक करूं वे कलियुग में भी भगवान महावीर थे।

वे सर्वतोमुखी व्यक्तित्व के धनी थे। जीवन की संध्या में उन्होंने वीतरागता को ही जीवन का अंतिम लक्ष्य बना लिया था। वे आत्म-साधना में इतने लीन हो गये थे कि औषधि आदि लेना भी बंद कर दिया था। आचार्य भगवन् इस बात को अच्छी तरह जानते थे कि वीतराग हुए बिना कोई मुक्त नहीं हो सकता। अतः देह भाव से ऊपर उठकर विदेह स्वरूप में संलीन रहे।

-डॉ. श्रीमती प्रकाशलता कोठारी,
९ भूपालपुरा, उदयपुर

रोटी का असली स्वाद

लगभग 33 वर्ष पूर्व की बात है-संघ नायक आचार्य श्री नानेश का विचरण छत्तीसगढ़ की तरफ चल रहा था। अपनी शिष्य मंडली को लेकर चल पड़े अटूट धैर्य शक्ति के धनी,दृढ संकल्पी। उस क्षेत्र में पहले कोई साधु नहीं जाता था।

जब लोगों ने सफेद वेश धारी मुंह पर कपड़ा बांधे, हाथ में डंडा थामे व्यक्तियों के समूह को देखा कि यह झुंड कहाँ से आ रहा है तो अनपढ़, अनभिज्ञ, श्रोताओं ने सोचा- विचार किया हो न हो ये चोर हैं, चोर की मंडली है। यह बात आग की तरह सारे गांव में फैल गयी। आचार्य नानेश अनन्त अपूर्व ज्ञान के धारी थे उन्हें ज्ञात था कि वक्त की पहचान कब होती है। कठिन परिश्रम के बाद, गर्मी पड़ती है तब बारिश आती है। युग पुरुष गुरुदेव अपनी आत्मा के ध्यान में लीन हो गये। 1,2,3,4, दिन हो गये आहार कहीं नहीं मिला। विलक्षण बुद्धि के धनी पूज्य गुरुदेव स्वयं निकल गये गोचरी के लिए। एक घर खुला था गुरुदेव स्वयं अपने सिंघाड़े के सहित अंदर गये। एक भाई खड़ा था। गुरुदेव ने एक भाई को पूछा कि भाई सूझते हो क्या ? वह घर के अंदर गया। कटोरदान के अंदर ठंडी, सूखी मक्के की रोटी निकली। शुद्ध भाव से दान कर दिया। संतों ने आहार किया। भूख क्या चीज होती है। रोटी का असली स्वाद तब मालूम होता है। नींद नहीं मांगती है बिछावणो भूख नहीं मांगती, मिष्ठान और मेवे। पांच तरह की नमकीन, नाश्ते में 18 प्लेटें लगती हैं फिर भी कहते हैं कि भूख नहीं है।

-श्रीमती भंवरी देवी कोठारी, कुन्थवास

बाल सखा-आचार्य श्री नानेश

तमिलनाडु के सिरकाली नगर में विदुषी महासती जी श्री शकुन्तला जी म.सा. का चातुर्मास था। मैं अपनी पढ़ाई मद्रास के स्टेला मेरिन कालेज से करके आई थी। हॉस्टल में रहती थी। रसायन शास्त्र की छात्रा थी, जैन साधु- साध्वियों के सम्पर्क में आने का पूर्व में अवसर नहीं मिला था। स्वर्गीय आचार्य श्री नानालाल जी म. सा. के विषय में महासतीजी प्रायः अपने प्रवचनों में उल्लेख करती थीं, जिसका प्रभाव मेरे मन मस्तिष्क में छा गया। उनके दर्शन की इच्छा उत्तरोत्तर बलवती हो गयी।

मेरी शादी मद्रास में श्री अगरचंद जी भैरोंदान जी सेठिया के पौत्र केसरीचंद जी सेठिया के पुत्र श्री सत्यजीत जैन के साथ हुई। मद्रास में ही आचार्य श्री जी के जीवनवृत पर प्रश्न मंच कार्यक्रम आयोजित गया। मुझे भी भाग लेने के लिये कहा। मैं इस स्थिति में नहीं थी कि स्पर्धा में भाग ले सकूं। मुझे उनकी पुस्तक अंतर पथ के यात्री दी। मेरा हिन्दी का ज्ञान भी कम था फिर भी मैंने पढ़ना प्रारंभ किया और दस दिनों के बाद ही मुझे स्पर्धा में भाग लेना पड़ा। मैंने पूरी पुस्तक का वाचन कर लिया था और मैं स्पर्धा में प्रथम आई। इससे मेरा हिन्दी का ज्ञान तो बढ़ा ही गुरुदेव के दर्शन की पिपासा और बलवती हो गयी।

आचार्य श्री का चातुर्मास बीकानेर में सेठिया कोटड़ी में था। मैं भी पूरे परिवार के साथ गयी। मन उनके दर्शन करने को उत्सुक था मैं अपनी मम्मी जी (सासुजी) के साथ गयी। देखा कि गुरुदेव एक ऊंचे लकड़ी के पाट पर विराजे हुए थे। किंकर्तव्यविमूढ़ उन्हें देखती ही रह गई। गेहुंआ वर्ण, विशाल भाल, ललाट पर एक ऐसा तेज जिसपर नेत्र टिक न सके। मुख मंडल

पर अपूर्व सौम्यता। शुभ्र खद्दर की चादर ओढ़े हुए थे। मुंह पर वैसी ही मुख वस्त्रिका में छिपे स्मित हास की बिखरती किरणें। हाथ जोड़कर स्तब्ध सी खडी रही। तन्द्रा टूटी जब मम्मी जी ने परिचय करवाया- गुरुदेव यह मेरी पुत्र वधू है।

आचार्य श्री के विशाल नेत्र मेरी ओर घूमे। कहा, "मैंने पीसांगन फरसा है तुम्हारे दादाजी सिरेमल जी बोहरा ने हमें शीघ्र विहार करने ही नहीं दिया" और इस तरह हमारा प्रथम परिचय/साक्षात्कार हुआ। फिर तो धीरे-धीरे उनके दर्शन व प्रवचन श्रवण का अवसर प्रतिदिन मिलने लगा। मैं कैमिस्ट्री की छात्रा थी। अतः मैंने अपनी जिज्ञासा रखी। उन्होंने बड़े सुन्दर तर्कपूर्ण ढंग से मेरा समाधान किया। इसके अतिरिक्त अन्य प्रश्नों के उत्तर भी संतोषजनक दिये। मैं दंग रह गई। एक जैन मुनि, आधुनिक विषयों पर भी इतना गहरा ज्ञान रखते हैं।

बालक-बालिकाओं के साथ तो वे इतने घुल-मिल जाते कि उसका चित्रण मेरे लिए संभव नहीं। जब भी कोई बच्चे अपने माता-पिता के साथ आते और वे उनके सर को झुकाकर वंदना करवाते, उनके चरण स्पर्श करवाते, वे बड़े स्नेह से अपने पास बुलाते, उनसे वार्तालाप करते और मंगल पाठ सुनाते। बालिका भी चाहती कि उनके चरण स्पर्श करूं पर अभिभावक दूर कर देते। वे अपना मन मसोस कर रह जातीं। साधु मर्यादा के अनुसार बच्ची हो या स्त्री, उनका स्पर्श वर्जित है।

मैंने देखा बड़े-बड़े भक्त जन एवं वरिष्ठ लोगों को छोड़ वे बच्चों के साथ बातचीत करने लगते। उनके प्रति उनका प्रेम, औदार्य, वात्सल्य देखकर आह्लाद की अनुभूति होती। इतनी बड़ी विभूति का बाल प्रेम देखकर लगता उनके साथ नाना सचमुच 'नाना' हो जाते।

उदयपुर की घटना है आचार्य श्री पौषधशाला में विराजते थे। स्वास्थ्य अनुकूल नहीं था। कुछ भाई दर्शनार्थ पहुंचे। बड़ी दूर से मंगलिक सुनने की भावना संजोकर आये थे, पर उनके स्वास्थ्य को देखकर यही लगा कि मंगलिक सुनने से वंचित ही रहेंगे। निराश होकर जाने के लिए मुड़े ही थे कि आचार्य श्री ने उनके बीच एक बालक जो छिप सा गया था, देखा। उसे इशारे से अपने पास बुलाया। पूछा- क्या सुनना चाहते हो? बच्चा बोल उठा आपकी मंगलिक। गुरुदेव के मुख पर मुस्कुराहट की एक किरण फूट पड़ी। लोग भी मुड़े, हाथ जोड़कर खड़े हो गए। आचार्य श्री ने मंगलिक सुनाई। एक अद्भुत दृश्य था। एक ही चर्चा थी। हम सब धन्य हुए इस बालक के कारण।

महिलाओं के प्रति भी वे विशेष सहृदय थे। उनकी सामाजिक दशा से क्षुब्ध हो जाते। उन्हें कहते सुना है कि एक महिला अगर पढ़ी-लिखी सुसंस्कारी हो तो वह पूरे परिवार को ही नहीं, पूरे समाज को भी उन्नत बना सकती है। बच्चों की पढ़ाई, सुसंस्कार, धर्म भावना माँ की लोरी से पालने में ही प्रारंभ हो जाती है। रूढ़ियों, कुगुरु देवी देवताओं के प्रति श्रद्धा, उनसे अनेक आकांक्षाएँ उन्हें सच्चे देवगुरु धर्म से विमुख करती है। उनका हृदय फूल-सा कोमल होता है वे चाहें तो अपने घर संसार को स्वर्ग बना सकती हैं। हमारी ये सतियाँ भी कभी आपके परिवार की सदस्या रही हैं। पर आज वे न केवल अपने जीवन को सुधार रही हैं, समाज और धर्म के लिए भी उतनी ही उपयोगी हैं, जितना पुरुष समाज। वीरांगनाओं, शीलवती सतियों की गौरव गाथा से इतिहास के पन्ने भरे पड़े हैं। दहेज प्रथा, हत्या, शोषण, भेदभाव पूर्ण व्यवहार के कारण सैकड़ों महिलाओं को आत्महत्या जैसा प्राणघातक कदम उठाना पड़ा है। शांत क्रांति की आवश्यकता है। सैकड़ों महिलाओं को उन्होंने प्रभु महावीर के शासन की उपासिका बनाकर उन्हें जीवन निर्माण की नई दिशा दी है।

आज के इस भाग दौड़ के व्यस्त जीवन में विषमता, तनाव, भेदभाव, पारस्परिक कटुता, शोषण, भ्रष्टाचार, प्रदूषण दहेज, क्रूरता, हिंसा जैसे असामाजिक कृत्यों से मानव ग्रस्त है, क्षुब्ध हो रहा है। यद्यपि मानव ने विज्ञान में असाधारण प्रगति की है। मनुष्य चाँद सितारों तक पहुंच तो गया पर अशांति के जीवन से उबर न सका।

आचार्य श्री ने अपने क्रांतिकारी विचारों से

नई रोशनी एक नई दिशा दी । व्यसन मुक्ति अभियान, समता दर्शन , समीक्षण ध्यान पद्धति आदि सूत्र देकर विश्व को अपने संयम साधनामय जीवन के 61 वर्षों तक महावीर की जिनवाणी से उपकृत किया । हजारों अछूतों को धर्मपाल बनाकर प्रभु महावीर द्वारा प्ररूपित ऊँच नीच के भेदभाव, जातिगत वर्ण भेद को मिटाकर उन्हें अच्छे नागरिक तथा संस्कारी जीवन जीने की कला सिखाई ।

आचार्य श्री के महाप्रयाण से एक युग समाप्त हो गया । उनका पार्थिव शरीर तो नहीं रहा पर उनकी गुणगाथा सदियों तक अमर रहेगी ।

नई सहस्राब्दी के इस प्रथम चरण में हम उनको, उनके नवमें पाट पर विराजित आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के चरणों में श्रद्धावनत नमन करते हैं ।

-उपाध्यक्ष

श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति, बीकानेर

प्राण जाहि पर गुरु भक्ति न जाहि

मौत भी गजब कहर ढाती है ।
न गाती है, न गुनगुनाती है ॥
मौत जब जब आती है ।
चुपके से चली आती है ॥
सामने कौन है यह भी नहीं देख पाती है,
और आराध्य को भी छीन ले जाती है ।

सूरज अपनी तेज रोशनी से जग को आलोकित करता है, किंतु जब बादल की घटा सूरज को घेर लेती है तो कुछ क्षण के लिए जग अंधकार में समा जाता है । बस हमारे आराध्य, हमारे सर्वस्व, जग को आलोकित करते रहे लेकिन मौत की इस बदली ने ऐसे महापुरुष को भी नहीं छोड़ा और हमें अंधकार की ओर धकेल दिया । उस कमी को पूरा कर पाना असंभव है ।

बादलों की ओट से निकलने के पश्चात सूर्य अधिक तेज के साथ प्रकाशवान होता है । उसी तरह अष्टम पाट के पश्चात् हमारे नवम् पट्टधर का सूरज दिव्य होगा और रामगुरु अंधकार में डूबे जग को और अधिक प्रकाशवान करेंगे और यह हुकम संघ पुनः चमचमा उठेगा ।

-माया लूणावत, दु[illegible]

उपहार की सार्थकता को समझें

धर्म ही जिनका कर्म था, जीवन जिनकी पूजा।
नाना जैसा अद्भुत संत कहाँ मिलेगा दूजा ॥

चौरासी लाख जीवयोनि में मनुष्य गति में जन्म लेने वाली आत्मा विशेष होती है पर विरली ही [illegible] इस गति का, इस मनुष्य जन्म का महत्व समझती है। [illegible] विरल व्यक्तित्व (आत्मा) जीवन-रथ पर सवार हो[illegible] अपनी मंजिल तक पहुँचते - पहुँचते न जाने कितनी [illegible] आत्माओं को अपनी अंतिम मंजिल तक पहुँचने [illegible] सरल मार्ग बताती है, कितनी ही आत्माएँ उनके पथ [illegible] अनुसरण कर अपनी अंतिम मंजिल को पा लेती है। ऐसी आत्माओं को पाकर मंजिल स्वयं निहाल हो जाती है यानि स्वयं मृत्यु एक महोत्सव मनाती है ।

ऐसी ही एक महान आत्मा थी आचार्य श्री नानेश की । जिनके नाम स्मरण मात्र से एक सरल, सौम्य स्नेहिल, शीतल कांति युक्त सुनहरी दमकती आभा [illegible] एक आकृति, एक मुख मंडल, एक सूरत, हमारे [illegible] आती है । आप श्री का संलेखना संथारा सहित मंजिल को पाना (महाप्रयाण) कुछ इस तरह था मानो कि मृत्यु ने आपश्री के स्वागत में महोत्सव आयोजित किया हो।

अपने 81 वर्ष की जीवन यात्रा में लगभग लाखों आत्माओं को मार्ग दर्शन दिया । एक लाख से [illegible] अधिक व्यसनी बंधुओं को व्यसन मुक्त (धर्मपाल) बनाकर धर्मपाल प्रतिबोधक कहलाये । भौतिकता की अंधी दौड़ से ग्रस्त आत्माएँ आपश्री की छत्रछाया [illegible] संयम साधना के आध्यात्मिक पथ पर अग्रसर हुईं। श्रद्धा विमुख व्यक्ति श्रद्धोन्मुख हुए ।

'प्रेम, दया, करुणा के फूलों से जग को महकाया
लाखों लोगों के जीवन में अमृत रस बरसाया

ऐसे महापुरुष के जीवन महासागर से किसी ए[illegible] अनमोल मोती को निकाल कर दिखाना दुष्करतम [illegible]

है क्योंकि प्रथम तो कोई उसकी गहराई तक पहुँच ही नहीं पाता कदाचित किसी ने डुबकी लगाने का साहस भी किया तो वह यह नहीं जान पाता कि किस मोती को उठाना चाहिए। वहाँ तो हर मोती ही अनमोल है, पारसमणि है।

झुक जाता है शीश हमारा, कह उठता है मन,
परम पुनीत महान् आत्मा को कोटि-कोटि नमन।

टेलीफोन पर पूज्य गुरुदेव के संलेखना संथारा अंगीकार करने की खबर सुनते ही एक क्षण के लिए दिल-दिमाग सर्वशून्य हो गया। अपने आराध्य की एक झलक मात्र पाने को मन अधीर हो उठा। प्रयत्न करने पर कुछ साथियों सहित निकल पड़ी उदयपुर।

अपने आराध्य के महाप्रयाण पर हजारों लोग क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा, पंच तत्त्व से बने शरीर को अपने कंधों पर (पालकी रूप में) गणेश छात्रावास ले गये जहाँ की भूमि इस पवित्र पंचतत्व को अपने में विलीन कर अपने आप को धन्य-धन्य कह उठी। लाखों लोगों ने अपने अश्रुओं का अर्घ्य दिया। पर हमारी सच्ची-श्रद्धांजलि, इस चतुर्विध संघ की श्रद्धांजलि, उस महान पुरुष को यही होगी कि हर ओर से एक ही लय, एक ही धुन, एक ही नाद, एक ही आवाज हो- बढ़ेगा हर कदम हमारा, जिधर होगा गुरु राम का इशारा।

-शकुंलता दुघोड़िया, स्वास्तिक ट्रेडिंग, दिल्ली

मेरे सच्चे देव नानेश

भारत की पावन धरती को अनेक संतों ने अपनी तपश्चर्या से सुशोभित किया है ऐसे ही संत इतिहास के अभिन्न अंग हैं। भगवान महावीर स्वामी के तत्व दर्शन को अपने जीवन में चरितार्थ करने वाले, समता सरोवर के राजहंस ने कथनी और करनी की एकता अपने जीवन में अंतिम श्वास तक कायम रखा। वे थे हमारे परम देव आचार्य श्री नानेश, जो इस औद्योगिक पिंड से हमारे बीच नहीं है पर उनकी कृतियाँ जब तक सूरज चाँद रहेगा तब तक चमकती रहेंगी। धन्य था उनका जीवन।

-सीमा हींगड़ (ब्यावर)

गुरुत्वाकर्षण

बचपन में बहुत वर्ष पूर्व पढ़ा था कि पृथ्वी की ओर प्रत्येक वस्तु आकर्षित होती है। कोई भी चीज चाहे वह भारी हो या हल्की, कितने ही वेग से उसे आकाश में क्यों न उछाली जाये वह पुनः पृथ्वी की ओर खींची चली आती है। बताया गया था कि पृथ्वी मे गुरुत्वाकर्षण की शक्ति है कि जिसकी वजह से वह वस्तु उसकी तरफ खींची चली आती है। इस गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत के खोजकर्ता थे प्रसिद्ध वैज्ञानिक गेलीलियो। पृथ्वी की यह आकर्षण शक्ति प्रकृति जन्य होती है।

चुम्बक में वह शक्ति है कि वह लोहे को अपनी ओर खींच लेती है परन्तु उसमें वह शक्ति कृत्रिम रुप से उत्पन्न की जाती है। और उसकी यह शक्ति केवल लोहे को खींचने तक ही सीमित होती है। लेकिन अपनी इस युवा अवस्था में अब मैं चिंतन करती हूँ और इस गुरुत्वाकर्षण के शब्द और उसके अर्थ पर विचार करती हूँ तो बरबस ही आचार्य श्री नानेश का स्वरूप और उनकी आकर्षण शक्ति मेरी आँखों के सामने तैरने लगती है। निश्चित ही गुरुत्वाकर्षण शब्द की रचना गुरु के प्रति आकर्षण की अभिव्यक्ति स्वरूप ही की गई होगी। चिंतन के साथ ही मन में ये भाव पैदा होते हैं कि आचार्य श्री नानेश ने यह गुरुत्वाकर्षण की शक्ति कैसे प्राप्त की ? तो मैं इस निर्णय पर पहुँचती हूँ कि यह उनके उच्च चारित्रिक आदर्श और त्याग तथा सम-भाव की साधना का ही परिणाम है कि उनमें यह गुरुत्वाकर्षण की शक्ति प्राप्त हुई थी।

मैं कई बार मन में चिंतन करती हूँ कि क्यों मन में बार-बार यह इच्छा होती है कि गुरु के पास जाऊँ और उनके दर्शन करूँ और ऐसी क्या उनमें शक्ति थी कि एक बार उनके सामने जाने पर वहाँ से स्वयं को हटाने का मन ही नहीं होता था। यह केवल मेरे ही अनुभव की अभि-

नई रोशनी एक नई दिशा दी । व्यसन मुक्ति अभियान, समता दर्शन , समीक्षण ध्यान पद्धति आदि सूत्र देकर विश्व को अपने संयम साधनामय जीवन के 61 वर्षों तक महावीर की जिनवाणी से उपकृत किया । हजारों अछूतों को धर्मपाल बनाकर प्रभु महावीर द्वारा प्ररूपित ऊँच नीच के भेदभाव, जातिगत वर्ण भेद को मिटाकर उन्हें अच्छे नागरिक तथा संस्कारी जीवन जीने की कला सिखाई ।

आचार्य श्री के महाप्रयाण से एक युग समाप्त हो गया । उनका पार्थिव शरीर तो नहीं रहा पर उनकी गुणगाथा सदियों तक अमर रहेगी ।

नई सहस्राब्दी के इस प्रथम चरण में हम उनको, उनके नवमें पाट पर विराजित आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के चरणों में श्रद्धावनत नमन करते हैं ।

-उपाध्यक्ष
श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति, बीकानेर

प्राण जाहि पर गुरु भक्ति न जाहि

मौत भी गजब कहर ढाती है ।
न गाती है, न गुनगुनाती है ॥
मौत जब जब आती है ।
चुपके से चली आती है ॥
सामने कौन है यह भी नहीं देख पाती है,
और आराध्य को भी छीन ले जाती है ।

सूरज अपनी तेज रोशनी से जग को आलोकित करता है, किंतु जब बादल की घटा सूरज को घेर लेती है तो कुछ क्षण के लिए जग अंधकार में समा जाता है । बस हमारे आराध्य, हमारे सर्वस्व, जग को आलोकित करते रहे लेकिन मौत की इस बदली ने ऐसे महापुरुष को भी नहीं छोड़ा और हमें अंधकार की ओर धकेल दिया । उस कमी को पूरा कर पाना असंभव है ।

बादलों की ओट से निकलने के पश्चात सूर्य अधिक तेज के साथ प्रकाशवान होता है । उसी तरह अष्टम पाट के पश्चात् हमारे नवम् पट्टधर का सूरज दिव्य होगा और रामगुरु अंधकार में डूबे जग को और अधिक प्रकाशवान करेंगे और यह हुकुम संघ पुन: चमचमा उठेगा ।

-माया लूणावत, [illegible]

उपहार की सार्थकता को समझें

धर्म ही जिनका कर्म था, जीवन जिनकी पूजा ।
नाना जैसा अद्भुत संत कहाँ मिलेगा दूजा ॥

चौरासी लाख जीवयोनि में मनुष्य गति में जन्म लेने वाली आत्मा विशेष होती है पर विरली ही [illegible] इस गति का, इस मनुष्य जन्म का महत्व समझती है । [illegible] विरल व्यक्तित्व (आत्मा) जीवन-रथ पर सवार होकर अपनी मंजिल तक पहुँचते - पहुँचते न जाने कितनी ही आत्माओं को अपनी अंतिम मंजिल तक पहुँचने का सरल मार्ग बताती है, कितनी ही आत्माएँ उनके पथ का अनुसरण कर अपनी अंतिम मंजिल को पा लेती है । ऐसी आत्माओं को पाकर मंजिल स्वयं निहाल हो जाती है यानि स्वयं मृत्यु एक महोत्सव मनाती है ।

ऐसी ही एक महान आत्मा थी आचार्य श्री नानेश की । जिनके नाम स्मरण मात्र से एक सरल, सौम्य, स्नेहिल, शीतल कांति युक्त सुनहरी दमकती आभा वाली एक आकृति, एक मुख मंडल, एक सूरत, हमारे सामने आती है । आप श्री का संलेखना संथारा सहित मंजिल को पाना (महाप्रयाण) कुछ इस तरह था मानो कि मृत्यु ने आपश्री के स्वागत में महोत्सव आयोजित किया हो ।

अपने 81 वर्ष की जीवन यात्रा में लगभग लाखों आत्माओं को मार्ग दर्शन दिया । एक लाख से भी अधिक व्यसनी बंधुओं को व्यसन मुक्त (धर्मपाल) बनाकर धर्मपाल प्रतिबोधक कहलाये । भौतिकता की अंधी दौड़ से ग्रस्त आत्माएँ आपश्री की प्रेरणा से संयम साधना के आध्यात्मिक पथ पर अग्रसर हुई । श्रद्धा विमुख व्यक्ति श्रद्धोन्मुख हुए ।

प्रेम, दया, करुणा के फूलों से जग को महकाया ।
लाखों लोगों के जीवन में अमृत रस बरसाया ।

ऐसे महापुरुष के जीवन महासागर से किसी एक अनमोल मोती को निकाल कर दिखाना दुष्कर [illegible]

है क्योंकि प्रथम तो कोई उसकी गहराई तक पहुँच ही नहीं पाता कदाचित किसी ने डुबकी लगाने का साहस भी किया तो वह यह नहीं जान पाता कि किस मोती को उठाना चाहिए। वहाँ तो हर मोती ही अनमोल है, पारसमणि है।

झुक जाता है शीश हमारा, कह उठता है मन,
परम पुनीत महान् आत्मा को कोटि-कोटि नमन।

टेलीफोन पर पूज्य गुरुदेव के संलेखना संथारा अंगीकार करने की खबर सुनते ही एक क्षण के लिए दिल-दिमाग सर्वशून्य हो गया। अपने आराध्य की एक झलक मात्र पाने को मन अधीर हो उठा। प्रयत्न करने पर कुछ साथियों सहित निकल पड़ी उदयपुर।

अपने आराध्य के महाप्रयाण पर हजारों लोग क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा, पंच तत्त्व से बने शरीर को अपने कंधों पर (पालकी रूप में) गणेश छात्रावास ले गये जहाँ की भूमि इस पवित्र पंचतत्व को अपने में विलीन कर अपने आप को धन्य-धन्य कह उठी। लाखों लोगों ने अपने अश्रुओं का अर्घ्य दिया। पर हमारी सच्ची-श्रद्धांजलि, इस चतुर्विध संघ की श्रद्धांजलि, उस महान पुरुष को यही होगी कि हर ओर से एक ही लय, एक ही धुन, एक ही नाद, एक ही आवाज हो- बढ़ेगा हर कदम हमारा, जिधर होगा गुरु राम का इशारा।

-शकुंतला दुघोड़िया, स्वास्तिक ट्रेडिंग, दिल्ली

मेरे सच्चे देव नानेश

भारत की पावन धरती को अनेक संतों ने अपनी तपश्चर्या से सुशोभित किया है ऐसे ही संत इतिहास के अभिन्न अंग हैं। भगवान महावीर स्वामी के तत्व दर्शन को अपने जीवन में चरितार्थ करने वाले, समता सरोवर के राजहंस ने कथनी और करनी की एकता अपने जीवन में अंतिम श्वास तक कायम रखा। वे थे हमारे परम देव आचार्य श्री नानेश, जो इस औद्योगिक पिंड से हमारे बीच नहीं है पर उनकी कृतियाँ जब तक सूरज चाँद रहेगा तब तक चमकती रहेंगी। धन्य था उनका जीवन।

-सीमा हींगड़ (ब्यावर)

गुरुत्वाकर्षण

बचपन में बहुत वर्ष पूर्व पढ़ा था कि पृथ्वी की ओर प्रत्येक वस्तु आकर्षित होती है। कोई भी चीज चाहे वह भारी हो या हल्की, कितने ही वेग से उसे आकाश में क्यों न उछाली जाये वह पुन. पृथ्वी की ओर खींची चली आती है। बताया गया था कि पृथ्वी मे गुरुत्वाकर्षण की शक्ति है कि जिसकी वजह से वह वस्तु उसकी तरफ खींची चली आती है। इस गुरुत्वाकर्षण के सिद्धात के खोजकर्ता थे प्रसिद्ध वैज्ञानिक गेलीलियो। पृथ्वी की यह आकर्षण शक्ति प्रकृति जन्य होती है।

चुम्बक में वह शक्ति है कि वह लोहे को अपनी ओर खींच लेती है परन्तु उसमें वह शक्ति कृत्रिम रुप से उत्पन्न की जाती है। और उसकी यह शक्ति केवल लोहे को खींचने तक ही सीमित होती है। लेकिन अपनी इस युवा अवस्था में अब मैं चिंतन करती हूँ और इस गुरुत्वाकर्षण के शब्द और उसके अर्थ पर विचार करती हूँ तो बरबस ही आचार्य श्री नानेश का स्वरूप और उनकी आकर्षण शक्ति मेरी आँखों के सामने तैरने लगती है। निश्चित ही गुरुत्वाकर्षण शब्द की रचना गुरु के प्रति आकर्षण की अभिव्यक्ति स्वरूप ही की गई होगी। चिंतन के साथ ही मन मे ये भाव पैदा होते है कि आचार्य श्री नानेश ने यह गुरुत्वाकर्षण की शक्ति कैसे प्राप्त की? तो मैं इस निर्णय पर पहुँचती हूँ कि यह उनके उच्च चारित्रिक आदर्श और त्याग तथा सम-भाव की साधना का ही परिणाम है कि उनमें यह गुरुत्वाकर्षण की शक्ति प्राप्त हुई थी।

मैं कई बार मन में चिंतन करती हूँ कि क्यों मन में बार-बार यह इच्छा होती है कि गुरु के पास जाऊँ और उनके दर्शन करूँ और ऐसी क्या उनमें शक्ति थी कि एक बार उनके सामने जाने पर वहाँ से स्वयं को हटाने का मन ही नहीं होता था। यह केवल मेरे ही अनुभव की अभि-

व्यक्ति नहीं हैं लेकिन मैं जिससे भी सुनती हूँ, जिसकी ओर भी देखती हूँ तो पाती हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति की यही भावना होती थी। अनुभव होता था कि जैसे यह अद्भुत किरणें उनकी ओर से प्रवहमान होकर मेरे तन-मन को आलोकित कर रही हैं।

इन महान गुरु के प्रति देश-विदेश के हजारों भक्त आकर्षित थे और दूर-दूर से दर्शनार्थ आते थे और प्रत्येक बार एक नई शक्ति लेकर लौटते थे। आचार्य श्री नानेश जैन समाज की एक विरल विभूति थे। ऐसे उच्च चरित्रवान, प्रभु महावीर के सिद्धांतों के प्रति अनुशासित संत आज विरले ही दृष्टिगोचर होते हैं। ऐसे महान गुरु को मेरा शत्-शत् वंदन। उनकी अप्रत्यक्ष शक्ति मुझे सदैव आलोकित करती रहे, यह मंगल कामना।

– प्रेम पिरोदिया, महामंत्री
श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति

दैदीप्यमान नक्षत्र

आचार्य श्री नानेश के स्वास्थ्य के प्रति मन चिन्ता मग्न था ही कि एक हृदय विदारक झटका लगा। 27 अक्टूबर की रात समता-दर्शन प्रणेता, आगम ज्ञाता, आचार्य श्री नानेश हमारे बीच नहीं रहे। हम इतने दूर थे कि आचार्य भगवन् के अंतिम दर्शन नहीं कर पाये। उस दिन श्री गेंदमल जी ओस्तवाल का चौविहार तेला था वैसे ही हम उदयपुर आये। वर्तमान आचार्य श्री राम का दर्शन कर चौविहार पांच का प्रत्याख्यान किया। यह करने पर भी उपवास किये। श्री ओस्तवाल जी को पता भी नहीं चला कि ट्रेन में कैसी तपस्या हुई। कई प्रसंगों पर आचार्य भगवन् के नाम से मेरे परिवार जनों के संकट दूर हुए हैं। ऐसे दैदीप्यमान नक्षत्र की प्रेरणा आज भी हमें धर्मनिष्ठ एवं परोपकारी बनाये हुए हैं। ऐसे आचार्य भगवन् को हमारी आत्मीय श्रद्धांजली अर्पित है एवं वर्तमान आचार्य श्री रामलालजी म.सा. के उज्ज्वल भविष्य की कामना है।

-रत्ना ओस्तवाल, पूर्व मंत्री,
अ.भा.सा. जैन महिला समिति, राजनांदगांव

जगत में अनूठे ही थे और रहेंगे

बहुमुखी प्रतिभा के धनी युवाचार्य श्री नानेश ने संयम साधना एवं तपाराधना से अपनी पृथक [illegible] बनाई। संघर्ष, विषमता, तनाव की भौतिकवादी संस्कृति में जी रहे विश्व को समता दर्शन का सूत्र दिया। इस प्रकार भय एवं कुंठा से जीवन जीने वाले मानव को आपने समीक्षण ध्यान का ऐसा उपहार दिया, जिससे वह आत्म साक्षात्कार कर शुद्ध स्वभावी आत्मा में [illegible] सकता है। तपोमय जीवन, शौर्य व तेज इतना [illegible] था कि उनके दर्शन व नाम स्मरण से हजारों विपदाएँ [illegible] हो जाती तथा आशाएँ पूर्ण हो जाती थीं।

भीनासर में अक्टूबर 95 में गुरुदेव का [illegible] हुआ। मेरे सासूजी की गुरुदर्शन की प्रबल इच्छा थी। वे चलने में असमर्थ होने के कारण व्हील चेयर [illegible] जवाहर विद्यापीठ गयी तथा गुरुदेव को दर्शन देने की प्रार्थना की। गुरुदेव की सरलता कि उन्होंने व्हील चेयर के पास आकर पूज्य सासूजी को दर्शन दिये व मांगलिक फरमाया।

आचार्य श्री नानेश को सच्ची श्रद्धांजलि यही है कि हम गुरु के बताये मार्ग पर चलें एवं उनके सिद्धांतों को जीवन में उतारें। मैं मंगलकामना करती हूँ कि वर्तमान आचार्य प्रवर शासन को अधिकाधिक दैदीप्यमान करें तथा हम भी उनके प्रति उतनी ही श्रद्धा रखें।

-कुसुमलता बैद, 19 हैड्डो रोड, चैन्नई

नयन दर्श बिन अभागे रहे

महापुरुषों का जीवन सुगंध प्रदान करने [illegible] फूल, आलोक प्रदान करने वाला दीपक एवं जहर को पीकर अमृत प्रदान करने वाले शंकर की तरह होता है।

जिस तरह समुद्री यात्री को तूफान का सामना करना पड़ता है, उसी तरह संयमी जीवन में भी अनेक कष्टों का सामना करना पड़ता है परन्तु सहनशील [illegible] उन सभी कष्टों को हंस कर सहन कर लेता है। जब कभी भी मैं इस महानयोगी के विषय में सुनती थी, [illegible]

के साथ आँखों में पानी आ जाता एवं मन उस शुभ-दिन की कल्पना करने लगता । गुरुदेव की कृपा से मेरी अंतराय बेड़ी टूटेगी एवं शीघ्र ही मुझे गुरुदेव के दर्शन, सेवा का अवसर प्राप्त होगा लेकिन न कर पायी । परन्तु पूज्य गुरुदेव ने अपनी दूरदर्शिता, अपनी पैनी दृष्टि से विरासत में एक ऐसे अनमोल रत्न को दिया है,जिनमें गुरुदेव के सभी गुण विद्यमान हैं ।

हम अनेक श्रद्धांजलि देते हैं,पर सच्ची श्रद्धांजलि तब होगी जब हम उनके बनाये उत्तराधिकारी पर उतनी ही श्रद्धा, निष्ठा और समर्पण भाव लायेंगे एवं उनके बताये उपदेश को जीवन में उतारेंगे और अंत में यह मंगल कामना व हार्दिक भावना है कि मेरे जीवन में भी आप श्री के गुणों की छाया सदैव बनी रहे । इन्हीं शुभ भावनाओं के साथ देवलोक में विराजित आत्मा के लिए अपने श्रद्धा सुमन भेंट करती हुई वीर प्रभु से मंगल प्रार्थना करती हूँ कि गुरुदेव की आत्मा को उच्च व शाश्वत मोक्ष गति प्राप्त हो ।

-कविता जैन, केसिंगा

समत्व भाव में रमण करने वाले

आचार्य श्री का जीवन अनुपम था । आप श्री ज्ञान, दर्शन, चारित्र के सच्चे आराधक थे । आप श्री जी की देह का कण कण और जीवन का क्षण-क्षण जन-जन के कल्याण के लिए समर्पित था ।

आपकी समीक्षण ध्यान मौन साधना ही निराली थी । कभी कोई क्षण समता से खाली नहीं रहता था । आचार्य श्री राम जिन-शासन के ताज हैं उनकी संयम-साधना पर हम सबको बहुत नाज है । युग-युग तक आपश्री का यह शासन अमर रहे । सदा मिले छत्र छाया आपकी यही अंतर की आवाज है ।

-वनिता, सुनीता , प्रियंका, हर्षिता श्री श्रीमाल, ब्यावर

गुरु का नाम चमत्कार भरा

स्वाध्याय शिविर में मैं प्रथम बार गई । १२ दिन स्कूल की पढ़ाई नहीं हो पाई, फिर घर पर कोर्स पूरा किया । त्रैमासिक परीक्षा देने बैठी । प्रश्न पेपर को देखकर घबरा गई । एक भी प्रश्न का उत्तर याद नहीं आ रहा था । एकाएक गुरुदेव नानेश का नाम याद आया । नाम स्मरण के बाद पुनः प्रश्न पत्र देखा और उत्तर लिखती गई। सारा प्रश्न पत्र हल हो गया । तब से मन में गुरु दर्शन की अभिलाषा जागृत हुई और सौभाग्य से गुरु दर्शन करने का अवसर आया ।

अंतिम अवस्था में दर्शन हुए। वह अंतिम दर्शन मेरे जीवन की आधार भूमि बनी । फिर विशाल जनमेदिनी को देखकर मुझे आश्चर्य हुआ । विश्वास हुआ । वास्तव में आचार्य भगवन् की साधना अद्भुत थी । अध्यात्म योगी पुरुष थे । लाखों भक्तों के नैन अश्रुपूर्ण देखकर अपने आप को हत भागी समझ रही थी काश मैं बड़ी होती तो पहले दर्शन कर लेती । गुरु की पावन ओज पूर्ण मूरत मेरे दिलो दिमाग पर बस गई है । जिसे मैं भुला नहीं सकती । मेरा सौभाग्य है कि मेरा मानव जन्म सफल हुआ । ऐसे महापुरुष के अंतिम दर्शन, कीर्ति शेष स्मृतियों को देखकर मैं धन्य हो गई । उन्हीं गुरु नानेश के पट्टधर हुक्मगच्छ के नवम पट्टधर आचार्य रामलाल जी म.सा. को सादर नमन करती हूं ।

मेरी मम्मी लताबाई कांकरिया ने भी गुरुदेव की स्मृति में स्थानक में प्रवेश के साथ मुख वस्त्रिका बांधना साधु या साध्वी के सामने खुले मुंह नहीं बोलने का प्रण किया ।

-कुमारी पायल

चमत्कार

घटना उस समय की है जब गुरुदेव रायपुर विराजे थे । घर पर गोचरी हेतु पधारे उसी समय मेरे देवरजी की ४ वर्षीय बाई पद्मा दूसरी मंजिल से गिर कर बेहोश हो गई । उसी समय गुरुदेव ने मंगलिक फरमाया और आश्चर्य अचेत बाला तत्काल खड़ी हो गई।

-श्रीमती भंवरी देवी मुथा, रायपुर

अहमदाबाद से मुंबई के मार्ग पर कार दुर्घटना में हम गुरुनाना के स्मरण से सपरिवार बच गये । अनावश्यक पुलिस केस वापस हो गया ।

-श्रीमती अर्चना कुलदीप बरडिया, चेन्नई-७९

सावन वदी ४ सन् १९९२ को मेरे पैर में फैक्चर हो गया था, पैर में पांच टांके भी आये। तीन साल तक बेडरेस्ट रहा। भावनानुसार श्रद्धानिष्ठ अंतरंग धर्म सहेली कमलाबाई वैद के सहयोग से बीकानेर में गुरुदेव के दूर से दर्शन किया। गुरुदेव का ऊर्जापूरित हाथ उठा और दया पालो अमृतमय वाणी निकली। देखते ही देखते स्थिति ऐसी बनी कि दर्शनार्थ गई थी दो के सहारे। आई अकेले चलकर, वह भी दोनों हाथ में दो सूटकेस लेकर।

-कंवरबाई लूनिया बालाघाट

गुरु ने दी दवा

सन् १९८५ में आचार्य देव का चातुर्मास ब्यावर में था, मैं और मेरी सास जी, देवरानी हम तीनों उदयपुर से समाज की बसों में गुरुदेव के दर्शनार्थ ब्यावर पहुंचे। हम पहुंचे उस समय प्रवचन प्रारंभ होने वाला था। पहले प्रवचन स्थविर प्रमुख श्री ज्ञानमुनि जी म.सा. का हो रहा था।

फिर गुरुदेव का प्रवचन प्रारंभ हुआ। प्रवचन की समाप्ति पर मंत्री जी ने कहा कि गुरुदेव के पास जो भी अपनी बात रखना चाहता हो तो श्रावक-श्राविका का समय २ बजे से ३ बजे तक का है। खाना खाने के बाद मैं भी उस लम्बी कतार में खड़ी हो गई। मन में बार-बार विचार आ रहा था कि क्या पता भगवन् तक पहुंचते-पहुंचते समय समाप्त हो जाएगा, मन में धुक-धुकी लग रही थी।

मेरा भी नम्बर आराध्य देव, प्रेरणा के स्रोत की कृपा से आ गया। भगवन् से मैंने कहा कि मुझे रात में नींद नहीं आती व कभी-कभी बहुत बैचेनी रहती है। काफी इलाज कराया है।

भगवन् ने फरमाया सब ठीक हो जायेगा और मुझे कहा कि सोते समय ग्यारह नवकार मंत्र स्मरण करके सोया करो। मैंने उसी दिन से गुरु स्मरण व नवकार मंत्र स्मरण किया। उस रात इतनी अच्छी नींद में सोई, ऐसी कभी नहीं सोई। वह दिन व आज का दिन गुरु-स्मरण एवं नवकार-मंत्र को मैं हमेशा गिनती हूं। हमेशा गुरु नाम की दवाई लेते ही नींद आ जाती है, ऐसा है गुरु का प्रसाद। जिसे स्मरण करते ही सारी बीमारी दूर हो जाती है। यह गुरु चमत्कार ही है।

-कंचन बोर्दिया

नैया पार लगाई

हैदराबाद प्रवास के दौरान रात्रि में हमारी कार नदी के पुल में आई बाढ़ में फंस गई थी। पानी कार के अंदर भरने लगा था मगर नाना नाम स्मरण ने नैया पार लगा दी। अगले दिन गुरुदेव ने स्थिति जानने के बाद ऐसे रात्रि में नहीं चलने के नियम श्रावकजी को दिलाये।

-श्रीमती भंवरीदेवी गुथा, रायपुर

ज्योतिर्मय व्यक्तित्व के धनी

दिव्य ज्योति तपोमूर्ति आचार्य श्री नानेश का जीवन सरल, सरस व संयम साधना की उत्कृष्ट ज्योति से ज्योतित था। आराध्य प्रवर ने अपने मन को ध्यानाराधना से साध लिया था। इसलिए उनका जीवन तेजस्वी बन गया था। उनकी वाणी में दैविक शक्ति थी, उनकी कोमलता सहिष्णुता सब कुछ साधना से अनुप्राणित थी।

अलौकिक रही है हमारे आचार्य भगवन् की संयम साधना। ऐसी महान् आत्माओं की स्मृतियां इतिहास में स्वर्णाक्षरों का रूप लेती है। यह ज्योतिर्मय इतिहास कागजों पर नहीं मनुष्य के मन मस्तिष्क पर अंकित हो जाता है जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता।

आप श्री जी ने अपनी तेजोमय वाणी से जन-२ का कल्याण किया। भारत की जनता को त्यागमय एवं तपोमय जीवन जीने के लिए प्रेरित किया जो शान्त एवं सुखी जीवन जीने के लिए अनिवार्य है। साथ ही विश्व को अहिंसा, सत्यनिष्ठा, समता दर्शन आदि का दिव्य संदेश अपने पीयूष वर्षी तेजस्वी प्रवचनों के माध्यम से देते रहे। ऐसी विरल विभूति का दिव्य अमर संदेश आज भी विद्यमान है एवं हमारे लिए अनुकरणीय है।

-रन्नु धींग, कानोड़

अमृतवाणी

दोहा : जैनों के इतिहास में, उज्ज्वल है इक नाम।
'नाना' गुरुवर को करें, हम सब कोटि प्रणाम ॥
सुनो सुनाऊं अमृतवाणी, जैनागम की अमिट कहानी।
नानालालजी महाराज की, अमर कथा, यह अमर कहानी ॥
दांता जन्मस्थान सुपावन, मेवाड़ी धरती मनभावन।
मोड़ीलाल के आंगन आए, मां शृंगार की कोख सरावन ॥
श्री गुरु गणेशीलाल से शिक्षित, 'आगम पुरुष' हुए जहां दीक्षित।
अपने गुरु के ये अनुयायी, पूर्ण रूप से रहे परीक्षित ॥

दोहा : गुरु गणेशीलाल से, लिया धर्म का ज्ञान।
ज्ञानी गुरु नाना करें, जन-जन का कल्याण ॥
परम पूज्य गुरुवर ब्रह्मचारी, दर्शन ज्ञान चारित्र के धारी।
युग मानव हैं इस कलियुग में, मानो तीर्थंकर अवतारी ॥
'समता' जिनका है आभूषण, जैना कुलमणि ये कुलभूषण।
समता म्ह अस्तित्व के बल से, दूर करें तत्काल प्रदूषण ॥

दोहा : समता दर्शन ज्ञान के, रत्न का दिव्य प्रकाश।
जिनसे आलोकित हुआ, धरती और आकाश ॥
दृढ़ होकर जैनागम पाला, तीर्थंकरों का पथ सम्भाला।
धर्मपाल के धर्मप्रणेता, अन्तरमन में करें उजाला ॥
जहां भी जाए, भास्कर का आलोक, अन्धकार को दूर भगाये।
उसी तरह गुरु ज्ञान से सूरज, समदृष्टि हो राह दिखाये ॥

दोहा : ज्ञान की किरणों को भला, कौन बताये जात।
ज्ञान जहा फैले वहां, होता नया प्रभात ॥
ऊंचनीच का भेद ना माने, प्राणिमात्र का दुख पहचाने।
जीओ और जीने दो सबको, मूलमंत्र बस इतना जाने ॥
आदिनाथ जिनधर्म के पालक, महावीर के पथ परिचालक।
क्षमाशील ये युगमानव हैं, धर्मपाल पथ के संचालक ॥

दोहा : हुक्मसंघ की यह निधि, जिनशासन की शान।
इस युग में दूजा नहीं, नाना गुरु समान ॥
पंचम गुरु ने जो फरमाया, सत्य वही उभरकर आया।
अष्टम गुरु आचार्य प्रवर ने, हुक्मसंघ का नाम पूजाया ॥
नाना गुरु की महिमा न्यारी, हुक्मसंघ अष्टम पद धारी।
अष्ट सिद्धि नवनिधि के दाता, श्रावक जन जिनके आभारी ॥

दोहा : त्यागमूर्ति ने कर दिया, औषधि का परित्याग।
राग रहित नाना गुरु, कैसा यह वैराग ॥
मोहपाश जिन्हें बाँध ना पाया, त्याग दी जिसने जग की माया।
औषधि त्याग भी कर दीन्हा है, कहकर के नश्वर यह काया ॥
धन्य 'उदयपुर' धन-धन नाना, इस नगर से है सम्बन्ध पुराना।
आया है 'राजेन्द्र' मनाने, गुरुवर हमें ना यूँ लौटाना ॥
संयमधारी को भला, कैसे दें हम ज्ञान।
हम सब अनुयायी तेरे, आप गुरु भगवान ॥

* * *

आचार्यप्रवर नाना, हमें प्राणों से प्यारे हैं ।
अपने गुरुवर नाना, आगम उजियारे हैं ॥
आगम से जो पाया, आगम को दान दिया ।
इस अडिग तपस्वी ने, सबका कल्याण किया ।
गुरु धर्मपाल जो भी वो भाई हमारे हैं ॥
गुरुदेव के चरणों में अविरल बरसे चन्दन ।
चलो चलो करें मिलकर श्री चरणों का वन्दन ।
गुरुचरणों की सेवा, भव पार उतारे हैं ॥
शासन का अनुशासन आजन्म निभाना है ।
गुरु के आदर्शों को जग में फैलाना है ।
अपने गुरु नाना के, सिद्धान्त ही न्यारे हैं ॥
'राजेन्द्र' मोक्ष चाहो तो साधक बन जाओ ।
आराध्य ये सौंपा है, आराधक बन जाओ ।
ये प्रेम की मूरत हैं, दीनों के सहारे हैं ॥

* * *

(तर्ज : सेनानी)

नाना गुरुवर आचार्यप्रवर, आगम की अमिट निशानी है।
गुरु धर्मपाल प्रतिबोधक हैं, जिनकी अमृतमय वाणी है॥
दाता की भूमि धन्य हुई, जहाँ इस दाता ने जन्म लिया।
मेवाड़ उदयपुर साक्षी है, जहाँ ज्ञान का भानु उदय किया॥
पितु मोडीलालजी धन्य हुए, जिनके आँगन ये फूल खिला।
माता शृंगार की कोख धन्य, जिसको ऐसा शृंगार मिला॥
गुरु जिनके गणेशीलाल रहे, जिनसे आगम का ज्ञान लिया।
उस आगम पुरुष ने आजीवन, केवल आगम का दान दिया॥
गुरुवर अखण्ड ब्रह्मचारी हैं, सम्यक् चारित्र के धारी हैं।
चूड़ामणि हैं चारित्ररत्न, ये तीर्थंकर अवतारी हैं॥
समता दर्शन के प्रणेता हैं, समता जिनका आभूषण है।
समताधारी ये युगमानव, ये कुलमणि हैं कुलभूषण हैं॥
जो पिछड़ गई थी जनजाति, उनको नया पंथ दिखाते हैं।
जो इनकी शरण में आते हैं, वो धर्मपाल कहलाते हैं॥
पंचम आचार्य की वो वाणी, अष्टम पट्टधर के बारे में।
दैदीप्यमान सूरज होगा, नाना जग के अंधियारे में॥
अष्टम आचार्य ये नाना हैं, अष्टम की महिमा भारी है।
पूजा के आठों द्रव्यों की, तरह वो संयमधारी हैं॥
नाना ये केवल नाम में हैं, कभी किसी को ना नहीं करते हैं।
अपने आचार विचारों से, जन-जन के संकट हरते हैं॥
ये हुक्मगच्छ उजियारे हैं, इनका हर हुक्म निराला है।
'राजेन्द्र' त्यागमय साधु ने, पग-पग पर हमें सम्हाला है॥
चलो त्यागमूर्ति गुरुवर के, चरणों में शीश झुकायेंगे।
उनके आदर्शों पर चलकर, हम धर्मपाल कहलायेंगे॥

–राजेन्द्र जैन, कलकत्ता

वन्दना के स्वर

सांध्य
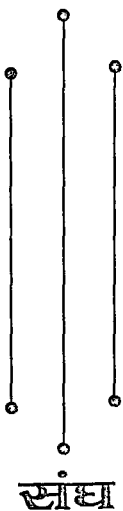
श्री गंगानगर: प्रातः काल यह हृदयविदारक समाचार जानकर एकाएक किसी को विश्वास नहीं हुआ। महासती श्री चंचलकंवर जी म.सा. आदि ठाणा के लिए भी यह समाचार एक पल के लिए अविश्वसनीय रहा। रात्रि आठ बजे संपूर्ण जैन समाज द्वारा श्रद्धांजलि सभा का आयोजन हुआ। प्रवचन बंद रहा। नवकार मंत्र का अखंड जाप किया गया। 30 नवम्बर को प्रवचन में श्रद्धांजलि सभा में विदुषी महासती जी एवं वक्ताओं ने भाव व्यक्त करते हुए इसे अपूरणीय क्षति बतलाया।

- मोहिंदरपाल जैन उपमंत्री एस. एस. जैन सभा

पाली मारवाड़: श्री इंद्र कुंवर जी म.सा. आदि ठाणा 14 के सान्निध्य में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के मंत्री श्रीमान ताराचंद जी सिंघवी ने आचार्य श्री नानेश को स्मृति पटल पर लाते हुए उनके जीवंत आदर्शों का उल्लेख किया।

वर्धमान जैन श्रावक संघ के श्रीमान् सम्पतलाल जी तातेड़ ने श्रद्धा सुमन समर्पित किये।

श्री जेठमल जी, महिला मंडल की तरफ से श्रीमती रतन देवी डोसी एवं आशा देवी पारख साधुमार्गी जैन संघ के नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री मोहनलाल जी तलेसरा, श्री सुभाष सेठिया ने अपने आचार्य भगवन् के उपकारों को स्मृति पट पर लाते हुए श्रद्धांजलि समर्पित की एवं चार-चार लोगस्स के ध्यान के साथ स्मृति-सभा विसर्जित की।

-सुभाष सेठिया

मावली जंक्शन: जैन दिवाकर पंडित मुनि श्री चौथमल जी म.सा. की शिष्या बाल ब्रह्मचारिणी महासती श्री शांताकंवर जी म.सा. ने धर्मसभा में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आचार्यदेव के 37 वर्षीय आचार्यत्व पर प्रकाश डाला एवं शांति की प्रार्थना की। संघ सदस्यों ने भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

-शांतिलाल कोठारी, मंत्री
श्री वर्ध. स्था. जैन श्रावक संघ

इन्दौर: विसर्जन आश्रम में डा. श्री करुणाकर त्रिवेदी की अध्यक्षता में प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। श्री मानव मुनि ने कहा -गांधी के बाद अछूतोद्धार का क्रांतिकारी कार्य करते हुए आचार्य श्री ने हरिजन बलाई जाति को धर्मोपदेश देकर उनका जीवन बनाया। आचार्य श्री का महाप्रयाण होने से धर्मपाल समाज अनाथ हो गया। श्री महेन्द्र कुमार जी आदि ने भी भाव व्यक्त किये।

-मानव मुनि

चंडीगढ़: श्रमणसंघीय संत श्री सुभाष मुनि जी म.सा. ने स्मृति सभा में आचार्य श्री को समता व सरल स्वभाव का धनी बताया। पानमल जी बोथरा, श्यामलाल जी सेठिया ने भी भाव व्यक्त किये। -पानमल बोथरा

मद्रास: यह हृदय विदारक समाचार मिलने से शहर के सभी स्थलों में जहां चारित्रात्माएं विराजित थीं, व्याख्यान बंद रखे गये। महामंत्री श्री सोभागमल जी म.सा., सलाहकार श्री सुमनमुनि जी म.सा. आदि श्रमण संघीय चारित्रात्माओं एंव तेरापंथी साध्वियों ने दूसरे दिन आयोजित गुणानुवाद सभा में श्रद्धा सुमन अर्पित किये। व्यवसाय बंद रहे। शाम को गरीब बच्चों को भोजन दिया गया। साहूकार पेठ में भंवरलाल जी गोठी, कांग्रेस मंत्री श्री रतन जी बोहरा आदि ने भाव व्यक्त किये।

-के .सी. सेठिया

उज्जैन: श्री वर्धमान-स्थानकवासी जैन श्रावक संघ नमक मंडी उज्जैन द्वारा श्रमण संघीय प्रवर्तक पूज्य श्री उमेश मुनिजी म.सा. के सान्निध्य में पूज्य आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म.सा. के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए गुणानुवाद सभा आयोजित की।

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ नमकमंडी उज्जैन के अध्यक्ष सर्वश्री विमल चंद मूथा, चातुर्मास संयोजक श्री पारसमल चौरडिया, श्रावक संघ के पूर्व मंत्री श्री मांगीलाल बैंक वाला, संघ उपाध्यक्ष रामचंद्र श्रीमाल, श्री मनोहरलाल जैन धारवाले, महिला वर्ग से श्रीमती कमलादेवी, श्रीमती कमला बेन कोठारी ने आचार्य श्री नाना लाल जी म.सा. के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके गुणानुवाद किये व भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम का संचालन संघ उपाध्यक्ष रामचंद्र श्रीमाल

ने किया। अंत में उपस्थित समुदाय द्वारा ४ लोगस्स का कायोत्सर्ग किया गया। -रामचंद्र श्रीमाल

कुनूर : पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. के देवलोक के समाचार से शोक संतप्त पूज्य गुरुदेव के अनन्य भक्तों ने अपने-अपने प्रतिष्ठान बंद कर दिये एवं रात्रि ८ बजे श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सोसायटी के प्रांगण "जैन स्थानक भवन" में शोक सभा का आयोजन, स्थानीय संघ के अध्यक्ष अनोपचंद जी बोथरा की अध्यक्षता में किया गया। संघ के मंत्री श्री धर्मचंद जी बाफणा ने उपस्थित जन समुदाय को चार-चार लोगस्स का ध्यान करने की प्रेरणा दी। श्री मांगीलाल जी आलीझार, श्री सुदर्शनलाल जी पिपाड़ा, श्रीमती पानकंवर बाई कोठारी, जयचंद बाफणा, जम्बूकुमार बाफणा ने अपने भाव अभिव्यक्त किये। पूज्य गुरुदेव के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुए, अनेक उदाहरण पेश किये गये।

-जम्बूकुमार बाफणा, शाखा संयोजक

सेलम : श्रमण संघीय आचार्य सम्राट पू. श्री शिवमुनि जी म.सा. की सुशिष्याएं शासन चंद्रिका बा.ब्र. श्री कौशल्या कुमारी जी.म.सा. ठाणा 5 के सान्निध्य में आचार्य सम्राट श्री नानालालजी म.सा. की श्रद्धांजलि सभा का आयोजन सेलम श्री संघ ने किया। जिसमें मंत्री श्री दिनेशजी पींचा, महावीरजी पींचा, सौ.सुंदर बाई पींचा ने अपने गुरुदेव स्व. श्री नानालाल जी म.सा. के गुणानुवाद भावपूर्ण शब्दों में कर उनके जीवन के संस्मरण देते हुए भजन द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की।

पू. श्री सुलक्षणप्रभा जी म.सा. ने समता विभूति आचार्य नानेश की स्मृति सभा में सुन्दर प्रकाश डाला एवं उनसे प्रसूत ज्ञान सुमनों की अमर सुगंध से समाज लाभान्वित हो, ऐसी सच्ची श्रद्धांजलि का आह्वान किया।

तत्वचिंतिका पू. सुदर्शन प्रभा जी म.सा. ने कहा कि आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. उत्कृष्ट समीक्षण ध्यान योगी संतरत्न थे।

ज्ञानसाधिका पू. स्नेहप्रभाजी म.सा. ने आपके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा सभी महापुरुष सामायिक साधना से तिरे हैं। श्रावकों में भी समत्व साधना अनिवार्य है। पूज्य गुरुणी श्री कौशल्या कुमारी जी म.सा. ने फरमाया कि इन छह महिनों में हमारे स्थानकवासी संघ के तीन तीन दिग्गज आचार्यों का स्वर्ग गमन हृदय को व्यथित कर रहा है। आचार्य श्री नानेश भी उसी पथ पर चले गये। यह स्थानकवासी समाज की महनीय क्षति भविष्य में अपूर्णीय है।

सेलम संघ के अध्यक्ष श्री मनुभाई मेहता ने पू. आचार्य श्री नानेश के स्वर्गारोहण पर हार्दिक वेदना व्यक्त की।

-भोपालचंद पींचा

बैंगलोर : चातुर्मासार्थ अत्र विराजित पूज्य श्री [illegible] जी म.सा. आदि ठाणा-3 के सान्निध्य में श्री [illegible] जैन संघ के आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म.सा. को श्रद्धांजलि अर्पित की गई एवं गुणानुवाद के साथ ४ (चार) लोगस्स के कायोत्सर्ग द्वारा सामूहिक श्रद्धा-सुमन अर्पित किये गये।

पूज्य श्री जसराजजी म.सा. ने स्वर्गस्थ आचार्य प्रवर के जीवन पर संक्षिप्त प्रकाश डालते हुए अपने श्रद्धा-प्रसून अर्पित किये। इसी कड़ी में संघ अध्यक्ष श्री पारसमलजी बागरेचा, मंत्री श्री ज्ञानराजजी मेहता एवं सहमंत्री श्री चेतनप्रकाश जी डूंगरवाल ने भी अपनी ओर से आचार्य प्रवर को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की एवं उनकी आत्मा की चिर शान्ति हेतु मंगल मनीषा की अभिव्यक्ति प्रकट की। - शांतिलाल बोहरा

टोंक : परम आराध्य आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. के महाप्रयाण का समाचार प्राप्त होते ही संघ में शोक व्याप्त हो गया और श्रावक-श्राविकायें श्रीमाल स्थानक भवन में एकत्रित हो गये। अत्र विराजित महासतियां जी श्री पूर्णिमा श्री जी म.सा. ठाणा 4 के सानिध्य में शोक सभा का आयोजन किया गया। महासतियां जी म.सा. ने इस अवसर पर आचार्य भगवान के वैराग्य काल से आचार्य पद प्राप्त होने एवं अब तक के जीवन की अनेक घटनाओं पर प्रकाश डालते हुए, उनके द्वारा प्रवर्तित समतामय समाज के स्वप्न को पूरा करने का आह्वान किया।

वरिष्ठ श्रावक सर्वश्री अमरचन्द जी छाजा, मोतीलाल सोढ़ा, अजीत कुमार बम व उमरावमल जैन ने आचार्य

गवन् के जीवन की चारित्रिक विशिष्टताओं पर प्रकाश
ला। अन्त में संघ मंत्री श्री उम्मेदसिंह मेहता ने पू.
ाचार्य भगवन् के निधन को जैन जगत व राष्ट्र की अपूरणीय
ति बताया। -उमरावमल जैन

ड्रीराजहरा :प.पू. आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. के
ानिर्वाण का समाचार ज्ञात होते ही संपूर्ण जैन समुदाय
शोक की लहर छा गई। स्थानकवासी संप्रदाय के सभी
र्मिक बन्धुओं ने अपना व्यवसाय बन्द रखा। अनेक
ई-बहनों ने दया, उपवास, एकासना किया।

शोक सभा में आचार्य श्री के जीवन परिचय का
ेख करते हुए आचार्य श्री द्वारा जिन शासन की सेवा
उनके द्वारा मानव समाज के लिए किये गए अनेक
ुकरणीय कार्यों पर अनेक वक्ताओं ने प्रकाश डाला।

-मोहनलाल गुणधर

महामंत्री श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन संघ

तरी: शोक संतप्त धमतरी नगर में दिनांक 28 .10. 99
संपूर्ण जैन समाज की दुकानें बंद रखी गई एवं स्वर्गीय
नालाल जैन स्थानक भवन में 12 घंटे का अंखड
कार मंत्र का जाप रखा गया।

दिनांक 29.10. 99 को प्रातः 9.30 बजे स्थानक
[illegible] । जिसमें मधुर
[illegible] ी म.सा. आदि
ा 3 ने आचार्य श्री जी के जीवन के बारे में बहुत ही
ल ढंग से प्रकाश डाला। आचार्य श्री नानालाल जी.
सा. का जीवन परिचय संघ सदस्य दीपक बाफना द्वारा
ा गया। संघ के संरक्षक रानीदान गोलछा, सचिव
चंद गोलछा, मूर्तिपूजक संघ के सचिव शेषमल राखेचा,
म्बर जैन पंचायत के प्रमुख चंदुलाल जैन एवं समता
ा संघ के कमलेश कोटडिया, समता बालिका मण्डल
कु. पूजा ललवानी आदि सभी ने आचार्य श्री जी के
नी जीवन पर प्रकाश डाला एवं भावांजलि अर्पित की।

श्रद्धांजलि कार्यक्रम में सेमरा, भखारा, नंदिनी आदि
संघ के भाई बहिन ने भी उपस्थित होकर श्रद्धांजलि
र्पित की। शाम 4 बजे कुष्ठ आश्रम रानी बगीचे में
भिक्षुक भोजन का कार्यक्रम संघ सदस्यों के सहयोग से
संपादित हुआ। -महेश दिनेश कोटड़िया

महिदपुर : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ
द्वारा श्रमण संघीय प्रवर्तक श्री उमेश मुनि जी म.सा. की
आज्ञानुवर्ती महासती श्री शांताकुंवरजी म.सा. आदि
ठाणा 3 के सान्निध्य में आचार्य श्री नानालालजी म.सा.
को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के
अध्यक्ष श्री सुरेशचन्द्रजी चण्डालिया, पूर्व अध्यक्ष श्री
धनसुखलालजी कोठारी, वरिष्ठ श्रावक श्री बाबूलालजी
मेहता, श्री आनंदीलाल जी लोढ़ा, सचिव श्री बंसीलालजी
बूरड़, श्री जवाहरजी बूरड़ एवं श्री सुगनमलजी बूरड,
तथा महिला मण्डल की ओर से श्रीमती किरण बाई बुरड़
ने आचार्य श्री नानालालजी म.सा. के जीवन पर प्रकाश
डालते हुए गुणानुवाद किये एवं श्रद्धा सुमन अर्पित किये।
कार्यक्रम का संचालन संघ सचिव श्री बंसीलाल बुरड द्वारा
किया गया।

अंत में श्रावक श्री बाबूलालजी मेहता द्वारा नवकार
मंत्र एवं चार लोगस्स का काउसग्ग करवाया गया।

-संघ सचिव, बसीलाल बुरड़

जयपुर : लाल भवन चौड़ा रास्ता में वर्धमान स्थानकवासी
जैन श्रावक जयपुर संघ द्वारा आयोजित गुणानुवाद सभा मे
साध्वी श्री रतन कंवर जी म.सा. ने कहा कि महापुरुषों
के जीवन से शिक्षा ग्रहण कर हमें अपना जीवन
सुधारना चाहिये। संघ मंत्री श्री उमरावमल चौरड़िया ने
इस अवसर पर कहा कि आचार्य श्री नानेश भारत के
आध्यात्मिक गगन के उज्वल नक्षत्र थे। श्री नानेश का
नाम कोटि-कोटि जन के हृदय में तथा इतिहास के पृष्ठों
पर सदैव अंकित रहेगा।

डा. संजीव भानावत ने उनके जीवन पर प्रकाश
डालते हुए बताया कि समता विभूति आचार्य भगवन् ने
मानव को तनावमुक्त जीने के लिए समीक्षण ध्यान साधना
विधि की अनुपम औषधि दी हैं। त्यागमूर्ति श्री गुमानमल
जी चौरड़िया ने कहा कि आचार्य भगवन् ने अपने जीवन
काल में मर्यादाओं का पूर्ण पालन करते हुए संस्कृति की रक्षा

कर चतुर्विध संघ को धर्म प्रकाश से दैदीप्यमान किया है।

ज्ञानमंत्री श्री मोहनलालजी मूथा, सहमंत्री श्री उत्तमचंद डागा, श्री चैनसिंह बरला, श्री सुरेन्द्र पोखरना, श्री हीराचन्दजी हीरावत, श्री विनोद सेठ, श्री पुखराज चौरड़िया, श्रीमती निर्मला जी चौरड़िया, श्री राजकुमार जी बूरड़ एवं महिला समिति ने भी आचार्य श्री के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए अपनी भावांजलि प्रकट की।

-उमरावमल चौरड़िया, संघमंत्री

रायगंज : "परम श्रद्धेय धर्मपाल प्रतिबोधक महापुरुष का पार्थिव देह अब हमारे बीच नहीं रहा पर उनके ज्ञान की किरणें सारे विश्व में व्याप्त है। मेवाड़ी मेवे की खुशबू चारों ओर महक रही है।" यह कथन है महिला समिति की पूर्व मंत्री श्रीमती धनकंवर कांकरिया का।

श्री जैन सभा रायगंज की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की गई थी। सर्वप्रथम श्री महावीर चन्द जी कांकरिया ने गुरुदेव का परिचय दिया। फिर तेरापंथी व बाईस सम्प्रदाय के सभी उपस्थित महानुभावों ने अपने भाव व्यक्त किये। चार लोगस्स का ध्यान तथा नवकार मंत्र के जाप द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

-श्रीमती धनकंवर बाई कांकरिया

कूचबिहार : साधुमार्गी, तेरापंथी व मंदिर मार्गी सभी जैनियों ने जाप इत्यादि के विभिन्न कार्यक्रम रखे। रात 7 बजे स्थानीय जैन मंदिर में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। तेरापंथ महिला मण्डल की श्रीमती सरोज देवी सेठिया के सभा संचालन में तेरापंथ महिला मण्डल की मंत्राणी श्रीमती तारा देवी बोकड़िया, स्थानीय श्री संघ के मंत्री श्री गणेशमल जी सुराणा, शाखा संयोजक श्री इन्दरचन्द जी बुच्चा, श्री जैन मंदिर के मंत्री श्री राजेन्द्र बैद, तेरापंथ युवक परिषद के श्री कमल भंसाली व ज्ञानशाला के संयोजक श्री धर्मचंद जी भंसाली, तेरापंथ सभा के श्री महालचंद जी बैद, श्रीमती सुशीला देवी भूरा व श्रीमती मंजू देवी भूरा ने गद्य पद्य द्वारा गुरुदेव को श्रद्धांजलि अर्पित की।

-इन्दरचन्द बुच्चा, शाखा संयोजक

बड़ौत : किसी अन्य कार्य से दिल्ली जाने पर [illegible] कि आचार्य देव नहीं रहे। आचार्य श्री चले गये, [illegible] युगपुरुष, कालजयी व्यक्तित्व चला गया। आचार्य श्री के आकस्मिक देहावसान से एक इतिहास पुरुष तथा एक [illegible] का अंत हो गया।

अ.भा.श्वे. स्था .जैन कान्फ्रेन्स उ.प्र. युवा [illegible] की आपातकालीन विशिष्ट बैठक में आचार्य श्री को श्रद्धासुमन अर्पित किये गये। आचार्य देव पूज्य श्री नानालाल जी म.सा. के आकस्मिक देहत्याग से जो शून्यता आई, उसकी पूर्ति निकट भविष्य में संभव नहीं। उ.प्र. स्थानकवासी समाज का युवा वर्ग उनके चरणों में अपना श्रद्धांजलि अर्पित करता है तथा हार्दिक शोक प्रकट करता है।

उ.प्र. युवा कान्फ्रेन्स तथा व्यक्तिगत [illegible] आचार्य श्री के चरणों में मेरी मौन श्रद्धांजलि अर्पित है।

-अमित रान [illegible]

अध्यक्ष उ.प्र. युवा कॉन्फ्रेंस

मंडी बड़ौत : हमारे संघ के प्राणाधार, धर्मपाल प्रतिबोधक, समता विभूति आचार्य भगवंत श्री नानालाल जी म.सा. स्वर्गगमन कर गये। पूज्य आचार्य देव का व्यक्तित्व एवं कृतित्व सम्पूर्ण मानवता के लिए महद् अवदान [illegible] समाज को आदेश निर्देशों में व्यवधान उत्पन्न होना स्वाभाविक है परन्तु उनके विद्वान शिष्य रत्न युवाचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म.सा. से सम्पूर्ण समाज आश्वस्त है। मैं मंडी बड़ौत श्री संघ की ओर से आचार्य देव को श्रद्धासुमन समर्पित करता हूँ। - सुरेशचन्द्र जैन

जोधपुर : परमाराध्य आचार्य श्री नानेश को [illegible] अत्र विराजित महासती मण्डल की ओर से [illegible] भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए [illegible] सुशीलाकुंवर जी म.सा. ने आराध्य देव के गुणों को [illegible] में उतारने को ही सच्ची श्रद्धांजलि बताया। [illegible] में वैराग्यवती सुश्री जया छाजेड़, रमेशचंद बैद, [illegible] जी सांखला, श्री सोहन जी मेहता आदि ने अपने [illegible] प्रकट करते हुए भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए [illegible] लोगस्स द्वारा ध्यान किया गया। - रमेशचंद बैद

हांगकांग: आचार्य श्री नानेश एक ऐसी कड़ी का प्रतिनिधित्व कर रहे थे, जिसमें सामायिक स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज साहब, बहुश्रुत, प. श्री समर्थमल जी महाराज साहब आचार्य सम्राट श्री आनन्द ऋषि जी महाराज साहब आदि महापुरुष थे। आचार्य श्री के देहावसान से एक स्वर्णिम युग का पटाक्षेप हो गया है।

श्री जैन रत्न युवक हांगकांग शाखा के सभी सदस्यगण आचार्य श्री के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए यही कामना करते हैं कि आचार्य श्री नानेश के पट्टधर तत्वचिन्तक श्री राममुनि जी महाराज साहब के नेतृत्व में यह संघ उत्तरोत्तर वृद्धि करे। विरासत से स्थापित साम्प्रदायिक सौहार्द्र अक्षुण्ण रहे।

-राजेन्द्र डागा

मंत्री, जैन रत्न युवक संघ हांगकांग

मोखन: जिन शासन के दमकते हुए नक्षत्र के अस्त हो जाने पर भाव विह्वल जैन श्री संघ, नवचेतना युवासंघ एवं बालक-बालिका मण्डली द्वारा सामूहिक रूप से आयोजित सभा में सभी ने चार-चार लोगस्स का काऊसग्ग किया, नवकार मंत्र का जाप किया एवं आचार्य श्री की आत्म-शांति के लिए प्रभु से प्रार्थना की। अनेक व्यक्तियों ने भाव व्यक्त करते हुए संघ में आस्था व्यक्त की तथा आचार्य भगवन के बताए मार्ग का अनुसरण करने की शपथ ली। संघ अध्यक्ष श्री माणकलाल जैन, अशोक जैन, अभय जैन, रिखब जैन, सुजानमल जैन, विमल जैन, मनोज जैन, पंकज जैन, सहित सभी व्यक्तियों, महिलाओं एवं बालकों ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

-अनोखीलाल मोगरा

रतलाम: समता विभूति आचार्य नानालालजी म.सा. के देवलोकगमन होने पर स्थानीय सागोद रोड़ स्थित समता शिक्षा निकेतन के प्राचार्य श्री सिरेमल सेठिया, शिक्षक परिवार एवं विद्यार्थियों द्वारा श्रद्धांजलि दी गई। श्रद्धांजलि सभा में, संस्था अध्यक्ष श्री विजयकुमार जी कटारिया एवं सचिव श्री सुखलाल जी मालवीय भी उपस्थित थे। प्राचार्य श्री सेठिया ने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए आचार्य श्री के जीवन पर प्रकाश डाला एवं कहा कि यह संस्था आचार्य श्री की प्रेरणा स्वरूप स्थापित की गई है। जहां म.सा. के आचार-विचार और संस्कारों का पूर्णतः अमल किया जाता है। - सिरेमल सेठिया

बदरपुर: (आसाम) अनन्त पुण्यवानी अनोखे गुरु भगवन की शरण मिली, और उनका वृहद साया हम पर से उठ चला है, यह असहनीय-सा प्रतीत हो रहा है। गत 28 अक्टूबर को लगातार सभी घरों में जाप जारी रहा और सायं सात बजे श्रद्धांजलि सभा के लिए सभी श्री आसकरण जी दफ्तरी के यहां एकत्रित हुए। सामूहिक जाप के पश्चात् सामूहिक ध्यान किया गया। श्री रूपचंद जी सांड ने परम आराध्य गुरुदेव के जीवन पर प्रकाश डाला। सभी ने त्याग-प्रत्याख्यान किए। गुरुदेव की आत्मा जहां भी है उत्तरोत्तर मोक्ष की ओर अग्रसर हो, यह मंगल मनीषा है। -शोभा दफ्तरी

रावटी: पूज्य श्री नानालाल जी म.सा. के पंडित मरण के समाचार जानकर जैसे पहाड़ टूट गया, तूफान आ गया हो। सारे रावटी में शोक की लहर छा गई। शोक स्वरूप संघ की सभी दुकानें बंद रही। स्कूल भी बंद रही।

गुरुदेव के चरित्र का गुणगान करते हुये चार चार लोगस्स का ध्यान किया गया।

शहादा: अत्र विराजित आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के सुशिष्य शासन गौरव मुनि श्री ताराचंद जी म.सा. आदि ठाणा 3 एवम् मरुधर ज्योति प्रखर वक्ता साध्वी श्री मणिप्रभा जी म.सा. ठाणा 6 के सान्निध्य में समता विभूति पूज्य आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

प्रखरवक्ता श्री मणिप्रभाश्री जी ने आचार्य श्री नानेश को सभी वर्गों के लिए अनुकरणीय बताकर उनके बताये हुए रास्ते पर चलने का आह्वान जनमानस को कर उनका गुणानुवाद किया। मुनि श्री ताराचंद जी म.सा. ने कहा, आचार्य श्री नानेश धीर-वीर गंभीर साधक थे। आज हम सभी ऐसे महान् आचार्य श्री को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। इस अवसर पर साधुमार्गी जैन संघ शहादा के अध्यक्ष श्री मोहनलाल जी कोटडिया,

स्थानकवासी संघ के मंत्री श्री सुरेशजी छाजेड़, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री जमनमल जी गेलड़ा, मूर्तिपूजक संघ के अध्यक्ष श्री तिलोकचंद जी नाहटा ,श्री धीसालालजी कोठारिया ,समता प्रचार संघ के दिलीप जी ने अपने भाव व्यक्त कर श्रद्धांजलि दी।

श्रद्धेय आचार्य भगवन् के महाप्रयाण पर शहर के सारे प्रतिष्ठान बंद रखे गये एवं समता युवा संघ की ओर से गरीबों एवं पीड़ितों को अन्नदान किया गया।

-सुभाष कोटठिया, वनेचंद बोथरा

कलकत्ता : श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा कलकत्ता के सभागार में प्रो.कल्याणमल लोढ़ा की अध्यक्षता में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में सर्वश्री रिखबदास भंसाली, हरखचंद कांकरिया, शांतिलाल जैन, तनसुखराज डागा , अभयसिंह सुराणा, देवेन्द्र जैन, रितेश सेठिया, मदनरूपचंद भंडारी, जवाहरलाल कर्णावट, श्रीमती मंजू भंसाली, श्रीमती किरण हीरावत, श्रीमती सूरज सेठिया, श्री मिश्रीलाल मरोठी, श्री चांदमल अभाणी एवं अन्य सामाजिक कार्यकर्ताओं ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि आचार्य श्री नानेश के बताये मार्ग पर चलना एवं उपदेश पर अनुकरण करना ही सच्ची श्रद्धांजलि होगी। मंगलाचरण श्री जवाहरलाल करनावट एंव सभा का संचालन रिद्धकरण बोथरा ने किया। सभा के अध्यक्ष श्रीरिखबदास भंसाली के मंगलपाठ द्वारा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

उक्त अवसर पर सभा मंत्री श्री रिधकरण बोथरा ने अपने भाव व्यक्त करते हुए स्वधर्मी भाइयों व बहनों से निवेदन किया कि जिनकी पूर्व में इस संघ के प्रति निष्ठा थी-आगे भी इसी परम्परा में पूर्ण श्रद्धा रखेंगे। आचार्य श्री ने म.प्र. में दलितोद्धारक कार्य के अन्तर्गत एक लाख से भी अधिक लोगों को सप्त कुव्यसन से मुक्ति दिलाकर धर्मपाल बनाया। इनके उत्थान हेतु इस क्षेत्र में उनके लिए शिक्षा का प्रचार-प्रसार में सतत सहयोग हो, यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

-रिधकरण बोथरा
मंत्री श्री श्वेताम्बर सभा, कलकत्ता

हैदराबाद : 'मानव समाज में अंतर चेतना को जि... कर रचनात्मक कार्यों में लगाने की भूमिका में ... का अपूर्व योगदान रहा है। जो कुछ भी शांति के ... मिल रहे हैं यह उन्हीं की कृपा का सुफल है। जिस दिन ... रूपी संपत्ति हमारे बीच नहीं रही तो उस भयावह ... की कल्पना करें तो नरक से भी बदतर जीवन ...' उक्त विचार राष्ट्र संत श्री कमल मुनि कमलेश ने ... जैन स्थानक पर आयोजित सुप्रसिद्ध आचार्य प्रवर ... नानालाल जी म.सा. की श्रद्धांजलि स्वरूप गुणानुवाद ... में विचार व्यक्त करते कहा।

अ.भा. साधुमार्गी संघ के पूर्व सहमंत्री श्री शुभकरणजी कांकरिया ने कहा कि हम संगठन, ... और समर्पण का संकल्प लेकर व्यसन मुक्त समाज ... निर्माण कर सच्ची श्रद्धांजलि दें। श्री सज्जनराज कोठारी ... दृढ़ शब्दों में कहा कि पंथों की वाड़ाबंदी समाप्त कर ... पीढ़ी धर्म और समाज में व्याप्त विषमताओं को दूर ... का संकल्प ले। श्री धर्मचंद गेलेड़ा, संघ के मंत्री ... कांतिलाल जी, श्री माणकचंद जी ब्रहोचा, श्री ... चौहान, श्री धानमल जी पितलिया, श्री संदीप मेहता, ... सरस्वती पोखरना, श्रीमती वसुमति कांफ्रेंस महिला ... की ओर से श्रीमती निर्मला मंडल, ऋषभ जैन युवक मंडल, चंदन बाला महिला मंडल ने भी भावांजलि अर्पित की। ... महेश मुनि जी ने मंगलाचरण व श्री मोहन मुनि ने विचार रखे। अंत में चार लोगस्स का ध्यान किया। संचालन ... सज्जन कोठारी ने किया।

दलकोला (प. बंगाल) : हृदय सम्राट गुरुदेव के ... प्रत्याख्यान करने के समाचार से व्यथित श्रावकों ... प्रत्याख्यान हुए। अगले दिन देवलोक गमन के ... स्तब्ध एवं शोकाकुल संघ ने व्यवसाय बंद रखा। ... श्री हनुमानमल जी, श्री रतनलाल जी सुराना ... दलकोला के सभी धार्मिक संप्रदाय के ... श्रद्धांजलि अर्पित की। लोगस्स का ध्यान, नवकार ... का जाप आदि कार्य विकास सुराना ने संयोजित किया। ... विजय सिंह सुनावत, गंगाराम सुराना, श्री ... पुगलिया, तेरापंथ सभाध्यक्ष किशनगंज, ...

युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री बाबूलाल् बैद, सचिव श्री सुजानमल सेठिया एवं महिलाओं ने गद्य पद्य के माध्यम से भाव व्यक्त किये। -पूरणमल बोथरा

राजनांदगांव : समता विभूति आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म.सा. के देवलोक गमन के समाचार से शोक संतप्त श्री देव आनंद जैन शिक्षणसंघ राजनांदगांव द्वारा विद्यालय परिसर में आयोजित भावांजलि व शोकसभा में प्राचार्य श्री एस.पी.शाह ने आचार्य श्री नानेश के त्यागमय जीवन का उल्लेख करते हुए समतामय समाज एवं धर्मपाल समाज को आचार्य देव की महान देन बताया। सभा का प्रारंभ श्रीमती चंदनबाला जैन ने किया। ट्रस्टी श्री पीरदान जी कांकरिया ने शोक प्रस्ताव का पाठ कर चार लोगस्स का ध्यान व नवकार मंत्र का जाप करवाया। इस अवसर पर श्री दुलीचंद जी पारख संघ उपाध्यक्ष, श्री प्रकाशचंद जी सांखला, श्री मोहनलाल जी कवाड़, बालनिकेतन प्रधानध्यापिका श्रीमती मनोरमा शर्मा सहित समस्त शिक्षकवृन्द एवं विद्यार्थी उपस्थित थे। -अशोक पारख, मैनेजर

लाडनूं : आचार्य श्री नानेश साधुमार्गी परम्परा के तेजस्वी व वर्चस्वी आचार्य थे। जैन परंपरा में आचार्यों की लंबी शृंखला में अनेक प्रतिभा संपन्न एवं समर्थ आचार्य हुए हैं जिनकी अति विशिष्ट प्रभावना इतिहास पृष्ठों में अंकित है। आचार्य श्री नानेश ने जैन शासन की उल्लेखनीय सेवा करते हुए अपने विविधमुखी अवदानों से साधुमार्गी संप्रदाय को समृद्ध किया है। आपके अनुशासन में शिष्य संपदा की भी उल्लेखनीय अभिवृद्धि हुई है

आचार्य श्री नानेश के देवलोक गमन से जैन शासन की अपूरणीय क्षति हुई है। वे जैन एकता के पृष्ठ पोषक थे। तेरापंथ संघ के नवमाधिशास्ता आचार्य श्री तुलसी एवं वर्तमानाचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने जैन एकता के लिए जो प्रयास किये और कर रहे हैं, आचार्य श्री नानेश न केवल मनसा वाचा, सहभागी थे, वरन उन्होने यथासमय अपनी ओर से पूरे प्रयास भी किये। आचार्य श्री के उत्तराधिकारी आचार्य श्री रामलालजी म.सा. के सक्षम नेतृत्व में साधुमार्गी धर्म संघ जैन शासन की प्रभावना एवं जैन एकता के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे। ऐसी मंगलकामना करते हुए जैन विश्व भारती परिवार स्वर्गीय आचार्य श्री नानेश की आत्मा निरंतर उर्ध्वारोहण करती हुई शीघ्र चरम लक्ष्य को प्राप्त करें, ऐसी अभ्यर्थना करती है।

-बंशीलाल बैद, उपमंत्री जैन विश्व भारती

नानेश नगर : आचार्य श्री की आत्मा का परमात्मा में विलीन होने की सूचना प्राप्त होने से स्तब्ध जैन जगत अपने आपको सूना अनुभव करने लगा है। ग्रामदांता करुकडा आचार्य श्री के लौकिक जीवन स्थान रहे हैं। संस्थान परिवार ने शांतिसभा में एकत्रित होकर गुरु गुणानुवाद किया। श्री मोतीलाल गौड़ गृहपति एवं श्री शांतिलाल जी जारोली की मर्मस्पर्शी अभिव्यक्तियों ने वातावरण को अश्रुपूरित कर दिया। 28.10.99 को संस्थान परिवार, छात्रगण, दांता श्री संघ एवं कृपक ग्रामीण जन पूज्य गुरुदेव के अंतिम दर्शन कर नत मस्तक हुए। आचार्य श्री के परिजन श्री रतनलाल जी पोखरना, श्री रूपलाल जी पोखरना एवं पोखरना परिवार ने मुखाग्नि दी। विद्यालय परिसर में अब भी इस अपूरणीय क्षति से सन्नाटा छाया हुआ है।

-शान्तिलाल जारोली
आचार्य श्री नानेश समता शिक्षा समिति

रतलाम: परमपूज्य आचार्य भगवंत समता विभूति, धर्मपाल प्रतिबोधक, शासन सूर्य श्री नानालाल जी म.सा. के देवलोक गमन के समाचार से हम धर्मपाल जैन छात्रावास के सभी छात्र गृहपति एवं संचालक मंडल बहुत ही दुखी हैं एवं अपने आप को असहाय पा रहे हैं।

आचार्य भगवंत ने धर्मपाल क्षेत्र में पधारकर हमारी जीवन धारा को, हमारे रहन-सहन को और धार्मिक विचारों में जो क्रांतिकारी परिवर्तन किया उसके लिए पूरा समाज कभी भी उनके स्मरण से अलग नही हो सकता है। इस अवसर पर यही प्रार्थना करते हैं कि पूज्य आचार्य भगवंत की आत्मा को शांति प्राप्त हो एवं हम सभी को यह महान् वेदना समता पूर्वक वहन करने की शक्ति प्राप्त हो।

-संचालक मंडल एवं छात्र धर्मपाल जैन
छात्रावास दिलीप नगर, रतलाम

ब्यावर : परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानालालजी महाराज साहिब ने भारत के कोने-कोने में विस्तृत इस विशाल संघ

का न केवल नेतृत्व एवं संचालन ही किया, बल्कि अपनी साधना शक्ति, दूर दृष्टि एवं जिन शासन की सुरक्षा के वास्ते भावी संघ नायक के रूप में प्रशांतमना, व्यसन मुक्ति अभियान के प्रणेता, तरुण- तपस्वी मुनि प्रवर श्री रामलाल जी महाराज साहिब को अपना उत्तराधिकारी चयनित कर हुक्म गच्छ के नवम् पट्टधर के रूप में शासन के समक्ष उजागर किया है। आचार्य श्री के प्रति जैन मित्र मंडल, ब्यावर (साधुमार्गीय जैन संघ) का प्रत्येक सदस्य नतमस्तक होकर अश्रुपूरित नेत्रों से श्रद्धा सुमन अर्पित करता है एवं जिन शासन देव से करबद्ध प्रार्थना करता है कि अपने लक्ष्य के अनुसार श्रद्धेय आचार्य भगवन् की आत्मा यथा शीघ्र शाश्वत सुख का वरण कर निराकार निरंजन अवस्था को प्राप्त हो, ऐसी हमारी मंगल कामना है।

-दौलतराज सूरट

<u>अशोक नगर (शूले) बैंगलोर:</u> श्री महावीर भवन में मधुर व्याख्यानी निरंजना श्री जी म.सा. आदि ठाणा ५ के सान्निध्य में समता विभूति आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म.सा. की दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि प्रदान करने हेतु आयोजित सभा में साध्वी समुदाय की ओर से सन्मति शीला जी म.सा., श्री विवेक शीला जी म.सा. श्री संयम प्रभा जी म.सा., श्री वनिता श्री म.सा., ने पूज्य आचार्य प्रवर का गुणानुवाद करते हुए पूज्यवर के जीवन के विशेष गुणों का चित्रण किया। सभा का संचालन करते हुए श्री मोहनलाल जी चौपड़ा ने कहा, 'युग पुरुष', 'युग दृष्टा' आचार्य प्रवर ने विश्व में व्याप्त अनेक समस्याओं का हल समता दर्शन द्वारा प्रदान करते हुए दलित एवं कुव्यसनों से ग्रसित समुदाय को बोध प्रदान कर सम्माननीय जीवन जीने की कला सिखाई।

अ.भा.श्वे. स्थानक. जैन कांफ्रेंस की ओर से महामंत्री श्री मानक चंद जी कोठारी, श्री रत्न हितैषी संघ की ओर से श्री गणेशमल जी भंडारी, कर्नाटक स्वाध्याय श्री प्रकाशचंद जी परवा, श्री जयमल संघ के श्री [illegible], श्री ज्ञानगच्छ संघ के श्री दर्शनचंद जी चौरड़िया, महावीर सेवा संघ के श्री अमर चंद जी लोढ़ा, श्री साधुमार्गी जैन संघ बैंगलोर के मंत्री श्री [illegible] जी कटारिया, जैन ज्ञान संघ के श्री अशोक जी नागोरी, अशोकनगर (शूले) के सह मंत्री श्री जम्बुकुमार जी मूथा, श्री मोहनलाल जी सिपानी, समता युवा संघ के श्री मनसुख-लाल जी कटारिया, श्री मीठालाल जी सुराड़िया, श्रीमती प्रेमलता सुराना, श्रीमती शांति बाई कोचेटा, यादगिरी गुरुकुल से मंगला मूथा ने गद्य एवं पद्य द्वारा श्री आचार्य प्रवर का गुणानुवाद किया। धर्म, संघ, समाज, देश, एवं विश्व के लिए आप द्वारा किए गए योगदान की अपने-अपने शब्दों में व्याख्या की एवं समय-समय पर दर्शन एवं सान्निध्य के अवसर पर प्राप्त मार्ग दर्शन को स्मरण किया। कुमारी रेखा चौपड़ा द्वारा गुरु की विदाई गीत से पूरी सभा में गम का माहौल उत्पन्न हुआ। जनसमूह ने स्वर मिलाकर पूज्यवर को श्रद्धांजलि अर्पित की।

अंत में चार लोगस्स का ध्यान भाई नवरतनमल जी भंसाली द्वारा कराया और अंत मे महासतियां जी के मंगल पाठ से सभा विसर्जित हुई।

<u>ब्यावर :</u> जन चेतना के जनक, अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के आचार्य श्री नानालाल जी महाराज साहब के गौरवपूर्ण देहत्याग के समाचारों से संपूर्ण देश स्तब्ध रह गया स्वामी ब्रह्मानंद सत्संग मंडल ब्यावर, श्री सनातन धर्म सत्संग सभा एवं श्री रामस्नेही राम ट्रस्ट की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परम पिता से प्रार्थना करता हूं कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें।

-रामप्रसाद मित्तल, सह मंत्री

<u>ब्यावर :</u> परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. के देवलोक गमन से जैन-धर्म की अपूरणीय क्षति हुई है। रेप एसोसियेशन के समस्त सदस्य आचार्य श्री के आनंद धाम गमन पर हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्री अखिल भा.सा. जैन संघ नवम् पट्टधर आचार्य श्री रामलालजी म.सा. के शासन में संघ के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामना करते हैं।

-सुशील मेहता

कार्यालय सचिव, रयाल मेडिंग एसोसिएशन

<u>कवर्धा:</u> आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. के संथारे सहित महाप्रयाण (देवलोक गमन) के समाचार प्राप्त हुए। सद्‌चे

श्रीसंघ में शोक की लहर व्याप्त हो गई।

३०-१०-९९ को ज्ञानगच्छीय विदुषी तपस्विनी महासती श्री प्रवीण कुंवर जी ठाणा ३ के सान्निध्य में आचार्य श्री जी को चार लोगस्स के ध्यान से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। पूज्य महासती जी ने आचार्य श्री के गुणों का वर्णन किया।

पूर्व संघ अध्यक्ष श्री जेठमल चोरड़िया ने आचार्य श्री के वैराग्य का कारण एवं धर्मपाल क्षेत्र में की गई सेवाओं की विवेचना प्रस्तुत की। श्री निर्मलचंद जी देशलहरा, श्री नेमीचंद जी लुनिया (अध्यक्ष-सकल जैन श्री संघ), श्रीमती सुधा देशलहरा, श्री नेमीचंद श्री श्रीमाल द्वारा भी अपने भाव व्यक्त किए गए। अनेक श्रावक श्राविकाओं ने व्रत पचक्खान ग्रहण कर वास्तविक श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर श्री देवराज श्री माल द्वारा पांच की तपस्या एवं श्री प्रेमचंद जी श्रीमाल द्वारा तेले की तपस्या भी ग्रहण की गई। संघ अध्यक्ष श्री पन्नालाल जी श्री श्रीमाल द्वारा चार लोगस्स का ध्यान कराया गया। -जेठमल चौरड़िया

सिकंदराबाद: श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ सिकंदराबाद द्वारा स्थानक भवन में ज्ञान गंगोत्री पूज्य श्री प्रभाकंवर जी म.सा. एवं परमविदुषी श्री किरन सुधा जी म.सा. आदि ठाणा के नेश्राय में भावभरी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की गई। पूज्य श्री प्रभाकंवर जी. म.सा. ने फरमाया कि आचार्य श्री नानालाल जी. म.सा. एक महान आचार्य थे। संघ मंत्री मीठालाल पोखरना ने बताया कि वे शिक्षा एवं समाज सुधार के साथ आडम्बर दूर करने पर खूब जोर देते थे। वेदनाविहीन के संपादक श्री कन्हैयालाल जी सुराना ने बताया कि आपने जन-जन के मन में जैन धर्म के प्रति अगाध श्रद्धा पैदा की। संघ के अध्यक्ष श्री संपतराज जी डूंगरवाल, कार्याध्यक्ष श्री सज्जनराज जी कटारिया एवं महामंत्री श्री संपतराज जी कोठारी ने उनका गुणानुवाद कर भावभरी श्रद्धांजलि अर्पित की।

-मीठालाल पोखरना
मंत्री, श्री व. स्था. जैन श्रावक संघ

कोटा : आचार्य श्री नानेश ने भगवान महावीर की पावन वाणी के प्रचार-प्रसार में अभूतपूर्व योगदान दिया। आपका जीवन दर्पण के समान पारदर्शक, उज्ज्वल एवं ज्ञान, क्रिया का अनुपम संगम रहा है।

कोटा शहर के समस्त ओसवाल यह महसूस करते हैं कि जैन धर्म का चमकता सितारा अस्त हो गया है। पर आचार्य भगवन् के दिव्य संदेश से चतुर दिशाँए गुंजित होती रहेंगी। -राजेन्द्रसिंह मेहता
अध्यक्ष, श्री ओसवाल समाज

बूंदी : परम पूज्यनीय आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. के देहत्याग के समाचार सुनकर बूंदी संघ में शोक की लहर दौड़ गई। अत्र विराजित ज्ञानगच्छीय महासती पू. श्री सुमनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ५ को भी समाचार पाने पर गहरा आघात-सा लगा।

सभा में महासती श्री सुमनकंवर जी म.सा. ने अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए कहा कि :

'आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. ने स्व पर उपकार कर जिनशासन की महती सेवा की।'

तत्पश्चात् संघ मंत्री श्री हेमंत डागा ने इसे जिन-शासन की अपूरणीय क्षति बताते हुए कहा कि वर्तमान आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. भी अपने गुरुवर्य के समान संघ को व जिनशासन को खूब चमकाएंगे।

तत्त्व चिंतक संघ अध्यक्ष श्री प्रेमचंद जी कोठारी ने अपनी संवेदना प्रकट करते हुए कहा कि पंच आचारों का पालन करने वाले एवं कराने वाले को आचार्य कहा है। पूज्य श्री ने अपने जीवन में इस ओर पूरा ख्याल रखा व समता संघ के नायक ने जीवन के अंतिम समय तक भी समता बनाए रखी।

अंत में सभा में उपस्थित जनों ने ४-४ लोगस्स का कायोत्सर्ग करके दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी संवेदना प्रकट की।

-प्रकाश डांगी, ललवाणी भवन

कुंथवास: जिनशासन की दैदीप्यमान दिव्य मणि, परम् आराध्य आचार्य श्री नानेश का दिनांक २७ अक्टूबर को संलेखना संथारा सहित देवलोकगमन के समाचार कर्णगोचर कर संघ शोक-सागर में डूब गया। मव नोहरे में एकत्रित

होने लग गए। दिनांक २८ को अंतिम दर्शन तथा शवयात्रा में सम्मिलित होने के लिए गांव उमड़ पड़ा। सारे पर बाजार बंद हो गए और अपने आराध्य देव के अंतिम दर्शन के लिए चल पड़े। उदयपुर पहुंचकर समता की मूर्ति के दर्शन कर भक्तगण भावविभोर हो गये तथा नेत्र सजल देखे गए।

संघ मंत्री श्री बसंतीलाल जी कोठारी ने जीवन को दर्शाते हुए इस महान आत्मा के अचानक चले जाने से संघ पर जो प्रहार हुआ, वह असहनीय है। संघ के अध्यक्ष श्री बंशीलालजी धाकड़ ने दुःख प्रकट करते हुए उनके पदचिन्ह पर चलने का आह्वान किया। अंत में चार-चार लोगस्स का ध्यान कर चिरशांति की कामना की गई।

बाड़मेरः स्थानीय ओसवाल स्थानकवासी जैन संघ तेलियों का वास भवन में आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. के महाप्रयाण पर आयोजित श्रद्धांजलि सभा में कार्यक्रम के संचालक महेन्द्र बांठिया ने आचार्य नानेश का जीवन परिचय एवं समाज में योगदान पर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। ताराचंद चोपड़ा ने उदयपुर की अंतिम यात्रा के संबंध में विस्तृत जानकारी दी। कैलाश बोहरा ने संवेदना प्रकट की। मोहन जी चोपड़ा ने नानेश को इस शताब्दी का अहिंसा रूपी महानायक बताते हुए उनके महाप्रयाण को संपूर्ण मानव समाज की क्षति कहा। जितेन्द्र बांठिया, धापी देवी बांठिया ने श्रद्धांजलि गीत प्रस्तुत किया, अंत में ११ नवकार मंत्र का जाप किया। कार्यक्रम का संचालन महेन्द्र बांठिया ने किया। -महेन्द्र बांठिया

नगरीः समता विभूति समीक्षण ध्यान महायोगी, विद्वत शिरोमणि आचार्य श्री नानेश के उदयपुर में देवलोक गमन के समाचार प्राप्त होते ही सकल जैन समाज के सभी बंधुओं ने तुरंत व्यवसाय बंद कर ओसवाल भवन में पहुंच नवकार मंत्र जाप के साथ एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया। जिसमें जैन जैनेतर सभी धर्मों के लोगों ने भाग लिया। संघ अध्यक्ष, सरपंच श्री पुखराज जी नाहटा, श्री [illegible] गोलछा, विनोद गोलछा, रमेश छाजेड़, प्रदीप छाजेड़, प्रवीण भंसाली, श्री दिनेश नाहटा, एडवोकेट श्री कुशल जैन, सुभाष साहू, शिक्षक, श्री यमुना दास वैष्णव, बी.आर. साहू, बनवारीलाल साहू, सरपंची गोलछा, इन्दा देवी नाहटा, उषा गोलछा, विमला बाई छेलड़िया आदि ने आचार्य श्री जी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उन्हें शताब्दी के महामनस्वी व महातपस्वी निरूपित किया। महेश नाहटा ने सभा का संयोजन करते हुए आचार्य श्री नानेश के समता-दर्शन, समीक्षण-ध्यान स्वाध्याय व्यसन मुक्ति अभियान को जन-जन तक पहुंचाने का आह्वान किया। चार लोगस्स, नवकार मंत्र, जाप, भजन, गुरु वंदना के साथ परम उपकारी आचार्य श्री नानेश को भावभीनी अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित की गई। स्कूलों में छुट्टियां कर दी गई। - महेश नाहटा

अठोलीः स्थानक-भवन में आयोजित अश्रुपूरित श्रद्धांजलि सभा में संघ अध्यक्ष श्री प्रकाशचंद जी बाफना एवं सांसद प्रतिनिधि श्री इंदर जी बाफना ने संयुक्त रूप से आचार्य श्री नानेश को एक महान राष्ट्र संत बताया, जिन्होंने आजीवन पांच महाव्रत का पालन करते हुए समाज एवं राष्ट्र को नई दिशा दी।

कबीर पंथ के समर्थक ने ३२ वर्ष पूर्व का अनुभव बताते हुए कहा कि आचार्य भगवान जब हमारे छोटे से ग्राम में पधारे तब उनके एक व्याख्यान में सारे केवट जाति के लोगों ने शराब, मांसाहार एवं मछली न पकड़ने का संकल्प लिया जो आज भी विद्यमान है।

ऐसे महान आचार्य को शत-शत नमन करते हुए २१ नवकार मंत्र का ध्यान एवं १२ घंटे का ओम शांति का जाप किया। दीपावली पर्व बहुत सादगी एवं धर्मध्यान सहित मनाने तथा आतिशबाजी न करने का दृढ़ संकल्प लिया।

भगवान महावीर स्वामी से प्रार्थना है कि इस महा पुण्यात्मा की ज्योति को अपनी ज्योति में शीघ्र विलीन करें। -हीराचंद छाजेड़

सचिव, श्री वर्धमान स्थानकवासी श्रावक संघ

नाथद्वारा: समता विभूति समीक्षण ध्यानयोगी, आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म.सा. के उदयपुर में महाप्रयाण पर यह संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है। आचार्य प्रवर ने संयम के सन्मार्ग पर चलते हुए अनेकानेक जीवों को संयमी जीवन से जोड़ा। जिन शासन की अभूतपूर्व प्रभावना की।

और समाज को नई चेतना प्रदान की।

आचार्य श्री के देवलोकगमन से समाज की अपूरणीय क्षति हुई है। जिसकी पूर्ति निकट भविष्य में असंभव है। शासन देव से प्रार्थना है कि समाज को यह असहनीय क्षति सहन करने की क्षमता प्राप्त हो एवं दिवंगत आत्मा शाश्वत सुख को प्राप्त करे। दिनांक २८-१०-९९ को समस्त जैन समाज के प्रतिष्ठान बंद रहे।

-दिनेशचंद्र सुराना

मंत्री, श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ

खण्डेला-सीकरः दिनांक २८ अक्टूबर ९९ को प्रातः ७ बजे पूज्य नानेशाचार्य के स्वर्गारोहण के समाचार प्राप्त होने पर पूरा संघ हतप्रभ और शोक संतप्त हो गया। सभी उपस्थित बंधुओं, माताओं एवं बहिनों ने चार-चार लोगस्स का ध्यान करके अपनी भावांजलि अर्पित की। प्रार्थना, प्रवचन, सभी संघ सदस्यों के व्यापारिक प्रतिष्ठान पूर्णतः बंद रहे और श्रद्धेय महासतियां जी म.सा. ने भी उपवास आदि किए। दूसरे दिन २९ अक्टूबर ९९ को प्रातः महासती श्री चेतन श्री जी. म.सा. आदि ठाणा ४ के सान्निध्य में श्रद्धांजलि सभा की गई। सर्वप्रथम श्री नेहा श्री जी म.सा. ने तत्पश्चात् श्री चेतन श्री जी म.सा. ने अत्यंत भाव पूर्ण शब्दों में फरमाया कि संसार की प्रत्येक वस्तु नश्वर होती है। प्राप्त पदार्थों का वियोग अवश्यभावी है, परंतु पूज्य आचार्य भगवन् के वियोग से जिन-शासन की अपूरणीय क्षति हुई है। जिसकी पूर्ति निकट भविष्य में संभव नहीं लगती। पूज्य श्री की आत्मा शीघ्र ही शाश्वत शांति को प्राप्त हो।

पश्चात् मंत्री श्री सुरेन्द्रकुमार जी, श्री पूनमचंद जी लोढ़ा, श्री शांतिलाल जी बैद एवं हीरालाल लोढ़ा ने भी बड़े ही भाव पूर्ण शब्दों में आचार्य भगवन् के गुणानुवाद करके श्रद्धासुमन अर्पित किए। फिर ४ लोगस्स के ध्यान के साथ शोक सभा का समापन हुआ।

-हीरालाल लोढ़ा

संबलपुर (बस्तर): परम पूज्य आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. के देवलोक के समाचार से शोकातुर संघ ने २८-१०-९९ को सायं ७ बजे जैन स्थानक भवन में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया।

श्रद्धांजलि सभा में जैन श्री संघ के अध्यक्ष श्री मानकलाल जी संचेती एवं कु. लीना संचेती ने आचार्य श्री नानेश की जीवनी पर संक्षेप में बताया कि आचार्य श्री नानेश एक विराट व्यक्तित्व वाले आचार्य थे। जिन्होंने लाखों दलितों को जैन बनाया जो कि आज धर्मपाल के नाम से ख्याति प्राप्त हैं।

इसके पश्चात् श्रीमती मनोरमा देवी गुणधर, श्रीमती प्रतिमा चोपड़ा एवं कु. सीमा संचेती ने गीतिका के माध्यम से आचार्य श्री नानेश को श्रद्धांजलि अर्पित की।

अंत में उपस्थित सभासदों ने लोगस्स का ध्यान करके आचार्य श्री नानेश को श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री मोहनलाल जी कोटडिया ने मंगल पाठ सुनाकर श्रद्धांजलि सभा विसर्जित की।

-शैलेष गुणधर

गोगोलावः आचार्य नानेश के देवलोकगमन का समाचार सुनते ही गोगोलाव संघ में ऐसी उदासी छा गई कि जिसका वर्णन करना मुश्किल है। गोगोलाव संघ पर तो भगवन् की अटूट मेहरबानी थी। आशा है अष्टम पट्टधर की कृपा से नवम पट्टधर भी इस बागान को और ज्यादा पल्लवित पुष्पित करेंगे। संघ के सभी भाई, बहिन, बच्चों ने १५ मिनट मौन का ध्यान किया। उसके बाद लोगस्स का पाठ करके स्व. आचार्य नानेश को भाव भरी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की।

-प्रकाशचंद ललवानी, मंत्री

शिरपुरः पौषधशाला में श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ३ के सान्निध्य में समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी महान् आचार्य भगवन् श्री नानालालजी म.सा. की स्मृति सभा आयोजित की गई। जिसमें दिवंगत आत्मा के दृढ़ संयम, त्याग, तपस्या, समता, सेवा भाव, आदि पर प्रकाश डालते हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

गुणानुवाद करते हुए श्री सुशीला कंवरजी म.सा. ने कहा हुक्म संघ का जाज्वल्यमान आध्यात्मिक सूर्य विश्व से जुदा हो गया। उनका पार्थिव शरीर भले ही हमारे बीच से चला गया हो लेकिन उनका यशरूपी शरीर हमारा युगों-युगों तक मार्गदर्शन करेगा।

विदुषी महासती श्री चंदना श्री जी म.सा. ने फरमाया कि एक सुवासित सुगंधित पुष्प मुरझा गया किन्तु उसकी सौरभ युगों- युगों तक संसार में व्याप्त रहेगी। महासती श्री अर्पणाश्री जी म.सा. ने कहा कि आचार्य भगवन् का संपूर्ण जीवन अनंत गुणों से ओत प्रोत था।

श्री राजेन्द्रकुमार बोथरा ने अपने भाव व्यक्त किए एवं आचार्य श्री के जीवन परिचय का संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत किया।

इस स्मृति सभा के अगले चरण में कु.नूतन बाफना ने कहा कि सब कहते हैं आचार्य श्री चले गए, मन कहता वह गए नहीं।

२१ अक्टूबर को गुणानुवाद सभा श्रीसंघ एवं महावीर नवयुवक मंडल की ओर से रखी गयी थी। सुबह १० बजे से लेकर दोपहर २ बजे तक अखंड नवकार महामंत्र का जाप हुआ, उस दिन समग्र जैन समाज की महिलाएं और पुरुषों की उपस्थिति रही।

-राजेन्द्र बोथरा

<u>बापूनगर भीलवाड़ा:</u> भीलवाड़ा के बापूनगर श्री संघ को भी इस असामयिक दुखद समाचार से अपार दुःख हुआ।

श्री जिनेश्वर देव से हार्दिक प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को पूर्ण शांति प्रदान करें एवं उनके पाट पर विराजित नवम पट्टधर आचार्य श्री रामलाल जी महाराज सा. को अपार शक्ति प्रदान करें ताकि उनकी नेश्राय में जिन-शासन की दिन प्रतिदिन उन्नति होवे।

-सुगसिंह चौधरी

<u>बांगाटोला (बालाघाट):</u> समता विभूति प्रात. स्मरणीय जैनाचार्य पूज्य श्री नानालाल जी म.सा. के देवलोक का समाचार ज्ञात होने से चहुंओर शोक की लहर छा गई। समूचा बाजार पूरे दिन बंद रहा। जैन स्थानक में श्री जयश्री जी.म.सा. ठाणा ६ के सानिध्य में स्मृति सभा आयोजित की गई। महासती श्री सुनीता जी, श्री प्रभावना जी एवं महासती श्री चंदना जी ने भावुकता से रूंधे गले से जो कुछ भी कहा, सुना नहीं जा सका।

महासती श्री गुणरंजना जी ने कहा कि आज के प्रसंग पर उनके जीवन पर कुछ कह पाना कठिन होगा। महासती श्री चितरंजना जी ने गद्य एवं पद्य के माध्यम से अपनी भावाभिव्यक्ति करते हुए कहा कि नीर बिन मीन की जो दशा होती है वैसा ही अनुभव आज हम अपने जीवन में कर रहे हैं। अंत में महासती श्री जय श्री जी.म.सा. ने कहा कि महावीर भगवान के निर्वाण के समय गौतम की जो स्थिति थी उसी हालत में आज हम अपने को महसूस कर रहे हैं, गुरु के प्रति श्रद्धा आर्त का रूप ले लेती है, जिसे अन्यथा न समझा जावे। स्मृति सभा का संचालन करते हुए श्री संघ मंत्री श्री गेंदमल मोदी ने स्व. आचार्य प्रवर का गुणानुवाद किया। कु. कविता जैन, कु. मंजू जैन नाहर, सौ. लक्ष्मी मोदी, सौ. प्रभा आबड़, श्री नीलमचंद जैन, श्री टीकमचंद आबड ने गुरुदेव के जीवन के संस्मरणों को याद किया एवं श्रद्धा सुमन अर्पित किए। इस अवसर पर समाज के सभी वर्गों के लोग उपस्थित थे।

-गेंदमल मोदी

<u>मंदसौर:</u> समता विभूति आचार्य श्री नानालालजी म.सा. के देवलोक गमन का समाचार जानकर शोकातुर नगर के बाजार बंद हो गए। सकल जैन समाज द्वारा शोक सभा की गई, जिसमें सकल जैन समाज अध्यक्ष श्री रतनलाल जी जैन, श्री सुरेन्द्र जी लोढ़ा, श्री जवाहरलाल जी जैन, श्री सोभाग्यमल जैन, श्री कैलाश पाठक, श्री ओम प्रकाश पोरवाल आदि ने भाग लिया। आचार्य श्री नानेश की समता, एकता व समीक्षण ध्यान की भूरि-भूरि प्रशंसा कर कायोत्सर्ग द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की।

अगले दिन प्रात. ९ बजे समता सदन पर विराजित महासती जी श्री शान्ता कंवर जी, श्री शान्तप्रभाजी, सेवाभावी श्री रंजनप्रभाजी एवं श्री सरोज श्री जी म.सा. की उपस्थिति में सभा की गई। जिसमें सर्वप्रथम विदुषी श्री शान्तप्रभाजी म. ने फरमाया। तत्पश्चात् महासती श्री सरोज श्री जी ने कहा मकान की सुरक्षा छत से होती है, छत दीवारों व तल की रक्षा करती है। छत के रूप में भगवान महावीर के मोक्ष गमन के बाद सुधर्मा स्वामी व क्रम क्रम नानेश शासन की छत चतुर्विध संघ से जुड़ी हुई हमें प्राप्त हुई। तीर्थंकर के स्वरूप आचार्य श्री का नाम लेते ही हमें

की निर्जरा होगी। आज हमे आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. की शरण प्राप्त है। रामेश शासन गुरुदेव का ही बताया मार्ग है।

संघ संरक्षक श्री सुरेन्द्र जी मेहता, कवि श्री कैलाश पाठक, श्री बाबूलाल जी जैन, अध्यक्ष ओमप्रकाश पोरवाल, श्री अशोक जी नलवाया ने अपनी ओर से श्रद्धांजलि प्रस्तुत की। संयोजक श्री शांतिलाल जी रूपावत द्वारा श्रद्धांजलि में कहा गया कि गुरुदेव के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि तभी होगी जब हम उनके बताए मार्ग पर एकनिष्ठ होकर चलें। वीर प्रभु से प्रार्थना है हमारे संघ नायक की आत्मा को शांति प्रदान करें।

-अरविंदकुमार रूपावत

कानोड़ : श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ, कानोड़ की ओर से आचार्य भगवन् श्री नानालाल जी म.सा. के देवलोक गमन पर शास्त्रज्ञ, प्रशांतमना, दीर्घ तपस्वी सेवाभावी आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री पेपकंवर जी म.सा. के सानिध्य में गुणानुवाद एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया।

इस अवसर पर अत्र विराजित महासतियां जी श्री कविता श्री जी, श्री अंजली श्री जी, श्री विभा श्री जी, श्री किरण प्रभा जी, श्री तरुलता जी, श्री सुशीला कंवर जी म.सा., विदुषी महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ने क्रमशः आचार्य श्री नानेश के जीवन के विभिन्न बिंदुओं पर गुणानुवाद किया तथा सामूहिक गीतिका प्रस्तुत की जो बड़ी मार्मिक थी।

स्थानीय संघ के मंत्री श्री शांतिलाल जी धींग, समता प्रचार संघ के सह सचिव श्री नानालाल जी पितलिया, स्थानीय संघ के सह मंत्री श्री चांद मल जी दक, एवं श्री देवीलाल जी भानावत सेवानिवृत्त व्याख्याता (अंग्रेजी) ने आचार्य भगवन् नानेश के समता मय जीवन पर विस्तृत श्रद्धांजलि अर्पित की एवं उनके प्रतिपादित सिद्धांतों को अंगीकार करने पर बल दिया।

अन्त में चार लोगस्स का ध्यान किया गया। बाद में सभी ने मौन रह कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

-शान्तिलाल धींग

चौपड़ा : २७ अक्टूबर को दोपहर संथारे एवं रात्रि में देवलोकगमन के हृदय विदारक समाचारों से स्तब्ध संघ ने व्यवसाय बंद रखकर आचार्य भगवन् को श्रद्धांजलि स्वरूप स्मृति सभा आयोजित की, जिसमें सर्वप्रथम श्री प्रीति सुधाजी म.सा., श्री समीक्षणाजी म.सा. ने गुरुदेव के समतामय जीवन आदि का विस्तृत विवेचन किया। तदनंतर बा.ब्र. महासती श्री ज्ञानकंवर जी म.सा. ने कहा आचार्य भगवन् के स्वर्गवास से समाज की महती क्षति हुई है यह पूर्ण होना असंभव है। संयोजक माणकचंद जी चोपड़ा, गौतमचंद जी राखेचा आदि ने अपने भाव रखे।

मुमुक्षु सुमिता-ममता ने भी आचार्य भगवन् के विषय मे सुंदर भाव रखे।

-मंजूषा सुराणा

आमेट : आचार्य देव के देवलोक गमन पर महावीर भवन में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। व्यवसायियों ने अपना व्यवसाय बंद रखा। तेरापंथ समाज के मंत्री श्री चांदमल जी छाजेड़ ने आचार्य श्री के जीवन से मंगलमय प्रेरणा ग्रहण करने की अपील की व तेरापंथ समाज की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

समता युवा संघ अध्यक्ष श्री सागरमल सुराणा ने आचार्य श्री नानेश के समता दर्शन को महान् कार्य बताया। आप श्री के धर्मपाल के क्षेत्र में किए गए कार्यों को अनुकरणीय बताया गया।

-सागरमल सुराना, अध्यक्ष समता युवा संघ

कोटा : ज्ञानगच्छाधिपति तपस्वीराज पूज्य चम्पालाल जी म.सा. की आज्ञानुवर्ती महासती पूज्य मणिप्रभा जी म.सा. , पू. आरती जी म.सा. के नेश्राय में, अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी संघ के आचार्य श्री नानालाल जी महाराज के दिनांक २७-१०-९९ को रात्रि में पंडित मरण पर समस्त श्री संघ ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर संघ के अध्यक्ष, मंत्री एवं श्री राजेन्द्र सिंह मेहता ने भी अपने विचार प्रकट किए। अन्त में ४ लोगस्स के ध्यान से श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

-कुशलराज मेहता, अध्यक्ष

नागदा : स्थानीय जवाहर मार्ग स्थानक में श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए महासतियांजी विपुला श्री जी म.सा. ने फरमाया कि स्व. आचार्य श्री ने आचार संहिता का पालन करते हुए अपने जीवन में किसी भी प्रकार का दोष नहीं लगाया। इनके आदेशों का पालन करते हुए दृढ़ आस्थावान रह कर स्व. आचार्य श्री का ऋण चुकाया जा सकता है। शासन देव से प्रार्थना है कि स्व. आचार्य श्री जी को चिर शांति प्राप्त हो। श्री विजेता जी. म.सा. ने एक गीतिका के माध्यम से श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्री सी.के. जैन, विलास पामेचा, दिलीप कांठेड़, देवीलाल गुगलिया, चंदनमल संघवी, श्रीमती दाखीबाई ओरा, श्रीमती हंसा कांठेड़, श्रीमती अमृतबाई मारू ने स्व. आचार्य श्री के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। अंत में सभी ने लोगस्स का ध्यान करके श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

-निर्मल चपलोत

पिपलिया कलां : आज प्रातः काल समता विभूति परम पूज्य आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. के देवलोक होने के समाचार सुनकर प्रेम उद्योग समूह के समस्त कर्मचारियों में निस्तब्धता छा गई। तुरंत कार्यालय एवं कारखाने पूरे दिन के लिए बंद करवा दिए। सभी कर्मचारी पी.जी. फोइल्स प्रांगण में उन्हें श्रद्धांजलि देने एकत्रित हो गए एवं समस्त भारत में स्थित प्रेम उद्योग समूह के सभी कार्यालय एवं कारखाने बंद करवा दिए।

इस अवसर पर संघ मंत्री श्री राजेन्द्र कुमार सिंघवी ने आचार्य नानेश के जीवन एवं पिपलिया कलां में हुए उनके चातुर्मास के बारे में उपस्थित कर्मचारियों को विस्तृत जानकारी दी।

आचार्य श्री के अहिंसक एवं व्यसन मुक्त समाज की रचना के उद्देश्यों के अनुरूप सभी कर्मचारियों ने आज के दिन मांस मदिरा का त्याग कर आचार्य गुरुदेव को श्रद्धांजलि अर्पित की।

दिवंगत आत्मा की शांति हेतु सभी कर्मचारियों ने एक घंटे तक नवकार मंत्र का जाप एवं एक घंटे श्री शांतिनाथ प्रभु का जाप किया।

-समस्त कर्मचारीगण, प्रेम उद्योग समूह

बंगाईगांव- परम पूज्य गुरुदेव के सुख साता की मंगल कामना हेतु विशेष कर पर्युषण महापर्व से ही विविध त्याग तपस्या की झड़ी हमारे बंगाईगांव श्री संघ में लगी रही। हृदय विदारक समाचार जानने के बाद स्थानीय मूलचंद जालान विवाह भवन में एक स्मृति सभा श्री मदनलाल जी अग्रवाल के सभापतित्व में हुई। जिसमें जैन-अजैन सभी धर्मानुरागी भाई-बहन पुण्यात्मा के प्रति श्रद्धा-ज्ञापन हेतु सम्मिलित हुए। श्री बस्तीमल सुरलिया, श्री जुगराज जी संचेती, युवक परिषद के श्री रिखबचंद जी बोथरा, तेरापंथ धर्म सम्प्रदाय के श्री कन्हैयालाल जी बोथरा, श्री पन्नालाल जी दसपाल, सभापति श्री मदनलाल जी अग्रवाल ने भाव व्यक्त किए। तत्पश्चात् चार लोगस्स का ध्यान किया और मेहता जी ने पू. गुरुदेव की भाववाचक आज्ञा से सभी को मांगलिक सुनाया और मौन भाव से सभी ने सभा विसर्जित की। उस दिन जाप का भी प्रसंग बना।

-प्रकाशचंद बैताला

बीकानेर : परम पूज्य आचार्य श्री नानालाल जी महाराज साहब का देवलोकवास हो जाने का समाचार सुनकर हमें आघात पहुंचा।

उदारमना आचार्य श्री के चरणों में मैं बारम्बार वंदन करता हूं एवं बीकानेर दिगंबर समाज का प्रतिनिधित्व करते हुए उनकी आत्मा की शांति के लिए भगवान महावीर से प्रार्थना करते हैं कि भगवान आचार्य श्री को अपने समवशरण में स्थान प्रदान करें।

-डॉ. भानु एस. जैन
मंत्री श्री दिगम्बर जैन प्रबंध समिति ट्रस्ट

विल्लुपुरम् : समता विभूति पूज्य आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म.सा. के संथारा का समाचार फिर स्वर्गवास का समाचार मिलते ही हमारे संघ में शोक छा गई। सुबह १०.३० बजे नवकार मंत्र का जाप किया गया, जिसमें भारी संख्या में भाई-बहनों ने भाग लिया।

रात को ८ बजे श्री जैन संघ की श्रद्धांजलि सभा अध्यक्ष श्रीमान मिश्रीचंद जी बम्ब की अध्यक्षता में हुई। श्री गौतमचंद जी बम्ब, श्री [illegible] कुमार जी [illegible], श्री [illegible]चंद जी सुराना, श्री [illegible] जी सुराना तथा श्री जैन

महिला मंडल की श्रीमती कमला बाई कातरेला ने पूज्य गुरुदेव के जीवन पर प्रकाश डाला एवं श्रद्धांजलि अर्पित की। संघ के भाई-बहनों तथा बच्चों ने भारी संख्या में उपस्थित होकर पूज्य गुरुदेव को श्रद्धांजलि अर्पित की। लोगस्स का ध्यान किया गया।

-ललितकुमार कातरेला, मंत्री श्री जैन संघ

मंदसौर: सकल जैन समाज मंदसौर द्वारा जैनाचार्य श्री १००८ श्री नानालाल जी महाराज साहब के देवलोकगमन पर एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन वरिष्ठ सुश्रावक श्री घासीलाल जी सांखला की अध्यक्षता में किया गया। राजेन्द्र जैन परिषद के अखिल भारतीय महामंत्री सकल जैन समाज के संयोजक श्री सुरेन्द्र जी लोढ़ा ने मुख्य वक्ता के रूप में श्रद्धासुमन अर्पित किये। सकल जैन समाज के कार्यवाहक अध्यक्ष अधिवक्ता श्री मनसुखलाल भानावत ने सकल संघ की ओर से श्रद्धा सुमन अर्पित किए। महामंत्री श्री महेन्द्र चोरडिया, श्री कांतिलाल चौधरी, नगर पालिका के उपाध्यक्ष व गौशाला के महामंत्री श्री राजेन्द्र अग्रवाल, महावीर जयंती उत्सव समिति के महामंत्री श्री पवन कुमार अजमेरा, श्री प्रकाश मारू, शिक्षा शास्त्री श्री संजय पटवा, कर्मचारियों के नेता व गोपाल कृष्ण गौशाला के अध्यक्ष श्री महेश मिश्रा, श्री सूरजमलजी मांडावत व जनकपुरा स्थानकवासी समाज के महामंत्री श्री जवाहरलाल जैन, लायंस क्लब के प्रमुख व सकल जैन समाज के पूर्व अध्यक्ष चेनमल पामेचा, चार्टर्ड एकाउन्टेट एवं समाज सेवी युवा कार्यकर्ता श्री वीरेन्द्र जैन, दशपुर दर्शन पत्र के संपादक व जनकपुरा स्थानकवासी संघ के अध्यक्ष श्री शोभागमल जैन, श्री साधुमार्गी जैन संघ के संरक्षक श्री सुरेन्द्र मेहता, श्री बाबूलाल जी नागोरी, साधुमार्गी जैन संघ की पूर्व अध्यक्षा श्रीमती निर्मला पोरवाल, श्री कैलाश पाठक अनवर, श्री अशोक नलवाया, युवा समाज सेवी कार्यकर्ता श्री विकास चौधरी, कार्यक्रम के अध्यक्ष मूर्तिपूजक जैन समाज के अध्यक्ष श्री घासीलाल सांखला, श्री कांतिलाल रातड़िया, अशोक गोटावाला, चम्पालाल डूंगरवाल, पार्षद पूरणमल कुकड़ा व नरेन्द्र मेहता ने गद्य पद्य के माध्यम से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए नवम पट्टधर आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के प्रति शुभकामनाएं व्यक्त कीं। समता भवन में संपन्न कार्यक्रम में ४ लोगस्स का ध्यान हुआ। संचालन व आभार प्रदर्शन अशोक जैन ने किया।

-अशोक जैन

अलवर: साधुमार्गी संघ के अष्टम पट्टधर समता विभूति आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. के देवलोक गमन पर श्री वर्द्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन संघ, अलवर द्वारा आयोजित गुणानुवाद कार्यक्रम का प्रारंभ करते हुए व. श्वे. स्था. जैन श्री. संघ अध्यक्ष सुमति कुमार जैन ने कहा आचार्य श्री नानालाल जी.म.सा. सम्प्रदाय विशेष के आचार्य होते हुए भी सभी के थे।

मूर्ति पूजक जैन संघ के अध्यक्ष वयोवृद्ध श्री लक्ष्मी-चंद जी पालावत, ओसवाल जैन शिक्षण संस्थान व समाज सेवी संस्था, महावीर इन्टरनेशनल के अध्यक्ष श्री गेंदमल जी जैन, स्था. जैन श्रावक संघ के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री गुलाबचंद जी संचेती, श्री सौभाग चंद जी सुराणा ने सभा को विशेष रूप से संबोधित किया और आचार्य श्री की कमी को एक अपूरणीय क्षति बताया।

-योगेश पालावत, सहमंत्री
श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ

जयपुर: परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश के महाप्रयाण की वेदना से अभिभूत स्थानीय जवाहर नगर के श्री जैन श्वेताम्बर संघ की ओर से गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। राजस्थान विश्वविद्यालय में पत्रकारिता के एसोसिएट प्रोफेसर एवं संघ मंत्री डॉ. संजीव भानावत ने आचार्य प्रवर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला।

सी.एस. बरला ने कुव्यसन मुक्ति एवं संस्कार निर्माण अभियान में आचार्य श्री के योगदान की चर्चा की। श्री मोहनलाल मुथा एवं श्री राजेन्द्र पटवा ने आचार्य श्री के जीवन के प्रेरणास्पद संस्मरण सुनाये। संघ अध्यक्ष श्री जयकुमार लोढ़ा तथा पूर्व अध्यक्ष उमरावचंद संचेती ने आचार्य श्री को इस शताब्दी का महान संत बताया। वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के संयुक्त मंत्री श्री उत्तमचंद डागा तथा श्री उत्तम चंद चपलावत ने आधुनिक संदर्भ में आचार्य नानेश के दर्शन की प्रासंगिकता को

प्रतिपादन किया। श्री विनोद सेठ ने भी इस अवसर पर आचार्य श्री के बहुआयामी व्यक्तित्व की चर्चा की।

-डॉ. संजीव भानावत, मंत्री श्री जैन श्वेताम्बर संघ

जोधपुर : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. के देवलोक गमन पर जैन श्री संघ ने हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की। जैन श्री संघ के संयोजक एवं श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के सचिव श्री गिट्ठूलाल डागा ने कहा कि उनके देवलोक गमन से समग्र जैन समाज को गहरा आघात लगा है। संघ की सह संयोजिका श्रीमती चंचल कुमारी ने आचार्य श्री को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि आचार्य श्री का दृढ़ मत था कि व्यक्ति को त्याग-तपस्या क्रिया के प्रति दृढ़ रहना चाहिए तभी परंपराएं स्थिर रह सकती हैं। आचार्य श्री को हमारी विनम्र श्रद्धांजलि।

-हितेश जैन

कार्यालय सचिव जैन श्री संघ

रामपुरा : संयोजक श्री शांतिलाल जी सुराना की अध्यक्षता में स्वाध्याय संघ की बैठक में उदयपुर में विराजित आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म.सा. द्वारा संथारा ग्रहण कर समाधिमरण प्राप्त होने पर हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

आचार्य श्री ने सुदीर्घ समय श्रमणपर्याय का पालन किया एवं आचार्य पद पर आसीन होने के बाद करीब ३५० मोक्षार्थियों को संयम पथ पर आरूढ़ किया। करीब एक लाख व्यक्तियों को धर्मपाल जैन बनाया एवं समता समाज के निर्माण का दुष्कर कार्य सफलता पूर्वक किया। समीक्षण ध्यान द्वारा जैन समाज को एक नई दिशा प्रदान की। आचार्य श्री की आत्मा शाश्वत सुख शीघ्र प्राप्त करें, यही वीर प्रभु से प्रार्थना करते हैं।

-शांतिलाल सुराना

संयोजक श्री श्री. स्था. जैन स्वाध्याय संघ

इंदौर : समता विभूति आचार्य प्रवर पूज्य श्री नानालाल जी म.सा. के संथारे के साथ स्वर्गारोहण के समाचार प्राप्त होने पर श्री सुधर्म जैन आराधना भवन ग्रीनपार्क कालोनी में विदुषी महासती पूज्य श्री हेमकुंवरजी म.सा. आदि ठाणा ५ का व्याख्यान बंद रखा गया तथा गुणानुवाद सभा के माध्यम से उनकी दीर्घ संयम पर्याय और उनके विशिष्ट गुणों का स्मरण कर चार-चार लोगस्स का ध्यान कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। सभा का संचालन प्रमुख सलाहकार श्री सरदारीचंद जी मंडलिक ने किया।

-शांतिलाल चंडालिया

सचिव श्री स्थानकवासी सुधर्म जैन श्रावक संघ

जगदलपुर : जैन जगत के जाज्वल्यमान नक्षत्र आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. के संथारापूर्वक देवलोक गमन का समाचार सुनकर सभी स्तब्ध रह गए। समता युवा संघ एवं महिला मंडल जगदलपुर ने २८ अक्टूबर को प्रातः से संध्या तक महामंत्र नवकार का जाप करवाया। सभी गुरुभक्तों ने अपने-अपने प्रतिष्ठान बंद रखे। जगदलपुर श्री संघ ने रात्रि ८ बजे सभा आयोजित की जिसमें पूज्य गुरुदेव का गुणानुवाद कर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किया। सभा के प्रारंभ में संतोष जैन ने स्व. आचार्य श्री का जीवन परिचय प्रस्तुत किया।

श्री संघ के अध्यक्ष श्री प्रकाशचंद जी सुराना ने कहा, 'आचार्य श्री के देवलोक गमन से समस्त मानव जाति की जो क्षति हुई है, वह अपूरणीय है। अ.भा.सा. संघ के शाखा संयोजक श्री गौतमचंद जी बैद, श्री भंवरलाल जी सांखला, छीतराज जी सालेचा, पुखराज जी बोथरा, संपतलाल जी बैद, रमेश चंद जी बुरड़, किशोर जी पारख, मदन दुगड़, राजकुमार कटारिया, राजेश छाजेड़, श्रीमती प्यारी बाई नाहटा, श्रीमती मीना देवी बैद एवं श्रीमती भारती लोढ़ा ने भी स्व. आचार्य श्री को अपूर्व विभूति का महत्व बताते हुए उनके गुणों का स्मरण किया। श्री रमेश बुरड़ ने इस अवसर पर पान पराग, गुटखा, पान मसाला त्याग कर नवयुवकों में प्रेरणा का संचार किया। अंत में चार लोगस्स का ध्यान कर स्व. आचार्य श्री को श्रद्धांजलि दी गई।

-गौतमचंद बैद

धमधा : आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म.सा. के स्वर्गारोहण का समाचार सुनकर समस्त जैन समाज में शोक की लहर छा गई। सभी ने अपने व्यवसाय बंद कर संध्या एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया जिसमें संघ के अध्यक्ष श्री महावीरचंद जी जैन की अध्यक्षता में सभी ने अपने-अपने विचारों से

भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री फकीरचंद जी पारख, पारसमल जी खेमचंद जी, ज्ञानचंद, नंदकुमार, अजीत बाबू, ज्ञानचंद पारख, रेखचंद जी छाजेड़, श्रीमती रेशमबाई, लाली बाई, शांता देवी, पतासी देवी, विजया देवी, तारादेवी, किरण देवी, इन्दु पारख, शशिकांता और उर्वशी कुमारी ने भाव व्यक्त कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

अंत में अध्यक्ष महोदय द्वारा चार लोगस्स का ध्यान कराकर आचार्य श्री को अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आत्मा की चिरशांति व मोक्ष गामी होनेकी कामना की गई।

-पारसमल खेमचंद छाजेड़

देशनोक : अत्र विराजित श्री सेवन्त मुनिजी म.सा. आदि ठाणा-३ के पावन सान्निध्य में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन हुआ। मुनित्रय ने आचार्य श्री नानेश के जीवन प्रसंगों पर गद्य-पद्य के रूप में प्रकाश डालते हुए गुणानुवाद किया और उन्होंने दिवंगत आचार्य श्री को भारत की महान् विभूति बताया। श्रावक श्राविका वर्ग में सर्वश्री हुलासमल सुराणा, कविरत्न श्री सोहनदान चारण, मानकचंद लूणिया, हीरालाल आंचलिया, धनराज सांड, धूड़चंद बुच्चा, सोहनलाल लूणिया, सुश्री चंदना भूरा ने अपने भाव रखते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित किए। देशनोक संघ के अनेक पदाधिकारी गण व सैकड़ों भाई-बहिन दिनांक २८-१०-९९ को अन्तिम दर्शनार्थ उदयपुर पहुंचे और अंत्येष्टि में शामिल हुए। स्मृति सभा का संचालन धूड़चंद बुच्चा ने किया। अन्त में मौन सहित चार लोगस्स का ध्यान करके दिवंगत महान् आत्मा को श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

-धूड़चंद बुच्चा

कोयम्बटूर : पूज्य आचार्य श्री को श्रद्धांजलि देने के लिए दिनांक २९-१०-९९ को श्रमण संघीय श्री रमेशमुनि जी. म.सा. आदि ठाणा ५ एवं श्रमणी पूज्य श्री मदनकंवर जी. म.सा. आदि ठाणा ३ के सानिध्य में स्थानक भवन में एक गुणानुवाद सभा का आयोजन किया। पूज्य प्रवर्तक श्री एवं पूज्य श्री सिद्धार्थ मुनि जी ने आचार्य श्री को श्रद्धांजलि अर्पित की। संघ की तरफ से उपाध्यक्ष श्री पारसमल जी सोलंकी ने आचार्य श्री शीघ्र मोक्षगामी बनें, ऐसी मंगलकामना की। संघ के मंत्री श्री घीसालालजी हिंगड ने आचार्य श्री के जीवन पर प्रकाश डाला। अन्य अनेक वक्ताओं ने अपने-अपने विचारों द्वारा आचार्य श्री को श्रद्धांजलि अर्पित की। अन्त में चार लोगस्स के काउसग्ग के साथ सभा विसर्जित की गई।

-घीसूलाल हिंगड़

मंत्री श्री कोयम्बटूर स्थानकवासी जैन संघ

दिल्ली : श्री जैन साधुमार्गी श्रावक संघ दिल्ली ने आचार्य श्री नानेश की आज्ञानुवर्तिनी साध्वी श्री प्रियलक्षणा जी महाराज के सानिध्य में श्री श्वेताम्बर स्थानवासी जैन सभा के तत्वाधान में परम श्रद्धेय समता विभूति आचार्य श्री नानेश को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पण की गई।

अखिल भारतवर्षीय जैन कान्फ्रेन्स दिल्ली के अध्यक्ष श्री जोगीराम जी जैन, श्री रिखबचंद जी जैन, उपाध्यक्ष श्री साधुमार्गी जैन संघ दिल्ली श्री रोशनलाल जी जैन, अध्यक्ष श्री श्वेताम्बर स्थानक वासी जैन महासंघ दिल्ली, चांदनी चौक के अध्यक्ष मोतीलाल जी जैन, रंजना मालू जैन, महासभा के महामंत्री प्रोफेसर रतन जैन, श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा कोल्हापुर मार्ग के उपाध्यक्ष व जैन कान्फ्रेंस दिल्ली शाखा के महामंत्री कश्मीरीलाल जी जैन, श्री नेमीचंद जी तांतेड, श्री दिनेश जी जैन, श्री अजीत जैन, श्री बलवीर जी जैन, श्री सतीश जी जैन, श्री हरवंश लाल जी ने अपने अपने विचार रखे। उन्होंने आचार्य श्री के संयमी जीवन की प्रशंसा की। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के पूर्व अध्यक्ष श्री रिद्ध करण जी सिपानी भी इस अवसर पर दिल्ली में मौजूद थे।

-कमलचन्द डागा

नंदुरबार : यहाँ विराजित श्रमण संघीय महासती जी श्री सत्यप्रभाजी आदि ठाणा ने आचार्य श्री के गुणगान करके चार लोगस्स का ध्यान कर श्रद्धांजलि अर्पित की। दोपहर 3 बजे से 4 बजे तक श्री संघ द्वारा सामूहिक जाप के अंत में आचार्य भगवन के गुणगान कर लोगस्स का ध्यान करके श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

-अनिल के. लोढा।

जयपुर : चारित्र चूड़ामणि, धर्मपाल प्रतिबोधक परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानालालजी म.सा. का दिनांक 27 अक्टूबर 1999 की रात्रि को 10.40 बजे संथारे संलेखना के साथ महाप्रयाण हो गया। समता विभूति पूज्य आचार्य श्री नानालाल जी. म. सा. हुक्मवंश के पहले आचार्य हुए जिन्होंने लगभग 37 वर्ष तक संघ का नेतृत्व किया। उन्होंने एक साथ पच्चीस दीक्षा रतलाम में प्रदान कर नया इतिहास बनाया। आचार्य श्री नानालाल जी म. सा. ने सुदीर्घ काल तक संयम साधना की शासन व्यवस्था का दायित्व संभाला और अंतिम समय में संथारा करके उस महापुरुष ने पंडित मरण का वरण किया। शासन देव से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को चिर-शांति मिले।

-विमलचंद डागा मंत्री, सम्यग ज्ञान प्रचारक मंडल

फेकड़ी : श्रीमज्जैनाचार्य पूज्य श्री नानालालजी म. सा. के स्वर्गवास के समाचार सुनकर शोक निमग्न संघ द्वारा शोक सभा आयोजित की गयी जिसमें श्री लालचंद नाहटा, श्री ज्ञानचंद सुराणा, श्री शांतिलाल जी ने आचार्य श्री के जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला एवं लोगस्स का कायोत्सर्ग कर श्रद्धांजलि समर्पित की।

-लालचंद नाहटा 'तरुण'

चांदला : शोक संतप्त सभा में महासती श्री कौशल्या जी, अंजलि जी, रश्मि जी, मधु जी म.सा. ने आचार्य श्री के जीवन पर प्रकाश डाला और श्रद्धांजलि अर्पित कर चार-चार लोगस्स का ध्यान किया।

-महेशचंद गेंदालाल शाह

अलीगढ़ (टोंक) : परम श्रद्धेय समता विभूति आचार्य श्री नानालालजी म. सा. के देवलोक गमन के दुखद प्रसंग पर महासती श्री आदर्श प्रभा जी म. सा. आदि ठाणा 5 के सानिध्य में स्थानक भवन में शोक सभा का आयोजन रखा गया। जिसमें महासती जी म. सा. ने आचार्य भगवन् का गुणगान करते हुए फरमाया कि आचार्य देव इस युग की महान विभूति थे। अन्य वक्ताओं ने भी आचार्य श्री के गुणगान करते हुए आप श्री को महान विभूति बताया।

-गौतम चंद जैन
अध्यक्ष समता युवा संघ

भायंदर (मुंबई) : श्री साधुमार्गी जैन संघ मुंबई द्वारा महासतियों जी के सानिध्य में आयोजित स्मृति सभा में संघ मंत्री कुंदन लाल जी नौलखा, समता युवा संघ के मंत्री वीरेन्द्र जी अग्रवाल, जसवंत सिसोदिया, चंद्रप्रभा नंदावत, उत्तमचंद जी ओसवाल, महावीर जी सुराणा, शांतिचंद जी, मेवाड़ संघ के गणेशलाल जी मेहता, चंदन बाला जैन, मुंबई संघ के उपाध्यक्ष श्री उमराव सिंह जी ओस्तवाल, संघ संरक्षक श्री सुंदरलाल जी कोठारी आदि वक्ताओं ने भावभीनी श्रद्धांजलि दी। विदुषी श्री कांता श्री जी ने गुरु चिन जीवन सुना निरन्तर किया। समता युवा संघ द्वारा रक्तदान शिविर लगाया गया।

कोटा : स्थानीय समता भवन में आयोजित स्मृति सभा में सर्वप्रथम महासती श्री मल्लीप्रभा जी म. सा. ने अपनी हृदय वेदना को शब्दों में व्यक्त किया। महासती श्री सुप्रभाजी म. सा. एवं श्री सत्य प्रभाजी म. सा. ने भावुक स्वरों में अपने अनन्य आराध्य को भावनांजलि अर्पित की। महासती श्री प्रतिभाश्री जी म. सा. ने मर्मस्पर्शी भावव्यक्त करते हुए हृदय की वेदना व्यक्त की। तदनंतर संघ मंत्री शंकरलालजी माहु, युवामंत्र श्री जवाहर जी सांड, श्री दुलीचंद जी भाई, स्वाध्यायी श्री तिलकचंद जी पोरवाल, संघ उपाध्यक्ष श्री निहाल चंद जी कांकरिया, भूतपूर्व मंत्री श्री मोहन लाल जी भंडेवर, श्री अमरसिंह जी मुणोत आदि ने भाव व्यक्त करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। अंत में 4 लोगस्स के ध्यान के साथ सभा का विसर्जन किया गया।

-शंकरलाल माहु

मंदसौर : समता मूर्ति आचार्य श्री नानालालजी म.सा. का दि. 28 अक्टूबर 99 को उदयपुर में देवलोक गमन होने पर महावीर भवन स्थानक शहर मंदसौर में श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। शोक सभा में पंडित श्री [illegible] मुनि जी म.सा., पंडित श्री धर्म मुनि जी म.सा., श्री [illegible] मुनि जी म.सा. ने आचार्य श्री के बहुमुखी [illegible] व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए उन्हें अपनी भावांजलि अर्पित की। सभा में संघ के मंत्री श्री [illegible] सुरड़िया, श्री [illegible] [illegible] व श्री अरविंद जी

सकलेचा ने भी आचार्य श्री को श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

-अध्यापक मानमल बम्बोडी

विराट नगर (नेपाल) :परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री नानालालजी महाराज के असामायिक देहावसान होने के समाचार से हम सभी विराट नगर (नेपाल) निवासी श्रावक स्तब्ध है। जैन धर्म के ओजस्वी व्याख्याता परम पूज्य आचार्य प्रवर का सम्पूर्ण जीवन जैन इतिहास की धरोहर है। आप महान क्रांतिकारी युगदृष्टा महापुरुष थे। आपने अपने विशिष्ट ज्ञान से अल्पारम्भ-महारम्भ तथा समता जीवन दर्शन एवं समीक्षण ध्यान की विशिष्ट विवेचना की। आप द्वारा निर्दिष्ट राह ही सदा हमारी चाह रही है। हम परम् पूज्य आचार्यप्रवर नानेश की पुण्यात्मा की आध्यात्मिक प्रगति की मंगल कामना करते हैं।

-जितेन्द्र कुमार सेठिया, अध्यक्ष

नोखा : संघ अध्यक्ष धर्मचंद जी पारख की अध्यक्षता में स्थानीय संघ के सैकड़ों भाई- बहनों ने श्रद्धांजलि सभा में पूज्य आचार्य देव के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित किये। पूर्व महामंत्री श्री किसनलालजी कांकरिया, जैन आदर्श सेवा संस्थान के महामंत्री श्री ईश्वरचंद जी बैद, डॉ. प्रेमसुख जी मरोटी, श्री राजाराम जी धारणिया, श्री किशनलाल जी संचेती, श्री कान्ह महर्षि, श्री भंवरी देवी दुगड़, श्रीमती अंजू सुराना आदि ने अपने भाव व्यक्त किये।

-मोहनलाल पारख

भुपाल सागर (चित्तौड़गढ़): समता विभूति पूज्य आचार्य श्री नानालाल जी म. सा. का देवलोक गमन का अविश्वसनीय सदृश्य समाचार रात्रि को प्राप्त हुआ, मन को आघात लगा। स्थानीय संघ द्वारा अत्र विराजित ज्ञानगच्छीय महासती श्री कमलेश प्रभा जी म.सा. के सानिध्य में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया महासतियां ने आचार्य भगवन् के जीवन से प्रेरणा लेने एवं उनको सभी का आचार्य बताया।

भूपालसागर साधुमार्गी जैन संघ गुरुदेव के देवलोकगमन पर हार्दिक संवेदना प्रकट करता है एवं उनके बनाये हुए धर्म मार्ग पर चलने को तत्पर रहेगा।

-बसंतीलाल बाफना

अक्कल कुआ : परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानालालजी म.सा. को अक्कल कुआ में भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गयी।

धर्मसभा में समता युवा संघ के मंत्री श्री धनेश बोहरा ने आचार्य श्री नानेश की जीवनी पर बोलते हुए आपके गुणों का विवेचन किया। आपने मालवा, मेवाड़ के करीब डेढ़ लाख अस्पृश्य (बलाई) जाति लोगों को जैन बनाकर उन्हें धर्मपाल नाम दिया। इसी से आप धर्मपाल प्रतिबोधक जाने जाते हैं। आपश्री के निर्वाण से पूरे समाज अपितु भारतीय समाज की अपूर्व क्षति हुई है, जो कभी पूरी नहीं हो सकती है। धर्मसभा में समस्त जैन संघ के सैंकडों सदस्य मौजूद थे। गुरुवार को पूरे समाज ने व्यवसाय प्रतिष्ठान बंद रखे और श्रद्धांजलि अर्पित की।

गंगापुर : साधुमार्गी जैन संघ गंगापुर द्वारा समता भवन में आचार्य श्री नानेश के महाप्रयाण प्रसंग पर आयोजित श्रद्धांजलि समारोह में महासती श्री गंगावती जी, श्री पुष्पलता जी, श्री सुमती श्री जी एवं श्री हर्षिला जी ने आचार्य श्री नानेश को विश्व की विरल विभूति बताते हुए, उनके आदर्शों पर चलने का संकल्प दोहराया व उनके श्री चरणों में श्रद्धासुमन अर्पित किये।

आज के इस श्रद्धांजलि समारोह में खचाखच भरे समता भवन में जैन धर्मावलम्बियों के अतिरिक्त अन्य वर्ग के श्रद्धालुओं ने भी गुरु नानेश को श्रद्धासुमन अर्पित किये। जिनमें स्थानीय सिविल न्यायाधीश श्री पी.सी. पगारिया, चेतन प्रकाश जी डवानियाँ, भंवरलाल जी दूबे, तेरापंथ धर्मपंथ धर्मसंघ के अध्यक्ष लक्ष्मीलाल हिरण, गणपतलाल हिरण, भगवतीलाल नौलखा, देवेन्द्र हिरण, बाबूलाल सिंघवी, कैलाश चंद्र हिरण, स्थानीय संघ के अध्यक्ष मदनलाल पितलिया, महामंत्री सुन्दरलाल सिंघवी ने जैन जगत के ज्योति-पुंज आचार्य नानेश के जीवन पर प्रकाश डालते हुए अपने भावपूर्ण श्रद्धासुमन अर्पित किये।

आचार्य श्री नानेश के महाप्रयाण की सूचना मिलते ही कस्बे के सभी वर्गों के व्यापारियों ने अपने व्यावसायिक प्रतिष्ठान बंद कर अंतिम यात्रा में उदयपुर जाकर भाग लिया। श्रद्धांजलि समारोह के दौरान आचार्य श्री के समता

जयपुर : चारित्र चूड़ामणि, धर्मपाल प्रतिबोधक परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानालालजी म.सा. का दिनांक 27 अक्टूबर 1999 को रात्रि को 10.40 बजे संथारे संलेखना के साथ महाप्रयाण हो गया। समता विभूति पूज्य आचार्य श्री नानालाल जी. म. सा. हुक्मवंश के पहले आचार्य हुए जिन्होंने लगभग 37 वर्ष तक संघ का नेतृत्व किया। उन्होंने एक साथ पच्चीस दीक्षा रतलाम में प्रदान कर नया इतिहास बनाया। आचार्य श्री नानालाल जी म. सा. ने सुदीर्घ काल तक संयम साधना की शासन व्यवस्था का दायित्व संभाला और अंतिम समय में संथारा करके उस महापुरुष ने पंडित मरण का वरण किया। शासन देव से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को चिर-शांति मिले।

-विमलचंद डागा मंत्री, सम्यग ज्ञान प्रचारक मंडल

केकड़ी : श्रीमज्जैनाचार्य पूज्य श्री नानालालजी म. सा. के स्वर्गवास के समाचार सुनकर शोक निमग्न संघ द्वारा शोक सभा आयोजित की गयी जिसमें श्री लालचंद नाहटा, श्री ज्ञानचंद सुराणा, श्री शांतिलाल जी ने आचार्य श्री के जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला एवं लोगस्स का कायोत्सर्ग कर श्रद्धांजलि समर्पित की।

-लालचंद नाहटा 'तरुण'

मांडला : शोक संतप्त सभा में महासती श्री कौशल्या जी, अंजलि जी, रश्मि जी, मधु जी म.सा. ने आचार्य श्री के जीवन पर प्रकाश डाला और श्रद्धांजलि अर्पित कर चार-चार लोगस्स का ध्यान किया।

-महेशचंद गेंदालाल शाह

अलीगढ़ (टोंक) : परम श्रद्धेय समता विभूति आचार्य श्री नानालालजी म. सा. के देवलोक गमन के दुखद प्रसंग पर महासती श्री आदर्श प्रभा जी म. सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में स्थानक भवन में शोक सभा का आयोजन रखा गया। जिसमें महासती जी म. सा. ने आचार्य भगवन् का गुणगान करते हुए फरमाया कि आचार्य देव इस युग की महान विभूति थे। अन्य वक्ताओं ने भी आचार्य श्री के गुणगान करते हुए आप श्री को महान विभूति बताया।

-गौतम चंद जैन
अध्यक्ष समता युवा संघ

भायंदर (मुंबई) : श्री साधुमार्गी जैन संघ मुंबई द्वारा महासतियों जी के सान्निध्य में आयोजित स्मृति सभा में संघ मंत्री कुंदन लाल जी धोखरा, समता युवा संघ के मंत्री वीरेन्द्र जी अभाणी, जसवंत सिसोदिया, चंद्रप्रभा बरड़िया, उत्तमचंद जी ओसवाल, महावीर जी गुर्जर, भागचंद जी, मेवाड़ संघ के गणेशलाल जी मेहता, चंदन बाला जैन, मुंबई संघ के उपाध्यक्ष श्री उमराव सिंह जी ओस्तवाल, संघ संरक्षक श्री सुंदरलाल जी कोठारी आदि वक्ताओं ने भावभीनी श्रद्धांजलि दी। विदुषी श्री कांता श्री जी ने गुरु चित जीवन सुना निरूपित किया। समता युवा संघ द्वारा रक्तदान शिविर लगाया गया।

कोटा : स्थानीय समता भवन में आयोजित स्मृति सभा में सर्वप्रथम महासती श्री मल्लीप्रभा जी म. सा. ने अपनी हृदय वेदना को शब्दों में व्यक्त किया। महासती श्री सुप्रभाजी म. सा. एवं श्री सत्य प्रभाजी म. सा. ने भावुक शब्दों में अपने अनन्य आराध्य को भावनांजलि अर्पित की। महासती श्री प्रतिभाश्री जी म. सा. ने मर्मस्पर्शी भावव्यक्त करते हुए हृदय की वेदना व्यक्त की। तदनंतर संघ मंत्री शंकरलालजी मालू, सुश्रावक श्री जवाहर जी सांड, श्री दुलीचंद जी मार्ड, स्वाध्यायी श्री शिखरचंद जी पोरवाल, संघ उपाध्यक्ष श्री निहाल चंद जी कांकरिया, भूतपूर्व मंत्री श्री मोहन लाल जी भंडारी, श्री जगदीश जी मूणोत आदि ने भाव व्यक्त करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। अंत में 4 लोगस्स के ध्यान के साथ सभा का विसर्जन किया गया।

-शंकरलाल मालू

मंदसौर : समता मूर्ति आचार्य श्री नानालालजी म.सा. का दि. 28 अक्टूबर 99 को उदयपुर में देवलोक गमन होने पर महावीर भवन नाहरवाला बाग, शहर मंदसौर में सादर श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। शोक सभा में पंडित श्री उत्तम मुनि जी म.सा., पंडित श्री धर्म मुनि जी म.सा., श्री [illegible] मुनि जी म.सा. ने आचार्य श्री के बहुमुखी प्रेरणादायी व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए उन्हें अपनी भावनांजलि अर्पित की। सभा में संघ के मंत्री श्री [illegible] मुर्डिया, श्री [illegible] कुदाल व श्री अरविंद जी

सकलेचा ने भी आचार्य श्री को श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

-अध्यापक मानमल बम्बोड़ी

विराट नगर (नेपाल): परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री नानालालजी महाराज के असामायिक देहावसान होने के समाचार से हम सभी विराट नगर (नेपाल) निवासी श्रावक स्तब्ध है। जैन धर्म के ओजस्वी व्याख्याता परम पूज्य आचार्य प्रवर का सम्पूर्ण जीवन जैन इतिहास की धरोहर है। आप महान क्रांतिकारी युगदृष्टा महापुरुष थे। आपने अपने विशिष्ट ज्ञान से अल्पारम्भ-महारम्भ तथा समता जीवन दर्शन एवं समीक्षण ध्यान की विशिष्ट विवेचना की। आप द्वारा निर्दिष्ट राह ही सदा हमारी चाह रही है। हम परम पूज्य आचार्यप्रवर नानेश की पुण्यात्मा की आध्यात्मिक प्रगति की मंगल कामना करते हैं।

-जितेन्द्र कुमार सेठिया, अध्यक्ष

नोखा: संघ अध्यक्ष धर्मचंद जी पारख की अध्यक्षता में स्थानीय संघ के सैकड़ों भाई- बहनों ने श्रद्धांजलि सभा में पूज्य आचार्य देव के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित किये। पूर्व महामंत्री श्री किसनलालजी कांकरिया, जैन आदर्श सेवा संस्थान के महामंत्री श्री ईश्वरचंद जी बैद, डॉ. प्रेमसुख जी मरोटी, श्री राजाराम जी धारणिया, श्री किशनलाल जी संचेती, श्री कान्ह महर्षि, श्री भंवरी देवी दुगड़, श्रीमती अंजू सुराना आदि ने अपने भाव व्यक्त किये।

-मोहनलाल पारख

भूपाल सागर (चित्तौड़गढ़): समता विभूति पूज्य आचार्य श्री नानालाल जी म. सा. का देवलोक गमन का अविश्वसनीय सदृश्य समाचार रात्रि को प्राप्त हुआ, मन को आघात लगा। स्थानीय संघ द्वारा अत्र विराजित ज्ञानगच्छीय महासती श्री कमलेश प्रभा जी म.सा. के सानिध्य में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया महासतियां ने आचार्य भगवन् के जीवन से प्रेरणा लेने एवं उनको सभी का आचार्य बताया।

भूपालसागर साधुमार्गी जैन संघ गुरुदेव के देवलोकगमन पर हार्दिक संवेदना प्रकट करता है एवं उनके बनाये हुए धर्म मार्ग पर चलने को तत्पर रहेगा।

-बसंतीलाल बाफना

अक्कल कुआ: परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानालालजी म.सा. को अक्कल कुआ में भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गयी।

धर्मसभा में समता युवा संघ के मंत्री श्री धनेश बोहरा ने आचार्य श्री नानेश की जीवनी पर बोलते हुए आपके गुणों का विवेचन किया। आपने मालवा, मेवाड़ के करीब डेढ़ लाख अस्पृश्य (बलाई) जाति लोगों को जैन बनाकर उन्हें धर्मपाल नाम दिया। इसी से आप धर्मपाल प्रतिबोधक जाने जाते हैं। आपश्री के निर्वाण से पूरे समाज अपितु भारतीय समाज की अपूर्व क्षति हुई है, जो कभी पूरी नहीं हो सकती है। धर्मसभा में समस्त जैन संघ के सैंकड़ों सदस्य मौजूद थे। गुरुवार को पूरे समाज ने व्यवसाय प्रतिष्ठान बंद रखे और श्रद्धांजलि अर्पित की।

गंगापुर: साधुमार्गी जैन संघ गंगापुर द्वारा समता भवन में आचार्य श्री नानेश के महाप्रयाण प्रसंग पर आयोजित श्रद्धांजलि समारोह में महासती श्री गंगावती जी, श्री पुष्पलता जी, श्री सुमती श्री जी एवं श्री हर्षिला जी ने आचार्य श्री नानेश को विश्व की विरल विभूति बताते हुए, उनके आदर्शों पर चलने का संकल्प दोहराया व उनके श्री चरणों में श्रद्धासुमन अर्पित किये।

आज के इस श्रद्धांजलि समारोह में खचाखच भरे समता भवन में जैन धर्मावलम्बियों के अतिरिक्त अन्य वर्ग के श्रद्धालुओं ने भी गुरु नानेश को श्रद्धासुमन अर्पित किये। जिनमें स्थानीय सिविल न्यायाधीश श्री पी.सी. पगारिया, चेतन प्रकाश जी डवानियाँ, भंवरलाल जी दूबे, तेरापंथ धर्मपंथ धर्मसंघ के अध्यक्ष लक्ष्मीलाल हिरण, गणपतलाल हिरण, भगवतीलाल नौलखा, देवेन्द्र हिरण, बाबूलाल सिंघवी, कैलाश चंद्र हिरण, स्थानीय संघ के अध्यक्ष मदनलाल पितलिया, महामंत्री सुन्दरलाल सिंघवी ने जैन जगत के ज्योति-पुंज आचार्य नानेश के जीवन पर प्रकाश डालते हुए अपने भावपूर्ण श्रद्धासुमन अर्पित किये।

आचार्य श्री नानेश के महाप्रयाण की सूचना मिलते ही कस्बे के सभी वर्गों के व्यापारियों ने अपने व्यावसायिक प्रतिष्ठान बंद कर अंतिम यात्रा में उदयपुर जाकर भाग लिया। श्रद्धांजलि समारोह के दौरान आचार्य श्री के समता

(राउरकेला), श्री मीठालाल जी दक, सूरत संघ उपाध्यक्ष श्री अजीत जी कांकरिया, कोषाध्यक्ष श्री डालमचंदजी लुणिया, श्रीमती सोहनी सुराना आदि ने आचार्य श्री नानेश को अपने- अपने भावों से श्रद्धांजलि देते हुए गुणानुवाद किया एवं पट्टधर आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं समर्पण को ही श्री नानेश की प्रति सच्ची श्रद्धांजलि बताया।

अंत में लोगस्स के पाठ के साथ मौन धारण करके श्रद्धांजलि दी गई तथा सभा के विसर्जन के बाद संघ सह-मंत्री श्री हुलास जी सुराना की प्रेरणा से उपस्थित श्रद्धालुओं ने त्याग तपस्या की परची लेकर प्रत्याखान सहित आचार्य श्री नानेश को श्रद्धांजलि दी ।

-मदनलाल बोथरा
मंत्री , साधु. जैन संघ

गंगाशहर (भीनासार) :-श्री जैन जवाहर विद्यापीठ में श्री विनय मुनि जी म.सा. व श्री अक्षय मुनि जी म.सा. के सत्सानिध्य में महाप्रतापी आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. की स्मृति में सभा रखी गई। सर्वप्रथम श्री अक्षय मुनि जी म.सा. ने आचार्य श्री नानेश के जीवन संदर्भ के बारे में अपने भाव रखे। आचार्य देव आज हमारे बीच नहीं है पर उनके आदर्श हमारे बीच उपस्थित हैं। वे कम बोलते थे परन्तु उनका चरित्र निरंतर बोलता रहता था। उनका जीवन उनकी वाणी, उनका शरीर साधना से सधे हुए थे।

श्री विनय मुनि जी म.सा. ने परम आराध्य देव के संदर्भ में अपने भाव प्रकट करते हुए कहा जीवन के दो छोर हैं जन्म और मृत्यु। जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु अवश्यम्भावी है। महापुरुषों का जीवन अगरबत्ती की तरह होता है जिस प्रकार अगरबत्ती स्वयं जलकर दूसरों को सुगंधित करती है इसी प्रकार आचार्य भगवन ने दुनिया को अमूल्य चीजें दी है।

आचार्य देव ने हुक्मसंघ के नवें पाट पर आचार्य श्री रामलाल जी म. सा. का चयन किया है। हमें आचार्य श्री रामलाल जी.म.सा. को पूर्ण समर्पणा के साथ संघ के विकास में सहयोग करना है। महासती श्री सुमेधा जी म.सा. ने कविता में अपने भाव प्रकट किये।

श्री साधुमार्गी जैन संघ गंगाशहर भीनासर के मंत्री श्री महेन्द्र जी मिन्नी, श्री जैन जवाहर विद्यापीठ के मंत्री श्री मेघराज जी बोथरा, महिला समिति अध्यक्षा श्री किरण देवी बोथरा, पत्रकार प्रकाश पुगलिया, विश्व भारती के अध्यक्ष खेमचंद सेठिया, प्रो. सुमेरमल जैन, समता भवन के सचिव श्री उदय जी नागोरी, वरिष्ठ श्रावक सुशील जी बच्छावत एवं चंचल जी बोथरा श्रमणोपासक संपादक श्री चंपालाल जी डागा ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। तेरापंथ महासभा के अध्यक्ष श्री भंवरलाल डागा ने महाप्रज्ञ के संदेश का वाचन किया जिसमें आचार्य श्री नानेश को श्रद्धांजलि के भाव थे। तेरापंथ महासभा के श्री सुपारसमल दुगड़, लूणकरण छाजेड़ व अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के कोषाध्यक्ष श्री जयचंदलाल जी सुखाणी आदि वक्ताओं ने भी आचार्य श्री को श्रद्धांजलि दी तथा सभी ने आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के प्रति निष्ठा, श्रद्धा व समर्पण रखने का संकल्प दोहराया।

-महेन्द्र मिन्नी

खाचरौद : खाचरौद श्री संघ ने चातुर्मासार्थ विराजित परम विदुषी महासती श्री कुसुमलता जी म.सा. आदि ठाणा 4 के सानिध्य में आचार्य श्री नानेश के देवलोक गमन के उपरांत एक स्मृति सभा आयोजित की। स्मृति सभा में श्री झमकलाल बरखेड़ा वाला, श्री मोहनलाल जी लहरी, श्री अनिल दलाल, श्री जवाहरलाल कोठारी, श्री सुरेश नांदेचा, श्री राजू कोठारी, श्री राजू चौरड़िया, श्रीमती बबीता भटेवरा एवं श्रीमती चंद्र बसंत नांदेचा ने भाव व्यक्त किये, कार्यक्रम का संचालन श्री सुभाष दलाल ने किया।

स्मृति सभा के अंत में सभी सरलमना, भद्रिक महासतियांजी ने खाचरौद श्री संघ से मन को छू लेने वाली अपील की कि जिस प्रकार आपने आचार्य श्री नानेश को सहयोग दिया है उसी प्रकार वर्तमान आचार्य श्री रामेश को भी सहयोग प्रदान कर खाचरौद श्री संघ अपनी गौरवमयी परंपरा को कायम रखे।

सभा के अंत में महासती श्री कुसुम लता जी म.सा. ने अपने प्रेरक उद्बोधन में बताया कि मरण दो प्रकार का होता है बाल मरण व पंडित मरण। आचार्य श्री नानेश

दर्शन पर चर्चा में भाग लेते हुए स्थानीय समता युवा संघ द्वारा श्री अम्बेश गुरु रैफरल चिकित्सालय में समता जल मंदिर बनाकर आजीवन संचालन का निर्णय लिया गया।

-सुन्दरलाल सिंघवी

भूपालगंज : परम पूज्य आचार्य भगवन् श्री नानालालजी म.सा. सिद्ध - अरिहन्तों से नाता जोड़ते हुए सजग संथारा सहित नश्वर देह का परित्याग कर 27 अक्टूबर 99 को देवलोक सिधार गये।

इस दुखद बेला में हमारे संघ के सदस्य भाई-बहन - बालवृन्द सभी ने अपने आराध्य देव को सजल नेत्रों से हार्दिक भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की है एवं श्री जिनेश्वर देव से प्रार्थना की है - कि आचार्य भगवन् की आत्मा को चिरशान्ति प्रदान करे। हम सभी की मंगल कामना है कि आचार्य भगवन की आत्मा अतिशीघ्र सिद्धगति को प्राप्त करे।

-भगवतीलाल सेठिया

देवगढ़ मदारिया : श्री साधुमार्गी जैन संघ के समता भवन में आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी महाराज साहब के देवलोक गमन पर शोक सभा का आयोजन रखा गया। उसमें श्री धर्मचंद जी देरासरिया, श्री चंदनमल जी जैन, श्री भंवरलाल जी श्री माल, श्री उत्तमचंद जी सुखलेचा, श्री भंवरलाल जी गांधी, श्री चंद्रप्रकाश जी आच्छा वर्धमान स्थानक वासी संघ, श्री मिश्रीलाल जी देशरला, श्री कोमलसिंह जी मेहता आदि वक्ताओं ने आचार्य प्रवर के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। संघ के उपाध्यक्ष श्री मिश्रीलाल पोखरना ने अपने उद्‌बोधन में आचार्य प्रवर के देवलोक गमन से, श्री साधुमार्गी जैन संघ की ही नहीं पूरे जैन संघ के अपूरणीय क्षति हुई है। उसकी भरपाई कर विषमता को दूर करना ही आचार्य प्रवर के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। दिवंगत आत्मा देवलोक में मोक्ष की ओर प्रस्थान करें, यही अरिहंत प्रभु से मंगल कामना व्यक्त की। देवगढ़ के समस्त व्यापारी बन्धुओं ने अपना कारोबार बंद रखा।

-मिश्रीलाल पोखरना

सवाईमाधोपुर : परमपूज्य आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी महाराज के महाप्रयाण की सूचना प्राप्त होने पर स्तब्ध जैन समाज अपने व्यावसायिक प्रतिष्ठान बंद कर स्थानीय समता भवन में दिवंगत आचार्य श्री को श्रद्धा सुमन अर्पित करने को इकट्ठा हुआ। संघों के प्रमुख वक्ताओं ने आचार्य श्री के जीवन की विशेषताओं पर प्रकाश डाला तथा उनके आदेशों को जीवन में यथाशक्ति पालन करने का निश्चय किया। प्रमुख वक्ताओं में श्री राधेश्याम जी, श्री संघ अध्यक्ष, श्री रघुनाथदास जी, श्री सुबाहु कुमार जी तथा श्री पूनम चंद जैन स्थानीय साधुमार्गी संघ अध्यक्ष ने आचार्य श्री के बहुआयामी प्रतिभाओं पर प्रकाश डाला। अंत में चार लोगस्स का ध्यान करने के बाद सभा विसर्जित हुई। दूसरे दिन महावीर भवन में उपाध्याय श्री मानमुनि जी के सानिध्य में गुणानवाद सभा का आयोजन किया गया।

-पूनमचंद जैन

सूरत : श्री मेवाड़ साजनान संघ भवन सूरत में आचार्य श्री नानेश की गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। जिसमें सर्व प्रथम संघ मंत्री श्री मदनलाल बोथरा ने आचार्य नानेश के विराट व्यक्तित्व की संक्षिप्त में जानकारी दी।

सभा में श्री साधुमार्गी जैन संघ सूरत के पदाधिकारी व सदस्यों के अलावा श्री स्थानकवासी जैन संघ उधना, श्री स्थानकवासी जैन संघ मैस्तान, श्री सुधर्मा स्वामी स्थानकवासी जैन संघ, श्री महावीर इंटरनेशनल, श्री श्रमण संघ स्थानकवासी जैन संघ आदि संघों के गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे। सूरत संघ संरक्षक श्री मांगीलालजी नेणावत, संघ अध्यक्ष श्री प्रदीप जी गोलच्छा, समता युवा संघ सूरत अध्यक्ष श्री सुभाषजी पारख, महिला मंडल मंत्री श्रीमती रजनी बोथरा, महावीर इंटरनेशनल सूरत के उपप्रमुख श्री स्वरूपजी बाफना सी.ए., सुधर्मा स्थानकवासी जैन संघ सूरत के संघ संरक्षक व पूर्व मंत्री श्री हीरालालजी तालेरा, श्री स्थानकवासी जैन संघ मैस्तान के प्रमुख श्री नवीनभाई पारीख, श्री रिखबचंद जी चौपड़ा(इंदौरवाले) श्री वच्छ-राजजी सुराना , श्री हुलासजी सुराना, श्री मांगीलालजी पिछोलिया, श्री राकेश जी श्रीमाल, बुलाकीचंदजी नाहटा, श्री प्रकाशजी देरासरिया, श्री त्रिलोकचंद जी धोखा

(राउरकेला), श्री मीठालाल जी दक, सूरत संघ उपाध्यक्ष श्री अजीत जी कांकरिया, कोषाध्यक्ष श्री डालमचंदजी लुणिया, श्रीमती सोहनी सुराना आदि ने आचार्य श्री नानेश को अपने- अपने भावों से श्रद्धांजलि देते हुए गुणानुवाद किया एवं पट्टधर आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं समर्पण को ही श्री नानेश की प्रति सच्ची श्रद्धांजलि बताया।

अंत में लोगस्स के पाठ के साथ मौन धारण करके श्रद्धांजलि दी गई तथा सभा के विसर्जन के बाद संघ सह-मंत्री श्री हुलास जी सुराना की प्रेरणा से उपस्थित श्रद्धालुओं ने त्याग तपस्या की परची लेकर प्रत्याखान सहित आचार्य श्री नानेश को श्रद्धांजलि दी ।

-मदनलाल बोथरा
मंत्री , साधु. जैन संघ

गंगाशहर (भीनासार) :श्री जैन जवाहर विद्यापीठ में श्री विनय मुनि जी म.सा. व श्री अक्षय मुनि जी म.सा. के सत्सानिध्य में महाप्रतापी आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. की स्मृति में सभा रखी गई। सर्वप्रथम श्री अक्षय मुनि जी म.सा. ने आचार्य श्री नानेश के जीवन संदर्भ के बारे में अपने भाव रखे। आचार्य देव आज हमारे बीच नहीं है पर उनके आदर्श हमारे बीच उपस्थित हैं। वे कम बोलते थे परन्तु उनका चारित्र निरंतर बोलता रहता था। उनका जीवन उनकी वाणी, उनका शरीर साधना से सधे हुए थे।

श्री विनय मुनि जी म.सा. ने परम आराध्य देव के संदर्भ में अपने भाव प्रकट करते हुए कहा जीवन के दो छोर हैं जन्म और मृत्यु । जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु अवश्यम्भावी है। महापुरुषों का जीवन अगरबत्ती की तरह होता है जिस प्रकार अगरबत्ती स्वयं जलकर दूसरों को सुगंधित करती है इसी प्रकार आचार्य भगवन ने दुनिया को अमूल्य चीजें दी है।

आचार्य देव ने हुक्मसंघ के नवें पाट पर आचार्य श्री रामलाल जी म. सा. का चयन किया है। हमें आचार्य श्री रामलाल जी.म.सा. को पूर्ण समर्पणा के साथ संघ के विकास में सहयोग करना है। महासती श्री सुमेधा जी म.सा. ने कविता में अपने भाव प्रकट किये।

श्री साधुमार्गी जैन संघ गंगाशहर भीनासर के मंत्री श्री महेन्द्र जी मिन्नी, श्री जैन जवाहर विद्यापीठ के मंत्री श्री मेघराज जी बोथरा, महिला समिति अध्यक्षा श्री किरण देवी बोथरा, पत्रकार प्रकाश पुगलिया, विश्व भारती के अध्यक्ष खेमचंद सेठिया, प्रो. सुमेरमल जैन, समता भवन के सचिव श्री उदय जी नागोरी, वरिष्ठ श्रावक सुशील जी वच्छावत एवं चंचल जी बोथरा श्रमणोपासक संपादक श्री चंपालाल जी डागा ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। तेरापंथ महासभा के अध्यक्ष श्री भंवरलाल डागा ने महाप्रज्ञ के संदेश का वाचन किया जिसमें आचार्य श्री नानेश को श्रद्धांजलि के भाव थे। तेरापंथ महासभा के श्री सुपारसमल दुगड़, लूणकरण छाजेड़ व अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के कोषाध्यक्ष श्री जयचंदलाल जी सुखाणी आदि वक्ताओं ने भी आचार्य श्री को श्रद्धांजलि दी तथा सभी ने आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के प्रति निष्ठा, श्रद्धा व समर्पण रखने का संकल्प दोहराया।

-महेन्द्र मिन्नी

खाचरौद : खाचरौद श्री संघ ने चातुर्मासार्थ विराजित परम विदुषी महासती श्री कुसुमलता जी म.सा. आदि ठाणा 4 के सानिध्य में आचार्य श्री नानेश के देवलोक गमन के उपरांत एक स्मृति सभा आयोजित की। स्मृति सभा में श्री झमकलाल बरखेड़ा वाला, श्री सोहनलाल जी लहरी, श्री अनिल दलाल, श्री जवाहरलाल कोठारी, श्री सुरेश नांदेचा, श्री राजू कोठारी, श्री राजू चौरड़िया, श्रीमती बबीता भटेवरा एवं श्रीमती चंद्र बसंत नांदेचा ने भाव व्यक्त किये, कार्यक्रम का संचालन श्री सुभाष दलाल ने किया।

स्मृति सभा के अंत में सभी सरलमना, भद्रिक महासतियांजी ने खाचरौद श्री संघ से मन को छू लेने वाली अपील की कि जिस प्रकार आपने आचार्य श्री नानेश को सहयोग दिया है उसी प्रकार वर्तमान आचार्य श्री रामेश को भी सहयोग प्रदान कर खाचरौद श्री संघ अपनी गौरवमयी परंपरा को कायम रखे।

सभा के अंत में महासती श्री कुसुम लता जी म.सा. ने अपने प्रेरक उद्बोधन में बताया कि मरण दो प्रकार का होता है बाल मरण व पंडित मरण। आचार्य श्री नानेश

ने संलेखना संथारा कर सजग अवस्था में रह कर पंडित मरण को अंगीकार किया है। इसके साथ ही आचार्य श्री नानेश के भव्य जीवन के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला। स्मृति सभा के अंत में 4-4 लोगस्स का ध्यान कर गुरुदेव को श्रद्धांजलि दी गई।

-सुभाष दलाल

जावरा : समता विभूति आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. की स्मृति में गुणानुवाद हेतु श्रद्धांजलि सभा का आयोजन स्थानीय समता भवन जवाहर पेठ में महासती श्री पान कंवर जी म. सा. आदि ठाणा 10 के सानिध्य में हुआ। वर्द्धमान स्थानकवासी श्रावक संघ के सुजानमल जी कोचट्टा, त्रिस्तुतीक जैन संघ के प्रकाशचंद जी काठेड़, दिगम्बर जैन संघ की ओर से पुखराजमलजी सेठी, चंद्रप्रभु दिगम्बर जैन संघ की ओर से हीरालाल जी गंगवाल, सतीश जी कासलीवाल, स्थानीय श्री संघ के अध्यक्ष समरथमल जी काठेड़, उपाध्यक्ष मांगीलाल जी मेहता, महामंत्री अमृतलाल जी पगारिया, वैराग्यवती बहन प्रतिभा सुराणा, प्रकाशचंद्रजी श्री श्री माल, प्रकाशचंद्र जी चोरड़िया, सीमा संघवी, श्रीमती राजकुमारी पगारिया, मनीषा पगारिया, खुशबू पोखरना आदि ने भावपूर्ण अभिव्यक्ति की। महासती श्री पानकुंवर जी म. सा. ने गुरुदेव के गुणों को उजागर करते हुए नवम् पट्टधर आ. श्री रामलाल जी म.सा.के उन्नतिमय शासन की शुभकामनाएँ दीं। महासती श्री ललिता श्री जी म.सा., महासती श्री अनुपमा श्री जी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने भावपूर्ण गीतिका के माध्यम से अपनी भावाभिव्यक्ति दी। श्री संघ के वरिष्ठ श्री राजमल जी नाहर ने चार लोगस्स का ध्यान कराया।

विराट नगर (नेपाल) : 28.10.99 को श्री जैन श्वेताम्बर साधुमार्गी संघ विराटनगर में श्री इंदरचंद सेठिया की अध्यक्षता परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म.सा. के देवलोक गमन पर दोपहर 1 बजे से 3 बजे तक नमोकार महामंत्र को जाप तथा शाम 7 बजे शोक सभा का आयोजन किया गया। उक्त अवसर पर बड़ी संख्या में श्रावक श्राविका तथा बाल-बच्चे उपस्थित थे। श्रावक श्राविका ने आचार्य भगवान के जीवन पर प्रकाश डाला तथा गीतिका प्रस्तुत की। आचार्य प्रवर को विशिष्ट आगम ज्ञाता निरूपित करते हुए 4 लोगस्स का ध्यान किया एवं भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

-सुरेन्द्रकुमार लुनिया

सीतामऊ : समता विभूति आचार्य श्री नानालाल जी म. सा. के देवलोक गमन के समाचार से स्थानीय जैन समाज में शोक छा गया। महाप्रयाण यात्रा के दिन सकल जैन समाज ने अपना व्यवसाय बंद रखा। महावीर भवन में शोक सभा आयोजित की गई तथा समाज के अध्यक्ष श्री सुजान मलजी बोहरा, प्रकाश चंद्रजी पटवारी, सागर मलजी जैन, श्रीमती सुशीला जैन ने आचार्य श्री के दीर्घ संयमी जीवन पर प्रकाश डाला।

महासमुंद : खरतरगच्छाचार्य श्री महोदय सागर जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी शा.प्र. श्री निपुणाश्री म.सा. की विदुषी शिष्या परम पूज्या साध्वी श्री मजुंला श्री जी म.सा. के पावन सानिध्य में श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई। विदुषी महासती जी ने आचार्य श्री नानेश के जीवन प्रसंगों के बारे में बताते हुए कहा कि हालांकि मैं उनके बारे में ज्यादा तो नहीं जानती मगर इतना जानती हूँ कि उन महापुरुष ने आज के इस विषमताओं से भरे दौर में विश्व को समता का प्रकाश दिया है। आज उनका यूँ चले जाना एक बड़ी अपूरणीय क्षति है। गुरु भक्ति से ओतप्रोत श्री उत्तम चंद जी कोटड़िया ने आचार्य श्री नानेश का पूरा जीवन परिचय देते हुए कविता के रूप में अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि दी। श्री रमेश जी सांखला, श्री अशोक जी चौरड़िया, श्री भीखमचंद जी मालू, श्री धरमचंद जी श्रीश्रीमाल, श्रीमती बबिता बरड़िया आदि ने गुरुदेव के जीवन संस्मरणों के बारे में प्रकाश डालते हुए भावयुक्त श्रद्धांजलि दी। आस्था के भास्कर विश्व हितंकर, समता दिनकर आचार्य श्री नानेश को अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि श्रीमती ज्ञानी पींचा ने दी।

आचार्य श्री नानेश के महाप्रयाण के समाचार सुनते ही संघ सदस्यों द्वारा १२ घंटे का नवकार मंत्र का अखंड जाप रखा गया।

-श्रीमती ज्ञानी पींचा
श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्री संघ

उदयपुर : स्थानकवासी जैन समाज के मूर्धन्य आचार्य श्री नानालाल जी महाराज साहब के दिनाँक 27.10.99 को रात्रि में 10.41 बजे संलेखना संथारा सहित देवलोक गमन पर महावीर जैन परिषद के सदस्यों ने उनको श्रद्धांजलि अर्पित की।

अध्यक्ष श्री राजेन्द्र प्रसाद नाहर ने बताया कि आचार्य श्री नानालालजी म.सा. एक राष्ट्रसंत एवं उच्च कोटि के विद्वान थे। वे स्थानकवासी जैन समाज के ही नहीं अपितु सम्पूर्ण मानव समाज के दैदीप्यमान सितारे थे। हम सभी उनके उपदेशों एवं सिद्धांतों को जीवन में उतारें यही हमारी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

अलीगढ़ (रामपुरा) : महासती श्री आदर्श प्रभाजी म.सा. के पावन सानिध्य में 29.10.99 को आचार्य पूज्य गुरुदेव की स्मृति सभा का समायोजन हुआ जिसमें संघ मंत्री श्री भैरुलाल जी जैन, श्री गोपाललाल जी जैन, सरपंच युवा श्री प्रजनलाल जी जैन, श्री गौतमचंद जी जैन पटवारी, विदुषी महासती श्री आदर्श प्रभा जी म. सा., विदुषी महासती श्री गुणसुन्दरी जी म.सा. ने भाव विभोर होते हुए भरे गले से आचार्य देव के गुण स्मरण करते हुए कहा कि चतुर्विध संघ से अमूल्य निधि छिन गई है।

ऐसे अनन्त आराध्य देव का आत्मा नश्वर शरीर को छोड़कर देवलोक गमन कर गया। उन्होंने अपने संघ की बागडोर ऐसे उत्कृष्ट साधना शील महापुरुष के सशक्त हाथों में सौंपी है जिनका जीवन धवल दूध की भांति पवित्र एवं निर्मल है।

-रतनलाल जैन

रामपुरहाट (पं.बंगाल) : परमपूज्य, आचार्य श्री नानालालजी म.सा. का उदयपुर में संथारा पूर्वक देवलोक गमन का समाचार मिलते ही रामपुरहाट सब डिवीजन के सभी मुकामों के साधुमार्गी जैन संघ के श्रावकों ने अपने-अपने व्यवसाय प्रतिष्ठान बंद कर दिये।

पं. बंगाल के रामपुरहाट शहर के सभी जैन बंधुओं ने उस दिन दिगवंत आचार्य गुरुदेव के प्रति विभिन्न धार्मिक कृत्यों के द्वारा अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

-सुशील बांठिया

खैरागढ़ : आचार्य भगवन् श्री नानालालजी म.सा. के देवलोक गमन की खबर सुन खैरागढ़, छुईखदान, मुढ़ीपार, पांड़ादाह, अतरिया आदि के जैन समाज सभी ने अपना कारोबार बंद रखा। स्थानक भवन में नवकार - मंत्र का जाप हुआ। शाम को सकल जैन समाज ने श्री वर्धमान जैन स्थानक भवन के तत्वाधान में श्रद्धांजलि सभा की। जैन समाज के प्रमुख श्री अजय जी ओसवाल, श्री प्रेमचंदजी मूणोत, श्री पन्नालाल जी गिड़िया, श्री प्रेमचंद जी गिड़िया, श्री किशनजी छाजेड़, श्री नथमलजी कोटड़िया, श्री गुलाब छाजेड़, श्रीमती सरलादेवी सांखला आदि ने अपने-अपने भावों से गुरुदेव को नमन कर श्रद्धांजलि दी। अंत में सभी जैन समाज के श्रावक एवं श्राविकाओं ने 4-4 लोगस्स का ध्यान करके गुरुदेव को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री गुलाब चोपड़ा ने जीवन चरित्र प्रस्तुत किया।

-गौतम चोपड़ा, शाखा संयोजक

झालावाड़ : पूज्य जैनाचार्य नानालालजी म.सा. का उदयपुर में संथारा सहित देवलोक गमन हो गया। श्रद्धांजलि सभा को यहाँ स्थानक में संबोधित करते हुए महासती श्री अरविंद कंवर जी ने कहा कि - पूज्य आचार्य श्री हुक्म गच्छ के सूर्य थे। उनका दैदीप्यमान जीवन मुमुक्षु आत्माओं के लिए ज्योति पुंज था।

झालावाड़ श्री संघ की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की गई और चार लोगस्स का ध्यान किया गया। नियमित व्याख्यान बंद रखा गया। श्रद्धांजलि सभा में पूज्य गुरुदेव का डॉ. सुभाष जी मेहता ने गुणानुवाद किया।

-महेश डागा

बड़ीसादड़ी : दि. 29.10 को स्वर्गीय आचार्य प्रवर के गुणानुवाद करने समता भवन में प्रातः श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें सकल संघ के आबाल वृद्ध, श्रावक, श्राविकाओं ने भाग लिया। सभी के आँखें अश्रुपूरित थी। महासतियां जी श्री विमला कंवर जी म.सा., विचक्षणा श्री जी म.सा. आदि ठाणा ने स्वर्गीय आचार्य श्री के आदर्श त्यागमय जीवन के विविध प्रसंगों को स्पष्ट करते हुए गुणानुवाद किये व आचार्य श्री जी के जीवन के कई अनुकरणीय प्रेरक प्रसंग पर प्रकाश डाला।

संघ अध्यक्ष श्री रोशनलाल जी पामेचा, श्री लालचंदजी डांगी व श्री राजमल जी कंठालिया ने स्वर्गीय आचार्य प्रवर के आदर्श त्यागमय जीवन व अनुकरणीय प्रेरक प्रसंगों को स्पर्श करते हुए इन महान पुरुष के जीवन को सभी प्रकार से अनुकरणीय बताया। सभी ने मौन श्रद्धांजलि अर्पित की व स्वर्गस्थ महान् आत्मा को चिर शांति के लिए प्रभु से मौन प्रार्थना की।

-राजमल कंठालिया

चेन्नई : 29.10.99 को साहूकार पेठ के जैन भवन में श्रमण संघीय महामंत्री श्री सौभाग्य मुनि जी म.सा. के सानिध्य में सभा हुई। मुनि श्री ने आपको इस युग का एक महान आचार्य निरुपित किया। स्थानीय संघ अध्यक्ष श्री गोठी जी ने कहा कोटि - कोटि जनता के आप श्रद्धा केन्द्र थे। कांफ्रेंस के मंत्री श्री आर.सी.बोहरा ने कहा - आप में गजब का आत्म बल था सम्पूर्ण जैन समाज की अपूरणीय क्षति हुई है। श्री केसरी चंद सेठिया ने साधुमार्गीय जैन संघ की ओर से आपके चहुंमुखी जीवन पर प्रकाश डाला। संघ मंत्री श्री रिखबचंद जी लोढ़ा ने संघ की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की।

टी-नगर : श्रमणसंघीय सलाहकार मंत्री श्री सुमन मुनि जी के सानिध्य में सभा हुई। स्थानीय संघ अध्यक्ष श्री भीखम चंद जी गादिया, रिद्धकरण जी बेताला, मंत्री उत्तम चंद जी गोठी, डॉ. भद्रेस जी, युवा संघ अध्यक्ष महावीर चंद जी मूथा, हुकमीचंद जी छल्लाणी आदि ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

धोबीपेठ : डॉ. महासती श्री धर्मशीला जी के सानिध्य में धोबीपेठ स्थानक में विदुषी महासती जी ने कहा - मेरा कई बार दर्शन करने का अवसर आया था। बोरीवली बम्बई, घाटकोपर आदि चर्तुमास में दर्शन एवं वार्तालाप का लाभ मिला था। वे एक अत्यंत सरल हृदय, संयम साधना में प्रबल तथा जैन समाज की एक महान विभूति थे। उनकी कीर्ति सदा अमर रहेगी। डॉ. हीरालाल जी शास्त्री ने कहा- वे शास्त्रों के प्रकांड पंडित तथा अन्य धर्मों के ज्ञाता थे। स्थानीय संघ के मंत्री श्री संपत राज जी तालेरा, रतन लाल जी रांका, श्री तोला राम जी मिन्नी आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

आलंदूर स्थानक : श्री सुरेश मुनि जी शास्त्री म.सा. के सानिध्य में सभा हुई। मुनि श्री ने अपने प्रेम संबंध तथा उनके संयमी जीवन पर प्रकाश डाला। अध्यक्ष मांगीलाल जी कोठारी ने अपने अनुभव सुनाते हुए कहा - उन महापुरुषों की सतप्रेरणा से ही मैंने खद्दर धारण की। श्री उगमराजजी मूथा, श्री किरणराज जी धाड़ीवाल ने उनके जीवन वृत्त पर प्रकाश डाला।

तंडियार पेठ समता भवन : आचार्य महाप्राज्ञ श्री जी की आज्ञानुवर्तिनी विदुषी साध्वी श्री रतन श्री जी (लाडनू) के सानिध्य में श्रद्धांजलि सभा हुई। साध्वी जी ने कहा- आचार्य श्री इस युग के एक महान आचार्य ही नहीं संयम, साधना, अनुशासन, सौहार्द्रपूर्ण व्यवहार में अद्वितीय थे। पूज्य गणीवर श्री तुलसी जी से आपका मिलन, भेंटवार्ता बड़े प्रेम और समन्वय की भावना से ओत-प्रोत था। संवत्सरी एकता पर भी महत्वपूर्ण वार्तालाप हुआ था।

श्री तोलाराम जी मिन्नी ने गुरुदेव हमारे हो, जन-जन के प्यारे हो, श्रीमती पद्मा बाई रांका ने 'मेवाड़ी सांवरियो नानागुरु प्यारो लागे' गीत प्रस्तुत किया। उनके स्वर में स्वर मिलाते हुए विशाल भवन आचार्य श्री नानेश के गुणगान से गुंजायमान हो उठा। सर्वश्री महावीर चंदजी मूथा, सुमतिजी कांकरिया, हुक्मीचंद जी छल्लानी, श्री आनंदराम जी मांडोत, उगमराजजी मूथा, श्रीमती चंद्रकला जी ने अपने-अपने विचार रखते हुए श्रद्धासुमन अर्पित किये। नवकारमंत्र का जाप तथा गरीबों को अन्नदान भी दिया गया।

श्री मूथा भवन में भी विदुषी साध्वी श्री अजित कंवर जी के सानिध्य में सभा हुई इसके अतिरिक्त कई गांवों में गुणानुवाद सभा का आयोजन हुआ।

-मंत्री, केशरीचंद सेठिया

मोरवन डेम : बालक-बालिका मंडली के प्रयास से प्रात: 8 बजे शोक सभा एवं श्रद्धांजलि का आयोजन किया गया जिसमें महिला, युवा एवं बाल संघ ने भाग लिया। इस संयुक्त शोक सभा का संचालन बाल सलाहकार पंकज पित्तलिया ने किया। ध्यान, मौन व जाप का कार्यक्रम किया गया। तत्पश्चात् संघ अध्यक्ष श्री माणकलाल जी

जैन ने आचार्य भगवन के स्वर्गवास होने पर गहरा दुख व्यक्त किया। युवा रिखब जी जैन, मनोज मोगरा, अशोक जी जैन, रोशन जी पितलिया ने भी शोक व्यक्त किया। बाल-पीढ़ी की ओर से विमल पितलिया ने कहा कि आचार्य श्री नानेश ने अपने जीवन में पूरे समाज व देश को अनेक चिंतन दिये। अभय जी सहलोत ने कहा कि आचार्य श्री नानेश उस नक्षत्र के समान थे जिसपर हम सभी को नाज है।

सभी ने आचार्य श्री को भावभीनी श्रद्धांजलि दी व अंत में आचार्य श्री रामलाल जी मसा.के शासन में पूर्ण आस्था व्यक्त की गई।

-पारसमल पितलिया

<u>सरदारशहर</u>: श्री चंदनमल जी बरड़िया ने गुरुदेव के गुणगान करते हुए उनके देवलोक गमन को संघ की अपूरणीय क्षति बताया। उन्होनें गुरुदेव की सरदार शहर संघ पर रही असीम कृपा के बारे में कई उदाहरण दिये। चुरु जिला अणुव्रत समिति की तरफ से श्री सम्पतमल जी सुराणा ने आचार्य श्री को अपने भाव सुमन अर्पित करते हुए उन्हें एक महान और सरल जैन आचार्य की उपमा दी। धर्मसंघ के श्रावक श्री चंदनमल जी चितालिया, श्री सोहनलाल सेठिया ने गुरुदेव के गुणगान करते हुए दिवंगत आत्मा को परमात्म-पद प्राप्ति की मंगल कामना की। स्थानीय श्री अ.भा.सा. जैन संघ के अध्यक्ष श्री मंगलमल जी बरड़िया ने गुरुदेव के भाव भरे गुणगान करते हुए कई विशेषताओं पर प्रकाश डाला। शाखा संयोजक विमल नाहटा ने चार लोगस्स का ध्यान कराया।

-विमल कुमार नाहटा

<u>जोधपुर</u>: आचार्य नानेश के संथारा समाचार प्राप्त होते ही जोधपुर संघ उदयपुर के लिए प्रस्थान कर गया तथा आस-पास के संघों को सूचित किया। आचार्य श्री नानेश के स्वर्गवास समाचार प्राप्त होने पर संघ में शोक की लहर दौड़ गई। अत्र विराजित पूज्य सुशीला कंवरजी आदि ठाणा-6 ने भी व्याख्यान बंद रखे। दूसरे दिन अनेक स्थानों पर उनका गुणानुवाद किया गया। संघ के अध्यक्ष, मंत्री ने अपने भाव रखे। समता वाहिनी के पूर्व अध्यक्ष श्री सोहन मेहता, समता बालक मंडली के अध्यक्ष राकेश चौपड़ा आदि ने कहा - समता युक्त व्यसन मुक्त समाज का निर्माण कर ही आचार्य श्री नानेश को सच्ची श्रद्धांजलि दी जा सकती है।

- मनीष जैन

<u>फरीदाबाद (हरियाणा)</u> : आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म.सा. के स्वर्गगमन का समाचार मिलने पर यहाँ विराजित श्रमण संघ के डॉ. सुव्रत मुनि आदि ठाणा ने चार-चार लोगस्स व नवकार मंत्र के ध्यान सहित श्रद्धांजलि अर्पित की। गुरुदेव का महाप्रयाण वस्तुतः स्थानकवासी समाज की अपूरणीय क्षति है। यहाँ के एस. एच. जैन सभा के महासचिव श्री ए.एस. पटवा ने कहा कि वस्तुतः वे दिव्य महापुरुष थे। जिन्होंने व्यसन मुक्त समाज का नारा दिया था। गुरुदेव के प्रति अटूट श्रद्धानिष्ठ श्रावक श्री केसरीचंद जी धाड़ीवाल भी सभा में उपस्थित थे।

-हनुमानमल आंचलिया

<u>दुर्ग (मध्यप्रदेश)</u> :

दिनांक 28 अक्टूबर को सम्पूर्ण बाजार बंद रहा। अत्र चातुर्मासार्थ विराजित ज्ञान गच्छाधिपति तपस्वी राज श्री चंपालाल जी म.सा. के सुशिष्य तरुण तपस्वी श्री धन्ना मुनि जी म.सा. आदि ठाणा 3 ने प्रार्थना व व्याख्यान बंद रख स्वर्गस्थ आत्मा की शांति के लिए नवकार महामंत्र का जाप कराया। मुनि श्री ने गहरा शोक व्यक्त करते हुए आचार्य श्री के स्वर्गवास से जैन जगत की भारी क्षति बताया।

दिनांक 28 अक्टूबर को दोपहर में भारी संख्या में श्रावक श्राविकाएँ राजनांदगाँव में चातुर्मासार्थ विराजित आचार्य श्री नानेश के सुशिष्य श्री धर्मेश मुनिजी म.सा. आदि ठाणा 3 व महासती जी सुप्रतिमा श्री जी म.सा. आदि ठाणा 3 के दर्शनार्थ व संवेदना प्रगट करने राजनांदगाँव गये। संत एवं सती वर्ग ने अत्यंत अधीर होकर कहा इस शताब्दी के महान आचार्य के गौरवशाली इतिहास का एक सूर्य अस्त हो गया।

दिनांक 28 के रात्रि 6.30 बजे जैन स्थानक भवन में संघ अध्यक्ष श्री प्रवीण जी श्री श्रीमाल की अध्यक्षता में श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई। जिसमें भारी संख्या में

श्रावक एवं श्राविकाओं ने भाग लिया। संघ अध्यक्ष श्री प्रवीण जी श्री श्रीमाल, श्री जैन श्वेताम्बर संघ के मंत्री श्री पृथ्वीराज जी पारख, उपाध्यक्ष श्री मिश्रीलाल लोढ़ा, संघ के वरिष्ठ सदस्य श्री सिरमेलजी देशलहरा, हेमराज जी सोनी, ईश्वरचंद जी संचेती, जसराजजी पारख, राजेन्द्र जी मरोठी, कचरमलजी बाफणा, संदीप जैन (मित्र), किशोर जी सराफ श्रीमती राखी देवी श्री श्रीमाल, कुमारी माया लूणावत ने स्वर्गस्थ आत्मा के जीवन पर प्रकाश डाला व अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

अंत में स्वर्गस्थ आत्मा की शांति के लिए चार लोगस्स का ध्यान कर सामूहिक श्रद्धांजलि अर्पित कर शोक प्रस्ताव पारित किया। जैन श्वेताम्बर संघ के अध्यक्ष श्री शंकरलाल जी बोथरा ने मंगलपाठ सुनाया।

-रानीदान बोथरा

राजनांदगाँव : चातुर्मास में विराजित शासन प्रभावक श्री धर्मेश मुनि जी म.सा., कविरत्न श्री गौतम मुनि जी म.सा. एवं सेवाभावी श्री प्रशम मुनि जी म.सा. तथा व्याख्यान सुनने प्रतिदिन आने वाले धर्मप्रेमियों में गहन स्तब्धता छाई थी। 29 अक्टूबर को प्रात: स्थानक भवन में समता बालिका मंडल की बालिकाओं द्वारा प्रस्तुत श्रद्धांजलि गीत 'तेरे बिना जग सूना नाना रे, तेरे बिना जग सूना' के साथ श्रद्धांजलि का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ।

श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ राजनांदगाँव के श्री तिलोकचंद जी बैद ने हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए यह विश्वास व्यक्त किया कि हमें नानालाल जी म.सा. का आशीर्वाद सदैव मिलते रहेगा और हम उनसे प्रेरणा ग्रहण करते रहेंगे।

तेरापंथी महासभा की ओर से सबेरा संकेत के सम्पादक वरिष्ठ पत्रकार शरद कोठारी जी ने आचार्य नानालाल जी म.सा. को एक ऐसा संत और धर्मोपदेशक बताया, जिन्होंने सम्प्रदाय के दायरे से बाहर जाकर पूरे देश की चेतना व नैतिकता को प्रेरित किया।

चातुर्मास में विराजित श्री धर्मेश मुनि जी म.सा. ने आचार्य प्रवर नानालाल जी म.सा. के सानिध्य में बिताये पावन क्षणों का स्मरण करते हुए सजल नयन, रूद्ध कंठ से कहा कि उनके दर्शन की अंतिम लालसा पूरी न होने पाने की वेदना उन्हें सता रही है, आचार्य श्री के दु:खद अवसान को व्यक्त करना कठिन है। अन्य संत एवं सती-वृन्द ने भी अपने भाव रखे।

श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों में रायपुर श्रावक संघ के संजय बैद, ज्ञानचंद जी टांटिया, दिगम्बर जैन पंचायत के सुधीर जैन, शशिकांत अवस्थी, श्रीमती चंदनबाला लूनिया, गुजराती समाज की श्रीमती वीणा, समता मंच अध्यक्ष बालचंद पारख, सचिव सतीश सांखला एवं अन्य सदस्यगण, रानीदान जी भंसाली, जैन महिला मंडल रायपुर की चंचलदेवी जी, लतिका बैन, राजेन्द्र गोलछा, जैन महिला मंडल की श्रीमती सुंदर बाई, पीरचंद जी कांकरिया, डॉ. चंद्रकुमार जैन, श्री सौभाग्यमल जी, श्री खूबचंदजी पारख मुंगेली आदि प्रमुख रूप से थे।

अंत में 4 लोगस्स का ध्यान करके स्व. आचार्य भगवन को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। 27 घंटे तक नवकार मंत्र का अंखड जाप हुआ।

सभी संत एवं सतियाँ जी म.सा. के तेला की तपश्चर्या थी एवं अनेक धर्मप्रेमी बंधुओं के भी विभिन्न त्याग-तप आदि थे।

-राजेश गोलछा

नागौर : स्वर्गस्थ होने के समाचार ज्ञात होने पर श्रद्धेय उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचंद जी म.सा. आदि संत-मुनिराजों एवं महासती मण्डलों ने कायोत्सर्ग रूप चार-चार लोगस्स का ध्यान किया। श्रावक-श्राविकाओं ने समाचार सुनने के साथ लोगस्स का ध्यान कर श्रद्धांजलि अर्पित की। दिनाँक 28 अक्टूबर को नागौर, सवाई माधोपुर, पिपाड़ शहर, जयपुर, अजमेर, रायचूर, देही और हिण्डौन सभी चातुर्मास स्थलों पर प्रार्थना प्रवचन का प्रोग्राम स्थगित रखा गया और 29 अक्टूबर को गुणानुवाद सभाओं के माध्यम से आचार्य श्री नानेश के व्यक्तित्व, कृतित्व पर विशद प्रकाश डाला।

आचार्य श्री नानेश के संथारा अंगीकार करने के उक्त समाचार परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर पूज्य जी श्री हीराचंद्र

जी म.सा. की सेवा में प्राप्त होते ही आचार्यप्रवर ने युवाचार्य श्री रामलाल जी.म.सा., स्थविर प्रमुख श्री ज्ञानमुनि जी म.सा. की सेवा में समाचार भिजवाये कि संथारा लीन समता विभूति आचार्य प्रवर पूज्य श्री नानालाल जी महाराज की समाधि में उत्तरोत्तर आत्मरमण बढ़ता रहे, इसका अधिक-से अधिक लाभ लिया जाना चाहिये।

दिनांक 29 अक्टूबर को परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचंद्र जी म.सा. के सानिध्य में नागौर में, परम श्रद्धेय उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचंद्र जी म.सा. के सानिध्य में सवाईमाधोपुर में तथा महासती मंडलों के सानिध्य में गुणानुवाद सभाओं के आयोजन किये गये।

नागौर में गुणानुवाद सभा का शुभारम्भ तत्व चिंतक श्री प्रमोद मुनि जी म.सा. ने किया। राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों को उद्धृत करते हुए मुनि श्री ने कहा -

जो इन्द्रियों को जीतकर, धर्माचरण में लीन है।
उनके मरण का शोक क्या, वो मुक्त बंधनहीन हैं॥

स्थानीय संघ मंत्री श्री सुरेश जी ललवानी ने समता विभूति आचार्य श्री नानेश के प्रति गद्य- पद्य भावों में अपनी ओर से एवं नागौर श्री संघ की ओर से श्रद्धा समर्पित की। सुश्रावक श्री कंवरलाल जी कोठारी और सुश्रावक सागरमल जी पींचा ने भी श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर पूज्य श्री हीराचंद्र जी म.सा. ने समता विभूति धर्मपाल-प्रतिबोधक आचार्य श्री नानालाल जी महाराज के व्यक्तित्व पर विशद् प्रकाश डालते हुए कहा कि आचार्य श्री नानेश आचारवान महापुरुष थे।

आचार्य श्री जी ने सुदीर्घ काल तक संयम-साधना की, शासन व्यवस्था का दायित्व संभाला और जब शरीर साथ देने की स्थिति में नहीं रहा तब संथारा करके उस महापुरुष ने पंडित मरण का वरण किया। ऐसे महापुरुषों का ही स्मरण किया जाता है।

आचार्य प्रवर की प्रेरणा से कई श्रावक-श्राविकाओं ने आज के दिन रात्रि भोजन नहीं करने, ब्रह्मचर्य का पालन करने और कच्चे पानी का सेवन नहीं करने के संकल्प लेकर आचार्य श्री को श्रद्धांजलि अर्पित की।

नागौर की भांति सवाईमाधोपुर, जोधपुर, पीपाड़ सिटी, जयपुर, अजमेर, रायचूर, देई और हिण्डौन में गुणानुवाद सभाओं के माध्यम से समता विभूति आचार्य श्री नानेश को श्रद्धा समर्पित की गई।

-गौतमचंद ओस्तवाल, सम्पादक मोक्षद्वार

<u>भीण्डर :</u> 30 अक्टूबर को समता भवन में संघ अध्यक्ष श्री, मदनलालजी नंदावत की अध्यक्षता में आयोजित गुणानुवाद सभा में श्री अनिल नागोरी, श्यामलालजी बया, अंकिता बया, सपना नागोरी, मोनिका, प्रियंका सामोता, मिठूलाल जी नागोरी, चंद्रप्रकाश जी मेहता, महिला मंडल, रूपलालजी नंदावत, नक्षत्रलाल जी नागोरी, हीरालालजी नंदावत, श्री शंकरलालजी चव्हान ने गद्य-पद्य के माध्यम से अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए गुरुदेव को राष्ट्र संत, प्रेरणादायी एवं मार्गदर्शक बताकर उनके योगदानों पर प्रकाश डाला। सभा का संचालन मंत्री श्री श्यामलाल जी बया ने किया।

<u>बम्बोरा :</u> हृदय विदारक समाचार सुनकर शोकाकुल साहित्यकार श्री दिलीप जी धींग ने इसे एक युग की समाप्ति बताया। पूर्व अध्यक्ष श्री सुरेश जी धींग ने आचार्य श्री को यशस्वी युग पुरुष और महानप्रभावक आचार्य बताया। बंबोरा संघ में व्यवसाय बंद रहा।

-श्री नानेश जैन समता युवा संघ

<u>मुकेरिया :</u> समता विभूति चारित्रचूड़ामणि आचार्य श्री नाना लाल जी म.सा. के समाधि पूर्वक महाप्रयाण के समाचार श्रवण कर उपाध्याय श्री मुनि जी म. सा. के सानिध्य में एक स्मृति सभा का आयोजन किया गया। जिसमें आचार्य श्री के विशेष गुणों पर प्रकाश डाला गया। प्रधान जी कोमल कुमार जी ने गुणानुवाद कर श्रद्धा सुमन समर्पित किये। अंत में 4 लोगस्स का कायोत्सर्ग कर मांगलिक श्रवण कर सभा विसर्जित की गई।

-कीमतीलाल जैन
महामंत्री, एस.एस. जैन सभा मुकेरिया (पंजाब)

<u>सीतामऊ :</u> समता विभूति आचार्य श्री नानालाल जी म. सा. के देवलोक गमन के समाचार से स्थानीय जैन समाज

में शोक छा गया। महाप्रयाण यात्रा के दिन सकल जैन समाज ने अपना व्यवसाय बंद रखा। महावीर भवन में शोक सभा आयोजित की गई तथा समाज के अध्यक्ष श्री सुजान मलजी बोहरा, प्रकाश चंद्रजी पटवारी, सागरमलजी जैन, श्रीमती सुशीला जैन ने आचार्य श्री के दीर्घ संयमी जीवन पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर विदुषी महासती श्री अमिता श्री जी म. सा. ने सुख दु.ख के संबंध में उद्बोधन दिया तथा आचार्य श्री को दीपक निरुपित किया।

उपस्थित सभा में अपनी अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए महासती श्री सुचिता श्री जी.म.सा., श्री आराधना श्री जी म.सा. व श्री उपासना श्री जी म.सा. ने भी गीतिका के माध्यम से अपने भाव सुमन समर्पित किये। अंत में 4-4 लोगस्स का ध्यान किया गया।

-पारसमल बोहरा

रायपुर (मध्यप्रदेश) : जिन शासन प्रद्योतक समता विभूति श्री नानालाल जी म.सा. का देवलोक गमन समस्त जन मानस के लिए एक गहरा आघात था। रायपुर श्री संघ में सुराणा भवन के प्रांगण में श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई।

सर्वप्रथम संघ के महामंत्री श्री विजयकुमार जी बोथरा, मूर्तिपूजक संघ अध्यक्ष श्री तिलोकचंद जी भंसाली, प्रकाश जी सुराणा, श्रमण संघ के श्री जी.सी. जैन, ओमप्रकाश जी बरलोटा, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष श्री शिवराज जी भंसाली, ज्ञान गच्छ संप्रदाय के श्री उत्तम चंद जी गोलछा, दिगंबर समाज के श्री देव कुमार जी जैन, गुजराती समाज के शांति भाई संघोई, विवेकानंद नगर के मूर्तिपूजक संघ अध्यक्ष श्री नेमीचंद जी मूथा, संपतराज जी सिंघवी, ललित जी देवड़ा, ब्रजेश कावड़िया आदि ने आचार्य श्री के सिद्धांतों, संयमी आदर्श जीवन व विशेष रूप से समता सिध्दांतों को अपने जीवन में उतारने का आह्वान किया।

-पराग धाड़ीवाल

लामगरा (मंदसौर) : धर्मपाल उद्धारक, समता विभूति, जैनशासन नायक पूज्य गुरुदेव श्री नानालाल जी म.सा. के देवलोक गमन की सूचना मिलते ही पूरे गाँव में शोक छा गया। धर्मपाल मोहल्ले में माता-पिता, बच्चे- बच्चियां व बड़े-बूढ़े सब अचानक रो पड़े और कहने लगे कि अहो गुरुदेव यह क्या हो गया। सभी भाइयों ने नानेश धर्मपाल जैन समता भवन लामगरा में आकर मौन नवकार मंत्र गिने। प्रातःकाल सभी भाइयों, बच्चे- बच्चियों, माता-बहिनों ने गुरुदेव को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पण की। धर्मपाल युवा अध्यक्ष नरसिंह सोलंकी ने कहा कि गुरुदेव अगर हमें धर्मपाल नहीं बनाते तो हमारी समाज इसी दलदल कीचड़ में भटकती रहती। गुरुदेव ने धर्मनाथ भगवान की साक्षी से धर्मपाल बनाया, वह गुरुदेव की वाणी अजर-अमर रहेगी। गुरुदेव का लगाया धर्म पाल बगीचा का हर पौधा नाना गुरु के नाम को रात-दिन जपता रहेगा। युवा संघ अध्यक्ष श्री रामप्रसाद नकुन धर्मपाल ने कहा कि गांधी, विनोबा जी ने तो छुआ-छूत को मिटाया मगर गुरुनानेश ने तो हम धर्मपालों को उच्च वर्ग जैन समाज की पंगत में बैठा कर भोजन करवा दिया, जैन का साधर्मी भाई बना दिया। भाई रामराव सोलंकी ने कहा कि हम सभी गुरुदेव के उद्देश्यों को हर गाँव हर मनुष्य तक पहुँचायेंगे, यही हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

जैन धर्मपाल युवा संघ उपाध्यक्ष नंदराम सोलंकी धर्मपाल ने कहा कि गुरुदेव की धर्म वाणी को खुद मन में उतारना व दूसरों तक पहुँचाना यही हमारा कर्त्तव्य है। शोक सभा में युवा संघ के कोषाध्यक्ष भाई हीरालाल डांगिया ने कहा कि गुरुदेव का नाम तो धर्मपाल की जुबान पर अजर-अमर रहेगा। युवा सदस्य भाई रघुवीर, कंवरलाल, कन्हैयालाल, श्यामलाल सोलंकी व समरथमल, बालक राम, नकुन व धर्मपाल पाठशाला के बच्चे-बच्चियों ने और मोहल्ले के माता-बहिनों सभी ने एक आवाज से कहा कि-

जब तक सूरज चांद रहेगा।
गुरु नाना का नाम रहेगा॥

-नरसिंह सोलंकी, धर्मपाल जैन, नानेश धर्मपाल जैन समता युवा संघ अध्यक्ष

बालोद : परम पूज्य आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. के देवलोक गमन से स्तब्ध श्री संघ द्वारा दोपहर में नवकार मंत्र का जाप रखा गया। सायं शोक श्रद्धांजलि कार्यक्रम में

श्री कुन्दनमल जी गोलछा एवं श्री सुरेश जी ढेलड़िया ने पूज्य आचार्य श्री के जीवन परिचय एवं उनके द्वारा समाज को दी गई उपलब्धियों की जानकारी दी। आचार्य श्री की सबसे बड़ी संघ को देन है समता। समता से जीवन में पूर्ण शांति आ सकती है। सभा में अध्यक्ष श्री घेवरचंद जी सांखला, मंत्री श्री सोहनलाल जी कोठारी व सभी प्रमुख जैन बंधु, महिलायें, युवा वर्ग व बालिकाओं के अलावा जैनेत्तर बंधु भी थे।

अंत में देवलोकवासी उस दिव्य आत्मा को कोटिश: वंदन करते हुए 4 लोगस्स के ध्यान के साथ श्रद्धांजलि दी गई एवं उनके उपदेशों को जीवन में धारण करने का संकल्प लिया गया।

-शंकरलाल श्री श्रीमाल

कपासन : स्थानीय पंचायत भवन में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें कस्बे के जैन समाज के अलावा अनेक अजैन बंधुओं ने भी भाग लिया। जैन समाज के श्री नाथूलाल जी चंडालिया, श्रमण संघ के अध्यक्ष श्री मांगीलाल जी सांकला, श्री हिम्मतलाल जी चंडालिया, श्री छितरमल जी बाघमार के अलावा शिक्षाविद श्री गोविन्दलाल जी बारेगामा एवं सेवादल कांग्रेस के जिला अध्यक्ष श्री दिनेश जी चास्ता ने अपने अपने विचार रखते हुए बताया कि आज हम ऐसी महान विभूति को श्रद्धासुमन चढाने यहाँ एकत्रित हुए जिन्होने देश के कोने-कोने में घूमकर समतादर्शन एवं समीक्षण ध्यान द्वारा व्यक्ति को आत्मा से परमात्मा तक पहुँचाने का कार्य किया।

इस अवसर पर यहाँ विराजित महासती जी श्री चमेली कंवर जी एवं कल्याण कंवर जी आदि ठाणा ने जैन समाज के लिए महान् क्षति बताते हुए आचार्य भगवन् का गुणगान किया। महासतियाँ जी की प्रेरणा से आचार्य भगवन् की श्रद्धांजलि सभा में कई भाई-बहिनों ने 38 उपवास, 61 दिन ब्रह्मचर्य, 81 दिन स्वाध्याय वर्षभर में निभाने के नियम लिये। इस श्रद्धांजलि सभा में स्थानीय संघ अध्यक्ष श्री सोहन लाल जी चंडालिया ने भी अपने विचार व्यक्त किये। अंत में स्थानीय समता युवा संघ के अध्यक्ष अरुण बाघमार एवं समता युवा संघ के राष्ट्रीय मंत्री मदन चंडालिया ने आभार प्रगट किया। सभा का संचालन श्री मनोहरलाल चंडालिया ने किया।

-मनोहरलाल चंडालिया

जोधपुर (राजस्थान) : परम पूज्य आचार्य श्री नाना लाल जी म.सा. के देवलोक गमन के समाचार प्राप्त होने पर शास्त्री नगर में विराजित पूज्य तपस्वीराज श्री चंपा लाल जी म.सा. आदि ठाणा एवं रायपुर हवेली विराजित पूज्य श्री घेवरचंद जी म.सा. द्वारा व्याख्यान बंद रखा गया। अगले दिन पूज्य आचार्य श्री जी के श्रद्धांजलि स्वरूप हुए व्याख्यान में विराजित मुनिराजों ने पूज्य श्री के गुणानुवाद करते हुए उनके जीवन की विविध स्मृतियाँ श्रद्धालु श्रावक गण के समक्ष रखी। अंत में पूज्य श्री को श्रद्धांजलि अर्पण हेतु सभी ने एक लोगस्स का ध्यान किया और कामना की पूज्य श्री शीघ्र ही अपने परम लक्ष्य को प्राप्त करें।

-विजयराज जैन, संघमंत्री, एस. एस. जैन,
ज्ञान श्रावक संघ

थांदला (मध्यप्रदेश) : समता विभूति आचार्य श्री नानेश के महाप्रयाण की सूचना से शोक संतप्त समाज ने व्यवसाय बंद रखकर विदुषी महासती श्री कौशल्याजी म.सा. आदि ठाणा के सानिध्य में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। साध्वीवृन्द ने आचार्य के जीवन पर प्रकाश डाला।

-महेशचंद गेंदालाल

मुंगेली : स्थानीय जैन मंदिर के हाल में मुंगेली के सभी समाज के जैन बंधुओं ने आचार्य भगवन् श्री 1008 नानालालजी म.सा. को अपनी अपनी श्रद्धांजलि दी जिसमें संघ प्रमुख गुलाबचंद जी चोपड़ा, शांतिलाल जी लूनिया, अनोपचंद जी वैद, कन्हैयालाल जी कोचर, विजयलाल जी, मूलचंद जी, जेठमल जी, पन्नालाल जी, कन्हैयालाल जी कोटड़िया ने शोक श्रद्धांजलि दी। स्थानकवासी संघ व्यापारी बंधुओं ने प्रतिष्ठान बंद रखे।

-जेठमल कोटड़िया

जैपुर (उड़ीसा) : जैन भवन में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें जैन समाज के सभी गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए। सर्व श्री अभयराम जी बाफना,

सुश्रावक गुमानमल जी झाबक, चेतन सांखला, श्री नसीबचंद जी जैन ने अपने- अपने विचार प्रकट किये अंत में प्रत्येक जन ने एक-एक नियम के साथ चार लोगस्स का ध्यान किया।

-चेतन सांखला

तेजपुर (आसाम) : परम पूज्य समता विभूति 1008 आ. श्री नानालाल जी म.सा. के संथारे के साथ देवलोक गमन के समाचार प्राप्त होने से शोकाकुल जैन समाज द्वारा स्मृति सभा का आयोजन किया गया। विविध वक्ताओं ने आचार्य श्री नानेश के जीवन पर विस्तार से प्रकाश डाला तथा श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए तेजपुर जैन समाज ने मंगलकामना की कि आचार्य प्रवर की आत्मा उत्तरोत्तर आध्यात्मिक विकास करती हुई मोक्ष को प्राप्त करे।

आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के प्रति पूरे समाज की मंगलकामना है कि आप स्वस्थ रहते हुए जैन शासन की सेवा करें एवं आचार्य प्रवर के बतलाये मार्ग पर जनता को प्रतिबोधित करते हुए जिनशासन एवं मानवता की सेवा करें।

-जैन युवक मंडल

मनावर : श्वेताम्बर जैन समाज द्वारा आचार्य श्री नानेश के देवलोक गमन पर जवाहर मार्ग स्थित महावीर भवन में एक सभा आयोजन की गई। सभी महानुभावों में सर्व श्री सौभाग्यमल जी बोरा, महेश जी बोरा, पारस रावका, राहुल खटोड, न.पा. अध्यक्ष श्री रमेशचंद्र खटोड, ललित खटोड, पारस कासलीवाल, बालिका मंडल एवं महिला मंडल की ओर से सुश्री बरखा बोरा ने तथा चातुर्मास समिति अध्यक्ष सुशील खटोड़ ने श्रद्धासुमन अर्पित किये। अंत में पूज्य श्री सुशीलाश्री जी म.सा., श्री कमल श्री जी म:सा., श्री सिद्धमणिजी म.सा., श्री अर्पिता श्री जी म.सा. आदि ने आचार्य श्री को अपनी ओर से श्रद्धांजलि दी तथा श्री संघ संरक्षक श्री भानकचंद सालेचा ने चार लोगस्स का ध्यान करवाया। अंत में पूज्य म.सा. ने सभी को मंगल पाठ सुनाया।

-सुशील खटोड़

नागपुर (पश्चिम) : प. नागपुर जैन समाज द्वारा कांग्रेस नगर स्थित श्री घेवरचंद जी झामड़ के निवास 'तपस्या' में लब्धि विक्रम कृपा प्राप्त आचार्य श्रीमद् राजयशसूरीश्वर जी म.सा. के सानिध्य में गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। आचार्य श्री ने आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. को इस सदी का महान आचार्य निरूपित करते हुए कहा - वे संप्रदाय में रहते हुए भी संप्रदायवाद से अलग थे। इस प्रसंग पर प. नागपुर जैन समाज के अध्यक्ष श्री शांतिलाल जी दोशी, तपागच्छ संघ के भोगी भाई दोशी, खेमचंदजी चौरड़िया ने भी भाव व्यक्त किये।

श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन इस्ट सदर नागपुर द्वारा पंडित रत्न पूज्य नवरत्न मुनि जी म.सा. के सानिध्य में गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पूज्य म.सा. एवं कई गणमान्य व्यक्तियों ने अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये। सदर स्थानक ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री नवल चंद जी पुगलिया, श्री वर्धमान स्थानक जैन श्रावक संघ के उपाध्यक्ष श्री शांतिलाल जी बदानी, महामंत्री श्री रमेश भाई शाह, पश्चिम नागपुर की ओर से श्री घेवर चंद जी झामड़, ओसवाल पंचायत के अध्यक्ष श्री पुखराज जी लूणावत, सदर संघ से डॉ. सुनील पारख, राजेन्द्र प्रसाद बैद , सुभाष जी कोटेचा, प्रकाशजी चोरड़िया, राजीव चोपड़ा आदि ने भाव व्यक्त किये।

-राजेन्द्र प्रसाद बैद

चित्तौड़गढ़ : मेवाड़ सिंहनी भारत कोकिला श्रमण संघीय महासतियाँ जी श्री यश कुंवर जी के सानिध्य में प्रवचन के समय श्रद्धांजलि सभा आयोजित हुई। महासतियां श्री यश कुंवर जी म.सा., मधुर व्याख्यानी श्री मैना कंवर जी म.सा. ने पूज्य आचार्य श्री के जीवन पर व उनके अपार गुणों पर विस्तृत प्रकाश डाला। श्रद्धांजलि सभा में श्री माधवलाल जी तरावत, सागरमल चंडालिया, चुन्नीलाल जी भड़कतिया, मोहनलाल जी पोखरना, हस्तीमल जी पोखरना, हस्तीमल जी चंडालिया, श्री नारायण जी श्रीमाल हस्तीमल जी सुराना, सोहनलाल जी पोखरना व श्रीमती लक्ष्मी बाई पो[illegible] ने आचार्य श्री के गुणों पर विस्तृत [illegible] अर्पित किये। शाम को श्री

साधुमार्गी जैन श्रावक संघ की बैठक मे पूज्य आचार्य श्री की स्मृति में शुभ कार्यों हेतु करीब 10000 रुपया सदस्यों द्वारा प्रदान किये जो गौशाला, कबूतर खाना , औषधालय, गरीबों को भोजन, फल, दवाइयों आदि में खर्च किये गये।

आचार्य श्री की मौजूदगी में ही युवाचार्य श्री द्वारा इस वर्ष को जप तप नियम के रूप में घोषित किया गया था उसके लिए संपूर्ण समाज को अधिक से अधिक इस ओर प्रवृत्ति करने की अपील की गई जो अनेक परिवारों में प्रारंभ होकर एवं सुचारु रूप से चल रही है।

-सागरमल चंडालिया

खेतिया : सकल जैन श्री संघ खेतिया द्वारा आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. के देवलोक गमन होने पर स्थानक भवन में लोगस्स के कायोत्सर्ग से श्रद्धांजलि दी गई। साथ ही उनकी आत्मा की शांति हेतु नवकार मंत्र एवं ऊँ शांति का जाप करवाया गया। इस सभा में अनेक वक्ताओं ने अपने भाव रखे एवं कहा कि आचार्य श्री जी का निधन सम्पूर्ण समाज पर वज्राघात है।

खेतिया संघ शत-शत वंदन करता है। अखिल भारतीय साधु समता जैन बालक -बालिका मंडल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मनोज बोहरा ने भी आचार्य श्री जी के जीवन आदर्शों एवं कुशल नेतृत्व का गुणगान किया।

-मनोज कुमार एम बोहरा

गुवाहाटी : रात्रि को लगभग 3 बजे आचार्य प्रवर के देहावसान का समाचार सुनते ही ऐसा लगा मानों समग्र साधुमार्गी समाज पर एक वज्रपात हुआ हो। सभी भाई-बहिन स्तब्ध थे। शायद नियति को यही मंजूर था। सभी दुकानें व व्यापारिक प्रतिष्ठान सुबह से ही बंद थे। अन्य धर्मावलम्बियों के भी काफी प्रतिष्ठान बंद थे, दोपहर 2 बजे से 5 बजे तक नमोकार मंत्र का सामूहिक जाप श्री महावीर भवन में रखा गया जिसमें 250 भाई-बहिनों ने भाग लिया।

रविवार दिनांक 31.10.99 को प्रातः से स्वर्गीय आचार्य भगवन की स्मृति में श्री महावीर भवन के आदिनाथ प्रांगण में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन रखा गया इसमें तेरापंथ समाज की तरफ से गुवाहाटी में विराजित साध्वीवर्या श्री कंचन प्रभा जी अपनी साध्वी मंडल के साथ पधारीं। अन्य सभी समाज के धार्मिक व सामाजिक भाइयों ने स्मृति सभा में भाग लिया। सभी समाज के प्रतिनिधियों ने आचार्य प्रवर नानेश को अपने-अपने भावों से श्रद्धासुमन अर्पण किये।

-राजेन्द्र दस्सानी

ब्यावर : स्व. आचार्य देव की स्मृति में आयोजित गुणानुवाद सभा में श्री सुयशा श्री जी म.सा., महासती श्री स्वर्ण ज्योति जी. म. सा., श्री सरोजबाला जी म.सा., श्री समता श्री जी म.सा. ने अपनी वियोग वेदना को शब्दांकित करने का प्रयास करते हुए आराध्य देव के शीघ्रातिशीघ्र शाश्वत सुख प्राप्ति की भावना व्यक्त की।

सेवाभावी श्री अनंत मुनि जी म.सा. ने संस्मरणों के आईने में झांकते हुए महासती श्री विद्यावती जी.म.सा. के आज्ञा पत्र प्रसंग से जागृत श्रद्धा एवं वर्तमान आचार्य श्री के वचनों के प्रभाव से जागृत दीक्षा भावना का जिक्र किया। प्रज्ञा संपन्न श्री क्रांति मुनि जी म.सा. ने वर्तमान घटनाक्रम को अकल्पनीय घटना निरूपित किया। तदनन्तर श्री भंवरीलाल जी ओस्तवाल, मानमल जी बाबेल, धनराज जी कोठारी, लक्ष्मीचंद जी रांका, कालूराम जी नाहर, श्री दौलत जी बूरड, श्री गौतम जी चौधरी, श्री अमरचंद जी संचेती, वनीता श्रीश्रीमाल, श्री उत्तम श्रीश्रीमाल आदि ने भी भाव व्यक्त किये।

-उत्तमचन्द श्री श्रीमाल

बालाघाट : समता विभूति आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म.सा. के देवलोक गमन का समाचार सुनकर बालाघाट नगर में शोक की लहर व्याप्त हो गई। जैन समाज के सभी प्रतिष्ठान पूर्णतः बंद रखे गए एवं सुबह 9 बजे से रात्रि 8 बजे तक लगातार ग्यारह घंटे का अखंड नवकार मंत्र का जाप जैन स्थानक भवन में संपन्न हुआ जिसमें भारी संख्या में लोगों ने भाग लिया। रात्रि 8 बजे श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री सूरजमल जी बापरेचा की अध्यक्षता में शोक सभा आयोजित की गई जिसमें विभिन्न वक्ताओं ने अपने विचार रखते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की।

सर्वप्रथम मूलचंद चोरडिया (छातेरा वालो), महिला संघ की अध्यक्ष स्वाध्यायी श्रीमती कांता चतुर मोहता, संघ के पूर्व सचिव स्वाध्यायी श्री ताराचंदजी लोढ़ा, श्रीमती तारादेवी कांकरिया, डॉ. शिखरचंद बाघरेचा, कु. कौशल्या धाड़ीवाल, नितिन घोका, कांतिलाल बाघरेचा, संजय कटारिया, सुभाष लोढा, संघ के मंत्री भैरोदान पगारिया ने भाव व्यक्त कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

अंत में 3 नवकार मंत्र के ध्यान के साथ सभा विसर्जित हुई। इस अवसर पर गुरुभक्त गेंदमल जितेंद्रकुमार वैद्य ने समर्पण संस्था द्वारा संचालित भोजन योजना हेतु कायम मिति देने की घोषणा की एवं दूसरे दिन सुबह जिला चिकित्सालय में मरीजों को दूध बिस्किट एवं भोजन वितरित किया। अनेक महानुभावों ने एकासने के तेले करने का निश्चय किया। सभा संचालन सुभाष लोढ़ा ने किया।

-सुभाष लोढ़ा

<u>अजमेर :</u> जैन धर्म दिवाकर, चारित्र चूड़ामणि, धर्मपाल बोधक, जैन संस्कृति के रक्षक, संघ शिरोमणि, परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानालालजी म.सा. के दिनांक २७.१० के महानिर्वाण पर अत्यन्त चिंता व दुःख व्यक्त करते हुए चतुर्विध संघ ने श्रद्धेय आचार्य श्री के साथ हार्दिक संवेदना व्यक्त की है।

स्व. आचार्य श्री ने अपने जीवनकाल में संस्कृति की रक्षा एवं मर्यादाओं का पूर्ण पालन करते हुए जिनशासन व सम्प्रदाय की जो अभूतपूर्व सेवा एवं चतुर्विध संघ को धर्मप्रकाश से दैदीप्यमान किया है, उसे कभी नहीं भुलाया जा सकेगा। अपने जीवनकाल में करीब ३५० से ज्यादा मुमुक्षु आत्माओं की दीक्षा, अपने आप में एक अद्भुत योगदान किया है। कई अजैनों को धर्मबोध देकर हजारों धर्मपाल बनाये, अपने सम्पूर्ण जीवन को ही जिन्होंने शासन उद्योत में लगाया, ऐसा महापुरुष इस युग में आप जैसा शानी का शायद ही कोई अन्य होगा।

ऐसे महान् उपकारी गुरुदेव के स्वर्गवास पर अजमेर का यह चतुर्विध संघ भारी चिन्तित है। आपके निर्वाण के समाचार आते ही व्याख्यान स्थगित रखा गया, बाजार बंद रहा एवं दिनांक २९.१० को प्रवचन सभा में प्रवचन बंद रखकर हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए गुरु गुणगान किये गये।

-जीतमल चौपड़ा

मानद मंत्री, श्री वर्धमान स्था. जैन श्रावक संघ

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्

जैन जगत की महान् विभूति समता दर्शन प्रणेता, धर्मपाल प्रतिबोधक, जिनशासन प्रद्योतक

स्व. आचार्य भगवन् पूज्य श्री १००८ श्री नानालालजी म.सा.

के श्री चरणों में कोटिश: वन्दन एवं वर्तमान आचार्य प्रवर, शास्त्रज्ञ, प्रशांतमना

पूज्य श्री १००८ श्री रामलालजी म.सा.

के श्री चरणों में कोटिश: वन्दन

घेवरचन्द केशरीचन्द गोलछा

नोखा	बंगाईगांव
दिल्ली	गुवाहाटी

- विनयावनत -

श्री केशरीचन्द -आशादेवी गोलछा

श्री निर्मलकुमार - सरोज देवी गोलछा

श्री पदमचन्द - सरोज देवी गोलछा

श्री राजेन्द्रकुमार-सरिता देवी गोलछा

श्री रमेशकुमार - रचना देवी गोलछा

श्रेयांस - महावीर गोलछा

रे मन नाना नाम जप, भगवद् रूप पहचान।
राम नाम मे राम को, सदा विराजित जान ॥

"समता"

प्राणी को प्राणी समझना उसकी आत्मा को अपनी आत्मा समझना,
उस पर मैत्री भाव रखना और दीन-दुखियों पर अनुकम्पा करना समता है। - आचार्य श्री नानेश

" समता विभूति जिन शासन प्रद्योतक धर्मपाल प्रतिबोधक आचार्य प्रवर श्री 1008 श्री नानालाल जी म. सा.
के 'श्रमणोपासक' द्वारा श्रद्धांजलि स्मारिका प्रकाशन के अवसर पर परम पूज्य गुरुदेव
को हम सभी संघ एवं भाइयों व बहनों की तरफ से शत्-शत् वदन नमन"

श्री शांतिलाल, अशोक, विजय, महेन्द्र मुकीम	शैलेन्द्र नगर, रायपुर (म.प्र.)
श्री अशोक, सुभाष, वर्धमान, प्रसन्न, सुशील सुराना एवं सुराना परिवार	रायपुर (म.प्र.)
श्री हुक्मीचन्द, विजय, अजय, विनीत, विवेक, अक्षय, सुयश बोथरा	कवर्धा, रायपुर (म.प्र.)
श्री निर्मलचन्द, इन्द्रादेवी, मनीषा धाड़ीवाल	रायपुर (म.प्र.)
श्री उत्तमचन्द किरणदेवी देशलहरा	रायपुर (म.प्र.)
श्री ताराचन्द जी बरड़िया	रायपुर (म.प्र.)
नानेश नगर, नेचरल स्टेट	रायपुर (म.प्र.)
श्री तुलसीराम, गुलाबचन्द, मोहनलाल, रेखचन्द, पुरनलाल, राजेश, शान्तिलाल बाफना	रायपुर (म.प्र.)
श्री ज्ञानचन्द जी मदनचन्द जी गोलछा	हलवाई लेन, रायपुर (म.प्र.)
श्री केवलचन्द जी विजयकुमार जी मूथा	रायपुर (म.प्र.)

"समता"

समता से स्वयं का हित है। समता से परिवार का हित है।
समता से समाज का हित है। समता से नगर का हित है।
समता से राष्ट्र का हित है। समता से विश्व का हित है।
समता से शान्ति है। समता से धर्म है। समता से मोक्ष है।

- आचार्य श्री नानेश

▲ श्री शांतिलालजी संजयकुमार धाड़ीवाल	रायपुर (म.प्र.)
▲ श्री बिशनचन्दजी विजयकुमार आछा	रायपुर (म.प्र.)
▲ श्री मनोहरचन्द राजकुमार विजय, ललित, संजय, मनोज चोपड़ा	रायपुर (म.प्र.)
▲ श्रीमती मग्गादेवी कमलचन्द, सुरेन्द्र, अशोक सिपानी	रायपुर (म.प्र.)
▲ आयुषी फायनेंस	रायपुर (म.प्र.)
▲ श्रीमती जवेरबेन दामजी भाई संगोई परिवार	रायपुर (म.प्र.)
▲ श्रीमती शोभनाबेन रमणीकलाल धोलकिया	रायपुर (म.प्र.)
▲ श्री रतनचन्द राजेश कुमार सांखला	धमतरी (म.प्र.)
▲ श्री देवराज गंभीरमल सांखला	नयापारा, राजिम (म.प्र.)
▲ श्री साधुमार्गी जैन समता युवा संघ	रायपुर (म.प्र.)

अष्टम सूर्य अस्त हुआ, हम हुए बेसहारा, नवम् भानु उदित होकर, दिया हमें सहारा।
नाना गुरु का दिवाना था ये जग सारा, अब राम गुरु चरणो में, न्यौछावर सर्वस्व हमारा।।

स्वर्गीय आचार्य भगवन को शत्-शत् नमन एवम् भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्री मानकलाल जी अनिलकुमार जी देशलहरा	दुर्ग (म.प्र.)
श्री पृथ्वीराज जी प्रवीणकुमार जी पारख	दुर्ग (म.प्र.)
श्री ताराचन्द जी प्रेमचन्द जी कांकरिया	दुर्ग (म.प्र.)
श्री भीखमचन्द जी अशोककुमार जी पारख	दुर्ग (म.प्र.)
श्री दिनेशकुमार जी दीपककुमार जी देशलहरा	दुर्ग (म.प्र.)
श्री चन्दनमल जी गौतमचन्द जी बोथरा	दुर्ग (म.प्र.)
श्री हुकमचन्द जी ज्ञानचन्द जी पारख	दुर्ग (म.प्र.)
श्री भंवरलाल जी सुन्दरलाल जी बोथरा	दुर्ग (म.प्र.)
श्री सिरेमल जी निर्मलचन्द जी देशलहरा	दुर्ग (म.प्र.)
श्री संजयकुमार जी संदीपकुमार जी देशलहरा	दुर्ग (म.प्र.)

अष्टम सूर्य अस्त हुआ, हम हुए बेसहारा, नवम् भानु उदित होकर, दिया हमें सहारा।
नाना गुरु का दिवाना था ये जग सारा, अब राम गुरु चरणों में, न्यौछावर सर्वस्व हमारा॥

स्वर्गीय आचार्य भगवन को शत्-शत् नमन एवम् भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्री प्रेमचन्द जी विजयकुमार जी पारख	दुर्ग (म.प्र.)
श्री सिरेमल जी पारसमल जी देशलहरा	दुर्ग (म.प्र.)
श्री पारसमल जी सहसमल जी सांखला	दुर्ग (म.प्र.)
श्री गौतमचन्द जी प्रभातकुमार जी सांखला	दुर्ग (म.प्र.)
श्री ज्ञानचन्द जी पूलमचन्द जी लुणावत	दुर्ग (म.प्र.)
श्री हरीशकुमार जी गौतमचंद जी श्रीश्रीमाल	दुर्ग (म.प्र.)
श्री दीपककुमार जी अरविन्दकुमार जी सुराना	दुर्ग (म.प्र.)
श्री जवरचन्द जी खेमचन्द सुभाषचन्द छाजेड़	दुर्ग (म.प्र.)
श्री राणीदान जी हीरालाल जी बोथरा	दुर्ग (म.प्र.)
जैन मेडिकल स्टोर्स (प्रो. श्री हंसराज जी चोरड़िया)	दुर्ग (म.प्र.)

समता श्री संघ, दुर्ग (छत्तीसगढ)

सौजन्य : गौतमचन्द बोथरा, दुर्ग

धर्मपाल प्रतिबोधक, समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश

को विनम्र श्रद्धांजलि

मै. ए. सी.बी. सेठिया वॉच कम्पनी	बीकानेर
श्री इन्दरचन्द जी दूगड़	बीकानेर
श्री सुरेन्द्रकुमार कुसुम सेठिया	बीकानेर
श्री सम्पतलाल शान्तिलाल बांठिया	बीकानेर
श्री भंवरलाल नथमल जी तातेड़	बीकानेर
श्री नवलचन्द जी भूरा	बीकानेर
श्री रामचन्द्र विमलचन्द जी श्रीश्रीमाल	बीकानेर
श्री जयचन्दलाल प्रदीपकुमार जी सांड	बीकानेर
मै. जैन फर्नीचर्स	बीकानेर
श्री केशरीचन्द महेन्द्रकुमार जी सेठिया	बीकानेर

धर्मपाल प्रतिबोधक, समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी
परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश
को विनम्र श्रद्धांजलि

श्री मोतीलाल जी मालू	बीकानेर
श्री गुप्तदानी महानुभाव	बीकानेर
श्री विजयचन्द कमलचन्द जी पारख	बीकानेर
श्री हजारीमल भीखमचन्द जी पारख	बीकानेर
श्री आसकरण ललितकुमार जी बुच्चा	बीकानेर
श्री सुन्दरलाल जी बांठिया	बीकानेर
श्री भंवरलाल जी बडेर	बीकानेर
श्री प्रदीपकुमार सुरेशकुमार जी डागा	बीकानेर
श्री सुशीलकुमार जी वच्छावत	बीकानेर
श्री चम्पालाल विजयचन्द जी पारख	बीकानेर
श्री सम्पतलाल मोतीलाल जी बांठिया	बीकानेर

धर्मपाल प्रतिबोधक, समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश

को विनम्र श्रद्धांजलि

सूक्ष्म निरीक्षण दूरदर्शिता का द्योतक है। वह इन्सान को आपत्तियों से बचा लेता है।

-आचार्य श्री नानेश

माणकलाल जी सांखला एण्ड फैमिली

रतनलाल जी — कंवरलाल जी

शांतिलाल जी — मदनलाल जी

नवयुग सागर, तीन बत्ती

वालकेश्वर, मुम्बई (महाराष्ट्र)

धर्मपाल प्रतिबोधक, समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश

को विनम्र श्रद्धांजलि

समता मित्र मण्डल, देवरिया

कुन्दनमल नवलखा

भंवरलाल मांगीलाल बोरदिया

केसरीमल फतहलाल सूर्या

अनिल रखबलाल सूर्या

लादुलाल ख्यालीलाल सूर्या

सुनिल लक्ष्मीलाल सूर्या

गणपतलाल मांगीलाल सूर्या

मनोहर महावीर सूर्या

सागरमल लालचंद कोठारी

दिनेश पूनमचन्द कोठारी

धर्मपाल प्रतिबोधक, समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश

को विनम्र श्रद्धांजलि

अभिमान की अवस्था जब अत्यन्त दृढीभूत बनती है,
तब उसे लचीला बनाने में कोई विरल व्यक्ति ही कामयाब हो सकता है।

-आचार्य श्री नानेश

SHRI PANNALAL CHORDIA

50-4-B, No.2
SUMER TOWER 108, SHETH MOTISHA LANE
BYCULLA, MUMBAI-4000010
Ph. 2063128 (O), 3776330 (R)

धर्मपाल प्रतिबोधक, समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी
परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश
को विनम्र श्रद्धांजलि

धृति सहित कृति कला का रूप ले लेती है,
जबकि धृति रहित कृति निर्जीव परिश्रम मात्र है।

-आचार्य श्री नानेश

धर्मपाल प्रतिबोधक, समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश

को विनम्र श्रद्धांजलि

फल को देखने वाला आगे नहीं बढ सकता,
कर्त्तव्य को देखने वाला ही आगे बढ सकता है।

-आचार्य श्री नानेश

श्री गणेशमल ढढ्ढा मेमोरियल ट्रस्ट

जयपुर (राजस्थान)

धर्मपाल प्रतिबोधक, समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश

को विनम्र श्रद्धांजलि

व्यक्ति और विश्व एक ही क्रम के दो छोर हैं। व्यक्ति के जीवन से प्रारम्भ हुई समता विश्व-शान्ति के रूप में विकसित होती है।

-आचार्य श्री नानेश

धर्मपाल प्रतिबोधक, समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश

को विनम्र श्रद्धांजलि

मन-मन्दिर में रोज झाड़ू लगाने की आदत बनायी जानी चाहिये,
जिससे ममता की गंदगी हटती जाए और समता की निर्मलता आती जाए।

-आचार्य श्री नानेश

श्री मूलचन्दजी मोहनलालजी पारख — *नोखा*

श्री झूमरमलजी बेताला — *नोखा*

श्री घेवरचंदजी धनराजजी गोलछा — *नोखा*

श्री रतीरामजी फूसराजजी बैद — *नोखा*

श्री बच्छराजजी बालचंदजी कांकरिया — *नोखा*

श्री मोतीलालजी बस्तीमलजी कांकरिया — *नोखा*

धर्मपाल प्रतिबोधक, समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश

को विनम्र श्रद्धांजलि

सूरत (गुजरात)

श्री रिखबराज चौपड़ा

श्री मंगेशकुमार श्यामसुखा

श्री रेखचन्द सुराणा

श्री शांतिलाल डागा

श्री सुगनचन्द वरलोटा

श्री उत्तमचन्द अरुणकुमार सेठिया

श्रीमती सिरिया देवी लुणिया

श्री पुष्पेन्द्र बुलिया

श्री मूलचन्द जैन

श्री मिट्ठालाल दक

धर्मपाल प्रतिबोधक, समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश

को विनम्र श्रद्धांजलि

साधक को साधना के क्षेत्र में निरन्तर चलते रहना चाहिये।
कभी भी विराम की नहीं सोचना चाहिये।
विराम का चिन्तन साधक के गिराव (पतन का सूचक है।

-आचार्य श्री नानेश

श्री प्यारेलाल भण्डारी

D.P. Jain, R.P. Jain,
J.D. Jain, K.R. Jain,
S.P. Jain

धर्मपाल प्रतिबोधक, समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी
परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश
को विनम्र श्रद्धांजलि

<u>सूरत (गुजरात)</u>

श्री रिखबराज चौपड़ा
श्री मंगेशकुमार श्यामसुखा
श्री रेखचन्द सुराणा
श्री शांतिलाल डागा
श्री सुगनचन्द बरलोटा
श्री उत्तमचन्द अरुणकुमार सेठिया
श्रीमती सिरिया देवी लुणिया
श्री पुष्पेन्द्र पुलिया
श्री मूलचन्द जैन
श्री मिट्ठालाल दक

धर्मपाल प्रतिबोधक, समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश

को विनम्र श्रद्धांजलि

साधक को साधना के क्षेत्र में निरन्तर चलते रहना चाहिये।
कभी भी विराम की नहीं सोचना चाहिये।
विराम का चिन्तन साधक के गिराव (पतन का सूचक है।

-आचार्य श्री नानेश

श्री प्यारेलाल भण्डारी

D.P. Jain, R.P. Jain,
J.D. Jain, K.R. Jain,
S.P. Jain

धर्मपाल प्रतिबोधक, समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश

को विनम्र श्रद्धांजलि

जिव्हा स्वाद और शब्द की मूल होती है । ये दोनों शक्तियां अपने-आप में बड़ी विशिष्ट हैं ।
इन शक्तियों के प्रवाह को यदि ठीक से समझ लिया जाए तो
इस संचार समुद्र की काफी जानकारी हो सकती है ।

-आचार्य श्री नानेश

हु. शी. ऊ. चौ. श्री. ज. ग. नाना
राम चमकता भानु समाना

धर्मपाल प्रतिबोधक, समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी
परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश
को विनम्र श्रद्धांजलि

भय और चिन्ता को सदा-सर्वदा के लिए जीवन से निकाल ही देना चाहिये।
ये जीवन की बहुत बड़ी शत्रु है। इन्हीं से जीवन का अधिक हास होता है।

-आचार्य श्री नानेश

थर्मपाल प्रतिबोधक, समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश

को विनम्र श्रद्धांजलि

जिस समय जैसा वेश हो, उस समय उसी के अनुरूप कार्य एवं व्यवहार होना चाहिये और जिस समय जैसा कार्य किया जाता हो, उस समय उसी कार्य में मन, वचन और कार्य का एकाकार होना जरूरी है।

-आचार्य श्री नानेश

जैन जगत की महान् विभूति समता दर्शन प्रणेता, धर्मपाल प्रतिबोधक जिनशासन प्रद्योतक

स्व. आचार्य भगवन् पूज्य श्री १००८ श्री नानालालजी म.सा.

के श्री चरणों में कोटिशः वन्दन एवं वर्तमान आचार्य प्रवर शास्त्रज्ञ प्रशांतमना

पूज्य श्री १००८ श्री रामलालजी म.सा.

एवं मुनि मंडल महासती वृन्द के श्री चरणों में कोटिशः वन्दन

रीखबचंद, बिशनराज, प्रकाशचंद, सज्जनराज पीतलिया

चंदनमल, बछराज, श्रेणिकराज पीतलिया

किस्तुरचंद, थानमल, बिलासचंद पीतलिया

चंदनमल, पारसमल, विजयराज पीतलिया

माणकचंद, जुगराज, मनोहरलाल डागा

पुखराज, मांगीलाल, विनोदकुमार पीतलिया

हीराचंद, बसंतराज, शांतिलाल पीतलिया

खेमराज, विमलचंद, कांतिलाल, सुरेशचंद, कुशलराज पीतलिया

मोहनलाल, विकासचंद, महावीरचंद पीतलिया

आचार्य श्री नानेश के संथारामय महाप्रयाण पर हार्दिक श्रद्धांजलि

NATHMAL PRADEEP KUMAR GOLECHHA

702, AMBAR PALACE, NANPURA,
TIMALYAWAD, SURAT (GUJRAT)

आचार्य श्री नानेश के संथारामय महाप्रयाण पर हार्दिक श्रद्धांजलि

INDERCHAND JAY KUMAR DAGA

602, SAGAR APARTMENT, PARASWADEEP COMPLEX
KAILASH NAGAR, SURAT (GUJRAT)

आचार्य श्री नानेश के संयमसाधना महोत्सव पर हार्दिक भावांजलि

परम श्रद्धेय समता विभूति स्व. आचार्य श्री नानेश को
चोरड़िया परिवार की श्रद्धांजलि

बुलाकीचन्द चोरड़िया

(बीकानेर निवासी)

M/S MOHAN LAL BULAKICHAND
P.O. ALIPURDUAR (W.B.)

M/S M.B. SYNTHETICS
CALCUTTA

M/S M.B. TRADING CO.
MUMBAI

समता विभूति आचार्य श्री नानेश के श्री चरणों में [illegible]

श्री महावीर नागरी सहकारी पतपेढी मर्यादित शहादा
ता. शहादा जि. नंदुरबार

[illegible]

संचालक [illegible]

श्री महावीर [illegible]

हृदयेश को वन्दनांजलि

श्रद्धा प्रसूनों से, भक्ति भावों से,
अर्पित करें हम, आत्मा के आचमन से,
हृदयेश को हमारी शत्-शत् श्रद्धांजलि,
नानेश को हमारी भावभीनी वंदनाँजलि।

शत्रु को हम मित्र मानें, जीव को हम पूज्य जानें,
स्नेह शुचिता में नहाकर, सुमन समता के खिलाकर,
हृदयेश को हमारी शत्-शत् श्रद्धांजलि,
नानेश को हमारी भावभीनी वंदनाँजलि।

हैं जो नाना के अभिराम, बने वे जन-जन के राम,
आदेश यह गुरुवर का लिये, हो समर्पित राम के,
हृदयेश को हमारी शत्-शत् श्रद्धांजलि,
नानेश को हमारी भावभीनी वन्दनाँजलि।

नतमस्तक :

कस्तूरी बाई, पुखराज-चाँददेवी, कन्हैया-इन्द्रा, सुशील-सरिता वैद
कुमारी निधि, नैना, अलका, कीर्ति एवं सुमति राज वैद।
महेन्द्र-भँवरी एवं मनीष कोठारी, प्रकाश-मंजू, दीपक, हंसा भंडारी
मांगीलाल-प्रेम, सौरभ, नवनीत व मीमांसा बांठिया।

परम श्रद्धेय समता विभूति स्व. आचार्य श्री नानेश को
चोरड़िया परिवार की श्रद्धांजलि

बुलाकीचन्द चोरड़िया

(बीकानेर निवासी)

M/S MOHAN LAL BULAKICHAND
P.O. ALIPURDUAR (W.B.)

M/S M.B. SYNTHETICS
CALCUTTA

M/S M.B. TRADING CO.
MUMBAI

समता विभूति आचार्य श्री नानेश के श्री चरणों में अगणित वंदन एवं भावभीनी श्रद्धांजलि

श्री महावीर नगरी सहकारी पतपेढी मर्यादित शहादा
ता. शहादा जि. नंदुरवार

श्री रमेशचंद आसकरण चोरडिया
(चेअरमेन)

श्री विनयचंद हीरालाल गांधी
(व्हा. चेअरमेन)

- शहादा की एकमात्र व्यापारी पत संस्थान
- सामाजिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में हमेशा समर्पित
- देश सेवा-जनसेवा में अग्रेसर

श्री राजेन्द्र रेखचंद जैन
(सेक्रेटरी)

श्री पूनमचंद शंकर भावसार
(मैनेजिंग डायरेक्टर)

संचालक मंडल व कर्मचारी वृंद

श्री महावीर नागरी सहकारी पतपेढी मर्या. शहादा

हृदयेश को वन्दनांजलि

श्रद्धा प्रसूनों से, भक्ति भावों से,
अर्पित करें हम, आत्मा के आचमन से,
हृदयेश को हमारी शत्-शत् श्रद्धांजलि,
नानेश को हमारी भावभीनी वंदनाँजलि ।

शत्रु को हम मित्र मानें, जीव को हम पूज्य जानें,
स्नेह शुचिता में नहाकर, सुमन समता के खिलाकर,
हृदयेश को हमारी शत्-शत् श्रद्धांजलि,
नानेश को हमारी भावभीनी वंदनाँजलि ।

हैं जो नाना के अभिराम, बने वे जन-जन के राम,
आदेश यह गुरुवर का लिये, हो समर्पित राम के,
हृदयेश को हमारी शत्-शत् श्रद्धांजलि,
नानेश को हमारी भावभीनी वन्दनाँजलि ।

नतमस्तक :

कस्तूरी बाई, पुखराज-चाँददेवी, कन्हैया-इन्द्रा, सुशील-सरिता वैद
कुमारी निधि, नैना, अलका, कीर्ति एवं सुमति राज वैद ।
महेन्द्र-भँवरी एवं मनीष कोठारी, प्रकाश-मंजू, दीपक, हंसा भंडारी
मांगीलाल-प्रेम, सौरभ, नवनीत व मीमांसा बांठिया ।

आचार्य श्री नानेश के संथारामय महाप्रयाण पर हार्दिक श्रद्धांजलि

आचार्य श्री नानेश के संथारामय महाप्रयाण पर हार्दिक श्रद्धांजलि

जय नानेश | जय महावीर | जय रामेश

जिनशासन सरोवर के राजहंस, महामना, आचार्य भगवन् श्री १००८

श्री नानालालजी म.सा.

के संथारामय महाप्रयाण पर हार्दिक श्रद्धांजलि

प्रशान्तमना आगमज्ञ आचार्य भगवन्

श्री रामलालजी म.सा.

एवं समस्त संत-सतीवृन्द के चरणकमलो में कोटि-कोटि वन्दन

सुजानमल-गुणमाला, किशोर-नन्दा, दीपक-रेखा,
संकेत, सहज, सरल एवं समस्त कणवित परिवार (इन्दौर)

श्री पार्श्वनाथ इण्डस्ट्रीज

नं. 54, दूसरा मेन रोड, रामचन्द्रपुरम्, बैंगलोर-560021
फोन : दु. 3355032, 3402097 घर : 3350565, 3404769

जय नानेश | जय महावीर | जय रामेश

समता के सागर, दलितों के मसीहा, करीबन ३५० मुमुक्षुओं को
मोक्ष मार्ग पर आरूढ करने वाले धर्म सारथी, आचार्य श्री १००८

श्री नानालालजी म.सा.

के संथारा-संलेखनामय देवलोक गमन पर भावभीनी श्रद्धांजलि

आगम मर्म के ज्ञाता, आचार्य

श्री रामलालजी म.सा.

और समग्र संत-सतीवृन्द को कोटिशः वन्दन

[illegible]
[illegible] एवं समस्त [illegible] परिवार
बैंगलोर ([illegible])

आचार्य श्री नानेश के संथारामय महाप्रयाण पर हार्दिक श्रद्धांजलि

सेठिया वायर निटिंग इण्डस्ट्रीज

113, एन. एस. रोड, कलकत्ता. फोन : 2382811

सेठिया वायर निटिंग स्टोर

13, गोडाडन स्ट्रीट, बैंगलोर. फोन : 2227210

गणेशमल सेठिया

उदासर. फोन : 752614

आचार्य श्री नानेश के संथारामय महाप्रयाण पर हार्दिक श्रद्धांजलि

चोरड़िया परिवार, इन्दौर

अजय इन्जीनियरिंग कम्पनी

चोरड़िया ट्रेडर्स

95, जूना पीठा, इन्दौर-452005

आचार्य श्री नानेश के संथारामय महाप्रयाण पर हार्दिक श्रद्धांजलि

पतासीबाई सम्पतलाल ओस्तवाल चेरिटेबल ट्रस्ट

कामठी लाईन, राजनांदगांव (म.प्र.)

Ph. 23254

उमेदचन्द, प्रेमचन्द, सुरेशचन्द, सुभाषचन्द

एवं ओस्तवाल परिवार

आचार्य श्री नानेश के संथारामय महाप्रयाण पर हार्दिक श्रद्धांजलि

Khinvraj Chordia Foundation

Chennai

जय गुरु नाना　　जय महावीर　　जय गुरु राम

आराध्य प्रवर १००८ आचार्य श्री नानेश की पावन यादों को अगणित वंदन

बसन्तीलाल महावीरलाल बाफना

धानमण्डी, उदयपुर (राज.)

आराध्य प्रवर १००८ आचार्य श्री नानेश की पावन यादों को अगणित वंदन

मे. रतनलाल कालूराम नाहर

ज्ञानचन्द

विनोदकुमार

उत्तमचन्द नाहर

महावीर बाजार, ब्यावर (राज.)

"समता के मंदिर की थी सबसे प्यारी मूरत।
भगवान नजर आते थे जब देखूं उनकी सूरत॥"
उन्हीं समतामूर्ति आचार्य श्री नानेश की पावन स्मृति को हजारों-हजारों वंदन

सुनीलकुमार, राजेद्रकुमार बंसीलाल खिंवसरा
निर्मलकुमार, अंतिमकुमार, दीपचन्द लोढा,
निलेशकुमार, महावीर कुमार, नेमीचन्द चोरड़िया
श्रीमती सुशीला देवी मोहनलाल बोहरा
मुकेशकुमार, सुभाचन्द, मदनलाल, जोगीलाल लुणावत

खेतिया जि. बडवानी (खानदेश)

"समतादर्शी दीन दयाल, वंदू पूज्य नानालाल"
समता विभूति आचार्य श्री नानेश की पावन स्मृति में विनम्र श्रद्धांजलि

नेनसुख प्रेमराज लूंकड़	जलगाँव
चन्द्रप्रकाश रमेशचन्द सांखला	जलगाँव
विनोदकुमार दिलीपकुमार मल्हारा	जलगाँव
अजीतकुमार महेशकुमार पुखराज मल्हारा	जलगाँव
श्रीमती लीलादेवी राणुलालजी बोहरा	जलगाँव

समता परिवार, जलगाँव (महाराष्ट्र)

"जीवन के नाना खिवैया, बचाते डूबती नैय्या
जो गाता इनका सवैया, तिरजाती उसकी नैय्या"
उन्हीं जीवन नैय्या के तारणहार, समता विभूति आचार्य श्री नानेश
को भावपूर्ण श्रद्धांजलि

विजयकुमार, कांतिलाल, शान्तिलाल लुणावत (खेतिया)
गौरवकुमार, राजेन्द्रकुमार, बाबूलाल टाटिया (खेतिया)
ललितकुमार, प्रकाशचन्द्र, प्रेमराज् बोहरा (खेतिया)
मुकेशकुमार, जसराज, सुभागमल टाटिया (खेतिया)
सुनीलकुमार मगनलाल बाफना (वघाड़ी)
कांतिलाल छाजेड़ (दोंडाईचा)
रविन्द्र कोटड़िया (दोंडाईचा)

"बहुत दिया और बहुत किया, नाना गुरुवर चले गये।
आये थे गागर बनकर, सागर बनकर चले गये॥"
समता विभूति आचार्य श्री नानेश की पावन स्मृति में विनम्र श्रद्धांजलि

छगनलाल रूपचन्द बाफना, वघाड़ी
अध्यक्ष

मोहनलाल आर. मुथा, जलगाँव
उपाध्यक्ष

फूलचन्द गुलाबचन्द ओस्तवाल, शिंदखेड़ा
उपाध्यक्ष

रमेशचन्द लूणकरण सेठिया, होळनांथा
उपाध्यक्ष

शांतिलाल चंपालाल लुणावत, खेतिया
महामंत्री

अमरचन्द आसकरण कोठिया, शहादा
कोषाध्यक्ष

सुभाष मनोहरलाल कोटड़िया, शहादा
सहमंत्री

खानदेश साधुमार्गी जैन संघ (महाराष्ट्र)

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश

को विनम्र श्रद्धांजलि

श्री सुन्दरलाल जी राजकुमार जी सिंघवी

श्री नवरतन दक

श्री बुलाकीचन्द नाहटा

नरेन्द्र मुणोत

सुवालाल, भैरूंलाल प्रकाशचन्द गांधी

सुभाषचन्द बोथरा

सूरत (गुजरात)

धर्मपाल प्रतिबोधक, समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश

को विनम्र श्रद्धांजलि

श्री नवरतनमल शुभकरण सेठिया

श्री सुनील कुमार मुणोत

श्री रोशनलाल कोठारी

कन्हैयालाल हड़पावत

श्री रोशनलाल सिंघवी

सूरत (गुजरात)

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश

को विनम्र श्रद्धांजलि

कानमल मदनलाल पारख	राजनांदगांव
रेखचन्द देवराज पारख	राजनांदगांव
मांगीलाल सुनीलकुमार पारख	राजनांदगांव
रतनलाल गणेशमल पारख	केसला
दुलीचन्द शिवचन्द पारख	राजनांदगांव

श्रमण संस्कृति के सजग प्रहरी युगप्रधान धर्मपाल प्रतिबोधक

आचार्य श्री १००८ श्री नानेश

की पावन स्मृति में श्रद्धावनत शत: शत: वन्दन !

हुक्म गच्छ के नवम् पट्टधर

आचार्य श्री १००८ श्री रामलालजी म० सा०

के आचार्य पद पर पदासीन होने पर

शत: शत: वन्दन, अभिनन्दन !

श्रद्धावनत्

केशरीचन्द मोहनलाल एवं समस्त सेठिया परिवार

चैन्नई

हुक्मेश संघ के अष्टमाचार्य-

समता विभूति, धर्मपाल प्रतिबोधक, जिनशासन प्रद्योतक,

विद्वद् शिरोमणि, समीक्षण ध्यान योगी, समता दर्शन प्रणेता,

चारित्र चूड़ामणि, बाल ब्रह्मचारी प्रातः स्मरणीय,

परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् श्री १००८ श्री नानालालजी म.सा.

की पावन स्मृति में भावपूर्ण

विनम्र श्रद्धांजलि -

विज्ञापन राशि - प्रत्येक १००० रुपये

आसाम

बदरपुर

अनोपचंद दफ्तरी

धीरज, मनोज, राजेश दफ्तरी

भंवरलाल, सुरेन्द्र कुमार भूरा

आसकरण निर्मल कुमार दफ्तरी

काबूगंज

लक्ष्मीपत बोथरा

लंका

लूणकरण भूरा

गोलकगंज

रामलाल बोथरा

सिलचर

गुलाबचंद सिपानी

सोनाई

बी. एल. अखेचन्द सेठिया

कर्नाटक

बैंगलोर

मनुहारलाल सुरेशचंद गांधी

सज्जनराज महेन्द्र कुमार [illegible]

मिश्रालाल मोहनलाल दुधेड़िया

मेहता बाई धर्मपत्नी [illegible]

उड़ीसा

जैपुर

गौतमचद चेतनप्रकाश सांखला

पश्चिम बंगाल

कलकत्ता

सम्पतलाल गुलाबचद दुगड़

सम्पतलाल सुभाषकुमार हीरावत

हावड़ा

राजेन्द्रकुमार शिवकुमार भूरा

बाबूलाल मनोजकुमार अजयकुमार चंडालिया

आसकरण पींचा

मोतीलाल हड़मानदास सेठिया

जयचंदलाल अबीरचद

राजेन्द्रकुमार गेलड़ा

सुरेन्द्रकुमार हंसराज कांकरिया

सूरजमल मगनलाल छाजेड़

नरेन्द्रकुमार अजयकुमार सिपानी

हस्तीमल प्रदीपकुमार बोथरा

उदयचद सेठिया

गुलाब देशवाल

जेठमल सुन्दरलाल सेठिया

डालचंद विजयकुमार मुणोत

तमिलनाडू

चैन्नई

नवरतनमल कमलकुमार पौदावत

हरकचंद रांका

मोतीलाल आनंदकुमार चंडालिया

ए. मानिकचंद जितेन्द्रकुमार चंडालिया

भंवरलाल अशोककुमार कांकरिया

लालचंद देवराज रांका

बाबूलाल पंकज रांका

मांगीलाल सम्पतलाल सिंघवी

तोलाराम मिन्नी

सुमतिकुमार, प्रणीत, अर्पित

चित्तौड़गढ

भंवरलाल दल्लीचंद सांखला

अरावली टाईल्स प्रा लि

जैन ट्रेडर्स

मिश्रीलाल हसराज अभ्भाणी

गौतम, सोहन पोखरना

रंगोली मार्बल प्रा लि

बसन्तीलाल चंडालिया

छोटीसादड़ी

लक्ष्मीलाल रोशनलाल पामेचा

जयपुर

संजय टैक्सटाईलस

देशनोक

खेमचंद प्रकाशचंद सुराणा

निम्बाहेड़ा

मदनलाल अरूणकुमार मारू

सागरमल भरतकुमार चपलोत

कन्हैयालाल भरतकुमार रांका

भंवरलाल ललितकुमार डागी

नक्षत्रमल भंवरलाल सोनी

रत्नेश कुमार सुरेशकुमार सहलोत

कानमल विनोदकुमार अभाणी

सागरमल पारसमल राठ

चांदमल संजयकुमार मारू

जीतमल रोशनलाल खेरोदिया

निकुम्भ

साधुमार्गी जैन संघ

नोखा

दुलीचंद चोरड़िया

[illegible]

अमानमल मोहनलाल पारख

सम्पतलाल [illegible]

लिछमीराम डागा

हनुमानमल [illegible]

मूलचंद धरमचंद पारख

सुन्दरलाल पुगलिया

पन्नालाल करणीदान गोधरा

आसकरण नवरतलाल पींचा

जोरावरमल पींचा

मोहनलाल भंवरलाल दुगड़

भीखमचंद प्रकाशचंद पींचा

दुलारचंद सुरेन्द्रकुमार हीरावत

चम्पालाल जेठमल लुणावत (नोखागांव)

फूलराज मगनमल सुराणा

मदनलाल सन्तोकचंद आंचलिया

भंवरलाल सुराणा

मांगीलाल डागा

ईश्वरचंद वैद

पारसमल वैद

बीरदीचंद कन्हैयालाल कांकरिया

जैन फूड्स प्रोडक्ट्स

धनराज लुणावत

श्रीमती भंवरीदेवी दुगड़

मिश्रीमल कांकरिया

पीरदान ताराचंद पारख

उदयचंद अशोककुमार डागा

किशनलाल सेठिया

प्रतापगढ़

सुरेन्द्रकुमार बोरदिया

मन्नालाल शांतिलाल नगरीवाला

केशरीमल लूणावत एंड संस

पारसमल अशोककुमार सिंघट

समता छात्र गृह

नानेश मशीनरीज

लूणावत किशनलाल केशरीमल

बीकानेर

त्रिमूर्ति फार्मेसी

बड़ीसादड़ी

महावीर ट्रेडिंग कम्पनी

भदेसर

साधुमार्गी जैन श्रावक संघ

साधुमार्गी जैन संघ

भीनासर

नथमल राजकरण पुगलिया
अगरचंद बाबूलाल सेठिया
रेवंतमल तोलाराम सोनावत
रिखबचंद महेन्द्रकुमार सोनावत
भंवरलाल इंद्रचंद बोथरा
डालचंद प्रदीपकुमार सोनावत
डूंगरमल सुरेन्द्रकुमार निर्मलचंद मिन्नी
छगनमल अखेचन्द परिवार

पुखराज धरमचंद रांका

रूण्डेड़ा

रतनलाल उदयलाल कोठारी

सूरतगढ

पूनमचंद सुराणा

आचार्य श्री नानेश के संथारामय महाप्रयाण पर हार्दिक श्रद्धांजलि

जिन महानुभावों, संस्थाओं एवं व्यावसायिक प्रतिष्ठानों

ने अपने विज्ञापन देकर सहयोग प्रदान किया,

उन सबके प्रति हार्दिक आभार।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, बीकानेर